॥ आयुर्वेद प्रादुर्भाव ॥

श्रीप्रभू परममंगल परमपुरुष श्रीऋषभ देवभगवांन पहलीसम्यक्त पायके १३ भव किया जिसमें नवमें भवमें प्रभु जीवानंदनामके सर्वविद्यासंपन्न वैद्य भये फेर तीर्थंकर नांम पुण्य पैदाकर सर्वार्थ सिद्ध विमान १२ में भवमें गये उहां निर्मल तीन ज्ञानयुक्त मरुदेवीराणीनाभराजाके पुत्रपणे युग ईश्वर १३ में भवमें भये सर्व संसारधर्म चलाया आगे लोकोंकों रोगाग्रसित जाण ऋषभसंहिता या ब्रह्मसंहिता नांम आयुर्वेद तीनकाल भूत १ भविष्यद् २ वर्त्तमान ३ विधियुक्त मनुष्योंके हितार्थ रचनाकी अष्टांगोपांग समेत पूर्वकृत अभ्यास औरमति १ श्रुति २ अवधि ३ इस तीनज्ञानके निर्मल बलसें धनंजय कोपमें ऋषभदेवका नाम ब्रह्मालिखा है, समवसरणमें चार मुखसे देशना देणेसे फेर जंगलमेंसें अनेक औषधी और पृथ्वीगत धातु उपधातु वगेरे रस रसायणरूप रोग दूर करणेकों अनेक युक्तियां निकाली फेर अपणे शंतानोंकों यह विद्या सीखाकर परंपरा वढाई जिसमे आत्रेयनें ये विद्या पूर्ण सीखी दिनपर दिन रसायणविद्याकी उन्नतीकी ध्वजा फरकणेलगी नई २ सुद्धिकी खोज निकासने लगे तद पीछे स्वामी इस प्रजाके सुखजीवनके लिये तयांसी पूर्व लाखवर्ष राज्यंपाला पीछे अयोध्यामें राजा भरतचक्रवर्त्ती भये राजा भरतकूं इंद्र भी लोकीकशास्त्रवालोंने लिखा है, राजा भरतने ही वेद बनाकर ब्राह्मणोकों पढाया था राजाभरतने ही ब्राह्मण वंशकी स्थापना करी तद पीछे वैद्यकविद्या वो ब्राह्मणोंनें सीखी ओर रोंगीयोंका रोग मिटाने लगे एसें असंख्य वर्षतक चलते रहा वाद इहां भरतवर्षमें मांस खाणा मदिरा पीने आदिकी कर्त्तव्यताचली ब्राह्मणलोक भी केइयक इसही प्रवृत्तिमें लगकर तरे २ के आसवोंके और तरे २ के मांसके गुण ओगुण प्रकास करनेकी खोजमें रहकर नये २ ग्रंथ अपणे २ नांमोंसें रचकर उसमें आसुरी चिकित्साभी लिखी तबसें चिकित्साके तीन अंग होगये दैवी १ मानुषी २ ओर आसुरी ३ दैवी चिकित्सामें धातु उपधातु रत्न उपरत्नोंका सोधन मारण और परीक्षाकर रोगोंपर अनुपानोंसे चावल रत्ती अधरत्ती देकर वडे भयंकर रोगोंकों खोदेणा दैवता जैसी कुदरत रखनेवाली दवासो दैवी कहलाती है, सो रसायण रसमात्रा १ (२ रसायणं यथा प्रोक्तं जराव्याधिविनाशकं) रसायण उसीका नांम है, जो बुढापा ओर रोंगोको मिटावे अछी रीतीकी बनी धातुवगेरे रसायण धीरे २ पथ्यमें रहनेसें देरसें फायदा देती है, कच्ची फुंकी भई धातु एकवेर भुंख तुरत खोल देती और रमनक दिखाती है, लेकिन् पीछेसें उसका फल बुरा है, केइक मूर्खो एसा कहते हैं जडीपत्तीसें फूंकी जाय धातु सो अछी धातुसे या उपधातुसें फूंके सो अछी नहीं यह बात वे समझीकी है, परमात्मा ऋषभ देवादिकोंसें कोइ वस्तु छिपी नहीं थी उन सर्वज्ञ ऋषिनें एसी विधि दरियाफ्तकरके लिखी है, सो कोइ भी समय बालकसें लेकर बुढ्ढेतक कभी नुकसान नहीं करे जिस २ प्रका-

मोतब्बर दवाकीलागत और फी लेता वे वखत आताभी नहीं मूर्खोंसे चाहे विगाडभी होतारहै लेकिन् पैसा नहीं खरच पडे सो अछा मूर्ख वैद्योसें कोइ सहज चेतनशक्तीवाला आरामभी भाग्ययोगसें होजाता है, जेसें अंधा अदमी पथर फेके किसीके न किसीके लगहीजाय लेकिन् निसाणे चोट मारणेवाला कभी नही कहलावेगा एसें समझणा जव एसे मूर्खोंसें अत्यंत बेमारी वढजाती है, तव डाकदर या पंडित वैद्योंके तरफ दोडते हैं, स्यात् कष्टसाध्य होय तो सोमें पचास सुधर भी जाते हैं, असाध्यका इलाज ही क्या है, अगर एसी बेमारीमें वैद्य दवाके दांम मांगे तो केइयक मोतब्बर होकरके भी सुणके सरद होजाते हैं, वाहिरजाके लोकोंसें कहते हैं, हमने तो इनोंमें कुछ नही देखा और घडे लोभी है, इत्यादि मनमानी वातें वणाते हैं, लेकिन् एसे लोकोंको इतनेपर ही विचारलेणा चहिये एक देशीडाकदर आता है, तो दोरुपे फी लेता है, और दवा सरकारी सफाखाणेकी देता है, जोकी सरकारके पैसे कीहै, और एककी च्यारुपे फी है, एककी असरफी भी है, इसका कारण क्या है, असल कारण इसका यही है, जेसा २ इल्म जादातर होगा उसकी फी भी उसी मुजब होगी वलके देशीवैद्योंकों घरकी तो दवादेणा और न किसीका नोकर है, सर्व खरच इसीपर चलाये चाहता है, इतनाभी विचार नहीं करते यह सव मूर्खताइकी अंधाधूंधी मचरही है, इसवास्ते सर्व प्रजाहितकारक जीवन प्राणरक्षक परभव और इस भवका सुधारक यह वैद्यदीपक ग्रंथ मेनें भाषामें वणाकर अज्ञान अंधकार दूर करणेकों मनमंदिरमें यह ग्रंथ दीपकवत उजाला करेगा इसमें जरा संदेह नही जो इस ग्रंथसे वैद्यकीकी आजीविका करेगा तो भी सफल होगा और भाग्यवांन ग्रहस्थोकों अपने आत्माकी रक्षा कुटुंवकी रक्षा करणेकों यह ग्रंथ उद्योतकारक है, मुर्ख वैद्योकों पहचाणनेकूं यह ग्रंथ कसोटी है, विना पढे एसा होता है, दुहा । सोना पीतलसारखा पीलेकी परतीत । गुण औगुण जाणे नहीं सवकुं कहे अतीत ॥१॥ सो अंधकार जरूरही मिटजायगा जव पूर्ण वैद्य नही मिले तव आप इसग्रंथकूं पूर्ण वैद्य समझकर इसकी दवा लो जो इसके लिखे अनुसार तुमारा रोग असाध्यमालम देतो कुटुंवका वंदोवस्तकर मोहजाल छोडकर परभव साधो इह परभवकी सिद्धि इस ग्रंथमे है, इसग्रंथमें देशी अजमायस दवा हकीमी डाकदरी होमियापैथिक सव च्यारों इलाजोंका संग्रह है, यद्यपिमें प्राकृत संस्कृत शास्त्रीसिवाय अंग्रेजी नहीं पढाहुं तो भी अंग्रेजी पढे फारसी तेलिंग महाराष्ट्रादि देसवासीयोंकी सोहवत तथा अंग्रेजी दवायोंका साख्रीमें वंगला गुजरातीमें उलथा इत्यादि ग्रंथोसे वरतावा देखके डाकतरी और होमिया पैथिक दवायें लिखी है, में दक्षण हेद्राबादमें रहकर मुसलमीन हकीमोसें तजूरवेकी ये नुकसे वहोतही हासिल किये हैं, वाकी वैद्यक शास्त्र जो जो मेने परिश्रमसें पढाहूं सो संक्षेपमें जीवनचरित्र आगे लिखा सो देखो रोगीके आराम होणेमें चिकित्साके चार

रसें धातु उपधातुओंकों जडीपत्तीसें या धातु उपधातुसें फूंकणी वताई है, सो ही प्रकार अमृतरूप है, विनासास्त्र मूर्खके कहणेसें या अणपठ जोगी फक्कडोकी फूंकी दवाका विश्वास कभी नही करना इस वैद्यक विद्यामें गुरुउपदेश और प्रमाणीकशास्त्र और अनुभवीक्रिया कुशलताही प्रमांण है, १ दूसरी जडीपत्तीसें वणे जो दवा सोमानुषी इलाज कहलाता है चीरणा दाग गुलदेणा वगेरे २ तीसरा जलचर थलचर खचर इन प्राणीयोंके अंगोपांगकी बणी दवा मद्य प्रमुख यह सब आसुरी चिकित्सा है, ३ यह तीनो संसारमें प्रचलित है, रोगीकूं रोग मुजब पथ्य जरूर करणा पथ्य करनेसे, विना दवा भी रोग जाता है, बिना पथ्य कितनाही इलाजकरनेसें भी रोग नहींजाता, हांवा जे वखत कुपथ्य करते भी रोग चलाजाता है, सो हजारोंमें एकका, उसमें जो कारण है, सो हम आगे लिखेगें, जहां चेतनशक्ति बलवान होती है, और वेदनी कर्मके परमाणु कम जोर होजाते हैं, तहां यह स्वरूप वणता है, वाकी तो अग्नींमें हाथ देणेसें जलेहीगा इस तरे कुपथ्य समझणा (प्रश्न) डाकदरी दवामें परहेज नहीं सो क्याकारण उत्तर पथ्य जरूर है, नहीं कोण कहता है, उन लोकोंका भावार्थ एसा है, सो तुम समझते नहीं जो हमेसा खाणेकी जिसकी खुराक है, वह नुकसान कम करती है, और करती भी है, इसमें बुद्धिका कांम है, जिसकों जो चीज खाणेसें रोग भया है, अगर वह रोगी वही चीज खाते जायगा और दवाभी खायगा देखलेणा फायदेके वदले नुकशांन उठायगा चेतनशक्ति प्रवल होणेपर बिनादवा भी रोग जायगा युरुपीयनदवा अत्यंत शीतदेशीयोंके वास्ते और करडेमेदेवालोके वास्ते वहोत फायदेवंद है, अपणा देश उष्ण, और नरम वीर्यके मनुष्य है, इसवास्ते दवाका वरतावा देस मुजब ही श्रेष्ठ है, दुसरे आसुरी दवा जिसमें जानवरोंका अंग और मदिरा टिंचर मिली भई दया धर्मीयोकों विचारणा चाहीये, फेर तो वहवात है, मरता क्या नहीं करता, रुचे सो पचे, सरकारी असपतालोंमें ना वारिसकों धर्मादा गरीवोंके लिये वहोत ही उपगारणी है, डाकदरलोक इल्मचीरणे फाडणेंमें पास होते हैं दवा वणानेवाले लंदनमें दुसरे व्यापारी है, जगन्नाथ वैद्य प्रागवाला लिखता है, दरसाल वारेकोडरुपये हिंदसे दवाकी विकरीके विलायत जाते हैं, हिंदवाले उद्योगवान होते तो परदेश जाता हुवाधन इहांही नहीं रहता मूर्ख विद्याहीनोंने वैद्यक विद्याका इतना दरजा घटादिया सो अंग्रेजी पढेभये लोक देशी वैद्योंकों एक जातके पशु समझते हैं, सो सच्चाही है, प्रजाभी एसी अणपढ है, सो मूर्ख और पंडितोकों एकसीहीसमझती हैं, मूर्खोंसें इलाज कराते २ असाध्य रोगी होजाते हैं, मूर्खलोकोंने यह भी रुजगार समझ लिया है, सो पचास रोगोंके इलाज लिखकर वैद्य वण वेठते हैं, इसवास्ते खुसामदीसें वेरवेर उसरोगीके घर जाणा और पेसे टकेकी उंठ-[illegible] । देणा एसोंसें दुनिया वडी राजी रोगी मरे चाहे जिये कारण पढाहुआ वैद्य

मोतब्बर दवाकीलागत और फी लेता वे वखत आताभी नहीं मूर्खोंसे चाहे बिगाडभी होतारहै लेकिन् पैसा नहीं खरच पडे सो अछा मूर्ख वैद्योसें कोइ सहज चेतनशक्तीवाला आरामभी भाग्ययोगसें होजाता है, जेसें अंधा अदमी पथर फेके किसीके न किसीके लगहीजाय लेकिन् निसाणे चोट मारणेवाला कभी नही कहलावेगा एसें समझणा जब एसे मूर्खोंसें अत्यंत बेमारी बढजाती है, तब डाकदर या पंडित वैद्योंके तरफ दोडते हैं, स्यात् कष्टसाध्य होय तो सोमें पचास सुधर भी जाते हैं, असाध्यका इलाज ही क्या है, अगर एसी बेमारीमें वैद्य दवाके दांम मांगे तो केइयक मोतब्बर होकरके भी सुणके सरद होजाते हैं, बाहिरजाके लोकोंसें कहते हैं, हमने तो इनोंमें कुछ नही देखा और बडे लोभी है, इत्यादि मनमानी बातें बणाते हैं, लेकिन् एसे लोकोंको इतनेपर ही विचारलेणा चहिये एक देशीडाकदर आता है, तो दोरुपे फी लेता है, और दवा सरकारी सफाखाणेकी देता है, जोकी सरकारके पैसे कीहै, और एककी च्याररुपे फी है. एककी असरफी भी है, इसका कारण क्या है, असल कारण इसका यही है, जेसा २ इल्म जादातर होगा उसकी फी भी उसी मुजब होगी बलके देशीवैद्योंकों घरकी तो दवादेणा और न किसीका नोकर है, सर्व खरच इसीपर चलाये चाहता है, इतनाभी विचार नहीं करते यह सब मूर्खताइकी अंधाधूंधी मचरही है, इसवास्ते सर्व प्रजाहितकारक जीवन प्राणरक्षक परभव और इस भवका सुधारक यह वैद्यदीपक ग्रंथ मेनें भाषामें बणाकर अज्ञान अंधकार दूर करणेकों मनमंदिरमें यह ग्रंथ दीपकवत उजाला करेगा इसमें जरा संदेह नही जो इस ग्रंथसे वैद्यकीकी आजीविका करेगा तो भी सफल होगा और भाग्यवांन ग्रहस्थोकों अपने आत्माकी रक्षा कुटुंबकी रक्षा करणेकों यह ग्रंथ उद्योतकारक है, मुर्ख वैद्योकों पहचाणनेकूं यह ग्रंथ कसोटी है, बिना पढे एसा होता है, दुहा। सोना पीतलसारखा पीलेकी परतीत। गुण औगुण जाणे नहीं सबकु कहे अतीत ॥१॥ सो अंधकार जरूरही मिटजायगा जब पूर्ण वैद्य नहीं मिले तब आप इसग्रंथकूं पूर्ण वैद्य समझकर इसकी दवा लो जो इसके लिखे अनुसार तुमारा रोग असाध्यमालूम देतो कुटुंबका बंदोबस्तकर मोहजाल छोडकर परभव साधो इह परभवकी सिद्धि इस ग्रंथमे है, इसग्रंथमें देशी अजमायस दवा हकीमी डाकदरी होमियापैथिक सब च्यारों इलाजोंका संग्रह है, यद्यपिमें प्राकृत संस्कृत शास्त्रीसिवाय अंग्रेजी नहीं पढाहूं तो भी अंग्रेजी पढे फारसी तेलिंग महाराष्ट्रादि देसवासीयोंकी सोहबत तथा अंग्रेजी दवायोंका साखीमें बंगला गुजरातीमें उलथा इत्यादि ग्रंथोसे बरतावा देखके डाकदरी और होमियापैथिक दवायें लिखी हैं, में दक्षण हैद्राबादमें रहकर मुसलमान हकीमोंसें तजुरबेकी ये नुकसे बहोतही हासिल किये हैं, बाकी वैद्यक शास्त्र जो जो मेने परिश्रमसें पढाहूं सो संक्षेपमें जीवनचरित्र आगे लिखा सो देखो रोगीके आराम होनेमें चिकित्साके चार

पाये हैं, रोगीकी परिक्षाकरणेवाला वैद्य सो साध्य १ कष्टसाध्य २ और असाध्यकुं पहचान करे साधारण रोगमें वडा इलाज नहीं करे कष्टकारी वडे रोगमें छोटा इलाज नहीं करे देसकाल अवस्था रोगका और रोगीका वल पहचान करणेवाला वैद्य प्रथम पाया १ रोगकुं मिटाणेवाली सास्त्रकेलिखे मुजव नई या पुराणी शुद्ध दवा मिलणी दुसरा पाया २ रोगीका टहल वंदगी करणेवाला पथ्य तइयार करणेकी चतुराईवाला वैद्यके वचन मुजव कर्त्ता होणा तीसरा पाया ३ रोगी वैद्यके कहे मुजव खारी कडवी दवा अमृतसमान करके पीवै जो रोगी दवा लेणेकुं इनकार करे सो रोग मिटणा मुसकल है, कहे मुजव ही पथ्यकरे तो निश्चै आराम होय ये चोथा पाया ४ (वैद्य एसा होणा चाहिये) (श्लोक)–तत्वाधिगतशास्त्रार्थो दृष्टकर्मास्वयंकृतिः। लघुहस्तः शुचिः शूरः सज्जोपस्कृतभेषजः॥ प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमान्व्यवसायी प्रियंवदः। सत्यधर्म्मेपरो यश्च वैद्य ईदृक् प्रशस्यते ॥ २ ॥ (अर्थ)–गुरूसें अछीतरे शास्त्रकुं पढाहुवा होय दूसरे वडे वैद्योकों इलाज करते जिसनें देखा होय और आप रोगकुं पहचानकर चिकत्सा करणेमें चतुर होय और सिद्धहस्त अर्थात् जिस रोगीका इलाजकरे सो जलदी अच्छा होय सरीर मन और वस्त्रोसें पवित्र होय शूरवीर होय अच्छी २ औषधी चंद्रोदय प्रतापलंकेश्वर लक्ष्मीविलास चिंतामणि मृत्युंजय रामवाण सूचीभरण ब्रह्मास्त्रादिक जिसके पास तइयार होय तत्काल जिसकी बुद्धि फिरती होय रोगोंके अनुपानादिकमें बुद्धिमान होय संसारव्यवहारका जाणनेवाला होय प्यारा वचन वोलेणवाला होय सत्य और दयाधर्मका धारणेवाला होय एसा वैद्य लायक तारीफके होता है ॥ २ ॥ (श्लोक)–व्याधेः तत्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः। एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यप्रभुरायुषः ॥३॥ (अर्थ)–रोगोंके पहचाणनेका पांच कारण जो निदानादिक उस तत्वका जांणकार होय रोग मिटाणेकी औषधी पथ्य वताणेवाला होय वैद्यकी वैद्यकता इतनेमें हीं है, लेकिन् आयुष्य देणे समर्थ नहीं ॥ ३ ॥ (अव निषेध वैद्यके लक्षण) (श्लोक)–कुचैलः कर्कशः स्तब्धः कुग्रामी स्वयमागतः। पंच वैद्या न पूज्यन्ते धन्वंतरिसमा अपि ॥ ४ ॥ (अर्थ)–देही और वस्त्रकरके मलीन करडा कठोर वचन वोलणेवाला अभिमानी खोटे गांमका वासिंदा और संसार व्यवहारका नहीं जाणनेवाला विगर वुलाये चला आवे ये पांच वैद्य धन्वंतर जेसा भी होय तो भी पूजणेलायक नहीं॥४॥ (अथ रोगीके लक्षण) (श्लोक)–आयुष्मान् सत्ववान्साध्यो द्रव्यवानात्मवानपि। उच्यते व्याधितः पादो वैद्यवाक्यकृदास्तिकः ॥ ५ ॥ (अर्थ)–आयुवाला होय वलयुक्त साध्य द्रव्यवान् होय ज्ञानी वैद्यका आज्ञाकारी और आस्तिक अर्थात् वैद्यपर श्रद्धा रखणेवाला होणा ॥ ५ ॥ (उत्तम औषधीका लक्षण) (श्लोक)–प्रशस्तदेशसंभूतं प्रशस्तेहनि चोद्धृतं। अल्पमात्रं वहुगुणं गंधवर्णरसान्वितम् ॥ ६ ॥ (अर्थ)–उत्तम जगेमें पैदा भई होय और शुभदिन निकाली होय थोडी भी देणेसे गुण वहोतकरे दुर्गंधरहित देखणेमें अच्छी रसयुक्त

एसी औषध उत्तम है ॥ ६ ॥ (खराब औषधीके लक्षण) (श्लोक)–वल्मीककुत्सितानूपस्मशानोखरमार्गजाः । जंतुवन्हिहिमव्याप्ता नोषध्यः कार्यसाधकाः ॥ ७ ॥ (अर्थ)–इतनीं जगेकी औषधी रोग मिटाणीवाली नहीं होती सांपके बंबीकी खोटी जमीनकी जलके पासकी श्मसाणकी ऊखरकी जहां चूना निकलता होय उस जमीनकी और रस्तेकी कीडोंकी खाई भई अग्निसें जलीभई जाडेकी जलीभई एसी दवा रोगोंकों नहीं मिटासकती ॥ ७ ॥ (श्लोक)–स्निग्धोऽजुगुप्सुर्वलवान्युक्तो व्याधितरक्षणे । वैद्यवाक्यकृदश्रांतः पादः परिचरः स्मृतः ॥ ८ ॥ (अर्थ)– दूतके लक्षण) नवी अवस्थाका ताकतवर रोगीकी रक्षाकरणेमें तत्पर वैद्यके हुकमका करणेवाला आलसरहित एसा टहल बंदगी करणेवाला परिचारक दूत होणा ये च्यार पाये विना रोगीकी लंबी ऊमरविना नहीं मिलते संसारमें सर्व इल्म सीखणा फायदेबंद है, जिसमें भी दोयसें तो जरूर वाकब होणा चहिये प्रथम तो तन दुरस्तीका इल्म सोशास्त्रोंमें लिखाभी है, (श्लोक) धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनंयतः । अतो सम्यक्तनुं रक्षेन्नरकर्मविपाकवित् ॥ ९ ॥ (अर्थ)–धर्म १ धन २ काम ३ और मोक्ष ४ ये च्यारोंका साधन शरीरसें होता है, इसवास्ते कर्मोंके फल जाणनेवाले पुरुषोंनें रोगोंसें शरीरकूं हमेसां बचाणा यह श्लोक सारंगधर संहिताका है, बाद सरकारी कायदेसें जरूर वाकब होणा नहीं तो तन मन धन तीनोंकों तकलीप पोहचती है, यद्यपि सर्वज्ञका धर्म पूरा जांणके शक्ति मुजब और समय मुजब चलणेवाला इस शरीरका सुख और सरकारके कायदोंकी पाया बंधीवाला ही होता है, तोभी विशेषज्ञान करणेकों वैद्यदीपक ग्रंथकूं घरमें जरूरही रखना शरीरका साधन है, और कायदेकुं समझणेवास्ते ताजी रायत हिन्द समझणा जरूर है, इसग्रंथमें एसी दवायोंका संग्रह है, सो सबसें बणसके इसीवास्ते ही डाकटरी और होमिया पैथिक इलाज भी लिखा है, यह दवायां बहोत जगे मोल बिकती है, जो नियम रखते हैं, उनोकेवास्ते शुद्ध देशी इलाज लिखा है, मेरे इसग्रंथके जाहिरकरणेका यही मतलब है, के शरीर तो नासमान है, जो कुछ अजमायसी कांम और इलाज है, उनकूं जगतमें जाहिरकर देणा इल्म लेकर बांटणा यही कल्याण है, छिपा २ के रखणेपर आर्योंकी यह दशा होगई ये बात नापसंद है. धन्य है. सरकार अंग्रेजका राज्य जिसमें इल्म सिखाणेकूं जगे २ इस्कूल रोगियोंके लिये दवा खाणा सडकें दरख्त पानीके नल रोसनी चिठी मणियाडरमाल वगेरे घर बेठे पोहचाणेकों पोष्ट जो पुस्तक सोरूपेसें नहीं लिखाइ जाती सो आज ३ च्यार रूपेमें सुद्ध और जिल्दबंधी समेत मिलणे लगी एसे छापाखाने कहांतक तारीफ लिखें हमारे बडे २ एसेथे वो बात क्या काम हमारे आवे चलता प्रत्यक्ष उपगार सरकार अंग्रेजका हम देखते हैं. इनका राज्य साधन [illegible] रहे यह हम अंतःकरणसें चाहते हैं. जिसके राज्यमें सिंघ और बकरी एक घाटपर पाणी

पीरही है, अर्थात् वदमांस लुच्चोंकों दंड और सज्जनोंका प्रतिपाल होरहा है, राज्यधर्म एसाही श्रेयकारी है, किं वहुना.

पुस्तकमिलणेका ठिकाणा वीकानेर राजपूताना वडा उपासरापास उपाध्याय श्रीरामलालजीकी विद्याशालामें ये पुस्तक मिलेगा निछरावल रु ७।) पोष्ट खरच परदेशी ग्राहकोंकुं जुदा पडेगा दसपुस्तक एक संग लेणेवालेकूं रु. १०) सइकडे कमीसन मिलेगा.

हमारे इहां इतनी पुस्तकें छपीभयी तइयार है.

करुणावत्तीसी दादा गुरुदेव गायनपूजा.	।)
शोलेचाणक्य स्वरोदय शकुनावली भाषा.	।।।)
सिद्धमूर्त्तिविवेकविलास मूर्त्तिमंडणका अद्भुत ग्रंथ.	॥)
खरतरगछतप गछ ३७ पूजा गायनविधि स्तवनों समेत.	३)
श्रावग व्यवहार चतुराईका चमत्कार अनेक दृष्टांत.	१।)
रत्नसमुच्चय जैनीयोंका सर्व धर्मकर्त्तव्य रत्नसागरसें दोयसे वस्तु ज्यादा.	५।)
वैद्यदीपक भाग पहिला.	रु. ७)
भाग दुसरा छपेगा.	रु. ३॥)

रोग नहीं होणेके सामान्यकारण फागुण चेतके महीनेमें गुड नहीं खाणा आसोज कातीमें वहोत नहीं खाणा पोसके महीनेमें भूखा नहीं रहणा तो अदमीके रोग नहीं होता वेशाख जेठके महीने टाल दस महीनेदिनका सोणा नहीं दस्त पेसावकुं रोकणा नहीं रातकूं जागणा नहीं वसंतऋतू टालके, वहोत जल पीणा नहीं टेमसें ज्यादा या कम गरिष्ट पदार्थ खाणा नहीं असाढ सावण भादवे तीन महीनेमें मैथुन करणा नहीं वरसात वरसतेमें कुपथ्य नहीं, सरदऋतूमें जल ज्यादा पीणा भोजन करके ऊपरसें जल पीणा नहीं विना मिठे डालाभया गरम किया भया दूध भोजनपर पीणा हाजमा नहीं होय तो सींधानिमक भुनाजीरा डाल छाछ पीणा दूध पीणा नहीं भोजनकर २॥ घंटे पहले मैथुन नहीं करणा स्नान नहीं करणा २॥ घंटे पहली तेल नहीं मसलाणा पग चंपी नहीं करणा भोजनकर रस्ते चलणा नहीं दोडणा कुस्ती वगेरे २॥ घंटेतक करणा नहीं भोजन कियेवाद २ घडीवाद थोडा २ जल पीणा २ वखत हद ४ वखत रातके भोजन करणेसे प्राय हेजा और जलंदर रोग होता है, पांनवीडेमे १३ गुण है, तोभी खूनकी तासीर तथा पित्तरोगीकूं खाणा नहीं पांनवीडेके पहिलेके दो पीक थूक देणा तीसरा गिटणा पांनकी डंडी तोडदेणा पांच घंटे वीतेविगर भोजन करणा नहीं गरमीकी मोसममें ज्यादा मैथुन करणा नहीं भोजन करणेके पहले जल पीणा नहीं भूखा प्यासा रस्ते चलाभया दस्त पेसावकी संकायुक्त मैथुन करणा नहीं पांव उघराणे फिरणा नहीं सिरपर वोझा उठाणा नहीं उकडू आसन वहोत वैठणा नहीं रातकूं सातघंटेसे ज्यादा नींद

लेणा नहीं च्यार घडीके तडके पीछे मैथुन करणा नहीं तुरतका जमाया दही खाणा नहीं ऋतुधर्म बंध भई वृद्धास्त्रीसें रजश्वलासें रोगीस्त्रीसे चंडालादि अधमजातिसें मैथुन करणा नहीं मैथुनबाद जलपीणा नहीं दूध पीणा पांन बीडी खाणा हवाखाणा शरीर दबाणा गरम सुहावते जलसें स्नान करणा ॥ सूर्यकी धूप ज्यादा लेणी नही ठंडकालमें पीठकी तरफ धूप लेणी अग्नि ठंडकालमे सामनें दूर धरणी जहरी चीजोंका धूंआ लेणा नहीं गांजा सुलफा मदत चंडूल पीणा नहीं अशुद्ध और अग्निमें कच्ची रही धातू उपधातु यानाज वगेरे खाणा नहीं कसके पगडी बांधणी नहीं गरमागरम भोजन करणा नहीं ज्यों बहोत ठंडाभी खाणा नहीं विनाकारण क्रोध और अहंकार करणा नहीं उचित समय चूकणा नहीं, विश्वास प्रतीती होय तोही करणा असलसेखता नहीं कमसलसें नफा नहीं। नीमें हकीम खतरे ज्यांन नीमें मुल्ला खतरे इमान १ अर्थात् हकीम और उपदेशक ये दोनों पूरे पंडितहीकी दवा और उपदेश कबूल करणा गलीमें २ दवा फूंकी धातु बेचे उनोंसें लेणी नहीं लेणी तो जो वो दवा अछी तरे फूंक जाणता होय उसकी आज्ञासें लेणी विना जाणी कोइभी चीज मूंमें डालणी नहीं राजका महसुल चोरणा नहीं विनाकारण जीवदया टाल झूट बोलणा नहीं चोरी छोटी या बडी करणी नहीं औरतोंकीमें फिलमें रातदिन बैठणा नहीं काम व्यवहार विचारके करणा बडे २ भाग्यवांन पंडितोंकी और संकटमें सहाय करे एसोंसें दोस्ती करणी अणजाणे जलमें घुसणा नहीं ठंडे जलसे स्नान कर गरम भोजन करणा नही गरम जलसे स्नान कर ठंडा भोजन करणा नहीं रोगी आदमीके संग भोजन करणा नहीं उसके बिछाणे सोणा नहीं धूपमें फिर कर गरम शरीरसें जल पीणा नहीं स्नान करणा नहीं जहरी जांनवर तथा दुष्ट पाडोसी होय तो निशंक सोणा नहीं लडु वगेरे खानपान रंग बदले दुरगंध आवे मुदत बीते बाद खाणा नहीं पत्तोंका साग जादा मिरच मसाला खटाइ हींग तेल गुल रगपा नहीं रोगके मुजब पथ्य करणा यथाशक्ति दांन ग्यान हमेसां सीखणा या सुपना इत्यकी और सत्य बोलणेवालेकी कदर देव गुरुका दरसण कर स्तवना करणी इनबातोंसे दीर्घायु और रोग नहीं आता इति ॥

(प्रश्न) आप यह अपूर्व वैद्यक ग्रंथकेसें अभ्यास किया क्योंके मारवाडमें इन दिनोंमें रस विद्याका प्रचार वैद्योमें नहीं देखनेमें आता है और जो कुछ रसकपूर हिंगूल पारा वगेरेकी अशुद्ध दवाका धूंआ पीणा वफारा गूंआणा इत्यादिक मुजाक गरमी गंठिया भगंदर कीडी नगरा आदि रोगोंमें देते हैं उसमें कितने एक रोगी एक पेर आराम हो जाते हैं फेर अनेक नासूर कोट रगतपित्त गंठीया लालचा गलघा स्वरभंग शरीरपर चकते देह भयानक रूप सोजा आदि अनेक रोगोंको भोगते मरणांत कष्ट पाते हैं फेर चतुर वैद्योमेंभी एकाएक नहीं सुधरने इनबात्ते हमारे मारवाडी जनकी बेइतबार विनाशी

ग पूंछके एसा कहते हैं की धातू सर्वथा नहीं लेणी इहांतक रसोंका विश्वास जाता रहा और आपने वडे२ भयंकर रोग मिटाये सो इसधातुहीकी दवायोंसें बारा वर्षसें हम देख रहे हैं आपके रसोसें विगाड आजतक किसीका नहीं देखा यहभी आपके अनुभवका विज्ञान अधिक देखा सो रोगी जो असाध्य होय तो उसका नहीं सुधरणा जो आप फुरमाते हो वो सइकडों जगे हमने पतवाणा है फेर किसी वैद्योंसे हमने सुधारता नहीं देखा नही सुणा है इस वैद्यविद्याकी आपके इलाजोंकी प्रसंसा हमने वहोत२ ब्राह्मणोंसें जेनीयोंसें अनेक दिसावरोंके अच्छै२ पंडितोसें सुणी है हम तो आपके कृपाभिलाषी विद्यार्थी शिष्य हैं तारीफ लिखे जितनी लिख सकते हैं लेकिन् हाथ कंगणकों आरसी क्या हजारों वैद्य गणतारोमें आप चंद्र है धर्मके न्याय पक्षमें आप सूर्य है जो किसी समझदारने आपके मुखारविंदकी अनेक नयोंकरके युक्त वाणी और समय२के दृष्टांत सुणा है वो तो धन्यवाद दिये विगर कभी रहा नहीं और रहेगा नहीं और आपकेपास इस वैद्य विद्याकी जिसने संथा ली है वो जगतमें अवस्य मांनने और पूजा प्रतिष्ठाके दरजे पहुंचा है, ओर आपका हृदय इस विद्या दानमें एसा निर्मल कल्पवृक्षकी उपम हें सो अंतःकरणसे आप सिखा देते हैं कपट विलकुल नहीं रखते ईश्वरसे हमारी यही प्रार्थना है आपका यह अमूल्य चिंतामणी रत्नरूप जीवितारोग्य चिरस्थाई रहे जिसमें विद्या भास्करके प्रकाशसें दुष्ट कुमतिरूप अंधकार आर्योंके हृदयसें निकलता जाय किंवहुना कलम पुष्करणा मुहता पं० विष्णुदत्तशर्मा विद्यार्थी शिष्य हाल मु० लातुरका गौड पं० कमलनयनशर्मा विद्यार्थी शिष्य हाल मुकाम कुरुक्षेत्र का उ० श्रीउदयचंदजीगणिः वीकानेर विद्यार्थी पं० श्रीजीवणमलमुनिः विद्यार्थी मु० वीकानेर श्रीजगन्नाथदाधीचमिश्र शर्मा विद्यार्थी शिष्य मु० वीकानेर से। श्रीनथमल विद्यार्थी मु० कलकत्ता पं० भेरुंलाल आसोफा विद्यार्थी शिष्य दाधीचशर्मा इत्यादि अनेक विद्यार्थीयोंके प्रशंसापत्र शुभं ॥

(उत्तर)—अहो प्रिय पाठकगणो मेरी जन्मभूमि वंगाल देशमें मुख्य राजधानीमें मुरसिदावाद वालूचर जीयागंज है उहां कोटंविक द्विज सारस्वत गोकुलचंद्र मेरे पिताका नाम है. माताका नांम वसंती था जव में सात वर्षका भया तव पिताने वंगला सीखणे विठलाया लेकिन् माष्टरके भयसें फेर सीखणे नहीं गया ये वात इकवीसे सालकी है विक्रमशताब्द उगणीसके खैल कुतुहलमें मस्त रहता मेरा पिता नोकरीवास्ते रंगपुर गया पीछेसे २२ का काल पडा मेरी मां कइंया साथ असपतोंके इहां कार्य करणे रही में रायवहादुर श्रीलक्ष्मीपतिसिंघजीकी कोठीमें रहता राजा वावू छत्रसिंघजीके पास टीपीका खेलमें मस्त रहता उस वखत मुलतानका कोठारी मोतीलाल जो वडी कोठीके दांनशालामें गंगाकिनारे रहता था उसने मुझे रेल दिखाणेके वाहने अजीमगंज ले गया मेनें अपूर्व वस्तु देखी यह वात साल तेईसके पोषकी है मुझे कहा रेल चढेगा मेंने वडे

हर्षसें कहा चढूंगा उस दिनोंमें मेरा पिता पांवसें किसी जखमी फोडेसे लाचार होय वालूचर आया था हलचल नहीं सकता था मेरे भाइ या वहन नहीं थी एकाएक था उस वणिक धूर्त्तने मुझसें वोला तेरे पिछाडी कोन है मेंनें मावाप वताया तव उसनें सोचा होगा स्यात् सरकारी एनसें पकडा न जाउं तव मुझे पीछा धरमगोदारेमें विठलाके वालूचर भेज दिया जवसें में मेरी मांसे रेल चढा ये नित हठ किया करता दिन १५ या २० वाद एक दिन सडकपर लाखकी टिप्पी खेलतेकूं पूर्वोक्त धूर्त्तनें मुझे फेर वतलाया मेने कहा रेल चढाओ उसने कहा तेरी मांसे पूछवा दे में उसका हाथ धर घरकी तरफ ले चला वो धूर्त्त मेरे पिताके भयसे घरके पास सडकपर खडा रहकर मेरेकूं वोला तेरी माकूं इहां वुला ला में जवरदस्ती रोकर माकूं वुला लाया मेरा वाप पीडासे विकल था धूर्त्तने कहा में नलहट्टी जाताहुं तुमारा लडका केइ दिनोसें रेल चढणेवास्ते कहता है अगर तुमारी इजाजत हो तो में परसुं पीछा आउंगा सो लेते आउंगा मेरी मांने रहनेका पत्ता उसका पूछा और आज दिनतक किसी साहूकारने उहां एसी कपटता करी नहीं थी भवतव्यता प्रवल दुसरे दिन प्रभातमूं आंधारे रेलपर मुझें लेगया उहां एक वुड्ढेभी टिकटले आवेठे वो परम पूज्य श्रीसाधूजी महाराज धनरूपजी नांमके यती थे ऊमर उनोकी ६० की थी वस दिल्ली पहुंचे वो धूर्त्त उनोसें खरचा लेकर मुलतान चल धरा हमारे आधार उस परम पुरपका रह गया २३ के फल्गुनमें वीकानेर पहुंचे वडे शांतशील पुरुपोत्तमनें पढाणा सरू किया आखिर हेमकोश तक पढ गया पीछे व्याकरणचंद्रिका डीड वाणेके वासिंदे ओदीच्य ब्राह्मन श्रीरामचंद्रजी पट् शास्त्रीसे डेढ वर्षके करीव पढा कुछ गुनूजी गुसांइसेंभी पढा जव वारे मासी धर्म कर्त्तव्य जीव विचारादि पट् प्रकरण सूत्र पूज्यने पढाये अनुक्रमसें अठाईसकी साल माघवदि तेरसकों पंडित पदकी दिक्षा देकर द्विजन्मा वणाया हमारे पूज्यके वडे दो शिष्य थे पं० श्रीहर्षचंदजीमुनिः पं० करमचंदजीमुनिः वडे शिष्य गुरूसें अलग रहते थे पूज्यने मकसूदावाद जाते अपणा सर्वस्व द्रव्य वोसिराय छोटे शिष्यके सुप्रत कर दिया था ये पढणेमें लिखणेमें पूठे फांटीये वणाणे कतरणीके कांम कोरणी करणेमें पुस्तककी पटडी गत्ता वणाणेमें अद्वितीय विश्वकर्मा थे गूंथणा रंगणा सीणा और तंत्रविद्यामें वडेही प्रवीण थे उनोनें केइयक चमत्कारीक तंत्रभी मुझें सिखलाये थे वाद किसी कारण योगसें उनोंका मेरेपर द्वेष पड गया सत्य है क्रोधादिकषाय गुणस्थानक चढते उपशम श्रेणिमें इग्यारमें गुणठाणमें मुनियोकों नीचे गिराता है अज्ञानके वश सव अकृत्यवण आता है. आजकलके मनुष्योंकी तो चकारीही क्या में संगतसे भंग पीणा और मेहका फाटका करणे लगा संगतका असर वुरा है (दूहा) सतसंगमें सुधरे नही, सो मोटा निरभाग, कुसंगसें विगडे नहीं, ताका मोटा भाग १ उनका द्वेषभी मेरे हितके वास्ते भया निर्वाहका

फिकर लगा इसी कारण में लिखणाभी वहोत जलदी सीखा और पुस्तकें लिखणे लगा उस वखत श्रीपूज्यजी हंससूरजी तीसकी सालमें मुझें दफतरीका कायदा वगसा वहोत ग्रंथोके देखणेसें में जोडन कला भाषाकी सामान्य कविताईभी करणे लगा गायन कला भी सीखा पांच श्रीमोतीचंद्रजीमुनिः पास सुभाषित और उवाई सूत्रवृत्ति सव सूत्रोंकी माई पढी दफतरके प्रताप ओस वंशकी वंशावली चवदेसे चम्मालीस गोत्रोंकी इतिहास समेत जाणनेमें आई ये प्रताप सव गणेश्वरकी कृपाका था वाद पं० श्रीधनजी जतीके संग मुंवईके आदेशपर गया उहां प्रतिक्रमणविधि मंडल पूजादि विधि सीखणेमें आई ३२का चोमासा मुंवई चिंतामणजीके पाटिये किया उहां सोनाटोलीके धूर्तोके हाथ सो रुपे ठगाये अक्षर इहांतक जम गया सो अंबालाल गुजराती जैन पांच रुपे हजार श्लोकोंका देणे लगा उहां पूनेका महाराष्ट्र पंडित षट्शास्त्रीसे लालवागमें गीतगोविंदकाव्य श्रीकृष्ण विहारीका तथा वैद्यजीवन लोलिंवराज ये दोय काव्य पढा वखतावर जीमुनि पासपन्नवणा सूत्र पढा उहांसे तेतीसका चोमासा हेदरावादका किया वेगम वजारमें उहां अमलीका कष्ट मिरच हींग खाणेसें उपदंश मालम पडा एक वेकूव वैद्यनें रस कपूर दिया खुराक गोचरीमें पूर्वोक्त सव खाता उसनें मना कुछ नहीं किया सव व्याधीकी जड फिरंगकी गंठिया सांधे पकड गये फेर जिस वैद्योंकों वुलाया वोभी पांच२ चार२ रुपे लेगये और अशुद्ध पारा देणे लगे मसूंडे फूलतेही पारा समझ छोड देता एसे पांच च्यार शठोंसे धोखा पाया मुझकों इस विद्या सीखणेकी वहोत खयास भई उस पीडासें मरणांत कष्ट तक पहुंचा जव फेर चोतीसके कार्त्तिक में मुंवई पहुंचा उहां लूंपक गच्छी श्रीमाणकचंदजी जतीनें मेरा सव पूर्वावस्था पूछके वमनकी गुटिका देकर क्यालोमेल अंग्रेजी रस कपूर मखनमें चटाया तीसरे दिन मसूडे फूले मंजन कराया फेर मेरी भूख खुली उनोंनें केइयक पात्र जांण सव जैन मंत्र चमत्कारीक तंत्रभी सिखलाया पूत्राम्नायका सव फल तिजयपताका यंत्रभी सिखाया केइ२ औषधी अनुभविक सिखाई फेर मिगसर शुक्लांतमें पूज्य पादके दरशणकूं वीकानेरकुं आया मेरा आणेपर पारखोके खणका पूठिया श्रीजीनें मुझें सुव्रत किया इहां उत्तराध्ययन सूत्रका जयघोष विजयघोष ब्राह्मणोंकै अध्ययनका व्याख्यान किया महावल मलया सुंदरीकी चतुष्पदी वांची पैंतीसकी सालका आदेश श्रीजीके हुक्मसें अमरावतीका चातुर्मास किया इहां रूपचंद वालापुरके श्रावकसें जुलाव मलम केइयक अजमायस चुटकले सीखा ये श्रावक फूलचंदजी लोंका गच्छके जतीसें सीखाथा सोमलकी क्रिया वहोतही सद्यफलदभी मुझें सिखलाई इहां अंवादेवीके मंदिर पास एक दिगंवर अग्रवाल और एक परवाल वणियेकी संगतसें में कुछ २ दिगांवर जैनोंके वातोसेंभी वाकव भया कर्मयोगसें नायका भेद ग्रंथ सीखणेकी चटपटी एक मौलवी मुसलमांनसे मुझें लगी इहां इस कहणा वटकीभी परीक्षा होगई (दुहा) वो खावे

अरुवोडसें, उनका जहरी अंग, इन तीनोंसें वचता रहणा, भोजक भूत भुजंग १ और सेवडेकी जातकूं सिलाम सात कीजीयें इसकी परीक्षा कुछ तौ पहली हेदरावादमें कीथी इहां दृढ विश्वास पाया इहांसें नागपुर गया इहां राजवैद्यके घराणादार केशवचंदजी पंडित जती वडे उदार और दयाल थे हमारी हिफाजत वहोत करी उहां भाव हर्ष गच्छके श्रीपूज्यजी चंद्रसूरजीके संग वडे विद्वान सभा चतुर सुभाषित भंडार श्रीजुहारमलजी पंडितवरनें मुझें जंबूद्वीप पन्नत्ती सूत्र तथा चार प्रकरण जीव विचार नवतत्व दंडक संग्रहणी ये सर्वोका अर्थ दोय महीनेमें खूवही सिखा दिया औरभी जैनधर्मकी केइवाते सीखी उहां खरतरगच्छी रायचंदजी जती एक राजवैद्य एक महाराष्ट्र ब्राह्मण एक हकीम मुसलमीनभी नामी था उनोंकीभी संगत कभी २ होती उहांसे पीछा अमरावती आया वरोडे गया चंद्रकी चोपइ वांची फेर वेद मुंहता पदमसी नेणसीके मुनीम पूनमचंदजीनें तीन चिठी मुझकूं हेदरावाद कोठीमें वुलाणेकुं दी उहांसे अंतरीकजी पार्श्वनाजीकी यात्रा कर व्राणपुरके १८ मंदिरोके दरशण कर हेदरावाद गया उहां मेंनें व्याख्यान सरू कीया निहालचंद पूनमचंदजी गोलछावडा गुणका रागी और उक्त मूनीमजी दोनोंनें वडे अनुरागसें मेरा इल्म वधाणेकूं किसन गढके पारखके मुनीम लोटा जालमचंदजीकों व्याख्यान सुणने वुलाया मेरे विद्यावृद्धिका वखत आया ये श्रावक लूंणीयागजमलजीके पासही छोटेसे वडा अजमेरमें भया था इसने मुझें अनेक जैन शास्त्रोंके रहस्य और वागभट्टादि शास्त्रोंके वैद्यक रहस्य प्रतिवादियोंके कुतर्कका खंडन हकीमी यूनानी नुसके सरवत गुरव्वा चटनी घी तेल प्रमुख वणानेकी क्रिया गुप्त जवानीसें वताते रहा उस वखत माहाराष्ट्री भाषा संयुक्त तीन भाग निघंट रत्नाकर च्यार लाख श्लोकोंकी एक संहिता मेंनें पाई जिसमें वैद्य वैद्यके चीरणा और गोली शस्त्र निकालणे शस्त्रविद्या टाल और संपूर्ण सातोंइ अंगतीनोंइ चिकित्साथी संस्कृतका घोष था जालमचंदजीकी शिक्षासें इस सातोंइ अंगके अर्थसें सामान्य तौर वाकव हुवा नायका भेद ज्ञातयोवना अज्ञात योवनादि भेदभेदांतर कुछ२ समझणे लगा कवितांई वडी तत्वोंका कुछ२ वाकवकार भया पैंतालीस आगमकी पूजा तीसकी साल्में वीकानेरमें पधारे थी इहांपर वीस विहरमानजीकी वणाइ स्तवन छंद लावण्यां वगेरे तो हजारोंही वणाये लेकिन कठाग पाठ ज्यादा श्लोक नहीं थे इधर परम गुरु ४ दिनके अपसपसें वीकानेरमें स्वर्ग पधारे वडा अपसोस उनोंके उपगारका आया मेंने उनोंकी पादरी नही वजाई और उहां एक पूनमचंद भोजक वडा चमत्कारी तांत्रिक देवी उपासी था उनकूं मेंने वीस चमत्कार मंत्रतांत्रिक दिखलाये इस सीखणेके वदले उसनें दोयसे रुपही मुझकों इनामल करया जवसें मानिक दश रखा उनकूं में देखे लगा वो वडा सरल स्वभावी और कुंवारा था उहांसें मेंनें गुलवरगे चोमासा किया उहां मंत्रादि चमत्कारोंसें

जतियोंके नामका डंका वजाया वाद वेगम वजार हेदरावाद इकतालीसमें मकान भाडे लेकर जा रहा वैद्यक परिश्रम करणा सरू किया रातको दो वजेसें ७ वजे तक पढता पांच ग्रंथ मूंकर लिये माधवनिदान योगचिंतामणी सारंगधर वैद्यजीवन और कामिल २ श्लोक निघंट रत्नाकरके खैर इसही अभ्यासमें हमारे श्रीपूज्यजी महाराज चंद्रसूरजी उहां पधारे उनोंकी सरवरावास्ते सेठ संघमुख्य मगनमलजी श्रावकसें मुलाखात भई महाराजकी सरवरा वहोतही करी लेकिन् मेरे पढी विद्याका रमणक और राज्य सभाकी वाकवी और इल्मका तजुरवा इसी पुरुषकी संगतसें वढते चला में इहांतक सरलथाकी धूर्त्तोंके हाथ हजारों रुपे विश्वाससें दे देकर ठगाये गया व्याजके लालचसें वहोतोनें गिरीवीमें खोटा माल विश्वाससें धर२के ठग लिया मीयां कमावे मुठे२ अल्ला ले गया उंठे२ वो हाल लातूर पेठ तीन वखत साहूकारोनें इलाजकेवास्ते वुलाया उहां सातोंइ धातू क्रमसें फूंकी विद्यार्थी विष्णुदत्त जव हमारे पासही रहता था अभ्यास करणे हैदरावादमें करीव १० ब्राह्मन आते थे विद्या वहोत पुखत और तरक्की परथी रोगोंका इलाजभी होणे लगा जस वढणे लगा वडे२ वैद्य च्यारोंसे मोहवत वंधी संभइया तैलंग ब्राह्मण वैद्य धुरंधर ७० वर्षका सिधू मुनरवाड तैलंग ये डाकटरी और रसक्रियामें वडाही प्रवीण था इसकी संगत और इस रसोंकी नइ२ तरकी वकी हमेस पहर२ भर गोष्टी भया करती रामलालजी पारीक ब्राह्मण थे आत्मारामजी दादू पंथी वूंदीवाला साक्षात दुसरा धन्वंतरी था उसका विद्यार्थी गणेशलालजी जो कोटेमें रहते हैं उनोंकी खरल इनोंने छ वर्ष घोटी थी इनोंसें मेरी वडी प्रीती थी इन तीनोके संग मेरा इलाजोंका रोगीयोंपर केइ वखत काम पडा था चोथा लोका वापू तैलंग ब्राह्मन अनुपांनके वदलणेमें और रसोके वरतणेमें वडा नामी था उसका इलाजभी शिवलाल मोतीलाल पीतीकी वेटीका जापेमें हिस्टिरीया तथा और दोचार जगे इलाज देखणेमें आया संभइयेने केइयक धातु तांवेश्वरकी अभ्रककी सहज तरकीव फूंकणेकी वताइ कच्ची धातू रह जाय उसकी परीक्षा वताई काष्टादिक तथा जहरादिकोंके सोधणेकी तरकीव वताई सेठ श्रीमगनमलजी के इहां दो वखत जीमणा दोनों वखत उनोसें वातचीत हरेक वात धर्म संवंधी वैद्यकके सातों अंगकी भया करती उनोंके सहारेसे नफे नुकसांनकाभी कुछ खयाल भया दोनों भवोंका राजमृगांक पारदभस्म हेमगर्भ पोटलीरसभी इनोंकों मेनें वणाकर दी हेमगर्भ पोटली रस इंकन्ना कच्चे गांधीनें वणाणी सिखलाई जिससे वुद्धिद्वारा सव पोटलीरस मुझे वणाणा आगया चंद्रोदयभी मेंनें अपणे हाथसे दो वखत वणा लिया पारेके शुद्ध करणेके आठोंइ संस्कार मेंनें केइ वखत कर डाला इस संस्कार विधिकों संभइया महाराष्ट्र द्रविड वडे२ विद्वान वैद्योनें मुझे अतीव२ धन्यवाद दिया साल पेतालीसमें हमारे गुरु ..चंदजी हैदरावाद पधारे उनोंकी सेवा पांचसे रुपेसें करी तव उनोनें प्रसन्न होकर

रावण पताका सूर्य पताका आदि ३५ यंत्र और जैनाम्नायके रोग मिटाणेके सो मंत्रविधि समेत पतवाणे भये बताये सो सब सत्य फलद थे वो फेर सिद्धगिरी गिरनार यात्रा कर बीकानेर पधारे हमारे शिष्य श्रीमाली ब्राह्मनकूं दीक्षा जा करदी बाद ढूंढक मत पराक्त नाटक गुजराती छापेका एक जेठा कच्छी श्रावकने भेट की वंसीधरलालाने अज्ञान तिमर भास्कर और आर्य देशविवस्था भेट की इन तीनोंके पढणेसें वेदशास्त्र व्यवस्था और दयानंदजीका छल इत्यादिमें वहोत वाकब हुवा साल छयालीसमें गोविंददाश सराव-गीका इलाज करणे मुंबइ गया पीछा जब आया तब आर्यासमाजी याज्ञेश्वरानंदकी सभा भई केइयक ब्राह्मन विद्वान चर्चामें साक्षी थे नियम था ना जवाब होय सो धर्म छोडे तीन दिन वडी चर्चामें खंडन मंडन विषय वहोत चला आखिर सब जुवाबोंकी विजय पाकर श्रीनेमचंदजी जेपुरवालोंके समक्ष १० जती और छया तीसकी आखा तीजकूं शिष्य हमारा जती बणाया सभानें तथा शिष्यने युक्ति वारिधिः पद लिखा मुंबइमें श्रीधर शिवलालसें विक्रियार्थ २५ रुपे सइकडे कमीसनसे व्याकरण काव्य कोश वेदांत न्याय छंद अलंकार नाटक ज्योतिष वैद्यक भारत वाल्मीक संप्रदायोंके अनेक शास्त्र कमीशन द्वारा वेचणे लगा और वांचते रहता दो वर्षमें अन्य मतांतरीयोंके पौराणादिक अनेक पूर्वोक्त शास्त्रोंके रहस्यका जांणकार होगया लक्ष्मणभट्टकों मैंनें वडे कष्टसें बचाया था वो श्रीरा-मपंडित निजाम सरकारका पांचसे रुपे मासिक पगार पाणेवालेकों वेद पढाया करता उसके भाइका जीर्णज्वर उपद्रव संयुक्त मैंनें इलाज किया आमदरफतसें जर्मनके रूपे वेद साठ हजार मुझें बतलाया ब्राह्मन सिवाय वेद कभी ब्राह्मन सुणना पढणा तो दूर रहा लेकिन आंखोंसें पुस्तक कभी नहीं दिखाते लेकिन् संसारमें धन्य२ महिमा है. इस वैद्यविद्याके उपगारकी सो वो भट्टजी और पंडित श्रीरामजी अंतरंगसें सब मूल और अर्थ मुझे बतादिया जब जैनोकी बातकभी मूंपर लाते तो आखिर उनकों जवाबमें मौन ही करणा पडता इस तरे चारोंही वेदोंका सारांस समझणेमें आया और केइयक हस्त लाघवता रसायण क्रिया अनेक चालाकोंसें बपणे जाती कायदेसें हासलकी (सर्व मूर्ति श्वेतांबरा) इति वचनात् संवत सैंतालीस तक बीकानेर राणेका दिलमें विचार बिल-कुल नहीं था फकत शिखरगिरीकी यात्रा और कुटंब यात्रा आदि कल्याणकभूमि परमेश्व-रोंकी उमेद किया करता हीरालाल अजबालाकी सोबत दिगंबरमें समयसार नाटक और तत्वार्थ सूत्र दसुं पटे तबसें दिगंबर वार्तालापमें सनातन धर्मवालोंमें तर्क पैदा होने लगी कारण दिगांबर मत जिन सेनाचार्य पुर्वधारी एकका शास्त्र लिखा भया है सनातन श्वेतांबरोका शास्त्र पांचसे आचार्योंकी सम्मतीका लिखा भया है मुख्य देखीने मनी आचार्य और चारे हजार साधू जमा भये थे उनांसे पीछापडत होकर मनोमें मोक्षी सलफाई बंदरमें सेंतालीसका चतुर्मास किया बाद हैदराबाद आया जिसमें लिखा-

लजीसें वांची दशवीकालिकसूत्र रायप्रश्नी ज्ञाता अंतगड दशा प्रमुख सूत्र नेमचरित्र राम चरित्र प्रद्युम्न चरित्र गुणमाला प्रकरण आत्मप्रबोध प्रकरण दानादिकुलक शांतिनाथ चरित्र वर्द्धमांन देशना वैराग्यशतक गुणस्थान क्रमारोह गौतम प्रच्छाफेर अनेक धर्मिक अवलोकन किया और शरीर कुशलतामें अशुद्ध पारेके प्रताप कंठमाल जानू नासूर भगंदर संधिवातादिक अनेक रोगोंका इलाज मेरे शरीरका मेनेंही करके अच्छा किया दुसरे वडे२ भारी रोगोंका इलाज वीकानेरमें दो हजार अदमी मेनें अछै किये होंगे असाध्य वैमार मेरे पास वहोत आते हैं, कष्टसाध्यतकमें सुधारसकताहूं दवायां मेरे पास अनेक रस धातू फूंकी भई शुद्ध तइयार है, तुम लोकोंकों इल्म सिखाया फेर सीखाणेकी उमेद रखताहुं वहोत वात मेनें विद्यालाभादिक नफे नुकसांनोकी ग्रंथ वढ जाणेके सवव नहीं लिखी है, सं० १९५८ के माघमें श्रीपूज्यजीने मुझें उपाध्याय पद दिया इहांसे फेर वारे वर्षमें च्यार पांच वपत मेंने देशाटन किया उहांभी वहोतसें इल्म और सत्संगत भई (श्लोक) संसार विषवृक्षस्य, द्वेफलअमृतोपमे, काव्यामृत रसस्वाद, संगमं सज्जनैःसह १ ये वात में जाणकर अपूर्व ग्रंथ वांचणेकूं हमेस उमेदवार रहता हुं संसारमें भले वुरे सव तरेके अदमी है ठोकर खाकर सुधर जाणा वुद्धिवानोंका काम है विद्या सव पूराणी पडणेसें भूल पाती है वैद्यक विद्या ज्यों पुराणी होती जाती है, त्यों त्यों वढती जाती है सोध अंग्रेज लोक ज्यों ज्यों पदार्थोंकी वढाते जाते हैं, मेंनेभी इस मुजव अपने क्षयोपशम माफक और द्रव्य माफककेई वाते वढाई है इसारा तो उनोंकोभी शास्त्रका है, मुझेंभी वोही है, इनोंका संप धन मदत राज्य सासनके सवव दिप२ कर रही है, इन च्यारोंकी न्यूनता होणेसें दीपक मन मंदरमें प्रकाशित है, प्राचीन शास्त्रकार त्रिकालदर्शी थे नही पढणा ये हमारी भूल है, इस वखत स्वतंत्रतामें जो फल वुद्धिमांनोकों दोनोंभवोंका हासिल होता है, सो परतंत्रतामें कभी नहीं होता इय वातमें ने वहोत दूरकी लिखी है, जैसी वुद्धि होगी वो उतनीही समझ लेगा इस वखत मेरे शिष्यकामिल विद्याके निजके पाले भये तीन है, पं० क्षेमचंद पेमचंद अमरचंद इग्यारे किये केइ मर गये केइ चले गये चेला और पुत्रवोही है, जो गुरु मातापिताका भक्त होय और गुरुका अवर्णवादी होय और धनके लालचसें चेला होय स्वार्थके वश लाचारी करे फेर जेसा का तेसा एसे कुशिष्यकों शिष्य नहीं समझा जावै विनारसकी तरे विद्यार्थी शिष्य आजतक मेरे २५ है, वो सव आज्ञाकारी है, इसतरे वैद्य विद्या हासिलकी और वैद्यदीपक प्रकाशका पूर्णताभी आया छपाणे दिया गया ॥ सं० १९६२ में मेरी अवस्था अंदजन ४८ वर्षकी है, ५३ की सालमें दादासाहिवकी वडी पूजा मेनें वणाई है, थूलभद्रजीका नाटिक मेंनें वणाया कल्पद्रुमकलिकाकी तथा वारेमासी पर्वोंकी श्रीपालचरित्रकी हिन्दुस्थानी भाषाकी संकलना मेंने करी है, आठ ग्रंथ छपे हैं, पचीस

ग्रंथ हिन्दुस्थानी भाषाके संकलित लिखे भये तइयार है, भाषा हिन्दुस्थानी सर्व देशमानीय है (दुहा) इधर उधरके लाख रुपइये, अठी उठीके हजार, इकडम निकडम आठ आना, सूमापइसा चार १ इसवास्ते ये भाषा सर्वोपरी है, शास्त्रोंके वांचणे और सुणणेसें जो जो शकाओं और कुतर्क थी सो सब स्वत मिटती चली गई इससे ठीक २ सिद्ध भया जितना अर्द्धदग्धपणा है, सोही कुतर्क संका पैदा करणेकी जड है, सब शास्त्रोंमें बहुश्रुतीपणा श्रेयस्कर है, (दुहा) मरियासो झिलके नहीं, झलके सो आया, मिनखांतणी पारखा बोल्या और लाधा १ इस वैद्यविद्याके प्रताप बडे बडे श्रीमंतोसे मुलाखात चतुराई इस भव सुधारणेकी शक्ति विशेष कर पर भव सुधारणेकी शक्ति चमत्कारीक मंत्र तंत्र यंत्र सब बातें इसकों हासिल भई और होयगी वैद्यविद्या कभी निफल नहीं जाती इसही वास्ते अंग्रेज सिरकार जेसा हुक्म डांकटरोंका रखते हैं वेसी इनोंकी चढती कलाका सब बातोंका वखत है, ये बात एसीही हमारे पांडवादि राजोंके वखतथी जैन वैद्य वागभट्ट वृद्ध राजाधर्म राजा ना वैद्य था उस वखत अनेकानेक वैद्य एसी कुदरत और हुकमत धराते थे यवन बाद साहोंके ठकमान आदि हकीमभी आर्यावर्त्तके गये भये नांमी भये थे इस वखत देशी वैद्य विद्या पारगामी हजारोमें एक मिलेगा बाकी तो फकत चिकित्सक मात्र इस नाकदरदानीके सबब आय रहे हैं, यह वैद्यविद्या संसारमें अपूर्व वस्तु है, वैद्य लोकोंने लकडी हाथमें रखणी सरू करी है. सो प्रथा प्राय मूसा पैकंबरसें चली है, मूसेकों एक लकडी एसी मिली थी सो प्राय तेरह के जहर उतारणे और केइ रोगोकों मिटाणेवाली एसी जडी हाथमें रखता था अब तो स्यात् स्वानादिकोंके डरसें रखते होंगे बाकी तो लकडी रखणेमें केइयक तो जाहर गुण है. (दुहा) जलथा गण नाग लिछकारण, वैरी मारण दंत लकडीमें गुण है घणा, राखो वैद्य रखत १ वैद्यक ज्योतष विद्या आदि सर्व विद्याका पीहर तो ब्राह्मणोंके घर है, और सामग जतियोके घर है. लोक एसा कहते हैं क्योंके पुस्तकके पत्रेकतरणा लीके फांटीये पूठा पटडी विटांगणोंमें बांधणा सो घणा इनाल हिंगूलेसें अलंकृत करणा वटी हिफाजतमें रखणा दोदो हजार २५ से वर्षोंकी करीप लिखी पुस्तके भंडारोंमें रखणी ये सब चतुर विद्वत्ता सरस्वतीका सामरखाना सिद्ध होता है, इसमें विपरीत अवस्था शिथिल पंचनादिक माथणीके पास सरस्वतीका देखणेमें आता है पुस्तकोंका इसमें पीलग्गी अवस्था सिद्ध होती है मेने माया गेलांदेव प्रोक्ता ये श्लोक लिखा है उसका अर्थमें न्यारेन्यारे मतोवाले शोभित होंगे लेकिन उसका असली अर्थ उन लोकोंके मनकी पुष्टिका हेतु था आजकी वखत उसमें लोक विपरीत चलणे लगे है, इनवास्ते हीन दशाके प्राप्त होकर कम सब सम्प्रदाय होते चला जो दिखता है ॥ मायाका अर्थ प्रगट है सो गेलांदेवमें थी सो सब देवोंकी स्त्री थी, सब देवोंकेवास्ते थी कारण सब देवोंने लोक ईश्वर और कर्ता होनी लिखे, सरस्वतीकर्ता

पणा मांनते हैं इसवास्ते अपणी ईश्वरता याने (ऐश्वर्यता प्रगट करणेकों) मायाकूं अग्रेश्वरीपणा दिया था विना जैन दीक्षा लिये सूत्रोंका तत्त्व नहीं पढाणा आदि अन्य दर्शनीयोंकूं अपणी चमत्कारीपणेकी विद्या नहीं सिखलाणे आदि वहोत वातोंमें माया रखते थे इसवास्तेही सर्वदर्शनियोंकी परीक्षा करणेपर विद्या मंत्र तंत्र गायन दादिलादि एकसो आठ विधान समकालमें वादसाह पिरोजसाहके सांमने जतियोनें करके दिखाई अमावसकी पूनम मकाननाडोलाइका मंदिर आदि एक जगेसें सइकडो कोस एक रात्रीमें उडाके लेजा धरणे आदि संवत् विक्रमके सोलेसे तक कर वताई इत्यादि वाते सव दर्शनी जतीयोंका प्रसिद्धपणें जानते हैं, राजा वादसा और प्रजा सव गुरू करके वतलाते थे और गौरव वढाकर मांन रखते थे इसवास्तेही गढ चितोडके किलेमें और जेसलमेरके किलेमें इत्यादि अनेक राजमहलोंके पास जैन मंदिर अभी सइकडों किलोंमें मौजूद है, जैन मंदिरमें नहीं जाणा इत्यादि वातोंके गपोडोंपर राजोंका दिल नहीं खिचाथा अगर एसा होता तो जैन मंदिर महलोकें नजीक कव वणणे पाते रावलपिंडीके किलेतक जैनोका मंदिर मौजूद है उहांतकही आर्योंकी शीमाथी ये सव पूर्ण माया धारी जैन उपदेशक महिमा धारी जतियोंके मायापणेका है, अकवरनें सभामें खुद फरमाया था प्रत्यक्ष जंगम खुदा जिनचंद सूर है, जिसकों में आंखोंसें देख रहा हुं जगत्कर्ता खुदा तो अनुमांनसें लोक और में मानता हूं वस ये प्रतिष्ठा जतियोनें अपणी ईश्वरता दिखलाणेके लिये मायाकूं अग्रेश्वरी वणाई थी अव ये माया उस वातोंसें तो हटी जती २ योंके आपसमें फेली पुस्तक लिखणे वांचणेकूं नहीं देणा और लेजावे सो फेर पीछीभी नहीं देणा विद्या चमत्कार आपसमें सीखणा नहीं जो उनोंके पासे सीखे सो उनोंकीही पीछी निंदा और जमावट उखेडणा गुण किसीमें होय तो वो मूंहपरभी नहीं लाणा और औ गुण जराभी नहीं होय तो हरतरेसे लोकोंमें प्रगट करणा मर्मोंको उघाडणा कोई चेला सुघरता होय आप धनके लालचकु शीख देकर विगाड देणा पुस्तकें अन्य दर्शनियोंकूं वेचणी आपसमें देणी नहीं कुलकी रीत पढणा लिखणा पढाणेका वो आजिवाका छोड सरकार दरवार गवा जमानत खेती आदि प्रगटपणे करणी एह लाजका छोडणा है सो सव ओगणकी जड है, सो आज जतियोमें विरलोमें रही है नाइ रोसनी वाले जतियोंमेंसे अलग छंटे है, वो माया रखते हैं कुछ२ तो जैनवर्ग पूजते हैं लेकिन् वो चमत्कार और पूजा तो वो कहणा वट होगई सोना गया कर्णके साथ ॥ पैशुन्यता पहले दिगांवर जैन नांम धारियोमें थी पराया छिद्र दरसाणा या चुगली करणा किसीका न्याय संपन्न वचन देश क्षेत्र कालभावकी अपेक्षाके होय उसकूंभी नहीं मानना इसका नांम पिशुनता है, जव ये पिशुनता अन्य मतवालोंपर चलाते थे तव अपणे मतमें दूषण सुनकर और नग्नपणेकी करपात्रीकी वनोवासी आदिकी कष्टता देखकर अन्य दर्शनी

क इनोंका धर्म कबूल करते थे दक्षणमें राजा और प्रजा और मंदिर सब दिगांबर
गोका हो गया था भट्टारक जिनशेनाचार्यने श्रावगी गोत्र ८४ लोहाचार्यने गर्गाचार्यनें
प्रवाल गौत्र राजा और सुनारोंका बणाया विना अदमी पालखी दिल्लीमें बादसाहोके
फमनें एक भट्टारकनें चलाइ ये पिशुनताभी इनके वृद्धिका हेतु था बस अब इनसें
उलटा परिणाम चला भट्टारक लोक अपणे द्रव्यके लालच जातीमेंसें बेकसूर श्रावगीकूं
काल देणा भमर (भोजनके वखत) अडजाणा ये इतना रुपया देगा तो पारणा
रूंगा इत्यादि पिशुनताके कारण उन वणियोमें पिशुनता फैली सो उनोका वीस पंथ
चीन खंडन कर तेरा पंथ गुमान पंथ निकाला भट्टारकोंकी आजिविका तोडी मंदिरमें
आपही पंच और आपही पांडे बणे इस कारण चतुर्विधसंघ भगवंतनें इक्कीस हजार वर्ष
क चलेगा एसा लेख जिन शेनाचार्यने अपणे बनाये उत्तर पुराणमें लिखा था सो बिल-
कुल प्राय आस्त होकर दो संघ श्रावक श्रावक ण्योंइ रह गई बात तो एसी करणेकी थी
सो भट्टारक और जाति कायदा सुधर जाता लेकिन् आपशमें पिशुनताने फैलाव किया
भट्टारकभी थोडे रहे नग्न मुनि तो हैं इनहीं भट्टारकोंको नइ रोसणीवाले गुरु मांनते नही
बीसपंथी मानते हैं इतिश्री ॥ बुद्धिवोद्धोंमेंथी जब चीन ब्रह्मा जपान आदि पांच बाद-
साहोंके गुरु पूंगी थे मुडदा खाने आदि उपदेश और लांबा गुरू आदि एकसो बीस
वर्षसें फेर चोलाबदलके फेर पीछे वोही ६ महीनेका बालक होजाणा पूंगी लोकोंके
धर्मस्थानपर अकस्मात् विना अदमीके लाये चाह दूध भोजन टेबलपर वखतपर स्वत
हाजर होजाणा जिनोंकी परिक्षा बडे २ युरोपियन डाकटरोनें करी लेकिन् पता नहीं लगा
आखिरको यही कहणा पडा बडे तांत्रिक है, ये सर्व महिमा उनोंके योगविद्या और
बुद्धिका था, लकडेके घोडे अदमी, कागजोका कपडा, छापा शिलाका, काचकी चीजों
लकडीका कांम पुलपाणीपर एसी मजबूत और जलदी बांधणी इत्यादि अनेक बुद्धिकी
कारीगरीपणा इल्म और धन इत्यादि जो उनोंके ग्रहस्थों पास था बुद्धिसें आजकल
औरही मामला चला जपानने मुडदे खानेमें खूनका ठंडापणा होता है बहादुरी नहीं
रहती इत्यादि गौतम बुद्ध और पूंगियोंका उपदेश छोड मारके ताजा खाणा इत्यादि
केइवाते अपणी प्रत्यक्षपणे सिद्धकर अभीतो बडे सूरवीर इल्मदार बादस्याहीके दरजे
पोहचे एसी बुद्धि विचार बौद्धका उपदेश एक बुद्धमूर्ति टाल अन्य देव नहीं पूजणा
उसमें उलटा विचार चीणोका है हजारो देव पूजणे लगे बुद्धि घटेगी तब दूसरे और
करेंगे और कर दिया इतिश्री मूर्खत्वं शिवशासने जब मूर्खपणा शिवमतमें था तब शैव
लोकोंकी वृद्धि थी दयानंदजी शिवविष्णु आचार्योंको मूर्ख लिखते हैं जैसें जैनके शैव
अपणा सूत्र अन्य दर्शनीकूं नहीं पढाते योगविगर तैसें सन्यासी ब्राह्मण दूसरोंको वेद
कभी नहीं पढाते लेकिन् इतनातो जैनोंकी निशन्यता है, सो सूत्रोंका अर्थ जती लो

वांचके ग्रहस्थोंकों यथार्थ सुणा देते हैं मगर ये तो अर्थभी नहीं सुणाते तोभी इनकूं अग्रे
मतावलंवी वैदपर वडायकीन सव लोक रखते हैं इहांतक लोकोंकों खवर नहीं थी दर्शनी
वेदमें क्या लिखा हैं वेद ईश्वरकृत है. इतनी श्रद्धापर लाखों करोंडो आदमी वेदो रखते थे
माननेवाले वधते जाते थे सृष्टिकी उत्पत्तीमें पुराण पुराणोंके आपसमें रातदिन एकसो
अंतर एक पुराण दैवीभागवतमें सुकदेवजीके पांच पुत्र भये श्रीमद्भागवतमें उस सुअभाव-
दैवकूं जन्म ब्रह्मचारी इत्यादि एक पुराणसें दुसरे पुराणकी वात नहीं मिलती तो रात्रीमें
मूर्खताके सवव मतकी हमेसां वृद्धि थी दयानंदजीनें लिखा है, फेर वेदोमें सव जीवोंते सव
मारके होमणेका हुकम यज्ञमें मांस खाणेका हुकम और वैष्णव संप्रदाय [illegible] और नि वत-
जनी रामानंदी रामसनेही आदि भक्तिमार्गवालोनें यज्ञादि वेदोंकी कर्त्तव्यता तो न और
मानी दया वैराग्य कवूल करकेभी वैदोकों ईश्वरकृत मांनते थे इन मतावलंवियेकलोंमें
वेदोंकों कवूलभी किया और उस कर्तव्यताकी निंदा अपणी वणाई वाणीयोंमें करी इ नहीं
वातकूंभी मूर्खपणा दयानंदजी सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते हैं, तोभी मतकी वृद्धि थी भक्तीके
माला ग्रंथमें चोरी कर स्त्रीपर पुरुषसें जारीकर मनुष्योंकों मारकर लोंकोकों जवरन् लंधारी
करकेभी वैष्णव मतके साधुओंको खिलावे सो परमेश्वरका भक्त कहावे और वैकुंठ जाया
ऐसी २ कथाओंपरभी मूर्खताकेभरे इमान लाणेवाले एसा दयानंदजी लिखते हैं इतनी वार्ता
रहतेभी वैष्णवमतके साधूओंकी वृद्धि थी ब्राह्मण और गृहस्थ विष्णुमतकी पूजा करता
थे और करतेभी है वस अव इस मतके द्वेषी दयानंदस्वामी प्रगटे सो वडी चलाकी औटी
पडिताईके जोरसोरसे आर्यासमाज मत चला दिया वेद उनोंने पढा लेकिन अपणे पूर्वकर
ऋषियोंके अर्थोंसे घृणा आई अव चतुरतासे विचार किया जो में जैनधर्मवालोंकी तरेसी
वेद छोड दूंगा तो मेरा उपदेश कोण मानेगा क्योंके जैनियोंका कहणा है जिस शास्त्रोंमेंहीं
अनेक जीवोंको मार होम करणा लिखा उस वेदोकों परमेश्वरका कहा कोण वुद्धिमान मांगा
सकता है तव आपने भाष्य वणाया जिसमें दया धर्मका अर्थ धातूओंकों खेचताणके
कर दिया और लिखा वेदका अर्थ ब्राह्मण मांसाहारी मूर्खोंने विगाड दिया वंब्राह्मणोंके
तीर्थोंकी श्राद्ध गरुड पुराणादिककी वहोतही निंदा लिखके ब्राह्मणोकी आजीविका तोडणे
केइ ढंग वणाये दयानंदजीका अर्थ शैव विष्णुमतके आचार्य नहीं मांनते हैं जो कभी
ब्राह्मणोंकी आजीविका स्वामीजी कायम रखके शंकर स्वामी रामानुज वल्लभ माधवा-
चारी वगेरोंकी तरे ग्रंथ वणाते तो हिंदुस्थानके सव ब्राह्मण स्वामीजीकों स्यात् पै कलंकी
भगवानका अवतारही लिख मारते लेकिन् तोभी अंग्रेजी पढे जो कृश्चियनोंकी तरफ
झुकणेवाले थे उनोंकों स्वामीजीने और समाजने वडा उपगार कर हिंदुधर्म दयाके नमू-
नेपर कायम रख लिया पंडिताईने मूर्खत्ताकों हटाया ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ शांतिः

इति ग्रंथकर्ता संक्षेप जीवनचरित्रं ॥

मारवाडी प्रजा तथा गुजराती महाराष्ट्रादि सर्व देसवाले जब परदेश खजनोकों
ाद देते हैं तो लिखते हैं भाईजी डीलारा घणा जावता राखी जो सारी मुदारडी
हूं छै लेकिन शरीरका यत्न किम्तरे होता है सो बिलकुल नहीं जाणते इसबातकी
लता मेने इस ग्रंथमें कर दिखाई अब लेके पढणा और इस रस्ते चलणा प्रजाके
ा है, येभी जगतमें मसहूर है के एसा कोण मूर्ख होगा सो अपणी और अपणे कुटं-
ो तनदुरस्ती नहीं चाहते होंगे निश्चै चाहते हैं.

जैनधर्ममें संवेगी साधू यती ढूंढिये तेरा पंथी वगेरे फिरके साधूओंके है दिगंबर जैन
ारक तथा पंडित लोक हैं वो अपणा और पराया सबका भला चाहते हैं शैव
ु मतमेंभी अच्छे शांतशील कषायरहित शास्त्रोंकेवेत्ता ब्राह्मण और साधू अभी
ूद है, वोभी स्वार्थ परमार्थ दोनों करके जन्म सफल करते हैं तथा अनेक गुणवंत
ोवारे जातिके वैस्य ओसवाल श्रीमाल पौरवाल अग्रवाल श्रावगी महेश्वरी
दे गुणज्ञ जो धर्मपारायण हैं तेसे २ अन्यभी वर्णोंमें जो जो शांत सज्जन हैं उन
प्रजागणके तथा हमारे बीकानेरके महाराज बहादुर राठोड वंश मुकुटमणि
पति न्यायसंपन्न खटदर्शनादि प्रजा प्रतिपालक १०८ श्रीगंगासिंहजी साहिब और
राज्य वर्ग स्वामिभक्त दिवान प्रमुख सर्व साहिबोंकों अर्पण में इस ग्रंथको कर्त्ता हूं
प्रयासकों सफलता कर चिरंजीव आप लोक रहे ॥

इस ग्रंथका सर्वस्व हक स्वाधीन है, कोई हमारी विना इजाजत छापेगा वो कठोर
यवाला ईश्वरकातथा राजदंडके कामल होगा इतनी महनत होनेपरभी दांम अल्पही
ाये हैं सबका भला होय ।श्रीरस्तुः॥ ग्रंथ छपाके प्रसिद्ध कर्त्ता पं० क्षेमचंद पेमचंद.

अनुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.
प्रकाश पहला १ सृष्टिक्रम.	
मंगलाचरण.	१
ग्रंथ बनाणेका प्रयोजन.	१
छह द्रव्यका स्वरूप	२
जीवके कर्मबंधका स्वरूप.	३
आठकर्मोकी प्रकृतिका वरणन. ...	४
कर्मजड क्या करसक्ता है इसका समाधान.	१२
ईश्वर सृष्टिका कर्ता है या नहीं प्रश्नोत्तर ...	१२
पांच समवायोंसे सब काम होते है. ...	१३
जैनदर्शन सर्वज्ञका स्वरूप.	१८
असल जैनपक्षपात रहित न्यायसंपन्न. ...	२०
पांच इंद्रियोंका स्वरूप ३ प्रकृतीका स्वरूप. ...	२१
प्रकाश २ रा शरीर किरण १. ...	२९
गर्भकी उत्पत्ति वरणन.	२९
गर्भकी उत्पत्ति और सृष्टिका स्वरूप ...	३१
गर्भ रहणेका क्या समाधान. ...	३२
वीर्यरज कौन पैदा करता है ...	३३
सर्वज्ञने तो रेलतारादि क्यों नहीं बनाये उत्तर.	३८
हिंदुस्थान सर्व विद्याका भंडार. ...	३५
गर्भकी व्यवस्था.	४२
हाडोंका वरणन.	४५
हाडोंके ऊपरके पडदोंका संबंध. ...	४९
कूर्च नाडीयोंका वर्णन.	५०
मांसके लोथे तथा नाडीका वर्णन. ...	५२
स्नायुके बंधनोंका वर्णन.	५३
रुधिर तथा नसोंका वर्णन. ...	५४
चमडेका वरणन.	५५
किरण २ री.	
हाडोंके मुख्य भाग	५८
[illegible]	५८
[illegible]	५९
[illegible] .. .	६०
[illegible]	६१

विषय.	पृष्ठ.
नाकका वर्णन.	६३
जीभका वर्णन	६४
चमडीका वर्णन.	६५
आंतोंके फेफसेका वर्णन.	६८
रक्ताशयका वर्णन दिलका	६८
छाती तथा पेटके पडदेका वर्णन ..	७१
सप्त नलका वर्णन.	७४
होजरी आमाशयका वर्णन.	७५
आंतोंका वर्णन.	७६
कलेजेका वर्णन.	७९
पित्ताशयका वर्णन.	८०
तिल्लीका वर्णन	८०
गुर्दोका वर्णन.	८१
मूत्राशयका वर्णन.	८१
उत्पत्ति अवयवका वर्णन	८२
रोमका वर्णन.	८९
किरण ३ री सातधातु.	
धातुओंका अस्तित्व तथा मैल. .	८८
धातुपुष्ट पक्षका वर्णन. . ..	९१
पांच धातुका वर्णन ...	९३
रसका वर्णन	९४
रक्तका वर्णन.	९५
किरण ४ थी दारुणी आदना २ विद्या	
[illegible] .	९८
[illegible]	१००
[illegible]	१०५
[illegible] .	१०८
[illegible] ...	१०८
[illegible]	११०
[illegible]	११०
[illegible]	११०
[illegible]	११०

विषय.	पृष्ठ.
हवाकी जरूरी.	१३१
पाणीकी जरूरी	१३२
पाणीका भेद.	१३३
पाणीसें होते विगाड.	१३८
पाणीकी परिक्षा.	१३९
पाणीकू साफ करणेकी विधि....	१३९
पाणी दवा मुजब.	१४०
किरण २ री.	
खुराककी जरूरी.	१४२
खुराकके भेद.	१४४
जिन्दगीकूं खुराककी जरूरी. ...	१४७
खुराकके पांच भागका यंत्र. ...	१४८
छ वरसोंका वर्णन.	१५१
उजाला २ रा धान्यवर्ग.	१५२
उजाला ३ रा शाकवर्ग.	१५५
उजाला ४ था दूध विचार.	१५९
घृतका विचार.	१६२
मख्खनका विचार.	१६३
दहीका विचार.	१६३
छाछका विचार.	१६४
उजाला पाचमा फलवर्ग.	१६५
उजाला छठा गुड खाड मिश्री. ...	१६९
तेलका विचार.	१७०
निमक तथा खारका विचार. ...	१७१
दाल सागके मसालेका विचार. ...	१७२
आचारराईता विचार	१७४
चाका विचार.	१७५
काफीका विचार.	१७६
उजाला ७ मा पथ्यापथ्य वर्ग.	
पथ्य पदार्थ.	१७८
पथ्यापथ्य पदार्थ.	१७९
कुपथ्य पदार्थ	१७९
सामान्य पथ्यापथ्य आहार विहार. ...	१८०
कुपथ्य आहार.	१८१
पथ्य विहार.	१८१
उजाला ८ मां.	
दुबले आदमीकी खुराक.	१८२

विषय.	पृष्ठ.
जाडे (मोटे) आदमीकी खुराक. ...	१८२
उजाला ९ मां.	
मगजकू पुष्ट खुराक.	१८३
यादशक्तिकी खुराक.	१८४
उजाला १० मा.	
रोगीकी खुराक.	१८४
किरण ३ री ऋतुचर्या विचार.	
वशतऋतु विचार	१९०
ग्रीष्मऋतु विचार.	१९२
वर्षाऋतु विचार.	१९२
शरदऋतु विचार.	१९३
हेमतऋतु विचार.	१९४
किरण ३ री दिनचर्या.	
ऊषापान.	१९६
मलमूत्र त्यागणेका विचार	१९६
दांतण करणेका विचार.	१९७
कसरत तैलमर्दनका विचार. ...	१९७
स्नान वलिकर्म (देव पूजा) विचार. ...	१९८
भोजन करणेका विचार.	२०२
मुख सुगध (पानवीडादि) विचार ...	२०४
सुपारी विचार	२०५
सदाचार.	२०५
निद्राका विचार.	२०६
सर्वहितकारी उपदेश.	२०७
प्रकाश ४ था निदान रोग सामान्य कारण.	
किरण. १	२११
रोगी करणेके दूर कारण.	२१६
रोगी करणेके नजीक कारण ...	२१९
एक रोग दुसरे रोगोंका कारण. ...	२२५
किरण २ री वायूपित्त कफसें भये रोग. ...	२२६
वायू होणेका कारण वायूके ८० रोग. .	२२७
पित्तहोणेका कारण पित्तके ४० रोग. ...	२२९
कफ होणेका कारण कफके २० रोग ...	२३१
किरण ३ री रोगपरिक्षाके भेद.	
प्रकृति (तासीर) की परिक्षा. ...	२३२

विषय.	पृष्ठ.
वादी प्रधान तासीरका लक्षण.	... २३३
पित्त प्रधान तासीरका लक्षण.	... २३३
कफ प्रधान तासीरका लक्षण.	.. २३४
सन धातू प्रधान तासीरका लक्षण.	... २३४
स्पर्श परिक्षा. ...	.. २३५
नाडी परिक्षा. ...	... २३६
नाडीज्ञानमें समज ..	... २३७
चमडीकी परिक्षा. ...	... २४२
थरमोमिटरपरिक्षा. ...	.. २४३
ठेथो स्कोप.	.. २४४
दर्शन परिक्षा. ...	... २४४
जीभ परिक्षा ...	... २४५
नेत्र परिक्षा. ...	... २४७
रूप परिक्षा. ...	... २४७
त्वचा परिक्षा ...	.. २४८
मूत्र परिक्षा ...	... २४८
पेशाबमें जाने गये चीजोंकी परिक्षा ..	२५१
मलपरिक्षा	... २५३
प्रश्न (पूछने) की परिक्षा. ...	... २५४

प्रकाश ५ मां दवायोंका गुणावगुण.

अरिष्ट आसव अरकोही विगि.	... २५७
वल्क, काटा, हिम, कुरला, गोली, घी, तेल, चूर्ण, भूर्जा, धूप इनोकी विधि.	... २५८
भूर्जा पीना, लाख, पान, पनाम, गुडाखेवली, फोट, पिचकारी, भारना, साफ, बमाना, सुरच्या विधि. ...	... २५९
मोदक मय गोली पेप लपरी पोटिस लेप हिम, खार, मल, इत्यादि करनेकी विधि	२६०
सिरका गुलकंद गुलाब जलकी इत्यादि विधि	२६२
दवायोंका हिंदीमें तथा इंग्रेजी नाम वैगेरह जाननेकी जरुरीयत. ...	.. २६२
उमर मुजब डोजकी तथा देने मात्रा.	... २६४
देशी दवाएं लेपन विधि.	... २६९
देशी दवाका तत्काल सदुपयोग.	... २६९

किरण २ री विशेष दवाओंका गुण.

अफीम, सिंदूर इत्यादिक दवा सूचनेकी विधि.	२६९
सूचे हुए दवाका कस. ..	.. २७०

विषय.	पृष्ठ.
खट्टी दवाएं.	... ... ३१०
दीपन पाचन खट्टी दवाएं. ...	... ३१०
दुसरी खट्टी दवाएं ...	... ३११
खट्टे रसकी विरुद्ध दवा. ...	... ३११
शीतल (ठंडी दवाएं ...	... ३११
शीतल पौष्टिक दवाएं ...	... ३११
शीतल रोपण दवाएं ...	... ३११
शीतल पित्तशामक दवाएं ...	... ३१२
शीतल पेशाब लाणेवाली दवाएं	३१२
शीतल स्तंभन दस्त बगेरे दवाएं.	... ३१२
शीतल दस्तावर दवाएं ...	... ३१२
शीतल दाहशामक दवाएं ..	... ३१२
पित्तशामक दवाएं ...	... ३१२
दस्तावर पित्तशामक दवाएं.	... ३१२
स्तंभक पित्तशामक दवाएं. ...	... ३१२
गरम दवाएं ...	... ३१३
सब बदनमें गरमी लानेवाली दवाएं	... ३१३
शरीरके खिलीसी अंगे गरमी लानेवाली	... ३१३
दीपन पाचन दवाएं ...	... ३१३
वादीहरता दवाएं. ..	... ३१३
कफहरता दवाएं ...	... ३१३
भारी दवाएं ..	... ३१४
स्तंभन दवाएं ...	... ३१४
स्नेहमिलेवाली दवाएं ...	... ३१४
शोषक दवाएं. ...	... ३१५
पुरुषा पित्तशामक पौष्टिक शोषक दवाएं.	... ३१५
दस्तावर शीतल शोषक दवाएं.	... ३१५
गरम धर्म पौष्टिक शोषक दवाए	.. ३१५
दस्तावर शोषक दवाएं ...	... ३१०
मूत्र लाक वगेरेकी दवाएं	... ३१५
उष्णवीर्य (गरमी) शोषक दवाएं.	.. ३१५
[illegible] दवाएं ...	.. ३१५
[illegible] ..	.. ३१०
[illegible] ..	... ३१०
[illegible] ...	... ३१५
[illegible] ...	... ३१५
[illegible] ...	.. ३१५
[illegible]	३१५

विषय.	पृष्ठ.
जखमके जीवोंकी दवाइये. ...	... ३१६
स्त्रीकी ऋतुलाणेवाली दवाइयें.	... ३१७
छीकलाणेवाली दवाइये. ...	. . ३१७
नसोंकों टीलीकर्त्ता दवाये. ...	... ३१७
नींद लाणेवाली दवाइयें. ...	... ३१७
कडवी पौष्टिक दवाइये. ...	... ३१७
ताकतवर दवाइयें. .	... ३१७
मगजकू ताकत देणेवाली दवाइये.	... ३१७
खूनकूं ताकत देणेवाली दवाइये.	... ३१७
पेटकू (जठर) कूपुष्टि देणेवाली दवाइये .	३१८
रसायण वुढापा तथा रोगनासक दवाइये. ...	३१८
धातू वढाणेवाली दवाइयें ...	... ३१८
मर्दमीकी (वाजी करण) दवाइये.	... ३१८
कामकू वढाणेवाली दवाइयें. ...	३१८
जीदगी (जीवनीय) वढाणेवाली दवाइयें. ...	३१९
स्तनोमें दूध वटाणेवाली दवाइये.	... ३१९
देशी दवा शुद्ध करणेकी विधि.	... ३१९
उपयुक्त इलाजोका संग्रह. ...	... ३२०
सर्व रोगोंपर काढा अलग २.	... ३२०
सर्व रोगोंपर चूर्ण अलग २.	. . ३२३
सव रोगोंपर गोली अलग २	३२६
सर्व रोगोंपर अवलेही अलग २.	... ३२८
सर्व रोगोंपर आसव अलग २.	... ३३२
सर्व रोगोंपर घी अलग २. . .	. ३३३
सर्व रोगोंपर तेल अलग २.	... ३३५
जखम खुजली मस्सेपर मलम लेप वगेरे. ...	३३६
४ रोगोंपर सिरका. .	. . ३४०
रस प्रकरण अलग २ रोगोंपर.	... ३४०

किरण ३ री अंग्रेजी दवा.

अंग्रेजी दवायोंका निघट. ...	... ३४३
दस्तावर अंग्रेजी दवा ...	... ३७०
ताकतवर अंग्रेजी दवा. ...	... ३७१
कफ हरता श्वासनलीकूं फायदेवंद दवा.	... ३७३
धीरे २ फायदा करणेवाली दवा.	... ३७३
वमन अंग्रेजी दवा. ...	... ३७६
उत्तेजक तथा शांत अंग्रेजी दवा.	... ३७७
पेशाव लाणेवाली दवा. ...	. ३७७
नींद लाणेवाली अंग्रेजी दवा.	... ३७८
उलटी कराणेवाली अंग्रेजी दवा.	... ३७८
स्थानिक अंग्रेजी इलाज. ...	... ३७९
गरम अंग्रेजी इलाज. ...	... ३७९
ठंटा अंग्रेजी इलाज. ..	... ३८०
शातक अंग्रेजी इलाज. ...	... ३८०
भेदक मलमोंका अंग्रेजी इलाज	. ३८१
स्तभक रोपण कुरले. ...	... ३८२
पिचकारी अंग्रेजी इलाज. ...	... ३८२
चमडीपर फफोला उठाणा दवा.	. . ३८२
चोट लगणेपर वाहरका इलाज.	... ३८३
गरम पाणीमें वैठाणेका इलाज.	... ३८३
कपिंग (पयाला) धरणेकी क्रिया.	... ३८५
गंदकी दूर करणेवाली चीजों.	... ३८५
सव रोगोंपर अंग्रेजी मिकूश्चर जुदे. २	... ३८६
यूनानी इलाज सव रोगोंपर ...	. ३९८
होमियोपथी क्रोमोपथी सव रोगोपर इलाज.	४०६
सिद्धचक्र यत्रकै शातिक जलसैं रोग मिटाणा.	४१०
काचोके रगसें तथा रोसनीसैं रोग मिटाणा.	४१०

प्रकाश ६ ठा वुखारके सहचारी रोग.

रोग परिक्षा इलाज पथ्य देशी अंग्रेजी होमि०	४१५

१४ किरणोंकी तपसील किरण १.

वुखार लक्षण इलाज पथ्य. ...	. ४१५
वुखारमें दुसरे फेलोका इलाज	... ४३२
फूटकर निकलणेवाले वुखार लक्षण इ० पथ्य.	४३६
शीतला लक्षण इलाज पथ्य....	. . ४३७
ओरी लक्षण इलाज पथ्य. ...	... ४४१
अचपडा लक्षण इलाज पथ्य.	... ४४२
विसर्प (रतवादी) लक्षण इलाज पथ्य.	. ४४२
गाठोवाला वुखार. (प्लेग) लक्षण इ० पथ्य.	४४४
विसूचिका (हैजा) लक्षण इ० पथ्य.	... ४४५
वादीके रोगोंका लक्षण इ० पथ्य.	.. ४५०
गठिया लक्षण इलाज पथ्य. ...	... ४५१
आमवात लक्षण इलाज पथ्य.	... ४५२
वातरक्त (गलत कोट) लक्षण इलाज पथ्य.	४५८
रक्तपित्त लक्षण इलाज पथ्य.	. . ४६२
कठवेल लक्षण इलाज पथ्य. ...	... ४६४

विषय.	पृष्ठ.
...या) लक्षण इलाज पथ्य	... ४६६
...क्षण इलाज पथ्य.	... ४६७
...ताम लक्षण इलाज.	... ४७४
...ा सोजा लक्षण इलाज पथ्य.	... ४७५
...म) लक्षण इलाज पथ्य	... ४७८
...क्षण इलाज पथ्य ...	... ४७८
...ण) लक्षण इलाज पथ्य.	... ४८८

किरण ३ री रक्ताशयसंबंधी रोग.

...ग लक्षण इलाज पथ्य.	... ४८७

किरण ४ थी पक्वाशयसंबंधी रोग.

...रोग लक्षण इलाज पथ्य.	... ४८९
...ा सोजा पचोरिया लक्षण इलाज पथ्य.	४९०
...साल लक्षण इलाज पथ्य.	... ४९१
...रीरा लक्षण इलाज पथ्य.	... ४९१
...नके रोग अजीर्ण लक्षण इलाज पथ्य.	.. ४९२
...णा अजीर्ण (बदहजमी) लक्षण इ० पथ्य.	४९५
...ा कुष्ट कब्जी लक्षण इलाज पथ्य.	.. ४९७
...दावर्त्त (आफरा) नलबंध लक्षण इलाज पथ्य.	५००
...ल पेटकी (चूक) लक्षण इलाज पथ्य.	... ५०१
...ायगोला लक्षण इलाज पथ्य.	... ५०३
...अतीसार (दस्त) लक्षण इलाज पथ्य.	... ५०४
...ग्रहणी (मरोड़ा) लक्षण इलाज पथ्य.	.. ५०८
...ग्रहणि लक्षण इलाज पथ्य. ...	... ५११
...छर्दि (उलटी) लक्षण इलाज पथ्य.	... ५११
...आम्लपित्त लक्षण इलाज पथ्य.	... ५१३
...यकृत् (कलेजे) का रोग लक्षण इलाज पथ्य.	५१४
...प्लीहा (पसली) रोग लक्षण इलाज पथ्य.	... ५१८
...शूल (पेशाकोर) लक्षण इलाज पथ्य	... ५२१

किरण ५ मी मूत्राशय संबंधी रोग.

...मूत्रका निरोध लक्षण इलाज पथ्य.	... ५२४
...मूत्रौका सोजा लक्षण इलाज पथ्य.	... ५२५
...मधुमेह (पेशाब मीठा) लक्षण इलाज पथ्य	५२७
...मूत्र कृच्छ्र लक्षण इलाज पथ्य.	५३०
...मूत्राघात (पेशाब रुकना) लक्षण इलाज पथ्य.	५३३
...अश्मरी पथरी लक्षण इलाज पथ्य.	... ५३४
...प्रमेह मूत्राघात (निरोध) लक्षण इलाज पथ्य.	५३६
...उपदंश (गरमी सोटा) लक्षण इलाज पथ्य.	५३८

विषय.	पृष्ठ.
...बदका रोग लक्षण इलाज पथ्य	... ५४१

किरण ६ ठी मगज संबंधी रोग.

...एपोप्लेक्षी सन्यास. ...	... ५४१
...पक्षाघात (लकवा) लक्षण इलाज पथ्य.	... ५४३
...अर्दित (मूटेदा) लक्षण इलाज पथ्य	.. ५४४
...धनकि वा रोग लक्षण इलाज पथ्य.	.. ५४५
...शिरका रोग लक्षण इलाज पथ्य.	... ५४५
...शूल (चसका) लक्षण इलाज पथ्य.	... ५४८
...मिरगी रोग लक्षण इलाज पथ्य.	... ५४९
...सन्ताप (बाइटे) लक्षण इलाज पथ्य.	... ५५१
...उन्माद (पागल) लक्षण इलाज पथ्य.	... ५५२
...नराप पीणेका रोग लक्षण इलाज पथ्य.	... ५५४

किरण ७ मी.

...आंख कान नाक दांत रोग लक्षण इलाज पथ्य.	५५५

किरण ८ मी चमडीके रोग.

...खुजली रोग लक्षण इलाज पथ्य.	... ५६८
...फुनसी रोग लक्षण इलाज पथ्य.	... ५६०
...कुलथपना सूखी खुजली व्योंसे लक्षण इ० पथ्य	५६०
...सोरा सील करोडिया लक्षण इलाज पथ्य.	... ५६९
...कोढ श्वेत पित्ती चकाता लक्षण इलाज.	... ५७०
...कार्टिंग झामरे कफवायू विस्फोटक लक्षण इ०.	५७१
...मस्से कफामिसे जू नाइ लक्षण इलाज पथ्य.	५७२
...व्याउरणी विचर्चिका लक्षण इलाज पथ्य	५७३
...पिलीकोट.	... ५७४

किरण ९ मी क्षुद्रक रोग.

...[illegible]	... ५७५
...[illegible]	५७७
...[illegible]	५७८
...[illegible]	५७९
...[illegible]	... ५८०
...[illegible]	५८१
...[illegible]	५८२
...[illegible]	५८३
...[illegible]	... ५८४
...[illegible]	५८५
...[illegible]	५८६
...[illegible]	... ५८७

विषय.	पृष्ठ.
कूंच आत वढणा अडवृद्धि लक्षण इलाज. ..	५८६
शस्त्रका जखम हड्डीका टूटणा लक्षण इलाज.	५८८
लचक चोट धोरीरग कटणा लक्षण इलाज.	५८९
पाणीमे डूवणा लक्षण इलाज. ...	५९०
नाकमेसे खून गिरणा फफोला लक्षण इलाज.	५९१
नाकमे घुसे पदार्थ निकालणा कान होजरीं वगेरेका.	५९२
किरण १० मी औरतोंका रोग.	
गर्भाधान गर्भणीका नियम.	५९३
प्रदरश्वेत तथा लाल लक्षण इलाज. ...	५९७
हिस्टीरीया रोग लक्षण इलाज पथ्य. ...	६०१
गर्भवती रोग लक्षण इलाज पथ्य. ...	६०५
सू आरोग लक्षण इलाज.	६०७
जापेवालीका इलाज.	६११
कष्टीका इलाज.	६१२
जखम अधूरा गिरणा.	६१३
वाझडी रोग लक्षण इलाज.	६१४
गर्भ पैदा करणेका इलाज.	६१५
किरण ११ मी बच्चोंके रोग.	
जन्म घूंटी.	६१६

विषय.	पृष्ठ.
बुखार दस्त आमका दस्त खूनका दस्त. ...	६१७
खुल खुलिया खासी सास.	६१९
दूधकी उलटी गालपचोरा पारगलावांईटे. ..	६१९
सूगी फूटणेवाले बुखार पेट फूलणा इलाज. ...	६१९
कृमिभार दात आणा इलाज. ...	६२०
चूचा मूंपकणा सूडी पकणा गुदपाक खुजली	
मूत निकलणा मूत अटकणा रोणा नलवृद्धि....	६२१
मिट्टीखाणी बच्चोंको जुलाब दुवला नाताकत.	६२१
किरण १२ मी जानवरोंका इलाज.	
दयाधर्मका वयान तथा इलाज. ...	६२१
किरण १३ मी जगमथावर जहरोका इलाज.	६३१
किरण १४ मी.	
धातुपुष्ट मरदमीकी दवा ताकतवर. ..	६४१
ब्राह्मी गोली.	
मोहरेकी गोली.	
भेरुरस.	
दातका मजन	
खासी गोली.	
दस्तवध गोली.	६४९

अथ वैद्यदीपक ग्रन्थ ॥

श्रीसरस्वत्यैनमः—अथ वैद्यदीपक ग्रन्थस्य प्रस्तावना ॥ युगादौव्यहाराद्ध्वा सर्वोयेनप्रकाशितः स श्री वृषभयोगींद्रो दद्याद्वोव्यय संपदं १ वंदेहं लोकनाथाय आयुधर्मप्रकाशके धन्वंतरीं युगादीशं श्री नाभि नृप सूनवे२ अविद्यांध मनुष्याणां विद्यादानशलाकया चक्षुरुद्घाटितंयेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ३ वैद्यदीपक ग्रन्थोयं द्योतकृत्हृदिमंदिरं रोग शत्रु प्रणाशाय रामबाणावलीमिव ४ ॥

प्रकाश पहिला ॥

सृष्टिक्रम ॥

जब अपने आस पास की निजीवी चीजों का ज्ञान धराते हैं तो अपने आप क्या हैं, अपना शरीर काहे का बना हुवा है तैसे ही उस में कैसी २ शक्ति कैसा २ काम करती है, इतना ज्ञान जो

अपने में नहीं तो बड़ी शर्मिन्दगी की बात है. जगत् में जो अज्ञान हैं सो ही दुःख की जड़ हैं उस में भी शरीर संबन्धी अज्ञान तो बड़े ही क्लेश का कारण है, सूक्ष्म नज़र से देखे तो जगत् में जितनी जानने योग्य वस्तु है उसका सम्पूर्ण ज्ञान भी शरीर में से मिल सकता है शरीर की रचना नाम कर्म की एक सौ तीन प्रकृति से जीव और कर्म दोनों शामिल होके शरीर के संबन्ध में रचना रचता है सर्व चौरासी लाख जीवायोनि में मनुष्य जैसी कोई योनि नहीं है क्योंकि अनेक संसारिक अद्भुत कार्यों का करने वाला है सो तो विद्या बुद्धि बल से रेल, तार, अग्निबोट, बिजली, विमान आदि अनेक पूरावे प्रत्यक्ष पने मनुष्य कृत हैं तैसे ही जप, तप, इन्द्रियदमन, अष्टांग योग का पारंगामी होकर अनंत ज्ञान रूप केवल लक्ष्मी प्राप्त करके जन्म मरण से रहित होकर पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर यह पुरुष हो जाता है बस सर्वोपरि मनुष्य जन्म है द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा यह संसार नित्य है १ तीनों काल में पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा संसार अनित्य है २ द्रव्य ६ हैं. धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकासास्तिकाय ३, जीवास्तिकाय ४, पुद्गलास्तिकाय ५, और काल ६. जीव और पुद्गल को चलने का सहाय देवे सो धर्मास्तिकाय १ जीव और पुद्गल को थिर रहने का सहाय देवे सो अधर्मास्तिकाय २ जीव और पुद्गल को रहने को अवकाश देवे सो आकासास्तिकाय ३ चेतन शक्ति ज्ञान १ दर्शन २ कर्म काटने की शक्ति सोचारित्र ३ और तप ४ यह स्वरूप वाला चर्म चक्षु से अरूपी कर्म के संबन्ध से जीव कहलाता है और कर्म जड़ से रहित होने से ईश्वर होने वाला अनंत शक्ति वाला

जीवास्तिकाय है ४ पूर्ण और गलन अर्थात् कभी भर जाय कभी बिखर जाय फिर रूप १ स्पर्श २ गंध ३ और रस ४ परमाणुओं करके शोभित सो पुद्गलास्तिकाय है ५ वर्त्तने का स्वभाव है नई को पुरानी करे पुरानी को नई करे समय १ काष्ठा २ लव ३ मुहुर्त्त ४ दिन ५ रात पक्ष मास वर्ष इत्यादिक पहचान करके काल द्रव्य है ६ यह सब द्रव्य जहां है सो लोग है वही संसार है जिस में चार गति हैं नरक गति १ तिर्यंच गति २ मनुष्य गति ३ देव गति ४ इस में नीचे पृथ्वी के सात नरक हैं बहुत पाप करने वाला जीव नरक जाता है इसी तरह कर्मों के शुभ अशुभ योग से जीव पूर्वोक्त चारों गति में भटकता है जैसे डोर में बंधी चकरी लेकिन डोर अलग वस्तु है और चकरी अलग वस्तु है जीव अशुभ उद्यम से बांधता है जीव शुभ उद्यम से खोल सकता है ऐसे जीव और कर्म जुदे २ द्रव्य हैं और अशुभ योग से बंधा हुवा भी है इस वास्ते जीव और कर्म का संबन्ध आदि भी है और अनादी भी है क्योंकि किसी भी मत वादी ने जीव बनने की आदि नहीं लिखी आत्रेय महर्षि अग्निवेशचरक वृद्धवागभट्ट और सुश्रुतादिकों ने अपनी रची संहिता में जीव द्रव्यको अजर अमर अविनाशी अक्षय ही लिखा है जब संसार में जीव की आदि नहीं तो कर्म के संबन्ध विना अकेला जीव तो संसार में रह ही नहीं सकता अकेला भया फिर तो मुक्ति होकर अचल पद में ही लोकाग्र पर जाके ठहरेगा निर्मल भये बाद कर्म नहीं लगेगा जब कर्म रहित होगा तो जन्म मरण से भी बचेगा इस वास्ते जीव बनने की आदि नहीं तो कर्म भी अनादि

रहित है ये दोनों इस अपेक्षा आदि करके रहित हैं और सहचारी हैं जिस वस्तु की आदि नहीं उसका अंत भी नहीं है इतना विशेष है भवो भव में जीव अशुभ क्रिया अठारे पाप स्थानकों से मन १ वचन २ काया ३ इन में करना १ कराना २ और पाप करते २ को अच्छा समझना ३ इस से जीव समय २ कर्म बांधता है और शुभ क्रिया दान शील तप और भावना इन शुभ कारणों से अथवा अकामनिर्जरा अज्ञान पने कष्ट सहने से जीव समय २ कर्म तोड़ता भी है इस तरह कर्मों का आदि भी है और अंत भी है जैसे सोना जीवों के उद्यम से धूड़ में से जुदा भी होता है और फिर परमाणु बिखरता २ मिट्टी में ही मिल जाता है लेकिन धुर में कोई नहीं बता सकता कि मिट्टी और सोना कब शामिल भये थे ऐसे जीव और कर्म का संबन्ध नित्यानित्य जानना जो वस्तु अकृत्रिम है उसका नाश भी नहीं है जैसे आकाश, और कृत्रिम वस्तु घट है तो उसका नाश भी है, तैसै कर्म जीव करता है वह नाश भी हो जाता है, जीव अकृत्रिम है तो वह नाश भी नहीं होता कर्म आठ हैं ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ वेदनी ३ मोहनी कर्म ४ नाम कर्म ५ गोत्र कर्म ६ आयु कर्म ७ अंतराय कर्म ८ जीव में सर्व पदार्थ जानने की शक्ति है उसको नहीं जानने देवे सो ज्ञानावरणी कर्म आंख के ऊपर पाटे समान १ जैसे २ उस कर्म का क्षयोपशम होता है वैसे २ ज्ञान शक्ति बढ़े है १ दर्शनावरणी कर्म २ सो देखने की शक्ति जीव में सर्व वस्तु की है लेकिन इस कर्म के वश देख नहीं सकता जैसे कोई आदमी राजा का

दर्शन कर सकता है लेकिन पहरेदार दर्शन नहीं करने देता २ वेदनी कर्म से सुख और दुःख जीव भोगता है यह कर्म शहद लगी-तलवार के चाटने समान है चाटते मीठा पीछे जीभ कट जाती है ३ मोहनी कर्म मदिरा के नशे समान है जैसे नशे में सुध नहीं रहे ऐसे मोह के वश सब सुध बुध भूल जाता है ४ नाम कर्म चितारे जैसा है जैसे चितारा अच्छी बुरी शकल बनाता है इस वजह देव मनुष्य का सुन्दर रूप नरक तिर्यंचका कुरूप इस कर्म के वश बनता है ५ गोत्र कर्म कुंभार जैसा है जैसे कुंभार एक चीज ऐसी बनाता है सो पूजने योग्य दूसरी अपूज्य इस तरह इस कर्म से ऊंच नीच गोत्र होता है ६ आयु कर्म कैदी के खोड़े जैसा अर्थात बेड़ी समान है जिस २ योनि का आयु कर्म बांधा है वह भोगने से छुट-कारा होता है ७ अंतराय कर्म राजा के भंडारी समान है राजा हुक्म देता है इस को फलानी चीज देदो लेकिन भंडारी दे नहीं इस तरह जीव दान दिये चाहता लाभ लिये चाहता भोग उप भोग भोगे चाहता वीर्य शक्ति फिराये चाहता लेकिन अंतराय इन बातों को रोके सो अंतराय कर्म है ज्ञानावरणी की ५ प्रकृति है मति ज्ञानाव-रणी १ श्रुति ज्ञानावरणी २ अवधि ज्ञानावरणी ३ मन पर्यव ज्ञाना-वरणी ४ केवल ज्ञानावरणी ५ ऐसे पांच ज्ञान हैं जिसको जो ढके सो ज्ञानावरणी कर्म है जैसा २ आवरण ज्ञान के बहुमान करने से अलग होता जाता है तैसे २ प्रकाश होता जाता है जैसे पूर्ण मासी के चन्द्र का उजाला है तैसे जीव शक्ति में लोका लोक जानने का उजाला है लेकिन बादलों की तरह कर्म का आवरण

रहित है ये दोनों इस अपेक्षा आदि करके रहित हैं और सहचारी हैं जिस वस्तु की आदि नहीं उसका अंत भी नहीं है इतना विशेष है भवो भव में जीव अशुभ क्रिया अठारे पाप स्थानकों से मन १ वचन २ काया ३ इन में करना १ कराना २ और पाप करते २ को अच्छा समझना ३ इस से जीव समय २ कर्म बांधता है और शुभ क्रिया दान शील तप और भावना इन शुभ कारणों से अथवा अकामनिर्जरा अज्ञान पने कष्ट सहने से जीव समय २ कर्म तोड़ता भी है इस तरह कर्मों का आदि भी है और अंत भी है जैसे सोना जीवों के उद्यम से धूड़ में से जुदा भी होता है और फिर परमाणु बिखरता २ मिट्टी में ही मिल जाता है लेकिन धुर में कोई नहीं बता सकता कि मिट्टी और सोना कब शामिल भये थे ऐसे जीव और कर्म का संबन्ध नित्यानित्य जानना जो वस्तु अकृत्रिम है उसका नाश भी नहीं है जैसे आकाश, और कृत्रिम वस्तु घट है तो उसका नाश भी है, तैसै कर्म जीव करता है वह नाश भी हो जाता है, जीव अकृत्रिम है तो वह नाश भी नहीं होता कर्म आठ हैं ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ वेदनी ३ मोहनी कर्म ४ नाम कर्म ५ गोत्र कर्म ६ आयु कर्म ७ अंतराय कर्म ८ जीव में सर्व पदार्थ जानने की शक्ति है उसको नहीं जानने देवे सो ज्ञानावरणी कर्म आंख के ऊपर पाटे समान १ जैसे २ उस कर्म का क्षयोपशम होता है वैसे २ ज्ञान शक्ति बढ़े है १ दर्शनावरणी कर्म २ सो देखने की शक्ति जीव में सर्व वस्तु की है लेकिन इस कर्म के वश देख नहीं सकता जैसे कोई आदमी राजा का

दर्शन कर सकता है लेकिन पहरेदार दर्शन नहीं करने देता २ वेदनी कर्म से सुख और दुःख जीव भोगता है वह कर्म शहद लगी-तलवार के चाटने समान है चाटते मीठा पीछे जीभ कट जाती है ३ मोहनी कर्म मदिरा के नशे समान है जैसे नशे में सुध नहीं रहे ऐसे मोह के वश सब सुध बुध भूल जाता है ४ नाम कर्म चितारे जैसा है जैसे चितारा अच्छी बुरी शकल बनाता है इस वजह देव मनुष्य का सुन्दर रूप नरक तिर्यंचका कुरूप इस कर्म के वश बनता है ५ गोत्र कर्म कुंभार जैसा है जैसे कुंभार एक चीज ऐसी बनाता है सो पूजने योग्य दूसरी अपूज्य इस तरह इस कर्म से ऊंच नीच गोत्र होता है ६ आयु कर्म कैदी के खोड़े जैसा अर्थात बेड़ी समान है जिस २ योनि का आयु कर्म बांधा है वह भोगने से छुट-कारा होता है ७ अंतराय कर्म राजा के भंडारी समान है राजा हुक्म देता है इस को फलानी चीज देदो लेकिन भंडारी दे नहीं इस तरह जीव दान दिये चाहता लाभ लिये चाहता भोग उप भोग भोगे चाहता वीर्य शक्ति फिराये चाहता लेकिन अंतराय इन बातों को रोके सो अंतराय कर्म है ज्ञानावरणी की ५ प्रकृति हैं मति ज्ञानाव-रणी १ श्रुति ज्ञानावरणी २ अवधि ज्ञानावरणी ३ मन पर्यव ज्ञाना-वरणी ४ केवल ज्ञानावरणी ५ ऐसे पांच ज्ञान हैं जिसको जो ढके सो ज्ञानावरणी कर्म है जैसा २ आवरण ज्ञान के बहुमान करने से अलग होता जाता है तैसे २ प्रकाश होता जाता है जैसे पूर्ण मासी के चन्द्र का उजाला है तैसे जीव शक्ति में लोका लोक जानने का उजाला है लेकिन बादलों की तरह कर्म का आवरण

जानना ज्यों २ वायु से बद्दल अलग होते हैं त्यों २ प्रकाश दिखाई देता है ऐसे शुभ क्रिया और शुभ भाव उस आवरणों को दूर करता है दर्शनावरणी की नव प्रकृति है निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ स्त्यानर्धि ५ चक्षु दर्शनावरणी ६ अचक्षु दर्शनावरणी ७ अवधि दर्शनावरणी ८ केवल दर्शनावरणी ९ वेदनी की २ प्रकृति, सुख वेदनी १ दुःख वेदनी २ मोहनी कर्म की २८ प्रकृति क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ इन ऐकेक को चार गुणा करना सो इस तरह अनंतानुबंधी क्रोध १ प्रत्याख्यानी क्रोध २ अप्रत्याख्यानी क्रोध ३ संज्वलना क्रोध ४ इस तरह मान के ४ भेद माया कपटाई के ४ भेद लोभ के ४ भेद यह तो शोलेकपाय है अनंतानुबंधी क्रोध वज्र पर लकीर जैसा है सो जावज्जीव क्रोध जीव से जाता ही नहीं यह क्रोध १ और मान और माया और लोभ वाला निश्चय नरक गति जाता है प्रत्याख्यानी क्रोध तलाव का पानी सूखे बाद जमीन फटे जैसा सो पीछा बरसात होने से सब लकीरें मिट जाती है इसी तरह कोई संवत्सरीपर्वादि कारण बनने से क्रोध दिल से मिटा देता है इस की अवधि वर्ष दिन की है यह मोहनी कर्म वाला तिर्यच गति में जाता है २ अप्रत्याख्यानी क्रोध वेलू पर हवा से लकीरें पड़ने जैसा है इस क्रोध की अवधि पन्द्रह दिनों की है जब दूसरी हवा जोर से चली तब वह वेलू की लकीरें मिट जाती हैं इस तरह यह कषाय वाला पन्द्रह दिनों के पीछे निशल्प हो जाता है यह जीव मर के मनुष्य गति में जाता है ३ संज्वलना क्रोध १ मान २ माया ३ और लोभ ४ वाले की थिति बहुत थोड़ी है संज्वलना क्रोध पानी

के लकीर जैसा है ऐसा मोहनी कर्म वाला देव गति में जाता है इसी तरह मान के १ माया के २ लोभ के ३ वज्र के थंभा जैसा आदि दृष्टांत उत्तराध्यन प्रमुख सूत्रों से जानना नवनोपायक है हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुगंछा ६ स्त्री वेद १ पुरुष की इच्छा करे सो, पुरुष वेद ८ स्त्री की इच्छा करे सो, नपुंसक वेद ९ दोनों की इच्छा करे सो, सम्यक्त मोहनी १० मिश्र मोहनी ११ मिथ्यात्व मोहनी १२ सम्यक्त जो शुद्ध देव शुद्ध गुरु शुद्ध धर्म इस में जीव को मूर्छित कर देवे सो सम्यक्त मोहनी, मिथ्यात्व और सम्यक्त इन दोनों में जीव को मूर्छा देवे अर्थात नहीं पहचानने देवे सो मिश्र मोहनी इसी तरह कुदेव कुगुरु कुधर्म में मूर्छा देवे सो मिथ्यात्व मोहनी यह २८ प्रकृति मोहनी कर्म की है यह कर्म सब कर्मों का राजा है इन्हों का अर्थ विस्तार कर्मग्रन्थ पंचसंग्रह गोमठसार सूत्रादिकों से जानना सूचना मात्र यहां लिखा है अब सब अंगोपांग की रचना करने वाला नाम कर्म की एक सो तीन प्रकृति सो संक्षेप करके नाम मात्र यहां लिखता हूं इस कर्म का सहचारी होकर जीव तरह २ का शरीर रचता है बहुत ईश्वर कर्त्ता मानने वाले गर्भादि रचना में ईश्वर की कारीगरी बतलाते हैं सो तत्व के अजान हैं कर्मों की प्रकृति के अजान हैं जीव और कर्मों की कारीगरी है ईश्वर ऐसे गलीच स्थान में क्यों प्रवेश कर रचना की कारीगरी पना करता है (प्रश्न) ईश्वर और माया इन दोनों ने मिलके रचना रची है (उत्तर) तुम्हारे समझ में आई सो बात एक नय से सच्ची भी है, जीव है सो निज रूप शक्ति करके ईश्वर ही है, माया कपट छद्म यह नाम सब कर्म

ही है पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर माया कर्म से रहित है वह माया से अलग है इस वास्ते हम जो जीव और कर्म की कुदरत लिखते हैं वह न्याय संपन्न है ईश्वर की शक्ति से सृष्टि की रचना मानना यह सब बात वन्ध्या पुत्रवत् खकुसुमवत् है एक अशुद्ध नैगमनय की अपेक्षा करके ईश्वर कर्त्ता मानने वालों के वाक्य सच्चे हैं, जैसे एक सुथार पायली बनाने वास्ते जंगल में लकड़ी लेने को चला किसी ने पूछा कहां जाते हो सुथार बोला पायली लाने को इसी तरह जीव ईश्वर सत्ता करके है लेकिन अभी कर्म सहचारी होने से भया नहीं, हो गया तो फिर सृष्टि में रचना करेगा नहीं इस वास्ते ईश्वर तत्व निर्णय हमारा बनाया भाषा ग्रन्थ देखो संसार की बहुत सी रचना घट पटादिक मनुष्य कृत है पांच समवायों के मिलने से सो हम आगे लिखेंगे और कई एक स्वसत्ता रूप ६ द्रव्य है सो पहली लिखा ही है, अथ नाम कर्म की प्रकृति १०३ लिखते हैं नरक गति नाम कर्म १ तिर्यंच गति नाम कर्म २ मनुष्य गति नाम कर्म ३ देव गति नाम कर्म ४ एकेन्द्री जाति ५ बेन्द्री जाति ६ तेंद्री जाति ७ चोरेंद्री जाति ८ पंचेंद्री जाति ९ उदारिक शरीर १० वैक्रिय शरीर ११ आहारक शरीर १२ तेजस शरीर १३ कार्मण शरीर १४ औदारिक अंगोपांग १५ वैक्रिय अंगोपांग १६ आहारक अंगोपांग १७ औदारिक औदारिक बंधन १८ औदारिक तेजस बंधन १९ औदारिक कार्मण बंधन २० औदारिक तेजस कार्मण बंधन २१ वैक्रिय बंधन २२ वैक्रिय तेजस बंधन २३ वैक्रिय कार्मण बंधन २४ वैक्रय तेजस कार्मण बंधन २५ आहारक आहारक बंधन २६

आहारक तैजस बंधन २७ आहारक कार्मण बंधन २८ आहारक तैजस कार्मण बंधन २९ तैजस, तैजस बंधन ३० तैजस कार्मण बंधन ३१ कार्मण कार्मण बंधन ३२ औदारिक संघातन ३३ वैक्रियसंघातन ३४ आहारकसंघातन ३५ तैजससंघातन ३६ कार्मणसंघातन ३७ वज्रऋषभनाराचसंघयण ३८ ऋषभनाराचसंघयण ३९ नाराचसंघयण ४० अर्द्धनाराचसंघयण ४१ कीलिकासंघयण ४२ छेवट्ठासंघयण ४३ समचोरससंस्थान ४४ न्यग्रोधसंस्थान ४५ सादिसंस्थान ४६ वामनसंस्थान ४७ कुब्जसंस्थान ४८ हुंडकसंस्थान ४९ कृष्णवर्ण ५० नीलवर्ण ५१ लोहितवर्ण ५२ हारिद्रवर्ण ५३ श्वेतवर्ण ५४ सुरभिगंध ५५ दुरभिगंध ५६ तिक्तरस ५७ कटुकरस ५८ कषायरस ५९ आम्लरस ६० मधुररस ६१ कर्कशस्पर्श ६२ मृदुस्पर्श ६३ गुरुस्पर्श ६४ लघुस्पर्श ६५ शीतस्पर्श ६६ उष्णस्पर्श ६७ स्निग्धस्पर्श ६८ रूक्षस्पर्श ६९ नरकानुपूर्वी ७० तिर्यगानुपूर्वी ७१ मनुष्यानुपूर्वी ७२ देवानुपूर्वी ७३ शुभविहायोगति ७४ अशुभविहायोगति ७५ पराघात ७६ उच्छ्वासनामकर्म ७७ आतपनामकर्म ७८ उद्योतनामकर्म ७९ अगुरुलघुनामकर्म ८० तीर्थंकरनामकर्म ८१ निर्माणनामकर्म ८२ उपघातनामकर्म ८३ त्रसनामकर्म ८४ बादरनामकर्म ८५ पर्याप्तनामकर्म ८६ प्रत्येकनामकर्म ८७ स्थिरनामकर्म ८८ शुभनामकर्म ८९ सौभाग्यनामकर्म ९० सुस्वरनामकर्म ९१ आदेयनामकर्म ९२ यशःकीर्तिनामकर्म ९३ स्थावरनामकर्म ९४ सूक्ष्मनामकर्म ९५ अपर्याप्तनामकर्म ९६ साधारणनामकर्म ९७ अस्थिरनामकर्म ९८ अशुभनामकर्म ९९

दुर्भगनामकर्म १०० दुःस्वरनामकर्म १०१ अनादेयनामकर्म १०२ अपयशःअकीर्तिनामकर्म १०३ इस तरह इस नामकर्म ने शरीर संबन्धी रचना रची है औदारिक शरीर एकेन्द्री पृथ्वी १ पानी २ अग्नि ३ हवा ४ और वनस्पति ५ इन पांचों से लेकर वेंद्रीय २ तेंद्रीय ३ चोरेंद्रीय ४ और तिर्यंच पंचेन्द्रीय और मनुष्यों का जानना देवता और नारकियों का शरीर वैक्रिय जानना चौदेपूर्वधारी साधू आहारक शरीर रचता है खाये पीये को हजम करे सो तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर से काया रची जाती ५ यह दोय शरीर सूक्ष्म है जीव चारों गति वालों के संग में रहता है संघयण हाड़ों की मजबूती का नाम है संस्थान शरीर के शकल का नाम है बाकी शब्द पर अर्थ जानना विस्तार इन्हों का गुरु गम जैन पंडितों से सीखना, आयु कर्म की चार प्रकृति है, देवायु १ नरकायु २ तिर्यंचायु ३ मनुष्यायु ४ अंतरायकर्म की ५ प्रकृति है दानांतराय १ लाभांतराय २ भोगांतराय ३ उपभोगांतराय ४ वीर्यांतराय ५ इस तरह इन आठो कर्मों की एक सो अट्ठावन मूल प्रकृति है, सांख्यमत कर्त्ता कपिल देवजी ने प्रकृति और पुरुष से सृष्टि मानी है सो प्रकृति याने स्वभाव कर्मों का पुरुष सो जीव इन दोनों से संसार नित्य है ऐसा माना है सो पूर्वोक्त कहने से मिलता है कपिल देवजी ने २५ तत्व माने हैं सर्वज्ञ के उपदेश में नव तत्व हैं जो चीज विस्तार वाली होती है उसका नाम तत्व है जैसे जीव तत्व १ अजीव तत्व २ पुण्य तत्व ३ पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ संवर तत्व ६ निर्जरा तत्व ७ बन्धतत्व ८ मोक्ष तत्व ९ जीव

अजीव का वर्णन पहली छव द्रव्य में कर ही दिया है नवप्रकार से जीव शुभ कर्म सहचारी होकर पुण्य बांधता है ४२ प्रकार से सुख भोगता है पाप ८२ प्रकार से जीव भोगता है मिथ्यात्व और अव्रत से अठारे पाप स्थानक से जीव पाप बांधता है पाप आने का द्वार सो आश्रव ५ उस द्वार को रोकना सो संवर ६ सत्ता में बंधे भये कर्मों को जलावे सो निर्जरा १२ भेद का तप, बंध जीव कर्मों का ४ तरह से, मोक्ष जीव कर्मों से रहित होना सो, नव भेद से, इसका विस्तार नव तत्व प्रकरण से समझना, कपिल देवजी रज १ सत २ तम ३ ऐसे तीन पुरुष का मन परिणाम कहते हैं, सर्वज्ञ देव छव कहते हैं कृष्ण लेस्या १ नील लेस्या २ कापोत लेस्या ३ तेजो लेस्या ४ पद्म लेस्या ५ शुक्ल लेस्या ६ कपिल देवजी पांच ज्ञान इन्द्रिय पांच कर्म इन्द्रिय हाथ पांव गुदा आदि को कर्मेंद्रिया कहते हैं सर्वज्ञ देव दश प्राणों को धारने वाला पुरुष अथवा पंचेंद्रिय तिर्यंच कहते हैं इन प्राणों से रहित होना उस को मरण कहते हैं, स्पर्शन इन्द्रिय इसके आठ विषय हैं १ रसना इन्द्रिय इनके पांच विषय हैं २ घ्राण इन्द्रिय इस के दो विषय हैं ३ चक्षु इन्द्रिय इस के पांच विषय हैं ४ श्रोत्र इन्द्रिय इस के तीन विषय हैं ५ एवं ५ श्वासो श्वास ६ आयु ७ मनोबल ८ वचनबल ९ कायबल १० इत्यादि सृष्टि का क्रम संक्षेप कर बतलाया. (प्रश्न) तुम ने जो कर्मों का स्वरूप लिखा सो हमने किसी भी वैद्यकशास्त्र में देखा नहीं. (उत्तर) तुम ने देखा है लेकिन उन बातों को समझने नहीं. जगह २ प्रकृति और पुरुष लिखा है उस प्रकृति का विस्तार सर्वज्ञकथित शास्त्रों में है

औरों में नहीं, इस वास्ते प्रकृतिबंध है सो ही ८ कर्मों की मूल प्रकृति का स्वरूप है. (प्रश्न) कर्म तो जड़ है वह जीव को सुख दुःख कैसे भुगा सकता. (उत्तर) जड़ पदार्थ मदिरा और जहर दिक है सो खाने पीने से चेतन की कहो क्या गति होती है, प्रत्यक्ष पने परवश होकर सुध बुध भूल दुःख पाता है, और प्रत्यक्ष देखते हो संसार में सर्व वस्तुओं का बनना जीव के उद्यम से जड़ पदार्थ लोह पत्थर लकड़ी के औजारों से अनेक पदार्थों की सिद्धि होती है. (प्रश्न) जीव तो सर्व सुख चाहता है फिर दुःख का काम कैसे करता है. (उत्तर) जैसे मक्खी शहद घी में सुख की अभिलाष कर प्रवेश करती है फिर तो जो हाल है सो तुम हम देखते हैं (प्रश्न) मक्खी में तो ज्ञान नहीं है मनुष्य में तो ज्ञान है फिर दुःख का काम कैसे करता है. (उत्तर) मक्खी के क्षयोपशम माफक मक्खी में भी ज्ञान है मनुष्यों के क्षयोपशम माफक मनुष्य में भी ज्ञान है उन्हों में भी आपस में तरतमता है तो आप को विचार करना चाहिये चोरी जुआ, रंडीबाजी रोगों पर कुपथ्य करने आदि से दुःख क्यों पाता है, कहोगे कि अज्ञान से, तो विचार लो अज्ञान कर्म उस ने पहले बांधा है तभी तो उस को आगे कष्टकारी वस्तुओं की बुद्धि पैदा होती है, सो कहा भी है " दोहा—को सुख को दुःख देत है कर्म देत झकझोर, उलझत सुलझत आप ही धजा पवन के जोर." " बुद्धिः कर्मानुसारिणी " फिर कृष्ण ने अर्जुन से कहा है. " यतः अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं, कृतकर्मस्य क्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि. " अर्थ इस का प्रकट है

(प्रश्न) हम तो यों जानते हैं कि परमेश्वर ही जीवों को सुख दुःख देता है, हुक्म बगैर कुछ नहीं होता. (उत्तर) तुम को अज्ञान का उदय है इस वास्ते ऐसा कहते हो. भला तुम को हम पूछते हैं. एक ने एक आदमी को मारा, एक ने चोरी करी, ये तुम्हारी समझ मूजिब तो ईश्वर के हुक्म से ही ठहरेगा तो फिर इनकी राजा राजा वा ईश्वर देगा या नहीं, तो कहोगे, देगा. भला पहले तो उस को हुक्म दिया फिर सजा क्यों, तो कहोगे ईश्वर ने हुक्म ऐसे कामों का नहीं दिया उसने शैतान के बहकाने से किया, बरा सोच लो वह कर्म जो है उसी को तुम शैतान कहते हो, बोली का फर्क है राजा तो सर्वशक्तिमान् है नहीं और न उसको त्रिकालदर्शी ज्ञान है इस वास्ते पुलिस आदि महकमे बनाकर गवाह (साक्षी) पर अन्याय को रोक चाहता है जिस पर भी अन्यायी तो लगह २ से अन्याय करने से बंद नहीं होते, ईश्वर सर्वशक्तिमान् है और परम कृपावंत है, तो फिर प्रथम पाप करते प्राणियों को रोक ही क्यों नहीं देता फिर सजा देने में तत्परी लेता है, तुम बुद्धि खर्चो न तो ईश्वर पाप वा पुण्य कराता न सजा देता सब कर्मों की रचना है, (प्रश्न) हम को इस पर ईश्वर की रचना मालूम देती है, दिन रात ऋतु वगैरः मर्यादी किस ने बांधी है इत्यादि अनेक बातें हैं. (उत्तर) यह संसार में पांच समवायों का संबन्ध है सो हम तुम को समझाते हैं. इस संसार में छव दर्शन हैं. कालवादी १, स्वभाववादी २, भवितव्यतावादी ३, कर्मवादी ४, पुरुषकृत उद्यमवादी ५ और छठ्ठा दर्शन सर्वेश्वरवादी ६. (प्रश्न) हम समझे नहीं, यह

क्या बात है. (उत्तर) कालवादी कहता है, काल ही से सब कुछ होता है, जैसे काल से ही सृष्टि की उत्पत्ति होती है, काल से ही नाश होता है, ऋतुकाल पर औरत गर्भ धारती है, काल से पुत्र जनती है, काल से बोलना, काल से चलना, काल से दूध का दही होता है, काल से दरख्त के फल लगना है, काल से तरह २ के पदार्थ होते है, काल से चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्त्त, नवनारायण, नव प्रतिवासुदेव, नव बलदेव, नव नारद, ग्यारह रुद्र होते हैं, काल से उत्सर्पणी अवसर्प्पणी के छः आरे होते हैं. सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतुधर्म होता है. काल से बालक विलास, काल से यौवन में काले केश होते हैं, काल से बुढ़ापे में इन्द्रियों का शिथिल होना इत्यादिक बातें सब कालवादी काल से ही बतलाता है, काल को ही ईश्वर मानता है १, तब स्वभाववादी कहने लगा अरे ! काल से क्या होता है, सब वस्तु स्वभाव से ही पैदा होती है और स्वभाव से ही विनाश होती है, देखो छतेयोग यौवनवती स्त्री वांझनी के सन्तान नहीं होता औरत के मुंह पर तथा हथेली पगथली में बाल नहीं उगते, नीम के दरख्त के आम नहीं लगते, वसंत में बागों की हरियाली होती है मोर पंखों में चित्राम कौन करता है, सांझ की वक्त बद्दलों में रंग कौन करता है, जीवायोनि में तरह २ की अंगोपांग की रचना, हिरनों के सुंदर नेत्र, बोर बबूल आदि के तीखे कांटे, रूप और रंग गुण जुदे २ वस्तुओं में, जुदे २ साप में जहर, उसके मस्तक की मणि जहर उतार देवे, पहाड़ थिर, हवा का चलना, अग्नि की झाल ऊंची

जाना मछली और तूंबा जल में तिरे, कौआ ऊंट पत्थर डूब जावे. पांखों वाले जानवर उड़ें, सूंठ से वाय मिटे, हरड़े आदि से दस्त लगे, कोरड़ू सीजे नहीं, देश की तासीर से जमीन में लकड़ी का पत्थर हो जाय, सूर्य गरम चन्द्रमा ठंडा भव्य जीव मोक्ष जाय, छओं द्रव्य अपना २ स्वभाव नहीं छोड़ें, ऐसे स्वभाववादिओं का कहना है २, तब भवितव्यतावादी कहने लगा, अरे ! काल और स्वभाव से क्या होता है, भवितव्यता वगैर कोई काम सिद्ध नहीं होता, दरियाव में तिरे चाहे जंगल में भटके क्रोड़ों भी यत्न करे अनहुई होय नहीं भवितव्यता होती है सो ही होता है, आम के वसंत में मांजर लगती है, कोई हवा से अथवा मनुष्य जानवर खंखेर भी देवे तो भी आम लगने हैं सो लगे ही जिधर की तरफ भवितव्यता होती है, प्राणी का मन उधर ही दौड़ता है सौ वर्ष उद्यम करे वह वस्तु नहीं मिले भवितव्यता के वश वगैर विचारे आय मिलती है, आठवां चक्रवर्त्ति सभूम दरियाव में डूबा, ब्रह्मदत्त बारमें चक्रवर्त्ति की आंख गोवाल ने फोड़ी, कृष्ण नारायण की द्वारिका जली, पांवों में बाण लगा, कोयल पर शिकारी ने बाण तका ऊपर से सिकरा तक रहा है, कोयल कूक रही है, हाय प्राण कैसे बचेंगे अकस्मात् बाण छूटा सो सिकरे के लगा, शिकारी को सांपने डंक मारा, कोयल के प्राण बचे यहां भी नियति बलवती रही शस्त्र से मारे आदमी भी जी जाते हैं और हजारों यत्न करने वाले मकानों में बैठे भी मर जाते हैं, इत्यादि बातों से नियतिवादी भवितव्यता सिद्ध करता है ३, तब कर्मवादी बोला—काल स्वभाव भवितव्यता से क्या होना

मिथ्यात्व है. धन्य है सर्वज्ञस्याद्वादी अरिहंत भगवंत जिसने यथार्थ न्याय सर्वांगनय से ठहराया. जैसे पांच अंधों ने एक हाथी के एक २ अंग पकड़ा सूंड, पकड़ने वाला लोह की डांतरडी घास काटने की उसकी शंकल वाला यह जानवर है. दूसरे अंधे ने कान पकड़ा सो बोला यह जानवर छाज जैसा है. तीसरे अंधे ने पांव पकड़ा सो बोला जाड़े मूसल जैसा यह जानवर है. पूंछ पकड़ने वाला अंधा बोला यह जानवर बुहारी जैसा है. पांचवां अंधा पीठ पर हाथ फेर के बोला यह जानवर मांचे जैसा है इत्यादि अपने २ हठ से पकड़े हुवे बाद से आपस में लड़ने लगे. यह अंधे कुल ग्राम के वासिंदे थे, पहलें इन्हों ने हाथी देखा नहीं था, इतने में हाथी का जानने वाला सूझता हुवा पुरुष आया उसने कहा क्यों लड़ते हो यह पांचों ही अंग का धारणे वाला एक यह हाथी नाम का जानवर है जो २ अंग तुमने पकड़ा है सो एक पक्ष सच्चा ही है बाद उन पांचों को पांचों ही अंग समझाय एक हाथी सिद्ध किया. इस दृष्टान्त मूजब संसार में पांच दर्शन हैं छट्ठादर्शन जैन सर्वज्ञस्याद्वादी का है, इसका न्याय सर्वांगसंपन्न अखंडित है. (प्रश्न) मनुष्य सर्वज्ञ होता ही नहीं, तुमने मताभिमान से अरिहंत को सर्वज्ञ लिखा है तुम्हारे तीर्थंकर थे तो मनुष्य ही हां विशेष बुद्धिमान कहो, सर्वज्ञ मत कहो. (उत्तर) अगर तुम प्रेक्षावान हो, और न्यायवंत हो तब तो समझ ही लोगे मैं न्याय वाक्यों से उनकी सर्वज्ञता तुम्हें सिद्ध कर देता हूं, सच्चा सदैव सच्चा ही है. कोई रागी द्वेषी न मानें तो क्या उनकी सचाई जाती है, सो कभी नहीं, प्रथम तो उन

पुरुष की मूर्त्ति ही सर्वज्ञ पना सिद्ध करती है कि ऐसी योग मुद्रा धारण करने वाला पुरुष अल्पज्ञ नहीं था तदउपरांत उन्हों के जीवन चरित्र से सर्वज्ञ पना सिद्ध है, संसार में भटकने की जड़ राग द्वेषादिक अठारह दूषण सो उन्हों का लेष भी केवल ज्ञान प्राप्त भये बाद उन्हों में नहीं था क्रोड़ानकोड़ इन्द्रादिक देवता जिस की सेवा करते थे. चौंतीस अतिशय, पैंतीस वाणी के गुण, आकाश में छत्र चमर देव दुंदभि आदि गुण और किसी देवों में नहीं था इस वास्ते तीर्थंकर केवली सर्वज्ञ थे. (प्रश्न) हम क्योंकर प्रतीत करें कि तीर्थंकर केवली सर्वज्ञ थे, न मालूम पीछे से तुम लोगों ने ऐसे अपूर्व गुण उन्हों के लिख लिये होंगे. (उत्तर) क्यों जी हमने लिख लिया होगा तो हम पूछते हैं और २ मतवादियों का हाथ किसने पकड़ा था कि तुम अपने इष्ट देवों का ऐसे गुण मत लिखो लिखा वही है कि जैसा २ गुण उन्हों में था और जैसा २ काम उन्हों ने किया था बस उन्हीं कामों के करने से उन्हों को ईश्वर माना है (प्रश्न) तुम को क्या खबर भई कि अर्हत सर्वज्ञ थे. (उत्तर) हम सम्प्रदाय परम्परा से सुनते आये हैं कि मन में जो कुछ जिसने विचारा उसको तीनों कालों की बात अर्हत परमेश्वर कहते थे इस उपरांत और यह आगम जो सिद्धांत है सो उन्हों का सर्वज्ञ वीतरागी पना सिद्ध करता है. उन्हों के कहे शास्त्र में किसी भी जगह स्वार्थ सिद्ध पना अथवा अपने शिष्य प्रशिष्यों की आजीविका सिद्धि नहीं लिखी है. केवल सर्व मोहादिक त्यागने से मुक्ति होती है ऐसा त्याग वैराग्य और दया की बारीकी का विचार विना जैन आगम

टाल और किसी मत के ग्रन्थों में नहीं है, न्याय इसका ऐसा मजबूत है सो किसी भी प्रतिवादी से खंडित नहीं हो सकता जैसे व्याकरण पढ़ा, व्याकरण पढ़ने वाले की परिक्षा कर सकता है. तैसे ही प्रेक्षावान न्याय वेत्ता उस सर्वज्ञ के आगम को सुन के पढ़के अर्हत परमेश्वर सर्वज्ञ थे ऐसा जान सकता है जिस परमेश्वर के वचन पूर्वा पर विरोध कर के रहित है बुद्धिमान डाक्टर बुहलर ऐसा लिखता है. जैन के तीर्थंकर श्री महावीर तो दूर रहा लेकिन जैन धर्म का एक आचार्य श्री हेमचंद्र के साढ़े तीन क्रोड़ श्लोकों की रचना शब्दानुशासन देख के मेरी कलम सर्वज्ञ लिख सकती है ऐसा बहुत से अंगरेजों ने निश्चय किया है. नाम कहां तक लिखें और विद्या से हीन हैं तथा पक्षपाती हैं, उन्हों को तो क्या खबर होय. (प्रश्न) दूसरे धर्मों में क्या पण्डित हुये नहीं, या हैं नहीं उन्हों ने तो अर्हत को सर्वज्ञ नहीं लिखा. (उत्तर) जो वे अर्हत को सर्वज्ञ माने तो दूसरा धर्म ही उनके क्यों रहे. मिथ्यात्व मोहनी के उदय से उन्हों को यथार्थ सूझा नहीं जैसे सन्निपात रोगी को पांडु रोगी को सफेद वस्तु भी अन्य रूप से दिखाई देती है और फिर मत पक्ष से इतना विरोध जाहिर किया कि जैन मन्दिर में नहीं जाना, हाथी से मरना कबूल, ऐसे द्वेषी अर्हतागम कब सुने और बांचे जिन २ पुरुषों ने देखा वा सुना उन्हों ने तो समझ ही लिया गौतमादिक चौदासौ तेतालीस सौ ब्राह्मण, शय्यंभवभट्ट हरिभद्रमलयगिरि गुसांई आदिक अनेकों ने, वगैर जाने बूझे किसी को झूठा नहीं कहना और निन्दा तो किसी मत की भी नहीं करना. निन्दा महा पाप

सृष्टिक्रम ॥

का हेतु है जैसे हरि भद्राचार्य ने लिखा है. " यतः पक्षपात नमेवारे, न द्वेष कपिलादिषु, युक्ति मद्वचनंयस्य, तस्यकार्यः परिग्रहः " १ हमने तो सर्वांग संपन्न सर्वज्ञ का शास्त्र देखा और उस में जो २ कथन हैं सो मात्र सिद्धांत है, संसार में सर्वोत्तर ज्ञान उस ने ही प्रकट करा उस में ही यह आयुर्वेद है, यद्यपि वीत रागी हुये बाद फिर संसार कथा नहीं विचारते पूछे जिसका प्रत्युत्तर सर्वज्ञ निश्चय देवे बाकी तो षट शास्त्र आठ निमित्त उन्हों के उपदेशित मोक्ष मार्ग साधक धर्मोपदेश में मिला हुवा है, " किंहुना " इस बात को समझना यह समझना चाहिये जीव और शरीर का आरोग्य संबन्ध है व तक सब काम चलता है सो अपने देखते हैं. जीव शरीर में निकल के जाता है और क्या २ कार्य करता है. सो नहीं दी इस वास्ते सारी मुदारडीला सुं छे यह लिखावट सच्ची है. और प्रकृति से बुद्धि और मन का सहचारी पना है. पांच इन्द्री, है जैसे चमडी से स्पर्श का, १ नेत्र से रूप का २ पांचों का ज्ञान प्रकट है, कर्मेंद्रिय से बोलना, पकड़ना. चल करना, और मल त्याग करना सो. वाणी १, हाथ २, लिंगेंद्री ४, गुदा ५. यह जानना. जल १, अग्नि २ पृथ्वी ४. और आकाश ५, इन पांचों में जो २ गुण रहे इस शरीर में मालूम देता है. बाहिर जो इन्द्रियों की देती है, सो ज्ञान इन्द्री नहीं है इन्हों के अन्दर जो २ काम करती है ज्ञान इंद्रिय वगैरह

जो अन्दर ज्ञान इन्द्रियों और कर्म इन्द्रियों कुदरत का काम देने वाली ज्ञान तंतु और गति तंतु है सो ज्ञान इन्द्रियों और कर्मेंद्रियों का काम देती है ऐसे शरीर में जो आत्मा ने निवास किया है, इस जीव के बाबत अनेक मतांतरियों ने संकल्प विकल्प किया है. जीव है सो क्या चीज है. इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो कुछ नहीं. कोई तो कहता है शरीर में से चलती रसायणिक क्रिया में से उत्पन्न भया चेतन है. इस प्रश्न के करने वाले चार्वाक् बृहस्पति नाम के आदि में भये हैं. यह प्रश्न बहुत कठिन है इसका शंका समाधान नन्दी सूत्र की टीका में बहुत है, पदार्थ वादियों के मत में भी यही बात है शरीर और चेतन जुदा २ नहीं है. शरीर में खून है सो जीवन है और इस खून का फिरना दूसरा जो चेतन वाला पदार्थ उसके ऊपर आधार रक्खे है, वह पदार्थ प्राणवायु है. अंगरेजी में उसको आक्सिजन कहते हैं, यह प्राणवायु खून को साफ करती है. इस से प्राण धारण रहता है, इस वास्ते वैद्यक में इस वायु का नाम सार्थक धरा है. यह प्राणवायु शरीर की क्रिया वास्ते जितनी चाहिये इतनी नहीं मिले, तब शरीर का चेतन कम पड़ जाता है, और बिलकुल नहीं मिले तब शरीर की सब क्रिया बंद हो जाती है, उसको मौत कहते हैं, जिस में जीवित तत्व कम होता है, उस में चेतन वाला खून कम होता है. शुद्ध और प्रमाण वाले खून से मनुष्य में चेतन और बल जियादा होता है जो आदमी नाताकत और दुबले होते हैं, उसका भी यही कारण है. लम्बी उमर और कम उमर भी इसी खून से तासीर रखती है, कितनेक आदमियों का

जीव एकाएक कोई भी बीमारी बनते ही निकल जाता है और कितनेक रोगों में जिंदगी का अंश क्रम २ से कम होता जाता है और चेतन कम होता २ आखिर बंद हो जाता है. आत्मवादी कहता है जीव शरीर जुदे २ हैं, आत्मा परमात्मा रूप है, लेकिन प्रकृति से बंधा भया वीर्य और स्त्री के आर्त्तव का आहार पर्याप्ति करता शरीर पर्याप्ति बांधता है, इस वास्ते जीव कहलाता है पीछे इन्द्रिय पर्याप्ति ३ फिर सासोश्वास पर्याप्ति बांधता है ४, मन पर्याप्ति ५, और भाषा पर्याप्ति ६: ऐसे छः पर्याप्ति मनुष्य बांधता है. ६ कई एक पदार्थवादी ऐसा कहते हैं, जीव कहां से आय के प्रवेश नहीं करता है. वीर्य में और स्त्री के आर्त्तव में रहे भये जीव हैं सो ही प्रवेश करते हैं उस पर ऐसा दृष्टांत देते हैं जैसे सूरज की किरणों में अग्नि है और सूर्य कांतमणी में भी अग्नि हैं ये दोनों अलग २ होय जहां तक बादर (थूल) अग्नि पैदा नहीं होती इस दृष्टांत मूजब रज और वीर्य में रहे जीव ही पैदा होता है इति. वह जीवात्मा सर्व विषयों को जानता है क्योंकि ज्ञानानंद पूर्ण पवित्र है इस वास्ते जीभ से पांच रस. अथवा छः रस जानता है. आंख से पांच रंग, नाक से सुर भी गंध १ दुर्भी गंध २. कान से जीव शब्द १ अजीव शब्द २ और इन दोनों से मिल के निकले सो मिश्र शब्द ३ जानता है. स्पर्श ८ ठंडा १, गर्म २, हलका ३, भारी ४, सुंहाला ५, सरधरा ६, लुखा ७ और चुपड़ा ८ इत्यादि इन्द्रियों द्वारा इन स्वरूपों का भोक्ता बन रहा है. अब पुरुषों स्वभाव ३ तरह होता है और ६ तरह का भी होता है लेकिन यहां तीन का स्वरूप दिखाते हैं. सत्वगुणी प्रकृति, धर्म दयावंत

आस्तिक पना नव तत्वों पर, उदारता सम्भावना क्रोध रहित पना सत्यवचन बुद्धिवान् धीरज क्षमा ज्ञान सरलपणा निंदा बिकथा अशुभ कर्म करता शंके इच्छा रहित करे बड़ा विनयवान १, रजोगुणी प्रकृति, क्रोधी दूसरे को मारने की इच्छा सुख की अधिक २ इच्छा करे, कपटी कामी बुरे वचन बोलने वाला अधैर्य अहंकार और भटकने की इच्छा २ तमोगुणी प्रकृति, नास्तिक पना, स्वर्ग नरक मोक्ष पुण्य माने नहीं बहुत खेद बड़ा आलस्य दुष्ट बुद्धि अति निंदित काम अति निंदित सुख में प्रीति बहुत नींद अज्ञान अति क्रोध महा गर्व पना पहली १५८ प्रकृति में यह सब आ गया है तो भी जियादा समझने को यहां फिर लिख दिया है इस में फिर कोई में दोय गुण की प्रकृति कोई में तीनों हो मिले भये इत्यादि अनेक भेदों के मिले भये भी मनुष्यो की प्रकृति देखने में आती है आत्मा है सो शरीर रूपीघर का राजा है प्रकृति से बंधा हुवा इस से सर्व व्यवहार करता है शरीर बिना पहचाने नहीं जाता जीव बिना शरीर कुछ कार्य नहीं कर सकता इस राजा के सब कामों में इधर उधर फिरने वाला मनरूपी प्रधान है सारा सार बात को समझाने वाला अंतः-करण रूपी न्यायाधीश है और बुद्धि चित्त वगैरा उसके सलाहगीर हैं. जहां तक ये सब कारबारी अपने २ योग्य रीति का काम बजाते हैं वहां तक शरीर का भोक्ता जीव राजा बहुत वर्षों तक सुख और आनंद से राजधानी भोगता है जब पूर्वोक्त कार बारी अपना २ धर्म भूल कर अयोग्य रीति पर चलने लगते हैं तब शरीर रूप घर में बड़बड़ अर्थात रोग पैदा होता है उस बलवे को दबाने को जीवात्मा

आप उपाय नहीं करता है तब शरीर की दशा बिगड़ती है, जैसे टूटा हुवा किल्ला निरुपयोगी होने से उस में रहने वाला राजा छोड़ दूसरे मजबूत किल्ले का आसरा लेता है इस तरह यह जीव बिगड़े शरीर को छोड़ बड़ा दुःखी होकर निकल कर दूसरे शरीर की रचना रचता है, शरीर में सुख होने से जीव सुख मानता है और शरीर के दुःख से दुःख लोग कहते हैं. जीव है सो शरीर रूपी कैद खाने में पड़ा है, सच है, जिस शरीर में वह दुःख पाता है, तो वह कैद खाने से भी जियादा दुःख की जड़ है और जो सुख पाता है तो यही शरीर सुख शांति का भुवन हो जाता है और इसी शरीर रूपी प्रकृति (कर्म की) उपाधि छोड़ मुक्ति प्राप्ति कर लेता है, शरीर से भव भ्रमण भी पैदा कर लेता है. स्वर्ग और नरक भी शरीर से ही जीव बांधता है, उमर की कुछ मुद्दत नहीं है तो भी इस वक्त सौ वर्ष की उमर गिनने में आती है. इस मध्य क्षेत्र आर्यावर्त्त आश्री, सुख से शरीर का निरभाव चले तो, नहीं तो थोड़े ही मुद्दत में पूगकर निकलता है, जैसे भोजन कर दौड़े भोग करे तेल मसलावे पगचंपी करवावे, स्नान करे, अथवा भोजन कर दिन को सो जावे, इन बातों से उपक्रम लग के उमर पूरी थोड़ी मुद्दत में ही कर गुजरता है, इत्यादि आयुक्षय करने का अनेक बरतावा है आगे दिन रात्रि चर्या में लिखेंगे. उस मूजब चलना, इस संसार में चिंता शोग दुःख और रोग वगैर का विरला आदमी होगा यह सब खराबी की जड़ अज्ञानता है और यह अज्ञानता जीव ने ही कर्मों के संबन्ध से पहली बांधी है, इस वास्ते शुभ उद्यम से शरीर का

सुखदाई योग में आत्मा को बहुत मुद्दत तक कायम रखना यह अपना फर्ज है, फिर शुभ कर्त्तव्य करता हुवा परमेश्वर पद को प्राप्त करना. (प्रश्न) तुमने पेश्तर लिखा है सुख दुःख कर्मों से होता है. फिर आरोग्य शरीर को रखना, परम पद का उद्यम करना लिखते हौ. (उत्तर) हे मित्र ! हमने तो सब लिखा है तुम अच्छी तरह विचारो कर्म किस का नाम है, किया जाय सो कर्म वह तो उद्यम जीव से ही होता है, पांच समवायों में हमने सिद्ध कर दिया है कोई भी काम पांचों समवाय मिले बगैर नहीं होता, इस उपरान्त फिर तुम्हें समझाते हैं. सर्वज्ञ भगवान् कहते हैं कहां तो कर्म बलवान होता है तो जीव को दबा लेता है, कभी जीव बलवान होता है, तब कर्म को हटा देता है. शरी में सब दोष बराबर हैं, तब तक तो रोग नहीं होता, गर्म और ठंड बराबर है, २ तो व्याधि नहीं होती, ठंड बधेगी तब तो कफ, और वादी की बीमारी होती है, गर्मी बधने से पित्त की, पहली कहे भये तीन गुण में से एक सतोगुण भी आनंद देता नहीं. इसी तरह रज और तम भी आनंद देता नहीं, संसार में जो फक्त शांति पने कर बैठे रहते हैं, वह भी सुखी नहीं हैं और जो कोई बुद्धि विगर तामसी स्वभाव रखकर आलसु होय ऊंघते रहते हैं जैसे फक्त मीठा अन्न ही को खाया करे और वह पोषण कारक वस्तु है, तो भी फक्त सतोगुणी होने से आनंद नहीं आता उस के साथ रजोगुण वाला दाल, साग और तमोगुण वाला मिर्ची मसालों का स्वाद होता है तभी जिह्वा इंद्रिय मजा पाती है, रजो गुणी शक्कर में मीठा ज्यादा लड्डू वगैरः में जियादा डाला जावे तो मिठास जियादा होने

के सबब खाया नहीं जाता और तमोगुणी आटा जो जियादा डालने में आवे और शक्कर कम डालने में आवे तो वायु जियादा होकर पचे नहीं तब दस्त की बीमारी पैदा होती है इस तरह जगत में जहां देखो तहां समानता अथवा योग्य प्रमाण में ही स्वाद देखने में आता है और जहां २ प्रकृति का हीन योग अथवा अति योग देखने में आता है, वहां एकता समानता और सुख का नाश देखने में आता है, जैसे अपने हिंद के मनुष्यों में सतोगुण का अति योग दाखिल भया जिस से सब पृथ्वी की प्रजा को सब के पिछाड़ी रहना पड़ा, जिसमें भी अग्रेश्वरी वणिक जाति, जब तक तीनों गुण जगह की जगह वरतते थे तब तक यह दशा हिंद की नहीं थी. संसार से जिन्हों ने विरक्तता धारली है, उन्हों में तो पूरा सतोगुण ही चाहिये सो भी विरले हैं. रजोगुण के अति योग से मुसलमानों की बादशाही टूट गई, तैसे ही यूरोप की प्रवृत्ति पूजा, प्रजा की घटती का वक्त चला आता है और तमोगुणी पने से पहाड़ों के बाशिंदे भील वगैरः हमेशा दुष्ट बुद्धि करके वह जंगली हालत में जिंदगी गुजारते हैं, जिन लोगों में सतोगुण का अति योग है वहां अप्रवृत्ति अर्थात् कम उद्यमी पना अथवा संसार से विरक्तता के कारण दरद्रि पना देखने में आता है, ऐसा होना चाहिये जैसे राम सतोगुणी न्याय-संपन्न दयावंत थे परंतु रावण अन्याई पर कैसा रजोगुण और तमो-गुण बतलाया और जहां रजोगुण का अति योग है, वहां भी थोड़ा उद्यमी पना अथवा संसार में बहुत अनुराग (प्रेम) होने से भी दरिद्री पना देखने में आता है फिर वहां राग, द्वेष, कुसंप, क्लेश,

झूठ, कपट और कजिये की वढ़ौतरी देखने में आती है और जहां तमोगुण जियादा है, वहां बुद्धि का भ्रष्ट पना, अधम पना अति क्रोध, वहुत आलस्य ओर वहुत अज्ञान पना देखने में आता है और जहां पर इन तीनों की समानता है और जितने २ अंशों करके यह तीनों गुण रहे भये हैं, इतने मात्र ही सुख संपत्ति शांति अच्छा उद्यम देखने में आता है. हिंदुस्थान की प्रजा में अंदर २ कुसंप देश में कुसंप जाति में कुसंप न्यात में कुसंप कुटुम्ब में कुसंप आखिर घर में कुसंप और शरीर में भी कुसंप यह तीनों ही प्रकृति की असमानता सब तरह के विगाड़ का हेतु है. वास्ते प्रकृति का एक पना और समानता यत्न से रखना यही अपना कर्त्तव्य है यही सुख की जड़ है, यही निरोगी पना है, यही वैद्यगी का सार है. शरीर और मन में प्रकृति का फेर फार नहीं होने देना यही वैद्य विद्या का पहला कर्त्तव्य है और अज्ञान पने से अथवा पूर्व कृत पाप कर्म के उदय से प्रकृति विगड़े वाद उसको समानता लाने का यत्न करना यह वैद्य विद्या का दूसरा कर्त्तव्य है, रोग मिटाने के अथवा पहली से रोग होवे ही नहीं ऐसे उपाय आगे वताये हैं जिसको वेर २ ध्यान में रखने की जरूरी है, जिसमें भी रोग मिटाने के उपायों से रोग आवे ही नहीं ऐसी विधि से चलने की विधि को ध्यान में लाने की वहुत जरूरी है इस ग्रंथ में अच्छी तरह से यह वात लिखी है ॥

इति श्रीमद्जैन धर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय राम ऋद्धिमारगणिः विरचिते वैद्यदीपक ग्रन्थे सृष्टि-वर्णनो नाम प्रथमः प्रकाशः ॥ १ ॥

प्रकाश दूसरा ॥

किरन पहली, शरीर ॥

शरीर की रचना का विस्तार और सूक्ष्म ज्ञान मात्र ग्रन्थ वांचने से नहीं मिल सकता है, सब वैद्य लोग शरीर का सूक्ष्म ज्ञान समझ नहीं सके ऐसा भी नहीं हो सकता तो भी अशक्य है तो भी सामान्य ज्ञान तो हर मनुष्यों को समझना चाहिये, दूसरी विद्या का अपने चाहे जितना सूक्ष्म ज्ञान सीख भी लिया, लेकिन जहां तक शारीरक विद्या संबन्धी थोड़ा भी ज्ञान नहीं सीखा तहां तक मनुष्यों की पर्षदा में तथा ज्ञानियों की सभा में अपने पिछाड़ी ही है, ऐसा मानना चाहिये, इस वास्ते यह विद्या की वाकिफकारी होने को क्यों जुदे २ ग्रन्थ वांचने की तसदी लेते हो जो वर्णन शरीर संम्बधी इस ग्रन्थ में किया है, उसमें से सामान्य ज्ञान तो वांचने वालों को जरूर ही होगा ऐसी आशा है ॥

गर्भ की उत्पत्ति ॥

जो बाहर की शकल देखने में आती है, उनके वर्णन करने की जरूरी नहीं दिखती. शरीर जीवात्मा का एक घर है और घर

के अंदर जितनी तैयारी होती है, तैसी ही इस शरीर में सब तरह का साधन मौजूद है, मनुष्य का शरीर यह कुदरती अद्भुत कर्मों की रचना का एक उम्दा नमूना है, जैसे आदमी जड़ पदार्थों से घड़ियाल में चलने की शक्ति धर देता है, तैसे शरीर रूपी घड़ियाल में चेतन का उद्यम प्रकृति रूप जड़ पदार्थ से बना हुवा है. ज्ञान और गमन करने वाला जीव है, जैसे घड़ियाल का चक्र घस जाने से अथवा अकस्मात् कोई कारण बनने से चलते चक्र अटक जाते हैं उस ही तरह यह शरीर रूपी घड़ियाल भी बन्द पड़ जाती है कर्म रूप का सहचारी चतुर कारीगर चेतन का बनाया घड़ियाल जो शरीर सो मनुष्य वह भी स्त्री पुरुष के संयोग से बनाता भी है और नहीं भी बना सकता तो एक हिसाब मनुष्य से शरीर की रचना की कारीगरी किसी किस्म रच के जीवात्मा नहीं डाले जाता यह कुदरती मामला है, तो भी इस घड़ियाल का संचा और काम और उसके चक्र को पण्डितों ने उखेल २ कर उसका सूक्ष्म ज्ञान मनुष्यों ने समझ लिया है. विचार तो यहां तक है कुदरती कारीगरी के संचे में कोई हरज पहुंचा होय तो मनुष्य की अकल और चातुरी शक्ति बने जहां तक सुधार तो सकती है यह भी काम मनुष्य बुद्धिवानों का कम नहीं है, जिस से वह शरीर रूपी घड़ियाल बहुत दिनों तक चल सकती है, ऐसी तजवीज कर सकता है इतने वर्षों तक इस शरीर घड़ियाल का जितना ज्ञान मैंने प्राप्त किया सो सबों के समझने वास्ते लिखता हूं ॥

गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि ॥

गर्भ में यह शरीर किस क्रम से बंधता है और वृद्धि पाता है सो पहले जानने की जरूरत है, इस में वह तो बड़ा बारीक विचार है कि गर्भ किस तरह पैदा होता है सो तो पूरा समझना बड़ी कठिन बात है अपने लोगों में यहां तक अजान पना गतानुगत गडर प्रवाह से चला आता है और बगैर इस शरीर विद्या के अजान होने से इन २ बातों को सच्ची भी मानते चले आये जैसे कि हनुमान जी कान में पैदा भये, नासकेत जी नाक में, कीचक बांस की भूंगली में, मानधाता राजा पुरुष के गर्भ पेट में, रह गया इत्यादिक अनेक गपोड़ों को मानना और कहना उसको फलाने का शाप था और कहीं किसी का वरदान था यह सब बातें गधे के सींग मुजिब है. (प्रश्न) क्यों जी यह ऐसी २ बातें तो प्रमाणिक शास्त्रों में लिखी है, वह झूठ कैसे हो सके. (उत्तर) क्या कागज पर जो कलम से लिखा गया सो सब सच्चा ही है. ऐसा अगर माना जायगा तब तो जिसके मन में आवे वह वैसा ही लिख के आप सत्यवादी और आप अपने चोरी झूठ बोलना जीव घात पने आदि कुकर्मों को भी अपने सत्कर्त्तव्य में लिख के ठहरा लेगा और यहां तक भी लिख लेगा कि मैं ही परम पूज्य अंतरयामी ईश्वर हूं. (प्रश्न) नहीं २ ऐसे लेखों को बुद्धिमान् बुद्धि से तपास करके फिर सच्चे को सच्चा और झूठे को झूठा मानेंगे. (उत्तर) तो बस तुम्हारे ही वचन और समझ से ही इन्साफ हो गया. कि समझ से न्याय लेना

वचनों को मानना कान में, नाक में, बांस में, और पुरुष के पेट में गर्भाशय संबन्धी स्थान और पुरुष के वीर्य और स्त्री का रज (आर्त्तव) गर्भ को बधाने की वायु आदि पदार्थ वगैर औरत और मर्द के संयोग से और स्त्री के गर्भ रहने की पोलार और शरीर में किस जगह है, इतना जब तुम समझोगे तो फिर समझ ही लोगे कि यह बात कभी नहीं हो सकती, जोकि कान, नाक में गर्भ रहे. (प्रश्न) क्यों जी ऐसे शास्त्रों के बनाने वाले क्या शारीरक ज्ञान समझते नहीं थे, सो ऐसी २ बातें लिख दी. (उत्तर) हम ऐसा क्योंकर कह सकते की वह नहीं जानते थे या जानते थे लेकिन इतना तो हम जरूर कह सकते हैं कि शरीर विद्या के अजान बांचने वाले और उन शास्त्रों के सुनने वालों की परिक्षा तो उन्हों ने जरूर कर ही डाली है, उन्हों ने विचारा होगा कि देखिये श्रोतार और वक्ता कैसेक अकलबन्द हैं, सो सुण के या बांच के " हरेनमः तहत्त " ऐसा कहते हैं, या कुछ तर्क भी करते हैं, जो तर्क करेंगे तब तो बुद्धिमान् हैं, ऐसा समझा देंगे और नहीं किया तो समझा जायगा कि भैंस के सामने गीत नाद करने जैसी कथा होगी ऐसी कुतूहलों की बातों से राजी होकर हमारी सेवा तो तन, मन, धन से जरूर ही बजावेंगे. " अलंविस्तरेण " और पदार्थ विद्या वाले ऐसा भी कहते हैं, मंत्र या तंत्र से या देवता सिद्ध पुरुषों के बरदान से कुछ सन्तान नहीं होता, यह वचन निश्चयनय के आश्रय का है, जिस जिस जगह पांचों समवायों में से कोई भी समवाय की कमी रहेगी वहां तो होगा नहीं लेकिन मंत्र, तंत्र और सिद्ध पुरुषों का आगे

इस के सन्तान होगा ऐसे ज्ञानद्वारा निकला जो वचन वह झूठ होता नहीं, जैसे ज्योतिष् के गणितद्वारा ग्रहण, तारों का उदयास्त, पृथ्वी-कम्प आदि अनेक बातों को पहली कहते हैं और वह ही बात उसी दिन होती है, जैसे सामुद्रक से या कोक वात्सायन के लेख से बात मिलती है. दोहा—"छिद्रदंता कोई इक मूरख, कोई इक निरधन टाट का। रूपवन्ती कोई इक सीता, कोई इक काना साधका" (प्रश्न) क्यों जी! यह लक्षणों वाले ऐसा होते हैं तो फिर कोई इक शब्द क्यों दिया. (उत्तर) इन लक्षणों का विरोधी और कोई लक्षण ज़ियादा बलवान् उन्हों के शरीर में पड़ा होवे तो इन बातों को रोक देता है, इस वास्ते कोई इक ऐसा शब्द धरा है. इस अपेक्षा मन्त्र, तन्त्र, देव सिद्ध पुरुषों के वचन और पूर्वोक्त पांचों समवाय स्त्री पुरुषादिकों का शुद्ध संयोग गर्भोत्पत्ति का कारण है ॥

निश्चय सिद्धांत है पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध से ही गर्भ पैदा होता है पंचेंद्री तिर्यंच और मनुष्यों का तो और एकेंद्री से लेकर चोरेंद्री जीवों की उत्पत्ति तो विना माता पिता के गर्भ वगैर समूर्छिम अनेक कारणों करके उत्पत्ति है सो प्रकट ही है. एकेंद्री किसे कहना आखिर पंचेंद्री तक किसे कहना यह संक्षेप समझ जीव-विचार प्रकरण से सीखो. पंचेंद्री समूर्छिम मनुष्य तिर्यंचों के विष्ठा और मूत्रादि चौदह जगह पंचेंद्री मनुष्य और तिर्यंच भी कम शरीर अंगुल के असंख्यातमें भागवाले पैदा होते हैं, तुरन्त ही मर जाते हैं. चर्मचक्षुवालों को दिखाई नहीं देता, सर्वज्ञों ने ज्ञानद्वारा देखा थोड़े बहुत बुद्धिमानों के उद्यम से खुर्दबीन कांचद्वारा भी

दीखने लगा यह भी सर्वज्ञ भगवान् की सर्वज्ञता सिद्धपना प्रत्यक्ष आज के जमाने में प्रतीति करने लायक जाहिरा भई, उन्हों ने तो पहले ही से कहा था कि वीर्य और खून वगैरों में जीव है परन्तु मिथ्यात्वी कहते थे यह जैनों का गपोड़ा है, लेकिन खुर्दबीन बनाने वाले बुद्धिमानों ने तो सर्वज्ञ का वचन सत्य २ कर बतलाया. (प्रश्न) क्योंजी तुम्हारे सर्वज्ञों ने तार, बिजली, रेल, खुर्दबीन, फोनोग्राफ वगैरा क्यों नहीं बनाये, फिर सर्वज्ञता कैसी. (उत्तर) तुम को यह तो खबर है ही नहीं कि सर्वज्ञ कैसे होता है. घनघाती कर्मों के क्षय करने से तो केवलज्ञान होता है संसार का कोई भी काम उन्हों के करना बाकी नहीं रहा सो संसार का काम करें और करावें फक्त उन्हों के तो आप संसार से तिरना और सत् उपदेश देके जीवों को तारना इतना ही वह शरीर रहा जहां तक था तुम वहां तक क्यों जाते हो. यह सर्व विद्या श्री ऋषभदेव सर्वज्ञ नहीं भये थे और तीन ज्ञान युक्त थे गृहस्थपने में ही थे जभी उन्हों ने बहत्तर कलायें चलाय दी थी. जो कुछ कलाविज्ञान तुम को आज के जमाने में देख के आश्चर्य होता है वह सब बहत्तर कला के अन्दर ही की है. (प्रश्न) अगर अन्दर की है तो यहां इन बातों का प्रचार क्यों नहीं रहा ? (उत्तर) कई बातें कोई वक्त प्रकट हो जाती हैं कोई वक्त लोप हो जाती हैं. (प्रश्न) हम तो यही जानते हैं यह विद्या पहले यहां नहीं थी इस वक्त अन्य देशांतरी बुद्धिमानों ने प्रकट की है, प्रत्यक्ष देखें हम तो वही सच्ची मानते हैं. हक नाहक आर्यावर्त्त वालों की कलाकुशलता आगे ऐसी २ चीजों की थी सो

हम कैसे मानें . (उत्तर) हम तुम्हें पूछते हैं क्या तुम प्रत्यक्ष टाल और कुछ प्रमाण नहीं करते हो अगर नहीं मानते हो तो बतलाओ तुम्हारा परदादा था या नहीं, दूर से धुआं देखते हो, अग्नि नहीं दीखती तो वहां पर अग्नि है, ऐसा मानते हो या नहीं, दरियाव का यह पार तो देखा है, पहला पार तो किसी ने देखा नहीं इस वास्ते पहला पार है या नहीं. इत्यादि अनेक बातों को नहीं देखा है, सो मानते हो या नहीं. (प्रश्न) यह बातें तो हम मानते हैं. अनुमान प्रमाण से, वह हमारा अनुमान प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है, जैसे हमने रसोई में अग्नि का धुआं देखा है, तब हम को अनुमान भया है कि जहां धुआं दिखाई देवे वहां जरूर अग्नि होती है. ऐसे ही बहुतों के परदादे हमने प्रत्यक्ष देखे हैं, इस से अनुमान होता है कि हमारा परदादा भी जरूर होगा. ब्रह्मपुत्र, सिंधु, गंगा वगैरः नदियों का पहला पार पांच चार दिन नाव में बैठ के जाने से देखा है इस वास्ते अनुमान करते हैं कि दरियाव का भी पहला पार होगा लेकिन तुम किस अनुमान से कहते हो कि हमारे आर्यवर्त्त में इत्यादि अनेक कलाकुशलता मौजूद थी. (उत्तर) हमारा अनुमान भी प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है कि हमारे इस आर्यावर्त्त में बड़ी २ चमत्कारिक विद्या थीं, सुनो ! प्रथम तो हमारे देश में ऐसी कहनावत है कि " पानी की रेल कैसे जोर से चल रही है, फलाने आदमी की बात क्या तार बंधी है. अर्थात् क्या तार बंधे बात करते हैं " इस से अनुमान होता है कि इस संसार में जो २ उपमा देने योग्य चीज होती है उस ही की उपमा दी जाती है, आकाश के फूलों की उपमा या

मनुष्य के सींग की उपमा नहीं दी जाती अर्थात् जो वस्तु होती नहीं उसकी उपमा किसी जगह भी नहीं सुनी. दूसरा हमारा यह अनुमान प्रत्यक्ष से संबन्ध रखता है, हमारे इस देश के कारीगरों की बनाई भई अनेक चीजों को पहले अपने देश में ले जाते हैं, फिर उसी नमूने को देखकर बनाके यहां भेजते हैं, हमने देखा है जैसे ढाकाई मलमल का नमूना देख इकतारी मलमल बनाई, काश्मीरी दुशाले के नमूने पर ऊनी कपड़े बीकानेर से चमड़े की कुप्पियां रंगीज के विलायत जाती हैं, इत्यादि कहां तक लिखें नजर पसार के देखो. इस देश में बायता चंदेरी के दुपट्टे आदि कैसे २ कपड़ों की कारीगरी थी. आज बनना बन्द हो गया तो भी ८० वर्ष के आदमियों ने पहरा है और देखा है तो इस वक्त नहीं बनने के सबब उसकी क्या नास्ती मानी जायगी, परदेशियों की चीज की रमणीक और दाम कम, इस वास्ते लोग लेते हैं तब यहां वालों की वस्तु बिकती नहीं तब करना बन्द भया लेकिन इन देशी परदेशियों की चीज एक भाव पड़ती है इस के दाम जियादा, ज्यों चले भी जियादा, परदेशी कारीगरी कलों की चीजें टूटे फूटे फटे बाद कोई काम नहीं देतीं, बुद्धि से विचारो बहुत कारीगरी के मकानात और अनेक वस्तुयें तो दंगे फिसादों में जाहिलों ने मिट्टी में मिला दीं रहे खये भी आबू के जैन मन्दिरों की कोरणी, ताजबीबी का रोजा क्या देखने से बड़े २ विद्वान अंगरेज भी चकराते हैं और इस का नमूना नहीं बन सकता, बहुत नमूने रूप चीजों को अंगरेज सर्कार लण्डन ले गये तीसरा हमारे पास आगम प्रमाण कलाकुशलता का मौजूद है,

वसुदेव हिंड चरित्र में कल का हाथी एक पहर में सौ योजन चलने-वाला बनाकर भेजा गया था उस के पेट में आदमी बैठाये गये थे. यह ग्रन्थ अढ़ाई हजार वर्ष का बना मौजूद है. राजा अशोक चंद्र का चरित्र, कल से चौदह रत्न स्वतः चलने के बनाये गये थे. रामचंद्र और कृष्ण के वक्त विमान चलते थे सो रामायण और प्रद्युम्नचरित्र से साबित है. हमारे ग्रन्थों में तो विद्याधरों की बहुत ही कला-कुशलता का बयान है. कहां तक लिखें उस कलाविज्ञान के करोड़ में हिस्से की विद्या फैलनी नहीं है (प्रश्न) ग्रन्थों में तो कविताई का दखल बहुत है थोड़ीसी बात का विस्तार और बड़ाई बहुत की है उन सबों को सच्चा कैसे मानें. (उत्तर) कविताई का दखल नगरी राजा रानी हाथी घोड़े आदि पदार्थों में जरूर है सो तो साहित्य की मर्यादा है, अलंकार, नव रसादि रस बगैर साहित्य और ग्रन्थों की शोभा नहीं दीखती लेकिन वह उपमा सत्य ही माननी चाहिये, जैसे उवाईसूत्र में चम्पा नगरी का वर्णन, तैसे मुम्बई, कलकत्ता, जैपुर आदि शहर प्रत्यक्ष हैं, राजा अशोक चंद्र का वर्णन तैसे आज है ॥

इस तरह कोई बात उस वक्त जियादा थी तो कोई बात इन्हों में जियादा है, इस तरह तारतम्यता पुण्य के फरफार से मनुष्यों में होती ही है, जैसे दोहा—" पाग भाग सुकृत प्रकृत वाणी चाल विवेक. अचर लिखे न एकसा देखो मुल्क अनेक" यह तो सब एक सरीखे होते ही नहीं और इन वर्णन ग्रन्थों को सुन के अपनी २ उन्नति का कर्त्तव्य भी चारों वर्ण के बुद्धिमान सभ्य के करने भी लग जाते हैं अपनी २ हैसियत मुजब. जैसे हमारे बीकानेर के

राजाधिराज महाराज श्रीमान् गंगासिंह जी बहादुर ने अपने पूर्वज वीर पुरुषों का चरित्र सुन के छोटी ही उमर में वीर पुरुषों के अग्रेश्वरी बनकर चीन पर चढ़ाई करी और मान पाया, इस वास्ते ग्रन्थों का वर्णन भी हितकारी है व्यर्थ नहीं समझना और जो जो यथार्थ इतिहास हैं सो तो जैसा भया वैसा ही लिखा है, उदाहरण कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत उठाया यह तो सच्ची बात है, इन्द्र का मानहरण ईश्वरता का कर्त्तव्य, यह कविताई का दखल कहो या यकीन लाना तुम्हारी श्रद्धा पर है इसी तरह जो २ इतिहास में यथार्थ है सो और उसका वर्णन जुदा २ स्वतः बुद्धिमान् समझ लेते हैं जिस में अलंकार नहीं वह ग्रन्थ शून्य है, जैसे शृंगाररहित सधवा स्त्री. (प्रश्न) हम तो ग्रन्थों की सब बातों पर यकीन नहीं लाते, मानने योग्य होय तो मान भी लेते हैं. (उत्तर) हमारा भी यही सिद्धांत है, यथार्थ ही को हम मानते हैं, लेकिन जिन बातों पर न्याय से प्रमाण ठहरा है, अथवा उस ग्रन्थ का रचयिता क्रोध लोभ से रहित था, ऐसों के वचन हम प्रमाण करते हैं, वह चाहे आगम प्रमाण ही है, प्रत्यक्ष अनुमान से संबन्ध भी नहीं रखता होय, जैसे—स्वर्ग और नरक मोक्ष इत्यादिक जो २ बात हो, यही बात न्यायमत का प्रवर्त्तक गोतम भी अपने न्यायसूत्र में लिखता है कि वीतराग का वचन है सो ही यथार्थ है, बाकी अल्पज्ञों के वचन एक २ नय से सच्चे भी हैं, सर्वांग नय से झूठे भी हैं, लेकिन हम तुम्हें पूछते हैं कि प्रमाणीक यथार्थ इतिहासों में कलाकुशलता आर्यावर्त्त में थी आज के जमाने से करोड़ों दर्जे, सो तुम मंजूर करते हो या नहीं. (प्रश्न) तुम्हारी बिना युक्तियों से हम लाजवाब हैं, तो भी इतनी कसमसी हमारे

जरूर है कि क्या जानें ऐसी संप और वृद्धि का फैलावा अंगरेजों के जैसा उद्यम हिंद में कैसे था, इस वास्ते कला कौशल होने का विचार पड़ता है. (उत्तर) हमारे आर्यावर्त्त के लोग इन तीनों बातों में पहले पूरे थे, संप तो विद्या पर होता है सो तो हम क्या लिखें यहां के लोगों के बनाये भये ग्रन्थों के उल्थे अंगरेजी या और २ भाषा में करले गये और अभी भी कर रहे हैं, थोड़ासा पूरावा देता हूं जरा बानगी देखने से बुद्धिमान् सब ढिगार कर लेते हैं वैद्यकविद्या का अंगरेजी में पहले उल्था भया जिसका कारण पहले ऐसे भया ज्योतिषविद्या का प्रथम चलना इस आर्यावर्त्त से भया, ईरानी लोग इस विद्या को यहां से ले गये, यूनानियों से युरोप में फैली. बेली और प्लेफेअर यूरोपी विद्वान् इस बात को कबूल करके लिखते हैं कि यह विद्या पांच हजार वर्ष पहले भारत में प्रचलित थी. वह समय आर्यों की बहुत उन्नति का था. इस विद्या का पूरा अंग हिंद से ही हमारे यहां यूनानियों के मारफत प्राप्त भया. रेखागणित, अंक गणित, बीज गणित, त्रिकोणादि गणितों में आर्य पूरे थे, ऐसे ही व्याकरण. गानविद्या, वास्तुविद्या में यहां के कारीगर नामी थे. बादशाह सिकंदर इस विद्या के सीखने को अपने कारीगरों को यहां छोड़ गया था, इस तरह इस विद्या ने भी यहां से यूनानियों द्वारा युरोप में प्रवेश किया, इस तरह युद्धविद्या में भी यह देश वाले बड़े जबर थे. मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और यन्त्र मुक्त आदि अस्त्र, शस्त्र, गदा, वीरघातनी, शक्ति, शतघ्नी, सहस्रघ्नी आदि बना जानते थे और चलाते थे, व्यूहादिक रचते थे. हजारों इतिहास मौजूद हैं. अन्य देशान्तरी लोग

आर्यों के तावे थे, इसी तरह चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि ग्रन्थों का उल्था पहले बारह सौ वर्ष के अरबी में भया, फिर हैल्पर ने इसका अनुवाद लेटिन में किया और वुलरस ने जर्मनभाषा में किया, इस वास्ते सर्व विद्यावंत यहां थे, यहां से धीरे २ आगे से आगे फैलता गया, इस वास्ते बड़ा संप था, बुद्धि का फैलावा था और उद्यम भी था, लेकिन सिकंदर के आक्रमण पीछे यह दशा हिंद की दिन पर दिन घटती का चला आया, जो सच्चे ग्रन्थों का लेख मंजूर नहीं करोगे तब तो यह अन्य देशांतरियों की चलाई आज तो यह विद्या तुम हम प्रत्यक्ष देखते हैं जब यह बात कभी तो अपने शास्त्रों में लिखेंगे ही, लेकिन जब यह विद्या लुप्त हो जायगी और इस रेल तार के वर्णनरूप शास्त्र को देख तुम्हारी तरह यकीन नहीं लावेंगे लोग कि शास्त्रों में योंही लिख दिया है, कभी ऐसी बात भी हो सकती है, सम्यक्तवंत तो न इस वक्त इस विद्या को नई कहते हैं न उस वक्त प्रमाणिक लेख को झूठा कहेंगे. (प्रश्न) अब हम को यकीन भया कि तुम्हारा लेख सर्व न्याय संपन्न सच्चा है, पूरावे बहुत मजबूत दिये. (उत्तर) तुम्हारी बुद्धि का आशय जैसा हमने जाना कि यह अंगरेजी पढ़े भये और चाहे कितना ही मजबूत प्रमाण और पूरावा रखता होय तो भी मन्जूर नहीं करते और जो बात अंगरेज विद्वानों ने लिखा है वह सब सच है इस वास्ते हमने वैसे ही पूरावे लिखे, इस पर तुम्हारा ऐसा सवाल होगा कि यह लोग झूठ नहीं लिखते जैसा प्रमाण प्रत्यक्ष में इन्हों ने पाया है वैसा ही लिखते हैं, अच्छा है ऐसा ही, लेकिन एक इस में भी विचार है, प्रत्यक्ष देखा सो तो

उन्हों का लिखना कथंचित् सच्चा भी है लेकिन दो हजार चार हजार वर्ष के पहले की बात में प्रत्यक्षपना उन्हों को कैसे हो सके, जिस पर तुम कहोगे रुपया, पैसा, मोहर, जयस्थंभ, कीर्तिस्थंभ शिवालय, जिनमंदिर, जिनमूर्त्ति, शिलस्थंभ इन्हों पर खुदा भया जो लेख मिला अथवा अन्य देशांतरियों ने हिंद में आके जो इतिहास पहले लिख ले गये उन्हों में जो २ लिखा पूरावा मिला, सो ही अंगरेजों ने लिखा है इस वास्ते हमको प्रतीति है, यह बात तुम्हारी कोई २ अंश करके सच्ची भी है, लेकिन सर्वांग सच्ची नहीं, कहोगे क्यों, देखो, दो सौ वर्ष से इन्हों का प्रचार हिंद में भया उस में किसी साहिब को कुछ मिला, किसी को कुछ, पहले किसी को कुछ मिला, बाद उस ही बात को झूठ करने वाला दूसरे साहिब को दूसरा कालान्तर से मिला, ज्यों २ मिलता गया सो २ उन्हों ने अपने ग्रन्थ में लिखा, पहले पूरावे का लेख पिछला पूरावा झूठा ठहराता है, इस तरह पर थोड़ासा यहां लिखता हूं बुद्धिमान् तो इतने में ही समझ लेंगे, पहले एक साहिब ने लिखा है भारतवर्ष के सब पुस्तकों से पहला पुस्तक वेद है, आर्यावर्त्त की सीध से लाख वर्ष का बना ठहरता है. अब दूसरे साहिब मेक्समूलर अभी भये वह प्रमाण देते हैं कि वेद का मंत्रभाग बने उन्तीस सौ वर्ष भये और छन्दभाग को बने इकतीस सौ वर्ष. ब्राह्मण पुकारते हैं सत्युग के शुरू में ब्रह्मा ने वेद रचे हैं जिसको चालीस लाख वर्ष बतलाते हैं. कहो अब आप इन दोनों साहिबों के लेख में से किस को मंजूर करोगे अंगरेजी पढ़े आर्यसमाजी और शैव वैष्णव तो वेद के मानने वाले

पहली कलम मंजूर करेंगे क्योंकि मीठा २ गडपप्प कडवा २ थूथू, वेद के विरोधी मुसल्मान, अंगरेज, बौद्ध चीन वाले आदि पिछला लेख मंजूर करेंगे, अब दूसरा प्रमाण अंगरेजी पढ़े नाम जैनों के वास्ते लिखता हूं, जिन्हों ने फक्त जैन जाति में जन्म लिया है, जैन के तत्वों के अजान उन के वास्ते, एक साहिब मेक्समूलर लिखता है जैन और बौद्ध एक हैं, दूसरे जर्नलकर्निंग होम साहिब लिखते हैं जैन धर्म सब धर्मों से आदि है और बौद्ध धर्म प्राचीन नहीं है, एक साहिब लिखते हैं, जैन धर्म में से बौद्ध धर्म पचीस सौ वर्ष के लगभग गया के मुल्क में निकला है, इन तीनों में से पिछला लेख नामी विद्वान् विद्यमान डाक्टर यूरोपी बुहलर साहिब का है, इन तीनों लेखों में से कौनसा सच्चा मानते हो. (प्रश्न) हम तो वही मानते हैं जो पूरी साबूती और पूरे पूरावे का है. (उत्तर) यह कहना न्यायसंपन्न है, लो फिर चाहे अंगरेज होय चाहे दूसरा, पक्षपातरहित वचन मानना वही लेख सच्चा है. यही हमारा सिद्धांत है समझे विस्तरेण ॥

अब गर्भ की व्यवस्था लिखते हैं ॥

वीर्य और खून के संयोग से उस में से सजीव पिंड बंधता है, मर्द की गोली में जो धातु होता है उस में बारीक २ तंतु जैसा पदार्थ होता है, सूक्ष्मदर्शक कांच से देखने से वह तंतु बारीक २ सिर और पूंछड़ी वाले हलते चलते जीव दिखाई देते हैं. सम्बन्ध

भया पीछे कमल के मुंह में गिर कर गर्भस्थान में जाता है औरत के गर्भस्थान के बाजू पर गांठें होती हैं उस में बारीक अंडों के जैसा कण पैदा होता है, वह कण पकने के समय पर ऊपर तिरके आता है और गर्भस्थान की नली का एक छेड़ा उस के लग जाता है, पीछे यह अंडा जैसा कण उस लगी हुई नली में फूटता है और उस में से गर्भ रहने लायक पदार्थ गर्भस्थान में दाखिल होता है और आया भया वीर्य के साथ मिलता है, इन दोनों के संयोग से गर्भ रहता है. इस तरह गर्भ रहा भया गर्भस्थान की नली में से होकर गर्भाशय में जाता है तब गर्भाशय का पड़ जाड़ा पड़ता है और गर्भवाले पदार्थ के आस पास बींटीज कर एक थैली जैसा हो जाता है, इधर गर्भ बधता है. कारण माता के खून की नसों की शाखा उस में जाके ९ या १० महीने तक पोषण करता है. एक महीने का गर्भ पाव से आधा इंच जितना लम्बा होता है और उस में अंगोपांग की प्रकटता नहीं दीखती लेकिन मुंह की जगह छोटीसी फाड़ होती है और दो आंखों की जगह काला दाग दिखाई देता है. अब दो महीने का गर्भ सवा से डेढ़ इंच लम्बा होता है और आसरे डेढ़ रुपया भर वजन होता है और मुंह, नाक, कान, आंख वगैरह चहरे का अवयव खुला दीखे ऐसा होता है और हाथ पांव के किनने एक भाग अलग पड़े भये दीखते हैं और आंख के ऊपर की कवान होती मालूम पड़ती है. तीसरे महीने में हाड बनने शुरू होते हैं और दो से चढ़ाई इंच लंबा होता है, २॥ से ४। तोला वजन में होता है और मांस के लोचाओं की निशानियां मालूम देती हैं. चहरा और सिर बराबर हो जाता है,

आंख के पोपचे ढके भये, भांपने की कोर छोटी, मुंह बंद, हाथ पांव प्रकट और हाथ की अंगुलियां छोटी मालूम देती हैं. चौथे महीने का गर्भ ५ से ६ इंच तक लम्बा और ७ से ७॥ रुपये भर वजन में होना है, चमड़ी गुलाबी रंग की, मुंह खुला, आंख पर पतला पर्दा, नख होना शुरू होता है और जाति स्त्री पुरुष की मालूम होती है, शरीर के सब अंग उपांग बन जाते हैं, हृदय बनता है इस वास्ते चेतना धातु प्रकट होती है, उस से गर्भरूपी जीव रूप, रस, गन्ध वगैरह की इच्छा करता है, पांचवें महीने का गर्भ ६ से ७ इंच लम्बा और १२ से १८ रुपये भर वजन में होता है, इस महीने में हाड़ और मांस बधता है, सिर का कद बड़ा होता है नख प्रकट दीखते हैं सिर के बाल दीखना शुरू होता है और मन चेतनावाला होता है, छठे महीने का गर्भ ९ से १० इंच लम्बा और एक रतल वजन में होता है. आंख मिची हुई होती हैं और चेहरा लाल जामुन के रंग जैसा, बाल गुलहरी रंग का होता है, इस महीने में बुद्धि पैदा होती है. सातवें महीने का गर्भ १३ से १५ इंच लम्बा ३ से ४ रतल तक वजन में होता है, चमड़ी गुलाबी रंग की जाड़ी, नख बड़ा लेकिन आखिर तक नहीं पहुंचा भया, आंख के पर्दे दूर भये भये. आठवें महीने का गर्भ १४ से १६ इंच लम्बा ४ से ५ रतल वजन में होता है. आगे से चमड़ी जाड़ी और नख पूरे होते हैं. नवें महीने का गर्भ १७ से २१ इंच लम्बा और ५ से ९ रतल वजन नरामरी ७ रतल वजन में होता है. इस तरह नवें महीने तक गर्भ का बधना होता है फिर बालक बाहर आता है उस वक्त तक उस का शरीर पूरा नहीं

होता है उसकी हड्डी पूरी नहीं और कची होती है जैसे २ बधता जाता है तैसे २ हड्डी और दूसरे पदार्थ धातु वगैरह सम्पूर्ण होता जाता है इस तरह सम्पूर्ण परिपक्व भया मनुष्य का शरीर सरासरी १४० रतल का होता है शरीर के बांधे में हाड पिंजर मांस और स्नायु अर्थात् संधि बंधन का मुख्य भाग बजता है, इस वास्ते उन जुदे २ भागों का वर्णन करते हैं ॥

हाड पिंजर, (स्केलेटन *Skeleton*).

शरीर की मजबूती हाड पिंजर ऊपर है, शरीर के दूसरे सर्व भाग हाड पिंजरों के लगे भये रहे हैं और इस शरीर का रक्षण भी हाडों से है, माथे की खोपड़ी, छाती का पिंजर और पेट की बखोल यह तीनों पोलार की जगह हैं और यह सब हाड पिंजर के बीच में आये भये हैं. इन तीनों पोलारों में जिंदगी के बहुत जरूरी का अवयव धरने में आया भया है और हाडों से उनका रक्षण होता है, हाड पिंजरों से हाथ पांव बने भये हैं जिस के ऊपर हाल चाल वगैरः तरह वार गति बन रही है. हाड पिंजरों का जुदा २ हाड, मांस के बंधनों से ऐसा मजबूत बंधा भया है और मांस से ढका भया है सो एक दम टूट नहीं सकता, एक सौ चालीस रतल सरासरी वजन इस शरीर का गिना गया. जिस में से हाड पिंजर का सरासरी वजन २५ रतल आसर है. हाड पिंजर के हाडों की जुदे २ पंडितों ने जुदी २ गिनती करी है. उस में कुछ २ तफावत

मालूम पड़ता है और प्राचीन ग्रन्थकारों की गिनती से इस वक्त वालों की गिनती में बहुत फर्क दीखता है, दोनों की गिनती नीचे के कोठे में देखो ॥

अर्वाचीन गिनती.	प्राचीन गिनती.
माथे की खोपड़ी में ८	सब सिर में, ... ६५
चेहरे में १४	६ खोपड़ी में २ आंख में
डोक में १	२ कपाल में ४ कान में
कागेड़ में २६	१ तालवे में ४ कण्ठ में
छाती के सीने में. १	२ हिडकी में ९ डोक में
पांसली २४	३ नाक में ३२ दांत
दोहाय तथा खंभेमें ६४	सब धड़ में ११५
दोनों पांव तथा पग-	२ हांस में ३० पीठ में
तल में ६२	८ छाती में २ पगतल में
.... ३२	७२ पांसली में १ त्रिक
के छोटे हाड ६	१ उपस्थ १ गुदा
	शाखाओं में १२०
	६० दोनों हाथों में ६० दोनों पांवों में
कुल २३८	कुल ३००

ऊपर के कोठों में हाडों की गिनती में बड़ा तफावत है सो तफावत विशेष करके छाती तथा पसवाड़ों के हाडों में है अभी की गिनती में छाती में एक हाड और २४ पसलियां उस के लगी भई हैं, प्राचीन पंडितों ने छाती के और पसवाड़ों के मिलाकर अस्सी हाड गिनाये हैं इतने पचपन हाडों की बढ़ोतरी दीखती है अभी के डाक्टर लोग छाते के एक २ तरफ बारह २ पसलियां गिनते हैं और प्राचीन पण्डितों ने एक २ तरफ छत्तीस २ पसलियां गिनी हैं, इस पर ऐसा अनुमान होता है एक २ पसली को तीन २ जुदे २ हाडों की बनी भई वह मानते थे, इस के अलावा हाडों की गिनती में जो मतभेद देखने में आता है उसका कारण ऐसा है कई एक पण्डित तो नरम कावले हाडों को हाडों की गिनती में नहीं गिनते और कितनेएक गिनते हैं. गर्भावस्था में हाडों की शुरुआत कूर्च से होती है और बालक जन्मे पीछे उस में से धीमें २ बधना होता है शरीर में हाड जुदी २ शकल के हैं कितनेक तो कितनेक छोटे, कितनेक चपटे, कितनेक चौड़े, कितनेक और कितनेक बेडौल होते हैं. लम्बे हाड पहले बीच में होते हैं और पीछे से उनका छेड़ा संध मिलके एक हो जाते कारण सभी ऊपर लिखे हाडों की गिनती में फर्क आता है. बहुत से हाड बाहर से कर्रा होता है लेकिन अन्दर से है जैसे कितनेक हाड सख्त और बरदे हैं. तैसे कई एक तरह खुलते हैं. हाडों पर तरह २ के नीरे और नसें और खरदरी जगह होती है जिस से नसों और

कूर्चा तथा सांधे (कार्टीलेज *Cartilage*).

हाडों का पहला स्वरूप कूर्चा है, यह कूर्चा एक तरह का नरम आधा हाड है, वह कर्रा, स्थितिस्थापक, वरड़ और जाडे रबड़ जैसा सफेद पदार्थ है, वह हाडों जैसा सख्त और वरड नहीं है परंतु उस में हाडों जैसा गुण धर्म रहा भया है, गर्भ में पहले कूर्चा, पीछे उस में से हाड तैयार होते हैं और कितने एक कूर्चे जवानी में हाड हो जाते हैं और कितने एक कूर्चे बुढ़ापे में हाड हो जाते हैं और कितने एक कूर्चे अंत तक कूर्चे ही बने रहते हैं, कान, नाक, भांपने, पांसली और सांधांओं में रहे कूर्चे हमेशा कूंर्चे ही रहते हैं ॥

सांधें, (ज्वाइन्टस *Joints*).

दो हाड जहां संधते हैं, उसको सांध कहते हैं, शरीर में ऐसे सांधे बहुत हैं, कितने एक सांधे तो जरा भी हलते चलते नहीं, दाखिला—जैसे सिर की खोपड़ी में और चेहरे के सांधे बहुत से इस किस्म के हैं सो एक दूसरे हाड के संग ऐसा मजबूत संधा भया है, सो ऐसा बाहर से दिखाई देता है, जाने एक ही है, ऐसा मालूम देता है, दूसरी तरह के सांधे थोड़े २ हलचल करते हैं, ऐसी संधियों में हाडों का छेड़ा अड़ोंअड़ होता नहीं, लेकिन दो हाडों के बीच में गादी जैसा पदार्थ होता है, जैसे कमर तथा गर्दन के सांधे, ऐसी जात के सांधों से संधा भया अवयव चारों तरफ फिर सकता है,

इन सांधों में एक तरफ के हाड के गोल दड़ी जैसा सिर होता है और सामने के हाड में छेड़े पर दड़ी बैठ जाय ऐसा गोल खड्डा होता है और गोल होने के सबब वह चोतरफ फिर सकता है. हाथ के खवे और पग के थापों में इस तरह के सांधे हैं, फिर कितने एक सांधे खीली नाकीवाले होते हैं, नरामादगी की तरह कोहनी, पोंहचे, गोडे और गिरिये. यह आठों में नरामादगी है, उस से संदूक के ऊपरले ढकने मूजब दो तरफ ही फिर सकते हैं, हाडों का दोनों नाके जहां आगे शामिल होते हैं, उस पर कूचें का एक थर होता है. ये कूचें स्थितिस्थापक अर्थात् फिरे ऐसे होने से सांधों पर जोर को धक्का लगने पर भी उन कूचों के सबब उन हाडों का बचाव होता है, सांधों के चारों तरफ पड़त लपटा होता है उस में चिकना-रस पैदा होता है और वह रस सांधाओं का पोषण करता है, सांचों में जैसे तैल की जरूरत पड़ती है तैसे सांधों को नरम रखने को इस रस की जरूरत है, दो सांधों को जुड़ा रखने को एक अथवा जियादे बन्धन होते हैं, सो संधिबन्धन कहलाते हैं, यह बन्धन मांस की बनी सफेद तांतुओं का होता है, कितने एक बन्धन पाटे जैसे होते हैं और पग के हाथ के थापे के बन्धन थैली जैसे होते हैं, मतलब के जैसे सांधे होते हैं तैसे हीज उन के बेसते भये बन्धन होते हैं, इन बन्धनों के सिवाय पास पास आये भये मांस के लोचे जिन्हों को स्नायु नाम से कहते हैं वह भी सांधों को मजबूत करते हैं ॥

मांस का लोचा स्नायु, (मसल्स *Muscles*).

शरीर के सब जगह जो मांस देखने में आता है वह मांस इकट्ठा जयावन्द नहीं है, लेकिन जुदा २ मांस के लोचाओं से बना भया है हाथ और पांव की पिंडली मांस के बड़े लोचों से बनी भई ऐसी दीखती हैं लेकिन ऐसा है नहीं इन पींडियों में मांस के जुदे २ टुकड़े हैं यह बहुत सफाई के संग जुड़े भये होने के सबब एक जैसा मालूम देता है ये मांस के लोचे सब एक तरह के नहीं हैं, बड़े, छोटे, लम्बे, ओछे, गोल, चिपटे, चोरस, तिखूने, ऐसे जुदे २ शक्ल और कद के होते हैं और जहां जैसा चाहिये ऐसे बने भये हैं ये लोचे मांस के रेशों का बना भया है, कितने एक लोचे रेशों की जूड़ी अथवा बंडलों का बना भया है ॥

शरीर का हाड पिंजर, यह सब हाडों का खोखा है इस खोके के आस पास सब जगह लोचाओं से ढका भया है उस सेती हीज चलन बलन होता है, शरीर की गति और सब काम इन स्नायुओं से हीज हो रहा है, चलना, खाना, हाथ हिलाना, बोलना, आंख फेरने तक का काम शरीर के छोटे बड़े सब कामों में स्नायु की जरूरत पड़ती है, चेहरे पर आनन्द, क्रोध, दिल्लगी, मन के विकार, इस स्नायु से ही सम्बन्ध रखता है, यह मांस के लोचे स्नायु वगैरह दो प्रकार का है. एक तरह के स्नायु अपनी इच्छा के प्रमाण चलता है और दूसरी तरह के स्नायु अपनी इच्छा के आधीन नहीं हैं, हाथ पांव अंगुलियों का चलना, मुडना, आंख के डोले फिराना,

लाक की पुरड़ियों का चौड़ा करना, वगैरः अवयव के स्नायुओं को अपनी मन मूजब चला सकते हैं, लेकिन आंतों की गति अपनी इच्छा से नहीं है, हवा तथा अन्न जाने की नलियां, हौजरी, मूत के फुके, गर्भस्थान और धोरी नर्सों वगैरः अवयवों के मास के लोचे अपने आप ही संकोचते हैं और फूलते हैं और उन लोचाओं पर अपना इख्तियार नहीं चलता जो उन्हों को संकोचा देवें या चौड़ा कर देवें, ये दोनों ही लोचे ऐसा रेशे का बना भया है, लेकिन इस दूसरी तरह के स्नायु इच्छा मूजब काम देने वाले स्नायु की तरह लाल और बड़ा नहीं है, लेकिन वे एक पड़त की तरह पसरे भये होते हैं और उन्हों को बन्धन की जुरूरत नहीं है, मांस के लोचे और स्नायुओं का काम संकेचने का है, उन्हों के संकोचने से गति पैदा होती है, जवाड़ी के स्नायु संकोचने से जवाड़ी चलती है, और खुराक चबाया जाता है, हाथ के स्नायु संकोचने से हाथ चलता, मुड़ता है, पांवों के स्नायुओं के संकोच से पांवों से चला जाता है, कितने एक स्नायु एक दूसरे के विरुद्ध गुण के होते हैं, जैसे एक से तो आंख और मुट्ठी उघड़ती है और दूसरे स्नायुओं से बन्द होती है, इन स्नायुओं में चैतन्य गुण है तहां तक तो काम देता रहता है, शरीर में ऐसे मांस के लोचे ५०० आसरे हैं ॥

स्नायु बन्धन (टेंडेंस *Tendons*).

हरएक स्नायु के नाके सफेद चिक्कने मजबूत डोरे जैसा होता है उन डोरों से हाडों के मजबूतपने से लगे रहते हैं, इन डोरों को

स्नायूबंधन कहते हैं, ये स्नायुबंधन बहुत मजबूत होते हैं, कितनी एक वक्त हाड टूटने पर भी वह बन्धन टूटते नहीं ऐसे मजबूत होते हैं, हाथ पावों की अंगुलियां हिलाती वक्त जो डोरी जैसी रगें दीखती हैं वह स्नायुबंधन हैं, जिस जगह शरीर में स्नायुबंधन लगे भये होते हैं उन २ भागों को स्नायुबंधन हलाता है ॥

संयोजक. (कनेक्टिव टिस्यु *Connective Tissue*).

शरीर में हाडों के ऊपर का पड़त स्नायु खून की नलियां मंजा-तंतु और चमड़ी वगैरः भाग एक दूसरे के साथ सफड़ जुड़े भये हैं सो गोंद अथवा लेई की तरह शरीर में एक चिपनेवाला चिकना पदार्थ है सो सब शरीर में फैलकर सब शरीर के अवयवों को ऊपरा ऊपरी जोड़ के रखता है, वह पदार्थ बारीक तंतु अथवा परमाणुओं से बना भया है सो जोड़ने का काम करता है, इस वास्ते ऐसे पदार्थ को संयोजक ऐसे नाम से करके मैंने लिखा है ॥

चर्बी. (फेट *Fat*).

संयोजक नाम का जो पदार्थ हाड मांस के लोचे तथा उन्हों के बन्धनों को संग में जुड़ने का काम देता है उस के संग एक पीले रंग का दूसरा पदार्थ होता है उस को चर्बी या मेद कहते हैं, संयोजक में पीले रंग के लोचे चर्बी के होते हैं, चर्बी कारबोन और

हैड्रोजन की बनती है उस से कारबोन वाले पदार्थ जैसे दूध मीठा दही आदि के बने गरिष्ठ पदार्थों के जियादा खाने से, तैसे ही शरीर को चाहिये इतनी कसरत के नहीं करने से, तैसे ही मेदवृद्धि-रोग में कहे कारणों से चर्बी बढ़ती है, चर्बी का जमाव जियादा करके जांघ, चूतड़ और पेट पर होता है जिस के बधने से आदमी वृथा पुष्ट बन जाता है ॥

त्वचा चमड़ी, (स्किन *Skin*).

हाड पिंजर वगैरः सब अवयवों के ऊपर के पड़त को चमड़ी कहने में आती है, चमड़ी से शरीर के अंदर के वस्तुओं का रक्षण होता है और उस चमड़ी से स्पर्श के आठों विषयों का ज्ञान होता है, पसीना निकलता है बाहर के पदार्थों को चूस लेने का काम करती है इसका विशेष वर्णन इस प्रकाश के चौथे किरण में करेंगे ॥

किरण दूसरी. शरीर का मुख्य भाग ॥

अपने देशी लोग इन बातों को कुछ नहीं जानते हैं, इस वास्ते शरीर के दर्दों में कुछ नहीं जानते हैं और डाक्टर वैद्यों को भी भूल चक्कर में गिरा देते हैं, ऐसे मूर्ख रोगियों की जुबान पर विश्वास नहीं लाकर डाक्टर वैद्य लोगों ने निज ने तपासना चाहिये दर्द कलेजे में होता है और बताता है तिल्ली में, दर्द आंत में है

बताता है कलेजे में, इतना अजानपना होना तो नहीं चाहिये, शरीर के अन्दर का चाहिये तो सूक्ष्म ज्ञान लेकिन सामान्य ज्ञान तो जरूर ही सीखना. हाड का पिंजर तो शरीर का मुख्य पाया है, मांस और मांस के लोचों से शरीर की आकृति बने है और आदमी सुडौल दीखता है, शरीर का हाल चाल होता है, धोरी नशों से और आसमानी नशों से खून फिरता है और शरीर के जुदे २ भागों में पहुंचता है, ज्ञानतंतुओं से शरीर के जुदे २ भागों के हालत का ज्ञान होता है, शरीर के सर्व से जरूरी के अन्दर के अवयव जैसे मगज, फेफड़ा, अंतःकरण, कलेजा और आंतड़े, यह सब शरीर का जीवस्थान है, इन अवयवों पर शरीर के हयाती का मुख्य आधार है, यों तो जीव असंख्य प्रदेशों करके सर्व शरीर में व्यापक है, दूसरे हरएक भाग का वर्णन सम्पूर्ण तौर से शरीरविद्या में आता है, इन अवयवों का विस्तार वर्णन करें तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जाय इस वास्ते मतलब पूरता वर्णन यहां लिखेंगे, शरीर में सिर और धड़ ये दो मुख्य अङ्ग हैं, ये दोनों गर्दन से जुड़े भये हैं, जो गर्दन से जुदे २ कर दिये जांय तो शरीर का सब व्यवहार बन्द हो जावे सो मौत कहलाती है, माथा सिर एक शरीर का उत्तम अंग कहलाता है, क्योंकि सब शरीर पर अधिकार भोगने वाले का महल मुख्य मस्तक में आया भया है सो मगज अथवा भेजा कहलाता है, सिर में बाहर नजर पड़ने अवयवों में खोपरी अथवा मगज की तूंबड़ी देखने को दो आंख, सुनने को दो कान, सूंघने को दो नसकोरे और बोलने को मुंह, ये सब अवयव उस अधिकारी के उपयोग के वास्ते

महल के आस पास कर्म कारीगर से बना है, सिर में मुख्य दो झरोखे अथवा पोल है, एक तो खोपड़ी में पोल, दूसरी मुंह में पोल उस अधिकारी का घर खोपड़ी की पोल में हैं, इस घर में ज्ञान तंतु और गति तंतु का संग्रह भया है, इस संग्रह का मगज नाम है, मुंह की पोल में जीभ दांत वगैरः आये भये हैं, मुंह के गोखले में से एक नली कण्ठ में से होकर छाती में होकर पेट में उतरती है, सो अन्न नल कहाता है और खोपड़ी की पोल में से एक नल पिछली पीठ की करोड़ में उतरे है, सो करोड़ रज्जु नल कहलाता है, वास्तव में इन दोनों नलों के रास्ते सब शरीर का व्यवहार चलता है।

धड़ एक में माथे की तरह दो बड़ी पोल है, एक तो छाती की, दूसरी पेट की. छाती की पोल अथवा पिंजर एक कोठरी जैसा है, छाती की पोल में दो तो फेफसे और हृदय ये दो मुख्य जीव की जगह है, इस के अलावा मुंह की पोल में से कण्ठ में से उतरा भया अन्न नल छाती में होकर पेट में उतरता है. इन अवयवों के सिवाय औरतों के दो स्तन होते हैं. छाती तथा पेट की पोल के बीच में मांस के गुंमट की आकार का एक गोल परदा दिवाल की तरह आया भया है, अन्न नल ये दिवाल को भेद कर पेट में उतरता है. पेट की पोल के ऊपरले भाग में यकृत याने कल्लेजा प्लीह याने तिल्ली आमाशय याने होजरी पक्वाशय याने आंतरड़ा आया भया है होजरी के ऊपर के नाके पर अन्न नल मिलता है और नीचे के नाके से छोटे आंतों की शुरुआत होती है. पेट की पोल के नीचले भाग में मूत्राशय याने पुके आये भये हैं. जिस में से मूत्र, मूत्र की नली

बताता है कलेजे में, इतना अजानपना होना तो नहीं चाहिये, शरीर के अन्दर का चाहिये तो सूक्ष्म ज्ञान लेकिन सामान्य ज्ञान तो जरूर ही सीखना. हाड का पिंजर तो शरीर का मुख्य पाया है, मांस और मांस के लोचों से शरीर की आकृति बने है और आदमी सुडौल दीखता है, शरीर का हाल चाल होता है, धोरी नशों से और आसमानी नशों से खून फिरता है और शरीर के जुदे २ भागों में पहुंचता है, ज्ञानतंतुओं से शरीर के जुदे २ भागों के हालत का ज्ञान होता है, शरीर के सर्व से जरूरी के अन्दर के अवयव जैसे मगज, फेफड़ा, अंतःकरण, कलेजा और आंतड़े, यह सब शरीर का जीवस्थान है, इन अवयवों पर शरीर के हयाती का मुख्य आधार है, यों तो जीव असंख्य प्रदेशों करके सर्व शरीर में व्यापक है, दूसरे हरएक भाग का वर्णन सम्पूर्ण तौर से शरीरविद्या में आता है, इन अवयवों का विस्तार वर्णन करें तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जाय इस वास्ते मतलब पूरता वर्णन यहां लिखेंगे, शरीर में सिर और धड़ ये दो मुख्य अङ्ग हैं, ये दोनों गर्दन से जुड़े भये हैं, जो गर्दन से जुदे २ कर दिये जांय तो शरीर का सब व्यवहार बन्द हो जावे सो मौत कहलाती है, माथा सिर एक शरीर का उत्तम अंग कहलाता है, क्योंकि सब शरीर पर अधिकार भोगने वाले का महल मुख्य मस्तक में कहा गया है सो मगज अथवा भेजा कहलाता है, सिर में बाहर नजर पड़ने अवयवों में खोपरी अथवा मगज की तूंबड़ी देखने को दो आंख, सुनने को दो कान, सूंघने को दो नसकोरे और बोलने को मुंह, ये सब अवयव उस अधिकारी के उपयोग के वास्ते

महल के आस पास कर्म कारीगर से बना है, सिर में मुख्य दो झरोखे अथवा पोल है, एक तो खोपड़ी में पोल, दूसरी मुंह में पोल उस अधिकारी का घर खोपड़ी की पोल में हैं, इस घर में ज्ञान तंतु और गति तंतु का संग्रह भया है, इस संग्रह का मगज नाम है, मुंह की पोल में जीभ दांत वगैरः आये भये हैं, मुंह के गोखले में से एक नली कण्ठ में से होकर छाती में होकर पेट में उतरती है. सो अन्न नल कहाता है और खोपड़ी की पोल में से एक नल पिछली पीठ की करोड़ में उतरे है, सो करोड़ रज्जु नल कहलाता है. वास्तव में इन दोनों नलों के रास्ते सब शरीर का व्यवहार चलता है।

धड़ एक में माथे की तरह दो बड़ी पोल है, एक तो छाती की, दूसरी पेट की, छाती की पोल अथवा पिंजर एक कोठरी जैसा है, छाती की पोल में दो तो फेफसे और हृदय ये दो मुख्य जीव की जगह है, इस के अलावा मुंह की पोल में से कण्ठ में से उतरा भया अन्न नल छाती में होकर पेट में उतरता है, इन अवयवों के सिवाय औरतों के दो स्तन होते हैं. छाती तथा पेट की पोल के बीच में मांस के गुंमट की आकार का एक गोल परदा दिवाल की तरह आया भया है, अन्न नल ये दिवाल को भेद कर पेट में उतरता है. पेट की पोल के ऊपरले भाग में यकृत याने कलेजा प्लीह याने तिल्ली आमाशय याने होजरी पक्वाशय याने आंतरड़ा आया भया है होजरी के ऊपर के नाके पर अन्न नल मिलता है और नीचे के हिस्से से छोटे आंतों की शुरूआत होती है. पेट की पोल के नीचले भाग में मूत्राशय याने पुके आये भये हैं. जिस में से मूत्र, मूत्र की नली

के रास्ते बाहर आता है, मूत्र की नली के नीचे वृषण की कोयली आई भई है, जिस के आधार सब शरीर दटा भया है, करोड़ में हाडों की एक पोली नली उतरी भई है, ये नली अखीर ऊपर के तरफ मगज से सम्बन्ध रखती है और नीचे कमर तक जा पहुंची है धड़ के अन्दर छाती और पेट इन दोनों पोलों के सिवाय दो तरफ दो हाथ और नीचे दो पांव आये भये हैं, मगज में रहे अधिकारी के हुक्म से पदार्थों को पकड़ते हैं, छोड़ते हैं, इस शरीर को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं ॥

माथा, सिर की तूंमड़ी, (स्कल *Skill*).

इसकी हकीकत पीछे लिखी जिस मूजब है, मुख्य तीन पोल इस शरीर में हैं, खोपड़ी की, छाती की, और पेट की शरीर के सब चैतन्य वाले भाग इन तीनों में आये भये हैं, शरीर में सब अवयवों की जुदी २ क्रिया वही जीवन है, इन सब जीवन स्थानों में यह मगज सर्वोपरि स्थान है इस वास्ते उसका रक्षण भी बहुत मजबूत किले में भया है, वह किला सिर की खोपड़ी है इस सिर की खोपड़ी में चार मुख्य इन्द्री आंख, नाक, कान, मुंह आये भये हैं ॥

मगज, भेजा, मन, (ब्रेन *Brain*).

मगज खोपड़ी की पोल में बराबर बैठा भया है, खोपड़ी की जमीन मगज की सफाई के लगती है, इतने उस के खट्टे खोचरे हैं, उस

में मगज बराबर बैठा भया है, खोपड़ी में मगज के वास्ते तीन ढकने थाने पुड़त हैं, सब से ऊपर का पुड़ जाडा और मजबूत है और खोपड़ी के चारों तरफ आया भया है, उसका एक फांटा मगज के दो भागों के बीच में उतरता है. मगज में से जो खून फिर के पीछा जाता है, इस वास्ते बाहर के पुड़ में नली जैसा रास्ता होता है. दूसरा पुड़ भेजे के बीच में हैं, सो पुड़ दोलड़ा है और उस की पोल में प्रवाही पानी जैसा निर्मल है उस में थोड़ा खार का भाग होता है. तीसरा पुड़ मगज के लगों लग आया भया है. उसको अन्तर पुड़ कहते हैं. मगज के पोषण वास्ते उस में खून की नलियों का जाल पसरा भया है, मगज के चार भाग हैं जिस में से दो मुख्य हैं, अगला भाग सो तो बड़ा भेजा पिछला भाग सो छोटा भेजा, बड़ा भेजा सिर के अगले तरफ और ऊपर के तरफ धरा भया है, भुमारों के जरा ऊपर से दोनों कानों के छेद के आगे होकर सिर के आस पास एक लकीर खेंचने से भेजे की हद का अड़गड़ा मन में आ सकता है. इस पर से गोल टोपली जैसा और खर खोंदरा दीखता है, उसके बीच में एक फाड़ होने से बीच में उसके दो भाग, अर्ध गोलाकार से भया २ है. इस बड़े मगज के गहरास में तीन छोटी २ पोलार की जगह है और उसके तले से कितने एक तंतु निकलकर नाक. आंख. कान. जीभ वगैरः में फैली है. छोटा भेजा सिर के पिछले हाडों के खड्डे में धरा भया है. यह बड़े भेजे की तरह टोपली जैसा नहीं. लेकिन किताब के पन्नों की तरह उस में पुड़त होता है. उनके भी अर्ध गोल भाग है. उनका कद नारंगी

पानी तथा रत्न जैसी जरूरी चीजें रह सकती हैं, अगली कोयली आंख के निर्मल सफेद पुड़ के और रत्न की कोयली के बीच में है वह कोयली सब से छोटी है उस में आंख का पानी रहता है, इसका वजन पांच गेहूं भर है. आंख की बिचली कोयली सख्त पुड़की बनी भई है. उस में आंख का रत्न लटका भया है, यह रत्न आगे से पीछे से गोल हीरा जैसा पार दर्शक है, आंख की तीसरी कोयली सब से बड़ी है, जो सब के नीचे पुड़त में है जिस में बिल्लौर जैसा निर्मल पदार्थ इन भागों की मदद से अपने बाहर का पदार्थ देख सकते हैं, जो चीज अपने देखते हैं उस के ऊपर से निकलते उजालों के किरण ढोले के सफेद स्वच्छ पड़दे के अन्दर से आंख के अन्दर दाखिल होता है उस में से पूर्वोक्त कोयली में से होकर पीछी में से ये किरणों जैसा प्रकाश होता है किरणों अन्दर इकट्ठी होकर रत्न में दाखिल होकर एक मिलते हैं, बाद रत्न में से निकल, सब से पिछली कोयली के बिल्लौर में घुस के वहां से तन्तु वाले पुड़त पर इकट्ठे होते हैं. वहां मूल पदार्थ की आकृति का प्रतिबिम्ब पड़ पर पड़ता है, उसकी खबर मगज को पहुंचते ही उस चीज की शक्ल रूप रंग वगैरः का जीव को ज्ञान होता है, अंधेरे में पड़ी चीज में से किरणें निकलते नहीं इस से उसकी परछांह तन्तु पुड़ पर पड़ता नहीं इस वास्ते अंधेरी में पड़ी चीजों को अपने देख नहीं सकते सो दर्शनावरण कर्म है. आंख के कोनों में डोले से जरा एक २ मांस की गांठ देखने में आती है, उसको अश्रुपेसी कहते हैं. उस में आंसू पैदा होता है, ये आंसू आंख को बहुत फायदे

मंद है, उस आंसू से डोले भीगे और ताजे रहते हैं और आंख में कोई फूस फांटा जाता है, उसको आंसू धोकर बाहर निकाल डालता है आंखों के कोने में नाक के जड़ के पास एक बारीक छेद है, उस में से आंसू आधे इंच जितनी लम्बी नली के रास्ते नाक में उतरता है, भांपने बार २ मिचते रहते हैं, उस से आंख की रक्षा याने हिफाजत होती है, इतना ही नहीं लेकिन डोले के ऊपर के आंसू कोने के तरफ ढकेली जकर उस पूर्वोक्त नली के रास्ते नाके में हवा का आना जाना होता है. उस हवा से वह आंसू के सूक्ष्म परमाणु होकर उड़ जाते हैं. इस वास्ते नाक में आंसू मालूम नहीं पड़ते हैं, जब कोई भी बीमारी के सबब आंख के आंसू नाक में बहता बन्द होता है, तब वह आंसू आंख का गाल पर बहने लग जाता है, उसको नाक स्वर का दर्द कहते हैं ॥

कान, श्रवणेंद्रि, (इंग्रेज Ear).

सुनने की इन्द्री को कान कहते हैं. कान का जो बाहर का भाग दीखता है, सो नरम हाडों का याने कूची का बना भया है. हरएक कान में एक २ छेद है. ये छेद के आगे से एक छोटी नली जाती है, सो आसरे डेढ़ इंच लम्बी है, उस नली पर चमड़ी का पुट है. कान की अगली नली का नरम भाग नरम हाड़ याने कूची का बना भया है और पिछला भाग हाड़ का बना भया है. कान के भीतर की चमड़ी बहुत पतली होती है. कान में जो मैल होता है सो

बाहर से नहीं आता इस चमड़ी में से पैदा होता है. कान के बिचले भाग में खड़ा है उस के तथा बाहर के कर्ण नली के बीच में एक बारीक पर्दा आया भया है. उसके भाग में से एक महीन नली निकलकर अन्दर के भाग में उतरी है. इस से और कान के बिचले भाग में से मुंह के सम्बन्ध रहा भया है. कान का आखीर अन्दर का भाग सब से जरूरी का है क्योंकि उस में सुनने के तन्तुओं आये भये हैं. इस भाग का वर्णन सहज में समझ में नहीं आ सके ऐसा है. लेकिन मगज में से आये भये श्रवण तन्तुओं इस भाग में दाखिल भया है. उस तांतुओं के प्रवेश वास्ते उस में महीन २ छेद हैं. कान बाहर हवा में जो कुछ आवाज होता है, उस हवा का शब्द पुद्गल कान के अन्दर पर्दे पर पड़ता है. तब वह शब्द मृदंग के पुद्गल की मफ्क उस आवाज को अन्दर श्रवण तन्तु मगज को पहुंचाता है. वहां सुनने का ज्ञान उस जीव को प्राप्त होता है ॥

नाक घ्राणेंद्री, (नोज़ *Nose*)

नाक का अगला भाग पांच नरम हाडों का अर्थात् कूचीओं की बना भया है. बाहर दो छेद दीखता है उसको नसकोरा कहने में आता है. नाक के दो भाग हैं, एक तो बाहर दीखे सो दूसरा अंदर का बाहर के नाक की जड़ कपाल के साथ है, जैसे बाहर दो छेद हैं वैसे अन्दर भी दो छेद हैं वे मुंह के पिछले भाग से तथा गले के साथ सम्बन्ध रखता है. दो नसकोरों के बीच में एक पर्दा है,

बाहर से नहीं आता इस चमड़ी में से पैदा होता है, कान के बिल्कुल भाग में खड़ा है उस के तथा बाहर के कर्ण नली के बीच में एक बारीक पर्दा आया भया है, उसके भाग में से एक मशीन नली निकलकर अन्दर के भाग में उतरी है, इस से और कान के बिल्कुल भाग में से मुंह के सम्बन्ध रहा भया है, कान का आखीर अन्दर का भाग सब से जरूरी का है क्योंकि उस में सुनने के तन्तुओं आये भये हैं, इस भाग का वर्णन साहज में समझ में नहीं आ सके ऐसा है, लेकिन मगज में से आये भये श्रवण तन्तुओं उस भाग में दाखिल भया है, उस तांतुओं के प्रवेश वाले उस में महीन २ छेद हैं, कान बाहर हवा में जो कुछ आवाज होता है, उस हवा का शब्द पुद्गल कान के अन्दर पर्दे पर पड़ता है, तब वह पर्दा मृदंग के पुड़त की तरह उस आवाज को अन्दर श्रवण तन्तु मगज को पहुचाता है, वहां सुनने का ज्ञान उस जीव को भान होता है ॥

नाक घ्राणेंद्री, (नोज़ *Nose*)

नाक का अगला भाग पांच नरम हाडों का अर्थात् कूर्चाओं की बना भया है, बाहर दो छेद दीखता है उसको नसकोरा कहने में आता है, नाक के दो भाग है, एक तो बाहर दीखे सो दूसरा अंदर का बाहर के नाक की जड़ कपाल के साथ है, जैसे बाहर दो छेद हैं, तैसे अन्दर भी दो छेद हैं वे मुंह के पिछले भाग से तथा गले के साथ सम्बन्ध रखता है, दो नसकोरों के बीच में एक पर्दा है,

गैर: का अटकाव करती है,
ह खसबोई वगैर: परखने की शक्ति रखते हैं ये
मुद्गल पहली नाक के गीलास वाले पदार्थ में जब प्रवेश
तभी खुसबो की भावना पैदा होती है जब नाक सूखा होता
ासना का ज्ञान नहीं होता है, खूसबो की बराबर समझ
उस सुगंध दुर्गंध पदार्थ को जब हवा से ऊपर चढ़ाते हैं तब
जियादा असर मालूम पड़ता है, मगज के तंतुओं में से
जोड़ा सूंघने की क्रिया करता है, वह मगज में से नीचे उतरे
उसकी बारीक शाखायें नाक के ऊपरले भाग में पसरे हैं और
सुगंध दुर्गंध को परखे है नाक के नीचे का भाग मुंह तथा
सों के संग सम्बन्ध रखता है जिस से यह श्वांस लेने का तथा
ी २ आवाज निकालने के काम में उपयोगी होता है सब प्रा-
णयों की खुशबू परखने की शक्ति बराबर नहीं है कारण कर्मों के
आवरण के क्षयोपशम मूजब है इस आवरणों के मुताबिक ही मगज
के संग सम्बन्ध रखने वाले घ्राण तंतुओं जैसे जिसके होते हैं वैसी
ही उस में शक्ति होती है कोई आदमी तो बहुत तरह के खुसबू
परख सकता है कोई नहीं परख सकता है एक आदमी को एक चीज
की खूसबू अच्छी लगती है वो ही खूसबू दूसरे को अच्छी नहीं लगती ॥

जीभ स्वादेन्द्रि, (टंग Tongue).

स्वाद की जानने वाली इन्द्रीय जीभ है जीभ आस पास के भाग

तालुवा पडजीभ वगैरों में भी कुछ २ स्वाद जानने की शक्ति मालूम देती है जीभ के अग्रभाग पर दाना २ होता है उन दानों तक म-गज के स्वाद इन्द्रियों के तंतू पसरे भये होते हैं जिन से जीभ को अनेक वस्तु का स्पर्श होते ही स्वाद को पहोंचा ही सकती है जो पदार्थ जैसे ज्यादा पतला होता है वो जल्दी जीभ के तंतुओं में घुसकर जल्दी स्वाद का असर करता है और कठिन पदार्थों के प-रमाणु जीभ से पैदा हो तेरस में प्रवेश जब करता है तब रस का स्वाद मालूम पड़ता है जीभ के अंदर के तंतुओं को जो स्वाद का ज्ञान होता है वो ज्ञान मगज को तंतू पहुंचाते हैं तब अपने को उस २ रस का ज्ञान होता है जीभ मांस के लोचों से बनी है चारों तरफ से स्नायु जीभ के लगे भये हैं इस वास्ते जीभ इधर उधर फिरती है खुराक चावने में जीभ बहुत मदद करती है खुराक को बेर २ दांत के नीचे लाती है और जीभ की अणी खुराक को नरम करती है और बोलने के काम में जीभ का मुख्य उपयोग है ॥

चमड़ी त्वचा स्पर्शेंद्रि (स्किन *Skin*).

मगज के ज्ञान इन्द्रियों में पांचमी त्वचा है उस करके स्पर्श का ज्ञान होता है चमड़ी शरीर के अन्दर के भागों को ढककर उस का रक्षण करती है प्राचीन पंडितों के शास्त्रप्रमाण से सात पुड़-त है और डाक्टरों ने इस के दो पुड़त माने हैं जिसमें ऊपर का पड़त बहुत महीन पतला है जिसमें जलने से उस पर फफोला हो

जाता है सो ऊपर के पड़त का है इस के नीचे दूसरा पड़त है वह बहुत सख्त और जाडा है उस पर छोटी २ बहुत अणियां होती है उस में ज्ञान तंतुओं के जाल पसरे भये होते हैं चमड़ी के नीचे छोटी गांठें होती है उस में से पसीना पैदा होता है और चमड़ी के महीन छेदों में से बहार निकलता है चमड़ी के ये छेदों की गिनती जैनादिक प्राचीन ग्रन्थकारों ने साढ़ा तीन क्रोड़ की संख्या मानी है डाक्टरों के अनुमान से एक इंच चोरस जगह में २८०० छेदों की गिनती करने में आई है सब शरीर पर इस हिसाब से ७० लाख पसीने का छेद है प्राचीन पंडितों की गिन्ती शरीर के बढ़ाई पर है क्योंकि कोई कालांतर में प्राचीन पंडित ऊमर और शरीर की बढ़ाई मानते चले आये वेदों में युग के हिसाब पर घटत बढ़त है जैनों के अरोकी गिन्ती मुजब है इस की चर्चा यहां नहीं लिखते ग्रन्थ बढ़ जावे पसीना पानी जैसा पदार्थ है वो हमेशा निकलता रहता है लेकिन हवासे सूख जाता है सो हमेशा अपने नजर नहीं आता सब दिन रात में सरासरी तीन रतल पसीना पैदा होता है पसीने के संग खून में से कितनी एक खराब वस्तु शरीर में से निकल जाती है पसीने सिवाय चमड़ी में से एक चिकना तेल जैसा पदार्थ निकलता है जिस से चमड़ी हमेशा नरम और सुंवाली रहती है और चमड़ी में शोषण करने की भी शक्ति है जिस से तेल वगैरः को अन्दर खेंचती है ॥

छाती, फेफसा, छाती की पोल.(चेस्ट *Chest*).

छाती की पोल में रक्तागय बड़ी खून वहनी नल और दो फेफसे आये भये हैं, अन्न नल भी छाती में होकर पेट में उतरता है और श्वास नली का भी थोड़ा हिस्सा छाती के पोल में आया भया है, छाती के दोनों तरफ दो फेफसे हैं और बीच में रक्तागय (हार्ट) है, छाती के दोनों तरफ बारह २ पांसलियां हैं, छाती के पीछे पीठ की तरफ बीच में करोड़ है और छाती के अगली तरफ उरोस्थि अर्थात् छाती का हाड है, जिस के सङ्ग पांसलियां लगी भई है, ये सीने का हाड आसरे पांच इंच लम्बा है, ये सीने का हाड अव्वल से तो बहुत टुकड़ा-२ होता है, लेकिन पीछे से अवस्था पर आपस में जुड़ जाते हैं, ये सीने का हाड गले के तरफ चोड़ा होता है और नीचे की तरफ सांकड़ा होता है कोडी के पास अनीदार होता है, पीठ की तरफ बारह ही पांसलियां करोड़ के मनियों के संग जुड़ी भई है और अगली तरफ सात पांसलियां सीने की हड्डी के संग जुड़ी भई है, नीचे की तीन पांसलियों का अग्रभाग खुला है पांसलियां स्थिती स्थापक है नर्म और झुक सकती है, इस वास्ते श्वासों श्वास की क्रिया में मदद देने वाली है ॥

फेफसा फुप्फुस (लंग्स *Lungs*).

फेफसे दो हैं वह छाती के दोनों तरफ आये भये हैं, फेफसे की शकल मृदंग जैसी है, ऊपर से संकड़ा नीचे से चोडा होता

है और गुण इसका बदली जैसा होता है, दरेक फेफसे का वजन डेढ रतल का होता है, वायें फेफसे से दाहिना फेफसा जरा जियादा वजन में होता है, लेकिन दाहिने फेससे से बायां लम्बा जियादा होता है, फेससे स्थिति स्थापक और बादल जैसे होने करके दबता है और फूलता है फेफसे के अन्दर छोटे २ बहुत छेद होते हैं अथवा पोले दाने होते है वह हवा से भरे भये होते हैं, उस के छेदों की गिनती डाक्टरों ने करी है, जिसका अनुमान ३० करोड़ छेदों का है, जो फेफसा फक्त कोयली जैसा होता तो उस में हवा को बहुत थोड़ी जगह मिलती लेकिन करोड़ों छेद होने के सबब हवा को बहुत जगह मिलती है, हरएक फेफसे में हवा से भरे छेद एकंदर १४०० चोरस फुट जितनी जगह रोके इतनी हवा है, पीठ के तीसरे मनियें के सामने से श्वास नली के दो शाखायें हैं, सो दाहिनी शाखा दाहिने फेफसे में जाती है, बाइ वायें फेफसे में पहुंचते २ वह श्वास नली के शाखाओं का उत्तरोत्तर भाग विभाग होकर आखिर बारीक शाखा पर बारीक पर पोटे होकर ठहरता है श्वास नलियों के असंख्य अग्रभाग जहां आगे फेफसे को मिलते हैं वहां हवा और खून आपस में सम्बन्ध होते ही खून शुद्ध होता है ॥

रक्ताशय, हृदय, अंतःकरण दिल (हार्ट *Heart*).

रक्ताशय ये छाती की पोलार में दोनों फेफसे के बीच में कुछ बाई तरफ तिरछी पड़ी भई एक मांस की थैली है बाई तरफ

तो पीठ की करोड़ के हाड के पसवाड़े साथ और आगे से पांसली के भीतर की कोर संग चोतरफ लगा भया है इस पर्दे के ऊपर की तरफ संग बाई दाहिनी तरफ तो फेफसा और बीच में रक्ताशय जुड़ा भया है और नीचे के पसवाड़े संग दाहिणी तरफ तो कलेजा बायें तरफ तिल्ली और बीच में होजरी जुड़ी भई है इस पर्दे में तीन छेद हैं जिस में से एक में से धोरी नस और दूसरे छेद में से अन्न नल छाती में से पेट में उतरे हैं तीसरे छेद में से बड़ी काली नस पेट में से छाती में जाती है इन तीनों छेदों के अलावा उस पर्दे में कितनेक महीन छेद है उन्हों में से ज्ञान तंतुओं को रस्ता मिलता है ॥

पेट की पोल, उदर, पेट (अंडोमेन *Aundomen*).

शरीर में से सब से बड़ी पोल पेट की है. पेट की पोल के पिछले भाग में पीठ की करोड़ आई भाई है और ऊपर के भाग के बाजू पर पांसलियां है, आगे का और पसवाडे का ढकनां स्नायु तथा चमड़ी का बना भया है ऊपर की तरफ छाती के और पेट के बीच में गुम्मट के आकार का पर्दा है और नीचे के तरफ पेडू अथवा वस्ति स्थान है पेट को दवा के देखने से दुबले आदमी का पेट ढकना आखर करोड के मनियें तक हाथ में लग जाता है यही पेट का ढकना गर्भवती औरत का और मेद वाले तथा जलंदर वगैरः उदर रोगियों का बहुत बढ़ जाता है पेट की दिवाल के मध्य

रेखा में सूंड़ी का खड्डा है, उस के नीचे पेडू है और पेट के आखरी ऊपर के तरफ पांसलियो के बीच के भाग को फेफड़ा या कोड़ी कहते हैं बाजू वालों को पसवाड़े कहते है, पेट में होजरी कलेजा तिल्ली आंतरियां मूत्राशय के गुर्दे वगैरः बहुत जरूरी के अवयव आये भये हैं, उन सबों की हद्द और जगह जानने के वास्ते पेट के चौतरफ दो तो आडी और दो खड़ी लकीर दोलड़ी कल्पने से उस पेट का नव हिस्सा होता है उस में नीचे लिखे यन्त्र मूजिब कोटे आये भये हैं ॥

१ दाहिनी पासली पास के भाग में.	२ फेफड़े वाले मध्य भाग में.	३ बाई पसली के पास भाग में
कलेजा का दाहिना भाग पित्ता छोटे आतों का पहला भाग बड़े आत का दाहिना लपेटा दाहिने गुर्दे का ऊपरला भाग ॥	होजरी का बिचला भाग और दाहिना अग्रभाग कलेजा का बाया भाग.	होजरी का बाया अग्रभाग तिल्ली बड़े आतरों का लपेटा बाया गुर्दे का ऊपरला भाग.
४ दाहिना कमर तरफ भाग में	५ सूंड़ी वाले मध्य भाग में.	६ बाये कमर तरफ भाग में.
ऊपर चढता बड़ा आतरा दाहिने गुर्दे का नीचे का भाग छोटे आतरों का थोड़ा भाग.	बड़े आतरे का आड़ा भाग छोटे आतरों का थोड़ा गुच्छा.	बड़े आतरे का नीचे उतरता भाग बाये गुर्दे का नीचे का भाग छोटे आतों का थोड़ा गुच्छा.
७ दाहिनी भाग तरफ के नाभि में.	८ पेडू वाले नीचे के भाग में.	९ बाये कमर तरफ भाग में.
छोटे आतरे का छेड़ा और बड़े आंत का गुल्फ आत का भाग पेशाब ले जाने वाली दाहिनी नली.	छोटी आत का गुच्छा पेशाब का भरा हुआ थैला बड़ा नाड़ी मलेन्द्रियान.	बड़े आतरे का नीचे का और आतरे का उतरता भाग पेशाब ले जाने की बाई नली.

इस लिखे कोटे से सामान्य तौर पर इतना तो जरूर समझ में आ जायगा. पेट के दाहिने तरफ पांसली के नीचे कलेजा

(यकृत्) कलेजे के नीचे थोड़ा ते
भाग और मूत्राशय और सब के नी
वाली दाहिनी नली इतने अवयव अ
ऊपर होजरी और कलेजे का थोड़ा
भाग में बड़ा आड़ा पड़ा भया आंतरे
सब से नीचे पेडू में छोटे आंतरे औ
आये भये हैं, पेट के बाईं तरफ पां
छोड़ा तिल्ली और बड़ा आंतरा उस
मूत्राशय और सब से नीचे जांघ के
नली इतना भाग आया भया है ॥

अन्न न

पेट की पोल के होजरी वगैर
पहले होजरी में अन्न कहां से होक

नल के रास्ते होजरी में, उस होजरी के संग जुड़े भये छोटे आंतरे फिर उन्हों में उन छोटे आंतरों से जुड़े भये बड़े आंतरे में होकर सफरों में आता है, गले से लेकर होजरी के ऊपर के नाके तक पहुंचता यह अन्न नल की लम्बाई १२ इंच की है अन्न नल श्वास नली के पिछाड़ी है जिस से जिस वक्त खुराक निगलने में आता है तब उस खुराक का कोई भी दाना श्वास नली में नहीं उतर सके इस वास्ते श्वास नली का मुंह बन्द करने को एक छोटा ढकना जीभ के संग लगता है, वह खुराक गले से उतरते वक्त श्वास नली का मुंह ढक देता है तब उस के ऊपर होकर के खुराक अन्न नल में प्रवेश करता है ॥

होजरी, अन्नाशय, आमाशय ॥

गले से गुदा तक खुराक का एक ही रास्ता अथवा नल है, जिस में होजरी खुराक का सब से पहला भाग है होजरी पेट के फेफड़े वाले मध्य भाग में तैसे ही बाईं पसलियों के तरफ आया भया है, होजरी के ऊपर उरोदल पटल और कलेजे का बायां पासा है होजरी के बायें तरफ तिल्ली है, दाहिनी तरफ कलेजा है नीचे आंतरा है पिछाड़ी करोड़ है, होजरी के ऊपर के छेड़े पर अन्न नल का संयोग होता है और नीचे के छेड़े से आंतरा शुरू होता है होजरी की शकल पानी की मशक अथवा छोटी पखाल जैसा है, जब उस में खुराक जाता है तब वह चौड़ी होती है तब उस की

(यकृत्) कलेजे के नीचे थोड़ा तो छोटे तेरो ही बड़े आंतरे का भाग और मूत्राशय और सब के नीचे जांघ के पास मूत्र ले जाने वाली दाहिनी नली इतने अवयव आये भये हैं, पेट के बीच में ऊपर होजरी और कलेजे का थोड़ा भाग उस के नीचे सूंड़ी वाले भाग में बड़ा आड़ा पड़ा भया आंतरे का भाग और छोटे आंतरे और सब से नीचे पेडू में छोटे आंतरे और स्त्री का गर्भस्थान इतने भाग आये भये हैं, पेट के बाईं तरफ पांसलियों के नीचे होजरी का बायां छेड़ा तिल्ली और बड़ा आंतरा उस के भी नीचे बड़ा आंतरा तथा मूत्राशय और सब से नीचे जांघ के पास मूत ले जाने वाली दाहिनी नली इतना भाग आया भया है ॥

अन्न नल ॥

पेट की पोल के होजरी वगैरः भागों का वर्णन करने से पहले होजरी में अन्न कहां से होकर किस तरह आता है सो जानना चाहिये, खाया भया खुराक इस नल में होकर नीचे जाता है यह अन्न नल मांस मय स्नायुओं का बना भया है उस के संकोचने से खाया भया खुराक धक्के खाकर होजरी में जाता है, यह नल मुंह की खिड़की अथवा गले के नीचे के भाग से शुरू होता है, वह नल श्वास नली के पीछे और जरा बाईं तरफ करोड़ के आसरे नीचे उतरता है, पहले लिखा जो छाती और पेट के बीच में गुम्मट के आकार में होकर होजरी में पहुंचता है, इस नल का सम्बन्ध आखर गुदा द्वार तक पहुंचा है जैसा खुराक खाने में आता है सो अन्न

नल के रास्ते होजरी में, उस होजरी के संग जुड़े भये छोटे आंतरे फिर उन्हों में उन छोटे आंतरों से जुड़े भये बड़े आंतरे में होकर सफरों में आता है, गले से लेकर होजरी के ऊपर के नाके तक पहुंचता यह अन्न नल की लम्बाई १२ इंच की है अन्न नल श्वास नली के पिछाड़ी है जिस से जिस वक्त खुराक निगलने में आता है तब उस खुराक का कोई भी दाना श्वास नली में नहीं उतर सके इस वास्ते श्वास नली का मुंह बन्द करने को एक छोटा ढकना जीभ के संग लगता है, वह खुराक गले से उतरते वक्त श्वास नली का मुंह टक देता है तब उस के ऊपर होकर के खुराक अन्न नल में प्रवेश करता है ॥

होजरी, अन्नाशय, आमाशय ॥

गले से गुदा तक खुराक का एक ही रास्ता अथवा नल है, जिस में होजरी खुराक का सब से पहला भाग है होजरी पेट के फेफड़े वाले मध्य भाग में तैसे ही बाईं पसलियों के तरफ आया भया है, होजरी के ऊपर उरोदल पटल और कलेजे का बायां पासा है होजरी के बायें तरफ तिल्ली है, दाहिनी तरफ कलेजा है नीचे आंतरा है पिछाड़ी करोड़ है, होजरी के ऊपर के छेड़े पर अन्न नल का संयोग होता है और नीचे के छेड़े से आंतरा शुरू होता है होजरी की शकल पानी की मशक अथवा छोटी पखाल जैसा है, जब उस में खुराक जाता है तब वह चौड़ी होती है तब उस की

है पाचन भया रस इस नल के रास्ते खून को मिलता है बड़ा आंतरा दाहिने जांघ के तरफ भाग से शुरू होता है बड़े आंतरे का तीन हिस्सा करने में आवे तो दाहिने जांघ के पास से शुरू होता है सो दाहिनी पांसली तक वह ऊपर चढ़ता है पीछे वहां से कालजे के नीचे से वह बाईं तरफ फिरता है और फिर वहां से फेफड़े वाले भाग में होकर बांई पसली तक वह पेट में आड़ा पड़ता है तीसरा भाग तिल्ली के नीचे शुरू होकर पेट की बांई तरफ जांघ तक सीधा उतरता है इस तरह बड़ा आंतरा एक, सौ, तीन तरह से पेट में रहा है बड़े आंतरे की लम्बाई पांच फीट है ऊपर चढ़ता पहला भाग २॥ इंच जाड़ा है लेकिन आगे जाते बड़े आंतरे पतले होते जाते है वह आंतरे का तीसरा भाग नीचे उतरते की जाड़ाई १॥ इंच से जियादा नहीं है सफरे का नल बड़े आंतरे का जो छेड़ा बायें जांघ तरफ उतरता है वहां से टेढ़ा नल शुरू होता है वह सफरे के मुंह तक जाता है उसको सफरा अंग्रेजी में (रेक्टम) कहते हैं वह बायें तरफ से शरीर के मध्य भाग तरफ फिरता है और बीच में से सीधा उतरता है सफरे के अगली बाजू पर मूत्राशय याने पेशाब का फुका और गर्भस्थान आया भया है और पीछे से दोनों बैशक याने चूतड़ों के साथ लगा भया है हाड के संग सफरा ६ से ८ इंच लम्बा है सफरे के मुंह में मांस की शाखा गोल आंटा खाया भया है वह ढीला होने से सफरे का मुंह खुलता हैं और संकोचने से बन्द होता है ॥

कलेजा यकृत्, (लिवर *Liver*).

कलेजा एक बड़ा अवयव है उसका वजन आसरे ४ रतल होता है वह दाहिनी तरफ पांसलियों के नीचे पसवाड़े आया भया है लेकिन वह बड़ा है इस वास्ते फेफड़े वाले मध्य भाग में तैसे ही जग बाई पांसली के भाग तक पहुंचा भया है दाहिने तरफ से बाई बाजू तक कलेजे की लम्बाई आसरे एक फुट की है और चौडाई आठ इंच की है कलेजे के ऊपर उरोदर पटल आया भया है और नीचे अन्नाशय आंतरा तैसे मूत्राशय आया भया है कलेजे का बड़ा भाग दाहिने तरफ से पांसलियों से ढका भया है इस वास्ते दबाने से मालूम नहीं पड़ता है जब उस में कोई विकार होने से बाहर आता है तब वह दबाने से मालूम पड़ता है कलेजे के ऊपर बजाने से भद्दी आवाज आती है कलेजा बारीक हजारों दानों का बना भया है इस हरएक दाने में खून के महीन रगों का जाल पसरा भया है कलेजे का मुख्य काम खून शुद्ध करने का है और पित्त नाम का रस पैदा करने का है होजरी और आंतरों की सिराओं मिलके एक बड़ी सिरा होती है वह मध्य सिरा (पोर्टल वाइन) कहने में आती है यह मध्य सिरा कलेजे में दाखिल होकर उस की शाखाये बनकर उसका खून शुद्ध होता है कलेजे में जो पित्त रस पैदा होता है इस पित्त को ले जाने वाली एक नली कलेजे में से बाहर निकलती है वह पित्ताशय कहलाता है यह पित्त आंतरों में मिलके उस के अन्दर के खुराक को पचाता है खुराक में जो चर्बी

और चिकनास का भाग होता है उसको पित्त जल्दी पिघलाता है पित्त से आंतरों को जल्दी गति मिलती है और दस्त खुलास आता है पित्त का थोड़ा भाग दस्त के रास्ते बाहर निकलता है उस से दस्त का रंग पीला होता है चौबीस घन्टे में तीन रतल पित्त पैदा होता है ॥

पित्ताशय, पित्ता (गालब्लेंडर *Galblinder*).

कलेजे में पित्त का स्थान है यह पित्ता कलेजे के नीचे के तरफ लगा भया है यह एक गाजर जैसी थैली है पित्त की नली होजरी के नीचे छेडे से शुरू होता छोटे आंतरे से मिलता है इस पित्त की नली के संग दूसरी (पांक्रियाफ) नली का संयोग होता है इन दोनों की एक नली होकर आंतरे में प्रवेश करती है इस दूसरी नली में से थूक जैसा एक रस आंतरे से मिलके पाचन क्रिया में मदद करती है पित्त कलेजे में पैदा होकर पित्ताशय में इकट्ठा होकर पित्त की नली के रास्ते होकर आंतरे में जाता है ॥

तिल्ली, प्लीहा (स्पलीन *Spleen*).

पेट की बांई तरफ पड़खे में नवमी दशमी ग्यारमी इन तीन पांसलियों से ढकी भई हैं वह तिल्ली है कलेजे की तरह ऊपर से दबाने से मालूम नहीं पड़ती उरोदर पटल और होजरी के रस पुडतों से संधी भई है उसका रंग बादली रंग की सलेट जैसा है वह पांच इंच लम्बी तीन इंच चौडी और १० से १५ तोला वजन में है उसका भी काम खून शुद्ध करने का है बुखार की बीमारी में

वह बढ़ती है यहां तक बड़ी हो जाती है कि एक सख्त पत्थर जैसी गांठ सब पेट में फैल जाती है ऐसी तिल्ली बधी भई २० से ४० रतल तक वजन की होती है जब मिटती है तो यहां तक छोटी हो जाती है उसका वजन एक तोले से वजन वैसी नहीं होता ॥

॥ मूत्रपिंड-गुरदा ॥ (किडनी *Kiddney*)

मूत्रपिंड दो हैं मूत्रपिंड दोनों करोड के दोनों तरफ कमर के पिछले भाग में आये भये हैं हरएक गुर्दा ४ इञ्च लम्बा २ इञ्च चौड़ा १ इञ्च जाडा होता है उसका वजन आसेर १० से १२ रतल का है बाहर से वह साफ और लीसा है उसकी शकल उर्द के दाने जैसी है दाहिणा गुर्दा कलेजे के संग लगा भया है और बांयें गुर्दे का ऊपर का भाग तिल्ली से ढका भया है गुर्दा बारीक नलियों का बना भया है इस नलियों के चौ तरफ नसों का जाल बंधा भया है उसमें से कितना एक खराब निकम्मा भाग जुदा होता है दूसरा मायना उसका ऐसा है मूत्र पेशाब का पैदा होना है सब दिन में २ से ३ रतल पेशाब पैदा होता है दोनों गुर्दे में पैदा होता है हर एक गुर्दे के अंदर के तरफ एक छोटा खम्भा होता है उन में से एक २ बारीक नली सरू होती है वह पेड़ू के भाग को लांघ कर मूत्राशय (ब्लंडर) में जाता है इस नली को मूत्र नली कहते हैं ॥

॥ मूत्राशय-फुक्वा ॥ (ब्लंडर *Blander*)

दोनों तरफ के मूत्र पिंड में मूत्र पैदा होता है मूत्र-नली के

रास्ते वह मूत्र वस्ति के आगे भाग में जहां इकठा होता है उस भाग को मूत्राशय कहते हैं मूत्राशय का आकार अण्डे सा मिलता है यह मूत्राशय एक मांस की थैली है उस के अंदर तीन नाका है उस में से दो नाकों के रस्ते मूत्रपिण्ड में से मूत्र मूत्राशय मे आता है और तीसरे नाके के रस्ते बाहर निकलता है गुदे में से पेशाब बूंद २ मूत्राशय मे इकट्ठा होता है और जिस वक्त मूत्राशय भर जाता है तब उस को बाहर निकालने को मूत्राशय की मांग की साखाओं संकोचा कर मूत्र को गति देती है ॥

॥ उत्पत्ति-अवयव ॥

जिस अवयवों से सन्तान पैदा होते हैं उस को जननेंद्रिय भी कहते हैं पुरुष अथवा स्त्री इन दोनों के उत्पत्ति अवयवो की रचना जुदी है वृषण वीर्याशय और लिंग यह तो पुरुष के उत्पत्ति अवयव हैं गर्भाशय उस के अन्दर का भाग और योनि यह औरतों के उत्पत्ति अवयव है अब यह दीपक मर्यादा की जमीन में रहा भया सब संक्षेप से जरूरी के अवयवों को प्रकाश कर दिखाता है वृषण (टेस्टीकल्स) आंडो की मांस मय यह थैली है इस के अंदर दो गोली थैली की रगों तथा नसों से लटक रही है गोली दोनों अंडे की शिकल गोल है दहनी गोली से बांई गोली जरा नीची और बड़ी है हरेक गोली की सरासरी १ इंच से १॥ डोढ इंच तो लंबाई, १। इंच चौड़ाई, १ इंच जाडाई, तन्दुरस्त शरीर में हरेक गोली का वजन २ से २॥ तोला तक होता है आंडों की थैली के

बीच रेखा होता है जिस से थैली के दो हिस्से है गोली भी अलग २ है गर्भ में रहे बच्चे की गोली मूत्रपिण्ड के पास होती है बच्चा जब करीब आठ महीने का होता है तब वह गोली पेट की दिवाल में से रस्ता कर आंडों की थैली में उतरती है जन्म के समय किसी किसी बच्चे के वह गोली पेड़ू में होती है कोई वक्त एक ही गोली उतरती है दूसरी नहीं उतरती गोली के ऊपर एक जाडा मजबूत पुड होता है और उस के नीचे मकड़ी के जाले जैसा महीन पुडन होता है यह गोलियां आसरे आठ से बारीक नलियों की बनी भई है यह हरेक नली $\frac{1}{200}$ इंच अर्थात् एक इंच का दोसमा भाग जितनी पतली होती है और लम्बाई में यह नलियां कम से कम १ ३ इंच की ज्यादा से ज्यादा ३ ३ इंच की होती है यह आठसे इन नलियों का बेड़ा सांध कर लम्बी की जावे तो पूणा माइल तक लम्बी डोरी हो जावे एसे बहुत तांतुओं की गोलियां बनी है गोलियों में ऐसे दो २ तीन तीन नलियों का गुच्छा होता है नली के बाहर धोरी नसों की महीन जाल पसरी भई होती है उस के खून में से धातु पैदा होता है जिस रगों से डोरियों से थैली में गोलियां लटक रही हैं उस रगों में वीर्यनल धमनी और शिरा होती है शिराओं के अन्दर जब खून भर जाता है तब वह कोई वक्त सूज जाता है यह वीर्य नल धमनी तथा शिरा पेड़ू के छेदों में से पेट में दाखल होते हैं और शिरा तो बड़ी शिरा के संग मिलती है धमनी बड़ी धमनी में से निकली भई गाभा है और वीर्यनल मूत्राशय ऊपर होकर वीर्याशय को मिलता है वीर्याशय कोथली में से निकली भई नलियां आगे आगे जुड़कर

एक होती है और उस गोली की नस आगे से ऊपर चढ कर पेडू की पोल में मूत्राशय के फुक्के के पीछे जाता है और पेशाब के फुक्के तथा सफरे के बीच में दो छोटी कोथलियां हैं उस नली के संग जुडता है इस कोथलियों में धातु इकट्ठा होता है उस को वीर्याशय कहते हैं वीर्याशय की हरेक कोथली में से एक २ नली निकलती है वो नली आंडों की गोली में से निकलने वाली वीर्य नली के संग मिलकर पेशाब करने के रस्ते में खुलती है और उस ही रस्ते बाहिर आता है मूत्राशय के नीचे हरेक नली वीर्य की चोडी गुंचलादार होती है वीर्य पहली आंडों में पैदा होता है फिर पेडू में रहा भया वीर्याशय उस में ऊपर चढकर आता है फिर मूत्र नली द्वारा उस का पतन होता है लिंग मूत्र नली शिश्न मेढ कहने में आता है इस के अंदर का दो नल ऊपर होता है और तीसरा नल उस के बीच में नीचे के भाग में होता है वह हरेक भाग मजबूत और सफेद तंतुमय नली के जैसा है उन्हों के बीच में बहुत पड़दा होता है हरेक नल में छोटे २ खाने होते हैं उन में खून भरीजता है और खाली होता है जब खून भरीजता है तब लिंग जोर में आता है और जब खून खाली हो जाता है तब शिथल हो जाता है गर्भाशय कमल (वुम्ब) यह स्त्री जात के होता है और वह पेडू की पोल में सफरा तथा मूत्राशय के बीच में आया भया है गर्भाशय की शिकल जामफल अमरूद जैसा ऊपर से चौड़ा और नीचे से सांकड़ा है वह ३ इंच लम्बा और २ इंच चोडा है कुमारी का गर्भस्थान वजन में आसरे २ से ४ तोले का

होता है बच्चे वाली का ४ से ५ तोले तक का होता है गर्भस्थान मांस के जाडे स्नायुओं का बना हुआ है अंदर से पोला है उस के नीचे के सांकडे भाग में एक गोल खम्भा है और छेडे पर एक चीरा है वह कमल का मुंह है यह कमल मुख्य सम्बन्ध मार्ग के संग सम्बन्ध रखता है क्रतूधर्म और बच्चा किस तरह पैदा होता है सो आगे लिखेंगे स्त्रीप्रकरण में गर्भस्थान बढना शुरू होता है उस का वजन बढ कर १ से ३ रतल तक का हो जाता है गर्भ रहां पीछे वह पेडू के ऊपरले भाग में चढता है सो सूंडी तक पहुंचता है गर्भस्थान के ऊपरले दो खूणे ३ से ४ इंच लम्बी एकेक पतली नली लगी भई होती है जिस का एक मुंह गर्भस्थान की कोथली में खुलता है और दुसरा छेडा खुला रहता है गर्भस्थान की बाहर दोनों तरफ बन्धन से लगी भई अंडे के शिकल की दो छोटी गांठ हैं जिस को अंग्रेजी में ओवरी कहते हैं यह हरेक गांठ १॥ इंच लंबी ॥। इंच चौडी जाडाई । इंच से जरा कम है उस हरेक गांठ का वजन ।से ॥। तोले का होता है इस गांठ में मटर के दाणे जितने २।१० से ५० दाणे होते हैं उन में अंडे की सुफेदी के मिलता पतला प्रवाह होता है इस में का दाणा जब बडा होता है और जिस वक्त मजबूत होता है तब गांठ के आखर ऊपर उपस आता है और उस के ऊपर गर्भस्थान के आगे जो कहीं दोनों तरफ की नली का छेडा लग जाता है उस नली में वह दाणा फूटकर अपने अंदर [illegible] बहने वाला पदार्थ उस नली में गिरा देता है पीछे वह रस नली [illegible] गर्भस्थान के कोथली में उतरा भया मुंह के रस्ते गर्भस्थान में जाता [illegible]

एक होती है और उस गोली की नस आगे से ऊपर चढ कर हड्डी की पोल में मूत्राशय के फुके के पीछे जाता है और पेशाब के फुके तथा सफरे के बीच में दो छोटी कोथलियां हैं उस नली के संग जुडता है इस कोथलियों में धातु इकट्ठा होता है उस को वीर्याशय कहते हैं वीर्याशय की हरेक कोथली में से एक २ नली निकलती है वो नली आंडों की गोली में से निकलने वाली वीर्य नली के संग मिलकर पेशाब करने के रस्ते में खुलती है और उस ही रस्ते बाहिर आता है मूत्राशय के नीचे हरेक नली वीर्य की चोडी गुंचलादार होती है वीर्य पहली आंडों में पैदा होता है फिर पेडू में रहा भया वीर्याशय उस में ऊपर चढकर आता है फिर मूत्र नली द्वारा उस का पतन होता है लिंग मूत्र नली शिश्न मेढ कहने में आता है इस के अंदर का दो नल ऊपर होता है और तीसरा नल उस के बीच में नीचे के भाग में होता है वह हरेक भाग मजबूत और सफेद तंतुमय नली के जैसा है उन्हों के बीच में बहुत पड़दा होता है हरेक नल में छोटे २ खाने होते हैं उन में खून भरीजता है और खाली होता है जब खून भरीजता है तब लिंग जोर में आता है और जब खून खाली हो जाता है तब शिथल हो जाता है गर्भाशय कमल (बुम्ब) यह स्त्री जात के होता है और वह पेडू की पोल में सफरा तथा मूत्राशय के बीच में आया भया है गर्भाशय की शिकल जामफल अमरूद जैसा ऊपर से चौड़ा और नीचे से सांकड़ा है यह ३ इंच लम्बा और २ इंच चोडा है कुमारी का गर्भस्थान वजन में आसरे २ से ४ तोले का

होता है बच्चे वाली का ४ से ५ तोले तक का होता है गर्भस्थान मांस के जाडे स्नायुओं का बना हुआ है अंदर से पोला है उस के नीचे के सांकडे भाग में एक गोल खम्भा है और छेडे पर एक चीरा है वह कमल का मुंह है यह कमल मुख्य सम्बन्ध मार्ग के संग सम्बन्ध रखता है ऋतूधर्म और बच्चा किस तरह पैदा होता है सो आगे लिखेंगे स्त्रीप्रकरण में गर्भस्थान बढना शुरू होता है उस का वजन बढ कर १ से ३ रतल तक का हो जाता है गर्भ रहां पीछे वह पेडू के ऊपरले भाग में चढता है सो सूंडी तक पहुंचता है गर्भस्थान के ऊपरले दो खूणे ३ से ४ इंच लम्बी एकेक पतली नली लगी भई होती है जिस का एक मुंह गर्भस्थान की कोथली में खुलता है और दुसरा छेडा खुला रहता है गर्भस्थान की बाहर दोनों तरफ बन्धन से लगी भई अंडे के शिकल की दो छोटी गांठ हैं जिस को अंग्रेजी में ओवरी कहते हैं यह हरेक गांठ १॥ इंच लंबी ॥॥ इंच चौडी जाडई । इंच से जरा कम है उस हरेक गांठ का वजन ।ि ॥॥ तोले का होता है इस गांठ में मटर के दाणे जितने २।१० से ५० दाणे होते हैं उस में अंडे की सुफेदी के मिलता पतला प्रवाह होता है इस में का दाणा जब बडा होता है और जिस वक्त मजबूत होता है तब गांठ के आखर ऊपर उपस आता है और उस के ऊपर गर्भस्थान के आगे जो कहीं दोनों तरफ की नली का छेडा लग जाता है उस नली में वह दाणा फूटकर अपने अंदर का बहने वाला पदार्थ उस नली में गिरा देता है पीछे वह रस नली के गर्भस्थान के कोथली में उतरा भया मुंह के रस्ते गर्भस्थान में आता

॥ स्तन-थांवे ॥ (ब्रेस्ट Breast)

गर्भाशय सिवाय स्तन भी स्त्री जाति का खास अवयव है वह स्तन उत्पत्ती अवयव के संग कितना एक सम्बन्ध रखता है स्त्री के जब गर्भ रहता है तब उस स्तनों के शिकल में फेरफार होता है पैदा होने वाला बालक के वास्ते स्वभाव कुदरत से उस में दूध का पहले से ही संग्रह होता है स्तन मांस के लोचों की बनी भई एसे दीखती है लेकिन मांस के १५॥ २० झूमखों की बनी भई है उस में दूध पैदा होता है ॥

किरण ३ (सात धातू 7 Materials)

जिस पदार्थों से शरीर धारण रहता है उनों को धातु कहते हैं प्राचीन वैद्यक शास्त्र प्रमाणे शरीर को पोषण करने वाली सात धातु हैं १ रस शरीर में तृप्तितराबट करता है २ रक्त शरीर में जीवन शक्ति देता है ३ मांस लेपन कर अवयवों को जोडता है ४ मेद चिकणास लाता है ५ अस्थिहाड शरीर को धारण करे है मजबूती दे है ६ मज्जा मींजी हाडों की नलियों को भरे है उवीर्य शरीर का सत है जिस से प्रजा पैदा होती है जैसे पृथ्वी का वीर्य पारा है वृक्षों का गूंद है तैसे ॥ जिस क्रम से गर्भ का बंधेज पोषण होता है इसी क्रम से शरीर के अंदर की सातों ही धातुओं का उत्तरोत्तर बंधेज होता है एसा मालुम देता है इस वास्ते पूर्व संप्रदाय मुजब उन सातों ही धातुओं की व्यवस्था कुछ समझने की जरूरी है रस १ खुराक के पहिले पाकको रस कहने में आता है अच्छी त-

रह जब राग्नि से पका भया खुराक का पहिले रस सारसत्व होता है वह जल जैसा प्रवाही सुफेद ठंडा मीठा चिकना और चलने वाला होता है ऐसा रस सब शरीर में है तो भी इस की मुख्य जगह हृदय है यह रस धोरी नसों के रस्ते होकर सब धातुओं में जा कर पोषण करता है जिस की मंद अग्नि है उस के खुराक का रस विदग्ध अर्थात् जला जाता है विदग्ध होने से रस तीखा और खट्टा होता है ऐसा रस बहुत रोगों को पैदा करता है उस कच्चे रस को आम कहते हैं वह जहर का काम करता है साधारण बोली में उस को रस विकार कहते हैं रक्त २ होजरी आमाशय में से जब वह रस कलेजे में जाता है तब पित्त के संयोग से रंगपा कर तथा पक कर उस का खून बनता है खून भी सब शरीर में रहा भया है जीव का सर्वोत्तम आधार है यह रक्त चिकना भारी मीठा तथा गमन करने वाला है खून बिगड़ने से पित्त जैसा खट्टा होकर रोग पैदा करता है इस विकार को लोही खून विकार कहते हैं कलेजा और तिल्ली यह रक्तों का मुख्य ठिकाना है मांस ३ खून में रही अग्नि कर के पका भया वायु कर के घट्ट भया खून इसी का नाम मांस है खून के स्थान में गया भया रस वह तो खून मांस में गया भया खून सो मांस ऐसे मांस से मेदा मेदे में से अस्थि हाड में से मींजी मींजी में से वायु पैदा होता है गरमी युक्त वायु पोली शिराओं का विभाग अर्थात् शाखाओं बनाती है तैसे वायु मांस में प्रवेश कर मांस की पेसियां बनाती है शरीर में ऐसे मांस की पेसी ५०० है शिराओं स्नायुओं हाड सांध यह सब मांस की

पेसीयों से ढकी भयी है जिस से यह सब ताकतवर और चलते हैं यह पेसियां सब शरीर में हैं मेद ४ ज्यादा अन्दर की अग्नि से पक कर ज्यादा घट्ट होता है उस को मेदा या चरबी कहते हैं मेद भागे चिकनी बल देने वाली शरीर को जाडा करती है मेद विशेष कर पेट में रहती है हाड ५ मेद अन्दर की अग्नि से पक कर वायु उस को शोषण करती है तब उस के रूप का पलटना वह हाड कहलाता है जैसे दरख्त अन्दर के सत्व से खडा रहता है तैसे मांस सूखने पर भी बहुत मुद्दत तक यह शरीर हाडों के आधार चलता है वह सत्व रूप है इस वास्ते शरीर में हाड तीनसौ ३०० मज्जा हाडों में रही अग्नि उस से पक कर जो घट्ट सार सत्व है तथा पसीने की तरह हाडों में से अलग निकलता है उस का नाम मींजी है यह मज्जा ६ बडे हाडों में ज्यादा करके अन्दर रहता है वीर्य व धातुओं का आखरी सत्व सारभूत धातू वीर्य है ॥

धातुओं का अन्य रूप (लक्षण *Habit*)

शरीर में सातों ही धातुओं की हमेशा क्रिया चलती है जो खुराक खाने पीने में आती है वह पाचन क्रिया विषय में लिखेंगे उस मुजब होजरी में पक कर उस में से मल मूत्र अलग होता है उस में से सार पदार्थ रस पैदा होता है वह रस का ठिकाणा हृदय में जाकर मूल रस में मिलता है वहां से फैल कर सब शरीर को पोषण करता है हृदय में गये बाद इस रस का तीन हिस्सा होता है स्थूल १ सुक्ष्म २ और मल ३ स्थूलरस तो अपनी निज जगह में ही रहता है सुक्ष्मरस धातुओं में जाता है और मलरस धातुओं के

मैल में जा मिलता है जैसे अंगार से सांठे का रस पकता जाता है मैल ऊपर आता जाता है तैसे ही रस में रही अग्नि कर के आहार के रस का पचन होता है पचती वक्त वो रस पांच दिन डेढ घडी तक अपने मूल रस में ही रहता है पीछे वो रस खून में जाता है वहां भी इतनी ही मुदत रह कर मांस में जाता है इस तरह वीर्य में पहुंचते एक महीना के करीब मुदत होती है एकेक धातु का पाक होते उस में से मैल छूटने जाता है एकेक धातु का निकलता भया मैल इस मुजब पाचन होता आहार के रस में से मैल निकले सो कफ १ खून धातू में से मैल निकले सो पित्त २ मांस धातू में से मल निकले सो कान का मैल ३ मेद धातु में से मैल निकले सो पसीना ४ हाड धातू में मैल निकले सो नख ५ मज्जा धातू में से निकले मैल सो नेत्रमल ६ वीर्य में से मैल निकले सो गालों पर निकणाई या जुबानी में खीलों का होना ७ रस धातू में से निकला भया कफ प्राण वायू में चलायमान धमनी नाडी में होकर शरीर के मूल कफ में मिल कर कफ को पोषण करता है आहार के रस में से मैल जुदा भया पीछे सारभूत रस का दो भाग होता है जिस में से सूक्ष्म रस व्याननाम के वायु कर के प्रेरित भया धमनी के रस्ते शरीर की गरमी को कम कर के शरीर के धातू को पोषण करता है. खून का भी दो भाग जिस में से स्थूल भाग व्यान वायु से प्रेरित धमनी के रस्ते मांस धातू में मिलता है वहां कान का मैल छोड कर व्यान वायु से शिराओं के रस्ते बाहिर जाता है इसी तरह मांस का दो भाग स्थूल १ और सूक्ष्म २ जिस में से सूक्ष्म भाग तो मूत्र

मांस धातू का पोषण करता है स्थूल भाग व्यान वायु से प्रेरित हो कर शरीर के मूल मेद धातू में जाता है उस में से पकते वखत पसीना निकलता है शरीर की गरमी से तप कर शिराओं के रुंओं के रस्ते बाहर निकलता है जीभ दांत काख वगेरे में मैल निकसता है वो भी मेद चरबी का मैल है कितनेक आचार्य ऐसा कहते हैं इसी तरह मेद भी दो तरह का होता है जिस में सूक्ष्म भाग तो पेट में रहकर मेद धातू का पोषण करता हैं स्थूल भाग व्यानवायु से प्रेरित धमनी के रस्ते हाड में जाता है वहां अग्नि से पकते व्यान वायु से शिराओं में होकर उस का मैल नख बनता है शरीर के रुं भी हाडों का मैल है एसा भी मानते हैं इसी तरह हाड के दो भाग सूक्ष्म १ स्थूल २ सूक्ष्म भाग तो मूल हाड में रहकर उनों का पोषण करता है स्थूल भाग व्यान वायु द्वारा प्रेरित मज्जा में वहां पकते वखत मैल जो निकलता है सो पूर्व की तरह नेत्रों में मैल तथा चिपडी आंख होती है इसी तरह मज्जा का दो भाग जिस में से सूक्ष्म तो मूल मज्जा में रहकर मज्जा का पोषण करता है स्थूल का वीर्य बनता है उस बखत मैल नहीं निकलता सांठे का आखरी रस मिश्री को निखारणे के दृष्टांत एसा केइ आचार्य मानते हैं केइ आचार्य युवानी में मूं पर खीलों का होना सो धातु के पकते समय में मैल मानते हैं धातु कम पैदा जब होने लगता है या ज्यादा निकल जाता है तब वह मैल थोडा होने पर दिखाई नहीं देता मिश्री को निखारते ज्यों थोडा मैल आता है तैसे मज्जा से वीर्य पकते भी थोडा मैल आता है सो गाल वगेरों पर खील अथवा चिक-

णास आता है एकेक धातू पकते सवा च्यार २ दिन लगता है ऐसा भी पूर्वाचार्य जैनों का कथन है केइयक छ धातू पकते एकेक जगह ५ दिन डेढ घडी मानते हैं वीर्य का मैल नहीं मानते आखिर सातोंइ धातुओं बनते तीस दिन के लगभग होता है यह दोनों का एक ही सिद्धांत है यह पाचन क्रिया में शरीर में कमवेसी गरमी के लिये जितनी कसर रहती है तव धातुओं की पुष्टी में और मैल के जथे में वध घट होती है कितनेक आदमीयों के कफ जादा होता है कितने एक के पित्त जादा होता है कितने एक के कान में मैल ज्यादा होता है कितनों के पसीना ज्यादा होता है कितनों के रूं तथा नख जादा वढता है कितनों के आंख में गीड तथा आंखों चिपडी होती है कितनों के खीलें तथा गालों पर चिकणास जादा होता है ऊपर लिखी सातोंइ धातूओं की अंदर की पाचन क्रिया में कमवेसी पणे से ही एसा लक्षण होता होगा इस लक्षणों द्वारा अनुमान करने में आता है ॥

॥ तीन दोष-वात-पित्त-कफ ॥

ऊ वींड वाईल फलेग्म

ऊपर लिखा सात धातू का उत्पत्ति क्रम वह मुख्य तीन चीजों से शरीर में क्रिया चलती है आहार के रस को तैसइ उस में से क्रम से वणते धातुओं को अपने २ ठिकाणे लेजाने का काम वायु करती है यह वायु सव शरीर में फैली भई है आहार के रस की चाल से यह भी मालम होता है के शरीर में पाचन क्रिया फकत होजरी में और आंतों में ही होती है एसा नहीं है किन्तु अ-

ग्नि सब शरीर में है इतना तो है पक्वाशय के आसरे ही शरीर की सब गरमी और पाचन शक्ति का आधार है इस से मालम भया के पित्त नाम का एक अग्नि शरीर में अपना हक धराता है तीसरा मुख्य पदार्थ कफ है सो रस का मैल है या रस का दूसरा बणे सो पदार्थ है यह भी सब शरीर में व्यापक और शरीर को पोषणे वाला है इस वास्ते वैद्यक शास्त्र में इन तीनों की प्रधानता इन तीनों की बध घट से रोगीपणा समानता से निरोगीपणा इत्यादि प्रकृती जानने को आधार रक्खा है येवाय पित्त कफ या मैल मल जब बिगड के रोग करता हैं इस वासते तीनों को दोष भी कहते हैं जगत में धारण करने को चंद्रमा १ सूर्य२ और वायु३ कि जैसी क्रिया है ऐसी ही क्रिया शरीर को धारण करने को इन तीनों की है चंद्र जैसे दूसरे को ठंडता देता है तब ताकत बढती है तैसे कफ का धर्म है, सूर्य गरमी द्वारा सब को हरण करता है तैसे पित्त का धर्म है, वायु फेंक देती है विक्षेप करती है सो वायु का धर्म है यह तीनों बिगडे तो शरीर का नास कर देती है अवस्था में १ दिन में२ रात में३ और भोजन में ४ इन चारों में आदि में मध्य में और अंत में इन तीनों का वखत है, सो इस मुजब बालकपणे में कफ की अधिकता १ दिन के प्रथम भाग में कफ की अधिकता २ भोजन के अंत में कफ की अधिकता ३ जवानी में पित्त का जोर १ दिन के मध्यान्ह में पित्त का जोर २ भोजन के मध्य में पित्त का जोर ३ वृद्ध अवस्था में वायु का जोर १ दिन के अंत भाग में वायु का जोर २ भोजन की सरुआत में वायु का

जोर ३ रात के प्रथम भाग में कफ का जोर १ भोजन के पीछे पचने के अन्त में कफ का जोर २ रात्री के मध्य भाग में पित्त का जोर १ भोजन पचने मध्य मे पित्त का जोर २ रात के अंत में वायु का जोर १ भोजन पचने के आदि में वायु का जोर २ ॥

॥ पांच वायु ॥ (उ विंड)

वायु का लक्षण दोष धातू मल वगैरों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है शरीर की क्रिया को चपलता देती है वायु शरीर में जहां तक शुद्ध होय तहां तक शरीर में फुरती चैन सब चेष्टाओं की प्रवृत्ति कर के धातुओं को अच्छी तरह गति देकर इंद्रियों को चपलता शरीर के सब क्रिया में मदद देती है वायुकार जो गुण है सूक्ष्म शीतल रूखा हलका चलने वाला यह उस के मुख्य गुण है वायु पांच तरह का हैं १ उदान कंठ में रहता है २ प्राण हृदय में रहता है ३ समान आंतरों में रहता है ४ अपान मलाशय में रहता है ५ व्यान सब शरीर में रहता है उदान वायु ऊंची गति करती है उस से बोलना गाना वगैरः होता है जब यह उदान वायु बिगडती है तब स्वर भंग तथा हांस के ऊपर के भाग में रोग पैदा करता है प्राण वायु का कार्य मुंहमति करता है और आहार को रस्ता देता है प्राणों को धारण करता है प्राण वायु जब बिगडती है तब हिचकी रोग श्वास रोगादिक होता है उदान प्राण वायू का शुद्ध संयोग है सो ही आयु है समान वायु का कार्य आमाशय (होजरी) तथा पक्वाशय (आंतरा) में फिरे है अन्न अग्नि के संग मिल के आहार को पचावे है पाचन क्रिया में पैदा हो

मूत्र का विरेचन करता है मल मूत्र रस वगैरों को जुदा २ करता है रस को रंग देना हृदय का कफ तथा अंधकार का नाश करता है रूप का धारण क्रांति बधानी शरीर के ऊपर का लेप मालस वगैरे को पचाना इत्यादिक काम करता हैं दीपक जैसे एक जगह रहा भया लेकिन सब घर में प्रकाश करता है तैसे यह पाचक पित्त सब शरीर की अग्नि को ताकतवांन करता है रंजक पित्त रस का खून बनाता है रस को खून का रंग देता है साधक पित्त बुद्धि धति (हिम्मत) स्मृति वगैरः पैदा करे है साधक पित्त अंतःकरण में है इस वास्ते धारणाशक्ति तथा याद शक्ति यह सब अन्तःकरण द्वारा जीव के प्रकाशित होता है आलोचकपित्त रूप आकार ग्रहण करता है नेत्र इस पित्त द्वारा देखता है भ्राजक पित्त शरीर पर लेप तेल वगैरः मालस को पचा कर शोषण करता है चमडी पर दमक चमक लाता है ॥

॥ कफ-श्लेष्म ॥ (फलेग्म)

कफ का स्वरूप सुपेद भारी स्निग्ध ठंडा मीठा और बिगडने से खारा कफ विशेष कर तमोगुण वाला है कफ पांच प्रकार का है क्लेदनकफ आमाशय होजरी में है १ अवलंबन कफ अंतःकरण में है २ रसन कफ कंठ में है ३ स्नेहन कफ शिर में है ४ श्लेषण कफ सांधों में है ५ क्लेदन कफ अन्न को भिजाता है अच्छी तरह धारण करना रस को ग्रहण करना सब इंद्रियों को तृप्त करना सांधों को अच्छी तरह जुडा रखना इत्यादि पानी की क्रिया

ते रस को जुदा करता है मल मूत्र को जुदा २ निकाल के गिरावे है समानवायु जब बिगडती है तब मंदाग्नि अति सारदस्त और गोला वगेरः अनेक रोगों को पैदा करे है अपानवायु का काम बडे तिरे में तथा सफरे में रहकर मल मूत्र वीर्य गर्भ स्त्री के रितूधर्म खून) वगेरः को नीचे के द्वार तरफ खेंचकर लेजाने का काम करता है अपानवायु जब बिगडती हैं तब वस्ति गुदा स्थान वीर्य का रोग प्रमेह वगेरः बडे २ भयंकर रोगों को यह वायु पैदा करती है व्यान वायु का कार्य सब शरीर में फिरता है रस को धमनी तथा शिराओं में चढावे है पसीना तथा खून को बहाता है गति पास में लाना दूर फेंकना आंखमूंचणी खोलणी इत्यादि काम व्यान वायू का है व्यान वायु जब बिगडती है तब सब शरीर में रोगों का जन्म पैदा करती है कोई बखत यह सब वायु एकदम बिगडती है तब बडे कष्ट से प्राणी मर जाता है ॥

॥ पित्त ॥ (बाइल)

पित्त का स्वरूप गरम प्रवाही पीला हरा सारक तीखा कडवा हलका चिकणा पित्त पकती बखत खट्टा है आमवाला पित्त हरा है विगर का पीला है स्वभाव पित्त का स तो गुणी है वह पित्त पांच प्रकार का है पाचक पित्त १ पक्वाशय आंतरों में है १ रंजक पित्त कलेजे में और तिल्ली में है २ साधक पित्त हृदय में है ३ आलोचक पित्त आंखों में रहता है ४ भ्राजक पित्त चमडी में रहता है पाचक पित्त खुराक को पचाता है अग्नि को बढाता है मल

ग का विरेचन करता है मल मूत्र रस वगैरों को जुदा २ करता
रस को रंग देना हृदय का कफ तथा अंधकार का नाश करता
ह रूप का धारण क्रांति बधानी शरीर के ऊपर का लेप मालस
वगैरे को पचाना इत्यादिक काम करता हैं दीपक जैसे एक जगह
हा भया लेकिन सब घर में प्रकाश करता है तैसे यह पाचक पि-
त सब शरीर की अग्नि को ताकतवांन करता है रंजक पित्त रस
का खून बनाता है रस को खून का रंग देता है साधक पित्त बुद्धि
धृति (हिम्मत) स्मृति वगैरः पैदा करे है साधक पित्त अंतःकरण
में है इस वास्ते धारणाशक्ति तथा याद शक्ति यह सब अन्तःकरण
द्वारा जीव के प्रकाशित होता है आलोचकपित्त रूप आकार ग्रहण
करता है नेत्र इस पित्त द्वारा देखता है भ्राजक पित्त शरीर पर
लेप तेल वगैरः मालस को पचा कर शोषण करता है चमडी पर
दमक चमक लाता है ॥

॥ कफ-श्लेष्म ॥ (फलेग्म)

कफ का स्वरूप सुपेद भारी स्निग्ध ठंडा मीठा और बिगडने से
फ विशेष कर तमोगुण वाला है कफ पांच प्रकार का है
कफ आमाशय होजरी में है १ अवलंबन कफ अंतःकरण
२ रसन कफ कंठ में है ३ स्नेहन कफ शिर में है ४ ले-
कफ सांधों में है ५ क्लेदन कफ अन्न को भिजाता है अच्छी
धारण करना रस को ग्रहण करना सब इंद्रियों को तृप्त क
सांधों को अच्छी तरह जुदा रखना इत्यादि पानी की क्रि

ते रस को जुदा करता है मल मूत्र को जुदा २ निकाल के गिरावे है समानवायु जब बिगडती है तब मंदाग्नि अति सारदस्त और गोला वगेरः अनेक रोगों को पैदा करे है अपानवायु का काम बडे आंतरे में तथा सफरे में रहकर मल मूत्र वीर्य गर्भ स्त्री के रितूधर्म (खून) वगेरः को नीचे के द्वार तरफ खेंचकर लेजाने का काम करता है अपानवायु जब बिगडती हैं तब वस्ति गुदा स्थान वीर्य का रोग प्रमेह वगेरः बडे २ भयंकर रोगों को यह वायु पैदा करती है व्यान वायु का कार्य सब शरीर में फिरता है रस को धमनी तथा शिराओं में चढावे है पसीना तथा खून को बहाता है गति पास में लाना दूर फेंकना आंखमूंचणी खोलणी इत्यादि काम व्यान वायु का है व्यान वायु जब बिगडती है तब सब शरीर में रोगों का जन्म पैदा करती है कोई बखत यह सब वायु एकदम बिगडती है तब बडे कष्ट से प्राणी मर जाता है ॥

॥ पित्त ॥ (बाइल)

पित्त का स्वरूप गरम प्रवाही पीला हरा सारक तीखा कडवा हलका चिकणा पित्त पकती बखत खट्टा है आमवाला पित्त हरा है आम बिगर का पीला है स्वभाव पित्त का स तो गुणी है वह पित्त पांच प्रकार का है पाचक पित्त १ पक्वाशय आंतरों में है १ रंजक पित्त कलेजे में और तिल्ली में है २ साधक पित्त हृदय में है ३ आलोचक पित्त आंखों में रहता है ४ भ्राजक पित्त चमडी में रहता है पाचक पित्त खुराक को पचाता है अग्नि को बढाता है मल

हैं यह तंतु बारीक तांतों जैसी है इस की ओपमा बिजली के तार जैसी है सब तांतणे काच की बारीक नली जैसे है उस के अंदर तेल जैसा निर्मल पदार्थ है बिजली के तार में जैसे अंदर धातु और ऊपर गटापरचा का लेप होता है तैसे ही तांतणों के अंदर का पदार्थ प्रवाही धातु का काम करता है और ऊपर का बारीक पुडत गटापरचे का काम साधता है ऐसे कितनेक तांतुओं मिल के बंडल होता है ऐसे कितनेक बंडल इकट्ठे मिलके तंतु होते हैं हरेक तंतु के दो नाके होते हैं जिस में से एक छेडा मगज में अथवा करोड रज्जू में होता है दूसरा छेडा जिधर के तरफ तंतु जाता है उस भाग में होता है स्पर्श रूपादिक पांचों इंद्रियों का समाचार मगज को पहुंचता है तब उसका ज्ञान होता है एक चीज को हाथ में लेने का मन होता है और उस को लेने को हाथ को मगज की प्रेरणा होती है तब लंबा करके उस चीज को हाथ उठा लेती है इसी तरह धर देना होता है मगज अथवा मनका बाहर के पदार्थों के साथ का व्यापार मगज अथवा करोड रज्जु से चलता है ज्ञानतंतु तथा गति तंतु यह दो तरह के है कितनेक तंतु बहार का व्यवहार किसी भी इंद्री पर चले उस की खबर मगज को देकर सावचेत करे है उस को ज्ञानतंतु कहते हैं यह ज्ञानतंतु मगज और करोड रज्जु और मज्जा की जगह से निकल कर शरीर में फैलता करती है और दूसरी तरह के तंतु भेजने का हुक्म शरीर के हर किसी जगह पहुंचा कर गति अथवा क्रिया पैदा करती है इस तरह के तंतुओं को गति तंतु कहते हैं इन दोनों तंतुओं के जाल सब शरीर

क्लेदन कफ करता है १ अवलंबन कफ अंतःकरण के भागों को तैसे शिर और दोनों हाथों को सांधों को धारण करता है २ रसन कफ कंठ और जीभ को नरम रखता है ६ स्नेहन कफ स्नेह याने तेल जैसा चिकणा पदार्थ इंद्रियों को देकर तृप्त करता है ४ श्लेष्मण कफ सब सांधों को अच्छी तरह जोड रखता है ॥

॥ किरण ४ थी ॥ (शरीर की जुदी क्रिया)

शरीर के अंदर तरह २ की क्रिया किस तरह चलती है शरीर में तरह२ के रोग किस कारण से होता है शरीर के मुख्य अवयवों की क्रिया का विस्तार की व्याख्या करने पर हृदय में अच्छी तरह यह दीपक प्रकाश करेगा शरीर में जितने भाग ज्यादा चेतन शक्ति वाले हैं उनों का यहां वर्णन करेंगे शरीर में एसी चेतन की क्रिया करने वाली मुख्य तीन चीज है मगज १ फेफसा २ और रक्ताशय ३ ये तीन पाया इस शरीर के जीवन की जड है इस में किसी एक पाये में खटका होने से यह तिपाई टिक नहीं सकती यह तीन मुख्य मर्म स्थान है इस के अलावा कलेजा होजरी आंतरे मूत्राशय वगेरः भी जीव के आधार भूत है ॥

॥ मज्जातंतु-ज्ञानतंतु-गतितंतु ॥

शरीर के अंदर चलती क्रिया शरीर के संग सम्बन्ध होता बाहिर की क्रिया का संदेसा ले जाना और लाने वाले को मज्जा-तंतू कहते हैं मगज और करोड रज्जू यह मज्जातंतुओं का बिचला ठिकाणा (सेन्टर) है इस जगा में से यह तंतुओं शरीर में फैले

हैं यह तंतु बारीक तांतों जैसी है इस की ओपमा बिजली के तार जैसी है सब तांतणे काच की बारीक नली जैसे है उस के अंदर तेल जैसा निर्मल पदार्थ है बिजली के तार में जैसे अंदर धातु और ऊपर गटापरचा का लेप होता है तैसे ही तांतणों के अंदर का पदार्थ प्रवाही धातु का काम करता है और ऊपर का बारीक पुडत गटापरचे का काम साधता है ऐसे कितनेक तांतुओं मिल के बंडल होता है ऐसे कितनेक बंडल इकट्ठे मिलके तंतु होते हैं हरेक तंतु के दो नाके होते हैं जिस में से एक छेडा मगज में अथवा करोड रज्जू में होता है दूसरा छेडा जिधर के तरफ तंतु जाता है उस भाग में होता है स्पर्श रूपादिक पांचों इंद्रियों का समाचार मगज को पहुंचता है तब उसका ज्ञान होता है एक चीज को हाथ में लेने का मन होता है और उस को लेने को हाथ को मगज की प्रेरणा होती है तब लंबा करके उस चीज को हाथ उठा लेता है इसी तरह धर देना होता है मगज अथवा मनका बाहर के पदार्थों के साथ का व्यापार मगज अथवा करोड रज्जु से चलता है ज्ञानतंतु तथा गति तंतु यह दो तरह के है कितनेक तंतु बहार का व्यवहार किसी भी इंद्री पर चले उस की खबर मगज को देकर सावचेत करे है उस को ज्ञानतंतु कहते हैं यह ज्ञानतंतु मगज और करोड रज्जु और मज्जा की जगह से निकल कर शरीर में फेलावा करती है और दूसरी तरह के तंतु भेजने का हुकम शरीर के हर किसी जगह पहुंचा कर गति अथवा क्रिया पैदा करती है इस तरह के तंतु को गति तंतु कहते हैं इन दोनों तंतुओं के जाल सब शरीर

क्लेदन कफ करता है १ अवलंबन कफ अंतःकरण के भागों को तैसे शिर और दोनों हाथों को सांधों को धारण करता है २ रसन कफ कंठ और जीभ को नरम रखता है ६ स्नेहन कफ स्नेह याने तेल जैसा चिकणा पदार्थ इंद्रियों को देकर तृप्त करता हैं ४ श्लेष्मण कफ सब सांधों को अच्छी तरह जोड रखता है ॥

॥ किरण ४ थी ॥ (शरीर की जुदी क्रिया)

शरीर के अंदर तरह २ की क्रिया किस तरह चलती है शरीर में तरह २ के रोग किस कारण से होता है शरीर के मुख्य अवयवों की क्रिया का विस्तार की व्याख्या करने पर हृदय में अच्छी तरह यह दीपक प्रकाश करेगा शरीर में जितने भाग ज्यादा चेतन शक्ति वाले हैं उनों का यहां वर्णन करेंगे शरीर में एसी चेतन की क्रिया करने वाली मुख्य तीन चीज है मगज १ फेफसा २ और रक्ताशय ३ ये तीन पाया इस शरीर के जीवन की जड है इस में किसी एक पाये में खटका होने से यह तिपाई टिक नहीं सकती यह तीन मुख्य मर्म स्थान है इस के अलावा कलेजा होजरी आंतरे मूत्राशय वगेरः भी जीव के आधार भूत है ॥

॥ मज्जातंतु-ज्ञानतंतु-गतितंतु ॥

शरीर के अंदर चलती क्रिया शरीर के संग सम्बन्ध होता बाहिर की क्रिया का संदेसा ले जाना और लाने वाले को मज्जा-तंतू कहते हैं मगज और करोड रज्जू यह मज्जातंतुओं का बिचला ठिकाणा (सेन्टर) है इस जगा में से यह तंतुओं शरीर में फैले

भी मालूम नहीं देता इस तरह गति तंतु की मारफत मगज अथवा करोड रज्जू का हुक्म जिधर के तरफ गति तंतु गई है उधर की तरफ ही जाता है हाथ के अंदर गया भया गति तंतु को काट डाले तो पीछे हाथ के अंदर गति उत्पन्न करने वाली कूदरत कटे भये ऊपर के भाग में रहेगी नहीं क्योंकि कटे बाद मगज का हुक्म उस भाग में चल सकता नहीं नीचे की तरफ फेर जो काम अपनी इच्छा से होता है उस का व्यापार मगज के संग चलता है और जिस १ काम में अपनी इच्छा की जरूरी नहीं उसका व्यापार करोड रज्जू के संग चलता है हाथ पांव वगैरः शरीर के कितनेक भागों को हलचल करने की अपने को इच्छा होती है तब उस २ भागों को क्रिया में जोडने को मगज है सो गति तंतु के मारफत हुक्म पहुंचता है गति तंतु का अगला नाका उस भाग के स्नायुओं को अर्थात मांस के तांतों को मगज का हुक्म सुनाता है तब वह स्नायु काम करने लग जाते हैं यह काम तो मनुष्य की इच्छा के आधीन है और होजरी हृदय आंतरों वगैरो में जो क्रिया होती हैं उस पर अपनी सच्चा अथवा इच्छा काम नहीं कर सकती उस २ भाग में जो गति तंतु है सो अपनी निज कुदरत से काम किया करती है करोड रज्जू का हुक्म उस गति तंतू पर चलता है तब होजरी में अपनी क्रिया करती है यह हुक्म बिना कारण होना नहीं होजरी जहां तक खाली रहती है तब तक उस की क्रिया बन्ध रहती है होजरी में जब खुराक मिलता है तब आस पास की गांठों (ग्लांडों) को खबर पहुंचने से होजरी में रस क्रिया करने का

में सेल भेल होकर फैलावे कियां है तिस पर भी वह अपना २ काम करती है मगज के तंतु खोपरी के भेजे का चार हिस्सा है जिस में से सब से बडा हिस्सा और ऊपर के मगज में से कितनीक तंतु सीधी खोपरी के छेदों के रस्ते निकल कर इस में मुख्य पांच ज्ञान इंद्रियों के तंतु हैं इनों की सीधी क्रिया मगज के संग चलती है इन सबों की क्रिया आपस में जुदी २ है आंख में गई तंतु बाहर के प्रकाश को लेकर मगज को पहुंचाती है तब अपणे देख सकते हैं इसी तरह शब्दादिक चारों इंद्रियों का व्यापार समझ लेना इस तरह मगज को खबर उस तंतुओं द्वारा पहुंचती है तब जिस जगह शब्दरूपादि पांच मुख्य विषयों का भेदांतरों के जगह वगेरा का मगज में ज्ञान होता है करोड रज्जू खोपडी के पिछाडी के नीचे के मगज में से कितनेक तंतु पीठ की करोड में उतरे भये हैं इस तंतुओं का नाम करोड रज्जू है पीठ की करोड में से ३१ जोड तंतु निकलती है उस की शाखा हाय पैर छाती पीठ वगेरः सब धड में फैल गई है जो इस दोनों तंतुओं में कसर हो जाय तो उन उन इंद्रियों को ज्ञान में कसर होती है तार की डोरी बीच में टूटे वाद समाचार नहीं पहुंचा सके तैसे दृष्टांत जो ज्ञान तंतु पीठ की करोड रज्जू में से हाथ की अंगली तक पहुंचती है उस से अंगलियों को ज्ञान हो रहा है जो वो तंतुओं को बीच में से काट दिया जावे तो पीछे अंगलियों को जो स्पर्श होय उस का मगज को ज्ञान नहीं होता कटे वाद वह भाग अलग हो जाने से नीचे का भाग झूठा पड जाता है उस को जलावे अथवा सूई चुभावे तो

भी मालम नहीं देता इस तरह गति तंतु की मारफत मगज अथवा करोड रज्जू का हुकम जिधर के तरफ गति तंतु गई है उधर की तरफ ही जाता है हाथ के अंदर गया भया गति तंतु को काट डाले तो पीछे हाथ के अंदर गति उत्पन्न करने वाली कूदरत कटे भये ऊपर के भाग में रहेगी नहीं क्योंकि काटे बाद मगज का हुक्म उस भाग में चल सकता नहीं नीचे की तरफ फेर जो काम अपनी इच्छा से होता है उस का व्यापार मगज के संग चलता है और जिस १ काम में अपनी इच्छा की जरुरी नहीं उसका व्यापार करोड रज्जू के संग चलता है हाथ पांव वगेरः शरीर के कितनेक भागों को हलचल करने की अपने को इच्छा होती है तब उस २ भागों को क्रिया में जोडने को मगज है सो गति तंतु के मारफत हुकम पहुंचता है गति तंतु का अगला नाका उस भाग के स्नायुओं को अर्थात मांस के तांतों को मगज का हुकम सुनाता है तब वह स्नायु काम करने लग जाते हैं यह काम तो मनुष्य की इच्छा के आधीन है और होजरी हृदय आंतरों वगेरो में जो क्रिया होती हैं उस पर अपनी सचा अथवा इच्छा काम नहीं कर सकती उस २ भाग में जो गति तंतु है सो अपनी निज कुदरत से काम किया करती है करोड रज्जू का हुकम उन गति तंतू पर चलता है तब होजरी में अपनी क्रिया करती है यह हुकम बिना कारण होता नहीं होजरी जहां तक खाली रहती है तब तक उन की क्रिया बन्ध रहती है होजरी में जब खुराक गिरता है तब आस पास की गांठों (ग्लांडों) को खबर पहुंचते ही होजरी में रस क्रिया करने का

में सेल भेल होकर फैलावे कियां है तिस पर भी वह अपना २ काम करती है मगज के तंतु खोपरी के भेजे का चार हिस्सा है जिस में से सब से वडा हिस्सा और ऊपर के मगज में से कितनीक तंतु सीधी खोपरी के छेदों के रस्ते निकल कर इस में मुख्य पांच ज्ञान इंद्रियों के तंतु हैं इनों की सीधी क्रिया मगज के संग चलती है इन सबों की क्रिया आपस में जुदी २ है आंख में गई तंतु बाहर के प्रकाश को लेकर मगज को पहुंचाती है तब अपणे देख सकते हैं इसी तरह शब्दादिक चारों इंद्रियों का व्यापार समझ लेना इस तरह मगज को खबर उस तंतुओं द्वारा पहुंचती है तब जिस जगह शब्दरूपादि पांच मुख्य विषयों का भेदांतरों के जगह वगेरा का मगज में ज्ञान होता है करोड रज्जू खोपडी के पिछाडी के नीचे के मगज में से कितनेक तंतु पीठ की करोड में उतरे भये हैं इस तंतुओं का नाम करोड रज्जू है पीठ की करोड में से ३१ जोड तंतु निकलती है उस की शाखा हाथ पैर छाती पीठ वगेरः सब धड में फैल गई है जो इस दोनों तंतुओं में कसर हो जाय तो उन उन इंद्रियों को ज्ञान में कसर होती है तार की डोरी बीच में टूटे वाद समाचार नहीं पहुंचा सके तैसे दृष्टांत जो ज्ञान तंतु पीठ की करोड रज्जू में से हाथ की अंगली तक पहुंचती है उस से अंगलियों को ज्ञान हो रहा है जो वो तंतुओं को बीच में से काट दिया जावे तो पीछे अंगलियों को जो स्पर्श होय उस का मगज को ज्ञान नहीं होता कटे वाद वह भाग अलग हो जाने से नीचे का भाग झूठा पड जाता है उस को जलावे अथवा सूई चुभावे तो

शुद्ध करने की जगह में अपने संग खेंचके ले जाता है दूसरा खून का जरूरी का काम बदन में गरमी देने का है जब खून नहीं फिरता है तो छाती के भाग पर जैसी गरमी मालम दे है ऐसी हथेली पगथली पर लगती नहीं है जब किसी भी बेमारी में खून का फिरना बराबर नहीं रहता तब पहले हाथ पांव ठंडे होते हैं जब खून जलदी २ फिरता है तब सब बदन में बराबर गरमी रखता है देसी केइयक आचार्य ऐसा भी मानते हैं शरीर में जब कफ बिगडेगा और पित्त हाथ पैरों में जाकर ठहरेगा तब शरीर ठंडा हाथ पैर गरम और शरीर में पित्त बिगडेगा और कफ हाथ पैरों में जाकर ठहरेगा तब बदन तो गरम और हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं शरीर में जो खून फिरता है सो दो तरह का है हृदय के बांये भाग में धमनी या धोरी नसों में लाल किरमची रंग का खून होता है और कलेजे के दहणे खंड में और काली नसों में मैला और जामुन के रंग जैसा स्याह खून होता है इस काले रंग के खून को लोक जानते हैं जैसा नुकसान करने वाला नहीं है फेफसे में जाकर शुद्ध भये बाद यही खून शरीर को पोषण करता है लोही जरा खट्टा चिकणा और पाणी से कुछ भारी है स्वाद में जरा खारा है खून में गरमी सो डिग्री है खून के दो भाग हैं एक तो रक्तजकण दूसरा रक्तजल रक्तरजकण खून में असंख्याता है जिस में खून लाल दिखता है खून का जल जैसा प्रवाही भाग दूसरा उस में रंग नहीं है यह रक्तजल दो पदार्थों का बना भया है जिस को अंग्रेजी में फिब्रिन और सीरम कहते हैं खून के एक हजार भाग

हुकम हेता है शरीर की सब क्रिया मगज महाराज के आधीन हैं तंतू उस के हलकारे हैं ज्ञानतंतुओं शरीर के जुदी २ जगह की खबर पहुंचाने को पहरायत है गतितंतू मगज महाराज के द्वार पर खडे भये पहरायत है सो मालक का हुकम जुदी २ जगह पहुंचाते हैं इस करके हाथ पकडने का पांव चलने का आंख खोलने मूंचने का मुंह चाबने का काम करता है जब इस में कोई भी जगह की क्रिया बन्ध पडे अथवा बराबर नहीं चले तो समझ लेना उस २ भागों के तंतुओं में कसर हो गई शरीर जड होता है वातरक्त गलत कोढ शुनवहरी कमर के नीचे का भाग रह जाय लकवा हो जाने वगेरे रोग ज्ञानतंतु गतितंतुओ का व्यापार अटकने से होता हैं उन्माद (पागलपणा) अपस्मार (मिरगी) वाइ (हिस्टीरिया) हिचका वगेरः रोग भी मगज के बिगाड से अथवा मन के बिगाड से पैदा होते हैं ॥

॥ रुधिर-खून-लोही ॥ (ब्लड *Blood*)

खून का काम शरीर में मुख्य जीवतव्यता का आधार है सब शरीर का पोषण खून से होता है खुराक को पोषण करने वाला सार रूप हिस्सा कितना एक रसायण क्रिया में अलग होकर खून के संग मिलता है तब इस हिस्से को खून अपनी गति में जुदे २ भागों को चहिये जितने प्रमाण का बांट देता है उस भागों के अंदर निकम्मे पदार्थों को अथवा मैल कचरे को अपने प्रवाह में खेंच कर शरीर के बाहिर निकालने की जगह में फेंक देता है अथवा

शुद्ध करने की जगह में अपने संग खैंचके ले जाता है दूसरा खून का जरूरी का काम बदन में गरमी देने का है जब खून नहीं फिरता है तो छाती के भाग पर जैसी गरमी मालूम दे है ऐसी हथेली पगथली पर लगती नहीं है जब किसी भी बेमारी में खून का फिरना बराबर नहीं रहता तब पहले हाथ पांव ठंडे होते हैं जब खून जलदी २ फिरता है तब सब बदन में बराबर गरमी रखता है देसी केइयक आचार्य ऐसा भी मानते हैं शरीर में जब कफ बिगडेगा और पित्त हाथ पैरों में जाकर ठहरेगा तब शरीर ठंडा हाथ पैर गरम और शरीर में पित्त बिगडेंगा और कफ हाथ पैरों में जा कर ठहरेगा तब बदन तो गरम और हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं शरीर में जो खून फिरता है सो दो तरह का है हृदय के बांये खण में धमनी या धोरी नसों में लाल किरमची रंग का खून होता है और कलेजे के दहणे खंड में और काली नसों में मैला और जामुन के रंग जैसा स्याह खून होता है इस काले रंग के खून को लोक जानते हैं जैसा नुकसान करने वाला नहीं है फेफसे में जा कर शुद्ध भये बाद यही खून शरीर को पोषण करता है लोही जरा खट्टा चिकणा और पाणी से कुछ भारी है स्वाद में जरा खारा है खून में गरमी सो डिग्री है खून के दो भाग हैं एक तो रक्तरजकण दूसरा रक्तजल रक्तरजकण खून में असंख्याता है जिस में खून लाल दिखता है खून का जल जैसा प्रवाही भाग दूसरा उस में रंग नहीं है यह रक्तजल दो पदार्थों का बना भया है जिन को अंग्रेजी में फिब्रिन और सीरम कहते हैं खून को एक हजार भाग

में ७९० भाग पाणी का १३० भाग खून के दाणे का ६७ भाग आलब्यु मेन का २ भाग फिब्रिन का वाकी रहे इग्यारह भाग जिस में चूना मेगनेसिया सोडा लोह वगेरः पदार्थ है इस तरह रसायण प्रयोग से जुदा २ करने वालें विद्वानों को मालम पडा है खून का फिरना वडी धमनी नसां फेफसा केशवाहनी यह खून की छोटी वडी नदियों हैं अपने शरीर में खून चक्कर की तरह फिरता है उस का मुख्य साधन रक्ताशय है रक्ताशय यह खून का होद है वांये वाजु के रक्ताशय में से शुद्ध खून का एक नल (धोरी नस) निकलती है जिस की एक वडी शाखा पेट तथा दोनों पैरों में जाती है और दूसरी शाखाओं दोनों हाथ तया शिर में जाती है आगे जाते दरख्त के माफक इस वडी शाखाओं में से वारीक नसें उस में से आखिर केशवाहनी वाल जैसी सूक्ष्म नलियां जाल के माफक आखर चमडी तक फैलाव किया है इस जाल में से लाल खून फिर रहे पीछे वाद उस में से पीछे ऐसी हीज महीन फस्तें निकलती हैं और जैसे छोटे २ वाहले मिल के आगे जाते एक वडी नदी हो जाती है अथवा दरख्त का दृष्टांत समझना छोटी २ डालियों के समुदाय मिल कर नीचे जाते बडा थड हो जाता है इस वजह छोटी २ अनेक फस्त एक ही मिल के एक वडी फस्त शरीर के नीचे के भाग में से और दूसरी बडी नस दो हाथ तथा शिर के तरफ से शाखाओं में से ऊपर के भाग में से ऐसे दो बडी फस्त काला खून लेकर रक्ताशय के दहणे खंड में उतरे हैं वहां खून को डालता है वहा से काले खून का दो फांटा होकर एकेक रग दोनों

तरफ के भाग में फेफसे में जाता है फेफसे में गई भई रगों भी केशवाहिनी नसों की तरह जाल के माफक फैल जाती है और फेफसे में हवा के खाडों की महीन नसों की जाल के सम्बन्ध में आता यह काला खून वहां शुद्ध होकर केशवाहनीयों के रस्ते साफ लाल खून वहां से पीछा फिरता है और यह जाल आगे जाते एकट्ठी मिल कर उसकी एक धमनी होती है वह शुद्ध खून को पीछा रक्ताशय के बांये खड में दाखिल करती है जैसे पहले लिखा है उस मुजब शुद्ध खून सब से बडी धमनी के रस्ते निकला था इस तरह ही शुद्ध खून रक्ताशय के बाये खंड में से बडी धमनी के रस्ते निकल कर शरीर में सब जगह फैलता है और वहां से काला खून बडी शिराओं के रस्ते रक्ताशय के दहने खंड में दाखल होकर वहां से पीछा दो फस्तों के रस्ते फेफसे में जाता है फेफसे में यह काला खून शुद्ध होकर पीछा रक्ताशय के दहने खंड में दाखल होकर वहां से फिर शरीर के पोषण वास्ते धमनी के रस्ते फैलता है खून का ऐसा फिराव होते १॥ मिनट लगता है होजरी आंतरा और तिल्ली के शिराओं का खून परवारा रक्ताशय में नहीं जाकर कलेजे में जाता है वहां फेफसे की तरह उस की महीन साखें फैल कर उस खून की शुद्धि होती है और पीछे रक्ताशय की तरफ बहता है मोरतों के गर्भाशय में इस खून की साख फिर दूसरी है जिस्का है गर्भदशा में फेफसा काम नहीं करता है गर्भ को ताजा खून मिलता है गर्भ की नाभि में नाल होता है उस रस्ते जिसनाशुद्ध खून लाल रंग का गर्भ के पेट में जाता है और

वाकी का खून इस से अलग और थोडा कलेजे में होकर रक्ताशय तथा फेफसे में फिर कर फेर गर्भ नाल की धमनी के रस्ते शुद्ध होने को जाता है एसा कितनेक पंडित कहते हैं खून शरीर में किस कारण से जलदी २ फिरता है सो लिखते हैं रक्ताशय मांस की कोयली का वना भया है उस के अंदर के स्नायुओं तंग और ढीला होते रहता है जब कोयली खून से भर जाती है तब तो वह स्नायु तंग होकर खून को वाहिर निकालती है पीछे वोही स्नायु ढीले होकर कोयली को चौडी कर खून दूसरे को आने को जाय देती है स्नायुओं का एसा धर्म है रक्ताशय में जुदे २ खंड हैं उस के वीच में पडदे वाले दरवाजे हैं वह दम २ में खुलते हैं और भिडते हैं रक्ताशय के एक खंड में खून भरता है तब तो संकोच पाता है उसी वखत सामने का खंड चौडा होता है जिसे वो खून उस खंड में धकेलीजता है वहां से धमनियों में धकेलीजता है रक्ताशय के खंड वारा फिरते तंग और ढीला भया करता है उस से खून को धक्का लगता रहता है फिर धमनियों में खून की जोडा जोड हवा होती है वह हवा भी खून को गति दिया करती है इस के अलावा खून को धकेलने वाले दूसरे भी छोटे२ कारण भी वहुत है धमनियां स्थिति स्थापक है इस वास्ते भी खून को गति मिलती है शरीर के स्नायुओं की हमेम गति होने में नजीक के रक्त शिराओं पर दबावट होणे से भी खून आगे धकेलीजता है सासोश्वास से भी खून की गति को भी कुछ मदद मिलती है इत्यादि अनेक कारण खून को फिरता रखता है यह क्रियायें हीं

शरीर का चेतन्य है नाडी के भी खून से सम्बन्ध है वांये रक्ताशय के खंड में से खून वडी धमनी में जाता है जिस से धमनी चौडी होती है उस का धक्का धमनी के आखरी नाके तक पहुंचता है इस को नाडी का ठवका कहते हैं हरेक वखत रक्ताशय के संकोचाणे से नाडी का ठवका पैदा होता है यह ठवके जुवान आदमी के नाडी का एक मिनट में आसरे ७५ वखत होता है ॥

॥ सासोश्वास ॥ (रेस्पीरेशन *Respiration*)

सासोश्वास की इस शरीर में वडी जवर क्रिया है खून जैसे शरीर का जीवन है लेकिन इस खून को सजीवन करने वाला सासोश्वास की क्रिया है खून शरीर में फिरता है फेफसे में शुद्ध होता है प्राण को देने वाला हवा को अंदर दाखल करने वाला और वाहर से फेफसे में प्राणों को हरणे वाली एसी एक जहरी हवा को वाहर निकालने वाली श्वासोश्वास की क्रिया है अपने उश्वास लेते हैं तव वाहर की हवा अंदर जाती है और श्वास लेते हैं याने छोडते हैं तव अन्दर की हवा वाहर निकलती है यह सव आदमी जानते हैं जरूर जानने की वात इस में जो है सो हम लिखते हैं शरीर के अंदर पहले लिखी जो ज्ञानतंतु गतितंतुओं की अपार जुडीयां और धमनियां तैसे रगों वाल से भी वहुत महीन उनोंका जाल सव जगह फैला भया है ऐसे ही दोय वडी जाल दोनों फेफसे में वायु नली की फैली भई है नाक के नस को रों से फेफसे तक के रस्ते को वायु मार्ग अथवा श्वास नली कहते हैं हवा नाक के रस्ते

गले के पिछले भाग में से स्वर नली में होकर श्वास नली में से फेफसे में जाती है स्वर नली और श्वास नली यह दोनों एक ही रस्ता है लेकिन उस की जुदी २ क्रिया समझणे को उस के दो भाग ठहराये गये हैं ऊपर का भाग जो जीभ की जड गले के नल गोटे याने घांटे तक आया भया है उस को स्वर नल कहते हैं और नीचे के भाग को श्वास नली कहते हैं श्वास नली का ऊपर का भाग चोडा और बडा हैं गले के ऊपर के भाग में बाहर से जो ऊंचा टेकरे जैसा दिखाई देता है यह स्वर नली का भाग है उस को घांटा लोक कहते हैं कंठ भी कहते हैं इस स्वर नली का काम आवाज पैदा करने का है इस के बीच रस्ते के दो तरफ दो तार है वो दोनों तार तंबूरे के तारका काम करते हैं अर्थात जुदा २ स्वर पैदा करते है इस तार के बीच का रस्ता लंबा सांकडा और त्रिकोणार है उस में से हवा आती जाती है वह कंठ द्वार है यह तार स्नायुओं के सम्बन्ध से हिलता है तब वह रस्ता सांकडा चोडा अथवा बंध होता है इस रस्ते से हवा बिगर और कोई भी पदार्थ जा नहीं सकता जो अकस्मात कोई भी पदार्थ इधर के तरफ जाने का बनता है तब उसी वखत यह रस्ता बंध हो जाता है जल पीते खाते हसणे से गले में गया पदार्थ अपना रस्ता छोड स्वर नली की तरफ जाता है तब स्वर नली कंठ को अटका देती है उस को इस स्वर नली के नीचे के रस्ते को श्वास नली कहते हैं श्वासोश्वास की क्रिया श्वास नली नीचे छाती में उतरे पीछे उस के दो भाग होते हैं एक तो बांये फेफसे में जाता है एक दहणे फेफ-

से में पहुंचने के पहिले श्वास नली के विभागों पर विभाग होकर आखर महीन नलियां होकर फैलावा करती है और आखरी के नाके पर जल के छोटे पपोटे जैसे पपोटे होकर ठहरता है सब फेफसे के अन्दर और ऊपर ऐसे पपोटे रहे भये हैं इन पपोटों पर खून के बाल जैसी पतली रगों का जाल पसरा भया होता है और उस में रक्ताशय में से आये भये बिगडा खून बहता है और स्वछ साफ होता है अपने अच्छी हवा का जो श्वास लेते हैं वह आखर उन पपोटों तक पहुंचता है और जैसे हवा ज्यादा अच्छी होगी तैसाही उस के संग आने वाला खून ज्यादा साफ होता है खून के अंदर हवा (कारबोनिक असिड ग्यास) पपोटे के अंदर की हवा में मिलता है और उस हवा के अन्दर की प्राणवायु (आक्सिजन) खून में घुसती है वह प्राणवायु को संग लेकर फेफसे में शुद्ध भया खून रक्ताशय में पीछा फिरता है श्वासोश्वास की क्रिया में शरीर के खून में फेरफार होता है जरूरी का सो इस मूजब १ फेफसे में खून के संग बाहर की हवा का मिलना होते ही अशुद्ध खून काला बदल कर शुद्ध लाल खून बन जाता है जो कि शरीर को पोषण करता है २ श्वासोश्वास से खून की गरमी एक दो डिगरी बढती है ३ श्वासोश्वास से फिब्रिन नाम का तत्व बढता है ४ श्वासोश्वास से खून में प्राणवायु की वृद्धि होती है और उस के अन्दर का कारबोनिक असिड तैसे ही नाइट्रोजन का कमीपणा होता है इस के अलावा हसणा रोणा के दस्त पेशाब स्त्री का प्रसव छींक डकार हिचकी खासी इत्यादि सब कामों में श्वासोश्वास

गले के पिछले भाग में से स्वर नली में होकर श्वास नली में से फेफसे में जाती है स्वर नली और श्वास नली यह दोनों एक ही रस्ता है लेकिन उस की जुदी २ क्रिया समझणे को उस के दो भाग ठहराये गये हैं ऊपर का भाग जो जीभ की जड गले के नल गोटे याने घांटे तक आया भया है उस को स्वर नल कहते हैं और नीचे के भाग को श्वास नली कहते हैं श्वास नली का ऊपर का भाग चोडा और बडा हैं गले के ऊपर के भाग में बाहर से जो ऊंचा टेकरे जैसा दिखाई देता है यह स्वर नली का भाग है उस को घांटा लोक कहते हैं कंठ भी कहते हैं इस स्वर नली का काम आवाज पैदा करने का है इस के बीच रस्ते के दो तरफ दो तार है वो दोनों तार तंबूरे के तारका काम करते हैं अर्थात जुदा २ स्वर पैदा करते है इस तार के बीच का रस्ता लंबा सांकडा और त्रिकोणार है उस में से हवा आती जाती है वह कंठ द्वार है यह तार स्नायुओं के सम्बन्ध से हिलता है तब वह रस्ता सांकडा चोडा अथवा बंध होता है इस रस्ते से हवा विगर और कोई भी पदार्थ जा नहीं सकता जो अकस्मात कोई भी पदार्थ इधर के तरफ जाने का बनता है तब उसी वखत यह रस्ता बंध हो जाता है जल पीते खाते हसणे से गले में गया पदार्थ अपना रस्ता छोड स्वर नली की तरफ जाता है तब स्वर नली कंठ को अटका देती है उस को इस स्वर नली के नीचे के रस्ते को श्वास नली कहते हैं श्वासोश्वास की क्रिया श्वास नली नीचे छाती में उतरे पीछे उस के दो भाग होते हैं एक तो बांये फेफसे में जाता है एक दहणे फेफ-

से में पहुंचने के पहिले श्वास नली के विभागों पर विभाग होकर आखर महीन नलियां होकर फैलावा करती है और आखरी के नाके पर जल के छोटे पपोटे जैसे पपोटे होकर ठहरता है सब फेफसे के अन्दर और ऊपर ऐसे पपोटे रहे भये हैं इन पपोटों पर खून के वाल जैसी पतली रगों का जाल पसरा भया होता है और उस में रक्ताशय में से आये भये विगडा खून वहता है और स्वछ साफ होता है अपने अच्छी हवा का जो श्वास लेते हैं वह आखर उन पपोटों तक पहुंचता है और जैसे हवा ज्यादा अच्छी होगी तैसाही उस के संग आने वाला खून ज्यादा साफ होता है खून के अंदर हवा (कारबोनिक असिड ग्यास) पपोटे के अंदर की हवा में मिलता है और उस हवा के अन्दर की प्राणवायु (आक्सिजन) खून में घुसती है वह प्राणवायु को संग लेकर फेफसे में शुद्ध भया खून रक्ताशय में पीछा फिरता है श्वासोश्वास की क्रिया में शरीर के खून में फेरफार होता है जरूरी का सो इस मूजब १ फेफसे में खून के संग वाहर की हवा का मिलना होते ही अशुद्ध खून काला वदल कर शुद्ध लाल खून बन जाता है जो कि शरीर को पोषण करता है २ श्वासोश्वास से खून की गरमी एक दो डिगरी वढती है ३ श्वासोश्वास से फिब्रिन नाम का तत्व वढता है ४ श्वासोश्वास से खून में प्राणवायु की वृद्धि होती है और उस के अन्दर का कारबोनिक असिड तैसे ही नाइट्रोजन का कमीपणा होता है इस के अलावा हसणा रोणा के दस्त पेशाव स्त्री का प्रसव छींक डकार हिचकी खासी इत्यादि सब कामों में श्वासोश्वास

मदतगार है बाहिर की हवा अंदर अंदर की बाहर यह क्रिया ह-मेश चलती है यह क्रिया जिन्दगानी को बहुत मददगार है वह इस तरह से है शरीर में एक जहरी पदार्थ बढ़ते रहता है वह प्र-माण मुजब ही चाहिये बढे सो बाहर निकलना चाहिये उस को कारबोनिक असिड कहते हैं हवा में जुदे २ तत्व रहे भये हैं और हवा के संग जुदे २ पदार्थों का मिलाप होते ही उस में रसायणी फेरफार होते रहता है यह बात रसायण शास्त्र से सिध हो चुकी है बाहर की हवा भी अंदर जाकर रसायणीक फेरफार करती है ए-सा पंडितों ने अनुभव से सिद्ध कर लिया है ऐसे रसायणीक योग से एक तरह का असिड पैदा होता है लेकिन जो अंदाजे से जो वह असिड जादा रह जाय शरीर में तो खून फिरना बंध हो जा-ता है और मर जाता है प्राणवायु और कारबोनिक असिड यह दो-नों काले और लाल खून में होते हैं प्राणवायू (आकसीजन से) असिड ज्यादा होता है प्राणवायु तथा कारबोन इन दो पदार्थों के योग से कारबोनिक असिड बनता है एसी समझ में सुनने से आ-ई है प्राणवायु का कितनाएक भाग खून के संग रहकर बदन में फिरता है इस वजह खून के संग फिरते उस के संयोग से धीमे२ कारबोनिक आसीड बन कर खून के संग फेफसे में आता है और श्वास नली के हवा के संग मिल के बाहर निकल गिरता है श्वा-सो श्वास चलना या बंध करना मगज के आधीन नहीं है जो मगज श्वासो श्वास पर अपणी सत्ता चलाये चाहे तो थोडी देर तो चला सकता है लेकिन श्वासो श्वास को जादा देर तक बंध करने से या

जोर से चलाणे से जिन्दगी को जोखम पहुंचता है तो यह श्वासो श्वास किस की प्रेरणा से चलता है शरीर का सब जीवन व्यापार तो कर्म बद्ध चेतन अदभुत शक्ति वाला जो अंदर व्यापक है उस का है लेकिन जुदी क्रिया शरीर की अदभुत रचना के संचों से ही चल रही है जीव और कार्मण शरीर का काय योग का सामिल संयोग ही सिध होता है इस मुजब तत्वदृष्टि के विचार से शरीर के अवलोकन याने देखने से श्वासो श्वास की क्रिया का कितनाएक अनुमान हो सकता है जो वस्तु स्थिति स्थापक होती है उस के संग में आने वाली वस्तुओं को रस्ता देती है लेकिन उसका एसा ही गुण है सो पीछा संकुडा कर उस वस्तुओं को निकालने का प्रयत्न करता है कलेजा फेफसा पांसलियां छाती पेडू के बीच का पडदा वगेरः कितनेक अवयवों में हमेस संकोचणा और फूलने का गुण है हवा का स्वभाव जहां आकाश याने रस्ता पोल मिले वहां ही घुसणे का है बाहर की हवा नाक तथा मुंह के रस्ते श्वासनली में दाखल होने का प्रयत्न करती है श्वासनली उस को फेफसे तक लेजाती है फेफसे पोले होणे से उस हवा को रस्ता देता है और फेफसा फूल जाता है तब आस पास की पसलियां और छाती के नीचे का भाग उरोदर पटल का पडदा नीचे झुक कर रस्ता देता है एसी गति में तो आघात के संग याने यह तो हवा के घुसने का स्वरूप अब इस के संग प्रत्याघात लगता है याने पीछी इस हवा को निकालने का प्रयत्न होता है सो इस तरह स्थिति स्थापक पणों का एसा गति स्वभाव है उस में ये ही पांसलियां उ-

रोदर पटल और फेफसा पीछा संकोचा कर हवा को धक्का मारता है जिस से तुरत ही वह हवा नाक और मुंह के रस्ते पीछी बाहर निकल पडती है एसी क्रिया हमेशा चलती है श्वासो श्वास में हवा फेफसा और पांसलियां छाती के नीचे का पडदा यह सब क्रिया करने वाले पदार्थ मददगार है श्वासोश्वास में हवा का प्रमाण इस मुजब हर वक्त श्वास लेते कितनी हवा तो बाहर से अंदर जाती है और निश्वास से कितनी हवा वाहिर निकलती है ये जाने पीछे अपने आस पास की हवा का भी बिचार बांध सकते हैं इस बिचार में तारतम्पता तो बहुत है कहां तक लिखें लेकिन मध्यम उमर का तनदुरस्त आदमी दर श्वास में सरासरी ३० से घन इंच हवा ३५ तक लेता है और पीछा निकालता है इस हिसाब से दिन रात २४ घंटे में एक आदमी को छ लाख छयासी हजार अथवा सात लाख घन इंच हवा आसरे चाहिये महनत का काम करने वाले आदमी को इस से ज्यादा अर्थात दूणी हवा चाहिये अब इस आसरे पर हिसाब लगाने सें हर किसी घर में या कोठे में कितनी हवा है और वह कितने आदमीयों के पूरे जितनी है उस का ख्याल हो सकता है फेर एक आदमी के अंदर से निकले जो श्वास के संग हवा वह आस पास की कितनी हवा को बिगाडती इस पर से यह भी आदमी जान सकता है इस सब ज्ञान से आदमी अपने रहने के स्थल में जितनी साफ हवा चाहिये आवागमन होय एसा उपाय कर लेना युवान तन्दुरस्त आदमी का एक मिनट में आसरे २० श्वासो श्वास चलता है इस का विस्तार

खूराक हवा में तीसरे प्रकाश में लिखा है ॥

॥ पाचन क्रिया ॥ (डाईजेश्चन Digestion)

पाचन क्रिया शरीर का मुख्य जीवन है क्योंकि खून का पो: षण पाचन क्रिया से बणते रस से होता है इस की व्यवस्था जा- णने की जरूरी है खुराक का रस्ता मुंह में से सरू होता है और गुदा के द्वार तक उस का नाका आया है उस खुराक के रस्ते की लंबाई ३५ फीट है इस बात से आदमी को आश्चर्य पैदा होगा के आदमी की लंबाई सिर से लेकर पांवों की अंगली तक जादे से जादा ६ से ७ फीट की है तो फिर गले से लेकर गुदा तक खुराक मार्ग की लंबाई पांच गुणी छ गुणी जादा कहां से आगई उस का खुलासा इस तरह है मुंह के दरवाजे से होजरी तक तो नल सीधा उतरा भया है होजरी के नीचे वो नल आंतरों के रूप से गुंचला याने आंटे खाता गुदा द्वार तक पहुंचा है इस वास्ते खुराक मार्ग इतना लंबा है खुराक पहले अन्न नल में होकर हो: जरी में होजरी में से छोटे आंतरों में फेर बडे आंतरों में फेर स- फरे में होकर खा या खुराक गुदा पास आता है यह सब एक ही नल संग्रह है लेकिन जुदा २ ठिकाना किया अलग २ इस वास्ते जुदे २ नाम है खुराक का निकम्मा हिस्सा जो मल गुदा द्वार पर आने के पहले जो २ क्रिया खुराक की होती है सो पाचन क्रिया में लिखते हैं पाचन क्रिया का ठिकाना मुंह होजरी कलेजा पांखि- याक आंतरे यह पाचन क्रिया के वास्ते जुदे २ रस पैदा करने वा-

ले अवयव है थूक जठररस पित्त तथा आंतरों में तरह का २ रस पाचक क्रिया करने वाले रस है मुंह में थूक की क्रिया मुंह में चावणे का काम होता है और थूक इस काम को मदद करता है पाचन के काम में थूक की बहुत जरूरी है थूक को पैदा करने वाली मुख्य छ पिंड मुंह में है दोय तो कान के नजीक दोय जीभ नीचे दोय जबाडो के नीचे मुंह में थूक किस २ जगह पैदा होता है उस का अनुभव कर अनुमान बांधना और ऊपर लिखे छ पिंड अथवा थूक नलियों का भी निर्णय करना थूक खूराक के संग मिल के जुदा २ काम बजाता है ॥ १ थूक से मुंह और जीभ हमेसा भीजा रहता है जिस से बोलने चालने को जीभ को सहज से काम होता है २ ॥ खाणे का पदार्थ दांत से चाबे जाता है उस को थूक एक रस बनाता है उस से स्वाद की भी खबर पडती है ३ थूक खुराक में मिल के उस को नरम करता है जिस से चावणे का निगलने का काम सहज से होता है ४ थूक खुराक में मिल के उस में रसायणी क्रिया करता है और विशेष कर के स्टार्च वाले खुराक को पचाणे के काम में मदद करता है होजरी में होती पाचन क्रिया अन्न नल के रस्ते जाकर होजरी में पहुंचता है उस खुराक के संग जठररस मिलता है होजरी के अंदर का पुड मधुमक्खी के छाते जैसा होता हैं उस में महीन २ असंख्याते छेद होते हैं यह छेद उस के अंदर की नलियों का मुंह है उनों में से एक तरह का रस होजरी में झरता है जिस को जठररस अथवा पाचन रस कहते हैं यह जठरस हमेशा दस बीस रतल तक पैदा

होता है यह रस खुराक को गाल कर एक रस कर देता है इस रस में ज्यादा भाग पानी का है हजार भाग में पांच भाग दूसरे पदार्थों का है जिस में पेपसीन निमक वगैरे खारों का समावेश होता है होजरी में गये पीछे भी सब खुराक की एक सदृश पाचन क्रिया नहीं होती कितनेक नरम पदार्थ जलदी पचता है बराबर खूब चाव कर के उतारे भये पदार्थों से थोडा चाबा भया अथवा बिगर चावे उतारा भया पदार्थ देर से पचता है कितनेक पतले पदार्थ होजरी में जाता है के तुरत ही खून की नलियां उस का शोषण करना शुरू होता है और होजरी में से ही खून के संग मिल के शरीर में दाखल होता है होजरी का मुख्य काम खुराक को विलोय कर एक रस करने का है वह खुराक एक रस होकर जैसे जैसे पचता जाता है तैसे २ थोडा भाग होजरी के नीचे भाग से संधा भया छोटा आंतरा में जाता है आखर होजरी टीली गिरने से नहीं पचा भाग भी आंतरों में चला जाता है छोटे आंतरों में कितनाएक रस पैदा होता है फिर कालेजे में से पांक्रियाफ नाम का एक पिंड होजरी के पिछाडी लगती है उस में से जो रस आंतरों में बहता है वह रस आंतरों के खुराक पर काम करता है कालेजे में से पित्त पैदा होकर पित्ताशय में आता है वहां से पित्त छोटे आंतरों में जाता है कालेजे की पित्त शिरा अर्थात काले खून की रगों में से पैदा होता है आंतरे में पडा होजरी में एकठा भया खून की एक बडी शिरा अलग अलग करण रक्तागय के नरक नहीं जाकर कालेजे में आती है वहां इस

ले अवयव है थूक जठररस पित्त तथा आंतरों में तरह का २ रस पाचक क्रिया करने वाले रस है मुंह में थूक की क्रिया मुंह में चावणे का काम होता है और थूक इस काम को मदद करता है पाचन के काम में थूक की बहुत जरूरी है थूक को पैदा करने वाली मुख्य छ पिंड मुंह में है दोय तो कान के नजीक दोय जीभ नीचे दोय जबाडो के नीचे मुंह में थूक किस २ जगह पैदा होता है उस का अनुभव कर अनुमान बांधना और ऊपर लिखे छ पिंड अथवा थूक नलियों का भी निर्णय करना थूक खूराक के संग मिल के जुदा २ काम बजाता है ॥ १ थूक से मुंह और जीभ हमेसा भीजा रहता है जिस से बोलने चालने को जीभ को सहज से काम होता है २ ॥ खाणे का पदार्थ दांत से चावे जाता है उस को थूक एक रस बनाता है उस से स्वाद की भी खबर पडती है ३ थूक खुराक में मिल के उस को नरम करता है जिस से चावणे का निगलने का काम सहज से होता है ४ थूक खुराक में मिल के उस में रसायणी क्रिया करता है और विशेष कर के स्टार्च वाले खुराक को पचाणे के काम में मदद करता है होजरी में पाचन क्रिया अन्न नल के रस्ते जाकर होजरी में पहुंचता है खुराक के संग जठररस मिलता है होजरी के अंदर का पुड मधुमक्खी के छाते जैसा होता हैं उस में महीन २ असंख्याते छेद होते हैं यह छेद उस के अंदर की नलियों का मुंह है उनों में से एक तरह का रस होजरी में झरता है जिस को जठररस अथवा पाचन रस कहते हैं यह जठरस हमेशा दस बीस रतल तक पैदा

होता है यह रस खुराक को गाल कर एक रस कर देता है इस रस में ज्यादा भाग पानी का है हजार भाग में पांच भाग दूसरे पदार्थों का है जिस में पेपसीन निमक वगेरे खारों का समावेश होता है होजरी में गये पीछे भी सब खुराक की एक सदृश पाचन क्रिया नहीं होती कितनेक नरम पदार्थ जलदी पचता है बराबर खूब चाव कर के उतारे भये पदार्थों से थोडा चावा भया अथवा विगर चावे उतारा भया पदार्थ देर से पचता है कितनेक पतले पदार्थ होजरी में जाता है के तुरत ही खून की नलियां उस का शोषण करना शुरू होता है और होजरी में से ही खून के संग मिल के शरीर में दाखल होता है होजरी का मुख्य काम खुराक को विलोय कर एक रस करने का है वह खुराक एक रस होकर जैसे जैसे पचता जाता है तैसे २ थोडा भाग होजरी के नीचे भाग से संधा भया छोटा आंतरा में जाता है आखर होजरी ढीली गिरने से नहीं पचा भाग भी आंतरों में चला जाता है छोटे आंतरों में कितनाएक रस पैदा होता है फिर कलेजे में से पांक्रियाझ नाम का एक पिंड होजरी के पिछाडी लगती है उस में से जो रस आंतरों में बहता है वह रस आंतरों के खुराक पर काम करता है कलेजे में से पित्त पैदा होकर पित्ताशय में आता है वहां से पित्त छोटे आंतरों में जाता है कलेजे का पित्त शिरा अर्थात काले खून की रगों में से पैदा होता है आंतरे तथा होजरी में एकठा भया खून की एक बडी शिरा अलग अन्तःकरण रक्ताशय के तरफ नहीं जाकर कलेजे में जाती है वहां इस

होता है उस का सोषण होने आगे जाते वह मल घटना शुरू होता है बडे आंतरे भी रस का शोषण करता है इस वास्ते जो बीमार मुंह से खुराक नहीं ले सकता उस को पतला प्रवाही खुराक पिचकारी से गुदा के रस्ते बडे आंतरे में चढा सकते हैं इस तरह चढाया भया दूध वगेर पतलो पदार्थों को बडा आंतरा शोषण करलेता है उस से बीमार को पुष्टता मिलती है बडे आंतरे का मल नीचे उतर मफरे में होकर आखर गुदा द्वार से नीचे गिरता है इस तरह खुराक का सार रस बनता है और निकम्मा मल निकल जाता है पाचन क्रिया में ऊपर लिखे पित्त वगेरः जो रस सो खुराक को पचाकर सारभूत रस को खून में चढाणे की मदद करता है वह बहुत से रस भी खून के अंदर से ही आता है मतलब इस का ऐसा है खून के तत्वों से ही पाचन क्रिया होती है और पाचन क्रिया पीछे भी खून के तत्वों को बढाती है ॥

॥ शरीर की सर्व क्रिया ॥

ज्ञान क्रिया न्यारे २ तरह २ का ज्ञान होने वास्ते मगज में ज्ञानतंतु लगे भये हैं यह बात भेजे के प्रकरण में अच्छी तरह लिख दिया है चमडी से फकत स्पर्श का ज्ञान होता है इतना ही नहीं वह चमडी से और भी कई फायदे हैं चमडीमें कोडों महीन छेद हैं उस रस्ते से पसीना निकलता है इस पसीने में अंदर से कितनेक निकम्मे पदार्थ बाहिर आते हैं सो क्षार कार्बोनिक असिड वगेरे फिर चमडी में शोषण करने का स्वभाव है दवा पाणी हुवा

खून में से पित्त जुदा भया पीछे बाकी का खून रक्ताशय में जाता है पित्ताशय के अंदर का पित्त आंतरे में पाचन क्रिया चलती है तभी उस में बहता है पाचन क्रिया जब बंध होती है तब पित्ताशय में से जाता भया पित्त आंतरों में उसका छेद बंध होता है पित्त खुराक को पचाने वाला मुख्य पदार्थ है पित्त कितनेक दरजे जुलाब की गरज सारता है उस से आंतरों का रस सहज से आगे धकेलीजता है अनुभव से भी यह बात सिद्ध होती है कि जब पित्त आंतरों में ज्यादा जाता है तब दस्त खुलास आता है अथवा बहुत वखत अतीसार होजाता है प्रमाण से कम जब पित्त आंतरों में जाता है तब दस्त की कबजी होती है और पांडु पीलिया कमले का रोग होता है पीलीयेकी बिमारीका मुख्य कारण एसा है के खूनमें से जितना पित्त होना चाहिये इतना पैदा नहीं होय तब वह खून में ही रहता है उस कर के खून में पित्त का भाग बढने से शरीर पीला पड जाता है छोटे आंतरों में पाचन ॥ होजरी में जो पाचन क्रिया बाकी रह गई होय सो पूरा यहां होता है चरबीका भाग आंतरों में गलता है पाचन होता रस का शोषण होकर खून में चढना शुरू होता है पाचन और शोषण होते बाकी के पदार्थ नीचे उतरते जाता है जैसे २ नीचे उतरता है तैसे २ सार भूतरस खून में सूकता जाता है और निरुपयोगी मलके मिलता भाग आगे धकेलीजता जाता है और बडे आंतरों में प्रवेश करता है बडे आंतरे में खुराक जाता है तब वह खुराक मलके लगभग पतला होता है बडे आंतरे में कुछ जादा जाने जैसे पाचन क्रिया होती नहीं तो भी उस में जो कुछ सारभूत तत्व

होता है उस का सोषण होते आगे जाते वह मल घटना शुरू होता है बडे आंतरे भी रस का शोषण करता है इस वास्ते जो बीमार मूंह से खुराक नहीं ले सकता उस को पतला प्रवाही खुराक पिचकारी से गुदा के रस्ते बडे आंतरे में चढा सकते हैं इस तरह चढाया भया दूध वगेर पतलो पदार्थों को बडा आंतरा शोषण करलेता है उस से बीमार को पुष्टता मिलती है बडे आंतरे का मल नीचे उतर मफरे में होकर आखर गुदा द्वार से नीचे गिरता है इस तरह खुराक का सार रस बनता है और निकम्मा मल निकल जाता है पाचन क्रिया में ऊपर लिखे पित्त वगेरः जो रस सो खुराक को पचाकर सारभूत रस को खून में चढाणे की मदद करता है वह बहुत से रस भी खून के अंदर से ही आता है मतलब इस का ऐसा है खून के तत्वों ने ही पाचन क्रिया होती है और पाचन क्रिया पीछे भी खून के तत्वों को बढाती है ॥

॥ शरीर की सर्व क्रिया ॥

ज्ञान क्रिया न्यारे २ तरह २ का ज्ञान होने वास्ते मगज में ज्ञानतंतु लगे भये हैं यह बात भेजे के प्रकरण में अच्छी तरह लिख दिया है चमडी से फकत स्पर्श का ज्ञान होता है इतना ही नहीं वह चमडी से और भी कई फायदे है चमडीमें कोडों महीन छेद हैं उस रस्ते से पसीना निकलता है इस पसीने में अंदर से कितनेक निकम्मे पदार्थ बाहिर आते हैं सो खार कारबोनिक असिड वगेरे फिर चमडी में शोषण करने का स्वभाव है दवा पाणी हवा

वगैरः बाहर का पदार्थ छिद्रों के रस्ते शरीर में प्रवेश करता है खून की शुद्धि तथा गति को उत्तेजन देता है शोषण क्रिया शरीर के कितनेक भागों में शोषण क्रिया हमेशा चलती है रस को चूस के अंदर चढाना उस को शोषण क्रिया कहते हैं फेफसा होजरी आंतरे और सब शरीर की चमडी में शोषण क्रिया चलती है इस अवयवों के अंतरपुड के अंदर बहुत बारीक छेद है यह हरेक छेद एक २ महीन नलियों का मुख समझणा यह छेद उन २ अवयवों का रस को चूस कर नलियों के रस्ते चढाता है उस पर कितनीक क्रिया भये बाद वह रस खूनमें मिलता है यह नलियां उनोंका मूंह से रस का चूसणा करती है और उस नलियों के अंतर पुड भी छेद वाला होता है जिस से उस नलियों में सर्व जगह शोषण क्रिया चलती है काली नसां याने शिराओं जिस रस को चूसती है वह रस कलेजे में तैसे ही फेफसे में जाकर वहां वह रस शुद्ध होता है और होजरी तथा आंतरों की नलियां जिस रस को चूसती है वह उन नलियों के रस्ते पहले रस को शोधने वाली कितनीक थेलियां होती है उस में शुद्ध होकर रक्ताशय में जाता है फेफसे की नलियां कारबोनिक असिड को बाहर निकाल देकर प्राण वायु को अंदर लेती है यह भी काम शोषण क्रिया से होता है चेतन्यक्रिया शरीर में गति अथवा चलन वलन का काम चलता है में प्रवेश करत स्नायुओं से है और फिर स्नायुओं से भी महीन रूं मलके लगेभग के कितनेक भाग में आये भये हैं वह शरीर में चन पाचन क्रिया हथरथर धूजा करते हैं इस तरह स्नायुओं का सं-

कोचाणा इन सूक्ष्म तंतुओं का धूजना इस कारण कितनेक पदार्थों को गति दिया करती है रसोत्पादक क्रिया शरीर में तरह२ की रस क्रिया चलती है इस रस क्रिया से कितनेक रस पैदा होते हैं थूक पित्त वीर्य वगेर रस तो शरीर के पोषण क्रिया में काम देता है कितनेक रस निकम्मे हैं जैसे कि पेशाब पसीना बराल वगेर में रहे द्रवरस इत्यादि पित्त वगेर का मिलरस शरीर के जुदे२ संचों में तैय्यार होता है कलेजे में पित्त वीर्याशय में वीर्य स्तन में दूध तैय्यार होता है और पीछे वह जुदी क्रिया से जुदा२ होकर बाहिर निकलता है अगर जो बाहिर नहीं निकलेगा तो जरूर बिमारी हो कर नुकसानी करेगा उपयोगी रस भी चाहिये जिस से ज्यादा या कम पैदा होगा तो शरीर में हरकत पैदा करेगा कलेजे में पित्त रस कम पैदा होता है तो पाचन शक्ति मंद हो जाती है और जो ज्यादा पैदा होय तो तब दस्त की बिमारी और भी पित्त सम्बन्धी अनेक रोग पैदा करता है इस तरह थूक कम पैदा होय तो पाचन क्रिया बराबर नहीं होती है और ज्यादा बढ कर बाहिर निकले तो भी पाचन क्रिया में नुकसान होता है जो चिकणा रस सांधों को मजबूत पोषण करता है वह अगर कम पैदा होगा तो सांधों को धक्का लगता है घसता है और जादा पैदा भया तो चरबी बनने से चलने की शक्ति कम पड जाती है स्वाभाविक वेग १३ इस शरीर में ऊपर लिखी क्रिया के अलग भी कितनेक वेग स्वभाव से पैदा होते हैं और जिन्दगानी को वह क्रियायों की बहुत जरूरी है बोतेरे वेग अपनी भूल प्रमाद से अज्ञान अथवा आलस से अटकता है तो शरीर को

नुकसान पहुंचता है अब उन वेगों की तफसील इस मुजब है ॥ १ मूत्र ॥ पाचन क्रिया में रस शरीर में चढता है बाकी रहा निकम्मा पदार्थ में से जाडा मलसोदस्त होकर निकल जाता है और उस में का प्रवाही पदार्थ सो मूत्रपिंड में होकर पेशाब के रस्ते बाहिर आता है मूत्रपिंड महीन नलियों का बना भया है उन नलियों के आस पास बाल जैसी महीन नलियों का जाल पसरा भया है उस में से उन नलियों का शोषण करने वाले पर माणु पेशाब को खेंचता है पीछे मूत्र नल के रस्ते मूत्राशय में जाता है इस तरह बूंद २ मूत्राशय में एकठा होता है जब वह आशय भर जाता है तब वह स्नायु दबते हैं और पेशाब की शंका होती है और गति होती है इस में कितनेक गतितंतु मन के इच्छा के आधीन, मगज से लगे भये हैं वह अगर पेशाब को रोकना चाहे तो कितनकि देर रोक सकते हैं किसी काम की जरूरी से जो आदमी रोक सकता है वह इस बात का प्रत्यक्ष पूराबा है लेकिन इस स्वभावी वेग की हाजत को रोकना इस से नेत्रों में नुकसान गुडदे पोते में दरद वगेर होता है कारण पेशाब के संग दूसरे क्षारादिक जो पदार्थ जाता है उस में एकाध पदार्थ जहरी है वह पेशाब के रस्ते निकलना ही अच्छा है पेशाब को रोकणे से वह पदार्थ जब बाहिर नहीं निकलता खून में रहता है तब नुकसान करता है तनदुरस्त आदमी को हमेश २४ घंटे में सो १०० से १२५ सवासे भर पेशाब होता है मौसम ऋतु के फेरसे पसीनो ज्यादा हो-

सीना कम होता है इस प्रमाण को ख्याल में लाये उपरांत जो ज्यादा बढे या ज्यादा घटे तो कोई भी बिमारी रोग समझना बहु मूत्र प्रमेहादि जननेंद्रियों की रगों में दरद मूत्रकृछ शिर में दरद पेशाव का रुकणा और इस के संग मल की भी रुकावट होती है २ । मल ॥ खुराक का सार भूतरस खेंच्यों के बाद निकम्मा कचरा बडे आंतरे में धकेलीजता २ सफरे में आता है सफरे के स्नायु ढीले होते है तो भी मल को गति नहीं दे सकता तैसे वायु से मल का अवरोध होता है तो भी मल की प्रवृत्ति नहीं होती लेकिन कितनेक आदमी हाजत भये पीछे जान कर दस्त को रोकता है उस से सफरे में तथा आंतरे में वायु का कोप होना है पीछे उस में दरद होता है होजरी में भी दरद शिर में शूल नीचे वायु अटके तो आफरा भी हो जाता है ॥३ वीर्य ॥ वीर्य यह खुराक की पाचन क्रिया आखरी सारभूत तत्व है जैसे दूध पर क्रिया होने से माखर घी निकलता है तैसे वीर्य बन कर आंडों में से वीर्य नल के रस्ते नृपण रज्जु में होकर पेडू में जाता है मूत्रपिंड में से जैसे मूत्र पेडू में मूत्राशय में एकठा होता है तैसे नृपण आंडों में का वीर्य मूत्राशय के नीचे चोतरफ एकेक वीर्याशय है उस में वह वीर्य एकठा होता है वीर्य तरुण अवस्था में होना शुरू होता है और पूरी जवानी में पूरा होता है नृपण के अन्दर के वहणे वाले वीर्य में कितनेक परमाणु होते हैं इस में चैतन्य वाले तंतु होते हैं जिस से स्त्री पुरुष के संयोग से गर्भ रहता है यह खुलासा गर्भोत्पत्ती में लिख दिया है मलमूत्र की तरह वीर्य की आवश्यकता नहीं

नुकसान पहुंचता है अब उन वेगों की तफसील इस मुजब है ॥ १ मूत्र ॥ पाचन क्रिया में रस शरीर में चढता है बाकी रहा निकम्मा पदार्थ में से जाडा मलसोदस्त होकर निकल जाता है और उस में का प्रवाही पदार्थ सो मूत्रपिंड में होकर पेशाब के रस्ते बाहिर आता है मूत्रपिंड महीन नलियों का बना भया है उन नलियों के आस पास बाल जैसी महीन नलियों का जाल पसरा भया है उस में से उन नलियों का शोषण करने वाले पर माणु पेशाब को खेंचता है पीछे मूत्र नल के रस्ते मूत्राशय में जाता है इस तरह बूंद २ मूत्राशय में एकठा होता है जब वह आशय भर जाता है तब वह स्नायु दबते हैं और पेशाब की शंका होती है और गति होती है इस में कितनेक गतितंतु मन के इच्छा के आधीन, बाकी से लगे भये हैं वह अगर पेशाब को रोकना चाहे तो कितनेक देर रोक सकते हैं किसी काम की जरूरी से जो आदमी रोक सकता है वह इस बात का प्रत्यक्ष पुरावा है लेकिन इस स्वभावी वेग की हाजत को रोकना इस से नेत्रों में नुकसान गुदे पोते में दरद वगेर होता है कारण पेशाब के संग दूसरे क्षारादिक जो पदार्थ जाता है उस में एकाध पदार्थ जहरी है वह पेशाब के रस्ते निकलना ही अच्छा है पेशाब को रोकणे से वह पदार्थ जब बाहिर नहीं निकलता खून में रहता है तब नुकसान करता है तनदुरस्त आदमी को हमेश २४ घंटे में सो १०० से १२५ सवासे रुपये भर पेशाब होता है मौसम ऋतु के फेरसे पसीनो ज्यादा होता है तो पेशाब कम होता है कोई ऋत में पेशाब ज्यादा तो प-

सीना कम होता है इस प्रमाण को ख्याल में लाये उपरांत जो ज्यादा बढे या ज्यादा घटे तो कोई भी बिमारी रोग समझना बहु मूत्र प्रमेहादि जननेंद्रियों की रगों में दरद मूत्रकृच्छ शिर में दरद ाय का रुकणा और इस के संग मल की भी रुकावट होती है । मल ॥ खुराक का सार भूतरस खेंच्यों के बाद निकम्मा क- रा बडे आंतरे में धकेलीजता २ सफरे में आता है सफरे के स्ना- यु ढीले होते हैं तो भी मल को गति नहीं दे सकता तैसे वायु से मल का अवरोध होता है तो भी मल की प्रवृत्ति नहीं होती लेकिन कितनेक आदमी हाजत भये पीछे जान कर दस्त को रोकता है उस से सफरे में तथा आंतरे में वायु का कोप होना है पीछे उस में दरद होता है होजरी में भी दरद शिर में शूल नीचे वायु अटके तो आफारा भी हो जाता है ॥३ वीर्य ॥ वीर्य यह खुराक की पाचन क्रिया आखरी सारभूत तत्व है जैसे दूध पर क्रिया होणे से आखर घी निकलता है तैसे वीर्य बन कर आंडों में से वीर्य नल के रस्ते वृषण रज्जू में होकर पेडू में जाता है मूत्रपिंड में से जैसे मूत्र पेडू में मूत्राशय में एकठा होता है तैसे वृषण आंडों में का वीर्य मूत्रा- शय की नीचे चोतरफ एकेक वीर्याशय है उन में वह वीर्य एकठा होता है वीर्य तरुण अवस्था में होना शुरू होता है और पूरी ज वानी में पूरा होता है वृषण के अन्दर के वहणे वाले वीर्य में कि- तनेक परमाणू होते हैं इस में चैतन्य वाले तंतू होते हैं जिस से स्त्री पुरुष के संयोग से गर्भ रहता है यह खुलासा मनोत्पत्ती आगे में लिख दिया है मलमूत्र की तरह वीर्य की बाहयार प्रवृत्ती नहीं

होती लेकिन जिस वक्त वीर्याशय वीर्य से पूरा भर जाता है तब उस को रस्ता देना चाहिये स्त्री पुरुष के आपस में वीर्य के खेंचने वाले औरत मर्द ही है यह जीव कर्म की कुदरत आकर्षण शक्ति एसा भी सिद्ध करती है वीर्य की प्रवृत्ती भी आपस में ही औरत मर्द से ही होणी दूसरी तरह नहीं करनी वीर्य के प्रगट भये वेग के रोकने से जननेंद्रिय में शूल चलती है वीर्य की पथरी बंध जाती है धातु झरने लग जाता हैं स्वप्न में वेर २ वीर्य जाता है और शरीर नाताकत हो जाता है प्रदर प्रमेह वगेरः रोग होते हैं पेशाब अटकता है अंग में पीडा छाती में दरद होता है ॥ अधोवायु । ४ ॥ गुदा के रस्ते जो हवा निकलती है उस को अधोवायु कहते हैं सफरा यह अधोवायु की जगह है जैसे स्नायु मल को गति देता है तैसे वायु भी मल को गति देता है जो यह वायु का कोप होता है तो दस्त की कबजी हो जाती है और पेशाब खुलास नहीं आता आफरा होता है मगज घूमता है पेट गुड २ करता हैं इस वासते जबरदस्ती अधोवायु कभी रोकणा नहीं इंद्री में चमचमाट बूंद २ पेशाब का आना इस के रोकने से होता है ॥ ५ ॥ उलटी (कै) कै होती होय तो दवा से बन्ध करना लेकिन उस को गला या मुंह बंध कर आती कै को रोकना नहीं इस के रोकने से अरुचि पित्त विकार सोजा पांडु ज्वर कोढ चक्कर वातरक्त गलतकुष्ट पित्तीके ददोडे आदि अनेक रोग पैदा होते हैं ॥ ६ ॥ छींक ॥ छींक के रोकने से शिर दुखने लगजाता है

शरदी से या पेट में कृमि पडने से छींक आती होय तो इलाज क-
रना लेकिन आती छींक को रोकनी नहीं ॥ ७ ॥ डकार ॥
आती डकार को रोकने से हिचकी खासी अरुचि कांपणी और
छाती में गोटे उठकर दरद होता है ॥ ८ ॥ बगासी ॥ बगासी
आती को रोकने से शिर झिल जाता है दरद होता है अंग टूटता
है चमडी शून्य जैसी हो जाती है सांधे संकोचीजते हैं तैसे आंखे
मुंह नाक और कान में दरद पैदा होता है ॥ ९ ॥ भूख ॥ शरीर
में रात दिन की महनत से जो तत्व कम पड जाता है उसकी
भरती करने को दूसरे पोषण तत्व की जरूरी पडती है इस पो-
षण तत्व की कमीपणे को जनाने वाली वृत्ति को भूख कहने में
आती है यह भूख भी स्वभाविक वेग है पोषण की जरूरी पडती
है तभी भूख लगती है उस वक्त जो भूख को मारते हैं याने रोकते
हैं उस से शरीर सूकता है ताकत घटती है तेजक्रांति घटती है
शरीर के सांधे २ टूटते हैं शिर घूमता है आंखों का तेज घटता है
इस वासते भूख की टेम पर भोजन करना देरी नहीं करना ॥ १० ॥
प्यास यह प्यास भी स्वभावी वेग है कंठ होठ का सूकना यह प्यास
की निशानी है प्यास के रोकने से मुंह में शोष पडता है कानों से
सुनने की शक्ति कम होती है थकेला चढता है श्वास चढता है
छाती में दरद होता है ॥ ११ ॥ आंसु ॥ हर्ष अथवा शोक से
अथवा कोई पदार्थ आंख में घुसने से आंसु आंख में आते हैं यह
आंख का स्वभाव है इस वेग को रोकने से आंख के रोग छाती
का दरद अरुचि शिर में चक्कर वगैरः रोग पैदा होता है ॥ १२ ॥
श्वास ॥ श्वास के [illegible] विस्तार से लिख आये हैं [illegible]

के रोकने से गोले का रोग हृदय का रोग (हार्ट डिझीझ) वगेर दरद पैदा हो जाते हैं ॥१३॥ नींद ॥ शरीर का संचा सब दिन चलने से थक जाता है हाथ पांव ढीले पडते हैं और मन निर्बल पडता है इनों की विश्रांति याने विसांई के लिये दर्शनावर्णी कर्म-कारीगर की प्रवृत्ती से नींद आती है इस नींद से बहुतसी क्रियाओं बंध होकर शरीर जडवत् मालम देता है पांचों इंद्रियों को बे शुद्धि आ जाना देखने का आवरण आंख को सोचक्ष दर्शनावरणी बाकी च्यार इंद्रियों की अपने २ विषयों का आवर्ण सो अचक्षु दर्शनावरणी कर्म का उदय भाव है सो नींद स्वभावी वेग है नींद में यह तीन क्रिया चलती रहती है श्वासोश्वास खून का फिरना और पाचन क्रिया मृत्यु में इन तीनों की क्रिया नहीं रहती बाकी दशा सब नींद में मृत्यु कैसी है नींद की वखत टालने से आलस अजीर्ण शिर का दरद चक्कर वगेरः बिमारी पैदा होती है इन तेरह वेगों को जवरन पैदा करना नहीं जैसे कई आदमी कपडे की वत्ती डाल के छींक लेते हैं विना प्यास जवरन जल पीते हैं इत्यादि तेरोंई का जवरन पैदा करना नहीं भये वेग को रोकना नहीं इस के अलावा जिस २ रोग में जो २ कामों की मनाई है अथवा उस रोग में पथ्य है वह करना पथ्यापथ्य मुजब विद्वान वैद्य डाक्टर जिस की दवा करनी उस दवा मुजब पथ्य करना अथवा अपनी बुद्धि पूर्वक इस दीपक के उजाले में चलना ॥

इति श्री जैन धर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय राम ऋद्धि मार्गणा विरचिते वैद्यदीपक संज्ञे तिसरो प्रकाश ॥

प्रकाश २

॥ शरीरका यत्न ॥

शरीररचना उसके अवयव और क्रिया जाणे पीछे उस क्रियाकूं यथायोग्य नियममें रखणेवास्ते शरीरका संरक्षण और पुष्टिकारक पदार्थ तथा उनोंका गुण और धर्म समझणा वैद्य विद्यामें ये तीसरा प्रकाश वडा हितकारी है क्योंके पदार्थोंका गुण तथा धर्म जाणे विगर उसका वरतावा करणेसें उससे वहोतसी वैमारियां पैदा होती है इतनाही नहीं इनोंसें अथवा दुसरे कारणोंसें जो दरद पैदा होता है उस दरदोंकों मिटाणेकूं इनही पदार्थोंका उपयोग करणेमें आता है वलके वाजे वखत दवासेंभी जादे गुण येही पदार्थ दिखा देते हैं इसवास्ते हमेसां वरतावमें आते भये पदार्थ जैसेंकी हवा पाणी और खुराक तैसें कसरत नींद वगेरे दुसरेभी जानने योग्य वावतोंकों जरूर जाणना चाहिये शरीरके साधनका मुख्य दो प्रकार है तन दुरस्तही रहे रोग आणे पावै नहीं एसा जो ज्ञान जिसमेंभी उद्यमकी प्रवलता वैसें वरतावसें चलना दुसरे प्रकारमे कर्मयोगसे जो रोग हो जावै इसमें कर्मकी प्रवलता वाद उपायोंका करणा इसमें जीवका उद्यम अच्छा होणा न होणा कर्मोंकी प्रवलता इतिस्याद्वादः ॥ इस प्रकाशमें रोग हो नहीं सके एसा जो पुरुष कृत उद्यम उसका निर्णय लिखेंगें इस प्रकाशमें च्यार किरण है १ पहलीमें हवा पाणीका निर्णय २ दुसरीमें खुराक निर्णय ३ तीसरीमें ऋतुचर्या ४ चोथीमें दिनचर्या रात्रिचर्या नित्यपालणेके नियम इत्यादि विवरण लिखा जायगा शरीर निरोग रहणा ये पूर्व जन्ममें जीवदया जिसने पाली है भूखे प्यासे दीनहीणकूं सव तरेसें जिसनें सुख दिया है वो प्राणी निरोग शरीरवंत लंवी ऊमरके साधनकी वुद्धि सर्व सामग्री उसकूं मिलती है सात सुखमें मुख्य सुख निरोगी काया है कुटुंवमें माता पिता भाई वेटा वेटी वहिन आदि कोईभी वेमार पडे तवभी अदमीके दिलमें वहोत चिंता इधर उधर वैद्य डाकतरोके पास जाणा कमाईमें हरज फेर दवा दारूमें धनका नाश जो मूरख वैद्य विद्याहीन यमराजका दूत मिले तो शरीरकाभी नाश घरके काम संभालणेवाली माता स्त्री वगेरे वेमार पडणेपर वाल वच्चोंकी सार संभाल रसोइ वगेरे कामोंमें जो जो हरजा पहुंचता है सो प्राणियोंके प्रत्यक्ष है जो कमाणेवाला होय वोही वेमार होजाय तो उस घरकी क्या दशा होती है और जो नित्त कमावे नित्त घरखरच चलावे उसके वेमार पडणेपर क्या दशा होती है शिरपर करजाभी जिनोंकों नहीं मिले उनोंकी वेमारी पर क्या दशा होती है कलियुगमें वैद्य विद्याभी एक दुकानदारीका रुजगार वन गया है क्या वैद्य क्या डाकटर गरीव मोहताजोंसेंभी विगर पैसे वात नहीं करते जो हाथमें हाथ मिलावे उनकी दाद फरियाद सुणते हैं भाग्यवान तो अपने ख्यालमें मस्त जो धर्मा

दा सफा खाना सरकारने वणवाया है वो असलमें वास्ते मोहताजोंके है जीमे रहमलाकर गरीवोंका इलाज भाग्यवान के मुजव करणा ये वैद्य डाक्टरोंका फरज है हवा पाणी वनस्पती ये तीनों कुदरती दवा पृथ्वीपर स्वभाव जन्य हाजर है परम कृपालु परमेश्वर ऋषभदेवने इनोंका शुभयोग और इनोंसे होता अशुभयोगका ज्ञान तथा न्याय अपणे मुखद्वारा आत्रेय पुत्र आदि प्रजाकूं उपदेश देकर आरोग्यता सीखाई इन तीनोंका सुखदाई योग जाणना दुसरेकूं वताणा इसमें क्या खरच लगता है जिस दवा वनाते खरच लगता है वो तो अपणे शक्ति अनुसार देणा नुकसा लिखणेमें हरज करणा नहीं भाग्यवानोंकों चहिये सो पूर्ण वैद्योंकों द्रव्यकी मदत देकर गरिवोंकों दवा दिलाणा सरकार अंग्रेजभी दोदानोंकोंही परसन किया है विद्या दान और औषधी दान सच है रोग संयुक्त अगर राजाभी है तो दुखी है निरोगी करसाण अपणी झूंपडीकोंही राज्यभुवन मानता है इस कलियुगमें अणपढभी वैद्यवणे फिरकर अपणी आजिवका चलाते हैं क्योंके लोक सव रोगग्रस्त भयेवाद दोडादोडी करते हैं लेकिन् किस तरे वर्त्तणेसें वेमारी आवेही नहीं ये वात थोडेही लोक जाणतेहैं ये अज्ञान दुखकी जड है इस अज्ञानके वस अपणी और पराइ सवके शरीरकी खरावी प्राणी करते हैं तनदुरस्तीके साधन जितनेअदमीके स्वाधीन है उसके पालणेका यत्न जरूरसें करणा आते रोगकों वंध कर देणा लेकिन् तनदुरस्तीके सर्व उपाय अदमीके हाथ नहीं है कितनेक तो दैवाधीन है, यानेकर्मस्वभाव वस है कितनेक राज्याधीन है कितनेक नियम लोक समुदायाधीन है कितनेक नियम प्रत्येक अदमीओंके स्वाधीन है रुतुओंका एकदम फेरफार होणा हैजा मरी विस्फोटक (प्लेग) यह तो दैवाधीन समुदाई कर्मके आधीन है शहर सफाई खातेके अमलदारोकी वे दरकारी होकर रोगगींदकीसें होता है इत्यादिकेइ वातें राज्याधीन है लोकरूढी वचपणेमें विवाह जीमणवार वगेरे कुचालोंसें जो जो रोग पैदा होते हैं ये वात जाति समाजके आधीन है और प्रत्येक अदमी खानपानादिकके अज्ञानसें अपणे शरीरमें रोग पैदा कर लेवे ये वात प्रत्येक अदमीके स्वाधीन है आदमी प्रत्येककों तनदुरस्तीके नियमोंका ज्ञान होय तव तो समाज और जाति सुधरे और समाजके मुख्य २ सहर सफाइ म्युनिसपलमें रहणेसें वोभी सुधारा होसके इस तरे कितनेक दरजेजो अदमीके वस नहीं वो वहोतोसें वण सके एसा है लेकिन् निकाचित कर्मवद्धआखरप्रवल है ॥ इस जाणकार मनुष्यके तनदुरस्तीके उपाय वरतणेसें अपणेकूं कुटंवकूं और विवेकी पडोसियोंकोभी तनदुरस्तीका फल लिमता है शरीर संरक्षणका ग्यान और उसका नियम पालना इत्यादि वाते वडी कोलेजमें सीखणेसेंही मिलता एसा एकांत पक्ष नहीं है घर अथवा कुटुंव येभी सांमान्य ज्ञान सिखाणेंकू अनुभविक पाठशाला है अगर पाठशाला कोलेजमें चतुराईका नियम सीखेवादभी घरकी पाठशालाका चलता अभ्यासकूं सीखणा और उस मुजव चल-

णेकी जरूरी है कडुंबेके मावाप घर पाठशालाके माष्टर है, अपणे कुलपरंपरासें चलता आया जो दयाधर्मका खानपान विचारसे बंधा हुआ आचारसें जिनोंके मावाप वरतते है बालक प्रायें वैसाही सीखता है जिसमें मावापोंकी अछी चाल चलण पुन्यवान सपूतही सीखता है सात विसनोंमेंका व्यसन दुराचार तो दुसरेकी देखादेख विगर कहे वहोत बुद्धिहीन सीख लेते है कारण इस मिथ्या मोहनीके संग जीवकूं अनादि कालका परिचय है और आगेभी उसको कष्ट आपदा भोगणे हैं फेर दुर्गतीमें तथा संसारमें रुलणा है तो वो आनुपूर्वी उस प्राणीकूं उस बुद्धिद्वारा उसी तरफ खेंचती हैं माता पिता गुरु वगेरे सीखाते तोभी नहीं सीखता है अछी आचरणकूं. बुरीमें झट चित्त देता है तो भी माता पिताकी चतुराईका असर केइकतो पूराही सीख लेते हैं केइयक आधा इत्यादि कर्माधीन तारतम्यता है और जिसके वडेरे कडुंबेके लोक स्नान दांतण नहीं करते कपडे मेले पहन ते पाणी विगर छाणे पीते नसां पीते है इत्यादि वहोत आदते वो बालकभी सीख लेते हैं वाजे पुन्यवान वीस कुटुंबे वालोंसेभी वढकर अछी क्रिया नियम सीख लेते हैं और द्रव्यवान विनयवान दातार निकल आते है उसपर ऐसा दृष्टांत देते है पिता अंधा, मूरख, काणा, निर्धन, होय तो क्या. पुत्रकोंभी एसा होणा, क्या द्रव्य नहिं कमाणा, वस इसमेंभी स्याद्वाद है तोभी उद्यम तो अछाही करणा, और सिखाणा, शरीर सबकों प्यारा है वहोत लोकतो अज्ञान याने पथ्या पथ्य नहीं जाणते वेमार होते हैं. जाणके वेमार थोडे होते हैं, वेदनी कर्म अशाता जब उदयमें आणा होता है तब जाणता बूझताभी कुपथ्य आचरता है, यह तो जीव और कर्मका झगडा है, ज्ञानसें चलणेमें जीव वलवान, अज्ञानसें चलणेमें कर्म वलवान, हम तो ज्ञानसेंही सिद्धि मानतेहैं, इस वास्ते हमारा कहणा सर्वज्ञकी आज्ञानुसार यही है पहले तो सदाचरणाअसदाचरणा सुरादाइयोगसो पथ्य, दुरुदाई योग सो कुपथ्य, इसकूं अछी तरे समझलो, यह तो ज्ञान, फेर उस मुजब चलोये क्रिया, ज्ञान क्रियासें मोक्ष है, यह वात संसार पक्ष और मुक्ति पक्ष दोनों तरफ समझणा, जिस पुरुषने अपणी आत्माका भला चाहा है, उसने सब युगका भला चाहा, जिसने अपणे शरीर संरक्षणका नियम पाला वो दुसरेकूं नियम पलाया जैसा है. कारण मात पिताके रस्तेप्रावे पुत्र चलते है.

किरण पहली १

हवा तथा पाणी

हवा तथा पाणी और खुराक ये जीवनके मुख्य तीन पदार्थ है, खुराकविना तो आदमी केयक दिन निकाल सकते हैं, पाणीविगर कितनेकघंटे निकाल सकते हैं, लेकिन् हवाविगर थोडी देरभी जीना [illegible] है, इस हिसाबसें खूब मालूम पडता हवा

दा सफा खाना सरकारने बणवाया है वो असलमें वास्ते मोहताजोंके है जीमे रहमलाकर गरीबोंका इलाज भाग्यवान के मुजब करणा ये वैद्य डाकटरोंका फरज है हवा पाणी वनस्पती ये तीनों कुदरती दवा पृथ्वीपर स्वभाव जन्य हाजर है परम कृपालु परमेश्वर ऋषभदेवने इनोंका शुभयोग और इनोंसे होता अशुभयोगका ज्ञान तथा न्याय अपणे मुखद्वारा आत्रेय पुत्र आदि प्रजाकूं उपदेश देकर आरोग्यता सीखाई इन तीनोंका सुख-दाई योग जाणना दुसरेकूं बताणा इसमें क्या खरच लगता है जिस दवा बनाते खरच लगता है वो तो अपणे शक्ति अनुसार देणा नुकसा लिखणेमें हरज करणा नहीं भाग्यवा नोंकों चहिये सो पूर्ण वैद्योंकों द्रव्यकी मदत देकर गरिबोंकों दवा दिलाणा सरकार अंग्रेजभी दोदानोंकोंही परसन किया है विद्या दान और औषधी दान सच है रोग संयुक्त अगर राजाभी है तो दुखी है निरोगी करसाण अपणी झूंपडीकोंही राज्यभुवन मानता है इस कलियुगमें अणपढभी वैद्यवणे फिरकर अपणी आजिवका चलाते हैं क्योंके लोक सब रोगग्रस्त भयेवाद दोडादोडी करते हैं लेकिन् किस तरे वर्त्तणेसें बेमारी आवेही नहीं ये वात थोडेही लोक जाणतेहैं ये अज्ञान दुखकी जड है इस अज्ञानके वस अपणी और पराइ सबके शरीरकी खरावी प्राणी करते हैं तनदुरस्तीके साधन जितनेअदमीके स्वाधीन है उसके पालणेका यत्न जरूरसें करणा आते रोगकों बंध कर देणा लेकिन् तन-दुरस्तीके सर्व उपाय अदमीके हाथ नहीं है कितनेक तो दैवाधीन है, यानेकर्मस्वभाव वस है कितनेक राज्याधीन है कितनेक नियम लोक समुदायाधीन है कितनेक नियम प्रत्येक अदमीओंके स्वाधीन है रुतुओंका एकदम फेरफार होणा हैजा मरी विस्फोटक (प्लेग) यह तो दैवाधीन समुदाई कर्मके आधीन है शहर सफाई खातेके अमलदारोकी वे दरकारी होकर रोगगींदकीसें होता है इत्यादिकेइ वातें राज्याधीन है लोकरूढी बचपणेमें विवाह जीमणवार वगेरे कुचालोंसें जो जो रोग पैदा होते हैं ये वात जाति समाजके आधीन है और प्रत्येक अदमी खानपानादिकके अज्ञानसें अपणे शरीरमें रोग पैदा कर लेवे ये वात प्रत्येक अदमीके स्वाधीन है आदमी प्रत्येककों तनदुरस्तीके नियमोंका ज्ञान होय तब तो समाज और जाति सुधरे और समाजके मुख्य २ सहर सफाइ म्युनिसप-लमें रहणेसें वोभी सुधारा होसके इस तरे कितनेक दरजेजो अदमीके वस नहीं वो वहोतोसें वण सके एसा है लेकिन् निकाचित कर्मवद्धआखरप्रवल है ॥ इस जाणकार मनुष्यके तनदुरस्तीके उपाय वरतणेसें अपणेकूं कुटंवकूं और विवेकी पडोसियोंकोभी त-नदुरस्तीका फल लिमता है शरीर संरक्षणका ग्यान और उसका नियम पालना इत्यादि वाते वडी कोलेजमें सीखणेसेंही मिलता एसा एकांत पक्ष नहीं है घर अथवा कुटुंव येभी सांमान्य ज्ञान सिखाणेंकू अनुभविक पाठशाला है अगर पाठशाला कोलेजमें चतुराईका नियम सीखेवादभी घरकी पाठशालाका चलता अभ्यासकूं सीखणा और उस मुजब चल-

णेकी जरूरी है कडुंबेके मावाप घर पाठशालाके माष्टर है, अपणे कुलपरंपरासें चलता आया जो दयाधर्मका खानपान विचारसे बंधा हुआ आचारसें जिनोंके मावाप वरतते है बालक प्रायें वैसाही सीखता है जिसमें मावापोंकी अछी चाल चलण पुन्यवान सपूतही सीखता है सात विसनोंमेंका व्यसन दुराचार तो दुसरेकी देखादेख विगर कहे वहोत बुद्धिहीन सीख लेते है कारण इस मिथ्या मोहनीके संग जीवकूं अनादि कालका परिचय है और आगेभी उसको कष्ट आपदा भोगणे हैं फेर दुर्गतीमें तथा संसारमें रुलणा है तो वो आनुपूर्वी उस प्राणीकूं उस बुद्धिद्वारा उसी तरफ खेंचती हैं माता पिता गुरु वगेरे सीखाते तोभी नहीं सीखता है अछी आचरणकूं. बुरीमें झट चित्त देता है तो भी माता पिताकी चतुराईका असर केइकतो पूराही सीख लेते हैं केइयक आधा इत्यादि कर्माधीन तारतम्यता है और जिसके बडेरे कडुंबेके लोक स्नान दांतण नहीं करते कपडे मेले पह न ते पाणी विगर छाणे पीते नसां पीते है इत्यादि वहोत आदते वो बालकभी सीख लेते हैं वाजे पुन्यवान वीस कुटुंबे वालोंसेभी बढकर अछी क्रिया नियम सीख लेते हैं और द्रव्यवान विनयवान दातार निकल आते है उसपर ऐसा दृष्टांत देते है पिता अंधा, मूरख, काणा, निर्धन, होय तो क्या. पुत्रकोंभी एसा होणा, क्या द्रव्य नहिं कमाणा, वस इसमेंभी स्याद्वाद है तोभी उद्यम तो अछाही करणा, ओर सिखाणा, शरीर सबकों प्यारा है वहोत लोकतो अज्ञान याने पथ्या पथ्य नहीं जाणते वेमार होते हैं. जाणके वैमार थोडे होते हैं, वेदनी कर्म अशाता जब उदयमें आणा होता है तब जाणता बूझताभी कुपथ्य आचरता है, यह तो जीव और कर्मका झगडा है, ज्ञानसें चलणेमें जीव बलवान, अज्ञानसें चलणेमें कर्म बलवान, हम तो ज्ञानसेंही सिद्धि मानतेहैं, इस वास्ते हमारा कहणा सर्वज्ञकी आज्ञानुसार यही है पहले तो सदाचरणाअसदाचरणा सुखदाइयोगसो पथ्य, दुखदाई योग सो कुपथ्य, इसकूं अछी तरे समझलो, यह तो ज्ञान, फेर उस मुजब चलोगे क्रिया, ज्ञान क्रियासें मोक्ष है, यह बात ससार पक्ष और मुक्ति पक्ष दोनों तरफ समझणा, जिस पुरुषने अपणी आत्माका भला चाहा है, उसने सब युगका भला चाहा, जिसने अपणे शरीर संरक्षणका नियम पाला वो दुसरेकुं नियम पलाया जैसा है, कारण मात पिताके रस्तेप्राये पुत्र चलते है.

किरण पहली १

हवा तथा पाणी

हवा तथा पाणी और खुराक ये जीवनके मुख्य तीन पदार्थ है, खुराकविना तो अदभी कैयेक दिन निकाल सकते हैं, पाणीविगर कितनेकपटे निकाल सकते हैं, लेकिन् हवाविगर थोडी देरभी जीणा मुसकिल है, इस हिसाबसे खूब मालूम भयाके हवा

ये सबसे ज्यादे उपयोगी चीज है, दुसरे दरजे जल है, तीसरे दरजे खुराक है, तोभी एक चीज इनोंमेसें हाजर नहीं होय तो दुसरे पदार्थ एक दुसरेका काम नहीं दे सकता है, फकत हवासेया फकूत पाणीसे याफकूत खुराकसें, अथवा इनोंमेंसें दो चीजोंसेंभी जिंदगानी नहीं रहसकतीहे, येतीनोसें जिंदगानी चलती है, और वखतपर मौतकी नीसा णीभी इन तीनोंसें वण जाती है जो पदार्थ शरीरकूं उपयोगी है वोही पदार्थ विगडे भये होय तो, अथवा चहिये जिस उन मानसें कम या वैसी होय तो, अथवा हरेकके मिजाजतासीरकूं नहीं माफगत होय तो शरीरकूं नुकशान पंहुचा देती है इन सब वातोंका ज्ञान शरीर संरक्षणमें आ जाता है.

हवा (अएर)

जगतमे सर्व जीव आसपासकी हवा लेते हैं वो हवा जब वाहर निकलके पीछी नहीं फिरती वस वो अंतक्रिया है जीवतव्यका रक्षण मुख्य हवा है, हवा अपणे नजरसें नहीं देख सकते हैं जब वो स्थिर हो जाती है तो उसका स्पर्शभी मालम नहीं देता हवा चलती है तब वो पवन कहलाती है जो जो काम करती है सो नेत्रोसें जगत देखता है उसका ज्ञानस्पर्शसे जाहिरहै समस्त जगत् पवन महासागरसें ढका भयाहै हवारूपी महासागर कमसें कम सो मील उंडा याने गहिरा है ये कथन डाकतर अर्वाचीन विद्वानोंका है प्राचीन आचार्य तो चवदे राज लोकके आस पास घनोदधी घनवात मानते है अर्थात् हवा और पाणीकेही आधार ये चवदे राजलोक है लेकिन् एसा तो है जैसें २ ऊपर चढणेमें आवे तैसें २ हवा जादे पतली मालम देती है.

साफ हवाके तत्व

लोक मनमें यूं धारते होंगें की हवा स्यात् एकही पदार्थकी वणी भई है लेकिन् विद्वानोका निश्चयकीया भया है हवामें मुख्य चार वस्तू हैं वो वहोत चतुराई और आश्चर्यके साथ एकठी मिली है प्राण वायु (आ क्सि जन) नाइट्रो जन (शुद्ध हवा) कार-वानिक एसिड ग्यास) ये चावलोकेकोयलेंके संग प्राण वायु जब मिलती है तब ए वणती है। और पाणीके सुक्ष्म परमाणु (वराल) ऐसी च्यार वस्तु हवाके संग मिली भई है अपणे आस पास तीन तरेकी वस्तुओं है कितनीक तो पत्थर लकड जैसी कठन कितनीक पाणी और दूध जैसी पतली प्रवाही वाकी कितनी एक तो हवा जैसी वायु रूपसें दिखती है जो जलके सुक्ष्म परमाणुओंसें (अर्थात् वरालोंसें) हवा वणी भई है वो तो जुदी होकर उसका माप हो सकता है उसमेंसें एक प्राण वायु (जो आक्सिजन) कहलाती है प्राणका आधारभी मुख्यपणे उसी वायुसें हैं प्राण वायु विगर चराकभी जलती नहीं फेर ऐसाभी हें जो सब हवा प्राण वायुही होती तो जगतमें जीव किसी तरे जीते नहीं फिर सकते तुरतही मर जाते कारण जीवोंकों जितनी चहीये उससें जादे सकूत होजाती इस

वास्ते प्राणवायूके संग दुसरी हवा कुदरती मिली भई है वो हवा प्राणके आधारभूत नहीं है और उस हवामे जलती चराक रखणेसें बुझ जाती है, श्वास लेणेमें और चीजोंके जलाती वखत उनमान माफक ये दो हवा मिली भई काम देती है अदमीके हाथमें एक अंगूठा और च्यार अंगुलियां है उसकूं याद करणेसें तुमकों याद आवेगा की हवामें एक भाग प्राणवायूका है च्यार भाग खाली हवा याने (नाईट्रोजनका है) और हवा इन दोनोंसें मिली भई है, दुसरे दो हवाके भाग इनोंमें मिले भये है वो वहोत थोडे हैं तोभी वो भाग वहोत दोनुं उपयोगी हैं कोयला क्या चीज है सो तो अपणे जाणतेहैं जंगल जलके जमीनमें दट जाता है उसके काले पत्थर जैसें जमीनमेसें निकलते हैं उसकूं कोयला कहते हैं जो रेलके इंजनमें जलाये जाते है चावलोंमेसें एक तरेके कोयले हो शकते है ये चावलोके कोयले (कारवान) कहलाते है अंग्रेजीमें प्राणवायु और कोयलोंके मिलणेसें एक तरेकी हवा वणती है उसकूं कारवोनिक एसिड ग्यास अंग्रेजीमें कहते हैं ये हवामें तीसरी वस्तु है ये हवा वहोत भारी वजनदार है सो कोइ २ वखत गहरा उंडा खालीकूं एके तले एकठी होके रहती है भुंयरेमें तथा वहुत दिनोंके वंध मकानमेंभी रहती है एसी हवामें रखी भई सिलगती वत्ती वुझ जाती है जो अदमी उस हवामें दम लेता है वो एकदम मर जाता है लेकिन् ये हवाभी वनस्पतीकूं पोषण करती है इस हवा विगर वनस्पती ऊग सकती नहीं दिनकों उसका भाग दर खतकी जड वनस्पती चूस लेती है इस हवाके अढाइ हजार भागमें एक भाग इस जहरी हवाका है इतनी थोडी होणेसें वो हवा अपणेकूं कुछ हरकत नहीं पोहचाती है लेकिन् जो हवामें उस हवाका भाग जराभी जादा होय तो लोक वैमार हो जाते हैं हवामें चोथा भाग पाणीके परमाणुओंका है याने- वराल है जो लोक थालीमें थोडा पाणी धर देवे तो वो धीमे २ उड जाता है अर्वाचीन विद्वान डाकटरोंका कहणा है, के सूर्यकी गरमी हमेसां पाणीकूं वरालरूपसें खेचती है सर्वज्ञके कहे सूत्रोंमें लिखा है के जल वायूके योगसें सुक्ष्म होकर परमाणू रूपसे आकाशमें मिल जाता है वोही पीछा हमेसा ओस हो हो कर आठोइ पहर झरता है, लेकिन एसा है, की दो घडी दिनवाकी रहणेसें जादा मालम देता है, दो घडी दिन चढे जहांतक, वादसूर्यकी किरणोकी उष्मा द्वारा सूक जाता है वोही वराल सुक्ष्म परमाणुओंके बादर पुद्गल वंधकर यानें वादल होकर या धूंअर होकर वरसता है जो हवामें पाणीके परमाणु नहीं होतेतो सूर्यके तापकी गरमीसें शरीर जल जाता, और झाड वनस्पती जल जाती लोक मर जाते. इस कारण जहां जलकी नदी दरियाव वनस्पती वहोत है उहां वरसाद भी प्राये वहोत होती है रेतीके मुलकमें कम इस उपरांत प्राणियोके पुन्य या पापकी कमा- वेशीसें कर्मादिक पांच समवायोके संयोगसे कभी तो रेतीली जमीनमेंभी वहोत वरसाद होती है और हमेसा जल और वनस्पती जादा उहां वरसात विलकुल नहीं वरसती

यहांभी स्याद्वाद है ॥ उनमान मुजब योग्य प्रमाणमें ये चारोंही मिली हवा है सो तो स्वछ है याने साफ है इस हवासे तनदुरस्ती रहती है.

॥ हवाकूं विगाडणेके कारण ॥

दुनियामें वहोत तरेके जहर हैं जिससें वहोत अदमी मरते हैं एक तरफ विचारके देखें तो खराव हवा वरावर कोइ भी जहर नहीं है अंग्रेजोंके इतिहास हिन्दमें आणेका पढा उसमें लिखा है कलकत्तेके केदखानेमें एक छोटी कोटडीमें १४६ गोरोंकों डाला गया उसके फकत दो छोटी वारियोंथी दरवजा वंध कर दिया था दुसरे दिन फजरमें दरवज्ञा खोला तव फकत २३ अदमी जीते मिले वाकी सव मर गयेथे उनोंकों किसने मारा खराव हवानें, कारण हवाका जहां थोडा आणा जाणा एसी छोटी कोटडीमें वहोत अदम्योंकों वंध कर देणेसें उनोंके श्वाससें कोटडीकी हवा विगड कर उन अदम्योंकी जान गई, इन लोकोंकी तरे एक रातमें इन विचारोंकी जेसें जान गई एसें तो विरली जगे मरते होंगे लेकिन इतना तो है ताजी हवा नहीं मिलणेसें वहोत अदमी सव जिंदगानी तक, नाताकत और वैमारतो रहेतेही हैं, हवा विगडणेके कारण नीचे मुजव १ श्वासके रस्ते निकलती अशुद्ध हवा ॥ अपने हमेसा श्वास लेते हैं लेकिन वाहरकी जो हवा श्वासके रस्ते अंदर लेते हैं उससे वाहर निकालते हैं सो हवा फकत जुदी है, शरीरकी सफाई और स्नान हे वोही शौच है इसीसें ही वैकुंठ मिलती है ऐसे माननेवाले और मुं धोणा हाथ पाव दम २ में धोणा लेकिन शरीरके अंदरकी मलीनताका । क्या हाल है उस वावतका विचार थोडोंकोहीं भया होगा श्वासोश्वाससें जो हवा अपने अंदर लेते हैं वो अपने शरीरके अंदरके भागकूं धोकर कुछ २ मलीनताकूं तो वाहिर ले जाती है इसी वास्ते योग विद्याके स्वरोदय ज्ञानके वेत्ता इस श्वासा द्वारा केइयक नेती धोती वस्ती करते है जिनोंकों पूरा ज्ञान नहीं भया है वो तो इस कर्त्तव्यसे श्वासद्वारा रोग मिटाते है और पूरे स्वरोदय ज्ञानवाले नवली रसकपालभाती आदि श्वासाके कर्त्तव्यसे निरारंभी होकर रोग मिटाते हैं मेसमेरेजम (देवाकर्षण) सें पराये रोग मिटाणे आदि सव योगविद्याकी कर्त्तव्यता श्वाससें अनेक चमत्कारोंका संवंध है ॥ श्वासके संग निकलती हवा अपने संग तीन चीजोंकों वाहिर ले जाती है १ कारवानिकऐसिडग्यास, २ हवामें मिलापाणी ३ गंदाकचरा, पहली चीज स्वच्छ हवामें वहोत थोडी होती है लेकिन जो हवा श्वासके संग वाहर निकलती है उसमें जहरी हवाका भाग सो गुणा विशेष प्रमाणमें होता है अपनेकूं वो दिखती नहीं है जैसे अंगारमेंसें धूंआ निकलता है तैसे वो वाहिर निकलती है एक सँकडी कोटडीमें चूला जलाया जावै जैसें वो धूंएसें भर जाती है इस तरे जो अदमी सांकडी कोटडीमें सूता है तो उसके मूंमेंसें जहरी हवा निकलकर अपने आसपासकी साफ हवाकूं भी विगाड देती है अगर उस कोटडीमें साफ ताजी हवाकूं आणे

जानेकूं खुलास जगे नहीं होय तो अपने मूंमेंसे नीकली भई जहरी हवा फेर अपनेही श्वासके रस्ते अंदर जानेसें मोतकी नीसानी आपहुंचती है लेकिन दरवजोंमेंसें, छप्परमेंसें वारीयोंमेंसें, कितनीक हवा वाहर निकल जाती है, और कितनी एक वाहरकी खुली हवा अंदर आती है इस वास्ते ही वास्तुक शास्त्रकार सोनेके मकानोंमें हवाके खुलासा वास्ते वारी जाली झरोखे वणाते हैं श्वासके संग दुसरी चीज वाहिर पाणी (भिजाणेकी)वस्तु निकलती है इस मूंकी हवामें पाणी है या नहीं अगर उसकी चोकस तपास करणी होय तो सिलट पाटीपर या राजस चकूपर श्वास डालो उसी वखत भीजके दव्वा पडेगा इससे समझा जाता है के श्वासके संग पाणी निकलता है, तीसरा पदार्थ गंदा कचरा निकलता है श्वासका पाणी साफ नहीं होता है वो वरतणके धोवण जैसा मैला और गंधा होता है उसमें सडा पदार्थ मिला भया होता है वो जो शरीरपर रहणे देनेमें आवे तो वैमारी निश्चे होती है श्वासके अंदरका मलीन पदार्थ जहरी हवा जितनी खरावी करती है हर-दम चुकाणी जो वस्त्रसे वांधके रखते है वो रसायणिक योगसें वहोत नुकसानकारक है मुंपर दाग मूंके वाल उड जाणा और जहरी हवा साफ निकलने नहीं पाती है इसीवास्ते जैनीयोंके आचारांग सूत्रमें लिखा है खासी करते डकार लेते छींक लेते वगासी लेते वखत साधू हाथ देकर वस्त्र देकर ये वेगोंकों छोडे कारण इस वेगोंके भये पीछे श्वासके खेंचणेका जोर रहता है उसमें जहरी जानवर या चहिये जिससे जादा हवा अंदर नहीं जा सके वाकी हरवखत श्वास लेते हाथ या वस्त्र देणा नहीं लिखा है देखो प्रत्यक्ष उ-दाहरण दुसरे अदमी मुं लगाकर पाणी पीणेमें वहोत अदमी गंदकी समझते हैं उससे दुसरेका जूठा पाणी नहीं पीते हैं ये वात वहोत अछी है लेकिन वो जूठा जल नहीं पीणा इसका असली मतलव क्या है सो वो लोक नहीं जाणते फेर सकडी कोटडीमें वहोत अदम्योंके एकठे होणेसें एक दुसरेके फेफसेमेंसें निकलती भई खराव हवा और गंदा पदार्थ वो लोक वेर २ श्वासके संग अंदर खेंचते हैं वो जूठा अन्न और पाणीसें सोगुणी खरावी ज्यादे करता है इसतरे गाय भेंस उंट वकरे कुत्ते वंगेरे जानवर भी अदम्योंकी तरे श्वासके संग जहरी हवा निकालते हैं वो भी हवाकूं विगाडते हैं २ मनु-ष्योंके देहोंमेंसें पसीना जो वाफ (वगल) निकलती है वो भी हवाकूं खराव करती है एक अदमीके वदनमेंसें २४ घंटेमें सगसरी ३० तोंस पसीना (वगल) वाहर निकलता है, ३ चीजोंके जलानेकी क्रियासें हवा विगडती है लोक इस वातकूं मुखके आगले पांधने जहां कुछ जलानेका काम होय उहांकी हवा केसें विगडती है प्राण वायु विगर नो जगार मिलेगी नहीं जो चराकके एक सेर्ले वरतनमें तुम सिलगाके रख दो तो थोडाइक वखत क्योंके उस वरतनका सब प्राण वायु नष्ट हो जाता है इस वास्ते मुखके आगले पांधे आदे चराकोसनी जाडा करनेमें आवे तो प्राण वायु तुरत उहांकी पूरी होकर आगो-

निक ऐसिडगेस (जहरी हवा) वढ जाती है और उस घरमें रहनेवालोंकों वैमार डालती है लेकिन् इस वातोंकी समझ हमारे आर्यावर्त्तमें नहीं होनेसे इस वर्त्तमानमें वेमारीका पक्का कारण नहीं पिछान सकते फैर वर्तमान चिकित्साकोंकी क्या तारीफ करी दोनूं ढूंगे एकोढाल जैगोपालसा जैगोपाल इतिश्री इसवास्ते चराक मैणवत्ती और सिगडी (अंगीटी) सें हवा विगडती है इसवास्ते वैमार अदमीके संकडे कोठेमें अणसमजू वैद्य और प्रजा इन २ वातोंकों करके हवाकूं वहोतही विगाड देतेहैं ४ ॥ दुरगंध हवा ॥ जेसें सडीचीजमेंसें उडती भई जहरीहवा वहोत खरावी करतीहै जिसवखत दरखत अथवा प्राणीनास पाताहै तव वो तुरतही सडणेलगताहै उस सडेमेसें वहोत नुकसानकारी हवा उडतीहै और उसका पुद्गल याने रजकण हवासें वहोत दूरतक फैलताहै इसवास्ते जैन सूत्रोंमें मुरदा जिसघरमें पडाहोय उसके संलग्न सोहाथतक सूतक मानाहै वीचमें रस्ता पडा होय तो नहीं मानते कारण हवासें दुरगंध के परमाणु उडके कोसो दूर चलेजाते है जो अपणीं आंख अपणे सूंघणेके नाक इंद्रीजेसी तीखी होतीतो सडते प्राणीमेंसें उडकर उंचेजाते और हवामें फेलाते असंख्य छोटे २ जंतु अपणे देखसकते मतलव एसी सडी हवामें होकर जातेभये अपणे नाकके पास जो दुरगंध आती भई माल मदेती है वो दुसरी कुछ नहीं है उस सडी वस्तुमेंसें उडते सूक्ष्मजंतू छोटे २ जीव है जो श्वासके रस्ते अपणे शरीरमें घुसजाते हैं एसा डाकदर लोक इस वखत कहतेहै जैनोके पन्नवणा सूत्रमें चौदे जो सडी जगे प्राणीके मुडदे वीर्य खून पित्त खंखार थूक मोरी मलमूत्र इत्यादि जगोंमें समुछिंम अंगुलके असंख्यातमेहिस्से जितना छोटा जिनोकों चर्मनेत्रवाले नहीं देखसके सर्वज्ञने केवल ज्ञानद्वारा देखा एसें असंक्षाजीव अंतर्मुहूर्त्त वाद पैदा होता है एसा लिखाहै ये वात अर्वाचीन डाकटर विद्वानोनें भी प्रत्यक्ष पणेक वूल कियाहै इसतरेही घरमेंसें साग तरकारीके छोंतूं तथा कचरांफूस आंगणमें अथवा घरके पास लोक फेंक देते हैं अथवा घर अंगण वगैरे नही झाडते इससें हवा विगडती है इसीवास्तें जैनसूत्रोंमें साधूओंको प्रतिलेखना प्रमार्जना काजानिकालणा दिनमें दो वखतका हुकम लिखाहे, चमारलोक कसाईलोक रंगरेजे एसे रुजगार वाले दुसरे भी लोक उनोके कामोंसें भी हवा विगडतीं हे एसी जगोसें नाक मूं वंधकरके निकलणा- विपाकसूत्रमें गौतमगणधर नै मृगालोढेकी दुरगंधी वावत नाकमूं मुखवस्त्रिका जो हाथ मेंथी उससें मृगाराणीके कहणे सेंढका एसा लिखाहै फेर मुंडदागाडणेकीजगे वालणेकी जगे अदम्योंकी वस्तीसें वहोत दूर रखणी चहिये गाडणेसें जलाणेमें हवा कम विगडती हे जिसमें भी जेसें जंवूद्वीप पन्नत्ती सूत्रमें रुषभ देव वगैरे वहोत साधूओंकों देवतोंने जलाया जिसमे वढिया चंदन कपूर आदिअनेक खसवोदार वस्तुओंसे अग्नि संस्कार किया मतलव सुगंधीचीजोंसें हवामें जहरका असर नहीं फैलता जमीनमेंसे वाफ अथवा

वराल निकलती है हवा उसमें थोडी दाखल होती है और ये जमीनके अंदरकी हवा ऊपरकी हवाके साथ मिलती है जिसमें भी जब जमीन भीगी भई होती है तबतो सडी वस्तु बहोत नुकशान करती है भाजीपाला सडा भया बहोतकरके बुखारके उपद्रवका कारण है मारवाडमें ये बात प्रत्यक्ष हमनें अनुभव करी है जब बहोत बरसात होकर ककडी मतीरे टींडसी वगेरेके वेलों आदि सडती है तब जाट वगेरे ग्रामीणोकों शीतज्वर ये चीजें सहरमें आके जब पडी २ सडती है तब हवामें जहर फैलकर सहरवालोकों शीतज्वर आदि रोग हवाके बिगाडसें होता है ५ घरके गलीचीमेंसें खराब हवा होजाती है घरके खालकुंडी मोरी वाडे अकूरडे और जाजरू ये गलीचीकी जगे है इसवास्ते इसे ससाफ रखवाणा जैनोके सूत्रोंमें इस २ जगोमें जीवोंकी उत्पत्ति और इन २ सें बचणा वोही दया है लेकिन् बडे सहरोंमें गृहस्थियोंकों साफरखाणेका उद्यमही बण आवे तो अछा है साधूओंको एसी वस्तीमें रहणाही क्यों ऊपरकी बाबते हवा बिगडणेके कारण साधू तथा गृहस्थियोंकों तदनमना है ६ कारखाने जैसें कोयलेकी खाण लोहेके कारखाणे ऊन तथा रेसम बणणेकी कलें मील तैसेंइ दुसरीभी धातू तथा रंग बणाणेके कारखाने तैसेंइ तेर २ की कारीगरी बणाणेके कारखाने हैं सो असलीमें हवाकू बिगाडनेके कारखानेही है इस कारखानोंमेंमें कोयले रूरग तैसें पत्थरकी कोरणी करणेवालोके पत्थरकी रांक और और २ धातुओंके महीन २ रजकण उडउडके काम करणेवालोंके शरीरमें घुसकर श्वास नलीके फेफसेके छातीके रोगोंकूं पैदा करते हैं ७ चिलम चुट्टा चिलमका और चुरटोंका पीणा ये जैसें पीणेवालोंकी छातीकूं बिगाडती है तैसें बाहरकी हवाकूंभी बिगाडती है ये व्यसन दक्षण गुजरात मारवाडमें बहोत चल रहा है बीडियों और चिलमोके पीनेसे हवा निर्ये बिगडती है ऐसें हवा बिगडणेके बहोत कारण है इन सब बातोंमें बचणा अदभीके स्वाधीनताईकी बात है कर्मोकी विचित्रतामें जो बुद्धि मनुष्योंने पाई है उसका अछा उपयोग नहीं करते पशुओंकी तरे फक्त ऐसा घमंड रखते है जो कर्मोमें लिखा है सो होगा ऐसे एकांतपक्षी लेकिन् ऐसा नहीं विचारते वो तुमारे कर्मोमें आगे बिगाड होणेवालेही तुमारी समझमे सदुपयोगकी बुद्धिको फेर दी है स्याद्वादमत श्रीजिनवरही नहि कहिये एकांत ॥ उन कुकर्मोका फल ऐसें बेसूझोंको मिले उसमें नवाई क्या ऐसे ये परवारहणेसें कष्टफल भोगते २ अमूल्य मनुष्य जन्म हार आप धर्म वगेरे सेगोंमें गमाके कष्ट भोगते २ आधी उमरमें जाते है गांजा तमाकू पीनेवाले हु हमेंसें प्रत्यक्ष दुरदाममें मरते देखे है इस संसारमें आके बिचा नहीं पढी धन नहीं कमाया देश जाति कुटुंबका सुधारा नहीं किया और न परभवका साधनरूप ज्ञानयुक्त व्रत नियमभी नहीं पाल जब अदभ्योंने मनुष्यजन्म पशुओंकी तरे पाकर पूर्वोक्त दोष लगे.

स्वभाव कुदरतसें हवा साफ.

देखो पांचो समवायोंके योगसें प्रथम तो हवा बिगडतीकुं बंध करणेमें मनुष्योंका उद्यम है तैसे कालादिक चारो समवाय मिलके हवाकूं साफ करणेकाभी साधन पूरावना है वो जो अगर नही होता तो सृष्टीमे उत्पन्न होणा रिथती रहणाभी नहीं होता ये साधन जैसे इनही समवायोंसें बिगडके प्राणियोका प्रलय करता है तैसेंही येही पांचों समवाय मिलणेसें बिगडी हवाकूं साफभी करती है इन समवाय संबंधकूं चाहे ईश्वर मानलो हवामें चलन स्वभाव धर्म है उससें बिगडी हवाकूं पवनके झपट्टेसें खेचके ले जाती है दुष्ट परमाणु छिन्नभिन्न हो जाते हैं और ताजी हवा मिलणेसें जो नुकशान पहुंचणा था । इतना नुकशान नही पोंहचता है ऊपर लिखी जो हवा एक दुसरेके संग मिल जाती है जैसें थोडा दूध पाणीमें एकमेक हो जाताहै चूलेका धूआं थोडी देर पीछै दिखता नहीं ऐसें श्वास वगेरेसे सब बिगडी हवा साफ जादा हवामें मिलकर पतली हो जाती है इसवास्ते इजा कम करती है हवा कोइ वखत जादा कोइ वखत कम चलती है क्योंके हवामें वैक्रिय शरीर रचणेका स्वभाव है. दृष्टांत जैसें कृष्ण एक थे लेकिन् सब राणियोंके महलमें नारदजीनें कृष्णकूं देखा वैक्रियसे कोइ इस बातकूं नहीं माने उनोने वैक्रिय शरीरका दृष्टांत इसमुजब जांणनां जैसें लिगेंद्री पडी दशामें दो अंगुल होती है जिसकी तेजी दशामें कितनी बढोतरी होती है इस मुजब वैक्रिय शरीर वायू करती है अथवा किरडा जैसे रंग बदलता है वैसा वैक्रिय शरीर शक्ति जाणनी खुसकर्ता ताजी हवा चलती है जिस्सें हवा साफ रहती है श्वास प्राणवायूकों अंदर लेती है और कारबोनिक एसिड गेसकूं बाहर निकालती है झाड वनस्पती इससें उलटीही चाल करती है वनस्पती दिनकूं कारबोनकूं अंदर चूसती है और प्राणवायूको बाहर निकालती है इससेंभी वायुके आवरणकी हवा अर्थात् दिनकूं दरखतोकी हवा साफ होती है और रातकूं वनस्पती प्राणवायूकों अंदर खेंचती है और कारबोनिक एसिड गेसकूं बाहर निकालती है. लेकिन् इसमेंभी इतना फरक है रातकूं जितनी प्राणवायूकूं वनस्पती खेंचती है जिससें दिनकूं प्राणवायूकों जादा निकालती है इसवास्तेही दरखतोंके नीचे रातकूं सोणेकी मनाइ विवेक विलाशग्रंथमें जिनदत्तसूरिजीने लिखा है इसतरे हवा एक दूसरेके संग मिलणेसें पवनसें और दरखतोंसें हवा साफ होती है वरसादभी हवाकू साफ करणेमें मदतगार है इसवास्ते इन सब क्रियाकूं बंध नहीं करणा साफ हवा बहोत अमोल वस्तु है उसके मिलनेका यत्न हमेसा करणा वस्तीमें दटी भई हवा है इस वास्ते हमेस खुली हवा खाणेकूं जाणा चाहिये इसमें शरीरकूं बहोत फायदा मिलता है फिरणेसें शरीरके अवयवोकूं कसरत मिलती है ताजी हवा कसरतसेंभी जादे फायदे बंद [illegible] जिनमें तो फिरण घिरणेसें ताजी हवा मिल जाती है लेकिन् रातकूं घरमें सोणेसें साफ

हवाका मिलणा इमारत बणाणेवाले चतुर कारीगर और वास्तुकशास्त्र पढें इजनेरोंके हाथ है आगेके कुंढोके बनाये मकान होय तो उसकूं सुधराणा चहिये ये सब काम धनवंत और जाणकार दिलदलेलोकाहै तोभी अपणी हैसियत मुजब तो जरूरही बणे जहांतक प्रयत्न करणा बाकी तो वो बात है मन चले लेकिन् टट्टू नहीं चले उद्यम करते सीधा और उलटा फल होय तो कर्मोंकी रचना प्रबल समझणी. मलीन कचरा और सडती चीजोमेंसे उडती गलीच हवासें प्राणी एकदम नहीं मरता है लेकिन् इस वजे बहोत दिनोंतक रहनेमें आवे तो मरण निश्चै होय क्योंके जैन सूत्रोमें उपक्रम लगके प्राणीकी आयु टूटती है जिसके मुख्य सो भेद है निश्चै मृत्यु एक है ऐसा लिखा है उसमेंके ऐसें २ कारण है लेकिन् वो अपने प्रत्यक्ष नहीं जाण सकते हैं बहोत अदमी तो रोगसें ही मरते हैं वो रोग काहेसें होता है अगर पूरा निदान किया जावे तो बहोतसे रोगोंका कारण खराब हवा ही निकलेगी खराब सक्थ जहर पेटमें जानेसें एकदम प्राणी मर जाता है लेकिन् ऐसा नहीं समझना के थोडा २ जहर अफीम वगेरे नुकशान नहीं करता मगर वो भी कोई वखत सखत् जहरका काम कर गुजरता है इस तरे हमेसों की थोडी २ खराब हवाका जहर शरीरमें बडे नुकशानका कारण बण जाता है फेर बेमार अदमीके आसपासकी हवा जलदी बिगडती है इस वास्ते बेमार अदमीके पास जादा जत्था बंध साफ हवा आणे देनी जैसें शरीरके बाहर ताजी हवा चहिये तैसे शरीरके अदर भी ताजी हवा लेनेकी जरूरी है जैसें बादलीका अथवा कपडेका टुकडा कवले याने नरम हाथसें पकडा भया होय तो बहोत पाणी चुसता है और उसकूं दाबके पकडा होय तो वो टुकडा कम पाणी चुसता है ये हाल अंदरके फेफसेका है जो फेफसा थोडा दबा भया होय तो उसमें जादा हवा प्रवेश करती है उससें खून अछी तरे साफ होता है इसवास्ते लिखते बांचते इत्यादि हजारों काम करते फेफसे बहोत दबे ऐसा टेढा बांका होकर नहीं बैठणा क्योंके अंदर हवा जा नहीं सकती इत्यादि ॥

॥ अदमी प्रति हवाकी जरूरी ॥

हरेक अदमी २४ घंटेमें सरासरी ४०० घन फीट हवा श्वासोश्वासमें लेता है शरीरके अंदर इसका हिसाब ॥ सात फीट लंबा सात फीट चोडा सात फीट उंचा एसी एक कोटडीमें जितनी हवा अटे इतनी हवा एक अदमी हमेसां फेफसेमें लेता है श्वासोश्वासके लेती भई हवामें कारबोनिक एसिडगेसका नुकशान करनेवाला पदार्थ हजार भाग साफ हवामें ४ सें १० भाग जितनी है लेकिन् जो हवा शरीरमेंसें बाहिर निकलती है उसके हजार भागमें कारबोनिक एसिडगेसका ४० भाग है अर्थात् अढाई हजार भागमें सो गुणा है इससे सिद्ध भयाके अपने चोतरफकी हवा अपने ही श्वाससें बिगडती है एक तरफ तो जहरी हवाकूं बनस्पती चुस लेती है दुसरी तरफसें वातावरणकी ताजी हवा

उस हवाकूं खेंचके ले जाती है लेकिन् मकानमें हवाके आणे जानेका रस्ता नहीं होय तो कुदरती समवाय सुलटे सो उलटे हो जाते है एक अदमीकूं ७ सें १० फीट चोरस जगे अथवा खणकी जरूरी है जो इतनी जगेमें एकसें जादा अदमी बैठे या सोवे तो उस जगेकी हवा जरूर ही बिगडे हवाके निकास पेसारपर जगेकी विस्तारका आधार है हवा जो जादा खुलास आती होय तो जादे अदमी भी थोडी जगेमें रह सकते हैं ऐसा नहीं होय तो बडी जगेमें भी थोडे अदम्योंकों सुखदाई हवा नहीं मिल सकती जो मकान बहोत घरोंके बीचमें आया भया होय तो उसमें उजाला या हवाके वास्ते छपरेमें भी हवाका निकास पैसार रखवाणेकी जरूरी है अदम्योंके मूंमेंसें खराब गंध आती है सो अंदरसें निकलती खराब गंधकी वो है इससें हवाका बिगाड और बहोत अदम्योंके एकठे होनेसें जो अदमीका जी घभराता है तब खुली हवामें जानेसें जीवकूं आराम मिलता है ये बातसें अदमी अनुभव कर सकता है के घरकी हवा बिगडी भई है या अछी है बाहरसें आये अदमीकूं खराब गंध आवै या जी घभरावे तो समझ लेना इस मकानमें हवा अछी नहीं है शुद्ध वातावरणकी हवाके हजार भागमें १० भाग कारबोनिक एसिडगेसका है अगर इस प्रमाणसें बढकर १० भाग हो जाय तो भी बैमारी नहीं होती इस हिसाबसें एक अथवा इससें जादा बढ जाय तो ऐसें हवावाले मकानमें रहनेसें बहोत नुकशान होता है ये परिक्षा हवाकी दुरगंधीके फेरफारसें मालुम हो सकती है ॥

॥ उदक, अप्प, जल । वाटर ॥

जिंदगीकूं मदतगार दूसरी जरूरीकी वस्तु जल है. पाणी प्रवाहीरूपसें ही काम देती है इतनाहीं नहीं खानपानकी दुसरी चीजोंमें भी पाणीका अंश रहा भया है छोटे बालकोंका इकेले दूधसें पोषण होता है उसमें भी जादे हिस्सा जलका है इस वास्ते उसकूं जादे पाणीकी गरज नहीं होती अपणे शरीरमें रस रक्त मांस वगेरे धातुओंमें भी जलका मुख्य भाग है मनुष्यका शरीर सरासरी वजन ७५ सेर गिणें तो उसमें ५६ सेर आसरे पाणी यानें पतला प्रवाही पदार्थ आया भया है जिस अनाज वनस्पतीसें अपणा शरीर पोषीजता है वो सब पाणीसें ही तइयार होती है मलीनता ये बहोत रोगोंका कारण है सो भी पाणीसें ही धुपके साफ होती है अगर जो जरादेर प्यास लगे बाद जल नहीं मिले तो प्राण तडफडणे लग जाते हैं अर्थात् प्राण भी निकल जाता है पाणी बिगर प्राण केसें जाता है उसकूं जाणनेकी समझ इस तरे है शरीरके सब अवयवोंका पोषण प्रवाही रससे होता है जैसें दरखतकी जडमें डाला भया जल वो रसरूप पेडसें बडी डालोंमें बडे डालोंसें छोटी डालियोंमें इस क्रमसें सब अंगोपांगमें पोंहचके तेजी और हरा पणा रखता है तैसें शरीरमें भी पीया भया जल खुराककूं रस रूप बणाकर शरीरके सब जगे पोंहचाता है जो जल कम मिले तो रस और खून जाडा होणा सरू होता है

आखर जाडा होते २ गति बंध होकर मृत्यु होती है खूनके फिरणेकी कितनीक नलियां बाल जैसी महीन होतीहै तो उसमें जादा व जाडा खून महीन नलियोंमें चक्कर नहीं खा सकता. पाणी इतना गुणकारी है वो भी जादा पीणेमें आवे या मलीन बिगडा भया होय तो निश्चै प्राणोंका हरणेवाला होता है. खराब जलसें बडे २ नुकशान होता है इय बात दुनिया सब पूकारती है परदेशमें कोइ बेमार गिरजावे तो कहते है पाणी लग गया लेकिन् घर बैठे बेमार गलीच पाणीसें हो जाते हैं उसकी और मलीन जल कैसा होता क्या परीक्षा है क्या क्या बेमारी पैदा करता है उसके सुधारणेकी क्या तजवीज है इय बातोंकूं नहीं जाणकर रोगोंके मिटाणेका इलाज बैलोंसें कराते २ लाचार हो बैठ जाते हैं लेकिन् उसका मूल कारण समझे विगर इलाज होता नहीं इस तरेका अज्ञान फैल रहा है देखो इस दीपकका उजाला सो अंधकार मिटे ॥

॥ पाणीका नमुना ॥

जल खारा मीठा लूणीया हलका भारी मैला और साफ दुरगंध या गधरहित वगैरेका होना जमीनकी तासीरपर है अथवा आस पासकी चीजोंपर आधार है इसपरसे ये भी सिद्ध होता है आकाशके बदलोंमेंसें जो जल बरसता है वो सर्वोत्तम उसमें भी आसोजकातीका वो पीणे लायक होता है और जमीनपर गिरे पीछे उस जलमें अनेक पदार्थोंका मेल होनेसें बिगडता है. पृथ्वीपरका और आकाशका पाणी तो एकही है लेकिन् दुसरे पदार्थोंके संयोगसें गुणमें तफावत होता है हरसाल हर वखत बहोत जल अनेक स्थलोंमें बरसते रहता है और जमीनपर पडा भया जल असंख्य नदी नालोंद्वारा दरियावमें जाता है ऐसा है तो भी दरियाव भरके कभी उबलता याने छिलकता नहीं है उसका कारण ऐसा है के वो दरियावका पाणी सुक्ष्म परमाणु होकर पीछा याने बरालरूपमें आकाशमें जाता है सुक्ष्म हो गया जिस लब्जको बिगाड लोकोंनें सूक गया ऐसा बणा लिया है वो बराल बदलके धूंअर बरसात और बरफ ओले हो जाते हैं तलाव कूए बावडीका और गिराये जाय जो पाणी इत्यादि सबके परमाणु उडते हैं सो आकाशमें चढता हैं सखत गरमीकी मोसममें पाणीका सूक्ष्म परमाणू बहोत उंचा चढता है इस कारण ही उष्णकालमें नदी नाले जलाशय सूक जाते हैं बरसात किस २ तरे २ होता है इसका बयान श्रीभगवती सूत्रमें है इस जलकी उत्पत्ती स्थिती और नासका जो प्रकार है ऐसा सर्व जड चेतन पदार्थोंका घटत बढत जाणलेणा द्रव्य नित्य है गुण भी नित्य है पर्याय अनित्य है बरसातका कितना एक पाणी नदी और तलावोंमें जाता है कितना एक जल जमीनमें घुसकर जमीनकूं गीला करती है बलके उस जलमें कुए वगैरेमें सेजा जाकर उनोंमें भी जलकी बढोतरी होती है जहां ठंड बहोत है उहां बरसातका पाणी जमके बरफ हो जाता है गरमीमें गलकर बडी नदियोंके प्रवाहमें पडता है इस तरे बरसात

होणा वराल उंचा चढणा ये क्रम संसारमें अनादि अनंत है जीव विचार प्रकरणमें हवा-के अनेक भेद पाणीके अनेक भेद लिखा है उसमें पाणीके मुख्य दो भेद हैं १ अंतरिक्ष जल १ भूमी जल २ आकाशमेंसें जल जो वरसता है उसकूं अधर झेल लेना वो तो अंतरिक्ष जल है जमीनमें पडे पीछै नदी कूआ तलावसे जो मिले सो भूमी जल है आ-काशमें भी कितनेक मलीन पदार्थ फिरता है उसके संयोगसें आकाशके पाणीमें कुछ २ विकार होता है तो भी जमीनपर पडे जलसें अछा होता है आसोज कातीका जल पह-लेके वरसादसे जादा अच्छा होता है इसवास्ते उपाशकदशा सूत्रमें आनंद श्रावक वगेरोंनें आसोजकातीका अंतरीक्ष जल जन्मभर पीणारख्का है ऐसा लिखा है फेर मोसम विगरका वरसाभया पाणी जेसें पोसमाहका वरसाभया अंतरीक्ष जलभी नुकशान करताहै तेसें मोस-मकाभी वरसा नुकशानकारी है जेसें अश्लेषा नक्षत्रका वरसाभया जल वहोत हानी कर्ता है नालक वचन है वैदांघर वधावणा अश्लेषावूठां ॥ आकाशमेंसें जो गडे याने ओले गिरते है उसका जल तो अमृत जैसा मीठा और अच्छा है लेकिन् वो वंधाभया खाणा वंधीवर फकाखाणा जैनसूत्रोंमें अभक्ष लिखा है अभक्ष सूत्रकारोंने जो जो वस्तुकूं लिखीहै वो सव रोगकर्ता समज लेणा इनोंका गलाभया जल केइयक रोगोंमें अच्छा है वरसा-तकी धाराका जल जाडेकपडेकी झोली वांधके पात्रमे लिया जाय या साफ आगोरके टांकेका जल ये सव जल उपयोगी है भूमीजलका दो प्रकार है जांगल १ और आनूप २ जो मुल्क थोडे जलवाला थोडे वृक्षवाला पित्त तथा खूनके विगाडके उपद्रव वाला होय वो जांगल देश कहलाता है उसकाजलसो जांगल जल तेसें जो मुल्क वहोत जलवाला वहोत वृक्षोंवाला और वायु तथा कफके उपद्रववाला होय उसका जो जल सो आनूप जल कहलाता है जंगलका जल स्वादमें खारा भलभला पाचन करनेमें हलका पथ्य और वहोत विकारोंकूं मिटाता है अनूपका जल मीठा और भारी होणेसें सरदी तथा कफका विकार पैदा करता है इसके सिवाय साधारण देशका जल जिसमें नही जादा जल हमेसां पडा रहता होय और न वहोत दरखतोंका झुंड होय याने दोनुं सरासरी होय वो देश हेद्राबाद नागपुर अमरावती खानदेश आदि समझना इनोका जल और जुदे २ जलाश-योंके भेद गुण दोप नीचे मुजव ॥ नदीका जल पडे जलसे वहोत अछा वहोतसी वडी नदियोंका जल जमीनके तलेमुजव अछे और वुरे स्वाद मट्टीके तासीर मुजव होता है वरसातकी मोसममें नदीके जलमें धूल कचरा और गंदकी वहकर एकठी होती है उस वखत वो जल पीणेलायक नहीं होता दो च्यार दिन पडे रखनेसें साफ नींतरकर पीणेके लायक होताहै झाडीमें वहते नदी नाले देखनेमें तो साफ दिखते है और वो जल पीणेमें भी मीठा लगता है लेकिन् अनेक दरखतोंकी जडसें लगकर वहणेसें वो जल महा खराव होता है उस जलसें वुखारकी पैदास होती है और ऐसी हवामें रहनेसें भी वहोत

नुकशान होता है जैसे शिखरगिरी पार्श्वनाथ पहाड आबू गिरनार आदि पहाडोंके नदी
नालोंका जल पीनेवाले बुखार ताप तिल्ली वगैरे रोगोंसें दुखी रहते हैं यहीं हाल बगालेके
पास अडंग देश रायपुर वगैरे झाडीका जल समझना ऐसे जलकू तीन उकालेमें शेरका
तीन पाव रखकर गरम कर पीछे ठंडा कर जाडे वस्त्रसें छाण कर पीना केइ यक नदी
छोटी २ होती है जिसका जल धीमें २ चलता है फेर उस पर मनुष्योंकी और जानवरोंकी
गंदकी मैल चला आता है (जैसें) दक्षण हैद्राबादकी मूसा नदी एसोंका जल पीणे लायक
नहीं नल होनेके पहले कलकत्तेकी गंगा नदीका जल भी बहोत नुकशान करता था अद-
म्योंका स्नान मैल आदि गंधकमें, दुसरे बंगालेमें जलदागकी प्रथामें मुडदेकूं गगामें ही
डाल देते थे उस गधसे भी पाणी बहोत बिगड जाता था नलके पाणीमें कबजीयत
देखनेमें आती है मुंबई कलकत्ता वगैरे शहरोंमें, बहोतसे शहर तथा गामडोंमें पाणीकी
तंगचीके लिये कूवा वगैरे जलाशय नहीं होनेके सबब एसी गधे जलवाली नदियोंमें नि-
र्वाह करणा पडता है इस कारण सब वस्तीवालेके तन दुरस्तीमें बिगाड होता है खुली
साफ हवामें महनत मजुरी कर शरीरकूं अछी तरे कसरत देनेवाले गांमडोंके बाशिंदोकूं
बुखार सताता है उसका असल मतलब गंदा खराब पाणी ही समझना जिस जगे जल-
का एक ही स्थल तलाव वगैरे होता है तब लोक उसीमें स्नान करते हैं मैले कपडे धोते
है जानवर नाहते है और वो ही जल पीते है इसमें बहोत नुकशान होता है इसवास्ते
मोर जैनी श्रावक विमल मंत्री वस्तुपाल तेजपालादिकोंनें प्रजाहितार्थ हजारों कूवा
बावडी पुष्करणीयां करवाई ऐसा लिखा है जेसलमेरु पास लोद्रवकुंड रामदेवरे पास उ-
दयकुंड अजमेरु पास पुष्करकुंड ऐसे तीन असूट जल पुष्करणी राजा उदाई सींधु देश-
वालेके पाणीकी तंगी फोजमें होणेमें पद्मावती देवीने तीन जलाशय बणाये इत्यादि, राजा
अशोक चंद्रादिकोंनें दरखत और सडक जलके नहेर अपने चंपा वगैरे जलके तग स्थानमें
वणवाणा सरू कियाथा तवारीकोंमे साबित है, चाहिये सरकार राजा साहाराजा शेठ
साहुकार अथवा सामान्य प्रजा भी मिलके जलकी तंगी मिटानेका जलके सुपास्तेका
प्रयत्न करे अगर जो पाणी पीनेकी एक ही नदी होय तो उपरके तरफका जल पीनेके
लेणा वस्तीके निकामकी तरफ अर्थात् नीचेकी तरफ स्नान कपडा धोणा जानवरोंके
पाणी पिलाणा गजरदम जल साफ रहता है उस वखत जल भरणा लेणा लोकोंके सुपूर्द
वास्ते सरकारकूं चहिये जल स्थानपर पहरा बिठलाणा और दंडा धोणा होणे धोणा
मेर आदमीकी जलाई गई राख उन जलोंमें डालते हैं वेर कपडा जोरसें जो नदी
बहोत पाणीकी बहती है उसका मैल कचरा पडे पडे जाता है या किनारे
। है लेकिन जो नदी छोटी धीरे चलनेवाली तथा तलाव कुवा वगैरेमें जिनी
। नदीका पाणी जमता होता है इस पाणीके सुधारनेके तरीकेसें सुधार लिजाय तो

जलमे घुसके स्नान करणा दांतण करणा वस्त्र धोणा मुरदेकी राख तथा हाड (फूल) डालकर जलकूं खराब कर प्राणियोंकूं रोगी करणा धर्म कायदेमें सखत मनाई है अस्थि यामुरदेकी राखसें हवाभी खराब न होणे पावै इसवास्ते उनोंकों वीचमें देकर स्तूप करादेणा (थडाछतरी) की जैनियोंकी परंपरा है जबसे भरत चक्रीनें कैलास. पहाडपर सोभायोंपर स्तूप कराया तबसें, कूवेका जल पाणीका खारा मीठापणा जमीनके स्वाद तासीरपरहे गहरे कूवेका पाणी छीलर कूवेसे (नजीक पाणी वालेसे) अच्छा होता है जेसे वीकानेरमे साठ पुरुषके कूवेका निहायत ऊमदा जल है और साफ है कूवेके आसपासकी जमीन पोली होती है और उसमें कपडेके धोया मैलका पाणी स्नानका वरसादका गंधा पाणी भरता है तो वो जल विगडता है लेकिन साठ पुरुषके कूवेतक पोहचणा नहीं संभवता जिन कूओंपर दरखतोंके झुंडझूम रहें होय उसमें पत्ते गिरते रहते हैं सूरजकी गरमी पोंहच नहीं सकती ऐसे कूवेका जल अकसर विगड जाताहै इसतरे जो कूये नहीं वाये जाते याने हमेसा पाणी नहीं निकाले जाता ऐसेका जल खराब होता है और जो कूआ मजबूत चंधाभया होय न्हाणे धोणेके पाणीका निकास दूर जाता होय आसपास दरखत या गलीचपणा नही होय जिसकी गार वेरवेर निकाली जावै ऐसे कूवेका तथा वहोत गेहरे कूवेका खा रासकर रहित जमीनके कूवेका पाणी साफ और गुणकारी होता है लेकिन् आसपासकी जमीनसे आयाभया गंदा कचरा उस जलमें न आता होय टांका (कूंड) का पाणी, टांकेका पाणी वरसातके जलसे मिलता होता है लेकिन् छत आकासीका पाणी नलसे जो टांकेमें लिये जाता है उस छतपर धूल कचरा जांनवरोंकी वीट कूत्तेवीलीकी विष्टा वगैरे गलीच पदार्थोंसें पाणीमे मैल होकर विगाड होता है इस वातोंका ख्याल रखना दुरस्तीका जल टांकेका अछा है लेकिन ये जल हमेशा वंध रहणेसें विगडता है इस्वास्ते हमेसां पीणे लायक नहीं है टांकेका जल स्वादमे मीठा और थंडा होता है पचणेमें भारी है वहोतसे जलका फायदा कुफायदा नही समझणेवाले लोक वहोत वरसोंतक टांकेकू धोकर साफ नही करते पाणीकूं तंगीसे खरचते हैं पीछले चोमासेंके रहे जलमें दुसरा जल फेरले लेते हैं इस वातोंका खयाल रखणा एक वरसातसें छपरा छत मोरी वगेरे धुपके साफ भये वाद जल लेना (जीवाणी) जलके जीवोंकूं छाणके कूवेके वाहर कूंडी वगेरेमें डलवाणा आखिर यह दया पलणी मुसकिल है क्योंके कूंडीमें थोडा जल होय तो गरमीसें सूकके मरते है जादा होय तो जानवर पी जाते है वहोत दिन पडे रहे तो गंधकीके डरसे कूवेका मालक धोकर जमीनपर फेक देता है जीवाणी लेजाणेवाले रस्तेमें गिरा देते हैं एक जलके जीवको दुसरे कूवेके जलमें गेरणेसें दोनुं मर जाते हैं वस विचारके देखा तों आखर हिंसाका वदला देना होगा कोई उपाय संसारवासमें इसका नहीं है इसपर ये वात है दुहा गोतमका प्रश्न है वीर भगवा-

से, जीवे जीव आहार विना जीव जीवे नहीं भगवत कहो विचार दया धर्म किसविधपरै ?
उत्तर भगवानका (दुहा) जीवे जीव आहार जयणासें वर तो सदा गौतम सुनो विचार
टले जितनोही टालिये २ करुणावंतपणा है वो ही दया धर्मपणा है नलका पाणी, नदि
योंका या तलावोंमेंसें छणणेके वास्ते गहरे कूवेमे लिये जाता है उहांसें छाणकर
(फील्टर) होकर नलमें आता है साफ कीये जाता है नदीके जलसें ये अच्छा है
बादस्साही अमल राजोंकें अमलदारीमे नदीके इधर क्यारे वणाये जातेथे उसमेंसेजा
आकर जो जल जमा होताथा सो अछा होताथा घरोंमे नल किसीराज वियोनें लाख
वर्षमें तो लगाये नही आगेकी क्या खबर विना प्रमाण लिख नही सकते सहरोंके वाह्-
रतो दूर २ से जलकी नेहरे राजोनें बंधवाईथी यहतो इतिहास है और किसी राजवीने
लगाया होगा नल तो आपकेही घरमें लेकिन प्रजाके नही, आगे पाणीकूं दूर पोंहचाणेकूं
चमडेके बंधे पिचकारे वगैरे यंत्र तो प्रचलितथे नलके पाणीसें आदमी गोरा और वृथा पुष्ट
थोडे दिनमें दिखणे लगता है अंदर सत्व कम होता है लेकिन जिस २ जगेके जलकी
लागसे हजारो आलम मरतेथे वो तो सुधारा हो गया मुंबई कलकते वगेरे बडे सहरोंमें
नीचे गटरकी गंधी सरदीसें बुखार (मुंग) दुष्ट विस्फोटक रोग प्रजाकूं भारत वर्षमे
वहोत दिकूकर रख्खा है ये सर्व महिमा दुष्ट गंध गटर मोरियोकी हवा और तरीसें चल
रही है। सं। विक्रमके तेपनसें मुंबईसे सरूभया सात वर्ष भया अगर उधम आदि
पांचो समवाय सुलटे होकर वर्ते जरूर मिटेगा, जंगल खुसक मुलकमें ये रोग होणा
नहीं पांचो समवाय सीधे हैं जहांतक, तलावका, पाणी कितनेक तलाव तो तलसीके
जलका होता है जिसके नीचे या आसपास तलावके पहाडका धरणा होता है उनमेंभी आमपासके गंध
तो अखूट जल होता है कितनेक बरसाती जलका होता है उनमेंभी आमपासके गंध
कचरे वगेरे जलके पूरमें वहके आते है दोय च्यार दिनबादनीचे जमता है तब जल
साफ होता है लेकिन जिस तलावमें लोक नदीका हाल लिरा है वोभी नाहणा धोणा
वगेरे होता होय तो वो जल पीणेकूं नही लेणा तलावका पाणी मीठा भारी रुचिकर
विदोपहर और सरदी करता है लेकिन मैला जल वहोत बेमारियोंको पैदा करता है
पाणी विगडणेके कारण नदी तलाव का एक है नदीका जल वहता है तलावका थ
गया है इस्वास्ते नदीमें तलावके पाणीसें जादा विगाड होणा संभव है, इत्यादि पाणी
— उपयोग लिखते हैं, सो वापआजा राजा महा राजोंमेंभी दुरमाहे लेकिन
॥ वेभी यही बात है, देखने छतु तथा। सिंधि देशमें सरोवर तलावको
ज है गमत और सीपा कूपमें कूपका पाणीसे क्या पहाडके जलका पाणी
पोलनुमें आकाशमें निरता उतारणा जल अथवा कूपका जल है समुद्र कूपमें नदीका
जल अथवा जिस जलपर दिनकर तो सूर्यकी किरण पडती होय रात्रे चांदनी पोंचती

एसा जलपथ्य है ये जल अंतरीक्ष जल जेसागुणकारी है रसायण रूप है ताकतवर है पवित्र वडा हलका अमृत जैसा है एक प्राचीन आचार्यनें एसाभी लिखा है पोषमें सरोवरका माघमे तलावका फागुनमे कूएका चेत्रमें पहाडोके कुंडका वैशाखमे झरणेका जेठमे जमीनकूं चीरडाले एसे जोरसे वहते भये नालेका, या नदीका अशाढमे कूवेका श्रावणमे अंतरीक्षजल भादवेमेकूएका आसोजमे पहाडके कुंडोका काती मिगसरमे सवजलाशयका ज़ल पीणे लायक़ है लक्ष्मीवल्लभ जैन निघंटसे पूर्वोक्त विवरण लिखा है.

॥ खराव जलसे प्रगट वेमारी ॥

खराव जलसें अनेक रोग होते है उसमें मुख्य २ रोग लिखते है, कितनेक रोग जीवोंसे याने कृमीसें पैदा होते हैं लेकिन उन जीवोंके पैदासकी जगे असलमे खराव जल है, जमीनके संयोगसें पाणीमें खार मिलणेसें पाणीमें मिठास और पाचनशक्ति वढती है लेकिन जो खारका अंस जादा होता है तो येही जल कितनेक रोगोंका कारण वण जाता है जलमें वनस्पतीका सडना और मरे जानवरोके दुरगंधित परमाणु जव मिलता है तो वहोतही खरावी करता है वुखारठंढ देके (ज्वर) तेसें विषमज्वर तेसें मेलेरिया नाम हवासें पैदा होणेवाले तावका कारण खराव पाणी है पाणीकेभिगाणेसें हवा विगडती है हवा विगड़णेसें पाचनशक्ति मंद पडती है तव वुखार आता है जंगल देशका जल लगणेसें जो रोग होता है सो पाणी लगे कहलाता है, दस्त मरोडा ॥ २ ॥ ये दस्त मरोडेकी वेमारी खराव पाणीसें पैदा होती है क्यौंके ये रोग चोमासेमें जादा पैदा होता है मतलवकरसातके जलमें मैला कचरा वहकर आय मिलता है एसा जल पीणेसे अतिसारकी वेमारी पैदा होती है (३) कवजीयत । अजीर्ण भारीअन्न खराव जलसें अजीर्ण अथवा कवजियतका रोग होताहे (४) कृमि जंतु खराव पाणीसें शरीरके अंदर तेसें वाहर कृमियोंका उपद्रव होता है साफ पाणी चमडीमें पैदा होणेवाले कृमियोंकों मिटाता है गंधेजलसें पैदास होती है (नारू) नारूके दरदसें वहोत लोक कष्ट पाकर मरजातेहे ये नारू खराव जलके स्पर्शसें अथवा विगरछाणे या गंधेजलके पीणेसे होता है (६) चमडीका रोग दाद खाज गडगुमड वगेरे खराव जलसें होता है कृमिनाशक दवाओंसें ये रोग मिटता है इसरोगमें जीव खराव जलसें पैदा होता है ये अनुभव है (७) हैजा [कोलेरा] कितनेक आचार्य लिखते है विशूचिका रोग अजीर्णसें होता है और कितनेक कहते हैं पाणी तथा हवाके अंदरके जहरी जानवरोंसें होता है इसमें जादा फरक नहीं है कारण अजीर्णसे कृमि कृमीसें अजीर्ण होता है [८] पथरी [अस्मरी] जलके विकारसें पैदा होती है लोकीकका एसा कहणा है धूल कंकर खाणेसें पथरी वंध जाती है ये तदन झूठ है असलमें जादा खारवाला जल पीणेसे पथरी प्रायें होती है येवात माधवाचारीके भी देखणेमें नही आई दूसरे तो माधवकूं सर्वोपरी

निदान समझते हैं प्राचीन जैन शोमाचार्यने लिखी सो वात डाक्तर भी मांनते है इत्यादि प्रत्यक्ष अनुभविक पाणीके रोग मेनें लिखा है सो यथार्थ है नमाने सो पतवाण लेवे ॥

॥ जलकी परिक्षा साफ करणेकी विधि ॥

साफ जल रंग खसवो स्वाद रहित तथा निर्मल और पारदर्शक होता है याने आर पार साफ होता है सेवाल तथा वनस्पतीके योगसें जल हरा रंग पकडता है और प्राणियोंके शरीरका कोई भी द्रव्य जलमें मिला भया होता है तव जल पीलास पकडता है जलकी परिक्षा वहोत तरे हो सकती है जिसमें सहज परीक्षा इस तरेसें है साफ काचके सुपेद प्याले पारदर्शकमें जल भरके वो प्याला उजालेमें धरणेसें उसका निज रंग अथवा मैलापणा मालम हो सकता है पाणीमें दुरगंध होय वो पीणेसें यासूंघनेसें एकदम उसकी खवर पडणी मुसकिल है लेकिन उसकूं उकालकर उसकी खसवो सूंघी जावे तो उसके गंधकी मालम हो सकती है यह तो प्राचीन जैनीयोंकी चलती परीक्षा है डाक्टरी परीक्षा लिखते हैं पाणीकूं एक शीसीमें भरकर पीछे खूव हिलायकर वो पाणी सूंघणा जलमें पोटास डालणेसें जो वो (गंध) आवे तो समझना जल अछा नहीं है जलमें दो पदार्थोंका भेल है एक तरेका पदार्थ पिघलके पाणीके संग मिला भया होता है दुसरी तरेका पदार्थ पाणीसें अलग होजानेवाला लेकिन जलमें मिला भया होता है प्यालेमें जल भरके थोडी देर स्थिर रखनेसें जो नीचे वैठता है तो समझ लेणा इस जलमें दुसरी वस्तुका भेल है पाणीमें खार वगेरे पदार्थ कितनाक है वो जाननेके वास्ते थोडा जल तोलकर वरतणमें जलाणा पाणी सव जलेवाद तपेलीकेतले जो खार वगेरे पदार्थ रहे उसकूं तोलनेसें मालम होगा की इतने जलमें इतना खारका भाग है एक ग्यालन जलमें खार वगेरे पदार्थ १५ रत्ती होय उहांतक वो जल पीणे लायक है खार ज्यों कम होय सो जल अछा लेकिन खार विगरका अछा जल भी स्वाद नहीं देता खार मिला जल पीणेमें मीठा और पाचन शक्तिकूं मदत देता है खार जादा होय तो जल खारा लगता है और नुकशान भी करता है पाणीकूं साफ करने और अछा करनेका अनेक उपाय है सहज उपाय जैनोंकी प्रसिद्ध क्रिया है ॥ पाणीकूं शेरका तीन पाव उकालके मट्टीके वरतणमें ठारके पीणा ये जलकूं कल्पसूत्रमें शुद्ध लिखा है साफ है गुणकारी है और हलका है जलमें फिटकडी और निर्मली वांटके डालनेसें पाणीके मैलकूं तले विठलाती है जल छाणे विगर कभी पीणा नहीं नातणा जाडे मजबूत वस्त्रका होना, अथ डाक्तरी क्रिया॥ एक मटकीके नीचे महीन छेद करना उसमें आधेतक वेलू तथा कोयलेका चूका भरना उसपर दुसरा मटका जिसके तले छेदकर उसमें डोरा पोकर लटका देना उसमें जल भरणा तीसरा खाली मटका रेती कोयलेवालेके नीचे धरना उसमें टपक २ जो जल आवे वो पीणे लायक होता है स्टेसनोंपर ऐसा देखा है ॥

॥ पाणीका दवा मुजब वर्त्ताव ॥

जैसें खराब जल कितनीक बैमारियां पैदा करता है तैसें कितनेक रोगोंकूं मिटानेमें दवाका काम करता है जो जो बेमारी अशुद्ध जलसें पैदा होती है वो शुद्ध जलसे होती नहीं इलाजके तरीके गरम जल तथा ठंडा जल दोनुं काम देता है सो इस मुजब १ शीतोपचार ठंडे जलका गुण, रक्त स्तंभक दाह शामक और संकोचकारक होणेसें खून गिरतेकूं बंध करता है इसवास्ते इतने रोगोंकों फायदे बंद है १ खूनकागिरणा नकसीर वहती है तब तालवेपर ठंडा जल डालनेसें बंध होता है ऐसे बंध नहीं होय तो नाकमें छावके या पिचकारी मारणेसें उसी वखत खून बंध होता है जखमके खूनकूं ठंढे पाणीका पाटा एकदम बंध करता है हाथमें चकु वगेरे कोई हथियार लगा होय तो ठंडे जलका पाटा बांधणेका रिवाज है चोट वगेरे लगके खून नहीं निकला और लील जमणेका संभव है जलका भींगा वस्त्र बांधे रखनेसें तुरत खून विखरके दरद मिटता है तरवार वगेरेका जादा जखमपर हरदम गीला पाटा रखनेसें जलदी आराम होता है सुवावड कुसुवावड यानें अधूरा गिरणा जब खून गिरणासरू होता है तब गर्भाशयपर ठंड़ा पाणी डालनेसें अथवा उसमें वरफका टुकडा धरणेसें खून गिरता बंध होजाता है पेडू साथल याने जांघ उत्पत्ति अवयवपर ठंडा पाणीका भीगा वस्त्र धरनेसें फायदा होता है लेकिन गर्भपातके चिन्ह मालम पडते ही ये इलाज करना मासिक ऋतु धर्मका खून अगर जादा जाने लगे तब भी इसीतरे ठंडे पाणीके इलाजसें मिटता है मूर्छा मृगी हिस्टिरिया वगेरे तथा मेसमेरिजमसें वेसुद्धी वगेरे रोगादिकोंमें आंख तथा शिरपर ठंडा पाणी छांटणेसें जलदी जागृत अवस्था होती है, २ संकोचन ॥ ठंडा जल स्नायुओंकों संकुडाता है इस वास्ते आंडोमें सूजन हो जावे अथवा आंतरे उतरकर बहोत दरद करे तब वृषणपर ठंडे पाणीका भीगा वस्त्र धरणा अथवा वरफ धरणा जिस्सें आंतरे सकुडा कर चढ जाता है प्रदर और तोके धुपणी सुपेद पाणी गिरनेका रोग होता है जिस्सें सुपेद लाल तथा मिश्र रंगका खून गिरता है वो ठंडा पाणीके छांटनेसें या पिचकारीसें बंध हो जाता है इसतरे औरतोका शरीर नाताकत बालककी कांच निकलती है ये दोनू ठंडे पाणीकी धार देनेसें संकुडा कर अंदर चली जाती है शरीरका आवाज बैठते ऊठते औरतोके मूत्र मार्गमें अवाज भया करती है वो भी ठंडा पाणी उसपर छाटणेसें फायदा होता है पुरुषके वीर्य गिरणे अथवा स्वप्न दोष होणा तब रातकू सूती वखत पेडू तथा कमरपर जल छिडकणेसें वीर्यकी गरमी कम होती है वीर्यकूं वहनेवाली नसो मजवूत और संकुडाती है ऐसा होनेसे कितनेक दर जे फायदा पहुचता है ३ दाह शमन । ठंडा जल शरीरके अंदरकी और वाहरके दाहकी शांति कर्त्ता है आंखकी गरमी जैसें खूनसें आंख लाल हो गई होय तो मूमें ठंडा पाणी भर लेना ऊपरसें ठंडा पाणी छांटणा मिट जाती

है सखत ताप बुखार शिरपर ठंडा पाणीका वस्त्र धरणा या बरफ जिससें मगजमें बुखारकी गरमी नहीं चढसके क्योंके बुखारकी गरमी मगजपर चढनेसें तुरत प्राण निकल जाता है (उष्णोपचार) गरम इलाज,वादीपर कफके रोगोंमें गरम पाणी बहोत फायदे बंद है जैसें सेक बफारा नास पिचकारी कुरले जलमें बैठणा स्नान धोणा वगेरे शेक शरीरपर गांठ गड गूमड सोजा इसपर लूपरी(पोटिस) बांधनेकी रिवाज है लेकिन गरम जलका सेक पोटिस बांधनेसें जादा फायदे बंद है होतेभये दरदमें गरम जलका सेक दरदकूं दबा देता है और जोर करे पीछे पीडाकूं कमकर देता है और जलदी पकाता है पेटमें दरद गुरदेकावरम सोजा पांसली तथा छातीमें चमक शूल जम गया खून वगेरे दरदोमें गरम पाणीका सेक फायदा करता है गरम जलमें फुलालीनका कपडा या ऊनका गरम कपडा नीचोकर दरदकी जगोंपर वेर २ धरणेसें बाफका सेक लगता है अथवा अंगीठीपर जलकी तपेली रखकर ऊपर चालणी रखणी उसपर गरम कपडा धरकर ऊपर थाली टक देना इसतरे पाणीकी वराल कपडेमें आती है उस कपडेसें किया भया सेक बहोत फायदा करता है योनि तथा इंद्रीका पकणा आंटोकी सूजन ये भी गरम पाणीके शेकसें आराम होता है पेडूपर गरम जलके सेक करनेसे पैसावका खुलासा होता है (नास)गरम पाणीकी नास अथवा बफारेसें पसीना आकर शरीर हलका पडता है शरद गरमीका तप शरदी शिरका दरद मिट जाता है शिरके दरदमें गरम जलकी नास फायदा देती है सखत बंध कुष्ठके पुराणे दरदमें जब किसी भी दवामें दम नहीं आवे तो गरम पाणीकी पिचकारीसें तुरत आता है डाकदर गरम जलमें एरंडीका तेल भी मिलाते हैं (कुरले) गरम पाणीके करनेसें मूंके फाले मूं आजाणा दांतकी पीडा दांत निकलाये बाद जो तकलीफ हो जाती है सो सब मिट जाती है गरम जलमें बैठनेसे हिचकी धनुर्वात जो कषाणकी तरे जदमीकूं करदेती है सो, मूत्रकृछ वगेरे पथोतसे दरदोमें गरम जलमें सहमके ऐसेमें कमर बूड बिठाणा जिस नोरतका ऋतु धर्म अटके और दरदकरके आता होय उस नीको गोडेतक गरम जलमें खडी रखणी घंटे भर में आराम होता है अब हमने जो जो बेमारियां पसीने निकालके लोकोंकू आराम किये हैं गरम पाणीसे सो लिखते है, उपदंश(गरमी) लिंगेंद्रीपर गरम जलकी धारा देना वायके रोगोंमें पसीना गरम पाणीमें देना स्नान भी करवाना सन्निपात और आमके उदरमें पसीना निकालना जीर्णज्वरमें पसीना निकालना मृगाकमें गठिया होय जिसमें पसीना निकालना वायके अजीर्णमें पसीना निकालना खांसीमें हिचकीमें श्वासमें आमरोगमें कफके रोगमें सर्व वादीके रोगोमें उलटीमें स्नान करना उन्मादरोग पागल पनेमें गरम जलमें जलकी धारा देना भया घंटे भरतक स्नान करना उरू बंधने पसीना निकालना बद रोगमें पापोंमें दोषोंमें रक्त उनके कुरु जो ना डीनेनका जो

पदरोगमे विद्रधी अंदर पेटमे या वाहर पकनेवाली गांठमे मस्तक रोगमे कर्ण रोगमे नेत्र रोगमे नाकेरोगमे मुख रोगमे सूजनके रोगमे पथरीके रोगमे शूलके रोगमे पसीना गरम जलसे निकालना औरतके जापेके रोगमे नरम थोडा पसीना निकालना विष रोगमे जलकी धारा और स्नान कराना जिस २ रोगोमे वायूकी और कफकी प्रवलता है वो रोग ऊपर लिखे सो सव आराम होते है मैने अनुभव किया है सो ही लिखा है ये समझ रोगोकी जो निदान मैने आगे लिखा है उस प्रकार रोगोकी परिक्षा कर लेना अथ पसीना निकालनेकी विधि लिखते हैं, पहली तेल या घीमे सींधा निमक मिलाकर घंटे भर शरीर मसलाणा फेर एकांत कोठेमे हवा न आतीहोय जहां वैठ कंवल या रजाई जिस्से शरीर सव ढाककर संकडे मूंके घडेमे खूव उकाला भया जल झवोलके अंदर धरवा देना पसीना पूछके साफ करते जाणा जव वाफ वंध हो जाय तव कपडे पहन लेना पसीना सूके वाद फेर वाहर आणा पूर्वोक्त रोगी वहोत निर्वल होय तो पसीना थोडा देना या सर्वथा देना ही नहीं पित्तसे उठे रोगोमे पसीना देना नहीं इसीतरे वाय कफके सर्व रोगोमे शेरका तीन पाव रहा जल पथ्य है अति सारके रोगमे दशांस सोले शेरका शेर या सो शेरका शेर औटाया जल सो दवाकी एक दवा है जल उकालती वखत वाय हरण कर्त्ता कफ हरण कर्त्ता रोगोके अनुसार दवाये भी मिलाते हैं पसीने निकालनेवाले जलमे दवायोका असर वाफसे अंदर पोहचके गुण करता है ।

॥ किरण दूसरी २ खुराककी जरूरी ॥

अदमीका शरीर एक जीवित चलता सांचा है एनजिनका दृष्टांत शरीर ऊपर घटता है जिसतरे अंजन चल शके इसवास्ते वलीता हवा और पाणीकी जरूरत पडती है इसतरे शरीरके चलनेवास्ते खुराक पाणी और हवाकी जरूरत है इंजनकूं हांकनेवाला नोकर पगार वंध एनजीनीयर चाहिये तैसें अदमीके शरीरमें कर्म वद्ध स्वभाव शक्ति सिद्ध जीव इस शरीरका चलानेवाला है इसवास्ते वाहरकी गतीकी उसकूं जरूरत है नहीं विगडे कलोंकों कारीगर सुधारते है तैसें वैद्य डाकटर इस शरीर संचेके सुधारनेवाले है ये स्वाभाविक गती कायम रखनेकूं उसकूं खुराक हवा पाणीकी जरूरत पडती है शरीर उसके जन्मके संग ही ओछे अधिक प्रमाणमें कोईकूं कोइ तरें हमेस क्रिया करताही रहता है जैसें एनजीन उसकी क्रियामें धूआं और राख वगेरे निकम्मे पदार्थकूं वाहिर फेंक देता है तैसें शरीरभी चमडी फेफसा मलाशय मूत्राशय द्वारा निरर्थक पदार्थ पसीना मल तथा पैसाव रूपकों वाहर फेंक देता है ऐनजीनके अंदर वलीता जल और हवा जोकी ऐनजीनसें पूरा होता है तो भी उस अंजनसें अलग रहता है लेकिन अदमी जिस खुराक हवा पाणीकूं शरीरके अंदर लेता है वो चीजों शरीरमें क्षय पाणेके पहले उस शरीरके संग मिल जाता है और उनसें उस वस्तुओंका पोपण कारक भाग शरीरमें मिलता

है और निरर्थक हिस्सा बाहिर निकलता है मल मूत्र तथा पसीनेके रूपमें शरीरमेंसें जाता है वो शरीरका क्षय कहलाता है इय हमेसां होता है और इसक्षयका बदला खुराक हवा और पाणीसें पूरा होता है अदमी जो महनतका काम जादा करता है त्यों जादा घसारा लगता है और जो जादा क्षय होगा तो पोषण कारक पदार्थ जादा चहियेगा चलने बोलणेमें बांचणेमें और आंखमटकारणे जेसी क्रियातकमें शरीरके परमाणु समय २ में खिरता है और उसकी जगे नये परमाणु आते जाते हैं इसपर विद्वानोनें एसी भी गिणती करी है सात २ वर्षसें अपणे शरीरका सावत खोखा नयाही बंधता है मतलब आगे जो सातवर्ष पहिले अपणे शरीरमें जो हाड मांस खून वगेरे था सो सब खिरते २ खिरजाता है और क्रम २ सें नये २ रजकणोसें शरीरकुं दुसरे परमाणुओंसें नयाही बणा देता है सांपकूं कांचली गिराते तो आदमी देखते हैं लेकिन् वो तो मुदतपर छोडता है। अदमी और सब तेरकी जीवायोनि समय २ में कांचली गिराते हैं और नई धारण करते है इसवास्ते जैनसूत्रकार शरीरकूं पुद्गल कहते हैं शरीरमेंसें हमेम एक बडाजथा नासपाते जाता है नख तथा बाल बढता है और गिरते भये अपणे नजरोसें देखते हैं लेकिन् लाखों सूक्ष्मरजकणे शरीरमेंसें उडते है सो अपणेकुं दिखता नहीं शरीरमें लाखों छेद मल मूत्र और श्वासवगेरोके दुसरे द्वारोसें शरीरका भाग विनास होते जाता है समय २ में जो परमाणु शरीरमेंसें खिरते जाते है अगर भरती नही होय तो सूक २ कर प्राणी मरजाते क्षय राजरोग इसीका नांम है उत्पत्ति स्थिती और नाश ये तीनों सृष्टिका जो नित्यनियम है सो क्रम अपणे शरीरमें हमेमां चलता है ऐसा देखकर सब सृष्टिका प्रवाह इसीतरे नित्यानित्य समझ लेणा शरीरके पुराणे पडे भाग युद्ध अदमीकीतरे अपणा २ काम नहीं कर सकते वो बिखरकर उसकी जगे नये पर्याय लग जाणा ये कुदरती स्वभाव है उस नियमकू चलानेवाला क्षुधा वेदनी कर्म याने भूख नामका हलकारा टेमटेम शरीरके भागोकू भरने वास्ते अन्न पान मांग लेता है जो मांगणीका अनादर किया जावे या देरीसें दिया जावे तो उसकी मदतगार अशाता नाम वेदनी कर्म वो जोर करके नाश अथवा जादा परमाणुओंका बिखरना इसकू कोई रोक नहीं सकता अर्थात् बेमारीका हो जाणा ये उस कर्मकी साबूती मिल जाती है क्योंके जितना जलदी शरीरके परमाणु नाश होते हैं इतने जलदी रोगके कारण वो परमाणु पीछे नहीं भरती होते जेसे चराकके रोमनी लावक तेल नहीं भरनेमें आता है तो चराक बुझ जाता है इस तरे शरीरकी पसाई मुकशानी भरनेके वास्ते कुछ बाहरके वस्तोकी जरूरी पडती है उसका नाम खुराक है खुराक जरूरी वस्तु है तो भी उसका खजन खानेवाले की प्रकृतीका विचार करेबिगर खानेमें आवे तो वो ही खुराक रोगोकों पैदा कर देता है खुराकका वजन सबोके लिये एक नियम नहीं हो सकता

पदरोगमे विद्रधी अंदर पेटमे या वाहर पकनेवाली गांठमे मस्तक रोगमे कर्ण रोगमे नेत्र रोगमे नाकेरोगमे मुख रोगमे सूजनके रोगमे पथरीके रोगमे शूलके रोगमे पसीना गरम जलसे निकालना औरतके जापेके रोगमे नरम थोडा पसीना निकालना विप रोगमे जलकी धारा और स्नान कराना जिस २ रोगोमे वायूकी और कफकी प्रवलता है वो रोग ऊपर लिखे सो सव आराम होते है मैने अनुभव किया है सो ही लिखा है ये समझ रोगोकी जो निदान मैने आगे लिखा है उस प्रकार रोगोकी परिक्षा कर लेना अथ पसीना निकालनेकी विधि लिखते हैं, पहली तेल या घीमे सींधा निमक मिलाकर घंटे भर शरीर मसलाणा फेर एकांत कोठेमे हवा न आतीहोय जहां वैठ कंवल या रजाई जिस्से शरीर सव ढाककर संकडे मूंके घडेमे खूव उकाला भया जल झवोलके अंदर धरवा देना पसीना पूछके साफ करते जाणा जव वाफ वंध हो जाय तव कपडे पहन लेना पसीना सूके वाद फेर वाहर आणा पूर्वोक्त रोगी वहोत निर्वल होय तो पसीना थोडा देना या सर्वथा देना ही नहीं पित्तसे उठे रोगोमे पसीना देना नहीं इसीतरे वाय कफके सर्व रोगोमे शेरका तीन पाव रहा जल पथ्य है अति सारके रोगमे दशांस सोले शेरका शेर या सो शेरका शेर औटाया जल सो दवाकी एक दवा है जल उकालती वखत वाय हरण कर्त्ता कफ हरण कर्त्ता रोगोके अनुसार दवाये भी मिलाते हैं पसीने निकालनेवाले जलमे दवायोका असर वाफसे अंदर पोहचके गुण करता है।

॥ किरण दूसरी २ खुराककी जरूरी ॥

अदमीका शरीर एक जीवित चलता सांचा है एनजिनका दृष्टांत शरीर ऊपर घटता है जिसतरे अंजन चल शके इसवास्ते वलीता हवा और पाणीकी जरूरत पडती है इसतरे शरीरके चलनेवास्ते खुराक पाणी और हवाकी जरूरत हैं इंजनकूं हांकनेवाला नोकर पगार वंध एनजीनीयर चाहिये तैसें अदमीके शरीरमें कर्म वद्ध स्वभाव शक्ति सिद्ध जीव इस शरीरका चलानेवाला है इसवास्ते वाहरकी गतीकी उसकूं जरूरत है नहीं विगडे कलोंकों कारीगर सुधारते है तैसें वैद्य डाकटर इस शरीर संचेके सुधारनेवाले है ये स्वाभाविक गती कायम रखनेकूं उसकूं खुराक हवा पाणीकी जरूरत पडती है शरीर उसके जन्मके संग ही ओछे अधिक प्रमाणमें कोईकूं कोइ तरें हमेस क्रिया करताही रहता है जैसें एनजीन उसकी क्रियामें धूआं और राख वगेरे निकम्मे पदार्थकूं वाहिर फेंक देता है तैसें शरीरभी चमडी फेफसा मलाशय मूत्राशय द्वारा निरर्थक पदार्थ पसीना मल तथा पैसाव रूपकों वाहर फेंक देता है ऐनजीनके अंदर वलीता जल और हवा जोकी ऐनजीनसें पूरा होता है तो भी उस अंजनसें अलग रहता है लेकिन अदमी जिस खुराक हवा पाणीकूं शरीरके अंदर लेता है वो चीजों शरीरमें क्षय पाणेके पहले उस शरीरके संग मिल जाता है और उससें उस वस्तुओंका पोपण कारक भाग शरीरमें मिलता

ઔર નિર્ણયક લિખના ચાહિએ નિષ્કર્ષતા હૈ યદિ મૂલ તથ્ય પર્યાપ્તિક રૂપમેં સ્પષ્ટતા વદ્યતક
નહીં વો ચુકિકા સ્થય કહલાતા હૈ મૂલ રૂપ હોતા હૈ ઔર સ્થવસ્થકા કામ ચારતા હોતા હૈ
રહતા ઔર પાર્પાપ્તિ પૂરા હોતા હૈ અદનકા વો પોષ્ય કારક પદાર્થ ચારતા ચાહિયતા ચહોત
રખતા હોતા હૈ ઔર ચારતા સ્થવ હોતા તો પોષ્ય કારક પદાર્થ ચારતા ચાહિયતા હૈ ।
ચયસ્થ રહતા હૈ ઔર સ્થોપ્તિકારિય સ્થોતા હૈ સ્થવ વિદ્યાર્થિયોં દ્વારા પોષ્ય કારક પદાર્થ
નિર્ણયક હોતા હૈ ઔર ચયસ્થ ચારિત્ર કા ઘોતક હોતા હૈ વિદ્યાર્થિયોં મેં નિષ્પાદી
હોતી હૈ સાત રહ વર્ષ સ્થવસ્થા ચારિત્ર કા ઘોતક હોતા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
સાતવર્ષ પર્યંત ચયસ્થા ચારિત્ર કા ઘોતક હોતા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
હૈ ઔર સ્થમ રહ વર્ષ સ્થવસ્થા હોતા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
સાંપ્રહ કોલ્હાપુરી નિર્ણયાર્થિ રહવર્ષ રહ વર્ષ કોલ્હાપુરી નિર્ણયાર્થિ રહવર્ષ
હૈ ઔર ચય તોલ્હાપુરી ચારિત્રકા પ્રકટ પ્રકટ હૈ ઔર ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
રહવર્ષ ઉત્તરદાયિત્વ ચારિત્રકા પ્રકટ હોતા હૈ ઔર ચયસ્થ નવોપ્તિ રહવર્ષ
ચાલા હૈ નવ રહ વર્ષ પાત્ર પદવા હૈ ઔર ચયસ્થ નવોપ્તિ રહવર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ
ચાલા હૈ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ ચારિત્ર કા ચયસ્થ રહ વર્ષ

शरीरका कद बंधा प्रकृती तथा कसरत मेहनतपर खुराकका प्रमाण रहता है अदमी अपणे २ खुराकका प्रमाण आपही करसकता हे इसबातका निश्चय वैद्य याडाकदर नहीं बांध सकते अपनी बुद्धि द्वारा निश्चयकर खुराकका अनुमांन बांधकर उसी प्रमाण मुजब हमेसां खाना पीणा करणा चाहिये हमेसां कमसे कम ४० रुपियेभर खुराक पोषनकूं जरूरही चहिये जादेमे जादा सेर या सवासेर खुराक दुरस्त है लेकिन् मथुराके चोबे औरभी बहोतसे लोक वे प्रमाण खानेवाले होते है उनोकूं ये प्रमानसे क्या होसकता है महनती लोक जाट कुनबी मल्ल वगेरे तो महनत कसरतके सबबदूना तिगुना खाते है महनतमें जितना क्षय उतनी भरती परमाणुओंकी होनीही चहिये फेर सहरमें बाहर साफ आब हवाकी कसरतसें प्राणी दुगुणा आहार करते है ये भी एक कसरतही समझना लेकिन् एसा तो प्रत्यक्ष देखते है वाजे तो थोडे खाणेवाले निरोगी होते है और वाजे बहोत खाणेवाले रोगी, लेकिन सामान्य बात तो इतनींही है कद और महनत मुजब जादा खुराक खाना चहिये देखते है बडे एनजीनमें बडा बोइलर होता है सो जादा कोयला खाता है छोटा थोडा खाता है काम दोनुं करता है चलता है शक्तिमें फेरफार जरूर होता है इस मुजब ही आदम्योंका समझणा प्रकृती तासीरका भी बहोत विचार है एक ऊमर बराबर कदके दो अदम्योंमें एक कफकी तासीरवाला जादा नहीं खा सकता और दुसरा पित्त प्रकृतीवाला जादा खा सकता है थोडे खाणेवाले बहोत खानेवालेकी निंदा किया करते है और बहोत खानेवाले थोडे खानेवालेकी असलमें दोनोंकी भूल है शेरभरकी खुराक निरोग शरीरवालेकी चाहे तीन शेर तककी होय, लेकिन उद्यमी और सूरवीरता आलस्य रहित प्रमाणोपेत निद्रा ये सब पूर्व पुण्यकी निशाणी है क्योंके आहारमें विवहारमें चातुरकों इतनी जाय लज्जा न चाहिये थोडा खाना मंदाग्नि छोटा शरीर ये पापकी निशाणी है थोडा खाके नाजुक बणना मरदमीका चिन्ह नहीं और बहोत खाके वृथा पुष्ट बणना नहीं महनत करे नहीं ऐसे मांगखानेवाले सब भिक्षुक जानना, मांगखाना उनहींको अछा है जो संसारकी ममता त्याग परमेश्वरकी भक्तीमें ही एक तल्लीन है शरीरके घसणेसें मनकी इछा जो खुराक लेणेकी होती है सो भूख कहलाती है भूख मुजब हरअदमीकूं खुराक लेना चहिये कम लेनेसें पूरा पोषण मिलता नहीं और चहिये जिससें जादा लेनेसें बराबर पचता नहीं इन दोनों कारणोंसें शरीरमें तरे २ की बेमारियां पैदा होती है ॥

॥ खुराककी तपशील ॥

सृष्टीका प्रवाह चलते प्रजापति ऋषभ जगदीश्वरने सरीकूं हितकारी वनस्पतीकी खुराक चलाइ १ इस वास्ते प्रथम खुराक वनस्पती १ बाद वनस्पती, और मांस, ये दुसरी खुराक अदम्योने कालादिकोंमें अन्नादिक नहीं मिलनेसें सरूकी २ ऐसा जैन सूत्रोंमें लिखा है अब साढी अठारे हजार वर्ष बीतनेपर भारत वर्षकी प्रजा फकत मांसाहारसेंही

निर्वाह करेंगी क्योंके असी १ मसी २ कृषी ३ इन तीनों कर्मोका प्रलय होगा वनस्पती
मिलेगी नही ऐसा अनंती वेरहोचूका ओर फेर भी होगा हितकारी खाणा अहितकारी छोडणा
ये विचार ज्ञानसे हैं, बुद्धेः फलं तत्वविचारणं च । अर्थात् बुद्धि पानेका फल यही है
सो सुखकारी सदा चरणा करें ॥ इन दो वर्गोमेंसें प्रजालोकोंमें मांसाहारियोंका जथा
बहोत है अगर इन दोनों प्रकारके जत्थेका विचारकी वारीकीमें जंगली लोकोंको टाल
जावे तो वाकीकी सुधरी भई प्रजा समुदायमें विशेष पणे वनस्पतीके खुराकसें नि-
ह करते मालम देते हैं क्योंकी जो वेजीटेरियन है वो तो फकत वनस्पती पर ही
ीते हैं और जो मांसाहारी है उनोके खुराकमें भी जादा भाग तो वनस्पतीका ही है
इस्सें ये वात सिद्ध है के वनस्पतीसें वहोत लोक जी रहे है अव ये दो तरेका खुराक
है लेकिन् मनुष्य अदमीके लायक और पौष्टिक खुराक तो मुख्य वनस्पती ही है जो
तत्व वनस्पतीमें रहे भये हैं उसके अनुमान कुछ अंशांस तत्व मांसमें है ऐसा मांसाहा-
रियोंका निश्चय है क्योंके केवल मांसाहारी लोक मांस खानेसें जीने है उसमें भी हम
बुद्धिद्वारा अनुमान करते है के उन मांसोमें मुख्यपने वनस्पतीकाही तत्व है सो ही
जीवन है वकरी भेड गाय सूअर हिरण भैंसें वगेर जो जानवर मुख्यपणे वनस्पतीके
खानेवाले है केवल मांसाहारी जानवर सिंह चीता स्याल वगेरेका मांस वो लोक खाकर
जिंदगानी कभी नहीं निभासके अर्थात् खाय तो निर्धे मरे इस वास्ते सर्व प्रजाके वास्ते
फकत वनस्पतीके आहारकी ही जरूरी है १ इस भारत वर्षमें तेर २ के अनाज और
फल फूलेल वनस्पतीका वडा पाक होता है इस भूमी वरावर कोइ भूमी नहीं है क्योंके
कुदरत स्वभाव सिद्ध शुद्ध खान पान हाजर रहते क्यों अभक्ष खाणा २ मनुष्य जातीका
शरीर मांसाहारके लायक नहीं है जैन वैद्यक आयुज्ञानार्णव ग्रथमें खप निषेध कीया
है और डाकतर लोकोके भी आपसमें इस वातपर वहोत तकरार है तो भी देव पडती
दवा पाणीका विचार करनेपर इस आर्यावर्तके लोकोकी होजरी विलकुल मास पचा
नहीं सकती यह तो खूब निश्चय हो गया है ३ जन्मसे देव पड जानेसें इस देशमें भी कि
तनेक मांसाहारी लोक मांसाहार करते है और कायदेसेंपेर शीत कटिवंधके वहोत लो-
क मांसाहार जत्था वंध करते है यह हमेशेका मावरा और शरीरके अंदरकी गरमीसें
ऐसा निर्दइ खुराक होजरी स्यात् धारण करती होगी लेकिन हमारा देशका जोडा भाग
उष्ण कटिवंधमें वाकीका सब समशीतोष्ण कटिवंधमें है इस वास्ते इनोको तो ही
विलकुल मांस पचाणे लायक नहीं ४ मारेसें लोक सोमल वगेरेसें जीवे है ॥ मात्रा
उनोकी प्रत्यक्ष दशा विगडती है यह चोखा निर्णय वहोत ही बुद्धिमानोंको है ॥ मात्रा
हारी लोकोंके वनस्पतीके खुराक विगर चलता नहीं और वनस्पतीके खुराकसें
वालोंको मांसकी जरूरी कीसी वखत भी नहीं होती ५ ॥ वनस्पतीके

शरीरका कद बंधा प्रकृती तथा कसरत मेहनतपर खुराकका प्रमाण रहता है अदमी अपणे २ खुराकका प्रमाण आपही करसकता हे इसबातका निश्चय वैद्य याडाकदर नहीं बांध सकते अपनी बुद्धि द्वारा निश्चयकर खुराकका अनुमांन बांधकर उसी प्रमाण मुजब हमेसां खाना पीणा करणा चाहिये हमेसां कमसे कम ४० रुपियेभर खुराक पोषनकूं जरूरही चहिये जादेमे जादा सेर या सवासेर खुराक दुरस्त है लेकिन् मथुराके चोबे औरभी बहोतसे लोक वे प्रमाण खानेवाले होते है उनोकूं ये प्रमानसे क्या होसकता है महनती लोक जाट कुनबी मल वगेरे तो महनत कसरतके सबबदूना तिगुना खाते है महनतमें जितना क्षय उतनी भरती परमाणुओंकी होनीही चहिये फेर सहरमें बाहर साफ आब हवाकी कसरतसें प्राणी दुगुणा आहार करते है ये भी एक कसरतही समझना लेकिन् एसा तो प्रत्यक्ष देखते है बाजे तो थोडे खाणेवाले निरोगी होते है और बाजे बहोत खाणेवाले रोगी, लेकिन सामान्य बात तो इतनींही है कद और महनत मुजब जादा खुराक खाना चहिये देखते है बडे एनजीनमें बडा बोइलर होता है सो जादा कोयला खाता है छोटा थोडा खाता है काम दोनुं करता है चलता है शक्तिमें फेरफार जरूर होता है इस मुजब ही आदम्योंका समझणा प्रकृती तासीरका भी बहोत विचार है एक ऊमर बराबर कदके दो अदम्योंमें एक कफकी तासीरवाला जादा नहीं खा सकता और दुसरा पित्त प्रकृतीवाला जादा खा सकता है थोडे खाणेवाले बहोत खानेवालेकी निंदा किया करते है और बहोत खानेवाले थोडे खानेवालेकी असलमें दोनोंकी भूल है शेरभरकी खुराक निरोग शरीरवालेकी चाहे तीन शेर तककी होय, लेकिन उद्यमी और सूरवीरता आलस्य रहित प्रमाणोपेत निद्रा ये सब पूर्व पुण्यकी निशाणी है क्योंके आहारमें विवहारमें चातुरकों इतनी जाय लज्जा न चाहिये थोडा खाना मंदाग्नि छोटा शरीर ये पापकी निशाणी है थोडा खाके नाजुक बणना मरदमीका चिन्ह नहीं और बहोत खाके वृथा पुष्ट बणना नहीं महनत करे नहीं ऐसे मांगखानेवाले सब भिक्षुक जानना, मांगखाना उनहींको अछा है जो संसारकी ममता त्याग परमेश्वरकी भक्तीमें ही एक तलीन है शरीरके घसणेसें मनकी इछा जो खुराक लेणेकी होती है सो भूख कहलाती है भूख मुजब हरअदमीकूं खुराक लेना चहिये कम लेनेसें पूरा पोषण मिलता नहीं और चहिये जिससें जादा लेनेसें बराबर पचता नहीं इन दोनों कारणोंसें शरीरमें तरे २ की बेमारियां पैदा होती है ॥

॥ खुराककी तपशील ॥

सृष्टीका प्रवाह चलते प्रजापति ऋषभ जगदीश्वरने सरीकूं हितकारी वनस्पतीकी खुराक चलाइ १ इस वास्ते प्रथम खुराक वनस्पती १ बाद वनस्पती, और मांस, ये दुसरी खुराक अदम्योंने कालादिकोंमें अन्नादिक नहीं मिलनेसें सरूकी २ ऐसा जैन सूत्रोंमें लिखा है अब साढी अठारे हजार वर्ष बीतनेपर भारत वर्षकी प्रजा फकत मांसाहारसेंही

निर्वाह करेंगी क्योंके असी १ मसी २ कृषी ३ इन तीनों कर्मोंका प्रलय होगा वनस्पती मिलेगी नहीं ऐसा अनंती वेरहोचूका ओर फेर भी होगा हितकारी खाणा अहितकारी छोडणा ये विचार ज्ञानसे हैं, बुद्धेः फलं तत्वविचारणं च । अर्थात् बुद्धि पानेका फल यही है सो सुखकारी सदा चरणा करे ॥ इन दो वर्गोंमेंसें प्रजालोकोंमें मांसाहारियोंका जथा वहोत है अगर इन दोनों प्रकारके जत्थेका विचारकी वारीकीमें जंगली लोकोंकों टाल दिये जावे तो वाकीकी सुधरी भई प्रजा समुदायमें विशेष पणे वनस्पतीके खुराकसें निर्वाह करते मालम देते हैं क्योंकी जो वेजीटेरियन है वो तो फकत वनस्पती पर ही जीते हैं और जो मांसाहारी है उनोके खुराकमें भी जादा भाग तो वनस्पतीका ही है इस्सें ये वात सिद्ध है के वनस्पतीसें वहोत लोक जी रहे हैं अब ये दो तरेका खुराक है लेकिन् मनुष्य अदमीके लायक और पौष्टिक खुराक तो मुख्य वनस्पती ही है जो तत्व वनस्पतीमें रहे भये हैं उसके अनुमान कुछ अंशांस तत्व मांसमें है ऐसा मांसाहारियोंका निश्चय है क्योंके केवल मांसाहारी लोक मांस खानेसें जीते है उसमें भी हम बुद्धिद्वारा अनुमान करते है के उन मांसोमें मुख्यपने वनस्पतीकाही तत्व है सो ही जीवन है वकरी भेड गाय सूअर हिरण भेंसें वगेरे जो जानवर मुख्यपणे वनस्पतीके खानेवाले है केवल मांसाहारी जानवर सिंह चीता स्याल वगेरेका मांस वो लोक खाकर जिंदगानी कभी नहीं निभासके अर्थात् खाय तो निश्चै मरे इस वास्ते सर्व प्रजाके वास्ते फकत वनस्पतीके आहारकी ही जरूरी है १ इस भारत वर्षमें तरे २ के अनाज और फल फूलेल वनस्पतीका वडा पाक होता है इस भूमी वरावर कोइ भूमी नहीं है क्योंके कुदरत स्वभाव सिद्ध शुद्ध खान पान हाजर रहते क्यों अभक्ष खाणा २ मनुष्य जातीका शरीर मांसाहारके लायक नहीं है जैन वैद्यक आयुज्ञानार्णव ग्रंथमें खूब निश्चय कीया है और डाकतर लोकोंके भी आपसमें इस वातपर वहोत तकरार है तो भी टेव प्रकृती हवा पाणीका विचार करनेपर इस आर्यावर्त्तके लोकोंकी होजरी बिलकुल मांस पचा नहीं सकती यह तो खूब निश्चय हो गया है ३ जन्मसे टेव पड जानेसें इस देशमेंभी कितनेक मांसाहारी लोक मांसाहार करते है और कावलसेंपरे शीत कटिबंधके वहोत लोक मांसाहार जत्था बंध करते है यह हमेसेका मावरा और शरीरके अंदरकी गरमीसें ऐसा निर्दइ खुराक होजरी स्यात् धारण करती होगी लेकिन् हमारा देशका थोडा भाग उष्ण कटिबंधमें वाकीका सब समशीतोष्ण कटिबंधमें है इस वास्ते इनोंकी होजरी बिलकुल मांस पचाणे लायक नहीं ४ मावरेसे लोक सोमल अफीम भी खा लेते है आखिर उनोंकी प्रत्यक्ष दशा बिगडती है यह चोथा निर्णय वहोत ही बुद्धिवानीका है ॥ मांसाहारी लोकोंके वनस्पतीके खुराक बिगर चलता नहीं और वनस्पतीके खुराकको धारणावालोंको मांसकी जरूरी कीसी वखत भी नहीं होती ५ ॥ वनस्पतीके खुराकसें शरी-

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी बुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नहीं करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है ॥६॥ वहोतसी वेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलव वनस्पतीका खुराक विशेष पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपणे परसन करते हैं ॥७॥ जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत वतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्याल काग चील वगेरे सव जानवर महा आलसू वेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, वलद सव कामके धोरी हत्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हत्थणी स्त्री जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो बुद्धिवान समझ लेंगें ॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीब्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ वरावर वणके रहता है लेकिन मांसमें फीब्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीब्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा वध कर वहोत वखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और उत्साहकूं पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें ३ भागका है और गहुं चावल तैसें फलीके नाजमें ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक यूरोपि विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता है के मांस खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाकटर विद्वान वनस्पतीके खुराककों परसन कर रहे हैं ॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दर जे संवंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सकत मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सवोके सम्मत है आर्यवेद, स्मृति पुराण, वाइवल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके बारीकीका विचार विख्यात है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन बात एकठ करै, उतरे वेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन (अर्थात् पुष्टिवाला १ चरबीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकूं अंग्रेजीमें स्टार्च कहते है सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें वहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके खुराकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण तथा वढानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोइमें कम होता है अपने हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सकर और सावू दाणोंमें पौष्टिक तत्व विलकुल नहीं है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरबीका है सकर और सावू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरबीवाले पदार्थोंमें मुख्य घी मक्कण तेल वगेरे है, धनाजोमें चरबीका भाग सइकडेमें १ (गहुंमें है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरबीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च याने आटेके सत्ववाले पदार्थोंमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बोन नामके पदार्थसें होता है और वोकारबोन इसतरेके खुराकोंमेंसे तैसें चरबीवाले पदार्थोंमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड मरवस्तानादिकोंमें तैसें गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका हरेक भाग खारके मेलसें वगा भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो खानेकी चीजोमें थोडा और वहोत अंसो करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारसें ही वणा भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी वहोत जरूरी है खार कमती होनेसें हाड पोचे और वरडे होकर तूटे एसे हो जाते है छोटे वालकोंका दूधमें पोषण होना है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमें उनमान मुजब खार लेना ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोषणकूं पाणी जेसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खुनके प्रमाणो पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खुन पतला है इसवास्ते ही फिर सकता है जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खुन जाडा पडके फिरे भरा हो जाता है ये प्रवाही तत्व जेसें पाणीमें मिलता है तैसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थमें भी थोडेक मिलता है गहूं वाजरी चावल वगेरे जो कुछ खानेमें आता है उसमें पाणीका भाग है मागतरकारीमें फलादिकोमें पाणीका वहोत भाग होता है इन पांच तरेके खुराकोंमें

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी विगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी वुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नही करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है ॥६॥ वहोतसी वेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलव वनस्पतीका खुराक विशेष पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपणे परसन करते हैं ॥७॥ जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत वतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्याल काग चील वगेरे सव जानवर महा आलसू वेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, वलद सव कामके धोरी हत्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हत्थणी स्त्री जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल वुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो वुद्धिवान समझ लेंगें ॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीत्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ वरावर वणके रहता है लेकिन मांसमें फीत्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीत्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा वध कर वहोत वखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और उत्साहकूं पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें ३ भागका है और गहुं चावल तैसें फलीके ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता है के खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाकटर विद्वान वनस्पतीके खुराककों परसन कर रहे हैं ॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दर जे संवंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सकत मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सवोके सम्मत है आर्यवेद, स्मृति पुराण, वाइवल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके वारीकीका विचार विख्यात है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन बात एकठ करै, उतरे वेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन (अर्थात् पुष्टिवाला १ चरबीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकूं अंग्रेजीमें स्टार्च कहते है सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें वहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके खुराकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण तथा वढानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन. कोइमें कम होता है अपने हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सकर और सावू दाणोंमें पौष्टिक तत्व बिलकुल नहीं है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरबीका है सकर और सावू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरबीवाले पदार्थोंमें मुख्य घी मक्कण तेल वगेरे है, अनाजोमें चरबीका भाग सइकडेमें १ (गहुमे है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरबीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च याने आटेके सत्ववाले पदार्थोंमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बोन नामके पदार्थसें होता है और बोकारबोन इसतरेके खुराकमेंसे तैसें चरबीवाले पदार्थोंमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड अरबस्थानादिकोंमें तैसें गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका हरेक भाग खारके मेलमें बणा भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो खानेकी चीजोंमें थोडा और वहोत अंसों करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारसें ही बणा भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी वहोत जरूरी है खार कमती होनेसें हाड पोचे और वरडे होकर तूटे ऐसे हो जाते हैं छोटे बालकोंका दूधमें पोषण होता है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमें उनमान मुजब खार लेणा ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोषणकूं पाणी जैसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खूनके प्रमाणो पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खून पतला है इसवास्ते ही फिर मकना है जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खून जाडा पडके फिरते बंध हो जाता है ये प्रवाही तत्व जैसें पाणीसें मिलता है तैसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थमें भी शरीरकूं मिलता है गहु मजरी चावल वगेरे जो कुछ खानेमें आता है उसमें पाणीका भाग है सागतरकारीमें फलादिकोंमें पाणीका वहोत भाग होता है इन पांच तरेके खुराकमें

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी बुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नहीं करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है॥६॥ वहोतसी वेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलव वनस्पतीका खुराक विशेष पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपणे परसन करते हैं॥७॥ जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत बतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्याल काग चील वगेरे सब जानवर महा आलसू बेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, बलद सब कामके धोरी हत्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हत्थणी स्त्री जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो बुद्धिवान समझ लेंगें॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीब्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ बराबर बणके रहता है लेकिन मांसमें फीब्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीब्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा वध कर वहोत वखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और

।कूं पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें ३ भागका है और गहुं चावल तैसें फलीके ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक

। विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता है के मांस खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाकटर विद्वान वनस्पतीके खुराककों परसन कर रहे हैं॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दर जे संबंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सकत मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सबोके सम्मत है आर्यवेद, स्मृति पुराण, बाइबल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके वारीकीका विचार विख्यात है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन बात एकठ करै, उतरे बेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन (अर्थात् पुष्टिवाला १ चरबीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकू अंग्रेजीमें स्टार्च कहते है सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें वहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके खुराकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण तथा वटानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोइमें कम होता है अपने हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सकर और साबू दाणोंमें पौष्टिक तत्व बिलकुल नहीं है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरबीका है सकर और साबू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरबीवाले पदार्थोमें मुख्य घी मरकण तेल वगेरे है, अनाजोमें चरबीका भाग सइकडेमें १ (गहुंमे है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरबीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च याने आटेके सत्ववाले पदार्थोमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बोन नामके पदार्थसें होता है और बोकारबोन इसतरेके खुराकोंसे तैसें चरबीवाले पदार्थोमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड अरबस्तानादिकोंमें तैसें गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका हरेक भाग खारके मेलसें बना भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो खानेकी चीजोंमें थोडा और वहोत अंसो करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारमें ही बणा भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी वहोत जरूरी है खार कमती होनेसें दांत पोचे और परडे होकर तूटे ऐसे हो जाते है छोटे बालकोंका दूधमें पोषण होता है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमें उनमान मुजब खार लेणा ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोषणकूं पाणी जैसा प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खूनके प्रमाणो पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खून पतला है इसवास्ते ही फिर चलता है जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खुन जाम पडके किसी रोग हो जाता है ये प्रवाही तत्व जैसें पाणीसें मिलता है तैसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थमें भी थोडा मिलता है गहूं बाजरी चावल वगेरे जो कुछ खानेमें आता है उसमें पाणीका भाग है साकभाजीमें फलादिकोंमें पाणीका वहोत भाग होता है इन पांच तरेके खुराकोंमें

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी बुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नहीं करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है ॥६॥ वहोतसी वेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलव वनस्पतीका खुराक विशेष पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपणे परसन करते हैं ॥७॥ जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत वतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्याल काग चील वगेरे सव जानवर महा आलसू वेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, वलद सव कामके धोरी हत्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हत्थणी स्त्री जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो बुद्धिवान समझ लेंगें ॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीब्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ वरावर वणके रहता है लेकिन मांसमें फीब्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीब्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा वध कर वहोत वखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और उत्साहकूं पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें ३ भागका है और गहुं चावल तैसें फलीके नाजमें ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक यूरोपि विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता है के मांस खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाकटर विद्वान वनस्पतीके खुराककों परसन कर रहे हैं ॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दर जे संवंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सक्त मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सवोके सम्मत है आर्य वेद, स्मृति पुराण, वाइवल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके वारीकीका विचार विख्यात
है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन वात
एकठ करैं, उतरे वेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन
(अर्थात् पुष्टिवाला १ चरवीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकू अंग्रेजीमें स्टार्च
कहते हे सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें वहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके
खुराकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है
इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण
तथा वढानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोइमें कम होता है अपने
हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सकर और सावू दाणोंमें पौष्टिक तत्व विलकुल
नहीं है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरवीका है सकर
और सावू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी का-
यम रखनेका काम करते हैं २ चरवीवाले पदार्थोमें मुख्य घी मख्कण तेल वगेरे है, अ-
नाजोमें चरवीका भाग सइकडेमें १ (गहुंमे है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें
है) चरवीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च याने आटेके सत्ववाले
पदार्थोमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी
क्रिया चलती है वो कार्वोन नामके पदार्थसें होता है और वोकारवोन इसतरेके खु-
मेंसे तैसें चरवीवाले पदार्थोमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड अरवस्थानादिकोंमें
गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका
रेक भाग खारके मेलसें वणा भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो
खानेकी चीजोमें थोडा और वहोत अंसों करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारसें ही
वणा भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी वहोत जरूरी है खार कमती होनेसें
हाड पोचे और वरडे होकर तूटे ऐसे हो जाते है छोटे वालकोंका दूधसें पोषण होता है
और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमें उनमान मुजव खार लेणा
ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोषणकूं पाणी जैसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खून-
पाणी पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खून पतला है इसवास्ते ही फिर सक-
जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खुन जाडा पडके फिरते वंध हो जाता
प्रवाही तत्व जैसें पाणीसें मिलता है तैसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थसें भी शरीरकूं
लता है गहुं वाजरी चावल वगेरे जो कुछ खानेमें आता है उसमें पाणीका भाग है
गतरकारीमें फलादिकोमें पाणीका वहोत भाग होता है इन पांच तरेके खुराकमेंसें

हरेकका कितना वजन शरीरके पोषण वास्ते हमेस जरूरीका है शरीर रचना टेव (याने मावरा) प्रकृती याने तासीर देशकी हवा पाणी तैसें ही ऊमर मुजब जादा और कम खुराक लेनेमें आता है तो भी विचले दरजे कोनसा २ खुराक कितने २ वजनमें लेना चहिये उसका प्रमाण नीचे मुजब ॥

१ पोष्टिक तत्ववाला खुराक हमेस	१० रु भर.
२ चरवीवाला खुराक	८ रु भर.
३ आटेका सत्ववाला खुराक	३० रु भर.
४ खार	४ रु भर.
५ पाणी	१५० रु भर.

ऊपर लिखा है के पाणी और प्रवाही तत्व चरवीवाले पदार्थकूं टालके और सव तरेके पदार्थोमें रहा भया है ऊपरके कोठेमें पहिले चार प्रकारका खुराकका जो प्रमाण लिखा है उसमें प्रवाही तत्व वाद करके लिखा है जो इन चारों प्रकारके पदार्थोंकों प्रवाही तत्व साथ गिणे तो लगवग दुगुणा प्रमाण आवे मतलव ऊपर (५२) रुपिया भर चारों लिखा है मध्यम प्रमाणसें उसके वदले संग १०० रुपिया भर खुराककी हरेक अदमीकों जरूरत है और जल १५० रुपिये भर अलग गिणना चहिये ॥

खुराककी मुख्य चीजोंमें ऊपर लिखा पांच तत्वोंके प्रमाणका यंत्र ॥

खुराकके मुख्य २ वस्तुओंमें पौष्टिक तत्व (नाइट्रोजन) चरवी आटेका सत्व (चरवीवाले और आटेके सत्ववाले पदार्थमें कारवोन वहोत है खार और पाणी ये हरेक वस्तुओंमें १०० सइकडे कितना भाग है सो नीचेके कोठेसे मालम होजायगा मांस मछीयोंका तथा इंडोंका भाग आर्य वैद्यक ग्रंथनें लिखणा परसन नहीं किया यह तो परमार्हतोंका वैद्यक ग्रंथ है आगे जो डाकदरी दवा हम लिखेगें सो तो वणी भई तइयार है और लोक अजाण पने आपत्काले मर्यादा नास्ति इसवास्ते वर्त्तमान प्रवाह है ग्रंथ कर्त्तायों नहीं लिखता है के तुम निश्चे वो हीलो ॥

खुराककी चीज	नाइट्रोजनका पौष्टिकतत्व	चरवीका तत्व	स्टार्च याने आटेका तत्व	क्षारका तत्व	पाणीका प्रवाही तत्व
चावल	५	-॥।	८३।	-॥	१०
साबूदाणा	०	०	८२	०	१८
गहूं	१४॥	१	६९	१॥	१४
ज्वार	१२॥	४ •	७०	१॥	१२
वाजरी	१०	४॥	७१।	२॥	११॥।
चिना	२२	३	६२	२	११

उडद	२४॥।	१।	५८॥	३	१२॥
तूर	२२	१	६२	३	१०
मटर	२२	२	५३	२	१५
मसूर	२५	१।	६०	२	११॥।
जव	१३	२	६८	२	१५
मकी	१०	६॥।	६४॥	१॥	१३॥
कुलथी	२३।	२॥	५९।	३।	१२
आलू	१॥	१०	२३॥	१	७४
कोवीज	-।	-॥	५॥	-॥।	९१
गाजर	-॥	-।	८॥	-॥।	९०
सकरमिश्री	०	०	९६॥	-॥	३
दूध	४	३॥।	५	-॥	८६॥।
मख्कण	-।	९१	०	२॥।	६
घी	-।	१००	०	०	०

रसायण शास्त्री विद्वानोंने रसायणिक प्रयोगोसें जुदा २ भाग छांट कर वस्तुओंका ऊपर लिखे मुजब तत्व सोधके निकाला है इसके प्रताप सब लोक तत्वोके जाणकार इस पदार्थोसे भया है इय सोध यूरोपी विद्वानोका है हमकूं प्राचीन शास्त्रोमें ऐसी तपसील मिली नहीं अगर भंडारोंमें बंध होगा तो होगा बाकी तो मतांतरोके द्वेषियोंने जलादिये पाणीमें गलादिये वर्त्तमान सोधकोंका उपकार कबूल कर इस ग्रंथमें दाखिल किया है ॥ गुण मुजब खुराककी दो जात है पुष्टिकारक, और गरमी देणेवाला २ जो शरीरमेंके खिरें परमाणुओंकों भरती करे सो तो पुष्टिकारक और शरीरके गरमीकूं कायम रखे सो गरमी दाता खुराक, पुष्टिकारक खुराककी चीजों बहोत है लेकिन् हरेकके अंदरका पौष्टिक तत्वोंका गुण एक दुसरेसें मिलता है पौष्टिक खुराकमें नाइट्रोजनका तत्व जादा है और गरमी देणेवालेमें कारबोनका तत्व जादा है ऐसा जुदे २ करणे वालोने निश्चय किया है गरम खुराकसे मोसम पलटणे पर भी शरीरकी गरमी बराबर रहती है जिंदगीके मिलते सब काम गरमी बिगरचल नही सकते बाहरकी हवामे चाहे जितनाफेर होय लेकिन गरमी देणेवाली खुराकसें शररकी गरमी एक हालतसें रहती है जिस जगे ठंड बहोत पाणीका बरफ जम जाता है पारेकी घडीमें पारा ३२ डिग्रीसेंभी नीचे जाता है और गरम देशोंमें जहां पारा १२५ डिग्रीसेभी उंचा चढता है उहांभी बदनकी गरमी तो ९० सें सो १०० डिग्री हमेसां रहती है जो खुराक शरीरकी अंदर गरमीकूं जगे परकायम रखती है उस खुराकमें मुख्य दोय तत्व है १ कारबोन और २ हाइड्रोजन और ये दोय तत्व प्राण वायूके संग रसायण संयोगसें जब मिलता है तब गरमी पैदा होती है ये संयोग हर वखत होते रहता है जब किसी रोगके कारण फेरफार होता है

तभी गरमी कम या वैसी हो जाती है पौष्टिक खुराक वहोत खाणेसें खून चहिये जिस्सें जादाताकतवर हो जाता है उससें खूनका कलेजेमें या मगंजमें तथा दुसरे अवयवोंमें वहोत जमाव होणेसें वो अवयव वडे हो जाते हैं तथा कलेजेमें रोग हो जाता है मगज पर खूनका जोर चढता है उससें ऐसे खुराक खाणेवाले वडे धास्तीमें आगिरते है पौष्टिक खुराक प्रमाणसरखाकर अगर अंगकूं कसरत मेहनत देणेमें आवे तो वहोत नुकशानका संभव नहीं तो भी खुराक एकही तरेका विशेष खाणेसे जरूर नुकशान करता है खुराक ऐसा खाणा चहिये जिसमें शरीरमें चहिये जितना सव पोषणका तत्व होणा अपणे आर्य-लोकोंका खुराक सामान्य सव तत्ववाला है वहोतसे अनाज तथा दालोंमें चहिये जैसा पोषणका सव तत्व आया भया है प्राणियोंके अंगसें पैदा भया खुराक घी माखण मांस इंडे माछी वगेरोमें मांसाहारमें आटेका सत्व अर्थात् गरमी देणेवाला तत्व विलकुल नहीं है इस तरे प्राणी जन्य वस्तुओंमें तो फकत दूध सव तत्ववाला है जभी तो इकेले दूधसें वहोत वर्षोंतक गुजरान चल सकता है घी मक्खणमें विलकुल चरवी हे वाकी कोईभी तत्व नहीं है चावलमें वहोत भाग आठेके सत्वका है पौष्टिक तत्व सैकडेमें पांच रुपिया भर हैं इस वास्ते आर्यलोक भातके संग दाल तथा घी खाते हैं ये वहोत अछा करते हैं दालसें पौष्टिक तत्व पूरा होता है और दालमें निमक डाला जाता है सो चावलोंमें क्षारका भाग कम होता है सो निमकसें पूरा होता है और घीसें चरवीका तत्वभी मिल सकता है लडकोंकों चरवीवाला तथा वहोत पुष्टि कारक खुराक कामका नही उनोंकों चावल दूध खांड मिश्री आलु वगेरे खुराक माफ गत आता है क्योंके इनोंमें पौष्टिक तत्व कम है गरमी देणेवाला तत्व जादा है गहुमें चरवीका भाग थोडा है इसवास्ते गहूंकी रोटीमें जादा घीलेके खाणा चहिये ज्वारमें तथा वाजरीमें चरवीका भाग तो चहिये जितना है लेकिन् पौष्टिक तत्व गहुंसें कम है तो भी इस वस्तुओंसे पोषणका काम चल सकता है उडदमें सवसें जादा पौष्टिक तत्व है ठंडकालेमें पौष्टिक तत्ववाला उडदके आटेके संग घी सक्करका संयोग वहोत गुण करता है गरम देशमें ताजी साग तरकारी फायदा करती है अपणा देश गरम है इसवास्ते ठंड कालेसें गरमी मोसममें हरीताजी वनस्पती फायदा करती है खाणा जरूर है चरवीवाले और चिकणासवाले भोजनमें नींवूकी खटाई थोडा मसालाभी चहिये इस तरे खानपानके अनेक भेद होते है एक मुख्य भेद तो ऐसा है भूख प्यास मिटाणेका गुण तो जरूरही होणा, खुराककी उत्पत्तीके मुख्य दोय भेद है थावर १ और जंगम २ थावरमें तो तमाम वनस्पती और जंगममें प्राणीजन्य दूध दही मक्खन छाछ आदि, आहारकी जैनसूत्रोंमें चार जात लिखी है असन खाणेका पान पीणेका खादिम चावके खाणेका स्वादिममें पान विडादि पंच सुगंध तथा चाटके खाणे आदि, इनोका भेदांतर वहोत है गुणोके प्रमाणसें आहारकी आठ जातभी है भारी

चिकणा ठंडा कोमल तथा हलका लुक्खा गरम और तेज पहिले चार तरेका खुराकशीत वीर्य है इसवास्ते चंद्रमाका गुण है पिछला चार तरेका खुराक उष्णवीर्य है इसवास्ते सूर्यका गुण है रसके भेदसें आहारके छव भेदभी है मधुर (मीठा) अम्ल (खट्टा) लवण (खारा) कटुक तिक्त (कडवा) और कषायला प्रभावसें आहारका तीन भेद है पथ्य. पथ्यापथ्य. कुपथ्य. पथ्य तो सुखकारी, पथ्यापथ्य हित अहित दोनूंका करणेवाला कुपथ्य बिलकुल नुकसान करणेवाला इन तीनोंका विस्तार लिखेंगें खानपानके पदार्थोंका ऐसे सुक्ष्म भेद बहोत है तोभीं सामान्य तरे समझ सके इसवास्ते वांचणेवा-कों छवरस और पथ्यापथ्यकी जाणनेकी जरूरी है, अपणे शरीरके पोषणवास्ते मुख्य ुराकमें छवरस है पृथ्वी पाणीके गुणकी अधिकतासें मीठा रस पैदा होता है पृथ्वी था अग्निके गुणकी अधिकतासें खट्टा रस पैदा होता है, पाणी तथा अग्निके गुणकी अधिक-तासें खारा रस पैदा होता है, वायु तथा अग्निकेगुणकी अधिकतासे तीखा रस पैदा होता है वायु तथा आकाशके गुणकी अधिकतासे कडवा रस पैदा होता है, पृथ्वी तथा वायुके गुणकी अधिकतासें कषायला रस पैदा होता है.

इन (छ व) रसोमें.

मीठा खट्टा खारा ये तीन रस वायु नासक है, कषायला रस वायुके जैसा गुण लक्षणवाला है, मीठा कडवा कषायला तीनो पित्त नासक है, तीखारस पित्तके जैसा गुणलक्षणवाला है. तीखा कडवा कषायला कफनाशक है, मीठा रस कफके जैसा गुण लक्षणवाला है. मीठा रस खून. मांस. मेद. हाड. मींजी. ओज. वीर्य. स्तनका दूध वधाता है, आंखोकों हितकर बाल, और रंगकूं साफ करता है, बल वधानेवाला तूटे हाडोंकों सांधनेवाला छुडे-को जखमसें क्षीणकों हितकारी हैं. प्यास मूर्छा दाहकूं मिटाता है सब इंद्रियोंकों प्रशन्न करता कृमि तथा कफकूं वधानेवाला वहोत खानेसें खासी श्वास अलसक कै (छर्दि) मूंमीठा लेका विगाड. कृमिरोग. कंठमाल. अर्बुद. श्लीपद. वस्ति. पेडूका रोग. मधुप्रमेह वगैरे पैसावका रोग अभिस्यंद वगैरे रोग पैदा करता है, १ खट्टारस आहार वातादिक दोप सोजा तथा आमकूं पचावै. वादीका नाश करे. वायु मल तथा मूत्रकूं खुलास करै पेटमें अग्नि करै. लेपकरनेसें ठंडक करे. हृदयकूं हितकारी. वहोत खानेसें दांतजकडे. अंधी जै नेत्र बंध हो जाय. रूंखडे होय, कफका नाश होय शरीर ढीला हो जाय कंठ छाती हृदयमें दाह होय २खारा रस मल शुद्ध करे खराव व्रण फोडोंकूं साफ करे. गलादेवे खुरा-ककूं पचावै. शरीरकूं ढीला करै गरमी करे अवयवोंकूं नरम करे. वहोत खानेसें खुजली . कोढ. सोजा. थोथर हो जाय चमडीका रंग विगडे. मरदमीका नाश होय. आंखोका और इंद्रियोका व्यापार कम हो जाय. मूंपक जावे. आंख दूखे. रक्त पित्त. वातरक्त. खट्टीडकार वगैरे दुष्ट रोग पैदा होता है. ३ तीखा रस अग्नि दीपवान पाचन. मल मूत्रका सोधन करे तीका जाडापणा. आलस. कफ. कृमि. जहरसें पैदा होनेवाले रोग कोढ खुजली इत्यादि

तभी गरमी कम या वैसी हो जाती है पौष्टिक खुराक बहोत खाणेसें खून चहिये जिस्सें जादाताकतवर हो जाता है उससें खूनका कलेजेमें या मगजमें तथा दुसरे अवयवोंमें बहोत जमाव होणेसें वो अवयव बडे हो जाते हैं तथा कलेजेमें रोग हो जाता है मगज पर खूनका जोर चढता है उससें ऐसे खुराक खाणेवाले बडे धास्तीमें आगिरते है पौष्टिक खुराक प्रमाणसरखाकर अगर अंगकूं कसरत मेहनत देणेमें आवे तो बहोत नुकशानका संभव नहीं तो भी खुराक एकही तरेका विशेष खाणेसे जरूर नुकशान करता है खुराक ऐसा खाणा चहिये जिसमें शरीरमें चहिये जितना सब पोषणका तत्व होणा अपणे आर्य-लोकोंका खुराक सामान्य सब तत्ववाला है बहोतसे अनाज तथा दालोंमें चहिये जैसा पोषणका सब तत्व आया भया है प्राणियोंके अंगसें पैदा भया खुराक घी माखण मांस इंडे माछी वगेरोमें मांसाहारमें आटेका सत्व अर्थात् गरमी देणेवाला तत्व बिलकुल नहीं है इस तरे प्राणी जन्य वस्तुओंमें तो फकत दूध सब तत्ववाला है जभी तो इकेले दूधसें बहोत वर्षोंतक गुजरान चल सकता है घी मक्खणमें बिलकुल चरबी हे बाकी कोईभी तत्व नहीं है चावलमें बहोत भाग आठेके सत्वका है पौष्टिक तत्व सैकडेमें पांच रुपिया भर है इस वास्ते आर्यलोक भातके संग दाल तथा घी खाते हैं ये बहोत अछा करते हैं दालसें पौष्टिक तत्व पूरा होता है और दालमें निमक डाला जाता है सो चावलोंमें क्षारका भाग कम होता है सो निमकसें पूरा होता है और घीसें चरबीका तत्वभी मिल सकता है लडकोंकों चरबीवाला तथा बहोत पुष्टि कारक खुराक कामका नही उनोंकों चावल दूध खांड मिश्री आलु वगेरे खुराक माफ गत आता है क्योंके इनोंमें पौष्टिक तत्व कम है गरमी देणेवाला तत्व जादा है गहुंमें चरबीका भाग थोडा है इसवास्ते गहूंकी रोटीमें जादा घीलेके खाणा चहिये ज्वारमें तथा बाजरीमें चरबीका भाग तो चहिये जितना है लेकिन् पौष्टिक तत्व गहुंसें कम है तो भी इस वस्तुओंसे पोषणका काम चल सकता है उडदमें सबसें जादा पौष्टिक तत्व है ठंडकालेमें पौष्टिक तत्ववाला उडदके आटेके संग घी सक्करका संयोग बहोत गुण करता है गरम देशमें ताजी साग तरकारी फायदा करती है अपणा देश गरम है इसवास्ते ठंड कालेसें गरमी मोसममें हरीताजी वनस्पती फायदा करती है खाणा जरूर है चरबीवाले और चिकणासवाले भोजनमें नींबूकी खटाई थोडा मसालाभी चहिये इस तरे खानपानके अनेक भेद होते है एक मुख्य भेद तो ऐसा है के भूख प्यास मिटाणेका गुण तो जरूरही होणा, खुराककी उत्पत्तीके मुख्य दोय भेद है थावर १ और जंगम २ थावरमें तो तमाम वनस्पती और जंगममें प्राणीजन्य दूध दही मक्खन छाछ आदि, आहारकी जैनसूत्रोंमें चार जात लिखी है असन खाणेका पान पीणेका खादिम चावके खाणेका स्वादिममें पान विडादि पंच सुगंध तथा चाटके खाणे आदि. इनोका भेदांतर बहोत है गणोके प्रमाणमें आहारकी आठ जातभी है भारी

चिकणा ठंडा कोमल तथा हलका लुक्खा गरम और तेज पहिले चार तरेका खुराकशीत
र्य है इसवास्ते चंद्रमाका गुण है पिछला चार तरेका खुराक उष्णवीर्य है इसवास्ते
सूर्यका गुण है रसके भेदसें आहारके छव भेदभी है मधुर (मीठा) अम्ल
(खट्टा) लवण (खारा) कटुक तिक्त (कडवा) और कषायला प्रभावसें आहारका
तीन भेद है पथ्य. पथ्यापथ्य. कुपथ्य. पथ्य तो सुखकारी, पथ्यापथ्य हित अहित दोनूंका
करणेवाला कुपथ्य बिलकुल नुकसान करणेवाला इन तीनोंका विस्तार लिखेंगें खानपानके
पदार्थोंका ऐसे सुक्ष्म भेद बहोत है तोभीं सामान्य तरे समझ सके इसवास्ते वांचणेवा-
लोंकों छवरस और पथ्यापथ्यकी जाणनेकी जरूरी है, अपणे शरीरके पोषणवास्ते मुख्य
खुराकमें छवरस है पृथ्वी पाणीके गुणकी अधिकतासे मीठा रस पैदा होता है पृथ्वी
तथा अग्निके गुणकी अधिकतासें खट्टा रस पैदा होता है, पाणी तथा अग्निके गुणकी अधिक-
तासें खारा रस पैदा होता है, वायु तथा अग्निकेगुणकी अधिकतासे तीखा रस पैदा होता
है वायु तथा आकाशके गुणकी अधिकतासे कडवा रस पैदा होता है, पृथ्वी तथा वायुके
गुणकी अधिकतासें कषायला रस पैदा होता है.

इन (छ च) रसोमें.

मीठा खट्टा खारा ये तीन रस वायु नासक है, कषायला रस वायुके जैसा गुण लक्षणवाला है,
मीठा कडवा कषायला तीनो पित्त नासक है, तीखारस पित्तके जैसा गुणलक्षणवाला है.
तीखा कडवा कषायला कफनाशक है, मीठा रस कफके जैसा गुण लक्षणवाला है.
मीठा रस खून. मांस. मेद. हाड. मींजी. ओज. वीर्य. स्तनका दूध बधाता है, आंखोकों
हितकर बाल, और रंगकूं साफ करता है, बल बधानेवाला तूटे हाडोंकों सांधनेवाला बुडे-
को जखमसें क्षीणकों हितकारी हैं. प्यास मूर्छा दाहकूं मिटाता है सब इंद्रियोंकों प्रशन्न
करता कृमि तथा कफकूं बधानेवाला बहोत खानेसें खासी श्वास अलसक कै (छर्दि) मूंमीठा
गलेका विगाड. कृमिरोग. कंठमाल. अर्बुद. श्लीपद. वस्ति. पेडूका रोग. मधुप्रमेह
वगैरे पैसावका रोग अभिस्यंद वगैरे रोग पैदा करता है, १ खट्टारस आहार वातादिक
दोप सोजा तथा आमकूं पचावै. वादीका नाश करे. वायु मल तथा मूत्रकूं खुलास करै
पेटमें अग्नि करै. लेपकरनेसें ठंडक करे. हृदयकूं हितकारी. बहोत खानेसें दांतजकडे. अंधी
जै नेत्र बंध हो जाय. रूंखडे होय, कफका नाश होय शरीर ढीला हो जाय कंठ छाती
हृदयमें दाह होय २खारा रस मल शुद्ध करे खराब व्रण फोडोंकूं साफ करे. गलादेवे खुरा-
ककूं पचावै. शरीरकूं ढीला करै गरमी करे अवयवोंकूं नरम करे. बहोत खानेसें खुजली
. कोढ. सोजा. थोथर हो जाय चमडीका रंग विगडे. मरदमीका नाश होय. आंखोका और
इंद्रियोका व्यापार कम हो जाय. मूंपक जावे. आंख दूखे. रक्त पित्त. वातरक्त. खट्टीडकार
वगैरे दुष्ट रोग पैदा होता है. ३ तीखा रस अग्नि दीपवा पाचन. मल मूत्रका सोधन करे
शरीरका जाडापणा. आलस. कफ. कृमि. जहरसें पैदा होनेवाले रोग कोढ खुजली इत्यादि

तभी गरमी कम या वैसी हो जाती है पौष्टिक खुराक वहोत खाणेसें खून चहिये जिस्सें जादाताकतवर हो जाता है उससें खूनका कलेजेमें या मगजमें तथा दुसरे अवयवोंमें वहोत जमाव होणेसें वो अवयव वडे हो जाते हैं तथा कलेजेमें रोग हो जाता है मगज पर खूनका जोर चढता है उससें ऐसे खुराक खाणेवाले वडे धास्तीमें आगिरते है पौष्टिक खुराक प्रमाणसरखाकर अगर अंगकूं कसरत मेहनत देणेमें आवे तो वहोत नुकशानका संभव नहीं तो भी खुराक एकही तरेका विशेष खाणेसे जरूर नुकशान करता है खुराक ऐसा खाणा चहिये जिसमें शरीरमें चहिये जितना सव पोषणका तत्व होणा अपणे आर्य-लोकोंका खुराक सामान्य सव तत्ववाला है वहोतसे अनाज तथा दालोंमें चहिये जैसा पोषणका सव तत्व आया भया है प्राणियोंके अंगसें पैदा भया खुराक घी माखण मांस इंडे माछी वगेरोमें मांसाहारमें आटेका सत्व अर्थात् गरमी देणेवाला तत्व विलकुल नहीं है इस तरे प्राणी जन्य वस्तुओंमें तो फकत दूध सव तत्ववाला है जभी तो इकेले दूधसें वहोत वर्षांतक गुजरान चल सकता है घी मक्खणमें विलकुल चरवी हे वाकी कोईभी तत्व नहीं है चावलमें वहोत भाग आटेके सत्वका है पौष्टिक तत्व सैकडेमें पांच रुपिया भर है इस वास्ते आर्यलोक भातके संग दाल तथा घी खाते हैं ये वहोत अछा करते हैं दालसें पौष्टिक तत्व पूरा होता है और दालमें निमक डाला जाता है सो चावलोंमें क्षारका भाग कम होता है सो निमकसें पूरा होता है और घीसें चरवीका तत्वभी मिल सकता है लडकोंको चरवीवाला तथा वहोत पुष्टि कारक खुराक कामका नही उनोंको चावल दूध खांड मिश्री आलु वगेरे खुराक माफ गत आता है क्योंके इनोंमें पौष्टिक तत्व कम है गरमी देणेवाला तत्व जादा है गहुंमें चरवीका भाग थोडा है इसवास्ते गहूंकी रोटीमें जादा घीलेके खाणा चहिये ज्वारमें तथा वाजरीमें चरवीका भाग तो चहिये जितना है लेकिन् पौष्टिक तत्व गहुंसें कम है तो भी इस वस्तुओंसे पोषणका काम चल सकता है उडदमें सवसें जादा पौष्टिक तत्व है ठंडकालेमें पौष्टिक तत्ववाला उडदके आटेके संग घी सक्करका संयोग वहोत गुण करता है गरम देशमें ताजी साग तरकारी फायदा करती है अपणा देश गरम है इसवास्ते ठंड कालेसें गरमी मोसममें हरीताजी वनस्पती फायदा करती है खाणा जरूर है चरवीवाले और चिकणासवाले भोजनमें नींवूकी खटाई थोडा २ मसालाभी चहिये इस तरे खानपानके अनेक भेद होते है एक मुख्य भेद तो ऐसा है के भूख प्यास मिटाणेका गुण तो जरूरही होणा, खुराककी उत्पत्तीके मुख्य दोय भेद है थावर १ और जंगम २ थावरमें तो तमाम वनस्पती और जंगममें प्राणीजन्य दूध दही मक्खन छाछ आदि, आहारकी जैनसूत्रोंमें चार जात लिखी है असन खाणेका पान पीनेका खादिम चावके खाणेका स्वादिममें पान विडादि पंच सुगंध तथा चाटके खाणे आदि, इनोका भेदांतर वहोत है गुणोके प्रमाणमें आहारकी आठ जातभी है भारी

चिकणा ठंडा कोमल तथा हलका लूक्खा गरम और तेज पहिले चार तरेका खुराकशीत वीर्य है इसवास्ते चंद्रमाका गुण है पिछला चार तरेका खुराक उष्णवीर्य है इसवास्ते सूर्यका गुण है रसके भेदसें आहारके छव भेदभी है मधुर (मीठा) अम्ल (खट्टा) लवण (खारा) कटुक तिक्त (कडवा) और कपायला प्रभावसें आहारका तीन भेद है पथ्य. पथ्यापथ्य. कुपथ्य. पथ्य तो सुखकारी, पथ्यापथ्य हित अहित दोनूंका करणेवाला कुपथ्य बिलकुल नुकसान करणेवाला इन तीनोंका विस्तार लिखेंगें खानपानके पदार्थोंका ऐसे सुक्ष्म भेद बहोत है तोभी सामान्य तरे समझ सके इसवास्ते वांचणेवालोंकों छवरस और पथ्यापथ्यकी जाणनेकी जरूरी है, अपणे शरीरके पोषणवास्ते मुख्य खुराकमें छवरस है पृथ्वी पाणीके गुणकी अधिकतासें मीठा रस पैदा होता है पृथ्वी तथा अग्निके गुणकी अधिकतासें खट्टा रस पैदा होता है, पाणी तथा अग्निके गुणकी अधिकतासें खारा रस पैदा होता है, वायु तथा अग्निकेगुणकी अधिकतासे तीखा रस पैदा होता है वायु तथा आकाशके गुणकी अधिकतासे कडवा रस पैदा होता है, पृथ्वी तथा वायुके गुणकी अधिकतासें कपायला रस पैदा होता है.

इन (छ व) रसोमें.

मीठा खट्टा खारा ये तीन रस वायु नासक है, कपायला रस वायुके जैसा गुण लक्षणवाला है, मीठा कडवा कपायला तीनो पित्त नासक है, तीखारस पित्तके जैसा गुणलक्षणवाला है. तीखा कडवा कपायला कफनाशक है, मीठा रस कफके जैसा गुण लक्षणवाला है.

मीठा रस खून. मांस. मेद. हाड. मींजी. ओज. वीर्य. स्तनका दूध वधाता है, आंखोकों हितकर वाल, और रंगकूं साफ करता है, वल वधानेवाला तूटे हाडोंकों सांधनेवाला बुड्ढेकों जखमसें क्षीणकों हितकारी हैं. प्यास मूर्छा दाहकूं मिटाता है सव इंद्रियोंकों प्रशन्न करता कृमि तथा कफकूं वधानेवाला वहोत खानेसें खासी श्वास अलसक कै (छर्दि) मूंमीठा गलेका विगाड. कृमिरोग. कंठमाल. अर्बुद. श्लीपद. वस्ति. पेडूका रोग. मधुप्रमेह वगैरे पैसावका रोग अभिस्यंद वगैरे रोग पैदा करता है, १ खट्टारस आहार वातादिक दोप सोजा तथा आमकू पचावै. वादीका नाश करे. वायु मल तथा मूत्रकूं खुलास करै पेटमें अग्नि करै. लेपकरनेसें ठंडक करे. हृदयकूं हितकारी. वहोत खानेसें दांतजकडे. अंधी जै नेत्र वंध हो जाय. रूंखडे होय, कफका नाश होय शरीर ढीला हो जाय कंठ छाती हृदयमें दाह होय २खारा रस मल शुद्ध करे खराव व्रण फोडोकूं साफ करे. गलादेवे खुराककूं पचावै. शरीरकूं ढीला करै गरमी करे अवयवोंकूं नरम करे. वहोत खानेसें खुजली कोढ. सोजा. थोथर हो जाय चमडीका रंग विगडे. मरदगीका नाश होय. आंखोका और इंद्रियोका व्यापार कम हो जाय. मूंपक जावे. आंख दूखे, रक्त पित्त. वातरक्त. खट्टीडकार वगैरे दुष्ट रोग पैदा होता है. ३ तीखा रस अग्नि दीपक पाचन. मल मूत्रका सोधन करे शरीरका जाडापणा. आलस. कफ. कृमि. जहरसें पैदा होनेवाले रोग कोढ खुजली इत्यादि

रोगोंकूं मिटावे सांधोंकोंढीला करे. उत्साह कम करे. स्तनका दूध वीर्य तथा मेदका नाश करे, वहोत खानेसें भ्रम. मद गलेमें तालवेमें होठमें सूकापणा शरीरमें गरमी ताकतका नाश कंप पीडा वगेरे रोग पैदा करे, हाथ पांव तथा पीठमे वादी करके शूल पैदा करै ४ कडवा रस खुजली. खाज. पित्त. प्यास. मूर्छा. बुखार वगेरेकों शांत करे. स्तनके दूधकों साफ करे, मल मूत्र मेंद चरबी पीप वगेरेकूं सुकाय डाले वहोत खानेसें गरदनकी नसकूं जकडा देवे. नसां खिंचने लग जावै. वदनमें दरद होय. भ्रम होय. शरीर तूटे. सरणें चले कटता होय ऐसा मालमदे. भूखमें मीठापनी कम होजाय. ५ कषायलारस दस्तकूं रोके. शरीरके अवयवोंकों मजबूत करे, व्रण. तथा प्रमेहको. शुद्ध करे. व्रण वगेरेमें घुसके उसके दोषोंकों निकलता है, क्लेदयाने,गारे जैसा पदार्थ पीप पकावका सोधन करे, वहोत खानेसें हृदयमें दरद होय. मूं सूके. पेटमें आफरा नसे जकड जाती है शरीर फुरकता है कांपणी होय तथा शरीर संकुडाता है ६ खानेके पदार्थोंमें अपने अदमी छउं रस खाता है कषायला और कडवा रस खानेमें जादा जाहरा देखनेमें नही आता तो भी कितनेक पदार्थोंमें ये रस गुप्तपनें रहे भये हैं बाकीके चार रस तो खानेमें जाहरा दिखता है जादा ये रसोके खानेसें वहोत नुकशान है सो ऊपर लिखा ही है मीठा रस जादा उपयोगी है तो भी हद उपरांत खानेसें वहोत नुकशान करता है ॥

॥ उजाला २ धान्य वर्ग ॥

चावल, गुण मीठा, अग्निदीपक,बलवर्द्धक, कांतिकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोपहर, और मूत्रवर्द्धक, विचार, चावलोंकी वहोत जाति है. सामान्यतरे कमोद चावल अछे होते है. सबसें साठी चावल पथ्य है, लेकिन वो लाल और मोटा होता है, इस वास्ते लोक खाते भी नहीं है सोखीनलोक तो महींन और लंबे खसबोदारकों परसन करते है, मुलकोंकी अपेक्षा वगिया चावलोंका नाम अलग २ है, चावलोंमें चिकणास (याने) चरबी थोडी है. उससें जलदी पचता है और हलका है बालकोंको बैमारोकों इसीवास्ते अनुकूल आते हैं साबूदाने चावलकी जात नहीं है लेकिन गुणमें वो चावलोंसें हलका है इसवास्ते बचोंको और बैमारोंकों खिलाया जाता है. डाकटर या मारवाडी लोक चावल खाणेसे संका करतेहैं उसका कारण ऐसा मालम देता है. के लोक चावलोंको बराबर सिजाते नहीं जादा आंच देकर जलदी उतारा भया बराबर सीजता नहीं, तैसें दाल होनेवाले सब अनाज (वाफ) उबाल करके लोक खाते हैं. लेकिन. उनोंकों मंद आंचपर वहोत देरतक चुलेपर रक्खे तो अछी तरे सीजते हैं पूरे सीझणेकी परिक्षा इसतरेसे है थालीमें डालनेसें ठण २ अवाज नहीं करे. फूल जैसे हलके हो जाय. हाथमें ममलनेसें मक्खन जैसा मुलायम होय चपटीमें दाब ते चावलोंमें जितना जोर लगे उतनांही कचा समझणा. लोक चावलोंकों वायु कर्ता समझते हैं. सो ऐसा वायु करना नहीं है. कितनेक सस्ते दामोके चावल थोडा वादी करे तो ताजुब नहीं. बाकी तो प्रिजानेकी वे शुद्धीसें वायु करते हैं. ऐसा मालम देता है. चावल

वर्षभर उपरांत पुराणे होना भातके संग दाल घी मिलणेसें वायु कम हो जाती है निमक पूरा होना दाल चावल अलग २ रांधनेसें फेर मिलाकर खानेसें जलदी पचता है सामल रांधनेसें खीचडी होती है वो पचनेमें जरा भारी है खीचडी मूंग तूर वगेरोंकी होती है (गहूंका गुण) पुष्टिकर धातुवर्द्धक बलवर्द्धक मीठा ठंडा भारी रुचिकर तूटीहड्डीकूं सांधनेवाला व्रणकूं मिटानेवाला दस्तकूं साफ लानेवाला (विचार) गहूंकी मुख्य दोय जात है काठा और वाजिया (सुपेद और लाल) सुपेदसें लाल जादा पुष्टिकारक है गहूंमें पुष्टिका तैसें गरमीका तत्व रहा भया है इसवास्ते दुसरे अनाजोंसें ये विशेष उपयोगी और उत्तम पोषणकी वस्तु है गहूंमें खार तथा चरबीका भाग बहोत थोडा है इसवास्ते लोक निमक डाल फेर रोटी वगेरे बनाते है द्रव्यानुसार घी मक्खन और मलाई वगेरेके संग खाना। जादा फायदेवंद है गहूंका मैदा पचनेमें भारी इसवास्ते मंदाग्निवालेनें मैदेकी रोटी पुडी खानी नहीं मकसूदावादी ओसवालोंके इहां नित्य खुराक मैदा है इसवास्ते पित्त वढाणे दालमें अमचूर बहोत डालते है दोनों खुराक निर्बलताका हेतु है फकत दूध विदामकी कतलीसें जिंदगानीका आधारउन लोकोंका है गहूंके आटेसें बहोत पदार्थ बनते हैं गहूंकी राब पचनेमें हलकी है जिसकूं पटोलिया कहते हैं उससे रोटी भारी फेर पीछै पूडी हलवा लड्डू मगध गुलपपडी वगेरे अनुक्रमें पचनेमें एकएकसें भारी है गहू घीके संग खानेसें वादी नहीं करता (वाजरीका) गुण गरम लूखी पुष्ट हृदयकूं हितकारक स्त्रियोंमें कामकूं बढाणेवाला पचनेमें भारी और वीर्यकूं नुकशान करता (विचार) वाजरी गरम है इसवास्ते पित्तकूं खराव करती है इसवास्ते वने जहांतक पित्त प्रकृतीवालेकूं वचणा अछा है लूखी होनेसें वायू करती है जिन २ मुलकोंमें वाजरीकी पैदास जादा है और अनाज कम पकता है तव उहांके लोकोंकों नित्यके मावरेसें वाजरी पथ्य हो जाती हैं जैसें वीकानेर जिलेमें वाजरीका खंतक है मोठ वाजरी और तरवूज (कालिंगा) इस जमीन जैसा और कहांइ भी नहीं होता पोषणका तत्व गहूंके लगभग वाजरीमें है लेकिन गहुंसें चरवीका तत्व जादा है इसवास्ते घी विगरभी नुकशान नहीं करती है (ज्वारका गुण) ठंडी मीठी हलकी लुखी पुष्ट (विचार) ज्वारमें वाजरी जेसाही पोषणका तत्व है चरवी भी वाजरी जितनी ही है ज्वार करडी और लुखी है इसवास्ते वायु करती है लेकिन् नित्यके अभ्यासी मरेठे कुणवी गुजरात काठियावाड वगेरेके गरीव लोक विशेषपणे जुवार और तूरकी दालसें काम चलाते हैं (मूंगका गुण) ठंडा ग्राही हलका स्वादिष्ट कफ पित्तकूं मिटानेवाला आंखोंकों हितकर कुछ वायु करता है(विचार)दालोकी जातमें उत्तम है आनंद श्रावग उपाशक दशा सूत्रमें मुंगकूं श्रेष्ठ दाल समझके मोकला रखा है सव रोगोंमें मुंगकी दाल तथा ओसामण कितनेक दरजे दूधकी गरज सारता है और नये सन्निपात ज्वरमे जहां दूधकी मनाई है उसमेंभी मुंगकी दालका पाणी हितकारी है"

दिनोके उपवासके पारणेमें भी यही पाणी हितकर है सावित मुंग वायु करता है इकेली दालकूं जरा कोरी तवेपर सेककर सीजाकर उसकी दाल या ओसामण पूरव दक्षण देशोंमें तथा किसी भी बैमारीमें वायु नहीं करतीहै मुंगकी वहोत जात है उसमें हरे मुंग गुणकारी है (तुंवरका गुण) मीठी तुरी भारी रुचिकर ग्राही ठंडी त्रिदोष हर होकर कुछ वायु कर्त्ता है(विचार)खून विकार मस्सा(अर्स)बुखार और गोलेके रोगमें फायदा करता है दक्षण और पूरवधरामें इसकी दाल मुख्य है उहां इसकी पैदास है चावल तूरकी दाल और घी मिलाके खानेसें वायू नहीं करती गुजरातवाले इस दालमें कोकम अंवली वगेरेकी खटाई कोइयक दही और गरम मसाला देते हैं इससें वायडी नहीं होती दालकी वस्तुमें दही छाछ कच्चा मिलानेसें दो इंद्रीवाले जीव थूकके स्पर्शसें पैदास होते हैं इसवास्ते अभक्ष्य है अभक्ष चीज रोग कर्त्ता होती है इसवास्ते कडी राईता वगेरे द्विदलके वनाना होय तो पहली गोरसमें वाफ निकले ऐसा गरम कर फेर वेसण वगेरे द्विदल मिलाना रोग नहीं कर्त्ता दही खीचडी इस मुजब ही खाना वे समझ लोक गोरस खीचडा खाते है गोरस गरम किये विगर,सो, वडा नुकशान कर्त्ता है, वावीस वडे अभक्ष जैनाचार्योंनें रोग होनेके कारण मना किये हैं,देखो अतीचार सूत्र (उडदके गुण) वडापुष्ट वीर्य वधानेवाला मीठा तृप्तिकारक पैसाव लानेवाला मलकूं जुदा करनेवाला स्तनमें दुध वधानेवाला मांस मेदेकी वृद्धि करता ताकत देनेवाला वायुकूं तोडनेवाला पित्त कफकूं वधानेवाला (विचार) श्वास थकेला अर्दितवायु जिससें मुं टेढा पडजाय और भी केइयक वायू रोगमें उडद पथ्य है ठंडकालेमें तथावादीकी तासीरवालेकूं फायदेवंद है पचेवाद उडद गरम और खट्टा रस पैदा करता है इसवास्ते पित्त तथा कफकी प्रकृतीवालेकूं तथा इन दोनोंके रोगीकूं नुकशान करता है दिल्लीकी चोतरफ पंजाबतक इसकी दाल हमेसां खाते है काठियावाडवाले इसके लड्डू पुष्टिके वास्ते वहोत खाते है (चणेका गुण) हलका ठंडा लूखा तुरा रुचिकर रंग सुधारक ताकतवर (विचार) कफ तथा पित्तके रोगमें फायदे वंद कुछ ज्वरकूं भी मिटाता है लेकिन् वादी कर्त्ता कवजी करता अथवा जादा दस्त लगावै खुराकमें चिणेकी वहोत चीजें वणती है सावूत आटा और दाल तीनोंतरे काम देता है मोतीचूरका ताजा लड्डू पित्तीके रोगकूं जलदी मिटाता है गुजरातवाले तेलके संयोगसें चने वापरते है चणेमें चरवीका भाग कम है इसवास्ते इसमें घी तेल वगेरे जादा डालना तासीर मुजब उन मान माफक खानेसें नुकशान नहीं करता घी कम होनेसें इसके पदार्थ सब नुकशान करते हैं (मोठका गुण) रुचिकर पुष्टिकारक मीठा लुक्खा ग्राही बलवर्धक हलका कफ तथा पित्तकूं मिटानेवाला और वायू करता है रक्तपित्तमें पथ्य है बुखार दाहमें कृमिरोगमें उन्मादरोगमें पथ्य है. (चवलोंका गुण) मीठा तुरा भारी दस्त लानेवाला लुक्खा वायुकर्त्ता रुचिकर स्तनमें दूध वधानेवाला वीर्यकूं विगाडनेवाला गरम

है(विचार)वहोतवायु कर्त्ता है इसवास्ते इस चीजकूं जादे खाना नहीं जैन ग्रंथोंमें लिखा है महाकंजूस मम्मण शेठ अडयों सोनइयोंका मालक तैलके छमके चवला खातां था और बेटे बहुओंकों खिलाता था खानेमें मीठा पचे वाद खटा रस पैदा करता है ताकतवर है लेकिन् लूखा और भारी है इसवास्ते पेटमें बोझा कर वायू करता है गरम दाहकारी वदनकूं सुकाता है वीर्य नास कर्त्ता है चवला शरीरके जहरका नाश करता है लेकिन् आंखोंके तेजका भी नाश करता है(मटरका)गुण रुचिकर मधुर पुष्टिकर लुखा ग्राही ताकत वढानेवाला हलका पित्त कफकूं मिटानेवाला और वायु करता है निघंटुराजमें जो जो गुण अवगुण हेमाचार्यने लिखा है उसमेंके गुणाऽगुण विशेषपणे वणानेकी क्रियामें रहता ही है यह तो सामान्यवात है वाकी संस्कारके फेरफारसें गुणोंमें फेरफार भी होता है(दाखला)पुराणे चावलोंके रांधे भये भात हलका हे लेकिन् उसके चुरमुरे पवा वहोत भारी है फेर खीचडी भारी कफ पित्तकूं पैदा करनेवाली मुसकिलसें पचे बुद्धिकूं अडचल करनेवाली दस्त पैसावकूं वधानेवाली फेर थोडे जलमें पकाया भात जलदी पचता नहीं चावलोंकों अछीतरे धोकर पांचगुणे पाणीमें खूब सिजाय गरमहीकूं ओसाय डालणा ऐसा भात हलका और गुणकारी खीचडीकूं मंद २ आंचमें वहोत देरतक पकाणा तब फायदेवंद होती है चणे चवले मोठ वगेरे वायडे हैं फेर कितनेक अनाज पचनेमें खराब होते हैं तो भी घीके संग खानेसें पचता है और वादी कम करता है बीकानेर फलोधीवाले जैसे ज्वारका खीचड और वहोत घी आखातीजकूं खाकर ऊपरसें अमलीका सरवत पीते हैं ग्रीष्म ऋतुमें और तासीर देस मुजव पचजाता है. ऋषभ देवजीने तो सांठे ऊखका रस इस दिन पीया था श्रेयांस पड पोतेने वर्षभरके भूखेकों सुपात्र दान दिया अखय सुख उपार्जन किया इसवास्ते अक्षयतृतीया नाम भया ॥

॥ उजाला ३ शाक वर्ग ॥

नित्य खान पानमें शाक तरकारी वहोत कम उपयोगी है समस्त शाग दस्तकूं रोकनेवाला पचनेमें भारी लूखा वहोत मलकूं पैदा करनेवाला और पवनकूं वधानेवाला शरीरके हाडोंकों भेदनेवाला आंखके तेजकूं कम करता शरीरका रंग खून तथा कांतिकों घटानेवाला बुद्धिका क्षय करनेवाला वालोंकों सुपेद करनेवाला यादशक्ति और गतिकूं कम करता है सब सागोमें रोग रहता है वो रोग शरीरका नाश कर्त्ता है इसवास्ते विवेकी लोकोकूं साग नहीं खाना जैन सूत्रकार शरीर रक्षणकूं ही ऐसा वर्त्ताव चलाया है रोगादिकारणमें जतना लिखता है इस मुजब ही चरकादिकोंका मत है जो दोप खटे पदार्थोंमें है उसके मिलते वहोत दोप सागोमें है यह तो सामान्य अभिप्राय है पश्चिमके पंडितोनें ऐसा भी निश्चय किया है के ताजा फल साग तरकारी बिलकुल नहीं खानेसें स्कर्वी याने रक्त पित्तका रोग होता है शाक फलादि उत्तम होना माफक सर उप-

योग करना ऐसा वो लोक कहते हैं एक तरफसें ताजे साग फलोंमें वहोत कम तो फायदा दुसरे तरफ अपणे वजारमें विकते साग फल वगेरेकी दशा उसके वेदरकारी वापरणेसें होता भया वेहद नुकसान इन दोनों वातोंका मुकावला करणेपर आखिर पहली कलमपर ही चलणा हददरजे हितकारीपणा ठहरता है हरी चीजोंका वहोत सावचेतीके साथ वणे जहांतक थोडाही वरताव करणा वुद्धिमानोंका काम है सामान्य अभिप्राय सव वैद्यक ग्रंथोका एसा है तोभी अपणे लोकोमें साग तरकारीका वेहद वरताव देखणेमें आता है जिसमें भी गुजराती भाटिये वैष्णव शैव संप्रदाई तथा जिव्हाके लोलपी, शरीर सुधारणेमें अज्ञानजो जैन इसवास्ते इन सवोकों अंकुसरूप शाग तरकारीका गुण दोप आगे लिखताहूं जिस वनस्पतीमें ताकत देणेवाला तथा गरमी देणेवाला भाग थोडा होय पाणीका भाग जादा होय इस तरेकी ताजी वनस्पती थोडी खाणी, येसिद्धांत है पान फूल फल कंद वगेरे शागकी कितनीक तरा है ये अनुक्रमसें एकके पीछे एक जादा भारी है पानोका साग सवसें हलका है कंदका साग सवसें भारी है जो की जैन पन्नवणा सूत्र-में वत्तीस अनंत काय लिखी है वो महागरिष्ट रोगकर्त्ता कष्टसें पचता है चंदलिया (चौलाई)। हलका ठंडा रूखा मलमूत्रकूं उतारणेवाला रुचिकर्त्ता अग्निकूं दीपन करता जहरकू हरणेवाला पित्त कफ तथा खूनके विगाडकू मिटाणेवाला सव रोगोंमें प्राय चंद लिया सवोंकी प्रकृतिमें पथ्य है वो जैसें सागमें पथ्य है तैसें स्त्रीके प्रदरमें इसकी जड वालकके दस्तकवजीमे उकाले भये पत्ते तथा जड कोढ वातरक्त खून विगाड रक्तपित्त चमडीके खाजदाद फुनसी वगेरे दरदोमें इसका साग विना लाल मिरचके खाणेमेंआवे तो दाह खुजली सव मिट जाती है इय ठंडा है तोभी वाय पित्त कफ तीनोंकों शांत करता है दस्त पेसाव साफ लाता है पेसावकी गरमीकूं शांत करता है खून शुद्ध करता है पित्तका विगाड मिटाता है किसीभी विगडी दवाकी गरमी अथवा जहर उकालके रस सहतया मिश्री डाल पीणेसें या साग खाणेसें जहर, दस्त पेसावके रस्ते निकलजाता है चंदलियेकुं जैसें जादा वाफा जाय तैसें जादा स्वाद और गुण करता होता है मद रक्तपित्त शीतल त्रिदोप ज्वर कफ खांसी दस्तकी वैमारीमें वहोत फायदेवंद है (पालका) अग्निप्रदीपक-पाचक मलशुद्धिकारक रुचिकर तथा उष्ण है सोजा विपदोप हरस तथा मंदाग्निमें हितकारक है (वथवा) वथवेका साग अथवा चीलका साग पाचक रुचिकर हलका दस्तकूं साफ लाणेवाला तापतिली खूनविगाड पित्त हरस कृमि त्रिदोपमें फायदे-वंद है (पत्तागोभी) यह फूल गोभीकी चार जातसें अलग होती है भारी है ग्राही है मधुर रुचिकर वातादिक तीनों दोपोंमें पथ्य है स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाली है (लवेकी भाजी) तीनों दोपोंकों हरणेवाली वुद्धिकूं हितकारक रुचिकर और सामान्य तोर सव रोगोंमें पथ्य(सुनीकी भाजी)गरम तुरी मधुर रुचिकर और पाचक है(सरसूंके पत्ते) त्रिदो-

पहर रुचिकर और पाचक है (मेथीके पत्ते) पित्त करता तथा ग्राही है लेकिन् कफ वायु तथा कृमीका नास करता है रुचिकर तथा पाचक है (अरबीके पत्ते) अरबीके पत्तोंका साग रक्तपित्तमें अच्छा है लेकिन् दस्तकूं कबजकर वायुकूं कोपाता है इससें दस्त मरोडा हो जाता है (मोगरी) तीक्ष्ण तथा उष्ण है लेकिन कफ वायुकी प्रकृतीवालेकूं अच्छी है (गल जीभीके) पत्ते हलके हैं कोढ प्रमेह खूनविगाड मूत्रकृच्छ्र तथा बुखारकूं फायदेवंद है (मूलीके पत्ते) मूलेके ताजे पान पाचक हलके रुचिकर और गरम मुलेकेपत्तोंकों वीकानेर गुजरात काठियावाडी तेलमें पकाते है सो तीनों दोषमें अच्छा गिणते है लेकिन कच्चे पत्ते पित्त और कफकूं विगाडते है, जेसलमेरके रावलजीने तो एसा फुरमाया है मूलामूल नखाव जो सुख चाहे जीवरो, कची मूली वहोत रोगोंमें पथ्य भी लिखी है(परवल)हृदयकूं हितकर बलवर्द्धक पाचक उष्ण रुचिकर कामवर्द्धक हलका और चिकणा खासी खून विगाड बुखार त्रिदोष सन्निपात कृमिके दरदोंमें वहोत फायदे वंद है फलोके सागोमें सर्वोत्तम साग परवल है,(दुधी) मीठी धातुवर्द्धक पौष्टिक शीतल और रुचिकर है लेकिन पचणेमें भारी कफ करता दस्तकूं वंध करता गर्भकूं सुकाणेवाला दुधीका साग जिसकूं कद्दु मीठातूंवा लवाभी कहते हैं इसका सीराभी वणता है (कोला पेठा) इसकी दो जात हे एक तो पीला लाल सोतो कोला, जिसका साग होता है दुसरेका पेठा आगराई मुरब्बा वणता है वो सुपेद होता है वहोत मीठा ठंडा रुचिकर तृप्तिकर पुष्टिकारक वीर्यवर्द्धक है भ्रांति और थकेलेकों मिटाता पित्त खूनविगाड दाह वायूकों मिटाता है छोटाकोला ठंडा और पित्तकूं मिटाता है विचलेकदका कोला कफ करता है और वडे कदका कोला वहोत ठंडा नहीं मीठा है खारवाला अग्निदीपक हलका मूत्राशयकूं साफकरता पित्तके रोगोंकों मिटाणेवाला एक कविने कहा है, वेंगन कोमल पथ्य है, कोला कच्चा जहर है हरडे कची और पक्की सदा पथ्य है वेर कच्चा पक्का सदा कुपथ्य है, वेंगण वृंताक, वेंगणकी दो जात है काला और सुपेद, काला नींद लाणेवाला है रुचिकारक है भारी तथा पौष्टिक है सुपेद दाह तथा चमडीका दरद पैदा करता है सामान्यतरे वेंगण गरम वायुहर तथा पाचक कहलाता है एक दुसरीतरेके गोल काचर नींबू जैसें गोल वेंगण होता है वो कफ तथा वायु प्रकृतीवालेकूं अछा है तैसें खुजली वातरक्त बुखार कामला और अरुचिरोगवालेकूं हितकारी है(घीया तुराई)स्वादिष्ट तथा मीठी है वायु पित्तकूं मिटाती है बुखारके रोगीकूंभी अछी है (तोरी) वायडी हैं ठंडी तथा मीठी है कफ करती है लेकिन् पित्त दमा श्वास बुखार कृमि इतने रोगोमें अछी है (करेला) कडवा गरम रुचिकारक हलका अग्निदीपक माफक सर खावे तो सब प्रकृतीके अनुकूल है अरुचि कृमि ज्वर वगेरे में पथ्य है(काकेडा) (कंटोला)हलके अग्निदीपक रुचिकर मधुर पचेवाद तीक्ष्ण है गोला शूल पित्त कफ खास श्वास ज्वर प्रमेह अरुचि कोढ वायू तथा हृदयके रोगोंमें पथ्य है

(टीडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् बुद्धिकों विगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात वहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकूं आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कच्ची ठंडी है लूखी है दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पकी ककडी अग्नि तथा पित्तकूं वढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीभडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक विलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरवूज कफकारक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अछा है मतीरेसें क्षयकी वैमारी पैदा होती है इसकूं तरवूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों दोषोंकों विगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कच्चेका साग पक्केकूं हेमंतऋतूमें खाते हैं सो तदन खराव है जव करसान लोक कच्चीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् वहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोलेके रोगमें वहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल वाकी सव फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सव रोगोमें फायदे वंद है दाद कोढ रक्तपित्त वालेकूं महा खराव है हरसकी वेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ट है(आलु) ठंडा मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोषणकारक वलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें वायु नहीं करता अंगारमे वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके वालकोंकों खिलाणेसें पोषण अछी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कच्ची मूली तीनों प्रकृतीमें अछी है पक्के मूले (वडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अछा नहीं मूलेकूं गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

तीकूं अनुकूल पडता है गाजर मीठा रुचिकर तथा ग्राही है खुजली और खून बिगाडके रोगोंमें अछा नही हे कितनेक रोगोमें अच्छाभी है लेकिन वीर्यकूं बिगाडता हैं इसवास्ते इसकूं समझदार लोक नहीं वरतते है जैनकोम इसीवास्ते जमीकंदोसें विशेष परहैजरखती है (कांदे) डूंगली बलवर्द्धक तीखा भारी मधुर रुचिकर वीर्यवर्द्धक कफ तथा नींद पैदा करै क्षीणता रक्तपित्त उलटी हैजा कृमि अरुचि पसीना सोजा खूनके सब रोगोंमें हितकारी है इसके साग मुरब्बे पाक वगेरे लोकवणाते है दुरंगध इसमें बहोत है कांदे और लसणकूं तो गोकुल वैष्णव बिलकुल छीते नहीं बचे हैं सो अछे हैं रांधणेकी युक्ति और दुसरी चीजोंके संयोगसे साग तरकारीके गुणोंमे फेरफार होता है जो साग वायु करता होता है वो बहोत घी तेलके संयोगसें वायु नहीं करता जो साग पचणेमें भारी होता है उसकूं पहली खूब जलमें वाफके फेर घीमें तेलमें लोक छमकते है सूरण आलु वगेरे कंदोकों वो नुकशांन नहीं करता बहोत लाल मिरच मसाला खाणा अछा नहीं क्योंके जादा मसालोंसें पाचन शक्ति कम होकर दस्त संग्रहणी आम्लपित्त रक्तपित्त कुष्टादिक खून विकार हो जाता है.

॥ उजाला ४ दूध विचार ॥

(सामान्य गुण) दूधका मीठा ठंडा पित्तहर पोषण करता दस्त साफलानेवाला वीर्यकूं जलदी पैदा करनेवाला वल बुद्धि वधानेवाला मैथुनशक्ति वधानेवाला अवस्था स्थिर कर्त्ता ऊमर वधानेवाला रसायणरूप तुटे हाडोंकों सांधनेवाला भूखेकूं बच्चेकूं वृद्धकूं तृप्तिदेनेवाला स्त्री भोगादिकसें क्षीणकों तथा जखम वालेकों जीर्णज्वर भ्रम मूर्छा मन संबंधी रोग शोष हरस गुल्म उदररोग पांडु पैसावका रोग रक्तपित्त थकेला तृषा दाह छातीके रोग शूल आफरा अतीसार गर्भश्राव इनोमें दूध पथ्य है विशेष रोगोमें दूध पथ्य है,सन्निपात नवीनज्वर वातरक्त कोढादिकमें मना है नवीनज्वरमें कोनेनपर डाकदर पिलाते है (सन्निपातकी अवस्थामें दूध जहर है) निश्चय सिद्धांत है सुजाक फिरंगकी तरुण अवस्थामें भी दूध खराब है लिस्सी पीते है वो गंठियाकी जड है) धातूकीवृद्धि जितनी जलदी दूधसें होती है एसी कोइभी चीजसें नहीं होती (दुहा) वीर्यवधावण वलकरण जो मोह पूछो कोय पयसमान तिहुं लोकमें अवरनऔषध होय १ गायका दूध ये सब गुण धराता है ऊपर लिखे मुजब (काली गायका दूध) वायु हरता और जादा गुण करता है (लाल गायका) वात हर पित्त हरभी है(सुपेदगायका दूध) जरा कफ करता तुरतकी जणी भई तथा वछडे विगरकी गायका दूध तीनों दोषोंको पैदा करती है वाखडी याने व्यायेकू दोय चार महीने वीतने वाली गायका दूध उत्तम है इस उपरांत जैसा खुराक खानेमें आवे गुण दोषका आधार उसपर है (भैसका दूध) गुणमें कितनेक दरजे गायसें मिलता है मीठाजादा जाडाजादा भारी वीर्यजादावधानेवाला कफकरता नींदकूं

(टीडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् बुद्धिकों विगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात वहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकूं आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कच्ची ठंडी है लूखी है दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पकी ककडी अग्नि तथा पित्तकूं वढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीभडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक विलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरवूज कफकारक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अछा है मतीरेसें क्षयकी वैमारी पैदा होती है इसकूं तरवूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों दोषोंकों विगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कच्चेका साग पक्केकूं हेमंतऋतूमें खाते हैं सो तदन खराव है जव करसान लोक कच्चीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् वहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोलेके रोगमें वहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल वाकी सव फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सव रोगोमें फायदे वंद है दाद कोढ रक्तपित्त वालेकूं महा खराव है हरसकी वेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ट है(आलु) ठंडा मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोषणकारक वलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें वायु नहीं करता अंगारमे वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके वालकोंकों खिलाणेसें पोषण अछी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कच्ची मूली तीनों प्रकृतीमें अछी है पक्के मूले (वडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अछा नहीं मूलेकूं गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

तीकूं अनुकूल पडता है गाजर मीठा रुचिकर तथा ग्राही है खुजली और खून विगाडके रोगोंमें अछा नहीं हे कितनेक रोगोमें अच्छाभी है लेकिन वीर्यकूं विगाडता हैं इसवास्ते इसकूं समझदार लोक नही वरतते है जैनकोम इसीवास्ते जमीकंदोसें विशेष परहैजरखती है (कांदे) डूंगली बलवर्द्धक तीखा भारी मधुर रुचिकर वीर्यवर्द्धक कफ तथा नींद पैदा करै क्षीणता रक्तपित्त उलटी हैजा कृमि अरुचि पसीना सोजा खूनके सब रोगोंमें हितकारी है इसके साग मुरब्बे पाक वगेरे लोकवणाते है दुरंगध इसमें बहोत है कांदे और लसणकूं तो गोकुल वैष्णव बिलकुल छीते नही बचे हैं सो अछे हैं रांधणेकी युक्ति और दुसरी चीजोंके संयोगसे साग तरकारीके गुणोंमे फेरफार होता है जो साग वायु करता होता है वो बहोत घी तेलके संयोगसें वायु नहीं करता जो साग पचणेमें भारी होता है उसकूं पहली खूब जलमें वाफके फेर घीमें तेलमें लोक छमकते है सूरण आलु वगेरे कंदोकों वो नुकशांन नहीं करता बहोत लाल मिरच मसाला खाणा अछा नहीं क्योंके जादा मसालोंसें पाचन शक्ति कम होकर दस्त संग्रहणी आम्लपित्त रक्तपित्त कुष्टादिक खून विकार हो जाता है.

॥ उजाला ४ दूध विचार ॥

(सामान्य गुण) दूधका मीठा ठंडा पित्तहर पोषण करता दस्त साफलानेवाला वीर्यकूं जलदी पैदा करनेवाला वल बुद्धि वधानेवाला मैथुनशक्ति वधानेवाला अवस्था स्थिर कर्त्ता ऊमर वधानेवाला रसायणरूप तुटे हाडोंकों सांधनेवाला भूखेकूं बच्चेकूं वृद्धकूं तृप्तिदेनेवाला स्त्री भोगादिकसें क्षीणकों तथा जखम वालेकों जीर्णज्वर भ्रम मूर्छा मन संबंधी रोग शोष हरस गुल्म उदररोग पांडु पैसाबका रोग रक्तपित्त थकेला तृषा दाह छातीके रोग शूल आफरा अतीसार गर्भश्राव इनोमें दूध पथ्य है विशेष रोगोमें दूध पथ्य है,सन्निपात नवीनज्वर वातरक्त कोढादिकमें मना है नवीनज्वरमें कोनेनपर डाकदर पिलाते है (सन्निपातकी अवस्थामें दूध जहर है) निश्चय सिद्धांत है सुजाक फिरंगकी तरुण अवस्थामें भी दूध खराब है लिस्सी पीते है वो गंठियाकी जड है) धातूकीवृद्धि जितनी जलदी दूधसें होती है एसी कोइभी चीजसें नहीं होती (दुहा) वीर्यवधावण वलकरण जो मोह पूछो कोय पयसमान तिहुं लोकमें अवरनऔपध होय १ गायका दूध ये सब गुण धराता है ऊपर लिखे मुजब (काली गायका दूध) वायु हरता और जादा गुण करता है (लाल गायका) वात हर पित्त हरभी है(सुपेदगायका दूध) जरा कफ करता तुरतकी जणी भई तथा वछडे विगरकी गायका दूध तीनों दोषोंको पैदा करती है वाखडी याने व्यायेकूं दोय चार महीने वीतने वाली गायका दूध उत्तम है इस उपरांत जेसा खुराक खानेमें आवे गुण दोपका आधार उसपर है (भैंसका दूध) गुणमें कितनेक दरजे गायसें मिलता है मीठाजादा जाडाजादा भारी वीर्यजादावधानेवाला कफकरता नींदकू

(टीडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् बुद्धिकों बिगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात बहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकूं आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कच्ची ठंडी है लूखी है दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पक्की ककडी अग्नि तथा पित्तकूं वढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीभडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक विलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरवूज कफकारक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अछा है मतीरेसें क्षयकी वैमारी पैदा होती है इसकूं तरवूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों दोषोंकों विगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कच्चेका साग पक्केकूं हेमंतऋतूमें खाते हैं सो तदन खराव है जव करसान लोक कच्चीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरमें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् वहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोलेके रोगमें वहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल वाकी सव फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सव रोगोमें फायदे वंद है दाद कोढ रक्तपित्त वालेकूं महा खराव है हरसकी वेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ठ है(आलु) ठंडा मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोषणकारक वलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें वायु नहीं करता अंगारमें वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके वालकोंकों खिलाणेसें पोषण अछी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कच्ची मूली तीनों प्रकृतीमें अछी है पक्के मूले (वडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अछा नहीं मूलेकूं गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

तीकूं अनुकूल पडता है गाजर मीठा रुचिकर तथा ग्राही है खुजली और खून बिगाडके रोगोंमें अछा नही हे कितनेक रोगोमें अच्छाभी है लेकिन वीर्यकूं बिगाडता हैं इसवास्ते इसकूं समझदार लोक नहीं वरतते है जैनकोम इसीवास्ते जमीकंदोसें विशेष परहैजरखती है (कांदे) डूंगली बलवर्द्धक तीखा भारी मधुर रुचिकर वीर्यवर्द्धक कफ तथा नींद पैदा करै क्षीणता रक्तपित्त उलटी हैजा कृमि अरुचि पसीना सोजा खूनके सब रोगोंमें हितकारी है इसके साग मुरब्बे पाक वगेरे लोकवणाते है दुरंगध इसमें वहोत है कांदे और लसणकूं तो गोकुल वैष्णव बिलकुल छीते नहीं बचे हैं सो अछे हैं रांधणेकी युक्ति और दुसरी चीजोंके संयोगसे साग तरकारीके गुणोंमे फेरफार होता है जो साग वायु करता होता है वो बहोत घी तेलके संयोगसें वायु नहीं करता जो साग पचणेमें भारी होता है उसकूं पहली खूब जलमें वाफके फेर घीमें तेलमें लोक छमकते है सूरण आलु वगेरे कंदोकों वो नुकशांन नहीं करता बहोत लाल मिरच मसाला खाणा अछा नहीं क्योंके जादा मसालोंसें पाचन शक्ति कम होकर दस्त संग्रहणी आम्लपित्त रक्तपित्त कुष्टादिक खून विकार हो जाता है.

॥ उजाला ४ दूध विचार ॥

(सामान्य गुण) दूधका मीठा ठंडा पित्तहर पोषण करता दस्त साफलानेवाला वीर्यकूं जलदी पैदा करनेवाला वल बुद्धि वधानेवाला मैथुनशक्ति वधानेवाला अवस्था स्थिर कर्त्ता ऊमर वधानेवाला रसायणरूप तुटे हाडोंकों सांधनेवाला भूखेकूं बच्चेकूं वृद्धकूं तृप्तिदेनेवाला स्त्री भोगादिकसें क्षीणकों तथा जखम वालेकों जीर्णज्वर भ्रम मूर्छा मन संबंधी रोग शोष हरस गुल्म उदररोग पांडु पैसावका रोग रक्तपित्त थकेला तृषा दाह छातीके रोग शूल आफरा अतीसार गर्भश्राव इनोमें दूध पथ्य है विशेष रोगोमें दूध पथ्य है,सन्निपात नवीनज्वर वातरक्त कोढादिकमें मना है नवीनज्वरमें कोनेनपर डाकदर पिलाते है (सन्निपातकी अवस्थामें दूध जहर है) निश्चय सिद्धांत है सुजाक फिरंगकी तरुण अवस्थामें भी दूध खराव है लिस्सी पीते है वो गंठियाकी जड है) धातुकीवृद्धि जितनी जलदी दूधसें होती है एसी कोइभी चीजसें नहीं होती (दुहा) वीर्यवधावण वलकरण जो मोह पूछो कोय पयसमान तिहुं लोकमें अवरनऔपध होय १ गायका दूध ये सब गुण धराता है ऊपर लिखे मुजब (काली गायका दूध) वायु हरता और जादा गुण करता है (लाल गायका) वात हर पित्त हरभी है(सुपेदगायका दूध) जरा कफ करता तुरतकी जणी भई तथा वछडे विगरकी गायका दूध तीनों दोषोंको पैदा करती है वाखडी याने व्यायेकूं दोय चार महीने वीतने वाली गायका दूध उत्तम है इस उपरांत जैसा खुराक खानेमें आवे गुण दोषका आधार उसपर है (भैंसका दूध) गुणमें कितनेक दरजे गायसें मिलता है मीठाजादा जाडाजादा भारी वीर्यजादावधानेवाला कफकरता नींदकूं

(टीडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् बुद्धिकों बिगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात बहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकूं आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कच्ची ठंडी है लूखी है दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पक्की ककडी अग्नि तथा पित्तकूं वडाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीभडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक बिलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरबूज कफकारक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अछा है मतीरेसें क्षयकी बैमारी पैदा होती है इसकूं तरबूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों दोषोंकों बिगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कच्चेका साग पक्केकूं हेमंतऋतूमें खाते हैं सो तदन खराब है जब करसान लोक कच्चीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् बहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोलेके रोगमें बहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल बाकी सब फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सब रोगोमें फायदे बंद है दाद कोड रक्तपित्त वालेकूं महा खराब है हरसकी बेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ठ है(आलु) ठंडा मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोषणकारक बलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकूं बधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें वायु नहीं करता अंगारमें वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके बालकोंकों खिलाणेसें पोषण अछी तरे करता है हाडोंकों बधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कच्ची मूली तीनों प्रकृतीमें अछी है पक्के मूले (बडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अछा नहीं मूलेकूं गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

और तन दुरस्तीमें जिंदगानी गुजारते हैं कितनेक लोकोंकूं दूधसं दस्त आता है कितनों-कों कब्ज होजाता है तत्वमें इतनी ही वात है उनोके दूध पीनेका मावरा नहीं है लेकिन् एसे कारण होनेपरभी दूध उनोंकों नुकशानकारी कभी नहीं समझना मावरा पडनेसें वाजे अदमी सोमलभी वे प्रमाण खातोकों मैनें देखा है तव तो अमृत जैसी चीज दूध माफगत मावरा डालनेसें नहीं आवे ये वात कभी संभव नही हो सकती इस वास्ते वणे जहांतक दूधका सेवन हमेस करणा चाहिये पारसी अंग्रेज वगेरे श्रीमंत लोक दूध और दूधमेंसें निकले भये पदार्थ मख्कन मलाई पनीर वगेरे पदार्थोंका जादा उप-योग करते हैं और आर्य कोमके श्रीमंत शाग राईता और लाल मिरचोंका पूर मसालोंके शोखमें पडे भये मालम देते हैं तो पीछै साधारण गरीव लोकोंकी वात ही क्याकरणी दूधकी खुराकमें मारवाडी प्रजा तदन मूल खारही है तो शरीरकी स्थितीकी दशा कैसें सुधरे भाग्यवान लोक जैसे गाडी घोडे घर वाहिर रखते है तैसें गाय भेंसे रखनी च-हिये गाडी घोडोंसे श्रीमंताइ टिक नही सकती लेकिन् गाय भेंसोंसें लडकोंकी वुद्धि टि-केगी और वधेगी तो श्रीमंताई जरूर टिकके रहेगी जितनी गाय भेंस पृथ्वीपर जादा होगी जितना दूध घी सस्ता जादा होगा जैनियोंके उपाशक दशा सूत्रमें दस वडे श्रीमंत श्रावकोंका अधिकार चला है जिणोमें काम देवजीके ८० हजार गइया आनंदजीके ४० हजार इसतरे दसोंके गोकुल लिखा है ऊपर लिखे जानवरोंसें वहोत फायदा होता है इनोकी पूरी हिफाजत तन दुरस्ती रखणी गरीव और तालेवर सवका निर्वाह इन जान-वरोंसे है जव आर्यावर्त्त अपने पूरे प्रकाश परथा तव इन जानवरोंकी असंक्षा कोटी थी मांसाहारियोनें इन जानवरोंकों मार २ आर्यावर्त्तकों सव तरे लाचार कर दिया दूधमें खार तथा खटाईका जितना तत्व रहा भया है उससे जादा खार खटाईका योग हो जाता है तव नुकशान कर्ता है, गुण नहीं करता, इसवास्ते विवेकसें उपयोग करणा कि-तनीक वातें फेर समझने जैसी है खार तथा खटाई दूधमें मिलनेसें दूध फट जाता है इसवास्ते खार तथा खटाईके संग दूध खानेमें आवे जरूर नुकशान करता है वैद्यक ग्रथोमें एसा लिखा है दूध भोजनकी वखत खाना होय तो ऊपरसें पीणा या भातके सग खाना जैसें कछके जैन औसवाल खाते है अथवा भोजनमें दूधके विरोधी पदार्थ नहीं होय तो भोजनमें भी खाना दूधके संग कितनेक पदार्थ मित्रका काम करते है, कितनेक शत्रुका, (दूधके मित्र) दूधमें छवरस है और इन छवरसोके मिलते स्वभावके पदार्थ इस मुजव है, दूधमें खट्टा रस है उस खटाईका दोस्त आंवला है, दूधमें मीठा रस है उस मीठारसका मित्र वूरा मिश्री है, दूधमें कडवा रस है उस कडवेरसका दोस्तपरवल है, दूधमें तीखा रस है, उस तीखे रसका दोस्त सूंठ तथा आदा है, दूधमें कपायला रस है उस कपायले रसका दोस्त हरडे है, दूधमें खारा रस है, उस खारे रसका दोस्त सींधा

धानेवाला वेमारकूं गायका जादा पथ्य है भैंसकाकम (बकरीका दूध) तुरा मधुर ठंडा लका रक्तपित्त अतिसार क्षय खास बुखारके जीर्ण रोगोंकी अवस्थामें पथ्य है (गाडरका) ूध खारा मीठा गरम पथरीकूं मिटानेवाला(घोडीका दूध)लूखा गरम बल देनेवाला शोष था वायुकूं मिटानेवाला खट्टा खारा और हलका है (उंठणीका दूध) हलका मीठा खारा अग्निदीपक दस्तलानेवाला कृमि कोढ कफ पेटका आफरा सोजा जलंदर वगेरे पेटके रदोकों मिटाता है (स्त्रीका दूध) हलका ठंडा अग्निदीपक वायु पित्त नेत्ररोग शूल पछा-टकूं मिटाता है (धारोष्ण दूध)ताकतवर हलका ठंडा अग्निदीपक और त्रिदोषहर है(गरम तथा ठंडा दूध) दो है पीछै ठंडा पड जाय तो गरमकर पीछे उपयोगमें लेना तथा भैंसके दूध टाल और सब तरेका कच्चा दूध सरदी तथा आम पैदा करता है इसवास्ते कुपथ्य है गरम किया भया दूध वायु कफवालेकूं सुहावता गरम पीणा फायदे वंद है जादा गर-मसें मुं उसल जाता है पित्त प्रकृतीकूं नुकशान करता है इसवास्ते ठंडा करके पीना दूधके वजनसें आधावजन पाणी डाल पीछे उकाल पाणी जलेवाद जो दूध रहै वो वहोत हलका तीनों प्रकृतीमें तथा वेमारकूं पथ्य है रढा भया दूध भारी होता है इस वास्ते वैमारोंको तथा मंद पाचन शक्तिवालेकूं अछा नहीं दूधमेसे तीन हिस्सा पाणी जल जावै एक हिस्सा जल रह जावै एसा दूध पीणा, रढा भया दूध ताकतदार है लेकिन पूरी पाचन शक्तिवा-लेकूं तथा कसरती जवानोंकों पचता है खराव दूध विगडा भया दूध जिसका रंग वदल गया होय स्वाद वदलजाय खट्टा पड जाय खराव वो आवै और फिदकडी वंध जावै एसा दूध नुकशान करता है तीन घडी दो है पीछै वासी दूधकूं गरम नहीं करे तो नुकशान करता है जैनसिद्धांतमे इसीवास्ते दो घडी वाद कच्चे दूधकूं नुकशानकारी लिखा है और जिसका रंग खसवो स्वाद रूप वदल जाय एसी खाणे पीणेकी सव चीजोंकों अभक्ष लिखा है इसवास्ते इय उपयोग सव जगे याद रखणा एसीं अभक्ष वस्तु जरूर रोगका कारण समझ लेणा पांच घडीतक दोहा भया दूध कच्चा पडा रहे तो विक्रिया करता है अर्थात् तरे२ के रोगका हेतु एक आचार्य कहता है गरम किया भया दूध दस घडी वाद विगड जाता है जैन भक्षाभक्ष निर्णयकार गरम दूध जवसे दोहा तवसे सात घंटे वाद अभक्ष मानता है इय वात मैनें अनुभवभी कर लिया है खट्टा होजाता है इसवास्ते दो है पीछै या गरम किये पीछै वहोत देरतक वासी रखणा नहीं (सवेरका दूध)रातकूं जानवर फिरते नहीं इसवास्ते परिश्रम नहीं होता ओर रात ठंडी होती है इसवास्ते सांझके दूधसें फजरका दूध कुछ भारी होता सांझका दूध सूर्यकी गरमी जानवरोके फिरणेकी कसरतसें फजरके दूधसें सांझका दूध हलका होता है वायु तथा कफ प्रकृतीवालेकूं सांझका दूध जादे माफगत आता है पोषणके पदार्थोंमें दूध वहोत उत्तम पदार्थ है जिसमें पोषणके सव तत्व आये भये है इस दूधपर वैमार साजे योगी लोक वरसों गुजरा न चलाते है

और तन दुरस्तीमें जिंदगानी गुजारते हैं कितनेक लोकोंकूं दूधसं दस्त आता है कितनों-कों कब्ज होजाता है तत्वमें इतनी ही बात है उनोके दूध पीनेका मावरा नहीं है लेकिन् एसे कारण होनेपरभी दूध उनोंकों नुकशानकारी कभी नही समझना मावरा पडनेसें वाजे अदमी सोमलभी वे प्रमाण खातोकों मैनें देखा है तब तो अमृत जैसी चीज दूध माफगत मावरा डालनेसें नही आवै ये बात कभी संभव नहीं हो सकती इस वास्ते बणे जहांतक दूधका सेवन हमेस करणा चाहिये पारसी अंग्रेज वगेरे श्रीमंत लोक दूध और दूधमेंसें निकले भये पदार्थ मख्कन मलाई पनीर वगेरे पदार्थोंका जादा उप-योग करते हैं और आर्य कोमके श्रीमंत शाग राईता और लाल मिरचोंका पूर मसालोंके शोखमें पडे भये मालम देते हैं तो पीछै साधारण गरीब लोकोंकी बात ही क्याकरणी दूधकी खुराकमें मारवाडी प्रजा तदन भूल खारही है तो शरीरकी स्थितीकी दशा कैसें सुधरे भाग्यवान लोक जैसे गाडी घोडे घर बाहिर रखते है तैसें गाय भेंसे रखनी च-हिये गाडी घोडोंसे श्रीमंताइ टिक नहीं सकती लेकिन् गाय भेंसोंसें लडकोंकी बुद्धि टि-केगी और बधेगी तो श्रीमंताई जरूर टिकके रहेगी जितनी गाय भेंस पृथ्वीपर जादा होगी जितना दूध घी सस्ता जादा होगा जैनियोंके उपाशक दशा सूत्रमें दस बडे श्रीमंत श्रावकोंका अधिकार चला है जिणोमें काम देवजीके ८० हजार गइया आनंदजीके ४० हजार इसतरे दसोंके गोकुल लिखा है ऊपर लिखे जानवरोंसें बहोत फायदा होता है इनोकी पूरी हिफाजत तन दुरस्ती रखणी गरीब और तालेवर सबका निर्वाह इन जान-वरोसे है जब आर्यावर्त्त अपने पूरे प्रकाश परथा तब इन जानवरोंकी असंक्षा कोटी थी मांसाहारियोनें इन जानवरोंकों मार २ आर्यावर्त्तकों सब तरे लाचार कर दिया दूधमें खार तथा खटाईका जितना तत्व रहा भया है उससे जादा खार खटाईका योग हो जाता है तब नुकशान कर्ता है, गुण नहीं करता, इसवास्ते विवेकसें उपयोग करणा कि-तनीक बातें फेर समझने जैसी है खार तथा खटाई दूधमें मिलनेसें दूध फट जाता है इसवास्ते खार तथा खटाईके संग दूध खानेमें आवे जरूर नुकशान करता है वैद्यक ग्रथोंमें एसा लिखा है दूध भोजनकी वखत खाना होय तो ऊपरसें पीणा या भातके सग खाना जैसें कछके जैन औसवाल खाते है अथवा भोजनमें दूधके विरोधी पदार्थ नही होय तो भोजनमें भी खाना दूधके सग कितनेक पदार्थ मित्रका काम करते है, कितनेक शत्रुका, (दूधके मित्र) दूधमें छवरस है और इन छवरसोंके मिलते स्वभावके पदार्थ इस मुजब है, दूधमें खट्टा रस है उस खटाईका दोस्त आंवला है, दूधमे मीठा रस है उस मीठारसका मित्र बूरा मिश्री है, दूधमें कडवा रस है उस कडवेरसका दोस्तपरवल है, दूधमें तीखा रस है, उस तीखे रसका दोस्त सूंठ तथा आदा है, दूधमें कपायला रस है उस कपायले रसका दोस्त हरडे है, दूधमें खारा रस है, उस खारे रसका दोस्त सींधा

निमक है, इस उपरांत गहूंके पदार्थ पूडी रोटी चावल घी मख्कण कालीमिरच छोटीपीपर पाकमें डाले जाय एसी पुष्ट दीपन चीज भी दूधके मित्र वर्ग है, (दूधके दुस्मन) सींधा निमक टाल सव तरेका खार, दूधके गुणकूं विगाड डालता है, आंवले टाल सव तरेकी खटाई, गुड मूंग मूले साग दारू मछी मांस दूधके संग मिलके दुस्मनका काम करता है दूधके संग निमक खार तथा गुड खानेसें कोढ प्रमेह मूत्रकृछ्र वगेरे रोग पैदा करता है दूधके संग मूंग मोठ मुले गुड तथा मछी मांस कोढ चमडीका रोग करता है दूधके संग वहोत साग दारू आसव खानेसें पित्तके रोग होकर मर जाता है ऊपर लिखी चीजोंकों दूधके संग खाने पीनेसें अवगुण होता है ये वातकी तुरत खवर नहीं पडती लेकिन् सर्वज्ञ परमात्मानें भक्षाभक्ष निर्णय जो फुरमाया सो जिन दत्तसूरि महाराजने विवेक विलास चर्चरी आदि ग्रंथोंमें लिखा ऐसे महा पुरुष विद्वानोंके वचनोंपर प्रतीति रखना और सर्व जीव हितकारक परम पुरुषकी आज्ञा मुजव चलना ये सलामत रस्ता है जो इन वातोंमें प्रजाकूं नुकशानका रस्ता सर्वज्ञ महावीरकूं दीख पडा सो कहा वो वचन पूर्वानुगत वडे दादा साहिवनें तथा और २ ग्रथोमें उमास्वाती वाचकादिकोनें भी ऐसा ही लिखा सत्य वचन सदा पथ्य है सइकडों अदमी जुदे २ नहीं समझ शके ऐसे रोगोंके सपाटेमें आते है तव अदम्योंकों आश्चर्य आता है मतलव वहोत दिनपहले जो ऐसे विरुद्धखान पान करा होता है उन २ रोगोंका दूरकारण वो विरुद्ध पूर्वोक्त वावते समझनी इय संयोगी जहर जाणना, सदापथ्य और प्रमाणोपेत आहार करनेवालोंको अचानक जो रोग हो जाता है सो अज्ञानपनेसें ऐसे संयोग विरुद्ध खान पान कभी करते हैं या किया भया होता है वो ही समय पाय समवायोके संग झट रोगी कर देता है इसके अलावा संयोग विरुद्ध और भी खान पान वहोत है क्रम २ सें लिखेंगें ॥

॥ घी-घृत ॥

(घीके सामान्य गुण) रसायण मधुर नेत्रोंकोंहितकर अग्निदीपक शीतवीर्यवाला वुद्धि वधानेवाला जीवनदाता शरीरकुंनरमकरता वल कांति वीर्यकूं वधानेवाला मलकूं खिसानेवाला भोजनमें मीठास दाता वायुके पदार्थोंका वायु, संग खानेसें मिटानेवाला गड गुमडकूं मिटानेवाला जखमीकूं वलदाता कंठ तथा गायन सुधारनेवाला मेद कफकूं वधानेवाला अंगारसेंजलेकूं फायदेवंद वातरक्त अजीर्ण तसा शूल गोला दाह सोजा क्षय कानका मस्तकका खून विगाड इत्यादि रोगोंमें फायदे वंद है सामज्वर याने आमसंयुक्त नये वुखारमें सन्निपात वुखारमें कुपथ्य है, सादे वुखारमें वारेदिन वीते पीछे कुपथ्य नहीं, वालक वृद्धकूं वधेमये क्षयरोगीकूं कफके रोगमें आमवातवालेकुं खुराकमें हैजेमे मलवंधमें वहोत दारू पीनेसें भये मदात्यय रोगमें और मंदाग्निमें इतने रोगोंमें घी नुकशान करता है, सादे अदमीके हर वखत भोजनमें वकेलेमें क्षीणतामें पांडु

ीकूं, आंखोके रोगमें ताजा घी फायदे बंद है, मुर्छा कोढ जहर उन्माद वादी तथा
मिर आंखोंमें अंधेरी आवे सो इन रोगोंमें एक वर्षका पुराणा घी फायदे बंद है श्वास
लेकूं बकरीका घी पुराना फायदेबंद जादा है, गाय भैंस वगेरेके दूधके गुणोंमें जेसा
फावत है ऐसा उनोके घीमेंभी समझलेना सब तरेके मलमोंमें पुराणा घी गुणकरता
है पुराणा घी मलमके जितने लगवग गुण धराता है ॥

॥ मक्खण ॥

गइयाका मख्कण हितकारी है वलवर्द्धक है रंगसुधारता है अग्निदीपनकरता है
दस्तकूं रोकता है वायु पित्त खूनविगाड क्षय हरस अर्दितवायु तथा खासीकी वैमारीमें
फायदा करता है बच्चोंकों अमृतरूप है भैंसका मख्कण वायु तथा कफ करता है भारी
है दाहकूं पितकूं श्रमकूं मिटाता है मेद तथा वीर्यकूं वधाता है (वासी मख्कन) वासी
मख्कण खारा तीखा और खट्टा होनेसें उलटी हरस कोढ कफ तथा मेदकूं पैदा करता है॥

॥ दही ॥

(गुण दहीका) गरम अग्नि दीपक भारी पाचनभयेवाद खट्टा दस्तकूं रोकता है पित्त
खूनविगाड सोजा मेद कफकूं पैदाकरता हैं मूत्रकृछ श्लेष्म ठंडकातप अतिसार अरुचि
और दुर्वलतापर दही अछा है लेकिन् युक्तिसें खाना चहिये, दही पांच तरेका होता है
मीठा और खट्टा असलमें दोजात है १ (मंददही) कुछ एक तो जाडा लेकिन् दूधकी तरे
समझमें नही आवै ऐसे स्वादवाला होय सो मंददही दस्त पैसावकी प्रवृतिकूं और
तीनों दोषकूं और दाहकूं पैदा करता है २ (स्वादुदही)जो दही घट्ट हो गया होय अछी
तरे जिसका स्वाद मालम देवै मीठे रसवाला होय प्रगट तो नही मालम देवे ऐसा खट्टा रस-
वालाभी होवे वो स्वादुदही सरदी मेद तथा कफ पैदा करता हे लेकिन् वायु हरता है
रक्त पित्तमें भी फायदा करता है३(स्वाद और अम्ल दही) खट्टा और मीठा घट्ट जमाभया जरा
तुर लगे ऐसादही मध्यम गुणवाला समझना ४ (अम्ल दही) जिसमें मीठास विलकुल
होय नहीं खट्टास्वाद प्रगट मालम देवे ऐसादही अग्निप्रदीप्त करे लेकिन् पित्त कफ
और खूनकूं वधावै और विगाडै ५ (अत्यम्ल दही) जिसके खानेसें दांतअंवीज जाय रू-
खडे होजाय कंठमें जलण होजावै ऐसा खट्टा दही अग्निप्रदीप्तकरै लेकिन् पित्तकूं खून-
कूं वहोत ही विगाड देता है, इन पांचों जातमें स्वादाम्ल दही अछा है (विचार) पकाये
भये दूधमें जांवण दिया भया दही, कच्चे दूधके जमाये भये दहीसें गुणकारी है, ऐसा
दही रुचि करता पित्तकों वायूकों मिटानेवाला धातुओकों ताकत देनेवाला है, मलाइ निकाले
पीछेका दही) दस्तकूंरोकता है ठडा है वायूकोंपैदाकरनेवाला हैं हलका है ग्राही है
अग्नि दीप्त करता है इसवास्ते ऐसा दही पुराणे मरोडे ग्रहणी दस्तकूं हितकारी है कपडेसें
छाणा भया दही वहोत स्निग्ध वायुहरणकरता कफ पैदाकरता भारी ताकतवर पुष्टि-

कारक रुचिकारक और मीठा होनेसें पित्तकूं वहोत वधातानहीं, जो कपडेमेंबांध पाणी टपकादियाजावे उस दहीका इतना गुण है, अब ऐसेदहीमें मिश्री मिलाय खानेसें प्यास पित्त खूनविगाड तथा दाहकूं मिटाता है गुडडालके खायाभयादही वायुकों मिटाता है पुष्टिकरता भारी है, रातकूं सब भोजनकी मनाई वैद्यकशास्त्र और धर्मशास्त्र करता है जिसमें भी दही खानेकी विलकुल रातकूं मनाई है कोइमहाभयंकररोगके कारण वैद्य बतावे तो इतनी चीजोंमें की कोईभी चीजका संयोग होना, जैसें लूंण जल घी सक्कर वूरामिश्री वगेरे सहत मूंगकीदालके संग वाफनिकाला दहीं आंवला वगेरे मिलाया अनुपान होना रक्त पित्त तथा कफ संबंधी कोइ भी रोग शरीरमें होय तो ऊपर लिखी चीजे डालकरभी खानेसें नुकशान रातकूं होगा, ऋतु प्रमाणसें दही खानेका विचार देखे तो) हेमंत शिशिर वर्षा ये तीन ऋतुमें दही दुरस्त है और (शरद) आसो काती (ग्रीष्म) वैशाख ज्येष्ट (वसंत) फागुण चैत्र इनोंमें सबकूं दही मना है इस ऊपर लिखे नियम विगर वीकानेरवाले ओसवालोकेतरे अपनी इछामुजब चाहेजैसा वहोतदही खानेवाले बुखार खूनविगाड पित्त वातरक्त कोढ पांडू भ्रम और भयंकर कामला सोजा कुडजाणा बुढापेमें खासी निद्रानास कमऊमर हो जाणा इत्यादि विकार जरूर होजायगा क्षयरोगी वादीकारोगी पीनसकारोगी कफकारोगी इनोनें खाली दही भूल चूक कभी नही खाना संयोगसें जेसेंकी गुड कालीमिरच औरदहीसें तो प्रायें पीनस मिट जाता है खानेसें इत्यादि, दहीका योग याने दोस्त) लूण, खार घी सक्कर वूरामिश्री सहत आंवले इनोके संग दही खाना, गरमा गरम चीजोंकेसंग दहीखाना जहर जैसा है, घीके संग दही वायु हरता है आंवलेकेसंगखायाभया कफ हरता है सहतके संग खानेसें पाचनशक्ति वढती है तथा थोडासा विगाड भी करता है मिश्री वूरा कंदके संग दही दाह खून पित्त तथा प्यासकूं मिटाता है गुडके संग खायाभया दही ताकतदेता है वायुकूं दूर करता है तृप्ति करता है निमक जीरा और जल डालके दही खानेमें आवे तो विशेष नुकशान नहीं करता तो भी जिस रोगोंमें दही मना है उस रोगमेंतो निमक जल मिलानेपर भी दही विकार करता है ॥

॥ तक्र–छाछ ॥

(छाछकी जाति और गुण) जादा पाणी डालनेसें या कम डालनेसें अथवा विगर पाणीकी छाछके गुणोंमें फेरफार होता है पाणी डाले विगर तेसें दहीकीमलाई विगर निकाले जो विलोया जावे वो घोलिया कहलाता है, मलाई निकालकर विलोया भया मथित कहलाता है, आधादही आधाजल डाल विलोया दही उदश्वित् कहलाता है जिसमें पाणी जादाडालके मस्कन विलोयकरविलकुल निकाल लिया जावे सो छछिका कहलाती है, घोलमें मीठा डालकर खावे तो कैरीके रस जेसा गुण करता है, मथित वायुकूं पित्तकूं तथा कफकूं हरनेवाला और प्यारा लगता है, तक्रउसका नाम है जिस दहीके शेर भरमें पाव पाणी डाला जावे सो छाछ दस्तकूं रोकती है पचती वखत

मीठी है इसवास्ते पित्त नहीं करती और तुरा उष्ण वीर्य तथा लुखी होनेसें कफकूं तोडती है योगचिंतामणि तथा श्रीआयुर्ज्ञानार्णव महासंहितामें श्रीहेमचंद्र लिखता है तक्रका यथा योगसेवणेवाला कभी विवहारनयसें रोगी नहिं होता और तक्रसें जले भये रोग फेर पीछै कभी होतेभी नही जैसें स्वर्गके देवतोकूं अमृत सुख देता है तैसें मृत्यु लोकमें अदम्योंकों तक्र अमृत समान है तक्रमें इतना गुण लिखा है लेकिन् वो गुणोका मुख्य आधार जिस तरेके दहीमेंसें छाछ करनेमें आवे उसपर समझणा, उदश्वित जातकी छाछ कफ करती है, ताकतवढाती है, और आमकूं मिटाती है, छछिका हलकी पित्तकूं थकेलेकूं प्यासकूं मिटाणेवाली वायुकूं मिटाणेवाली कफकू करनेवाली है, निमक डाल उपयोगमें लीभई छाछ अग्नि प्रदीप्त करता और कफकूं कम करती है, दही खराव होय उसकी छाछ भी अवगुणकारी होती है (छाछ पीणेकी विधि) वायुकी प्रकृतीवालेनें अथवा वायुके रोगीने खट्टी छाछमें सींधा निमक डाल पीणी अछी है, पित्त प्रकृतीवालेने अथवा पित्तके रोगीनें मिश्री डाल मीठी छाछ पीणी अछी है, कफ प्रकृतीवालेने अथवा कफकेरोगमें सेंचलनिमक सूंठ मिरच पींपरका चूर्ण मिलाकर पीणी अछी है, ठड कालेमें अग्नि मंदमें कफके भये रोगोंमें मल मूत्र साफ नही ऊतरता होय जिसमें जठराग्निके विगाड उदररोगमें गोलेकेरोगमें ववासीरकेरोगमें इकेली छाछका ऐसा प्रयोग है सो असाध्य संग्रहणी तथा हरस जैसा भयंकर रोग अछै होते है, लेकिन् देशी पूर्ण विद्वान वैद्यकी सलाहसें उपयोग करना कारण आम्लपित्त संग्रहणी एक सदृश प्राय रोग है वैद्यकी पूरी अकल वरी निदान याने रोग परीक्षामें हीं है अम्ल पित्तकूं तक्र जहर है ॥ (छाछ पीनेकी मनाई) चोटलगेभयेजखमी सोजेकानिजरोग जोकी मलसे होता है, श्वासकेरोगीकूं, शरीरसूककर दुर्वल हो गया होय जिसकूं, मूर्छा भ्रम उन्माद फकूत प्यास के रोगीकूं रक्तपित्तके रोगीकू वैशाख जेठके महीनेमें आसोजकाती केमहीनेमें राजयक्ष्मा तथा उरःक्षत रोगीकूं तरुणज्वर सन्निपातज्वरीकों इत्यादि रोगीकूं छाछ पीणा नही पीनेसे दुसरे अनेक रोग पैदा होनेका संभव है ॥

॥ उजाला ५ मा फल वर्ग ॥

अपणे मुलकमें अनेक फलोंका लोक वरतावा करते हैं जिसमें मुख्य(केरी)सामान्यतरे केरी हितकारी है कचीकेरी गरम खट्टी रुचिकर ग्राही तथा रुचिकर है पित्त वायु कफ तथा खून विगाड करती है लेकिन् कंठके रोग वायु प्रमेह योनिदोप व्रण अतीसार तैसे प्रमेह रोगमें अछी है, (पक्कीकेरी) वीर्यवर्द्धक है कांतिकारक तृप्तिकारक मांस तथा वल वधानेवाली है कुछ कफ करती है इसवास्ते इसके रसमें सूंठ थोडीसी डालके उपयोग करना (कचीमीठीकैरी) मकसूदावादमें होती है जातिभेदसें कुछ २ विशेप गुणमें फेर फार भी होता है(सामान्य गुण) एकजेसा सव केरीका समझना (जांमून)मलकूं कवजकरै

मीठा कफका नासकरे रुचिकरता वायुकोंमिटाणेवाला प्रमेहकोंमिटानेवाला उदरविकारमेंइसकारस अथवा सिरका अजीर्ण मंदाग्नि मिटादेता है (बोर) अनेक जातिके होतें है लेकिन् (खट्टा और मीठा)कफकरता बुखार खासी इनोंकों पैदा करता है इनोके अंदर लट्टें होती है इत्यादि तुछफलोकों जैन सूत्र अभक्ष लिखता है इस वास्ते खुलेख्याल खाणा अछानहीं है (अनार) सर्वोत्तम फल है तीनों दोषोंमें हितकर है अतीसारके रोगमें फायदेवंद है ऊमदा जातिकावलकी है वाकी कंधार जोधपुर पूना वगेरेकीभी अछी है (केला) केलाभारी है ठंडा रुचिकर पित्त नाशक है बलदायक है वृष्प है वीर्य वर्द्धक है तृप्तिकारक है मांसवर्द्धक है कफकर्त्ता है दुर्जर याने पचनेमें भारी है प्यास ग्लानी पित्त रक्तविकार प्रमेह भूख नेत्ररोगोंकूं मिटाता है भस्मकरोग जिसमें मनुष्य कितना भी खाय लेकिन् तृप्तिनहींहोय उस रोगमे केला फायदे वंद है (आंवला) स्वादमें तुरा तथा खट्टा है गुणमें रसायण पित्तशामक त्रिदोषहर सारक बलबुद्धिदायक वीर्यसुधारक पौष्टिक स्मृतिदाता थोडेसेमें समझलेना सर्वोत्तम फल है (गीले) हरे आंमलोमें इतनेगुण है लोकसमझते नहीं इसवास्ते जहां बजारोंमें विकते है उहां विशेष कोइ लेता भी नहीं, फकत दिल्ली बनारस वगेरे शहरोमें मुरवा और आचार भी बणाते है लेकिन् मुरवा जेसा बनारसका है वैसा और जगे नही देखा, शेरकेआठ ही तुलते हैं सूके आंवले काली मिरच मिलाके चैत आसोजमें भोजनपर फक्की बीकानेरवाले मारवाडी बहोतलेते हैं हरकिसीरोगमें लेकिन् तैलका वरतावावहोत इसवास्ते गुण धुप जाता है, आंवले सूकेकूं हरेआमलेके रसकीया सूके आंवलेके क्वाथकी, भावना सो वेरदेके सुकाता जाय बाद इसका सेवन करे ऊपरसें दूध पीवे इसके गुणोकी संक्षामें लिख नहीं सकता, प्राये सर्व रोग जाकर बूढापा जरा बिलकुल नहीं आती गहूं घी बूरा चावल मुंगकी दाल पथ्य खाना, इसके कच्चेफलभी कभी नुकशान नहीं करते मुरब्बे वगेरे सदा खाना लाभकारी है, (नारंगी) संतरे मधुर रुचिकर शीतल पौष्टिक वृष्य जठराग्नि प्रदीपक हृदयकूं हितकर त्रिदोपहारक शूल तथा कृमिहारक मंदाग्नी स्वास वायु पित्त कफ क्षय शोष अरुचि ओकारी वगेरे रोगोंमें पथ्य है, नारंगीकी मुख्य दोय जात है खट्टी और मीठी उसमेंसे खट्टी नहीं खाणी (करने जंभीरी) वगेरे वहोत जात है, सर्वोपरी नागपुर दक्षणका संतरा ऊमदा होता है (दाख अंगूर) गीलीदाख खट्टी औरमीठी तैसें काली और सुपेद मुंबईमें कार्फर्डमारकीटमें मणो बंध हमेसां मिलती है और भी जगे २ अंगूरकी पेटियां विकती है खट्टीदाख नहींखानी हरीदाख कफ करती है इसवास्ते थोडासा सींधानिमक लगाके खानेमें कफ नहीं होता दाख उत्तम मेवा है सूकी मुनक्का कालीदाख सब प्रकृतीके और सब रोगोंमें पथ्य है बेमारोकों वैद्य मना भी नहीं करता मीठी है तृप्ती करती है नेत्रोंको बछी है ठंडी है भ्रमनाशक है सारक याने दस्त

साफ लाणेवाली है पैसाव खुलास लाती है पौष्टिक है खूनविकार दाह शोष मुर्छा बुखार श्वास खास मदिरापीनेसेंभयेरोग उलटी सोजा वातरक्त वगेरे रोगोकों फायदेवंद है (नीवु) नीवु खट्टे और मीठे दो जातके होते है मीठा पूरवदेशमें वहोत है जिसमें वडेकूं चकोतरा कहते है फलोंमें मीठेकी गिणती है खट्टेकूं एकेला कोइ खाताभी नहीं डाकटर सूजनपर मसूडे पककर खूनगिरता होय जिसपर चूसाते भी है सिकंजी जलमे डालके पिलातेभी है वाकी तो प्रजा आचार चटणी मसाला दाल सागमें रसडालके खाते हैं लेकिन चूसके हमेस कोइ खाता नहीं संयोगसें खट्टे नींवु फायदा करता है (मीठा नीवू) स्वाद मीठा तृप्तीकरता अतिरुचिकारक हलका कफ वायु उलटी खास कंठरोग क्षय पित्त शूल त्रिदोष मिटाणेवाला मलस्तंभक है हेजा आमवात गोला और कृमि पेटमें कीडोकानासकरता जिसकापेट जकडगयाहोय दस्तवंद होकर वद्धगुदोदररोग भया होय खाणे पीणेकी अरुचि भई होय पेटमें वायू तथा शूलका रोग होय किसी तरेका शरीरमें जहरचढा होय इन सव रोगोमें नींवू देणा अछा है, नींवूकी खटाईसे लोक डरके नीवुंकूं वापरते नहीं लेकिन ये ना समझपणेकी वात है बुखार जैसी वेमारीमें भी जो नीवुकूं युक्तिसें वापरे तो नुकशानके वदले फायदा करता है च्यार फाड एकमें सूंठ सीधा लूण, एकमें काली मिरच, एकमें मिश्री, एकमे डीकामाली, ये चुसाणेसें । जी मचलाणा कै वदहजमी बुखार प्रमुख मिटजाता है और अनेक युक्तियां है (खजुर) पौष्टिक स्वादिष्ट मीठी ठंडी ग्राही खून साफ करता हृदयकूं हितकर त्रिदोपहर श्वास थकेला क्षय विप प्यास शोष याने वदनसूकणा आम्लपित्त जैसे महाभयंकर रोगमें पथ्य और हितकारक है उसमें इतना अवगुण हे पचणेमेंभारी कृमि पैदा करता है इसवास्ते छोटे वच्चोंकूं खजुर कोइजातकीभी खाणे नही देणी खजुरकूं घीमे तलणेसें फेर ये दोनों दोष कितनेक दरजे कम हो जाते है फेर गरमीकी मोसममें खजुरका पाणीकर उसमें जरासा अमलीका खट्टा पाणीदेकर सरवतकी तरे पीणेमें आवे तो फायदा करता है (पीड खजुर) सूकी खारक खजुरही है गुणमें जरा फरक है (फालसे)तैसें (पील्) तैसें करोंदेके फल पित्त तथा आमवायूका नास करता है सव तरेके प्रमेह रोगीकूं फायदेवंद है (सीताफल) मधुर ठंडा पौष्टिक है लेकिन कफ वायु करता है दक्षण हैदरावादके गरीव लोक खाकर पेटभर पाणी पीकर टंक टालते है (जाम फल) स्वादिष्ट ठंडा वृप्य रुचिकर वीर्यवर्धक और त्रिदोपहर है लेकिन तीक्ष्ण है भारी है कफ करता है वायु कर्त्ता है उन्मादरोगी पागलकूं अछा है (सफरजंद) मधुर रुचिकर हृदयकू हितकर शीतल ग्राही और पित्तहर है अतीसार रोगीकूं फायदेवंद है और उसका मुरव्वाभी लोक वनाते है (आलु) हृदयकुं हितकर ठंडा भारी उष्ण जड ग्राही तथा धातुवर्धक प्रमेह हरस ज्वर तथा वायुका नास करता है (अंजीर) ठंडा और भारी है प्रमेह मिटाता है (गूलरकाफल)

लेकिन इसमें छोटे जीव होते है इसवास्ते वड पींपर पीलू ढालू तथा गूलर वगेरे पांच दर खतोकेफल अभक्ष जैन सिद्धांत लिखता है रोगादि कारणमें यतना लिखा है असल अंजीर कावल मेंहोतेहे मुसलमीनहकीम वेमारोंकों वहोत खिलाते हैं (कची अमली) अमलीके फल अभक्ष है सदा छोडणेलायक है रोगकर्त्ता है रक्तपित्त आमके तथा रोगकूं पैदा करता है (पकी अमली) वायू रोगमें शूल रोगमें फायदे वंद है वहोत ठंडी है इस वास्ते सांधोंकों पकडे है नसोकों ढीला करे है इसवास्ते हमेस खाणी अछी नहीं मधरास द्रविडदेस कर्णाटकदेश तैलगदेसवाले इसका कट्ट मिरची मसाला तूरकीदालकापाणी चावलोंका मांड डालकर गरमपकाकर भातके संग नित्य दोनों वखत खाते है मावरा पडणेसें गुजराती तथा गरम मुलकोंमें गरम ऋतुमें लोक दालमें सागमें और गुजराती लोक गुड डालके हमेस इसकी कढी वनाकर खाते है वेमारलोकभी हैदरावादमे इमलीका कट्ट खाते हैं लेकिन एसा निडर होकर अमली जादा खाणा अछा नहीं है ऋतु तासीर और रोग और अनुपानका विचार कर वरतणा अछा है, क्योंके नालक वचन है, गया मरदजो खाई खटाई, गईनारजो खाई मिठाई, गईहाटजहां मंडी हथाई, गया वृक्ष जहां वुगला वैठा गया घर जहां मोडा पैठा, नई अमलीसें एकवरसकी पुराणीइमली अछी उसकेभी निमक लगाकर रखणा चहिये (नालेर) वहोत मीठा चिकणा हृदयकूं हितकर पुष्ट वस्ति सोधक रक्तपित्तहर गरमीपारेवगेरेकी तथा आम्लपित्तमें इसका पाणी तथा नालिकेर खंडपाक वहोत फायदेवंद है और वीर्यवर्द्धक है (सकर टेटी) मीठे काचर खट्टेकाचर इयभी एक ककडीकी जात है नदीकी रेतमें पके है (खरवुजा) गुजरातमें सकर टेटी कहते हैं ये स्वादमें मीठा होता हे इसका लोकपनावनाते है गरम होता है हेजा चलता है उस दिनोंमें इसकुं विलकुल खाणा नहीं सुणा है खरवूजेकापना और चावलसंग खाते जो गुचलका आ जावे तो प्राणी मर जाता है कुछ इलाजभी नहीं है जमीनखेतोंमेंपके सो ककडी और काचर कहलाता है गुजरातवाले कोठींवडा कहते है इसकुं सुकाकर खेल रेवणाते है काचरोकुं सुकाकर रखते है स्वादिष्ट तो होता हे लोकवहोत खातेभी है लेकिन् गुणोमे तो सवसे हलके दरजेके फल ककडी और काचर है क्योंके तीनों दोषोंकों विगाडता है कचे वायु कफ करते हैं पकेवाद तो जादाही कफ वायुकों विगाडते है तरवूज मतीरा इसीदरजे गुणमें है अभ्रक पारदभस्म सूवर्णभस्म इन तीनोंको ककाराष्टक खराव कर डालता है. कोला १ केलकंद २ करोंदे ३ कांजी ४ कारेला ५ कैर ६ ककडी ७ कालिंगा ८ (विदाम चिरोंजी पिस्ता) ये तीनों मेवे हितकर है सव तरेके पाक लदु वगेरेमें लोक इनोंकों खाते है फल और वनस्पतीकी अनेक जाति है (प्रसिद्ध) विशेष वरतावेका गुण दोप लिखा है इतना जाण लेगा उसकी वुद्धि अनेक वस्तुओंपर प्रसार करेगी विदाम मगजकूं तरावट और पुष्ट करता है लेकिन कडवे (खारे) विदाम

जहरका असर करता है बालकके खाणेमें तीन च्यार कडवे विदाम आजाय तो पूरा जहरका असर करके प्राणोंकी हानी कर देता है इसवास्ते (चाख २ के) उपयोग करणा विदाम पचणेमें भारी है ॥

॥ उजाला ६ छट्ठा गुड-खांड-मिश्री ॥

सेलडीके रससें केइ पदार्थ बनते हैं जिसमेंसें गुड खांड मिश्री मुख्य पदार्थ है आगे तो सक्कर सांठे ऊखके रससेंही बणती थी लेकिन आजकल (पदार्थ विद्याके) सोधकोनें ताड फल खजूरादिक बहोत पदाथोंसे सक्कर बणाणी सरू करी है इसवास्ते गुड खांडके अंदर बहोत तरेका भेल होके आता है उसकी फेर मिश्रीभी वैसीही बणणे लगी है व्यापार और खाणेके पदार्थोमें फकत धनकी लालचसें एसा दगा होणा सरू भया है और ऐसे दगेकी भेलकी वस्तु जाहिरा बजारमें विक रही है ऐसी चीजोंपर सरकारकूं बंदोबस्त और निगेदास्ती करणेकी जरूरी है के खाणेपीणेके पदार्थोमे क्या क्या चीज मिलके आती है ये बात लोक नहीं जाणते हैं और प्रजाका बहोत लोक विचले दरजेके तथा गरीबी हालतमें हैं सो जो चीज सस्ती मिलती है वोही लेकर अपणा काम चलाते हैं लेकिन व्यापारकी हरीफाईसें एक दूसरेसे सस्तामालबनाणेकूं उसमें कितनीक चीजें नुकशानकारीभी मिला देतें हैं बजारमे हरसाल नई २ तरेके गुड खांड बनके आती है इसका सामान्य प्रजासें निश्चय होणा मुस्कल है के कोणसी सक्कर तथा मिश्री अछी है इसवास्ते जादा निश्चय और सुधारा तो जबी हो सकता है के देसी गुड खांडही व्यापारीवेचे और प्रजा वापरे अब इनोका सामान्य गुण दोष इहां लिखताहूं, नया गुड गरम तथा भारी होता है खून विकार तथा पित्त विकारकूं नुकशान करता है पुराणा गुड एक बरसके पीछे तीन बरसका बहोत अछा होता है, हलका अग्नि प्रदीपक और रसायणरूप है फीकापणा पांडू पित्त त्रिदोष और प्रमेहकूं मिटाता है दवायोंमें पुराणा गुड काम देता है सहत नहीं होय तो पुराणा गुड लेणा चहिये तीन बरसके गुडसंग आदा खाणेसें कफका रोग मिटता है हरडेके संग खाणेसे पित्तका रोग मिटता है सूंठके संग खाणेसें वायूका नास करता है तीनवर्ष पीछै गुडका गुण कम हो जाता है पुराणा तीन बरसका गुड गोला ववासीर अरुचि क्षय खास छातीकाजखम क्षीणता पांडु किसीअनुपान यादवायोंके संग फायदा करता हैं ऊपर लिखे रोगोंपर, नयागुड कफ श्वास खास कृमि तथा दाहकूं पैदा करे है गरमी पित्तकी तासीरवालेने नयागुड कभी खाणा नही चहिये, चूरमा लापसी सीरा वगेरे चीजोमें गिमार लोग गुड बहोत वापरते हैं मजूर लोग रोटीवगेरेमें हमेसां गुड खाया करते है ये गुड साल उतार होणा नही तो तनदुरुस्तीमे खलल पोहचाये विगर नही रहेगा चूरमा लपसी वगेरे गुडके पदार्थोमें घी बहोत होणेसे गरमी बहोत नही करता दुबले बदनवाला सूकगयाहोय जखम

लेकिन इसमें छोटे जीव होते है इसवास्ते वड पींपर पीलू ढालू तथा गूलर वगेरे पांच दर खतोकेफल अभक्ष जैन सिद्धांत लिखता है रोगादि कारणमें यतना लिखा है असल अंजीर कावल मेंहोतेहे मुसलमीनहकीम बेमारोंकों वहोत खिलाते हैं (कची अमली) अमलीके फल अभक्ष है सदा छोडणेलायक है रोगकर्त्ता है रक्तपित्त आमके तथा रोगकूं पैदा करता है (पकी अमली) वायू रोगमें शूल रोगमें फायदे वंद है वहोत ठंडी है इस वास्ते सांधोंकों पकडे है नसोकों ढीला करे है इसवास्ते हमेस खाणी अछी नहीं मधरास द्रविडदेस कर्णाटकदेश तैलगदेसवाले इसका कट्ट मिरची मसाला तूरकीदालकापाणी चावलोंका मांड डालकर गरमपकाकर भातके संग नित्य दोनों वखत खाते है मावरा पडणेसें गुजराती तथा गरम मुलकोंमें गरम ऋतुमें लोक दालमें सागमें और गुजराती लोक गुड डालके हमेस इसकी कढी वनाकर खाते है वेमारलोकभी हैदरावादमे इमलीका कट्ट खाते हैं लेकिन एसा निडर होकर अमली जादा खाणा अछा नहीं है ऋतु तासीर और रोग और अनुपानका विचार कर वरतणा अछा है, क्योंके नालक वचन है, गया मरदजो खाई खटाई, गईनारजो खाई मिठाई, गईहाटजहां मंडी हथाई, गया वृक्ष जहां वुगला वैठा गया घर जहां मोडा पैठा, नई अमलीसें एकवरसकी पुराणीइमली अछी उसकेभी निमक लगाकर रखणा चहिये (नालेर) वहोत मीठा चिकणा हृदयकूं हितकर पुष्ट वस्ति सोधक रक्तपित्तहर गरमीपारेवगेरेकी तथा आम्लपित्तमें इसका पाणी तथा नालिकेर खंडपाक वहोत फायदेवंद है और वीर्यवर्द्धक है (सकर टेटी) मीठे काचर खट्टेकाचर इयभी एक ककडीकी जात है नदीकी रेतमें पके है (खरवुजा) गुजरातमें सकर टेटी कहते हैं ये स्वादमें मीठा होता हे इसका लोकपनावनाते है गरम होता है हेजा चलता है उस दिनोंमें इसकु विलकुल खाणा नहीं सुणा है खरवूजेकापना और चावलसंग खाते जो गुचलका आ जावे तो प्राणी मर जाता है कुछ इलाजभी नहीं है जमीनखेतोंमेंपके सो ककडी और काचर कहलाता है गुजरातवाले कोठींवडा कहते है इसकुं सुकाकर खेल रेवणाते है काचरोकुं सुकाकर रखते है स्वादिष्ट तो होता हे लोकवहोत खातेभी है लेकिन् गुणोमे तो सवसे हलके दरजेके फल ककडी और काचर है क्योंके तीनों दोषोंकों विगाडता है कचे वायु कफ करते हैं पकेवाद तो जादाही कफ वायुकों विगाडते है तरवूज मतीरा इसीदरजे गुणमें है अभ्रक पारदभस्म सूवर्णभस्म इन तीनोंको ककाराष्टक खराव कर डालता है. कोला १ केलकंद २ करोंदे ३ कांजी ४ कारेला ५ कैर ६ ककडी ७ कालिंगा ८ (विदाम चिरोंजी पिस्ता) ये तीनों मेवे हितकर है सव तरेके पाक लडु वगेरेमें लोक इनोंकों खाते है फल और वनस्पतीकी अनेक जाति है (प्रसिद्ध) विशेष वरतावेका गुण दोष लिखा है इतना जाण लेगा उसकी वुद्धि अनेक वस्तुओंपर प्रसार करेगी विदाम मगजकूं तरावट और पुष्ट करता है लेकिन कडवे (खारे) विदाम

जहरका असर करता है बालकके खाणेमें तीन च्यार कडवे विदाम आजाय तो पूरा जहरका असर करके प्राणोंकी हानी कर देता है इसवास्ते (चाख २ के) उपयोग करणा विदाम पचणेमें भारी है ॥

॥ उजाला ६ छट्ठा गुड-खांड-मिश्री ॥

सेलडीके रससें केइ पदार्थ बनते हैं जिसमेंसें गुड खांड मिश्री मुख्य पदार्थ है आगे तो सक्कर सांठे ऊखके रससेंही बणती थी लेकिन आजकल (पदार्थ विद्याके) सोधकोनें ताड फल खजूरादिक बहोत पदार्थोंसे सक्कर बणाणी सरू करी है इसवास्ते गुड खांडके अंदर बहोत तरेका भेल होके आता है उसकी फेर मिश्रीभी वैसीही बणणे लगी है व्यापार और खाणेके पदार्थोंमें फकत धनकी लालचसें एसा दगा होणा सरू भया है और ऐसे दगेकी भेलकी वस्तु जाहिरा बजारमें बिक रही है ऐसी चीजोंपर सरकारकूं बंदोबस्त और निगेदास्ती करणेकी जरूरी है के खाणेपीणेके पदार्थोंमे क्या क्या चीज मिलके आती है ये बात लोक नहीं जाणते हैं और प्रजाका बहोत लोक विचले दरजेके तथा गरीबी हालतमें हैं सो जो चीज सस्ती मिलती है वोही लेकर अपणा काम चलाते हैं लेकिन व्यापारकी हरीफाईसें एक दूसरेसे सस्तामालबनाणेकूं उसमें कितनीक चीजें नुकशानकारीभी मिला देतें हैं बजारमे हरसाल नई २ तरेके गुड खांड बनके आती है इसका सामान्य प्रजासें निश्चय होणा मुस्कल है के कोणसी सक्कर तथा मिश्री अछी है इसवास्ते जादा निश्चय और सुधारा तो जबी हो सकता है के देसी गुड खांडही व्यापारीवेचे और प्रजा वापरे अब इनोका सामान्य गुण दोष इहां लिखताहूं, नया गुड गरम तथा भारी होता है खून विकार तथा पित्त विकारकूं नुकशान करता है पुराणा गुड एक वरसके पीछे तीन वरसका बहोत अछा होता है, हलका अग्नि प्रदीपक और रसायणरूप है फीकापणा पांडू पित्त त्रिदोष और प्रमेहकूं मिटाता है दवायोंमें पुराणा गुड काम देता है सहत नहीं होय तो पुराणा गुड लेणा चहिये तीन वरसके गुडसंग आदा खाणेसे कफका रोग मिटता है हरडेके संग खाणेसे पित्तका रोग मिटता है सूंठके संग खाणेसें वायूका नास करता है तीनवर्ष पीछै गुडका गुण कम हो जाता है पुराणा तीन वरसका गुड गोला बवासीर अरुचि क्षय खास छातीकाजखम क्षीणता पांडु किसीअनुपान यादवायोंके संग फायदा करता हैं ऊपर लिखे रोगोंपर, नयागुड कफ श्वास खास कृमि तथा दाहकूं पैदा करे है गरमी पित्तकी तासीरवालेने नयागुड कभी खाणा नहीं चहिये, चूरमा लापसी सीरा वगेरे चीजोमें गिमार लोग गुड बहोत वापरते हैं मजूर लोग रोटीवगेरेमें हमेसां गुड खाया करते है ये गुड साल उतार होणा नहीं तो तनदुरुस्तीमें खलल पोहचाये विगर नहीं रहेगा चूरमा लपसी वगेरे गुडके पदार्थोंमें घी बहोत होणेसे गरमी बहोत नही करता दुबले बदनवाला सूकगयाहोय जखम

चोट लगी होय ववासीर श्वास मुर्छाकारोगी थकाभया रस्तेचलणेसें वहोत महनतका कामकियाहोय गिरणेसे पछाट लगी होय जिसकूं कोइ किसमका मैणा दिया होय उससें मनमें फिकर होय, नसा,हर किसमकाजहर चढा होय मूत्रकृच्छ पथरीकारोगहोय, जीर्णज्वरसेंक्षीणहोय विषमज्वरलगाहोय तो पींपर हरड सूंठ अजमोद इनोकेसंग एकके अथवा चारोंके पुराणे गुड संग दोनों ज्वर मिटता है रक्तपित्त और दाह रोगीकूं भिगाकर सरवतपिलाणा क्षय और खूनविगाड शिलाजीत गिलोयसत अथवा गिलोय कूं घोट स्वरससंग पुराणा गुड ऊपर लिखे सर्व रोगोंमे अछा है पुराणा गुड वडा गुणकारी और अनुपान है गुड मेवाडका अछा एसाही सहतका गुण पुराणे साल उतार तीनवर्ष-तकका समझणा (खांड) सक्करसुपेद पित्तकूं मिटावै ठंडी वलदेनेवाली आंखोकों वनारसी खांड वहोत फायदेवंद वीर्यवर्धकहै खांड कफकरताहै कच्चीखांडकूं जैनसिद्धांतमें अभक्ष्य लिखीहै इसवास्ते कफकेरोगमें रसविकारसेंभये सोजेमें ज्वरमें आमवातमें इत्यादि केइयक रोगोंमें नुकसान करता है वरतावेमें वूरालेणा मिश्री; कंद,मधुर ठंडी ताकतवर वीर्यवर्धक मलशुद्धकरता लेकिन कफकरता क्षय सूकीखासी प्यासकूं मिटावे है भ्रांति दाह श्रम ववासीर जहरकाविकार मोह मूर्छा मद श्वास उलटी अतिसार खूनविकार तथा पित्तकेविकारोंकों मिश्री कंद गुणकारी है, गुडमें खार, वगेरे पदार्थोंका भेल रहता है खांडमे मैल रहता है लेकिन् मिश्री कंद वहोत दरजे साफ होता है मिश्री कालपीकूं लोक ऊमदा वतलाते हैं लेकिन मरुस्थल वीकानेरवाले हलवाइ जैसी मिश्री सिट्टेदार कूंजा वनाते है एसी मिश्री च्यारो खूंटमें नहीं है मिष्टान्नमें डालणेकूं मिश्री उत्तम है खांड मध्यम है गुड कनिष्ठ है ये तीनों इक्षुरसकी होणी, विलायतीखांड मध्यम और औगुणकारी आर्योंके खाणे लायक नहीं है आर्यका अर्थ सरल स्वभावी मांस मदिराके त्यागी जिनोके रहणेका स्थान सो आर्यावर्त्त कहलाता है इस भरतक्षेत्रमें साढे-पचीस देश आर्योंके हैं गंगासिंधुकेवीच उत्तरमें पिसोर दक्षणमें समुद्रका किनारा तीर्थंकर २४ चक्रवर्त्ति १२ नवनारायण ९ नववलदेव ९ नव प्रतिनारायण ९ इग्यारेरुद्र ११ नव-नारद ९ इत्यादि उत्तमपुरुष इसी आर्यावर्तमें जन्म लेते हैं,मुक्तितो सव मनुष्यक्षेत्रोंसें प्राणी जाता है, लंदन अमेरिकातक जैनसूत्रकार भरतक्षेत्र मानता है, अमेरिकाकूं जैनरामचरित्रमें पाताललंका मानी है विद्याधरोकी वस्ती इहां है रावणने जन्म उहांही लिया था ॥

॥ तेल ॥

तेल वहोत जातका है लेकिन खाणेमे तिलीका मारवाडमें, सरसूंका गुजरात, वंगाले, वगेरेमें, तेल खाणेमें वापरणेसें, जलाणेमें या शरीरके मसलाणेमें जादा उपयोग देता है उत्तम खानपानके करणेवाले लोक तेलकूं विलकुल खाते नहीं, घी जैसे उत्तम पदार्थकूं छोडके बुद्धिकूं कमकरणेवाला तेलकूं खाणामी अछा नहीं है लेकिन तेल सस्ता और

मोठ गुवारफली चिणे वगेरे-वायडी चीजोंमें मिरच मसालोसें लज्जितदार होणेसें मोठ भुजिये चणेकीसेव तो सब मुलकोंमें गरीब और तालेवर जगे २ तेलकी वहोत खाते है मारवाडमें तो बीकानेरवाले वहोत तेल खाते है गुजरातमें मिठाईतक तेलकें वंगालियोका तो जीवनही तेल बण रहाहै, जोधपुर मेंवाड नागोर मेडताआदि वाकीके इकीस रजवाडोमें प्रजा कम तेल खातीहै इसवास्ते तेलका खास गुणदोष जाणनेकी जरूरी है मसलाणेसे शरीरकूं मजवूत करे है वलवर्धक है चमडीका रंग अच्छ करेहै वायुकूं मिटाता है पुष्टिदेता है, अग्निप्रदीप्त करे है, शरीरमें जलदी प्रवेशकरता है, कृमिकूं दूर करता है कानकीशूल योनिशूल शिरकीशूल शरीरकूं हलका करता है, हड्डीतूटे भागे कचराया सुरडाया दवाभया कटाभया पछाडा भया जलेभयेकूं तिलका तेल अछा करे है ये विशेष गुण कल्पसूत्रमें तेलके मसलाणेमें लिखा है वोभी किसी औपधीके संग पकाभया होणा, खालीतेलमें इतना गुण नही है, गरमी पित्तवालेकूं ठंडी और खून साफ करणेवाली दवाइयां, कफ और वायुमें उष्ण कफकूं काटणेवाली दवायां होणा, नारायण लक्ष्मीविलास षटबिंदु चंदनादि लाक्षादि शतपक्क सहस्रपकादि अनेक पूर्वोक्तगुण इन तैलोंका है पिचकारी भीदी जाती है पीणेमें जैसें मालकांगणीका इस उपरांत गरीवलोक खाणेमें तलणेमें अनेक किस्म वघारमें वरते है कांनमें नाकमें डालते है, इस कामोमें तिलका तेल दुरस्त है, (अवगुण) सांधोंकों ढीला कर धातुओंकों नरमकर डालता है रक्तपित्तरोगकूं करता है शरीरके मसलाणेसें पूर्वोक्त फायदेवंद है, शरीर वाल चमडी तथा आंखोंकों फायदेवंद है लेकिन् तेलपेटमें तिल्लीका या सरसूंका खालीखाणेसें इनतीनोंकूं नुकशान करता है हेमंत और सिसिर रुतुमें वायुकी प्रकृतीवालेकूं सदा पथ्य है.

॥ निमक तथा खार ॥

खाण जमीनमेंसें पैदा होता खार लोक हमेस खाते है दक्षिण प्रांत देशतक लोक जो निमक खाते है वो दरियावके खारे जलसे जमाये जाता है सेंभरपडा सो सचलूण सेंभरमें क्यारे जमाये जाते हैं पंचपदरेका लूण, और निमकोसें श्रेष्ठ है, लूणकरणसर वीकानेरमेंभी लूण होता है इत्यादि स्थान निमक मारवाडमे है लेकिन सींध आदि देशोमें जमीनमें निमककी खाण है जिसमेंसें खोदके निकालते हैं वो सींधा निमक कहलाता है ये सब निमकोंसें उत्तम निमक है वैमारकों तथा धातुवेगेरे रस रसायण देवी इलाजोमें वैद्यलोक सींधा निमक वताया करते हैं बुद्धिवानलोक हमेस सींधा निमकही खाते है इंग्लंडसें लीवरपुल-साल्ट जो निमक आता है वो वहोत अछा डाकटरलोक वतलाते हैं खुराककी चीजोंमें निमक ये वडा जरूरीका पदार्थ है यहभी निश्चय हो चुका है निमक विगर अदमीकी जिंदगानी वहोत दिनोंतक नहीं रह सकती है दूधसे जो लोक वरसो गुजरान चलाते हैं उसका कारण एसा है के दूधमें खारका भाग चहिये जिसके लगवग

आया भया है खानपानमें निमक स्वाद और रुचि पैदा करे है हाडोंकों मजबूतकरता है निमकमें कितनेक अवगुणभी है निमकका अथवा खारका स्वभाव सडाणेका अथवा गालणेका है इसवास्ते प्रमाणसें जादा लेनेमें आवे तो शरीरकें धातुओंकों गलाकर विगाड देता है वहोतसें अदम्योंकों सोख पड जाता है सो भोजनकी चीजोंमें निमक जादा खाते हैं, गहुं वाजरीमें दूध वगेरे चीजोंमें कुदरती खार थोडा २ होताही है और दाल साग वगेरेमें जितना चहिये सो पूरा डालणेसें होता है अपणे लोकोंमे क्षारवाले पदार्थ जादा हमेसां खाणेमें आता है जैसें दाल साग चटणी राईता पापड आचार इन सबोंमें निमक है थोडा २ करतेभी जादा हो जाता है जादा खार निमक खाणेमें आजाता है तो सरीरमेंगरमी शरीरतूटना धातुगिरना वगेरे तुरत मालम देता है तापतिली वगेरे पेटकी गांठ मिटाणेकूं अनसमझु वैद्य बैमारोंकों जादा खार खिलाते हैं उसका नतीजा आगे बुरा मालम देता है मरदीपणा जाते रहता है उसमें मुख्यपणे जादा खार खाणेसेंही विगाड सिद्ध होता है खार जादा वीर्यका नास करता है इय बात हमेसां ध्यानमें रखणेकी है प्रमाणसर खाणा अति निमक अंधाकरदेता है कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है.

॥ दाल सागके मसाले ॥

जैसें २ प्राणियोंकी विषय वासना वधते चली उसकूं मिटाणे धातु पुष्टि तथा स्तंभनकी कितनीक नुकशानकारी दवाइयोंके उलटे सुलटे रस्ते लोक चढ रहे हैं सराप अफीम भांग माजम कोकिन इत्यादि औरभी कइ किस्मकी नुकशानकारी जहरी चीजोंकों खाते है ये सब जीवतव्यकी खरावीका निशान है, तैसेही हमेसाके खुराकमें तरे २ के उत्तेजक मसाला स्वादमें लोकोंका सत्यानास करणा सरू कर दिया है प्राचीन पंडित एसा कहतेहै जगतका वहोत सुधारा और हुन्नर कलाने लोकोंकूं दुर्वल और निसत्व गरीव कर डाला है अन्य देसांतरी द्रव्य लिये जा रहे है शरीरका वल जरूर प्राणियोंका घट गया इय तो वात सब सचीही मालम देती है लेकिन् इसतरे खानपानमें वहोत स्वादीपणा वेहद शोखीन पणेने वहोत खरावी कर डाली है और फेर होगा एसावी समझदार लोक विचारते हैं सादे खुराककी तारीफ अगले विद्वानोने तथा वर्त्तमांन विद्वानोने करी हैं लेकिन इस वातोकेतरफ थोडोंका ख्याल है रस्ता उलटा चलरहा है दाल चावल घी गहूं वाजरी जुवारकी रोटी घी मूंग मोठ तूरकी दाल धाणा हलदी जीरा निमक उनमान मुजव थोडी मिरच ये सामान्य खुराकका थोडासा नमूना है लेकिन् व्यसन स्वाद और सोख इसकूं थोडासा साहरा और मान मिलता है तवतो वेहद वढ जाता है और उनके करणेवालोंकों वडे चमके स्वादमें और शोपमें डूवा देते हैं इसकेसंग तीन चीजोंकी प्रत्यक्ष नुकशानी होती है धन जाय १ शरीर विगडे २ इजत कमाई और अमोलक वखत जाता है ३

मसालोंमें वापरणेमें वस्तुओं तनदुरस्त अदमीके हमेसकेवास्ते वणी भई नही है उसमेंके कितनेक पदार्थ इंद्रियोंकों वहकानेवाली उत्तेजक है शरीरके बेमारीमें दवाकी तोर युक्तिसें देणेमें आवे तो वो चीजें शरीरकूं फायदेवंद है जैसें इलायची वडी छोटी लोंग जीरा स्याहजीरा दालचीणी तेजपत्ता काली मिरच इत्यादि अलग २ दवाका कांम देती है और येही गरम मसाले हैं, हमेस खुराकमें गरम मसाला खाते हैं सो अच्छा नहीं है निजस्वभावकी जठराग्निकूं दुसरे मसालोंकी वनावटी गरमीसें वधाकर खुराक जादा खाणा विलकुल अछा नहीं इलाज और खुराक वोही अच्छा है के जिसका आखरी द-रजा अछा होय कोइ समेमेंभी विगाड नहिं करे ये वात वैद्य और सामान्य प्रजाकूं हमेस याद रखणेकी है इसवास्ते गरममसाला चमचमाटकरती चटणियां सव अदम्योंकों एक सदृश कभी हितकारक होती नहीं रुचिकूं जादा जाग्रत करे है जठराग्निकू जादा तेज करे है जिससें खाणेमें तो जादा आता है लेकिन् स्वाभाविक जठराग्नि कृत्रिम अग्निकूं होजरी पचा नहीं सकती जैसें एनजीनमे वोइलेरकूं जादाजोरमिलणेसें गाडियोंकों जोरसें तो चलाता है लेकिन वोइलरका माप और प्रमाणसें गरमी वढ जाती है तो वहोतभार खेंचता भया कभी फटभीजाता है जादा वोझा खेंचनेकूं वोइलरकूं जादा गरमीदेना ये नियम नही है लेकिन् जादावोझा खेंचणेकूं वडे एनजिन और वडा वोइलर जोडना यह तो नियम है जन्मसे छोटे कदवाला अदमी दिलमें एसा विचारे गरम मसाले या गरम दवासें जादा खुराक खाकर कदमें और ताकतमें वढजाउं इस समझसें ऐसें खुराक और दवासे असली निजताकतभी खो वैठता है जादा जोरके काम करणेकूं जैसा वडा एनजिन वडा वोइलेर वनाना पडता हैं तैसें जादा ताकत वढाणेकुं अदम्योंकों ब्रह्मचर्य व्रतपालणा उचित वर्त्तावसें चलता भया एकसे एक जादा ताकतवर वडे कदका संतान उत्पन्न करना चहिये ऐसें मनुष्योंको नकली उपचार करनेकी कोइ जरूरी नहीं रहती आर्यराजा राठोडवारे २ वर्ष दिल्लीमें वादशाह पास रहते थे ब्रह्मव्रत पालते और जव रुतुदान देतेथे तो केसरीसिंह पदमसिंह जेसे राठोड जैसिंघ कछावा, प्रतापसिंघ सिसोदिया, जैसे नरासिंह पैदा होते थे, खुराक इनोकी साधारण थी मगर वर्ताव ऊमदाथा, लोक समझेगें गरम मसालोंकी शास्त्र कारने विलकुल निंदाकीहै एसाभी मत समझणा जिस वातपर निपेध कियाहै उस वावतपर मनाई है स्याद्वादपक्ष हम जैन धर्मियोका है, अंगीकार इस पक्षसें करणा सो लिखते हैं वहोत वायुकी तासीर होय तव वायुकों शरीरमें वरावर रखणेवास्ते खुराककेसंग माफकसर गरम मसाला लेना तेसें गरीष्ट पदार्थ मिठाई वगैरे खाणेका होय उसके संगभी गरम म-साले चटणी खाणी चहिये सादे खुराकमे विशेपकी जरूरी नही, भारी पदार्थ पचाणे जो गरम मसाले मिरचोंकी चटणी खाणी वोभी उनमान मुजव, वहोतसे लोक तथा वुभुक्षत ब्राम्हणोको जव मिष्टान खानेकूं मिलता है तव एथी ओघडोकीतरे घरके हमेस खुराकसें

आया भया है खानपानमें निमक स्वाद और रुचि पैदा करे है हाडोंकों मजबूतकरता है निमकमें कितनेक अवगुणभी है निमकका अथवा खारका स्वभाव सडाणेका अथवा गालणेका है इसवास्ते प्रमाणसें जादा लेनेमें आवे तो शरीरकें धातुओंकों गलाकर विगाड देता है वहोतसें अदम्योंकों सोख पड जाता है सो भोजनकी चीजोंमें निमक जादा खाते हैं, गहुं वाजरीमें दूध वगेरे चीजोंमें कुदरती खार थोडा २ होताही है और दाल साग वगेरेमें जितना चहिये सो पूरा डालणेसें होता है अपणे लोकोंमे क्षारवाले पदार्थ जादा हमेसां खाणेमें आता है जैसें दाल साग चटणी राईता पापड आचार इन सबोंमें निमक है थोडा २ करतेभी जादा हो जाता है जादा खार निमक खाणेमें आजाता है तो सरीरमेंगरमी शरीरतूटना धातुगिरना वगेरे तुरत मालम देता है तापतिली वगेरे पेटकी गांठ मिटाणेकूं अनसमझु वैद्य बैमारोंकों जादा खार खिलाते हैं उसका नतीजा आगे बुरा मालम देता है मरदीपणा जाते रहता है उसमें मुख्यपणे जादा खार खाणेसेंही बिगाड सिद्ध होता है खार जादा वीर्यका नास करता है इय बात हमेसां ध्यानमें रखणेकी है प्रमाणसर खाणा अति निमक अंधाकरदेता है कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है.

॥ दाल सागके मसाले ॥

जैसें २ प्राणियोंकी विषय वासना वधते चली उसकूं मिटाणे धातु पुष्टि तथा स्तंभनकी कितनीक नुकशानकारी दवाइयोंके उलटे सुलटे रस्ते लोक चढ रहे हैं सराप अफीम भांग माजम कोकिन इत्यादि औरभी कइ किस्मकी नुकशानकारी जहरी चीजोंकों खाते है ये सब जीवतव्यकी खरावीका निशान है, तैसेही हमेसाके खुराकमें तरे २ के उत्तेजक मसाला स्वादमें लोकोंका सत्यानास करणा सरू कर दिया है प्राचीन पंडित एसा कहतेहै जगतका वहोत सुधारा और हुन्नर कलाने लोकोंकूं दुर्वल और निसत्व गरीव कर डाला है अन्य देसांतरी द्रव्य लिये जा रहे है शरीरका वल जरूर प्राणियोंका घट गया इय तो वात सब सचीही मालम देती है लेकिन् इसतरे खानपानमें वहोत स्वादीपणा वेहद शोखीन पणेने वहोत खरावी कर डाली है और फेर होगा एसावी समझदार लोक विचारते हैं सादे खुराककी तारीफ अगले विद्वानोने तथा वर्त्तमांन विद्वानोने करी हैं लेकिन इस वातेकितरफ थोडोंका ख्याल है रस्ता उलटा चलरहा है दाल चावल घी गहूं वाजरी जुवारकी रोटी घी मूंग मोठ तूरकी दाल धाणा हलदी जीरा निमक उनमान मुजव थोडी मिरच ये सामान्य खुराकका थोडासा नमूना है लेकिन् व्यसन स्वाद और सोख इसकूं थोडासा साहग और मान मिलता है तवतो वेहद वढ जाता है और उनके करणेवालोंकों वडे चमके स्वादमें और शोपमें डूवा देते हैं इसकेसंग तीन चीजोंकी प्रत्यक्ष नुकशानी होती है धन जाय १ शरीर विगडे २ इजत कमाई और अमोलक वखत जाता है ३

मसालोंमें वापरणेमें वस्तुओं तनदुरस्त अदमीके हमेसकेवास्ते वणी भई नही है उसमेंके कितनेक पदार्थ इंद्रियोंकों बहकानेवाली उत्तेजक है शरीरके बेमारीमें दवाकी तोर युक्तिसें देणेमें आवे तो वो चीजें शरीरकूं फायदेचंद है जैसें इलायची वडी छोटी लोंग जीरा स्याहजीरा दालचीणी तेजपत्ता काली मिरच इत्यादि अलग २ दवाका कांम देती है और येही गरम मसाले हैं, हमेस खुराकमें गरम मसाला खाते हैं सो अच्छा नहीं है निजस्वभावकी जठराग्निकूं दुसरे मसालोंकी बनावटी गरमीसें वधाकर खुराक जादा खाणा विलकुल अछा नहीं इलाज और खुराक वोही अच्छा है के जिसका आखरी दरजा अछा होय कोइ समेंमेंभी विगाड नहिं करे ये वात वैद्य और सामान्य प्रजाकूं हमेस याद रखणेकी है इसवास्ते गरममसाला चमचमाटकरती चटणियां सव अदम्योंकों एक सदृश कभी हितकारक होती नहीं रुचिकूं जादा जाग्रत करे है जठराग्निकू जादा तेज करे है जिससें खाणेमें तो जादा आता है लेकिन् स्वाभाविक जठराग्नि कृत्रिम अग्निकूं होजरी पचा नहीं सकती जैसें एनजीनमे वोइलेरकूं जादाजोरमिलणेसें गाडियोंकों जोरसें तो चलाता है लेकिन वोइलरका माप और प्रमाणसें गरमी वढ जाती है तो वहोतभार खेंचता भया कभी फटभीजाता है जादा वोझा खेंचनेकूं वोइलरकूं जादा गरमीदेना ये नियम नही है लेकिन् जादावोझा खेंचणेकूं वडे एनजिन और वडा वोइलर जोडना यह तो नियम है जन्मसे छोटे कदवाला अदमी दिलमें एसा विचारे गरम मसाले या गरम दवासें जादा खुराक खाकर कदमें और ताकतमें वढजाउं इस समझसें ऐसें खुराक और दवासे असली निजताकतभी खो वैठता है जादा जोरके काम करणेकूं जैसा वडा एनजिन वडा वोइलेर वनाना पडता हैं तैसें जादा ताकत वढाणेकुं अदम्योंकों ब्रह्मचर्य व्रतपालणा उचित वर्त्तावसें चलता भया एकसे एक जादा ताकतवर वडे कदका संतान उत्पन्न करना चहिये ऐसें मनुष्योंको नकली उपचार करनेकी कोइ जरूरी नहीं रहती आर्यराजा राठोडवारे २ वर्ष दिल्लीमें वादशाह पास रहते थे ब्रह्मव्रत पालते और जव ऋतुदान देतेथे तो केसरीसिंह पदमसिंह जेसे राठोड जैसिंघ कछावा, प्रतापसिंघ सिसोदिया, जैसे नरासिंह पैदा होते थे, खुराक इनोकी साधारण थी मगर वर्ताव ऊमदाथा, लोक समझेगें गरम मसालोंकी शास्त्र कारने विलकुल निंदाकीहै एसाभी मत समझणा जिस वातपर निषेध कियाहै उस वावतपर मनाई है स्याद्वादपक्ष हम जैन धर्मियोंका है, अंगीकार इस पक्षसें करणा सो लिखते हैं वहोत वायुकी तासीर होय तव वायुकों शरीरमे वरावर रखणेवास्ते खुराककेसंग माफकसर गरम मसाला लेना तेसें गरीष्ट पदार्थ मिठाई वगैरे खाणेका होय उसके संगभी गरम मसाले चटणी खाणी चहिये सादे खुराकमे विशेषकी जरूरी नहीं, भारी पदार्थ पचाणे जो गरम मसाले मिरचोंकी चटणी खाणी वोभी उनमान मुजव, वहोतसे लोक तथा वुभुक्षत ब्राम्हणोको जव मिष्टान खानेकूं मिलता है तव एधी ओघडोकीतरे घरके हमेस खुराकसें

दूणातिगुना माल खा जाते हैं ऊपरसें चमचमाट साग दाल अचार चटणीभी पधराते है उससे पाचन शक्ति बरावर रहणी मुसकिल है अधसेर अनाज अथवा तरावट माल खाणे-वाला एक १ रुपे भर गरम मसाला खाकर एसा हिसाब लगावे की २ भर गरम मसालेंसे सेर माल हजम करलुंगा एसें पांच रुपये भरसें पांच सेर नही तो तीन सेर तो जरूर हजम करलूंगा ये बिरासीका हिसाब खुराकमें काम आवेगा नही अजीर्णहोकर मरणा पडेगा मतलब इतनाही है साग दालमें बहोत मिरच अंबली अचार चटणी और गरम मसाला खाणेका रिवाज बहोत बढता जा रहा है इससें रस बिगडता है खून गरम हो जाता है पित्तबिगडके रस्ता छोड देता है इसीसे तरे २ के रोगोका जन्म होता है उस-का वर्णन कहांतक करें बहोत गरम प्रकृतीवालेकूं सादामसाला धणा जीरा सिंधा नि-मक और सबकूं माफगत आवै जैसा मसाला है चरकासकूं पथ्य काली मिरच है लोकोंमें लाल मिरच खाणेका बहोत प्रचार बढगया है ये चीज बहोत नुकशान कर्ता है बीका-नेरके ओसवाल और तेलंगदेसवाले जितना मिरच खाते हैं एसा कोइ बिरली प्रजा खाती होगी लेकिन् ओसवाल घी तो खूब डालते हैं आज कल तो ओसवालोके बीकानेरमें प्राये तिलोकचंदजीका बरतावा बहोत है तैलिंग तो चावल और अमली मिरचोकी चटणी लूखीही खाते हैं मलेबारवाले कच्चे नारेल और थोडी मिरचोंकी चट-णी भात संग खाते घीका और खुदाका तोमूं किसने देखा है इसहालतमें गरीब लोक जिंदगानी गुजारते हैं चरकासकी चाहवालोनें मिरचकूं छोड आदा काली मिरच सूंठ पींपर बरतणा शूद्रोके बरतावमें लसण देखणेमें आता है जिनोकूं लाल मिरचका बहोत मावरा पडा है उन लोकोनें जैपुर जिलेकी लाल मिरच बीज निकाल रातकूं एक दोय जलमें भिगाकर पीस घीमें सेक फेर थोडी बरतणी अथवा घीमे कूट थोडी खाणी खट्टा रसका तोड निमक है निमकका तोड खट्टा रस है खट्टे रसमें नींबू अमचूर कोकम खाणे योग्य है लेकिन प्रकृतीकूं माने तो खाणी बघार देणेमें जीरा हींग राई मेथी मुख्य बस्तुओं है वायु कफकी प्रकृतीमें अछी है.

आचार—राईता

आचार और राईता पाचन शक्तिकूं तेज करता है लेकिन् जितने पदार्थ पाचन शक्तिकूं बधावे है और जलदहे इन सबोंका जो प्रमाण बढ जाय तो येही पाचन शक्तिकूं उलटा बिगाड देते हैं, दुनिया निरविवेकी समझती नही इनही चीजोंसें तो पाचन शक्ति बिगडती है और फेर पाचन शक्ति सुधारणेकूं दुनिया इनही चीजोंकों सेवन करती है आचार राईता तेज राई निमक जादा मिरच बगैरे तेज पदार्थोंसे जीभकूं आदमी तद्द बूसकर देते हैं ये चीज कम अथवा मिठाई तरमालके संगही खाणा हमेस नहीं खाणा खूनबिगडजाता है खूनबिगडके मंदाग्नि पडकर अनेक रोग शरीरमें जन्म लेता है

चके रहो मारवाडी गुजराती वगैरे इनही बातोसें जादा बेमार होते है, मिरचलाल आगरे दिल्लीसें लेकर ब्रम्हाके देसतक लोक नहीं खाते, बंगाल सरसूंका तेल और मछी संबंधी कुपथ्य हमेस खाते है, उनोमें वैष्णव मांस मच्छी नहिं खाते हैं

चा

आजकल घरघरमें चाहकी उकाली चल रही है अपने देशमें चा चीनसें आती है कितनेक बरससें नीलगिरि तथा आसाम जिल्लेमेभी चा पैदा होणे लगी है अपने देशकी चा उतरते दरजे बजारमें विकती है चीन जेसी चा कहांइभी पैदा होती नहीं रतलका आठ आनासें सो रुपे रतल तक एसी कीमती और इससे जादा कीमतकीभी चीन देशमें पैदा होती है एसें अबल दरजेकी चा बजारमें विकते देखाभी नहीं और लेभी कौन इहां तो सस्तादाम और चोखा कामहोना सो तो वणनामुसकिल है चा दर खतके सूकाये भये पत्ते है मेंने सेंतालीसकें फागुणमे शिखर गिरि पहाडपर ये दरखतोके छोटे २ झुंम देखेथे सूकेवाद इन पत्तोंकों गरम करते हैं तब उसकी सुगंध और स्वाद अछा होता है ये एक थोडे नसेकी चीज है इसवास्ते हमेस पीणेसें दुसरें नसोंकी चीजे अफीम गांजा सुलफा तमाखू सराप भंग धतुरेकी तरे जादा नुकसान नही करती है चाहमें सइकडेके हिसाब गुण करनेवाला भाग १ से ६ तक होता है सबसे हलकी चा में १ वधियासे वधियामें ६ पोष्टिक तत्व हे, सइकडे में १५ भाग और तत्वहे, कबजी करनेवाला तत्व बहोत थोडा है, काली और हरी चा एकही दरखतकी होती है पीछे बनावटी रंगमें फेरफार होता है चाहके ताजे पत्तोंकूं गरम कढाइपर अथवा पाणीकी वाफसे सूकाय गरम करनेसें वो रंगमे काली अथवा हरी होती है लेकिन हरी चाहकूं रंग देनेवास्ते नीला थोथा अथवा प्रश्यन ब्लू नामकी जहरी वस्तु किसी बखत लोक देते हैं उसका असर बहोत खराब होता है चा वजनमें बहोत थोडी पीणेसें शरीरमें सुस्ती पैदा होती है और थोडी नीद लाती है और जादा वजनमें पीणेसें अंगमें गरमी और हुसियारी आती है नींद आती होय सोभी चली जाती है नींद रोकनेकों कितनेक लोक रातकूं चा पीते है उससें नीदतो नही आती लेकिन बेचैनी पैदा होती है नींद रोकणेकों जो रातकूं वेर २ चाह पीते है और नींद रोकते है इसमें मगजकूं नुकसान पोहचता है जो अदमी अछा ताकतवाला खुराक (टेमोंटेंम) खाते हैं वोलोक प्रमाण मुजब चाह पिये तो कुछ नुकसान नही लेकिन हलका और थोडा खानेवाले अर्थात् गरीब अदमियोंनें थोडी चाह(जो थोडी तेज होय सो)पीणी क्यों के हलके खुराक वालोकों तेज चाह धीमें २ नुकशान करती है बहोत चा पीणेसें मगज तथा मगजके तंतुओंको थकेला चढता है निर्बलपणेसें भमल भ्रांति हो जाती है लोक कहते हैं चा खून जला देती है ये बात कुछ सचभी हैं चा दूधके संग पीणी दूधसें चाहका कैफ याने नसा कम होता है और पोषण मिलता है कितनेक अदमी

दूणातिगुना माल खा जाते हैं ऊपरसें चमचमाट साग दाल अचार चटणीभी पधराते है उससे पाचन शक्ति बराबर रहणी मुसकिल है अधसेर अनाज अथवा तरावट माल खाणे-वाला एक १ रुपे भर गरम मसाला खाकर एसा हिसाब लगावे की २ भर गरम मसालेंसे सेर माल हजम करलुंगा एसें पांच रुपये भरसें पांच सेर नही तो तीन सेर तो जरूर हजम करलूंगा ये त्रिरासीका हिसाब खुराकमें काम आवेगा नही अजीर्णहोकर मरणा पडेगा मतलब इतनाही है साग दालमें बहोत मिरच अंबली अचार चटणी और गरम मसाला खाणेका रिवाज बहोत बढता जा रहा है इससें रस बिगडता है खून गरम हो जाता है पित्तबिगडके रस्ता छोड देता है इसीसे तरे २ के रोगोका जन्म होता है उस-का वर्णन कहांतक करें बहोत गरम प्रकृतीवालेकूं सादामसाला धणा जीरा सिंधा नि-मक और सबकूं माफगत आवै जैसा मसाला है चरकासकूं पथ्य काली मिरच है लोकोंमें लाल मिरच खाणेका बहोत प्रचार बढगया है ये चीज बहोत नुकशान कर्ता है बीका-नेरके ओसवाल और तेलंगदेसवाले जितना मिरच खाते हैं एसा कोइ बिरली प्रजा खाती होगी लेकिन् ओसवाल घी तो खूब डालते हैं आज कल तो ओसवालोके बीकानेरमें आये तिलोकचंदजीका बरतावा बहोत है तैलिंग तो चावल और अमली मिरचोकी चटणी लूखीही खाते हैं मलेबारवाले कच्चे नारेल और थोडी मिरचोंकी चट-णी भात संग खाते घीका और खुदाका तोमूं किसने देखा है इसहालतमें गरीब लोक जिंदगानी गुजारते हैं चरकासकी चाहवालोनें मिरचकूं छोड आदा काली मिरच सूंठ पींपर बरतणा शूद्रोके बरतावमें लसण देखणेमें आता है जिनोकूं लाल मिरचका बहोत मावरा पडा है उन लोकोनें जैपुर जिलेकी लाल मिरच बीज निकाल रातकूं एक दोय जलमें भिगाकर पीस घीमें सेक फेर थोडी बरतणी अथवा घीमे कूट थोडी खाणी खट्टा रसका तोड निमक है निमकका तोड खट्टा रस है खट्टे रसमें नींबू अमचूर कोकम खाणे योग्य है लेकिन प्रकृतीकूं माने तो खाणी बघार देणेमें जीरा हींग राई मेथी मुख्य वस्तुओं है वायु कफकी प्रकृतीमें अछी है.

आचार—राईता

आचार और राईता पाचन शक्तिकूं तेज करता है लेकिन् जितने पदार्थ पाचन शक्तिकूं बधावे है और जलदहे इन सबोंका जो प्रमाण बढ जाय तो येही पाचन शक्तिकूं उलटा बिगाड देते हैं, दुनिया निरविवेकी समझती नही इनही चीजोंसें तो पाचन शक्ति बिगडती है और फेर पाचन शक्ति सुधारणेकूं दुनिया इनही चीजोंकों सेवन करती है आचार राईता तेज राई निमक जादा मिरच बगैरे तेज पदार्थोंसे जीभकूं आदमी तह चूककर देते हैं ये चीज कम अथवा मिठाई तरमालके संगही खाणा हमेस नहीं खाणा खूनबिगडजाता है खूनबिगडके मंदाग्नि पडकर अनेक रोग शरीरमें जन्म लेता है

वचके रहो मारवाडी गुजराती वगैरे इनही वातोंसें जादा वेमार होते है, मिरचलाल आगरे दिल्लीसें लेकर ब्रम्हाके देसतक लोक नहीं खाते, वंगाल सरसूंका तेल और मछी संवंधी कुपथ्य हमेस खाते है, उनोमें वैष्णव मांस मच्छी नहिं खाते हैं

चा

आजकल घरघरमें चाहकी उकाली चल रही है अपने देशमें चा चीनसें आती है कितनेक वरससें नीलगिरि तथा आसाम जिल्लेमेभी चा पैदा होणे लगी है अपने देशकी चा उतरते दरजे वजारमें विकती है चीन जेसी चा कहांइभी पैदा होती नहीं रतलका आठ आनासें सो रुपे रतल तक एसी कीमती और इससे जादा कीमतकीभी चीन देशमें पैदा होती है एसें अवल दरजेकी चा वजारमें विकते देखाभी नहीं और लेभी कौन इहां तो सस्तादाम और चोखा कामहोना सो तो वणनामुसकिल है चा दर खतके सूकाये भये पत्ते है मेंने सेंतालीसकें फागुणमे शिखर गिरि पहाडपर ये दरखतोके छोटे २ झुंम देखेथे सूकेवाद इन पत्तोंकों गरम करते हैं तव उसकी सुगंध और स्वाद अछा होता है ये एक थोडे नसेकी चीज है इसवास्ते हमेस पीणेसें दुसरें नसोंकी चीजे अफीम गांजा सुलफा तमाखू सराप भंग धतुरेकी तरे जादा नुकसान नही करती है चाहमें सइकडेके हिसाव गुण करनेवाला भाग १ से ६ तक होता है सवसे हलकी चा में १ वधियासे वधियामें ६ पोष्टिक तत्व हे, सइकडे में १५ भाग और तत्वहे, कवजी करनेवाला तत्व वहोत थोडा है, काली और हरी चा एकही दरखतकी होती है पीछे वनावटी रंगमें फेरफार होता है चाहके ताजे पत्तोंकूं गरम कढाइपर अथवा पाणीकी वाफसे सूकाय गरम करनेसें वो रंगमे काली अथवा हरी होती है लेकिन हरी चाहकूं रंग देनेवास्ते नीला थोथा अथवा प्रश्यन ब्लू नामकी जहरी वस्तु किसी वखत लोक देते हैं उसका असर वहोत खराव होता है चा वजनमें वहोत थोडी पीणेसें शरीरमें सुस्ती पैदा होती है और थोडी नींद लाती है और जादा वजनमें पीणेसें अंगमें गरमी और हुसियारी आती है नींद आती होय सोभी चली जाती है नींद रोकनेकों कितनेक लोक रातकूं चा पीते है उससें नीदतो नहीं आती लेकिन वेचैनी पैदा होती है नींद रोकणेकों जो रातकूं वेर २ चाह पीते है और नींद रोकते है इसमें मगजकूं नुकसान पोहचता है जो अदमी अछा ताकतवाला खुराक (टेमोंटेम) खाते हैं वोलोक प्रमाण मुजव चाह पिये तो कुछ नुकसान नही लेकिन हलका और थोडा खानेवाले अर्थात् गरीव अदमियोनें थोडी चाह(जो थोडी तेज होय सो)पीणी क्यों के हलके खुराक वालोंकों तेज चाह धीमें २ नुकशान करती है वहोत चा पीणेसें मगज तथा मगजके तंतुओंको थकेला चढता है निर्वलपणेसें भमल भ्रांति हो जाती है लोक कहते हैं चा खून जला देती है ये वात कुछ सचभी हैं चा दूधके संग पीणी दूधसें चाहका कैफ याने नसा कम होता है और पोषण मिलता है कितनेक अदमी

दूणातिगुना माल खा जाते हैं ऊपरसें चमचमाट साग दाल अचार चटणीभी पधराते है उससे पाचन शक्ति बरावर रहणी मुसकिल है अधसेर अनाज अथवा तरावट माल खाणे-वाला एक १ रुपे भर गरम मसाला खाकर एसा हिसाब लगावे की २ भर गरम मसालेंसे सेर माल हजम करलुंगा एसें पांच रुपये भरसें पांच सेर नही तो तीन सेर तो जरूर हजम करलूंगा ये त्रिरासीका हिसाब खुराकमें काम आवेगा नही अजीर्णहोकर मरणा पडेगा मतलब इतनाही है साग दालमें बहोत मिरच अंबली अचार चटणी और गरम मसाला खाणेका रिवाज बहोत बढता जा रहा है इससें रस बिगडता है खून गरम हो जाता है पित्तविगडके रस्ता छोड देता है इसीसे तरे २ के रोगोका जन्म होता है उस-का वर्णन कहांतक करें बहोत गरम प्रकृतीवालेकूं सादामसाला धणा जीरा सिंधा नि-मक और सबकूं माफगत आवै जैसा मसाला है चरकासकूं पथ्य काली मिरच है लोकोंमें लाल मिरच खाणेका बहोत प्रचार बढगया है ये चीज बहोत नुकशान कर्ता है बीका-नेरके ओसवाल और तेलंगदेसवाले जितना मिरच खाते हैं एसा कोइ विरली प्रजा खाती होगी लेकिन् ओसवाल घी तो खूब डालते हैं आज कल तो ओसवालोंके बीकानेरमें आये तिलोकचंदजीका बरतावा बहोत है तैलिंग तो चावल और अमली मिरचोकी चटणी लूखीही खाते हैं मलेबारवाले कचे नारेल और थोडी मिरचोंकी चट-णी भात संग खाते घीका और खुदाका तोमूं किसने देखा है इसहालतमें गरीब लोक जिंदगानी गुजारते हैं चरकासकी चाहवालोनें मिरचकूं छोड आदा काली मिरच सूंठ पीपर बरतणा शूद्रोके बरतावमें लसण देखणेमें आता है जिनोकूं लाल मिरचका बहोत मावरा पडा है उन लोकोनें जैपुर जिलेकी लाल मिरच बीज निकाल रातकूं एक दोय जलमें भिगाकर पीस घीमें सेक फेर थोडी बरतणी अथवा घीमे कूट थोडी खाणी खट्टा रसका तोड निमक है निमकका तोड खट्टा रस है खट्टे रसमें नींबू अमचूर कोकम खाणे योग्य है लेकिन प्रकृतीकूं माने तो खाणी बघार देणेमें जीरा हींग राई मेथी मुख्य बस्तुओं है वायु कफकी प्रकृतीमें अछी है.

आचार—राईता

आचार और राईता पाचन शक्तिकूं तेज करता है लेकिन् जितने पदार्थ पाचन शक्तिकूं बधावे है और जलदहे इन सबोंका जो प्रमाण बढ जाय तो येही पाचन शक्तिकूं उलटा बिगाड देते हैं, दुनिया निरविवेकी समझती नही इनही चीजोंसें तो पाचन शक्ति बिगडती है और फेर पाचन शक्ति सुधारणेकूं दुनिया इनही चीजोंकों सेवन करती है आचार राईता तेज गई निमक जादा मिरच बगैरे तेज पदार्थोंसे जीभकूं आदमी तह दूबकर देते हैं ये चीज कम अथवा मिठाई तरमालके संगही खाणा हमेस नहीं खाणा खूनबिगडजाता है खूनबिगडके मंदाग्नि पडकर अनेक रोग शरीरमें जन्म लेता है

लाचारीसेंभी लोक लेते है जैसें संग्रहणीमे सेकी भांग या पुराणा अफीम खासीके रोगमें, निजुलके दरदमें तमाखूसूंघणा इत्यादि समझना तैसें चा और काफी माफकसर(युक्तिसें अपनी तासीर मुजब जो)पीते है उनकूं फायदा देता है, सात व्यसन जैनसूत्रकारने बडे बताये है वो इस भव परभव दोनों विगाड देते हैं जैसें जूवा तो सात व्यसनोंका राजा १ चोरी २ परस्त्रीगमन ३ वेश्यागमन ४ मदिरा नसा पीना ५ मांस खाना ६ सिकार खेलना ७ इन सातोंसें बचे सो जगतमें धन्य है छोटे २ इसके अंतर्गत औरभी बहोत है जूवा कोडीका तो नहीं खेलें अनेक तरेका फाटका करे १ चीजोंमें नई पुराणी खोटे तोल दगाबाजी ठगाई ये सब चोरी है २ परस्त्री टाल दासीके गमन करे ३ और अनेक तरेके नसा करे ४ घरका असबाबभी बेचै लेकिन मोल मंगाकर हमेस मिठाई खावे ५ रातकूं खाये बिगर चैन नही पडे ६ सच नहीं बोले ७ ये सब जिनोंकों व्यसन पड जाते हैं वो बरबाद सब तरेसें होते है फिर छूटनाभी मुसकल है(दुहा)डाकण मंत्र अफीमरस, तस्करने जूआ, परघर रींझींकामणी, येछूटसी मूंआ ॥ १ काफीके भूकेकी थेली बणाकर तपेलीके उकलते जलमे पांच सात मिंट रखकर उतारणेसें काफी तइयार होती है. चा तथा काफीमें बहोत मीठा डालणेसे निर्बल कोठेवालेकों जरूर नुकसान करती है. (कारण) विशेष पीणेमें ये दोनुं चीज आवे तो थोडा मीठा अछा है, काफीके पाणीमें चोथा भाग दूध डालना इन दोनो चीजोंकों गरम पीनेसै पाचनशक्ति कम पडती है धातूमें भी नुकसान होता है अपणे गरम देशमें काफी गरमी पैदा कर नींदका नास करती है इसवास्ते रातकूं पीनी नहीं फजरका वखत पीणेका है,किसीने जहर खाया होय तो उसकूं नींद नहीं लेना चाहिये इसवास्ते जाग्रत रखणेकूं वेर २ काफी पिलाया करते हैं १ बहोत जाडे शरीरवाला अथवा बहोत खाणेवाला चा और काफी पीणी अछी है २ दुबले अदमी और निर्बल अदमी बर्णे जहांतक चा काफी पीणी नहीं, बहोत तेजभी पीणी नहीं, अछी तरे दूध मिलाकर पीणा ३ हलका लुखा सूका खुराक खाणेवालेनें और जो उपवास आंबिल एकासना उनोदरी वगेरे तपस्या करनेवालोने चा काफी पीणी नहीं पीणी तो थोडी हलकी पीणी ४ फजरमें पुडी वगेरे नास्तेके सग चाकाफी पीणी अछी है भोजन पेटभर किया पीछे पांच चार घंटे बीते बिगर पीना नहीं ५ निर्बल कोठेवालेनें बहोत मीठी बहोत सखत उकाली भई अथवा गरमागरम पीनी नहीं थोडा मीठा और दूधमिलाकर कूएके जल जैसी गरम पीनेसें फायदा तासीर मुजब है ॥

॥ उजाला (७ मां) पथ्यापथ्य वर्ग ॥

खानपानकी कितनीक चीजें तनदुरस्त अदम्योंकों थोडासा बिगाड बाकी सर्व ऋतूमें और सब देसोमें अनुकूल आता है (२) कितनीक चीजें एककी तासीरकूं माफगत, दूसरे की तासीरकूं नामाफगत, एक मोसममें अनुकूल, दुसरी मोसममें प्रतिकूल, तैसेंही एक

भोजनके संग चाह पीते हैं उससें पाचन शक्तिकूं वडी हरकत पहुंचती है भोजनपर तीन चार घंटे वीत जाय पीछे चा पीणी अछी हैं क्योंके चा पित्तकूं वधाणे वाली है इसवास्ते तीन चार घटे वाद जो भोजनका भाग पचना वाकी रह गया होय वो उसकूं पचाकर नीचे ऊतारता है चा मे थोडासा गुण है सो होजरीकूं तेज करता है पाचन शक्ति तथा रुचिकूं पैदा करेहे चमडी तथा मूत्राशय ऊपर क्रिया कर पसीना तथा पैसाव खुलासा लाता है जिससें खूनपर कुछ अछी असर होती होगी नरमभये जुस्सोंकों जाग्रतकर थाकेला ऊतारता है ये चाका फायदा है लेकिन उसमें नसा है जिससें तनदुरस्तीकों खलल पोहचाता है जो चाकूं जादा देर उकाले तव पत्तोंका जादा कस निकले तो चा जादा नुकसान करती है इसवास्ते जल उकला और चाके पत्ते डाल चादाणी ढक देणा दोय तीन मिंनटसें जादा चूलेपर नहीं रखणा जादा उकलणेसें स्वाद गुण दोनुं विगड जाता है खांड मिश्री उनमान मुजव डालणी जादासें पेट विगडता हैं चामें नींवूका स्वादभी देतें हैं कली या काचके वरतनमें नींवूकी फाड रख ऊपरसें चाका गरमपाणीडाल चार पांच मिनट वाद दुसरे वरतनमे छाण लेणा चामें फायदा जादा है नहीं, लेकिन दुनियांमें सोखीनताईकी हवा घर २ चलगइ चा का तो एक व्यसन हो गया सव पीते है तो हमभी पीवें इसमें तो वडा नुकसान है फकत चासे कोइ जादा फायदा नहीं है दूध वूरा संग चहिये जो लोक हमेस तरावट माल खाते है अंग्रेज पारसी या औरभी कोई; चा तो उनोकेही पीणे योग्य है, जो लोक घीका दर्शन तो वारतिवार करते है और चाकी उकाली तो हमेस देखादेखी चलरही है ये तदन खराव है वणे तो वच्चोंकी तनदुरस्ती रखणेको हमेसां दूध पिलाया करो.

काफी

काफी दुसरी वस्तु है ये अरवस्थानसें आती है ये दोनोंका गुण मिलतासा है काफी एक दरखतके वीज है इसकूं वूददाणाभी कहते हैं कोइ २ मुलकोमें वुंद दाणोंकों सेक सुपारीकी तरे लोक चावकर मुं साफ करते है भोजन किये वाद वूंदकों सेकणेसें उसमेंसें खुसवोदार और ममालादार चीज पैदा होती है वूंदमें एकभाग गुणकारी सिवाय वूंदमें कडवा भाग और कवजी करणेवाला भागजादाहे एक भाग खट्टा है, कचे वूंद दाणे वहोत दिन रहसकते हैं विगडते नहीं सेका भया अथवा दला भया वूंद दाणोंकों वहोतदिन रखनेमें खसवो उड जाती है चामें काफी जादा पौष्टिक तथा शक्ति देनेवाली है लेकिन वो भारी है इसमें निर्वळ और वैमार आदमीकूं पचे नहीं काफीसें अंगमें गरमी और हुसियारी आती है ठंडी मोसममे तैसें ठंडे मुलकोंमें मुसाफरी करते काफी पीणेमें आवे तो ठंडमेंभी सरीरमें गरमी रह सकती है व्यसन जितने है सव नुकसान करनेवाले हैं लेकिन किसी वेमारीपर कोइ व्यसनी चीजसें फायदा वैद्य वतलावे तो दवा मुजव रोग मिटाणेवास्ते

ाचारीसेंभी लोक लेते है जैसें संग्रहणीमे सेकी भांग या पुराणा अफीम खासीके रोगमें, नेजुलके दरदमें तमाखूसूंघणा इत्यादि समझना तैसें चा और काफी माफ-सर(युक्तिसें अपनी तासीर मुजब जो)पीते है उनकूं फायदा देता है, सात व्यसन जैन-ूत्रकारने बडे बताये है वो इस भव परभव दोनों विगाड देते हैं जैसें जूवा तो सात यसनोंका राजा १ चोरी २ परस्त्रीगमन ३ वेश्यागमन ४ मदिरा नसा पीना ५ मांस ाना ६ सिकार खेलना ७ इन सातोंसें बचे सो जगतमें धन्य है छोटे २ इसके अंतर्गत ौरभी बहोत है जूवा कोडीका तो नहीं खेलें अनेक तरेका फाटका करे १ चीजोंमें नई ुराणी खोटे तोल दगावाजी ठगाई ये सब चोरी है २ परस्त्री टाल दासीके गमन करे ३ और अनेक तरेके नसा करे ४ घरका असबाबभी बेचै लेकिन मोल मंगाकर हमेस मेठाई खावे ५ रातकूं खाये विगर चैन नही पडे ६ सच नहीं बोले ७ ये सब जिनोंकों यसन पड जाते हैं वो बरबाद सब तरेसें होते है फिर छूटनाभी मुसकल है(दुहा)डाकण मंत्र ाफीमरस, तस्करने जूआ, परघर रींझींकामणी, येछूटसी मूंआ ॥ १ काफीके भूकेकी थेली णाकर तपेलीके उकलते जलमे पांच सात मिंट रखकर उतारणेसें काफी तइयार होती : चा तथा काफीमें बहोत मीठा डालणेसे निर्बल कोठेवालेकों जरूर नुकसान करती है. कारण) विशेष पीणेमें ये दोनुं चीज आवे तो थोडा मीठा अछा है, काफीके पाणीमें चोथा ाग दूध डालना इन दोनो चीजोंकों गरम पीनेसै पाचनशक्ति कम पडती है धातूमें भी ुकसान होता है अपणे गरम देशमें काफी गरमी पैदा कर नींदका नास करती है इस-ास्ते रातकूं पीनी नहीं फजरका वखत पीणेका है,किसीने जहर खाया होय तो उसकूं नींद ाही लेना चाहिये इसवास्ते जाग्रत रखणेकूं बेर २ काफी पिलाया करते हैं १ बहोत ाडे शरीरवाला अथवा बहोत खाणेवाला चा और काफी पीणी अछी है २ दुबले अदमी ौर निर्बल अदमी बणें जहांतक चा काफी पीणी नहीं, बहोत तेजभी पीणी नही, अछी रे दूध मिलाकर पीणा ३ हलका लुखा सूका खुराक खाणेवालेनें और जो उपवास ांबिल एकासना उनोदरी वगेरे तपस्या करनेवालोने चा काफी पीणी नहीं पीणी तो ोडी हलकी पीणी ४ फजरमें पुडी वगेरे नास्तेके संग चाकाफी पीणी अछी है भोजन टभर किया पीछे पांच चार घंटे बीते विगर पीना नहीं ५ निर्बल कोठेवालेनें बहोत ीठी बहोत सखत उकाली भई अथवा गरमागरम पीनी नहीं थोडा मीठा और दूधमिला-र कूएके जल जैसी गरम पीनेसें फायदा तासीर मुजब है ॥

॥ उजाला (७ मां) पथ्यापथ्य वर्ग ॥

खानपानकी कितनीक चीजें तनदुरस्त अदम्योंकों थोडासा विगाड बाकी सर्व ऋतूमें ौर सब देसोंमें अनुकूल आता है (२) कितनीक चीजें एककी तासीरकूं माफगत, दूसरे की तासीरकूं नामाफगत, एक मोसममें अनुकूल, दुसरी मोसममें प्रतिकूल, तैसेंही एक

देशमें अनुकूल, दूसरे देशमें प्रतिकूल, होती है, (३) और कितनीक चीजों एसी है के सबकी प्रकृतीमें सब मोसममें और सब देसोंमें हमेस नुकसानही करनेवाली है । पहिले आंककी वस्तुपथ्य, दूसरे अंककी पथ्यापथ्य, तीसरेकी कुपथ्य, पथ्य सो हितकर्त्ता, पथ्यापथ्य सो किसीकूं माफगत किसीकूं नहीं, कुपथ्य याने सबकूं नुकशान करता, पूर्वाचार्योंका लेख और हमारा अनुभव किया भया ये विचार विश्वास रखनेलायक है सो लिखता हूं.

पथ्यपदार्थ.

(अनाज) चावल गहूं जव मूंग तूर चणा मोठ मसूर मटर ये सब साधारण तोर सर्वकूं हितकारी है, ये चीजों हमेस खानेमें आवे तो कोइ तरेकाभी नुकसान नहीं करता इन सब अनाजोंमें जुदे २ गुण रहे भये हैं, इसवास्ते इनोका गुण और अपनी तासीरके अनुसार थोडा या जादा वरताव करना, चनोंकों, पथ्यवर्गमें गिणाया है, तोभी जादा खानेसें पेटमें हवा भरकर पेट फूलता है चावल वर्षभरपीछे उतार अछे होते हैं तूरकी दाल घी डाल खानेसें बिलकुल वायु करेनहीं, मूंग वायु करे, लेकिन दालका पाणी त्रिदोषहर, भयंकर रोगमेंभी पथ्य, फेरदेश २ वालोके अवलसें मावरेकी चीज उनोंके वोभी पथ्यही गिने जाती है (शाग) चंदलियेकेपत्ते परवल पालका वथुआ खरवोडी पोथीकीभाजी जिसकूं पूरबमें अलता कहते है, रंग होता है, सूरणकंद पानमेथी तोरी भींडी कदू वगेरे, दुसरे पदार्थ, गऊका दूध, गऊका घी । छाछ मीठी गऊकी, मिश्री, अदरक, आंवले, सींधानिमक, अनारमीठी,सुनका,मीठी दाख,अब दुसरी तरे पदार्थोंकी उत्तमता दिख लाते हैं,चावलोंमें, लाल साठी तथा कमोद, अनाजोंमें गहुं और जव, दालोंमें मूंग तूर, मीठेमें मिश्री, पानोके सागमें चंदलिया,फल सागोमें परवल, कंद सागोमें सूरण, निमकमेंसेंधव, खटाईमें आंवले, दूधमें गऊका, पाणीमें वरसादका, अधरलियाभया, फलमें, विलायती अनार, या मीठी दाख (मसालेमें) आदा धाणा जीरा ये चीजें सादे मिजाजमें सदा पथ्य सब मोसम और सब देसोंमें, तोभी किसी२रोगमें कोइ वस्तु कुपथ्य इनोंमेंकी होती हैं, जैसें नये बुखारमें बारे दिनतक घी, इकीस दिनतक दूध, ये बात हमारे पूर्वाचार्योंने मनाई की है और अज्ञानपणे जिनोंनें खाया है उनोंकों कष्ट और प्राणांतभी देखा है, फकत वातज्वरके प्रारंभमें घृतपान लिखा है, लेकिन् ऐसे निदान करनेवाले वैद्यका दर्शन पूरे पुन्यवानोंकों ही होगा, इसवास्ते सामान्य तोर घीमें नये ज्वरमें कुफायदाहे, पानीझरा मोतीझरा ये तीन बातमेंही निकलता है, वैद्य और प्रजा हमेंसध्यानमें रखणा, नयेज्वरमेंचिकनासका खाना, अथवा आते भये पसीनेमें बुखारमें हवा ठंडी लेना, या गलीचहवा या बिगडा भया पानी पीना, या एसी खुराकका खाना २ तीसरे मलज्वर टाल नये बुखारमें बारे दिन पहले कुछान संकेची हरडे वगेरे दवा, या कुटकी चिरायता आदि कडवी कषायली दवाका देना, इन बातोंमें सन्निपात मरणांततक प्राणी पहुंच जाता है, बचे तो जैसें अग्नि-

विष शस्त्रसेंभी बचता है, तैसें आयु प्रबल समझना, नयेज्वरमें पश्चिमके विद्वान सबमें दूध पिलाते हैं, ये बातका निश्चय अभीस्यात् भया नहीं, या किसी दवाका अनुपान होगा मगर विचारने लायक बात है, तैसें कफके रोगीकूं तथा (सूआ) जापेके रोगवालीऔरतकूं मिश्री इसवजे और २ चीजोंकाभी समझ लेना.

पथ्यापथ्यपदार्थ.

बाजरी उडद वाल याने (चवला) कुलथी गुड खांड मक्खन दहीं छाछ भेसकादूध घी आलू तोरी कांदा करेला कंकेडा गुवारफली दूधी (लवा) कोला मेथी मोगरी मूला गाजर काचर ककडी गोभी घीयातोरी, केला अननास आंब जामुन करोंदे अंजीर नारंगी नींबूजामफल सफरजंद पीलू गूंदा तरबूज वगेरे ये सब पदार्थ नित्य लोक वापरते है परंतु प्रकृतीका और मोसमका विचार बिगर किये खावे तो तुरत नुकसान करताहै, जैसें दही शरदऋतूमें शत्रुका काम करता है, वर्षाऋतू हेमंतऋतूमें हितकर है, गरमीकी मोसम जेठ वैशाखके महीनेमें मिश्रीकेसंग खानेसेही फायदा करता है,तैसें ज्वरवालेकूं कुपथ्य है, और अतिसारवालेकूं पथ्य है, इसतरे हरेक वस्तुका स्वभाव समझकर समझदार पूरे वैद्यकी या इस दीपककी सल्लालेकर ये वस्तु खानेमें आवे तो नुकसान नही करती.

कुपथ्य पदार्थ.

दाहकरणेवाला, जलाणेवाला गालणेवाला सडाणेकीकुदरतवाला जहरकागुण करणेवाला पदार्थ कुपथ्य कहलाता है, ये पांच तरेके पदार्थ जो अगर बुद्धि पूर्वक रोग मुजब वरतणेमें आवे तो फायदाभी करता है, तोभी ये चीजें एकंदर शरीरकूं नुकशानही करणेवाली है, क्योंके एसी चीज एक रोगकों मिटावे तो दूसरेकूं पैदा कर देती है खार अर्थात् निमक जादा खाणेमें आवे तो पेटकीवायु गोला या गांठकूं गलाती है, लेकिन शरीरकी धातूकों बिगाड मरदमीकूं नुकशान कर्ता है, दाहकरणेवालापदार्थ, पित्तकू बिगाड अनेक किस्मके रोग पैदा करे है, अंबली वगेरे अति खट्टा पदार्थ,शरीरकू गलाकर सांधोंकों ढीलाकर मरदमी कम करती है, एसे २ पदार्थोंसें एकदम नुकशान तो देखणेमें नही आता है लेकिन बहोत दिनोंतक सेवन करणेसें एसा मिजाज बिगाड देता है सो ये बदन अनेक रोगोंका मकान बण जाता है, इसवास्ते पहले जो पथ्य वर्ग लिखा है वो हमेस खाणापीणा चहिये, और पथ्या पथ्यमे लिखा है, उसका थोडा वरताव रखणा चाहिये, ऋतु, प्रकृतीके, अनुसार, और कुपथ्य पदार्थ तो रोगोंपर दवा मुजबही वरतणा, सोभी बहोत जरूर होय तो, हमेसके खुराकमें एसे कुपथ्य पदार्थ कभी वापरणा नही, दुसरी बात फेर एसी है के, पथ्यापथ्य पदार्थ है सोभी जिणोंकों नित्यका अभ्यास खाणेका है, जन्मसें, उनोंकों वो चीजें कभी नुकशान नहीं करती, जेसे बाजरी गुड उडद छाछ दही ये चीजें मोसम और तासीर मुजब जेसें पथ्य है, तेसें कुपथ्यभी है, लेकिन मारवाडमें

यही चार चीज हमेस वहोत लोक वापरते है,उडद पंजाववाले,लेकिन उनोकों नुकशान नहीं करता,इसवास्ते मावरा है सो वचावका कारण है,नुकशान करताभी है, तो थोडे प्रमाणमें, सो मालम नहीं देता, दूध पथ्य है, तोभी किसीकूं नहीं सदता दस्त होता है, इसपरसें एसा निश्चय भयाके खानपानमें अपनीतासीर शरीरकावंधा नित्यकाअभ्यास ऋतु और रोगकी परीक्षा इनसवोंका विचारकर खानपान करणा चहिये जेसें एकही पदार्थमें प्रकृती और ऋतुभेदसें पथ्य कुपथ्य दोनों गुण रहा भया है, तेसें वोका वोही पदार्थ रसायणी संयोग अर्थात् दुसरी चीजोंके मिलणेसें जिसकूं तंत्र कहते हैं उससें पदार्थोंका धर्म वदलकर तीसराही गुण प्रगट होता है, वो नुकशान करणेवाला नहीं, अथवा है इसका पूरा प्रमाण जहांतक किसीकूं नहीं है, उनोकेवास्ते सीधा और अछा रस्ता एसा है के, वैद्य विद्याके हुकमके अनुसारही चलणा, सहत अछा पदार्थ है त्रिदोषहर है तोभी गरम पाणीके संग, या हर कोई गरमागरम वस्तुके या गरम चीजोंके संग, या सन्निपात ज्वरमें, देणेसें नुकशान करता है, दूध पथ्य पदार्थ है, तोभी मूलेके मूंगके क्षार निमकोंके अथवा एरंड टाल वाकीके तेलके संग खाणेमें आवे तो जरूर नुकशान करता है, वरतणके योगसें वस्तुओमें फेरफार गुणोंमें हो जाता है, खटाइ तांवे पीतलके वरतणमें तथा खारमे, इसीतरे घी कांसीके वरतणमें थोडी देर रहे तो नुकशान करता है, सात दिन रह जाय तो प्राणीकों प्राणांत कष्ट पोहचाता है, फेर दूधकेसंग खट्टेफल गुड दही खीचडी वगेरे खाणेमें आवे तो नुकशान करता है, वुद्धिवानों विचार करो सर्वज्ञ भगवानने संयोगी विषका वर्णन वैद्यक शास्त्रमें किया उसके पढे सुणे विगर इन २ वातोंकी खवर क्या पडे एसाही सूत्रप्रकीर्णोंमें किया है, उहां कुपथ्यका नाम अभक्ष लिखा है, एसे कुपथ्यों-का फल कुछ तुरत मिलता नहीं है,लेकिन् जव वहोत दोष एकठा हो जाता है, तव दुसरेही रूपमें दिखाई देता है, उसवखत उसका कारण लोक समझ नहीं सकते ये संयोग विरुद्ध खान पानसे अनेक रोग पैदा होता है.

सामान्य पथ्यापथ्य आहार विहार

पथ्य आहार

पुराणाचावल जव गहूं तूर चिणा वाजरीदेसी, गरमवाजर थोडी खाणी, घी दूध मखण छाछ सहत मिश्री वूरा पतासा सरसूंकातेल गोमूत्र आकाशका पाणी कूवेका पाणी हंसोदकजल परवल सूरण चंदलिया वथुआ मेथी मामालुणी मूले मोगरी कद्दू घीयातोरी वेंगन तोरी करेला ककेडा भींडी गोभी, वालोल (थोडी खाणी) कच्चे केलेकासाग दाख अनार अद्रक आंवला नींबू वीजोरा कवीठ हलदी धाणा केपत्ते पो-दीना हींग सूठ मिरचकाली पींपर धाणा जीरा सीधानिमक हरडे इलायची केशर जायफल तज सूंफ, पाननागरवेल केसंग (कथेकी गोली) गहूकेआटेकीरोटी पुडी

भात मीठाभात बुंदिया मोतीचूरकालड्डू जलेबी चूरमा दिलखुसाल पूरणपोली रवडी दूधपाक खीर श्रीखंड वासुंदी (थोडी खाणी) दालकेलड्डू घेवर सकरपोरे विदामपाक घीकेतलेमोठके थोडेभुजिये; वडे, दूधघी डालीभइ सेव, रसगुल्ला गुलाबजामुन कडाकंद गुलकंद सरबत मुरब्बा चिरोंजी पिस्ता, राईतादाखोंका, मीठा तथा चरका दाणोंका, पापड मूंग मोठकी वडी दाल जाडी पतली ।

कुपथ्य आहार

उडद चवला वाल मोठ मटर ज्वार मकाई ककडी काचर खरबूजा गुवार कोला मूलेकेपत्ते जामफल सीताफल फणस करोंदा गूंदा गरमर अंजीर जामून बोर आंबली तरबूज भेंसकादूध दही, तेल नयागुड दरखतोकेझुंडकापाणी वहोतसाएकदम पाणीकापीणा, निराहारठंडापाणी पीणा, मैथुन करके पीणा, वासीअन्न, छाछदहीके संग खीचड, खीचडी वगेरे दाल मिले भये पदार्थ, सूर्यकेप्रकाशभयेबिगरखाणा, आचार, लगबगवखत भोजनकरणा सवजातकेजहर, ठंडीखीर, सव दूधके पदार्थ, वासीचासणी और खोवेकी टालके, गुजरातमें चोंटियालड्डू, केलाकेलड्डू, रायणकेलड्डू, गुलपपडी तीन भेलकी दाल, पंचभेलीदाल, करडा, कचा गरिष्ठ मैदेकी मैदेकी चीज पुडी सत्तू पेडा बरफी चावलोंका चिवडा रातकाभोजन दस्तबंधकर देवे एसी कोईभी चीज मूंजलेएसा गरमागरम अन्न पान, उलटी, पिचकारीदेदेकर, दस्त कराणा येवात अभीके डाकटरलोक परसन करते है, हमारे प्राचीनशास्त्रकारोने हमेस सलाईसे पेसाव और वस्ती (पिचकारीसे) दस्त कराणापरसन नही किया, और हमेसअछाहैभीनहीं कारणविशेपदेखणा, चवीणा चावणा, पांच घंटें विनावीतै भोजनपर भोजन करणा, वहोत भूखे मरणा, शरीरतथा वस्त्रमेला रखना, परनिंदा, देव गुरूसें द्वेप करणा ॥

विहार पथ्य

वस्त्र धोये भये साफ पहरना, और शक्ति होय तो अतर गुलाबजल केवडाजलसें सुवासित करणा, पोसाखी अतर, पनडी औरखस ठंडकालेमें हीना मसाला १ विछोणे तथा पिलंग वगेरे सोनेके साधन, साफ सुघडपणे रखना २ हवा दक्षिणकीसर्वोत्तम है सोलेणीं ३ हाथपैर कान और गुप्तजगे मैलजमणे नहिं देणा ४ गरमी मोसममें महींन कपडे पहनना, थंड कालेमें गरम, वो कपडे वजनमें, ज्यों कम होय त्यों अछा ५ पांच २ दिनसें हजामतकराय दलिद्र निकाल देणा, इससेनया खून संचरता है ६ कसरतकरणी प्रमाणमुजव हवा खाणी, घोडे वगेरे असवारीपर सुखसें वेठीजे तो वैठणा, कष्ट मालमदे एसानहींवैठणा ७ गहणे हलके वजनके, जिसमें मनुष्यकों हार कुंडल अंगूठी, आनंद श्रावकने उपासग दशासूत्रमें कुंडल अंगूठी दोयही मोकली पहरणे रख्की है ८ मल मुत्रकी संका रोकणी नहीं, जवर न संका पैदा करणी नहीं, मूत्र तथा दस्तकी हाजतरहते स्त्री गमन करणा नहीं स्त्री

संगका वहोत नियम रखणा ९ चित्तकी वृत्तिमें वहोत सतोगुणी आनंदीपणा रखके या सतो गुणीपणा रखणेकूं सतोगुणवाले भोजन करणा, दो घडी प्रभात, दो घडी सांजकूं, समता परिणाम सब जीवोंपर धरणा, फेर वखत मिले तो, दोघडी सदगुणीके मंडलीमे वैठके निर्दोष वात (व्याख्यान) सुणना, संसार अनित्य है, इत्यादि विचार करणा,जिस वर्त्तावसे रोगहोय इज्जतजाय धनजाय फेर धनकी आवंद होय नहीं, एसावर्त्ताव है सोही कुपथ्य है, इनही वातोंसे परभव विगडता है, ये पथ्यापथ्यका विचार विवेक विलास आचार दिनकर तथा राज निघंटसे संक्षेप मात्र लिखा है.

उजाला ८ दुवले अदमीके खाणे योग्य खुराक

वहोत अदमी दिखणेमें पतले और इकेली हड्डीके दिखते है, लेकिन ताकतवर होते है, वाजे पुष्ट और जाडे होकरभी ना ताकत होते हैं, वहोत जाडापणा है सो तनदुरस्ती पणा नहीं समझणा, और वहोत दुवलापणा और वहोत स्थूलपणा है सो प्राये नाताकतीका निशान है, शरीरभी वेडोल दिखता है, खुराककेफेरफारसें, योग्य उपायसें, दुवले अदमी ताजे पुष्ट हो जातेहैं चरवीवढकरजाडाभयाअदमी उपायसेंपतले होजाते है, अव दुवले अदम्योंकों पुष्ट होणे वास्ते नीचे लिखे सो उपाय करणा, दूध थोडी २ मिश्री मिलाय थोडा२ दूध दिनमें वहोत वखत पीणा, उनमान मुजव कसरत कर पीणा, दंड वैठक मोगरी शक्ति मुजव फेरणी, वो नहीं वणे तो, फजर सांझकीवखत महनतका कामकरणा, या साफ हवामें फिरणा, जिससे कसरत मिलके दूध हजम होजाय, तथा हमारे दवाखानाकी अमृतवटी, वो पुष्टिकाकाम, पुष्टि खुराकका काम करती है, और कम २ से, दससेरसें वीससेरतक दूधकों हजम करती है, शरीरमें पुष्टि और वहोत ताकत पैदा कर देती हैं, दिन४०लेणा चहिये, तोलेके रु३०। लगते है,गहूं जव मकी मटर चावल दाल इनोमें पुष्टिकारक तत्व रहा भया है, दुवले अदमीके कामका है, आलू केला केरी मफरजंद पनीर ये सव पुष्ट वस्तु खाणे योग्य है, येसव पुष्टिकारक खुराक दुवलेकूं ताकत देती है, लेकिन् इस खुराककूं पचाणे वास्ते महनत करणा चहिये, एसी खुराक खाकर पूरी कसरत शरीरकूं नहीं मिले तो चरवीवढकर शरीर जाडा पड जाता है, और अशक्त हो जाता है एसी खुराकसे शरीर मजवूत और थोडे पुष्ट होगयेपीछे खुराक वदल देणा चाहिये, तनदुरस्तरहे एसा खुराक खाते रहणा, वेमारी होय जिसमें फेर पाचन शक्ति मंद होय उहांतक पुष्टिकारक खुराक खाणा नहीं,और परिश्रममी नहीं करणा, वेमारी मंदाग्नि मिटायकर पीछे पुष्टता करणी.

जाडे आदमीलायक खुराक

जाडे अदमी सव नाताकत नहीं होते, खूनवाले पुष्ट आदमी शरीरमें मजवूत होते हैं, फकत मेद चरवी तथा मेदवायूमें जिनोंका शरीर फूलता है वो अशक्त होते हैं, जो

दमी पुष्टिकारक खुराक जैसें घी मक्खन तेल मीठा मिश्री वगेरे जो हमेस वहोत खाते विना महनत कियेविगर एक जगे बैठे रहते हैं, वो ऐसे व्रथा पुष्ट हो जाते हैं, घी क्खनादिक शरीरकी गरमीकायम रखणेकूं लोकखातेहै, वो प्रमाणसरही खाणा हिये जादा खानेमें आवे तो वो पाचन नहीं होकर चरवी शरीरमें एकठी होती है रीर वेडोल हो जाता है, स्नायु वगेरे चरवीसें रुक जाकर अशक्त करदेता है चरबीके डपर पुड चढ जाता है, ताकतवर जाडे अदमीका शरीर लाल मजवूत सखत ौर स्थिती स्थापक स्नायुओंकेटुकडोसें बना भया है, और उसपर चरवीका वहोत छोटा स्तर लगा भया है, ये चरवी खुराककी तंगीसे अथवा उपवास करे तव कमहोती है ौर फेर चरवी शरीरकूं खपसुरत सुघाट रखती है वधीभइ चरवीसे वहोत स्थूलता ौर श्वास आखर प्राणांततकभी हो जाता है, मीठा और आटेकै सत्ववाला पदार्थभी हनत नहीं करनेवाले अदमीके शरीरमें चरवी वढाता है, फेर दवा थोडाफायदा भाग्य-ोगसेंही करती है,खुराककी निगेदास्ती उपयोग रखकरप्रमाणमुजव करणा कसरतके अभ्या सें शरीरका जाडा पणा और वजन कम होता है, अति स्थूल शरीरवालेके(खानेलायक दार्थ) चरवीवालेपदार्थ घी मक्खन खांड और आटेके सत्ववाला पदार्थ वहोत थोडा ाना, और पुष्टिवाला खुराक जादा हेसो खाना, गहुं जव मटर दाल चना पनीर छाछ हरी रकारी कोबिज सफरजंद सलगम नारंगी वगेरे फल पथ्य है, (नहींखानेलायक) अथवा ोडा खानेलायक पदार्थ, घी मक्खन मलाई तेल खांड (अनाज) साबूदाना चावल मक्की रणपोली कोकम केरी दाख केला जिसमें तेल है इस तरेका सव सूका मेवा, विदाम पेस्ता निमजा चिरोंजी किष्टा वगेरे तैसें आलू सूरन सकरकंद अरवी वगेरे खाना नहीं, दूध थोडा खाना चा काफी पीनेकी टेव होय तों उसमें दूध वहोत थोडा डालना अथवा ीवुसें सुवासित करकेही पीना.

॥ उजाला ९ मगजमज्जातंतूकूं मजवूत करनेवाला खुराक ॥

जिसमें आल्व्युमीन नामका तत्व जादा होता है वो मगजके मज्जातंतूओंकों पोषण करता है, पौष्टिकतत्ववाले खुराकमें आल्व्युमीनका कुछ २ अंश होता है, लेकिन सतावर नामकी वनस्पतीमें इसका अंश वहोतही होता है, इसवास्ते सतावर वगेरे कित-नीक उत्तम वनस्पतीका पाक तथा मुरव्वा वनाकर खाना चहिये, मगज तथा वीर्यकी मजवुतीवास्ते वैद्यकशास्त्रमें कितनीक उत्तम वनस्पती खानी वतलाई है वो दवा मुजव या खुराक मुजव खानी वतलाई है गुणभी पूरा करती है.

भूकोला, शतावर, आसगंध, गोखरू, कोंचकावीज, आंवले, शंखाहुली.

एसी वनस्पती गुणवाली औरभी मुरव्वा वणाकर लड्डू वनाकर अवलेहीचाटनेजैसी खानेमें आवे तो मगजके मज्जातंतू मजवूत होते है वलवुद्धिवीर्य वढता है और मनसंवंधी व्यग्रता अस्थिरता दूर होती है.

अमृतवटी गरमी वगैरे मगजके विकारोंकों दूरकर ताकत वीर्य वढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहुं चणा मटर प्याज करेला अरवी सफरचंद अनार केरी वगैरे इस रोगमें पथ्य है.

॥ यादशक्ति तथा बुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति बुद्धि मगजसे संबंध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगैरे जो खान पान लिखा हैं वो सब बुद्धिको वढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक वणाकर घी वूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगैरे पाचनशक्ति मुजब फजर या सांझकूं इनमेंकी कोईभी एक चीजसें बुद्धि यादशक्ति वहोतही वढती है अमृतवटी हमारी वनाई दवा बुद्धि शक्ति वहोतही वढाती है ब्राम्ही १मासा पींपल मासा १ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टंक एसे दोनुं टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन ३१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैद्यकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकूं बुद्धी वढाणेकूं वडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी वणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजब लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजब निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक बीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछे एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दवाणेके संचेमें देकर दवाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन वूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतरे दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ बीज पानके संग खाणा, डाक्टरी दवा फासफोरिस मिली भई हरकोइ चीज बुद्धिकूं मगजकूं फायदेवंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तरेके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाक्टरोंनें जाहिर कीहे, जिस बेमारीमें पाचन शक्ति विगडगई होय उसमे ये खुराक फायदेवंद है साबुदाणोंकूं पाणीमें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा वच्चे को साबुदाणोंके दूसरे दरजे पचणेमें हैं साबुदाणोंमें पोषणका तत्व चावलोंमें जादा बेमारी मनुष्यों वरसभरके पहिलेका तीन वरस वाद पांच छ वरसोंकाभी चावल नहीं

दूध आवे पाणीका सिजायाभया भात वहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका आटे अदमीपुष्ट तो वहोत होता है, लेकिन् बेमार और निर्वल अदमीकूं पचता नहीं, फकत मेद वरवी तो अवीमें चावल देणा चहिये, रांधेभये वहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की वेमारीमें सूप और ब्राथ देतें है उससें अपणे मुलकमें इस वेमारकों चावलोंका मांड वहोत माफगत आता है एसा पत वाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य वेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त वंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें वहोत है, कितनीक दालोंमें मांस-सेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी है, वहोत निर्वल अदमीकों दाल अछीतरे वाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके निताराभयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग सर्वोपरिहै तूरकी दुसरे नंवरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी वेमारको वहोत अछी खुराकहै पुष्ट करे पेटमे वोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं आता है, दूधकू वहोत ऊकालणा नहीं पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुक-शानकारक वस्तुकूं निकालणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग वहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें वच्चेकूंभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुक-शान नहीं करता, (अमृतवटी) वालक तथा वुढ्ढेको वेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुवला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु वढाती है, पाचनशक्ति वढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहै, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखु-लिया (वच्चेका वडाखास) निर्वलता इन सवोंमे वो लोक देते हैं, इसमें वदवो हलके दरजे वालीमें होती है वढियामें नही गरम पाणी या दूधमें इसकी टिकिडियां सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके संगका कोडलीवर वेमारकूं खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है,माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेंसें वनाई जाती है (वेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी वेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा है (जैसे गंदी खाईका जल सुवुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

अमृतवटी गरमी वगैरे मगजके विकारोंकों दूरकर ताकत वीर्य वढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहुं चणा मटर प्याज करेंला अरवी सफरचंद अनार केरी वगैरे इस रोगमें पथ्य है.

॥ यादशक्ति तथा बुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति बुद्धि मगजसे संबंध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगैरे जो खान पान लिखा हैं वो सब बुद्धिको वढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक वणाकर घी वूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगैरे पाचनशक्ति मुजव फजर या सांझकूं इनमेंकी कोईभी एक चीजसें बुद्धि यादशक्ति वहोतही वढती है अमृतवटी हमारी वनाई दवा बुद्धि शक्ति वहोतही वढाती है ब्राम्ही १मासा पींपल मासा१ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टंक एसे दोनुं टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन ३१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैद्यकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकूं बुद्धी वढाणेकूं वडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी वणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजव लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजव निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक वीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछे एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दवाणेके संचेमें देकर दवाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन वूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतरे दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ वीज पानके संग खाणा, डाकटरी दवा फासफोरिस मिली भई हरकोइ चीज बुद्धिकूं मगजकूं फायदेवंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तरेके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाकटरोंनें जाहिर कीहे, जिस वेमारीमें पाचन शक्ति विगडगई होय उसमे ये खुराक फायदेवंद है साबुदाणोंकूं पाणीमें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा इन सब साबुदाणोंके दूसरे दरजे पचणेमें हैं साबुदाणोंमें पोषणका तत्व चावलोंमें जादा वेमारी मनुष्यों वरसभरके पहिलेका तीन वरस वाद पांच छ वरसोंकाभी चावल नहीं

दूध आवे पाणीका सिजायाभया भात वहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका खाई अदमी पुष्ट तो वहोत होता है, लेकिन् वेमार और निर्वल अदमीकूं पचता नहीं, फकत मेद वरधी हो अदमीमें चावल देणा चहिये, रांधेभये वहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की बेमारीमें सूप और ब्राथ देते है उससें अपणे मुलकमें इस बेमारकों चावलोंका मांड बहोत माफगत आता है एसा पत वाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य बेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त बंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टित्व दालमें बहोत है, कितनीक दालोंमें मांससेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी है, बहोत निर्बल अदमीकों दाल अछीतरे वाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके निताराभयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग सर्वोपरिहै तूरकी दुसरे नंबरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी बेमारको बहोत अछी खुराकहै पुष्ट करे पेटमे वोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं आता है, दूधकूं बहोत ऊकालणा नही पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुकशानकारक वस्तुकूं निकालणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग बहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें बच्चेकूंभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुकशान नहीं करता, (अमृतवटी) बालक तथा वुद्धेको बेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुबला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु वढाती है, पाचनशक्ति वढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहै, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखुलिया (बच्चेका वडाखास) निर्बलता इन सवोमे वो लोक देते है, इसमें वदवो हलके दरजे वालीमें होती है वढियामें नही गरम पाणी या दूधमें इसकी टिकिडियां सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके संगका कोडलीवर बेमारकूं खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है, माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेंसें वनाई जाती है (बेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी बेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा है (जैसे गंदी खाईका जल सुवुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

अमृतवटी गरमी वगेरे मगजके विकारोंकों दूरकर ताकत वीर्य वढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहुं चणा मटर प्याज करेला अरवी सफरचंद अनार केरी वगेरे इस रोगमें पथ्य है.

॥ यादशक्ति तथा बुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति बुद्धि मगजसे संबंध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगेरे जो खान पान लिखा हैं वो सब बुद्धिको वढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक वणाकर घी वूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगेरे पाचनशक्ति मुजव फजर या सांझकूं इनमेंकी कोईभी एक चीजसें बुद्धि यादशक्ति वहोतही वढती है अमृतवटी हमारी वनाई दवा बुद्धि शक्ति वहोतही वढाती है ब्राम्ही १मासा पींपल मासा१ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टंक एसे दोनुं टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन ३१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैद्यकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकूं बुद्धी वढाणेकूं वडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी वणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजव लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजव निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक वीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछै एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दवाणेके संचेमें देकर दवाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन बूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतरे दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ वीज पानके संग खाणा, डाकटरी दवा फासफोरिस मिली भई हरकोइ चीज बुद्धिकूं मगजकूं फायदेवंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तरेके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाकदरोंनें जाहिर कीहे, जिस वेमारीमें पाचन शक्ति विगडगई होय उसमे ये खुराक फायदेवंद है साबुदाणोंकूं पाणीमें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा धन और साबुदाणोंके दूसरें दरजे पचणेमें हैं साबुदाणोंसें पोषणका तत्व चावलोंमें जादा वेमारी मनकों वरसभरके पहिलेका तीन वरस वाद पांच छ वरसोंकाभी चावल नहीं दूध आधे पाणीका सिजायाभया भात वहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका भात अदनो पुष्ट तो वहोत होता है, लेकिन् वेमार और निर्वल अदमीकूं पचता नहीं, ताकत मेद चरबी तो अजीर्णमें चावल देणा चहिये, रांधेभये वहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की वेमारीमें सूप और व्राथ देते है उससें अपणे मुलकमें इस वेमारकों चावलोंका मांड वहोत माफगत आता है एसा पत वाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य वेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त वंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें वहोत है, कितनीक दालोमें मांस-सेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी है, वहोत निर्वल अदमीकों दाल अछीतरे वाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके नितारामयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग सर्वोपरिहै तूरकी दुसरे नंवरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी वेमारको वहोत अछी खुराकहै पुष्ट करे पेटमे वोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं आता है, दूधकू वहोत ऊकालणा नहीं पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुक-शानकारक वस्तुकू निकालणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग वहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें वच्चेकूंभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुक-शान नहीं करता, (अमृतवटी) वालक तथा वुड्ढेको वेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुवला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु वढाती है, पाचनशक्ति वढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहै, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (व्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखु-लिया (वच्चेका वडाखास) निर्वलता इन सवोंमे वो लोक देते है, इसमें वदवो हलके दरजे वालीमें होती है वढियामें नही गरम पाणी या दूधमे इसकी टिकिडियां सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके संगका कोडलीवर वेमारकूं खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है,माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेंसें वनाई जाती है (वेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी वेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा है (जैसे गंदी खाईका जल सुवुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

अमृतवटी गरमी वगैरे मगजके विकारोंकों दूरकर ताकत वीर्य बढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहुं चणा मटर प्याज करेला अरवी सफरचंद अनार केरी वगैरे इस रोगमें पथ्य है.

॥ यादशक्ति तथा बुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति बुद्धि मगजसे संबंध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगैरे जो खान पान लिखा हैं वो सब बुद्धिको बढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक बणाकर घी बूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगैरे पाचनशक्ति मुजब फजर या सांझकूं इनमेंकी कोईभी एक चीजसें बुद्धि यादशक्ति बहोतही बढती है अमृतवटी हमारी बनाई दवा बुद्धि शक्ति बहोतही बढाती है ब्राम्ही १मासा पींपल मासा१ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टंक एसे दोनुं टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन ३१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैद्यकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकूं बुद्धी बढाणेकूं बडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी बणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजब लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजब निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक बीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछे एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दबाणेके संचेमें देकर दबाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन बूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतरे दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ बीज पानके संग खाणा, डाक्टरी दवा फामफोरिस मिली भई हरकोइ चीज बुद्धिकूं मगजकूं फायदेबंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तरेके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाक्टरोंनें जाहिर कीहे, जिस बेमारीमें पाचन शक्ति बिगडगई होय उसमे ये खुराक फायदेबंद है साबुदाणोंकूं पाणीनें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा चन्न ए साबुदाणोंके दूसरें दरजे पचणेमें हैं साबुदाणोंसें पोषणका तत्व चावलोंमें जादा बेमारी मनुष्यों बरसभरके पहिलेका तीन बरस बाद पांच छ बरसोंकाभी चावल नहीं दूध आधे पाणीका सिजायाभया भात बहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका जाडे अदमीकूं पुष्ट तो बहोत होना है, लेकिन् बेमार और निर्बल अदमीकूं पचता नहीं, इसल मेद चरबी तो अजीर्णमें चावल देणा चहिये, रांधेभये बहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की बेमारीमें सूप और ब्राथ देते है उससें अपणे मुलकमें इस बेमारकों चावलोंका मांड बहोत माफगत आता है एसा पत बाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य बेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त बंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें बहोत है, कितनीक दालोंमें मांस-सेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी है, बहोत निर्बल अदमीकों दाल अछीतरे बाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके नितारीभयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग सर्वोपरिहै तूरकी दुसरे नंबरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी बेमारको बहोत अछी खुराकहै पुष्ट करे पेटमे वोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं आता है, दूधकूं बहोत ऊकालणा नहीं पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुक-शानकारक वस्तुकूं निकालणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग बहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें बच्चेकूंभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुक-शान नहीं करता, (अमृतवटी) बालक तथा बुढ्ढेको बेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुबला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु वढाती है, पाचनशक्ति वढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहै, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखु-लिया (बच्चेका वडाखास) निर्बलता इन सबोमे वो लोक देते है, इसमें वदबो हलके दरजे वालीमें होती है वढियामें नही गरम पाणी या दूधमें इसकी टिकिडियां सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके संगका कोडलीवर बेमारकूं खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है,माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेंसें वनाई जाती है (बेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी बेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा है (जैसे गंदी खाईका जल सुबुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

वडा आश्चर्यवंत हुवा) ये वृत्तांत ज्ञाता सूत्रमें है इसतरेसें या अंग्रेजोंकीतरे (डिसटील्ड) करणा अथवा पहले लिखा ज्यूं तीन उकालेका उकाला ठंडा साफ छाणकर देणा डाकदर लोक हेजेमें सखत बुखारकी प्यासमें एसे जलमें थोडा २ वरफ मिलाकर पिलाते हैं, (नींबू का पानक) कितनेक बुखारमें नींबूका पाणी देते है, नींबूकी दो फाड कर एक वरतणमें मिश्रीपीसकर दोनोंकों धरणा उसपर ऊकलता पाणी डालणा ठंडा भये वाद पिलाणा या गूदका पाणी २॥ तोला मिश्री १। तोला दोनोंकों एकजगे मिलाकर ऊकलता पाणी डालना इस जलसें कफ श्लेपम हांफणी कंठवेलका रोग ये सब मिटता है, (जवका पाणी) छडेभये जव एक वडा चमचाभर दो तीन चीमठीभर वूरा नींवूकी छाल एक वरतणमें रखकर ऊपरसे ऊकलता जल डालणा ठंडा भयेवाद छाणकर पीणा इसजलसें बुखार छाती का दरद अमूझणीयेसव मिटती है.

॥ किरण ३ री ऋतुचर्या आहार तथा विहार ॥

रोग होनेके वहोतसे कारण विवहारनयसें मनुष्यकृत है, तैसें निश्चयनयसें दैवयाने स्वभावजन्य कर्मकृतभी हैं, उसमें पांच समवायोंमेंसे काल अग्रेश्वरीपणा धारण कर ऋतुओंके, फेरफारका समावेश होता है, वहोत गरमी और वहोत ठंड ये कालधर्मका कुदरती कृत्य है, मनुष्य उसकूं किसीतरे रोक नहीं सकता और वस्तुओंके संयोगसें याने रासायणिक प्रयोगोसें कुदरती मामलेमें फेरफार ऊपर अदमी थोडीदेर जय पा सकता है, जैसेके मोसम विगर वरसाद वरसा देणा लेकिन् जो अपने स्वभाव वस कुदरती फेरफार होते रहता है वो सव प्राणियोंके हितका विचार करे तो अछा है इसवास्ते अदमीकूं इस वातका उद्यम करना फजूल है, कुदरती ऋतूके फेरफारसें हवामें फेरफार होकर शरीरके अंदरकी गरमीसरदीमें हेरफेर होता है, इसवास्ते एसी वखतमें हवाकूं सुधारना शरीरपर असर नहीं होमके एसा उपाय करना ये मनुष्यका काम है, वर्षकी जुदी २ ऋतूमें गरमी और ठंडीमें अपने आसपासकी हवामें और हवाके योगसें अपने शरीरमें जो जो फेरफार होताहै उसके अनुसार आहार विहारका नियम रखना इसका नाम ऋतुचर्या है. हवामें गरमी और ठंडी ये दोय गुण मुख्य रहा भया है इन दोनोंका प्रमाण हमेस एक सदृश होता नहीं द्रव्यक्षेत्र कालभावमें उनोमें फेरफार देखनेमें आता है भरतक्षेत्रकी पृथ्वीके उत्तर और दक्षिण किनारेपर आखिरके प्रदेशोमें अत्यंत ठंड गिरती है, इस पृथ्वीके गोलेके मध्य रेखाके आस पासके प्रदेशोमें वहोत गरमी गिरती है और दोनुं अर्द्धगोले के, वीचके प्रदेशोमें गरमी और ठंड वरावर रहती हैं इसतरे क्षेत्रका विचार करे तो उत्तर ध्रुवके आसपासके प्रदेशोमें अर्थात् सेवेरिया वगेरे मुल्कोमें ठंड वहोत गिरती है, उसके नीचेके तातार तीवेट और अपने हिन्दुस्तानके उत्तरभागमें गरमी और ठंड वरावर रहती है उसनेभी नीचे मिश्रऋतुके आसपासके मुल्कोंमें अर्थात दक्षिण हिन्दुस्थान और (सिलोन)

याने लंकामें धूप वहोत गिरती है, और ऋतुके फेरफारसे उहां फेरफारभी होता है, अर्थात् इन देशोंमें वारे मास एक सदृश ठंड या एक जैसी गर्मी नहीं रहती ठंड और गरम ऋतूकी पृथ्वीपर सूर्यकी चालपर आधार है भरतक्षेत्रके उत्तर तथा दक्षिण किनारेपर देशोंमें सूर्य कभीभी सिरेपर सीधी लकीरपर नहीं आता छछ महीना उहांपर सूर्य दिखाई भी नहीं देता वाकीके छछ महीनोमें उहां सूर्य अपने देशमें जेसाउदय अस्त होता जैसा झांखा प्रकास दिखाई देता है, कारण इसका एसा है, सूर्यके उदयहोणेके १८४ मंडल जंवूद्वीपपन्नती सूत्रमें लिखा है, जिसमें कितनेक मंडल तो पृथ्वीके ऊपर आकाश प्रदेशमें मेरूके पाससे सरू है कितनेक मंडल लवण समुद्रमें है सम भूतल मेरूके पास है; उहांसे सातसे नव्वे जोजन ऊपर आकाशमें तारामंडल सरू है, सूर्य पहले है, एकसो दश योजनमें सव नक्षत्र तारामंडल है, जमीनसे नवसें जोजनपर अंत है, सूर्यके विमाण पृथ्वीसे चंद्रकी विमान पृथ्वी असी जोजन उंची है, सव तारे मेरूकी प्रदक्षणा फिरते है सात ऋषिके तारे मृगादिक ध्रुवकी प्रदक्षणा फिरते है, हमेसांके वास्ते मुलकोकी गरमी या ठंडी कायम सिद्ध नहीं होती जिस हिमालयके पास आजदिन वरफाण गिरके ठंढा देस वण रहा है, ये देस किसी कालमें गरम था एसा सिद्ध होता है, कारण गरमीके सवव जव वरफाण गलता है, तव नीचेसें मेंमांथ याने मेरभये हाथी निकलते है, ये हाथी विनागरम देशविना होते नहीं और वरफाणमें क्या खाते थे वस ये मुलक कोइदिन गरम ओजपर था हाथीयोके रहनेलायक वन था एकाएक वरफ गिरा नीचे दवगये सो केइ वेर निकल चूके है, वरफमें दवी वस्तु केइ कालतक नहीं विगडती है अव मध्य हिन्दुस्तान समशीतोष्ण देशमेंभी सूर्यके नजीक पणेसें अथवा दूरपणेसें जुदे २मुलकोंमें कम वैसी गरम और ठंड गिरती है, इसवास्ते वर्षके अथवा ऋतूके दो अयन गिणे जाते है उत्तरायन उष्णकाल दक्षणायन शीतकाल पृथ्वीके गोलका एक नाम मुकररकर उसके वींचमें पूर्व पश्चिम एक लकीर कल्पनकर उसका नाम पश्चिमी विद्वानोंनें विषुवद्वृत धरा है,जैनधर्मवाले मध्य प्रदेशकानाम मेरूधराहै हमारे सर्वज्ञ सिद्धांतसें पृथ्वी गोल थालकी सि कलहै, असली दरियाव खाईके तोर जंवुद्वीपवीचमें लाख जोजनका, जिसके वाहिरकर दो लाख योजनका है, पश्चिमी विद्वान गेंदया नारंगीके डोल पृथ्वीकी गोलाई मानी है, और जमीन वहोत थोडी मानते है, सर्व पृथ्वीकी परिक्रमा ८२ दिनकी रेल वोट द्वारा देणका कहते हैं, जो कुछ देखा स्यात् कथंचित् सत्य है, जगतीकी दिवालचीण पास दक्षणदिसाकी थोडी दिखतीहे वाकी वरफमे दवणेसे नही दिखतीहै पृथ्वी वहोत लंवी चोडी है, दरियाव सगर चक्र वर्त्तकी वखत दक्षिणकी तरफसें खुली जमीनमें आया वहोत जमीन जलमें चली गई उ-त्तरमेंभी दरियाव चक्कर इधरहीसे खा गया ऋषभदेवके वखत जो नकसा भरत क्षेत्र जंवूद्वीपका था सो विगड गया औरही सिकल दिखणे लगी दरियावके आये जलमें वर-

फाण जमगया बुद्धिवान् फिरते हैं, मगर जा नहीं सकते है, खोज करत २ जेसे अमेरिका नई दुनियाका पता लगा कालांतरमें खोजी और बुद्धिवान उद्यमीकों फेरभी कइ पते मिलेंगे सर्वज्ञ तीर्थंकरने जो केवल ज्ञानद्वारा देखके प्रकाश किया है, सो तो सब यथार्थहे बाकी सब पदार्थ निर्णय उनोंका कहा सत्य दीख रहा है, और सत्य है तो येकेसें सच न होगा हमारे समझमें जो बात नहीं बेठे वो हमारी भूल है, इतनीसी जमीनमें गोलाइ पृथ्वीकी मानणी प्रमाणसें सिद्ध नहीं होती लेकिन भरत क्षेत्रकी गोलाईसें ये हिसाब हम न्याय पूर्वक मंजूर करते हैं, सूर्य छ महीने तक लकीरके उत्तर तरफ उष्ण कटिबंधमें फिरता है, छ महीने विषुववृतकी दक्षण तरफके उष्ण कटिबंधमें फिरता है, जब सूर्य उत्तरके तरफ फिरता है, तब उत्तरके तरफका उष्ण कटिबंधके प्रदेशोपर उत्तर सूर्यकी किरणे सीधी गिरती है, इससे उस प्रदेशोमें सखत ताप गिरता है इसीतरे दक्षिण तरफ जब फिरता है, तब दक्षण तरफके उष्ण कटिबंधके प्रदेशोपर दक्षण सूर्यकी किरणे सीधी गिरती है तब सखत ताप गिरता है, अपणा हिन्दुस्थान देश विषुववृत्त याने मध्यरेखाकी उत्तर तरफ आया भया है दक्षिण हिन्दुस्थान उष्ण कटिबंधमें है, बाकीका सब उत्तर हिन्दूस्थान समशीतोष्ण कटिबंधमें है, इसतरे सूर्य उत्तरायन छ महीनेका होता है, तब उत्तर तरफ ताप जादा गिरता है, दक्षण तरफ कम, सूर्य दक्षिणायन छ महीनेका होता है, तब दक्षण तरफ गरमी जादा उत्तर तरफ कम, उत्तरायनके छ महीने फागण चैत वैशाख जेठ आषाढ सावण दक्षणायनके छ महीने भादवा आसोज काती मिगसर पोह माह छ महीने उत्तरायनके क्रमसें ताकत घटाणेवाले हैं, दक्षणायनके छमतर २ क्रमसें ताकत वढाणेवाले हैं, वर्ष भरमें सूर्य बारे रासीपर फिरता है दो दो रासीसें ऋतु बदलती हैं एक वर्षकी छ ऋतु कुदरती है न्यारें २ क्षेत्रोंमें जुदी २ ऋतु एकही वखत नहीं बेठती है, तोभी प्राये आर्यावर्त हिन्दुस्तानके देशोमे सामान्य तोर ऋतू इसमुजब गिणे जाती है वशंत ऋतू फागुण चैत, ग्रीष्म ऋतु वैशाख जेठ, प्रावृट ऋतु असाढ सावण, वर्षाऋतू भादवा आसोज, शरदऋतू कार्तिक मिगसर, हेमंत शिशिरऋतु पोह माह, इहां वसंतऋतूका आरंभ फागुणसें गिणा है लेकिन् असली गिणती जैनाचार्योनें चिंतामणी ग्रंथमें संक्राती पर लगाई है और यथार्थभी है जेसे मेष वृषकी संक्राती ग्रीष्म ऋतू, मिथुन कर्ककी प्रावृट ऋतू, सिंह कन्याकी वर्षाऋतू, तुल वृश्चिकी शरदऋतू, धन मकरकी हेमंतऋतू, हेमंतमें मेघ वरसे ओले गिरे तो शिशिरऋतू कहवाती है बहोत ठंड गिरणेसें, तेमें कुंभ मीनकी वसतऋतू, संक्राती लगणेके आठ दिन पहलेमें पिछली ऋतूकी चर्या धीमे २ छोडणी अगली ऋतुकी ग्रहण करणी, ऋतुओंका किसनाक पथ्य तो, ऋतू है सो अदमी पास आपही पलाती है, जेसे ठंड गिरे तब गरम वस्त्रादि वस्तुओंकी इच्छा, गरम जादा गिरे तब महीन वस्त्र ठंडे जल आदि वस्तुओंकी

इच्छा प्राणी स्वतः साधन करताहे केइयक इंग्लंड कावल वगेरे देशमे ठंड हमेश जादा है, उहां वैसाही साधन प्राणी करता है देखो इस हिन्दुस्थानमें ग्रीष्म ऋतुमें क्षेत्रकी तासीरसे चार पहाड बहोत ठंडे है उत्तरार्धमें विजयार्द्ध जिसकूं इस वखत लोक हेमालिया कहते है, दक्षणमें नीलगिरी, पश्चिममें आबू, पुरबमें दरजलिंग, कालांतरमें इनोकी तासीर वदल जाना ताजुब नहीं गरमसेंसरद, सरदसें गरम, हवाके फेरफारोंकों तों अपणे समझ सकते हैं, जितना समझतें है, उस मुजब यथा शक्ति उपायभी करते हैं, लेकिन ठंढ और ताप ऋतूओंका फेरफार अपणे वदनमे क्या क्या फेरफार करता है, और अलग २ छव ऋतू दो दो महीने वातावरणमें किस २ तरेका फेरफार करता हे, उसकी अपने शरीरकूं केसी असर होती है, ये वात अपने लोकोमें वहोत कम समझते होगें इसवास्ते छव ऋतूओंका संक्षेपवर्णन इहां करता हूं, शरीरकी हिफाजत और निरोग रखणेवाले समझदारोंकों ये निर्णय वहोतही फायदेवंद होगा, हेमंत तथा शिशिर ऋतूभरठंड कालेमें खाये भये पदार्थोसें वदनमे रस याने कफका संग्रह होता है वसंत ऋतू लगते गरमी गिरणी सुरू होती है, उससें शरीरके अंदरका कफ पिघलणे लगता है, जो उसका शमन इलाज नहीं करणेमें आवे तो खास कफ ज्वर मरोडा वगेरे रोग होता है, वसंतमें कफकी शांति भये पीछे ग्रीष्मके सखत तापसें शरीरके अंदरका जरूरी चहिये एसा रहा भया कफ जलणे याने क्षय होणा सुरू होता है, तव वायु वदनमें गुप्तपणे एकठी होणी सरू होती है, वर्षाऋतूकी हवा चलतेही दस्त उलटी बुखार वगेरे वायुसें सन्निपातादि कोप अग्नि मंद खून विकारादि होता है, उस वायुकों मिटाणे गरम इलाज करणा अथवा अज्ञानपणे गरम खानपानसें पित्तका संचय होता है शरदऋतू लगतेही सूर्यकी किरण तुलसंक्रांतीमें सोलेसे होकर सखत ताप गिरता है, इतनी किरण और किसी संक्रांतिमें भी नही होती है, ये वात सूर्यपन्नत्तीसूत्र तथा कल्पसूत्रकी लक्ष्मीवल्लभी टीकामें लिखा है लोकीक कहना वटभी है (दुहा–आसोजोंकी धूपमें, जोगी होगये जाट ॥ ब्राम्हण होगयेसेवडे, करसे वण गये भाट ॥ १ ॥ धूपके योगसें पित्तका कोप होकर पित्तका बुखार मोतीझरा पाणीझरा सन्निपात उलटी वगेरे अनेक उपद्रव होता है, तव यातो ठंडे इलाजोंसें अथवा हेमंतऋतूकी ठंडी हवासें या शिशिरऋतूकी तेज ठंडसे पित्त शांत होता है, लेकिन् उस हेमंतकी ठंडसें खानपानमें पौष्टिक तत्व जादा आता है, जिससें कफका संग्रह होता है, वो वसंतऋतूमें कोप करता है, हेमंतमें कफका संचय वसंतमें कोप, ग्रीष्ममें वायुका संचय प्रावृट्में कोप, वर्षामें पित्तकासंचय सरदमें कोप, इसवास्ते वसंत वर्षा और शरद इन तीनोंही ऋतूमें रोगकी जादा उत्पत्ती होती है, खानपान तथा विपरीत विहारसे वाय पित्त कफ विगडकर सव ऋतूओंमें रोग हो जाता है अपणी २ ऋतूमें जादा कोप करता है, जिसमेंभी वेसी २ प्रकृती

वालोंकू जादा, वसंतमें कफ सबोंके उपद्रव करता है, लेकिन् कफकी तासीरवालेकूं जादा इसीतरे औरोंकाभी समझ लेना.

॥ वसंतऋतू ॥

वसंतऋतू, जो ठंड कालेमें चिकणा और पुष्ट खुराक खाये जाता है उससे कफका संग्रह होकर ठंढ है सो कफकूं अछीतरे शरीरमें रखता है वसंतकी धूपसें गलना सरू होता है कफ जादेतर मगज छाती और सांधोंमें रहता है, शिरका कफ पिघलकर गलेमें ऊतरता है उससें जुखाम कफ खासीका रोग होता है छातीका कफ पिघलकर होजरीमें जाता है, उससें अग्नि मंद होती है और मरोडा होता है, इसवास्ते वसंतऋतू लगतेही उस कफका यत्न करणा मुख्य इलाज दो तीन है जो तासीरकूं माने सो कर लेना कफकी शांति करणी आहार विहारसें, १ या उलटी जुलावकी दवासें कफकूं निकाल डालणा २ जिसकूं कफकी वहोत तकलीप होय और शरीरमें शक्ति होय वो तो उलटी जुलाव लेना वालक बुड्ढा नाताकत कभी लेना नहीं सोले वर्षतक हरडे रेवचीणीका सत वगेरे वालककूं रोगपर सामान्य दस्त देना तेज जुलाव देना नहीं, (वसंतऋतूका नियम) । भारी तथा ठंडाअन्न, दिनकी नींद, चिकणा खट्टा तथा मीठा पदार्थ नया अनाज इनोंको छोडणा एक वर्षका पुराणा अन्न सहत कसरत जंगलमें फिरणा तेलमर्दन पगचंपी इत्यादि उपाय कफकी शांति करता है पुराना अनाज कफकूं कम करे सहत कफकूं तोडे, कसरत तेलमर्दन दवाणा शरीरके कफकी जगे छुडाय देता है, लूखी रोटी खाकर महनत मजूरी करनेवाले गरीबोंकों ये मोसम बिगाड नहीं करती माल खाकर एक जगे वैठणेवालेकू नुकशांन करती है तभी तो पूर्ण वैद्योकी सलासे मदनमहोत्सव राग रंग गुलाव जल अबीर गुलालादि खेल वगीचोमें जाणा,इत्यादि चला होगाजिसमें धर्मी पुरुष तो मकसू दावादमें परमेश्वरका रथ फागुण महोछवादिक निकालकर सैल करते है,कामी पुरुषोका मदन महोछव गवरां तथा होली वगेरोसें परिश्रम करते हैं, दालिये वडे कफोछेदक खाते है, खेलतमासेके वाहने रातकू जाग परिश्रमसें कफ घटाते हैं, लेकिन् होलीमें असंबद्ध वचन बोलते हैं, ये रूढी वहोत खराव है इस भंडचेष्टाकूं छोडणा अछा है इस वकणेसें मज्जा-तंतु कम जोर होकर वदनमें तथा बुद्धिमें खराबी होती है प्राये दो हजार वर्षसें ये भंड चेष्टा वाममार्गियोके मतकी है लोकोने ए मंगलीक माना है कूंडापंथियोका ये भजन मुख्य है ॥ मारवाड लोकोंमें वडी भूल है, जिस्सें नुकशांनी पाते है, लेकिन् संभलते नहीं ऋतु विपरीत मनोकल्पित आचरणा चली अब तो कूएमे भंग गिर गई जिसमेंभी वो कहणा वट, सत्य वणपडी के, हमकूं तो रातींधा भाभेजीने भजलोई राम, सोमरद लोक तो वाणे २ इस वांतोकों रोकेभी चाहे लेकिन् घरधणियाणीयोंके सामनें बिल्लीसें चूआकूं डरनाही पडे वसंतमें ठंडा खानेसे वडाई नुकशान सो शीलसातमकूं सब ठंढा खाते है

गुड महा नुकशानकारी, इस ऋतूमें सो गुडराव गुलपपडी अवश्य इस मोसममें खाते हैं, शील देवीके नामका वाहना अरे कुलवंती लक्ष्मीयों विचार करो दयाधर्मसें विरुद्ध और शरीरकूं नुकशांन करता एसा खानपानसे क्या फायदा है, जिस शीतलादेवीकूं पूजते तुमारी पीढिया गुजर गई जब बचोंकों ये रोग माके दूधका विकार निकलता था तो काणे अंधे विदरूप लुले लंगडे होते थे हजारों मरते थे जिसकों खोदके निकाल डाला बालकों का महासंकट टाल दिया ऐसे प्रत्यक्ष देव तुम अंगरेजोंकों क्यो नहीं पूजते वो आज साहिबके नामसे विख्यात तुम कलयुगमें इनोंकों दशमा अवतार प्रत्यक्ष विष्णुका समझो, रूढीपर नही चलना, तत्वविचारणा वाजे औरते तीन २ दिन ठंडा खाती है, इससे मतलब क्या निकलता है, रोग शीतलाकातो डाकदरोनें निजोखम कर दिया, अव्वलमें किसी महापुरुषनें सत्तमीकों शीलपालणा चूलेकों नहीं सिलगाणा अर्थात् उपवास करना कहा होगा, जिससे कफकी और कर्मोकी निवृत्ती हो जावै, तुम लोकोंनें मिथ्यात्वके वसये मामला सरू कर दिया अवल तो एक दोयनेही सरू किया होगा क्रमसें वढा है, जैसें दिल्लीमें, पनघटपर किसी औरतका घाघरा खुल गया लोकोंनें कहा घाघरा पड गयारे घाघरा पड गया, दूर खडेकूं सुनाई दिया आगरा जल गया, आखर वादसाहतक पहुंचीके आगरा जल गया आखर तहकीकातसे घाघरा पडणा सिद्ध भया दुनियाका तो ऐसा ढंग है ॥

॥ ग्रीष्म ऋतु ॥

(ग्रीष्म)गरमीमें वदनका कफ सूकणे लगताहै तव उस कफकी खाली जगे(हवा)वायु भरी जती हैइस मोसममें जैसें सूर्यका ताप जमीन केऊ परके रस कसकूं खेंच लेता है तैसें अदम्योंके शरीरके अंदरके कफरूप प्रवाही वहणेवाला पदार्थोंकूं शोपण करता है इस वास्ते सावधानपणेसें उपाय जरूर करना इस मोसममें जो गरम पदार्थ खानेमें आवे तो वडा नुकशान होता है रस सूके जितना जो पीछा भरती होताजावै वायुकूं जगे नही मिले ऐसे पदार्थ खाने पीणे चाहिये कुदरती पैदा भई वस्तु मधुर रसवाली इस मोसममें चहिये, सो मिलती भी है देशांतरोमें, जैसें केरी, आंव, फालसा, संतरा, नारंगी, अंवली नेचु जामुन वगैरे इस मुजव वरताव करना, १ खारा तीखा खट्टा और लूखा पदार्थ कसरत तैसें धूप अग्नि ये सव चीजें रसकूं सुकाकर गरमी वधाती है तैसें गरम मसाला अथाणा चटणियां मिरचां वगैरे हमेसां ही वहोत खानेसें नुकशान करती है इस मोसममें वहोतही करती है मीठा ठंडा हलका और रसवाले पदार्थ जादे खाना जिससें क्षय होता रस पैदा होता है भाग्यवान लोकोंनें दहीका पाणी शार मिश्री मिलाय श्रीखंड खाणा शरवत मुरब्बा पना इत्यादि खाना पीना तलघर तह खानेमें वैठना रक्तपित्त रोगमें जो पथ्य आगे लिखा है वो सव इस मोसममें पथ्य समझना स्त्री गमन ६

दिनसें अथवा पनरे दिनसें पथ्य लिखा है दुपहरकों, शक्ती मुजब, गरीब साधारण लोक गुलाब अनार नारंगीके वडिया सरवतोंकी एवजीमें अंवलीका पाणी कर उसमें खजूर अथवा पुराणा गुड मिलाकर पीणा अंवली हमेसां खाने लायक चीज नहीं है तोभी प्रकृतीकूं माफगत आवे तो गरमीकी सखत मोसममें साल उतार अमलीका सरवत फायदा करता है रोटीके संग खानेसें भी फायदेवंद है ॥

॥ वर्षा प्रावृट् ऋतु ॥

चार महीने वरसातके है मारवाडमें आद्रासें, दक्षिणमें मृग नक्षत्रसे, वर्षातकी हवा सरू होती है ग्रीष्ममें वायूका संचय भया होता है रस सूकनेसे ताकत घटी भई होती है जठराग्नि मंद भई होती है जलके कणों समेत जब वरसाती हवा चलती है मेह वरसता है पुरानेमें नया पाणी मिलता है ठंडा पाणी वरसणेसें शरीरकी गरमी वाफ रूप होकर पित्तकूं बिगाडती है जमीनकी वाफ और खटासवालापाक पित्तकूं वधाय वायू तथा कफकूं दवानेका प्रयत्न करता है और पालर पाणी मैला कफकूं वढाय वाय पित्तकूं दवाता है इसतरे इस मोसममें तीनों दोषोंके आपसमें झगडा चलता है इसवास्ते इन तीनों दोषोंकी शांतिवास्ते युक्ति पूर्वक आहार विहार रखणा वर्षाऋतूका वरताव इस मुजब करणा, जठराग्नि प्रदीप्त करे सब दोषोंकों वरावर रखे ऐसा खान पान करणा अर्थात् सब रस खाना १ वण सके तो ऋतू लगते ही हलकासा जुलाब लेणा खुराकमें वर्ष भरका पुराणा अनाज वरतणा २ मूंग और तूरकी दालका ओसावण उसमें छाछ डालके पीणा फायदेवंद है इस मोसममें दहीमें सेंचल सींधा या सादा निमक डालके खाणा वहोत अछा है लोक मूर्खतासें गरमी मोसममें दही खाणा अछा समझते हैं वेसा है नहीं, खाते ठंडा मालम देता है लेकिन् पचती वखत पित्त वढाता है उलटा गरमी करता है मिश्री डाल खानेसें पित्त शांत करता है वरसादमें दही वायूकों शमाता है अग्नि प्रदीप्त करता है युक्ति विना खाया भया दही सब ऋतूमें नुकशान करता है वरसात तथा हेमंतमें निमक डाला भया दही पथ्य है ३ छाछ नीवु केरी वगेरे खट्टे पदार्थ और मोसमसें इस मोसममें जादा पथ्य है प्रकृतीके अनुसार प्रमाण मुजब सवकूं ये चीज इस मोसममें पथ्य है ४ नदी तलाव कूएके पाणीमें वरसादका भेला पाणी मिलता है इसवास्ते इनोंका जल पीणे लायक नहीं जिस कूएमें या कुंडमें वरसाती पाणी नहीं मिलता होय सो पीणा ५ वरसादके दिनोंमें आरवाडा पदार्थ पापड काचरी आचार वगेरे तैसें घी तेलवाले पदार्थ भुजिये वडे सीरेड वेदवी कचोरी जादा फायदे वंद है ६ तल घरका वैठणा नदी तलावका पाणी गुड दिनको नींद धूपका लेना कसरत इतनी वातोंकों वरसातकी मोसममें छोड देना इस मोसममें लूखे पदार्थ खाणा नहीं, वायू वढाता है, ठंडी हवा लेनी नहीं कादा और भीनी जमीनपर पांव उघाडे फिरणा नहीं भींगे कपडे पहरणा नहीं वाय छांट सामने

बैठणा नहीं घरके सामने कादा और गंदकी होणे देनी नहीं पालर जल पीणा नहीं पालरमें नहाणांभी नहीं ८ एसा चार महीनोका प्रावृद्वर्षाका वरतावा हैं, लूंण इस मोसममें जादा खाणा कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है.

॥ शरदऋतु ॥

सव मोसमोंसे शरदऋतू रोगोंके उपद्रवोंकी जड है, सो लिखाभी है रोगाणां शारदी माता, पितातु कुशमाकरः॥सरदऋतू रोगोंकी पैदा करनेवाली माता है, वसंतऋतू रोगोंकूं पैदा करके पालनेवाला पिता है, सर्व रोगोंमे ज्वर राजा है, ज्वर है सो इस मोसमका मुख्य उपद्रव है इस मोसममें वहोत संभलके चलणा चहिये वर्षातमे संचय भया पित्त शरदऋतूकी धूपकी गरमीसें पित्तका कोप वदनमें होकर वुखार आता है, और वरसादसें जो भीगी जमी होती है वो धूपसें जलकी वराल होकर हवाकूं विगाडती है विशेषपणे (जो मुलक नीचे हैं) जहां वरसादका पाणी भरा रहता है, उहां हवा जादे विगडती है, उसकूं अंग्रेजीमें मेलेरिया कहते है ये जहरी हवा वुखारकूं पैदा करनेवाली है जिसकूं (मेलेरियसफीवर)कहते है शीतज्वर एकांतर तिजारी चोथिया वगेरे विषमज्वरकी ये खास मोसम है ये सव पित्तके ज्वर है वहोत अदम्योंकों ये ज्वर वरसोवरस आके हाजरी देता है और कितनोकी सेवा तो मुदततक वजाया करता है, सो छोडताभी नहीं है, शरीरकूं मिट्टी मिला देता है, पेटमें तिल्ली वढ जाती है सरीरकूं विदरूप कर देता है, जीर्णज्वरकेरूपसे वदनमें निवास करता है, वेर २ उथला मारता है, इसवास्ते हुसियारीपणेसे ऋतूमुजव आहार विहार करे पित्तकूं शांत करे वेदरकार लोक अज्ञानकेवस वडे २ कष्ट भोगते हैं, एसी मूर्खताईका वैसा फल चाखना होता है, इस पित्तकूं जीतनेका मुख्य उपाय तीन है (१) (पित्तशमन) खान पान और दवासें पित्त दवाणा(२उलटीसें) या जुलावसें, पित्त निकाल डालणा (३ तीसरा उपाय तो विरले भाग्य योगसेंही वण आता है,) याने खून निकल वाणा फस्त या जोक वगेरेसें थोडा २ पहलेके दो इलाज तो सहज करने जैसा है, मगर उलटी या जुलाव पथ्यसें कराणा,(मरदका जुलाव और औरतका जापा वरावर है,)पूरे वैद्यसें या इस दीपकके प्रकासकूं देखणा, जुलाव लेना तव मालसकराय घी पीकर तीन पांच या सात दिनतक पहली वमनकर तीन दिन के वाद जुलाव लेना घी पीनेकी मात्रा नित्यकी २ तोलेसें चार तोलेकी वस है आगे लिखेंगे ॥ वायुकी प्रकृतीवालेनें शरदऋतूमें घी पीकर पित्तकी शांति करणी, पित्त प्रकृतीवालेनें कडवे पदार्थ खाणा पीणा सो नीमके दरखत परकी गिलोय, नीमकी अंतर छाल, पित्तपापडा, चिरायता वगेरे मुख्य है, इनोमेंसे हर कोईएक चीजकी फक्की या रातकूं भिगाकर फजरमें उकालकर छाण ठंडाकर मिश्री डाल पीणा, मात्रा तोला १। इससें वुखार आवे नहीं होय तो चला जाय पित्तकी शांति हो जाती है, इससें दूसरा इलाज दूध मिश्री चावलोंके खानेसेंभी पित्त शांत होता है,

दिनसें अथवा पनरे दिनसें पथ्य लिखा है दुपहरकों, शक्ती मुजब, गरीब साधारण लोक गुलाब अनार नारंगीके वढिया सरवतोंकी एवजीमें अंवलीका पाणी कर उसमें खजूर अथवा पुराणा गुड मिलाकर पीणा अंवली हमेसां खाने लायक चीज नहीं है तोभी प्रकृतीकूं माफगत आवे तो गरमीकी सखत मोसममें साल उतार अमलीका सरवत फायदा करता है रोटीके संग खानेसें भी फायदेवंद है ॥

॥ वर्षा प्रावृट् ऋतु ॥

चार महीने वरसातके है मारवाडमें आद्रासें, दक्षिणमें मृग नक्षत्रसे, वर्षातकी हवा सरू होती है ग्रीष्ममें वायूका संचय भया होता है रस सूकनेसे ताकत घटी भई होती है जठराग्नि मंद भई होती है जलके कणों समेत जव वरसाती हवा चलती है मेह वरसता है पुरानेमें नया पाणी मिलता है ठंडा पाणी वरसणेसें शरीरकी गरमी वाफ रूप होकर पित्तकूं विगाडती है जमीनकी वाफ और खटासवालापाक पित्तकूं वधाय वायू तथा कफकूं दवानेका प्रयत्न करता है और पालर पाणी मैला कफकू वढाय वाय पित्तकूं दवाता है इसतरे इस मोसममें तीनों दोषोंके आपसमें झगडा चलता है इसवास्ते इन तीनों दोषोंकी शांतिनास्ते युक्ति पूर्वक आहार विहार रखणा वर्षाऋतूका वरताव इस मुजव करणा, जठराग्नि प्रदीप्त करे सव दोषोंकों वरावर रखे ऐसा खान पान करणा अर्थात् सव रस खाना १ वण सके तो ऋतू लगते ही हलकासा जुलाव लेणा खुराकमें वर्ष भरका पुराणा अनाज वरतणा २ मूंग और तूरकी दालका ओसावण उसमें छाछ डालके पीणा फायदेवंद है इस मोसममें दहीमें सेंचल सीधा या सादा निमक डालके खाणा वहोत अछा है लोक मूर्खताईमें गरमी मोसममें दही खाणा अछा समझते हैं वेसा है नहीं, खाते ठंडा मालम देता है लेकिन् पचती वखत पित्त वढाता है उलटा गरमी करता है मिश्री डाल खानेसें पित्त शांत करता है वरसादमें दही वायूको शमाता है अग्नि प्रदीप्त करता है युक्ति विना खाया भया दही सव ऋतूमें नुकशान करता है वरसात तथा हेमंतमें निमक डाला भया दही पथ्य है ३ छाछ नींवु केरी वगेरे खट्टे पदार्थ और मोसमसें इस मोसममें जादा पथ्य है प्रकृतीके अनुसार प्रमाण मुजव सवकू ये चीज इस मोसममें पथ्य है ४ नदी तलाव कूएके पाणीमें वरसादका मैला पाणी मिलता है इसवास्ते इनोंका जल पीणे लायक नहीं जिस कूएमें या कुंडमें वरसाती पाणी नहीं मिलता होय सो पीणा ५ वरसादके दिनोंमें खारवाला पदार्थ पापड काचरी आचार वगेरे तेसें घी तेलवाले पदार्थ खूवि वढे सोंठ वढती करेगी जादा फायदे वंद है ६ तळ वरका वैठणा नदी तलावका पाणी गुड दिनकी नींद धूपका लेना कसरत इतनी वातोंकों वरसातकी मोसममें छोड देना इस मोसममें खुले पदार्थ खाणा नहीं, वायू वढाता है, ठंडी हवा लेनी नहीं कादा और नीचे जमीनपर पांव उघाडे फिरणा नहीं भीगे कपडे पहरणा नहीं वाय छांट सामने

बैठणा नहीं घरके सामने कादा और गंदकी होणे देनी नहीं पालर जल पीणा नहीं पालरमें नहाणांभी नहीं ८ एसा चार महीनोका प्रावृद्वर्षाका वरताव हैं, लूंण इस मोसममें जादा खाणा कल्पसूत्रकी टीकामे लिखा है.

॥ शरदऋतु ॥

सब मोसमोंसे शरदऋतू रोगोंके उपद्रवोंकी जड है, सो लिखाभी है रोगाणां शारदी माता, पितातु कुशमाकरः॥सरदऋतू रोगोंकी पैदा करनेवाली माता है, वसंतऋतू रोगोंकूं पैदा करके पालनेवाला पिता है, सर्व रोगोंमे ज्वर राजा है, ज्वर है सो इस मोसमका मुख्य उपद्रव है इस मोसममें बहोत संभलके चलणा चहिये वर्षातमे संचय भया पित्त शरदऋतूकी धूपकी गरमीसें पित्तका कोप वदनमें होकर बुखार आता है, और वरसादसें जो भीगी जमी होती है वो धूपसें जलकी वराल होकर हवाकू विगाडती है विशेषपणे (जो मुलक नीचे हैं) जहां वरसादका पाणी भरा रहता है, उहां हवा जादे विगडती है, उसकूं अंग्रेजीमें मेलेरिया कहते है ये जहरी हवा बुखारकूं पैदा करनेवाली है जिसकूं (मेलेरियसफीवर)कहते है शीतज्वर एकांतर तिजारी चोथिया वगेरे विषमज्वरकी ये खास मोसम है ये सब पित्तके ज्वर है बहोत अदम्योंकों ये ज्वर वरसोवरस आके हाजरी देता है और कितनोकी सेवा तो मुदततक बजाया करता है, सो छोडताभी नहीं है, शरीरकूं मिट्टी मिला देता है, पेटमें तिल्ली बढ जाती है सरीरकूं विदरूप कर देता है, जीर्णज्वरकेरूपसे वदनमें निवास करता है, वेर २ उथला मारता है, इसवास्ते हुसियारीपणेसे ऋतूमुजब आहार विहार करे पित्तकूं शांत करे वेदरकार लोक अज्ञानकेवस बडे २ कष्ट भोगते हैं, एसी मूर्खताईका वैसा फल चाखना होता है, इस पित्तकूं जीतनेका मुख्य उपाय तीन है (१) (पित्तशमन) खान पान और दवासें पित्त दवाणा(२उलटीसें) या जुलावसें, पित्त निकाल डालणा (३ तीसरा उपाय तो विरले भाग्य योगसेंही वण आता है,) याने खून निकल वाणा फस्त या जोक वगेरेसें थोडा २ पहलेके दो इलाज तो सहज करने जैसा है, मगर उलटी या जुलाव पथ्यसें कराणा,(मरदका जुलाव और औरतका जापा वरावर है,)पूरे वैद्यसें या इस दीपकके प्रकासकूं देखणा, जुलाव लेना तव मालसकराय घी पीकर तीन पांच या सात दिनतक पहली वमनकर तीन दिन के वाद जुलाव लेना घी पीनेकी मात्रा नित्यकी २ तोलेसें चार तोलेकी वस है आगे लिखेंगे ॥ वायुकी प्रकृतीवालेनें शरदऋतूमें घी पीकर पित्तकी शांति करणी, पित्त प्रकृतीवालेनें कडवे पदार्थ खाणा पीणा सो नीमके दरखत परकी गिलोय, नीमकी अंतर छाल, पित्तपापडा, चिरायता वगेरे मुख्य है, इनोमेंसे हर कोईएक चीजकी फक्की या रातकूं भिगाकर फजरमें उकालकर छाण ठंडाकर मिश्री डाल पीणा, मात्रा तोला १। इससें बुखार आवे नहीं होय तो चला जाय पित्तकी शांति हो जाती है, इससें दूसरा इलाज दूध मिश्री चावलोंके खानेसेंभी पित्त शांत होता है,

जुलाब पित्त सामक एसा गुणवाला लेना हरडे अमरसरी जवा हरडे अथवा निसोतकी छाल चूरा मिलाय फक्की लेनी, दालभात पतला पथ्य लेना जादा दस्त काली निशोतकी छालसे आता है, लकडी वीचकी निकाल डालणी शरदऋतूका वरताव इस मुजब करणा १ फजरकी ओस पूरवकी हवा क्षार पेटभर भोजन दही तेल खटाई तीखा सूंठ मिरचादिक हींग खारा चरबीवाला जादा पदार्थ सूर्य तथा अग्निका तप तेजदारू दिनकी नींद इतनी वस्तुओंका त्याग करना शरीरके निरोगार्थ त्याग है, सो तप है, इछा रोधन है सो तप है १ मिश्री चूरा कंद कमोद साठीचावल दूध ऊख थोडा निमक गहूं, जव, मूंग नदी तथा तलावका पाणी चंदन चंद्रमाकी किरण फूलोंकी माला सुपेद वस्त्र ये सब शरदऋतुमें पथ्य है २ वैद्यकशास्त्र कहता है, ग्रीष्मऋतूमें दिनकूं सोणा, पोसमाहमस्त हेमंतमें गरम पुष्टिदार खुराक खाना शरदऋतूमें दूध मिश्री पीणा इसतरेसें प्राणी निरोग दीर्घायु होता है३ शरदऋतूमें भारी खुराक खाणा नहीं आसोज काती तुलवृश्चिककी संक्रांतीमें वहोत पेटभर खानेसें वहोत नुकशान है, काती वद अष्टमीसे मिगसरके आठ दिन बाकी रहे जहांतक यमदाढ कहलाती है, जो इन दिनोंमें थोडा और हलका भोजन करता है सो मौतकी दाढसे वचता है, शरदऋतूमें खीचडी कुपथ्य है रक्तपित्तका पथ्य इस मोसममें पथ्य है, नदी तलाव जिसपर दिनकी सूर्यकी किरण पडे रातकूं चंद्रकी एसा जल पीणा पथ्य है.

॥ हेमंतऋतु ॥

ग्रीष्मऋतू जैसें अदमीकी ताकतकूं खेंच लेती है, तैसे हेमंत शिशिरऋतू ताकतकी वढो तरी कर देती है, सूर्य ताकत पदार्थोंका खेंचनेवाला, चंद्र ताकत देनेवाला, शरदऋतू लगते सूर्य दक्षणायन होता है हेमंतमे चंद्रकी शीतलता वढनेसें अदम्योंमे ताकत वढणा सरू होता है सूर्यका उदय दरियावमें होता है वाहर ठंड रहणेसें अंदरकी जठराग्नि तेज होणेसें खुराक जादा हजम होता है, गरमीमें सुस्ती रहती है ठंड कालेमें तेजी, उसका यही कारण है जठराग्नि जिसकी तेज उसकूं पौष्टिक खुराक लेणा चहिये मंदाग्निवालेनें हलका और थोडा खुराक लेना चहिये तेजाग्निवाला पूरा पुष्ट खुराक नहीं खावे तो वो अग्नि रस खून वगेरेकूं सुखाय डालती है मंदाग्निवालेकूं पुष्ट खुराक खानेसें नुकशान होता है इस ऋतूमें मीठी चीज खट्टा और खारा पदार्थ खाणा चहिये मीठे रसमें कफ वढता है तभी प्रबल नहीं जठराग्निका वरावर पोषण होता है मीठे रसके संग रुचि पैदा करणेकूं खट्टा और खारा रस जादा खाना चहिये फेर ये तीन रस अनुक्रमें भी खाणेका दिखाता है हेमंत ऋतूके आठ दिनोंमेंमें पहले वीस दिनतक मीठा रस जादा खाना विचले वीस दिनोंमें खट्टा रस जादा खाणा अखेके वीस दिनोंमें खारा रस जादा खाणा मीठा रसका ग्राम गहूंकी रोटी मीठे नीमू खोपरा दाख साग सहित कढी अचार वगेरेका ग्राम लेणा चहिये

पापड खीचिया वगेरे अंतमे खाना इस क्रमसें उलट पुलट खावे तो जरूर नुकशान करता है, क्योंके शरद ऋतूका पित्त हेमंतके पहले पक्षमें शरीरमें कुछयकरहा भया होता है, सो पहले खट्टा खारा रस खानेमें आवे तो उलटा नुकशान होता है (हेमंत ऋतू-का वरताव इस मुजब करना) जुलाब लेणा नहीं, तीखा और तुरा पदार्थका जादा सेवन करणा नहीं, खुल्ली जगेमें सोणा नहीं, ठंडे पाणीसे नाहणा नहीं, दिनका सूणा नहीं १ अछीतरे पोषण करे ऐसा पुष्टिकारक खुराक खाना, स्त्री सेवन, तेलका मालिस, कसरत, पुष्टिकारक दवा, पौष्टिक खुराक, पाक, गरम कपडे, अंगीठीसें मकान गरम रखणा हेमंत शिशिरका एकही वरतावा है, ये दोनों ऋतू वीर्य सुधारणेकूं बहोत अछी है सब ऋतूमें आहार विहारका नियम पालनेसें शरीरका सुधारा होता है लेकिन् वीर्य सुधरे विगर शरीरका सुधारा कुछ भी नहीं समझणा वीर्य सुधारणेकूं ठंडी मोसम ठंडी प्रकृती ठंडा देश विशेष अनुकूल होता है ठंडी तासीर ठंडी मोसम ठंडे देशके वसणेवालोंका वीर्य जादा मजबूत होता है लेकिन् इन तीनोंकी अनुकूलता अपणे देशवासिंदोकों पूरी तोर हासिल नहीं है क्योंके अपना देश समशीतोष्ण है प्रकृती तथा ऋतुकी अनुकूलता तो अपणे आधीन है अपणी प्रकृतीकूं ठंडी, याने दृढता, और सत्व गुणवाली करणी, ये अपणे स्वाधीनताकी वात है तैसें वीर्य सुधारणेवास्ते तथा गर्भ धारण करणेवास्ते शीत कालकूं परसन करणा येभी अपणे स्वाधीनकी वात है इसवास्ते इस मोसममें अछे वैद्य या डाक-टरोकी सल्लासें पौष्टिक दवा पाक और खुराक खाणेसे बहोत ही फायदा होता है इस ऋतुमें शरीरकूं जो पोषण देणेमें आता है वो वाकीके आंठ महीनेतक ताकत रखता है वीर्यकू मजबूत करता है ये ऊपर छव ऋतुओंका पथ्य लिखा है सो निरोगी मिजाज वालोंकेवास्ते है रोगीका पथ्य रोग प्रकरणमें लिखेगें देश अपणी तासीरकू पहचान कर पथ्य करणा विशेष विवेचन वैद्य डाकदरोकी सल्लासे समझणा ॥

किरण ४ थी दिनचर्या.

रोगरहित अदमियोंनें आयुष्यकी रक्षावास्ते पिछली चार घडी रात रहे तव ऊठणा जादा निद्रा आती होय तो पांच वजेके पहले उठजाणा जिनके सोते २ सूर्य उदय हो जाता है जिसका वीर्य धैर्य और आयु कम हो जाता है, निरोग अदमी सूर्य उदयतक सोता रहे उसके शरीरकी चिन पिन और सुस्ती कभी मिटती भी नहीं अदमी रोगी सोतारहे सो प्राणांत हो जाता है, जलदी उठणेसें मन उछाहमें रहता है दिनमें काम काज अछी तरे होता है देरके उठणेसें अथवा जागते भी विछोणेमें पडे रहणेसें आलस वढता है प्रभातसमें बुद्धि निर्मल रहती यादशक्तीभी तेज रहती है इसवास्ते पढणा और शत्रू मित्रपर सम परिणाम रखके परम पदका साधन पहले दो घडी निश्चय करणा फेर इस भवके परभवके दोनोंके सुधारणेका प्रयत्न विचारणा परमेष्ठि परमेश्वरका स्मरण करणा (सो इसतरे है) जगजीव

रक्षक, संसारबंधनके छुडाणेवास्ते दया प्रमुख ज्ञानके उपदेशक राग द्वेषादिक अठारे दूषण रहित, इंद्रादिक देवतोंके पूजने योग्य, कर्मरूप वैरियोकों हननेवाले, केवल ज्ञान लक्ष्मीसे लोकालोकके सर्व भावके जाणनेवाले, स्याद्वादनय चक्रसे पदार्थोंके उपदेशक, अनंतबली, अनंत गुणधारक, चोतीश अतिशय, पैतीस वचनातिशय गुण विराजमान, ऐसा परम पुरुष जो परमेश्वर है संसारके तारणेकूं वो वीतराग देव है सो देवाधिदेव है, इति प्रथम पद स्मरण १ दुसरे पदमें सिद्ध बुद्ध पूरण ब्रह्म परमेश्वर ज्योतमें ज्योति विराजमान लोकाग्रपर, सर्व जगतका सचराचर भावके ज्ञायक, दर्शक, जन्ममरणरहित अचल अक्षय अव्याबाध सादि अनंत निर्मल स्थितिरूप सिद्ध परमात्मामें मेरी आत्मा तद्रूप हो जावे तो फेर संसारमे मेरा जन्म मरणरूप अवतार नहीं धारूं,इति द्वितीय पद स्मरण, (देवतत्व) २ पंचाचारके पालक, छत्तीस गुण विराजमान, संसारमें दीपककीतरे सत्य पदार्थ दिखला कर उजाला करणेवाले सर्व धर्माचार्योंकों मैं वंदन करूं ३ द्वादशांग रूप सूत्र अर्थ पढावे अज्ञानी शिष्योंकों ज्ञान पढाकर जगतमें पूज्य बणा देवे संसारका सर्व स्वरूप यथार्थ दिखला मुक्ति पंथ सधावे ऐसें सर्व उपाध्याय पच्चीस गुणोसें विराजमान जिनोंकों में वंदन करूं ४ मोक्षका मार्ग साधे सच्चा उपदेश सीधा देवे सो साधू शांत दांत ज्ञानी ध्यानी ऐसे सत्ताईस गुण विराजमान सर्व साधूकूं में वंदन करूं ५ इति गुरुतत्व ॥ इत्यादि ईश्वर स्तवना करणी ।

ऊषापान.

ये वैद्य विद्याका हुकम आदमियोंसें नही बणे जैसा है कफ और वायूके रोगवालेकूं तथा शक्तिपातमें बुखारमें भी नहीं करने योग्य है, पिछली चार घडी रात रहणेसें ऊठके ईश्वर स्मरण करे पीछे आठ अंजली याने अधसेर जल नाकसे पीणा, नहीं बणे तो ऐसा ही चसूडके पीणा, पीछे थोडी नींदले लेणी, फेर उठ जाणा, पांच बजे, नींद नहीं आवे तो ऐसा गुण नहीं करता, इसमें आयुष्य बढता है, हरस, सोजा, दस्त जीर्णज्वर पेटका रोग, कोढ, मेद मूत्रका रोग, खूनका, बिगाड, पित्तबिगाड, कान आंख गला और शिरका रोग मिटता है, अलग २ तासीर मुजब घी सहत दूध छाछ अनुपानमें वैद्य लोक दिलाया करते है तैसे पाणी सामान्य पदार्थ सर्वकी तासीरकूं अनुकूल है लेकिन् जो वे टेम उठते है तथा रातके खान पानके बिलकुल त्यागी है, उनोकों ऊषा जल पान नहीं करने लायक है, जो फायदा रातके खान पानके त्यागमें है, सो फायदेके हजारमें हिस्से ऊषा जल पान नहीं है ॥

मलमूत्रत्याग.

मलमूत्रका फजरमें त्याग करणेमें आरोग्य, आयुष्यकी बढोतरी होती है, हाजत भये पीछे रोकणा नहीं, बहोतसी बेमारियां हो जाती है बण पडे तो पावकोस शहरसे बाहिर

जंगल जाणा, बडे शहरोमें वणना मुसकिल है, कहा है, ओले सोवे ताजा खावै, पाव कोस मैदाना जावै, तिण घर वैद्य कभी नहीं आवै, निर्जीव साफजमीनपर मस्तकढांक मलका त्याग करणा दूसरेके किये मल मूत्रपर करणा नहीं दाद खाज सुजाक वगेरे रोग होणा संभव है १ मलमूत्र करते वोलना नहीं २ जोर जबरनसें करना नहीं ३ गुदालिंग मलत्याग किये वाद जलसे धोकर साफ करणा ४ वाद हाथ पांव अछीतरे धोकर साफ करणा वेलू वगेरेसें ५ ॥

मुखशुद्धि दांतण.

नियम वगेरे संभाल कर प्रत्याख्यानकी समाप्तीपर ईश्वरकूं यादकर फेर मंजन या दांतन करणा मैलकूं कफकूं और पित्तकूं साफ करे ऐसा वंवूलका तथा वोरका दांतण अछा होता है दांतण सीधा होणा वांकाटेढा नहीं होणा खूना पकडके दांतका मैल उतारा जावै इतना लंवा होणा वहोत जाडा नहीं होणा ज्यूं वहोत पतला नहीं होणा चीरा करके जीभका मैल घसके उतार डालणा हर किसमका दांतण हाथ लगा सोई करणा नहीं नफे नुकसानका गुण देखणा दक्षणके लोक दांत मजवूतीकूं मासेका दांतण वहोत श्रेष्ठ वतलाते है दांतण नहीं करणेवालोंनें मंजन करणा, सींधा निमक, सेका भया जीरा पीसकपड छाण कर मसलणा, तथा पीसा भया सींधा निमक तिलके तेलमें मिलाकर रगडणेसें मूंके दांतोंके सव विकार दूर होते हैं, तथा जीरा हीराकसीस मांजू फल विदाम छोतूं जलाये कोयले १।२।४।८।१६ इस तोलसे क्रमसें लेकर चूर्ण करणा, मुख सुगंधी करणा होय तो जीरेके वदले आरती कपूर डालणा इससें दांत मूं साफ रहता है मूंके अंदरकी वदवो और रोग मिटता है ॥

कसरत तथा तैलमर्दन.

वण सके तो तनदुरस्त अदमियोनें शरीर निरोग रखनेवास्ते हमेस थोडी २ कसरत करनी मुदगर फेरणा दंड वैठक करणी चलणे फिरनेकी कसरत सवसें अछी है, कसरतसें वदनका खून जलदी २ फिरता है, जहरी तत्व वहोत जलदी वाहिर निकल जाता है, अंग प्रफुल्लित रहता है, अवयव सुघाट हो जाते हैं, फुरती, काम करनेकी शक्ति वढती है कफका नास होता है, जठराग्नि वढती है, शरीरका वेडोल जाडापणा मेदवृद्धि मिट जाती है, एसा दवासें नहीं मिट सकता, एकाएक रोग पास नहीं आता, चिकणे माल खानेवालोंकूं भी कसरतसें वहोत फायदा है, ठंढकालेमें वसंतऋतूमें कसरत फायदेवंद है निराहार ठंढी वखत करनी, दम हांफणी नहीं चढे जहांतक करणी १ वुड्ढा वालक वेमार और अशक्त अदमीनें दंड वेठकादिक तो नहीं करणी लेकिन् शक्ति और तासीर माफक थोडी देर खुली हवामें फिर आणा, इनोंकी वो कसरतही समझणी २ जुवान अदमीनेभी कसरत माफकसरही करणी कसरत करते मूं सूके, पसीना होजावे, तव छोड देना ३

खास श्वास क्षय रक्तपित्त छातीकाजखम शरीरमें किसी जगेभी जखम होय और बहोतदुबले रोगमें, कसरत करणी नहीं ४ भोजन किये पीछै, स्त्रीगमन किये पीछै, रस्ते चलकर उपवास करके चिंता मलमूत्रकी संकारहते कसरत करणी नहीं ५ बहोत कसरत करनेसें खासी बुखार उलटी ग्लानी प्यास क्षय मूर्छा श्वास तथा रक्तपित्त वगेरे रोग हो जाता हैं, तेल मसलाना यहभी एक तरेकी कसरत है, हमेस फजरमें स्नान करनेके पहले तेलकी मालिस कराणी बहोतही फायदेबंद है निरोगपणा दीर्घायुकरणेवाली ताकत बढाणेवाली जरूर करणेलायक तेलकी मालिस है थोडे दिन कराणेसें इसका फायदा आपही मालम देता है १ चमडी सुंहाली होती है चमडीका लूखापणा खसरा औरभी चमडीका दरद जाते रहता है आगेके होय तो मिट जाते है २ वदनके सांधे नरम और मजबूत होते है ३ रस और खूनकेबंधभये रस्ते खुले हो जाते है ४ जमा भया खून खुला होकर वदनमें फिरणे लगता है, ५ खूनमें मिली वायू दूर होकर बहोत रोग आते भये अटकते हैं ६ जीर्णज्वर तथा ताजे खूनसे तपा भया वदन ठंडा पडता है ७ हवामें उडते जहरी तथा चेपी रोगके जंतू । तथा परमाणू वदनमें विगाड नहीं कर सक्ते, कसरत जितना फायदा है ताकत और क्रांती बढती है पुरुषार्थपणा प्राप्त होता है, तेलमें मसाले ऋतू तथा अपनी तासीर मुजब डालके तयारकर मसलावे तो बहोतही अछा तेल बनानेकी मुख्य चार किस्म है लोंग भिलामा जमालगोटाका विशेषपणे पाताल यंत्रसे १ तथा उकालकर दवायोका रस तेलमे डाल पकाया जावै २ घाणीमें डालकर फूलोंकी पुट देकर चंबेली मोगरे आदिका ३ सूके मसाले कूटकर जलमें मकरोय तेलमे डाल मट्टीके बरतणका मूं बंधकर धूपमें धरे रातकूं अंदर रक्खे महीने २० दिनसें छाण लेवे ४ सुलसा श्रावकणीके चरित्रमें लक्षपाक तेलका वर्णन है कल्पसूत्रकी टीकामें शतपाक सहस्रपाक लक्षपाक तेलराजा सिद्धार्थके मालसका वर्णन और गुण लिखा है सब रोगोंकूं मिटाणे न्यारे २ तेल और घी दवाईसें बणते है इसकी रिवाज बंगदेशमें अभी जारी है मगर चार महीने बाद बनानेके, हीन सत्व हो जाता है वेसा गुण नहीं रहता, तोभी सामान्य तोर तिल्लीका सादा तेल सबकूं फायदेबद है शिरमें डालणा कानमें डालणा, सब शरीरकी मालस नहीं बण आवे तो शिरमें कानमें पगकी पींडिया हाथ पावके तले तो जरूर तेलमें मसलणा, हमेस नहीं बने तो अठवाडे, वोभी नहीं बने तो ठंड कालेमें तो अवश्य मसलाना । चणेके आटेमें अथवा आंवलेको चूर्णमें चिकणास दूरकर स्नान करणा या मसालेमे या आजकल साबूमें भी चिकणास दूर करना कहते हैं, देसी साबूमें चरबी नहीं गिरती.

स्नान बलिकर्म.

स्नानका हेतू समझके स्नान करणा लिखा है स्नानमें धर्म माननेवाले धर्मांध लोक

वेर २ नाहते हैं लेकिन् जिस कामके वास्ते नाहणा और जिस तरे स्नान करणा वो वात विरले विवेकी जाणते हैं स्नान करनेका मुख्य हेतु शरीरकी पवित्रताका है वस इसकूं चाहे कितनेइ गाडे भरके धर्म समझो ऊपरके शरीरकी शुद्धि स्नान विगर कभी होणी नहीं है वो करके पीछे क्या करणा उसका खयाल वहुतोंकों नहीं है सो लिखते हैं, जैसें भगवती सूत्रमें तुंगीया नगरीके श्रावक साधूओंकों वांदणे चले तहां पहले (न्हाया कयवलिकम्मा) अर्थ इसका ऐसा है वो श्रावक पहिले स्नान कर वलि कर्म याने देवकी पूजा करे ऐसें सुदर्शन सेठका अधिकार भगवतीमें है जो भगवान महावीरकूं वांदने निकला, उहांभी एसाही लिखा है, ज्ञाता अंतगडदशा प्रमुख अनेक सूत्रोंमें जहां किसी श्रीमंत गृहस्थका शुभकार्य करणा चला हैं, उहां न्हाया कयकलिकम्मा एसा पाठ है, उहां केइयक एकांत नयहठ ग्राही एसा कहते हैं कोइ कुलदेव पूजा होगा भगवतीजीमें खुलासा तुंगिया नगरीके श्रावकोंका सम्यक्त निश्चलका एसा पाठ है, नही चाहते हैं वो श्रावक किसी यक्ष भूत नाग आदि किसी देवताका सहाय, एसे दृढ धर्मियोके, स्थापना अरिहंतही देवकूं पूजणा स्वतः सिद्ध है श्रावक दृढ सम्यक्तवंत अरिहंतदेव या (अरिहंतचैत्य) याने उनोंकी मुर्त्ति टाल अन्य देवकूं वंदे पूजे नहीं, उवाई सूत्रमें देखो अंबड संन्यासी श्रावकका अधिकार, आनंद श्रावकके अधिकार उपासक दशामें तों इहांतक निश्चय दिखलाया है वो श्रावग वंदे पूजे अरिहंतके चैत्यकों, अन्यमतवाले जो हैं वो जिनराजकी मूर्त्तिकों अपना देव वनाकरके पुजे तो आनंद कहता हैं हेवीर परमात्मा और देवतो हरिहरादिक नपुजूं सो तो नपुजूं, लेकिन् मेरा इष्ट अरिहंत देवकी मूर्त्ति अन्य रूप स्थापनासें पूजे जाय, उसकूं पूजं तो वो अन्य देवकी लोक समझे तो मुझें सम्यक्तमें अती चारलगे जैसें बद्रीनाथकी मुर्त्ति जगन्नाथजीकी मूर्त्तिके चोलेके अंदरकी वुद्ध भगवान पार्श्वनाथकी मूर्त्ति और दक्षणमें नेमनाथजीकी काउसग्गधारी पांडरीनाथकी मुर्त्ति,गिरीकेवालाजीकी मुर्त्ति श्रीगोरधननाथजीकी मूर्त्ति,जैपुरपासडिग्गीमें श्रीऋषभदेवजीकी कल्याणरायजीकी मूर्त्ति,यद्यपि जिनराजकी मूर्त्तियां और मंदिर जैनियोंका कराया भया हजारों अन्य मतवालोनें अपणी स्वतत्रता कर पूजा और वेसमें फेरफार कियाहै ऐसे जिनराजकी मूर्त्ति अन्य तीर्थी ग्रहीतकी आनंद ने खुलासा कियाहै स्वतंत्रता और विधि स्थापितकी ग्रहणता वंदना पूजा रक्खी है इसपर एकांत नयग्राही एसा कहते है, रायपसेणी सूत्रमें चित्रसारथीके अधिकारमें, जैनी होणेके पहिले न्हाया कयवलि कम्माका लेख है, उसने कोनसा देवपूजा (उत्तर) जिस २ धर्मवालेके जो जो अपणा इष्टदेव है, उसकी पूजा करके फेर दुसरे कार्यमे लगे अवीभी एसा है, शिवके इष्टवाले शिव, विष्णुवाले विष्णु, इत्यादि, मुसलमीन लोकोंकाभी एसा दृढ निश्चय है, पलीतपणे निवाजगुजारे सो काफर, इल्म मंत्रादिक सिद्ध करणेमें पाकी जा मुख्यपणे सवको मंजूर है,इसवास्ते स्नान करना, शरीर पवित्रकरणा देव

ति, नास्तिकोंके कोई देवका इष्ट नहीं होता के इयक जैनलोक, कल्पवृक्ष
चिंतामणी समान देवाधिदेवकी स्थापना छोड अन्य भूत प्रेतोंकी मूर्ति पूजने
येभी एक बुद्धिकी विचित्रता है, कोइ पूछै तुम जैनी नाम धराके उस तुमारे
चलाणेवाले धर्म उपदेशककी मूर्त्ति क्यों नहीं वंदते पूजते, तो कहते हैं, हिंसा
और पाप लगता है, फिर पूछै इहां किस किसम पधारे हो तो कहतेहै जात देणेकूं,
इहां क्या करते हो इसमें पाप नहीं, होता तो कहते है, संसार खाते अब वो
न अन्यमती दिलमें सोचणे लगा इनोंकी समझ केसी है, सो देवकूं संसार खातेके
ठहराया, इय तो हमने किसी भी धर्ममें सुणा नहीं सो दो तरेके देव होय, मुसल
क खुदा, अंग्रेज एक ईश्वर, जैन एक अरिहंत, शिवएक, विष्णु एक, जिनोंका
है वो सब तरेके सुखकी चाहना, एकही परमेष्टसें चाहते हैं, और दमदार वेडा
ी होता है, देव प्रत्यक्ष तो ऐसे बुद्धिवानोकों कब भया होगा, सो रूबरू कह गया
के, हम तेरे संसारी नोकर हैं, सो तुम कहोगे सो करेंगें, इय लोक एकांतनय हठ-
अन्य दर्शनीयोंकों कहतें है, भला इनोंमें कुछ कमी है, नाम धराते है, जैन स्याद्वाद
हैश्रावक, तुमनें कोनसी हिंसा त्यागी है, अनाज वेचते, घी वगेरे रस वेचते हो, चूला
रोती वाडी गाय भेस उंठ घोडे जूठ बोलते हो सेरका तीन पाव देते हो सवा
लेते हो, इत्यादि तुमारे कर्त्तव्य तो पंचेंद्री जीवोंतक महा घोर हिंसाके है, उहांतक
ा भया नहीं पाप लगा नहीं और धर्मोपदेशक परमात्माकी मूर्त्ति पूजामें तुमकों पाप
ा जो की तुमारे सूत्रोंमें करणा लिखा हजारों मंदिर हजारो वर्षके मोजूद लाखों वर्षकी
तियां मोजूद है, औरंगाबादमें हमने तुमारे पद्मप्रभुजीका मंदिर पचीससें वर्षोंका देखा
गांव बीकानेर तालेकेमें नवसे वर्षका देखा है मित्र तुम सर्व संसार छोड शिरके
द्रव्य छोड द्रव्य पूजामें पाप मानते, और नहीं करते, तो हम तुमारा वचन
र नहीं करणा मंजूर करते, स्यात् एक न्यायसें, क्योंके हमने कनीरामजी ढूंढिये
धूमें सुणा है श्रावक जब इग्यारे प्रतिमा धारता है तब ऊपरकी प्रतिमामें स्नान
छोडता है और स्नान छोडता है तब ही बलि कर्म याने देवकी द्रव्यपूजा छोडता है
नहीं तो तुम हमकूं दिखावो पहले पोसाटालकर श्रावककूं किस जगे स्नान और देवके
पूजाकी मनाई लिखी है जैसें और २ कृत्यका नाम लेलेकर पाप बताया है ऐसा लिखा
अरिहंत देवके मूर्तिकी पूष्पादिकसें पुजा करे सो पाप है, हां साधूकूं
द्रव्य पूजाकी मनाइ है मनाई महानिसीत सूत्रमें है साधूकूं
। स्नानभी नहीं करणा है तो देव पूजा भी नहीं इतना सवाल
दर्शनका लगोटिये महेश्वरी राममुन्दासका यथोचित जाणके
लिखा है ये पुस्त वडा विवेकी या अन्य दर्शनमें हजारों

आदमी शांतशील परमार्थिक गुणवंत हमने देखे हैं जभी तो जैन ग्रंथोमें लिखा है (हे गोतम अन्यदर्शनीमें अभी एसे मौजूद है, सो एक भवकरके माहाविदेह क्षेत्रसें मुक्ति जाणेवाले अभी भरतमें हाजर है,) सत्य है ॥ नहीं कोई जातको कारण मन मानेकी वाता-हरी भजे सो हरिका होय ऊंच नीच अंतर नही कोय ॥ स्नान करते वखत सर्व शरीरकूं मस-लके धोणा(क्यूंके) मैला कुचीला रहणेसें चमडी संबंधी अनेक रोग पैदा हो जाता है जूं लीख चमजूं फूलण (जिसमे) फेर वदवो हो जाती है, तनदुरस्त अदमी तथा वडा छोटा वालककों दिनमें एक वेर तो स्नान जरूर करना, स्नानके इतनें नियम है, १ शिरपर गरमागरम पाणी कभी डालना नहीं इससें आखोंकूं नुकशान पहुंचता है २ वेमार अदमी तथा ज्वर गये वाद जहांतक वदनमें ताकत नहीं आवे एसे अदमीकूं स्नान करना नहीं जिसमें फेर ठंडे जलसें तो विलकुल नहीं करना, वेमार निर्वलने भूखे पेट नहाणा नहीं चा दूध वगेरे नास्ता कर ठहरके नाहणा, धूप चढे पीछे नाहणा ३ सिरपर तो ठंढा जल या कुनकुना कूअेके निकले जल जेसा नीचेके धड परठीक गरम जल कमरके नीचे सुहा-वता गरम तेल जलसें नहाणा पित्तकी तासीरवाले जवान अदमीने ठंडे पाणीसें न्हाणा नुकशान नहीं करता, लेकिन सामान्यतोर थोडा गरम जलका स्नान सवकू माफगत आवे जेसा है ४ वहोत हवावाली तेसें जाहर खुली जगामें नाहणा नही एकांत जगे विगर पूरा स्नान नहीं हो सकता पूरी पवित्रता विगर देवपूजा जो स्नानका हेतू है सो पार नही पडता व वदनकूं पीठी उवटणेसें साफ करे या साबूसें रगडके धोकर साफ स्नान कर सूके रुमालसे पोंछ डाले जिसमें मैल और जल साफ हो जावे, भीगे कपडेसे वो काम हासल नही हो सकता अपवाद मार्गमें जैन मुनि भीगे कपडेसे मैल उतार डाले ये वात भगवती सूत्रके पचीसमे शतकमें देह वकुसके निर्णयमें टीकाकारने लिखा है, तनकूं साफ पूछणेसें खून अछीतरे फिरता है, चमडीपर तेज आता है, कसरत होती है, ५ वुखार दस्त जुखाम कफ वादीके रोगमें तेसें भोजन किये वाद तुरत न्हाणा नहीं जिसने मगज वगेरे गरिष्ट पदार्थ वहोत पेटभर खाया होवे प्यास वहोत उसपर लगे पेटमें जल मावे नही एसें कों जलमें गलेतक २ घंटे वैठाणा हजम हो जाता है, स्नानसें जठराग्नि प्रदीप्त होय आयुष्य और शक्ति वढे उत्साह वल तेज प्रताप वढे मैल खाज थकेला पसीना आलस प्यास और जलण मिटती है, रगडके नाहणेसें चमडीके ऊपरके छेद खुले हो कर वदनके अंदरका निकम्मा पदार्थ जो पसीनासो वाहीर निकल सकता है, स्नान करे पीछे शरीर और मन प्रफुल्ल होता है इंद्रिये शांत होती है रगतपित्त कम होता है ठंडे जलसें इसवास्ते निचिंत होकर अपणे १ इष्ट देवका आवस्यक सूत्रके लो-गस्समें जो लिखा है कित्तिय १ वंदिय २ महिया ३ इसका अर्थ एसा है, हे अंतर्यामी सिद्ध वुद्ध परमात्मा तुम कीर्तन करणे योग्य हो एसा विचार गुण वर्णनरूप भाव

पूजाकेवास्ते, नास्तिकोंके कोई देवका इष्ट नहीं होता के इयक जैनलोक, कल्पवृक्ष कामधेनु चिंतामणी समान देवाधिदेवकी स्थापना छोड अन्य भूत प्रेतोंकी मूर्ति पूजने जाते हैं, येभी एक बुद्धिकी विचित्रता है, कोइ पूछै तुम जैनी नाम धराके उस तुमारे धर्मके चलाणेवाले धर्म उपदेशककी मूर्त्ति क्यों नहीं वंदते पूजते, तो कहते हैं, हिंसा होती है और पाप लगता है, फिर पूछै इहां किस किसम पधारे हो तो कहतेहै जात देणेकूं, फिर पूछै इहां क्या करते हो इसमें पाप नहीं, होता तो कहते है, संसार खाते अब वो बुद्धिवान अन्यमती दिलमें सोचणे लगा इनोंकी समझ केसी है, सो देवकूं संसार खातेके अलग ठहराया, इय तो हमने किसी भी धर्ममें सुणा नही सो दो तरेके देव होय, मुसल मीन एक खुदा, अंग्रेज एक ईश्वर, जैन एक अरिहंत, शिवएक, विष्णु एक, जिनोंका जो इष्ट है वो सब तरेके सुखकी चाहना, एकही परमेष्टसें चाहते हैं, और दमदार वेडा पार भी होता है, देव प्रत्यक्ष तो ऐसे बुद्धिवानोकों कब भया होगा, सो रूबरू कह गया होय के, हम तेरे संसारी नोकर हैं, सो तुम कहोगे सो करेगें, इय लोक एकांतनय हठ-ग्राही अन्य दर्शनीयोंकों कहतें है, भला इनोंमें कुछ कमी है, नाम धराते है, जैन स्याद्वाद धर्मी हैश्रावक, तुमनें कोनसी हिंसा त्यागी है, अनाज वेचते, घी वगेरे रस वेचते हो, चूला चक्की खेती वाडी गाय भेस उंठ घोडे जूठ बोलते हो सेरका तीन पाव देते हो सवा सेर लेते हो, इत्यादि तुमारे कर्त्तव्य तो पंचेंद्री जीवोंतक महा घोर हिंसाके है, उहांतक हिंसा भया नहीं पाप लगा नहीं और धर्मोपदेशक परमात्माकी मूर्त्ति पूजामें तुमकों पाप लगा जो की तुमारे सूत्रोंमें करणा लिखा हजारों मंदिर हजारो वर्षके मोजूद लाखों वर्षकी मुर्तियां मौजूद है, औरंगाबादमें हमने तुमारे पद्मप्रभुजीका मंदिर पच्चीससें वर्षोंका देखा रिणीगांव बीकानेर तालकेमें नवसे वर्षका देखा है मित्र तुम सर्व संसार छोड शिरके बाल लोच द्रव्य छोड द्रव्य पूजामें पाप मानते, और नहीं करते, तो हम तुमारा वचन और नहीं करणा मंजूर करते, स्यात् एक न्यायसें, क्योंके हमने कनीरामजी ढूंढिये साधूमें सुणा है श्रावक जब इग्यारे प्रतिमा धारता है तब ऊपरकी प्रतिमामें स्नान छोडता है और स्नान छोडता है तब ही बलि कर्म याने देवकी द्रव्यपूजा छोडता है नहीं तो तुम हमकूं दिखावो पहले पोसाटालकर श्रावककूं किस जगे स्नान और देवके पूजाकी मनाई लिखी है जैसें और २ कृत्यका नाम लेलेकर पाप बताया है ऐसा लिखा

अरिहंत देवके मुर्तिकी पूष्पादिकमें पुजा करे सो पाप है, हां साधूकूं

द्रव्य पूजाकी मनाइ है मनाई महानिसीत सूत्रमें हे साधूकूं

। स्नानभी नहीं करणा है तो देव पूजा भी नहीं इतना सवाल

दक्षनका लखोटिये महेश्वरी रामसुखदासका यथार्थ जाणके

लिखा है ये पुरुष वडा विवेकी था अन्य दर्शनमें हजारों

आदमी शांतशील परमार्थिक गुणवंत हमने देखे हैं जभी तो जैन ग्रंथोमें लिखा है (हे गोतम अन्यदर्शनीमें अभी एसे मौजूद है, सो एक भवकरके माहाविदेह क्षेत्रसें मुक्ति जाणेवाले अभी भरतमें हाजर है,) सत्य है ॥ नहीं कोई जातको कारण मन मानेकी वाता-हरी भजे सो हरिका होय ऊंच नीच अंतर नहीं कोय ॥ स्नान करते वखत सर्व शरीरकूं मस-लके धोणा(क्यूंके) मैला कुचीला रहणेसें चमडी संबंधी अनेक रोग पैदा हो जाता है जूं लीख चमजूं फूलण (जिसमे) फेर वदवो हो जाती है, तनदुरस्त अदमी तथा वडा छोटा वालककों दिनमें एक वेर तो स्नान जरूर करना, स्नानके इतनें नियम है, १ शिरपर गरमागरम पाणी कभी डालना नहीं इससें आखोंकूं नुकशान पहुंचता है २ वेमार अदमी तथा ज्वर गये वाद जहांतक वदनमें ताकत नही आवे एसे अदमीकूं स्नान करना नहीं जिसमें फेर ठंडे जलसें तो विलकुल नही करना, वेमार निर्वलने भूखे पेट नहाणा नहीं चा दूध वगेरे नास्ता कर ठहरके नाहणा, धूप चढे पीछे नाहणा ३ सिरपर तो ठंढा जल या कुनकुना कूअेके निकले जल जेसा नीचेके धड परठीक गरम जल कमरके नीचे सुहा-वता गरम तेल जलसें नहाणा पित्तकी तासीरवाले जवान अदमीने ठंडे पाणीसें न्हाणा नुकशान नहीं करता, लेकिन सामान्यतोर थोडा गरम जलका स्नान सवकूं माफगत आवे जेसा है ४ वहोत हवावाली तेसें जाहर खुली जगामें नाहणा नही एकांत जगे विगर पूरा स्नान नही हो सकता पूरी पवित्रता विगर देवपूजा जो स्नानका हेतू है सो पार नही पडता व वदनकूं पीठी उवटणेसें साफ करे या सावूसें रगडके धोकर साफ स्नान कर सूके रुमालसे पोंछ डाले जिसमें मैल और जल साफ हो जावे, भीगे कपडेसे वो काम हासल नहीं हो सकता अपवाद मार्गमें जैन मुनि भीगे कपडेसे मैल उतार डाले ये वात भगवती सूत्रके पच्चीसमे शतकमें देह वकुसके निर्णयमें टीकाकारने लिखा है, तनकू साफ पूछणेसें खून अछीतरे फिरता है, चमडीपर तेज आता है, कसरत होती है, ५ वुखार दस्त जुखाम कफ वादीके रोगमें तेसें भोजन किये वाद तुरत न्हाणा नहीं जिसने मगज वगेरे गरिष्ट पदार्थ वहोत पेटभर खाया होवे प्यास वहोत उसपर लगे पेटमें जल मावे नहीं एसें कों जलमें गलेतक २ घंटे वैठाणा हजम हो जाता है, स्नानसें जठराग्नि प्रदीप्त होय आयुष्य और शक्ति वढे उत्साह वल तेज प्रताप वढे मैल खाज थकेला पसीना आलस प्यास और जलण मिटती है, रगडके नाहणेसें चमडीके ऊपरके छेद खुले हो कर वदनके अंदरका निकम्मा पदार्थ जो पसीनासो वाहीर निकल सकता है, स्नान करे पीछे शरीर और मन प्रफुल्ल होता है इंद्रिये शांत होती है रगतपित्त कम होता है ठडे जलसें इसवास्ते निचिंत होकर अपणे १ इष्ट देवका आवस्यक सूत्रके लो-गस्समें जो लिखा है कित्तिय १ वंदिय २ महिया ३ इसका अर्थ एसा है, हे अंतर्यामी सिद्ध वुद्ध परमात्मा तुम कीर्तन करणे योग्य हो एसा विचार गुण वर्णनरूप भाव

पूजाकेवास्ते, नास्तिकोंके कोई देवका इष्ट नहीं होता के इयक जैनलोक, कल्पवृक्ष कामधेनु चिंतामणी समान देवाधिदेवकी स्थापना छोड अन्य भूत प्रेतोंकी मूर्ति पूजने जाते हैं, येभी एक बुद्धिकी विचित्रता है, कोइ पूछै तुम जैनी नाम धराके उस तुमारे धर्मके चलाणेवाले धर्म उपदेशककी मूर्त्ति क्यों नहीं वंदते पूजते, तो कहते हैं, हिंसा होती है और पाप लगता है, फिर पूछै इहां किस किसम पधारे हो तो कहतेहै जात देणेकूं, फिर पूछै इहां क्या करते हो इसमें पाप नहीं, होता तो कहते है, संसार खाते अब वो बुद्धिवान अन्यमती दिलमें सोचणे लगा इनोंकी समझ केसी है, सो देवकूं संसार खातेके अलग ठहराया, इय तो हमने किसी भी धर्ममें सुणा नहीं सो दो तरेके देव होय, मुसल मीन एक खुदा, अंग्रेज एक ईश्वर, जैन एक अरिहंत, शिवएक, विष्णु एक, जिनोंका जो इष्ट है वो सब तरेके सुखकी चाहना, एकही परमेष्टसें चाहते हैं, और दमदार बेडा पार भी होता है, देव प्रत्यक्ष तो ऐसे बुद्धिवानोकों कब भया होगा, सो रूबरू कह गया होय के, हम तेरे संसारी नोकर हैं, सो तुम कहोगे सो करेंगें, इय लोक एकांतनय हठ-ग्राही अन्य दर्शनीयोंकों कहतें है, भला इनोंमें कुछ कमी है, नाम धराते है, जैन स्याद्वाद धर्मी हैश्रावक, तुमनें कोनसी हिंसा त्यागी है, अनाज वेचते, घी वगेरे रस वेचते हो, चूला चक्की खेती वाडी गाय भेस उंठ घोडे जूठ बोलते हो सेरका तीन पाव देते हो सवा सेर लेते हो, इत्यादि तुमारे कर्त्तव्य तो पंचेंद्री जीवोंतक महा घोर हिंसाके है, उहांतक हिंसा भया नहीं पाप लगा नहीं और धर्मोपदेशक परमात्माकी मूर्त्ति पूजामें तुमकों पाप लगा जो की तुमारे सूत्रोंमें करणा लिखा हजारों मंदिर हजारो वर्षके मोजूद लाखों वर्षकी मुर्तियां मोजूद है, औरंगाबादमें हमने तुमारे पद्मप्रभुजीका मंदिर पचीससें वर्षोंका देखा रिणीगांम बीकानेर तालकेमें नवसे वर्षका देखा है मित्र तुम सर्व संसार छोड शिरके बाल लोच द्रव्य छोड द्रव्य पूजामें पाप मानते, और नहीं करते, तो हम तुमारा वचन और नहीं करणा मंजूर करते, स्यात् एक न्यायसें, क्योंके हमने कनीरामजी ढुंढिये पासूमें सुना है श्रावक जब इग्यारे प्रतिमा धारता है तब ऊपरकी प्रतिमामें स्नान छोडता है और स्नान छोडता है तब ही बलि कर्म याने देवकी द्रव्यपूजा छोडता है नहीं तो तुम हमकूं दिखावो पहले पोसाटालकर श्रावककूं किस जगे स्नान और देवके पूजाकी मनाई लिखी है जैमें और २ कृत्यका नाम लेलेकर पाप बताया है ऐसा लिखा मूढोंके श्रावक अरिहंत देवके मुर्त्तिकी पूष्पादिकसें पुजा करे सो पाप है, हां साधूकूं देवे सुरके बनावने द्रव्य पूजाकी मनाइ है मनाई महानिसीत सूत्रमें है साधूकूं जावजीव स्नानभी नहीं करणा है तो देव पूजा भी नहीं इतना सबाल

देख दर्शनका लखोटिये महेश्वरी रामसुखदासका यथोचित जाणके खलासा देखूंच लिखा है ये पुरुष बडा विवेकी था अन्य दर्शनमें हजारों

है, भूख लगे वाद नहीं खाणेसें (जैसें लकडीके लगी अग्नि दुसरी लकडी नही मिलती है, तव उस लकडीकों जलाते जाती है, और आप बुझते जाती हैं,) तैसें शरीरकी अग्नि बुझ जाती है, पक्की भूख लगे वोही वखत भोजनका है, ये नियम दिनका है, रातका नहीं, शुद्ध और सादाभोजन करणा, भोजनकी जगे तथा वासणवरतण मांजेधोये साफ रखणा भोजन वणाणेकी जगे१ भोजन करणेकी जगे२सीधी सामान रखणेकी जगे३ पाणी रखणेकी जगे ५ सोणेकी जगे ६ वैठणेकी जगे ७ देवपूजा करणेकी जगे मंदरीमें ८ स्नान करणेकी जगे ९ उत्कृष्टनव जगे चंद्रवे बांधणे चहिये, मकडी गिलेरी वगैरे जहरी जानवरोकी लाल मलमूत्रादिकसें अनेक रोग होता है, सो नहीं होवे, भोजनकी वखत मन प्रसन्न रहे ऐसी तयारी होणी, ऐसीही वात करनी तथा सुणनी मनमें खेद ग्लानी तथा क्रोध होय ऐसी वस्तु नजरके सांमणे रहणे देणी नहीं प्रियमित्र स्त्री वगैरे स्वजनसंबंधीयोंकों पास रहते जीमणा, वहुत तीखामिरचादिक वहुत खट्टा वहोत खारा और वहोत शाक मसालेवाला पदार्थ खाणा नही, मोसम और तासीरकूं देख स्वाद और रसवाला भोजन करणा भोजनमें जो रस जादा होता है, सव रस वैसाही वण जाता है, १ भोजन करती वखत सींधा निमक लगाय आद्रक तोलेभर पहली खाणा २ भोजन करती वखत रोटी रोटा वगैरे करडे पदार्थ घीसे पहले खाना, वाद दालसागसें खाणा पित्त तथा वायुप्रकृतीवाले मीठे पदार्थ भोजनके मध्यमे खाणा, पीछे दाल भात वगैरे नरमपदार्थ खारकर अंतमें दूध या छाछ वगैरे पतला पदार्थ खाणा ३ स्वादविना आखकूं रुचे नहीं. तथा वासी अन्न खाणा नहीं. ४ गरमागरम उष्ण ताकतका नाश करता है, वहोत ठंढा वायु कफ आंम पैदा करता है, ताजा तयार अन्न खाणा ५ मंदाग्निवालेको उडद वगैरे पदार्थ स्वभावसेंही भारी पडता है, मूंग मोठ चिणा तूर उनमानसें जादा खाय तो भारी पडता है, मिस्साकी पुडी या रोटी वडी नुकशानकारी है, मल और हवा पेटमें वढाती है, अतिसार संग्रहणी होणा ताजव नहीं. और दला भया अन्न वणाणेके फेरफारसें भारी होता है, जेसे गेहूंका सादा वाट रांधे तो वैसा भारी नहीं और लपसी भारी गरिष्ट है, ६ भोजनके पहिले पाणी पीणेसें अग्नि मंद होती है, वीचमें थोडा २ एकाध दफे जलपिया भया घी जितना फायदा देता है, भोजनके अंत आचमनमात्र दो घूंट पीणा, जादा पीणेसें अन्न हजम नहीं होता है, ७ उडद वाजरी गहुं वगैरे (आटेके वणें) पदार्थोंसें आधा पेट भरणा, मुंग तूरकी दाल तथा भातसें पूरा पेट भरणा, दूध या छाछ गऊकी मौली पीणी (क्योंके) हलका पदार्थ है, सो अंतमें पीणा८कितनेक पदार्थ अमृत रूप हैं, लेकिन दुसरी चीजके संग मिलणेसें नुकशानकारी होता है, एकदमतो नफे नुकसांनकी खवर नहीं पडती लेकिन सर्वज्ञ परमात्माने जो वैद्यकादिक शास्त्रोंमें हुकम दिया है सो हितके वास्तेही दिया है, उपगारीपणे तो ग्रंथही वणाया है

पूजा करे १ है, परमात्मा तुम वंदना करणे योग्य हो एसा विचार कायासे दो हाथ दो पांवको जानू गोडे पांचमा मस्तक नमाय पंचांग प्रणाम वंदन करे २ हे पूरण ब्रम्ह इंद्रादिक जो तीन ज्ञानयुक्त एका भवतारी सम्यक धारी कोटानकोटि देवतोके आप जल १ चंदनादि सुगंध २ कमलादिक सुगंध उत्तम पुष्पोंसे ३ धूपसें ४ दीपसें ५ अक्षत ६ नेवेद्यसे ७ फुलसें ८ महिया याने द्रव्यादि पूजाके योग हो इसवास्ते है, प्रभूमे शरीर धारण किया कर्मोके वस आहारी वन रहा हुं इसवास्ते ये चीजोंमें आपके सन्मुख अर्पण कर ये प्रार्थना करता हूं है, दीनवंधु मे भोग उपभोग वस्तुओंसे संतोष पाय निराहारी पदकों प्राप्त होवूं एसा करो जेसें आप भये एसा भावसै वलि कर्म १ याने देवपूजा कर फेर सुपात्रोंको तथा दिन दुखियोंको भूखे अनाथकों गाय बैल प्रमुख अपणे स्वाधीन पराधीनकों कुलगुरु तथा भिक्षुकोंकों यथाशक्ति भोजन वस्तु यथायोग्य दान करे । देवपूजाकी वखत केसर चंदनका तिलक करे उत्तम अंग मस्तक है, तेसेंइ केशर चंदन उत्तम पदार्थ है, सो तिलक पांच तरेका है,(सुदर्शन तिलक)नीचेसें चोडा उपरसें पतला १(सुमेरु तिलक) नीचे उपर सम श्रेणिका २(वडपत्र तिलक)वडके पत्र जेसा ३ (पूर्णचंद्र तिलक) विंदाकार थाल जेसा ४(अर्ध चंद्राकार) शिद्धशिला जेसा ५ ये तिलक आत्मा जो श्वासाके संग भृकुटीके वीचमें चक्रपर ठहरता है, फेर मगजमें जाकर करोड रज्जूं वंकनालमें होकर पीछा नाभीमे जाता है सो छः चक्र है, जिसमें पांच चक्र केसर चंदनमें बुद्धिमान पहले पूजते हैं, निश्चय नयसें आत्मा है सो देव है, आत्मा है, सो गुरु है, २ आत्मा है सो धर्म है, ३ आगम सारमे लिखा है, विवहारनयमें देव सो आठकर्मोंकि हननेवाले गुरु शुद्ध सच्चा उपदेस देणेवाले २ धर्म केवली सर्वज्ञका कहा भया सो द्वादशांगमें लिखा भया ३ नाभिचक्र १ इहां आत्माका ७ रुचिक प्रदेश निर्मल है जिसमें(सोहं)एसी ध्वनि श्वासाके संग ऊपरकों आती है, दुसरा(हृदय चक्र)२ जिसमें चेतनकूं सुखदुखका ज्ञान होता है २(कंठचक्र)२ जिसमेंसें सप्त सूरादिक प्रकाश है ३ (भृकुटि मध्य चक्र) ४ दशमा द्वार भेजा (आत्मा चक्र) ५ इनोका [illegible] २ दुसरे प्रकाशमें हमने लिखा है.

भोजन.

[illegible] न्यारे २ अदमियोंका न्यारा २ है, इसवास्ते इहां लिखणेका प्रयोजन नहीं लेकिन् कितनीएक वात सामान्यतोर सबकेलायकहै सो लिखते हैं, खाणेमें [illegible] उनमान मुजबही खाणा येवात तनदुरस्ती रखणेकूं और उमर [illegible] ध्यानमें रखणे लायक है, अधूरी भूखमें तथा अजीर्णमें जीमणा नहीं, [illegible] तो दोष पके विगर खाने देणा मोतकी निसाणी है, पूरी भूख [illegible] भूख मारणी नहीं ये दोनों कामोंमें सावधान रहणा नहींतो नुकशांन होता

है, भूख लगे वाद नहीं खाणेसें (जैसें लकडीके लगी अग्नि दुसरी लकडी नही मिलती है, तव उस लकडीकों जलाते जाती है, और आप बुझते जाती हैं,) तैसें शरीरकी अग्नि बुझ जाती है, पक्की भूख लगे वोही वखत भोजनका है, ये नियम दिनका है, रातका नहीं, शुद्ध और सादाभोजन करणा, भोजनकी जगे तथा वासणवरतण मांजेधोये साफ रखणा भोजन वणाणेकी जगे१ भोजन करणेकी जगे२सीधी सामान रखणेकी जगे३ पाणी रखणेकी जगे ५ सोणेकी जगे ६ वैठणेकी जगे ७ देवपूजा करणेकी जगे मंदरीमें ८ स्नान करणेकी जगे ९ उत्कृष्टनव जगे चंद्रवे वांधणे चहिये, मकडी गिलेरी वगैरे जहरी जानवरोकी लाल मलमूत्रादिकसें अनेक रोग होता है, सो नहीं होवे, भोजनकी वखत मन प्रसन्न रहे ऐसी तयारी होणी, ऐसीही वात करनी तथा सुणनी मनमें खेद ग्लानी तथा क्रोध होय ऐसी वस्तु नजरके सांमणे रहणे देणी नहीं प्रियमित्र स्त्री वगैरे स्वजनसंवंधीयोंकों पास रहते जीमणा, वहुत तीखामिरचादिक वहुत खट्टा वहोत खारा और वहोत शाक मसालेवाला पदार्थ खाणा नही, मोसम और तासीरकूं देख स्वाद और रसवाला भोजन करणा भोजनमें जो रस जादा होता है, सव रस वैसाही वण जाता है, १ भोजन करती वखत सींधा निमक लगाय आद्रक तोलेभर पहली खाणा २ भोजन करती वखत रोटी रोटा वगैरे करडे पदार्थ घीसे पहले खाना, वाद दालसागसें खाणा पित्त तथा वायुप्रकृतीवाले मीठे पदार्थ भोजनके मध्यमे खाणा, पीछे दाल भात वगैरे नरमपदार्थ खारकर अंतमें दूध या छाछ वगैरे पतला पदार्थ खाणा ३ स्वादविना आखकूं रुचे नहीं. तथा वासी अन्न खाणा नहीं. ४ गरमागरम उष्ण ताकतका नाश करता है, वहोत ठढा वायु कफ आंम पैदा करता है, ताजा तयार अन्न खाणा ५ मंदाग्निवालेको उडद वगैरे पदार्थ स्वभावसेंही भारी पडता है, मूंग मोठ चिणा तूर उनमानसें जादा खाय तो भारी पडता है, मिस्साकी पुडी या रोटी वडी नुकशानकारी है, मल और हवा पेटमें वढाती है, अतिसार संग्रहणी होणा ताजव नही. और दला भया अन्न वणाणेके फेरफारसें भारी होता है, जेसे गेहूंका सादा वाट रांधे तो वैसा भारी नहीं और लपसी भारी गरिष्ट है, ६ भोजनके पहिले पाणी पीणेसें अग्नि मंद होती है, वीचमें थोडा २ एकाध दफे जलपिया भया घी जितना फायदा देता है, भोजनके अंत आचमनमात्र दो घूंट पीणा, जादा पीणेसें अन्न हजम नहीं होता है, ७ उडद वाजरी गहुं वगैरे (आटेके वर्णे) पदार्थोंसें आधा पेट भरणा, मुंग तूरकी दाल तथा भातसें पूरा पेट भरणा, दूध या छाछ गऊकी मौली पीणी (क्योंके) हलका पदार्थ है, सो अंतमें पीणा८कितनेक पदार्थ अमृत रूप हैं, लेकिन दुसरी चीजके संग मिलणेसें नुकशानकारी होता है, एकदमतो नफे नुकसांनकी खवर नहीं पडती लेकिन सर्वज्ञ परमात्माने जो वैद्यकादिक शास्त्रोमें हुकम दिया है सो हितके वास्तेही दिया है, उपगारीपणे तो ग्रंथही वणाया है

जो दूधके संग विरुद्ध पदार्थ है, सो हम दूध प्रकरणमें लिख आये हैं, बाकी इहां लिखते हैं दूध और मछलीके संग मिलणेसें जहर होता है, केला और छाछसें, केला और दहीसें और उष्ण पदार्थसें, घी और सहत बराबर तोल मिलणेसें, सहत और जल बराबर मिलणेमें, बासी अन्नकूं फेर गरम करणेसें इत्यादि पदार्थ सांमिल मिलणेसें जहरका कार्य करता है, सांझकूं दो घडी दिन रहते भोजन हलका करणा रात्री भोजनमें लाल या काली चूंटी खाणेमें आवे तो बुद्धि भ्रष्ट होके पागलपणा, जूंसें जलंदर कांटेसें स्वरभंग मकडीसें पित्तीके ददोडे दाहके दस्तादि होते है, रातका अंधा भोजन है, वद हजमी वगैरे अनेक रोग होणा सभव है, जादा इस रात्रीके भोजनके शरीर नुकशान संबंधी दोष रात्रि भोजन निषेध चरित्रमें देखणा रोगादिकपर दवा (या) खुराक वैद्य कारण कठण-पर बतलावे तो सोणेसें दो तीन घंटे पहली जतना करणी धन्य पुरुष तो वोहेजो सूर्यकी साक्षीसेही खान पांनकर व्रत निभावे १० जीमे बाद मूंकूं कुरलोंसे साफ करणा खु-राक मसूडोंमें या दांतोंकी छेकडमें रह जाय तो मूं मे बदवो आती है, और दांतोंका मूं हा रोग पैदा करता है, ११ भोजनबाद तुरत मेहतनका काम करणा नहीं क्योंके आमवातका रोग होता है, भोजनकर तुरत सोणा नहीं क्यों के कफ बढकर अग्निका नाश करता है, १२ भोजनकर तुरत नाहणा नहीं, क्यूके, सरीरमें नुकशान पहुंचता है. इत्यादि विवेचन (कल्पसूत्रकी टीका तथा) भोजन बागविलास ग्रंथमे है,

मुखसुगंध.

भोजनबाद मूं साफ करणेकूं पाणीके बहोतसे कुरलेकर अंगलीसें मूं साफ करणा, मुख कारण मूं साफ करणेका है. जैनमुनिभी आहार किये बाद दंत मार्जन करते बहार है, दांत मूं साफ अन्य उपायोंसें भयेबाद सोपारीके फालके और ...ी कोइ जरूरीभी नहीं हैं, मुखसुगधमें अपणे देशमें सुपारी पांन इलायची ...र मुख्य है. लेकिन इस वखतमें तो घरोघर चिलम चुटका अग्रेश्वरीपणा दीखता है, ...ोंने तो इसमें बडी एक समझ जातीथी लेकिन अब तो चिछोणेसें उठतेही हरिभजन येही ...न रहेहै. इसकों लोकोंमें मुखवास ठहरा रक्खा है, मुखवासका कारण तो इतनाही है. के दाढ ...ा दांतमें कोइ अनाजका अस रहगया होय तो कोइ चावणेकी चीजमें ...ाके साफ करणा, फेर तो चीज सुगंधदार और फायदे होय तो मुंख सुवासित ...होय और ...ेर होय तो तो चूक तो ...हर खाये भये सुपाकूं ...वेंगे मदरास तो बासरेवके पानि केसर कस्तूरी सुपारी ...सवारी ओर्डरनी बाम्बेकी के निर्णयमें मुख ...म ...ि है, ...र ...ेंगा मूकी ...ुं कुरलेका ...

स्वभावतो है, लेकिन वो थूक ऐसा स्वाद होता है, सो अंदर पोहचतेहीजिगर जांनका खाया पीया उसीवखत निकालके वाहिर लाता है, इसवास्ते लोक कहतेभी है, खाय जिसका घर और मू भ्रष्ट, पियेजिसका जन्म और मूं भ्रष्ट, सूंघे जिसके कपडे भ्रष्ट वडे आदमी पीकदानी रखते हैं मगर जो थूक जठराग्निके उपयोगका है, वो निरर्थक जाता है, दक्षणके लोक पांनके संग तमाखू खाते हैं, उनोकाभी यही हाल है,

सुपारी.

मुखवासकी अच्छी चीज है, लेकिन वहोत थोडी खाणी अच्छी है, जिसमें पूरवदक्षणमें छालिया लेकिन वीकानेरवाले कत्थेकी उकालीभई चिकणी सेरोंभरखाते है. इसमें औरतोकूं तो फेरभी जरा अच्छी है, मरदकूं नुकशांन करती है, सोपारीमें वदनके सांधोंको तथा धातूकों ढीला करणेका स्वभाव है, जादा खाणा विलकुल अछा नहीं है, भोजनकर जरासा टुकडा चावकर नाखदेणा चाहिये, सुपारीका जादा टुकडा कंठकूं विगाडता है, पांन ताजा और मूं में गरमी नहीं करे ऐसा होणा चाहिये, व्यसनी वणके जैसा मिले जैसाही चाव लेणा इसमें उलटा नुकशांन होता है, पान और संतरे नागपुर जैसे कहांइ भी नहीं होते ठंढकालेमे वंगला पान दुरस्त है, सवदिन पांन चावते रहणा येभी जंगलीपणा है, कत्था चुनोभें कोइतरेकी दुसरी चीजका भेल नहीं होणा और प्रमाण सर लगाया होणा इन २ वातोकी हुसियारी नहीं होय तो पान खानेका विसनभी नहीं रखणा वहोत पान खानेसें आंख और सरीरकातेज वाल दांत जठराग्नि कान रूप और ताकत इन सवोको नुकशांन पहुंचता है, इलायची लोंग तज येभी मुखसुगंधीकी चीज है, इलायचीतर गरम है, और अच्छी है, छोटी जातकी तज लोंग वायु कफवालेकूं थोडा २ खाणा अच्छा है, इलायचीभी जादे नहीं खाणा धाणा सूंफ ये दो चीज सव मुखसुगंधीकी चीजोंमें जादा परसन करणे लायक है, दीपन पाचन है, और कोइ तरेका दोष नहीं स्वाद है, और कंठकूं सुधारे है.

सदाचार.

अच्छाविचार और अच्छी चाल चलण ये अदमीकूं दोनों भवमें सुखदाई है, अच्छेवरतावेके करणेवाले पुन्यवंतकों अच्छे विचारही पैदा होता है, दुष्टवरतावेवाले दुष्टपापीकूं वुरे विचारही पैदा होते है, दानशील व्रत नियम भलाइ परोपगारीपणा दया क्षमा धीरज संतोपके साथ रुजगार व्यापार नोकरी आदि संसार व्यवहार चलावै, देखो हमारा वनाया ग्रहस्थ व्यवहारलंकार ग्रंथ छपा भया उसमें ग्रहस्थका सर्व रुजगार व्यवहार इह भव परभव नहीं विगडे जैसा सव दृष्टांतकथाओंसें दिखलाया है, श्रावग व्यवहारभी उसीका नाम है, ज्ञान पढकरवणे जहांतक उस रस्ते चलना नहीं तो ज्ञान कोण कामका है, लेकिन आर्यलोकोकी वहोतसी वुद्धि और विवेकका नासतो खोटी आचरणासे होगया

जो दूधके संग विरुद्ध पदार्थ है, सो हम दूध प्रकरणमें लिख आये हैं, बाकी इहां लिखते हैं दूध और मछलीके संग मिलणेसें जहर होता है, केला और छाछसें, केला और दहीसें दही और उष्ण पदार्थसें, घी और सहत बराबर तोल मिलणेसें, सहत और जल बराबर वजन मिलणेमें, बासी अन्नकूं फेर गरम करणेसें इत्यादि पदार्थ सांमिल मिलणेसें जहरका कार्य करता है, सांझकूं दो घडी दिन रहते भोजन हलका करणा रात्री भोजनमें लाल या काली च्यूंटी खाणेमें आवे तो बुद्धि भ्रष्ट होके पागलपणा, जूंसें जलंदर कांटेसे स्वरभंग मकडीसें पित्तीके ददोडे दाहकै दस्तादि होते है, रातका अंधा भोजन है, वद हजमी वगैरे अनेक रोग होणा संभव है, जादा इस रात्रीके भोजनके शरीर नुकशान संबंधी दोष रात्रि भोजन निषेध चरित्रमें देखणा रोगादिकपर दवा (या) खुराक वैद्य कारण कठण-पर बतलावे तो सोणेसें दो तीन घंटे पहली जतना करणी धन्य पुरुष तो वोहेजो सूर्यकी साक्षीसेही खान पांनकर व्रत निभावे १० जीमे वाद मूंकूं कुरलोंसे साफ करणा खु-राक मसूडोंमें या दांतोंकी छेकडमें रह जाय तो मूं मे वदवो आती है, और दांतोंका मूं का रोग पैदा करता है, ११ भोजनवाद तुरत मेहतनका काम करणा नहीं क्योंके आमवातका रोग होता है, भोजनकर तुरत सोणा नहीं क्यों के कफ वढकर अग्निका नाश करता है, १२ भोजनकर तुरत नाहणा नहीं, क्यूंके, सरीरमें नुकशान पहुंचता है. इत्यादि विवेचन (कल्पसूत्रकी टीका तथा) भोजन वागविलास ग्रंथमे है,

मुखसुगंध.

भोजनवाद मूं साफ करणेकूं पाणीके वहोतसे कुरलेकर अंगलीसें मूं साफ करणा, मुख सुगंधका कारण मूं साफ करणेका है. जैनमुनिभी आहार किये वाद दंत मार्जन करते है. एसा विहार है, दांत मूं साफ अन्य उपायोंसें भयेवाद सोपारीके फालके और पान खानेकी कोइ जरूरीभी नहीं हैं, मुखसुगंधमें अपणे देशमें सुपारी पांन इलायची वगैरे मुख्य है. लेकिन इस वख्तमें तो घरोघर चिलम चुट्टेका अग्रेश्वरीपणा दीखाता है, आगे तो इसमें वडी एव समझे जातीथी लेकिन अव तो विछोणेसें उठतेही हरिभजन येही .व रहेंट, इसके लोहोनें मुखवास ठहरा रक्खा है, मुखवासका कारण तो इतनाही है. के दांत तथा दांतमें कोइ अनाजका अंस रहगया होय तो कोइ चावणेकी चीजसें साफ करणा, फेर वो चीज खुसवोदार और फायदेवंद होय तो मुंख सुवासित होय और थूक पैदा करणेवाली होय तो वो थूक होजरी मे जाकर खाये भये खुराकके पाचन मददगार होय, इसवास्ते नागरवेलके पांन कथा चूना केसर कस्तूरी सुपारी इलायची नीलमेनी कपूर वगैरे पचसाग भाष्यकी टीकामें दुविहारके निर्णयमें मुखवास लिखा है, और लोक खाते है, लेकिन तमाकू गांजा मुखका चंदूलमें मूकी रमवो के नोक पैदा होती है. सो तो दुनियामें छिपी नहीं है, तमाकूमें थूक पैदाकरणेका

ठंडा और पांव गरम रखणा चाहिये ७ देरसें सोणा नहीं वहोत पेटभर खाके तुरत सोणा नहीं रातकूं जलदी सोणा फरजमे जलदी उठणा ८ दुनियादारीकी चिंता सब छोड च्यारसरणा लेकर चारूं आहारका त्याग करणा, जीता रहा तो सूर्य उदयवाद खाणापीणा बाकी है, चोरासी लाखजीवायोनिसें अपणे कसूरकी माफी मांगकरके सोणा सात घंटेकी पूरी नींद कहलाती है, फेर तो दलद्रियोंका काम है

॥ सर्वहितकारी कर्त्तव्य ॥

शरीरकूं निरोगपणा रखनेकी जो जो मुख्य २ बाते हैं, वो सब अदम्योंके जानने योग्य है, और वैसेही चलणा चाहिये इस २ बातोंका संक्षेपसे संग्रह इस पुस्तकमें किया गया है; लोकोंके सामान्य सुखकेवास्ते जुदे २ अदम्योंनें अन्नपान और विवहारकी निगेदास्तीसें सावचेती रखनेकी जरूरी है, तैसें सभालोकोनें तथा सरकारके मुकरर किये सहरसफाई खातेके अमलदारोंनें तनदुरस्तीवास्ते पक्की रेखदेख करनेकी जरूरी है, प्रजाके हस्तू जो जो तनदुरस्तीके उपाय है, उस बातोंसें अज्ञान प्रजालोक अनेक उपद्रव और रोगोके कारणमें जागिरते हैं, इस तनदुरस्तीके ज्ञानसें वाकब होणा छोटे मोटे सब अदम्योंका जरूरी काम है, किसी वखतपर एक अदमीके अज्ञानसें हजारों लाखों अदमियोंकी जानकूं जोखम पहुंच जाती है, इसवास्ते अज्ञान प्रजाकूं आहार विहारादिक आरोग्यताके बातोंसें वाकब करणेका फरज विद्वान वैद्य डाकतर और सरकारका है, लोक सुखी रहे एसी कालजी रखनेवाले वैद्य डाकतरोने वैद्यकविद्याकूं उद्धारकर ऐसें करणा चाहिये के जिस २ कारणोंसें रोगोंकी पैदास होती है, उन २ कारणोंकों सोधकर बाहिर जाहिरकर देणा चाहिये ऐसे कारणा, फेर नही होसके उसका योग्य इलाज कामपर लगाणा चाहिये प्रजाकूं ऐसे कारणोसें जाणाकार करणा चाहिये म्युनिसपाल कमेटीवाले वडे २ रस्ते गलीकूंची वेगरे महोलोमें जाकर तपासकर चाहे जितनी सफाई रक्खे लेकिन् जहांतक लोक अपने घर अंगणमें एकठी भई रोग पैदा करनेवाली गंदकीकों तथा आहार विहारके चोकस नियमोंको नहीं जानेगें जहांतक सहरसफाईका मुख्य हेतु पार पडेगाहि नही अज्ञानलोक वहोत है, पढे लिखेभी बहुत अदमी शरीररक्षाके नियमसें अजाण है, कोइ कहेगा अब तो इसकूलोमें कला जो सिखाई जाती है, उसके संग लोकोका अज्ञान दूर होणा सरू भया है, ये बातभी ठीक नहीं है, इस वखत जो कलायें सिखाये जाती है, उसमें (अगर) पूरे दरजे ख्याल करे तो शरीरसंरक्षणकी कोईभी शिक्षा देनेमे नही आती है, मारवाडमें तो विद्या पढाणेका आगला क्रम तो रहा नहीं ये लोक यातो इस दरजे पढते है अनुनासका ॥ क्यातो फेर पढते है लखो पचाईरा, खैर इनोंकी तो बातही रहणेदो गुजराती बंगाला माराठी अंग्रेजी जो पाठाशालाओंकी किताबोंमें कसरत हवा पाणी उजाला वेगेरेका विषय दाखल

तबतो यथायोग्य आचार विचार सतसंगत रही नहीं, इनोके सुधरणेकी जड पहिले जो लिखा है. ऋतु और नित्य नियम पालणेकी विधि इसके आधीन है, इतनाहीं नहीं किंतु बहोतसे भ्रष्टाचारोसें वचणाभी अपणे सदाचारके आधीन है, भ्रष्टाचारोंकी मुख्य जड है. सो व्यसन है, उससें बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, ये बात सब लोक जाणते है, लेकिन व्यसनोके फंदसें विरलेही वचेहोंगें सात विसनादि विवरण हमने पहली लिखा है, अफीम भांग तमाखू मदिरा आदि मुख्य है इससे शरीर न्यात जात कुटंब और देशकी बहोतही खराबी होगई है, जैसे खराबी आज कल बडीमरी अग्निरोहणी (व्यूबोनिकप्लेग) नेभी नहीं करी होगी इसके मारे प्रजाकूं सरकार दबायके उपाय करती हैं, व्यसनका जादा नुकशानतो इहां क्या लिखे लेकिन जो अदमी अपणा कुशल क्षेम शांति चाहता होय तो इनसब जातकेनसा आदिसें वचणा भला है, एकवेर लगा तो फेर छुटणा दुस्वार है॥

(शयन) निद्रा ॥

अच्छीनींद आणेका सरस उपाय महनत है, जो लोक दिनकूं महनत करते नहीं आलसू होकर पडे रहते हैं, उनकूं रातकूं नींद अछीतरे आती नहीं है, सांझका जादा खाणेमें स्वप्ने आया करते हैं, पक्की नींदका नास होता है, स्वप्ने आल जंजाल आणेसें ऐसा समझणा के मगजकूं बराबर चैन नहीं है, स्वभावी दर्शनावरणीकर्म जन्य नींद अच्छी होती है, स्वप्नशास्त्रमें स्वप्नोका शुभाशुभ बहोत फललिखा है, वो निमित्त शास्त्र है, वाग्भट्टने रोग प्रकरणमें शकुन और स्वप्नोंका फल रोगकूं साध्यासाध्य जाणनेका अच्छा प्रकरण लिखा है, ग्रंथ बढजाय इसवास्ते हमारा विचार अष्टांग निमित्त संग्रह करणेका है, समयानुसार देखा जायगा निमित्तशास्त्रकूं झूठा कहते हैं, वो तत्ववेत्ता नहीं है. १ उत्तर या पूर्वके तरफ शिर करके सोणा २ सोणेकी जगा साफ एकांत गडबड शब्दविगरकी और अच्छी हवावाली होणी ३ सोणेके बिछोणे साफ होणा मलीनजगे मलीन बिछोणेमें मांकड सुरले वगेरे जानवरसताते हैं नींदमे खलल पहुंचती है चोंमासेंमें जमीनपर सोणा नहीं चूनेका गचि वायु कफ प्रकृतीवालेकूं सोणेसें नुकशान करता है, [illegible] वगेरे परसदा नरम बिछोणे सोणा चाहिये सायरोने कहाभी है (दुहा) सावण सूवे [illegible] माह उघाडे खाट, बिन मारे मर जायगा जो जेठ चलेगा वाट ४ खुली जगे फकत ग्रीष्म ऋतुमें सोणा चहिये गरम तासीरवालेकूं बाकी तो खुली चांदणीमें सोणा नहीं [illegible] जादा हवाका झपाटा सामने होय ऐसा खुल्ला सोणा नहीं, तैसें सोणेके महल [illegible] बिलकुल दरवज्जा बंधकरसोणा नहीं क्यों के ताजी हवा आणे देणी ५ बहोत [illegible] आदि अभ्यासमें बहोत विचारमें नसाकरणेमें या दुसरे हर कोइ कारणमें मन उचका [illegible] होय तो तुरत सोणा नहीं ६ सोणेके पहिले शिरकूं ठंडा रखणा, गरम होय तो [illegible] सोणा पांवके तलिये [illegible] रगडाकर गरम पाणीमें रखणा हमेसां मगजतो

ठंडा और पांव गरम रखणा चाहिये ७ देरसें सोणा नहीं बहोत पेटभर खाके तुरत सोणा नहीं रातकूं जलदी सोणा फरजमे जलदी उठणा ८ दुनियादारीकी चिंता सब छोड च्यारसरणा लेकर चारूं आहारका त्याग करणा, जीता रहा तो सूर्य उदयबाद खाणापीणा बाकी है, चोरासी लाखजीवायोनिसें अपणे कसूरकी माफी मांगकरके सोणा सात घंटेकी पूरी नींद कहलाती है, फेर तो दलद्रियोंका काम है

॥ सर्वहितकारी कर्त्तव्य ॥

शरीरकूं निरोगपणा रखनेकी जो जो मुख्य २ बाते हैं, वो सब अदम्योंके जानने योग्य है, और वैसेही चलणा चाहिये इस २ बातोंका संक्षेपसे संग्रह इस पुस्तकमें किया गया है; लोकोंके सामान्य सुखकेवास्ते जुदे २ अदम्योंनें अन्नपान और विवहारकी निगेदास्तीसें सावचेती रखनेकी जरूरी है, तैसें सभालोकोनें तथा सरकारके मुकरर किये सहरसफाई खातेके अमलदारोंनें तनदुरस्तीवास्ते पक्की रेखदेख करनेकी जरूरी है, प्रजाके हस्तू जो जो तनदुरस्तीके उपाय है, उस बातोंसें अज्ञान प्रजालोक अनेक उपद्रव और रोगोके कारणमें जागिरते हैं, इस तनदुरस्तीके ज्ञानसें बाकब होणा छोटे मोटे सब अदम्योंका जरूरी काम है, किसी वखतपर एक अदमीके अज्ञानसें हजारों लाखों अदमियोंकी जानकूं जोखम पहुंच जाती है, इसवास्ते अज्ञान प्रजाकूं आहार विहारादिक आरोग्यताके बातोंसें बाकब करणेका फरज विद्वान वैद्य डाकतर और सरकारका है, लोक सुखी रहे एसी कालजी रखनेवाले वैद्य डाकतरोने वैद्यकविद्याकूं उद्धारकर ऐसें करणा चाहिये के जिस २ कारणोसें रोगोंकी पैदास होती है, उन २ कारणोंकों सोधकर बाहिर जाहिरकर देणा चाहिये ऐसे कारणा, फेर नही होसके उसका योग्य इलाज कामपर लगाणा चाहिये प्रजाकूं ऐसे कारणोंसें जाणाकार करणा चाहिये म्युनिसपाल कमेटीवाले बडे २ रस्ते गलीकूंची वेगरे महोलोमें जाकर तपासकर चाहे जितनी सफाई रक्खे लेकिन् जहांतक लोक अपने घर अंगणमें एकठी भई रोग पैदा करनेवाली गंदकीकों तथा आहार विहारके चोकस नियमोंकों नही जानेंगें जहांतक सहरसफाईका मुख्य हेतु पार पडेगाहि नहीं अज्ञानलोक बहोत है, पढे लिखेभी बहुत अदमी शरीररक्षाके नियमसें अजाण है, कोइ कहेगा अब तो इसकूलोंमें कला जो सिखाई जाती है, उसके संग लोकोका अज्ञान दूर होणा सरू भया है, ये बातभी ठीक नहीं है, इस वखत जो कलायें सिखाये जाती है, उसमें (अगर) पूरे दरजे ख्याल करे तो शरीरसंरक्षणकी कोईभी शिक्षा देनेमें नही आती है, मारवाडमें तो विद्या पढाणेका आगला क्रम तो रहा नहीं ये लोक यातो इस दरजे पढते है अनुनासका ॥ क्यातो फेर पढते है लखो पचाईरा, खैर इनोंकी तो बातही रहणेदो गुजराती बगाला माराठी अंग्रेजी जो पाठाशालाओंकी किताबोंमें कसरत हवा पाणी उजाला वेगेरेका विषय दाखल

तबतो यथायोग्य आचार विचार सतसंगत रही नहीं, इनोके सुधरणेकी जड पहिले जो लिखा है, ऋतु और नित्य नियम पालणेकी विधि इसके आधीन है, इतनाहीं नहीं किंतु बहोतसे भ्रष्टाचारोसें वचणाभी अपणे सदाचारके आधीन है, भ्रष्टाचारोंकी मुख्य जड है. सो व्यसन है. उससें बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, ये बात सब लोक जाणते हैं, लेकिन व्यसनोके फंदसें विरलेही वचेहोंगें सात विसनादि विवरण हमने पहली लिखा है, अफीम भांग तमाखू मदिरा आदि मुख्य है इससे शरीर न्यात जात कुटंब और देशकी बहोतही खराबी होगई है, जैसे खराबी आज कल बडीमरी अग्निरोहणी (व्यूबोनिकप्लेग) नेभी नहीं करी होगी इसके मारे प्रजाकूं सरकार दबायके उपाय करती हैं, व्यसनका जादा नुकशानतो इहां क्या लिखे लेकिन जो अदमी अपणा कुशल क्षेम शांति चाहता होय तो इनसब जातकेनसा आदिसें वचणा भला है, एकवेर लगा तो फेर छुटणा दुस्वार है॥

(शयन) निद्रा ॥

अच्छीनींद आणेका सरस उपाय महनत है, जो लोक दिनकूं महनत करते नहीं आलसू होकर पडे रहते हैं, उनकूं रातकूं नींद अछीतरे आती नहीं है, सांझका जादा खाणेमें स्वप्ने आया करते हैं, पक्की नींदका नास होता है, स्वप्ने आल जंजाल आणेसें ऐसा समझणा के मगजकूं बराबर चैन नहीं है, स्वभावी दर्शनावरणीकर्म जन्य नींद अच्छी होती है, स्वप्नशास्त्रमें स्वप्नोका शुभाशुभ बहोत फललिखा है, वो निमित्त शास्त्र है, वाग्भट्टने रोग प्रकरणमें शकुन और स्वप्नोंका फल रोगकूं साध्यासाध्य जाणनेका अच्छा प्रकरण लिखा है. ग्रंथ बढजाय इसवास्ते हमारा विचार अष्टांग निमित्त संग्रह करणेका है. समयानुसार देखा जायगा निमित्तशास्त्रकूं झूठा कहते हैं, वो तत्ववेत्ता नहीं है. १ उत्तर या पूर्वके तरफ शिर करके सोणा २ सोणेकी जगा साफ एकांत गडबड शब्दविगरकी और अच्छी हवावाली होणी ३ सोणेके बिछोणे साफ होणा मलीनजगे मलीन बिछोणेमें मांकड सुरले वगेरे जानवरसताते हैं नींदमे खलल पहुंचती है चोंमासेमें जमीनपर सोणा नही चूनेका गच्चि वायु कफ प्रकृतीवालेकूं सोणेसें नुकशान करता है, [illegible] वगेरे परसदा नरम बिछोणे सोणा चाहिये सायरोंने कहाभी है (दुहा) सावण सूं [illegible] माह उघाडे खाट, बिन मारे मर जायगा जो जेठ चलेगा वाट ४ खुली जगे फ[illegible] ऋतुमें सोणा चहिये गरम तासीरवालेकूं बाकी तो खुली चांदणीमें सोणा नहीं [illegible] जादा हवाका [illegible] सामने होय ऐसा खुल्ला सोणा नहीं, तैसें सोणेके महल [illegible] बिलकुल दरवाजा [illegible] सोणा नहीं क्यों के ताजी हवा आणे देणी ५ बहोत [illegible] बहोत विचारमें नसाकरणेमें या दुसरे हर कोइ कारणमें मन उ[illegible] [illegible] सोणा नहीं ६ सोणेके पहिले शिरकूं ठंडा रखणा, गरम होय [illegible] सोणा [illegible] तेलमें रगडाकर गरम पाणीमें रखणा हमेसां मगजतो

विलकुल शांती होती है, चरकने लंघनकूं सर्वोपरी पथ्य दोषोकूंपकानेमें लिखा है, जिसमें भी पित्त और कफकेवास्ते तो कहनाहीक्या, आसोज सुद अष्टमी सप्तमीसें ओली जिसमें जैनधर्मकी सनातन प्रजा आंविल नवदिन करते हैं, मंदिरोमें स्नात्र अष्टप्रकारी नवपदादि पूजामें दीपधूपादिक करते हैं, जिससें हवा इस सरदऋतूकी साफ होती है, क्योंकेइ समोसमकी हवा वहोत जहरी होती है, सरीरमें जो पित्तसें खूनसंबंधी विगाड होता है, वो आंविलका तप (याने जिसमें सब रसोंका त्याग) करके एक चावल या गेहूं या चणा मूंग या उडद ये पांच अनाजोंमेंसें एक अनाज विगर निमक खाया जाता है, जिससे वो विलकुल शांत हो जाता है, इसतरे ही वसंतकी हवा सुधारणेकू(चैत सुद सप्तमी अष्टमीसें ओली किये जाती है, आसोज मुजब सब पूजा कीये जाती है, जिससें हवा साफ होती है, और आंविलसे कफकी शांति होजाती है इसतरेही जो जो पर्व बांधा है सो सब वैद्य विद्याके आधारसें ही धर्म व्यवस्थाका प्रसार उस सर्वज्ञने चलाणेका हुकमदिया है,॥श्राद्ध जो आश्विन वदीमें ब्राह्मणोनें भोजनार्थ चलाया है, इसमें एक नयका अंशतो वैद्यकसें संबंध कथंचित् वर्त्तमान श्राद्ध रखता है, मनुमें जो लिखा श्राद्ध(वकरे वा हिरण वगैरेका मांस खाणेका)वोतो शरद ऋतूकी अपेक्षासें तदन विरुद्ध है, और धर्मशास्त्रसे तो विरुद्ध होय जिसमें तो कहणाही क्या, दया परमधर्म फेर कैसें ठहरेगा (क्योंके)मांस खाणेवालेके हृदयमें फेर दया कैसें सिद्ध हो सकती है, दूध और मीठा खाणेसें पित्त शांत होता है, इय एक नय है, १सर्वांग नयसे श्राद्धकी क्रियामें इस ऋतूकी अपेक्षा तदन नुकशान है, वैद्यक शास्त्रमे क्षीरका भोजन इस ऋतूमें कुपथ्य है, पित्तकारी और गरम है इसवास्ते॥फेर श्राद्धके जीमणेवाले पेटभरके पराया माल खाते है, सो शरद ऋतूमें जादा खाणा है, सो जमकी दाढमें जाणा है, फेर एकेक अदमीके आठ २ निहुते आते है, दक्षणाके लालच भोजनपर भोजन करणा है सो अध्यशन सर्व रोगोंकी जड है, श्राद्ध चलाणेवालेका मतलब और होगा वैद्यक मुजब, लेकिन् अभीतो आचरणा रोगी वणणेकी है,॥नवरतोंमे जो वकरे भेसें देवी पूजामें जगे २ मारे जाते हैं, इससे हवामें दुरगंधिके परमाणू फैलते हैं, धूप तथा दीपसें सुगंधीके परमाणू फैलकर हवाकूं साफ करता है, गुजरातमे ब्राह्मन लोक आसोज सुदि अष्टमीकों हवन करते है, उस(घी दूध चिरोंजी विदाम तिल जवके) होमसें स्वामी दयानंदजी सत्यार्थप्रकाशमें हवा साफ होती है ऐसा लिखते हैं, अग्निका हवन जो लोकोने माना है इसका कारण तो ऐसा मालम देता है, जब ऋषभदेवके वखत कल्पवृक्ष फल कम देणे लगे कालके माहात्मसें तब भगवान लोकोंकू भूखे मरते देखके कदमूल फल और वनस्पती खाणेका हुकम युगलिक प्रजाको दिया. उनोने खाया लेकिन् पेटमे पचा नही पेट दूखने लगा उनलोकोंने अपणे पेटका कष्ट बयानकिया, भगवान प्रजाकी तनदुरस्ती निव विचार करतेथे इतनेमें

करनेमें आया है, लेकिन् वो क्रम एसा है सो छोटे बालकोंके समझमें नहीं आसके, जैसा है, क्योंके वो शिक्षा विस्तारसें नहीं लिखी गई अंग्रेजी पांचमें धोरणमें थोडे वर्ष भये (सेनीटरी प्राइमर)याने आरोग्य विद्या दाखल करी है, लेकिन् वो वर्षके अंतकेदिन वर्गमें सरू होती है, एसा मालम देता है और परीक्षा करनेवाले फलाणी २ बाबतोका सवाल पूछते है, इस बातपर ख्यालकरके सिखाणेवाले माष्टर मुख्य २ बातोंका सवाल कंठाग्र करा देते हैं, इसमें माष्टरोंका कुछ दोषभी नहीं है, क्योंके दुसरे जो जो मुख्य २ बातें मुकरर करी है, उन २ बातोंकों सिखानेकूही जब पूरा वखत नहीं मिलता तो जैसे विषयोंकों गोण पक्षमें दाखल करी है, उसपर तो पूरा ध्यान कैसें शीखनेवाले दें, इसवास्ते सरकारका ये फरज है, सो इस विद्याकूं वडप्पन देणा चहिये, आरोग्य वैद्यविद्याकूं सर्वविद्या शिरोमणी समझके मुख्य विषय तरीके धोरणमें दाखल करणा चाहिये, सर वैद्यकविद्या शीखाणी एसा हेतु हमारे लिखनेका नहीं है, लेकिन् हवा गुराक पाणी कसरत वगेरे हमारे ग्रंथका जैसा तीसरा प्रकाश है, जो के नित्यके खान पान व्यवहार वरतते होय उसके गुणदोष इतनी बाततो अवस्य सबके जाननेयोग्य है, इसके पहले तो सामान्य नियम पीछे बारीक विषयके कितनेक पाठ निसालोके चलती किताबोमें दाखल करणी जरूर है, पाणीका साफ करणा मूंसें बोलदेनेवाला विद्वान विद्यार्थी जब घरमें हमेम खानेमें आवे एसी चीजोंकाभी गुण और दोष नहीं जाने ये कितनी अज्ञानता है, मूला और दूध मूंगकी दाल या दूध जब सामल खानेमें आवे तो रोज शरीरमें थोडा २ जहर एकठा होवे, वो आगे क्या विगाड करता है, ये बात वो विद्यार्थी स्कूलमें भी जब नहीं जाणता तो आरोग्यताके विशेष नियम वो क्या जाने, आकाशके ग्रह और तारोकी गति तथा फेरफारका नियम तो मुखपाठ पढ जाता है, लेकिन् ऋतुओंके फेरफारसें अपने बदनमें क्याक्या हाल होता है, उसकेवास्ते क्याक्या आहार विहारकी सभाल रखणी चाहिये, वो बात वो बिलकुल नहीं जाणता, सूर्य तथा उसके ग्रहनका कारण और उनके आकर्षणमें दरियावके भरती वेल बढनेका नियम वो तो समझा सकेमें लेकिन इसही ग्रहचक्रोकी शरीरपर केसीक असर होती है और उनके आकर्षणमें शरीरमें किस तरेकी भरती और ओट होती है, उसका उस विद्यार्थीको बराबी ज्ञानके भांन नहीं होना इत्यादि कारणोसें ही पांच तिथोंका उपाम्म नियम तिथिओके आधारमेंही धर्मरूपमें दाखल भया है, दूज १ पांचम २ अष्टमी ३ इग्यारस ४ पूनम ५ पूनम तथा अमावस उत्सी उस बातोंकी हामीकर अपनी सिद्धि मजाना आदि करते है, बादमें जो तिनका संचय भया उसके कोपका समय मालूम भया है इसवास्ते सबेजनें पर्युषण पर्व स्थान किया जिसमें तेला उपवासादि करना पीछे उस खानेमें लोका मीठाम्म दूध वगेरके पदार्थ खाते है, इसमें तिनकी

अपणे अपणे रोगकी परीक्षाभी करसकता है, परीक्षा किये पीछे इलाज करणाभी स्वाधीन है, रोग होणेका कारण दूर किये पीछे रोग रहताभी नहीं अज्ञानसें भई भूलकूं ज्ञानसें सुधारे. तब कुदरत अपणा काम करके फेर तनदुरस्तीमें ले आती है, जीवका स्वरूप अव्याबाध है, इसवास्ते शरीरमें रोगके कारणोंकों अटकाणेवाली स्वाभाविक शक्ती रही भई है, और पुन्य कृत्योंके करणेसेंभी शातावेदनी कर्मकीभी रोगकूं रोकणेकी स्वाभाविक शक्ती रही भई है, इसवास्ते रोगके बहोतसे कारण तो बिना उद्यमसेंही कुदरती क्रियासें दूर होते जाते है, रोगके और कुदरती शक्तिके. या शाता वेदनी और अशाता वेदनीके. निश्चय नयसें जीव और कर्मके. आपसमें लडाई भया करती है, शाता वेदनीकी जब जीत होती है, तो रोगकूं पैदा करणेवाले कारणोंका कुछ असर नहीं होता, और उस शाता वेदनीकी हार होणेपर रोगके कारण उसी वखत रोगकूं पैदा करदेता है, पुन्यके योगसें ताकतवर अदमीके शातावेदनीवाले रोगके कारणोंकों अटकाणेवाली शक्ति जादा हो जाती है, निर्बलमें कम होती है, उससें नाताकत अदमी वेर २ बेमार होता है, जीवकी कुदरत शक्ती अपणे शरीरमें ऐसी है, उससें बेमारी पैदा भये पीछेभी विगर उपाय केइकवख्त दब जाती है, या चली जाती है, ऐसें इस शरीरमें वो दाखले अनेक दीखते हैं, जैसें आंखमें कोईभी फूस फांटा चला जाय तो तुरतही आपसें पाणी झर २ करवो फांटा धुपकर बाहिर निकल पडता है, या प्रभातसमें गीडके साथ निकलता है, आंख बिना इलाजके अच्छी होती है, किसी वखत जादा खाणेमें आता है, तो पेटमें बोझा और दरद होता है, तब बहोतसी वखत अपणे आपही उलटी और दस्त होकर मिट जाता है, ऐसी उलटी दस्तकूं रोकणेसें नुकशान होता है, क्योंके जीवकी जो शाता वेदनी संबद्ध शक्ति है, वो पेटके अंदरका बोझा और दरदकूं मिटाणेवास्ते उलटी और दस्तकी क्रियावेपार करती है, फेर बदनपर फोडे फफोले छोटी गुमडियें होकर अपणे आपही मिट जाती है, जुखाम सरदगरमीमें खासी होकर बहोतवखत विगरइलाजकिये अपणे आपही मिट जाती है, इस बजे बुखारभी होकर अपणे आपही चला जाता है, मतलब असातावेदनी प्रदेशबंध होता है, सो शाता वेदनी जो जीवने बांधी है, जिस्सें रोग दूर हो जाता है, जैसें पक्की दिवालपर चूना सूका या धूलकी मुठ्ठी डालणेसें थोडासा रहता है, बाकी तो गिरजाता है, बाकी रहासो ...के झपट्टेसें अलग हो जाता है, ऐसें वो रोग स्वतः मिटता है, इसपरसे जीवके च्यार ... कर्मोंका प्रकृती बंध १ जिसका स्वरूप हमने पहले प्रकाशमे आठ कर्मोंका है, १ स्थिती बंध, जेसें मोहनी कर्मकी अवधी सित्तर कोडाकोडी ...ये भये कर्म मुदतपर भोगणेसें छूटे सो स्थिती बंध जैसें सन्निपा... ग बंध ३ प्रदेश बंध ४ इस चारों बंधोकों लड्डूके दृष्टांतसेंभी

समझणा जैसे सूंठके लड्डूकी प्रकृती तीखा स्वभाव होता है,ऐसा प्रकृतीबंध जाणना १ वो लड्डू महीनाया वीस दिनतक अपणे निज स्वभावसें रहता है,बाद स्वभाव वो नही रहता वो स्थिती याने मुद्दत बंध २ अनुभाग बंध, जैसें आने भरका अध पावका या पावका बंधा भया इत्यादि ३ प्रदेश बंध सो जिस २ पदार्थोंके परमाणु एकठा करके लड्डू बांधा गया उसमें रहे प्रदेश सो प्रदेश बंध ४ जैसे ज्ञानावरणी कर्मका स्वभाव आंखपर पट्टा बांधणे जैसाहै तैसे सूंठका स्वभाव वायु कफ हरणेका है ऐसें जुदे २ कर्मोंका जुदा२स्वभाव, तैसें जुदे२ लड्डूका जुदा २ स्वभाव, पित्तके वायूके कफके हरणेका है कर्मोंके संबंध मुजब, प्रदेश बंधसें भया रोग साध्य. कष्टसाध्यतक होता है, स्थिती बंधवाला साध्य १ असाध्य २ कष्टसाध्य ३ तीनूं होता है, इसतरे कितनेक दरद स्वभावसेंही विगर उपाय मिट जाता है लेकिन् उससें एसा नहीं समझणा के सब दरदयाने रोग विगर महनत विगर इलाज अछे होजायगें थोडे अज्ञानसें थोडा कष्ट. सो बुखार शरदी पेटका दरद वगैरे ये तो थोडी भूलसें जो हो जाता है, तब तो वदनमें एकाध दिन गरमी शरदी दस्त उलटीकी तकलीफ देकर पीछा मिट जाता है, अज्ञानसें बडे कष्टका रोग बहोत दिनोंतक चलता है, जो उसके कारणोकों नहीं रोके तो फेर रोग गंभीर रूप पकडता है, रोगके दूर करणेका पहिला उपाय उस रोगका कारणकूं रोकणेका है, जैसें अजीर्णसें बुखार आवे और एक दो दिनका लंघन कर दिया जावे अथवा मूंगकी दालका पतलासा पाणी अथवा बहोत हलका पथ्य लेवे. तो तुरत चला जाता है, इसवास्ते रोगका कारण समझे विगर बहोतसे रोग बढ जाते है, दवा रोगकूं नहीं मिटाती है तो क्या करती है, अर्थात् रोग मिटाणेकू मदतगार होती है, ऐसा समझणा ऊपर जो जीवकी कुदरत शक्ति रोगकू मिटाणेवाली लिखी है, निश्चय नयसें तो वो शक्ति शरीरमें रात दिन अपणा काम करतेही रहती है, उसके सानुकूल आहार विहार और दवा मदतगार होतेही संयोग प्रयत्नसें, कर्म रोगपर,जीवकी जीत होती है, साता अशाताकूं हटाती है, ये विवहार नय है, वैद्यडाकदरोने ऐसा घमंड कभी नहीं रखणाके हम रोग मिटाते हैं ये गर्व रखणा झूठा है, काल और कर्मसें बडे २ हार गये तुम तो चीजही क्या हो पांच समवायोंमेंसें एक तुमारा उद्यम समवाय है, सोभी पूरे दरजे जभी सिद्ध होता है, पिछले चारूं सुलटे होय तो, हां अलबत कितनेक रोग बाहरके है सो काटवाढके लायक उपचारोंसें केइ यक जलदीभी अच्छे हो सकते है,तोभी शरीरके भीतर बहोतसे रोगोपर तो अंदरकी रोग मिटाणेकी कुदरती शक्तीही काम देती है, उसमें दवाकूं समझकर युक्तिसे देणेमें आवे तो कुदरती शक्तीके मदतगार होती है, (अगर) विगर समझे देणेमें आवे तो वोही दवा कुदरती शक्तिकी क्रियाकूं बंधकर उलटी नुकशान करती है, इस बातोंसें कोइ समझेगा दवासें क्या होता है, सो पक्षभी एकांत नय है और दवासें निश्चेही रोग मिटता है,येभी पक्ष एकांत नयकाहै. इसवास्ते स्याद्वादकूं

पैदा होता है, कितनेक कुटुंबोमें खास व्यसन और दुराचार होणेसें उस कुटुंबके मेंबर-लोक रोगी बण बैठते है, (३) जातिकारण, अपणी न्यात तथा जातका खोटा विवहार और रूढी जो पडी भईसें रोगकी पैदासका कारण होय इसमें पुरुषका तथा स्त्री जातिका जुदा २ नुकशान होणाभी आ जाता है,कितनीक जातोंमें बालविवाह वगेरे कुचाला होता है, वो रोग उत्पत्तीका दूरका कारण बण जाता है, कितनीक जातोंमें जैसें, बोहरे वगेरोमें घुरगा पडदा होता है, जिससें ओरतें नाताकत और रोगी होती हे ऐसें औरभी जाति कारणके अनेक दृष्टांत है (४) देशकारण, कितनेक देशोंका हवा पाणी अथवा अदम्योंकी प्रकृती अपनेकूं माफगत नहीं आवै जिससें रोग पैदा होय एसा विवहार कल्पीजैसो (५) कालकारण, बालपणा जवानी और बुढापा वगेरोंमें जुदी २ अवस्थामें तैसें छ ऋतुओंमें जो काम करणा चाहिये अथवा वरतणा चाहिये उसतरे न वरतीजै अथवा विपरीत वरतीजै उस कारणोसें जो रोग पैदा होय सो (६) मंडली कारण, अदम्योंकी जूदी २ मंडली एकठ्ठी होकर ऐसे नियम बांधे सो शरीर संरक्षणसें विरुद्ध होय जिस कारणोसें रोग पैदा होय सो (७) राज्यकारण, राज्यके कायदे और धोरण एसे होय सो लोकोंकी तासीर और हवा पाणीके विरुद्ध होय उससें बहोत रोग पैदा हो जाय जैसें अपणा गरम देशके लोकोंकूं सरापयाने-दारूका पीणा बहोतही नुकशान करनेवाला है, और दारूके व्यसनसें बहोतसी बेमारिया हो जाती है, एसा है तोभी दारू वगेरे मादक और मारणेवाली चीजोंकों बेचनेकूं जाहिर लाईसेन्स देणा इय राज्यकारण है, (८) महाकारण, सब सृष्टीके जीव मोतके डरमें आयपडे एसा कोइ व्यवहार बंधें जैसें ब्रह्मचर्य गर्भाधान वगेरे शारीरक उन्नतीके शिखरपर लेजाणेवाली क्रियाओकूं प्राचीन लोक धर्मकी आवश्यक क्रियामें दाखल करके मांनते थे वो अब सृष्टिके लोकोमें विरलोंमें रहा इसका कोइ बंदोवस्तवाला कायदा नहीं होणेसें लोक मनोमती होकर वरतणें लगे, इससें सब सृष्टीकूं डर तथा बहोत खराबी होती है सो दैव कहो चाहे कर्म कहो भवतव्यताकहो जैसें पहली हमने पांच समवाय लिखे हैं ये रोग होनेके सब कारण पांच समवाय और निश्चय १ विवहार २ ये दोय नय विगर होते नहीं, विजली या मकानादि गिरके मरणा या चोट लगणा इसमें भवतव्यता समवायकूं अग्रेश्वरीपणा समझणा गरमी ठंढके फेर फारसें रोग होय जिसमें काल अग्रेश्वरी (व्युब्योनिक) प्लेग,हैजेके होनेमें समुदाणी कर्म बंधेभये कर्मकूं अग्रेश्वरीपणाहे इसतरे तो पांचो समवाय समझणा, निश्चयनयसें वैसेंही कर्म उस जीवने होणा बांधा था विवहारनयसें उसनें उद्यम आहार विहारादिकका वैसा रोग होनेका किया, इस तरे समझणा, बहोतसे रोग विवहारनयसें प्राणीके उलटे उपचार और वरतावेसेंही होता है, कालका स्वभाव तो वरतनेका है, सो कभी ठंड कभी गरमी फेरफार होताही है इसवास्ते अपणा स्वभाव,पदार्थोंका स्वभाव,और ऋतुओंके स्वभाव मुजब वरतणा आहार विहारका

मुरादाबादका छपा भया॥और ये निर्बलता बहोतसे रोगोंका मूल कारण है,॥(२)निज कुटंबमें विवाह होणा येभी निर्बलताका हेतू हैं, वैद्यकशास्त्रमें निषेध कीया है, तभी तो भगवांन ऋषभदेव अपणी प्रजाकूं बलबंत करणेकेलिये युगला धर्म दूर किया, संगमे जन्मे जोडोंसे मैथुन होता था तब प्रजाकी वृद्धि नही थी. और नहीं वो कोइ पुरुषार्थका काम करते थे फकत पूर्वबद्ध पुन्यका फल कल्पवृक्षोंसें भोगते थें, कल्पवृक्षका हीनपणा देख प्रभूने पुरुषार्थ बढाणेकूं दुसरोंकी ओलादसे, विवाह करणेका हुकम दिया, कोइ कहेगा भगवान दो माताओंकी औलाद भरतबाहूबलसे ब्राह्मी सुंदरीका विवाह कैसें किया पिता तो दोनोंके आपही थे॥इसमे विचार ऐसा है, भगवान प्रजापतीने ये विधि इसवास्ते दिखलाईके तुम लोक दुसरे कुटंबकों बेटी दो वो आपतो जाणतेथे मेरी दोनों बेटियां बाल ब्रह्मचारणी यां हैं, इनोके तो रति या शंतानकी प्रवृत्ती होयगी नहीं, भगवानकूं ऐसा किया देख एकके संग जणा भया जोडा दुसरेके जन्में भये जोडोंसें विवाह दुनिया करणे लगी, बडी मनूमें ऐसाही हुकम हैं, और छोटी मनू भृगु ऋषीकी बनाइमें ऐसा लिखा है, माताके सपिंडमें नहीं होय और पिताके गोत्रमें नहीं होय ऐसी कन्या, उत्तम जातिवालोंकों विवाह करणा चहिये छोटी मनुनें नीच कोमका ये काम है, ऐसा बाकी रखा है, बडी मनूका जो कायदा है, उसका कायदाही अर्हन्नीती है, वो बडी और छोटी दो है, कुटंबमें लग्न करणेका निषेध बाबत लोकीक कारण तो बहोत है, इहां लिखणेकूं जगे नहीं है, लेकिन् दुहिता जो नांम बेटीका संस्कृतमें धरा है, सो उसका अर्थ तो ऐसा होता है, के जिसके दूर जांणेसें सबका हित होय, पचास वर्ष पहिले गोत्रमें विवाह करणेका बडा तिरस्कार होता था, अब तो धीरे २ उत्तम वर्णके हिंदुओंमें प्रचार चला है, पूर्व विद्वान तथा अर्वाचीन विद्वान सगा कुटुंबमें व्याह करेणेकी मनाई करते हैं, क्योंके जैसें रसायणिक योग दोनुं जुदे २ गुणोका तत्व मिलता है, तभी सिद्ध होता है, गोत्र विवाहसें जाहिर देखते कोईभी पाप नहीं दिखता इसवास्ते कितनीक जात तो सगी बहिन काकाकी बेटीसें व्याह कर लेते हैं, शास्त्र और लोक मर्यादा तथा आदमके बांधे नियमकों तोडकर चलते है, ऐसें संबंधसे पैदा भयी औलाद शरीरशक्ती और मानसिक शक्तिसें ऊतरते जाते हैं, फेर जैसें दुसरे सोध और सुधारोंके साधनोंसें जैसा ताकतवर होणा चहिये ऐसी ओलाद बलवान नहीं हो सकती है, जो की शास्त्रादिक ऊपर लिखे प्रमाणोंकों नहीं मानते उनोंनें अपणी औलादके हित सुखकेवास्ते इतना तो जरूरही ध्यांनमें रखणा चाहिये जो के बापके तरफसें कोइ तरेकाभी संबंध न लगता होय ऐसोंके संग व्याह करणा सबसें अच्छा है, दूर देशकी स्त्रीसें व्याह करणा सर्वोत्तम संबंध है, (३) (बालविवाह) बालपणेमें जो व्याह कर देते हैं, उससे जो जो खराबियां होती है, सो तो किसीसें छिपी नहीं हैं. इसका तो इहां क्या लिखे बचपणेमे जो विषय सेवते हैं. उनोके शरीरमें जितनी नुकशानी

कर जाती है, संभाल नही रखणेसें हांफणी दम खासी कफ वगैरेके रोग थोडीसी देरमें हो जाता है, जवानीमें रोगोंकूं अटकाणेवाली शाता वेदनी नामकी शक्तिका जोर होणेसें रोगके लायक करणेवाले कारणोका जोर थोडा लगता है, तीसरी वृद्धावस्थामें फेर शरीर निर्बल पडता है, और ये निर्बलता वदनकूं वेर २ रोगके लायक करती है, (६) (जाति) जातिका विचार करके देखतें हैं, तो पुरुषसेती औरतका शरीर रोगके असरके लायक जादा होता है, कुछ तो अज्ञान विचाररहितपणा और हठ इस कारण आहार विहारमें बिलकुल नफे नुकशांनका खयाल नही रखती और फेर असलमें वदनके बंधेज नाजुक होणेसें गर्भ स्थानमें वेर २ फेर फार उथल पुथल भया करती है, इसवास्ते स्त्रीका निर्बल शरीर रोगके लायक होता है, औरतकी पैदास इस वखत पुरुषसें तीगुणी दिखती है, जादा मरती है, एक २ अदमी तीन २ चार २ सादी वहोतसें किया करते है, जैन सिद्धांत किसी अपेक्षासें औरतकी पैदास पुरुषसें सत्ताइस गुणी जादा लिखते हैं, (७) (धंदा) कितनेक रुजगार रोगके लायक करणेवाला कारण बणता है, सवदिन बैठके काम करणेवाले आंखकूं वहोत महनत खेचल देणेवाले कलेजा और फेफसा दबे इसतरे बैठके काम करणेवाले, रंगका काम करणेवाले, पारा तथा फासफरसकी चीजों बनाणेवाले, सिलावटे पत्थर घडणेवाले, धातुओंका काम करणेवाले, लुहार कसारे ठठेरे सुनार वगैरे कोयलेकी खाण खोदणेवाले मजूर, कपडेकी मीलमें काम करणेवाले मजूर, वहोत बोलणेवाले, वहोत फूंकणेवाले, रसोइकाकाम रात दिन करणेवाले, इत्यादिक धंदा रुजगार करणेवालोंका शरीर रोगके लायक हो जाता है ऊमर इनोकी प्रमाणसें कम हो जाती है (८)(प्रकृति)प्रकृती, स्वभाव, मिजाज, येभी रोगके लायक करणेवाला कारण है किसीका मिजाज ठंढा, किसीका गरम, किसीका वायडा, किसीका मिश्र, इसमेंके दोय अथवा तीन प्रकृतीकी प्रधानतावालेभी केइयक होते है, गरम मिजाजवाला अदमी क्रोध तथा बुखारके तुरत आधीन होता है, शरदी मिजाजवाला अदमी सरदी कफ दम वगैरे रोगके तुरत स्वाधीन होता है, वायु प्रकृतीवाला अदमी वादीके रोगके स्वाधीन होता है, मूलमें ये प्रकृतीरूप दोप तो उनोंके होता ही है, पीछे उस प्रकृतीकूं बिगाडे ऐसे आहार विहारसें मदत जब मिलती है, तब उस मुजब रोग पैदा होता है, इसवास्ते प्रकृतीकूं रोगके लायक कारणोंमें गिणते हैं,

॥ रोगकूं पैदा करनेवाला नजीकका कारण ॥

रोगकूं पैदा करणेवाले नजीक कारणोमें मुख्य २ कारण अठोर है, १ हवा २ पाणी ३ खुराक ४ कसरत ५ नींद ६ कपडे ७ विहार ८ मलीनता ९ व्यसन १० विपयोग ११ रसविगाड १२ जीव १३ चेप १४ ठंढ १५ गरमी १६ मनके विकार १७ अकस्मात १८ और दवा, ये ऊपर लिखी बाबतें जुदे२रोगके कारण हो जाते हैं, इनमेंसें मुख्य

(९) पूरा खुराक नहीं खाणेसें क्षय निवलाई(चेहरा) वदनफीका वुखार वगैरे पैदा होता है, इस उपरांत मट्टीके मिले खुराक खाणेसें पांडुरोग होता है, वहोत मसालेदार खुराक खाणेसें यकृत् कलेजा याने लीवर विगडता है, और वहोत उपवास करणेसें शूल वायू वगैरे रोग पैदा होकर शरीरकूं निर्वल करता है, (४)(कसरत) पहली लिखे मुजव कसरतके नियमानु सार शक्ति मुजव कसरतके याने महनतके करणेसें फायदा है, वहोत महनत या आलसु वण वैठे रहणेसें वहोत रोग होता है, वहोत खेचलसें वुखार अजीर्ण उरुस्तंभ (याने नीचेका तंग रह जाणा) श्वास वगैरे रोग होणा संभव है, अल्प श्रम (याने आलसु-वणणेसें) अजीर्ण मंदाग्नि मेदवायु अशक्ति वगैरे रोग होता है, भोजनकर कसरत करणेसें कलेजेकूं हरकत पहुंचती है, भारीअनाज खाकर कसरत करणेसें आमवातका याने सांधोंमे दरदका रोग होता है, कसरत २ तरेकी हे, शरीरकी १ और २ मनकी (१) शरीरकी कसरत हदसे जादा खेचल करणेसें हृदयमें धवका धडधडाट नसोंमें खून वहोत जलदी फिरता है, श्वासोश्वास वहोत जोरसे चलता है, उससें मगज तथा फेफसा वगैरे जरूरीके भागोंपर वहोत दवाव होणेसें उनोंका रोग होता है, वहोत खेचलसें भमल आती है, कानोंमें अवाज होती है, आंखोंमें अंधेरी आती है, भूख मारे जाती है, अजीर्ण होता है, नींद नहीं आती वेचैनी होती है (२) मनकी कसरत शक्ति उपरांत खेचल देणेसें अदमीके मगजमें जुस्सा भरजाणेसें वेहोस हो जाता है वाजे वखत मरभी जाता है, वहोत खेचल करणेसें याने चिंता फिकरसें अंग तवाये जाता है शरीरमें निवलाई घर करती है वहुत पढणे वांचणेसें वहोत विचारसें फेर मनपर वहोत दवाव करणेसें कामला अजीर्ण वादी पागलपणा वगैरे रोग पैदा होता है स्त्रीयोंके योग्य कसरत नहीं मिलणेसें उनोंका शरीर फीका नाताकत और वेमार रहता है गरीव लोकोंसें पइसेवाले ऐसआरामवाले लोकोंके घरकी औरतें भागसभागी सुखी होती है जो औरतें हमेस वैठी रहती है उनोका हाथ पांव ठंढा चहराफीका शरीर तवाया भया दुवला अथवा वादीसें फूलाभया नाडीनिर्वल पेटकाफूलणा वदहजमी छातीमेंजलण खट्टी डकार हाथ पांवमेंकांपणी तथा चसका हिस्टीरियाका तेर २ का दुखदाई रोग और ऋतू धर्मसंवंधी केइ तरेकी वेमारी इत्यादिक रोग जो स्त्रियें अंगकूं पूरी कसरत नहीं देती है उनोंके होता है (नींद) चहिये जिससें जादा देर नींद लेणेसें खून वरावर नहीं फिरता है तव शरीरमें चरवीका भाग जमा होता है पेटकी दूंद वाहिर निकलती है इसकूं मेदवायु कहते हैं कफका जोर होता है उससे कफके केइयक रोग होणा संभव होता है और चहिये जिससें थोडी नींद लेणेसें शूल उरुस्तंभ रोग होताहे दिनकेसोणेसें कफ वढता है, कपडे जेसें शरीरकी हिफाजत करता है तैसें योग्य रीतसें ऋतु मुजव तासीर

(९) पूरा खुराक नहीं खाणेसें क्षय निचलाई(चेहरा) वदनफीका वुखार वगैरे पैदा होता है, इस उपरांत मट्टीके मिले खुराक खाणेसें पांडुरोग होता है, वहोत मसालेदार खुराक खाणेसें यकृत् कलेजा याने लीवर विगडता है, और वहोत उपवास करणेसें शूल वायू वगैरे रोग पैदा होकर शरीरकूं निर्वल करता है, (४)(कसरत) पहली लिखे मुजव कसरतके नियमानु सार शक्ति मुजव कसरतके याने महनतके करणेसें फायदा है, वहोत महनत या आलसु वण वैठे रहणेसें वहोत रोग होता है, वहोत खेचलसें वुखार अजीर्ण उरुस्तंभ (याने नीचेका तंग रह जाणा) श्वास वगैरे रोग होणा संभव है, अल्प श्रम (याने आलसुवणणेसें) अजीर्ण मंदाग्नि मेदवायु अशक्ति वगैरे रोग होता है, भोजनकर कसरत करणेसें कलेजेकूं हरकत पहुंचती है, भारीअनाज खाकर कसरत करणेसें आमवातका याने सांधोंमे दरदका रोग होता है, कसरत २ तरेकी हे, शरीरकी १ और २ मनकी (१) शरीरकी कसरत हदसे जादा खेचल करणेसें हृदयमें धचका धडधडाट नसोंमें खून वहोत जलदी फिरता है, श्वासोश्वास वहोत जोरसे चलता है, उससें मगज तथा फेफसा वगैरे जरूरीके भागोंपर वहोत दवाव होणेसें उनोंका रोग होता है, वहोत खेचलसें भमल आती है, कानोंमें अवाज होती है, आंखोंमें अंधेरी आती है, भूख मारे जाती है, अजीर्ण होता है, नींद नहीं आती वेचैनी होती है (२) मनकी कसरत शक्ति उपरांत खेचल देणेसें अदमीके मगजमें ज़ुस्सा भरजाणेसें वेहोस हो जाता है वाजे वखत मरभी जाता है, वहोत खेचल करणेसें याने चिंता फिकरसें अंग तवाये जाता है शरीरमें निचलाई घर करती है वहुत पढणे वांचणेसें वहोत विचारसें फेर मनपर वहोत दवाव करणेसें कामला अजीर्ण वादी पागलपणा वगैरे रोग पैदा होता है स्त्रीयोंके योग्य कसरत नहीं मिलणेसें उनोंका शरीर फीका नाताकत और वेमार रहता है गरीव लोकोसें पइसेवाले ऐसआरामवाले लोकोंके घरकी औरतें भागसभागी सुखी होती है जो औरतें हमेस वैठी रहती है उनोका हाथ पांव ठंढा चहराफीका शरीर तवाया भया दुवला अथवा वादीसें फूलाभया नाडीनिर्वल पेटकाफूलणा वदहजमी छातीमेंजलण खट्टी डकार हाथ पांवमेंकांपणी तथा चसका हिस्टीरियाका तरे २ का दुखदाई रोग और ऋतू धर्मसंवंधी केइ तरेकी वेमारी इत्यादिक रोग जो स्त्रियें अंगकूं पूरी कसरत नहीं देती है उनोंके होता है (नींद) चहिये जिससें जादा देर नींद लेणेसें खून वरावर नहीं फिरता है तव शरीरमें चरवीका भाग जमा होता है पेटकी दूंद वाहिर निकलती है इसकूं मेदवायु कहते हैं कफका जोर होता है उससे कफके केइयक रोग होणा संभव होता है और चहिये जिससें थोडी नींद लेणेसें शूल उरुस्तंभ रोग होताहे दिनकेसोणेसें कफ वढता है, कपडे जेसें शरीरकी हिफाजत करता है तैसें योग्य रीतसें ऋतु मुजव तासी

बुद्धिकूं बिगाडता है, ताडी (सींधी) पेसावके गुडदेका रोग मंदाग्नि आफरा दस्त वगेरे रोग करती है, बुद्धिकूं भ्रष्ट करती है, अफीमसें सुस्ती अक्कलका घटणा दिवानापणा पैदा होता है, ज्यादा क्या लिखें शरीर अफीमसें बिलकुल बरबाद होजाता है, एक दूध इसका दोस्त है, वदन माने तो तईयार कर देता है, भांग बुद्धि तथा हुसियारीका नाश करती है, अदमीपणा मिटकर पशूकी तरे मुर्खताई और खुराक होती है, यादशक्ति घट जाती है, विचार शक्तिनहीं रहती चक्कर आताहै मनखराव होताहे ऊमर घटजाती है (तमाखू) तमाखू चावणेसें पाचनशक्ति मंद पडती है, वदहजमी रहती है, पहले तो हुसियारी लेकिन्पीछे सुस्ती आतीहे हाथपैर ढीले होतेहै मनकी चंचलता तथा हुसियारी कम होजाती है, विचारशक्ति कम होजाती है, जादा खानेमें आवे तो जहरका असरकर जीव जान लेती है, तमाखूं पीणेसें छातीमें दाह श्वास तथा कफका रोग पैदा होता है, तमाखु सुंघनेसे गंदकी होती है, फेर तरे २ के रोग होते है, (चाकाफी) इसकाभी लोकोकूं विसन पड जाता है, इसमेंभी थोडा२ नसा होता हे, लूखेसूके कम खुराक खानेवाले गरीव लोकोको वहोत नुकशांन करती है, चाकाफीसें मगज तथा उसके तंतु नाताकत हो जाते हैं, (१०) विषयोग, खाने पीनेमे जहरी अभक्ष वस्तु आजावे या एकसें दुसरा पदार्थ विरुद्ध खानेमें सामल आजावै तव वो जहर जितना नुकशांन वदनमें करती है, सो पहले लिखा है, फेर तरे २ के जहर पेटमें जाकर नुकशांन करता है, जहरी हवासें वुखार पांडू मरोडा वगेरे रोग होता है, सीसाके तांवेके पेटमें जाणेसें चूंक होती है, वछनाग पेटमें जानेसें मूर्छा तथा दाह होती है, सोमल तथा रसकपूरसें दस्तके वंध खुल जाते है, ये सवतरेके जहर पेटमें जाकर नुकशांन करता है. (११) रसविगाड, दस्त पेसाव पसीना थूक पित्त इत्यादि पदार्थ खूनमेसें पैदा होता है, उन सवोंकों शरीरका रस एसा नांम कहणेमें आता है, ये रस चहिये जिससें जादा वढकर शरीरमें रहै, तो जादा नुकशांन करता है, पसीना नहीं निकले तोभी नुकशांन करता है, और जादा निकलें तोभी नुकशांन करताहै, इसीतरेही दस्त वगेरे समझणा. पेसाव कम होय तो पेसावके रस्तेसें जो नुकशानकारक अंस वाहर निकलणा चहिये वो निकल नहीं सकता और खूनमें जमा होता है, जो पेसाव होणा बिलकुल वंध होजाय तो प्राणी मर जाता है, हेजामरीमें पेसाव रुकके मृत्यु होती है, वहोत पसीना वहोत दिनोंका अतिसार मस्सा तथा नाकमेंसें जाता भया खून तैसें औरतोंका प्रदर इत्यादि वहते भये प्रवाहकूं एकदम वंध करनेसें नुकशांन होता है, पित्त वधनेसें नुकशांन होता है, पित्त वधणेसें पित्तके रोग होते हैं, और खटास वधणेसें सांधोमें दरद होजाता है, (१२)जीवजंतु, कृमि अथवा जंतुवोंसें कंठमाल वातरक्त उलटी मृगी अतिसार चमडीके अनेक रोग पैदा होते हैं. (१३) चेप, चेपी हवासें अथवा

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके बिगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें बहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता हे, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूंचकर गरमएकांतदवा धसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू वढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तबही वायु मिटती है, इसवास्ते मगजकूं पुष्ट करे एसी तराबटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका वदन बहोत जुलाबके लायक नही होय, उसकुं बहोत जुलाब देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और बहोतसी वखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें स्वतंत्रपणे होता है, तैसें दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें बहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसें प्रतिकूल बहोत गरम या बहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि बिगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नही करनेमें आवे तब इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे बहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा-हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जब वदनमें जड जाता है, तो वडे २ भयंकर रोगोंका कारण वण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोष वढकर खांसी होती है, कफ वढता है, उसकरके फेफसेंमें हरकत पहुंच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण. अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों बहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहांतक वदनमें ताकत रहती है, उहांतक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकूं एसा साधारणभी अजीर्ण वडी बेमारीका कारण वण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकूं बुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नही करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तब हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्पा नामसें प्रसिद्ध है, प्राये अजीर्णसें बहोतसे

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके बिगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें बहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता हे, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूंचकर गरमएकांतदवा धसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू वढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तवही वायु मिटती है, इसवास्ते मगजकूं पुष्ट करे एसी तरावटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका वदन बहोत जुलाबके लायक नही होय, उसकुं बहोत जुलाब देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और बहोतसी वखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें स्वतंत्रपणे होता है, तैसें दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें बहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसें प्रतिकूल बहोत गरम या बहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि बिगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नही करनेमें आवे तव इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे बहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा-हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जव वदनमें जड जाता है, तो वडे २ भयंकर रोगोंका कारण वण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोप वढकर खांसी होती है, कफ वढता है, उसकरके फेफसेमें हरकत पहुंच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण. अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों बहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहांतक वदनमें ताकत रहती है, उहांतक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकूं एसा साधारणभी अजीर्ण वडी वेमारीका कारण वण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकूं बुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नहीं करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तव हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्पा नामसें प्रसिद्ध है, प्रायें अजीर्णसें बहोतसे

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके बिगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें बहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता हे, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूंचकर गरमएकांतदवा धसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू वढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तबही वायु मिटती है, इसवारते मगजकूं पुष्ट करे एसी तराबटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका वदन बहोत जुलाबके लायक नही होय, उसकुं बहोत जुलाब देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और बहोतसी वखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें स्वतंत्रपणे होता है, तैसें दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें बहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसें प्रतिकूल बहोत गरम या बहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि बिगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नहीं करनेमें आवे तब इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे बहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा-हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जब वदनमें जड जाता है, तो वडे २ भयंकर रोगोंका कारण वण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोप वढकर खांसी होती है, कफ वढता है, उसकरके फेफसेमें हरकत पहुंच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण. अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों बहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहांतक वदनमें ताकत रहती है. उहांतक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकूं एसा साधारणभी अजीर्ण वडी वेमारीका कारण वण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकूं बुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नहीं करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तब हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्पा नामसे प्रसिद्ध है, प्रायें अजीर्णसें बहोतसे

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके बिगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें बहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता हे, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूंचकर गरमएकांतदवा घसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू बढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तबही वायु मिटती है, इसवास्ते मगजकूं पुष्ट करे एसी तराबटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका वदन बहोत जुलाबके लायक नही होय, उसकुं बहोत जुलाब देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और बहोतसी बखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध बरतावसें स्वतंत्रपणे होता है, तैसें दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें बहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसें प्रतिकूल बहोत गरम या बहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि बिगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नहीं करनेमें आवे तब इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे बहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा-हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जब बदनमें जड जाता है, तो बडे २ भयंकर रोगोंका कारण बण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोष बढकर खांसी होती है, कफ बढता है, उसकरके फेफसेंमें हरकत पहुंच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण. अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों बहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहांतक बदनमें ताकत रहती है, उहांतक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकूं एसा साधारणभी अजीर्ण घडी बेमारीका कारण बण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकूं बुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नहीं करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तब हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्पा नामसें प्रसिद्ध है, प्राये अजीर्णसें बहोतसे

आक्षेपवायु १ शरीरकी नसोंमे हवा भरकर वदनकूं इधरउधर फेंकती है.
हनुस्तंभ २ जवाडी वादीसें अर्थात् दाढी जकडके टेढी होय सो.
उरुस्तंभ ३ जांघ वादीसें अकड जाकर चलणेकी शक्ति कम करे सो.
शिरोग्रह ४ शिरकी नसोंमें वादी भरकर शिरकूं जकडा देवे और पीडा करे.
वाह्यायाम ५ पीठकी रगोमें वादी भरकर धनुषकीतरे टेढा वांका झुका देवे.
अभ्यंतरायाम ६ छातीके तरफसें वदनकवाण जैसा वांका टेढा होजावे.
पार्श्वशूल ७ पसवाडोंकी पांसलियोंमें चसके चले.
कटिग्रह ८ कमरकूं वादी पकडके जकड कर देवे.
दंडापतानक ९ लकडीकी तरे वदनकूं सजड जकडा देवे.
खल्ली १० पांव हाथ जांघ गोठण पीडीमें वायु भर खाली चढाती है.
जिह्वास्तंभ ११ जीभकी नसोंकूं वादी पकडके बोलनेकी गति बंध करै.
अर्दित १२ मुंका आधा भाग टेढाकर देता है, जीभका लोचा बंधता है करडा होता
पक्षाघात १३ आधे शरीरकी नशोंकूं सोषणकर गतीकू अटकाता है.
कोष्टुसीर्षक १४ गोडोंमें वादी खूनकूं पकडके कठन सूजन पैदा करती है.
मन्यास्तंभ १५ गरदनकी नसोंमें वायु कफकूं पकडके गरदन जकडाती है.
पंगु १६ कम्मर तथा जांघोमें वादी घुसके दोनुं पगोकूं निकम्मा कर देती है.
कलायखंज १७ चले तो शरीरमें कांपणी होकर पांव आढेटेढे पडते हैं.
तूणी १८ पक्वाशयमें चिणक पैदा होकर गुदा और उपस्थमें जाती है.
प्रतितूणी १९ तूणीकी पीडा नीचे ऊत्तर पीछी नाभीकी तरफ जाती है.
खज २० पांगला जैसा लक्षण लेकिन् एक पांवमें होता है लंगडा कहते है.
पादहर्ष २१ पांवमें खाली झणझणाट होय पांव सून्य सो जाता है.
गृद्धसी २२ कमरके नीचे जांघ और पांव वगेरे जकड जाते हैं.
विश्वाची २३ हथेली तथा अंगलियां जकड जाय हाथसें काम नही होय.
अचवाहुक २४ हाथकी नाडी जकडकर सब हाथ दुखते रहता है.
अपतानक २५ वादी हृदयमें जाकर दृष्टिकूं स्तब्ध करे ज्ञानभानका नाश करे औ
कंठमेंसें विलक्षण तरेका आवाज निकले वो वायु हृदयसें अलग हटे तब होस आ
ऐसें हिस्टीरीयाका जैसा चिन्ह वैर २ होय ओर मिट जाय सो अपतानक वा
कहाती है.

व्रणायाम २६ चोट अथवा जखमसें भये व्रण घावमें वादी दरद करे.
वातकंटक २७ पांवमें तथा गिरिये घूंटणमें चलते दरद होय सो.
अपतंत्रक २८ पांवमें तथा शिरमें दर्द होय मोह होय गिरपडे वदन धनुषकवाणकी

स्वेदनाश ५९ वादी पसीनोके छेदोंकों रोक पसीना बंध करे सो.
दुर्बलत्व ६० वायुके कोपसें वदनकी ताकत जाती रहे सो.
वलक्षय ६१ वादीके कोपसें ताकतका विलकुल नाश हो जाय सो.
शुक्रप्रवृत्ति ६२ वादीके कोपसें शुक्रवीर्य वहोत गिरा करे सो.
शुक्रकार्श्य ६३ वायु धातुमें मिलके धातूकूं सुकाय डाले सो.
शुक्रनाश ६४ वायुसें धातूका विलकुल नास होजाय सो.
अनवस्थितचित्त ६५ वायु मगजमे जाकर चित्तकूं अस्थिर करे सो.
काठिन्य ६६ वायूके कोपसें वदन करडा होजाय सो.
विरसास्यता ६७ वायूके कोपसें मूंमें रसका स्वाद विलकुल नहीं रहता.
कषायवक्त्रता ६८ वादीके कोपसें मूंका स्वाद कषायला रहे सो.
आध्मान ६९ वायुके कोपसें सूंटी धरणके नीचे आफरा चढे सो.
प्रत्याध्मान ७० हृदयके नीचे और सूंटीके उपर आफरा चढे सो.
शीतता ७१ वायूसें वदन ठंढा पड जाय सो.
रोमहर्ष ७२ वादीके कोपसे वदनके रूंखडे होय सो.
भीरुत्व ७३ वायुके कोपसे डर लगता रहे सो.
तोद ७४ वदनमें सूइयां चुभावे एसा लगे सो.
कडू ७५ वदनमें खाज आवे वादीसें सो.
रसाज्ञता ७६ रसोंका स्वाद मालम नहीं देवे सो.
शब्दाज्ञता ७७ कानोंसें सुणीजे नहीं सो वायु.
प्रसुप्ति ७८ स्पर्शकी खबर नहीं पडे सो वादी.
गंधाज्ञता ७९ गंधका ज्ञान खसवोकी मालम नहीं पडे सो.
दृष्टिक्षय ८० निजर (दृष्टिमें) वायु प्रवेशकर देखणेकी शक्ति कम करे.

वायूके कोपसें वदनमे इसमेके एक अथवा अनेक लक्षण दिखते है, इसपरसे निश्चय होसकता है, ये रोग वादीके है, खून और वादीका निकट संबंध है, वादी खूनमें मिलके केतनेक खूनके विकार पैदा करती है, ऐसे रोगोंमें खूनकी शुद्धि और वायूकी शांति करे एसा इलाज करणा.

पित्तप्रकोपका कारण.

वहोत गरम तीखा खट्टा लूखा दाहकारी चीजोंके खानपानसे दारूवगेरे नसोंका विसन उपवासवहोतकरणा क्रोध अतिमैथुन वहोतशोक वहोततप धूप अग्नि वगेरे इत्यादि आहार विहारसें पित्तका कोप होता है.

और भेंसका दूध वगेरे ठंढा और भारी पदार्थोंके वहोत खानेसे दिनकीनींद अजीर्णमें भोजन करना महनतका काम करे विगर वैठे रहणा ठंढकालेकी मोसममें वहोत ठंढा पाणी पीणा वसंतऋतुमें नया अनाज खाणा इत्यादि आहार विहारसें वदनमें कफ वढकर वहोतसे रोग पैदा होते हैं,

कफके २० रोग.

तंद्रा १ आंखमें मींट लगे. अतिनिद्रता २ वहोत नींद आवै.
गौरव ३ शरीर भारी होय. मुखमाधुर्य ४ मूं मीठा २ लगे.
मुखलेप ५ मूंमें चिकणास होय. प्रशेक ६ मूंमेंसे लाल गिरे.
श्वेतावलोकन ७ सव वस्तु सुपेद दीखै. श्वेतविट्कत्व ८ दस्त सुपेद रंगका उतरे.
श्वेतमूत्रता ९ पैसाव सुपेद उतरे. श्वेतांगवर्णता १० वदनका रंग सुपेद होय.
उष्णेच्छा ११ गरमागरम खाणेकी इच्छा. तिक्तकामता १२ कडवी चीजकी इच्छा.
मलाधिक्य १३ दस्त जादा होय उतरे, शुक्रवाहुल्य १४ वीर्य वहुत संचय,
वहुमूत्रता १५ पेसाव वहोत आवै. आलस्य १६ आलस वहोत आवै.
मंदबुद्धित्व १७ बुद्धि मंद होय. तृप्ति १८ थोडा खानेसें तृप्ति होजावै.
घर्घरवाक्यता १९ अवाज खोखरा वोले. अचेतन्य २० चेतना भूल जावै.

वदनमें कफका कोप होणेसे इनोंमेंका एकरोग अथवा जादा हो जावै सर्व वस्तु सुपेद दीखे दस्त सुपेदरंगका होय इसका मतलव एसा है, तदन सुपेद रंगका दीखे एसा नहीं है, लेकिन् तनदुरस्ती हालतमें जेसारंग दिखणा चहिये उसकरके जादा सुपेद दिखाइ देवे.

किरण ३ तीसरी.

रोगपरीक्षाके प्रकार.

रोगकी परिक्षाके वहोत प्रकार है जेसें तीनतो निमित्त शास्त्रसे, रोगीकूं स्वप्न आवे तथा शकुनपरीक्षा वैद्यकूं दूत वुलाणे जावे उसकूं गरम सुकन मकानसें निकलते होणा सौम्य ठंढा होयतो अछा नही वैद्यके पास पोहचे वाद वैद्यस्वरोदय देखे सो भरीदिसमें दूत वैठके या खडा रहके प्रश्नकरे तो सजीवदिस समझै, अग्नितत्व उस वखत वैद्यके चलता होय तो पित्त गरमीका रोग समझे रोगीके, वायु वहता होयतो वादीका इत्यादि तत्वोका विचारकरे जो खाली दिसमें वैठके या सुखमना नाडी चलती स्वरोदयमें होय तो रोगी मरे, वैद्यकुं जस आकाशतत्वमें नहीं आवै इत्यादि विचरा देखणा होय तो हमारी छपाई सत्ज्ञान चिंतामणी स्वरोदय ग्रंथ देखणा वैद्यके चंद्रश्वर चलता होय उसमें फेर प्रथ्वी जल तत्वचले उस वखत रोगीके घर जावै निश्चैजसपावै दवादेतीवखत वैद्यके सूर्यश्वर होणा इसतरेफेर वैद्यकुं मकानसें निकलते ठंडे सौम्यशकुन होयतो अच्छा, गरमश-

सून अच्छा नहीं इसके स्वोदय १ प्रकृत २ और स्वस्थ ३ के लक्षणोंसे विपरीत होवे निमत्तज्ञानमें गिनी विपेसा १ या चलेबादि भूतोंसा २ सा भासत होवे ३ इत्यादिक वैद्य जांन सकता है लेकिन इस चढजातीके मनुष्य इसी तरह अणांगनिमित्त पर्योय जानके ज्ञान कहे सो ज्ञान है अब नेत्रपरिक्षाओंकीह परिक्षामें मुख्य है उसका विचार वर्णन इसी प्रकारसे १ प्रकृतिपरिक्षा २ स्पर्शपरिक्षा ३ दर्शन परीक्षा ४ प्रश्नपरीक्षा ५) प्रकृतीपरिक्षा सो रोगकी प्रकृती वात पित्त कफ है या त्रिदोषज है कि एक प्रधान है इस ज्ञानका विशेष प्रकृतिके प्रकरणमें पावेंगे) स्पर्शपरिक्षा रोगीके शरीरका जुदा २ अंगोके साथके स्पर्शसे दूसरे साधनोंसे तपासकर देखनेकी परिक्षाका वर्णन करणेमें आवेगा स्पर्शपरिक्षा हाथ या थरमोमीटर (उष्णता मापक नली) से और स्टेथोस्कोप (हृदय तथा अन्य नलीका क्रिया जांनेकी भूंगली) वगेर दूसरे साधनोंसे भी होसकती है, जैसी हृदय फेफसे तथा नलीके स्पर्शपरिक्षाका भेद है ३ दर्शनपरिक्षा रोगीशरीरका तथा उसके जुदे अवयव फकत नजरसे देखने मात्रसेही रोगका निर्णय एक निपुण वैद्यके इसपरिक्षा बहोत बाबतें आजाती है, रूप वर्णादिक नेत्रका वर्ण जैसे नेत्रके भेद भेद वातादि मूल दोषोंका भेद तथा उनोंके दूसरे भिन्नोंसे रोगकी परिक्षा होसकती है ४ प्रश्नपरीक्षा, रोगीकी इकीगतसे तथा मूलसे जो जो बातोंकरकी होय उसको इस प्रश्न परीक्षानाम दिया है.

प्रकृतीपरिक्षा.

आर्य वैद्यकशास्त्रका विशेषतासेंनाप पित्त कफ परही आधार रक्खा गया है नाडीपरिक्षामें भीयेही तीन है इसवास्ते इन तीनोंका विचार पहली करणेमें आता है, नाडी वगेरेकी परिक्षाके विषयपर आवने पहली एसा निश्चय करणा चहिये के हरेक दोषवाली प्रकृतीका स्वरूप कैसा होता है, सब अदम्योंको अपणी २ नाडीमें वाकफ होना जरूर है अपणी प्रकृती शांत है, के तामसी है, ये बात तो सब अदमी आपभी जाणते है, और उनके सहवासी यार दोस्तभी जाणते हैं, वैद्यक शास्त्रके नियमानुसार वातकी पित्तकी या कफकी अपणी प्रकृती है, या खूनकी है, या मिश्र मिली भेड है, ये आपे पांच स्थानसंबंधके पदार्थोंका सामान्य गुण दोष धर्म जब अछीतेर जाण लेता है, तो अपणी प्रकृतीको अछीतेर तनदुरस्त रख सकता है, इलाजभी रोगोंका कर सकता है, इन तीनों प्रकृतीकी परिक्षामें बहोतसी परिक्षा सामान्य तोर आजाती है, सब अदम्योंमें वात पित्त कफ और खून होताही है, लेकिन बराबर सब अदम्योंका देखणेमें नही आता है, इन तीनोंमेंसे किसीके वदनमें एक प्रधान किसीके वदनमें दो, अदमीकुं उसी प्रकृतीसें पहचानते हैं, एक चीज एक प्रकृतीवालेकुं माफगत आती है, दुसरेकुं नही आती इसका मूल मतलब इतनाही

है, के अदम्योंकी प्रकृती जूदी २ होती है, इसतरे वस्तुओंका स्वभावभी जूदा२ होता है, जब अदमी आप अपणी प्रकृतीकूं नहीं जाण सकता तब खानपानकी वस्तु प्रकृतीकी परिक्षा करणेमें मदतगार होसकती है, जेसें दवासें रोगकी परीक्षा होती है, जिस वखत दुसरी तरे रोगकी परीक्षा नहीं होसकती तब चतुर वैद्य डाकतर ठंडा या गरम इलाजसेती रोगका कितनाएक निर्णयकर सकते है, तेसें खानपानके पदार्थोसें प्रकृतीकी परिक्षा होसकती है, जेसें गरम वस्तु माफगत नहीं आवे तो समझणा तासीर पित्तकी है, ठंढी वस्तु माफगत नहीं आवै तो प्रकृती वायूकी या कफकी है, प्रकृती मुख्य चारतरेकी है, वातप्रधान प्रकृती १ पित्तप्रधान प्रकृती २ कफप्रधान प्रकृती ३ रक्तप्रधान प्रकृती ४ इन चारोंका सेलभेल होकर लक्षण होय सो मिश्रप्रकृती जांणनी अब इन चारोंका विवरण लिखते हैं.

वातप्रधानतासीरके अदमी.

शरीरके अवयव बडे लेकिन् विवस्था विगरके छोटे बडे बेडोल शिरसोशरीरसें छोटा या बडा. निलाड मूंसें छोटा, बदनसूका और लूखा बदनका रंग फीका झांखा और खून विगरका आंखगहरी काले रंगकी बाल जाडे काले और छोटे चमडीतेजविगरकी लूखी लेकिन् स्पर्शकाज्ञान जलदी करणेवाली, मांसके लोचे करडे, लेकिन् विखरे भये, चाल जलदी चंचल और कांपती, खूनका फिरणा वे प्रमाण, इसवास्ते कोईका शिर गरम तो हाथ पैर ठंढा, और कोइका शिर ठंडातो हाथ पैर गरम, काम करणेमें प्रबल लेकिन् मन चंचल अस्थिर, कामक्रोधादि वैरियोंकों जीतणेमें अशक्त, प्रीति अप्रीति तथा डर जलदी पैदा होय, न्याय अन्यायका विचार करणेमें सूक्ष्म दृष्टि होती है, लेकिन् अपणे इनसाफी विचारकूं अपणे अमलमें लाणा उसकुं मुसकल होता है, सब जिंदगी अस्थिर चंचल वृत्तिसें गुजारता है, सब कामोंमें जलदी करता है, उसके शरीरमें बेमारी बहोत जलदी आती है, उसका मिटणा भी मुसकिल बेमारीसह भी नहीं सकता कष्ट चोगुणा दिखा देता है दुसरी २ प्रकृतीवालेका शरीर और मन ज्यूं ज्यूं अवस्था आती जाती है, त्यों त्यों शिथिल और मंद पडता है, लेकिन् वायुप्रधानप्रकृतिवालेका उलटा ऊमर बढणेपर मन करडा और मजबूत होता जाता है, इस प्रकृतीवाले अदमीके अजीर्ण बंधकुष्ट दस्त पेकटकारोग शिरकादर्द चसका वातरक्त फेफसेकावरम क्षय उन्माद वगेरे रोगहोणा जादेसंभव है, फेर इसप्रकृतीवाले अदमीकी ऊमर ताकत धन थोडा होता है, इसप्रकृतीके अदमीकूं तीखा चमचमा गरमागरम तथा खारा पदार्थोपर जादा प्रीति होती है, खट्टा मीठा ठंडा पदार्थोपर अप्रीति अरुचि होती है.

२ पित्तप्रधान प्रकृतीके अदमी.

शरीरके अंग उपांग खपसूरत अछाबंधा, मांसके लोचे ढीले होते हैं, बदनका रंग पीलास-

जिसे थालगोटे करणे, जरूरी मुतार होणे, जेणें करून थोडी २ वनस्पतिचें अन्नकरणे है, मुख्य त्याग असली लागे, मुखमें जिभेमें घशामध्यें दुखणा नसे, चक्षुमध्यभाग कोनी होय पांच पैमाण तथा दृष्टिका रंग पीत होय, मांसपेशी उत्साही तथा कोमल करणेवर राहणेकी शक्तिवाला, उसकी नाकी उभार दृढ तथा ज्ञान अत्यंत होय है, इस प्रकृतीवालेके अंगीमें तिल हुस्व घोरे रोम होना तांदे समय है, मीठा जेसें पदार्थावर जादा प्रीति होती है, तीखा और खारेपदार्थ कम रुचि होती है.

३ कफप्रधान प्रकृतीके आदमी.

अतिमुलायम मजबूत अवयवसहित चंद्रमाकेसमान सुंदर सौम्य चालसुंदर, स्निग्धत्व आंखिकनकी सोंद तथा भुरभुरी, दांतोंका मुंह, स्वभाव गंभीर, धैर्य तथा नींद जादा, आहार थोडा, विचारशक्ति, कोमल, बोलणेकी अति थोडी शब्दशक्ति और लिखनेवट जादा, व्यापकपूर्ण विचार, व्यवहार चतुरता, अतिकी अक्लीमें मनकी शक्ति जादा होती है, अतिकी चाल मंद, लेकिन मनुष्य विश्वासपात्र कार्यकार और धनवान लंबी उमरवाला होता है, सामान्य कारणमें रोग होजाता है, कफके गुण रसकी वृद्धि होती है, अतिनाशी मेदवाला होता है, उसकेके अतिशय चरबी है, मदन पहोन जादा होता है, पेटकी स्नेट लिपट पडती है, हाथ पदा सांधेभी पडे और जाडे होते हैं, मांसके लोचे दीखे होते हैं, चहरा स्निग्ध और फीका होता है, अति जेसा जादा मोटा दिखता है, जैसी अंदर ताकत नहीं रहती, निर्बलता सोजा अवबुद्धि हाथी जैसे पांव वगेरे, इस प्रकृतीके मुख्य रोग है, तीखा खारा पदार्थोंपर जादा प्रीति मीठे पदार्थोंपर कम रुचि होती है.

४ रक्तप्रधान धातुके आदमी.

वात पित्त कफ ये तीन प्रकृतिविशिष्ट जिस आदमीमें रक्त जादा होता है, उसके ये लक्षण है, शरीरमें शिरलोटा, मूंचपटा चोरूणा, निखादादा और स्निग्धोंका मिलाडीमें दलता, तथा छाती चौडी गंभीर और लंबी होती है, खाडे रहणेसें मुंही पेटकी सपाटीके संग मिल जाती है, बाहरया अंदर दिखती नहीं, चरबी थोडी, बदनपुष्ट रक्तमेंभरपूरता रूपसुरत बालनरम पतले और आंटेदार चमडी करडी उसमेंमें मांसके लोचे दिखाई देते नाडीपूर्ण और ताकतवर दांतमजबूत पीलास पडते भये, पीनेकीचीजपर रुचिपहोत, पाचनशक्ति प्रबल, महनत करनेकी शक्ति पहोत, मानसिक वृत्ति कोमल, बुद्धि स्वाभाविक सहनशील संतोषी लोकोंपर उपकार करनेवाला बोलणेमेंचतुर सरलभाषी हिम्मतवान खूनवालाआदमी हरदम कांमभेंभी नहीं लगे रहता, और घरमें बैठके निकम्मा वखत भी नहीं गमाये चाहता, दाह, फेफसेकावरम, निजला, दाहज्वर रक्तकाशिरणा कलेजेकारोग, फेफसेका रोग होणा संभव है, भूप नहीं सहता, जुदी २ प्रकृतीकी पहचान

करणी मुसकिल है, वहुतोंकी मूल प्रकृती दोदो दोषोंकी मिली भई होती हैं, दोनोके लक्षण संग मिलेभये होते हैं, एक प्रकृतीके लक्षण जाणे पीछै दूसरीका जाणना सहज है, सूक्ष्म विचार अदमी जब करके देखता है, तो यहभी मालम होजाती है, के मेरी प्रकृतीमें फलाणा दोष कम हे, रोगकी परिक्षा, उसका उपाय, तथा पथ्यापथ्यका निर्णय प्रकृतीकी परिक्षा भयेवाद बण आती है, इसवास्ते वैद्य या डाकदरोने तथा सब अदम्योनें प्रकृतीकी परिक्षा हमारे लिखे ग्रंथानुसार पहली कर लेणा, रोगीकूं पूछणेसें परीक्षा वैद्य या डाकतरलोक कर सकते हैं, दोषके और प्रकृतीके कुछ संबंध है, या नहीं एसा एक जरूरीका प्रश्न है; वहोतकरके प्रकृतीमें जो दोष प्रधान होता है, वो दोषके कोपसें रोग होता है, एसा कहणेमें कुछ बाधा नहीं है, रोगीकी प्रकृती वायु प्रधान होय तो उसकूं बुखार वगेरे जो कोई रोग जतावे तो वो रोग वायूके दोष संग विशेष संबंध रखता है, एसा अनुमांनकर सकते हैं, एसाही पित्त कफादिकका समझ लेना अब स्याद्वादका दुसरा पक्ष दिखाते हैं, रोग हमेसा शरीरकी मूल प्रकृतीके अनुसार होता है, एसा एकांत निश्चय नहीं है, वहोतसी वखत एसा बणता है, रोगीकी मूल प्रकृती पित्तकी होती है, और रोगका कारण वायु होता है, प्रकृती वायूकी होती है, और रोगका कारण पित्त होता है, इसतरे वहोतसें रोग ऐसें हैं, सो प्रकृतीसें बिलकुल तालूक नहीं रखते तोभी रोगीकी परिक्षा करनेमें और इलाज करनेमें रोगीकी प्रकृती तासीरका ज्ञान वहोत उपयोगी बण आता है.

२ स्पर्शपरिक्षा.

शरीरके कोईभी भागपर हाथसें अथवा दुसरे ओजारोसें दरियाप्त करणी याने शरीरमें गरमी या सरदी या खून श्वासोश्वासकी क्रिया कितने अंदाजन है, उसकूं इहां स्पर्श परिक्षा लिखा है, इस परिक्षामें (अ) नाडीपरिक्षा (ब) त्वचा परिक्षा तैसें (क) थरमोमिटर अर्थात वदनकी गरमी मापनेकी नली, और स्टेथोस्कोप अर्थात छातीकी दरियाप्त करनेकी भूंगलीका समावेश होता है, स्पर्शपरिक्षाका सबसें पहले अछा साधन तो हाथ है, रोगकी परिक्षामें हाथ वहोत मदत करता है, वदन गरम है या ठंडा है, सुंहाला है, या खरखरा है, ये वात हाथसें तुरत खबर पडती है, वदनके अंदरका फलाणा भाग नरम है, पोला है, या कठण है, या अंदरके भागमें गांठ है, या सोजा है इत्यादिक नाडीकी परिक्षाभी हाथसेंई होती है, नाड देखकर वदनमें कितनी गरमी या सरदी है, जिसकी खबर हो सकती है, अनुभवी वैद्य और हकीम अपने अनुभवसें और मावरेसें वदनकी चोकस गरमी फकत नाडीपर अंगुलिया धरकर कह देता है, थरमोमिटर जितना काम करता है, लगभग इतना काम चालाक हाथ और अनुभवी अंगुलिया कर सकती है, सोधक खोजी लोकोंनें हाथका काम दुसरे साधनोंसें लेणा सरू करा है,

बदनकी गरमी मापने थरमोमिटर जो बनाई है सो दुरुस्त है, क्योंकि इस यन्त्रमें एक साधारण आदमीकी नाभे जानेसे बदनकी गरमी या बुखारकी गरमी मालूम होती है, इत्यादि बात वर्णनमें प्रसिद्ध है, साधारण गरमी कहां तकमें साधक होती है, तीनोंके अंशोंकी सूचना कर नहीं बदनी इस यन्त्रमें किन्हेंक दर्जे चार वेदोंके दाग बराबर होनेहें पारी तो सेर परिमाणमें सवासेरी निशान है, इसमें जबकी नाल आगे पारेकी क्रिया जानेवाले (मरकोरीज) नामकी गरमी बताई है, बदनी तापका काम करती है, और नाड़ी खबर देती है.

(२१) नाड़ीपरिक्षा.

अंकशास्त्रमेंमें रत्न सात भेद जैसेकर पोथी बनीमें जाता है, उसमें पोथी बनीमें पकड़ा गया करना है, और उस पकड़ीमें रक्तका कमती बेसी जोरमें हिलना मालूम पड़ता है, उसके नाड़ीज्ञान कहते हैं, इस नाड़ीज्ञानमें सेरकोसी किसीके परिक्षा हो सकती है, किसीभी पोथी नमके उपर अंगुली धरनेमें नाड़ीकी परिक्षा हो सकती है, लेकिन जादा निश्चय करनेके हाथके अंगूठे नीचे नाड़ी देखते हैं, हाथके पीछे अंगे दोनमध्य होती जैसी नसों है, पोथी जमदी तांत तथा पारे अंगिकारके ये नसों दिखाई देती है, उसमेंमें अंगूठेके तरफकी होती जैसी नाड़ियां तरफकी तरफ हाथकी दो तीन अंगुली धरनेमें अंगुलीके नीचे धक २ करता मालूम देता है, उस धकधकीको नाड़ीका ठणका या चाल कहते हैं, नाड़ीकी परिक्षा करनेपर किसे वेदमें चलती है, तो खाली है के धीमी है, अंगमें कितनी गरमी है, या बुखार है, इत्यादिक बातका निर्णय चार वेद अंगुलिया धरकर कर सकता है, यहां एक हाथमें धरकर एक हाथमें नाड़ी देखनी एक मिनटमें कितना ठणका नाड़ी देती है, एक मिनटमें नाड़ीके ठणके ११० चले वेद और डाकदर गिणती करके कहे तो समझ लेना, जिसमें शुद्ध खूनका होद है, वो एक मिनटमें ११० वखत ढीला तथा तंग होता है, और खूनके धक्का मालूम है, तन-दुरस्त शरीरमें ऊमरमुजब नाड़ीकी गति इसमुजब होती है.

उमर	एक मिटनमें नाड़ीकी चालकी गिणती.
बालक गर्भस्थानमें होय तब,	१४० में १५०
तुरत जन्मे बालककी नाड़ी,	१३० में १४०
पहिले वर्षमें,	११५ में १३०
दुसरे वर्षमें,	१०० सें ११५
तीसरे वर्षमें,	९५ में १०५
४ सें ७ वर्षतक,	९० सें १००
७ सें १४ वर्षतक	८० सें ९० तक

१४ से २१ वर्षतक	७५ सें ८५ तक
२१ से ५० वर्षतक	७० सें ७५ तक
बुढापेमें	७५ सें ८० तक

नाडी ग्यानमें समझनेवाली बातें.

हमारे शास्त्रोंमें आधुनिक ग्रंथोंमें नाडीका हिसाब पलोंपर लिखा है, उस हिसाबसें इस हिसाबमें थोडासा फरक है, ये हिसाब हमने जो लिखा है, सो विद्वान डाकतरोंका निश्चय किया भया हैं, बहोत प्राचीन ग्रंथोंमे नाडी परिक्षा देखणेमें नही आई ये परीक्षा पीछेसें देसी वैद्योंने बुद्धिद्वारा निकाली है, बाद यूरोपियोनें पूर्वोक्त हिसाब लगाया है, तोभी जुदी २ जाति और स्थितीकूं लेकर उसमेंभी फरक पडता है, ऊपरके कोठेमें तनदुरस्त बडे आदमीकी नाडीकी चाल एक मिनटमें ७० सें ७५ तक बताई है, लेकिन् इतनीही ऊमरकी तनदुरस्त औरतकी नाडीकी चाल धीमी होती है, पुरुषमें दसबारे चाल कम होती है २ अदमी खडा होता है, उसकरके बैठेकी चाल धीरी होती है, नींदमें इससेभी जादा धीरे चलती है, ३ फेर कसरत करते दोडते चलते खेचलका काम करते नाडीकी चाल चढ जाती है, ४ फेर नाडी दोनों हाथोंकी देखणी किसी वखत एक हाथकी धोरीनस अपणी हमेसकी जगे छोडके हाथके पीछाडीकी तरफसें अंगूठेके नीचेके सांधेके आगे जाती है, उसकरके नाडी देखणेवालेके हाथ नहीं लगती तब देखणेवाला घबराता है, लेकिन् जो बदनमें खून फिरता होगा तो उस हाथकी नाडी हाथ नहीं लगी तो दुसरे हाथकी जरूर हाथ लगेगी इसवास्ते दोनों हाथकी नाडी देखणी ५ हाथपर या हाथके पोंचेपर कोइ पट्टा या डोरी या बाजुबंध बंधाभया होय तो नाडीकी बराबर मालम नहीं पडती बांधणेसें धोरी नसमें खून बराबर आगे चल नहीं सकता इसवास्ते बंधन खोल फेर नाडी देखणी, हाथ सिर नीचे रखकर सूता होय तो हाथ निकालकर पीछे नाडी देखणी ६ डरोकड अदमी डरसें या डाकदरकूं देख डर जाता है, तब नाडी जलदी चलने लगती है, इसवास्ते ऐसे अदमीकूं दम दिलासासें दिल ठहराकर अथवा बातोंमें लगाकर फेर नाडी देखणेसें दुरस्त नाडी मालम देगी ७ नाडी अदमीकूं बैठाकर या सुलाकर देखणी, खेचल करे भयेकी, रस्ते चलके तुरत आयेभयेकी थोडी देर बैठणे देकर पीछे नाडी देखणी ८ बहोत खूनवाले अदमीकी नाडी बहोत जलदी और जोरसे चलती है, ९ फजरसें सांझकी नाडी धीमी चलती है, १० भोजन कियेबाद नाडीका जोर बढता है, तैसें सराप चा तमाखू वगेरे मादक और उत्तेजक वस्तु खाये पीछे नाडीकी चाल बढती है, इसतरे तनदुरस्त अदमियोंकी नाडीभी जुदी २ स्थितिमें और जुदी २ वखतमें फेरफार मालम पडता है, इसवास्ते बेमारोकी नाडीमें फेरफार होणा क्या ताजब है, ये नव बातोंकों ध्यानमें रखणा चाहिये

देशी वैद्यकग्रंथोंमें नाडीपरिक्षा इसतरें लिखी है, अंगुठेके मूल तीन अंगुली धरकर मध्यमें पहली उसपर अनुक्रमसें तीन अंगुली नीचे वायुकी नाडी चलती है, तुसरी त्रिदोषकी नीचे पित्तकी, तीसरी अंगुलीके नीचे कफकी, चरक सुश्रुत वाग्भटके बनाये ग्रंथोंमें नाडीपरिक्षा लिखकर नहीं लिखी है, तैसे अधिक मनोरिकाल वाग्भटजीकी नाडी परिक्षाभाषा कुछभी नहीं लिखा श्रीमद्भैनाचार्ये हेमचंद्रने वाग्भटग्रंथोंमें दोहोंविषु-रीने योगचिंतामणीमें इत्यादि ग्रंथोंमें नाडीपरिक्षा लिखी है, सो हम इसी प्रकार करते हैं.

(१) वायुकी नाडी सांप तथा मोरकी तरें टेढी चलती है.
(२) पित्तकी नाडी कउआ या मेंढककी तरें कूदती सीध चलती है.
(३) कफकी नाडी हंस कबूतर और मुरगेकी तरें धीरे २ चलती है.
(४) वात पित्तकी नाडी सांपकी तरें तीखी मेंढककी तरें कूदकी चलती है.
(५) वात कफकी नाडी सांपकीतरें टेढी हंसकीतरें धीरे चलती है.
(६) पित्त कफकी नाडी कउएकीतरें कूदती मोरकीतरें मंद चलती है.
(७) सन्निपातकी नाडी लकडी पत्थरकी कबूतरकीतरें वायुकी पक्षीकीतरें नाडी चलती २ अटके फेर चले फेर अटके अथवा दो तीन कुदका मार फेर अटके सो विरोध सन्निपातकी नाडी समजणी ॥

(८) विशेष विवरण) पीछे पटकर पीछी मरण चलने लगे सो दो दोषकी नाडी जाननी जो नाडी अपणा स्थान छोड जो नाडी ठहर २ कर चले तथा जो नाडी बहोत क्षीण तथा ठंडी पडे ये चार तरेकी नाडी प्राणघातक है, (२) बुखारकी नाडी गरम और बहोत जलद चलती है, (३) निंदा तथा डरकी नाडी मंद पड जाती है, (४) कामातुर और क्रोधातुरकी नाडी जलदी चलती है, (५) खून बिगडा होय उसकी नाडी गरम तथा पत्थर जैसी जड भारी होती है, (६) आमके दोषकी नाडी बहोत भारी चलती है, (७) गर्भवतीकी नाडी गहरी पुष्ट और हलकी चलती है, (८) मंदाग्नि, धातुक्षीण, नींदमें तुरत उठने, आलसु, सुस्ती, इन सबोंकी नाडी स्थिर चलती है, (९) बहोत भूख लगेकी नाडी चंचल चलती है, (१०) बहोत दस्त लगते होय जिसकी नाडी बहोत जलदी चलती है, (११) जीमे बाद नाडी धीमे चलती है, (१२) जो नाडी तूट २ कर चले क्षणमें धीरी क्षणमें जलदी चले बहोतही जलदी चले लकड जैसी करटी स्थिर और टेढी चले बहोत गरम चले अपणे ठिकाने चलती २ बंध होजाय ये सबतरेकी नाडी प्राणनाशका चिन्ह दिखाणेवाली है, अब डाक्टरोंके मतसें नाडी परिक्षा दिखाते हैं ॥ केइयक देशी अजाण लोक तथा उंठ पटांग वैद्य एसा कहते हैं, के डाक्टर लोक नाडीका ग्यान नहीं जाणते और नाडी नहीं देखते ये सब बात

मूर्खताईकी है, डाकतर लोक नाडी देखते हैं, और उसपर कितनाक आधार रखते हैं, कितनेक तबीब नाडी परिक्षामें बहोत गहरे ऊतरते हैं, और नाडीपर बहोतसा आधार रख नाडीपरिक्षाके अनुभवसें कितनी एक बातें कहते हैं, सो मिल जाती है, देशी वैद्य नाडीके जुदे २ वेगोंकू वायकी पित्तकी कफकी इन तीनोसें मिलीभई नांम धर रखा है, इसतरेसें डाकदर जलदी धीमी भरी हलकी सखत अनिमियत अंतरिया ऐसे २ नाम दिये हैं, जुदे २ रोगमें जुदी २ नाडी चलती है, उसकी परिक्षाभी करते हैं, सो इसतरे (१ जलदी नाडी) तनदुरस्त स्थितिमें नाडीके वेगका प्रमाण आगेके कोठेमें लिखा है, तनदुरस्त अदमीकी पुखत ऊमरकी नाडीकी चाल ७५ सें ८५ तक होती है, लेकिन् बेमारीमें बोचाल बढकर १०० सें १५० तक बढजाती है, इसतरे नाडीका वेग बहोत बढता है, उसकूं जलद नाडी कहते हैं, क्षयरोग लूलगणी और दुसरी बहोत निबलाईमें भी नाडी जलदी चलतीं है, झडपवाली नाडीकेसंग हृदयका धबकारा बहोत जोरसें चलता है, नाडीकी चाल हृदयके धबकारोंपर विशेष आधार रखती है, जैसें २ नाडीकी चाल जलदी २ होती जाती है, तैसे २ रोगका जोर बहोत बढते जाता है, रोगीका हाल बिगडते जाता है, बुखारकी नाडी जलद अंग गरम होता है, सादा बुखार अतरेवाला तैसें सन्निपातज्वर सखतसांधोंकादरद सखतखासी क्षय मगज फेफसा हृदय होजरी आंतरा वगेरे मर्मस्थानकासोजा सखतमरोडा कलेजेकापकणा आंख तथा कानकापकणा प्रमेह और सखत गरमीकी टांकी. इतने रोगोंमें चलती है २ धीमी नाडी) तनदुरस्त हालतमें जैसी नाडी चहिये उस करते मंद चालसे चलणेवाली नाडीकूं धीमी कहते हैं. जैसे ठंढ थकेला भूखेमरणेकारोग दिलगीरी उदासी मगजकी कितनीकवेमारी जैसेंके फेफरा (मिरगी) बेशुद्धि और तमाम रोगकी अंतकालकी दसामें नाडी बहोत धीमे चलती है, (३) भरी नाडी) नाडी परिक्षामें अंगलियोंकूं जैसें वेग याने चाल मालम देती है, तैसे नाडीका वजन अथवा कदभी मालम देता है, ये कद अथवा वजन चहिये जिससें जादा बढता है, तब उसकूं भरी नाडी अथवा बडी नाडी कहणेमें आती है, खूनके भरावमें तैसें ताकतवर अदमीके बुखार तथा वरममें नाडी भरी भई मालम देती है, भरी नाडीसें एसी हालत मालम देती है के, बदनमें खून पूरा और बहोत है, जैसें नदीमे जादा पाणी आणेसें पाणीका जोर बढता है, तैसे खूनके भरावसें नाडी भरीभई लगती है, ४ हलकी नाडी) थोडे खूनवाली नाडीकूं छोटी या हलकी कहते हैं, अंगलीके नीचे एसी नाडीका कद पतला याने हलका लगता है, कोईभी द्वारसें खून बहोत चला गया होय या जाता होय ऐसे रोगोंमें,तथा बहोतसे पुराणे रोगोंमे हेजेमें रोग गये-पीछे रही निबलाईमें नाडी पतलीसी मालम देती है, इस नाडीपरसें एसा मालम होजाता है के खून इसके कम है या बहोत कम होगया है, खूनके वजनपरसें नाडीके

तीन चार नमें किये जाते हैं, मरीजके मस्तक छोडी नाडी और वेगवान, हृदयके ठिकाने जोरमें भरीभई, मध्यम रहनेमें मध्यम, पोंद रहनेमें छोडी नाडी, हेजेके रोगमें रक्त बिलकुल पतला जाकर नाडी) आंगलीके नीचे मणिबंधमें जहां पर हमलोग नाडी कहते हैं, ५ मध्यके नाम नाडी) फेर नाडीके मध्यमें १ और मध्य २ भेद होता है, जिस पोरी नमपें लोकर रक्त चलता है, उस पोरी नमके अंदरके पडदेकी नाडीमें संकोचनेकी शक्ति जादा होती है, तो नाडी मध्यम चलती है, और संकोचनेकी शक्ति कम होती है, तो नाडी नरम चलती है, उसकी परिक्षा इसतरेसे है, नाडीपर तीन आंगली धरकर ऊपरकी तीसरी आंगलीसे नाडीके, दबाने से बाकीके तीनेके दो आंगलीको धडका लगे तो मध्यमाके नाडी मध्य है, और दोनों आंगलियोंको धडका नहीं लगे तो नाडी पोची नरम है, ऐसा समझना (६) अनियमित नाडी) नाडीकी प्रमाण मुजब चालमें उसके दो ठुकेके बीचमें एक सरख नकारा चलता चला जाये तो नियमित याने कायदेसर चलनेवाली नाडी जाननी,लेकिन जिस वख्त कोइ बेमारी सेव और नाडी वे कायदे चले एक ठुकका जल्दी आवे और दुसरा जरा देर ठहरके आवे उस नाडीके अनियमित समझणी. ऐसी नाडी चले तब इतने रोगोंकी शंका होती है, हृदयका दर्द फेफसेका रोग,मगजका रोग,मस्तिष्कज्वर, सुजाक्षेग, पेटका सख्त सदना, और कोइभी बेमारीकी सख्त भयंकर स्थिति (७) अंतरिया नाडी) नाडीके दो तीन ठुका होकर बीचमें एकाध ठुकके जितनी नागा पडे याने ठुका लगेही नहीं फेर उसपर दो तीन ठुका होकर फेर इसीतरे नाडी बंध पडे और चले सो अंतरिया नाडी कहलाती है, हृदयकी बेमारीमें जब रक्त सगपर फिरता नहीं तब यही पोची नम चोडी हो जाती है, और मगजका कोइभी भाग बिगडता है, तब ऐसी नाडी चलती है, डाक्टरलोक नाडी परिक्षामें तीन बात ध्यानमें रखते हैं, १ नाडीकी चाल जल्दी या धीमी २ नाडीका कद घटा या छोटा २ नाडी सख्त है,या नरम, रक्तवाले जोरावर अदमीके बुखारमें मगजके सोजेमें कलेजेके रोगमें और गंठिया वायु वगेरे रोगोंमें जल्दी बहोत बडी और सख्त नाडी देखणेमें आवेगी, ऐसी नाडी बहोत देर चले तो जानकू जोरम घटती जाती है, जो बुखारके रोगमें ऐसी नाडी बहोतदिन चले तो रोगीकी आशा थोडी रहती है, जो नाडीकी चाल धीरे २ कमपडे तो सुधरणेकी आशारहे फस्त खोलणेमें जोकलगाणे से अथवा अपणे आपही रक्तका रस्ताहोकर बधामथा रक्त निकल जाताहे तो नाडी सुधर जातीहे ताकत घर या अदमीकूं सुधार आताहे अथवा शरीरपर कोइभी जगे सूजन आतीहै तब जल्दी या छोटी नरम नाडी चलतीहै क्योंके रक्त कम होताहै आंतरेमें सोजा होता है, तथा पेटके पडदेपर सोजाहोता है, तब जल्दी छोटी सख्त नाडी चलतीहै ये नाडी छोटी महीन लेकिन् बहोत सख्त होतीहै, आंगलीकूं तारजेसी महीन और करडी ल-

गती है, एसी नाडीभी खूनका जो रवताती है, नाडीके वावत लोकोंका विचार फकत नाडी देखणेसें सव रोगोंकी संपूर्ण परीक्षा हो सकती है, एसा लोकोंके मनमें जो हद उपरांत विश्वास बैठगया है, उसमें वो लोक ठगाये जातेहैं क्योंके नाडीकी वावत झूटा फाफा मारणे वाले वैद्य और हकीम अज्ञान लोकोंकूं वचनजालमें फसाते हैं, वहोत-सी वखत नाडी परिक्षाकी वावत अदभुत और असंभववातें सुणते हैं, एसी वातोंमें सच्च थोडा और झूट वहोत होताहै, इस ग्रंथमें जो जो नाडी परीक्षाका विवरण लिखा है सो नाडी ज्ञानके सच्चे अभ्यासियोंकों जरूर मिलसकता है, वहोत अभ्यास और अनुभवसें नाडीका वारीक विचार और रोगपरिक्षाकी कितनीक कूंचिया मिलसकती है लेकिन् येवातें तदन झूठ हे के रोगी छ महीने पहली फलाणा साग खाया था इत्यादि तो नाडी परिक्षामें सव गप्पें चलती है, सो मानणे योग्य नहीं है कितनेक हकीमसाहिवोंने और वैद्योनें नाडीकी हदउपरांत महिमा वधाई है, और असंभवित अणघडगप्पोंकूं लोकों के दिलमे जमा दियाहै, एसे भोले लोकोंका रोग मिटणामुसकिल है, अथवा देरी लगती है, तव एसें मूर्खलोक डाकटरोंपर अपणी वेकूवी धर देते है के डाकतरोकूं नाडी परिक्षाका ज्ञान नही है, और पीछै देशी वैद्यके पास जाकर कहताहै के देखो हमारी नाडी हमारे वदनमें क्या रोगहे, वैद्य उसीकूंही हम समझते हें के जोकी नाडीसें रोग कहदे, तव सत्यवादी वैद्य तो सत्य कह देताहै के नाडी परसें तुमारी कितनीक प्रकृतीकी वात तो हम समझलेंगें लेकिन् तुम तुमारी अवलसें आखरी तक जो जो हकीगत वीती है, और हे सोकहो क्या कारणसे रोगभया कितने दिन भया क्या क्या दवाली क्या क्या पथ्य तुमने खाया पीया इस परसें हम परीक्षा रोगकी समझ सकेंगे विद्वान और चतुर वैद्य नाडी देखकर रोगीके शरीरकी स्थितिका कितना एक अनुमांन वांध सकताहै वो अनुमान विशेष कर सच्चाभी निकलताहै, लेकिन नाडी परिक्षापर अतिशय श्रद्धा रखणेवाले अज्ञान लोकोके सामने अपणी परिक्षा देकर अपणी कीमत नहीं कराणे चाहते लेकिन धूर्त्त चालाक पाखंडीवैद्य जोहे सो नाडी देखकर वडा आडंवर रचकर दोय वात वायूकी दोय वात पित्तकी दोय वात कफकी करते भये इसतरे पांच पचीस वातोंकी गप्पें इधर उधर की हकालते हें, तव उसमेंकी थोडी वहोत वात रोगीके वीतक अहवालोसें मिलजाती है तव विचारे भोले अति यकीन लाणेवाले एसे ठगोरोसें ठगाते है, और मनमें जांणते हें वस संसारमें इनके जोडेका कोई हकीम नहीं है तव विद्वानवैद्य और डाकतरोंकों छोडके ढोंगी उंठ पटांग वैद्योंके जालमें फसजातेहें नाडी ये क्या चीज है और कैसें पैदा भईहै, और उसके आधारसें कितनी वातोंकी खवर पडती है, इयवात तो हमने इस ग्रंथमे वहोतही विस्तारसें लिखीहै सो वांचणे वालोकी खातरी होगी, रोग पेटमेंहै, शिरमेंहै नाकमेंहै के कानमेंहै इत्यादि वेमारी

तीन चार गये किये जाते हैं, मरीजके मस्तक छोडी नाडी और वेगाजम, सबके लिये जोरमें मरीजई, मध्यम सबमें मध्यम, थोडे सबमें छोडी नाडी, ऐसेके लिये सब बिलकुल चला जाकर नाडी) आंगलीके नीचे मुश्किलसे मालम पडे उसकेभी वे मालम नाडी कहते हैं, ५ मालमके नरम नाडी) येह नाडीके मालम २ और मालम २ भेद होता है, जिस पोरी नसमें होकर खून बहता है, उस पोरी नसके बंदके पडदेकी तांतोंमें संकोचावेकी शक्ति ज्यादा होती है, तो नाडी मालम चलती है, और संकोचावेकी शक्ति कम होती है, तो नाडी नरम चलती है, उसकी परिक्षा इसतरेसे है, नाडीपर तीन आंगली धरकर ऊपरकी तीनरी आंगलीसे नाडीको दबावो जो नाडीके नीचेके दो आंगलीको धडका लगे तो समझणाके नाडी मालम है, और दोनो आंगलियोंको धडका नहीं लगे तो नाडी बोली नरम है, एसा समझणा (६) अनियमित नाडी) नाडीकी प्रमाण मुजब चालमें उसके दो ठणकेके बीचमें एक सदम लकारा बढता चला आवे तो नियमित याने कायदेसर चलेवाली नाडी जाननी, लेकिन जिस वखत कोइ बेमारी होय तीनाडी में कायदे चले एक ठणका जलदी आवे और दुसरा जादा देर ठहरके आवे उस नाडीको अनियमित समझणी, एसी नाडी चले तब इतने रोगोकी संका होती है, हिरयका दरद फेफसेका रोग, मगजका रोग, मस्तिषाज्वर, सुजारोग, यदनका मरण मदना, और कोइभी बेमारीकी सरत भयकर स्थिति (७) भंगरिया नाडी) नाडीके दो तीन ठणका होकर बीचमें एकाध ठणके जितनी जागा पडे याने ठणका लगेही नहीं फेर ऊपरापर दो तीन ठणका होकर फेर इसीतरे नाडी बंध पडे और चले सो भंगरिया नाडी कहवाती है, हिरयकी बेमारीमें जब खून बगवर फिरता नहीं तब एसी नाडी होती है, और मगजका कोइभी भाग बिगडता है, तब एसी नाडी चलती है, डाक्टरलोक नाडी परिक्षामें तीन बात ध्यानमें रखते हैं, १ नाडीकी चाल जलदी या धीमी २ नाडीका कद बडा या छोटा २ नाडी सखत है, या नरम, खूनवाले जोरावर आदमीके बुखारमें मगजके सोजेमें फलेजेके रोगमें और गंठिया वायु वगेरे रोगोमें जलदी बहोत बडी और सखत नाडी देखणेमें आवेगी, एसी नाडी बहोत देर चले तो जानकू जोरावर बढती जाती है, जो बुखारके रोगमें एसी नाडी बहोतदिन चले तो रोगीकी आसा थोडी रहती है, जो नाडीकी चाल धीरे २ कमपडे तो सुधरणेकी आशारहे फस्त खोलणेसें जोकलमाणे सें अथवा अपणे आपही खूनका रस्ताहोकर बधामया खून निकल जाताहे तो नाडी सुधर जातीहे ताकत घर या अदमीकूं सुधार आताहे अथवा शरीरपर कोइभी जगे सूजन आतीहे तब जलदी या छोटी नरम नाडी चलतीहे क्योंके खून कम होताहे आंतरेमें सोजा होता है, तथा पेटके पडदेपर सोजाहोता है, तब जलदी छोटी सखत नाडी चलतीहे ये नाडी छोटी महीन लेकिन् बहोत सखत होतीहे, आंगलीकूं तारजेसी महीन और करडी ल-

गती है, एसी नाडीभी खूनका जो रवताती है, नाडीके बावत लोकोंका विचार फकत नाडी देखणेसें सब रोगोंकी संपूर्ण परीक्षा हो सकती है, एसा लोकोंके मनमें जो हद उपरांत विश्वास बैठगया है, उसमें वो लोक ठगाये जातेहैं क्योंके नाडीकी बावत झूटा फाफा मारणे वाले वैद्य और हकीम अज्ञान लोकोंकूं वचनजालमें फसाते हैं, बहोत-सी वखत नाडी परिक्षाकी बाबत अदभुत और असंभवबातें सुणते हैं, एसी बातोंमें सच्च थोडा और झूट बहोत होताहै, इस ग्रंथमें जो जो नाडी परीक्षाका विवरण लिखा है सो नाडी ज्ञानके सच्चे अभ्यासियोंकों जरूर मिलसकता है, बहोत अभ्यास और अनुभवसें नाडीका बारीक विचार और रोगपरिक्षाकी कितनीक कूंचिया मिलसकती है लेकिन् ये बातें तदन झूठ हे के रोगी छ महीने पहली फलाणा साग खाया था इत्यादि तो नाडी परिक्षामें सब गप्पें चलती है, सो मानणे योग्य नहीं है कितनेक हकीमसाहिबोंने और वैद्योनें नाडीकी हदउपरांत महिमा बधाई है, और असंभवित अणघडगप्योंकूं लोकों के दिलमे जमा दियाहै, एसे भोले लोकोंका रोग मिटणामुसकिल है, अथवा देरी लगती है, तब एसें मूर्खलोक डाकटरोंपर अपणी बेकूबी धर देते है के डाकतरोकूं नाडी परिक्षाका ज्ञान नही है, और पीछै देशी वैद्यके पास जाकर कहताहै के देखो हमारी नाडी हमारे वदनमें क्या रोगहे, वैद्य उसीकूंही हम समझते हें के जोकी नाडीसें रोग कहदे, तब सत्यवादी वैद्य तो सत्य कह देताहै के नाडी परसें तुमारी कितनीक प्रकृतीकी बात तो हम समझलेंगें लेकिन् तुम तुमारी अबलसें आखरी तक जो जो हकीगत बीती है, और हे सोकहो क्या कारणसे रोगभया कितने दिन भया क्या क्या दवाली क्या क्या पथ्य तुमने खाया पीया इस परसें हम परीक्षा रोगकी समझ सकेंगे विद्वान और चतुर वैद्य नाडी देखकर रोगीके शरीरकी स्थितिका कितना एक अनुमांन बांध सकताहै वो अनुमान विशेष कर सच्चाभी निकलताहै, लेकिन नाडी परिक्षापर अतिशय श्रद्धा रखणेवाले अज्ञान लोकोके सामने अपणी परिक्षा देकर अपणी कीमत नहीं कराणे चाहते लेकिन धूर्त्त चालाक पाखंडीवैद्य जोहे सो नाडी देखकर बडा आडंबर रचकर दोय बात वायूकी दोय बात पित्तकी दोय बात कफकी करते भये इसतरे पांच पच्चीस बातोंकी गप्पें इधर उधर की हकालते हें, तब उसमेंकी थोडी बहोत बात रोगीके बीतक अहवालोसें मिलजाती है तब बिचारे भोले अति यकीन लाणेवाले एसे ठगोरोसें ठगाते है, और मनमें जांणते हें बस संसारमें इनके जोडेका कोई हकीम नहीं है तब विद्वानवैद्य और डाकतरोंकों छोडके ढोंगी उंठ पटांग वैद्योंके जालमें फसजातेहें नाडी ये क्या चीज हे और कैसें पैदा भईहै, और उसके आधारसें कितनी बातों की खबर पडती है, इयबात तो हमने इस ग्रंथमें बहोतही विस्तारसें लिखीहै सो बांचणे वालोंकी खातरी होगी, रोग पेटमेंहै, शिरमेंहै नाकमेंहै के कानमेंहै इत्यादि बेमारी

नाडी देखनेमें कभी माठम पडेगी नहीं तो भी पहला अनुभवी डाक्टरके मोढेकी नाडी उसका चहरा आंख चेष्टा और नाडीका ढंगमें मेढीकी किसीके हाथकी पहचान करसकताहै और रोगीकी जिंदगी मौत जिस भी तरहकी चिकित्सामें रोगी का मुदत मालूम कह देताहै, लेकिन इस वर्णमें ऐसा नहीं समझनेके वह परिक्षा नीमें नाडी परखेही करीहै और हमेशा ये परिक्षा मजीदी होती है, इस वास्ते तो लो नाडी परिक्षासे हर उसमें विश्वास मत कर हमारे इस लोकोक्त हमारा डाक्टर कहताहै के फलां नाडीपरिक्षा पर मेरको कभी विश्वास नहीं न होतथी, इस वास्ते डि ढान पैच या डाक्टर पर विश्वास मत कर मगर इसकी तारीफ करो इतना के कहताहै डिनेरुक पैच और डाक्टर मेरीकी प्रकृतिपर चढ़ा घोडा सवार करक रोगका पाहरका चिन्ह और लक्षणोंपर विश्वास मत कर इलाज किया करते हैं लेकिन इस तरे रोग जाना होता मुसकलें काम होती एसे होते तो अपने वा नहीं पूरी हकीकत नहीं जानते और नहीं चिकित्सकी फेर पेचीदे और मुश्किल जैसे महाभयंकर रोग उन्माद मुरछा मृगी आदिमें रोगीके मुंहसे तकलीफोंमें रोगकी हकीकत कभी पूरी मिलनही सकती उसवास्ते नाडी ऊपर जादा आधार रखना होता रोगीकी प्रकृती पर इलाजका बहोत आधार लेना होताहै नाडी वैद्यहोत तेमें प्रकृती की दुसरी तेरमेंभी परिक्षा होती है, डाक्टर लोक मुखसे देख लिहाका पटका देखते हैं, योगी नाडी परिक्षाही है, क्योंके हाथके पोंचेपर जो धक्का है, सो लिहाका पटका और रगके प्रवाहका आखरी पटका है, शरीरमें जिस २ जगे रोगोत्पत्तिमें रक्त उछलता है, उहां अंगली रखनेसें नाडी परिक्षा हो सकती है, लेकिन रगके छिद्रमेंसें कुछभी फेरफार होता है, तो पहली रोगी नमोके अंगलासके रक्तका पोषण मिलना बंद होता है, और हाथकी नाडी ये रोगी नमका छेटा होनेसें तथा पोंचे परकी नाडीका धमकाव अंगलीकूं प्रगट मालूम देता है इसवास्तेही हमारे पूर्वाचार्योंने नाडी परिक्षा करनेकूं पोंचे परकी ठीक २ जगे ठहराई है, पांवमें गिरियेके पासगीपरी नाडी देखी जाती है, उहांभी घोरीनसका छेटा है, औरतका बाया अंग तथा हाथकी नाडी देखी जाती है, उसका कारण एसा है, नाभीपर कछपाकारके मलचक्र है, सब देहधारी अदमीयोंके सो कछपाकार औरतके तो उपर मुंवाला है, और पुरुषके नीचे मुंवाला इसवास्ते वो नाडी बांये आंगमें औरतके हाथमें प्राप्त है, पुरुषके दहणेमें वाकी तो दोनों हाथोंमें घोरीनसका छेडा है, और दोनुं पावोंमें है बांया प्रधानभाग औरतका ऊपर लिखे कारणसें है, इस वास्ते वामा नाम स्त्रीका संस्कृतवालोंनें धरा है ॥

(च) त्वचा-चमडीकी परीक्षा.

चमडीके स्पर्श करणेमें वदनकी गरमी ठंडी तथा पसीना वगैरेकी परीक्षा होती है,

वायुके रोगवालेकी चमडी ठंढी, पित्त रोगवालेकी चमडी गरम होती है, और कफ रोगवालेकी चमडी भीगी होती है, लेकिन् सब जगे एसा निश्चय नहीं है, तोभी प्राये ए लक्षण होते हैं,(२गरम चमडी) पित्त और तमाम तरेके बुखारमें चमडी गरम होती है, चमडीकी गरमाससेंभी बुखारकी गरमी मालम होजातीहै, लेकिन् अंतर वेगीव्वरमें बुखार अंदर होता है, बाहरकी चमडी बहोत गरम नहीं होती मध्यसर होती है, उस अवस्थामें चमडीकी परिक्षामे वैद्य ठगा जाता है, उसजगे नाडी परिक्षा या थरमोमीटर अंदरकी गरमीकू बता सकती है, बहोतसी वखत चमडी जलती बुखारजेसा मालम देता है, और अंदर बुखार नहीं होता (३ ठंढी चमडी) कितनेक रोगोंमे वदनकी चमडी ठंढी पड जाती है, बुखार ऊतर गयेबाद नाताकतीमें दुसरी बेमारीकी निबलाईमें हैजेमें बहोतसे पुराने रोगोमें चमडी ठंढी पड जाती है, सखत बेमारीमें वदन ठंढा पड जाय तो पूरी जोखम समझणा (४ सूकी चमडी) चमडीके छेदोमेंसे हमेसा पसीना निकलता है, उससें चमडी नरम रहती है, लेकिन् कितनेक रोगोंमें पसीना बंद होजाता है, तब चमडी सूकी और खरखरी होजाती है, बुखारकी सरुआतमें पसीना बंध होजाता है, इसवास्ते बुखारवालेकी तथा वादीके रोगवालेकी चमडी सूकी होजाती है, (५ भीगी चमडी) चहिये जिससें जादा पसीना आणेसें चमडी भीगी रहती है, वो भी रोगकी निशाणी है, कितनेक रोगोमें चमडी गरम और भीगी होती है, और कितनेक रोगोमें ठंढी और भीगी होती है इसमें रोगीकूं पूरा डर है, संधिवात (गंठिया) में चमडी गरम और भीगी होती है, और हैजेमे ठंढी और भीगी होती है, बहोत ठंढा और भीगा अंग निबलाईमें जोखम जताता है, रातकूं पसीना होय चमडी भीगी रहै, और नाताकती बढती जाय तो क्षयकी निशाणी समझ जलदी सावचेत होणा चहिये.

(क) थरमोमीटर.

वदनमें गरमी कितनी है, उसका चोकस माफ थरमोमीटरसें हो सकता है, थरमोमीटर काचकी नलीमें नीचै पारेकी भरा गोल पपोटा (काचका गोल वल्व) होता है, इस पारेवाले वल्वकूं मूंमें जीभ नीचै या वगलमें पांच मिनटतक रखकर पीछे वाहर निकालकर देखनेसे उसके अंदरका पारा वदनकी गरमीसें उपर चढता है, सरदीसे नीचे उतरता है, अछे तनदुरस्त अदमीके वदनकी गरमी ९८ सें १०० डिग्रीके वीचमें रहती है, वहुतोंके वदनमें मध्यम गरमी ९८. सें ९९ होती है. और वहारकी गरमी अथवा खेचलसें उसमें कुछइक वढोतरी होती है, तव १०० तक चढती है. नींदमें और संपूर्ण शांतिकी वखतमें एकाध डिग्री गरमी कम होती है रोगमें वदनकी गरमी विशेष चढा उतार होती है, और वदनकी स्वाभाविक गरमीसे पारा जादा उतर

ाता है, या चढ जाता है, सारे चुनामें वो पारा १०१ में १०२ तक चढता है, रात गुजारमें १०४ तक चढता है, और जाडा भयंकर चुनामें १०५ आधा १०६ क चढता है, बदनके कोइभी भागेपरमें सोजन और दाह होना यह बुखारकी गर्मी उससे बढकर १०८ अगवा इसमेंभी ऊपर चढती है, तब तेजी पनता नहीं स्वाभाविक गरमीसें दो डिग्री गरमी चढती है, उसकरके जिनका हर बदनमें आधे उसमें एक डिग्री गरमी जप कम होती है, उसमें जाडा हर है, हेजमें जब बदन आधार देख पड जाता है, तब शरीरकी गरमी चढकर आधार ७७ डिग्री तक चढती है, तब मेरीका बचना मुश्किल है, १०४ डिग्रीके अंदर बुखार होता है, उसीका तोर नहीं है, लेकिन उसके आगे चढती है, तब समझ लेना मेरा भयंकर रूप पकडा है, ऐसा समझ बहोत जल्दी चढा इलाजकरणा सहज दर्शाय आराम होणा नहीं फकत किसीके मर जाणेका स्वाभाविक गरमीमें एकदिनी गरमी चढती है तो नाडीका स्वाभाविक ठपकोंमें १० ठपका चढता है, एक डिग्री चढनेमें दस २ ठपका नाडीका चढणा होता है, ये कम समझना, किसी आदमीकी नाडी तनदुरुस्त हालतमें एक मिनटमें ७५ ठपका चलती होय उसकी नाडीमें एक डिग्री गरमी चढनेमें ८५ ठपका होता है, दो डिग्री गरमीमें चुनामें एक मिनटमें ९५ ठपका चढता होता है, और इस मुजबही हरएक डिग्री गरमीके चढनेमें साथ १० ठपका चढता है, ये सामान्य गिणती समझणी, बगलमीजी होती है, अथवा हाथ या भीगी जगी होती है, तो थरमो-मिटरसें बदनकी गरमी बराबर परखी नहीं जाती, इसलाये बगलका पसीना पूछकर फेर बगलमे थरमोमीटर देकर दबाके रखणा पांच मिनटके फेर देखणा, थरमोमीटरसें बद-नकी गरमी आंखोंके सामने दिखती है, सो सब लोक देख सकते हैं, ऐसी नाडी परिक्षासें प्रत्यक्षता नहीं ये काम हरकोइ अदमीभी कर सकता है, इसलाये बडोंसे ।• ५ इस थरमोमीटरकूं घरमे नाडीपरीक्षाकेलाये रखते हैं, दो पैसेका काम है, ।कन बुद्धवानीके हुसरमे रुपे पांचतक युरोपी बेपारी लेते हैं.

(ड) ष्टथो स्कोप.

इस भूंगलीसें फेफसा आसनली रिदय तथा पासलीमें चलती क्रियाकी खबर होती है, इहां लिखे जिसकरके अनुभवी डाक्तरोंके पाससें रहके सीखणेसें तथा आप अपणी बुद्धिके बरतावसें देखणेसें इस भुंगलीसें देखणेका ज्ञान आ सकता है, इसवास्ते इहां जादा लिखणेकी जरूरत नहीं.

दर्शनपरिक्षा.

आंखसें देखकर रोगीकी परिक्षा करनेमें आवे उसकूं इहां दर्शन परीक्षाके नामसें लिखा है, इस परीक्षामें (अ) जीभ याने जिव्हा (आ) आंख नेत्र (इ) चहरा

रूप (ई) त्वचा चमडी (उ) मूत्र याने पैसाब (ऊ) दस्त मल इतनी परिक्षा ली गई है.

(अ) जीभपरीक्षा.

जीभकी हालतसें गलेकी होजरीकी और आंतरेके हालतकी खबर होती है, क्योंके जीभके ऊपरका बारीक पुडत गला होजरी और आंतरेके अंदरका बारीक पुडतके साथ जुडा भया और एक सदस मिला भया है, जीभपरसें इसके अलावाभी कितनेक रोगोंका विचार बांध सकते हैं, तनदुरस्त हालतमें जीभ भीजी अछी और अणी उपरसे जरा लाल होती है, गीलास, रंग, और जीभके ऊपरसें मैलपर, रोगकी परीक्षा हो सकती है. (१) गीली भीगी जीभ) अच्छी हालतमें जीभ थूकसेंभी भीजी रहती है, बुखारमें जीभ सूकणे लगती है, इसवास्ते जीभ भीजी होय तो समझणा बुखार नहीं है, कोईभी रोगमें जीभ सूककर फेर पीछी भीजणी सरू होय तो समझणा रोग अछा होनेपर है, जल पीनेसें एक वेर गीली होती है, लेकिन जो बुखार होता है तो तुरत फेर सूक जाती है (२) सूकी जीभ)कितनेक रोगोंमें वदनमें रस चहिये इतना पैदा नहीं होता उसही मुजब थूक थोडा पैदा होता है, इससेंही जीभ सूक जाती है, और रोगीकूं भी जीभ सूकी मालम देती है, तब सब मूं सूक गया एसा रोगी कहता है, एसी जीभपर अंगली लगाणेसें और करडी मालम देती है, बुखार शीतला औरी और दुसरे चेपी बुखारोमे होजरी तथा आंतरोके रोगमें और बहोत जोरके बुखारमें जीभ सूक जाती है, ज्यों बुखार जादा त्यों जीभ जादा सूकती है, करडी भई जीभभी मौतकी निशाणी है, (३) (लाल जीभ) जीभकी अणी तथा कोरपर हमेसांजरा लाल होती है, लेकिन जो सब जीभ लाल अथवा जादा भाग लाल होय तो शीतला मूंका पकणा मूं आणा पेटका सोजा और सोमलका जहर इतने रोगका अनुमान होता है, बुखारमे जीभ अणीपर तैसें दोनों तरफ कोरपर जादा लाल होती है, (४) फीकी जीभ) वदनमेंसें बहोत खून निकले पीछे अथवा बुखार तिल्ली और एसीही दुसरी बेमारीमे वदनमेंसे खूनके रक्तकण कम होणेसे जैसे चहरा तथा चमडी फीकी पडती है, तैसे जीभभी सुपेद और फीकी फलर पड जाती है, (५) मैली जीभ)रोगोमें जीभपर सुपेद थर आती है, उसकू मैली जीभ कहते है, बहोत सखत बुखारमें सखत संधिवातमें कलेजेके रोगमें और मगजके रोगमें दस्तकी कबजीमें जीभ मैली होती है, जीभकी अणी और दोनों तरफकी कोरसें जीभका मैल कम होणा सरू होय तो समझणा के रोग कम होणा सरू भया है, लेगिन जो जीभके पिछले भाग तरफसें मैलका थर कम होणा सरू होय तो जांणनाकी रोग धीरे २ घटेगा घटणा सरू भया है, जीभके ऊपरका थर जलदी साफ हो जाय और जीभका वो भाग लाल चिलकता और चीरा २

होरो तो समझणा के आंतेमें किसी रोग गया है. या आम भया है, ये जीभका फेर फार खराब निशाणी जाहिर करीहै, परंतु दिनोंके प्रमाणमें जीभका परभव भया समारूके रंगका होताहै, और जीभके ऊपर कीचमें जीव पडताहै. जीभपर हरी रेखा री का निशाणहै पित्तके रोगमें जीभपर पीला मैलभयाहै (९) काजीजीभ) किसीक रोगोंमें जीभ कांच जामुनीरंग या काले रंगकी होती है इस साथ और फेफसेके साथ संबंध रखनेवाले खासी वगैरे रोगोंमें ये दर्शनमें पडताहै, तो रंग प दाखर साफ होता नहीं इस करके जीभ काली झांयी भया सामानी रंगकी होतीहै, फेर किसेक दूसरे रोगोंमें जब जीभ काले रंगकी होतीहै तब दवाके बंधेकी खाना खोडी रहती है (७) सूजनी जीभ) सन्निपातमें मलके भयंकर रोगमें और दूसरेभी किसेक सख्त रोगोंमें जीभ सूजा करीहै, रोगीके आरामभये भी बहोत सूजन निकलताहै, तब भी सूजनीहै, ऐसी सूजनी जीभ पर्यंत निकलेहै और दरही नि शाणीहै (८) सामान्य परीक्षा) बहोतसे रोगोंकी परीक्षा करणेमें जीभ दर्पणरूपहै. जीभपर सुपेद मजबूत थर याने मैल जमा होय तो पाचनशक्तिमें मंदपणा समझणी जाडी और सूजीभई और दांतोंके नीचे आलेमें दांतोंकी निशाणी मंडीरहै, ऐसी जीभ हो जगी तथा मगज तंतुओंमें दाह होय तब होतीहै. जीभपर जाडा पीले रंगका थर हो य तो पित्तविकार जांणना, काला झांयां भरे रंगका पुरत सन्निपात बुखार होताहै तब होता है, सुपेदथर साधारण बुखारकी निशाणी है, सूखी थरवाली काली और धूजती जीभ इकवीस दिनोंका भयंकर ज्वर सन्निपातकी निशाणी है, एक तरफ लोचा कर ती जीभ आधी जीभमें वादी आंचकी निशाणी है, जब जीभ बहोत मुसकिलमें नींठ २ बाहर निकले और रोगीके इच्छामुजब अंदर नहीं जाय तो समझणा रोगी बहोत नाताकत और लिगाईजगया है, बहोत भारी रोग होय उसमें फेर जीभ धूजणे लगेतो बडा डर समझणा, हेजा तथा होजरी और फेफसेकी बेमारीमें जब जी ', सीसेके रंगजेसी झांयी दिखाइ देवे तो खराब चिन्ह समझणा, जरा अममानी रंग ? जीभ दिखाई देवे तो समझणा के खूनकी चालमें कुछ अटकाव भयाहै. मूं पकजा य और जीभ सीसाके रंग जेसी होजाय तो नजीक मृत्युकी निशाणीहै वायूके दोष वाली जीभ खरदरी फटी भई तथा पीली होतीहै पित्तके दोषवाली जीभ कुछ इकलाल और कालास पडती होतीहै, कफके दोष वाली जीभ सुपेद भीजी और नरम होतीहै, त्रिदोषवाली जीभ कांटेवाली और सूकी होतीहै, मृत्युकालकी जीभ खरखरी अंदरसें बधीभई फेणवाली लकडजेसी करडी और गतिरहित होजातीहै देशी वैद्यक शास्त्रसें इस ग्रंथमें जादा जिह्वापरीक्षा लिखीहै.

(आ) नेत्रपरीक्षा.

रोगी की आंखोसें भी रोगकी परीक्षा होतीहै, वायूके दोषवाले नेत्र लूखे निस्तेज धूम्रवर्ण (धूयेके जेसें धूसरारंग) चंचलतथा दाह वाली होतीहै, पित्तके दोषवाले नेत्र पीले दाहवाले और चराकके तेजकू नहि सके ऐसे होतेहैं, कफके दोषवाले नेत्र भीगे सुपेद नरम मंद और तेज विनाकी होतीहै. तंद्रा याने मींटवाली आंखकाली और जड (टमकारीजती नही) एसी होतीहै त्रिदोष सन्निपातकी आंख भयंकर लाल जरा-काली और मिंचीभई होतीहै.

(इ) रूपपरीक्षा

चहरा देखणेसें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होसकतीहै, फजरमें रोगीका चहरा तेज रहित विचित्र और झांखा के काला दिखता होय तो वादीका रोग समझणा, जो चह-रा पीला मंद और सूजाभया दीखे तो पित्त रोग समझणा, जो चहरा मंद तेलिया ते-लके जेसा चिकणास वाला दीखेतो कफका रोग समझणा, कुदरती निरोगका चहरा शांत स्थिर और चैनवाला होताहै, रोगसें चेहरा फिर जाताहे तरे २ का स्वरूप दिखताहै रातदिनके अभ्यासी चहरेपरसें रोगपरखसकते हैं हर कोई नहीं परख सकता (१) फिकरवंदचहरा सखतबुखार वडे भयकर रोगोंकी सरुआतमें हिचकी तथा खेंचता णके रोगोंमें दम तथा श्वासके रोगमें कलेजे और फेफसेके रोगमें इत्यादि रोगोंमें चे हरा चींतातुर रहता है, (२) फीका चहरा) वहोत खून जाणेसें जीर्ण ज्वरसें ति-ल्लीकी वेमारीसें वहोत निवलाईसें वहोत फिकरसें डरसें धास्तीसें इत्यादि कारणोंसें खूनके अंदरके लालरजकण कम होणेसें एसाचहराहो जाताहै औरतोंके ऋतुधर्ममें जादा खून जाणेसें अथवा जन्मसें नाताकत वधेकी औरतकूं वालक चूंग २ कर खून कम करदेताहै, पोषण पूरा मिलता नहीं एसी औरतोंका भी चहरा फीका होजाता है, (३) (लाल चहरा)सखत बुखारमें मगज के सोजेमें लूलगे तव आंखेंतो खून जेसीलाल गालपर गुलाबी रंग और उपसे भये मालम देतेहें वदनका चहरा लाल तव समझणाके खूनका शिरके तरफ तथा मगजमें जादा जोस चढा है, (४) फूलाभया चहरा) वहोत निवलाई जीर्णज्वर जलंदर वगेरे रोगोंमें चहरा फूलाभया याने थोथरवाला होता है, आंखकी ऊपरकी चमडी चढ जाती है, गालमें आंगलीसें दवानेसें खड्डा गिरता है, चहरा सूजा भया दिखता है, (५) अंदर खुड्डा वैठाभया चहरा) जैसे दरखतके डालीकेपत्ते तथा छिलका छीलेवाद डाली सूडी भई मालम देती है, इसतरे कितनेक भयंकर रोगोंकी आखरी अवस्थामें रोगीका चहरा एसा होजाता है, हैजेमें मरणेकी वखत जो सिकल वनती है, वो चहरा अथवा इस तरेका चहरा होता है, निलाडमें सल आंखके डोले अंदर घुसेभये आंखमें खड्डे पडे भये नाक अणीदार भयाभया कनपटी आगे खड्डे पडे

भर्ये गाल बैठेभर्ये हाथोंके तल पैरे भर्ये नखोंका रंग आसमानी एसा अथवा दिखाई देने तो रोगीका जीना मुश्किल समझणा.

(२) त्वचापरीक्षा.

जैसें चमडीके रंगसे हमनें गर्मी ठंडीकी परीक्षा तो सकती है, तैसें चमडीके उपरके रंगमें तेसे उभार किनेक बडे मोटे तेसें निकलती है, उपरसें इनका किनेक दोषोंका अनुमान होसकता है, और भी अवस्था तेसें रोगोंमें पडके सुधार आता है. इसवास्ते उसके लक्षणोंमेंसे उस सुधारके पडके मालूम सुधारेक समझने है, लेकिन चमडीका स्पर्शसे फेर उस चमडीपर मलीन २ दोष उन रोगोंकी परिक्षा होसकती है. चमडीपर देखणा जहिंपे कदापि किसीभी जगे लगडे रोगको पित्तके विगाडमें समझणा, पित्तके चमडीका रंग लाल पडणा आप उसके अंगमें वायुका दोष समझणा जिसके चलनका रंग पीला पडणा और मांसका दोष समझणा रोग सुपेद पडता और उसके चलनमें कफका दोष समझणा जिसके अंगके चमडीका रंग बिलकुल लुप्त होकर अंदरमें रोग मालूम देवे तो समझणा रक्त मिश्र मया या तपामया है, लोक उसकू गर्मी कहते हैं 'चमडीका खून जब नहीं पोहचता है, तब गरम तथा लाली पड जाती है, चमडीका रंग तांबेके रंग जैसा लालसा होय तो समझणा रक्तपित्त तथा नानरक्तका रोग है, चमडीपर काले चठे और धब्बा पडे तो समझणा केइसक ताजा और अछा खुराक नहिं मिला है, जिसमें खून मिलता है. इसतरे एकतरेका चठा और सिस्फोटक होय तो समझणाके इसकू गर्मीका रोग है, हैजेकी दुष्ट बेमारीमें चमडीका तथा नखका रंग आसमानी काला पड जाता है, और वो मरणेकी निशाणी है, इसतरे चमडीमें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होती है.

(३) मूत्रपरीक्षा.

तन दुरस्त आदमीके पेशावकारंग बरावर मूंके नामके रंग जेसा होताहे जेसें घासमूका हरा, नहीं पीला, नहीं लाल, नहीं काला, नहीं सुपेद, लेकिन इन सब रंगोंकी छाया होताहे, वेसाही निरोग आदमी कापेसाव समझणा पेसावमें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, पेसाव ये खूनमेंसें छुटा निकलाभया निरुपयोगी प्रवाहीहै खूनकूं शुद्धकरणेवास्ते मूत्राशय (किडनी) पेशावकूं खूनमेंसें खींच लेतीहे, और उसकरके जो कोइ बेमारी भई होयतो खूनका कितनाक उपयोगी भागपेसावमें जाताहे, इसवास्ते पेशावसें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, चिंतामणी शास्त्रसें हमने अष्टविधपरिक्षा इहां लिखीहै, डाकतरी ग्रंथोसें डाकदरोंकी, विशेष बातें हमारे अनुभवीहै, (१) वादीके दोषवाला रोगीके मूत बहोत और वादलीके रंगजेसा होताहे, (२) पित्त दोषवाला रोगीका मूत लाल कसूंबेका रंग जेसा अथवा केसूलेके फूलके रंग जेसा

पीला गरम तेल जेसा तथा थोडा होताहै, (३) कफके रोगीका मूत ठंढा तलाव-के पाणी जेसा सपेद फेणवाला तथा चिकणा होताहै (४) मिलेभये दोषोंवाला पेसाव मिलेभये रंगका होताहै (५) सन्निपात रोगमें पेसाव झांखा काला होताहै, (६) खूनके कोपवाला मुत्र चिकणा गरम और लाल होताहै, (७) वातपित्तके दोष वाला गहरा लाल अथवा किरमची रंगका तथा गरम होताहै (८) वात कफदोष वालेका मूत सुपेद तथा बुदबुदाकारहोताहै (९) कफपित्तवाले रोगीका मूत्र लाल लेकिन् गुमला होताहै, (१०) अजीर्ण रोगीका मूत्र चावलोंके धोवणके जे-सा होताहै (११) नये बुखारवालेका मूत्र किरमची रंगका तथा जादा होताहै, (१२) पेसाव करते लाल धार होय तो बडा रोग समझणा काली धार होय तो रोगी मरजावै पेसावमें बकरीके पेसावजेंसी गंध आवेतो अजीर्णका रोग समझणा (१३) (साध्यासाध्य परिक्षा) रोग साध्य याने सहजसें मिटे जेसाहे अथवा कष्टसाध्य याने मु-स्किलसें मिटे जेसाहै, अथवा असाध्य याने नहीं मिटे जेसाहे, सो परिक्षा लिखते है, फजर चार घडीके तडके रोगीकूं ऊठाकर उसका पेसाव एक काचके सुपेद प्यालेमें लेणा जिसमें पहली और पिछली धार नहीं लेणी विचली धार लेणी पीछे उसकूं स्थिर रहणे देणा वाद सूर्यके धूपमें घंटाभर रखके पीछे एक घासके तिणखेसें धीरेसें-तेलकी बूंद डालनी जो वो बूंद डालतेही पेसावपर फेल जाय तो रोग साध्य समझणा जो बूंद वो फेले नहीं ऊपर थूंकी थूं बने रहे तो रोग कष्ट साध्य समझणा जो वो बूंद अंदर पेसावके तले बैठ जाय अथवा अंदरसें फेर पीछी ऊपर आकर कुंडालेकी तरे फिरणे लगे अथवा बूंदमें छेद २ पड जावै, अथवा तेलकी बूंद पेसावके संग मिल जाय तो रोग असाध्य जाणना फेर तलाव हंस छत्र चमर तोरण कमल हाथी इत्यादि चिन्ह दीखे तो रोगी बचे, तलवार दंड कवाण तीर इत्यादि शस्त्रोके चिन्ह बूंदके होजाय तो रोगी मरे, बुदबुदे उठे बूंदमें तो देवताका दोष जाणना, इत्यादि मूत्र परिक्षा योग चिंतामणी ग्रंथमें लिखी है, इसमें कितनीक वातें तो अनुभवसें सिद्ध है, क्योंके फकत ग्रंथ वांचनेसेंही परिक्षा नहीं हो सकती है, करता उस्ताद और अणकरता सा-गिडद होता है, ग्रंथके वांचणेसे फकत वायका पित्तका कफका खूनका तथा मिले भये दोषोंका इत्यादि परिक्षा पेसावकी देखनेसें हो सकती है विशेष पहचान अभ्याससे होसकती है, ॥ २ ॥ अंग्रेजी मतसे मूत्र परिक्षा लिखते है ॥ रसायणशास्त्रकी रीतसें मूत्र की परिक्षा डाकतरोनें करी है, इसवास्ते प्रमाण करणे लायक है, पेसावमें मुख्य दो चीज है, युरीआ और एसिड इसके सिवाय उसमें लूण, गंधकका तेजाव, चूना, फासफरीक एसिड, मेगनिशिया, पोटाश, और सोडा, इन सब वस्तुओंका थोडा २ तत्व होताहै बहोतसा भाग पाणीका होता है, पेसावमें जोजो पदार्थ है सो लिखते हैं.

भये गाल बैठेभये हाडोंपर मल पडे भये नहरेका रंग आसमानी एसा लक्षण दिखाई देवे तो रोगीका जीना मुश्किल समझणा.

(इ) त्वचापरीक्षा.

जैसें चमडीके स्पर्श करनेसें गरमी ठंडीकी परिक्षा हो सकती है, तैसें चमडीके ऊपरके रंगसें तैसे उसपर कितनेक चठे पांडो वगैरे निकलती है, उसपरसे बदनका कितनाक दोषोंका अनुमान होसकता है. शीतला औरी अचपडा वगैरे रोगोंमें पहले बुखार आता है. इसवास्ते उसके अनसमझणेसें उस बुखारकूं पहले सादामा बुखार लोक समझते हैं, लेकिन चमडीका रंगलाल फेर उस चमडीपर महीन २ दाणे उन रोगोंकी परिक्षा बता सकती है. अछीतरे देखणा चहिये बदनपर किसीभी जगे ललाई होयतो पित्तके बिगाडसें समझणा, जिसके चमडीका रंग काला पडता जाय उसके शरीरमें वायूका दोष समझणा जिसके बदनका रंग पीला पडता जावे सो पित्तका दोष समझणा गोरा सुपेद पडता जावे उसके बदनमें कफका दोष समझणा जिसके शरीरके चमडीका रंग बिलकुल लूखा होकर अंदरमें चीरा सा दिखाई देवे तो समझना खून बिगड गया या तपागया है, लोक उसकूं गरमी कहते हैं 'चमडीतक खून तब नहीं पोहचता है, तब गरम तथा लूखी पड जाती है, चमडीका रंग तांबेके रंग जैसा तामडा होय तो समझणा रगतपित्त तथा वातरक्तका रोग है, चमडीपर काले चठे और धब्बा पडे तो समझणा केइसकूं ताजा और अछा खुराक नहिं मिला है, जिससें खून बिगडा है, इसतरे एकतरेका चठा और विस्फोटक होय तो समझणाके इसकूं गरमीका रोग है. हैजेकी दुष्ट बेमारीमें चमडीका तथा नखका रंग आसमानी काला पड जाता है, और वो मरणेकी निशाणी है, इसतरे चमडीमें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होती है.

(उ) मूत्रपरीक्षा.

तन दुरस्त अदमीके पेशाबकारंग बराबर सूके घासके रंग जेसा होताहे जेसें घाससूका नहीं हरा, नहीं पीला, नहीं लाल, नहीं काला, नहीं सुपेद, लेकिन इन सब रंगोकी छाया वाला होताहै, वेसाही निरोग आदमी कापेसाब समझणा पेसाबसें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, पैसाब ये खूनमेंसें छुटा निकलाभया निरुपयोगी प्रवाहीहै खूनकूं शुद्धकरणेवास्ते मूत्राशय (किडनी) पेशाबकू खूनमेंसें खींच लेतीहे, और उसकरके जो कोइ बेमारी भई होयतो खूनका कितनाक उपयोगी भागपेसाबमें जाताहै, इसवास्ते पेशाबसें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, चिंतामणी शास्त्रसें हमने अष्टविधपरिक्षा इहां लिखीहै, डाकतरी ग्रंथोसें डाकदरोंकी, विशेष बातें हमारे अनुभवीहै, (१) वादीके दोषवाला रोगीके मूत बहोत और बादलीके रंगजेसा होताहै, (२) पित्त दोषवाला रोगीका मूत लाल कसूभेका रंग जेसा अथवा केसूलेके फूलके रंग जेसा

पीला गरम तेल जेसा तथा थोडा होताहै, (३) कफके रोगीका मूत ठंढा तलाव-के पाणी जेसा सपेद फेणवाला तथा चिकणा होताहै (४) मिलेभये दोपोंवाला पेसाव मिलेभये रंगका होताहै (५) सन्निपात रोगमें पेसाव झांखा काला होताहै, (६) खूनके कोपवाला मुत्र चिकणा गरम और लाल होताहै, (७) वातपित्तके दोप वाला गहरा लाल अथवा किरमची रंगका तथा गरम होताहै (८) वात कफदोप वालेका मूत सुपेद तथा बुदबुदाकारहोताहै (९) कफपित्तवाले रोगीका मूत्र लाल लेकिन् गुमला होताहै, (१०) अजीर्ण रोगीका मूत्र चावलोंके धोवणके जे-सा होताहै (११) नये बुखारवालेका मूत्र किरमची रंगका तथा जादा होताहै, (१२) पेसाव करते लाल धार होय तो बडा रोग समझणा काली धार होय तो रोगी मरजावै पेसावमें वकरीके पेसावजेंसी गंध आवेतो अजीर्णका रोग समझणा (१३) (साध्यासाध्य परिक्षा) रोग साध्य याने सहजसें मिटे जेसाहे अथवा कष्टसाध्य याने मु-स्किलसें मिटे जेसाहै, अथवा असाध्य याने नहीं मिटे जेसाहे, सो परिक्षा लिखते है, फजर चार घडीके तडके रोगीकूं ऊठाकर उसका पेसाव एक काचके सुपेद प्यालेमें लेणा जिसमें पहली और पिछली धार नहीं लेणी विचली धार लेणी पीछे उसकूं स्थिर रहणे देणा वाद सूर्यके धूपमें घंटाभर रखके पीछे एक घासके तिणखेसें धीरेसें-तेलकी वूंद डालनी जो वो वूंद डालतेही पेसावपर फेल जाय तो रोग साध्य समझणा जो वूंद वो फेले नहीं ऊपर यूंकी यूं बने रहे तो रोग कष्ट साध्य समझणा जो वो वूंद अंदर पेसावके तले बैठ जाय अथवा अंदरसें फेर पीछी ऊपर आकर कुंडालेकी तरे फिरणे लगे अथवा वूंदमें छेद २ पड जावै, अथवा तेलकी वूंद पेसावके संग मिल जाय तो रोग असाध्य जाणना फेर तलाव हंस छत्र चमर तोरण कमल हाथी इत्यादि चिन्ह दीखे तो रोगी वचे, तलवार दंड कवाण तीर इत्यादि शस्त्रोके चिन्ह वूंदके होजाय तो रोगी मरे, वुदवुदे उठे वूंदमें तो देवताका दोप जाणना, इत्यादि मूत्र परिक्षा योग चिंतामणी ग्रंथमें लिखी है, इसमें कितनीक वातें तो अनुभवसें सिद्ध है, क्योंके फकत ग्रंथ वांचनेसेंही परिक्षा नहीं हो सकती है, करता उस्ताद और अणकरता सा-गिडद होता है, ग्रंथके वांचणेसे फकत वायका पित्तका कफका खूनका तथा मिले भये दोपोंका इत्यादि परिक्षा पेसावकी देखनेसें हो सकती है विशेष पहचान अभ्याससे होसकती है, ॥ २ ॥ अंग्रेजी मतसे मूत्र परिक्षा लिखते है ॥ रसायणशास्त्रकी रीतसें मूत्र की परिक्षा डाकतरोनें करी है, इसवास्ते प्रमाण करणे लायक है, पेसावमें मुख्य दो चीज है, युरीआ और एसिड इसके सिवाय उसमें लूण, गंधकका तेजाव, चूना, फासफरीक एसिड, मेगनिशिया, पोटाश, और सोडा, इन सव वस्तुओंका थोडा २ तत्व होताहै वहोतसा भाग पाणीका होता है, पेसावमें जोजो पदार्थ है सो लिखते हैं.

पेशाबमेंके पदार्थ.	पेसाबके १००० भागमें.
पाणी,	९५६॥। भाग.
शरीरके घसारेमें पैदा होती चीजें.	
युरीआ.	१४॥ ,,
युरिक एसिड.	०॥ ,,
चरबी चिकणाई वगैरे.	१५ ,,
खार.	
लूण.	७। ,,
फासफरीक एसिड.	२ ,,
गंधकका तेजाब.	१॥। ,,
चूना.	०॥ ,,
मागनिशिया.	०। ,,
पोटास.	१॥। ,,
सोडा.	बहोत थोडा.

पेशाबमें ऊपर लिखे सो पदार्थ है, लेकिन् तनदुरस्त हालतमें पेसाबमें ऊपर लिखी चीजें हमेशां एक वजनमें होती नहीं खुराक और कसरत वगैरेपर उसका आधार है, पेशाबमेंकी चीजोंकों पक्के रसायणी शास्त्री विगर दुसरे नहीं परख सकते और एसी परिक्षा होती है तभी पेशाबपरसें रोगोंकी पक्की परिक्षा हो सकती है, हमारे देशी पूर्वाचार्य इस रसायण विद्यामें वडे प्रवीण थे तभी तो वीस जातके प्रमेहमें सर्करा प्रमेह क्षार प्रमेहादिकी पहिचान करीहै इस मुजब तत्वके वेत्ता थे तभी तो उनोनें लिखा है, डाकतरोकी करी परिक्षाकूं लोक नई समझ हैरतमें रहते है, लेकिन् नई नहीं है, पेसाबकूं फकत आंखोसें देखणेसें उसमेके अनेक चीजोंका चोकस वधणा या घटणा मालम नहीं देता तोभी पेसाबके जथेपरसें पतलापणा या जाडेपणेपरसें कितनेक रोगोकी परिक्षा अछीतरे तपासणेंसें हो सकती है, निरोग अदमीकूं सब दिनमें याने २४ घंटेमें सरासरी २॥ रतल पेसाब होता है, जो कभी पतला पदार्थ कमती या वैसी खानेमे आवे तो वध घट होती है, ऋतुमुजबभी पेसाबके जथेमें फेर पडता है, ठंढकालेसें उष्ण कालमें पेसाब थोडा होता है, मूत्राशयका एक रोग जिसकूं अंग्रेजीमें (वाइटस डिझीझ) याने मूत्राशयका जलंदर कहते है, वो मूत्राशयमें विगाड होनेसें खूनमेसें एक जरूरीका तत्व (आल्व्युमेन) के रस्ते निकल जाणेसें होता है, पेशाबमें आल्व्युमेन है या नहीं उसकी निगेदास्ती करनेसें इस रोगकी परिक्षा हो सकती है, इसीतरे पेसाबका महा भयंकर रोग मधुप्रमेह (डायाबीटिस) मीठा पेशाब होता है इसरस्ते पेसाबमें मीठेका

जादा हिस्सा जाता है, पेसाबकूं आंखसे देखणेसें उसमें मीठा है, या नहीं उसकी मालम नहीं पडती लेकिन् अछीतरे परिक्षा करणेसें मीठा जाता है, जिसकी खबर हो जाती है, मीठे पेसाबपर हजारो चिमटियां लग जाती है, पेशाबमे जुदा २ खार है, वो प्रमाणसें जादा या कम जाता है, तैसेही (खटास) याने एसिडका भाग पेसाबमें जादा जाता है, तो उससेंभी अनेक रोग पैदा होता है, इन जाते भये पदार्थोंकी अछी तरे परिक्षा हो जाय तो रोगोंकीभी परिक्षा हो सकती है.

पेसाबमें जाते भये पदार्थोंकी परिक्षा.

पेसाबकी परिक्षा बहोत तरेसें करी जाती है, कितनीक बात तो पेसाबकूं आंखसें देखणेसेंही मालम होती है, कितनीक चीजें रसायणिक प्रयोग करके देखणेसें मालम देती है, और कितनेक पदार्थ सूक्ष्म दर्शक यंत्रसें देखणेसें मालम पडती है, इसमेंकी थोडी परिक्षा इहां लिखते है, (१) आंखोंसें देखणेसें पेसाबके जुदे २ रंगकी पहचानसें जुदे २ रोगोंका अनुमान बांध सकते हैं, निरोगी पेसाब पाणी जैसा साफ और जरा पीलासपर होता है, पैसाबके संग खूनका भाग जाता होय तो पेसाब लाल अथवा काला दिखता है, कितनीक दवाओंके खानेसें पेसाबका रंग बदल जाता है, वो बातभी ध्यानमें रखणी चाहिये पेसाब थोडी देर रखनेसें जो नीचे किसी किसमका जमाव होय तो समझणा खार खून पीप चरबी वगेरे कोईभी पदार्थ जाता है, आल्ब्युमीन और सक्कर पेसाबमें गया होय तो उसकी परिक्षा आंखोंके देखनेसें नही होती, खार पेसाबके संग मिला भया होता है, तोभी वो जादा जब जाता है, तो पेसाबकूं थोडी देर रहणे देनेसें वो खार पेसाबके नीचे जमता है, पेसाब ऊपर रोगकी परिक्षा करते इतनी बातोंका ख्याल रखणा (१) पेसाब धूएके रंग जैसा होय तो उसमे खूनका संभव होता है, (२) पेसाबका रंग लाल होय तो जानना उसमें खटास (एसिड) जाता है, (३) पेसाबके ऊपरके फेण जलदी बैठे नहीं तो जानना उसमे आल्ब्युमीन अथवा पित्त है, (४) पेसाब गहरे पीला रंगका जाता होय तो उसमें पित्त जाता है, एसा समझना (५) पेसाब गहरे भूरा या काला रंगका होय तो समझना रोग प्राणघातक है, (६) पेसाब पाणी जैसा बहोत होता होय तो मीठा पेसाब (डाया बीटिस) की शंका होती है, हिस्टीरियाके रोगमेंभी बहोत पेसाब होता है, बहोत आता है, तब पाणी जैसा होता है, पेसाब ऊपर हजारों चिमटिया लगे तो समझ लेणा मीठा पेसाब है, (७) जो पेसाब मैला और गुमला होय तो जाणना उसमें पीप जाता है, (८) पेसाब लाल रंगका और बहोत थोडा होय तो कलेजेका मगजका और बुखारके रोगकी शंका होती है, (९) पेसाबमें खटास जादा जाती होय तो समझना पाचन कियामें हरकत पहुंची है, (१०) कामलेमें और पित्त प्रकोपमें पेसाबमें बहोत पीलापणा और हरापणा होता

है, किसी वखत वो रंग एसा गहरा होजाता है, जो काले रंगकी शंका होती है, ऐसे पेसावकूं हलाकर देखणेसें अगना थोडा पाणी मिलाकर देखणेमें पेसावकी पीलाश मालम देगी (२) रसायण प्रयोगमें पेशाबमेंकी जुदी २ वस्तुओंकी परिक्षा करणेमें कितनीक बातोंकी खबर होगी सो नीचे मुजब. (१) लित, पेसावके रंग उपरसें लितका अनुमान बांध सकते हैं, और रसायण रीतसें परिक्षा करणेमें लिवर खातरी होती है, पेसावकी थोडी बूंद कांचके प्यालेमें या रकेबीमें डालणा उसमें थोडा नाइट्रिक एसिड डालणा दोनो मिलणेसें हरा जामूनी और पीछे लाल रंग होय तो पेसावमें लित है एसा समझणा (२) युरिक एसिड नेगरे पेसावका सामान्यिक तत्व है, लेकिन वो जादा जाता होय तो उसकी परिक्षा इस मुजब है, पेसावकूं एक रकेबीमें डालकर गरम करणा बाद नाइट्रिक एसिडकी थोडी बूंद उसमें डालणी उसमें अगर पांस बंध जाय तो पेसावमें युरिया जादा है एसा समझणा और पेसाव रकेबीमें डालकर उसमें नाइट्रिक एसिड डालकर तपाणेसें उसमेंसें पीले रंगका पदार्थ हो जाय तो जानना पेसावमें युरिक एसिड जाता है, (३) आलब्युमीन) आलब्युमीन ये एक पौष्टिक तत्व है, जो वो पेसावमें जानेलगे तो शरीर कम जोर होता है, पेसावके परीक्षा करनेकी नली (टयुब) आती है, उसमें दोतीन रुपेभर पेसाव लेणा उस नलीके नीचे डाक्टर लोक तो स्पीरिट (दारू) की चराक करते हैं, आर्य लोकोंने मोमबत्तीकी करणी उसमें पेसावकूं गरम करणा पेसाव ऊकले तब उसके अंदर वो सोरेके तेजाबकी थोडी बूंद डालणी इसकी बूंदोंसें पेसाव बद्दलोंकीतरे गुमला हो जायगा और गुमला भया पेसाव ठहरे पीछे अलब्युमीन नीचे बैठेगा और आंखोंसें दीखेगा लेकिन् पेसाव गरम करणेसें या गरम करकर उसमें सोरेकी तेजाबकी बूंदे नाखनेसें जो वो पेसाव गुमला नहीं होय अथवा गुमला होकर गुमलापणा मिट जाय तो समझनाके पेसावमें आलब्युमीन नहीं जाता इस परिक्षासें गरम किया भया और नाइट्रिक एसिड मिला भया पेसावमें जमा पदार्थ फोसफेट (क्षार) होयगा तो पीछा पेसावमें मिल जायगा और आलब्युमीन होगा वो वैसाका वैसाही रहेगा. (४) श्युगर याने सक्कर–पेसावमें जादा या कम पेसावमें सक्कर जब जाती है, तब उस रोगकूं मीठे प्रमेहका भयंकर रोग कहणेमें आता है, पेसाव बहोत मीठा सुपेद पाणी जैसा होता है, उसमें सहत जैसी गंध आती है, तोभी रसायणिक रीतसें परिक्षा करणेसें सक्कर है, जिसकी बराबर खातरी होगी सक्करकी शंका होय तो पीछे पेसावकूं गरमकर छाण लेणेसें जो उसमें आलब्युमीन होगा तो अलग हो जायगा. पेसावकूं कांचकी नलीमें लेकर उस पेसावसें आधा लीकर पोटाश अथवा सोडा डालणा पीछे मोर थोथेके पाणीकी थोडी बूंदे डालणी वो नीलेथोथेकी बूंद बहोत हुसियारीसें एक बूंद पीछे दुसरी बुंद डालणी ओर नलीकूं हिलाते जाणा इसतरे करणेसें वो पेसाव आसमानी रंगका

आरपार दीखे जेसा होताहै पीछे उसकूं खूब उकालणा जो सक्कर होगी तो नलीके पींदे नीचे नारंगीके रंगजेसा लाल पीले पदार्थका जमाव होकर ठहरेगा और स्थिर भये वाद जरा लाल भूरे रंगका होगा जो एसा नहीं हो यतो समझणा पेसावमें सक्कर नहीं जाती (५) खार और खटासकी परिक्षा (अेसिड और आल्कली) क्षार पेसावमें) खारका भाग जितना जाणा चहिये उसमें जादा जाय तो रोग होताहैं, इस जादा खार जाणनेकी परिक्षा हलदीका पाणी करके उसमें सुपेद वलाटींग पेपर (स्याही चूसणेका कागज) भिजाणा डाकदर लोक हलदीका टींकचर लेते हें फेर उस कागजकूं सुकाकर उसमेंका एक टुकडा लेकर पेसावमें भिजाणा जो पेसावमें खारका भागजादा होगा तो इस पीले कागजका रंग वदलकर नारंगी अथवा विदामी रंग हो जायगा फेर इस कागजकूं पीछे कोईभी खटाईमें भिगाणेसें पीछा पीला रंग था जेसाका जेसा होजायगा इस पेसावकी परिक्षा करणेकूं टरमेरिक पेपर इंगलससें आताहै. वो नहीं होय तो हलदीमे भिगाया भया पूर्वोक्त कागज लेणा अव खटाइ जादा जाती होय उसकी परिक्षा लिखते हैं ॥ इससेंभी रोग जादा होजाताहै, लीटमस पेपर तईयार आताहै अगर वों नहीं मिले तो वलोटिंग पेपर लेकर कोविजके रसमे भिगाणा फेर सुकाणा तव उसका ब्ल्यू (आसमानी) रंग होगा उस कागजका टुकडा लेकर पेसावमें भिगाणा जो खटास जादा भया तो उस कागदका रंग लाल होगा खटाईके जादा या कमपर कागदभी कमी वेसी लाल होगा.

(ऊ) मलपरिक्षा

मल याने दस्तपरसें भी कितनीक परिक्षा होसकतीं है और साध्य असाध्यकी भी परिक्षा होसकतीहै (१) वायुके दोपवालेका मल फेणवाला लूखा धुयेके रंग जेसा और चोथा भाग पाणी जेसा होताहै. (२) पित्तके दोपवालेका मल हरा पीला गंधवाला ढीला तथा गरम होताहै, (३) कफदोपवालेका मल सुपेद कुछ सूका कुछभीजा तथा चिकणा होताहै (४) वातपित्तके दोपवालेका मल पीला और काला भीजा तथा अंदर गांठोवाला होता है (५) वातकफके दोप वाला मल भीजा काला तथा पपोटेवाला होताहै (६) पित्त कफके दोपवालेका मल पीला तथा सुपेद होताहै (७) त्रिदोपका मल सुपेद काला पीला ढीला तथा गांठोवाला होताहै (८) अजीर्णका दस्त दुरगंधवाला और ढीला होताहै (९) जलंदरवालेका दस्त वहोत दुरगंधवाला और सुपेद होताहै, (१०) मरणकी वखतका दस्त वहोत वद वो मारता लाल जरा सुपेद मांस जेसा तथा काला होताहै जिस रोगीका दस्त पाणीमें डूव जावे वोरोगी वचता नहीं पतला दस्त अपचेसें अथवा संग्रहणीके रोगसें पतले दस्त होतेहैं दस्तमें खुराकका कचा भाग दीखे तो समझणा वरावर पाचन भय

है, किसी वखत वो रंग एसा गहरा होजाता है, को काले रंगकी शंका होती है, ऐसे पेसावकूं हलाकर देखणेसें अथवा थोडा पाणी मिलाकर देखणेसें पेसावकी पीलाश मालम देगी (२) रसायण प्रयोगसें पेशाबमेंकी जुदी २ वस्तुवोंकी परिक्षा करणेमें कितनीक बातोंकी खबर होगी सो नीचे मुजब. (१) सित, पेसावके रंग ऊपरसें सितका अनुमान बांध सकते हैं, और रसायण रीतसें परिक्षा करणेसें विशेष खातरी होती है, पेसावकी थोडी बूंद कांचके प्यालेमें या रकेबीमें डालना उसमें थोडा नाइट्रिक एसिड डालणा दोनो मिलणेसें हरा जामूनी और पीछे लाल रंग होय तो पेसावमें सित है एसा समझणा (२) युरिक एसिड नेगरे पेसावका सामान्यिक तत्व है, लेकिन वो जादा जाता होय तो उसकी परिक्षा इस मुजब है, पेसावकूं एक रकेबीमें डालकर गरम करणा बाद नाइट्रिक एसिडकी थोडी बूंद उसमें डालणी उसमें अगर पासे बंध जाय तो पेसावमें युरिया जादा है एसा समझणा और पेसाव रकेबीमे डालकर उसमें नाइट्रिक एसिड डालकर तपाणेसें उसमेंसें पीले रंगका पदार्थ हो जाय तो जाणना पेसावमें युरिक एसिड जादा है, (३) आलब्युमीन) आलब्युमीन ये एक पौष्टिक तत्व है, जो वो पेसावमें जानेलगे तो शरीर कम जोर होता है, पेसावके परीक्षा करनेकी नली (ट्युब) आती है, उसमें दोतीन रुपेभर पेसाव लेणा उस नलीके नीचे डाकदर लोक तो स्पीरिट (दारू) की चराक करते हैं, आर्य लोकोंने गोगबत्तीकी करणी उसमें पेसावकूं गरम करणा पेसाव ऊकले तब उसके अंदर वो सोरेके तेजाबकी थोडी बूंद डालणी इसकी बूंदोसें पेसाव बदलोंकीतरे गुमला हो जायगा और गुमला भया पेसाव ठहरे पीछे अलब्युमीन नीचे बैठेगा और आंखोंसें दीखेगा लेकिन् पेसाव गरम करणेसें या गरम करकर उसमें सोरेकी तेजाबकी बूंदे नाखनेसें जो वो पेसाव गुमला नहीं होय अथवा गुमला होकर गुमलापणा मिट जाय तो समझनाके पेसाबमें आलब्युमीन नहीं जाता इस परिक्षासें गरम किया भया और नाइट्रिक एसिड मिला भया पेसाबमें जमा पदार्थ फोसफेट (क्षार) होयगा तो पीछा पेसाबमें मिल जायगा और आलब्युमीन होगा वो वैसाका वैसाही रहेगा. (४) श्युगर याने सक्कर—पेसावमें जादा या कम पेसावमें सक्कर जब जाती है, तब उस रोगकूं मीठे प्रमेहका भयंकर रोग कहणेमें आता है, पेसाव बहोत मीठा सुपेद पाणी जैसा होता है, उसमें सहत जैसी गंध आती है, तोभी रसायणिक रीतसें परिक्षा करणेसें सक्कर है, जिसकी बराबर खातरी होगी सक्करकी शंका होय तो पीछे पेसावकूं गरमकर छाण लेणेसें जो उसमें आलब्युमीन होगा तो अलग हो जायगा. पेसावकूं काचकी नलीमें लेकर उस पेसावसें आधा लीकर पोटाश अथवा सोडा डालणा पीछे मोर थोथेके पाणीकी थोडी बूंदे डालणी वो नीलेथोथेकी बूंद बहोत हुसियारीसें एक बूंद पीछे दुसरी बुंद डालणी ओर नलीकूं हिलाते जाणा इसतरे करणेसें वो पेसाव आसमानी रंगका

करणा जो होजरीकी हरकतसें होती होय तो उसहीका इलाज करणा इसवास्ते उलटीका कारण निश्चै करणेकूं बहोत पूछताछ करणेकी जरूरी है, इसतरे सब रोगोंकी निश्चे करणी बुखार अजीर्णसें आया होय और इलाज दुसरा करणेमें आवे तो जलदी आराम नहीं होता बुखार अजीर्णसें भया है, या और कोई कारणसें उसका निर्णय जैसें दुसरे लक्षणों वेगेरेसें मालम देता है, तैसें रोगी दो तीन दिन पहले क्या किया क्या खाया वो पूछणेसें तुरत निर्णय हो जाती है, बहोतसें रोग चिंता भय क्रोध काम विकार वगेरे मनसंबंधी कारणोंमेंसें पैदा होता है, और वो शरीरके लक्षणोपरसें बरावर मालम नहीं देता इसमें पूछणेकी बहोत जरूरी है, शिर दुखणेके बहोत कारण है, जैसें के शिरमें गरमी दस्तकी कबजी धातूका जाणा प्रदर वगेरे बहोतसें रोग शिर दुखणेका कारण होता है, शिर दुखणेके इन कारणोकों तलास करणेमें नाडी परिक्षा कितनेक दरजे काम करती है, लेकिन् पक्का अनुभव होय तो बाकी परिक्षा कोईभी काम नहीं देती फकत रोगीकूं पूछणा काम देता है, तेरा शिर किसतरे कबसे दुखता है, इत्यादिक ऊपर लिखे कारणोंसें शिर दुखता होय तो अमोनिया सुंघाणेसें बिलकुल फायदा नहीं होता फेर दांतके या कानके रोगसेंभी शिर बेतरे दुखता है, ये बातभी बिरले लोक समझते है, कान बहता होय उससें शिर दुखता है, ये बात रोगी खप्नेमेंभी नही जाणता कान दुखणेका हालभी रोगीकूं बिगर पूछे क्या खबर पडे इत्यादि अभ्यंतर सरब हकीगत वैद्य पूछे या रोगी अपणे आपही वैद्यकूं अवलसें आखरीतक हकीगत कह देवै, ये सब हकीगत बिगर कहे कभी खबर पडणीही नहीं है, केइ इक मूर्ख लोक वैद्यकी परीक्षा लेनेकूं हाथ लंबा करते हैं, आप देखो नाडीमें क्या रोग है, एसा नहीं करणा आप अपणी सर्व हकीगत कह देणी चाहिये और वैद्योकू चहिये सो नाडी देखणेका खाली आडंबर रचके रोगीकूं भरमाणा और डराणा नहिं चहिये उसकूं धीरजसें पूछ २ कर रोगकी असली पहिचान कर लेणी चहिये रोगकी परिक्षा पूरी कराणेकूं कोई नया या अजाण रोगी आवै तो उसकूं थोडी देर बैठ देणा वो स्वस्थ हो जाय बाद उसका चहरा आंख जीभ वगेरे देखना पीछे दोनों हाथोंकी नाडी देखणी पीछे उसके मूंसें हकीगत सुणनी पीछे उसके शरीरका जो जो भाग तपासणा होय सो देखणा फेर हकीगत पूछ अछीतरे निश्चयकर फेर रोगीकी जाती रुजगार रहणेका ठिकाणा ऊमर कोइ व्यसन होय सो अथवा पहली कोइ रोग भया होय, क्या क्या दवा कैसें २ ली क्या खाया पीया कैसें फायदा या नुकशान भया इस उपरांत रोगीके मावापका हाल शरीर संबंधी व्यवस्थासें वाकब होणा क्योंके बहोतसें रोग उनोके होय सो पुत्रोंके होता है, स्वरपरिक्षाभी रोगीके मरणे जीणे कष्ट रहणा गरम शरद वगेरे रोगोंकी परिक्षा है, सो इहां नहीं लिखा हे, स्वरोदय देखणा, साध्यासाध्यकी परिक्षा बल

, वहातसें राग चिंता भय क्रोध काम विकार वगैरे मनसवधी
और वो शरीरके लक्षणोपरसें बराबर मालम नहीं देता इसमें
, शिर दुखणेके बहोत कारण है, जैसें के शिरमें गरमी दस्तकी
र वगेरे बहोतसें रोग शिर दुखणेका कारण होता है, शिर
लास करणेमें नाडी परिक्षा कितनेक दरजे काम करती है,
तो बाकी परिक्षा कोईभी काम नही देती फकत रोगीकूं
शिर किसतरे कबसे दुखता है, इत्यादिक ऊपर लिखे कार
ो अमोनिया सुंघाणेसें बिलकुल फायदा नही होता फेर दांतके
वेतरे दुखता है, ये बातभी बिरले लोक समझते है, कान
ुखता है, ये बात रोगी स्वप्नेमेंभी नही जाणता कान दुखणेका
े क्या खबर पडै इत्यादि अभ्यंतर सरव हकीगत वैद्य पूछे
ैद्यकूं अवलसें आखरीतक हकीगत कह देवै, ये सब हकीगत
र पडणीही नहीं है, केइ इक मूर्ख लोक वैद्यकी परीक्षा
हैं, आप देखो नाडीमें क्या रोग है, एसा नहीं करणा आप
देणी चाहिये और वैद्योकूं चहिये सो नाडी देखणेका खाली
रमाणा और डराणा नहिं चहिये उसकूं धीरजसें पूछ २ कर
कर लेणी चहिये रोगकी परिक्षा पूरी कराणेकूं कोई नया या
उसकूं थोडी देर बैठ देणा वो स्वस्थ हो जाय बाद उसका
देखना पीछे दोनों हाथोंकी नाडी देखणी पीछे उसके मूंसें
उसके शरीरका जो जो भाग तपासणा होय सो देखणा
रे निश्चयकर फेर रोगीकी जाती रुजगार रहणेका ठिकाणा
सो अथवा पहली कोइ रोग भया होय, क्या क्या दवा
पीया कैसें फायदा या नुकशान भया इस उपरांत रोगीके
ंधी व्यवस्थासें वाकब होणा क्योंके बहोतसें रोग उनोंके होय
परिक्षाभी रोगीके मरणे जीणे कष्ट रहणा गरम शरद वगेरे
हां नहीं लिखा हे, स्वरोदय देखणा, साध्यासाध्यकी परिक्षा बल

नहीं आंतरेमें पित्त बढणेसें भी दस्त पतला और नरम आताहै अतिसार और हैजेमें दस्त पाणी जैसा पतला आताहै क्षयके रोगमें जो विगर कारण दस्त पतला आवे तो समझणाके रोगी वचणेका नहीं (करडा दस्त–हमेस करते करडा दस्त आवे तो कबजियतकी निशाणी समझणी हरसके रोगीकूं हमेस सखतदस्त आता है उसमें बहोतसी वखत सफरेका भाग छिल जाणेसें उसमेंसे खून आताहै, पेटमें या सफरेमें वादी रहे तो उससें हमेस दस्तकी कबजी रहतीहै कलेजेमें पित्तकी क्रिया बराबर नहीं चले और चहिये जितना पित्त पैदा नहीं होय अथवा मलकूं आगे धकेलणें वास्ते आंतरेमें तंग और ढीला होनेकी चहिये जितनी ताकत नहिं होनेसें दस्त करडा आता है, खून वाला दस्त–दस्तकेसंग मिला भया खून अथवा आम (पीप) पडे तो समझनाके मरोडा भया है, हरसमें तथा रगतपित्तके रोगमें खून दस्तसे अलग गिरता है, याने दस्तके पहले या पीछे गिरता है, धार होकर, कलेजाका वरम (यकृतका पकणा) जिसमें खून दस्तके रस्ते बहोत गिरे और पीप एकदम आणे लगे तो समझणाके कलेजा पककर आंतरेमें फूटा है, जो दस्त धोयेभये मांसके पाणी जैसा आवे उसमें जरा खून होय या नहीं होय लेकिन काले छोतूं जैसा होय और बहोत बदबो गंध मारे तो समझणा आंतरा सडने लगा है, दस्तका रंग सुपेद होय तो समझना कलेजेमेंसें पित्त चहिये जितना आंतरेमें आता नहीं है, कामला पित्ताशय तथा कलेजेके रोगमें एसा दस्त आता है, हैजेमें तथा बडे अजीर्णमें दस्त सुपेद कांजी जैसा अथवा चावलोंके धोवण जैसा आता है. काला अथवा हरा दस्त आवे तो समझणा कलेजेमें रोग तथा पित्तका विकार है, आंवला गूगल तथा लोहकी बनावटकी दवाओं खानेसे दस्त काला आता है, ऐसे कारणोंको देखकर काले दस्तसें डरणा नहीं.

प्रश्नपरिक्षा ४.

रोगीकूं कितनीक हकीगत पूछनेसें रोगोंकी वाकबकारी होती है, एसी वाकबकारी पिछली लिखी परिक्षासेंभी नहिं हो सकती है, बहोतसी वखत एसा हाल बणता है, सो रोगीकूं पूछणेसेंभी रोगका यथार्थ हाल मालम नहीं देता अथवा एसी हालतपर बहोतसा यकीनभी नहीं रखना, तोभी दरदीकी अगली पिछली हकीगत जांननी जरूर चहिये कारण पूछनेसें कोइ २ नई हकीगतभी निकल आती है, उसमेंसें रोगकी पैदासका कारण पता मिल सकता है वैद्योकों बहोतही फायदेबंद है, पूछ २ कर खूब निश्चय कर लेणा चहिये इस उपरांत बहोतसी बाते रोगीके पास रहणेवाले अथवा सहवासियोकों पूछके निश्चय करणा चाहिये जैसें रोगीकूं उलटी होती है, तो उलटी किस कारणसें भई वो कारणकूं पूछकर कारणकूं बंद करणा चहिये उलटीकूं बंध करणेकी जरूरी नहीं जो पित्तसें उलटी होती होय तो पित्तकूं दवाणा अजीर्णसें होती होय तो अजीर्णका इलाज

पांचमा प्रकाश ५

दवायोंका गुण तथा औगुण.

किरण १ पहली.

औषधीका प्रयोग देशी दवा.

यतः जन्मतोयस्यसञ्जाता युगेशान्तिः प्रभावतः सश्रीशांतिजिनाधीशः करोतुसुखमक्षतं १ ग्रंथस्यनिर्विघ्नार्थमध्यमंगलंकृतं ॥

जंगलमें पैदाभई अनेक वनस्पति बजारमें विकती अनेक दवायें तथा फूंकी भई धातुओंकी भस्मी और इनींसे बनती हजारों दवाइयां इनसबोंका नाम औषधी याने दवा है, इस ग्रंथमें जो जो वनस्पती या दवायोंका सग्रह है सो सब साधारण है जिस दवाकूं बनाते बहोत ज्ञान ओर चतुराई चहिये बहोत समय चहिये और बहोत धन चहिये एसी बडी दवा शास्त्रोक्तरसविद्याशाला (लेबोरेटरी) सिवाय दुसरी जगे यथास्थित बणसके ये असंभवित बात है इस वास्ते साधारण इलाजीतेसें घरगृहस्थी आप बनासके अथवा बजारमेसें मंगाकर उपयोगमें लेसके एसी दवायोंका संग्रह इसमें किया गया है इसी तरे साधारण अंग्रेजी तथा होमियोपेथिक दवा जोकी सब जगे लोक वरतते हैं, उनोंकाभी संक्षेप उपयोग इस ग्रंथमें लिखा है.

(अरिष्ट-आसव) पाणी काढा अथवा पतले प्रवाही पदार्थमें औषध डालकर मद्दीकेवर तणमें भरके कपड मद्दीसें मू बंधकर एक दो पखवाडेतक धेरे रहणे दे जब खंभीर पैदा होजाय तब अरिष्ट–आसव बनता है दवायोंकों विगर उकालेभी धरणेसें आसव तइयार होता है और जादातर तो लोकउकालकर दुसरी दवायें पीछै डालकर धरते है तब अरिष्ट तइयार होता है जहां वजन नही लिखा होय उहां इस प्रमाण लेते हैं अरिष्ट वास्ते उकालीकी दवा ५ सेर सहत ६। सेर गुड १२॥ सेर पाणी ३२ सेर आसववास्ते चूर्ण १। सेर, वाकी ऊपर मुजब, पीणेकी मात्रा दोनोंकी ४ तोला, यंत्र चढाकर अर्क टपकाते हैं, सो सराप (इसप्रीट) कहलाता है, दवायोंकू एक दिन भीगाकर जंत्र चढाके भभका खेंचते है, वो अर्क होता है, दयाधर्मवालेके अर्क पीणे योग्य भक्ष है, अरिष्ट आसव सराप अभक्ष है, रोगादि कारणे छछडी चार आगार है ॥ बावीस अभक्ष खाणेसे बचे उसकूं पूरा जैन समझणा.

(अवलेह) जिस वस्तुकी अवलेही बणाणी होय चाटी जाय सो अवलेही कहलाती है, उस वस्तुका निजरस लेणा अथवा काढावणाकर उसकू छाणलेणा पीछे उसपाणीकू धीरी आंचसें जाडा पडणे देणा फेर उसमें सहत गुड अथवा सक्कर मिश्री अथवा दुसरी दवाभी मिलाते है चाटणेकी मात्रा० ॥ सें २ तोला.

परसेंभी होती है, मृत्युके चिन्ह संक्षेपमें काल ज्ञानमें हैं, कानोंमें दोनों अंगली देनेसे गरडाट नहीं होय तो प्राणी मर जाता है आंख मसलके अंधेरेमें खोले जब बीजलीका साझबका होता है, सो नहीं होवै आंख मसलके मींचनेसें रंग २ का आकासमें वरसता दिखता है, सो नहीं दीखे तो मृत्यु जांणनी इत्यादिक वा छाया पुरुषमें अथवा काचमें देखणेसें मस्तक वगेरे नहिं दिखाइ देवे तो मृत्यु जाननी चेतसुद ४ कूं चंद्रश्वर नहीं चले प्रभात समे तो नो महीनेमें मृत्यु जाणणी इत्यादि विवरण ग्रंथ वढ जाय इसवास्ते इहां नही लिखा है, बाकी छट्टे प्रकाशके निदानमें साध्यासाध्य खूब परिक्षा लिखेंगे. इति श्रीमज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीते उपाध्यायश्रीरामऋद्धिसारगणि-विरचिते वैद्यदीपकग्रंथे अष्टविधरोगपरिक्षाविवरणे चतुर्थः प्रकाशः ॥

पांचमा प्रकाश ५

दवायोंका गुण तथा औगुण.

किरण १ पहली.

औषधीका प्रयोग देशी दवा.

यतः जन्मतोयस्यसञ्जाता युगेशान्तिः प्रभावतः सश्रीशांतिजिनाधीशः करोतुसुखमक्षतं १ ग्रंथस्यनिर्विघ्नार्थंमध्यमंगलंकृतं ॥

जंगलमें पैदाभई अनेक वनस्पति वजारमें विकती अनेक दवायें तथा फूंकी भई धातुओंकी भस्मी और इनोंसे वनती हजारों दवाइयां इनसबोंका नाम औषधी याने दवा है, इस ग्रंथमें जो जो वनस्पती या दवायोंका संग्रह है सो सव साधारण है जिस दवाकूं वनाते वहोत ज्ञान ओर चतुराई चहिये वहोत समय चहिये और वहोत धन चहिये एसी वडी दवा शास्त्रोक्तरसविद्याशाला (लेबोरेटरी) सिवाय दुसरी जगे यथास्थित वणसके ये असंभवित वात है इस वास्ते साधारण इलाजीतेसें घरगृहस्थी आप वनासके अथवा वजारमेंसें मंगाकर उपयोगमें लेसके एसी दवायोंका संग्रह इसमें किया गया है इसी तरे साधारण अंग्रेजी तथा होमियोपेथिक दवा जोकी सव जगे लोक वरतते हैं, उनोंकाभी संक्षेप उपयोग इस ग्रंथमें लिखा है.

(अरिष्ट-आसव) पाणी काढा अथवा पतले प्रवाही पदार्थमें औषध डालकर मद्दीकेवर तणमें भरके कपड मद्दीसें मू वंधकर एक दो पखवाडेतक धेरे रहणे दे जव खंमीर पैदा होजाय तव अरिष्ट--आसव वनता है दवायोंकों विगर उकालेभी धरणेसें आसव तइयार होता है और जादातर तो लोकउकालकर दुसरी दवायें पीछै डालकर धरते हैं तव अरिष्ट तइयार होता है जहां वजन नहीं लिखा होय उहां इस प्रमाण लेते हैं अरिष्ट वास्ते उकालीकी दवा ५ सेर सहत ६। सेर गुड १२॥ सेर पाणी ३२ सेर आसववास्ते चूर्ण १। सेर, वाकी ऊपर मुजव, पीणेकी मात्रा दोनोंकी ४ तोला, यंत्र चढाकर अर्क टपकाते है, सो सराप (इसप्रीट) कहलाता है, दवायोंकूं एक दिन भीगाकर जंत्र चढाके भभका खेंचते है, वो अर्क होता है, दयाधर्मवालेके अर्क पीणे योग्य भक्ष है, अरिष्ट आसव सराप अभक्ष है, रोगादि कारणे छछडी चार आगार है ॥ वावीस अभक्ष खाणेसे वचे उसकूं पूरा जैन समझणा.

(अवलेह) जिस वस्तुकी अवलेही वणाणी होय चाटी जाय सो अवलेही कहलाती है, उस वस्तुका निजरस लेणा अथवा काढावणाकर उसकू छाणलेणा पीछे उसपाणीकूं धीरी आंचसें जाडा पडणे देणा फेर उसमें सहत गुड अथवा सक्कर मिश्री अथवा दुसरी दवाभी मिलाते हैं चाटणेकी मात्रा० ॥ सें २ तोला.

परसेंभी होती है, मृत्युके चिन्ह संक्षेपमें काल ज्ञानमें है, कानोंमें दोनों अंगुली देनेसे गरडाट नहीं होय तो प्राणी मर जाता है आंख मसलके अंधेरेमें खोले जब बीजलीका साअयका होता है, सो नहीं होवे आंख मसलके मीचनेमें रंग २ का आकाशमें बरसता दिखता है, सो नहीं दीखे तो मृत्यु जाननी इत्यादिक ना छाया पुरुषमें अथवा काचमें देखणेसें मस्तक वगेरे नहिं दिखाइ देवे तो मृत्यु जाननी चेतमुद ४ कूं चंद्रश्वर नहीं चले प्रभात समे तो नो महीनेमें मृत्यु जाणणी इत्यादि विस्तर ग्रंथ वढ जाय इसवास्ते इहां नही लिखा है, बाकी छठे प्रकाशके निदानमें साध्यासाध्य खूब परिक्षा लिखेंगे. इति श्रीमज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीत उपाध्यायश्रीरामऋद्धिसारगणि-विरचिते वैद्यदीपकग्रंथे अष्टविधरोगपरिक्षानिवरणे चतुर्थः प्रकाशः ॥

परसेंभी होती है, मृत्युके चिन्ह संक्षेपसे काल ज्ञानमें हैं, कानोंमें दोनों अंगली देनेसे गरडाट नहीं होय तो प्राणी मर जाता है आंख मसलके अंधेरेमें खोले जब बीजलीका साझबका होता है, सो नहीं होवै आंख मसलके मीचनेसें रंग २ का आकाससें वरसता दिखता है, सो नहीं दीखे तो मृत्यु जांणनी इत्यादिक या छाया पुरुषसें अथवा काचमें देखणेसें मस्तक वगेरे नहिं दिखाइ देवे तो मृत्यु जाननी चेतसुद ४ कूं चंद्रश्वर नहीं चले प्रभात समे तो नो महीनेमें मृत्यु जाणणी इत्यादि विवरण ग्रंथ वढ जाय इसवास्ते इहां नही लिखा है, बाकी छट्ठे प्रकाशके निदानमें साध्यासाध्य खूब परिक्षा लिखेंगें. इति श्रीमज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीते उपाध्यायश्रीरामऋद्धिसारगणि-विरचिते वैद्यदीपकग्रंथे अष्टविधरोगपरिक्षाविवरणे चतुर्थः प्रकाशः ॥

पांचमा प्रकाश ५

दवायोंका गुण तथा औगुण.

किरण १ पहली.

औषधीका प्रयोग देशी दवा.

यतः जन्मतोयस्यसञ्जाता युगेशान्तिः प्रभावतः सश्रीशांतिजिनाधीशः करोतुसुखमक्षतं १ ग्रंथस्यनिर्विघ्नार्थंमध्यमंगलंकृतं ॥

जंगलमें पैदाभई अनेक वनस्पति बजारमें विकती अनेक दवायें तथा फूंकी भई धातुओंकी भस्मी और इनोंसे बनती हजारों दवाइयां इनसबोंका नाम औषधी याने दवा है, इस ग्रंथमें जो जो वनस्पती या दवायोंका संग्रह है सो सब साधारण है जिस दवाकूं बनाते बहोत ज्ञान ओर चतुराई चहिये बहोत समय चहिये और बहोत धन चहिये एसी बडी दवा शास्त्रोक्तरसविद्याशाला (लेबोरेटरी) सिवाय दुसरी जगे यथास्थित बणसके ये असंभवित बात है इस वास्ते साधारण इलाजीतेसें घरगृहस्थी आप बनासके अथवा बजारमेसें मंगाकर उपयोगमें लेसके एसी दवायोंका संग्रह इसमें किया गया है इसी तरे साधारण अंग्रेजी तथा होमियोपेथिक दवा जोकी सब जगे लोक बरतते हैं, उनोंकाभी संक्षेप उपयोग इस ग्रंथमें लिखा है.

(अरिष्ट-आसव) पाणी काढा अथवा पतले प्रवाही पदार्थमें औषध डालकर मदीकेबर तणमें भरके कपड मदीसें मूं बंधकर एक दो पखवाडेतक धेरे रहणे दे जब खंभीर पैदा होजाय तब अरिष्ट–आसव बनता है दवायोंकों बिगर उकालेभी धरणेसें आसव तइयार होता है और जादातर तो लोकउकालकर दुसरी दवायें पीछै डालकर धरते हैं तब अरिष्ट तइयार होता है जहां वजन नहीं लिखा होय उहां इस प्रमाण लेते है अरिष्ट वास्ते उकालीकी दवा ५ सेर सहत ६। सेर गुड १२॥ सेर पाणी ३२ सेर आसववास्ते चूर्ण १। सेर, वाकी ऊपर मुजब, पीणेकी मात्रा दोनोंकी ४ तोला, यंत्र चढाकर अर्क टपकाते हैं, सो सराप (इसप्रीट) कहलाता है, दवायोंकूं एक दिन भीगाकर जंत्र चढाके भभका खेंचते है, वो अर्क होता है, दयाधर्मवालेके अर्क पीणे योग्य भक्ष है, अरिष्ट आसव सराप अभक्ष है, रोगादि कारणे छछडी चार आगार है ॥ बावीस अभक्ष खाणेसे बचे उसकूं पूरा जैन समझणा.

(अवलेह) जिस वस्तुकी अवलेही बणाणी होय चाटी जाय सो अवलेही कहलाती है, उस वस्तुका निजरस लेणा अथवा काढावणाकर उसकूं छाणलेणा पीछे उसपाणीकूं धीरी आंचसें जाडा पडणे देणा फेर उसमें सहत गुड अथवा सक्कर मिश्री अथवा दुसरी दवाभी मिलाते हैं चाटणेकी मात्रा० ॥ सें २ तोला.

(कल्क) गीली वनस्पतीकूं शिलापर पीसकर अथवा सूकीकूं पाणी देके पीसणा लुगदीकरणी जिसकूं मुसलमीन लऊक कहते है, इसकूं संस्कृतमें कल्क इसकी मात्रा खाणेकी १ तोलेकी है.

(क्वाथ) उकालीभी कहते हैं, १ तोला औषधीमें १६ तोला पाणी उसकूं मट्टी या कलीके पात्रमें उकालणा आठमें भागका पाणी रखणा और छाणलेणा बहोत करके उकालणेकी औषधीका वजन एक वखतकी ४ तोलेकी है क्वाथ थोडानरमकरणा होय तो चोथा हिस्सा पाणी रखणा और एकवेर उकालेबाद कूचा पिछाडी छाणे बादरहै, उसका दुसरी वेर फेर सांझकूं उकाला इसी तरे किया जावै वो परक्वाथ कहलाता है, लेकिन् सांझकूं उकाले भये क्वाथका कूचा दुसरे दिनवासी उपयोगमें लेणा नहीं फजरका सांझकूं लेणा नाताकतकूं क्वाथका जादा पाणी देणा नहीं, नये ज्वरमें पाचन क्वाथ अर्द्धावसेष रखकर देणा, कुटकी आदिखारा पदार्थकाक्वाथ ज्वरपके बाददेणा, इसकूं काढा जोसिंदाभी कहते है ॥

(कुरला) दवाकूं उकालकर पाणीका अथवा रातकूं भिगाये भये ठंढे हिमका फिटकडी नीलाथोथा वगेरे यूंही सादे पाणीमें मिलाकर मुखपाक रोगमें कुरला करणेमे आवै उसकूं संस्कृतमें गंडूप कहते है, त्रिफला रांग तिलकंटा चंपेलीके पत्ते दूध घी सहतमें.

(गोली) कोईभी दवाकूं अथवा सत्वकूं (घन अथवा एकस्टाकट) सहत नींबूका रस आदेकारस पानकारस गुड अथवा गुगलकी चासणीमे डालकर गोलियां बनाई जाती है, छोटी, वडीकूं तो मोदक कहते हैं, गूगल त्रिफलाके क्वाथमे सुधता हे शिलाजीतभीइसीमें.

(घी-तथा तैल) जिस जिसका घी अथवा तैल बणाणा होय उसका स्वरस अथवा दवायोंका पूर्वोक्त काढा याकल्क उससें चो गुणा घी अथवा तैल लेकर घी तेलसें चोगुणा पाणी अथवा दूध गोमूत्र लेणा, सूकी औषधीकूं १६ गुणा पाणीमें उकालकर चतुर्थांस रखणा, क्वाथसे चो गुणा घी तथा तेल लेणा, गीलीकी चटणी डालणी, सबकूं उकालते पाणी जलजाय औषधका भाग पक्कालाल होजाय घी अलग होजाय तब ऊतार ठंढा कर छाणलेणा, तैलमें तो झाग आते बंध होजाय तब तैल तइयार भया समझ झटनीचै उतार लेणा, घीमें झाग आतेही उतार लेणा ये परिक्षा है, बाकी घाणीमें १ पाताल यंत्रादिक २ सेभी वस्तुओंका तैल निकलता है, गुरुगम शास्त्र प्रमाण है, पीणेकी मात्रा ४ तोला.

(चूर्ण) सूकी दवाइयोंकों सामलकर कूट कपडछाण करै उस चूर्णकी मात्रा ०॥ सें १ तोला.

(धूआं–धूप) अंगारमें दवा सिलगाकर जेसें घरकूं धूप देकर हवा साफ करी जाती है, तेसें शरीरपर कितनेक रोगोंमें चमडीकूं दवाका धूआंदेणेमें आता है अंगारेपर दवा डाल उसपर खाट बिछाकर उसपर बैठकर मूंतो उघाडा रखणा और सब वदन

कपडेसें एसा खाट समेत चो तरफसे ढकणा सो धूआं चाहर नहीं निकलणे पावै अंगपर लेणा.

(धूम्रपान) जेसें दवाका धूंआं वदनपर लिया जाता है तेसें दवाकूं हुक्केमें भरकर मूसे यानाकसें पीते हैं, फिरंग रोगकी गठियापर.

(नस्य) नाकमें घी तेल के संग भूकी सूंघणी उसकूं नस्य कहते हैं.

(पान) कोईभी दवाकूं ३२ गुणा अथवा उससें भी जादा पाणीमें उकालकर आधा पाणीवाकी रखणेमें आवै उसकूं पिये सो पान कहलाता है, (पुटपाक) कोईभी हरी वनस्पतीकूं पीसकर गोलावणाकर उसकूं वडयाएरंडीके याजामूनके पांनमें लपेट ऊपर कपडमट्टीका थर देकर थेपडी छाणोके भूकेमें सिलगाकर धरदेणा गोलेकी मट्टी लाल होणेसे निकालकर मट्टी दूर कर रस निचोडलेणा वनस्पती सूकी होय तो जलमें पीस गोला करणा इस रसकूं पुटपाक कहते हैं, उसके पीणेकी मात्रा २ सें ४ तोलेतक

(पंचांग) मूलयाने जड पान फल फूल छाल इसकूं पंचांग कहते हैं

(फलवर्त्ती) योनि अथवा गुदाके अंदर जाडी वत्ती दवाकी देणीसो इसमें घी अथवा दवाका तेल यासाउन वगैरे दिया जाता है.

(फांट) एक भाग दवाके चूर्णकूं आठ भाग गरम पाणीमें कितनेक घंटोंतक भिगाकर पीछे उस पाणीकूं दवा मुजव पीणा, ठंढे पाणीमे १२ घंटेतक भीजणेसें फांट तइयार होता है, इसकी मात्रा ५ सें १० तोलातक.

(वस्ति) पिचकारीमें प्रवाही दवा भरकर मलया मूत्रके ठिकाणे दवा चढाणी वो खाणेके दवामाफक फायदा करती है, इसवास्ते असर होणेवास्ते पिचकारी मारफत दूणी दवा चढाणी.

(भावना) दवाके चूर्णकूं दुसरा रस पिलाणा उसकूं भावना कहते हैं, एकवेर रसमें घोटकर सुकाणा तव एक भावना कहलाती है.

(वाफ) वाफ वहोत तरेलीजाती है, वहोतसे सेक और वांधणेकी दवाभी वफारेका काम देती है, एकेलापाणी अथवा कोइभी चीज डालके उकाला भयापाणी सांकडे मूंके वरतणसे लेणा विधि गरम पाणीमें पीछे लिखी है.

(वंधेरण) पान वगैरे कोईभी वनस्पतीकूं गरम करके शरीरकी दुखती जगेपर वांधणा उसकूं वंधेरण कहते हैं.

(मुरव्वा) हरडे आमला वगैरे जिस चीजका मुरव्वा वणाणा होय उसकूं उवालकर करडी वस्तु होय तो फिटकडी वगैरे के ते जावसें नरमकर धोकर दुगणी या तिगुणी खांडया मिश्रीके चासणीमें डुवाकर रखणा मधुपक्व हरडे वगैरे उसकुं मुरव्वा कहते है.

(मोदक) बडी गोलीकूं मोदक लड्डू कहते हैं, वो मेथी सूंठपाक वंगेरेका गुड खांड मिश्री वंगेरेकी चासणीकर बांधणेमें आवे सो.

(मंथ) दवाके चूर्णकूं दवासें चोगुणे पाणीमें डालणा हिलाकर या मथकर छाणकर पीणा सो.

(यवागू–कांजी) अनाजके आटेकूं छगुणे पाणीमें उकालणा जाडा सो

(लेप) सूकी दवाके चूर्णकूं अथवा गीली वनस्पतीकूं पाणीमें पीस लेप करणेमें आवेसो, लेप दोपहरकूं करणा ठंढीवखत नहीं करणा रगतपित्तके सूजन तथा दाह खूनविकारकूं हर कोईभी वखत करणा.

(लूपरी पोटिस) गहूंकाआटा अलशी नींबकेपत्ते कांदा वगैरेकूं जलमें वाफकर अथवा गरम पाणीमें मिलाकर लुगदीकर सोजा तथा गठगूमटपर बांधे सो

(शेक) शेक वहोत तरेसें किये जाता है, कोरे कपडेके गोटेका रेतीका इंटका गरमपाणीका भरीकाचकीसीसी वगैरेका और गरम पाणीमें लुवाकर निचोये भये फलालीण उनूं कपडेका अथवा वाफ दिये कपडेका पाणीके वाफका सेक पहली लिखाभी है, तोभी लिखते हैं, तपेलीमें पाणी तथा अफीमकाडोडा वगैरे डाल पाणीकूं ऊकालणा तपेलीपरचालणी ढकणी चालणीपर फलालीणके कपडेका टुकडा धरणा उसपर दुसरा वरतण थाली वगैरे ढकदेणा चालणीके छेदोंमेंसें फलालीणकूं वाफ लगेगा उसकुं दुसते जगे सहे जाय ऐसा धरणा.

(स्वरस) कोईभी गीली वनस्पतीकूं पीसकर जरूर पडेतो थोडा जल मिलाकर रस निकालणा सो जो गीली वनस्पती नहीं मिले तो सूकी दवा अठगुणे पाणीमें उकालकर चोथा भाग रखणा अथवा २४ घंट पाणीमें भिगाकर रखणेसें पीछे मसलकर छाण लेणा, गीली वनस्पतीके स्वरसके पीणेकी मात्रा २ तोला सूकीदवाके स्वरसकी ४ तोला चालककूं ॥ तोला.

(हिम) औषधके चूर्णकूं छ गुणे जलमें रखकर रातभर भिजाणा फजरमें छाणलेणा उसकूं हिम कहते हैं.

(क्षार) जव वगैरे वनस्पतीमेंसें जवखार मूलीका क्षारपाठेका आंधी झाडेका इत्यादि वहोत चीजोंका खार करणेकी रीत इस मुजव है, वनस्पतीकूं मूलमेंसें निकालकर पंचांग जलाकर राखकर पीछे चोगुणे जलमें हिलाकर एक मट्टीके वरतणमें एकदिन रखकर ऊपरका नीतरा जल कपडेसें छाण लेणा उस जलकूं फेर हिलाणा आखरक्षार नीचे सूककर जम जायगा.

(सत) गिलोय वगैरेका गीलीकूं कूट जलमें मथकर एक पात्रमें जमणे देणा वाद ऊपरका जल धीरेसें निकाल डालणा पीछे नीचैजोसुपेदरहजाय सो, सूके वाद सत जमता है.

(सिरका) अंगूर जामून इक्षु वगैरेका रस निकाल थोडा नोसादर डाल धूपमें धरणा सडवडणेपर तीन दिनसे या सात दिनसें वोतल भर धरदेणा.

(गुलकंद) गुलाबके फूलकी पंखडिया या सेवतीके जिसमे मिश्री वुरकाकर थरपर थर देणा ढककर धरदेणा जब फूल गलके एक मेक हो जावे महीने दो महीनेसें वो गुलकंद होता है.

(जुलाब) पहिली तीन दिन तैलादिकका मर्दन कराणा वायुके कोठेवालेकूं दस्त नहीं लगता इसवास्ते ४ तोला घी या औषधीका वणाया घी तेल दिन ७ पिलाणा पित्त वालेकूंभी पिलाणा कफवालेकुं जादा मालस कराणा स्नेहभी पिलाणा वाद कोठा नरम करणेकूं सूंफ गुलकंद या मुनका जीरा सूंफ सोनामुखी निशोतकी छाल गुलाबकली दोदो रुपे भर लेकर ६ पुडीकर १६ तोला पाणीमें उकालकर आधारहै तब उतार ठंढाकर २ तोला वूराडालकर दोनुं वखत दिन तीन पिलाणा, ये मुंजस है, खीचडी या दालभात चंदलियेका सागविनामिरचका खाणा, चोथेदिन काली निशोतका चूर्ण तोलेभर चैत्रमहीनेमें सींधा निमक ५ मासे कफ तथा वायु रोगमेंभी निमक मिलाकर फक्की देणा, दिनकी वारे-वजे खीचडी पतली घीके संग खिलाणा, एक वखत, दिनकी नींद लेणी नहीं, वोझा उठाणे आदि कोइभी तरेकी खेचल करणी नहीं, आसोजकाती तथा पित्त और खून विकारमें वूरेके संगदेणा, दिनकूं च्यार पांच वजेकफरोगी टाल सूफ गुलकंद घोटकर या सूंफ १ भर उकाल पाणी छाण २ रुपे भर गुलकंद डाल ऊपरसें पी लेणा, मिरचाईके वीज १ भर लेणेसे ऊपर मुजब दस्त होता है, हेजा चलता होय तो दस्तकी दवा नहीं देणा कफके रोगीकूं जुलाफा विषमा १ तोलेभर सूंठ ३, मासा सींधा निमक ३ मासा नींवूके रसमे घोट फेर देणा, छब दिन जुलाबपर खीचडी दाल भात या दलिया ६ दिनतक खाणा इच्छाभेदीरस पूज्यपादगुटी नाराचरस छुरीकार रस सोनामुखी कपीला सांढकादूध अर्कदूग्ध थोहरका दूध इंद्रायण इत्यादि जुलाबकी अनेक दवाइयां है, रसोंके जुलाबपर दस्त होता जाय ज्यों ज्यों वूरेका सरवत पीणा आंमके संग दवा दस्तमें निकले वाद फेर दस्त नहीं होता, उलटीकी दवा पहली देकर फेर वाद दो या तीन दिनके पीछे जु-लाब देणा, आंम पचाणेकिरमालापंचक अच्छा होता है, मुसलमीन हकीमोंके उमदा जुलाब अमलतास याखीरकिस्त दूध, या कची गुलाबकली भात संग रांधकर मिश्री मि-लाकर खिलाते हैं, तीन दिनमे ३० दस्तका उत्तम जुलाब २० का मध्यम १० का हलका, गरमी जुलाब वाद जादा मालम देतो सूंफ गुलकंद ६ दिन पिलाना विशेष विधि सायर हकीमोंकी टहल वंदगी और उनकी महरवानी है, मुसलमीनोकी तवारीकपै कंवराइमें लिखा है. अयपेकंबर मेरे कुदरतीका दावा दुनियापर नामी हकीम करसकते हैं, दुसरा कोइभी नहीं, आखर उस पेकंबरने ये वात हुकम खुदा मुजब हकीममें प्रत्यक्ष देखी है,

सीवजे भागवतमें शैव लोकोंके वैद्य धन्वंतरीकूं परमेश्वर लिखा है, अंग्रेजोके सर्वोपरी हुकम डाक दरोका है, लेकिन् ये बात पूर्ण विद्वानोकेवास्ते है, अदमीका जुलाब और उसका जापा बिगडा भया महा कष्टकारी, होता है काष्टादिक जुलाब लेकर निराहार ठंढा पाणी आदमी पीलेतो जलंदर हो जाता है, बहोत खयाल करके जुलाबपरवरतणा जुलाबसें जादा दस्त होजाय तो शूल कफका दरद कै खूनभी दस्तमें आने लगता है, वाईटे हाथपैर ठंढे होते हैं, तब ठंढे जलसे हाथपैर धुलाणा आंखोपर छांटणा वेर २ चावलोकी भूनी भई खील और मिश्री जलमें मिलाकर पिलाणा, गुलाबका अतर या मिटिया ठंढा अतर सुंघाणा जुलाबकी दवाखाये पीछे जीमिचलावे तो पान बीडी चबाणा पित्त रोगीकूं आमसें पैदा भये रोगोंमें पेटके रोगमें आफरेके रोगमें कोठा शुद्ध करणेकूं कोठ कृमि विसर्प वातरक्त कफ खास पांडू जहर दोष निकालणे इतनोंमें जरूर दस्त देणा, रोगीकी ताकत अवस्था विचारके, बालककूं वृद्धकूं बहोत घी तेल पिये भयेकूं जखमवालेंकोक्षय उरक्षतरोगीकूं, डरे भयेकूं, थकेकूं, प्यासके रोगीकूं, बहोत जाडावदन मेद वृद्धिवालेकूं, गर्भणीकूं, बारेदिन पहले बुखारवालेकूं, जापेवालीकूं, मंदाग्नीवालेकूं, मदात्यई रोगीकूं, लूखे वदनवालेकूं, इतनोंकों जुलाब नहीं देणा, इति जुलाब विधि ॥

॥ अथ वमन वीधिः ॥

पहले यवका पतला दलिया घाट गलेतक भरकर पिलाणा, या दही या दूध पिलाणा लेकिन् वमन कराणे वालेकूं घी तेल सात दिन पिलाय, मालस कराय, पसीना निकलवाके फेर दुसरेदिन ये चीजें फजरमें पिलाकर फेर वमन करणा कफके रोगीकूं वमन करणेकूं पींपल आरीठा वच सींधा निमक, सहत मिलाकर, गरम जलसें पिलाणा, पित्तके रोगीकूं पटोलमे खारापरवल या खारी तुराई या वृंदाल फल अरडूसा या नीवकी छाल उकालकर ठंढे जलसें पीणा कफवायूके रोगमें पहली दूध पिलाय मैणफल पिलाणा अजीर्णके रोगमें वच और गरम जल पिलाणा उकडू बिठलाकर गलेमें एरंडपत्रकी पिछलीनाल डाल वमन कराणा फेर कफ रोगीकूं पींपल इंद्रजव वच अथवा मैणफलके चुर्णकूं गरम जलमें सहतडालकर पिलाणा और वमन कराणा जहर खाया भया निकालणेकूं खट्टी छाछमें निमक डाल पिलाणा अथवा मैणफल या नीलाथोथायाकपासकी मींजी या अफीम खाये भयेकूं श्वानविष्टाभी पिलाते हैं, इतने रोगोंमें वमन कराणासो लिखते हैं कास श्वास कफके रोगमें हृदय रोगमें जहरपीडामें गलशुंडी रोगमें भ्रम रोगमें कोठ रोगमें वमन करणा चाहिये रसकपूर खाणेसें गंठियाभई होय उसमेंभी वमन कराणा, बहोत उलटी होणेसें हिचकी होती है, गलेमे दरद बेहोसी होय प्यासभी होजाती है, तब आंबले खस चावलोंकी खील (लाई) चंदन इनसबोंकों मथकर सहत मिश्रीके संग पिलाणा या पीस घी सहत मिश्रीसें चटाणा बाद पथ्य मूंगकी दाल विना मिरचकी, या भात मिलाकर खिलाणा तीन दिनतक, बाद जुलाब देणा इति वमनविधिः ॥

दवाईकी चीजोंकी इंग्रेजी तथा हींदीमें नाम

१ इनफ्युजन=चा	२ ऐकवा=पाणी
३ ऐकस्ट्राकट=सत्व–घन	४ ऐनिमा=पिचकारी–वस्ति
५ ओल्यम=तेल खाणेका	६ अंग्वेन्टम=मलम
७ कन्फेकशन=मुरब्बा–आचार	८ टिंकचर=अर्क
९ डिकोकशन=काढा–उकाली	१० पल्वीस=चूर्ण
११ पलास्टर=लेप	१२ पोल्टीस=लूपरी
१३ फोमेनटेशन=शेक	१४ बाथ=बाफ स्नान
१५ बिल्स्टर=फफोला उठाणा	१६ मिक्श्चर=मिलावणी
१७ लाइकर=प्रवाही	१८ लिनिमेन्ट=तेल लगाणेका
१९ लोशन=पोता–धोणेकीदवा	२० वाईन=आसव

देशी वजन=तोल

१ रत्ती=चिरमीभर	४ वाल=अंदाजन	१ दोआनीभर
३ रत्ती= १ वाल	८ वाल=	१ पावलीभर
३ वाल= १ मासा	१६ वाल=	१ आठआनाभर
६ मासा= १ टंक	३२ वाल=	१ रुपियाभर
२ टंक= १ तोला	४० रु० भर=	१ शेर पाउंड रतल
कहांइटंक ४ मासेका है.	८० रु० भर=	१ शेर साहजानी

अंग्रेजी तोल माप.

सूकीदवायोंका तोल		पतली दवायोंका माप	
१ ग्रेन= १ गहूंभर		६० बूंद= मीनीम=	१ द्राम
२० ग्रेन= १ स्कुपल		८ द्राम=	१ औंस
३ स्कुपल= १ द्राम		२० औंस=	१ पीन्ट
८ द्राम= १ औंस		८ पीन्ट=	१ ग्यालन
१२ औंस= १ पाउन्ड			

२ ग्रेन= १ रत्ती ६ ग्रेन= १ वाल १ औंस= २॥ रुपियाभर

जो प्रवाही पतली दवायें जहरी अथवा वहोतते जनहीं होती ऐसी दवा साधारण रीतसें चमचा वगैरे भरकेभी पिलाते हैं, वो इस मुजब

१ टी० स्फूनफुल= १ द्राम	१ टेबल स्पूनफुल= ४ द्राम ३ औंस
१ डिजर्ट० स्पूनफुल= २ द्राम	१ वाईनग्लासफुल= २ औंस

इंग्रेजीमें ऊमर मुजब दवादेणेकी देसी मात्रा.

पुखत ऊमरके आदमीकूं पूरी मात्राका प्रमाण १ भाग गिणे तो.

१–३ महीनेके बालककूं पूरी मात्राका	$\frac{1}{6}$	३–४ वर्षके बच्चेकूं पूरी	$\frac{1}{2}$ भाग
३–६	$\frac{1}{4}$	४–७	$\frac{1}{3}$
६–१२	$\frac{1}{3}$	७–१४	$\frac{1}{2}$
१–२ वर्षके	$\frac{1}{2}$	१४–२१ जवानकूं	$\frac{3}{3}$
२–३	$\frac{1}{2}$	२१–६० पुखत ऊमरकूं	पूर्णमात्रा

एक महीनेके बच्चेकूं १ वाय विडंगके दाणेके वजन जितनी दवा देणी दो महीनेके बच्चेकूं दो दाणे जितनी, इसतरे दर महीनें एक २ वाय विडंग जितनी चढाणी इसवजे १२ महीनेके बच्चेकूं बारे वायविडंग जितनी दवा देणी जैसें बच्चेकी मात्रा ऊमरकी चढतीमें चढाकर देते हैं, तैसें साठवर्षकी ऊमर पीछे बुढ्ढेकी मात्रा धीमें २ घटाणी चहिये अर्थात् ६० तक पूरी मात्रा और पीछे सात २ वर्षसें ऊपर लिखे क्रमसें कमती करते जाणी धातुकी भस्म तथा रसायण दवाकी मात्रा १ राईसें जादामें जादा १ वाल तकभी दी जाती है.

अंग्रेजी–मात्रा

ऊमर	जादामें जादावजन एक औंस	जादामें जादावजन एक द्राम	जादामें जादावजन एक स्कुपल
१–६ महीने	२४ ग्रेन	३ ग्रेन	१ ग्रेन
१–१२	२ स्कुपल	५ ग्रेन	१॥ ग्रेन
१–२ वर्ष तक	१ द्राम	८ ग्रेन	२॥ ग्रेन
२–३	१। द्राम	९ ग्रेन	३ ग्रेन
३–५	१॥ द्राम	१२ ग्रेन	३ ग्रेन
५–७	२ द्राम	१५ ग्रेन	५ ग्रेन
७–१०	३ द्राम	२० ग्रेन	७ ग्रेन
१०–१२	०॥ औंस	०॥ द्राम	०॥ स्कपल
१२–१५	५ द्राम	४० ग्रेन	१४ ग्रेन
१५–२०	६ द्राम	४५ ग्रेन	१६ ग्रेन
२०–२१	१ औंस	१ द्राम	१ स्कपल

विशेष सूचना.

(१) मात्रा शब्द जिस २ जगे लिखा होय उहां उसका अर्थ दवा देणेका एक टंकका वजन समझणा (२) ऊपर अवस्था मुजब दवाओंकी मात्राकावजन लिखा है,

लेकिन् उसमेंभी ताकतवर और नाताकतकी मात्रामें वध घट करणा चाहिये फेर औरत मरदकी जाती ऋतु रोगका प्रकार वगैरे बातोंका विचार करके दवाकी मात्रा देणी (३) बच्चेकूं जहरी दवा देणी नहीं अफीम मिली भई दवाभी चार महीनेके अंदरके बच्चेकूं देणी नहीं उसके सिवाय जो देणा होय तो कोई विद्वान वैद्य या डाक्दरकी सल्ला लेकर पीछै देणा (४) चूर्ण याने फाकी रूप दवा जादामें जादा २ वाल के अंदरकी देणा और पतली दवा चार आनेभर अथवा एक छोटे चमचेभर देणा लेकिन् उसमें दवाईका गुण दोष तथा स्वभावका विचारकरणा जो दवा पुखत ऊमरके अदमीकूं जिस वजनसें दी जाय वो ऊपरके लिखे मुजब अवस्था मुजब भाग करके देणा (५) बच्चेकूं सूंठ मिरच पींपर लालमिरच जेसी तीक्ष्ण दवायें तेसें नसेवाली मादक दवायें कभी देणी नहीं (६) गर्भिणी स्त्री की जुदे २ रोगोंकी जो खास दवाई शास्त्रकारने लिखी है, वोही देणी चाहिये क्योंके बहोत गरम दवा तथा दस्तावर तीखे इलाज गर्भकूं नुकशान पहुंचाता है, (७) सब रोगोंमें सब दवाइया ताजी और नई देणी लेकिन् वायविडंग छोटीपींपर गुड धाणा सहत घी ये पदार्थ दवाके काम वास्ते एक वरसके पुराणे भये लेणा (८) गिलोय कूडाछाल अरडूसेके पत्ते भोंकोला (विदारीकंद) सतावर आसगंध विरयाली (सूंफ) वगेरे वनस्पतीकूं दवामें गीली लेणी लेकिन् दूणी लेणी नहीं (९) इनोके सिवाय दुसरी वनस्पतीयोंकूं सूकीलेणी सूकी नहीं मिले और गीली मिले तो लिखे वजनसे दूणी लेणी (१०) जो दरखत जाडा और वडा होय उसके जडकी छाल दवामें मिलाणी छोटे दरखतोंकी पतली जड होय सो लेणी (११) तमाम भस्म तमाम रसायण दवायें सब तरेके आसव ज्यों ज्यों पुराणे होते जाय त्यों त्यों गुणोंमें वढकर होता है, काष्टादिक दवाकी गोली वर्षभर वाद हीनसत्व होजाती है, चूर्ण दो महीनेवाद हीनसत्व होजाता है, घी तैल दवाइयोंका चार महीने वाद हीनसत्व होजाता है, पारा गंधक हींगलू वछनाग वगेरे शुद्धडाले भये काष्टादिकरस दवायोंका पुराणी होणे परभी गुण नहीं जाता है, (१२) क्वाथ तथा चूर्ण वगेरेके वहोत दवायोंमेंसे एक दोय दवा नहीं मिले तो हरकत नहीं अथवा उसके जेसी गुणवाली दुसरी मिले तो मिला देणी नुकसेमें एक अथवा दो तीन दवायें रोगके विरुद्ध होय तो वो निकालकर उस रोगकूं मिटाणीवाली नहीं लिखी होय नुकसेमें तो भी मिला देणी (१३) गोली वांधणेकी चीज नहीं लिखी होय तो पाणीमें वांधणी (१४) जिस जगे नुकसेमें वजन नहीं लिखा होय उस जगे सब दवा वराबर लेणी (१५) चूर्णकी मात्रा नहीं लिखी होय उस जगे चूर्णकी मात्रा का प्रमाण पाव तोलासें लेकर १ तोले तक समझणा जहरी चीज टालके.

देशी दवाइयोंके सोधनकी विधि.

१ जमाल गोटेकूं छीलकर गोवर गाईमें ऊकालणा जलडाल जव नरम होय तव

इंग्रेजीमें ऊमर मुजब दवादेणेकी देसी मात्रा.

पुखत ऊमरके वदमीकूं पूरी मात्राका प्रमाण १ भाग गिणे तो.

१–३ महीनेके बालककूं पूरी मात्राका	१/६	३–४ वर्षके बच्चेकूं पूरी	१/३ भाग
३–६	१/४	४–७	१/३
६–१२	१/३	७–१४	१/२
१–२ वर्षके	१/४	१४–२१ जवानकूं	१/२
२–३	१/३	२१–६० पुखत ऊमरकूं	पूर्णमात्रा

एक महीनेके बच्चेकूं १ वाय विडंगके दाणेके वजन जितनी दवा देणी दो महीनेके बच्चेकूं दो दाणे जितनी, इमतरे दर महीनें एक २ वाय विडंग जितनी वढाणी इसवजे १२ महीनेके बच्चेकूं बारे वायविडंग जितनी दवा देणी जैसें बच्चेकी मात्रा ऊमरकी वढतीमें वढाकर देते हैं, तैसें साठवर्षकी ऊमर पीछें बुढ्ढेकी मात्रा धीमें २ घटाणी चहिये अर्थात् ६० तक पूरी मात्रा और पीछें सात २ वर्षसें ऊपर लिखे क्रमसें कमती करते जाणी धातुकी भस्म तथा रसायण दवाकी मात्रा १ राईसें जादामें जादा १ वाल तकभी दी जाती है.

अंग्रेजी-मात्रा

ऊमर	जादामें जादावजन एक औंस	जादामें जादावजन एक द्राम	जादामें जादावजन एक स्कुपल
१–६ महीने	२४ ग्रेन	३ ग्रेन	१ ग्रेन
१–१२	२ स्कुपल	५ ग्रेन	१॥ ग्रेन
१–२ वर्ष तक	१ द्राम	८ ग्रेन	२॥ ग्रेन
२–३	१। द्राम	९ ग्रेन	३ ग्रेन
३–५	१॥ द्राम	१२ ग्रेन	३ ग्रेन
५–७	२ द्राम	१५ ग्रेन	५ ग्रेन
७–१०	३ द्राम	२० ग्रेन	७ ग्रेन
१०–१२	०॥ औंस	०॥ द्राम	०॥ स्कपल
१२–१५	५ द्राम	४० ग्रेन	१४ ग्रेन
१५–२०	६ द्राम	४५ ग्रेन	१६ ग्रेन
२०–२१	१ औंस	१ द्राम	१ स्कपल

विशेष सूचना.

(१) मात्रा शब्द जिस २ जगे लिखा होय उहां उसका अर्थ दवा देणेका एक टंकका वजन समझणा (२) ऊपर अवस्था मुजब दवाओंकी मात्राकावजन लिखा है,

लेकिन् उसमेंभी ताकतवर और नाताकतकी मात्रामें वध घट करणा चाहिये फेर औरत मरदकी जाती ऋतु रोगका प्रकार वगैरे बातोंका विचार करके दवाकी मात्रा देणी (३) बच्चेकूं जहरी दवा देणी नहीं अफीम मिली भई दवाभी चार महीनेके अंदरके बच्चेकूं देणी नहीं उसके सिवाय जो देणा होय तो कोई विद्वान वैद्य या डाक्टरकी सल्ला लेकर पीछै देणा (४) चूर्ण याने फाकी रूप दवा जादामें जादा २ वाल के अंदरकी देणा और पतली दवा चार आनेभर अथवा एक छोटे चमचेभर देणा लेकिन् उसमें दवाईका गुण दोष तथा स्वभावका विचारकरणा जो दवा पुखत ऊमरके अदमीकूं जिस वजनसें दी जाय वो ऊपरके लिखे मुजब अवस्था मुजब भाग करके देणा (५) बच्चेकूं सूंठ मिरच पींपर लालमिरच जेसी तीक्ष्ण दवायें तेसें नसेवाली मादक दवायें कभी देणी नहीं (६) गर्भिणी स्त्री की जुदे २ रोगोंकी जो खास दवाई शास्त्रकारने लिखी है, वोही देणी चाहिये क्योंके बहोत गरम दवा तथा दस्तावर तीखे इलाज गर्भकूं नुकशान पहुंचाता है, (७) सब रोगोंमें सब दवाइंया ताजी और नई देणी लेकिन् वायविडंग छोटीपींपर गुड धाणा सहत घी ये पदार्थ दवाके काम वास्ते एक वरसके पुराणे भये लेणा (८) गिलोय कूडाछाल अरडूसेके पत्ते भोंकोला (विदारीकंद) सतावर आसगंध विरयाली (सूंफ) वगेरे वनस्पतीकूं दवामें गीली लेणी लेकिन् दूणी लेणी नहीं (९) इनोके सिवाय दुसरी वनस्पतीयोंकूं सूकीलेणी सूकी नहीं मिले और गीली मिले तो लिखे वजनसे दूणी लेणी (१०) जो दरखत जाडा और वडा होय उसके जडकी छाल दवामें मिलाणी छोटे दरखतोंकी पतली जड होय सो लेणी (११) तमाम भस्म तमाम रसायण दवायें सब तरेके आसव ज्यों ज्यों पुराणे होते जाय त्यों त्यों गुणोंमें वढकर होता है, काष्टादिक दवाकी गोली वर्षभर वाद हीनसत्व होजाती है, चूर्ण दो महीनेवाद हीनसत्व होजाता है, घी तैल दवाइयोंका चार महीने वाद हीनसत्व होजाता है, पारा गंधक हींगलू वछनाग वगेरे शुद्धडाले भये काष्टादिकरस दवायोंका पुराणी होणे परभी गुण नहीं जाता है, (१२) क्वाथ तथा चूर्ण वगेरेके बहोत दवायोंमेंसे एक दोय दवा नहीं मिले तो हरकत नहीं अथवा उसके जेसी गुणवाली दुसरी मिले तो मिला देणी नुकसेमें एक अथवा दो तीन दवायें रोगके विरुद्ध होय तो वो निकालकर उस रोगकूं मिटाणीवाली नहीं लिखी होय नुकसेमें तो भी मिला देणी (१३) गोली वांधणेकी चीज नहीं लिखी होय तो पाणीमें वांधणी (१४) जिस जगे नुकसेमें वजन नहीं लिखा होय उस जगे सब दवा वरावर लेणी (१५) चूर्णकी मात्रा नहीं लिखी होय उस जगे चूर्णकी मात्रा का प्रमाण पाव तोलासें लेकर १ तोले तक समझणा जहरी चीज टालके.

देशी दवाइयोंके सोधनकी विधि.

१ जमाल गोटेकूं छीलकर गोवर गाईमें ऊकालणा जलडाल जव नरम होय तव

निकाल दो दो फाडकर विचकी जिली निकालकर फेर पाव चीजोंकूं सेर दूधमे मंद आंचसें सिजाकर जब दूध बहोत गाढा हो जाय तब निकाल गरम जलसें धो डालणा फेर पीस कोरेमट्टीके बरतणमें लगा २ कर इसका तेल सुका लेणा जब बुरादाविना तेलका होजाय तब फेर नींबूके रसमें खूब घोटणा बाद सूकाय किसीभी प्रयोगमें लेणा१ (२) जहर कूचीला पहली सात दिन बेलूरेतमें पाणीसें तरबतर करके रखणा बाद इसका पाव वजन २ सेर दूधमें मंद आंचसें पकाणा बाद चकूसें इसके दो पुडतोके बीचकी जहर जिली निकालकर छोटे २ नुकरे कतरकतर प्रयोगमें लेणा (३) वछनाग (कालासींगी मोहरा) पाव,हंडीमें दो सेर दूध डाल इसकी पोटली बांध दो आंगुल अधर ऊपर दूधके लटकाकर ढकणी देकर कपड मिट्टीसें मूं बंधकर मंद आंच जरा २ पोहरभर देणी बाद ठंढीकर पोटलीमेंके मोहरेमें नाजोरी सुई निकले तो सुद्ध समझणा दूसरी वृद्धसंप्रदाय सेठ । श्रीमगनमलजीकीं बताई ॥ तोलेभर मोहरेकूं दो तोले काली मिरच-संग घोटकर प्रयोगमें लेते हैं ॥ (४) खुरासाणी अजवाण इसीतरे दूधमें सुधता है, इस-तरे बहोतसी जहरी चीजोंका सोधन दूध है, (५) अतीसकूं गोवर पाणीमें डालकर मंद आंचसें सिजाकर नरमभये बाद वरतणा (६) जायफलके ४ टुकडेकर गेहूंके आटेमें सेककर भोभरमें परिपक्कर फेर प्रयोगमें लेणा (७) लौंग पींपर भंग तवेपर ऊनारणा याने थोडे गरम करणा जलाणा नहीं जीरा दोनुंभी इसीतरे (८) गूगल शिला-जीत त्रिफलाके काढेमें सुधता है, (९) तेलिया सुहागीकूं पहली गोवरसें मसल धोकर फेर पात्रमें धर फुला लेणा फिटकडीयोंही फुला लेणी हींग घीमे तलकर फेर प्रयोगमे लेणी (१०) नख लिया जो धूपादिक सुगंधीमें प्रसिद्ध उसकूं भेंसके गोवरमें या इम-लीके पत्ते इनोके संग जल डालके औटावै ये नमिले तो फकत मिट्टीमें जल डालके ओटावै मट्टी चिकणी मुलतानी वगैरे लेणी फिर निकालके जलसें धोकर घीमें भूनकर फिर पीछै गुड़ [illegible] हरके जलमें भिगाके रखदेवे तो नख द्रव्य शुद्ध होय फेर खाणेकी दवामें उपयोग करे (११) हलदी और वचकी शुद्धि गोमूत्रमें या लजालूके काढेमें या पंच-पल्लवके काढेमें ओटा फिर किसी खसवोइदार जलकी वाफ दोला यंत्रसें देतो वंच, ओर हलदी, शुद्ध हो (१२) नागरमोथेकी शुद्धि, कूट कर अधकिचरा कांजीमें भिगा देवे फिर पंच पल्लवके काढेमें या जलमें ओटाय धूपमें सुकावै फिर गुडके जलसें छिडकके आगसे भून चूर्ण लेवे फिर बकरीका मूत्र यासहजणेके छालके जलकी भाव-ना दे तो मोथा शुद्ध होय (१३) छड छबीलेकी शुद्धी, कांजीमें छडछबीलेकों ओटाय फिर भून लेवै फेर गुडके जल डवोयके फेर फूलोसें अधिवासित करे अर्थात् सुगंधित फूलोके संगरखे तो छडछबी शुद्ध होय [१४] केशर घीमें पीसणेसें शुद्ध होय अगर केशरमें कलोंजी सहतमें तें ने चावलोंके जलकी भावना देणेसें शुद्ध होय, कूठ

हिरणके सींग जेसी होती है लेकिन् उसमें कीडे नहीं होणा (१५) पारेकी सामान्य शुद्धि, पारेको तीनदिन इंटसें मर्दन करे फेर कुवारपठेसें फेर अमलतासके काढेसें फेर चित्रकके काढेसें तीन २ दिन तव पारा शुद्ध रसोंमे डालणेलायक होय (१६) गंधककी शुद्धी (आमलसार गंधक पाव पाव घीकूं गरमकर उसमें डाल फेर दूध दुसरे ठांम पात्रमें रखकर सेरभर उस पात्रके ऊपर वस्त्र वांधणा उसमें गला भया घीसमेत गंधक डाल देणा मैल वस्त्रमें रह जायगा फेर दूधमेंसें गंधक निकाल लेणा) इति गंधक शुद्धि (१७) मोती शंख कोडी मूंगे नीवूंके रसमें भिगाये शुद्ध होता है आठ पहर, धातु उपधातु रत्न उपरत्न विष उपविषोंका सोधन दूसरे भागमें लिखेगें.

देसीदवा. सामान्य अनुपान.

कोईभी चूर्ण गोली भस्मकी पुडी जिस चीजके संग खाणेका शास्त्र हुकम देता है, उसकूं अनुपान कहते हैं, इस शब्दका असली अर्थ तो एसा होता है, दवा खाकर उस-पर पीछेसें कुछ पीणा सो अनुपान, जहां कुछभी अनुपान नहीं लिखा होय उहां अनुपान पाणी समझणा देशी इलाजोंमें अनुपानकी माथा पच वहोत है, लेकिन् कितनेक अनुपान ऐसे हैं. सो वो दवा जितना काम गुजारते हैं, सहत तीक्ष्ण और भेदक होणेसें अनुपान तरीके वो वहुत उपयोगी है, सहत घी गुड मिश्री आदेका रस छाछ मखण हींग पींपर सूंठ सहजनेकी छाल ये सव सामान्य अनुपान है शास्त्रोंमें कितनेक मुख्य २ रोगोंमें खास अनुपान लिखे हैं, वो दवा उन२रोगोंमें इसही अनुपानसें देणा एसा तो कोई पक्का नियम वंधा नहीं है, तो भी ये अनुपान उन २ रोगोंकों दूर करणेवाले हैं इसवास्ते इलाज करती वखत ध्यानमें रखणा चाहिये वहोतसी वखत ये अनुपानोंकी दवाई उन २ रोगोंकों मिटाती है सो अव नीचे लिखते हैं.

(अजीर्णमें) नींद, हरडे, उपवास, नींवू,
(अतिसारमें) छाछ, कूडाछालरस, वकरीका दूध, दही, मोचरस,
(मिरगी) वच, अकलकरा, ब्राह्मी, सहत, पेठा, मालकांगणी,
(सन्निपात) आदेकारस, पानकारस कस्तूरी, अंवर,
(खासी) अरडूसेकारस, या रींगणीका,
(विषमज्वर) सहत, तथा पींपर, हरडे, अजमोद, या कुटकी चिरायता,
(संग्रहणीमें) छाछ, या पतले मीठे रसका आंम,
(जीर्ण ज्वरमे) सहत पींपर, या दूध संग, वर्द्धमान पीपर, या खपरिया शुद्ध, काली-मिरच मिला भया.
(कृमि) वायविडंग, हींग, कपीला, कौंचकेरूं,
(अर्शमस्सा) मिलावा, चित्रकमूल, सूरण,

(पांडु) मंडूर, तीनवरसका गुड, पडूष्ण, वायविडंग, नागरमोथेके संग छाछमें,
(क्षय) शिलाजीत, शितोपलादि चूर्ण, सोना,
(श्वास) भाडंगी, सूंठ,
(प्रमेह) हलदी त्रिफला.
(सुजाक) आंवला, तुलछीके पत्ते, गुलरके पत्ते, शिलाजीत,
(शूल) हींग, कुचीला, घी,
(आमवात) एरंडीया, गोमूत्र, लसण, गूगल, मेथीपाक, भिलावा,
(वातरोग) गूगल, लसण, घी, नयेकं कुचीला, पुराणेकूं सींगीमोहरा,
(वातरक्त) गिलोय, भिलावापाक तथा एरंडीका तेल,
(मंदरोग) सहतमिलापाणी, त्रिफला,
(अरुचि) बीजोरा, अनार, नींबू,
(व्रण) त्रिफला, गूगल, सोनामुखी,
(आम्लपित्त) मुनक्का, आंवला, पींपर, अद्रक, नारेलजल,
(उपदंस) आककी जड, तूंबेकी जड, विरेच, उलटीकी दवा देनी,
(नेत्ररोग) त्रिफला,
(उन्माद) पुराणा घी, मनशिल शुद्ध,
(मूत्रकृच्छ्र) शिलाजीत,

किरण २ दूसरी.

निघंट दवा गुण.

(१ अकलकरा-) गरम वायुहर थूक लाणेवाला दांतोंके रोगमें जीभके जडपणेमें मूं रखणेसें फायदा जादा करके और दवायोंके संग दिया जाता है (आकार करभादि चूर्ण अकलकरा सूंठ शीतलमिरच केशर पीपर जायफल लोंग सुपेदचंनण ये आठों एकेक तोला अफीम चार तोला (गुण) स्तंभन धातूकों जाती होय तो बंधकरे (मात्रा-)१ रत्ती से २ रत्तीभर रातकूं सहतसें चाटणा (२ आंधीझाडा) कफघ्न उष्ण पेसाब लाणेवाल है इसका खार निकालणेंकी विधि देखो खारकी (अपामार्ग खार) खांसी कफ दू और श्वासमें फायदा करता है छातीका कफ जुदा करता है, तेसें पेटकी चूंक आफर वांईटेभी मिटता है कानमें इस क्षारमें तेल बनाया भया बूंदे डालणेसें कानकी शूल तथा फंडफडांट मिटता है, तेल बणाणेकी विधि पीछे लिखी है, आंधी झाडेका खा सम वजन हरताल संग पीस लगाणेसें छोटे २ मस्से गिरजाते हैं, अपामार्गके फूल वि छूके डंकपर मसलणेसें जहर उतरता है, इसके पंचांगकी राखकूं चोगुणे सहतमें चटा णेसें कास दम तथा आम्लपित्त निर्बल हो जरीवालेकूं गर्भिणी स्त्रीकूं छाती तथा भलेमें

खटास चढकर जलता है, सो मिटता है, (३ अजवाण) उष्ण वातहर दीपन वायु आंटा आफरा पेटकी चूंक वगेरे पेटके रोगमें अछी असर करती है,(अजमोदादि चूर्ण) अजमोद सेंचल सींधानिमक जवखार हींग तथा हरडे सब समभाग ये चूर्ण पेटका आफरा तथा अजीर्णपर अछा है, (अजमोदादि गुटिका–) अजमोद हरडे खारक केशर एक २ भाग जायफल मोचरस अफीम ये तीनों आधा २ भाग जावंत्री लोंग तथा सहत ये तीनों दो दो भाग बाजरीके दाणे जितनी गोली करणी बालकोंकी उलटी दस्त नींद नहीं आवै अथवा नींदमेंसें झचक उठै इन सबोंमें बहोत अछा फायदा, करता है (मात्रा) गोली १ सें २ (४ अतीसकी कली) ज्वरहरे कृमिहरे दीपन ग्राही बहोतसे बुखारोंके काथमें डाली जाती है, बच्चोंकी तो खास दवा है, (अतिविष चूर्ण) फकत कलीका चूर्ण कर बच्चोंकों सहतमें चटाणेसें बुखार खासी उलटी मिटती है, (मात्रा) बाल०॥ सें १ बाल (चातुर्भद्रचूर्ण–) अतिविष मोथा काकडासींगी पींपर चूर्ण सहतमें चाटणेसें उलटी दस्त बुखार खासी वगैरे बच्चोंके रोगोंपर बहोत फायदेबंद है (शृंग्यादि चूर्ण–) काकडासींगी अतीस पींपर इनोंका चूर्ण सहतमें देणेसें बच्चोंकी खासी बुखार उलटीकूं मिटाती है, मात्रा हरेक चूर्णकी १ बाल (५ अफीम–) ग्राही पीडाशामक नींदलाणेवाला स्वेदल स्तंभन दवा तरीके अफीम बहोत रोगोंपर फायदा करता है, मरोडा संग्रहणी अतिसार रक्तातिसार हैजा विना बुखारकी खासी दम अनिद्रा अंगपीडा उन्माद हिचकी मधुप्रमेह आंखके रोग तथा स्त्रियोंको अधूराजाणा और ऋतुधर्मके दोषमें अफीमकूं युक्तिसें तेसें दुसरी दवायोंके योगसें देणेसें जलदी असर करता है जहर है इसवास्ते बहोत साव चेतीसें उपयोग करणा (मात्रा० । सें ॥ रत्ती) (कुंकुमवटी) अफीम तथा केशर सम भाग सहतमें चावलके वजन जितनी गोली करणी सखत दस्तभी रुक जाता है, अजीर्ण अतिसार संग्रहणीकूं (मात्रा गो० १) (आमराक्षसी) अफीम जायफल लोंग शुद्ध हिंगलू और कपूर समभाग इनोंकी दो दो रत्ती भरकी गोली करणी उससे हैजे काभी सखत झाडा बंध होता है वाईटेभी बंध होते है, शरीर सतेज होता हैं, मात्रा २ रत्ती(अर्क अहिफेनादि गुटिका–) आकके सूके भये फूलोंका भूका दो तोला सींधा निमक २ तोला सेकामया अफीम० ॥ तोला तीनोंकों मिलाकर एकेक बालकी गोलीकरणी रगतपित्त अर्थात् शरीरके किसीभी रस्तेसें खूनगिरे सो तथा उरक्षत याने जिस क्षयनमें खूनमिले खंखार गिरे सो एसे रोगोंमें ये गोलियां बहोत फायदा करती है,(मात्रा २ रत्ती) (६ अरडूसा) कफघ्न रक्तस्तंभक ग्राही) अरडूसेका पान बहोत काढोंमें गिरता है, खासी क्षय श्वास दम वगेरे छातीके रोगोंमें बहोत फायदा करता है, रक्तस्तंभक और कफघ्न होणेसें कफकूं निकाल खूनकूं बंध करती है, और फेफसा सडतामया मिटता है, कफके बुखारमें तथा बच्चे सरदीसें जकडजाते हैं. गलेमें तांत बोलती

है, बुखार चढ जाता है, और श्वास चलता है, उसमें पानका रस जरा गरमकर पिलाणेसें तथा पानके कूचेकूं छातीपर रखकर ऊपरसें सेक करणेसें तुरत आराम होता है, (वासा स्वरस) अरडूसेके गीले पानोंका रस १ तोले रसमें १ तोला सहत पींपरका चूर्ण १ सें २ वाल भुरकाकर पिलाणेसे कफ निकल जाता है, छाती हलकी पडती है, (वासा पुटपाक) देखो पुटपाक बणाणेकी विधि, रसनिकाल सहतमिलाय पीणा (मात्रा १ सें दो तोला, इस पुटपाकसें क्षय अतिसार रक्तातिसार मिटता है (वासादि काथ) अरडूसेकापान गिलोय भोरींगणी जो हरडे दाख और पींपर समभाग काथ करणां (काथवणाणेकी क्रिया देखो) इससें खासी क्षय कफज्वर तथा दमकूं फायदा करता है (वासावलेह) अरडूसेके पत्तोंका रस३२तोला मिश्री८ तोला पींपर २ तोला ताजा घी २ तोला ये सर्वोंकों उकाल जाडा करणा ठरेवाद इसमें १। रुपेभर सहत मिलाणा क्षय उरक्षत खासी दम श्वास वगेरे छातीके रोगोंमें बहोत फायदा करता है (वासाखंड पाक) अरडूसेके पत्ते सेर १। लेकर पाणीमें उकालणा चोथा भागका पाणी बाकीरहे तब पाणी छाण उस पाणीकूं फेर चूलेपर चढाकर उसमें हरडेका बारीक चूर्ण तोला १३० तथा बूरा तोला ५० डालकर पाक करणा उतार ठंढा भयेबाद सहत तोला ४ वासकपूर तो. २ पींपर तो. १ और तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये चारों दोदो वाल एकेक वस्तु डालकर मिलाणा ये रक्तपित्तके भयंकर रोगकों मिटाताहै (७ अरणी) उष्ण वातहर सोथघ्न कफघ्न दसमूल तथा दुसरेभी कितनेक काढोंमें अरणी की जड काम देती है, इसके पत्ते सूजनपर बंधाते हैं (अग्निमंथादिलेप) अरणीकी जड काली जीरी कीडामारी शरपंखा सूंठ समवजन पाणीमें पीस जरा गरमकर सोजेपर लेप करणेसें भयंकर सोजन चलाजाता है सूवारोग संग्रहणी संधिवात दुसरीभी वादीमें सांधोंमें तथा दुसरी जगे सोजन आतीहै उण सर्वोंकों ये लेप फायदा करता है (८ आरीठा) उष्ण वांतिकारक सांपके तथा अफीम वगेरेके जहरमें आरीठेका पाणी पिलाकर उसकूं उलटी कराणेमें आता है नाकमें पाणीकी बूंद नाखणेसें बेशुद्धि तथा आधासीसी मिटती है इसके पाणीसें दाह मिटती है (९ असालिया) उष्ण वातहर वाजीकर पौष्टिक असालियेकी खीर खाणेसें गुल्मचोट यकृत् (लिवर) तथा तिल्लीके खूनके जमावकूं तोडता है शूल तथा चोटलगे पर असालिया इकेला अथवा साजी खार हलदी मेदालकडीके साथ मिलाकर गरम कर लेप फायदा करता है (९ अलशी) शीतल मूत्रल फेफसा पेटके पडदेका रिदय वगेरे शरीरके कोइभी मर्मस्थानमें वरम होजावै उसमें खून चढताहै शूल चलतीहै और पकजाताहै तब अलसीकी पोटिस वेर २ बांधणेसें बहोत फायदा होताहै किसीभी दुखती जगे दरद होता होय तो सादेजलमें अथवा पोस्तके डोडेकूं उकालकर उस पाणीमें अलसीकी पोटिस बणाकर बांधणेसें दरद मिटताहै (लूपरी बणाणेकी विधि)

देखो) (११ आकडा) उष्ण शोषक स्वेदल वमनकारक कफघ्न क्षोभक वातहर (आकडेकीजड, फूल, पान, तथा उसका दूध, दवामें काम आता है, जडकी छाल सोधकर है, उलटी कराताहै,इसके सर्वगुण,एपीकाक्युऐन्हा नामकी अंग्रेजी दवाके गुणसें मिलता है, जडकी मात्रा एक बाल, (पान) बुखारमें पानकूं सेककर शिरकपालपर बांधणेसें पसीना आता है बुखार नरम पडताहै और बुखारमें शिरपर बांधणेसें मगज ठंढा रहता है पेटपर पत्ते बांधणेसें पेट नरम पडताहै पानके वाफे भये रसकी बूंदडालणेसें कानकी शूल मिटजाती है (अर्कतैल) तिलकातेल तोला १० आककादूध तोला ४० हलदी तो २० मनसिलतोला २० तेल बणानेकी विधिसें तेलबणाणा इसके लगाणेसें खाज खुजली तथा हरसका मस्सा सूक जाता है (अर्कादिक्वाथ– गजपीपर मिरच सूंठ और सींधा निमक सम भाग और चारोंके वजनसें वीसमा भाग आकके जडकी छाल तिली और कलेजा और जलंदरमें अछाफायदा करताहै (आकके दूधका घी) आकका दूध तथा मखण समवजन मिलाकर तपाकर घीवणाना खुजलीखाज इसकी मालिससें चलीजाती है (१२ अद्रक) उष्ण दीपन पाचन वातहर रुचिकर अनुपानमें इसका रस बहोत फायदे बंदहे वदनकूं जागृति करणेका इसके रसमें गुण है (आर्द्रकस्वरस) आदेका रस सहतमें पीणेसें खासी कफ तथा पेटपर वोझा होय सो नरम पडता है आंडोंमें वादी आगई होय तो आदेका रस और सहत पीणा भ्रम चक्कर पित्तके रोगमें आदेका रस २ तोला गायका दूध ७ तोला दोनोंकों उकाल कर आधा दूध जले तब उतार उसमें मिश्री डालकर पिलाणा (१३ आमली) सारक पित्तशामक तथा रुचिकर है दवामुजब अंमलीकी राख अथवा उसका खार शंखवटी नामकी गोलीबणाणेमें काम आताहै पत्ते इसके आंखवगेरेके सोजेपर वाफकर बांधे जाता है भिलावा चढा होय तो उसपर अंवलीका पान पीसकर मसलणेसें जलण मिटती है वदनपर भिलावा थोहरका दूध अथवा जमालगोटा लगणेसें चमडी उपडे और जलण होजाय तो अमलीकी गिर पाणीमें मिलाकर चुपडणा थोहरका रस अथवा एसीही कोई दुसरी गरम चीज आंखमें पडगई होयतो उसमें अंवलीके गिरमें घी मिलाकर अंजन करणा जमालगोटेका या थोहरके दूधवगैरेका जुलाब लिया होय और बंध नहीं होता होयतो अंवलीके गिरका सरबत मिश्री घी मिलाकर पीणेसें जो कदास पेटमें नही ठहरे तो दो तीनवखत पीलाणेसे जरूर जुलाबका दस्त बंध होजाता है गरमीकी मोसममें अंवलीका सरबत सोडावाटरका काम करता है और गरमीकी लू गरमी तथा पेसाबकी जलण मिटतीहै पित्तके बुखारमें इसका पाणी पिलाणेसें फायदा करताहै इन बातोंके सिवाय दुसरी तरे अंवली बहोत नुकशान करतीहै कच्चीअमली कभी खाणी नहीं पक्की अमलीभी तासीरकूं माने तो गरमीकी मोसममें खाणी आंवलीसें दांत जकड जाते हैं. जबाडी झल जाती है, शिर पकडीज जाता है, किसी वखत इससें खासी सिसकणा तथा दम उठ

जाता है, बुखारवाला तथा ऋतुधर्ममें आई गई औरत आंमली खाती है, तो हिचकी उठणेका डर रहता है, (१४ आंवला) खट्टा शीतल पित्त शामक शोधक सारक आंख तथा वालोंकूं अछा है, आंवले बहोत उत्तम रसायण चीज है, गीले तेसें सूके आंवलोंसें बहोतसी उत्तम दवायें वणती है, सहजसें वणसके एसी थोडी दवायें इहां लिखी है, (त्रिफला चूर्ण–) आंवले बीज विगर४ रुपेभर बहेडेकी छाल २ भर हरडे अमरसरीकी छाल १ भर अथवा जव हरड, कितनेक तीनोंकों सम वजन लेते हैं, ये चूर्ण शीतवीर्य है और आंखका रोग मगजकी गरमी कामला तथा पित्त विकारमें अनेक तरेसें दिये जाते हैं. ऋषभ पुत्र आत्रेय राजाने इसके गुण अपणी बनाई संहितामें बहोत लिखे हैं. (धात्री स्वरस–) पित्त ज्वरकी उलटी बुखारकी उलटी तीक्ष्ण पित्तप्रकोप तृषा शोषदाह इन सवोंकों गीले आंवलोंका स्वरस मिश्री सहत काली दाख मिलाकर पिलाणेसें दव जाता है,(रसायण चूर्ण)आंवला गोखरू गिलोय तीनोंसम भाग लेकर बारीक चूर्ण कपड छाणकर करणा अनुपान घी सक्कर पित्तके बिगाडसें भये तमाम धातु दोषकूं सुधारताहै, वीर्य पतला पड गया होयतो जाता होयतो अथवा मरदमीका नाश होगया होयतो बहोत दिनोंतक सेवन करणेसें जरूर पीछा होजाता है, मूर्च्छाका भयंकर रोग तेसेंही मिरगी और उन्मादमें भी अच्छा असर करता है, धात्री चूर्णकूं– दूधके संग सांझकूं खाणेसें कंठ बैठ गया होय सो सुधरता है, (१५ आसगंध–) धातु पौष्टिक है पाकमें चूर्णमें काथ वगैरेमें डाला जाता है, नाताकत और हीन सत्व छोकरोंकूं इसका चूर्ण दूधमें देणेसें वदनकूं ताकत देता है, आसगंध कालातिल घीमें तलकर चूर्णकर मिश्री मिलाय खाणेसें दुवलापणा मिटकर पुष्टता होती है, आसगंध तथा विरियालीका चूर्णकर टंक मे० ॥ भरचूर्ण दो दो तोला घी मिश्रीमें मिलाकर चाटणेसें सवतरेकी वायु सरण चमका कमर तथा सांधोंकी वायु मंदाग्नि निर्बलता मिटती है, स्तनोंमें दूध बढता है, सूतिका वायु मिटती है, मगज भर जाता है, धातु तथा ताकत बढती है, (१६ असोंदरा–) मूत्रल तथा शोधक है, आसोंदरेका काढा दूध मिलाकर पीणेसें हृदयरोग छातीका दुखणा शूल वगेरे मिट जाता है, (१७ इंद्रजव–) ग्राही दीपन पाचन ज्वरघ्न और कृमिघ्न है, दस्त हरस खूनका दस्त बच्चोंका मरोडा चूंक वगैरेकूं मिटाता है, लघु गंगाधर चूर्ण–) इंद्रजव मोथ कच्चीबीलगिरि लोद मोचरस ओर धावडीका फूल ये सब बराबर लेकर चूर्ण करणा इंद्रजवकी फक्की– इंद्रजव तथा वायविडंग शेककर चूर्ण करणा ये चूर्णसें बच्चोंका दस्त मरोडा उलटी कृमि सब मिट जाती है, (१८ इंद्रायण–) रेचक कृमिघ्न तथा पित्तनाशक है, इसके फल तथा जड ली जाती है, इंद्रायण (तूंबेके) संग दुसरी वायु हरता दवायोंकों मिलाकर वापरणेसें फायदा करता है, इकेला नहीं दिये जाता जलंदर वगेरे पेटके रोगोंमें अच्छा है, (१९ अहिखरेका बीज–) मूत्रल

और धातु पौष्टिक है, अहिखरे (तालमखानेका) चूर्णकर दूधमें पीणेसें धातु पुष्टी होती है, पाकोंमें भी पडता है, (२० एरंड) रेचक शोधक तथा वायु हरता है, एरंडकी जड पान तथा फलका तेल दवामें वापरते हैं, (जड–) बहोतसे वायु हर काथमें पडती है, पान जरा गरम करके आंडोंके तथा आंखोंके सूजनपर तथा औरतोके स्तनके पकणेके ऊपर बांधणेसें सोजा नरम पडता है, अथवा पत्तोंकों पाणीमें उकालकर उस पाणीका सोजेपर सेककरणा (एरंडीका तेल–) जुलाबमें बहुत अच्छा है, बच्चोंकोंभी एरंडतेलका जुलाब निशंकपणे दिये जाता है, मरोडा तथा आंतरोंके शूलमें ये जुलाब बहोतही अच्छा है, मरोडेकी आंकसी दस्त होणेका कारण (आंतरोमें भराभया पदार्थ) दूर करके पीछे मरोडेको दस्तकूं बंध करता है, विछोणेमें पडे रहणेसें पडी भई चांदी इस तेलका फोआधरणेसें तुरत आराम होता है, नारूके रोगमें सोजेपर नारू निकलेबाद उसकूं अच्छा करणेकूं एरंडीके तेलका फोआ धरणेसें अच्छा होता है, (मात्रा) सबसें जादा मात्रा २ रुपे भरसें ३ रुपेभर ऊमर मुजब १ भर० ॥ भर आखर दो वर्षके अंदरके बच्चेकूं दो आनीभर दूधके संग रोगों मुजब अनुपांनसें दिया जाता है, एरंडीका तेल उरुस्तंभ आमवात आंडोंमें दरद सोजन वगेरे रोगोंमें बहोत अच्छा है, (एलायची) ठंढी तेसें वायु हरता है, भोजन किये बाद पेटमें गडबडाट जीमिचलाणा चूंक आफरा वगेरेमें खाणेसें मिटता है, मुखवासमें अच्छी है, इलायची कबाबचीणी और मिश्री मूंमे रखणेसें मूंकी गरमी कम होती है, स्वर कंठ बैठा भया खुल जाता है, बाहर लगाणेके इलाजोंमें बहोत काम देती है, ठंढी होणेसें (एलच्यादि चूर्ण) इलायची गऊंला मोथ बोरकामगज पींपर चंदन कमोदचावल लौंग नागकेशर चूर्णकर सहतमें चाटणा (२२ एलिया–) रेचक तथा ऋतुलाणेवाला है, कारपठेके सुकाये भये रसकूं एलिया कहते हैं, (एलीयेकी गोली–) एलिया तो १ शुद्धकरा भया कुचीला दो आनीभर तजतो २ कलंभा तो १ कुटकी तो २ इन सबोंका चूर्णकर उसकूं बीजोरेके या नींबूके रसमे घोट दो दो बाल अंदाजन गोलीयांकरणी बंध कुष्टवालेके वास्ते ये अछी है एलिया और हींग येहिस्टीरीया (उन्मादके) तोफानकूं दबाता है एलिया तथाडीकामालीका लेप पेटपर करणेसें बच्चोंकें पेटका गोटा और चूंक मिटतीहै औरतोंके ऋतु धर्मके रोगमें एलिया अच्छा है गर्भवतीकूं एलियेकी दवा नहीं देणी और दुसरी बेमारीमें भी एलिया देते सावचेत रहणा बहोत देणेसें मरोडा होजाता है (२३ ओधमीजीरा) ईसबगुल कहतेहैं ठंढा ग्राही याने दस्तकूं रोकणेवाला इसकों पाणीमें भिगाकर लुआब निकाल मिश्री मिलाकर पीणेसें अतिसार रक्तातिसार पित्तातिसार तैसें आमातिसार याने पुराणी संग्रहणीकूंभी फायदा करता है उलटी और प्यासकूं मिटाताहै शेककर दहीमे डालकर पीणेसे दस्तबंध होताहै प्रदर चिणखिया पेसाबमें फायदा

करताहै दही ईसबगुल तेलिया सोहगी फुलाईभई १ चाल मिलाकर पीणेसें सखत मरोड़ा बंध होजाता है (२४ अंकोल) शोधक स्वेदल तथा उलटी लाता है, चूअेके जहरमें अंकोल बहोत फायदा करता है ऊंदरवायुमें इसकी लकडी घसकर पिलाणी चूहेके जहरसें तेसें और भी किसी जहरसें वदनमें चीरे २ पडजाते हैं उसमें ये लकडा घसकर लगाणेसें मिटजाताहै (२५ अंबर) उष्ण पौष्टिक सुगंधी मछलीकी सुकाई भई हंगारहे सच्चा अंबर भाग्यसेंही मिलताहै बजारमें जो अंबर मिलता है सोनकली है, असल अंबर बहोत गरम इसवास्ते किसीभी रोगमें अशक्त बेमार ठंढा वदन पडगया होय दांतखीली बैठगई होय रोगी मरण दशातक पहुचा होय उसकूं अंबर तथा कस्तूरी जेसे वस्तु देणेसें जरा हुसियारी तो आती है धातूकों तथा मगजकों सतेज करता है, इसी वास्ते भाग्यवांन लोक धातु पुष्टि दवामें इसकुं मिलातेहैं (२६ कडवी तुराई) रेचक तथा उलटी लाणेवालीहै पीलियेकी बेमारीमें इसका रस याकडवी तूंबीकी रसकी बूंदे नाकमें सुंघाते हैं जादापाणी नाकसें गिरणेपर नाकमें घी सुंघाते हैं. पीलिया चला जाता है (२७ कडवीनई) शोधक तथा सोथघ्न है दवामें उसकी गांठ काम आतीहै दोय आनेसे चार आनेभर घसकर पीणेसें महींनज्वर ऊतरताहै हाथ पैरोंका दाह तथा निर्बलताके सोजेपर उसका लेप करणेमें आता है (२८ कूडाछाल) ग्राही ज्वरघ्न पित्तशामक तथा ठंडीहै दस्तोके रोगमें उसका काढा अवलेह चूर्ण तथा पुटपाक करके देतेहैं रक्तातिसार याने खूनके दस्तोंमे बहोत फायदा करती है और अेपीकाक्युआना अंग्रेजी दवाकी बरोबरी करती है (कूडेकी छालका पुटपाक) छालकूं पीस चावलोके धोवणमें गोलावणाय पहली लिखी पुटपाककी रीत मुजबरसनिचोड लेणा मरोडेमें रक्तातिसारमें ये पुटपाक बहोत फायदा करता है (कूडाछालका घन) कूडाछालतो २ वीलकी गिर २ तोला अनारकी छाल तो १ इनोंका घन मुजब घनकरणा दोदो आनीभर गोलियां करणी मात्रा १ अथवा २ गोली मरोडेके दस्तमें देणी (कुटजावलेह) कूडाछालका चूर्ण १० सेर जल २५सेर उकालकर चोथे भागका जल रहे तब ३ सेर गुडडालकर फेर उकाल फेर चाटणे जैसा होय तब उसमें रसोत मोचरस त्रिफला त्रिकटु रेसाखतमी चित्रककी जड कालीपाट कचा आंवा कृमिघ्न अतिविष वायविडंग और नेतरवाला एकेक दवा चार चार तोलेका बारीक लघु गंगाधर चूर्ण ठरेवाढे अधसेरघी अधसेर सहत मिलाणा चाटणेसें हरस तथा रक्त ये सब बराबर लेकर बंधकर रोगोंकूं मिटाताहै (२९ कुटकी) सारकहै पाचक ज्वरघ्न चूर्ण करणा ये चूर्णसें बेफ्रा पाचन करणेका और दस्त साफ लाणेका गुण होणेसें बुखारके यण—) रेचक कृमिघ्न तथा ाले जाती है (कुटकी पाचन) कुटकी मोलेटी मुनक्का (तूंबेके) संग दुसरी वायु हरता कूटकर दोदो रुपेभर काथ तीनपाव पाणीमें उकाल चतु- नहीं दिये जाता जलंदर वगेरे पेखारपकताहै दस्तसाफ आता है बुखार उतरताहै (कडु-

भर्जित) कुटकीकूं तवेपर सेककर चूर्णकरणा बच्चोंके सादेबुखारमें सहत अथवा गुडके संगमिलाके १ बालचूर्ण लेणेसें एकाधदस्त होकर पेट हलका पडता है बुखार उतरजाताहै (३० कपीला) कृमिघ्न तथा दस्तावर है चिपटे चूरणियाकूं मिटाताहै कपीला जादा लेणें में आवेतो दस्तके संगपेटमें चूंक पैदा करता हैं इसवास्ते दोयसें चार आनीभर गुडमें अथवा छाछमें पीणा अथवा वायविडंग सेंचल जवखार जवाहरड वगेरे दवायो कों समवजन मिलाके उसमेंसें आधे रुपेभर छाछमें पिलाणा (३१ कपूर) उष्ण पसी नालाणेवाला और स्नायुको ढीला करता है कपूर खाणेमे तैसें बाहर लगाणेकी बहोत दवायोंमें डाले जाताहै पुरुषकी गुह्येंद्रि वेर २ जाग्रत होकर धातू निकलपडे तब १ बाल-कपूर १ रत्ती अफीममिलाकर उसकी २ अथवा तीन गोलीकर दिनमें २ तीन वखत लेणी इस तरे कितने एक दिन लेणेसें नसोंका उत्पातनरम पडता है और धातु स्रावबंध होताहै, तैसें प्रमेहमें उस अवयवके दरदमें १ रत्ती अफीम २ रती कपूरकी दो तीन गोलियांसे दरद मिटता है, कुचीलेका जहर कपूरसें ऊतरजाताहै फकत कपूर रती १ या १ बालतक देणा चाहिये वीच्छूके जहरमें पानमें और बच्छनाग (मोहरेके जहरमें) पाणीमें लेणेसें फायदा करता है, जिस घावमें जीव पडगयें होय उसमें कपूर भरणेसें कीडे नहीं रहते वडके दूधमें घसकर अंजन आंखमें करणेसें दो महीनेका फूला कट जाता है, (३२ किरायता) चिरायता ज्वरघ्न है, कडुआ पौष्टिक सारक तथा कृमिघ्न है, बुखारकी दवामें प्रसिद्ध है, बुखारके बहोतसें चूर्णोमें काढेमें चिरायता पडता है, (लघुसुदर्शनचूर्ण) गिलोय पींपर पीपलामूल कुटकी हरडे सूंठ लोंग नींवकी अंतरछाल तज सुपेद चंनण इन सबोके वजनसें आधाचिरायता मिलाके चूर्णकरणा साधारण सब बुखारमें अच्छा है, (लघुसुदर्शन नं० २) कुटकी चिरायता पित्तपापडा इन तीनोंका चूर्ण सामान्य बुखारकूं पाचन करके मिटाता है, चिरायता बुखारकी कम जोरीकूं दूर करणेमें जितना फायदा करता है, एसा बुखारकूं मिटाणेमें गुणकारी नहीं है, इसवास्ते उसके संग दुसरी ज्वर हर दवायें मिलाणी चहिये (३३ कलंभा) कडवा पौष्टिक पाचक भेदक साधारण बुखार तथा बुखारकी नाताकतीकूं मिटाता है, गर्भवंती औरतकी उलटी मिटाता है, अशक्त अदमीकूं तथा बच्चोंकों फायदा करताहै, पाचन करता है, तथा कृमियोंकों मिटाता है. बुखारकी दवामें डाले जाता है, (३४ कोंचके बीज) धातुपौष्टिकहे है, मरदमी देणेवाले पाकोंमे गिरता है, (आत्म गुप्तादि चूर्ण) कोंचबीज गोखरू सम वजन दोनोंके बराबर मिश्री दूधमें पीणेसें ताकत बढती है, (वृद्धदंड चूर्ण) कोंचबीज गोखरू सुपेद मूसली सुपेदसेमलकीजड आंवला गिलोयसत सबसम वजन सबके बराबर मिश्री दूधसें पीणा बुड्ढेकूं जेसें लकडी आधार देतीहै तेसेंना ताकत अदमीयोकूं ये चूर्ण ताकत देताहै, इसवास्ते वृद्ध दंड नाम दिया है, (३४ कु-

लथी) मधुर मूत्रल भेदक उष्ण पथरीकूं मिटाणेवाली पसीना हरणेवाली दालोंकी जात धान्य है, दक्षणमै बहोत पैदा होती है, काठियावाडवाले खाया करते हैं, दवामें कुलथी पैसावके रोगपर चलती है, पैसाव अटकके आता होय जलणसें बूंद २ ऊनरता होय या पथरीका रोग होय तो कुलथीकूं उकालकर उसमें नवटांक कुलथी चहिये काढा छाणकर शिलाजीत चंद्र प्रभागुगल अथवा सोराखार वगेरे पेसाव लाणेवाली दवायोंके संग एकचाल सींधा निमक मिलाकर पीणेसें पेसावकी पथरी कंकर निकल जाता है, ऐसे रोगीकों खाणेमेंभी कुलथीका उपयोग करणा सींधा निमक डाल इसकी दालखाणी कुलथीकूंशेक पीछै आटा करके वदनके मसलावेतो बहोतपसीना आता होय सो बंध होजाय (३६ कस्तूरी) वाजीकर उष्ण वीर्यस्तंभक आक्षेप वायूकों मिटाणेवाली कस्तूरीभी नकली बहोत आती है, अंबरकी तरे उपयोग होता है, कास कफ दम वगेरे रोगोंमे दुसरी दवायोंके संग दिये जाता है, (३७ कांकच) कृमिघ्न कडुई पौष्टिक ज्वरघ्न तथा पाचन है, बच्चोंके पेटकी कृमि दरद अजीर्ण आफरेमें कांकच के बीजोंकों सेकके उसका चूर्ण देणेसें फायदा करता है, विषमज्वर याने ठंढदेके बुखार अंतर देके बुखार आता है, जिसमें कितनेक दरजे क्वीनाईनके जितना काम करता है, इसवास्ते कांगसीके बीजोंकों काली मिरच मिलाके गरीब गांमोंके लोकोंने लेणा चहिये कांकचका बीज तीन भाग काली मिरच १ भाग चूर्णकी मात्रा ४ सें ६ वाल छ छ कलाकके अंतरसें लेणा विषमज्वर ठंढके सब बुखारों मिटाता है, (३८ काकडा सींगी) कफघ्न है, बहोतसें क्वाथोंमें गिरता है, शृंगादि चूर्णमें लिखा है, (३९ काकडीके बीज) ठंढा तथा मूलघ्न है, तरबूजका ककडीका खीरेका कदूका खरबूजेका पेठेका इत्यादिक सब पाणीमें घोट खीरेके बीजोंकों मिश्री मिलाय पीणेसें बंध भया पैसाव खुल जाता है, प्रमेह मूत्र कृच्छ गरम वायुपर अच्छा फायदेबंद है, इस बीजोके घोट पीणेसें सराप जादा पीणेसें जो मदात्पय रोग होता है, उसमें फायदा करता है, (४० कांचनार) शोधक पौष्टिक स्तंभन और रोपण है. गलेमें शरीरमें जुदी २ जगे गांठे उठ जाती है, उसकूं गंडमाल कहते हैं, कच नारकी छाल अथवा कचनार गूगल इस रोगके वास्ते सर्वोत्तमउपाय है गंडमालसें हाड सडता है एसे दुष्टरोगकूं मिटाता है (कचनारका चूर्ण) कचनारकी जडकी छालकाचूर्ण चावलके धोवणमें पीसकर अंदरथोडी सूंठडाल उसका बहोत दिनसेवन करणा गंडमालामें तथा कूब (पीठका हाडोमें सडणा घुसता है, उससें कूबनिकलतीहै एसे रोगोंमें इस चूर्णसें फायदा होताहै बचपणेमें निकलती कूब होतीहै सो मिटती है, वडीऊमरकी कूबका रोग असाध्यहै (कचनार गुगल) कचनारकी छाल ४०० तोछा बहेडा ८ तोला आंवला ८ तोला संठ मिरच पींपर तथा वायु वरणा एकेक चीज चार २ तोला तज एलायची तमालपत्र हरेकएकेक तोला. सबोंका

वारीक चूर्णकर चूर्ण बराबर शुद्ध गूगल मिलाकर गोलियां करणी चूर्णसें ये दवावहोत फायदे वंद है (४१ काथा) स्तंभन शीतल रोपण है पुराणे अतिसारमें अफीम वगैरे दुसरी दवाओंके संग देणेसें वहोत फायदा करता है, कितनेकठेमलमोंमें डाले जाता है चांदीकूं घावकूं रोपण क्रियाकर फायदा देताहै कत्थेकी मुख सुगंधकी गोलियां वणती है पांनवीडेमें खाते हैं (घाव चांदीका मलम) कथा मांजूफल वोदार इलायची इन चारोंका चूर्णकर पाणीमें पीसकर लगाणा (कायफल) उष्ण कफघ्न तथा वातहरहै, शरदी तथा शरदीका बुखार और कासमें वहोत फायदे वंद है (कट्फलादिचूर्ण) कायफल मोथ कुटकी कचूर काकडासींगी और पोकरमूल सम वजन ठंढ लगणेसें जो बुखार चढजाता है तथा छातीमें कफका जमाव होताहै दम गलेमें तांती बोले कफगिरे सहतमें चटाणेसें फायदा होताहै (४२ कालीजीरी) कृमिघ्न शोधक चमडीका दोपहरता तथा वायुहरताहै कालीजीरी खाणेमें तैसें लगाणेमें चमडीके दोषोंकों मिटातीहै वहोत दिनोंतक सेवनकरणेसें चमडीपरका कोढ ददोडे दाद पेटकागोला कृमि पेटकीचूंक अजीर्ण आफरे पर उसकी फक्की दोदो रुपेभर सातदिन लेणेसे ठंढका तपभी मिटजाता है अवस्था तासीर मुजवकममात्राभी है (कुष्टहरलेप) हरताल १ भागकाली जीरी ४ भाग त्रिफला एक भाग इन सवोंकों गोमूत्रमें पीसलेप करणेसें सुपेदकोढ चित्री कोढपर वहोत जलदी फायदा करता है, काली जीरीकीचा होती है, सोविलकुल कडवी नहीं लगती और येचा वायु प्रकृतिवालेकुं तथा ऊपरके रोगोमें फायदा करती है, नीवुके रसमें पीस लेप करणेसें जूंये मिट जाती है, निर्दोष दवा काली जीरी है, इसमें किसीभी तरेका डर नहीं है, (अवल गुंजादिलेप) कालीजीरी कासमर्द पंवाडिया हलदी तथा सेंचल इनोंका लेप सव चमडीके दोप सुपेद काला लाल सव कोढ सुधारता है, (४३ कालीपाठ) शोधक सोथ हरता ग्राही मूत्रल कडवी पौष्टिक बुखार तथा दस्तके काढोंमें वहुत वरते जाती है, सोजेपर कालीपाट काम देती है जलमें घसकर लेप किये जाता है, उसका रस पीणेसें सूजन ऊतर जाती है, (पाठादिक्काथ) कालीपाठ इंद्रजव चिरायता मोथा गिलोय सूंठ पित्तपापडा समवजन मिलाकर २ रुपियेभर ३२ तोला जलमें उकाल ८ रुपेभर पाणी पीणा इससें सादा नहीं उतरे सो तप गरमतप एकांतरिया तेजरा चोजरा बुखार जाता है, पित्तकी उलटी मिटती है, (४४ कीडामारी) कृमिघ्न ज्वरघ्न तथा शोथघ्न है, इंद्रजव वायविडंग कालीजीरी कीडामारी क्रांकच जेसीचीजों घरमें रखणेकी जरूरी है, वचोंके वेर २ वहोत कामकी है, वचोंकी उलटी उवाकी पेटमें चूरणीयेपर इसकूं अथवा इसके वीजोंकूं पीसके दिये जाता है, कीडामारी लिये पीछे ऊपरसें जुलाव लेणेसें चूरणिये कृमियां निकल पडती है, गधवाले गुमडे फोडेमें जीवपड जाता है, उसपर कीडामारीकी लुगदी वांधणेसें जीव मिट जाते हैं, कीडामारीकारस

वच्चेकूं ॥ आधे रुपेभर वडेकूं २ रुपेभरसें जादा देणी जहरी असर होकर दस्त उलटी होती है, (४५ कूकडवेल) सखत रेचक छींकलाणेवाली जहरका नाश करणेवाली हिडकवाय तथा सांपके काटणेमें कूकडवेल देणेसें सखत उलटी होकर कितना एक जहर कम होजाता है, साधारण जुलाबमें इसकूं वरतना नहीं वहोत नुकशान होता है, (४६ कुवाडिया) पमाडके वीज चमडीका दोपहर ज्वरघ्न दाद चमडीके सब दोप ऊपर लगाणेसें अच्छा फायदा होता है, वीज और जड दोनूं काम आती है, वीजकूं थोहरके रसमें भिगाकर गोमूत्रमें महीनपीस लेप करणेसें आगड दोगड गांठभी मिटजाती है, वीजोकों नींवूके रसमें या छाछकी आछमें पीस लेपकरणेसें दाद मिट जाती है, (४७ कवार पाठा) रेचक शोधक पित्तशामक गोलेकों मिटाणेवाला वहोतसी दवाइयां वणाणेमें कुंवार पठेका रसकामदेता है, (कुमारिकासव) वहोत उपयोगी वस्तु वणती है, सो योगचिंतामणी वगैरे ग्रंथोमें लिखा है, सहजमें नहीं वणता है, इसवास्ते इहां नहीं. लिखा है, पेटपर वांधणेमें तथा फोडा फुनसियोंके पकाणेवास्ते कुवारपठेकी फाडपर ऊपरका छिलका दूरकर साजीखार हलदी वगेरे भरके अंगारमें सेक गरमकर गरम २ वांधे जाता है, पेटका रोग जेसें तिल्ली लीवर गोला मलका रुकणा वगेरोंपर कुमारिकासव वहोत गुण करता है, दस्त साफ लाता है, सोधक गुण है, इसवास्ते चमडीके रोगमेंभी फायदा करताहै, औरतोंके आर्त्तव दोप सुधारणेवाली दवाइयोंमें कुमारिकासव मुख्य दवा है, जिस २ रोगोंमें दस्तकी कवजी होय और पित्तका दोप वढ गया होय उन सव रोगोंमें कुंवार पठा फायदा करता है, (४८ केल) ठंढी भारी तथा अस्मरी योनिदोष तथा रक्तपित्तकूं मिटाणेवाला है, केलेके गाभेकारस पीणेसें संखिया सोमल वगेरेका जहर मिटता है, केलेके पत्तोंपर सोणेसें दाहकी शांति होती है, (४९ केला) शीतल भारी धातुवर्धक मांसवर्द्धक तथा कफ करता है, भस्मक रोगमें पके भये केला घीके संग खाणा प्रदर वदनका धुपणा मूत्रातिसार ओरतोंके वहुत पेसाव उतरे उसमें पक्का केला आमलेका रस अथवा सूके आंवलाका उकालारस और मिश्री मिलाकर चाटणा केलेका अजीर्ण होयतो इलायची खाणी पेसावमें धातु जाती होयतो और पाचन शक्ति अच्छी होय तो फजर और सांझ एक अथवा आधा केला घीके संग खावै ठंढा मालमदे तो अंदर सहत मिलाणा (५० केशर) शीतल स्तंभन वाजीकर और पौष्टिक है, इसवास्ते वहोतसी पौष्टिक दवायोंमें गिरती है, पाकोंमें वकरीका दूध उकालकर उसमें रत्तीसें १ ॥ रत्तीतक केशर डाल पीणेसें नाकमेंसें मूमेसें खासीमेंसें गिरता खून अटकाता है, नाकमें पीनसमें तथा आधाशीशीमें ताजे घीमे केशर घोट उसकी नाकमें नासलेणी गर्भणी ओरतकूं रक्तगिरणे लगे तव मखणके संग केशर देणा (मात्रा) १ रत्तीसें ३ तक (५१ कोला) शोधक पौष्टिक तथा पित्तशामक है, सुपेद भूरा पेठा पाक मुरव्वा वणता

है, दवायोंमें काम देता है, पित्तशामकपणेसें रक्तपित्त मगजकी गरमी औरतोके गर्भाशयके कितनेक विकारोंमें अच्छा फायदा करता है, वर्दनमें ताकत देता है (५२ कंकोल) उष्ण दीपन पाचन कफघ्न तेसें कृमिनाशक है, मिरचकंकोलके नांमसें बजारोंमें विकती है, काली मिरचसें कदमें दूणी होती है, मिरगी यानेवाई तथा हिस्टीरीयांमें उसका बहोत फायदा देखा है, इसके दो दो चार २ दाणे हमेस खाणेसें कितनेक दिनोंसें मिरगी बाई हिस्टीरीया उन्माद कम होणे लगता है, उसके आणेमें तफावत अंतर पडते जाता है, इस रोगमें कंकोलकी निश्चै अजमायस करणी बाकीभी काम आती है, लेकिन् अजमायी भई नहीं है, (५३ खडसलिया) जिसकूं पित्तपापडा कहते है, बुखारमे बहोत फायदेबंद है, (पर्पटादि हिम अथवा इकेलेकाहिम— पित्तपापडा मुनका दाख बाला धाणा गिलोय चिरायता समबजन कूट अढाईसेर जलमें भिगाके रखणा येहिम सादे बुखारमें गरम् बुखारमें पुराणे बुखारमें पित्तके बुखारमें इत्यादिमें बहोत फायदा करता है, इस इकेलेके हिममें मिश्री मिलाणेसें एक तरेका ठंढा पित्तशामक शरबत होजाता है, वो उलटी गरमवायु चिणखिया पेसाव तथा पित्तके बुखारकूं मिटाता है, (५४ खापरिया) खापरियेके काले और भूरे रंगके ठीकरे बजारमें मिलते है, सात दिन गोमूत्रमें रखणेसें कडवे नीमके रसमें घोटणेसें अथवा गोमूत्रमें तीन कलाक उकालणेसें शुद्ध होता है (खापरियेका अंजन) शुद्ध खापरियेकूं पाणीमें खूब घोटणा बहोत पाणी डालके हिलाय डालणा तब निकम्मा हिस्सा नीचेजमेगा नीतरे जलकूं दुसरे पात्रमें लेकर ऊकालणा उकालतेजो बाकी रहे उसकूं त्रिफलाके काढेके पाणीकी तीनभावना देणी सूकेबाद दशमें भागका कपूर डाल मिलाके शीशीमें भर रखणा आंखोकी जलण निर्बलता धूंधका जाला धुयें जेसा दिखाई देणा ताजाफूला सब इस अंजनसें अच्छा होता है, (वंसंत मालनी) एक भाग सुपेद मिरच दोय भाग खापरिया पीसकपड छाणकर गऊके मखणमें खरलकरणा चिकणास सूके जहांतक नींबूके रसमें खरल करके टिकियां बांधणी एकेक बाल वसंत छोटीं पींपल सहतके संग खाणा दूध भातका भोजन करणा पुराणा धातुगतज्वर प्रदर निर्बलता तथा क्षयमें बहोत फायदा करता है, खापरिया इकेला महीनपीसाभया जलेपर गिरणेसें चोटलगेपर घावपर खुजलीके पर छिडकणेसें सुकाय डालता ह (५५ गरमाला) किरमाला सारक है, थोडी मात्रासें दस्त साफ लाता है, बहोत देणेसें जुलाब लगाता है, कितनेक सन्निपात ज्वरके काढेमें किरमाला डाले जाता है, इसका दस्त सादा हलका और निडर है, इसवास्ते बच्चोंकोंभी दिये जाता है, ॥ रु० भर लेणेसें दस्त साफ आता है, एक भर लेणेसें जुलाब लगता है, बच्चोंकों ऊमर मुजब दो आनीसे चार आनीभर (५६ गाजबां) गलजीभी शोधक शीतल मृदुल तथा

पित्तशामक है, गलजीभीकूं भोंपाथरीभी कहते हैं. खूनकूं साफ करणेवाली खुजाल दाह तथा चमडीके दुसरे रोगोंपर पीणेसे बहोत फायदा करती है, (गाजवांस्वरस) आधे-हपेभर पत्तोंकों पाव जलमें पीसके रसकरणा मिश्री मिलाकर पीणा चमडी तेसें आंखोंकी जलण गरमी पित्तकाविगाड गरमवायु तणख खूनकातपणा पित्तकाबुखार वातरक्त गरमीसें फूटकर निकलेभये गड गूंवड रूंतोड खुजाल लुखास सबमें फायदा करता है, (५७ गिलोय) शमन ज्वरघ्न पित्तशामक शीतल शोधक मूत्रल पौष्टक बहोत ऊमदा दवा है, बहोतसे काढे और चूर्णोमें गिरता है, पित्तका बुखार तेसें विषमज्वरमें तो बहो-तही फायदेवंद जीर्णज्वर तथा धातुगत सब बुखारमें गिलोय बहोतही असर करती , और जो हाडगत पुराणा बुखार किसीभी दवाईसें जब शरीरकूं नहीं छोडता तो गिलोय छुडाय देती है, संस्कृतमें उसका नाम अमृता है, सो स्वादमें तो कडवी है, लेकिन् गुणमें तो साक्षात अमृता ही है, (अमृतास्वरस) गिलोयकूं कूटरस निकाल सहत डाल पीणेसें पीलिया मिट जाता है, मिरचडाल थोडे दिनपीणेसें जीर्णबुखार उतरता है, गरमवायु दाह जीर्णज्वर पित्त प्रकोप मगजकी गरमी आंखकी गरमी चमडीमेंसें तुरत फूटके निकले भये दोप वातरक्त पित्तकी उलटी रक्तपित्तकी उलटी रक्तपित्त नकसीर आधाशीशी वगेरे बहोतसे रोगोंका शमन करती है, (अमृताक्काथ) बुखारमें गिलोयका काढा अच्छा फायदा देती है. चमडीकी गरमाईके पुराणे दोपोंमें गिलोयका क्काथ दुसरी शोधक और सारक दवाओंके संग देणेसे बहोत अच्छा फायदा देती है, ये काढा विस्फो टक शीतला अछवडा जले वगेरेकूं मिटाता है, चमडीपर गरमीके चक्कर जेसे चठे होते हैं, उसकूं वातरक्त कहते हैं, उसकूं ये काढा एरंडीया तेल डालकर पिलाणेसें मिटता है, गिलोयसत्व जीर्णज्वर शिरकी गरमी निबलाई फीकास प्रदर वगेरेमें गिलोय सत्व अच्छा है, चांदी घावके आसपास जो फुनसियें उठा करती है, (शूकरोग) उसकूंभी गिलोयका काढा मिटा देती है, (अमृतामोदक) गिलोयका चूर्ण १६ तोला घी सहत और पुराणा गुड दरेक एकेक तोला इन सबोंकों घोटकर सवा पांच २ तोलेकामोदक करणा मोदक नहीं बंधे तो सहत जादा डालणा इस मोदकका बहोतदिन सेवन करणेसें पथ्य खुराक खाणेसे बहोत वर्षोंका पुराणा ज्वरचले जाता है, (५८ गूगल) वातहर शोधक शोधक सारक रोपण तथा पौष्टिक है, महाजोरकी वादी जो देशी याअंग्रेजी दवायोंसें अच्छी नहीं होय वोगूगलकी अनेक तरेकी बनावटीसें अच्छी होसकती है, गूगल एक दरखत कारस है, जेसलमेरकी धरतीमें इसकी पैदास है, इसमें धूल मट्टी बजारमें विक-णेसे लग जातीं है, इस वास्ते शुद्ध करलेणा चाहिये पीली २ तेजगूंदजेसीडलीकण गूगली लेणीचाहिये केइ एक काले रंगका धूल मट्टी मिले गूगलको पाणीमे भिगाकर वस्त्रसें छानकर फेरउस जलकूं अंगारपर चढाकर जाडा करके काममें लेते हैं. त्रिफलाका

काढा होय उसमें छाण लेणा सबसें अच्छा है, वाकी तो गूगल अनेकतरे सुधता है, मुद्दे इसमेका कंकर फूस निकालणा चहिये खाणेमें तथा ऊपर लगाणेमें गूगल दोनोंतरे काम देता है, वादीके रोगपर मुख्य है, लेकिन् वो वायु मुख्यपणे दोय है, एकवादी तो शरीरमें स्नायुओंकी गतिमें जोर करके शरीरके अवयवोंमें खेंचाताणका तोफान करती है, (हिचकी वगेरे) और दुसरी तरेकी वादीमें स्नायुओंकी चाल बंध होजाती है, (गंठियावायु) संधिवायु वगेरोंमें ये गूगल नसोंकी चाल कम पडणेवाली वादीमें गुण करताहै, वादीकी वेमारी टाल दुसरेभी वहोतसे रोगोंपर दुसरी दवाइयोंके संग गूगलका उपयोग होता है, मूत्राशयके तथा खून विगाडके वहोतसे रोगोंमें गूगल फायदेवंद है, (गूगलकी न्यारी २ वनावटीकूं गूगलही नाम दिया गया है, सो थोडा लिखते हैं, (योगराजगूगल) सूंठ पींपर चव्य पीपलामूल चित्रककी जड सेकी हींग अजवाण सरसूं जीरा स्याह जीरा संभालूके वीज इंद्रजव कालीपाठ वायविडंग गजपीपर कुटकी अतीस भाडंगी वच मरोडफली ये वीस दवा चार २ आनीभर हरड वहेडा आवला ये तीनों मिलके १० तोलाभर इन सबोंके वरावर याने १५ रुपेभर शुद्ध गूगल इन सवोंकों मिलाकर घी देतेजाणा और कूटते जाणा ये योगराजगूगल औरभी केइ दवाइयोंमें २।४ तरेकाभी वणता है, धातू भस्मेंभी डाले जाती है, वगेश्वर रूपेश्वर चंद्रोदय नागेश्वर मंडूर लोहभस्म अभ्रक भस्म इन पूर्वोक्त योगराजमे डालणेसें महायोगराज कहलाता है, सर्व वादीके रोग सव तरेका कोढ चामडीका रोग वातरक्त श्वास शूल नेत्ररोग औरतोंके ऋतूधर्मका दोष वांझडीका दोष हाडोका सडणा दुष्टव्रण भगंदर मेद उदर वगेरे रोगोंमें देणा वादीके रोगमें रास्नादि क्वाथमें कोढ रोगमें कडवे नीमके छालके काढेमें वातरक्तमें गिलोयके काढेमें पेटके रोगोंमें पुनर्नवादि क्वाथमें आंखके रोगमें त्रिफलाके क्वाथमें पांडूमें गोमूत्रमें वाकी सव रोगोमें घी सहतके संग देणा सव वेमारी जातीहै, हमने केइदके अनुभव करलियाहै, (किशोरगुग्गल) गिलोय हरड वहेडा आंवला सव ६४ तोला उनोंकों छ गुणे जलमें ऊकालकर आधा रहणेपर छाण लेणा उस जलमें ६४ तोला शुद्ध गूगल डालके मंद आंचसें उकालते जव जाडा होजाय तव इतनी चीजोंका महीन चूर्ण उसमें डालना हरड वहेडा आंवला दो दो तोला गिलोय ४ तोला सूंठ मिरच पींपर छ छ तोला वायविडंग दो तोला दंतीमूल तथा निसोतकी छाल एकेक तोला मिलाकर चार आनीभर २ की गोलियां करणी सवतरेका चमडीका रोग कोढ वातरक्त व्रण गुल्म प्रमेह पिटिका (प्रमेहके रोगमें फनसियां होजावै सो) वगेरे वहोतसे रोग अच्छे होते हैं, सर्व रोगोंमें मंजीष्ठादि क्वाथमें देणा अच्छा है, अथवा रोगों मुजव अनुपानमें अथवा फकत पाणीमें दे सकते है, (त्रिफला गुग्गल) हरड वहेडा आवला तथा पीपर चार २ तोलेका वारीक चूर्ण तथा गूगल २० तोला सवोंकों जलसें पीस चार आनी भरकी गोलियां करणी

भगंदर तथा नासूरवालेकों कितनेक दिन देणेंसें फायदा करता है, (गोक्षरादि गूगल) गोखरू ११२ तोला छगुणे जलमें उकालणा आधाजले तब पाणीकूं छाणकर उसमें २८ तोला शुद्ध गूगल डालणा मंद आंचसें कुछ गाढा होणे लगे तब इतनी दवाइयें अंदर मिलाणी सूंठ मिरच पीपर हरडे वहेडा आंवला मोथ एकेक ४ चार तोला पीछे चार २ आनी भरकी गोलियां करणी प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदर मूत्राघात वीर्यदोप तथा पथरीके रोगमें अच्छा गुण देता है, इसके सिवाय कचनार गूगल सिंहनाद गूगल अमृता गूगल पडंगगूगल चंद्रप्रभा वगैरे दवायोंमें गूगल मिलाता है, वादीसें कमरमें पीठमें तथा सांधोंमें चसके और शूलचलै उसपर गूगलका अथवा गूगलके संग वादी हरता दवायें मिलाकर लेप करणेसें फायदा होताहै, (५९ गूंदी) पत्तोंका स्वरस ४ रुपेभर उसमें सहत २ रुपेभर मिलाकर पिलाणेसें जलते पेसाववाला प्रमेह प्रदर उष्णवात उधरस कफ ये सब मिटता है, तजा गरमी मिटती है, खून सुधरता है, (६० गुलवास) धातुपौष्टिक है, उसके सांझकूं हमेसां फूल खिलता है, सुपेद लाल पीला और मिश्र रंगके फूलोवाली होती है, गडगूमडपर उसके पानोंकों गुडके संग पीसके लेप करणेमें आता है, उसकी जड धातुपुष्टी तथा धातू जाणेपर बहोत फायदा करता है, इसकी जडका चूर्ण दो दो तोला दूध तथा मिश्रीके संग लेणेसें बहोत दिनोंसें धातू जाती होय सो बंध होजाती है, ये गरम है, ९ इसपर दूध अच्छीतरे खाणा सुपेद फूलवालेकी जड बहोत फायदेबंद है, चोपचीनीभी इसही की जातीहै इसवास्ते इसके जेसाही फायदा करतीहै (६१ गुलाबके फूल) ठंढा रेचक तथा पित्तहर हे इसके फूलोंका जुलाब लिये जाताहै दो रुपियाभर गुलाबके फूलोंकी चाकरके अंदर सूंठ और बूरा डालकर पीतेहैं गुलकंदभी बणताहै गुलकंद पित्तकूं शमन करताहै औरी शीतला ओखा इत्यादि और भी पित्तके प्रकोपमें गुलकंद फायदा करताहै, बणाणेकी विधि पीछे लिखी है (६२ गुवारके पत्ते) गुवारके पत्तोंका साग घीमें रांधकर एक अठवाडे खाणेसें रातींधापणा मिटताहै, (६३ गेरू) ठंढा तथा रोपणहै चमडीके रोगमें अथवा मधुमखी टांटियां भ्रमरे अ दिकी डंककी जलणकूं गेरूका लेप शांत करता हे (गेरूका उबेरा) गेरू ५ भाग फुलाया भया नीलाथोथा ३ भाग बराबर घोटकर लेपकरणेसें सादीटांकी तुरत मिटजाती है (६४ गोखरू) मूत्रल शीतल तथा धातुपौष्टिकहै, गोखरू धातुपुष्टिमें अछा है, छोटेगोखरूसें बडे दखणी गोखरू गुणमें बहोत अछे होतेहैं धातूका गिरणा हथरससें मईनाताकती गरमवाय मूत्रकृच्छ्र पेसाबकी रेती वगेरे रोगोंमें गोखरू बहोत फायदा देती है, (गोक्षरचूरण)गोखरू तथा तिल दोनों का चूरण करके बकरीके दूधमें तथा सहतमें मिलाकर खाणेसें हस्त क्रियासें भई नाताकती ईमें फायदा करती है गोखरूका (लुआब—गोखरू जडसमेत लाकर पीसकर जलमें लुआबवणाणा पेसाबकी दाह गरमवायु तथा पेसाबके रुकणेकों मिटाता है (६५गोमूत्र) उष्ण

पाचन कफघ्न वातहर तथा कुष्ठहर है धातूओंकों शोधणेमें तथा कितनेक विकारी पदार्थोंके शोधनकरणेमें कामदेताहै खुजाल कोढ शूल गोला सोजा खासी कृमि कामला तापतिल्ली वगैरे रोगोंमें फायदा करता है गोमूत्रसें स्नान करणेसें वदनकी खुजली मिटतीहै, इसवास्ते चमडीपर लगाणेके लेप अथवा सूकी दवाकूंभी गोमूत्रमें तइयार करणा चाहिये गोमूत्रकूं एकवेरवस्त्रसें छाणकर अंदर हलदी डालकर पीणेसें हमेस थोडे दिनोंमें पांडूका रोग उपद्रव युक्त मिटजाता है (६६ गंधक) शोधक सारक तथा कृमिघ्नहै गंधककी बहोत जात है लेकिन् पेटमें खाणेमें आमलसार जिसकी गोलडली होतीहै सो सोधकर खाणेमें काम आता है और लंबानलीवाला गंधक आता है सो बाहर लगाणेमें कामदेताहै गंधक शुद्ध करणेकी अच्छी विधि लिखते है एक कडाहीमें पावधी गरमकर गंधक डालदेणा आमलसारा १ सेर एक पात्रमें अधसेर तीन पाव दूध डाल उसपर ढीलासा कपडा बांध देकर झट गंधक गलतेही घीसमेत दूधवाले वस्त्रपर उंधादेणा ठरेवाद दूधमेंसें निकाललेणा येगंधक सब कार्यके लायकहे रसोंमें येहीकामिलहै केइयक दूधमें दाणेटपकातेहै. सोविधि बहोतोंकों मालूमहे जादा आंच लगणेसें लाल पडजाता है तो गुण कम होजाताहै दूधपात्रपर ढीला लटकता वस्त्र बांध उसमें गंधकपीस डालदेणा उसपर मट्टीकी पाल दो दोअंगल उंची लगाकर लोहके तवेपर झग २ ते अंगारेधर उसपात्रकी पालपर धरके पंखेसे झपटणा गंधकके मोती जैसे दाणे दूधमें गिरेगा इसमें गंधकके जलणेका डर नहीं है लेकिन् सोधणेमें देरी बहोत लगती है गंधकका मुख्य उपयोग हरसके रोगपर है दस्तकी कबजीपर अजीर्ण हेजे वगेरेमें और जादा करके चमडीके रोगमें खाणेसें तेसें चोपडणेसें फायदा करता है हरसमें गंधक दूधके संग लेणेसें फायदा होताहै और दस्तसाफ लाता है हरसके मस्सेमें सें खून गिरता होयतो गंधके संग एक दो बाल फिटकडी मिलाकर दूधमें लेणा खुजलीमें गंधक दूधमें पीणा वदनके गंधकका मालिस करणा अंदरके जंतुकाविकारमिटजाताहै इके ले गंधककी मात्रा २ सें ८ वालतक (गंधकवटी) शोधागंधक तीनभाग सींधानिमक लसण सूंठ मिरच पीपर सेकी हींग तथा जीरा ये सब एकेक भाग मिलाकर नींबूके रसमें याजलमें झाडवेर जितनी २ गोलियां करणी मात्रा २ सें चारबाल अजीर्ण अरुचि हेजा उलटी मौल शूल वगैरेमें फायदा देतीहै (गंधणका तेल) शुद्धगंधककूं दूधमें उकालणा पीछे उस दूधकूं जमाकर दहीकर विलोयेवादधी निकले वोही गंधकका तेल समझणा ये तेल चमडीपर मसलणेसें बहोत फायदा करता है (६७ घी) वातहर पित्तशामक विषहर रोपण स्निग्ध पौष्टिक तथा रसायण है उन्माद शूल गोला विषव्रण क्षयक्षीणता तथा क्षत वगेरेमें फायदा करता है महनत करणेवालोंके वास्ते अच्छा है, वायुके कोठेवाला हमेस नवटंक घी पीवेतो वदनमें गरमी बढकर कुव्वत आतीहै, सोमल वगेरे जहर खाया होय उसकूं घी पिलाणेसें जहरकी गरमी कम होतीहै दूसरा घी पिलाणेका और भी मत-

लव है जहरवालेकूं घी खूब पिलाकर उलटी कराणी या आपसेंही होयतो घीके चिकणास के संग जहरी पदार्थके परमाणू पकडी जकर बाहर निकलाहै, घी ठंढा है, इसवास्ते चमडीपर लगाणेसें दाह तथा जहरकी जलण कम होतीहै, अंगार तथा तेजावसें वदन जलगया होयतो घी लगाणेसें वदनमें शांति होतीहै पुराणा घी जादा गुण करता है, जादा पुराणा घी नहीं मिले तो सोवेर जलसें घीकूंमथ डालणा ज्यों जादा मथे त्यों अछा होताहै, (घीका उपयोग नीचे मुजव) (१) आधासीसी– गउका अछा ताजा घी सांझ सवेरे नाकमें सूंघणा (२) शिरकापित्त-- शिरपर ताजा घी मसलणा (३) हाथ पैरकी जलण (तलियोंपर रगडणा) (४) अत्यंतदाह– जादा बुखार वगेरोसें वदनमें जलण लगगई होय तव सोवेरका धोया घी गऊका मसलणा (५) धतूरा तथा रसकपूर का जहर– गऊका जादा घी पीजाणा (६) दारूकानसा– गउका घी मिश्री खेलाणा (७) चोथिया बुखार उन्माद वाईयानें मृगी-- गऊका दही दूध तथा गोवरका रसमें गऊका घी सिद्धकरके पिलाणा (८) प्यासका रोग गऊका घी तथा दूध पीणा (९) विसर्प याने रक्तवायु– सो अथवा हजार वेर धोया भया गऊका घी वेर २ लगाणा (१०) बच्चेकी छातीका कफ– कफका जमाव जमगया होयतो गऊका घी छातीपर धीरै २ मसलणा (६८ घोडेकीलीद) पांचरुपेभर आसरे लीदमें पाचरुपा भर जल डालके मसलके जल छांण लेणा उसमें तलीभई हींगका भूका दो अढाई मासा डालकर पीणेसें भयंकर भी शूल मिटती है (६९) चीणीकवाव–मूत्रल ठंढी दीपन तथा पाचन है प्रमेह गरमवादी तथा जलते पेसाबमें दीजातीहै, कवावचीणीका चूर्ण २ सें ४ वालचूर्णमें चंदनके तेलकी पांचचार वूंद डालके पीणेसें पेसावकी जलण मिटती है (७० चिणेकाखार) दीपन तथा पित्तशामक है खेतमें ऊगेभये चणोके दरखतोंपर फजर झांझरके महीन वस्त्रोओसके जलपर फेरणेसें पाणी जो लगता है वो चणखार कहलाताहै अजीर्ण चूंक शूल-पेटके दुखणेमें इसखारमें जरासेकी हींग डालके पीणी उसमें अंग्रेजी दवा सल्फेट ओफ झिंकके जैसा गुणहै (७१ चणोठी) चिरमी शीतल वातहर रोपण तथा पौष्टिकहै, इसके पत्ते मूमें रखणेसें अवाज खुलती है। जडकूं पाणीमें घसके उसका पाणी आधाशीशी तरफके नसकोरे फुरणियोंमें सुंघाणेसें तीनचार दिनोमें आधाशीशी मिटती है (गुंजादि तैल– भांगरेका रस १ सेर लाल चिरमीका भूका २॥ रुपियाभर तथा तिलका तेल तोला १० इन सबोकों उकाल तेल करणा ये तेल टाटपर लगाणेसें बाल ऊगजाताहै, गिरते भयेवालोंकों मजबूत करता हे, सुपेद चिरमीका पाक वणता है वो पुष्ट होता है, लाल चिरमी उलटी कराताहै, और चमडी द्वारा शरीरमें दाखल होयतो जहरका असर करताहै (७२ चित्रक) दीपन पाचन दंभक तथा दाहक है इसकी जडकी छालकूं छाछमें पीस लगाणेसें (वलस्टर) फफोला उठता है (चित्रकलेप) चित्रक टंकणखार हलदी

तथा गुड समभाग पीस लगाणेसें हरसके मस्से गिरपडते है. कितनीक दवायोंमें चित्रककी जडका उपयोग होताहै (७३ चीमेड) आंखके रोगमें अछी है(भरण) चीमेडके वीज भिगाकर वाद दांतोंसें फोंतरे उतारकर अदरके मींजीकूं महीन चावकर आंखमें आंजणा इस भरणेकूं अंवलीके अंदरके गिरके संग मिलाकर आंजणेसें आंखकी गरमी दुखती कडकती आंख जलदी आराम होतीहै (७४ चूना) दवामुजव चूनेका नितरा भया जल काम देता है पेट छाती तथा वादीकी सूजन और शूलपर चूना और सहत मिलाकर लेप करणेसें फायदा होताहै चूनेका नीतराजल उलटी मिटातीहै चूना और हरतालका लेप वालोंकों उडा देताहै, पत्थर शंख कोडी मूंगिया सीप इनसवोकी भस्मी चूना है मोतीत कात (७५ चोपचीणी) शोधक तथा पौष्टिक है, उपदंशयाने गरमी रोग जव शरीरमें पुराणा होकर फूटता है शीतलाजैसें चट्टे पडते हैं चमडी स्याह होजाती है सांधोमें दरद और पकडीज जाते हैं उसमें चोपचीणी अछीहै (चोपचीणीका पाक) चोपचीणीका चूर्ण तो ४८ वरावरसें जादा घी डालकर सेकणा पीछे ५६ रुपेभर वूरेकी चासणी करके वो चोपचीणी तथा पीपर पीपरामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लौंग इन सवोंकूं एकेक रुपिया भरलेके इसमें पीसकर मिलाकर लड्डवांधणा ये पाक हमेस नवटांक खाणा (७६ छाछ) छाछकी जाति गुणदोष आगे लिखा है दवामे छाछके गुण इसमुजव है, (१) संग्रहणी—फकतछाछ पीके रहणेसें असाध्यसंग्रहणी भी साध्य होजाती है (२) वंधकुष्टमें सोवा तथा सेंचल डालकर छाछपीणी (३) हरसमें चित्रकके जडकी छाल पीसकर गऊकी छाछ या दही लेणा (७७ छाण) गऊका गोवर गरमकर कांचपर सेककर वांधणेसें निकली भई कांच अंदर धुसती है भेंसके गोवरकूं पाणीमें हिलाकर उसपाणीकूं छाण उसमें वूरा डालकर पीणेसें परमेंकी सखत जलण मिटजातीहै, (छाणेकी राख) शीतला निकलणेसें जो फफोले वदनपर चकचकते फूटजाते हैं उसपर राखकूं कपडेसें छाणके दवाणेसें सूकजातेहैं (७८ जवखार) जवकी गीली डांखलियोंकों जलाकर राखकर खार निकालणेकी विधिसें खार निकालणा इससें उधरस कफ तथा वच्चोंकी छाती भराणीमें दुसरी दवायोंके संग अनुपानतरीके वापरते हैं, खासीमें १—२ रत्तीभर जवखार लेते हैं जवखारमें वहोत भाग कारवोनेट ओफ पोटाशकाहै, (७५ जाई) रोपण है औरतों का योनिदाह व्रण खुजाल तथा फोडे फुनसियें जाईके पत्तोंकी लुगदी वांधणेसें अछे होतेहैं (जात्यादि घृत) जाई पटोल तथा कडवा नींव इन तीनोंके पत्ते कुटकी हलदी दारूहलदी उपलेट मजीठ नीलाथोथा मेण जेठीमध करंजके वीज तथा वाला ये सव एके कतोला चूर्ण किया भया घी ५१ रुपेभर पाणी २०४ भर विधिमुजव घी सिद्ध करणा (८० जामुन) गुणमे ग्राहीहै वीछूके डंकपर पत्तोंकी पोटिस गुण करतीहै, पथरीके रोगमें जामुन अछी है, मीठे पेसाव उतरे उसमें जामुनके वीज दियेजाते है रक्तातिसारमें जामु-

नके छालकारस दूधमें पीसकर सहत डालकर पीणा मधुप्रमेहपर जामुन अछा फायदा देताहै (८१ जावंत्री)उष्ण तथा दीपन है गरम मसाले खुसवोईमें लीजाती है तथा उलटी अजीर्ण अरुचिपर जावंत्री देते हैं (८२ जीरा) दीपन पाचन ग्राही जरा उष्ण रुचिकारक गर्भाशयकूं सुधारणेवाला युक्तिसें उपयोग करणेसे वहोत फायदेवंद है शरीरके अंदरकी बुखारकी गरमी निकालणेमें जीरा फायदे वंद है जीराकी भूकी फजरमें पेसेमर बूराया मिश्रीया पुराणे गुडमें खाणी केइ यकदिन खाणेसें बुखार या बुखारकी गरमी वदनमेंसें निकल जाती है गायके दूधमें सिजाकर सुकाकर खाणेसेंभी एसाही फायदा करता है जीरा मिश्री चावलोंके धोवणमें पीणेसें औरतोंका प्रदर धोलेका लालका रोग मिटता है डाभकीजड उसमें जीरेकी भूकी मिश्री डाल पीसकर पीणेसें स्त्रियोंका धातु गिरता बंध होताहै (८३ जेठीमधु) मोलेठी शीतल कफघ्न तथा पौष्टिकहै सूंपकजावै कंठ बैठजावै खालीखासी आवै तब जेठीमधकी जड अथवा रवेसूस मूंमें रखणेसें फायदा होताहै चिरमी केजडमें मोलेठीजैसा गुण है उसके एवजीमें चिरमीकी जड वपरातीहै देशी ओषधोंमें कितनेक जीवनीय गणके उत्तम दवायें हैं, उसमें मोलेठीकूं भी गिणी है मोलेठी पुष्टभी है इसका चूर्ण घी तथा सहतमें चाट ऊपरसें दूध पीणेसें वीर्यकी वृद्धि होती है, औरतोंके प्रदर रोगमें लालपाणी गिरता होय उसमें जेठी मध १ तोला चावलोंके धोवणमें पीस ४ तोला मिश्रीडाल पीणेसें फायदा होताहै छातीमेंसें खून गिरताहोय एसे (उरक्षत रोगमें) जेठी मधुके काढेमें पीपर और भीमसेनी कपूरका चूर्णपीणा खूनकी उलटीमें मोलेठी तथा सुपेद चंनण दूधमें घसकर पिलाणा और स्वरभंग याने साद बैठ गया होय तो मोलेठीका चूर्ण मिश्रीडाल दूधमें पीणा (८४ जहर कुचीला) पौष्टिक वायुहरता तथा पाचक है, इसकूं वहोत सावधानीसें वरतणा कारण जहर है जादामें जादा १ वालसें जादा मात्रा लेणेसें इसका जहरी चिन्ह मालम देता है, इतनाहीनहीं वहोत दिनोंतक इसका सेवन करणेसें भी नुकशान होताहै, लेकिन् युक्तिसें इसका उपयोग होयतो वहोत फायदेवंदहै (कुचीलेकी काफी) कूचीलेकूं गोमूत्रमें उकालकर ऊपरका छिलका दूरकर घीमेंतल काफी
ये काफी अजीर्ण पेटचूंक तथा अग्निमांदमें लेणी अछीहैं, जुदी २ वादीका रोग
) कमरझलणी अर्द्धांग पक्षाघात अर्दित वगेरेवायु जीर्ण भये पीछे उसमें जहर
वहोत फायदा करता है इन रोगोंकी शरुआतमें उनोकी तीक्ष्णतामें जहर कुंची लादिया जायतो फायदेके वदले नुकशान करता है पीठके वरडा जो हाडहै उसमें रोग होणेसें हाथपांवोंमें धूजणी होजातीहै, और कितनीक वखतलिखते २ हाथ धूजताहैं, और अंगलियोंसें कलम नहीं पकडे जाती एसे रोगोंमें कुचीलेका दोयच्यार महीना सेवन करणेसें फायदा होताहै धातूका गिरना तथा मरदमीकी नाताकतीमें वहोत फायदा करता है (समीर गजकेसरीरस) कुचीला अफीम तथा कालीमिरच सम वजन मिलाके रती २

की गोलियों वणाणी गंठिया कमरका भारीदरद अर्द्धांगवायु अर्दितवायु पक्षाघात वगेरे वादीके जीर्णरूपमें मात्रा १ रत्तीकी कुचीलेकूं जलमें घसकर लेप करणेसें सोजेकूं ऊतारताहै, (८५ टंकणखार) मूत्रल शीतल कफघ्न ऋतुलाणेवाला कष्टीकूं वच्चा जणाणेवाला खारहर तथा रोपण, टंकण सुहागेकी दो जात हैं पाटिया (तेलिया) दुसरा सुनारोकें कामवाला दवामें दोनुं काम आतेहैं शुद्धकरणा अथवा अंग्रेजी दवा वेचणेवालोंके पास शुद्ध टंकण (वोराक्ष) मिलता है सोवरतणा पेसावकी रेती तथा जलणमें ठंढे जलके संग पीणेसें अथवा गरमपाणीमें डाल पिचकारी मारणेसें पेसाव खुलास होकर आराम होताहै, मूंमें चांदी घाव गिरगया होय तो पावजलमें ४ वाल टंकण डाल कुरला करणा वच्चेके मूंके रोगमें टंकणकूं सहतमें मिलाकर अंगलीसें लगादेणा टंकण दांतोंकोंभी सफा करणेवाला है, इसवास्ते दंतमंजनमेंभी डालेजाताहै टंकणके जलसें मसलकर धोणेसें दाद खाज लूखास तथा शिरके वाल उडणा (उंदरी) दाद अछा होताहै (८६ डूंगली) कांदा उष्ण वातहर तथा वीर्यवर्द्धकहै, कांदेका रस सूंघणेसें जागृति तथा शुद्धी आतीहै, और हैजेमें शीतांग होताहै, उसमें कांदेकूं मसलणेसें वदनमें गरमी लाताहै, वेर २ उसकूं पिलाणेसें दस्त उलटी रुकजातीहै घरमें कादोंकों टांगदे तो हवाकी शुद्धि होतीहै, हेजामरीके जीवजंतु उस घरमें नहीं आते हैजेमें पिलाणेसें हैजा मिटताहै, शाक अथवा मुरव्वा वणाकर ताकतके वास्ते लोक खातेहैं. उनोंके कामेच्छा वढतीहै, कांदेकारस आदेकारस मिश्री सहत तथा घी हमेस फजरमें पीणेसें गईमरद मी पीछी आतीहै, वीर्यकी वृद्धि होतीहै कांदेका रस नाकसें पीणेसें वादीके असाध्य रोगमेंभी फायदा होता है रसमें एक रत्ती अफीम मिलाकर पीणेसें अतिसारका दस्त वंध होताहै अम्लपित्त जिसमें गले और छातीमें जलण होतीहै उसमें सुपेद कांदेका रस मीठा दही मिश्रीमिलाकर पीणा वद तथा दुसरीगांठ कठवेलपर कांदे सिजाकर उसमें घी हलदी डालकर फेर गरमकर गरमागरम पोटिस वांधणी येवडी ऊमदा पोटिसहै, (८७ डीकामाली) कृमिघ्न तथा वातहरहै वच्चोके पेटकी चूंक गोटा कृमि उलटी वगेरे रोगमें दियेजातीहै, पेटपर सूकीभी मसले जातीहै, इंद्रजव कालीजीरीकी माफक समझवार औरतें निडरपणे ऊपर लिखे मुजव घरमें रखकर उपयोग किया करती है, (८८ तुकमरियां) शीतल है, तुकमवा लिंगाका लुआव तुकमरीआं १ रुपेभर मिश्रीका जल २ रुपेभर मिलाणेसें चिकणा लुआव होताहै वो पीणेसें पेसावकी जलण गरम वायु लू तथा पेटकीदाहमें फायदा वंदहै (८९ तज) उष्ण दीपन वातहर तज खाणेसें अथवा उसकी उकाली पीणेसें उलटी तथा मूकी मौलग्लानी मिटतीहै शरदीसें शिरचढा होयतो तजकूं घस गरमकर लेप करणा शूलके संग मरोडेमें ४ वाल वीलका गिरतज १२ वाल ओर ४ वालगुड दहीमें मिलाकर पीणेमें फायदा होताहै (९० तमाख्) कफकूं शमाणेवाली रगोंकों ढीली करणेवाली तमाखू मादकहै. जादालेणेमें

नसा चढता है सूंघणा चावणा और पीणा एसें तीनकाममें लोक लेते हैं लेकिन् थोडे दिन लियाके झलजातीहै दांतकारोग दम श्लेपम वगेरेमें दवातरीके तीनोंतरे उपयोग करणेसें कुछ एक फायदा देतीहै लेकिन् शोखसें जो वापरते हैं उसमें वडानुकशान है खून वरावर फिरता नहीं फेफसेकूं इजा पोहचतीहै, खालीउधरस पैदा होतीहै शरीर फीका और पीला पडताहै मगज तथा आंखकूं इजा पहुंचतीहै जादा वरतावेसें अदमी अंधा होजाताहै मधुमखी भमरी वगैरेके डंकपर तमाखू लेपकरणी सापके जहरमें उलटी कराणेकूं नव २ टांक पाणीमें मिलाकर दोचार वखत पिलाणी जूओंका इलाजभी ये पाणीहै फेर आरीठेके पाणीसे सिर धोडालणा (९१ तांदलजा) चंदलिया चोलाई सारक शोधक शीतल पित्तशामक खुराकमें उत्तम गुणकारी शागदवाका काम चंदलिया करताहै, ये तीनों दोषमें अछा है, जादातर पित्त शमनकरणेवालाहै इसवास्ते इसकूं जलमें वाफ· कर उसका जल पीणेसें कलेजेकी गांठ सोजा यकृत् तापतिल्ली नरम पडतीहै इसके रसमें पोटासका विशेष भाग होणेसें ये जहरका नाश करता है सापवीछु सोमल तथा गरमीके रोगकी जहरी असरकूं निकाल डालता है वाफकरके पेटपर तथा गांठपर वांधणेसें पेट नरम पडता है, पारा वगैरेका जहर वदनमें फूट गया होय रहा होय तो एकाध अठ· वाडियेतक पाव २ चंदलियेका रस घीमें पीणा चंदलियेकी जडपीस उसमें रसोत सहत चोगुणा चावलोका धोवणडाल थोडे दिन पीणेसें औरतोंका प्रदररोग मिटताहै, (९२ त्रि· फला) हरड वहेडा आंवला ये तीन फलसामिल मिलताहै तव त्रिफला कहलाताहै गुणमें ठंढा शोधक पित्तशामक तथा दाह शामक हैं तजागरमी खूनकी गरमीकूं वो फायदावंधहै (त्रिफलाचूर्ण) हरडे १ भाग वहेडा २ भाग आंवला ३ भाग इसका महीन चूर्ण शिरकी १ वदनका तपणा पेसावकी जलण गरम वाय प्रदर चिणख कामला आंखकी गरमी झमर शीलस वगेरे रोगोंमें त्रिफलेका चूर्ण सक्करमें अगर जलमें लेणेसें अछा फायदा २ मात्रा अढाइ मासेसें पांचमासा (त्रिफलाहिम) हिमके कुरले करणेसे मूंकी चांदी जखम गरमी मिटतीहै, आंखोपर छांटणेसें जलण शिरकी गरमी तेसें आंखोंके सांमनें धूंअेका गोटा दीखेसो झमर वगेरे सुधरता है आंखका तेज वढजाता है (त्रिफलाकी भस्मी) जलाकर राखकर थोडा कथा मिलाकर येगरमीकी टांकीपर भरणेसें जलदी आरा महोतीहै, (९३ तुलसी) कफघ्न तथा उष्ण है तुलसीके पत्ते वायूकूं दूरकर वदनमें गरमी लाती है, इसके पत्ते हिचकी शूल वगैरेमें अनुपान तरीके काम आता है पान तथा आदेके टुकडेके संग दांतके नीचै चावणेसें दांतोकी शूल मिटतीहै (तुलशीका स्वरस) तुलसीके पानोकों जलमें पीसकर रसनिकाल २ रुपियाभर उसमें कालीमिरच अढाई मासेडा लकर ठंढके वुखारमें आणेके २ घंटे पहले तीनचार पाली देणेसें विषमज्वर शीतज्वर मिटता है तुलछीके रसमें इलायची चूर्ण डालकर पीणेसें तीनों दोषोंकी उलटी बंध

होती है, बच्चेकी उलटीमें रसमें सहत मिलाकर देणा. (९४ तैल) तिल) चिकणा स्पर्शमें शीतल पचनेकी वखत तीखा और पित्तल व्रणशोधक मूत्रल कांतिकारक तिलोंकी सूकी लकडीकूं जलाकर खार निकालते हैं, वो खार मूत्रल तथा पेसावकी कंकरी तथा पथरीकूं निकाल डालता है, ये खार सहतमें मिलाकर चाटकर ऊपरसें गऊका दूध पिये तो अटकाभया पेसाव खुल जाता है, जलण मिटती है, अंगारसे जले भयेपर तेल और कली चूनेका नितरा भया जलकूं मथफुलमा वणाकर लगाणेसें पट्टी मारणेसें और ऊपरसें तेल सींचते जाणा जलणेका जखम मिटता है, तेलमें सींधानिमक मिलाकर कुरला करणेसें दांतका दरद मिटकर दांत मजबूत होता है, तिलोंकों दूधमें पीस अथवा तिल और वायविडंगको जलमें पीस शिरपर लेप करणेसें आधासीसी मिटती है, कुत्तेके जहरऊपर तेल खल और जरा आकका दूध अथवा जडकी छालका चूर्ण अथवा जडका चूर्ण गुड सबके समवजन मिलाके पीणेसें जहर उतरता है, धतूरेके जहरपर तिलका तेल गरम पाणी मिलाकर पिलाणा, हरसके मस्सेमेंसे पडता खून तिलोंकों मखणमें पीस चाटणेसें मिटता है, गर्भिणी तथा सूतिकाके खूनके गिरणेमें तिल जव तथा सक्कर सुपेद तीनोंका चूर्ण सहतमें चाटणा, शुक्राश्मरी अर्थात् गिरते भये वीर्यकू रोकणेसें वीर्यकी पथरी बंध जाती है, उसमें तिलोंके लकडोंकी राख सहतमें चटाणी औरतोका ऋतुबंध होताहै, और पेडूमें (रक्तगुल्म) खूनका गोला चढता है, उसमें तिलका काढाकर उसके अंदर सूंठ मिरच पीपर हींग और भारंगमूल इन सबोंका चूर्ण अढाई मासा या पांच मासा डालकर पीणेसें ऋतु आता है, और गोला मिट जाता है, रक्तातिसार, खूनके दस्त लगणेसें कालेतिल १ भाग बूरा या मिश्री दो भाग बकरीका दूध ४ भाग सामिल करके पीणा, नारूपर तिलकी खल छालमें पीसकर बांधणा (९५ थोर) उष्ण शोधक तथा स्नायुनसोंकों ढीला करता है, थोरकी वहोत जाति है, डडेवाली कंटेवाली पंजेवाली त्रिधारी चोधारी वगेरे दवाके काममें जादातर डडेवाली थोर कांमदेती है, और वो खुरसाणीके नामसें प्रसिद्ध है, डंडोंको वाफके रस निकाले जाता है, इसकी जलाई भई राख कांम देती है, इस रसकी दूसरी दवाओंकों भावना दीजाती है, राखकूं अरडूसेके रसमें देणेसें कफ नरमपड वाहर निकल जाता है, जलंदर वगेरे पेटके रोग-वास्ते जो जो वादी हरता दवाइयें है, उसकूं थोरके रसकी भावना देकर देणेसे वहोत फायदा करतीहै, इसका दूध है, सोजहरहै दूधकूं दरदकी जगे लगाणेसे फफोंला उठता है, सांधोकी वादी तथा गरमी सुजाक दरदवालेकों केइ दिनोवाद गंठियावायु होजाती है, उसपर तीन २ चार २ दिनके फासलेसें तीनचार वखत इसका दूध लगा-णेसें फफोला उठता है, और दरद मिट जाता है, सूकी खुजलीपर दूध लगाणेसें एक वेरतो पक जाता है, लेकिन् पीछे मिट जाता है, मुलायमजगेजसें आंख भगइंद्रीपर

दूध थोहरका लगाणा नहीं, जो दूध लगाणेसें तकलीप होयतो घी लगाणा दूधकूं सुकाकर गूंद जेसा करकेरखे तो उन मान मुजब मात्रा देणी (९६ दही) दहीके गुण दोष तीसरे प्रकाशमें लिखा है, दवामें दही इस मुजब काम देता है, (१) सूर्यावर्त्त– दिन चढणेके संग शिर दुखणेलगे सो (सूर्यावर्त्त) शिरके रोगमें सूर्य ऊगणेके पहली दही मीठा और भात खाणा (२) तृष्णा– (प्यास) श्रीखंड वणाकर खिलाणा अथवा मीठादही १२८ तोला वूरा ६४ तोला घी ५ तोला सहत ३ तोला काली मिरचका चूर्ण २ तोला सूंठका चूर्ण २ तोला इलायची २ तोला सव मिलाकर काचके या कलीके वासणमें रखकर थोडा २ खाणा (३) अजीर्ण) दही अथवा वरावर जल मिली भई छाछ पीणी (४) हरस) चित्रकके जडके महीन चूर्णकूं पाणीमें पीस दही जमाणेके पात्रमें अंदर लेप करणा उसमें दही जमाकर अथवा छाछ करके पीणी अथवा भोजनमें लेणी (९७ दशमूल–) उष्ण वातहर त्रिदोपहर दशवनस्पतीकी जडसो दसमूल इनोमें वहुत मतभेदहै तोभी सुलभता लिखतेहै. जंगलीगांजा वहुफलीकी जड पसरकंटाली खडीकंटाली तथा गोखरूकी जड यहतो लघुपंचमूल और वीलकी जड अरणीकी जड अरडूसेकी जड कांकचकी मूल खाखरा पलासकी जड (ये वृहत्पंचमूल) जंगली गांजेके वदले कोइ समेरवा और कोई कासंदरीकी जड लेते हैं, और वहुफलीकी जगे पीलूकी जडभी लेते है वायु तथा कफका सन्निपातज्वर सूतिकावाली स्त्रीका सर्वरोग ऊरुस्तंभ शूल दम खासी मींट पसीना शीतांग वगेरेमें अछा फायदा देताहै (९८ दूध) दूधके गुण तीसरे प्रकाशमें लिखाहै इहां दवा मुजब उपयोग लिखतेहैं गऊके दूधका गुण सर्वोपरी है इहां उसकाही ग्रहण हैं (१) आधाशीशी–) दूधकी मलाई अथवा विदाम और वूरा डालकर दूधकी खीर खाणी (२) (धतूरेकाजहर–) सहज साधारण धतूरेका जहर दूध मिश्रीसें दूर होता है (३) सोमल–) नीलाथोथा–) वछनाग–) इन जहरोंपर उलटी होय जहांतक दूध पिलाणा कै वंद होय वादनहीं पिलाणा मिश्री डालकर पिलाणा लेकिन् जहर जादा खालिया होय तो इस साधारण सादे इलाजपर विश्वास रखकर निर्चिंत-नहीं वैठे रहणा दुसरा वडा इलाज करणा (४) गंधकका जहर, दूधमें घी डालकर पीणा (५) जीर्णज्वर–) दूधमें घी सूंठ खारक कालीदाख डालकर पीणेसें पुराणाज्वर मिटताहै (६) मूत्रकृछ्र–) दूधमें गुडडालके पीणा (७) रिदयरोग–) याने छातीके रोगमें–दूधमें भिलावेके तेलकी १० वूंद डालकर पीणा (८) रक्तपित्त–) दूधमें पांचगुणा जल डालके पाणी जलेवाद ठंढाकरकेपीणा (९) हाडोंका टूटना–) दूधमें वूरा डालकर गरमकर पीछे उसमें घी तथा लाखका महींन चूर्णडालकर ठंढाकरके पीणा (१०) श्लेषम–) शरदी, आधादूध आधाजल अढाई मासे या पांच मासे वूराडाल आधे रुपेभर सूंठकी भूकी चार पांच विदाम दोयचार केशरकी पांखडिया डाल पाणीजले तहांतक पीछे सूंठके टुकडे

निकाल दूधपीजाणा विदाम चावजाणा इसतरेका दूध तयार कर रातके सोंणेके वखत पीणा फेर जलपीणा नहीं दूधमें मिश्री और काली मिरचका भूका डालकर पीणेसे भी जुखाम मिटता है (११) महनत काथकेला– महनत करके थकाभया अदमी गरम किया भया दूध पिये तो थकेला उतर जाताहै और हुसियारी आतीहै, (१२) पुष्टि– (वीर्यवृद्धि–) गरम करेभये दूधमें घी तथा वूरामिलाकर पीणा इसके जेसा धातुपुष्टीका कोइ दुसरा इलाज नहीं (१३) इंद्रीजुलाव–) दूध तथा जल संगमे मिलाकर पीणेसें पेसाव वहोत आता है, (१४) वच्चेके (दूधकी उलटी–) चूंगणेसें या दूधपिलाणेसें जो वच्चाकै करके दूध निकाल डालता है उसकूं दूधके संग चूनेका नितरा भयाजल डालकर पिलाणेसें दूधपेटमें रहजाता है (९९ देवदारू–) स्वेदल कफघ्न तथा पेसाव लाणेवाला है (देवदार्वादिक्काथ–) देवदारू वच पीपर सूंठ कायफल मोथ चिरायता कुटकी धाणा जोहरडे गजपींपर गोखरू कोंचवीज धमासा भोंरीगणी अतीस गिलोय काकडासींगी और स्याहजीरा सव चीजोंकों समवजन लेकर उसमेंसें २। रुपिया भरसे ३ रुपयेभर तककी पुडी वणाकर सोलेगुणे जलमें काढा करणा ये काढा प्यास औरतोंके सूआरोगमें वहोत फायदा करताहै, सूआरोगमें वुखार सोजा दस्त शूल हिचकी वगेरे डरावणे रोगोंमें फायदा करता है थोडादिन देणेसे जापेका रोग मिटजाताहै (१०० धतूरा–) नशोंकों ढीला करणेवाला तथा पीडाशामक धतूरा जहर है, इसवास्ते विद्वान वैद्यकी या डाकदरकी सल्ला विगर दवातरीके भी कभी नहीं वरतणा इसवास्ते इहां संक्षेप वर्णन कराहै शीतज्वरवालेकूं १० वूंद चढणेके डेढ कलाक पहले पत्तोंके रसकी आनेभर गऊके दहीमें देणेसें शीतज्वर मिटता है धतूरेके पत्तोंकी तथा डांखलियोंकी बीडी दमके जोरकों शांतकर देतीहै जो कभी इससें दमका रोग नहीं मिटे तोभी रोगीका दरद तथा घवराट कमहोकर वायु और कफ दवजाताहै तवदमभी बैठजाताहै लेकिन् वो बीडीपीती वखत वहोत संभाल रखणा चाहिये क्योंके शक्ति ऊपरांत पीणेसें तोफान करजाताहै, धतूरेके पत्तोंका लेप स्तनपकणा तथा स्तनोंमें दूध चढजाता है उसके सोजेकूं मिटाता है (१०१ धाणा–) दीपन तथा पित्तशामक है (धान्यादिहिम–धाणा तथा दाखका हिम येहिम आधाशीशी तथा गरमीसें शिर चढताहै, उसकूं मिटाता है धाणाकूं रातकूं मिश्रीके जलमें भिगाके रखणेसें फजर घोट पीणेसें हाथ पैरोंकी जलण मिटतीहै, (१०२ द्राख-) मुनक्का दीपन शीतल पित्तशामक तथा सारक याने दस्तावर है दाखोंकी वहोत जातिहै लेकिन् दवामें और वेमारकू खिलाणेमें काली मुनक्का अछीहै (द्राक्षासव) इसकी दवा वणतीहै सो क्षयजेसें वेमारकूं सतेज रखकर शक्ति देती है दवा मुजव दाख इकेली कम घलती है (द्राक्षादिहिम–) मुनक्का पित्तपापडा तथाधाणा इस हिमसें पित्तका वुखार जलदी पकताहै सादा गरमीका तप इसहिमसें वुखारकूं कमकर देताहै शिरकी ओर

की गरमी शांत होतीहै उनालेकी सखत गरमी तथालूमें दाख वरियालीका हिम सरबत प्यास तथा बुखारकूं कमकर देती है दाख हरड वहेडा आंवला पींपर मिरच तथा खजूर ये सब सम वजन लेकर सहत घी मिलाकर गोली वणाणी सूकी खासी तथा अवाज बैठै जिसमें फायदा करती है (१०३ नगड–) संभालू–) वादीहर तथा सोजनहर है सूजन तथा गांठपर संभालूके पत्तोंकों वाफकर वांधतेहै अछा फायदा करता है, (१०४ नवसादर–) पित्तकूं श्रवाणेवाला ऋतूलाणेवाला शोधक तथा तीक्ष्णहै दुसरी दवाइयोंके संग खाणेमें दियेजाताहै शरीरके कोइभी भागमें खूनका जमाव होकर सोजन होगया होय तो नवसादरके पाणीका वस्त्र भिगाकर रखणेसें सूजन पकता वंधहोकर खूनविखर जाता है सुआवडपीछै तुरत औरतोंके स्तनमें दूध पैदा होते कितनीक वखत उनोंमें सो जा तथा दरद होताहै जो उस स्तनका जलदी इलाज नहीं किया जायतो स्तन पककर फूट जाताहै, और कठण गांठे वंध जातीहै नव सादरका भीगा कपडा फायदा करताहै अंडवृद्धिरोगमें आंतरे उतरते है उसमें जो आंडोपर नवसादरका भीगा कपडा धरणेसें आंडोंके सुकडतेही आंतरे उंचे चढजातेहैं और सोजा नरम पडताहै और उलटी वगैरे दुसरेभी चिन्ह होते होय सो वंध होजाताहै (१०५ नसोत–) दस्तावर जुलावमें अम्ल-पित्तरोगमें काम देतीहै निसोत ॥ भर आंवले ॥ रुपेभर पावजलमें उकाल आना जल रखके ठंढाकर छाण मिश्री सहत उनमान मुजव डालकर पीणेसें वहोत दिनोंका आम्ल-पित्त महीनाभर पीणेसें मिटजाता है (पथ्य) दूध भातमिश्री (त्रिवृतादि चूर्ण दस्तावर–) निशोत ४ भाग सूंठ १ भाग सींधा ॥ भाग मात्रा अढाईमासेसें ५ मासां (१०६ नाग केशर–) शीतल ग्राही दीपन नागकेशरका चूर्ण वूरा तथा मखणमिलाकर खाणेसें मस्से-मेंसें गिरता खून वंध होजाताहै, मात्रा २ आनीसें चार आनीभर औरतोके पाणी जेसा प्रदर वहताहै उसमें नागकेशर छाछमें पीस तीन दिनपीणा छाछभात भोजन करणा रक्त-प्रदरपर चूर्ण घीमें देणा (१०७ नालियर–) शीतल तथा पेसाव लाणेवाला नालियेरका पाणी ठंढा तथा मूत्रल है, इसवास्ते पेसावकी जलण मूत्रकृच्छ्र तथा प्यासपर देणेमें आता है टोपसीकूं जलाकर लगाणेसें अंगारसें जलेवाद जो जखम होजाता हें सो रुक जाताहै टोपसीकूं याखोपरा जलाकर लगाणेसें अंगारसें जले वाद जो जखम होजाताहै, सोरुकजाता है, टोपसीके भूकेका धूआंपीणेसें हिचकी वैठजातीहै इसकी जोटी जलाईराख रेसमकी राख मोरके चंदेकी राख जीराकोरेतवेपर भूनाभया पींपर लोंग तवेपर उनारा भया सहतमें या अनारके सरवतमेंकै उलटी होते ही दोतीनवखत चटादेवेतो उलटी हिचकी बंध होजा-ती है (शूलहर चूर्ण–) नालेरमें छेदकरके अंदर सेंचलनिमक भरणा पीछे छेदकूं बंधकरके कपडमिट्टीकरणा फेर छाणोके जगरेमें सिलगा देणा पीछै इसका चूर्ण पीपरके चूर्णके संग खाणेसे शूल मिटती है (१०८ पारा) शोधक तथा पौष्टिक शास्त्रोंमें पारेका अनंत

गुण लिखा है सो सच है जो पूरे संस्कारसें पारेका शोधन मूर्छित कर देणेमें आवेतो अद्भुत गुण दिखाताहै लेकिन् पारेके शोधनवास्ते तथा उससें बडे दरजेका रस बणाणेवास्ते जादा अनुभवकी जरूरी है पारेगंधकसें हजारो रस बणते हैं जिसमें चंद्रोदय मकरध्वज रससिंदूर सुवर्णपर्पटी पंचामृतपर्पटी चिंतामणिरस लोकनाथरस वन्हिरस त्रिविक्रम आदि मुख्य है पाराके बनावटकी चीजों अनुभवी वैद्योंसिवाय दुसरे पासलेणेमें जोखम है, मिलावा शुद्ध १ तोला पाराशुद्ध १ तोला अजमोद १ तोला अजवाण १ तोला १ खुरासाणी अजवाण दूधमें सुद्धकरी १ तोला जोड अजवाण १ तोला तिल १ तोला सबकूं ४ पहर खूब खरलकर झाडवेर २ जितनी गोली करणी गोली १ दहीकी मलाईमें लपेट प्रभात अधर निगलजाणी १ सांझकूं(पथ्य)अलूणी रोटी गहूंकी और घी दहीकी मलाई या मीठा दही दिन ७ दवालेणी १४ दिनपथ्य इससें सुजाक गरमी गरमीकी गंठिया वदन फूटा दिन ३० लेणेसें भगंदर नासूर कीडीनगरा प्रमुख सब मिटजाताहै, मरदमी आतीहै, भूखक्रांतिकामेछा वढतीहै केइयक लोककेरीके अचार तेलके वेंगण बडोंमें भीये पारे हींगलू रसकपूरकी गोली इस रोगपर देतेहैं अशुद्ध पारा वगैरेकी दवा मूर्ख अनाडीयोंसें बचके रहणा पारामलममें गिरताहै शुद्ध होयतो अछा नहीं तो जादा नुकशान सोवेर वस्त्र छाणेवाला नहीं करता(पारेकी कजली) गंधकपारा सम वजन लेकर४पहर घोटणेसें खरलमें स्याह कजली होतीहै गरमीकी चांदी इसके लगाणेसें मिटजातीहै (पारेका मलम–) पारा १ भाग सादा मलम तीनभाग मिलाणा ये वदवगेरे उठती गांठोंपर लगाणेसें वैठजातीहै (१०९ पटोल) ज्वरघ्न शोधक तथा रेचकहै पटोलकूं परवलभी कहते हैं (पटोलादिक्काथ–) संतत शतत आंतरेवाला विषम ज्वरमें फायदा करता है, पटोल इंद्रजव देवदारू हरडे वहेडा आंवला मुनका नागरमोथा मोलेठी गिलोय अरडूसेके पत्ते इन इग्यारे चीजोंका काढा करणा पीलियेमें पटोलका जुलाव फायदा करता है पटोलकी एवजीमें कितनेक कडवी तोरी लेते हैं. पटोल अथवा तोरीके रसकी बूंद नाकमें डालणेसें पाणी झरकर पीलियेका जहर निकल जाताहै, गरमी उपदंश जो वदनमें फूटकर वाहिर निकलतीहै उसमें पटोलाष्टक क्काथ अछा फायदा करता है, पटोल हरड वहेडा आंवला नींवकी छाल चिरायता खैरकी छाल और वीचूला जिसकूं कितनेक लोक मिलामा कहतेहैं, पेटमें पीणा इन आठोंका काढा करणा (११० पीपर–) उष्ण दीपन पाचन तथा वातहर है एकतो लींडीके सिकलवाली लींडी पीपर कहलाती है वडीसो घोडा पींपर कहलाती गजपीपलकी ओरही सिकलकी लकडी आतीहै, जहां पीपर लेणा लिखा होवे उहां लींडी पीपर लेणी पींपर वहोत दवाओंमें गिरती है इकेली पींपरभी युक्तिसे ताकतकूं पहचानके देणेमें आवे तो वहोत रोगोंकों मिटाती है पीपरका चूर्ण पुराणे गोलेके रोगमें अरुचि हृदयका रोग श्वास काश कामला मंदाग्नि जीर्णज्वर वगेरेमे फायदा देती

है सहतमें खाणेसें मेद कफ श्वास ज्वरमें फायदा करतीहै, छालमें पींपर तथा सहत डालकर पीणेसें पेसावकी रेती और पथरीमें फायदा करती है पेटके रोगमें गोमूत्रमें कितनेक दिन भिगाकर रखी भई पींपर फायदा देती है वर्द्धमानपीपलीका प्रयोग वहोत अछा है, गायका दूध तो ४ पाणी १६ तोला और २ या तीन पींपर पाणी जलेजहांतक उकालकर पीछे पींपर चावकर दूध पीजाणा दुसरी तरे इकेले दूधमें पींपर एकेक हमेस वढती और पीछे ऊतरती एसें २० दिनतक आधा दूध रढे तहांतक ऊकालणा वो दूधपींपर चावके पीजाणा इस वर्द्धमान पीपलके प्रयोगसें पेटके रोग मंदाग्नि जीर्णज्वर उध रस पांडू गुल्म हरस और वायुके दुसरेभी रोग चले जाते हैं एकसेर गऊका दूध मंद आंचसें उकालकर आधा जले तव उतार ठंढा भयां पीछे उसमें आधा तोला वूरा आधा तोला घी तथा इतनाही सहत और ॥ रुप भर १ भरतकपीपर डालकरके पीणा रिदयका रोग खास तथा जीर्णज्वरमें अछा फायदा देता है, सहत घी दूध पींपर और मिश्री पांचोकों मिलाकर पीणेसे दम खासी क्षय विपमज्वर तथा रिदयका रोग मिटता है इसकूं पंचसार कहते हैं (पींपर पाक–) ३२ तोला दूधमें ३।४ रुपेभर पींपरका चूर्ण उकालकर मावा (खोवा) करणा उसमें २ रुपेभर घी डालकर मधुरी आंचसे घोटकर कीटी वणाकर दाणा पाडणा पीछे आठ रुपेभर वूरेकी चासणी करके कीटीडाल देणी तज तमालपत्र नागकेशर तथा इलायची हरेक डेढ २ रुपेभरका चूर्ण डालकर एकेक तोलेकी गोली वांधणी ताकतमुजब एक दो गोली खाणी उससें धातुगत जीर्णज्वर खासी दम पांडू धातुक्षय और मंदाग्नि ऊपर अछा फायदा करतीहै, एसे रोगवालेकू ठंढकालेमें पींपरका पाक वणाकर खाणा (१११ पीपला मूल–) उष्ण दीपन पाचन तथा वातहर है पींपलामूल और पींपर ये दोनूं एकही दरखतके हैं जडतो पींपरामूलहै फलपींपर है, लकडियां चव्य है गुण मिलते भये है लेकिन् पींपर जादागरम ओर सखत है, मंदाग्नि अजीर्ण जीर्णज्वर पेटकीवायु शरदी दम शूल निर्वलता इन सवोमें पींपलामूलकी गांठों काम देतीहै सहतमें गुडमें इसकी रावडी वणाकर लीजाती है पींपलामूल वहोतसे पाकोंमें तथा दवाइयोंमें गिरता है (११२ पीपल वृक्ष–)व्रणकूं भरणेवाला इसवास्ते पंचवल्कलके काढेमें गिरताहै, उसके छालकी सुपेद भस्मी होतीहै वो भस्मी दोदो वाल सहतके संग देणी पित्ताजीर्णमें अर्थात् अजीर्णहोकर छाती तथा गलेमें झलझल जलण रहा करतीहै, जिसकूं गुजरातवाले गलधरी कहते हैं, वो मिटती है पींपर आंवली तथा आंवेकी छालकी राखमें भी यहीगुण है पीपलकी राखमें सोमल हरताल शुद्धकर हंडीके आधी राख नीचै आधी ऊपरदेके वीचमें रखकर मूं वंधकर वारेपहर मंद आंच दीपसिखासीदे तो निर्धूम शुद्ध भस्मी होतीहै, अंगारपर धरणेसें धूआं देतो अशुद्ध जाणनी पीपलकी लाख छातीमें जखम पडीभई खासीमें सहत घी मिलाकर चटावे तो वहोत फायदा करती है

(११३ पीलूडी– जाल मारवाडमें कहते हैं, सोजाकूं दूर करे पीलूडीका रस सोजेपर लेप किये जाता है, पत्तोंकी लुगदी वदपर वांधणेसें फायदा होताहै (११४ पपइया–) गरम है एरंडककडीका दूध कृमिदूर करणेवाली है पक्के पपइयेकूं चीर उसमें जीरा तथा बूरा सांझकूं भरके रख फजरमें खाणेसें पित्तका तथा खूनके हरसरोगमें वहोत फायदा करती है, (११५ फिटकडी–) रक्तस्तंभक तथा ग्राही है फिटकडीकूं फुलाकर धरणके दस्तमें तेसें गिरणेमें गुडसंग देणा मूंमेसें अथवा हरकोइ द्वारसें खून गिरता होय तो फिटकडी देणेसें वंध होताहै फिटकडी रातकूं भिगाकर कुरला करणेसें मूंके सव रोग अछे होते हैं फिटकडीके पाणीकी वूंद डालणेसें दुखती आंख मिटती है चढाभया खून उतरता है तथा जिस आंखमें पककर पीपपड गया होय एसी आंखकूं फिटकडीके जलसें धोकर अंदर वूंदे वेर २ डालणेसें पकी भई आंखभी अछी होती है, औरतोंके प्रदर वगैरे कितनेक गुह्य रोगमें फिटकडीकी पिचकारी तथा गर्भस्थानमेंसें खून गिरता होय तो भी फायदा करतीहै पिचकारीसें अगर वंध नहीं होय तो अंदर फिटकडीका टुकडा दवाणेसें नसों संकुडाकर खूनका गिरणा वंध होता है दुखते मस्सेपर फिटकडीका चूर्ण मसले तो खून और चिमचिमाट दरद वंध होजाता है वच्चोंकी कांच तथा औरतोंके योनिपर फिटकडीका पाणी छांटणेसें संकुडाकर मजवूत सकत होकर अंदर चलीजाती है धरणके मूंपर फिटकडीका टुकडा धरा होयतो हरगज पुरुषका वीर्य अंदर नहीं जासकता वीर्यकूं फाडके निकाल देती है खाणेकी मात्रा १ सें दो वाल (पिचकारी) १ रतलपाणीमें अढाई मासा या पांचमासा देसीपत्ने लिखणेसें स्याही फूटकर आरपार होती होय तो फिटकडीके जलमें भिगाकर सुकाकर घोटलेवे हरगिजनहीं फूटेगा (११६ फालसा) पित्तशामकहै, गरमीकी मोसममें इसका सरवत करके पीणा दाहकूं मिटाताहै (११७ फुदीना) पोदीना उष्ण तथा दीपन पाचन है हैजा चूंक उलटी अरुचि मंदाग्नि ऊपर पोदीनेका रस अथवा उसकीचा फायदा करतीहै, उसके सवगुण पेपरमींटके मिलता है, (११८ वदाम) ठढी तथा पौष्टिक है मगज तथा आंखके रोगमें वहुत फायदेवंद है, विदामका पाक सीरा कतली वणतीहै गायके घीमें विदामकूं सुंघणेसें नाकमें जमते भये छोडे नरम पडतेहैं मगजकी नाताकती दूर होकर आंखका तेज वढताहै विदाम तथा केसर गऊके घीमें घोटकर उसकी नास लेणेसें वदाम कपूर दूधमें घसकर शिरपर लेप करणेसें तैसें विदामकी दूधमें खीर रांधकर फजरमें खाणेसें शिरकी शूल दरद तथा आधाशीशी मिटती है मगज तरकरणेकूं शिरपर विदामका तेल रगडणा विदामकी मींजीशेक वूरेके संग खाणा एकघंटे वाद मखण मिश्री मिलाकर चाटणा (११९ वनफसा) शीतल स्वेदल तथा कफघ्न है वुखार तणख सलेषम तथा कफमें दीजातीहै, वनफसा मोलेटी अफीमके डोडे उकालकर उसके जलमें थोडा बूरा डालकर रावडी जेसी चासणी करके चाटणेने

उधरस तथा कफकूं अछा फायदा करतीहै (१२० वहुफली) मूत्रल तथा पौष्टिक है पेसाबके रोगोंमें फायदेवंदहै गरमवायु तणख तथा प्रमेहकी जलणमें वहुफलीका लुआव वूरा डाल पीणेसें फायदा करतीहै दूधके संग वहुफली पीणेसें धातुपुष्टि तथा नाताकती मिटतीहै,(१२०वांबल)वंबूल ग्राही शीतल तथापौष्टिकहै वंबूलकी फलियों जव पकणेपर आवै उसकूं जलमें पीस २॥ रुपियाभर रस वूरा मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणेसें प्रमेह जलण गरमवायु तजागरमी मिटतीहै वंवूलके छालका रस पीणेसें अतिसार वंध हो जाताहै बंवूलके कच्चेपानोंका रस आंखमें आंजणेसें आंखकी गरमी तथा जल गिरणा वंध होताहै छालकूं उकाल जलसें कुरला करणेसें मूंकी गरमी मिटतीहै (१२२ वील) ग्राही दीपन तथा पित्तशामक है दवातरीके विशेष करके वीलकी जड तथा कच्चे वील अथवा वीलगिर काम देतीहै संग्रहणी तथा अतिसारमें वहोत वरतते हैं वीलके पक्के फल जरा रेचकहै इसवास्ते वंधकोष्टमें कच्चेफल अथवा उसका मुरव्वा दस्तकूं रोकणेवाला है अतिसार तथा खूनके मरोडेमें वीलकी गिर अढाइमासे दहीमें पीस दिनमें दो तीन वखत पीणा (विल्वादिचूर्ण) सूकी वीलगिर मोथ धावडीके फूल कालीपाट मोचरस ये सम वजन लेकर महीन चूर्ण करणा ये चूर्ण गुड तथा छाछमें पीणेसें सखत अतिसार मिटताहै (१२३ वकरीका दूध) गर्भिणीस्त्रीके विपमज्वरमे वकरीका दूध वहोत फायदेवंद है, अधसेर वकरीका दूध अधसेर जल मिलाकर उसमे थोडा दूध तथा सूंठकी किटकियां डाल जल जले उहांतक उकाल पीछे दूधकूं छाणके पीणेसें गर्भिणीका वुखार उतरेगा और ताकत आवेगी मिजाजकूं सूंठ गरम पडे तो मोलेठीके टुकडे डालणा छोटे वच्चोंका मूंपकताहै तव वकरीके दूधकी धार दिराणेसें फायदा होता है (१२४ वहेडा–) शीतल शोधक तथा पित्तशामक है वहेडेकी छाल त्रिफलामें आतीहै, मूंमें छालरखणेसें खाली खासी वंद होती है (वहेडा पुटपाक-) खासीमें वहोत फायदा करताहै (१२४ ब्राह्मी) शोधक तथा पौष्टिक है चित्तभ्रम मिरगी तथा जीर्ण उन्माद रोगमें ब्राह्मीके पानोका रस या चूर्ण घीके संग वहोत दिन सेवन करणेसें फायदा करता है, उन्मादके जोरमें ब्राह्मी देंणेसें उलटा नुकशांन करतीहै, उन्मादका जोर कम पडे पीछै ब्राह्मी देणी अछीहै, (ब्राह्मीघृत) ब्राह्मी का रस १ सेर घीसेर १ वच कूठ संखाहोलीकी जड इनोंका चूर्ण २० तोला ये डालकर उकालते रस जलजाय घी वाकी रहै तव ठंढा भये छाणलेणा खाणेकी मात्रा २सें ४ तोला (१२५ बोदार) रेचक तथा रोपणहै धूलमट्टी खाणेवाले वच्चोंकूं उसका जुलाव दिये जाताहै, एकदो वालवोदारमाके दूध या सादे दूध संगदेणेसें जुलाव लगकर पेटका भार निकल जाता है घीके संग मिलाकर लगाणेसें घाव भर जाता है, (१२६ भांग) पीडाशामक नींदलाणेवाली तथा नसोंकों ढीला करणेवाली भांगमें नसा है इसवास्ते दवाइमें वहोत सावचेतीके संग उपयोग करणा दूधमें उकालणेसें भांग शुद्ध होतीहै, शुद्ध भांगकूं

सेककर अथवा घीमें तलकर उसका चूर्ण रती १ से १ वालतक सहतमें चाटणेसें नींद लाता है भांग पीडाकारी रोगोंमें तेसें अनिद्रावाला मगजके रोगोंमें भांग देणेमें आती है, भांग वाजीकर होणेसें कितनेक पाक तथा आकूती माजमोंमें गिरतीहै,(१२७ भोंपाथरी) गलजीभी पिछाडी लिखी है वोही भोंपाथरीहै, मूत्रलहै, (१२८ भोरींगणी–कफघ्न तथा ज्वरघ्न है, भोरींगणीकी वहोत जातिहै, लेकिन् दवामें जादातर छोटी वैठी भोरींगणीका पंचाग वापरते हैं खासी दम श्वास तथा कफके वुखारमें वहोतही उपयोगीं चीजहै, भोरीं गणीका काढा अथवा पुटपाक कर उसके रसमें पीपल मिलाके देणेसें दम तथा कफमें फायदा करती है, (कंटकारी अवलेह–) लेणेसें दम तथा हिचकीकूं वैठाता है, छातीके कफकूं तोडताहै, (१२९ मजीठ–) शोधक शीतल तथा पित्तशामक है, (मंजीष्टादिक्वाथ-) मजीठ हरडे वहेडा आंवला कुटकी वच दारूहलदी गिलोय तथा कडवे नीमकी छाल सम वजन सव खूनकूं साफ करता है, वातरक्त विस्फोटक वगैरे चमडीके रोगोकों मिटा ताहै, (वृहत्मंजीष्टादि क्वाथ–) जिसमें ४५ चीजों आती है वो जादा गुणकारी है, मजीठ मोलेठी तथा लोद इन तीनोंकों जलमें पीस छाण मिश्री डालकर पीणेसें गर्भणीका दस्त मिटता है (१३० मधु)(सहत–) कफशामक सारक पौष्टिक तथा रोपणहै, रोपण और भेदक गुणसें अनुपान तरीके उपयोग होताहै प्यासके रोगमे सहत और पाणी पीकरके उलटी करणेसें प्यास मिटती है, सहत पाणी पीणेसें चरवी वढा भया मोटा अदमी पतला होताहै, दवामें वहोत काम देती है (१) दाहमें– चावलोके धोये जलमें चंदन घसकर सहत मिश्री डालकर पीणी (२) कलेजेका सोजा–) कलीचूना तथा सहत सोजेकी जगापर लेपकर ऊपर रूदचादेणी (३) कानमें वुग्ग–) चलाजाय तो इकेली सहत अथवा तेल सहत सामल कर डालणा (४) मेदरोगमें–) फजरमें जलदी ऊठके ४ तोला गरम जलमें २ तोला सहत डालकर पीणा (५) मुखरोगमें–) मूंमें सहतका कुरला भरके कितनीक देर रखकर डालदेणेसें इसतरे कितने एक कुरलोंसें मूंके अंदरके व्रण घावचांदी गरमी जलण तथा प्यास दूर होकर मूं साफ होगा(६) रक्तपित्त–) सहत तथा मिश्री वकरीके दूधमें पीणेसें खूनका गिरणा वंध होताहै(७) तृष्णा–) ठंडा पाणी तथा सहत मिलाकर खूव पिलाकर उलटी कराणी (८) कुचीलेका जहर–) सहत घी मिश्री चटाणी (१३१ मिरी मिरच–) दीपन पाचन तथा सारक है मौल पेटचूंक सा-धारण अजीर्ण वगेरेमें काली मिरच चवातेहैं तंद्रा वेहोसीकू दूर करतीहै, मिरचकी चाय मिश्री डाल पीणेसें सादा वुखार मिटातीहै, दस्त खुलास आताहै, ये चाय वच्चोंको चुगा-णेसें माकूं अथवा वच्चेकूं पारगला रोग होजाता है सोभी मिटाती है वूरा तथा घीके संग मिरचका चूर्ण खाणेसें शिरकी भमल आंखकी गरमी हाथपांवोंकी जलण मिटती है आंखोंकी तेजी वढातीहै मिरचका चूर्ण गुड दहीमें डाल पीणेसें नाकका सलेखम तथा

पीनसरोग मिटता है (१३२ माया–) मांजूफल) ग्राहीहै, मूंका पकणा उसलणा चीरा वगेरेमें मांजूफल तथा फिटकडीके कुरलोंसें वहोत फायदा होताहै, इसका पाणी छांटणेसें कांचसंकुडाकर अंदर चलीजातीहै, हरसके मस्सेपर अफीम तथा मांजू फल लगाणेसें फायदा होताहै, (हरसका मलम)–अफीम तोला २ मांजूफलका चूर्ण तोला ५ सादा मलम तोला ३० (सादा मलम, मेण घीका आगेलि०) तीनोंको मिलाकर हरसपर लगाणेसें जलण खूनका गिरणा वंध होता है, मस्से सूकजातेहैं औरतोके० योनिसंकुडाणेकूं मांजूफल फिटकडीका चूर्णकी पोटली धरे जाती है, अथवा कपूर और मांजू फलकूं पीस अंदर लेपकरणेमें आता है, (१३३ मालकांकणी) उष्ण स्वेदल वातहर तथा बुद्धिवर्द्धक है, मगजके रोगोंमें मालकांकणीके बीज तथा तेल वहोत फायदा करताहै बीजोंमेंसें पीले रंगका तेल निकलताहै, यादशक्ति जादा इस तेलसें रह सकती है हमेसपांच या दस बूंद मिश्रीमे या दूधमें लेणा मूं साफ करणेकूं ऊपरसे इलायची खाणी तेल हाजर नहीं होयतो बीज वरतणा इसके संग मिरच जेसीं दुसरी वादी हरता दवाकी फाकी लेणेसें बेहोसी भ्रमवायु आंचकी वगेरे वादीके रोग मिटजातेहै तेल मसलणेसें हिचकणेके जाडा खुलतीहै और हैजेके वांईटे मिटते है मालकांगणीकी जड सांपके डंकपर लगाणेसें जहर ऊतरता है (१३४ मींढल) मेणफल) वांतिकराणेवाला जहर खाये भयेकूं उलटी कराणे मैणफल दिया जाता है दो एककूं पीसणा बीजनिकाल डालणा शक्ति और तासीर मुजब दो आनीसे चार आनी भरतक सींधा निमक मिलाकर जलके संग लेणा जादा उलटी करणी होयतो ऊपर गरम पाणी पीणा (१३५ मीण) मैण) व्रण रोपण तथा हाडोंकों सांधणेवाला मेणकामलम होताहै, (सादामलम) मेण १ भाग तेल १॥ भाग दोनोंकों एक वासणमें धरके मंद आंचदेणी एक रस होकर जमजावै तब उतारकर धर देणा (१३६ मूसली) धातुपौष्टिक तथा वाजीकरहै, मूसली काली तैसें धोली दोजातकी होतीहै सुपेद जादा गुण करतीहै इसका पाक धातुपुष्टी करताहै अथवा दूधमें उकाल कर पीणेमें आतीहै लेकिन् वहोत दिन पीणेसें फायदा दिखाती है (१३७ मेथी) वादीहर तथा पौष्टिकहै (मेथीमोदक) मेथीदाणोंकों दलके किया भया आटा घी तथा बूरा मिलाकर नव २ टंककी गोलियां करणी इसको दोनों टंक १४ दिनखाणेसें वायु सरण कमरका दुखणा संधिवात वगेरें रोगमें फायदा करता है (१३८ मेंहदी) ठंढीहै, उसके पत्ते पीस लेप करणेसें हाथपांवोकी जलण पांउकी व्यायु फटणी तथा हर किसी जगेकी दाह मिटतीहे चिकते घावकी खुजाल तथा जलणपर लुगदी धरणेसें मिटजातीहै, (१३९ मोचरस) शीतल ग्राही तथा स्तंभक है (वृद्धगंगाधर चूर्ण) नागरमोथा इंद्रजव अरडूसेकी जड सूंठ धावडीके फूल लोद वाला बीलगिर मोचरस कालीपाठ कूडेकी छाल आंबकी गुठली अतीस लजालू ये १४ चीजोंका चूर्ण सब तरेका अतिसार तथा मरोडामें

बहोत फायदाकारक है, मात्रा अढाइमासे सें ५ मासेतक (अनुपान) चावलोंका धोवण तथा सहत (१४० मोथ) देखो पिछाडी नागरमोथा (१४१ मोरथोथा) स्तंभन उलटी लाणेवाला और रोपण है, तांबेके खारकूं नीलाथोथा मोरथोथा कहते हैं शुद्धकरे विगर खाणेके कामका नहीं उलटीके कामसिवाय दुसरी तरे पेटमें नीलाथोथा अछा नही जहर खाया होय तो उलटी कराके निकाल देताहै गरम होताहै रोगी इसकी कराई उलटीसें नाताकत नहीं होता गरम जलमें १ चाल देणेसें कैलाताहै इसके अलावा संग्रहणी रक्तपित्त औरतोंका सुवारोग तथाहिस्टीरीया मिरगी उपदंश उपदंशकी गंठियापर दोतोले नीलेथोथेकूं सोंनीवूकेरसमें खरलकर झाडवेर जितनी गोलियां करणी दहीके संग गोली १ देणी दही भात खाणा अलूणा ये दवासें कितनोंकी गरमी चलीजाती है, केइयकेरीके आचारमे देकर दही वगेरे सब खिलाते हैं नीलाथोथा आककी जड अथवा कडवी तूंबीके जडकों गरमीपर चिलममें डालकर पिलातेहैं इसका जलाभया गुलपीस गरमीके घावपर घीमें मिलाकर लगाणेसें गरमी मिटती है ये दवाइयें मूं आणेकी नहींहै आंखके दरदमे मोरथोथा फायदेचंद है, आंख दुखणा शांतपडे पीछै आंखकी ललाई खीलों वगेरेमें इसके जलकी बूदे फायदा करतीहै, आंखकी खील गुरांजणीपर नीलेथोथे काटुकडा दोतीनदिन एकवेर फिराणेसें खीलमिटतीहै (अंजनशलाका) मोरथोथा फिटकडी तथा सोरा तीनोंकों सामलकर नीचे आंच देणा तब रस होगा उसके अंदर तीनोंके वजनसें ५० मे भागका कपूर डालणा बाद इसकी सलियां वणाणी भांफणेकूं उलटाकर येसली एकदोदफे हमेस फेरणेसें खीलघस जातीहै और पाणीका झरणा बंध होताहै, (मोरथोथेकीबूंद) २ तोला जलमें एक रत्ती नीला थोथा आंखकी मांसवृद्धि चेपलगणेसें अथवा शीतला वगेरेसें गरमीसे दुखणी आई आंखकी सखत पीडा मिटेवाद मोरथोथेकी बूंदे डालणी चमडीके रोगोंमें बाहिर लगाणेमें न्यारी रीतसें लगाये जाताहै जोजगे घावसें चिक २ ती होय उसकूं इसके जलसें धोणेसें जलदी सूकजातीहै दुष्टव्रण घावपर नीले थोथेका टुकडा लगाणेसें अथवा इसके जलसें धोणेसें उसका सडा भया भाग जलजाताहै नीलाथोथा जुआरके दाणेजितना गुडमें गोलीकर तीन दिन निगलाणेसें नारू अंदर मरजाताहै ये दवा किसी अनुभवी पुरुषकी कही भईहै, हमनें अजमाया नहींहै, कहाके जहातक नारूमरेगानही उहांतक उलटी होयगी नहीं नारूमरे वाद उलटी होयगी ये निशानी हैं, इसवास्ते नारूसे दुखपाते भये रोगीने इस प्रयोगकी अजमायस करणी इसमें कोइ जोखम नहींहै इसीतरे हींगका प्रयोगभी सुणाहै माही सातमकूं माघमें मिश्री विनाजलपिये रातकूं चवाकर सुलादेणा तारे नहीं देखे, पावभर, इयप्रयोग अजमायाभयाहै, नारूनहीं निकलता(१४३मोरका चंदवा)मोरके चंदवेकी राख और लींडीं पींपर मिलाकर सहतमें चाटणेसें हिचकी तथा उलटीभी मिटजातीहै मोरकाचंदवा तमाखू संग

चिलममें पीणेसें सांपके जहरकूं उतार देताहै, (१४४ रतवेल) शीतल दाहशामक रतवेलकी नदीके किनारोंपर वेलों पसरतीहै गुजरातकी तरफ जादा है, रगतवायुके चठोंपर चोपडे जाताहै, (१४५ रतांजली) रगतचंदण शीतल तथा पित्तशामक है वहोतसे काढोंमें गिरताहै कितनेक ठंढे लेपमें गिरताहै रगतचंदण तथा नींवकूं जलमें घसकर मसलणेसें टपोरिया गरमीके गडगूमड और दाहकू शांत करताहै, (१४६ राई) तीक्ष्ण क्षोभक वांतिकारकहै, राईतेमें आचारमें लेप करणेमें और उलटी कराणेमें काम देती है, राईकूं भरडके फोतरे निकालकर लोक इसकूं पीस आटा करतेहैं राईका लेप याने पलास्टर मारणेकूं जलमें मिलाकर अथवा सावित राईकों जलमें पीसकर कागजपर लगाकर दुखती जगापर चेपदेणा फेर कितनीकदेरसें वोजगे जलणी सरू होतीहै उससें डरणा नही आधी घंटे या घंटेभर रखणा दरदका जोर होयतो एसा पलास्टर दिनमें दोतीन वखत इसी जगे लगाणा पलास्टरकी जगे चमडी लाल होतीहै, लेकिन् फफोला उठेगा नहीं कोई वखत चमडी जरा उपस जातीहै पट्टी उखेडे पीछै चमडीपर जलण जादा होती होयतो घी लगाणा इससें दरद कम होजाताहै, होजरीपर राईका पलास्टर लगाणेसे उलटी और दस्तवंध होजाताहै, पेटपर मारणेसें पेटका दरद मिटता है, पेडूके दुखणेपर लगाणेसे मरोडा मिटताहै, पांवोंकी पींडियोंपर तेसें होजरी तथा हाथ पांवोंपर मारणेसें हैजेका जोर कमपडताहै, हाथपांवपर राईमसलणेसें गरमी आतीहै गरम पाणीमें राईका आटा डालकर पांव डुबाकर रखणेसें पसीना आकर बुखार उतरताहै वदनके कोईभी जगे शरण शूल चसका आंकसी वगेरेकूं राईका लेप मिटा देताहै राईतेमें अथवा मसालेमें राईखाणेसें रुचि तथा पाचन होताहै जादा गरम पाणीके संगपीणेसें कै होतीहै सहजनेकी छालका चूर्ण राई जेसा कांम करतीहै, (१४७ रास्ना) उष्ण तथा वातहरहै रासनाकी जड मारवाडमें राठ नांमसें प्रसिद्धहै पत्ते इसके सोनामुखी जैसे होतेहै. जादातर दवामें जडलीजातीहै, वजारमें कितनीक वखत रास्नाकी जडकी एवजीमें हरकोई जड पसारी पकडा देते हैं, इस वास्ते दवामें असली गुण जो रास्नाका है सो होता नहीं सब तरेकी वात व्याधिपर रास्ना वहोतं अछीहै, महारास्नादि रास्ना सप्तक रास्ना पंचक वगैरे जुदे २ काढेंमें रास्ना मुख्यहै इनकाढोंमें रास्ना दुसरी दवाइयोसें जादा फायदा करतीहै, (रास्नापंचक) रास्ना गिलोय देवदारू सूंठ एरंडकी जड सव समवजन लेकर काढा करणा इयइकेला अथवा गूगल अथवा योगराज गूगल मिलाकर पीणेसें अथवा लिखे भये और काढोंसें पीणेसें सव वादीमें फायदा करती है (१४८ रेवचीणीका सीरा) रेचक तथा कृमिघ्न है रेवचीणीका जुलाव करडालगता है इसवास्ते जलंधर जेसे रोगमें तथा सखत वंध कुष्टमें दिये जाता है जुलाबकी वावत इसका जादा वरताव नही करणा इससें पेटमें चूंक होती है मात्रा १ रत्तीसें

१ वाल (१४९ लवंग) उष्ण वातहर तथा दीपन है लोंग मुख खसवोईमें तथा गरम मसालोमें काम देता है अजीर्ण वगेरेमें चवाते हैं (लवंगादिवटी) लोंग मिरच-काली वहेडा और खैरसारका चूर्ण इनोंकों वांवूलके छालके काढेमें कितनेक दिनखर-लकर मूंग प्रमाण गोलियें वांधणी येगोलियां खाली सूकी खासीमें वहोत फायदा करती है मूंमें रखकर चूसणा (१५० लसण) वादीहर तथा उष्ण है सांधोंकी वादी कम-रका दुखणा हिचकी चमकणा चूंक वायुका गोला तथा हैजेमे दिया जाता है लसण आमके पाचन करणेमें सूंठ जेसा गुण धराता है इससें आमातिसार अजीर्ण हैजे वगे-रोंमें तथा दस्तके रोगमें लसणका रस अथवा उससेंवणी कोईभी दवादस्त वंध करता है (लशनादि चूर्ण) लसण जीरा सेंचल सूंठ मीरच पींपर और हींग सव समवजन चूर्ण करणा अजीर्ण तथा हैजेके दस्तकूं मिटाता है खाज खुजलीपर लसणकी लुगदी धरणेसें जलण तो होती है लेकिन् खाजकी चमडी जलके लाल चमडी हो जाती है पीछै उसकूं कोइभी सादा मलम अछा कर सकता है चार तोले लसणके छिलके अलग कर हिंग जीरा सींधानिमक सेंचल सूंठ मिरच पीपर इन सवोंका तीन वाल चूर्ण मिलाकर गोली करणी इन गोलियोंकों ताकत पहचान करके एरंडीके जडके उकालेमें सव तरेकी वायुमें दीजाती है कुत्तेके काटे जहरपरभी लसणका लेप करणा लसण उ-कालके पीणा खुराकमेंभी लसण खाणा अर्दित वायु (मूटेढा होय सो) लसण पीस इस रोगमें तिलके तेलमें खाणा अथवा उडदके आटेमें लसण मिलाकर तिलके तेलमें वडे तलकर तेलमें फेर खाणा अथवा मक्खणके संग खाणा लसण घीमें खाणेसें शूल मिटती है (१५१ लीव) (नींव) ज्वरघ्न शोधक पित्तशामक पौष्टिक तथा कुष्ट हर है नींमके अंतर छालकाहिम सादा हमेसका एकांतरा तेसें चोथिया वुखारमें वुखारके पहिले देणेमें आवे तो वुखार वंध हो जाता है इस हिममें कुछ एक कोनाइन जेसा गुण है इतना इसमें जादा गुण है सो कोनाइनतो वदनमें वुखार होय तो दिये नहीं जाता और नींवकाहिम तो वुखार रहतेभी देणेसें गुण करता है पित्तके वुखारमें तेसें सादा अणउतार वुखारमें शीतला ओरी अछवडामें और पित्तके हरेक रोगमें ये हिम अछा है नीव पंचाग चूर्ण—नीमका पंचाग एक भाग जो हरडे पवाडके वीज चित्रककी जड मिलावा वाय विडंग आंवला हलदी सूंठ मिरच पींपर वावची किरमाला गोखरू तथा चूरा ये सव मिलकर पंचागकी वरावर इस चूर्णकूं वण सके तो खैरसारके का. ढेकी तथा भांगरेकी एक अथवा जादा भावना देणी इस चूर्णका वहोत दिन सेवन करणेसें वातरक्त अथवा रगतपित्त कोढ चमडीके सव रोग अछे हो जाते हैं नींवके पत्तोंको उकाल उससें स्नान करणेसें खसरा लूखास दाद वगेरेकी चलहलकी होती है जो घाव वहोत चिकता है जिसमें कीडे पडते हैं वो सव नींवके उकाले जलके धोणेमें

मिट जाते हैं पत्तोंकी लुगदी सहत मिलाकर घावपर बांधणी नींबका रस और आंवलेका रस पाव पाव तोला पीणेसें शीलस लुखस तथा खोटी गरमी दवती है नींबके पत्ते बकरीकी मींगणी दोनोंकों वाफके सांधोंके दुखणेपर तथा सोजेपर बांधणेसें हलका पडता है नींबके वाफे भये पत्तोंकी पोटिस गड गूंमडकूं पकाती है नींचोलीमेंसे तेल निकलता है वो तेल कान वहतेकूं बंध कर घावकूं भरता है मगज पकणेसें नाकके रस्ते खून गिरता होय अगर मगजमें कीडे पडणेका सक होय तो ये तेल नाकमें सुंघणेसें जंतु मिटते हैं खून बंध होता है सापके जहरमें नींबके पत्तोंका रस अथवा छिलकोंका रस-उसकूं खारा मालम दे जहांतक पिलाणा क्योंके जहरका जहांतक जोर होगा जहांतक नींब कडवा मालम देगा नहीं छालकूं ऊकाले जलमें धाणा तथा सुंठका चूर्ण डालकर पीणेसें सब विषम ठंडका आंतरेका वुखार सब मिटता है हैजा प्लेग वगेरे मरकीके वख, तमें कडवे नींबके पत्ते १ रुपिये भरमें रत्तीभर कपूर रत्तीभर हींग मिलाकर गोलीकर ये गोली आधे रुपेभर गुडके संग हमेस रातके खाणेसें इस रोगके जुलमसें वचता है, (१५२ लींबु) नींबु शीतल दीपन तथा पित्तशामक है जठराग्नि प्रदीप्त करता है इसवास्ते खुराककी चीजों संग इसका उपयोग करणा चाहिये तोभी देश काल प्रकृतीका विचार करके उपयोग करणा वहोतसी दवा गोलियों नींवूके रसमें वणती है नींवूका सरवत गरमीकूं पित्तकूं जलदी शांत करता है पित्तकी उलटीकूं जलदी मिटाता है दांतकी छेकडोंमेंसें मसूडोमेंसें खून गिरता होय वो नींबु चूसणेसें बंध होता है चूसणेमें खट्टे नींबुसें मीठे नींबू अछे होते हैं (१५३ लोबान) कफ शामक तथा रोपण है लोबान एक दरखतका रस है वो कफ शामक होणेसें २ से ४ वाल देणेसें सादी खासी बंध होती है लोबानके फूलमोल मिलते हैं वो उलटीकूं बंध करता है लोबान रोपण है इसवास्ते कितनेक मलमोंमें गिरता है (१५४ वखमा) वातहर ज्वरघ्न है कृमिघ्न है तथा कटु पौष्टिक है वखमा वछनागकी जाति है लेकिन् जहरी नहीं है अतीसभी इसी दरखतकी पैदाश है वखमा गुणमें तथा कीमतमें चढता है अजीर्ण गोटा पेटका दरद तथा अजीर्णका दस्त उलटीकूं वखमा तुरत मिटाता है पेटकी कृमिकूं भी मिटाता है जीर्ण-ज्वरमें बहोत फायदा करता है (मात्रा) १ सें २ वाल) (१५५ वछनाग) ज्वरघ्न तथा वातहर है वछनाग बहोत रसादिक दवायोंमें गिरता है इसकूं मारवाडीमें संगी मोहरा कहते हैं सींग जेसा होता है इसवास्ते ॥ जहरी चीज है सावचेतीसें वरतना तीन दिन गोमूत्रमें भिजाये रक्खे तो शुद्ध होता है मोलेठी मासा भर वछनागरतीभर कपड छाण कर सुंघणेसें चाहे जैसा सिर दुखता मिटता है हमारा अजमाया है (आनंद-भैरवरस) हिंगलू शुद्ध (शुद्ध करणेकी विधि) पहली गाडरके दूधमें खरलकर सुका देणा सातवेर वाद नींवूके रसमें सातवेर भावना देके सुकाणा एसा हींगलु शुद्ध

वछनाग मिरचकाली टंकन शुद्ध पींपर ये सब सम वजन लेकर चूर्ण करना या गोली वांधणी अतिसार ज्वर खासी मंदाग्नि वगेरे रोगोंमें फायदा करता है मात्रा १ सें दोय रती (१५६ वज) वातघ्न कफघ्न तथा उलटी लाणेवाली है वचकी मुख्य दोय जाति है एक तो दूधिया अथवा सुपेद वज दुसरा गंधीला घोडा वच वचमिरगी रोगमें हिस्टीरीया जेसा मगजके रोगमें फायदा करता है मात्रा दो आनी भर सहतमें मिलाय चटाना (१५७ वड) ग्राही तथा कफ शामकहे वडका दूध पौष्टिक है (पंचवल्कल) वड पींपल पीपलो पारसपीपल तथा गूलर ये पांच दरखतोंके छालकूं पंचवल्कल कहते हैं इसकी उकालीके पाणीसें फोडे घाव चांदी विस्फोटक वगेरे चमडीके सडे भये जगेकूं धोणेसें बहोत फायदा होता है चिकते भागपर इनोंका कपड छाण किया चूर्ण दवानेसें घाव जलदी भर आता है वड गूलर पीपर पीपला आंब तथा जांमूनकी जडकी छाल तथा भिलावा इन सबोंका काढा कर एक तोलेसें सरू कर चार तोलेतक चढते २ पीणेसें कफ प्रमेह अर्थात् नींदमें पेसाब हो जाता है सो मिटता है (१५८ विरियाली) (सूंफ) दीपन तथा वातहर है बुखारकी उलटीकूं सूंफका हिम मिटाता है (१५९ वायविडंग) कृमिघ्न तथा वायु हरता है कृमि कैंचूये कृमिके सब विकारोंकों मिटाती है वायविडंगका चूर्ण सहतमें लेनेसें अथवा उकालीसहतडाल पीणेसें तमाम जंतु मिट जाते हैं मात्रा बच्चोंकूं १ सें २ वाल वडेकूं अढाई मासेसें पांच मासे तक (१६० वाला) ठंडा शोधक तथा पित्तशामक है ठंडे लेपमें सरबतमें तथा पित्तके बुखारके काढेमें गिरता है एक तो काला नेतरवाला कमलके तंतु दुसरा सुपेद खसवाला (१६१ वांस कपूर) शीतल कफशामक पौष्टिक और मरदमी देनेवाला है वंसलोचन लोक प्रसिद्ध नाम है (सीतोपलादि चूर्ण) मिश्री १६ भाग वंश लोचन८ भाग इलायची ४ भाग पीपर २ भाग तज १ भाग सबोंका चूर्ण करना पुराणी खासी दम तथा क्षयमें सीतोपलादि चूर्ण बहोत फायदा करता है सरू होते क्षयकूं मिटाता है बच्चोंके दम खास जीर्ण ज्वर तथा नाताकतीपर बहोत दिनोंतक ये चूर्ण खिलाना मात्रा दो आनी भरसें चार आनी भरतक अनुपान घी अथवा सहत अथवा तासीर मुजब फेरफार करना(१६२ विदारी कंद) पौष्टिक तथा वाजीकर है तथा मूत्रल है ये कंद भूकोला भू आंवलेके नामसें प्रसिद्ध है इस कंदके ऊपर वेल होतीहै, कंदजमीनमें बहोत गहरा होताहै जों पुराना होताहै, त्यों कंद बडा होताहै, ताजेविदारी कंदका रस काम देता है सूकेकूं उकालकर रस करणा कंदकारस ४ रुपेभर घी तथा सहतमें पुरुषातन तथा धातु बढाताहै मगज भरताहै, औरतोंके दूध बढता है मात्रा ५ मासा या रुपेभर घी मिश्रीमें (१६३ शतावरी) शीतल मूत्रल धातुपौष्टिक और ग्राहीहै, शतावरी धातुवर्द्धक और मगजकूं पुष्टी देणेवाली है, वो दूधमें डाल अथवा पाक बणाकर खाये जाताहै, औरतोके गर्भाशय

दोष धातु प्रदर वगैरेमें बहोत फायदेबंदहै औरतोके दूध बढाता है,चूर्ण स्वरस इसका काम देताहै, चूर्ण घीसक्कर सहत मिलाकर चाटणा (फलघृत) घी सेर १ सतावरका रस तथा गोमूत्र चार २ सेर जीवनीय गणमें मिले सो सब दवा एकेक तोला उनोंकों जलमें पीस कल्ककर उसके अंदर डालणा घी पकाणेकी विधिसें पकाणा उसमेंसे २ तोला घी पीणा ये घी वंध्यादोष दूरकरता है, औरतोका गुह्य दोष मिटाता है, ताकत देता है, (१६४ सरपंखा) पौष्टिक मूत्रल कफघ्न है जडके कांटेमें मिरच डाल पीणेसें प्रमेह मिटताहै, बीजोंके तेलसे खुजली मिटती है, चाहे उकालके तेल वणालेवे जड छालके संग पीणेसें तिल्ली मिटती है, इसके जड़का चूर्ण एक महीना लेणेसे अंडवृद्धिमें फायदा देताहै, जडकी छालका कल्क वणाकर सींधानिमक कुलथीके काढेसें पीणेसें पथरी रेती निकल जाती है, (१६५शिलाजीत–)पौष्टिक मूत्रल शोथकपेसावके सब रोगोंकूं मिटाताहै पेसावकूं वधारणा खुलासा लाणा ये उसका खासगुण है, प्रमेह मूत्रकृच्छ्र रेती पथरी गरमवायु चणख वगेरेमें फायदा करता है, चंद्रप्रभा नामकी गुटिका ये शिलाजीतकी खास वनावट है, सो ऊपर लिखे सरवरोग गरमी खून विगाड और चमडीके सब विकारोंमें बहोत अछी दवाहै, धातू गिरणा नाताकती और नपुंसकपणा इसमेंभी शिलाजीत अछा फायदा करताहै, दूधमें पीये जाती है, औरतोंका ऋतुदोष और वीर्यकूं सुधारतीहै,(१६६ शेवाल)पाणीपर शेवाल आता है, उसकूं गरमकर सहसके एसा पेडूपर वांधणेसें वंध भया पेसाव खुलजाता है, (१६७ शेलारस) पौष्टिक कफशामक ग्राही तथा वदनमे गांठोंके दोषोंकों दूर करणे-वाला इसका मुख्य उपयोग आंडोंके वढणेपर होताहै, सूजे भये आंडपर शिलारस लगाकर ऊपर तमाखूका पत्ता वांधणा सोजा ओर गांठ दरद कम होजाताहै, (१६८ शेसगूंद) एकेक दोदो वाल सहतमें दो तीन वखत चटाणेसें दिनमें कितनेक दिन चाटणेसें अंडवृद्धिमें फायदा करताहै, औरतोका ऋतुधर्म वंध होयतो लाताहै, शेसगूंदका गुण गूगल तथा वीजा वोल जैसाहै, (१६९ शंख) पाचक रोपण दंभक तथा वात हरहै, दवामे शंखकी भस्मी कामदेतीहै, शंखके टुकडोकूं नींवूके रसमें ४ घंटा रखकर पीछे एक संपुटमे रखकर जलाणेसे सुपेद भस्मी होतीहै शंख भस्म प्राये इकेली नहीं दीये जाती कितनीक दवायोंमें गिरतीहै, (शंखवटी) आंवलीकी छालकी राख ४ तोला पांचनिमक सींधा सेंचल विडलूंण खावेसो सेंभरसूंण कचसूण कोइ नहीं मिलेतो एवजीमें सींधा निमक जादा डालणा ४ तोला इन दोनोंकों खरलमें नींवूका रस निकाल भिजाणा पीछे शंखके टुकडे ४ तोला अंगारमें खूवलाल वंधकर २ के खरलमें रहा नींवुका रस उसमें वुझाते जाणा जव निजोरा पीसा जाय एसा मूका होजाय तवतक फेरसेकी हींग सूंठ मिरच पींपर ये हरेक एकेक तोला और शुद्धगंधक शुद्धवछनाग शुद्धपारा हिंगलूमेंका निकाला भया ये तीनों सवापांच २ तोला पहलें पारे गंधककी कजली करणी पीछे

कपड छाण सब चीजों मिलाणी नींवूके रसमें खूब घोट झाड वेर जितनी २ गोलियां करणी इससें अजीर्ण चूंक गोला हैजा उलटी दस्त मंदाग्नि वगेरे पेटके सब रोगोमें फायदा करती है (अग्निकुमार रस) शुद्ध टंकण शुद्ध पारा शुद्ध गंधक ये तीनों एकेक भाग कोडी भस्म शंख भस्म मिरच ४ भाग नींवूके रसमें चार पहर खरल कर वाल वालकी गोलियां करणी पेटकी चूंक मंदाग्नि अजीर्ण मोल उलटी वगेरेमें देना (१७० शखा होली) मगजकूं ताकत देनेवाली पौष्टिक तथा सारकहै शंखके आकारके फूलवाली होनेसें शंखपुष्पी इसका नाम है मगजकूं ताकत देनेवाली होनेसें उन्माद हिस्टीरीया मिरगी चित्तभ्रम मनकी नाताकतीकूं अछा फायदा करती है (शंखावली स्वरस) स्वरसमें सहत तथा कूठ मिलाकर देनेसें पागलपणा मिटाती है, शंखावलीका काढा—क्काथ कर उसके संग योगराज गूगल मिलाकर देनेसें चित्तभ्रम तथा मगजके दुसरे विकारोकूं मिटाकर बुद्धिकूं अछी करती है (१७१ समुद्रफेण) ठंडा स्तंभन तथा आंखोंकों हितकर है, समुद्र फेण ये एक जातकी मछलीका हाड है, आंखकी तेजी वढाती है, मिश्रीके संग आंखमें अंजन करनेसें रातींधापणा ललाई और खुजाल मिटती है, कानमें भूकी डालकर ऊपरसें नींवूका रस निचोडेतो कानका पीपवहणा वंध होता है, (१७२ सहजना) (सरगवा) मूत्रल दंभक तथा सोजन हरता है सहजनेकी फली का साग तथा दक्षणी लोक कढीमेंभी डालते हैं रुचिकर तथा पाचन है छालकी उकाली कर पीनेसें कलेजेका सोजा तिल्लीका सोजा नरम पडता है, छालकी उकालीमें जरा २ सें चल औरसेकी हींग डालकर पीनेसें पेटमें ओर पेडूके अंदरमें सोजा होय सो मिटता है, (दोषघ्न लेप) सहजनेके जडकी छाल सरसूं सूंठ देवदारू तथा साटेकी जड इनोंकों छाछमें पीस जाडा २ लेप करनेसें जलण सिवाय तमाम सोजा सांधोंका सोजा गांठ तथा गुंमडके दोषकूं खेंच लेता है, पाठे जेसा भयंकर रोग व्रण तथा रसोली और अर्बुद जेसी करडी असाध्य गांठोंकूंभी ये लेप नरम करता है, उसके अंदरके दोषकूं धीमे २ खेंच लेता है, वायु तथा कफके सोजेमें तथा गांठोंमें ये लेप फायदा करता है, ये लेप नरम चमडीपर जरा जलण करता है, लेकिन् डरणा नहीं जलण कम करनेकूं अथवा वद वगेरे गरमीकी गांठोंपर लगानेकी जरूरत पडे तो अंदर जरा गहूंका आटा तथा नीमके पत्ते मिलाकर लेप करना (१७३ सरेस) शीतल तथा दाहशामक है, (दशांग लेप) सरेसकी छाल मोलेठी तगर इलायची रक्तचंनण जटामांसी लोद दारूहलदी कूठ तथा वाला इसकूं दशांग लेप कहते हैं, रक्त वायु गलगंड वगेरे गरमीका अथवा जलणवाले सूजनपर अथवा सोजे विनाके दाह ऊपर ये लेप भीजा या सूका चुपडणेसें तुरत आराम होता है, इस लेपकूं जरामा घी देकर मकरोना पीछे उसकूं ठंड जलसे पीस चंदनकी तरे लेप करना सुकेके फेर लेप करना

(१७४ सरसुं) वादीहर उष्ण शोथघ्न दोपघ्न लेपमें सरसूं गिरती है, (१७५ सरसूंका तेल) सरसूंका तेल आचारमें तथा सागके वघार वगेरेमें बंगाली तथा गुजराती लेते हैं वो रुचिकर अग्निप्रदीपक और उष्ण है श्वास रोगपर सरसूंका तेल गुडमें दिया जाता है कानमें शूल चलती होय तो इसकी बूंदे डालणी वंग देशवाले वदनके भी यही मसलाते हैं (१७६ साजीखार) पाचन दीपन तथा वातहर है (अंग्रेजी कारबोनेट ओफ सोडा) उसके वहोतसे गुण जवखारके मिलता है अजीर्णमें वो वहोत फायदा करता है (सर्जिकादि लेप) साजी मेदा लकडी तथा आंबीहलदी इन तीनोंकों जलमें पीस गरम कर लेप करनेसें गुप्तचोट पछाट किचरागया जमा भया खून विखर जाता है ओर सोजा हलका पडता है (१७७ साटा) शोथघ्न शोधक सारक तथा मूत्रल है साटेकी जड दवामें काम देती है दोपघ्न लेपमें तथा कितनेक काढोंमें उपयोग होता है अंदरके तेसें वाहर सोजेमें फायदा करती है सूंठ तथा सुदर्शनका काढा पीणेसें जलंदर तेसें पेटके सोजेपर सव विकारोंकूं मिटाती है सोजेके संग बुखार होता है सो भी नरम पडता है जडकूं घीमे घसकर अंजन करनेसें आंखकी झांख फूला दाह पाणी खुजाल सव मिटती है (पुनर्नवादि क्वाथ) पेटके अंदरके सोजेपर साटा गिलोय देवदारू हरडे सूंठ इनोंका काढा करके उसके अंदर गोमूत्र तथा गूगलमिलाकर पीणेसें अथवा विना डाले पीणेसें (शोफोदर) अर्थात् पेटके अंदर सोजा होता है सो सव मिटता है (पुनर्नवादि क्वाथ) शरीरके ऊपरके सोजेपर) साटा दारूहलदी हलदी सूंठ गिलोय जवाहरड चित्रककी जड भाडंगमूल तथा देवदारू काढा करना इससें हाथ पांव पेट मूं वगेरेका सोजा उतरता है (१७८ सिंकोना) उत्तम ज्वरहर कटु पौष्टिक ये दरखत पहली अमेरिकामे होता था लेकिन् थोडेसे वर्षोंसें वो दरखत इस आर्यावर्त्तमें वोया गया अव उसकूं देशी वनस्पतीमें गिणनेमें कोई हर जाना नहीं है सिंकोनेकी छाल दवामें काम देती है उसकी तीन जात है लाल पीली और भूरी उसमें पीली सर्वोत्तम है उसमें कीनाईन सत्व जादा है ठंढका वुखार इस दवासें वहोत जलदी अछा होता है कीनाईनकीतरे ये दवा वुखार आनेके पहली लेणी चाहिये सींकोनेकी छाल २॥ रुपिये भरकूं वारीक कूट उसकूं ॥ सेर जलमें डालणा उसमें नींवूका रस १ रु० भर अथवा गंधकका तेजाबकी १० या १५ बूंद डालकर उसका आठ हिस्सा कर वुखार उतर गये पीछै वुखार आनेके पहली दो दो घंटेसें आठ वखत देके पूरी करणी इसतरे देनेसें दो तीन पालीमें वुखार ऊतर जाता है जो वुखार अंतरदेके आता होय तो ये दवा वारीके दिन अथवा वुखार चढनेके वखत पहले वारे घंटेसे पहले देणी सरू करणी वुखारके वखततक दो दो घंटेसे चार ४ वखत पिलाणी चिरायतेकीतरे ये दवा अग्नि जाग्रत कर ताकत देती

हे (१७९ सिंदूर) शोधक तथा रोपण है चमडीके रोगोंमें कितनेक मलमोंमें सिंदूर गिरता है खुजलीमें मिरच सिंदूर घीमें मिलाकर लगाये जाता है इससे खाज खुजली मिट जाती है (१८० सूंठ) उष्ण दीपन पाचन और वादी हरता है त्रिकटुमें सूंठ होती है अनेक दवायोंके योगमें सुंठ गिरती है जापेवाली ओरतोंके फायदेवंद है वादीका जोर वधे तो घटा देती है सौभाग्य सुंठमें मुख्य सुंठ होती है बुखारमें सुंठकूं पीस जरा गरम कर कपालमें भरकर ओढ कर सोनेसें वहोत पसीना आकर बुखार उतर जाता है सुंठ मरोडा तथा दस्तके शूलकूं मिटाती है उसकूं घीमें तलकर देनेसें अथवा सुंठकी उकालीकर उसमें थोडा एरंडका तेल डाल पीणेसें वाइटे चूंक शूल वगेरे मिट जाता है एरंडीके जडकी उकाली कर हींग तथा सूंठ मिलाकर पीनेसे शूल मिटती है पाणीमें वहोत देर भीजे भयेकी ठंड मिटानेकूं सूंठ गुड घी मिलाकर चाटना गरमी लाकर फायदा करती है हैजे वगेरे रोगमें हाथ पांव ठंडा होता है तव सूंठका चूर्ण मसलनेसें गरमी ओर हुसियारी आती है गर्भणी ओरतकूं बुखार आता होय तो आधे रुपिये भरके छोटे २ टुकडे कर वकरीके दूधमें उकालकर अथवा पीसकर पीणी सूंठ आंवला ओर मिश्रीका वारीक चूर्ण फजरमें नित्यलेणेसें आम्लपित्तका रोग मिटता है सुंठ तज और मिश्रीकी उकाली पीनेसें सलेखम एकदम वैठ जाता है आम याने विगर परिपक्व हुआ मल पेटमें रह गया होय तो सूंठ विराली खसखस खारक सम भाग लेकर उसके दो भाग कर एक भाग घीमें तलना पीछे दोनुं भाग एकठा कर चूर्ण करना उसके वरावर बुरा मिलाकर फक्की लेणी सूंठ और वायविडंगकी फक्कीसें मंदाग्नि तथा पेटकी कृमि मिटती है (१८१ सूरण) शोधक तथा अर्शघ्न है सूरणका शाग होता है उसमें हरस मिटानेका गुण होनेसें मस्सेकी दवाईमें लोक वरतते हैं खुराकमें जुदी २ तरे लोक खाते हैं (सूरण मोदक) सुरण ८ तोला चित्रक जड ४ तोला सुंठ २ तोला मिरच १ तोला इन सवोंको १६ तोला गुडमें मिलाकर एकेक रुपे भरकी गोली करणी ओर हमेस फजर सांझ एकेक खाणी हरस रोगमें फायदा करती है (१८२ सोरा खार) मूत्रल स्वेदल तथा शीतल है इस गुणसें सोरा पेसावके जुलाचमें तेसें वहोतसे बुखारमें पसीनालानेकूं अंग्रेजी दवायोंके प्रवाही मिक्श्चरोंमें काम देता है कामला रोगमें भी काम देता है (१८३ सोवा) वातहर दीपन पाचन सोवेके पत्तोंका साग होता है सोवेका दाणा सुवावडमें ओरतोंके उकालीमें काम देता है छोटे वच्चोंके पेटमें दरद होता है तव सोवेका दाणा चावकर ऊपरसें उकालीका १० पनरे वूंद पिलानेसें पेटका दरद मिट जाता है और वच्चा खेलनें लगता है (१८४ सोना गेरू) गेरूके गुण पीछे लिखा है, (१८५ सोमल) सोमलकूं शंखियाभी कहते है ये जहरी चीज है इसका वरतावा अनुभवी पूरे विद्वान विना करना नहीं वो ज्वरघ्न तथा शोधक है तथा पौष्टिक है और

युक्तिसें उपयोग करनेसें भयंकर रोगोंकों मिटा देता है, सोमल १ तोला मारू १४ वें गणोंमें डाल कर कपड मिट्टी कर भोभरमें पकाना वाद मिरचकाली तोलेभर हींगलू सुद्ध तोला भर डाल खरल करना मोठ जितनी गोली ठंडका वुखार चढे तव डेढ घंटे पहले गहूंकी ताजी रोटी घी चूरा डाला भया झर २ ता चूरमांमे लेना जल नही पीना वारीटले वाद लूखी रोटी खाकर वाद जल पीना तीन दिनसें जादा देना नहीं ये पतवाणी दवा है चोकस रोगमें दरदीकी चोकस अवस्थामें सोमल देना वडा नुकशान करता है वादी कफकी प्रकृतीकूं माफगत क्रिया विधिसें कभी आता है पित्त प्रकृतीमें तथा पित्त रोगमें वडा नुकशान करता है फेर सोमलकी मात्रा जादा लेनेमें आ जाय तो हेरान करता है फेर सोमलका जहर जो एकठा हो जाय तो खरावी करता है (मात्रा १ रत्तीका शोलमा भाग) भी वहोतसी वखत सहन नही होता (१८६ सोनामुखी) सारक शोधक तथा चमडीका दोप हरती है सोनामुखीकूं गुजरातवाले मींढियावलभी कहते है सोनामुखी हलका ओर नरम जुलाव है छोटेसे वडे तककूंभी दिये जाता है वदनमें भरा भया विगाड पित्त तथा शिरकी गरमीकूं कम करती है चमडीके पुराणे विगाडमें सोनामुखी शोधक अछा असर करती है गलतकोढतककूं फायदा पोहचाती है पुराणे जहर दोपवालेकूं हलके जुलावकी जरूरी है और ये काम सोनामुखी अछा करती है वातरक्त रोगवालेने हमेस फक्की लेनी चहिये सुधार सकती है सो इस मुजब (पवित्र चूर्ण) सोनामुखीके पत्ते लेकर मट्टीके कोरे पात्रमें गोमूत्रमें भिगाके रखना फजरमें सुका देना फेर रातकूं भिजाणा एसें दस दिन कर फेर चूर्ण करना फेर रातकूं सोती वखत गरम पाणीसें हमेस लेना मात्रा १ सें २ तोला सोनामुखी गुलाबकली जो हरडे सुंफ सम वजन ले चूर्ण करना वरावर मिश्री मिलाणी रातकूं फक्की लेणेसें दस्त साफ आताहै, (१८७ सेंचल) दीपक पाचक तथा वातहर है लूणसादा और साजीकूं मिलाकर भठीमें मूंसकर ढालणेसें सेंचल वणता है, चूंक आफरा गोला वगेरे रोगोमें दुसरी दवायोंके संग दिये जाता है, (१८८ हरडे) सारक शोधक शीतल तथा रसायण है, आर्यदेशी वैद्योने हरडेका वहोतही गुण लिखा है, निश्चयमें येंचीज लायक तारीफकेही है, लेकिन् वापरणेमें उसकूं जरूरीमें जादा नहीं लिखी हरडे ज्यों वजनमें जादा होय त्यों उसका गुण और कीमतमें जादा होतीहै, हरडे वुखार आंखके रोग कोढ चमडीके रोग वायुके रोग विषमज्वर अजीर्ण सग्रहणी हरस खासी कफ पांडू तिल्ली गोला वगेरे वहोतसें रोगोंमें दीजाती है, हरडे वहोत तरेकी होतीहै मुख्य सात जाति हे, जो हरडे भी इसकी होतीहै, गुणमें दोनु हलकी होतीहै (वडीहरडे) वडी मात्रा लेणेसें जुलाव लगता हे, अपक्व दस्तकूं पकाके निकालतीहै, आमका पाचन करती है, वदनमें कुव्वत लातीहै, अजीर्ण हरस तथा चमडीके दोषका सोधन करणा दस्त साफ

लाणा अनाजकूं पचाणा क्षीणताकू मिटाकर ताकत देतीहै, ये हरडेका हितकारी स्वभावहै हरडे त्रिफला चूर्णमें क्काथ वगेरेमे पडतीहै, हरडे बदले जो हरडे काम देती है, २ तोले पीछे हरडे बडी जातमें गिणे जाती है, शिखर गिरिकी जादा गुण करता नहीं बद्रीनाथ हिमालियेकी हरडे गुणोंमें श्रेष्ठ होती है, जोकी पंजाब देश अमरसरसें आतीहै, जोहरडे सबसें छोटी होतीहै वो दस्तावर सारक है, जादा लेणेसें दो तीन दस्त लातीहै, घीमें तलकर रातकूं उसकी फक्की लेणेसें या चावजाणेसें फजरमें दस्त साफ लातीहै, हरसवाले रोगीकूं इसतरे हमेस लेणी चाहिये (हरीतकी अवलेह) पथ्यादिगुड) अभया मोदक अभयामलकी) अमृत हरीतकी) अभयादिक्काथ) मधुपक्क हरडे) इत्यादि हरडेके नाम गुणवाली दवाइयां बहोत उत्तम होती है, बहोतसे भयंकर रोगोंकूं मिटाकर ताकत लातीहै, (१८९ हरताल) शोधक कुष्ठहर ज्वरघ्न दंभक हरतालमें बहोतसे गुण सोमल जैसें हैं. उसमें सोमल ओर गंधकका तत्व मुख्य है, ज्वरहर तथा कुष्ठहर है लेकिन् जोखमकारी दवाहै, इसवास्ते सखतपरेज और पूरे चतुर वैद्यकी सल्लाविगर खाणी अछी नहीं है, (माणक्यरस शीतज्वरहर) शुद्धहरताल अभ्रकके पत्रेपर रखके ऊपरसें दुसरा पत्र देकर झग २ ते अंगारोंपर धरणा धूआं इसका लेणानही धूआं निकलकर जब लाल होजाय नीचै ऊतार लेणा (शुद्धकरणेकी विधि) कली चूनेका नितरे जलमें डोलायंत्रसें चारपहर आंचदेणा एसे चारपहर तिलोंके तेलमें वाफदेणा चारपहर सुपेद पेठेके रसमें पोटली बांध लटकाकर (हरतालका लेप) हरताल २ भाग मनशिल १ भाग वावची १ भाग पवाडके बीज २ भाग नीलाथोथा १ भाग टंकण १ भाग गंधक २ भाग कपूर १ भाग वारीक चूर्णकर नींवूके रसमें लेप करणा करोलिया चित्रीकोढ वाल उडजावे सो उंदरी रोग शिरका खोरा दाद वगेरेमें ये लेप बहोत अछा है (२९० हींग) उष्ण वातहर तथा कृमिघ्न है दालशागके वघारमें दीजातीहै, हिंगोडा दरखतका रस है, काबलमें होताहै, असल रसमें भेल करदिया करते हैं. सोनकली है, दांममे फरक पडता है, व्यंजनस्वाद होताहै, पेटमें वायु नहीं होणे देती पेटका दरद चूंक गोला अफरा शूल इसकूं मिटातीहै, घीमें तलकर गुडमें डाल निगलाणेसें पेटका दरद कृमिकूं वायु गोलेकूं तुरत मिटातीहै, दांतोमें रखणेसें पीडा शूल दांतोंकी मिटजातीहै, हिस्टीरीया वगेरेकी वदनकी खेंचा ताणमें उन्माद शूल श्वास दमवायु वगेरेमें अछा फायदा करती है, मात्रा दो दो घंटेसें चार २ वाल हींग छ छ घंटेसे देणा (हिंगाष्टक) तलीभई हींग सूंठ मिरच पीपर जीरा स्याहजीरा अजमाण सींधा निमक ये सम वजन लेकर चूर्ण करणा इससे अपचा मंदाग्नि आफरा चूंकगोले वगेरे सब मिटते हैं, हींगाष्टकमें १ रत्ती अफीम मिलाकर रातकूं लेणेसें मरोडेका सखत दरद वांईटे बैठ जाते है दस्त बंध होजाताहै, नींद आती है, (शिवाक्षार पाचन) हरडे हींगाष्टक तथा साजीखार सम भाग चूर्णकरणा फाकीलेणेसें अजीर्ण

दस्तकी कबजीयत आफरा चूंक अजीर्णका दस्त और हैजा मिटता है, चाहे केसाही सख्त अजीर्ण और हैजा होय तो सरू होतेही जोये चूर्ण ऊपरा ऊपरी लेणेमें आवे तो दस्त उलटी बंध होतीहै पेट आफरता नहीं और कचे मलकूं पकाकर दस्त उलटीके कारणकूं बंध करताहै, (१९१ हींगलू) पौष्टिक शोधक हिंगलू है, सो पाराहै, तव पारे जैसा गुण धारण करता है, शुद्धका उपयोग वहोत दवामें काम देता है फायदा करता है पारा रसकपूर हिंगलू वरतणेवाला पूरा विद्वानहोणा हींगलूयों पकाये जाताहै, ४ तोला हिंगलूकूं पात्रमें धरकर २ सेर नींवूका रस वूंद २ डालते जाणा नीचे आंचमंद२ देते जाणी वाद ५ सेर कांदेका रस इसीतरे सुसाणा फेर पांचसेर कांदेकूं कूट हांडीमें भर वीचमें हींगलू देकर मूं वंदकर मंद आंचसें पकाणा वाद सेर राई सेर मालकांगणी सेर कांदे सेर घी सेर सहत सेर कुचीला फेर मटकीभर वीचमें देकर ८ पहरमंद आंचसें पकाणा ये हींगलू वहोत गुण करता वादी कफके सव रोगोकूं मिटाता है हमारा अजमाया है, अनुपान जुदे २ है हींगलू १ भाग कथा ४ भाग पीसकर दवाणेसें चांदी घाव मिट जाता है (१९२ हीराकशी) पौष्टिक तथा स्तंभन है, हीराकसी लोहेका क्षार है, इस वास्ते उसमें लोह जैसा गुण है अंग्रेजीमें (सलफेट ओफ आयर्न) हीराकसीकूं कहते हैं, कलेजेका रोग तापतिल्ली पांडू कष्ट साध्यतक विषमज्वर अतिसार संग्रहणी तथा रक्त पित्त वगैरे रोगोंमें फायदा करती है हीराकसीका पाणी छांटणेसें कांच अंदर चली जाती है उस जलसें धोणेसें जखम तथा व्रण जलदी भर जाताहै, कासी साद्य तेल– हीराकसी आसगंध लोद तथा गजपीपर हरेक ४ चार २ तोला तेल ६४ तोला जल २५६ तोला सर्वकूं उकाल तेलवणाणा इस तेलके मालिससें स्तन तथा गुह्य अवयव कठण होजाते है, १०४ हीरा दखण) स्तंभन तथा शीतल है चमडीके रोग जैसें फटणा खुजली वगैरे ऊपर फायदा करती है, भूकी हीरादखण कत्था इलायची सम वजन तीनों कपूर थोडा मिलाकर चांदी घाव गरमी मूंका पकणा दांतका सडणा दांतकी शूल वगेरेमें वहोत फायदा देतीहै, घी अथवा सहतके संग मिलाकर लगाणा (१९४ हीरा बोल–) कफघ्न उष्ण ऋतुलाणेवाली रक्तस्तंभक तथा रोपण है औरतोंके ऋतु दोषमें वहोत फायदा देती है, हीराबोल हीराकसी और एलिया इनोंकों सामल करके वाल २ भरकी गोलियें वणाणी देणेसें ऋतु कम होय बंध होय अथवा दरद करके आता होय वो सब ऋतुदोषकूं मिटातीहै, हीरा बोल दांतके मंजनमें तेसें भगंदर नासुर तथा घाव वगेरेके मलमोंमें वो गिरतीहै, खूनकूं थांभती है जव कोइभी जखमका खून बंध नहीं होयतो हीराबोलका भूका दवाणेसे बंध जरूर होताहै.

गुणमुजब औषधोंका वर्ग.

(१अम्ल खट्टी दवायें–) इस दवायों में खट्टी दवायों आती है, वहोतसी खट्टी दवायें

शीतल अर्थात् ठंढी तेसें कितनीक दीपन पाचन होती है, पित्तकी शांति करेहै, लेकिन् कफकूं पैदा करती है,

(१) दीपन पाचन खट्टी) अंबली कवीठ चणेका खार नारंगी बीजोरा नींबु.

(२) दुसरी खट्टी दवाइयें) आंबले आंब जामुन अनार दाख (सामान्य उपयोग) इस तरेकी दवा पीणेसें या चूसणसें या शरबतकर पीणेसें पित्तकी उलटी दाह दांतमेंसें गिरता भया खून तथा मूं उसला होय सो सब मिटताहै, दीपन पाचन खट्टी दवाइयें जठराग्निकूं तेज करनेवाली होणेसें दाल शाग तथा मसालोंमें गिरती है इस वर्गकी सब दवा कफकारक है, इसवास्ते लेते सोवखत तासीर शरीरकी स्थिति तथा टेवका विचार करणा.

(१ अम्लविरुद्ध औषधें) इस वर्गकी दवायोंमें जादा करकें खारका समावेश होता है, जैसेंके साजीखार जवखार सेंधव सेंचल सादानिमक टंकण नोसादर आंधीझाडेका खार पापडखार शंखभस्म वगैरे सब खटाईके शत्रु है, (सामान्य उपयोग) होजरीमें खटासका जोर वढ गया होय खट्टीडकार यागुचलके आते होय दांत अंबीजगये होय और पेटमें पाचन क्रिया भये पीछै (वहोत करके जीमे वाद चार घंटेसें पाचन क्रिया पूर्ण होतीहै) पेटमे पवनका जोर पैदा होता होयतो और परिणामशूल जैसा अजीर्णका रोग रहता होय उसमें खार सेवन अछाहै, खायेवाद तुरत खारा पदार्थ कभी खाणा नहीं क्योंके जो खट्टारस खुराककूं पचाणेवाला है, उस रसका खार विरोधी है इसवास्ते जीमेवाद नारंगी अनार संतरे द्राक्ष वगेरे गीलामेवा खाणेकी रिवाज है वो वहोत फायदा करता है, लोक समझते हैं जैसा खार कुछ खुराककूं पचाणेवाला नहीं है लेकिन् पाचन-क्रियामें कोई विकार भया होयतो उसकूं सुधारणेवाला है क्षारपदार्थ खूनकूं तेसें शरीरके दुसरे रसोंकों गलाता है और पतला करताहै और हद उपरांत खाणेमें आजायतो वहुत नुकशांन करता हैं कफका चिकणास मिटाणेकूं उसमेंके कितनेक खार दवातरीके फाय-देवंद है सांधा पकडे जाताहै जकड जाताहै येरोग खट्टारस खूनमें वढणेसें होताहै और क्षार ये अम्लरसकूं तोडता है.

(२ शीतल दवाये) खाणेसें या शरीरपर लगाणेसें ठंढक देकर अंदरकी तैसें वाह-रकी दाहकूं मिटावे सो शीतल दवायोंमें ठंढताके संग दुसरी जुदे २ स्वभाववाली तासी-रकूं गिणतीमें लेंतो उसके वहोत वर्ग होसके शीतल पौष्टिक शीतल रोपण शीतल पित्त-शामक शीतल मूत्रल शीतल स्तंभन शीतल शारक शीतल दाहशामक.

(१) शीतल पौष्टिक–) आंवला गोखरू मोलेठी चिरमी विदाम वंवूल वंग-लोचन शतावर.

(२) शीतल रोपण–) कथा खैरसार गेरु मेंहदी हीरादखण.

(३) शीतल पित्तशामक) आंवला कूडाछाल गायजवां गिलोय गोखरू चंदन चंदलिया त्रिफला दारुहलदी धमासा नारंगी मजीठ रगतचंनण नींवू.

(४) शीतल मूत्रल) सोरा अलशी गाजवां कवाचचीणी चावल.

(५) शीतल स्तंभन) ईसवगुल कूडाछाल कत्था केशर जामुन बबूल मोचरस.

(६) शीतल सारक) आंवले गुलाबकाफूल हरडे.

(७) शीतल दाहशामक) इलायची केशर चंदन तुकमवालिंगा त्रिफला बहेडा सरेस.

(सामान्य उपयोग) ये दवायां दाह शमनवास्ते हिम शरबत लेप पोता घी तथा प्रक्षालन (धोणा) उसके रूपमें वापरते हैं गरमवायु प्रमेहकी जलण तथा होजरीमें दाह होताहै, और उलटी होतीहै तब इस वर्गकी दवाका हिम पानक अथवा शरबतकर पिये जाता है वातरक्त गरमीकी चांदी आंखके झमाले वगेरे दाहमें इस दवायोंका पाणी धोणेके काममें लेप तथा घी चुपडणेके काममें आता है (४ पित्तशामक दवायें) जो दवा वदनके अंदर कोपेभये पित्तकूं शांतकरे अथवा दस्तके रस्ते निकाल डाले वो पित्तशामक कहलातीहै बहोतसी दाहशामक दवाइयें पित्तशामक होतीहै इस वर्गकी दवायोंका कितनेक विभाग होसकतेहैं. कितनीक खास पित्तशामक है और कितनेक स्तंभक पित्तशामकहै.

(१) खास पित्तशामक) कोलापेठा पित्तपापडा गाजवां गिलोय चंदन धाणा नारंगी बहेडा भांगरा मजीठ रगतचंनण नींब नींबू बाला घी मखण वगेरे.

(२) सारक पित्तशामक–) नवसादर आंबली आंवला खारातूंवा कुवारपाठा चंदलिया त्रिफला दाख वगेरे.

(३) स्तंभक पित्तशामक) बील दारूहलदी अनार कूडाछाल आंब (सामान्य उपयोग) पित्तके विगाडमें तथा पित्त प्रकृतिवालेकूं इस वर्गकी वस्तु जादा माफगत आती है बुखारकी प्यास उलटी दाह धूपकी लू खूनके विगाडमें भी पित्तशामक दवाओं फायदेवंद है, पित्तके वडे कोपमें पित्तकूं निकालणेकूं सारक पित्तशामक दवायें कामकी है, पित्त कोपणेसें जठरमें तथा आंतरेमें नहीं जाकर खूनमें मिलके कामला पैदा करता है, तब पित्तसारक दवायें पित्ताशयमें वधे पित्तकूं आंतरेमेसें दस्तके रस्ते खेंचकर निकाल देती है ॥

(५) उष्ण दवायें) शरीरमें जागृति चेतन तथा गरमी देणेवाली दवायोंकों उष्ण दवायें कहनेमें आती है, इस दवायोंका मुख्य दो भाग हो सकता है ॥

(१) सब वदनमें गरमी लाणेवालीदवा– अजवाण अदरक सूंठ लोंग अंबर कस्तूरी कांदा पीपर भिलावा दशमूल आक वगैरे.

(शरीरके किसी भागमें गरमी लावे) हींग लसण मालकांकणी अकलकरा समुद्र-फल हीरावोल जावंत्री तुलशी कायफल जवखार आंधीझाडा पीपरामूल कपूर रास्ना वगेरे (सामान्य उपयोग) उष्ण दवाये प्रथम मगजकूं असरकर ज्ञानतंतुओंकों जागृत करती है ये ज्ञानतंतुओं रिदयके ज्ञानतंतुओंकों जागृत करतीहै, जिससें खून जलदी २ फिरता है और खून नहीं पोंहचणेसें भई वेशुद्धी इससें दूर होतीहै शक्तिक्षीण होगई होय मर्मस्थान मंद पडगयें होय शरीर वहोत अशक्त और हुसियारी करके विलकुल रहित होजाय इंद्रीयोंमें शून्यता आगई होय वदन ठंढा पडगया होय एसी स्थितिमें इसीवर्गकी दवा कांम देतीहै.

(६ दीपन पाचन–) जो दवा आमकूं पचावै और जठराग्निकूं प्रदीप्त करै वो दीपन और जिसकरके नहीं पचाभया खुराकका पाचन होय सो पाचन दवा कहलाती है, दीपनदवामें कचे खुराककूं पचाणेका और अग्निप्रदीप्त करणेका गुण है, कितनीक दवा दीपन है, कितनीक पाचन है और कितनीक दोनों गुणवाली है.

(१) दीपन वस्तुओ–) सूंफ बीजोरा नारंगी पीपलामूल धाणा तज जावंत्री जवखार चणेका खार अजवाण लूण जीरा स्याहजीरा सोवा वगेरे.

(२) पाचन वस्तुयें–) भीलामा कलंभा कुटकी नागकेशर कुचीला वगेरे.

(३) दीपनपाचन–) अद्रक सूंठ मिरच पींपर लोंग जावंत्री इलायची चित्रकमूल कवाबचीणी इंद्रजव साजीखार छाछ. सामान्य उपयोग–अजीर्णमें पाचन अथवा पाचनके संग दीपन दवा दीजातीहै, पाचन दवा अनाजकूं पचातीहैं, दीपन दवायें अजीर्णके विकार जैसेंके चूंक पेटपीडा वायु आफरा वगेरेकूं मिटातीहै,

(७) वादीहरता–) वायुकों मिटाणेवाली दवाइयें वायुहर वातहर वातघ्न एसे कहलातीहै लेकिन् उसमें भेदहै, पेटपर असर करणेवाली दवायें शरीरमें शूल चसका वगेरे दरदकूं मिटाणेवाली दवायें और मगजका चित्तभ्रम वगैरे वायुकों मिटाणेवाली दवायें पहले प्रकारकीकूं वायुहर दुसरे प्रकारकीकूं वातहर तीसरे प्रकारकीकूं वातघ्न एसी तीन संज्ञा दीगई है.

(१) वायुहर) पेटकी वायुपर असर करणेवाली लूण साजीखार अजमाण आदा चित्रकमूल कुचीला तज पींपर मेथी लोंग लसण वायविडंग सूंठ सोवा हींग.

(२) वातहर) शूल चसका अंगके दरदपर अरणी आक एरंड करंज कायफल चिरमी कांदा दशमूल संभालू वछनाग लोंग सूंठ अफीम कपूर वगैरे.

(३) वातघ्न) मगजके संग संबंध रखणेवाले वातव्याधिकूं मिटाणेवाले गूगल भिलावा दशमूल लसण वच वछनाग रास्ना पीपलामूल कोंचबीज.

(८) कफघ्न दवा) कफकी चिकणाई तथा कफके जत्थेकूं विखेरके पतलाकर बाहर

निकालणेवाली दवाकूं कफघ्न दवायें कहणेमें आती है, सो मुख्य २ लिखते हैं आंधीझा अरडूसा अरणी आक आंवाहलदी काकडासींगी शेशगूंद कायफल जवखार मोले तुलसी देवदारू भूरींगणी वच हीरावोल वगेरे इसमेंकी वहोतसी दवाई उष्ण वीर्य या गरम स्वभावकी है, थोडी एक शीत वीर्यभी है, मोलेठी हीरावोल वगेरे.

(सामान्य उपयोग) छातीके अंदरके कफकूं निकालणेवास्ते कफघ्न दवायोंका उप योग करणा चाहिये इसमें समझणेकी वात एसीहै, अफीम वगेरे दवा कफकूं दवातीहै लेकिन् जिसवखत छातीमें कफ पूरे जोरका भरा होताहै, उसकूं अफीम वगैरे दवा उलट नुकशान करताहै, कफघ्न दवा देकर कफकूं वहोतसा निकाले पीछे अफीम जैसी कफ शामक दवा देणी.

(९) कफशामक-) छातीमें थोडा कफ होय जिसकूं शमादेवे सो इसतरेकी दव कासश्वास तथा हांफणी दमकूं भी दवातीहै, खेरसार वंशलोचन अफीम सहत लोवा तमाखू मनशिल धतूरा वगेरे.

[१०] ग्राही दवायें) जो दवा वदनके प्रवाही पदार्थोंका शोषण करके उसकूं घट्टकरे उसकूं ग्राही दवा कहते हैं जो दवापाणी जेसा दस्तकूं वांधे सो ग्राही कहलाती है, इस वर्गकी दवा इसमुजब है, अरडूसा आंव इंद्रजव ईसवगुल कूडाछाल कत्था केश जामुन जायफल अनार दारूहलदी नागकेशर बील बंवूल फिटकडी मांजूफल मेंड मोचरस नीलाथोथा राल लोद वड शंखजीरा शतावर हीरादखण हीरावोल वगेरे.

(११) स्तंभन दवायें) जो दवा दस्तकूं पेसावकूं अथवा दुसरीभी वहणेवाली चीजोंकों थांभके रखे उसकूं स्तंभन दवा कहते हैं, तमाम ग्राही दवायोंमें कुछ इक स्तंभन गुण है तोभी जिस दवायोंमें जादा स्तंभन गुणहै, सो इसतरे अफीम मोचरस नीलाथोथा जायफल वगेरे.

(१२) रक्तस्तंभक दवाये) जो दवा खून गिरतेकूं वंधकरे वो रक्तस्तंभक कह लातीहै, इन दवायोंमें नाडी संकोचाणेका गुण होणेसें जहांसें खून गिरता होय उसजगे रक्तस्तंभक दवा पहोंचतेही उन नाडीयोंका मूं वंध होताहै, ग्राही और स्तंभक दवायें ऊपर लिखीहै. उनोंमें भी थोडा २ गुण खून थांभणेका है, खास रक्तस्तंभकमें अरडूसा हीरावोल तथा फिटकडी वगेरे मुख्य है, ग्राही तथा स्तंभक दवाओंका सामान्य उपयोग ऊपर लिखाहै, ग्राही दवाये स्तंभकहै तोभी उनोंसें पेट चढता नहीं और स्तंभक दवायें दस्तकूं रोकती है, लेकिन् उनोंमें दीपन पाचन गुण नहीं होणेसें पेट आफरणेका डरहै, इसवास्ते स्तंभक दवायोंके साथ वातहर गरम दवामिलाणी चाहिये प्रदर प्रमेह धातुका गिरणा कान तथा नाकका वहणा मूंसें नाकसें दस्तसें पेसावसें खून तथा कफ गिरता है, उसकूं तथा घाव फोडेमेंसें पककर पीप वहता है, उसकूं इस प्रकारकी दवा मिटाती है,

कोईमें तो खाणेसें कोईमें धोणेसें कोईमें पिचकारी मारणेसें और कोइमें लगाणेसे इन जुदे २ झरणेका अटकाव होताहै.

(१३ शोधक दवायें–) जो दवाइयां खूनके पित्तके वायुके तथा कफके विकारोंकों धीमे २ दवातीहै, वो शोधक कहलाती है, उसके विभाग वर्ग बहोत होसकता है.

(१) जीर्ण पित्तकूं शमन करणेवाली पौष्टिक शोधक) आसगंध, गूगल, ब्राम्ही.

(२) खूनकूं पुष्टि देणेवाला खुराक पौष्टिक शोधक–) शिलाजीत लोह माक्षी.

(३) उष्णवीर्य पौष्टिक शोधक–) सोमल, हरताल, हींगलू, पारा, तांवा.

(४) सारक शोधक–) गंधक, सोनामुखी, हरडे, पारा, आंवाहलदी, आंवला, आसोंदरा, एरंडीकी जड, तेल एरंडीका, अंकोल, कुंवार, चंदलिया, त्रिफला, जमालगोटा, साटा, कोला.

(५) खासरक्तशोधक–) अनंतमूल (उसवेकीजड) लालरोईडा मजीठ.

(६) खास उपदंश शोधक–) रसकपूर, पारा, चोपचीनी.

(७) खासपित्तशोधक–) नवसादर.

(स्वेदल दवायें–) पसीना लाणेवाली दवाकूं स्वेदल कहतेहैं सोरा अनंतमूल अफीम आक अंकोल कपूर देवदारु मोथ मालकांगणी गरमपाणी ये पसीनां लाणेवाली चीजोंहै सामान्य उपयोग– बुखार मर्मस्थानके अंदरका सोजा संधिवायु जलोदर चमडी सुकीभई लूखी रहाकरे एसे सबरोगोंमें पसीना लाणेवाली दवा अथवा पसीना आवै इसतरेया शेकया नास लेणेसें सब रोग मिटते हैं.

(१५ शोथघ्नदवायें–) खाणेसें अथवा बाहर लगाणेसें जो दवा सोजेकूं मिटावे सो शोथघ्न कहाती है, अरणी आंवला कडवीतोरी कालीपाट कीडामारी दशमूल साटा सहजणा वगेरे. सामान्य उपयोग– सोजा दोतरे ऊतरता है, सोजा उतरणेवाली रेचक दवा खाणेसें तेसें वायूका सोजा होयतो वातहर दवाके लेपसें पित्तका होयतो पित्तहर दवाके लेपसें मिटता है निवलाईकी सोजन ताकतवर दवा खाणेसें मिटता है.

(१६ मूत्रल दवा–) जो पदार्थ मूत्र पिंडऊपर असर करके पेसावकूं जादा खुलासा लावे सो मूत्रल कहातीहै, मूत्रल वस्तुओंका दो विभाग किया जाय तो एक तो खास मूत्रल और दुसरा पौष्टिक मूत्रलहै.

(१) खासमूत्रल–) टंकणखार सोरा आंधीझाडा ककडीके बीज कालीपाट पलासगरणी (गायजवां) देवदारू मोथ नालियेर सहजणा साटा अलशी आसोंदरो कबाबचीणी जवखार वलबीज बहुफली दूधपाणी तिल चावल वगेरे.

(२) पौष्टिक मूत्रल–) शीलाजीत तालमखाणा गोखरू विदारीकंद शतावरी वगैरे.

(सामान्य उपयोग–) खास मूत्रल दवायें पेशावकूं खुलासा लातीहै और तीक्ष्ण-

रूप रोगमें जादा असर करतीहै, पौष्टिक मूत्रल दवायें पुराणे भये रोगपर जादा फायदा करती है वीर्यके दोषकूं सुधारतीहै वदनमें ताकत लातीहै, पेशावके दाहमें तेसें बुखारमें मूत्रल दवा जादा काम देतीहै, पांडू कामलेमें ज्यों सारक दवाकी जरूरी है तैसें खास मूत्रल दवाकी भी जरूरी है और ये दोनोंतरे खूनमें वढे पित्तकूं निकाल देतीहै.

(१७ रेचक दवायें–) जो दवाओं दस्तकूं जादा खुलासा लातीहै. उसकूं सामान्य तरे रेचक दवाओं कहणेमें आतीहै लेकिन् एसी दवा वहोत तरेकीहै कितनीक दवायें मलकूं पचाकर वंधे भये मलकूं नीचै उतारती है, जैसे जोहरडे त्रिफला कितनीक कचे पक्के दोनुं मलकूं नीचे खेंचके लेजाके दस्त लाती है, जैसें करमाला. कितनेक गंठेभये और सूकेभये मलकूं उखेडकर न्यारा कर निकालतीहै, जैसें कुटकी जमालगोटा और कितनीक कचा पक्का दोनूं मलकूं तथा पित्तकूं पाणी जैसा पतला दस्तकूं वाहर निकालती है, जैसें निशोत. कडवी तूंवी, सोनामुखी एरंडीका तेल वगेरे निश्चै विचारके देखे तो ये चारों दवा रेचक गिणे जातीहै.

(१८ उलटीकी दवा–) मेंणफल निमक राई आक आरीठेका जल नीला थोथा कडवी तोरी वंदालफल जिसकूं डूंगर फलभी कहते हैं.

(सामान्य उपयोग–) खायेभये जहरी पदार्थकूं निकालणेवास्ते तेसें कफपित्तकूं और जादा खाये भयेकूं निकालणा होय तव उलटी लेणेकी जरूरत पडतीहै; कितनीक दवा पेटमें पोहचतेही उलटी लातीहै, और कितनीक होजरीमें गये पीछै खूनमें मिलकर मोल लातीहै, फेर उलटी लातीहै,

(१९ कृमिनाशक दवायें–) कितनीक दवा आंतरोंके अंदरकी कृमीकूं मार डालती है और कितनीक वाहरके जंतुओंको कितनीक दवा एसी है सो जिसके सेवनसें पेटमे कृमि पडतीही नहीं इन सवोंकी तपशील.

(१) पेटकी कृमिनाशक–) कांकच कीडामारी अजमाण (खुरासाणी) पलास अनार वखमा वायविडंग कालीजीरी वगैरे.

(२) कृमिघ्न तथा रेचक–) कडवातूंवा कपीला रेवचीणीकाशीरा वगेरे.

(३) कृमिपैदा नहीं होवै) इंद्रजव चिरायता नींव वज डीकामाली अतीस.

(४) घावके जीवोंकी दवा–) कपूर कील गंधक नींव हींग पारा.

(सामान्य उपयोग) जो दवा कृमिकूं परास्त करती है वो पेदाभी नहीं होणेदेती. फरक इतनाही है कृमिकूं परास्त करणेवाली दवा पेटमें जाकर तुरत कृमीपर असर करके कृमिकूं परास्त करतीहै अथवा दवाती है कृमिका विशेष जोर होय तो कृमिघ्न दवाओंका कितनेक दिन सेवन करणेसें कृमि परास्त होती है, जो कृमिघ्न दवा रेचक नहीं है वो खाये पीछे दुसरे दिन एक जुलाव लेणा जिससें सव मलामत निकलपडै.

(२० ऋतुलाणेवाली दवा) बंध ऋतूकूं खोले टंकण नवसादर एलिया हीराबोल वगैरे इनोंकी गर्भाशयपर असर होतीहै.

(२१ छींकलाणेवाली दवा) नक छींकणी तमाखू नवसादर कलीचूना सामिल किया (आमोनिया) नाकके श्लेष्म पुडतपर जाके उसमेंसें रसकूं टपकाता है, और पाणी झरणेसें शरदी वगैरे शिरका दरद कम पडता है.

(२२०) स्नायुयोकूं ढीली करता) जो दवा शरीरके खिंचती नसोकूं और संकोचाये भये अवयवोंकूं ढीला करे वो दवा इस वर्गमें गिणे जातीहै, अफीम खुरासाणी अजवाण भांग ताम्रभस्म कपूर तमाखू धतूरा हींग कस्तूरी तथा दुसरीभी वातघ्न दवाये मिरगी दिवानापणा हिस्टीरीया हिचकी धनुर्वात दम तथा मगजके रोगोंमें ये दवायें दीजातीहै.

(२३० नींद लाणेवाली दवा) अफीम भांग रोगीसें नहीं सहीजाय एसी पीडामेंसें रोगीकूं आराम देणेवास्ते नींदलाणेवाली दवाकी जरूरत पडतीहै, अफीम ये अछा काम करताहै, अफीम नींद लाता है, दरदके ऊपरके ज्ञानतंतुओंकों वेशुद्ध वणाता है, भांगसें शांतिसें नींद नहीं आती बेमार मदमें पडा रहता है, इन दोनों दवाकी मगज पर असर रहती है, तहांतक बेमार नींदमें या मदमें पडा रहता है, उहांतक दरदकी खबर नहीं पडती.

(२४ कटुपौष्टिक दवा) इस तरेकी दवा कडवी ओर पौष्टिक होतीहै, अतीस अरडूसा चिरायता कलंभा कांकच वखमा कालीपाठ सिंकोना वगैरे.

(सामान्य उपयोग) शरीरमें मंद २ बुखार रहता होय जीर्ण बुखार होय निबलाई होय उसमे ये दवायें काम देती है, साधारण बुखार तथा बुखारकी नाताकतीकूं मिटाकर बदनमें ताकत लाती है, जठराग्निकूं सतेज करती है.

(२५ पौष्टिक दवायें) जो दवाये शरीरके धातुओंका पोषण कर शरीरकूं पुष्ट ओर ताकतदार करती है वो पौष्टिक दवायें कहलातीहै, उसके कितनेक विभाग होते हैं कितनीक दवाये मगजकूं पुष्टि देणेवाली है, कितनी एक दवा खूनकूं पुष्टि देणेवाली है और कितनीक दवायें जठराग्निकूं उत्तेजन देणेवाली है.

(१) मगजकूं पुष्टि देणेवाली) ब्राह्मी शंखावली शतावर विदारीकंद वंशलोचन दूध बदाम बलबीज अशालिया कोंचबीज केशर सुपेदपेठा उडद सोमल सोना रूपा शिलाजीत नीलाथोथा मोती ताम्रभस्म वंगभस्म जसतभस्म अभ्रकभस्म वगैरे.

(२) खूनकूं पुष्टि देणेवाली) आंवले कचनार हीराकसी गिलोय लोहभस्म सुवर्णमाक्षिक भस्म वगैरे.

(३) जठरकुं पुष्टि देनेवाली) तमाम कटु पौष्टिक दवाये जेसें चिरायता कलंबा नींब अतिविष क्रांकच कालीपाट वखमा वगेरे.

(२६ रसायण दवायें) जो उत्तम दवायें जरा याने बुढापा ओर रोगोंकूं मिटाती है ओर वदनके वाय पित्त कफ वगेरे दोषोंकूं समानतामे रखे है उसकूं रसायण दवा कहणेमें आती है जेसें वडी हरडे आवला गूगल गिलोय त्रिफला चित्रककीजड नीमका पंचांग वगेरे.

(सामान्य उपयोग) इन उत्तम दवायोंका वहोत मुदततक युक्तिसें साधन करनेसें शरीर निरोग होता है आयुष्य वढती है, बल बुद्धिकी वृद्धि होती है हमारे विद्याशाला-की अमृतवटी वसंतमालती योगराज गूगल चंद्रप्रभा आरोग्यवर्द्धनी ज्वरहर रसायन कामोद्दीपक चूर्ण क्रांतिवर्द्धक शिशुपाल गुटिका वगेरे तइयार रहती है ये दवायां निर्भय-पणे हरेक अदमी साधन करे तो वडा जबर फायदा दिखाती है.

(२७ धातुवर्द्धक दवायें) जो दवा वीर्यकी वृद्धि कर वीर्यकूं घट्ट वनावै उसकूं (वीर्यवर्द्धक दवा कहते हैं) शतावर आसगंध वलवीज गोखरू सालम सपेद मूसली ओटिंगणके वीज ऊडदकी दालके लड्डू कोचवीज मिलावा दूध मिश्री घी सहत चणेकी भिजाई भई दाल वगेरे.

(सामान्य उपयोग) इन दवायोंकों दूध तथा मिश्रीके संग उकाल कर अथवा इनोंका पाक वणाकर खाये जाता है, जादा तर ठंडकालेमें अछीतरे पच सकती है और गुण भी जादा करती है, क्योंके इनमेंकी चीजें पौष्टिक और भारी होती है.

(२८ वाजीकरण दवायें) जिन दवायोंसें वदनमें ताकत आते कामोत्तेजक शक्ति वढे सो दूध कोंच आसगंध विदारीकंद पाक करके सालमपाक माषादि लड्डू वगेरे.

(सामान्य उपयोग) काम शक्तिकी वृद्धिकी इछा रखणेवालोनें जादातर इस वर्गकी दवा पाक वणाकर सेवन करणा चाहिये कितनेक अफीम सराप वगेरे दवा इस कामके वास्ते वापरते हैं, और उससें कामोत्तेजक शक्ति वढतीभी है लेकिन् ये दवायें ऊमरकूं कम करनेवाली है, ऊपर लिखी दवायें ऊमर वढानेवाली है.

(२९ कामोत्तेजक दवायें) जो दवायें वदनमें जागृती लाकर काम वृत्तिकूं उस्के-रता है वो कामोत्तेजक कहाती है, जायफल कस्तूरी भांग गांजा अफीम वगेरे.

(सामान्य उपयोग) ये दवायें जादा पुरुषोंके कामकी है, ओर कितनेक कामी पुरुष उसका वरतावा करते हैं, वहुत थोडी मात्रामें युक्तिसें ये दवायें इस तरेकी चेतन-ता वताकर शरीरमें कांटा रखती है, लेकिन् भांग अफीम गांजा वगेरे मादक वस्तुओंका मावरा पडणेसें फेर अदमी व्यसनी वन जाता है ओर वहोत खरावी होती है, इसवास्ते शरीरके आरोग्यताका विचार करके देखे तो कामोत्तेजक एसी नुकशानकारी चीजोंसें

दूर ही रहणा इसकी एवजीमें वाजीकरण ओर धातु पौष्टिक दवायोंका साधन करना.

(३० जीवनीयगणकी दवायें) १ काकोली २ क्षीरकाकोली ३ जीवक ४ ऋषभक ५ मेदा ६ महामेदा ७ जीवंती ८ मोलेठी ९ मुद्गपर्णी १० मापपर्णी इसके अंदरकी दवायें कितनीक पहचानमें नहीं आती इसवास्ते इसके वदलेकी नीचे लिखी मुजव दवायें इनके जेसा ही गुण लगभग देती है, काकोली क्षीरकाकोलीकी एवजीमें आसगंध जीवक तथा ऋषभकके एवजीमें विदारीकंद मेदा महामेदाकी एवजीमें सतावर जीवंती याने हरण वेल अथवा मीठी खरवोडी मोलेठी मुद्गपर्णी जंगली मूंग मापपर्णी याने जंगली उडद ये चारतो सजल जमीनमें मिलती है ।

(सामान्य उपयोग) ये दवायां जीवित देनेवाली है इसवास्ते हमारी अमृतवटीमें इसका योग मिलता है ये दवाया हमेस साधन करने लायक है इसमें वलवुद्धि पराक्रम दिन २ वढता है.

(३१ स्तनमें दूध वधाणेवाली दवायें) मेदा महामेदा आदि जीवनीयगणकी सव ओषधें ऊपर लिखे मुजव स्तनोंमें दूध वधाणेवाली है !

(देसी शुद्ध करनेकी दवायें)

कितनीक दवा शुद्ध करनेकी विधि आगे लिखी है, फेर दुसरी विधिसे या कितनेकका शोधन नहीं लिखा सोभी लिखते हैं, ये दवाये विगर सोधे वापरणेसे विकार करती है ।

(कुचीला) गोमूत्रमें वाफ कर ऊपरका छिलका तथा वीज निकाल घीमे तले तव शुद्ध (धतूरेका वीज) वारे घंटा गोमूत्रमें भिजाकर ऊपरका छिलका दूरकर मींजी लेणी (हिंगलूमेसें पारा) हींगलू पावभर नींवूके रसमें घोट दोय वरावर मुंजुडे एसी मटकिया लेकर विना छेदकीपकी फेर एकमें हींगलू तले विछा देना दोनोंका मुं मिलाय कपड मिट्टी कर देना सूके वाद चूले चढाणा एक भीगा कपडा ऊपरके मटकीपर चोपुडता रख देणा मंद २ आंच देणी ऊपरका कपडा हर वखत भीगा रहणा ऐसे चार पहर आंच १ पहर वाकी रहे तव खूव तेज आंच देणी वाद स्वांग शीतल होनेसे कपड मिट्टी खोल ऊपरकी मटकीमे कजलीमें पारा लगा भया उसकूं कपडेसें रगडणा पारा हंडीमें एकठा होगा कजली कपडेसे पूंछ २ कर या जलमें धोकर पारा अलग कर लेना ये पारा नामर्द शुद्ध है (मर्द करणेकी विधि) कांजी मटकीमें आधी भर एक जाडा कपडा जिसपर सूंठ मिरच पींपर पीपला मूल चित्रक सींधानिमक डाल नींवूके रसमें डाल घोटकर कपडेपर डाल लेपकर पारा उसके वीचमें वांध मटकीमें लटका देना मूंके ढकणा देकर कपड मिट्टी कर चार पहर आंच देणा डोलायंत्रसे स्वांग शीतल भये निकालणा फेर सव काममें लेणा ।

(भिलावा) गऊके गोवरमें उकालकर ठंडे जलसें धो डालणा ।

(मनशिल) वारीक २ टुकडे कर पोटली बांध डोला यंत्रसें वकरीके मूत्रमें तीन दिन पकाणा नींबूके रसमें या गोमूत्रमें घोटणेसें मनशिल शुद्ध होता है शुद्ध किया भया दवामें काम देता है।

(नीलाथोथा) नीलेथोथेकूं घी तथा सहतमें मिलाकर एक कुलडीमें डाल अंगारमें जलाणा पीछे तीन दिन कांजीमें अथवा खट्टी छाछमें घोट धूपमें सुकाना.

(सोमल) छोटे २ टुकडे कर डोलायंत्रसें चंदलियेके रसमें एक १ पहर पचाणा.

उपयुक्त इलाजोंका संग्रह.

दवायोंके वणानेकी विधि आगे लिखते हैं, जो नुकसे मुख्य २ रोगोंपर चलता है, ओर मिटाता है उसका नाम ऊपरके तरफ लिखा है, इसके अलावा ओर भी जो जो रोग उन योगोसें मिटता है, जिनोंका नाम दवा वनावटीके नीचे लिखा है.

क्काथ (उकाली) काढा.

सन्निपात ज्वरपर.

(१९५ अभयादि क्काथ) जोहरडे नागरमोथ धाणा रगतचंनण पदमाक्ष अरडूसेके पत्ते इंद्रजव वाला गिलोय करमालेकी गिर कालीपाट सुंठ ओर कुटकी इन १३ वस्तुओंका पींपरका अनुपान त्रिदोष ज्वर दाह खासी प्रलाप दम तंद्रा दस्तबंध उलटी शोष अरुचि।

सन्निपात ज्वरपर.

(१९६ भारंग्यादि क्काथ) भाडंगीकी जड चिरायता नींबकी छाल मोथ कुटकी वच सूंठ मिरच पीपर अरडूसा तूंबेकी जड रास्ना धमासा पटोल देवदारू हलदी काली पाट कुचीला ब्राह्मी दारूहलदी गिलोय नशोत अतिविष एरंडीकी जड त्रायमाण छोटी रींगणी वडी रींगणी इंद्रजव हरडे वहेडा आंवला कचूर ये ३२ दवायें इस क्काथकूं शास्त्रमें द्वात्रिंशांग एसा नाम भी दिया है जिस सन्निपात ज्वरमें शूल दम कफ दस्त वगेरे भयंकर उपद्रव होय उसमें ये क्काथ देणेकी जरूरी है.

विषम ज्वरपर.

(१९७ लघु भाडंग्यादि क्काथ) भाडंगकी जड नागरमोथा पित्तपापडा धमासा सूंठ चिरायता कूठ पीपर भोरींगणी गिलोय ये दश चीजें विषमज्वर त्रिदोषज्वर तथा उपद्रव.

सब साधारण ज्वरपर.

(१९८ गुडूच्यादि क्काथ) गिलोय धाणा कडवे नींवकी अंतर छाल रगतचंनण ओर पदमकाष्ट यें ५ चीजें जठराग्नि प्रदीप्त कर दाह प्यास उलटी तथा अरुचिकूं भी मिटाता है.

सब साधारण ज्वरपर.

(१९९ नागरादिक्काथ) सूंठ देवदारू धाणा छोटी भूरींगणी वडी भूरींगणी ये ५ चीजों बुखारकूं पकाकर तीनो दोषकूं बुखारकूं उतारे है.

वातज्वरपर.

(२०० गडूच्यादि क्काथ) गिलोय पीपर सूंठ तीन चीजों.

पित्तज्वर.

(२०१ पर्पटादिक्काथ) पित्तपापडा गिलोय तथा हरडे तीन चीजों.

कफज्वर.

(२०२ भूनिंवादि क्काथ) चिरायता नींवकी छाल पींपर कचूर सूंठ शतावर गिलोय वडी भूरींगणी ८ वस्तु.

खासीसंग बुखार.

(२०३ कट्फलादि क्काथ) कायफल नागरमोथा भाडंगी धाणा चिरायता पित्तपापडा वच हरडे काकडासींगी देवदारू सूंठ११चीजों खासी बुखार श्वास कफ वगेरेमें अच्छाहै.

जीर्णज्वर.

(२०४ गडूच्यादि क्काथ) गिलोयका क्काथ, अनुपान पीपरका चूर्ण.

सर्व शीतज्वर.

(२०५ क्षुद्रादि क्काथ) भूरींगणी धाणा सूंठ गिलोय मोथ पद्माख रक्तचंनण चिरायता कडवा परवल अरडूसा पोकरमूल (उसकी एवजीमें एरंडकी जड) कुटकी इंद्रजव नींवकी छाल भाडंगी पित्तपापडा १६ चीजों.

हमेसका विषमज्वर.

(२०६ पटोलादि क्काथ) कडवे परवल हरडे वहेडा आंवला नींवकी छाल मुनक्का करमाला अरडूसा ८ चीजों, अनुपान मिश्री सहत.

संततादिक सब विषमज्वर.

(२०७ पटोलादि क्काथ) पटोल इंद्रजव देवदारू हरडे वहेडा आंवला मोथ मुनका मोलेठी गिलोय अरडूसा ११ चीजों, अनुपान सहत संतत याने ७,१० या १२ दिनतक हमेस रहणेवाला अण उतार बुखार सतत याने रात दिनमें दो वखत आनेवाला बुखार चोथिया तेजरा तथा प्रथम दाहके संग आणेवाला इन सबोंपर.

ज्वरअतीसार.

(२०८ नागरादि क्काथ) सूंठ कूडा छाल नागर मोथा गिलोय अतीस ५ चीजों.

अतिसारसंग्रहणी.

(२०९ हीवेरादि क्काथ) नेतरवाला धावडीके फूल लोद कालीपाट रेसा खतमी

डे ी छाल धाणा अतीस मोथ गिलोय बीलगिर सूंठ १२ वस्तु वहोत दिनोंका अतिसार संग्रहणी अरुचि आम शूलज्वर.

(२१० त्रिफलादि क्वाथ) हरडे वहेडा आंवला देवदारु मोथ मूसाकर्णी सहजनेकी छाल ७ चीजों अनुपान पींपर तथा वायविडंगका चूर्ण पेटकी कृमि तथा उसके सर्व विकार मिटे.

पांडूकामला.

(२११ त्रिफलादि क्वाथ) हरडे वहेडा आंवला गिलोय कुटकी नींबकी छाल चिरायता अरडूसेके पत्ते ८ चीजों, अनुपान सहत.

रक्तपित्त.

(२१२ वासादि क्वाथ) अरडूसेके पत्ते मुनका दाख जो हरडे तीन चीजों, अनुपान सहत मिश्री अथवा इकेला अरडूसेका काढाकर सहत मिलाकर पीणा, रक्तपित्तयाने मूंसें दस्त ओर पेसाबसें नाक या कानमेंसें खून गिरे सो रोग खासी श्वास.

श्वास कास.

(२१३ क्षुद्रादि क्वाथ) भूरीगणी कुलथी अरडूसा सूंठ ४ वस्तुयें, अनुपान पोकर मूल वो नहीं मिले तो एरंड जडका चूर्ण दम या श्वास चढे सो रोग मिटता है.

वादी रोग.

(२१४ रास्नादि क्वाथ) (रास्नापंचक) रास्ना गिलोय देवदारू सूंठ एरंडीकी जड ५ चीजों सब तरेकी वादीपर दीजाती है.

सब वादीपर.

(२१५ रास्नादिक्वाथ) (महारास्नादि) रास्ना दूणी अथवा जादा लेणी ४ मासा चिकणेकी जड एरंडकी जड देवदारू कचूर वच अरडूसा सूंठ हरडे चव्य मोथ साटेकी जड गिलोय वधायरा वरियाली गोखरू आसगंध अतीस करमाला शतावर पींपर ऊंठकंटालाधाणा छोटी रींगणी वडी रींगणी २६ चीजों अनुपान सूंठका चूर्ण योगराज गूगल अजमोदादि चूर्ण अथवा एरंडीका तेल इसमेंकी कोइ एक चीज अनुपांन रोग ओर प्रकृतीमुजब देणी सर्वांगवायु हिस्टीरीया आमवायु अंत्रवृद्धि (जिसकूं गोसा उतरणा कहते हैं) वांझडीपणा पेटकी वायु वगेरे.

सब प्रमेहपर.

(२१६ फलत्रिकादि क्वाथ) हरडे वहेडा आंवला मोथ दारूहलदी कडवा तूंवा .६ चीजों अनुपान हलदीका चूर्ण.

प्रदर शरीर धुपणा.

(२१७ दार्व्यादि क्वाथ) दारूहलदी रसोत मोथ भिलावा बीलगिर अरडूसा

चिरायता ७ चीजों अनुपान सहत,शूल चलकर गिरणेवाला लाल पीला सपेद ओरतोंका प्रदर सब मिटता है.

सूवा रोग.

(२१८ देवदार्व्यादि क्काथ) देवदारू वच कूठ पीपर सूंठ कायफल मोथ चिरायता कुटकी धाणा जो हरडे गजपीपर छोटी रींगणी गोखरू धमासा वडी रींगणी अतीस गिलोय काकडासींगी साहजीरा २० चीजों सूवा रोगवाली ओरतकी पेटकी शूल खासी बुखार श्वास मूर्च्छा कंपवायु शिरकी शूल दस्त ये सब मिटता है.

सोजेपर.

(२१९ पुनर्नवादि क्काथ) साटा दारूहलदी हलदी सूंठ जो हरडे गिलोय चित्रक भाडंगी देवदारू ९ चीजों हाथ पैर पेट तथा मूंके सोजेपर फायदा करती है.

वृषणसोथ.

(२२० त्रिफलादिक्काथ–) हरडे वहेडा आंवला ३ वीलगिर अनुपान गोमूत्र आंडोकी सूजन उतरती है.

वातरक्त उपदंसपर.

(२२१ मंजिष्ठादिक्काथ–) मजीठ हरडे वहेडा आंवला कुटकी वच दारूहलदी गिलोय कडवेनींवकी छाल ९ चीजों.

चूर्ण–फकी–

वच्चोंका बुखारदस्त.

(२२२ कृष्णादिचूर्ण) पींपर अतीस नागरमोथ काकडासींगी ४ चीजों, अनुपान सहत वच्चोंका बुखार दस्त दम खासी उलटी.

वच्चेकी खासी दस्त उलटी.

(२२३ शृंग्यादिचूर्ण) काकडासींगी अतीस पींपर ३ चीज, अनुपान सहत अथवा इकेला अतीसका चूर्ण सहतमें.

अतिसार पतला झाडा.

(२२४ लघुगंगाधरचूर्ण) नागरमोथ इंद्रजव वीलगिर लोद मोचरस धावडीके फूल ६ चीजों अनुपांन छाछ तथा गुड रक्तातिसार पित्तातिसारका अनुपांन चावलोका धोवण तथा सहत.

अतीसार.

(२२५ वृद्धगंगाधरचूर्ण) नागरमोथा टेंट सूंठ धावडीके फूल लोध वाला वीलगिर मोचरस कालीपाट इंद्रजव कूडाछाल आंवकी गुठली अतीस लजालू १४ चीजों। अनुपान चावलोका धोवण तथा सहत.

अतीसार.

(२२६ अजमोदादिचूर्ण) अजमोद मोचरस अदरख धावडीका फूल ४ चीजों अनुपान दहींमें मिलाकर पीजाणा.

कास क्षय.

(२२७ सितोपलादिचूर्ण) मिश्री १६ भाग वंशलोचन ८ भाग पींपर ४ भाग इलायची ४ भाग तज १ भाग ५ चीज अनुपान सहत तथा घी श्वास खासी क्षय हाथपांवका दाह मंदाग्नि अरुचि ज्वर रक्तपित्त.

उलटीपर.

(२२८ एलादिचूर्ण) इलायची जटामांसी सूंठ मोथ पींपर सुपेद चंदण धाणा खारक तमालपत्र मोलेठी खस वाला नेतरवाला लोंग अनारका छिलका १४ चीज, अनुपान सहत.

(२२९ नींबपंचांगचूर्ण) बणाणेकी विधि नं० १५१ देखो, चमडीके सब रोगोंपर बहोत फायदेबंदहे.

(२३० आकरकरभादिचूर्ण) अकलकरा सूंठ कंकोल केशर पीपर जायफल जावंत्री चंदण सुपेद ये ८ एकेक भाग अफीम ४ भाग अनुपान सहत मात्रा एक मासा रातकूं चाटणा वीर्यका स्तंभन होय रतिसुखमें आनंद पावे.

(२३१ नारासिंह चूर्ण) भिलामा सूंठ मिरच पीपर हरडे बहेडा आंवला तिल मिश्री ९ चीज अनुपान घी तथा मध मंदाग्नि वायु और जलंदर वगैरे उदररोगमें भी फायदाबंद हे अनुपान दूध पथ्य भी दूध.

उदररोग.

(२३२) पवित्र चूर्ण) पंचलूणतोला ५ त्रिकटु तोला २॥ त्रिफलातो २॥ अजवाण तो २॥ अजमोद तो २॥ चित्रककी जड तोला २॥ गंधक तो १० हरडे तो १० सेंधव तो २० सुंठ तोला ४० पांचो निमककूं कडवे तूंबेमें भरणा उसके कपड मिट्टीकर भोभरमें पकाणा पीछे निमक अंदरसें निकाललेणा उसमें निमकके संग सब चीजे मिलाणी एकवखत नींबूके रसकी भावना देणी इससे तापतिल्ली जलंदर पेटका सोजा वगेरे सब तरेके उदररोगमें दीये जाताहै । मात्रा अढाइ मासेसें पांच मासा.

अतिसार.

(२३३ विल्वादीचूर्ण) पकी बीलगिर मोथ धावडीके फूल कालीपाट मोचरस पांच चीजों अनुपान गुड तथा छाछ.

धातुवर्द्धक.

(२३४ रसायण चूर्ण) गिलोय आंवला गोखरू ३ चीज घी तथा मिश्रीका अनु-

पान सब तरेका धातु दोष नाताकती नपुंसकपणा मगजकी बेमारी जेसेके मिरगी पागलपणा हिष्टिरीया.

उपदंश.

(२३५ चोपचीणी चूर्ण) चोपचीणी तो १० सक्कर तो ४ पींपर तो. १ पीपला मूल तो. १ मिरच तो १ लोंग १ अकलकरा १ खुरासाणी अजवाण. तो १ सुंठ तो. १ वायविडंग तो. १ तज तो. १। गरमजलमें लेणेसें प्रमेह उपदंश, तांतो जेंसा धातूका गिरणा क्षीणता तथा गरमीकी गंठिया.

दाहपित्त मूत्रकृच्छ्र.

(२३६ चंदनादिचूर्ण) अगर तगर चंदन वंशलोचन तथा वाला ५ चीजों सम वजन मिश्री बरावर अनुपान दूध.

पाचन.

(२३७ हिंगाष्टक चूर्ण) तली हींग सूंठ मिरच पीपर अजवाण जीरा श्याहजीरा सींधानिमक ८ चीजों अनुपान घी.

संग्रहणी अतिसार.

(२३८ लाहीचूर्ण) गंधक टंक २ पारां टंक २ सूंठ मा २० मिरच टां १ पीपर मासा १० पांचखार मासा १० शेकी अजमोद टांक ५ शेकाजीरा टांक ५ शेकी हींग टांक ५ टंकण फुलाया भया टंक ५ शेकी भांग तो ८ ये १५ चीजों पारेकी गंधककी कजलीके संग मिलाकर दो दिन घोटणा मात्रा २ मासे सें ४ मासेतक अनुपान गउकी छाछ संग्रहणी मंदाग्नि अतिसार हरस पेटकी कृमि.

गुल्म उदर.

(२३९ वज्रक्षारचूर्ण) सादानिमक सींधानिमक कचनिमक जवखार संचल टंकणखार साजीखार इन सबोंकों पीस एक दिन थोरके दूधमें भिगाणा धूपमें सुकाणा तीन दिन आकके दूधमें भिगाणा धूपमें सुकाणा पीछे आकके पानमें लपेट पालसियेमें संपुटकर गजपुटमें फूंके पीछे निकाल सूंठ मिरच पीपर त्रिफला अजवाण जीरा चित्रकमूल ये सब खारके बराबर वजनसे मिलाणी मात्रा टांक २ अनुपान गरमपाणी अथवा गोमूत्र गोला शूल अजीर्ण सोजा उदरके रोग मंदाग्नि आफरा मिटता है.

(२४० शतावर्यादि चूर्ण) शतावर गोखरू कोंचबीज नागबला बलबीज तालमखाना ये ६ अथवा नागबला नहीं मिले तो पांचोंहीका चूर्ण अनुपान गायका दूध रातका खाणा.

(२४२ मुसल्यादि चूर्ण) सुपेद मूसली गिलोयसत्त कोंच गोखरू शेमलकी जड मिश्री आंवला ७ चीजों सम भाग चूर्ण अनुपान गउका घी.

(२४२ नाराच चूर्ण) पीपर तो २ निशोत तोला ४ मिश्री तो ४ ये तीनोंका चूर्ण मात्रा २ तोला अनुपान सहत इस चूर्णसें पेटका चढणा मलबंध उदररोग कफ तथा पित्तकी शूल मिटती है.

(२४३ पाचक चूर्ण चित्रककी जड तो २ अजमोद०॥ भर साजीखार०॥ भर सींधा निमक एक तोला १ सादा निमक १ तोला सूंठ १ पींपर १ मिरच १ चव्य १ जवखार० ॥ सें चल० ॥ सांभरनिमक ॥ इन सबोंके चूर्णकूं पहले बीजोरेके रसकी वो नहीं मिले तो नींबूके रसकी भावना देणी पीछे अनारके रसकी भावना देणी.

(२४४ मलशुद्धिका चूर्ण) हरडे वडी २ तोला सोनामुखी २ तोला रेवचीणी०॥ मिरच० ॥ सूंठ १ तोला सेंचल० ॥ तोला सींधानिमक १ तोला इन सबोंका चूर्ण रातकूं गरम पाणीसें लेणा.

गुटिका-गोली मोदक.

(२४५ संजीवनी) वायविडंग सूंठ पींपर जो हरडे आंवले बहेडा वज गिलोय भिलावा शुद्ध वच्छनाग १० चीजों समवजन गोमूत्रमें घोट चिरमी २ जितनी गोलिये करणी अनुपांन आदेकारस अजीर्ण तथा गोलेमें १ गोली हेजेमें २ सापके जहरपर ३ सन्निपातमें ४ हैजेमें तूटी नाडीकूं पीछी लाती है, एसा एक वैद्यने अनुभव करा है, हैजेमें २ गोली कही भई है लेकिन् जहांतक दस्त उलटी लगती होय उहांतक दो दो घंटेसे १ एक २ गोली देते रहणा.

प्रमेहवगेरे.

(२४६ चंद्रप्रभा) कचूर वच मोथ चिरायता गिलोय देवदारू हलदी अतीस दारु हलदी पींपला मूल चित्रकजड धाणा हरडे बहेडा आंवला चव्य वायविडंग गजपींपर सूंठ मिरच पीपर सुवर्णमाक्षिक भस्म जवखार साजीखार सींधा निमक सेंचल वीडलूण ये २७ चीजों अढाइ २ मासा सवा पांच तोला निशोत, दंतीमूल तमाल पत्र तज इलायची वंशलोचन ये सब एकेक तोला लोहभस्म २ तोला मिश्री ४ तोला शिलाजीत आठ तोला गूगल ८ तोला सबकूं एकठी मिलाकर जलमें गोलियां वणाणी प्रमेह मूत्रकृच्छ मूत्रघात पथरी पांडू प्रमेह पिडिका (फुनसियां) कामला अंडवृद्धि दाह पित्त नेत्ररोग ओरतोंका ऋतुदोष पुरुषोंका धातुदोष ये दवा रसायणरूप है, युक्तिसें उपयोग करणेसें तीनों दोषोंकूं जीतती है.

क्षय जीर्णज्वर.

(२४७ वसंतमालती) वणाणेकी विधि नं० ५४ देखो क्षय जीर्णज्वर प्रदर मात्रा रत्तीसें मासेतक अनुपान घी सहत मिश्री.

बच्चोंका दस्त उलटी अनिद्रा.

(२४८ अजमोदादि गुटिका) अजवाण हरडे खारक केशर ये चार एकेक भाग

जायफल मोचरस अफीम ये तीन आधा २ भाग जावंत्री लोंग तथा सहत ये तीन दो दो भाग इन १० की गोलियां वाजरीके दाणे जितनी २ करणी.

खासी.

(२४९ कस्तूर्यादि गुटिका) कस्तूरी तथा कपूर एकेक भाग लोंग दोयभाग मिरच पीपर वहेडा तथा कुलिंजन आधा २ भाग अनारकी छाल ४ भाग ये ८ चीजों काथेके रसमें या जलमें पीस मूंग जितनी गोली.

खासी.

(२५० लवंगादि गुटिका) लोंग वहेडा काली मिरच खेरसार ४ चीजों समभाग बंवूलके छालकी उकालीमें केई दिनोंतक घोटणा चणेप्रमाण गोलियां करणी.

अतिसार.

(२५१ अनारवटी) वनाणेकी विधि देखो अनारके गुणोंमें.

मलशुद्धी.

(२५२ द्राक्षादि गुटिका) मुनका दाख सेर० ॥ सोनामुखी तो ४ हरडे वडी तो ४ मिश्री तो ४ जावंत्रीमा ६ केशरमा ३ इन सवोंका चूर्णकर दाखमे एकेक तोलेकी गोली वांधणी मलकी सफाई मलके आसरे रही वादी आम्लपित्त पित्तवायु वगेरे रोग मिटताहै.

खासी.

(२५३ मरीचादि गुटिका) मिरच तो १ पीपर तो १ जवखार तो० ॥ अनारकी छाल तो ४–ये ४ चीजों चूर्णकर आठ तोले गुडमें गोलिये करणी मात्रा ३ मासा सव तरेकी खासीकूं मिटाती है.

पीनस.

(२५४ व्योषादि गुटिका) सूंठ मिरच पींपर अम्लवेतस चव्य तालीसपत्र चित्रक जीरा अंवली ये सव एकेक तोला तज तमालपत्र इलायची ये तीन तीन २ मासा इन वारोंका चूर्ण और २० तोला गुड गोली मात्रा पांच मासा या १ तोला आम पीनस दम खासी.

(२५५ योगराज गुग्गल) वनानेकी विधि देखो नं० ५८ में.

२५६ किशोर गुग्गल–नं० ५८ २५७ त्रिफला गुगल–नं० ५८

२५८ गोक्षुरादि गुगल–नं० ५८ २५९ कांचनार गुगल–नं० ५८

जीर्ण धातुगतज्वर.

(२६० अमृतामोदक) वणाणेकी विधि देखो नं० ५७ में चाहे जेसा पुराणा विषम ज्वर जीर्णज्वर धातुगत ज्वर वहोत दिन सेवणेसें चलाजाताहे फेर ये बुखार पीछा उखडता नहीं. मात्रा तीन मासे सें १ तोला अनुपान दूध.

धातुपुष्टि.

(२६१ माषादि मोदक) छिलका विगर की उडद की दालका आटा, गहूंका रव छडेभये जवका आटा, चावलोंका आटा, पीपरका चूर्ण, ये पांच चीजे ४ चार २ तोला उसमें पावधी डालके, कडाहीमेसे कणा, पीछै सबके बराबर सक्करखांड, सक्करसें दूणा पाणी, उसकी मंद आंचसें चासणीकर, शेका आटाचासणीमें डाल चार २ तोलेका लड्डू वणाणा.

हरसमस्सा.

(२६२ बृहत्सूरणादि वटक) सूरण सुकाया भया भाग १६ वधायरा भाग १६ मूसली ८ भाग चित्रक ८ भाग हरडे बहेडा आंवला वायविडंग सूंठ पीपर मिलावा पींपला मूल तथा तालीसपत्र ये सब चार २ भाग इनके चूर्ण में दूणा गूड मिलाकर बडी गोली करणी मात्रा ५ मासे सें तोलेतक अग्नि प्रदीप्त होकर हरस तेसें वायु तथा कफसें भई संग्रहणी श्वास कास क्षय हाथी जेसे पांव सोजा हिचकी प्रमेह भगंदर वगैरे रोग अछा होताहे ये रसायणरूप सर्व रोग हरदवा हे.

अवलेह–चाटण–पाक.

कास श्वास हिचकी.

(२६३ कंटकारी अवलेह–खडी भूरींगणीका पंचांगदशसेर सूका अधकिचराकूट २५ सेर जलमें उकालणा चतुर्थांस बाकी रहे तब छाणकर मिश्री सेर २ घी तोला ३२ तेल तोला ३२ गिलोय चव्य चित्रक मोथ काकडासींगी सूंठ मिरच पीपर धमासा भाडंगी की जड रासना कचूर ये १२ चीजोंका चार २ तोलेका चूर्ण डाल फेर उकालते चाटणे जेसा पाक जब होजाय तबी नीचै उतार ठरवेाद ३२ तोला सहत वंशलोचन पींपरका चूर्ण १६ सोले तोला ये तीन चीजों मिलाकर मट्टीके चिकणे पात्रमें धर रखणा हिचकी दम खासी मिटतीहै.

हरसपर.

(२६४ कुटजावलेह) कूडेकी छालसेर १० अधकिचरी कूट २५ सेर जलमें उकालकर चतुर्थांसरहे तब उतार छाण तीनसेर गुड डाल फेर चूलेपर चढाकर पाक चाटणे जेसावणाणा पीछे ये कपडछाण चूर्ण डालणा रसोत मोचरस सूंठ मिरच पींपर हरडे बहेडा आंवला लजालूकी जड चित्रक पहाडमूल बीलगिर इंद्रजव वच मिलावा अतीस वायविडंग तथा वाला ये अठारे चीज चार २ तोला घी ३२ तोला ठंढा पडे पीछै सहत ३२ तोला डालणा इससें हरसके सब रोग अतिसार अरोचक संग्रहणी पांडू रगतपित्त कामला अम्लपित्त सोजन दुबलापणा वगेरे रोगमें दिये जाताहे अनुपान छाछ दूध दहीं घी पाणी इसमेंसें रोगानुसार देणा.

क्षय खास.

(२६५ हरीतकी अवलेह) २५६ तोला जव ८० तोला दशमूल १०० वडी हरडे चित्रकमूल पीपलामूल आंधीझाडा कचूर कोंच शंखावली भाडंगी गजपींपर चिकणामूल पोकरमूल ये एकेक आठ २ तोला इनोंकों सब दवाके वजनसें अठगुणे जलमें उकालणा तथा हरडे सो जब वाफीजजावै उनोंकों जलमेसें निकाल कूट कर उसका कपड छाण सत सब निकाललेणा पीछे उकालेके पाणीकूं फेर चूले चढाणा उसमें वो हरडेका सर्वस्वसत गुड सेर १० घी ३२ तोला तेल ३२ तोला डालकर पाक तइयार करणा ठंढाभये वाद तोला १६ सहत पींपरका चूर्ण १६ तोला डालणा अगस्तावलेह क्षय खासी बुखार दम हिचकी हरस अरुचि पीनसरोग संग्रहणी वगेरे रोगोंकूं मिटाताहे उत्तम रसायण है.

रक्तपित्त आम्लपित्त.

(२६६ द्राक्षावलेह) कालीमुनका दाखकूं दूधमें उकाल घीमे तलणी पीछे मिश्रीकी चासणीकर उसमें डालणी पीछै विदाम घीमें तलकर कूट कर चूर्ण करणा कीटी पकी करणी जायफल लोंग जावंत्री इलायची वंशलोचन तज तमालपत्र नागकेशर कमलगटा इन सबोंका चूर्ण उस चासणीमें मिलादेणा पीछै आम्लपित्त रगतपित्त क्षय पांडू कामला तथा अशक्ति दूर होतीहै.

दाहभ्रम.

(२६७ कूष्मांडावलेह) पके सपेद पेठेका जलनिकाल गिरकूं नीचो डकार घीमें तलणा पीछै द्राक्षावलेहकी सब चीजों अंदर मिलाणी और सब चीजोंके वजन बराबर बूरेकी चासणीकर पाक तइयार करणा आम्लपित्त दाह भ्रम शोष क्षीणता मंदाग्नि.

कासश्वासपर.

(२६८ आर्द्रखंडावलेह) पाव आदेकूं छीलकर उसका टुकडा करणा पीछै उसकूं थोडे घीमें सेकणा पीछै सेरगुड या बूरेकी चासणी करके उसमें घीमें सेकाभया आदा ओर इस चीजोंका चूर्ण करडालणा तज तमालपत्र इलायची नागकेशर लोंग जो हरडे भाडंगी अरडूसा नीमकी छाल देवदारू आसगंध जावंत्री जायफल अगर मुनका एकेक दो दो तोला कास श्वास क्षय मंदाग्नि हृदयरोगवगेरोंकी शांति होती है.

वीर्यस्तंभन.

(२६९ आकूती माजम) भांग तो २० कूं खूब जलसें मसल २ कर धोणा जिससें हरा रंगका पाणी निकल जाय पीछै उसकी पोटली बांध ४ सेर दूधमें डाल उस दूधकूं अछीतरे उकालणा पीछे दही जमाणा उसका विलोयकर घी निकालणा फेर उस घीमें विदाम तो २० पिस्ता तो २० खोवेकी कीटी तो २० मुनका तो २० चिरोंजी तो

२० इनोकूं तल लेणा पीछै एक सेर सक्करकी चासणीकर ये चीजें सब मिलाणी जायफल जावंत्री इलायची समुद्रशोषके बीज अफीम केशर रूमी मस्तंगी कंकोल ये एकेक तोला सालम सुपेदमूसली आसगंध सतावर कोंच गोखरू तालमखाना ये दरेक दो दो तोला तथा अकलकरा सूंठ मिरच पीपर ओर पीपलामूल ये चार एकेक तोला भांगका घी तलेवाद वचे सो पाकमें डाल देणा चाटणे जेसा पाक करणा मात्रा छ मासेसें तोला तक इससें वीर्यस्तंभन तथा वीर्यवृद्धि अच्छी तरे होती है, भांगमें नसाहै इसवास्ते जिसकू लेणेका मावरा नहीं होय उसकूं विचारके लेणा भांग चढ जाय तो नींबू चूसणा अथवा छाछ ओर भात खाणा दस्तकी कबजीयतवालोंनें आकोती खाणी नहीं.

वीर्यवृद्धि पुष्टि.

(२७० विदामपाक) बदामकी कुली २० तोला कीटी १० तोला बेदाणा ४ तोला लवंग जायफल जावंत्री केशर वंशलोचन कमलगट्टा ये एकेक आधा २ तोला इलायची तज तमालपत्र नागकेशर ये दरेक एकेक तोला सक्कर अढाई सेर घी २० तोला चासणीकर सब चीजोंका चूर्ण मिलाणा तीन मासा अभ्रक भस्म मिलाणा तीन मासा वंग सुवर्णमाक्षिक भस्म पूण तोला प्रवाल भस्म ॥ तोला जो ये चीजों नहीं मिले तो एसा ही लेणा वीर्यवृद्धी पुष्टि तथा बुखारसें भई नाताकतीमें ये पाक बहोत फायदेबंध है.

नामर्दाई.

(२७१ कंदर्पपाक) सपेद कांदा तो २० दूध सेर २ घी सेर १ सहत तोला १० बूरा सेर २ तज तथा जायफल एकेक तोला लोंग केशर आधा २ तोला शुद्ध ताम्र भस्म मिले तो ॥ तोला कीटी १० तोला इन सबोंका विधिसें पाक तइयार करणा ये नपुंसकपणा दूर करता है.

प्रदर रक्तपित्त.

(२७२ जीरापाक) जीरा सेर १ चूर्णकर चार सेर दूधमें पकाकर खोवावणा कर फेर घी डाल, कीटी वणाणी पीछै २सेर बूरेकी चासणीकर तज तमालपत्र इलायची नागकेशर पींपर सूंठजीरा नागमोथा वाला अनारकीछाल रसोत धाणा हलदी सालम वंशलोचन तवखीर ये दरेक दोदो तोला ये सब चीजें चासणीमें मिलाकर पाक वणाणा प्रदर रक्तपित्त मूंकारोग प्रमेह पथरी जीर्णज्वर दाह पीनस हरस ये सब रोग मिटजाता है.

आमवात सब वादी.

(२७३ मेथीपाक) मेथी दाणा तो १० सूंठ तो १० इन दोनोंका चूर्णकर ५सेर दूधमें रांधणा खोवा भयेवाद उसमें घी डालते जाणा ओर कीटी करणी ठंढा भये वाद दो सेर बूरेकी चासणीकर सूंठ पींपर पीपलामूल चित्रककी जड अजमोद धाणा जीरा सूंफ

जायफल कचूर तेज तमालपत्र मोथ ये हरेक चार २ तोलेका चूर्ण डालना लड्डू वणाणा आमवात सब वादीके रोग औरतोंका सूआरोग वायुरोगमें ये पाक वहोत अछा है.

धातुगतज्वर.

(२७४ पीपरपाक) पीपरका चूर्ण ६४ तोला चो गुणे दूधमें उकालकर खोवा करणा उसमें घी रुपिया २५६ भर डालकर मंद आंचसें कीटी करणी पीछे २५६ तोले चूरेकी चासणीकर पाक तयार होणेसें तज तमालपत्र नागकेशर इलायची हरेक चार २ तोलेका वारीक चूर्ण तेसें विदाम ओर ऊपरसें घी दिल चाहे जितना डालणा मात्रा १ लड्डूसें २ गरमीमालम देतो अनुपान दूध धातुगत जीर्णज्वर उधरस दम पांडु धातुक्षय और मंदाग्निपर फायदेवंद है.

खासी क्षय.

(२७५ अरडूसेकी अवलेही) अरडूसेके पत्तोंकों वाफके वस्त्रमें रस निचोड लेणा पीछे उसमें मिश्री मिलाकर चाटणे जेसा पाक वणाणा पीछे उसमें वहेडा हलदीका चूर्ण डालणा खासी कफ श्वास क्षय तथा रक्तपित्त मिटता है.

मंदाग्नि.

(२७६ आदेकी अवलेह) आदेका रस १० तोला जल १० तोला मिश्री २० तोला अग्निपर पाक वणाणा पीछै केशर इलायची जायफल जावंत्री लौंग दरेक एकेक तोलेका वारीक चूर्ण मिलाणा इससे मंदाग्नि खासी श्वास अरुचि मिटती है.

सूवारोग.

(२७७ सौभाग्य सूंठीपाक) अच्छी सूंठ तोला ३२ जिसकूं ३२ तोला गऊके घीमें मकरोय आठ सेर गउके दूधमें डाल खोवा करणा पीछे उसमें ओर घी डालते जाणा मंद आंचसे हिला कर कीटी करणी पीछै ८ सेर चूरेकी चासणी करके उसमें धाणा तीन मासा सूंफ सवा तोला वायविडंग सूंठ नागकेशर मिरच पीपर ओर मोथ हरेक चार २ तोला मनमुजव विदाम पिस्ता चिरोंजी ऊपरसें घी डालके पाक करणा.

पौष्टिक.

(२७८ सालमपाक) सालम लसणकी कुलीजेसी तो २० ऊपरके पाक मुजव साढी चौदे सेर दूधमें उकाल खोआकर घी डाल कीटीकर सवाई या डेढी वजनकी कीटीसें चूरेकी चासणी करणी उन मान मुजव केशर विदाम पिस्ता चिरोंजी तज तमालपत्र नागकेशर इलायची वगैरे डालणा.

वाजीकर वीर्यवृद्धि.

(२७९ कामवर्द्धक मोदक) तालमखाना गोखरू धलबीज सुपेदमुसली कोंच बीज आसगंध मोलेठी शतावर ये सम वजनसव मिलके २ सेर अठगुणे दूधमें उकाल की-

टी करणी घी डालकर कीटीमें दूणी सक्करकी चासणी कर नव २ टांकके लड्डू बणाणा इच्छा होय तो, तज तमालपत्र इलायची नागकेशर विदाम चिरोंजी थोडी २ डालणी और दवा कोइभी डालणी नहीं.

उपदंशसे भया चमडीरोग.

(२८० चोपचीणीपाक) चोपचीणीका चूर्ण) तो ४८ वहोत घीमें सेकणा ५६ तो वूरेकी चासणी करणी उसमें पीपर पीपलामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लोंग एकेक तोलेका चूर्ण कर सब मिलाणा विदाम चिरोंजीभी थोडी डालकर गोली वांधणी गरभी फूटे सांधोंमें गंठिया होजाय उसमें ये फायदा करताहै.

आम्लपित्त.

(२८१ कूष्मांड खंडपाक) सपेद पेठेका रस ४०० तोला गऊका दूध ४०० तोला आंवलेका चूर्ण ३२ तोला इन तीनोंको मंदाग्निसे पकाकर पीछे उसमें ७२ तोला वूरा डालकर पाक तइयार करणा.

रक्तपित्त.

(२८२ खंड कुष्मांडपाक) ३२ तोला भूरे कोलेका गिर लेकर उसकूं ६४ तोला जलमें उकालणा आधा पाणी जले जब कपडेसें नीचोकर पाणी छाण लेणा वो पाणी रहणे देणा ओर गिरिकूं २० रुपेभर घीमें सेकणा पीछे ६४ तोला वूरेकी कोलेके पाणीमें चासणी करणा उसमे सेकाभया पेठा डालणा पीछे इन चीजोंका चूर्ण डालणा मोथ आंवला वंशलोचन भाडंगी तज तमालपत्र इलायची ये तीनों एकेक तीन २ मासा सूंठ धाणा काली मिरच ये हरेक एकेक तोला लींडीपीपर ४ तोला.

आसव.

क्षतक्षयपर.

(२८३ द्राक्षासव) काली दाख सेर ५ उसमें पक्का सवामण जल डालकर उकालणा आधा पाणी जले तब उतारकर उसमें गुड सेर २० तथा तज तमालपत्र इलायची नागकेशर पीपर मिरच कंकोल दरेक ४ चार २ तोला कूटकर ओर धावडीका फूल तोला ५० सावत डालणा इन सबोंकों घीके चिकणे पात्रमें भर मूं वंधकर मटकीकूं एक महीनेतक धूपमें धरणा फेर उस आसवकूं अनारज लोक काममें लेते हैं. इससें छातीका क्षय क्षत खास श्वास मंदाग्नि पेटकी वायु चूंक दस्तकी कबजी खून विगाड वगेरे रोगोंमें फायदा करता है.

रक्तपित्त.

(२८४ उसीरासव) वाला नेतरवाला लालकमल कालाकमल गहूंला (गहूंमें पेदा होता है) पद्मकाष्ठ लोद मजीठ ४ मासा कालीपाट चिरायता कुटकी वडकी छाल

गूलरकी छाल कचूर पित्तपापडा सपेदकमल पटोल कचनारकी छाल जामुनकी छाल शेमलकी छाल ये सब चार २ तोला लेकर चूर्ण करणा दाख ८० तोला धावडीका फूल ६४ तोला पाणी २०४८ तोला वूरा सेर १० सहत सेर १० इन सबोंकूं एक मटकीमें भरकर मूं बंधकर एक महीना रखणा रक्तपित्त पांडु कोढ प्रमेह हरस कृमि शोष मिटता है.

पांडुरोग.

(२८५ लोहासव) लोहभस्म सूंठ मिरच पीपर हरडे वहेडा आंवला अजमोद वायविडंग नागरमोथ चित्रकमूल ये एकेक चीज सोले २ तोला धावडीका फूल २० तोला तमाम चीजोंका चूर्णकर उसमें २५६ तोला सहत ४०० तोला गुड और २०४८ तोला पाणी सब ऊपर लिखे मुजब मटके आदिमे भरणा इससें जठराग्नि प्रदीप्त होती है, पांडु सोजा गोला उदररोग हरस कोढ चमडीके विकार तिल्ली खुजाल खांसी दम भगंदर अरुचि संग्रहणी उदररोग मिटता है.

रक्तगोला.

(२८६ कुमारिकासव) कवारपठेका रस याने गिर २०४८ तोला गुड ४०० तोला भांग १०० तोला पाणी १०२४ तोला इन सबोंका क्वाथ करणा चोथा भागका जल वाकी रहणेसें छाण लेणा उसमें सहत २५६ तोला धावडीका फूल ६४ तोला जायफल मिरच कंकोल कवावचीणी जटामांसी चव्य चित्रक जावंत्री काकडासींगी वहेडा पोकरमूल ये दरेक चार २ तोला ताम्र तथा लोहभस्म तो २ अगली तरे मटकेमें भरणा मूं बंधकर २० दिन जमीनमें अथवा अनाजके ढिगलेमें रखणेसें आसव होता है, लेणेसें औरतोंका रक्तगुल्म पांचतरेकी खासी श्वास क्षय उदररोग हरस वादीके रोग मिरगी वगेरे रोग मिटता है, जठराग्नि प्रवल होती है, और पेटकी शूल तथा गुल्म रोग मिटता है.

घृत–घी.

कलेजारोग तिल्लीपर.

(२८७ क्षीरघृत) पीपर पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठ सेंधव ये सब चार २ तोला उसकूं जलमें पीस चटणी करणी पीछै ६४ तोला गऊका घी घीसे चोगुणा गऊका दूध उसमें चटणी डाल घी वाकी रहे जहांतक उकालणा पीछे घीकूं कपडेसें छाण लेणा इस घीकूं भोजनके संग खाणेसें पेटकी तिल्ली गलती है, विषमज्वर तथा मंदाग्नि मिटती है.

वातरक्त कोढपर.

(२८८ अमृताघृत) गिलोयकूं कूट चोगुणे जलमें उकाल चतुर्थांस रखणा छाणकर उकालीके जलसे चतुर्थांस घी घीसें चतुर्थांस गिलोयकी जलमें पीसी भई चटणी

तीनोंको मंद आंचसें पकाकर घी वाकी रहें तब उतार छाण लेणा वातरक्त कोढ चम-डीके सब रोग मिटते हैं.

नेत्ररोगपर.

(२८९ त्रिफलाघृत) हरडे वहेडा आंवला इनोंका खरस सूका मिलें तो अठगुणे जलमें उकाल चतुर्थांस रखणा वोदरेकका जल ६४ तोला अरडूसेका रस ६४ तोला भांगरेका रस ६४ तोला वकरीका दूध ६४ तोला गऊका घी ६४ तोला तयारकर पीछे हरडे वहेडा आंवला पीपर दाख सपेदचंनण सींधानिमक चित्रकमूल आसगंध दूणी मोलेठी मिरच सूंठ वूरा सफेदकमल नीलकमल साटा हलदी दारूहलदी फेर मोलेठी ये उगणीस चीजों तोला २ भर लेकर चटणी करणी इन सब चीजोंको एक पात्रमें डाल आंचपर घी तइयार करणा इस घीसें रातींधापणा आंखमें जल वहणा खुजली जाला मोतियाविंद शिरका रोग वगेरे मिटता है.

वंध्यादोष.

(२९० फलघृत) हरडे वहेडा आंवला मोलेठी उपलेट हलदी दारूहलदी कुटकी वाय-विडंग पीपर मोथ कडवा तूंबा कायफल वच मेदा महामेदाके वदले दूणी सतावर का-कोली क्षीरकाकोलीकी एवजीमें दूणी आसगंध सपेद उपलसरी काली उपलसरी गहूंला सूंफ हिंग रास्ना सुपेद चंनण लाल चंदण जाईके फूल वांस कपूर कमल वूरा अजमोद दांतीमूल ३० चीजोंकी चटणी करणी पीछे वाछडेवाली इकरंगी गऊका घी ६४ तोला घीसे आधा गऊका दूध दूध जितना पाणी मिलाकर घी तइयार करणा ये घी पुरुष ओर औरत दोंनोंके लेणे लायक है मरदमी आती है, ओरतोंका बांझडीपणा दूर होकर पुत्र पैदा होता है जिसकी ओलाद जीवे नहीं वो इस घीसें केइयक दिन सेवन करणेसें उसका अमर होताहै रोग रहता नहीं.

वंध्यादोष.

(२९१ फलघृत दुसरा) घी चार सेर शतावरका रस १६ सेर गोमूत्र १६ सेर जीवनीयगणकी दवा एकेक तोला घी सिद्ध करणा ऊपर मुजब. फायदा ऊपर लिखे मुजब.

वंध्यादोष.

(२९२ लघुफलघृत) ऊंठकंटाशला पीलेया काले फूलका हरडे वहेडा आंवला गिलोय साटा अरडूसा हलदी दारूहलदी रास्ना मेदा सतावर इनोंकी चटणी करणी घी तो ६४ गऊका दूध २५६ तोला पाणी २५६ तोला इन सबोंको उकालकर घी उतार लेणा औरतोंका गुह्यरोग शूल दरद योनीका रस्ता चोडा होजाणा अंग वाहिर निकलणा स्थानभ्रष्ट होणा गर्भ नहीं रहणा वगेरे सब योनिदोष गर्भाशयके दोष मिटता है.

अपस्मार उन्माद.

(२९३ ब्राह्मीघृत) ब्राह्मीके पत्तोंकारस ३२ तोला घी १६ तोला सूंठ मिरच पीपर हलदी निशोत दंतीमूल शंखावली करमाला वायविडंग ये दरेक पाव २ तोला इन सबोंकी चटणीकर इन तीनोंकों पकाकर घी वणाणा.

तेल.

(२९४ अर्क तेल) तिलका तेल १ सेर आकका दूध चार तोला हलदी० ॥ सेर मनशिल० ॥ सेर आकके दूधमें हलदी तथा मनशिलको घोट थोडा पाणी डाल चटणी करणी पीछै चटणीकूं तेलमें डाल तेल उकालणा पीछै छाण लेणा इस तेलसें खाज खुजली खाजका घाव मिटता है.

(२९५ बिल्वादि तेल) कच्चा बीलफल गोमूत्रमें पीस चटणी करणी उसमें चोगुणा तिलका तेल मिलाणा उसमें चोगुणा बकरीका दूध ओर दूध जितना पाणी इन सबोंकों उकाल तेल बाकी रहे उहांतक उकालणा ये तेल कानमें डालणेसें बहरापणा दूर होताहै.

(२९६ वज्रतेल) डंडेवाली थोरका दूध आकका दूध धतूरेका रस चित्रकमूलका रस अथवा काढा भैंसके गोबरका रस ये सब समवजन पीछे पकाकर तेल वणाणा पीछे फेर उसमें तेलसें चोगुणा गोमूत्र डाल पकाणा छाणलेका ६४ तोला सिद्ध भये तेलमें इन चीजोंका बारीक चूर्ण मिलाणा गंधक चित्रक मनशिल हरताल वायविडंग अतिविष बछनाग कडवी डोडी उपलेट वच जटामांसी सूंठ मिरच पींपर दारूहलदी मोलेठी साजीखार जीरा देवदारू १९ चीजों ये तेल मसलणेसें चमडीके ऊपरके सब विकार मिटते हैं.

विषमज्वर क्षय.

(२९७ लाक्षादि तेल) घोरकी अथवा पीपलकी लाख २५६ तोला लाखसें चोगुणा पाणी उकालकर चोथाहिसारहे तब छाण लेणा उसमें ६४ तोला तेल गउका घोलिया दही २५६ तोला सूंफ आसगंध हलदी देवदारू कुटकी संभालूके बीज मरोडफली कूठ मोलेठी सुपेदचंदण नागरमोथा रास्ना इन सबोंका चूर्ण डाल तेल तइयार करणा इसकी मालिससें सब तरेका विषमज्वर श्वास कास कमर तथा पीठकी शूल वादी पित्त मिरगी उन्माद क्षय खुजाल दुर्गंधि चमडीका फटणा इन सब रोगोंमें ये तेल बहोत फायदा करता है.

हरस मस्सा.

(२९८ कासीसादि तेल) हीराकसी लांगली कूठ सूंठ पींपर सींधानिमक मनशिल कणेरकी जड वायविडंग चित्रकमूल अरडूसा दंतीमूल कडवी तुराइके बीज दारूडी हरताल १५ चीजोंकी चटणी करणी उसमें तेल ६४ तोला थोरका दूध ८ तोला

आकका दूध ८ तोला तेलसें चोगुना गोमूत्र उकालकर तेल वणाणा हरसके मस्सेवास्ते ये अछा इलाज है.

व्रण.

२९९ जात्यादि तेल) जाईके पत्ते तो ५ कडवानींब करंज कडवा परवल इन दरेकके पत्ते दो दो तोला करंजके बीज मोलेठी मेण कोष्ट हलदी दारूहलदी कुटकी मजीठ पद्मकाष्ठ लोद हरडे कमल नीलाथोथा उपलसिरी ये दरेक दो दो तोला इनोंकी चटणी करणी चटणीसें चोगुणा तेल तेलसें चोगुणा पाणी डाल तेल सिद्ध करणा ये तेल कानमें या नाकमें डालणेसें पीप बंध होय घाव भर जाता है.

कोढ चमडीके रोग.

(३०० मरिचादि तेल) मिरच हरताल नसोत रगतचंदण नागरमोथ मनशिल जटांमासी हलदी देवदारू दारूहलदी कडवे तूंवेकी जड कणेरकी जड कूठ आकका दूध गऊके गोवरकारस ये सब एकेक तोला शुद्ध वछनाग २ तोला चटणीकर इसमें सरसूंका तेल ६४ तोला तेलसें दूणा गोमूत्र गोमूत्र जितना जल तेल तयार करणा इसके मालिससें चमडीके वहोतसे रोग चमडी फटणी खुजली चित्रोंकोढ लालकोढ चेल फुटणा वगेरे मिटता है.

शिरकी टाट.

(३०१ करंजादि तेल) करंजकी छाल चित्रकमूल जाईके पत्ते कणेरकी जड इनोंकी चटणी करणी चटणीसें चोगुणा तिलका तेल तेलसें चोगुणा पाणी तेल आंच पर तइयार करणा इससें शिरमें टाट जो पडती है, सो मिटकर फेर बाल ऊग जाताहै.

पीनस.

(३०२ पाठादि तेल) कालीपाट हलदी दारूहलदी मरोडफली अथवा तज पींपर जाईके पत्ते दंतीमूल इनोंकी चटणी करणी इनोंसे चोगुणा तेल तेलसें चोगुणा पाणी उकालकर तेल तयार करणा नाकमें बूंदे डालणेसे दुष्ट पीनस मिटता है.

मल्लम लेप उबेरा.

व्रण.

(३०३ जात्यादिघृत) (घृत मल्लम) जाईके पत्ते नींब कडवेके पत्ते पटोल दारूहलदी हलदी कुटकी मजीठ मोलेठी मेण करंजके बीज वाला उपलसिरि नीलाथोथा ये दरेक एकेक तोला लेकर चटणी करणी इसके वजनसें चोगुणा घी डालकर पकाणा ओषधियोंसें तिरके जुदारहे तब पकाभया समझ उतारके घी छाणलेणा नासूर पीप वहणेवाला वडे वडे घाव होय एसा गंभीर ओर दुष्ट व्रण इस लेपसे अछा हो सकता है.

खाज खुजली

(३०४ कासीसादि घृत) (मलम) हीराकसी हलदी दारूहलदी मोथ हरताल मनशिल कपीला गंधक वायविडंग गुगल मोम मिरच कुटकी नीलाथोथा सरसूं रसोत सींदूर सुगंधी वच रगतचंदण खेरसार कडवे नीमके पत्ते करंजबीज उपलसिरी वच मजीठ मोलेठी जटामांसी शिरेस लोद पदमाख जो हरडे पवाडके बीज ये ३२ दवा एकेक तोला इसका महीन चूर्ण घीसेर ३ इन सवोंको तांवेके वरतनमें मिलाकर ७ दिन-तक धूपमें रखणा पीछै घी कांममें लेणा खाज खुजली दाद कोढ फोडा गडगूंमड खुजली सबपर.

खाज खुजली.

(३०५ पारदादि मलम) पारागंधक मनशिल सिंदूर मिरच हलदी दारूहलदी जीरा शंखजीरा पहली कजली करणी वाकीका महीन चूर्ण मिलाणा पुराणे घीमें अथवा धोये घीमें मिलाणा इससे खुजली गडगूमड शिरके चिकते चीरे मिटता है.

हरसका मस्सा.

(३०६ अफीम तथा मांजूका मलम) अफीम तो २ माजू फलका चूर्ण तोला ५ सादा मलम तो ५ तीनोंकों मिलाके उसका लेप मस्सेपर करणेसें मस्सेकी जलण ओर खून वंध होताहै, ओर मस्से सूक जाते हैं.

घाव चांदी.

(३०७ वोदारका मलम) वोदार तो २० राल तो २० कपूर तो १० मोम तो १० घी तो १० मोम घीकूं मंद आंचसें गरमकर पीछे तीनोंचीज मिलाणी ये मलम गरमी तथा खुजालवाला घाव चांदीपर फायदा करता है.

खुजली.

(३०८ वोदारका मलम २) वोदार १ भाग अलशीका तेल ५ भाग एकठाकर मलम वणाणा.

चांदी घाव.

(३०९ वोदारका मलम ३) वोदार तो ५ राल तो ५ कपूर तो २॥ चहिये इतनें घी तथा मोममें मलमकर पट्टी मारणी.

गरमीकी चांदी.

(३१० हीरा दखणका मलम) हीरा दख्खण इलायची तथा काथा एकेक तोला कपूर २ मासा महीन पीस घीमें मिलाय मलम करणा इस मलमसें पींप वहणेवाला गर-मीका घाव अच्छा होता है.

व्याउफटे.

(३११ रालका मलम) राल सींधानिमक गुड मोम सहत गुगल गेरू घी ये सब सम भाग भेण घी सहत गुड गूगल इन तीन चीजोंकों अनुक्रमसें मिलाणा अंगारपर पिघलेवाद वारीक चूर्णका मलमकर मिलाणा पाददारी व्याउ पांवोंमें फटती है और गरमीपर फायदा करता है, गडगूमड मिटाता है.

गांठ.

(३१२ दोषघ्न लेप) सहजणेके जडकी छाल सूंठ सरसूं साटेकी जड देवदारू इनको छांछमे पीस लेप करणा इससें तमाम गांठों तथा सोजा उतरता है,

गरमी.

(३१३ दशांग लेप) सरेसकी छाल मोलेठी तगर रगतचंनण जटामांसी लोद दारूहलदी कूठ वालो इलायची वारीक पीसणा समवजन पाणीमें लेप करणा इस लेपसें गरमीके घावका सोजा विस्फोटक जहरी जानवरके डंककी जलण जलणकी गांठो तथा सोजा मिटता है.

कोढ.

(३१४ अवलगूं जादिलेप) कालीजीरी पवाडिया हलदीसेंचल निमक समचीजों सम वजन पीसके लेप करणा चमडीके सब विकार मिटता है, सपेद कोढ झांखा पडताहै.

वातरक्त.

(३१५ गेरूका लेप) गेरू रसोत मजीठ मोलेठी वाला रगतचंनण पद्मकाष्ठ कपड छाण चूर्णकरणा पाणीमे पीस लेप करणा इस लेपसें रगतवायु काखोलाई गरमीका सोजा तथा दाह शांत होता है.

गरमीकी चांदी.

(३१६ शंखजीरेका लेप) शंखजीरा ५ भाग कत्थो १ भाग दोनोंकों वारीक पीस घीमें लेप करणेसें गरमीका घाव भर जाता है.

चमडीका रोग.

(३१७ हरतालका लेप) हरताल गंधक तथा पवाडके बीज दो दो भाग मनशिल वावची नीला थोथा टंकण तथा कपूर ये एकेक भाग वारीक चूर्ण नींबूके रसमें लेप करणा इस लेपसे गंज चीतरी फुनसियां शिरका खोरा कीड वगेरे मिटते हैं.

कोढपर.

(३१८ काली जीरीका लेप) कालीजीरी ४ भाग हरताल १ भाग त्रिफला १ भाग गोमूत्रमें पीस लेप करणेसें चित्री कोढ जलदी मिटता है, सपेद कोढ झांखा पडता है.

गुप्त चोट हाड सांधणेपर

(३१९ अस्थि संधानक लेप) गुजर ९ भाग जदवार १ भाग एलिया १६ भागफट-कडी ८ भाग मेदालकडी ४ भाग डामर ४ भाग ईसस (कोतरूगूंद लंद) ७ भाग आंबाहलदी ७ भाग रेवचीनीका शीरा १२ भाग इनोंकों पाणीसे खूब पीस लेपकर ऊपर रुई दवाणेसें गुप्तचोट गिरणेकी चोट वगेरेसे खूनका जमाव भया होय वो विखर जाता है, हड्डी तूटी होय किचर गया होय उसपर कितनेक दिन ये लेपकरणेसें तूटे अवयवकूं टेका साहरा देकर स्थिर रखणेसें लेप चूसकर हाड पीछा मजबूत होता है, उसपर सोजन दरद दूर होताहै.

कलेजेकी गांठ.

(३२० कलेजा यकृतकी गांठका लेप) तिल पवाडके बीज उपलेट हलदी तथा राई ये सब सम वजन सरसूंके तेलमें पीस कलेजेपर लेप करणेसें खूनका जमाव विखर जाता है.

सपेद कोढ.

(३२१ सुपेद कोढका लेप) पीले फूलोंकी कणेर हीराकसी वायविडंग मनसिल गोरोचन सींधा निमक गोमूत्रमें पीसके लेप करणा.

गंजपर वाल पैदा होय.

(३२२ इंद्रलुप्त [टाटका] लेप) (१) पटोलकारस निकाल लेप करणा (२) वडी भोरींगणीकारस निकाल सहत मिलाय लेप करणा (३) चिरमीकी जड तथा फल सहत मिलाकर लेप करणा (४) भिलावेकी दरखतके छालकारस निकाल सहत मिलाय लेप करणा ये चारों लेपवाल नहीं आतें होय उगे जिस जगे वाल पैदा करते हैं.

आंखका रोग.

(३२३ नेत्र रोगका लेप) (विलाडक लेप) हरडे सींधानिमक गेरू रसोत इनोंकों जलमें पीस लेप करणेसें आंखके आस पास तव नेत्रके कितनेक रोगोंमें फायदा करता है.

३२४ आंजणीका लेप–रसोत सूंठ मिरच पीपर जलमें पीसगोली करणी वोगोलीकूं जलमे घस कोयेमें अंजन करणा.

खाज खुजली.

(३२५ खसका लेप) पीले फूलकी दारूडी वायविडंग हींगलू गंधक पवाडिये उपलेट सिंदूर समवजन लेकर चूर्णकर धतूरेके पत्तोके रसमें नींधके पत्तोके रसमें नागर वेलके पत्तोंके रसमें एकेक दिन मर्दनकर लेप तइयार करणा इससे खाज खुजली दाद पांवोंकी व्याउ फटणी वगेरे चमडीके रोग जलदी मिटते हैं.

शीत पित्त.

(३१६ पित्तीका लेप) सपेद सरसूं हलदी उपलेट पवाडिये तिल ये पांच वस्तु

सम वजन लेकर चूर्ण करणा सरसूंके तेलमें लेप करणेसें शीत पित्तके चठे निकलते है, सो मिटते हैं.

घावके कीडे.

(३२७ कृमिघ्न लेप) करंज कडवे नींव नगोड (संभालू) इन तीनोंके पत्ते पीस जिस घावमें कीडे पडे होय उसमे भरणेसें कीडे मिटते हैं २ अथवा लसण पीसके लेप करणा ३ अथवा हींग नीमके पत्तोंका लेप करणा पीस करके.

राग सिरका.

रक्त वृद्धिकूं.

(३२८ नालियरका सिरका) ५० नालेरके अंदरका जल लेणा उसकूं मंद आंचसें कढाहीमें जाडा पडे जहांतक ऊकालणा पीछे उसमें केशर ६ मासा लोंगका चूर्ण १ तोला मिला देणा.

पित्त खासी.

(३२९ अनारका सिरका) पक्की २० अनारकारस उसकूं उकाल सेर वूरा डालणा जाडा होणेपर नीचे उतार छ मासा केशर तोला १ इलायचीका चूर्ण डाल सीसेमे भर रख छोडणा.

पित्त रक्तपित्त.

(३३० नींवूका सिरका) ऊपर मुजब.

श्वास खास मंदाग्निपर.

(३३१ आदेका सिरका) आदेकारस निकाल उसमें आधा जल मिलाणा वूरा डालकर पाक करणा पीछै केशर इलायची जायफल जावंत्री लोंग रस मुजब मिलाणा शीसीभर राखणी श्वास खास मंदाग्नि अरुचि वगेरेमें ये शिरका अछा है,

रस.

दस्त अजीर्ण.

(३३२ आनंद भैरवरस) हिंगलू वछनाग सूंठ मिरच पींपर गंधक टंकण समवजन नींवूके रसमें १२ घंटा खरलकर मटर २ जितनी गोलियां करणी मात्रा १ रत्तीसें २ रत्तीतक (अनुपांन) रोग मुजब जुदा २ अनुपांनसें वहोत रोगोंपर चलताहै, खास श्वास दस्त अजीर्ण सर्पकांडंक विछूके डंकपर.

वादीपर.

(३३३ वातारिरस) साफ अफीम कुचीला तथा मिरच जलमें पीस गोलियां वणाणी कितनेक तरेकी वादी सोजा हिस्टीरीया मिरगी वगेरेमें फायदा करती है.

वादीपर.

[३३४ वातगजांकुश) पारा ८ भाग कुचीला ८ भाग गंधक ८ भाग सूंठ मिरच पींपर १२ भाग सबकूं मिलाणा मात्रा १ रत्ती सब वादीके रोगोंपर चलती है.

(३३५ लघु मृगांकरस) पारा १ भाग सोनेका वरक २ भाग मोती १ भाग गंधक १ भाग टंकण पाव भाग इन सबोंकूं कांजीमें या छाछमें या नींवूके रसमें एकदिन खरल करणी पीछे वडे सरावेमें संपुटकर लूणके पात्रमें उपर नीचे निमक देकर अग्नि देणी ठंढा भयेवाद खरलकर शीशीमें भरणा मात्रा १ वाल अनुपान सहत पीपर अथवा घी पीपर.

श्वास.

(३३६ श्वास कुठार) पारा वछनाग मिरच टंकणखार मनशिल गंधक ये एकेक-तोला त्रिकटु छव तोला सबकूं खरलकर छोटा गजपुट देणा निकाल पीस शीसीमें रख छोडणा मात्रा १ से ३ रत्ती अनुपान पान घी वगेरे श्वासकाश मंदाग्नि कफकोप सन्निपात मिरगी वगेरेमें देणा.

क्षय जीर्णज्वर नाताकती.

(३३७ सुवर्णमालिनी वसंत) सोनेका वर्क तो १ मोती तो २ हिंगलू तो ३ सपेद मिरच तो ४ खापरिया तो ८ सबोंकों मिलाकर महीन खरलकर उसमें गऊका मख्खण तो २॥ इन सबोंकों मिलाकर एक दिन खरल करणी पीछे ४२ दिन नींवूके रसमें खरल करणी पीछे टिकिया वांधणी मात्रा १ सें तीन चिरमीभर (अनुपांन) सहत तथा लींडी पींपर अथवा रोग और प्रकृती मुजब अनुपांन देणा चाहिये इससें पुष्टि होती है, क्षय जीर्णज्वर खास श्वास शीतवायु गोला धातु गतज्वर रक्त विकार दुवलापणा वालरोग वृद्धरोग गर्भणीरोग सूतिकारोग अच्छे होते हैं, पथ्य दूध भातका.

संग्रहणी.

(३३८ गृहणीकपाटरस) सूंठ मिरच पींपर गंधक टंकणखार पारा कोडीकी भस्म वछनाग ए सम भाग नींवूके रसमें खरलकर गोलियां वणाणी मात्रा १ से ३ रत्ती (अनुपांन) घी मिरच मिश्री तीनों मिलाकर देणा.

अजीर्ण अग्निमंद.

(३३९ अग्निकुमाररस) पारा १ गंधक १ टंकण १ वछनाग २ कोडीभस्म २ शंखभस्म ८ भाग मिरच ८ भाग नींवूके रसमें घोटणा रती २ की गोलियां करणी अजीर्ण अग्निमंद शूल शीत अनुपांन आदेका रस अथवा सहत अथवा नागरवेलके पान.

कामवर्द्धक.

(३४० मदन कामेश्वर रस) पारा १ गधक १ अफीम १ इन तीनोंकों नागर-

वेलके पत्तोंके रसमें बाल २ की गोलियां करणी १ गोली सांझकूं साकरके संग लेणी गोली लिये पीछै रातकू जीमणा नही लेकिन् भेंसका दूध पीणा.

जुलाब.

(३४१ इछाभेदीरस) पारा १ टंकण १ मिरच १ गंधक १ सूंठ १ जमालगोटा १ सबकूं नींबूके रसमें खरल करणा मात्रा १ वाल इच्छा मुजब जितनी वखत सरबत वूरेका गुटका पीवै इतना दस्त होय ज्वर वगेरेमें ये जुलाब बहोत फायदे बंद है सुजाक गरमीकी चांदी ७ दिनमें मिटती है.

पेटकीकृमि.

(३४२ कृमिकुठाररस) कपूर तो ८ कूडाछाल इंद्रजव त्रायमाण अजवाण वायविडंग हींगलू केशर वछनाग पलास पापडा एकेक तोला सबका चूर्णकर ब्राह्मी तथा भांगरेके रसकी भावना देणी मात्रा १ वाल अनुपांन सहत.

अजीर्ण हेजा.

(३४३ लघुकव्याद रस) शुद्ध गंधक तो २ शुद्ध पारा तो १ लोहभस्म तीन-मासा सेंचल तो १ टंकण तो १ मिरच तो १ पीपर तो २ पीपलामूल तो २ चित्रक मूल तो. २ सूंठ तो. २ लोंग तो. २ नींबुके रसकी ७ भावना देणी मात्रा १ सें ४ वाल अनुपांन पाणी छाछ अथवा छाछ सींधानिमक शेकाभया जीरा हींग इससे सखत हेजा अजीर्ण अतिसार मंदाग्नि अरुचि पेटके वायु वगेरे उदर रोगमें अछा फायदा देता है,

कासश्वास.

(३४४ अग्निरस) शुद्ध पारा तो. १ गंधक तो. २ गजवेल तो. ३ इन तीनोंकों खरलमें खूब घोटकर कजली करणी पीछे उसमें कुंवारपठेका रस डाल खरलकर गोला करणा उस गोलेकूं एरंडियेके पत्तोंमें लपेट आठदिन रख छोडणा पीछै उसमें पींपर तो. २ हरडे तो. ४ बहेडा तो ५ अरडूसेके पत्ते तो ६ इनोंका चूर्ण मिलाणा पीछै इन सबोंकूं बंबूलके छालेके काढेकी २१ भावना देणी इससें खासीक्षय श्वास वगेरे कफरोगमें बहोत फायदे बंद है.

वखतपर ठंढ बुखारपर.

(३४५ स्वल्पज्वरांकुश—) पारा वछनाग गंधक सूंठ मिरच पींपर छ[illegible] तोला छउंकूं मिलाकर धतूरेके बीज तो. २ चूर्णकर नींबुके रसमें खरलकर दोदो [illegible]त्तीकी गोली बांधणी मात्रा गोली १। अथवा २ अनुपांन आदेका रस तथा सूंठका [illegible] पाणी एकांतरा दिनरातमें दो वखत आनेवाला तेजरा चोथीया वगेरे जो बुखार ठंढ [illegible] टेमोटेम आता है, उसके पहले दो घंटा पहली लेणेसें रोक देता है, वदनमें [illegible] एक बिलकुल बुखार नहीं होय ठंढ लगणेके पहली ये दवा लेलेनी.

किरण ३ री.

अंग्रेजी दवायें.

(३४६ एरगाट–) गर्भकूं बाहिर लाणेवाला रक्त थांबनेवाला स्नायुओंकों संकुडानेवाला गर्भाशयके नसोकुं संकुडाता है, इसवास्ते बालक अंदरसे जलदी निकल जाता है, औरतोंके रक्तगिरणेकूं बंध करता है, आमलकूं बाहर निकालता है ऋतु ओरतोके दोषपर बहोत फायदा करता है, दवामें इसका अर्क तथा एक स्ट्राक्ट वापरते हैं, मात्रा अर्ककी १० सें ६० बूंद लिक्विड एक स्ट्रक्टकी १० से ६० बूंद मात्रा वढती है, तब जहरका असर करती है.

(३४७ आयर्न हीराकसी) इसका मुख्य उपयोग शरीरमें फीकासकेसंग जब नाताकती होती है, मुख्यपणे ओरतोकुं और जवान छोकरियोंकूं ये बेमारी होती है, तब वदनमेंसें लाल रजकण खूनमेंसें कम होता है, तब आयर्न देणा चाहिये ओरतोंके ऋतूधर्मके रोगमें महीनेके महीने गिरनेमें ज्यादा या कम होय तब लोहका उपयोग होता है, किनाइनके संग आयर्न ज्यादे फायदा करता है, आयर्न याने लोह देनेके पहली रोगीका पेट दस्त देके साफ करणेकी हमेसां जरूरी है, आयर्नकी वहोतसी. वनावटी दवा वणती है, उसमेंकी थोडी एक इहां लिखते हैं.

(१) सल्फेट ओफ आयर्न–रक्तशोधक पौष्टीग्राहिक पांडू तिल्ली ज्वर अतिसार तथा प्रदर ऊपर उसका उपयोग होता है, पिचकारी तथा लोशनऊपर उसका उपयोग होता है, खानेकी मात्रा १ सें ५ ग्रेन.

(२) शिरप फेरी फोसफेटिस एट किनिन कमस्टिकन्या देखो इस्टन्ससीरप.

(३) फोसफेट ओफ आयर्न–मात्रा ३ सें १० ग्रेन उसके साइरपकी मात्रा १ द्राम नाताकती मगजका रोग आंखोंकी नाताकतीमें दिये जाती है.

(४) केमिकलफुड–अथवा कम्पाउन्ड साइरप पौष्टिक स्कोफयुला जीर्णज्वर तथा नाताकतीमें दीये जाती है, मात्रा १ सें २ द्राम बालककूं ५ सें २० बूंद.

(५) टिंकचर ओफ परक्लोराइड ओफ आयर्न–पौष्टिक रक्तशोधक रक्तस्तंभक ग्राही मुत्राशयके रोग जलोदर प्रदर नष्टार्त्तव रक्तपित्त दस्तपेसाव मूंकेरस्ते खून गिरता होय उसपर फायदेवंद है, क्षय रक्तवात रक्ताशयका रोग हिस्टीरीया पांडु तिल्ली दस्त नाताकती वगेरोंपर वहुत दिये जाता है, मात्रा १० सें ३० बूंद.

(६) कम्पाउन्ड मिक्श्चर ओफ आयर्न–हीराकसी २५ ग्रेन कारवोनेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन हीरावोल ६० ग्रेन वूरा ६० ग्रेन जायफलका स्पिरिट ४ द्राम गुलावजल

९½ औंस सबकूं मिलाणा ओरतोकी नाताकती नष्टार्त्तव प्रदर क्षय पांडु वगेरेमें गुण करता है, मात्रा १ सें २ औंस.

(७) साइरप फेरी आयोडाईड–क्षय पांडू कंठवेल नष्टार्त्तव यकृत् प्लीह उपदंश वगेरेमें दिये जाता है, मात्रा० ॥ सें १ द्राम.

(८) रिडयुस्ड आयर्न–(लोहभस्म) पौष्टिक पांडु क्षय क्षीणता मात्रा २ सें ६ ग्रेन.

(९) परओक्षाईड ओफ आयर्न–गुण लोहभस्म मुजब मात्रा ५ सें १० ग्रेन.

(१०) टार्टरेटेड ओफ आयर्न–पौष्टिक उपदंश क्षय पांडुरोगमें दिये जाता है, मात्रा ५ सें १० ग्रेन.

(३४८ आयोडो फार्म–रोपण उग्र तथा दुर्गंध नाशक है, सडा वदवों घावकूं मिटानेकूं ये दवा निहायत ऊमदा है, खराब चांदी जखम पीली भुरकी चिलकती भरे जाती है उसकूं तिलके तेलमें अथवा ग्रिसरीनमें और ब्रांडीमें मिलाय घोटनेसें मलम होता है, १ भाग आयोडोफोर्म ३ भाग कोकमका तेल गरमकर उसमें मिला देना पीछे उसकी वट्टी बणा लेनी.

३५० आर्सेनिक–(शोमल) पौष्टिक ज्वरघ्न रक्तशोधक उग्रविष ठंढके बुखारमें उपयोग होता है, पुराणे चमडीके रोग जैसें शीतपित्तके ददोडे कोढ विस्फोटक खुजली तैसें नामर्दाईमें सोमलका उपयोग होता है, $\frac{1}{60}$ मात्रासे $\frac{1}{12}$ ग्रेन सोमलका सोल्युशन और हाइड्रोकलोरिक सोल्युशन होता है, दोनोंकी मात्रा २ से ८ बूंद.

(३५० ईथर) स्पिरिट ओफ नाइट्रीक–मूत्रल स्वेदल कफघ्न खासी बुखार श्वास वगेरे रोगोंमें दिये जाता है, पसीना तथा पेसावकूं बढाता है, शरदी बुखार दाह वगेरेमें चमडी सूकी रहती होय तथा पेसाव कम आता होय उसमें ईथर फायदा करता है, मात्रा ३० सें ६० बूंद एक वर्षके बच्चेकूं ६ सें ८ बूंद.

(३५१ ईपीकाक्युआन्हापाउडर–(ईपीकाक्युआन्हा नामके दरखतकी जडका चूर्ण उलटी लानेवाला है स्वेदल शोधक तथा कफघ्न है, इस चूर्णका रंग जरा भूरा होता उवाकी लावे एसी उसकी खसवो होतीं है, जादा मात्रा लेनेसें उलटी लाती है बुखार तथा खासीमें उलटी लाणेवास्ते दीये जाता है जादे मात्रा मरोडेपर दिये जाता है थोडी मात्रामें कफ श्वास नली और फेफसेके सोजनपर दिये जाता है, मात्रा–उलटीकेवास्ते १५ सें ३० ग्रेन वडी ऊमरवालेकूं और २ सें ३ ग्रेन एकवरसके बच्चेकूं कफ निकालनेकूं १ ग्रेण वडी ऊमरमें ओर $\frac{2}{21}$ ग्रेण बच्चेकूं मरोडेमें इस दवाकूं देनेसें फेर उलटी नहीं होसके इसवास्ते इसकेसंग लाडेनम मिलाते है, पेटपरराईका पलासटर मारते है, और दवा पिलाये पीछे थोडी देरतक कोइभी पतला पदार्थ पीनेकी मनाई करते है, नहीं तो उलटी हो जाती है.

(३५२ ईपीकाक्यु आन्हावाईन–शेरीवाईनमें ईपीकाक्युआन्हाकी जडकूं मिलानेंसे ये दवा तइयार होती है, देखणेमें उसका रंग शेरीवाईन जैसा होता है, गुणपाउडर मुजब वाईन प्रवाही होनेसें बच्चोकूं देनेमें सुगम पडता हैं, मात्रा उलटी वास्ते वडी ऊमरमें ६ सें ८ द्राम ४ औंस गरम पाणीमें मिलाकर देते हैं, एक वरसके बच्चेकू १ द्राम कफ निकालने तथा पसीना लानेकूं वडी ऊमरमें १० सें ६० बूंद.

(३५३ इसटन्ससीरप–(साइरप फेरी फोसफेटीस कम किना इन एटस्ट्रिकनीआ) इसटन्ससीरपमें फोसफेट ओफ आयर्न, फोसफेट ओफ किनाईन, और फोसफेट ओफ स्ट्रिकन्या मिलती है, १ द्राम जितनी दवामें पहली दवाका वजन दोनोंका दो ग्रेन है, तीसरीका वजन ३ ग्रेन है, नाताकती पांडु तथा जीर्णज्वरमें ये दवा देते हैं, मात्रा १ द्राम.

(३५४ एकोनाईट–देशी नाम वछनाग वातहर तथा ज्वरहर है, उसका टिंकचर बुखारमें तैसें संधिवायमें शूल वगेरेमें दिये जाता है, मात्रा २ सें १० बुंद अर्क बनानेकी रीत २॥ औंस वच्छनागके चूर्णकूं २० औंस रेकटीफाईड स्पिरिटमें दो दिन भिगाये रखणा फेर छाण लेणा (वछनागका तेल) वच्छनागका चूर्ण २० औंस कपूर १ औंस रेक्टिफाईड स्पिरिट ३० औंस वच्छनागकूं स्पिरिटमें ७ दिनतक भिगाकर पीछे छाणकर कपूर मिलाणा.

(३५५ एन्टिपाइरीन–ज्वरहर है बुखार उतारणेमें बहुत उपयोगी मालम दी है, मात्रा ५ सें २० ग्रेण बुखार तीक्ष्णसंधिवात कलेजेका सोजा फेफसेका सोजा टाइफोइड फीवर वगेरे रोगोंमें बुखारकी गरमी बढ जाती है उसकूं कम करणेमें ये दवा दुसरी दवायोंसें जादा नामी निकली है देनेकी विधि–बुखार आवे और झट उसी वखत ५ ग्रेन देते है, और पीछेभी दोदो घंटासें दोतीन वखत ये मात्रा देनी एक वेर बुखारको उतार देती हैं, और ६ से २४ घंटेतक उतरा रहता है, ये इस दवाका मुख्य गुण है, लेकिन् इस दवासे नाताकती आणेका पूरा डर है, इसवास्ते बहोत हुसियारीसें देणा एसी दवा विद्वान् डाकटरकी सल्लाविगर लेनी नहीं अच्छे नामी डाकटर विशेषकर ये दवा एका एक देते नहीं क्योंके जो दवा एक तरेका फायदा दिखाकर दुसरीतरे शरीरकूं नुकशान पहुचावे एसी दवा बिलकुल देनेलायक नहीं देशी इलाजोंमें रत्नगिरि नामकी दवा बुखार उतारणे वास्ते बहोतही अकशीर है, और उस दवासें नाताकती नहीं आकर उलटी ताकत लाती है, अच्छीतरे पसीना लाकर बुखारकूं रगोरगमेंसें निकाल देती है.

(३५६ एन्टिफेब्रिन–ज्वरहर है, ये दवाभी एन्टिपाइरीनकी तरे बुखारकूं निकालणेकूं नई निकली है, मात्रा ४ सें १० ग्रेण अज्ञान लोकोंकूं चमत्कार बताणेकूं ये दवा

अकसीर है, अनाडी वैद्योका अजड उपायों जेसा ये इलाज है, और लेभागु डाकटर भी इस चीजकूं देते हैं, सरकारी होस्पिटलोंमें एसी दवा भाग्ययोगही देते हैं.

(३५७ एन्टीमनी–(१) टार्टरेट ओफ एन्टीमनी अथवा टार्टरएमेटिक–पसीना लानेवाली कफघ्न पित्तवर्द्धक उलटी तथा दस्त लानेवाली है, ये दवा जादा वजनमें सोमल जैसी जहरी असर करती है, प्रमाणमुजब दीजाय तो बुखारमें पसीना लाती है, उधरस तथा दमकूं मिटाती है, (मात्रा) पसीना लानेकूं $\frac{1}{16}$ सें $\frac{1}{8}$ ग्रेन उलटी करानेकूं १ से ३ ग्रेन (२) एन्टिमोनियल पाउडर अथवा जेम्स पाउडर (वणावट) ओकसाइड ओफ एन्टीमनी १ औंस फोसफेट–ओफलाइम २ औंस दोनोंकों एक जगे करणा कफघ्न खेदल मात्रा ३ सें ६ ग्रेन (३) एन्टीमोनियल वाइन–बनावट–टार्टर एमेटिक ४० ग्रेन शेरी-वाइन २० औंस दोनों मिलाणा बुखार कलेजा फेफसेका दरद सन्निपातज्वर दम हांफणी वगेरे रोगोंमें, रोगी ताकतवर होय तो ये दवा दी जाती है २ ग्रेन टार्टर एमेटिक और थोडी बूंदें गरम पाणी दोनों संग मिलाकर उसमें १ औंस शेरी मिलाणा बच्चोंकी कुकडिया वडी खासी तथा छातीके रोगोंमे सावचेती रखकर उपयोग करणेसें ये मिलावट अछी कामदेती है, मात्रा २ सें ५ बूंद.

(३५८ ओनीसी–ओइल ओफ यानिसी) वातहर पेटकीवायु चूंक मिटाती है, मात्रा १ सें ५ बूंद.

(३५९ एप्सम सोल्ट–(विलायती निमक) सल्फेट ओफमेग्निशिया एसा नांमसेंभी प्रसिद्ध है, मूत्रल तथा रेचक है, बुखारकी सरुआतमें इलाज करते क्विनाइनके थोडे एक डोझमें इस निमकका मिलाणा फायदेबन्द है, पित्तप्रकृतीवाले अदमीका मूं फजरमें कडवा रहता होय और पेटमें दरद रहता होय वो थोडेदिनतक फजर २ में एक २ द्राम निमक ले तो बुखारके हुमलेसे बचता है, स्वाद उसका अच्छा करणा होय तो पीपर-मेन्ट अथवा डाइल्युट सल्फ्युरीक एसिडकी थोडी बूंदे मिलाते हैं, निमक पिये पीछै चा पीते हैं, बुखार अजीर्ण पित्तकी रुकावटसें भई दस्तकी कबजी जलोदर वगेरे रोगोमें इसका साधारण जुलाव दिया जाता है, कलेजेके रोगमें अच्छा फायदा करता है, मात्रा १ द्रामसे १ औंस.

(३६० एप्सम सोल्ट–साइट्रेट ओफ मेगनीशिया, बनावट–कारबोनेट ओफ मेग्नि-शिया–वाइ कारबोनेट ओफ पोटाश, नींबूका शरबत और सीट्रीकएसिड इन सबोंकी मिलावट. (मात्रा–(१) २ सें ४ द्राम) अथवा जादा मेग्नीशिया एक प्याले जलमें मिलाकर पीनेसें एक अच्छा हलका जुलाव लगता है.

(२) २ औंस पाणीमें १ द्राम मेग्नीशिया पीनेसें खटासकूं दूरकर ठंडक करता है.

(३) ०॥ द्राम मेझीशिया तथा २० बूंद स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथरका १॥ औंस पाणीमें डाल पीनेसें बुखारकी गरमीमें ठंढक तथा पसीना लाता है.

(३६१ एमोनिया–(लायकर) अम्लविरोधी (खटासकूं दूर करता) उलटी करानेवाला स्वेदल उष्ण वादीहर उत्तेजक कफघ्न (कफकूं निकालनेवाला) और चमडीपर फफोला उठानेवाला आमोनिया वदनमें गरमी और प्रकाश देता है, हिस्टीरीया शिरका दर्द मज्जातंतुओंकी नाताकती मूर्च्छा अतिक्षीणता अजीर्ण आम्लपित्त छातीका धडका और औरतोंके गर्भाशयके रोगोंमें दिये जाता है, (मात्रा–द्राम ॥ सें १ इससें जादा लेनेसें शिरमे दर्द तथा सुस्ती आती है, उलटी होती है अधिकमात्रासें जहरी असर करती है, मुख्य बनावट–(१) एरोमेटिक स्पिरिट ओफ आमोनिया–अथवा साल वोलेटाईल, गुण) उष्ण वातहर हिस्टीरीया मूर्च्छा निचलाई अजीर्ण पेट चूंक वगैरे रोगोंमें दिये जाता है, मात्रा २ से १० बूंद (२) कलोराईड ओफ एमोनिया अथवा साल एमोन्याक (देशी नाम नोसादर) गुण) यकृतशोधक वातहर ग्रंथीशामक तथा कफघ्न है, कलेजा तथा तिल्लीका शिरका चमका संधिवात पुराणी खासी तथा कामलेके रोगमें वापरते हैं, औरतोके स्तन पकते हैं वो तथा दुसरे सोजेपर और वद वगैरे गांठोपर उसके पाणी लोसनमें कपडा भिगाके धरा जाता है, पीणेकी मात्रा ५ सें ३० ग्रेन (३) कारबोनेट ओफ आमोनिया–उष्ण स्वेदल कफघ्न वामक उग्र नवसादर और चूना मिलाकर फूल उडानेसें ये दवा बणती है, शिरका दर्द हिस्टीरीया मूर्च्छा वगेरे रोगोंमें सुंघाणेसें जागृती आती है, आम्लपित्त श्वास खासी क्षय वगेरेमें दिया जाता है, मात्रा २ सें १० ग्रेन (४) लायकर आमोनिया एसेटेटिस–स्वेदल मूत्रल तथा शीतल है, कारबोनेट ओफ आमोनिया ३॥। औंस और एसेटिक एसिड १० औंस पाणी ५० औंस पहली दवाके भूकेपर दुसरी दवा धीमे २ डालनेसे ऊफण आती है, पीछे उसपर पाणी डालणा फुलप्रवाही ६० औंस होय इतना पाणी डालणा बुखारमें पसीना लानेवास्ते डाया फोरेटिक मिक्श्चरमें इस दवाका उपयोग करनेमें आता है, (मात्रा १ से २ द्राम) डायाफोरेटिक मिक्श्चर–लाईकर अमोनिया एसेटेटीस २ द्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथर २० बुंद और एकवा क्यांफर (कपूरका पाणी) १ औंस तीनोकों मिलाकर मिक्श्चर करणा (५) लिनिमेन्ट ओफ आमोनिया–लायकर आमोनिया (स्ट्रोंग सोल्युशन ओफ आमोनिया २० औंस अच्छा पाणी ४० औंस) १ औंस अलशीका तेल २ औंस येदवा दोनों एकजगे मिलाणा अलशीके तेल वदले तिलका तेलभी काम देता है, उष्ण है, संधिवात तथा जकड गया अवयवोंपर मसलनेसें फायदा करता है.

(३६२ एलम–फिटकडी) स्तंभक सारक वामक तथा जंतुनाशक है, रसवाहिनी नसोकूं संकोच रसका शोषण करणा ये यालमका खास गुण है, वडी मात्रामें वो दस्त

तथा उलटी लाती है, खाणेकी मात्रा ५ सें १० ग्रेन है, फोडा तथा सोजेपर उसके जलका भीगा वस्त्र धरा जाता है, दुखती आंखोंमें उसकी बुंदे डालणीमें आती है, घाव तथा स्तन पाक धोनेवास्ते यालमकी जलकी पिचकारी मारते हैं, और मूंमे छाले होजाते हैं, तब इसके पानीसें कुरला कराते हैं, पोता तथा पिचकारीका लोसन–पाणी १ रतल और यालम तीनमासेसे ॥ तोला कुरला–पाणी १ औंस यालम ८ ग्रेन आंखकी बूंदे पाणी १ औंस यालम ५ ग्रेन एक ग्यालन गुडले जलमें थोडे ग्रेन एलम डालणेसें जल साफ होजाता है.

(३६३ एलोइ–देशी नाम एलिया) रेचक ऋतुदोपहर गर्भवंती औरतकूं तथा मस्से वालेकूं देना नहीं एकस्ट्राकट टिंकचर और जुदी २ जातकी पिल्स वापरते हैं, जैसेंके पिल ओफ यालोइ एट यासाफीटीडा पिल ओफ यालोइ एन्ड आयर्न पिल ओफ यालोइ एटमहर वगेरे एकस्ट्राक्टकी मात्रा २ सें ६ ग्रेन टिंकचरकी मात्रा १ सें २ द्राम और गोलीकी मात्रा ५ सें १० ग्रेन.

(३६४ एसिड–(अम्ल) एसिड बहोत तरेका होता है, थोडोंका नाम इहां लिखताहुं (१) एसेटिक एसिड (२) कारबोलिक एसिड (३) टार्टरिक एसिड (४) टेनिक एसिड (५) गेलिक एसिड (६) बोरेसिक एसिड (७) नाइट्रिक एसिड (८) फोसफोरीक एसिड (९) ल्याकटीक एसिड (१०) सल्फ्युरिक एसिड (११) साइट्रीक एसिड (१०) हाइड्रोक्लोरिक एसिड (१३) हाइडोस्यानिक एसिड (१४) क्राइसोफेनिक एसिड (१५) बेनझोइकि एसिड इस हरेकका वर्णन उस २ तरेके एसिडमें करनेमें आया है.

(३६५ एसेटिक एसिड–शीतल अम्ल टाटगंज दाद मस्सा वगेरे ऊपर लगाणेमें काम देता है, उससें लाल दाद जलदी अच्छा होता है, दाद वगेरे पर लगाणा होय तो उससें चोगुणा जल मिलाणा.

(३६६ आइन्टमेंट–(मल्लम) अंग्रेजी इलाजोंका मुख्य २ मल्लम लिखते हैं.

(१) सादा मल्लम–३ औंस सपेद मोम ३ औंस चरबी या घी तीन औंस विदामका तेल गरम पाणी ऊपर डाल छाणके मिलाना.

(२) टरपेन्टाइनका मल्लम–टरपेन्टाईन १ औंस रालका भूका ५४ ग्रेन लार्ड ॥ औंस मोम ॥ औंस गरमकर मिलाना.

(३) क्यान्थारीडीसका मल्लम–क्यानथारीडीस १ औंस अलशीका तेल ६ औंस पीला मोम १ औंस पहली दो चीज १२ कलाकतक सांमल रखकर पावकलाक गरम पाणीपर गरमकर महीन कपडेसें निचोयकर गरम करेभये मोमकेसंग मिला देना.

(४) क्रियासोटका मल्लम–क्रियासोट १ द्राम सादा मल्लम १ औंस अफीम ३२ ग्रेन मिलाना.

(५) मांजूफल अफीमका मल्लम–मांजूका मल्लम १ औंस अफीम वत्तीस ग्रेन मिलाना.

(६) मांजूका मल्लम–माजूफलका चूर्ण ८० ग्रेन बन्झो येटलार्ड १ औंस मिलाना.

(७) श्युगर लेडका मल्लम–श्युगरलेड १२ ग्रेन सादा मल्लम १ औंस मिलाना.

(८) रालका मल्लम–रालका चूर्ण ८ औंस पीलामोम ४ औंस विदामका तेल २ औंस सादा मल्लम १६ औंस.

(९) गंधकका मल्लम–गंधक १ औंस बेन्झो एटेड लार्ड ४ औंस दोनोंकों मिलाना.

(१०) पारेका मल्लम–पारा रतल १ लार्ड १ रतल स्वेट १ औंस मिलाकर पारा दिखता बंध होजाय उहांतक घोटणा.

(११) (कम्पाउन्ड) पारेका मल्लम ६ औंस पीलामोम ३ औंस ओलीवतेल ३ औंस कपूरकाचूर्ण १॥ औंस मोमकूं गरमकर उसमें डालणा वोठरे तव उसमें भूका तथा पारेका मल्लम मिला देणा.

(१२) रेडआयोडाइड ओफ मर्क्युरीका मलम–१६ ग्रेन उसकूं १ औंस सादा मल्लममें मिला देणा.

(३६७ ओपीयम–अफीम) उष्ण पीडाशामक शूलहर वातहर ग्राही मूत्रल स्वेदल खूनके वेगकूं दवानेवाला नींद तथा नसा लानेवाला और मरदमी देनेवाला है, दवा मुजव अफीमका उपयोग वहोत होता है, वहोततरे वरते जाता है, मगजके वहोतसे रोगोंमें सराप पीनेसें भये उन्मादमें सूवा रोगके उन्मादमें धनुरवादी हिचका चसका खास श्वास कफ दम मरोडा अतिसार हैजा चूंक उलटी होजरीका घाव मर्मस्थानसें खूनका गिरणा सूवा रोग संधिवात दरद अनिद्रा वगेरे असंख्य रोगोंमें अफीम चमत्कारी काम करता है, मधुप्रमेहपर अफीम वहोतही फायदे वंद देखणेमें आया है, इपीका क्युआना, केलोमेल वगेरे कितने एक अंग्रेजी दवायोकेसंग अफीम वहोतही अकसीर है, अंग्रेजी दवायोंमें अफीमकी वहुतही दवाइयां वणती हैं, टिकचर ओपीयम (लाडेनम) एकस्ट्राकट ओफ ओपियम हाइड्रोकलोरेट ओफ मोर्फिन (और अफीमका लेप) अफीमका तेल वगेरे) केम्फोरेटेड टिंकचर ओफ ओपीयम अथवा जिसकूं प्यारे गारीकभी कहते है, वो कफ हांफणी खुलखुलिया वच्चेकी खासी और छातीके दरदोमें वहुत उपयोगी है, इस अर्कमें एक औंसमें २ ग्रेन अफीम आता है, (मात्रा ३० सें ६० वूंद) एक स्ट्राकट(सत्व)की ॥ सें० २ ग्रेन मोरफिनकी $\frac{1}{2}$ सें $\frac{1}{3}$ ग्रेन अफीम जहरी होनेसें वहोत संभालकर देणा चहिये फेफसेके रोगमें श्वास रुकके आता होय तो उसमें अफीम कभी देना नहीं.

(३६८ ओरेन्ज) (नारंगी) दीपन रुचिकर इन्फ्युझन टिंकचर तथा सीरपके रूपमें दवातरीके वापरते हैं, (मात्रा—चाकी १ से २ औंस टिंकचरकी १ सें २ द्राम और शरबतकी १ द्राम.

(३६९ ओलाइव—ओलीव्हओइल वोस्पालड ओईल एसे नामसें पहचाणे जाती है, चमडीके खुजालवाला दरद अंगारसें जलेपर लगाये जाता है, उसमें अलसीके तेल जैसा गुण है.

(३७० ओलियम—(तेल) अंग्रेजी चलते इलाजोंमें तेलरूपसें वपराती मुख्य २ दवायोंके नाम.

(१) ओलियम एनिसी—(अलशीका तेल) गुण—वातहर पेटकी वायु तथा चूंकपर दीजाती है, मात्रा १ सें ४ बुंद.

(२) ओलियम ओलीव—(स्पालड ओईल) ये तेल बहोतसे मलम तथा चुपडणेका तेल (लीनीमेन्ट) बनानेमें वापरते हैं, जलगयेपर जलण खुजालपर लगाये जाता है, इस तेलकी एवजीमें अलसीका तेलभी काम आता है.

(३) ओलियम क्याजुपुटी—इसके तेलका गुण वादी हरता उष्ण मात्रा १ सें ४ बुंद

(४) क्रोटन ओइल—जमाल गोटेका तेल नेपालेके बीजोंमेंसें निकलता है, घाणी-द्वारा, देशी वैद्य शुद्धकर दवा बणाते हैं, डाकटरलोक तेल वापरते हैं, ये तेल बहोत तेज होता है, जलोदर वगेरे सखत कवजियतमें दिये जाता है, मात्रा १ सें २ बुंद.

(५) ओलियमजूनीयर—इसकाभी तेल गुण वातहर तथा मूत्रल है, मात्रा १ सें ४ बुंद पेटकी वायु चूंक सोजा जलोदर वगेरेमें दिये जाता है.

(६) टरपेनटाइन तेल—गुण) मूत्रल ग्राही रक्तस्थंभक कृमिघ्न रेचक वातहर तथा रोपण है, मात्रा १० बुंदोंसें ४ द्रामतक दीजाती है मूत्रल तथा ग्राहीगुण है इसवास्ते ५ सें ३०टीपा कृमिघ्न और रेचक गुण है इसवास्ते १ सें ४ द्राम टाइफस और टाईफो-इड नामके बुखारमें उसकूं आफरा चढता है, ऐसे रोगोंमें दिया जाता है, रक्तपित्तका जाता भया खून इससे बंध होता है, कृमि चूंक जलोदर और दस्तकी कवजियतमेंभी फायदा करता है, छाती तथा पेटके सोजेपर उसका सेक करनेसें फायदा करता है, अंगारके जलणेसें भये घाव चांदीपर तिलके तेलमें इतनाही टरपेन्टाइन लगानेसें अच्छा होता है.

(७) ओलियमथियोब्रोमी—कोकमका तेल कोकमके बीजोंकूं पीलके ये तेल निकाले जाता है, इस तेलकूं जमाकर गुजरात वगेरेमें बजारमें, गोला, तईयार विकता है, ये तेलके लगानेसें हाथ पांवोकी व्याऊफटी मिटती हैं.

(८) ओलियम फोसफोरेटम—[फासफोरसवाला तेल] विदामके तेलकूं तीनसें डिग्री जितनी आंच देकर पीछे उसकूं छाण लेना ठंढाभयेवाद ४ औंस विदामके तेलमें

१२ ग्रेन फासफोरस मिलाना पीछे एक सो अस्सी डिग्री गरम पाणीमें उसकी शीशी धर देनी और हिलाणी जब फासफोरस गलके मिल जाय गुण पौष्टिक मात्रा ५ सें १० बुंद.

(९) पीपरमींटका तेल-(ओल्यम मेन्थी पीपरीटी) उष्ण वातहर मात्रा १ से ४ बूंद पेटकी वायुमें तथा योगवाही दवागुजब दुसरी दवायोंके संग वापरते हैं.

(१०) कोडलिवर ओइल-क्षय कंठवेल नाताकती तैसें चमडीके रोगमें फायदा करता है, जादा वर्णन कोडलिवर ओईलमें करनेमें आया है, गुण-पौष्टिक मात्रा १ सें ८ द्राम आर्य लोकोंके नही खानेयोग्य है.

(११) केस्टरओइल-एरंडीका तेल रेचक मात्रा १ द्रामसें १ औंस.

(३७१ कलंबा-कलंभाका टिंकचर २½ औंस कलंभा २० औंस प्रुफस्पिरिट पहली १५ औंस स्पिरिटमें कलंभेके चूर्णकूं चोवीस घंटे रखकर हिलाना पीछे छाणकर वाकीका ५ औंस स्पिरिट डालणा मात्रा ½ से २ द्राम दीपन पाचन मंदाग्नि नाताकती उलटी अजीर्ण वगेरे रोगोंमें वापरते हैं मंद जठराग्निसें जिसका वदन फीका पडगया होय वेर २ दस्त होता होय और अजीर्णके दुसरे चिन्ह मालुम पडतें होय तव कलंभा तथा टींकचर फेरीका उपयोग वहोत फायदेवंद है, कलंभेके टिकचर सिवाय इन्फयुझन (चा) एक-स्ट्राकट (घन) और चूर्णभी इसका वापरते हैं.

(३७२ क्राइसोफेनिक एसिड-ये एसिड दादकेवास्ते उत्तम इलाज है, उसका ओइंटमेंट (मलम) होता है, क्राइसोफेनिक एसिड५ ग्रेन एसेटिक एसिड १ वूंद टींकचर आयोडीन १ वूंद ओइंटमेंट ओफ आयोडिड ओफ मर्क्युरी एक ग्रेन और वैसे लाइन १ औंस तमाम दादोकूं ये मलम मिटाता है.

(३७३ क्याटेकू-कत्था) टिंकचर तथा चूर्णभी काम देता है. टींकचरकी घनावट २½ औंस कत्थेका भूका २० औंस प्रुफस्पिरिट १ औंस तजका चूर्ण सातदिन भीगे रखणा छाण लेना मात्रा ३ सें २ द्राम गुण ग्राही स्तंभक शीतल अतिसार रक्तातिसार वगेरेमें वापरते हैं.

(३७४ क्यालोमेल-(हाइड्रारजीरी सव कलोरीडम्) रेचक तथा शोधक है, थोडी मात्रामें वो पित्त वगेरे रसका शोधनकर शरीरकी विगडी दशाकूं धीमें २ सुधारता है, मात्रा) शोधक गुण है, इसवास्ते २ सें १ ग्रेन रेचकगुण है, इसवास्ते २ से ६ ग्रेन रेचकतरीके इकेला क्यालोमेलका उपयोग करणा अच्छा नहीं है, शोधक गुणवास्तेभी वहोत दिनोंतक जारी रखणा नहीं क्योके इससें मूं आजाता है, वच्चोंका वुखार कृमि मगज तथा छातीके रोगोंमें वापरते हैं, वुड्ढे अदमीके वुखारमें किनाइन वगेरे दवा सरू करते केलोमेल और एन्टीमोनियल पाउडर एकेक तीन ग्रेन २ देनेसें फायदा होता है, (व्यायकवांस) चूनेका पाणी १० औंस क्यालोमेल ३० ग्रेण दोनोंके मिलाणेसे कालापाणी होता है उसका पोता गरमीका जखम मिटता है और सोजा होता है, सोभी ऊतरता है (वफारा) अंगारपर चार पांच ग्रेन क्यालोमेल डालकर उसका

धूंआ लेना धूआं लेते वखत गलेसें ऊपरका भाग खुला रखकर वाकी सव वदन कपडेसें ढक लेना वहोत दिन इसका वफारा लिये जाय तो मूं आजाता है, इससें विस्फोटक वगेरे फूटकर वदनकूं सडानेवाली गरमी अच्छी होती है, लेकिन् पारे की कोईभी दवा खाकर अथवा धूंआ लेकर जादा मुंआणा इससें फायदेके वदले नुकशांन वहोत है, जरासा मूं आवै थोडा मसूडे फुले तव तुरत दवा वंधकर देनी.

(३७५ क्युवेव–कवावचीणी–मूत्रल तथा शीतल है, प्रमेह तथा हरसमें उसका वहोत फायदा देखा है, खास गुण पुराणा प्रमेहपर वहोत अच्छा है, चूर्ण तेल अथवा इसका अर्क फायदेवंद है, चूर्णकी मात्रा २० ग्रेनसें २ द्राम दूध अथवा जलसें देणा तेलकी मात्रा ५ सें २ वुंद टींकचरकी मात्रा ½ सें २ द्राम ७ कवावचीणीका चूर्ण ॥ भर फिटकडी २ वाल और कत्था २ रतीभर दिनमें तीन वखत दोतीन दिन हमेस लेनेसे प्रमेह तथा प्रदर गिरता वंद होता है, कवावचीणी मस्सेके खूनकूं वंध करता है, हरस रोगमें माखण मिश्रीकेसंग इसका चूर्ण लेना.

(३७६ कलोरल–(क्लोरलहाईड्रेट) उसके सुपेद चिलकते पासें अथवा छोटे २ टुकडे होते हैं, पाणीमें डालणेसें पिगल जाता है, नींद लाणेकूं खासतरीके दिये जाता है. क्लोरल अफीमकीतरे नींद लाता है, लेकिन् दस्त कवज नहीं करता जुस्सा नहीं लाता चसका संधिवाय आंकसी धनुर्वात सन्निपात हिचका चित्तभ्रम और वेचेनी तथा अनिद्रा वाले रोगोंमें ये दवा वहोत फायदा करती है, धनकिया वादी कुचीलेका जहर चढनेसें अदमीका वदन खेंचीज जाता है, उसकूं एकदम आराम करता है, अफीमकीतरे वहोत दिनोतक लेनेसें उसकी टेव (मावरा) पड जाता है, जादा मात्रा लेनेसें जहरी चीज है, मात्रा–खेचा तान हिचका वगेरे मिटाणेकूं ५ से १० ग्रेन नींद लानेकूं १५ से ४० ग्रेन लेकिन वीस ग्रेणसें जादा देते वहोत हुसियारी रखणी चहिये मिश्रीके जल में गालकर क्लोरल देना जादे अच्छा है; केमीष्टके उहां इसका शरवत (सीरप ओफ क्लोरल) तयार मिलता है, उसमें १ द्राम शरवतमें १० ग्रेन क्लोरल होता है, वो वापरणा सुगम पडता है.

(३७७ क्लोराडाइन–ग्राही पीडाशामक दीपन पाचन और आंकसी तथा शूलकूं मिटानेवाला है, क्लोरोडाइन कालेंगका जाडा प्रवाही होता है, वो मोरफीया कलोरोफोर्म इन्डियन हेम्पहाइड्रो स्पानिक एसीड पेपरमिन्ट और स्पिरिटका वणता है, स्वादमें अच्छा होता है, पेटकी आंकसी अतिसार खासी दम वगेरे रोगोंमें वापरनेमें वहोत लोक घरमें रखते हैं, इसकूं देती वखत ऊमर तथा रोगका वरावर विचार करणा चाहिये मात्रा स्वेदल तथा पीडा शामकतरीके ५ से १० वूंद कफ शरदी ईन्फल्युएन्झा तथा एग्यु जातके वुखारमें दिये जाता है, आंकसी मिटाणेकूं १० सें २५ वूंद दम खासी वगेरेमें

इतनी मात्रा दी जाती है, ग्राहीपणेकूं १५ सें ३० वूंद हैजा अतिसार मरोडेमें ये मात्रा देणा चहिये बच्चोंकूं एकाएक देना नहीं जो कभी देना पडे तो बहुत सावचेतीसें ऊमरका विचार करके देणा चहियें एक वर्षके बच्चेकूं १ वूंद १–३ वरसके बच्चेकूं २ सें ४ वूंद इस क्रमसें ८–१६ वर्षवालेकूं ८ सें २० वूंद देणा, अनुपान–पाणी शरवत अलशीकी चा अथवा खांडमें वूंदे मिलाकर देणा क्लोरोडाइनकी वाटलीकूं मजवूत वंध रखणी और हिलायकर लेनी.

(३७८ क्लोरोफोर्म–वातहर मादक शामक खेंचाताणकूं वंध करता वेहोस करनेवाला है, जरूरपणे इसका उपयोग शरीरकूं काटणे वाढणेकी वखत वेशुद्ध करनेका है, लेकिन् वो उपयोग अनुभवी डाकतरोका है, इसके अलावा हैजा अतीसार चूंक वगेरे रोगोंमें वो दिये जाता है, मात्रा–१ सें ५ वूंद बच्चोंकों ये दवा पीनेकूं देना नहीं, १ सें ५ वूंद खांडमे मिलाकर देनेसें उलटी एकदम वंद होजाती है, दम तथा हैजेमें गुंदके पाणीमे ३ से ५ वूंद मिलाकर देना, वनावट (१) कमपाउन्ड टिंकचर ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म २ औंस रेकटीफाइड स्पिरिट ८ औंस इलायचीका अर्क १० औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा–२० से ६० वूंद (२) स्पिरिट ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म १ औंस रक्टिफाइड स्पिरिट १९ औंस दोनोंकों मिलाणा मात्रा २० से ६० वूंद (३) लिनिमेन्ट ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म २ औंस लिनिमेन्ट केम्फर २ औंस दोनोंकों मिलानेसें लिनिमेंट याने तेल वणता है, वो वदनके किसीभी जगेका दरद जलण तथा खुजालपर लगाणेसें मिट जाता है.

(३७९ काश्या–दीपन पाचन ज्वरघ्न वुखार मंदाग्नि तथा कृमिपर चा घन तैसें अर्क दिये जाता है, तांतू जैसें कृमियोंकों विलकुल मिटाता है, पीछे जुलाव देकर निकाल देते है.

३८० किनाईन–(सलफेट ओफ किनाइन) ज्वरहर पौष्टिक पाणीमें वरावर मिलता नहीं सल्फ्युरिक एसिड १० वूंद और किनाइन १० ग्रेन इय मिल जाता है, (अच्छे किनाइनकी परिक्षा)–एक चकूके पाणपर किनाइन धरकर उस चकूकूं स्पिरिट लेम्पर धरणा चकूका पाना लाल जव होगा तो किनाइन तो उड जायगा उस चकूपर फकत काला दाग रह जायगा अगर पिछाडी चकूपर कुछ पडा रह जाय तो समझणा के किनाइनमें किसी चीजका भेल है, किनाइन शरीरमें क्या किया करता है, वो डाकटरोके अभीतक पूरा समझमें नहीं आया है, लेकिन निरोगी खूनमें किनाइके मिलता कोइ पदार्थ देखनेमें आया है, एसा रसायणी विद्वानोका कहणा है, उसकू इसवास्ते किनाइन खूनमेके उसपदार्थकूं पुष्टि देता है वुखारमें खूनमेका इसतरेका पदार्थ कम होजाता है किनाइन पीछा वणा देता है. इसवास्तेही किनाइन सव वुखारमें अकसीर उपाय ठहरा है, जादातर मेलेरियल

फीवरमें और विषम ज्वरमें जादाही अकसीर है, वदनकी गरमीकूं कम करता है, उसके संग ज्ञानतंतुओंकोंभी मंद करता है, मेलेरिया बुखारमें खून में सपेद रजकण बढते हैं, किनाइन उसकों रोकता है, किनाइन जहरी कीडोंकों मिटाता है, उससें वदनके सडते भागकूं रोकता है, चसका तैसें संधिवाय जैसे रोग सो बहोतसी वखत दिखाइ देता है, और पीछै मिट जाता है, उसमेंभी किनाइन अच्छा फायदा करता है, इसका उपयोग करते एक दो वात ध्यानमें रखनेकी है, बुखारमे किनाइन सरू करती वखत एक दोय दस्त आवै पेट साफ होय एसा परगेटिवले लेना चहिये दुसरी वात इय हैके वदनमें ठंढ अथवा बुखार (गरमीका) जोर होय तव किनाइन नहीं लेणा दस्तका खुलासा होय पसीना आनेलगे तब किनाइन लेना डाकटरकी सलाह नहीं होय तव किनाइन लेना होय तव बुखार नरम पडे और पसीना आये पीछै अथवा चमडी भीजीसी होजावे तब लेना बडे बुखारमें जब शिर दुखता होय नाडी जोरमें होय और चमडी सूकी होय तब किनाइन विना डाकतरके हुकम विगर कभी लेना नहीं कितनी वेर एसाभी बणता है, शरीरमें क्षारकी व्यासि भये पीछेही किनाइनका पूरा असर होता है, इसवास्ते किनाइनकेसंग क्षार गुणकी दवाइयें जरूर मिलाकर देणा चहिये किनाइन जुदे २ शरीरमें जुदी २ असर करती है, कोईकूंवडी मात्रामेंभी चहिये एसा असर नहीं करता और कोईकूं थोडी मात्रामें शिरमें तथा कानमें अवाज तथा बहिरापणा लाता है, चमडीपर दाग उठ जाता है, मात्र एक ग्रेन किनाइनसें एसा अहवाल बणनेका किसी २ जगे दाखला बण आता है, जब एसा अहवाल बने तब मात्रा कम करणी अथवा बंधकर देणा किनाइनका वडा डोझ शिरमें अवाज कानोंमें बहरापणा आंखोमें अंधेरा लाता है, चहरा और आंखे लाल चोल होजाती है, ये असर थोडी २ कम होकर बंध होती है, लेकिन किसी २ वखत कानकी अवाज वगेरे निशानि या हमेसांकेवास्ते रह जाती है (मात्रा ३ से १० ग्रेन) अथवा वेर २ नहीं देना होय तो इससेभी जादा मात्रा दी जाती है, अनुपान-सामान्यतरे पाणीकेसंग लिये जाता है, लेकिन अच्छा अनुपान नींबुका रस है, अथवा सल्फ्युरिक एसिड है, कडवा बहोत होता है, अगर लिया नहीं जाय तो गूंदके पाणीमें अथवा ग्लिसेराइनसें गोलियां वांध लेनी बुखार सिवाय पाचन क्रियापरभी अच्छी असर करती है, और उससें डिस्पेपस्या नामके अजीर्णमें फायदा करती है, नाताकती दूर करनेवास्ते किनाइन ऊपर लिखी मात्रासें आधे वजनमे लेना मेलेरियावाली हवामें हमेस एकाध ग्रेन किनाइन लेणेसें मेलेरियाकी जहरी असरसे वचता है.

(३८१ काजुपुटी ओईल–पेटकी चूंकपर दीजाती है, मात्रा १ सें २ वूंद अथवा ऊपर चुपडे जाती है.

(३८२ कायनो–हीरादक्खन-ग्राही रक्तस्तंभक शीतल-अर्क तथा चूर्ण वापरते हैं,

टिंकचर–हीरादखनका चूर्ण २ औंस रेकिट फांइड स्पिरिट २० औंस ७ दिन भिगाकर छान लेना और स्पिरिट २० औसमेंसे कम होय इतना फेर डालकर २० औंस पूरा करना मात्रा १ सें २ द्राम-कम्पाउन्डपल्वीस–३।।। औंस हीरादक्खण .।. औंस अफीम १ औंस तजका चूर्ण इन तीनोंका महीन चूर्ण मात्रा ५ से १० ग्रेन दस्त खून गिरणा तथा उलटीमें देते है.

(३८३ कार्डेमम–इलायची दीपन पाचन रुचिकर टिंकचर कोर्डेमम दुसरी दवायोंके संग दिये जाती है मात्रा ½ सें २ द्राम.

(३८४ कारबोलिक एसिड–दाहक रोपण जंतु तथा दुर्गंध नाशक बुखारकूंभी मिटाता है, उलटी ज्वर रक्तदोषमें खाणेमें देते हैं, ग्लिसेराइन ४ औंस कारबोलिक एसिड १ औंस मिलाणा मात्रा ५ सें १० बूंद मुख्य उपयोग जखम घाव भरणेमें काम देता है, कारबोलिकका प्रवाही-१ भाग कारबोलिक एसिड और ४० भाग पाणी सांमल करणा जखम उपदंशकी चांदी दुर्गधी घाव हाड गंभीर नासूर भगंदर वगेरे रोगोमें धोनेवास्ते तथा पिचकारीवास्ते बहोत उपयोगी है, कारबोलिक तेल-१ भाग एसिड २० भाग मीठातेल मिलाना ऊपर लिखे तमाम चमडीके रोगोंमें इस तेलकी पट्टी मारणेसें बहोत जलदी भराव लाता है, जो घाव चिक २ तें होय ऐसे घावपर पहली आयोडोफोर्म भुरकाकर पीछै कारबोलिक तेलका कपडा भिगाके धरणा साचूमें तथा बहुतसे मलमोंमे कारबोलिक एसिड मिलानेसें चमडीके रोगोंमें बहुत फायदाबंध होता है, खानेमें उसकी मात्रा ½ से २ ग्रेन है, जादा लेनेमें आवे तो जहरके चिन्ह बताता है, मरभी जाता है.

(३८५ क्रियासोट–उलटी तथा दस्तकूं रोकता है, दुर्गधका नाश करता है, दांतके दुखणेकूं बंध करता है, उसका मलम दाद खुजली खाजपर काम आता है, मात्रा १ सें ३ बूंद क्रियासोट मिश्चर १ सें २ औंस.

(३८६ क्रीम ओफ टार्टर–दुसरा नाम एसिड टार्टरेट ओफ पोटास-बाईटार्टरेट ओफ पोटाश सारक शीतल मूत्राशयपर उसकी असर अच्छी होती है, बुखार हरस जलोदर तथा दस्तकी कबजीमें दिये जाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन (रेचक) मात्रा १ से ४ द्राम गंधकके संग मिलाकर हरसमें दिये जाता हे, गंधक ३ द्राम और क्रीम ओफ टार्टर १ द्राम दोनों मिलेभये मात्रा १ द्राम अनुपान सहत अथवा शरबत.

(३८७ केम्फर–कपूर जंतुनाशक निद्रानाशक ज्वरघ्न स्वेदल कफघ्न मूत्रल चमडीकी क्रिया और पसीनेकूं बधाता है, जादा मात्रा देनेसें वो खूनके वेगकूं नरमकर आंकडी तथा शूलकूं मिटाता है, हिस्टीरिया दम संधिवाय खुलखुलिया खासी छातीका धडका वगेरे रोगोंमें देते हैं, जलणकूं मिटाता है, नींदकूं उत्तेजन देता है. शिरके दरदकूं कम

करता है, और शरदीमें फायदा करता है, मात्रा–२ सें ४ ग्रेन (बनावट) १ केम्फरवाटर डिस्टील्ड बोटरसें भरी शीशीमें थोडा कपूर डाल थोडे घंटाओं तक केम्फरका जल खुसबोदार होता है, येजल इकेला दवातरीके दिये नहीं जाता लेकिन डाया फोरेटिक मिकश्चर जैसी बनावटोंमें उसका सादे जलके ठिकाने उपयोग होता है, (२) स्पिरिट क्याम्फर–१ औंस और १ द्राम रेक्टीफाइड स्पिरिटमें १ द्राम कपूर डालनेसें स्पिरिट क्याम्फर बणता है, शरीरके अंदर गरमी लानेवास्ते हिस्टीरीया वगेरे ऊपर लिखे रोगोंपर पीनेमें तैसें बाहर जलके संग (३) कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ क्याम्फर अथवा पेरी गोरिक एलीक्सीर अफीम ४० ग्रेन लोबानका फूल ४० ग्रेन कपूर ३० ग्रेन एनिसी ओइल । द्राम प्रुफस्पिरिट २० औंस ये पांच चीजोंकों एक बाटलीमें ७ दिन रख छोडनी और बाटलीकूं बखतो बखत हिलाना पीछै छाण लेना इस दवासें हैजा अतिसार वगेरे रोगोमें दिये जाता है, मात्रा १५ सें ६० वूंद अर्थात १ द्राम बच्चेकूं ३।५ वूंद थोडी मिश्री ऊपर भुरकाकर देणेसें कफकूं बहोत फायदा करता है, खुलखुलिये खासीमें बुखार होय तो उसकूं इपीकाक्यु आन्हावाइन अथवा ओन्टीमोनियल वाइनकेसंग दिये जाता है.

(३८८ केशकारासे ग्रेडा–रेचक तैसें पौष्टिक है, बंधकुष्ट तथा उससें भये हरस रोगमें ये दवा देनेसें दस्तका खुलासाकर सफरेकूं साफ करता है, लिक्विड एकस्ट्राकट ओफकास्कारासे ग्रेडा दवामें दिये जाता है, उसकी मात्रा १ द्रामकी है.

(३८९ केस्टर ओइल–एरंडीका तेल ताजा पेटमें चूंक जलण पैदा करता नहीं और दस्त अच्छीतरे लाता है, इसवास्ते नाजुक मिजाजवालेकूं ये जुलाब अच्छा है, साधारण कबजियतमेंभी दस्त साफ लानेकूं ये दिया जाता है, बेर २ देनेमें आवे तो मात्रा कम करणी चाहिये दुसरी वखत जुलाब देनेसें कम असर करता है, इसवास्ते मात्रा वधाणा पडता है, लेकिन ये बात एरंडीके तेलमे नहीं है, इसकूं तो बलके कमही देना चहिये एरंडीके तेलमें फकत बकवो आया करती है, ये एक एब है, इसवास्ते मूंमें पहली नींबूके रसकी वूंदे डाल पीछे इसकूं पीवै अथवा पेपरमींटके पाणीमें डालकर पीणा अथवा तेल जितनाहीं ग्लीसराइन मिलाकर तजके अर्कसें वूंदोंसे सुवासित करणेसें उसकी खराब गंध मिट जाती है, जो क्यास्टर ओइल ताजा और अच्छा नहीं होय तो पेटमें गरमी आंकडी और मरोडा पैदा करता है.

(३९० क्रोटन ओइल–जमाल गोटेका तेल अतिरेचक तथा दाहक है, इससे पेटमें जलण होती है, जादाबंध कुष्टमे तथा जलोदरमें मिश्रीमें गोली बांधकर देते हैं.

(३९१ कोडलीवर ओइल–कोड नामकी मछलीके कलेजेका ये तेल बणता है, डाकतरलोक इसकुं पौष्टिक कहते हैं, क्षय नाताकती छातीके दरदमें बहोत देते हैं,

मात्रा १ से ८ द्राम ये तेल पचनेमें भारी है, और कितनोंको अजीर्ण होकर दस्त होने लगता है, दूधकेसंग अथवा चिरायतेके चासंग अथवा पेपरमेंटके जल संग देते हैं, जीमे बाद तुरत पीनेसे खुराककेसंग वो पच जाता है, बुखारमें तथा दस्तकी बेमारीमें देनेसें नुकशांन करता है, कोडलीवर ओइल विथ मालटाइन नामकी दुसरी बनावट इसकी होती है, वो स्वाद और गुणमें जादा वो लोक कहते हैं, इस वखत माल टाइन जादा वापरते हैं.

(३९२ कोपर) (सल्फेट ओफ कोपर) नीलाथोथा वामक ग्राही दाहक विष आसमानी रंगका टुकडा पासदार मिलता है, मात्रा ग्राही गुणवास्ते $\frac{1}{2}$ से २ ग्रेन वमनवास्ते ५ सें १० ग्रेण पेटमें कोइ २ जगे संग्रहणी तथा अतीसार में दिये जाता है, लेकिन उसका मुख्य उपयोग बाहर लगाणेमें आता है, आंखका लोसन–१ औंस पाणी १-२ ग्रेन नीलाथोथा जलमें डालनेसें आसमानी रंगका पाणी होजाता है, आंखकी खीलपर दुसरे २ दिन नीलेथो थेका कटका फेरणा ऊपरसे लोसनकी बूंदे डालणी प्रमेह सुजाकमें इसकी पिचकारी दिये जाती है, झींक जब हाजर नहीं होय तब जहर खायेको नीलेथोथेकी उलटी देणेमें आती है.

(३९३ कोपेवा–इस नामका दरखत होता है, उसमेंसे तेल जैसा निकलता है, उसकूं बालसम कहते है, ये रस मूत्रल तथा वस्तिशोधक है, प्रमेह सुजाकपर मुख्य चलता है, प्रमेहकी जलण कम होय तब सरू करणा प्रमेह प्रदरके पुराने मरजपर बडा फायदेबंद है, मात्रा ५ से २० बूंद.

(३९४ कोलशीकम–वातहर तथा रेचक है, मात्रा २ सें ८ ग्रेन गाउट तथा संधिवायपर उसका उपयोग साधारण है, यकृत् तथा मलकी कबजी और अजीर्णपरभी वापरते है, उसका एक स्ट्राकटभी वापरते है, मात्रा $\frac{1}{2}$ सें २ ग्रेन.

(३९५ कोलोसिथ–देशी नाम कडवा तूंबा गुण रेचक है, जलोदर मलावरोध तथा अजीर्णमें जुलाब दिये जाता है, उसके एकस्ट्राकटकी मात्रा ३ से १० ग्रेन.

(३९६ गम–देशी नाम गूंद मूत्राशयका वरम अथवा दाहमें तैसें बच्चोंके धातु गिरणेमें दिये जाता है, कफकेवास्ते मूमे रखकर चूसकर रस ऊतारणा अच्छा है २० औंस जवका पाणी और १ औंस गम मात्रा ६ औंस.

(३९७ ग्लिसराइन–चमडीका रोग ऊपर लगानेमें विशेषकरके वापरते हैं, ग्लिसराइन पेटकी खुजालपरभी कुछ इक असर करता है, चमडीका दाह स्तनपाक जीभ तथा मूका जखम गलेका पकणा वगेरे रोगोंपर ग्लिसराइन अकेला अथवा टेनिक एसिड टंकण फिटकडी कारबोलिक एसिड वगेरे दवायोमें कोइभी एकाधकेसंग मिलाकर लगाये जाता है, जिससें चमडीकी जलण मिटती है, इस मिलावटमें ग्लिसराइन ४ भाग और

तब डोवर्स पाउडरकेसंग क्वीनाइन देते हैं, फायदा करता है, मात्रा–डोवर्स पाउडर .८ ग्रेन क्वीनाइन २ ग्रेन डोवर्स पाउडर लीयां पीछै थोडी देरतक पतला पदार्थ पीणा नहीं, नहीं तो उलटी होती है, क्यूंके इपीकाक्युआन्हामें उलटीका गुण है.

(४१२ थाइमोल–अजमेका फूल उष्ण वातहर रोपण तथा दुर्गंधनाशक है, मात्रा ॥ से ३ ग्रेन १ भाग फूलकूं एक हजार गुणे जलमें मिलाकर वापरणा.

(४१३ नक्सवोमिका–देशी नाम कुचीला वातहर पौष्टिक कृमिघ्न मात्रा १ से ५ ग्रेन एकस्ट्राकटकी मात्रा ॥ से २ ग्रेन अर्ककी मात्रा १० से २० बूंद.

(४१४ नाइटर आफ पोटाश देशी नाम सोराखार उसकी नाइट्रीक एसिड नाइट्रो-म्युरियाटिक दवाओं बणती है, बजारमेंका सोरेखारकूं साफ करनेकूं गरम पाणीमें पिग-लाकर छाणकर ठरणेदेना तब उसके पासे नीचे बंध जाते हैं, ऊपरका पाणी फेंक देना ये बडा ठंढा खार है, मूत्राशय तथा चमडीपर उसका खास असर है, इसगुणसें बुखारमें कामलेमें संधिवायुमें जलोदरमें तथा वरममें वापरते हैं, बुखारकी गरमी मिटाणे सोरा २ द्राम दो नींबूका रस पाणी ४० औंस तथा थोडी खांड इन सबोंकों मिलाकर उसमेंका थोडा २ पाणी पीणा मात्रा ५ से २० ग्रेन सोरा बडी मात्रामें जहरी असर करता है, दम बेठानेकूं इसतरे उपयोग करणा १ भाग सोरा ८ भाग जलमें उकालना इस जलमें देसी कागजकूं दोतीन मिनटतक भिगाकर सुका डालना इस कागदकी वीडी सिलगाकर पीणी इससें दम चढा भया बैठ जाता है, नाइटर सिवाय स्ट्रोंग तथा डाइल्युटनाइट्रीक एसिड वापरते हैं.

(४१५ नाइट्रीक एसिड–(स्ट्रोंग) सोरेका तेजाब गुणमे अतिदाहक है, गंधाते भये घावोंकों जलाणेमें काम आता है. सापकाटे उसके डंकपर लगाणेसें उसका जहर नहीं चढता.

(४१६ नाइट्रीक एसिड–(डाइल्युट) १ औंस स्ट्रोंग नाइट्रीक एसिड और ४ औंस जल मिलानेसें डाइल्युट नाइट्रीक एसिड होता है, पाचन पौष्टिक तथा खून सुधारणेवाला है, मात्रा १० से ३० बूंद (अनुपान) १ औंस पाणी, आठ गुणा जल डालकर पिचकारी देनेसें मूत्राशयकी पथरी पिगलकर बाहिर आती है.

(४१७ नाइट्रेट ओफ सिल्वर–(अर्जेन्टीनाइट्रस) अच्छे रूपेकूं सोरा खारके तेजा-वमें पिघलाणेसें ये दवा तइयार होती है, उसके पासादार टुकडे अथवा गोलसलियां आती है, अजीर्ण उलटी गोला होजरीका घाव संग्रहणी अतिसार वगेरेमें उसका उपयोग होता है, ये दवा जलानेवाली है, इसवास्ते पेटमें लेनेकरके जितना फायदा है, तिस करके बाहर लगानेमें जादा फायदेवंद है, उपदंशकी चांदी तथा मस्सेकूं जलानेमें वापरते हैं, विसर्पके सोजेके तथा वात रक्तके सोजेके आसपास कास्टीककीलकीर लगाणेसें फैलता

बंध होता है, आंखका लोशन १ औंस वरसादका पाणी अथवा हंसोदक और १ से ४ ग्रेन कास्टीक मिलाकर वूंदे डालनेसें दुखती आंख मिटती है, सिराज (पिचकारी) प्रदर तथा प्रमेहवास्ते १ औंस पाणी और १ सें २ ग्रेन कास्टिक.

(४१८ नाइट्रो हाइड्रो क्लोरिक एसिड)–अथवा नाइट्रोम्युरियाटिक अेसिड (डिल्युट) वनावट ३ औंस नाइट्रिक एसिड ४ औंस हाइड्रो क्लोरिक एसिड २५ औंस जल मिलाकर देते हैं, मात्रा ५ से १० वूंद एक औंस जलमें अथवा चिरायतेकी चामें तावसे भई मंदाग्नि कलेजा तथा कमलेके रोगकूं मिटाकर खूनकूं शुद्ध करता है.

(४१९ पलास्टर–(लेप) अंग्रेजी उपचारोमें मुख्य लेप नीचै प्रमाणे (१) अफीमका लेप–अफीम १ औंस रालका लेप ९ औंस गरम पाणीसे मिलाणा (२) बोदारका लेप–मुरदासंग ४ रतल ओलिव तेल १ ग्यालन पाणी ६५ औंस वाफसे गरम कर लेप करना.

(३) बेलाडोणेका लेप–तयार विकता है.

(४) राईका पलास्टर–राई २॥ औंस अलशी २॥ औंस ऊकलता जल ८ औंस पाणी २ औंस अलशीकूं गरम पाणीमें और राईकूं ठंढे जलमें मिलाकर दोनोंकों मिलाना.

(४२० पेपरमिंट–(एसेन्स ओफ पेपरमिन्ट) उष्ण वातहर शूलहर पेटकी वायु आंकसी और चूंककूं वैठाती है, पेपरमिन्टके १ औंस तेलमें रेकटी फाइड इस्परिट ४ औंस मिलानेसें एसेन्स होता है, मात्रा १० से २० वूंद पेपरमिंटका जल वनानेवास्ते $\frac{1}{2}$ द्राम पेपरमिंटका एसेन्स और २० औंस पाणी एक वडी वोतलमें डालकर हिलाना मात्रा १ से ३ द्राम.

(४२१ पेपसिन पाचक–मंदाग्नि तथा अजीर्णमें वापरते है, मात्रा २ से ५ ग्रेन जीमे वाद पेपसीन वाइन आती है, वोभी एसा गुण करती है, उसकी मात्रा १ से ४ द्राम.

(४२२ पोटाश–पोटाशकी वहोत जात है.

(१) कास्टिक पोटाश–दाहक है, अर्वुद चांदी तथा मस्सेके जलानेमें काम देता है

(२) लाइकर पोटास–सोल्युशन ओफ पोटाश अम्ल (खट्टेका) विरोधी मूत्रल तथा शोधक है, पथरीका रोग उष्ण वाय प्रमेह अम्लपित्त संधिवाय मेद और अजीर्ण वगेरेमें देते हैं, मात्रा १० से ४० वूंद.

(३) आयोडाइड ओफ पोटासीयम–शोधक रक्तशोधक उपदंश स्कोफयुला तथा दमके दरदकेवास्ते अछा इलाज है, तैसें संधिवात गाउट हड्डी तथा चमडीके सडनेका रोग यकृत् प्लीह शिरका दरद शूल तथा पक्षाघातपर दिये जाता है, मात्रा २ से २० ग्रेन.

(४) एसेटेट ओफ पोटाश–मूत्रल तथा रेचक है, जलोदर तथा सोजा मूत्रपिंडके रोगोंपर दिये जाता है, मात्रा मूत्रल १० सें ६० ग्रेन रेचक २ से ३ द्राम.

(५) क्लोरेट ओफ पोटाश–शीतल तथा मूत्रल है, शोधक मात्रा ५ से ३० ग्रेन.

(६) टार्टरेट ओफ पोटाश–मूत्रल रेचक जलंदर मलावरोध तथा उष्ण वायु वगैरे रोगोंमें दिये जाता है, मात्रा १ से ४ द्राम.

(७) एसीड टार्टरेट ओफ पोटाश–देखो क्रीम ओफ टार्टर.

(८) नाइट्रेट ओफ पोटाश–देखो, नाइट्र.

(९) परम्यांगनेट ओफ पोटाश–विषघ्न दुर्गंध नाशक सांप काटेपर इसकी पिचकारी मारे जाती है, नष्टार्तव तथा अजीर्णपर दी जाती है, मात्रा १ सें ५ ग्रेन.

(१०) कार्बोनेट ओफ पोटास–अम्लविरोधी है, लायकर पोटास जैसा गुण है, तीक्ष्ण संधिवायकूं मिटाता है, पथरी चमडीके रोग गाऊट तथा आम्लपित्त ऊपर दिये जाता है, मात्रा १० से ३० ग्रेन.

(११) बईकार्बोनेट ओफ पोटाश–गुण तथा फायदा कार्बोनेट ओफ पोटाश मुजब

(१२) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम–नींद लाणेवाला मगजके रोगकूं मिटानेवाला मिरगीके रोगमें बहुतही फायदेबंद हिस्ट्रीया खेचाताण अनिद्रा उन्माद बच्चेकी हिचकी बडी खासी शिरकी शूल वगैरे रोगोंपर उसकी बहुत अछीं असर होती है, मात्रा ५ से ३० ग्रेन.

(१३) सल्फेट ओफ पोटाश–रेचक मात्रा १५ से ६० ग्रेन.

(१४) साइट्रेट ओफ पोटाश–शीतल तथा मूत्रल है, पथरी तथा बुखारमें फायदेबंद है, मात्रा २० से साठ ग्रेन.

(४२२ पोडो फीलीन)–ये अमेरिकामें पैदा होता दरखतका चूर्ण है, उसका रंग झांखा नीला भूरा है, गुण रेचक है, और खास तौर लिवरपर असर करता है, उससें कवजियत तथा कलेजेका पुराणे रोगमें फायदा है, मात्रा अच्छे जुलाबवास्ते १ से २ ग्रेन मध्यम जुलाबवास्ते $\frac{1}{3}$ से $\frac{1}{2}$ ग्रेन इसका जुलाब बच्चेकूं देणा नहीं इकेला लेनेसें पेटमें आंटा चलता है, और दस्तभी बेसुमार आते हैं, इसवास्ते बेलाडोनाकेसंग लेनेसें आंटा नहीं आता और रुबार्ब कोलोसीन्थ एलोइ (एलिया) अथवा ब्लुपिलकेसंग लेनेसें प्रमाणसर दस्त आता है.

(४२३ पोमिग्रेनेट) (देशी नाम अनार) अनारके जडकी छाल तथा फलकी सूकी छाल दवामें काम देती है, टेपवर्म नामके जीवकृमिकूं मिटाने तैसें अतिसार और मरोडा मिटानेकूं जडकी छाल काम देती है, उकालीकर कुरला करनेसें मूंके घाव मिटते हैं २ औंस मूलकी छाल ४० औंस पाणीकूं उकालना आधार है, तब छाण कुरला

करणा टेपवर्म कृमिवास्ते २ औंस जल निराहार पेट पीणा आधी २ घंटासे छ वखत पीणा पीछै दस्त लगे एसी दवा लेनी इस दवासे उकारी होय तोभी ये दवा ऊपरा ऊपरी पांच छ वखत पीणी अतिसारमें एकेक औंस काढा दिनमें तीन वखत पीणा.

(४२४ पापी हेडस–पापीक्यापसुल्स) देशी नाम अफीमका डोडा शेक करनेके काममें वहुत उपयोगी है, उसके शेकसें शरीरके कोइ चोकस भागकूं रोगकूं पीडाकूं मिटाता है, २ सेर पाणीमें ५ रुपेभर डोडोंकूं कूटकर उकालना.

(४२५ फोसफरस)–ये एक चीज एसी है, सो हवामें रखनेसें तुरत सिलग उठती है इसवास्ते उसकूं पाणीमें रखते हैं, देखणेमें मीम जैसा होता है, दीयासली वनानेमें काम देता है, पेटमें लेनेसें पौष्टिक है, मगजकी नाताकतीमें खास करके दी जाती है, गोली तैसें तेलरूप वापरते हैं, फासफोरिसकी गोलियां तइयार विकती हें, गोलियोंकी मात्रा २ से ४ ग्रेन तेल–विदामका तेल ४ औंस गरमकर छाण ठंढाभये पीछै काचके वुच्च-वाली वाटलीमे डाल उसमें १६ ग्रेन फासफरिस डालकर गरम पाणीमें शीशी धरकर वाद हिलाणी फासफोरिस उस तेलमें मिल जायगा.

(४२६ ब्रांडी)–जंतुनाशक उष्ण मादक तथा पौष्टिक है, मात्रा ॥ से १ औंस उत्तेजक मादक जादा मात्रासें जहरी है, पीणेमें दवा तरीके डाकटर उसका विरले जगे उपयोग करते हैं, वदन विलकुल ठंढा पड गया होय तो गरमी लानेकूं देते हैं, वहोंत सखत नहीं पडे इसवास्ते इसमें थोडा पाणी डाल देते हैं, निद्रा लानेवास्तेभी कोइ वखत उपयोग करते हैं, किचर गया गुप्त चोट पछाट वगेरेमें वाहर लगानेमें काम देती है, सुआवडमें वच्चा भये पीछै औरत जादा क्षीण तथा ठंढी पड जाती है, उसकू कांटा तथा गरम करणेकूं थोडी ३ देनेकी डाकदरोंकी सम्मती दवा मुजव ब्रांडी थोडी कारण योगमें फायदा दिखलाती है, लेकिन आर्यदयावंतोके आचरने योग्य नहीं जो लोक शोख और व्यसनसें ब्रांडीके चक्करमें आते हैं, उनोंका ब्रांडी नाश करती है, जैनतत्वादर्श ग्रंथमे ५२ औगुण प्रगट दिखलाया है, ब्रह्माजी इसकू पीकरके वेहाल वण वेटीसें कुकर्म कर लिया भागवतके दुसरे स्कंदमें लिखा है, इसवास्ते वुद्धिवंतोकी वुद्धि विगाड देती है, ताकतका नाश करती है, और वडे २ रोग लग जाते हैं, कीडोंका रस इसमें सामिल होजाता है.

(४२७ वीसमथ)–ग्राही अजीर्ण कै मरोडा अतिसार तथा आम्लपित्तके रोगमें उसकी जुदी २ वनावट वणती है, जैसेके साइट्रेट ओफविसमथ एन्ड एमोनिया मात्रा २ से ५ ग्रेन कारवोनेट ऑफ विसमथ मात्रा ५ से २० ग्रेन सव नाइट्रेट ओफ विसमथ मात्रा ५ से २० ग्रेण साइट्रेट ओफ विसमथ मात्रा २ से ५ ग्रेन.

(४२८ वेनझोइन–देशी नाम लोवान कफघ्न उष्ण स्तंभक मात्रा १० से ३० ग्रेन वेनझोइन एसिड–लोवानके फूल १० से १५ ग्रेन उलटी खांसी दम वगेरेमें दिये जाता है.

(४२९ बेलाडोना)–बेलाडोणाके पत्ते जड उसमेंसे बहोतसी दवायें बणती है, तैसें बाहर लगानेमेंभी काम देती है.

(१) टींकचर ओफ बेलाडोना मात्रा ५ से २० बूंद.
(२) एकस्ट्रकट ओफ बेलाडोना मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन.
(३) बेलाडोनापलास्टर–बेलाडोनेका लेप.
(४) लीनीमेन्ट ओफ़ बेलाडोना.
(५) आट्रोपीन–बेलाडोनेका खास सत्व है, मलम वट्टी वगेरेभी होती है.
(६) सल्फेट ओफ आट्रोपिया.

(गुण) पीडा शामक उष्ण स्वेदल स्नायुशैथिल्यकृत् दूध तथा थूक शुद्धकरता आंखकी कीकीकूं चोडी करनेवाला खासी धनुर्वात चस्का शिरकी आंखकी तथा कानकी शूल वगेरे रोगोंमें पीनेमें तथा ऊपर लगाणेमें काम देता है, आंखकी कीकी चोडी करनेकूं आट्रोपीन अथवा उसकी कोइभी बणी दवा आंखमें आंजते हैं, आंखकी कनीनीका सोजा फूला मोतियाविंद वगेरेभी उससे अच्छा होता है, आट्रोपीन १ ग्रेन पाणी १ औंस पेसावकी गांठ मलकी कबजी पेसावके अतीसारके रोगमें अंदर लेनेवास्ते तैसें औरतोके ऋतुधर्म संबंधी तथा गर्भस्थानके रोगमें उसकी सोगठी बणाकर गुह्य अवयवमें धरते हैं, वदनमें रसकी वढोतरी होती भईकूं रोककर पसीनेकूं तथा स्तनके जादा दूधकूं तथा जादा थूक आता होय तो बंध करता है.

(४३० बोर्याकस–(देशी नाम टंकण) मूत्रल तथा शीतल पेसावकी वृद्धि करता है, उसमें खटासकूं दूर करनेका थोडा खार गुण है, ऋतु लानेवाला है, जादा मात्रासें गर्भ गिरा देता है, मों तथा जुवानका जखम मूं आणा वगेरेमें कुरला कराते हैं, और बच्चोंकों सहतमें मिलाकर मूंमे लगाये जाता है, खानेकी मात्रा ५ से ४० ग्रेन कुरला १ औंस बोर्याकस ८ औंस पाणी दुसरी बनावटे (१) मेलबोर्यासीस टंकण ६० ग्रेन ग्लीसेरिन ॥ ड्राम और सहत १ औंस (२) ग्लीसेरीन ओफ बोर्याकस–टंकण १ औंस ग्लीसेरीन ४ आसैं पाणी २ औंस तीनोंकों घोटकर मिलाना ये दोनों मिलावटी दवा मुखपाक शिरका खोरा और मैलऊपर लगानेसे बहोत फायदा करता है, गरम पाणीमें टंकण डालके न्हाणेसें चमडी की खाजपर मसलणेसें फायदा करती है.

(४३१ मरक्युरी पारा) पारेका बहोतसा खानेकूं तथा लगानेकूं दवामें उपयोग होता है, पारेका अच्छीतरे सोधन तथा परेज कियेविगर पारेकूं खाणा अच्छा नहीं अंग्रेजी इलाजोमें पारेकी कितनी बनाइ भई चीज खानेवास्ते धुंयेवास्ते लेपवास्ते वापरते है, उसकी मुख्य असर शोधक है, इसीवास्ते उपदंसपर इसका मुख्य उपयोग होता है, लेकिन ये दवा देनेके पहली रोगीकी शक्ति प्रकृतीका बहोत बारीक विचार

करणा चाहिये क्युंके पारा तासीरकूं नमाने अथवा वजनसें जादा खानेमें आवे तो वदनकूं बिगाड देता है, उसके बिगाडके ऐसे लक्षण होते है, मूं आजाता हैं, जीभ गीली होकर घाव पडै दांत ढीले पडै चमडीपर फूट निकले और गति तंतुओंमें पारेकी खराब असर पोहचतेही हाथ पांवोंकी गतिमें बिगाड होकर धूजणे लगता है, इसवास्ते पारेसंबंधी कोइभी दवा खाते बहुत सावधान रहना चतुर वैद्य डाकदरोकी सल्लासेंही लेना अच्छा है.

(४३२ मसटर्ड–देसी नाम राई) मुख्यपणे उलटी कराणा तथा पलास्टरके काममें आता है, उलटीकी मात्रा १ से ४ द्राम राईका पलास्टर (पोल्टीस) २½ औंस राई २½ औंस अलशी ८ औंस ऊकलता पाणी २ औंस ठंढा पाणी २ औंसमें राईकूं मिला देना और अलशीके चूर्णको ऊकलते जलमें मिलाना पीछै दोनोंकों एकठा करणा मसटर्डकूं ठंढे पाणीमें पीसकरके पलाष्टर मारणेमें आता है.

(४३३ मेनथोल–पेपरमिनटके तेलमेंसे निकलता है, (गुण) पीडा शामक मात्रा ½ से २ ग्रेन मेनथोल घसणेसें तथा पीलानेसें शिरकी शूल तथा चसक मिटती है.

(४३४ मेलफर्न)–लिक्विड एकट्राकट ओफ मेलफर्न-कृमिघ्न है, पेटके अंदरकी लंबा चिपटा कृमियोंपर ये दवा फायदा करती है, रोगीकूं एक दस्त देकर कितनीक देरतक भूखा रखणा पीछै दवा देनी और फेर १ जुलाब देणा इसतरे करणेसें कृमि बाहर निकल जाती है, मात्रा ३० से ६० बूंद.

(४३५ रुबार्ब)–दीपन रेचक ग्राही अजीर्ण कबजियत चूंक दस्त वगेरे रोगोंमें दिये जाता है, अच्छा हलका जुलाब होजाता है, इसवास्ते बच्चोकूं अच्छा समझ दिये जाता है, उसके जडका चूर्ण हलदी जैसा पीला भूका होता है, मात्रा ५ से २० ग्रेन चायकी मात्रा १ सें २ औंस एकस्ट्राकट याने घनकी मात्रा ५ से २० ग्रेन अर्ककी मात्रा १ से २ द्राम जुलाब वास्ते ४ सें ८ द्राम ग्रेगरी पाउडर रुबार्बका चूर्ण २ औंस हलका मेगनिस्या ६ औंस सूंठ १ औंस इन तीनोंका चारीक चूर्ण मात्रा १० से ६० ग्रेन उसके गोलीकी मात्रा ५ से १० ग्रेन.

(४३६ रेत्रीन)–देशी नाम राल. ग्राही रोपण तथा उत्तेजक है, इसका मुख्य उपयोग मलमतरीके होता है, रालका मलम ८ औंस राल ४ औंस पीलामोंम १६ औंस सादा मलम दो औंस विदामका तेल गरमकर मिलाके मलम करना घाव फोडेपर पट्टी मारे जाती है.

(४३७ लाइम)–देशी नांम कलीचूना अम्लविरोधी ग्राही तथा दाहक है, दवाके वास्ते १ रत्तल चूनेके पत्थरपर आसरे १० औंस पाणी धीमें २ डालना जब वराल वाफ निकल चूके ठंढाभये बाद छाणकर हवा न लागे इसतरे सीसीमें रखणा दवामें

उसका पाणी काम देता है, जिसकूं लाइम वाटर कहते हैं–कलीचूना १ औंस अच्छा पाणी ५ रत्तल मिलाकर नीतरणे देणा ऊपरका नितरा भया साफ जल लीले रंगकी मजबूत बुच्चवाली शीशीयोंमें भरके राखणा पित्तसे अजीर्ण होकर उलटी होती है, उसकूं ये पाणी मिटाता है, बच्चोके पेटमें पिया भया दूध टिकता नहीं तब उसकेसंग लाइमवाटर मिलाकर देणा तो पचता है, मात्रा वडेकूं १ द्राम लाइमवाटर दूध अथवा कांजीमें बच्चेकूं १०-१५ बूंद दरवखत दूधकेसंग.

(४३८ लाक्टिक एसीड) मूत्रपिंडके रोगमें ए एसिड दिये जाता है, हाफणी कंठका रोग और गला बैठ जाता है, तब अठ गुणे पाणीमे डाल उसकी पींछी फिराणी.

(४३९ लाडेनम) अफीमका अर्क देखो ओपियम.

(४४० लीनसीड) देशी नाम अलशी-स्निग्ध तथा शोथहर है, पेशाबके रोगोंपर दिये जाता है, दाह तथा चणखकूं शांत करता है, शरीरके जुदे २ भागका सोजा तथा गांठे गडगूमडपर उसकी पोटिस बांधे जाती है, इसके तेलकूं सालीनसीड ओइल कहते है.

(४४१ लीनीमेन्ट) इस बहार लगानेका तेल) प्रवाही लिनिमेन्ट बहोतसी दवाइयोंका बणता है, मुख्य २ लिनिमेन्ट इसमुजब होता है.

(१) लिनिमेन्ट ओफ एमोनिया) लायकर अमोनिया १ औंस अलशीका तेल ३ औंस.

(२) आयोडीन) आयोडीन १। औंस ग्लीसेराईन । औंस पोटास आयोडीड औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट १० औंस.

(३) एकोनाईट) वच्छनाग चूर्ण १० औंस कपूर १ औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट ३० औंस चूर्णकूं स्पिरिटमें ७ दिन भिगाकर पीछै छाण लेना पीछै कपूर मिलाना.

(४) ओपियम) अफीमका अर्क २ औंस लिनिमेन्ट ओफ सोप.

(५) टरपेन्टाइन) साबू २ औंस पाणी २ औंस कपूर १ औंस टरपेन्टाइन १६ औंस

(६) केम्फर) कपूर १ औंस अलशीका तेल ४ औंस.

(७) केम्फर (कम्पाउन्ड) कपूर २॥ औंस लवंडर १ द्राम स्ट्रोंग सोल्युशन ओफ एमोनिया ५ औंस रेक्टी फाइड स्पिरिट १५ औंस.

(८) लीनीमेन्ट ओफ लाइम) चूनेका जल सालीड ओइल समवजन.

(९) क्लोरोफोर्म) २ औंस कपूरका लिनिमेन्ट २ औंस मिलाणा.

(१०) सोप) साबूका लीनीमेन्ट.

(११) मरक्युरी-१ औंस पारेका मलम १ औंस आमोनियाका सोल्युशन १ औंस कपूरकातेल गरमकर उसमें पारेका मलम मिलाणा पीछै आमोनिया मिलाणा

(४४२ लेमन)-देशी नाम नींबू) शीतल तथा खट्टा हे नींबू योगवाही हे. दवामें

इकेला नींबूका रस नहीं दिये चाहता उसका शरबत अर्क तेल वगैरे वापरते हैं, स्कर्वी (रक्तपित्तमें नींबु खानेसें फायदा होता है. (शरबत) नींबूकी छाल २ औंस नींबूका रस २० औंस बूरा २। सेर पहली नींबूका रस उकालना पीछै एक पात्रमें नीबूकी छाल धर उसपर नींबूका उकाला भया रस डालना ठरे जहांतक रहणे देणा पीछे छाणकर बूरा मिलाकर धीमी आंचसें चासणी करणी.

(४४३ वेलेरियन) उष्ण वातहर तथा शूलहर है, हिस्टीरीया औरभी वायुके दुसरे चिन्होंमें दिये जाता है, मगजके रोगोंपर तथा चित्त भ्रम ऊपर इसकी अछी असर होती है, मात्रा टिंकचरकी १ से २ द्राम.

(४४४ श्युगरलेड) (एसेरेट ओफलेड) इसके सुपेद टुकडे भया करते है, गुणमें ग्राही तथा शोथघ्न है मात्रा १ से ५ ग्रेन अतिसार मरोडा हैजा फेफसा होजरी मूत्रापिंड अथवा गर्भाशयमेंसे खून गिरता होय उसमें अछा फायदा करता है, दूखती आंख तथा खील गुरेजणीमें उसकी बूंदे डाली जाती है, उसका मलम खुजली जखमपर काम देता है.

(४४५ सल्फर) गंधक शुद्ध कियाभया अथवा गंधकके फूल दवामें काम देता है, चमडीके रोगोंमें उसका उपयोग होता है, दस्त साफ लाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन बच्चेकी मात्रा २ से ५ ग्रेन खुजलीके मलममें गंधक गिरता है, (सल्प्युरिक एसिड) (ओइल ओफ ब्रिटिओल) शीतल पौष्टिक और ग्राही बुखार नाताकतीमें होता भया पसीना अतिसार वगैरे रोगोंमे चलता है, मात्रा २ से ३० बूंद ११ औंस अच्छा पाणी १ औंस सल्प्युरिक एसिड मिलानेसें डाइल्युट सलप्युरिक एसिड होता है बुखारमें इस एसिडका ५ से १० बूंद और क्विनाइन ३ से ६ ग्रेन मिलाकर देना अतिसारमें इसकी २० बूंद और लाडेन मना ५ से १० बूंद ४-५ रुपेभर जलमें मिलाकर पिलाना.

(४४६ स्ट्रीकनिया) कुचीलेका निखालस सत्व निकालते हैं, जिसमें बहोत जहरका असर होता है, गुण कुचीले मुजब मात्रा $\frac{1}{36}$ से $\frac{1}{12}$ ग्रेण.

(४४७ स्पिरिट दारू) आल्कोहोल याने ब्रांडी ये दारूका सत्व है, आल्कोहोलमें ८४ भागमें १६ भाग जलके मिलाणेसें रेक्टिफाइड स्पीरिट होता है, और ५ भाग रेक्टिफाईड स्पिरिटमें ३ भाग जलके मिलानेसे कूफ स्पिरिट बणता है, गिरणेसें लगी जो चोट छिलगया किंचरके सूजगया होय तब जलकेसंग मिलाकर लगाना चाहिये वदनपर पत्थर गिरता है, तथा औरतोंके स्तनके वीट लियोंपर चीरे पडते हैं, उसपर जलके संग भीगा भया वस्त्र धराजाता है टींकचर वगैरे बणानेमें रेक्टिफाइड तथा कूफस्पिरिट इन दोनोंका उपयोग होता है, ये स्पिरिट मिश्री वगैरे पदार्थोंमेंसें यंत्रोंसें खेंचकर निकाले जाता है.

उसका पाणी काम देता है, जिसकूं लाइम वाटर कहते हैं–कलीचूना १ औंस अच्छा पाणी ५ रत्तल मिलाकर नीतरणे देणा ऊपरका नितरा भया साफ जल लीले रंगकी मजबूत बुचवाली शीशीयोंमें भरके राखणा पित्तसे अजीर्ण होकर उलटी होती है, उसकूं ये पाणी मिटाता है, बच्चोके पेटमें पिया भया दूध टिकता नहीं तब उसकेसंग लाइमवाटर मिलाकर देणा तो पचता है, मात्रा वडेकूं १ द्राम लाइमवाटर दूध अथवा कांजीमें बच्चेकूं १०-१५ वूंद दरवखत दूधकेसंग.

(४३८ लाक्टिक एसीड) मूत्रपिंडके रोगमें ए एसिड दिये जाता है, हाफणी कंठका रोग और गला बैठ जाता है, तब अठ गुणे पाणीमे डाल उसकी पींछी फिराणी.

(४३९ लाडेनम) अफीमका अर्क देखो ओपियम.

(४४० लीनसीड) देशी नाम अलशी स्निग्ध तथा शोथहर है, पेशाबके रोगोंपर दिये जाता है, दाह तथा चणखकूं शांत करता है, शरीरके जुदे २ भागका सोजा तथा गांठे गडगूमडपर उसकी पोटिस बांधे जाती है, इसके तेलकूं सालीनसीड ओइल कहते है.

(४४१ लीनीमेन्ट) इस बहार लगानेका तेल) प्रवाही लिनिमेन्ट बहोतसी दवाइयोंका बणता है, मुख्य २ लिनिमेन्ट इसमुजब होता है.

(१) लिनिमेन्ट ओफ एमोनिया) लायकर अमोनिया १ औंस अलशीका तेल ३ औंस.

(२) आयोडीन) आयोडीन १। औंस ग्लीसेराईन । औंस पोटास आयोडीड औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट १० औंस.

(३) एकोनाईट) वच्छनाग चूर्ण १० औंस कपूर १ औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट ३० औंस चूर्णकूं स्पिरिटमें ७ दिन भिगाकर पीछै छाण लेना पीछै कपूर मिलाना.

(४) ओपियम) अफीमका अर्क २ औंस लिनिमेन्ट ओफ सोप.

(५) टरपेन्टाइन) सावू २ औंस पाणी २ औंस कपूर १ औंस टरपेन्टाइन १६ औंस

(६) केम्फर) कपूर १ औंस अलशीका तेल ४ औंस.

(७) केम्फर (कम्पाउन्ड) कपूर २॥ औंस लवंडर १ द्राम स्ट्रोंग सोल्युशन ओफ एमोनिया ५ औंस रेक्टी फाइड स्पिरिट १५ औंस.

(८) लीनीमेन्ट ओफ लाइम) चूनेका जल सालीड ओइल समवजन.

(९) क्लोरोफोर्म) २ औंस कपूरका लिनिमेन्ट २ औंस मिलाणा.

(१०) सोप) सावूका लीनीमेन्ट.

(११) मरक्युरी-१ औंस पारेका मलम १ औंस आमोनियाका सोल्युशन १ औंस कपूरकातेल गरमकर उसमें पारेका मलम मिलाणा पीछै आमोनिया मिलाणा

(४४२ लेमन)-देशी नाम नींवू) शीतल तथा खट्टा हे नींवू योगवाही हे. दवामें

इकेला नींवूका रस नहीं दिये चाहता उसका शरवत अर्क तेल वगैरे वापरते हैं, स्कर्वी (रक्तपित्तमें नींबु खानेसें फायदा होता है. (शरवत) नींवूकी छाल २ औंस नींवूका रस २० औंस वूरा २। सेर पहली नींवूका रस उकालना पीछै एक पात्रमें नींवूकी छाल धर उसपर नींवूका उकाला भया रस डालना ठरे जहांतक रहणे देणा पीछे छाणकर वूरा मिलाकर धीमी आंचसें चासणी करणी.

(४४३ वेलेरियन) उष्ण वातहर तथा शूलहर है, हिस्टीरीया औरभी वायुके दुसरे चिन्होंमें दिये जाता है, मगजके रोगोंपर तथा चित्त भ्रम ऊपर इसकी अछी असर होती है, मात्रा टिंकचरकी १ से २ द्राम.

(४४४ श्युगरलेड) (एसेरेट ओफलेड) इसके सुपेद टुकडे भया करते है, गुणमें ग्राही तथा शोथघ्न है मात्रा १ से ५ ग्रेन अतिसार मरोडा हैजा फेफसा होजरी मूत्रपिंड अथवा गर्भाशयमेंसे खून गिरता होय उसमें अछा फायदा करता है, दूखती आंख तथा खील गुरेजणीमें उसकी वूंदे डाली जाती है, उसका मल्हम खुजली जखमपर काम देता है.

(४४५ सल्फर) गंधक शुद्ध कियाभया अथवा गंधकके फूल दवामें काम देता है, चमडीके रोगोंमें उसका उपयोग होता है, दस्त साफ लाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन वच्चेकी मात्रा २ से ५ ग्रेन खुजलीके मल्हममें गंधक गिरता है, (सल्प्युरिक एसिड) (ओइल ओफ ब्रिटिओल) शीतल पौष्टिक और ग्राही वुखार नाताकतीमें होता भया पसीना अतिसार वगैरे रोगोंमे चलता है, मात्रा २ से ३० वूंद ११ औंस अच्छा पाणी १ औंस सल्प्युरिक एसिड मिलानेसें डाइल्युट सलप्युरिक एसिड होता है वुखारमें इस एसिडका ५ से १० वूंद और किनाइन ३ से ६ ग्रेन मिलाकर देना अतिसारमें इसकी २० वूंद और लाडेन मना ५ से १० वूंद ४-५ रुपेभर जलमें मिलाकर पिलाना.

(४४६ स्ट्रीकनिया) कुचीलेका निखालस सत्व निकालते हैं, जिसमें वहोत जहरका असर होता है, गुण कुचीले मुजब मात्रा $\frac{1}{36}$ से $\frac{1}{12}$ ग्रेण.

(४४७ स्पिरिट दारू) आल्कोहोल याने ब्रांडी ये दारूका सत्व है, आल्कोहोलमें ८४ भागमें १६ भाग जलके मिलाणेसें रेक्टिफाइड स्पीरिट होता है, और ५ भाग रेक्टिफाईड स्पिरिटमें ३ भाग जलके मिलानेसे कूफ स्पिरिट वणता है, गिरणेसें लगी जो चोट छिलगया किचरके सूजगया होय तव जलकेसंग मिलाकर लगाना चाहिये वदनपर पत्थर गिरता है, तथा औरतोंके स्तनके वीट लियोंपर चीरे पडते हैं, उसपर जलके संग भीगा भया वस्त्र धराजाता है टींकचर वगेरे वणानेमें रेक्टिफाइड तथा कूफस्पिरिट इन दोनोंका उपयोग होता है, ये स्पिरिट मिश्री वगेरे पदार्थोमेंसें यंत्रोसें खेंचकर निकाले जाता है.

उसका पाणी काम देता है, जिसकूं लाइम वाटर कहते हैं–कलीचूना १ औंस अच्छा पाणी ५ रत्तल मिलाकर नीतरणे देणा ऊपरका नितरा भया साफ जल लीले रंगकी मजबूत बुचवाली शीशीयोंमें भरके राखणा पित्तसे अजीर्ण होकर उलटी होती है, उसकूं ये पाणी मिटाता है, बच्चोके पेटमें पिया भया दूध टिकता नहीं तब उसकेसंग लाइमवाटर मिलाकर देणा तो पचता है, मात्रा वडेकूं १ द्राम लाइमवाटर दूध अथवा कांजीमें बच्चेकूं १०-१५ बूंद दरवखत दूधकेसंग.

(४३८ लाक्टिक एसीड) मूत्रपिंडके रोगमें ए एसिड दिये जाता है, हाफणी कंठका रोग और गला बैठ जाता है, तब अठ गुणे पाणीमे डाल उसकी पींछी फिराणी.

(४३९ लाडेनम) अफीमका अर्क देखो ओपियम.

(४४० लीनसीड) देशी नाम अलशी-स्निग्ध तथा शोथहर है, पेशाबके रोगोंपर दिये जाता है, दाह तथा चणखकूं शांत करता है, शरीरके जुदे २ भागका सोजा तथा गाठे गडगूमडपर उसकी पोटिस बांधे जाती है, इसके तेलकूं सालीनसीड ओइल कहते है.

(४४१ लीनीमेन्ट) इस बहार लगानेका तेल) प्रवाही लिनिमेन्ट बहोतसी दवाइयोंका चणता है, मुख्य २ लिनिमेन्ट इसमुजब होता है.

(१) लिनिमेन्ट ओफ एमोनिया) लायकर अमोनिया १ औंस अलशीका तेल ३ औंस.

(२) आयोडीन) आयोडीन १। औंस ग्लीसेराईन । औंस पोटास आयोडीड औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट १० औंस.

(३) एकोनाईट) बच्छनाग चूर्ण १० औंस कपूर १ औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट ३० औंस चूर्णकूं स्पिरिटमें ७ दिन भिगाकर पीछे छाण लेना पीछे कपूर मिलाना.

(४) ओपियम) अफीमका अर्क २ औंस लिनिमेन्ट ओफ सोप.

(५) टरपेन्टाइन) साबू २ औंस पाणी २ औंस कपूर १ औंस टरपेन्टाइन १६ औंस

(६) केम्फर) कपूर १ औंस अलशीका तेल ४ औंस.

(७) केम्फर (कम्पाउन्ड) कपूर २॥ औंस लवंडर १ द्राम स्ट्रोंग सोल्युशन ओफ एमोनिया ५ औंस रेक्टी फाइड स्पिरिट १५ औंस.

(८) लीनीमेन्ट ओफ लाइम) चूनेका जल सालीड ओइल समवजन.

(९) क्लोरोफोर्म) २ औंस कपूरका लिनिमेन्ट २ औंस मिलाणा.

(१०) सोप) साबूका लीनीमेन्ट.

(११) मरक्युरी-१ औंस पारेका मल्लम १ औंस आमोनियाका सोल्युशन १ औंस कपूरकातेल गरमकर उसमें पारेका मल्लम मिलाणा पीछै आमोनिया मिलाणा

(४४२ लेमन)-देशी नाम नींबू) शीतल तथा खट्टा हे नींबू योगवाही हे. दवामें

इकेला नींबूका रस नहीं दिये चाहता उसका शरवत अर्क तेल वगेरे वापरते हैं, स्कर्वी (रक्तपित्तमें नींबु खानेसें फायदा होता है. (शरवत) नींबूकी छाल २ औंस नींबूका रस २० औंस वूरा २। सेर पहली नींबूका रस उकालना पीछै एक पात्रमें नींबूकी छाल धर उसपर नींबूका उकाला भया रस डालना ठरे जहांतक रहणे देणा पीछे छाणकर वूरा मिलाकर धीमी आंचसें चासणी करणी.

(४४३ वेलेरियन) उष्ण वातहर तथा शूलहर है, हिस्टीरीया औरभी वायुके दुसरे चिन्होंमें दिये जाता है, मगजके रोगोंपर तथा चित्त भ्रम ऊपर इसकी अछी असर होती है, मात्रा टिंकचरकी १ से २ द्राम.

(४४४ श्युगरलेड) (एसेरेट ओफलेड) इसके सुपेद टुकडे भया करते है, गुणमें ग्राही तथा शोथघ्न है मात्रा १ से ५ ग्रेन अतिसार मरोडा हैजा फेफसा होजरी मूत्रपिंड अथवा गर्भाशयमेंसे खून गिरता होय उसमें अछा फायदा करता है, दूखती आंख तथा खील गुरेजणीमें उसकी वूंदे डाली जाती है, उसका मलम खुजली जखमपर काम देता है.

(४४५ सल्फर) गंधक शुद्ध कियाभया अथवा गंधकके फूल दवामें काम देता है, चमडीके रोगोंमें उसका उपयोग होता है, दस्त साफ लाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन वच्चेकी मात्रा २ से ५ ग्रेन खुजलीके मलममें गंधक गिरता है, (सल्प्युरिक एसिड) (ओइल ओफ ब्रिटिओल) शीतल पौष्टिक और ग्राही वुखार नाताकतीमें होता भया पसीना अतिसार वगैरे रोगोंमे चलता है, मात्रा २ से ३० वूद ११ औंस अच्छा पाणी १ औंस सल्प्युरिक एसिड मिलानेसें डाइल्युट सलप्युरिक एसिड होता है वुखारमें इस एसिडका ५ से १० वूंद और किनाइन ३ से ६ ग्रेन मिलाकर देना अतिसारमें इसकी २० वूंद और लाडेन मना ५ से १० वूंद ४-५ रुपेभर जलमें मिलाकर पिलाना.

(४४६ स्ट्रीकनिया) कुचीलेका निखालस सत्व निकालते हैं, जिसमें वहोत जहरका असर होता है, गुण कुचीले मुजव मात्रा $\frac{1}{36}$ से $\frac{1}{12}$ ग्रेण.

(४४७ स्पिरिट दारू) आल्कोहोल याने ब्रांडी ये दारूका सत्व है, आल्कोहोलमें ८४ भागमें १६ भाग जलके मिलाणेसें रेक्टिफाइड स्पीरिट होता है, और ५ भाग रेक्टिफाईड स्पिरिटमें ३ भाग जलके मिलानेसे फूफ स्पिरिट वणता है, गिरणेसें लगी जो चोट छिलगया किचरके सूजगया होय तव जलकेसंग मिलाकर लगाना चाहिये वदनपर पत्थर गिरता है, तथा औरतोंके स्तनके वीट लियोंपर चीरे पडते हैं, उसपर जलके संग भीगा भया वस्त्र धराजाता है टींकचर वगेरे वणानेमें रेक्टिफाइड तथा फूफस्पिरिट इन दोनोंका उपयोग होता है, ये स्पिरिट मिश्री वगेरे पदार्थोमेंसें यत्रोंसें खेंचकर निकाले जाता है.

(४४८ साइट्रीक एसिड) ये एसिड नींबूके रससें बणता है, गुण शीतल अम्ल बुखार उलटी तृषा पित्त और उष्ण वायुपर दिये जाता है, क्षारके योगमें वापरते हैं, साइट्रीक एसिडके एवजीमें नींबू काम दे सकता है.

(४४९ सालसापरिला) एकतरेके दरख्तकी जडकी छाल है, वो अमेरिकामेंसें आती है. अपणे देशमें अनंत मूल अथवा सारिवा उसबे नामकी दवामें जो गुण है, वो गुण इसमे हैं गुणमें शोधक स्वेदल पाचक पौष्टिक है उपदंश खून बिगाड संधिवायु तथा नाताकतीमें वापरते हैं. उसका एकस्ट्राकट तथा डिकोकशन (क्काथ) दवा तरीके उपयोगमें लेते हैं, मात्रा २ से १० औंस.

(४५० साल एमोन्याक) (क्लोराइड ओफ एमोनिया) देशी नाम नो सादर देखो अेमोनिया.

(४५१ साल वोलेटाईल) (एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनियां) देखो एमोनिया.

(४५२ सिंकोना) सिंकोना पहली अमेरिकासे आताथा अब इहां पैदा होणेलगा इसवास्ते देशी दवामें लिखा है, पीछाडी देखो चाक्काथ पतला घन टिंकचर वगेरे रूपसें वापरते हैं, मात्रा–टिंकचर की०॥ से २ द्राम प्रवाही घनकी १ से २ औंस.

(४५३ सिडलिज पाउडर) सोडा तथा दुसरी कितनीक मिलावटसे ये चूर्ण वणता है, टार्ट रेटेड सोडा २ द्राम और सोडा वाइ कार्बोनस ४० ग्रेन दोनोंकों मिलाणा और टार्टरिक एसिड ३० ग्रेणकी पुडी जुदी रखणी दोनोंकों जुदे २ जलमें गालकर पीछै दोनोंको एक जगे मिलाणेसे उफाण आवै सो झट पी जाणा.

(४५४ सीला) (स्कवील) एक तरेका कंद हे कफघ्न मूत्रल चूर्ण टिकचर तथा शरवत रूपसें वापरते है, मात्रा चूर्णकी १ से ३ ग्रेन टिंकचरकी १० से ३० बूंद शरवत की० ॥ से २ द्राम.

(४५५ सेन्टोनीन) एक तरेके दरख्तके फूलमेसें रुसियामें वणती है, मुख्य गुण कृमिघ्न है, मात्रा २ से ६ ग्रेण बूरेके संग मिलाकर देतेहैं अथवा उसकी जुदी २ टिकडिया वणकर आती है सो खिलातेहैं सेन्टो नाइनसें पेटमें कृमी नहीं रहती लेकिन् उनोंकों पेटसें बाहर निकालणेकूं दुसरे दिन दस्तकी दवा देणी गोल चूरणियोंका पूरा इलाज है, सेन्टोनाइन लोझेन्जीस नामकी टिकडियां बजारमें विकती है ऊमर मुजब १ से ६ दिये जाती है, इसमें केलोमेलकी मिली भईभी टिकडिया आती है उससे दूसरे जुलाबकी जरूरी नहीं रहती इस दवासें कृमिया मिट तो जाती है लेकिन् आइंदेसे पैदा होती बंध नही होती कृमिका क्काथ वगेरे कितनीक देशी कृमिहर दवायों ये काम करती है उसका फायदा बहुत है, लेकिन् वो लेती वखत मुस्किलहै ओर ये टिकडियां बूरेकी बनावट होणेसें बच्चे सहजमें खा सकते हैं.

(४५७ सेना) देशीनाम सोनामुखी) सोनामुखी रेचक है, इसका जुलाब सादा और निडर होणेंसें बच्चे बुड्ढे गर्भणी स्त्री और नाजुक प्रकृतिवालेकूं अछा है सोनामुखी-की चा–१ औंस सोनामुखीके पत्ते और ३० ग्रेन सूंठ दोनोंकों १० औंस ऊकलते जलमें डाल एक घंटाभर भिगाकर छाणकर लेणा मात्रा–१ से २ औंस इस चामे दूध मिलाकर पीणेसें सोनामुखीकी मकवो नही आती बच्चेकूं देणेवास्ते एक छोटा चमचा अथवा १ द्राम सोनायके पत्ते ऊकलता पाणी ४ औंस दस मिनट ऊकालकर एक प्यालेमें निकाल जरा चूरा मिलाकर बच्चेकूं भूखे पेट फजरमे देणा ये जुलाब तीन वर्षकी ऊमर बाद देणा.

(४५७ सोडा) सोडेकी बहुत बनावट है सो थोडी नीचे लिखते हैं.

(१) कारबोनेट ओफ सोडा) (साजीखार) अम्लविरोधी शोधक अस्मरीघ्न आम्लपित्त अजीर्ण गोला पैसाबकी पथरी चूंक उलटी संधिवाय तथा चमडीके रोगोंमें फायदा करता है, मात्रा १० से ३० ग्रेण.

(२) बाई कारबोनेट ओफ सोडा) गुण ऊपर मुजब मात्रा १० से ६० ग्रेण.

(३) सोल्युशन ओफ सोडा) गुण उपर मु० मात्रा० ॥ से १ द्राम.

(४) सोडावाटर) शीतल मूत्रल पाचक सारक सोडा तथा अेसिड टार्टरिककी मिलावटसे बणती है प्रमाण $\frac{1}{2}$ द्राम और २५ ग्रेण अनुक्रमे देते हैं.

(५) सल्फेट ओफ सोडा) रेचक आम्ल विरोधी और थोडा मूत्रल मात्रा १ से ८ द्राम ७ एपसम सोल्टके जैसा उसका फायदा है जादातर जुलाबवास्ते देते हैं, लेकिन् एपसम सोल्टसे ये दवा मंद रेचक होनेसें नाताकत मिजाजवालोंकों जादा माफगत आता है.

(६) फासफेट ओफ सोडा) रेचक मात्रा । से १ औंस.

(७) हाइपो फोसफेट ओफ सोडा) पौष्टिक तथा शोधक क्षय अशक्ति वादी मिरगी हांफणी दम श्वास वगैरेमें मात्रा ५ से १० ग्रेन

(८) क्लोराइड ओफ सोडा) (निमक) रेचक तथा कृमिघ्न है दुसरी दवायें बणाणेमें काम देती हैं.

(४५८) हाइड्रोक्लोरिक एसिड) म्युरीयाटिक एसिड) निमकका तेजाब निमकसें बणता है दाहक तथा बहोत जहरी है उसमें तिगुणा पानी मिलानेसें म्युरियाटिक एसिड डिल्युट होता है ये प्रवाही पौष्टिक तथा खून शोधक है अजीर्ण नाताकतीपर देते हैं, मात्रा १० से ३० बूंद.

(४५९ हाइड्रोस्पानिक अेसिड (डिल्युट) हालाहल जहर है एक मिन्टमें मारताहै अजीर्ण उलटी आम्लपित्त खांसी वगेरेपर देते हैं मात्रा १० से ३० बूंद.

(४६० हाइपो फोसफेट ओफ लाईम) शोधक तथा पौष्टक है, खासी क्षय कफ और नाताकती वगैरे दरदोंपर ये दवा वहोत अछी निकली है और शरवतके जेसा स्वाद होणेसें पीणास० मात्रा ५ से १० ग्रेण.

रेचक तथा सारक.

४६१ पोडोफाइलम $\frac{1}{2}$ ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्बपिल २॥ ग्रेण हायोस्यामसका अेकस्ट्राकट १॥ ग्रेण अछीतरे मिलाकर १ गोली करणी रातकू लेणी जो साफ दस्त नहीं लगे तो फजरमें लेणी अथवा दस्तके खुलासा वास्ते नं० ४६३ की दवा अथवा साइट्रेट ओफ मेगनीशीया या सिडलीक पाउडर लेते हैं.

जुलाबकी एसी एकभी दवा अभीतक नहीं निकली है सो सब अदम्योकें उपयोगकी होय ऊपर लिखी गोली अछा जुलाब है सबकूं अछी है एसा नहीं है लेकिन् दस्तके खुलासा वास्ते ये गोली अछीहै एसा कह सकते हैं.

(४६२) सल्फेट ओफ सोडा ६ द्राम टिंकचर ओफ जींजर २० बूंद डिस्टील्ड वोटर २ औंस मिलाकर एक वखत पीणा इससे दस्त साफ आता है, रातकूं लेकर फजरमें फेर लेणेसें मदत करती है जलदी दस्त लाणा होय तो ४ घंटेसे फेर लेणा सल्फेट ओफ सोडेकूं कमवेशी कर सकते हैं.

(४६३) सल्फेट ओफ सोडा ६ द्राम किनाइन २० ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न १५ ग्रेण पाणी ८ औंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा १ औंस दर ४ चार घंटे वदनमें ताकत रखकर दस्त लाती है तिल्ली तथा ऋतु बंधके रोगवाली स्त्रीकूं अछी है.

(४६३) सल्फेट ओफ सोडा ६ द्राम डिल्पुट सल्प्युरिक अेसिड १ द्राम गुलाबके फूलकी चा ८ औंस मिलाकर मात्रा १ औंस दर ४ घंटे ग्राही शीतल शारक गर्भ गिरणा ऋतूका जादा खून गिरणा वहोत खून गिरणेके रोगोमें फायदेवंद है.

(४६५) सल्फेट ओफ मेग्निस्पा ६ द्राम टिंकचर ओफ डिजी टेलिस ८ बूंद केम्फोर मिकश्चर २ औंस मिलाकर एक वखतमें पीणा दस्त साफ लाताहै खून गिरणेकूं वंध करता है दस्तकी कवजीका दम मगजपर खून चढणेके रोगमें अछा है.

(४६६) वाइ कारवोनेट ओफ मेग्निस्पा १० ग्रेण वाइ कारवोनेट ओफ सोडा ८ ग्रेण केम्पाउन्ड सेनामिकश्चर १ औंस एक वखत पीणा अम्लविरोधी सारक है अजीर्ण लिवरके रोगमें फायदेवंद है.

(४६७) पोडो फाइलम पाउडर ४ ग्रेण डिल्पुटना इट्रिक अेसिड २ द्राम पाणी ३॥ औंस मिलाकर मिकश्चर वणाणा मात्रा १ वाइन ग्लास पाणीमें १ द्राम मिकश्चर दिनमें तीन वेर लेणा लीवरमें फायदेवंद है.

(४६८) ब्ल्युपील ५ ग्रेन केलोमेल ५ ग्रेन मिलाकर २ गोलियां करणी सख्त दस्त लाता है.

(४६९) ब्ल्युपील ५ ग्रेन कम्पाउन्ड अेकस्ट्राक ट ओफ कोलोसिन्थ ५ ग्रेण मिलाकर दो गोलियां करणी मध्यम जुलाव लगाता है.

(४७०) कम्पाउन्ड अेकस्ट्राकट ओफ कोलोसिन्थ ५ ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्बपिल ५ ग्रेण मिलाकर दो गोलियां करणी हलका जुलाव होता है.

(४७१) केलोमेल ५ ग्रेण कम्पाउन्ड जालप पाउडर १ द्राम मिलाकर फाकी करणी सख्त जुलाव पाणी जेसा दस्त लाता है.

(४७२) पोडो फाइलम चूर्ण ३ ग्रेण कम्पाउन्ड एकस्ट्राकट कोलोसिन्थ ३० ग्रेण आइ पीकाक्यू आन्हा पाउडर ४ ग्रेण गूंदके जलमें घोट १२ गोलियां करणी एकेक गोली दिनमें दो वेर कलेजेके रोगमें कबजियतमें दस्त खुलास लाता है.

(४७३) पिलएलोइ अेन्ड मर्ह ३ ग्रेण ब्ल्युपील १ ग्रेण अेकस्ट्राकट टाराक साकम २ ग्रेण अेकस्ट्राकट ट्रेमोनियम (धतूरा) $\frac{1}{2}$ ग्रेण अछीतरे मिलाकर दो गोली करणी ये गोलियां दमके रोगमें फायदेबंद है.

(४७४) सल्फेट ओफ आयर्न १ स्कुपल अेलियेका सत्व १५ ग्रेण रुवार्बका चूर्ण १ स्कुपल अछीतरे मिलाकर १२ गोलियें करणी मात्रा २ दो गोली नाताकत और कबजियतमें दस्त साफ लाणेवाली है.

(४७५) रुवार्ब चूर्ण १ औंस सूंठका चूर्ण $\frac{1}{2}$ औंस कारबोनेट ओफमेग्निस्या ३ औंस अछीतरे मिलाकर फकी करणी इसकूं ग्रेगरी पाउडर कहते हैं, मात्रा $\frac{1}{2}$ द्रामसें २ द्राम पेपरमिंटके पाणीसें देणा.

अजीर्ण और होजरीके खटासमें होजरीके खुलासावास्ते ये चूर्ण अछा है, दो तीन वरसके बच्चोंकोंभी १० से १२ ग्रेन देनेसें हलका जुलाव.

वदनमें ताकत देनेवाली.

जो दवा वदनमें कौवत तथा जोर लावै उसकूं टोनिक कहते हैं इसतरेकी मिलावटी दवायें वदनमें क्षीणता लाणेवाले रोगोमें और कमजोरीमें दिये जाती है स्टिम्पुलंट दवायें जिसमें इधर और आत्को होलका मुख्यतत्व होता है उससे टोनिक दवायें जुदीही समझणी.

(४७६) किनाइन २४ ग्रेन शेरीवाइन २ औंस डिस्टीलड वोटर ८ औंस मिकश्चर करणा मात्रा—दिनमें तीन वखत लेना एकेक औंस.

(४७७) किनाइन २४ ग्रेन नींबूकारस २ द्राम डिस्टीलड वोटर ८ औंस मिलाकर मिकश्चर तैयार करणा मात्रा दर वखत एकेक औंस दिनमें तीन वखत.

(४७८) आइसींग्लास २ द्राम मिश्री ब्रांडी १ औंस शेरी २ औंस जायफल १ चिपटी ऊकलता जल ४ औंस मिलाकर एक वखत पीजाणा अतिसारके दस्तमें फायदा देता है.

(४७९) किनाइन २० ग्रेन डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड १ द्राम टिंकचर ओफ जींजर ½ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिकश्चर वणाणा मात्रा दर तीन २ चार २ कलाकसें एकेक औंस.

(४८०) साइट्रेट ओफ आर्यर्न एन्ड किनाइन रस्कुपल डिस्टीलड वोटर ८ औंस दर तीन २ चार २ घंटेसें एकेक औंस दवा पीणी फेर मूं धोकर साफ करना.

(४८१) टिंकचर ओफ आयर्न [स्टीलवाइन] २ द्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस पांडु तथा नाताकतीवास्ते मात्रा दर तीन घंटेसें एकेक औंस दवा पीकर मूं धोणा.

टिंकचर ओफ आयर्नका स्वाद नहिं अछा लगे तो उसकी एवजीमें कारवोनेट ओफ आयर्न लेना मात्रा ५ से १० ग्रेन पाणीमें पीये अथवा वूरेकेसंग फक्कीभी लीजाती है.

(४८२) डाइल्युट नाइट्रिक एसिड २ द्राम आदेका अर्क १ द्राम पाणी अथवा नारंगीको छालकी चा ८ औंस मिकश्चर करणा दिनमें तीनवेर एकेक औंस लेणा मरोडा बुखारके पीछेकी नाताकतीमें टोनिक तरीके वापरणा.

(४८३) सल्फेट ओफ आयर्न ९ ग्रेन सल्फेट ओफ किनाइन १२ ग्रेन डाइल्युट-सल्फ्युरिक एसिड १ द्राम सल्फेट ओफ सोडा १ औंस मिश्री २ द्राम डिस्टील्ड वोटर १२ औंस मिकश्चर करणा दिनमें दो तीनवेर एकेक औंस पीणा कलेजा तथा स्पलीन (तिली) के रोगमें दस्त साफ लाकर ताकत वढाता है.

(४८४) सीरप आयोडाइड ओफ आयर्न १ औंस २ औंस जलमें त्रीस बूंद डालकर हमेस तीन वखत पीणा.

कफकूं तोडणेवाली श्वासनलीकूं फायदेबंद.

जो दवायों फेफसेमें जानेवाली श्वासनलीके अंदरके अस्तरपर तैसें कितनेक दरजे वदनके सामान्य वंधेजपर असर करके कफ श्लेषम खासी हाफणी और दमके रोगोंमें फेफसेमें जाणेवाली नलियों और फेफसेमें जानेवाला रसका रस्ता खुला करता है, उसकूं एक्सपेक्टोरन्ट कहते है, वो दो जातकी है, स्टिम्युलेटींग और डिप्रेसींग अर्थात् जुस्सेकूं वंधाने वाली, जुस्सेकू कम करनेवाली पहिले प्रकारकी दवामें एमोनिया ईथर स्किवल्स ओपीयम वगेरे है, और दुसरी दवामें टारटर एमेटिक और आइपिकाक्युआन्हा है, पहिले प्रकारकी दवायें मुख्यपणे करके वडी ऊमरके रोगीयोंके श्वासनलीके रोगोंपर और दुसरे प्रकारकी दवायें छोटी ऊमरके रोगियोंकूं दी जाती है.

(४८५) एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ द्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक

इथर ४ द्राम टिंक्चर ओफ जींजर १ द्राम पाणी ५॥ औंस मिकश्चर करणा उसमेंसें दर दो तीन घंटेसें एकेक औंस पीणा दमके जोरमें पुराणी हांफणीमें.

(४८६) पेरेगोरिक ३ द्राम आइपीकाक्यु आन्हा वाईन २ द्राम स्पिरिट नाइट्रिक इथर ३ द्राम पाणी ७ औंस मात्रा १ औंस दर तीन या चार घंटेके फासलेसें कफ श्वासनली और फेफसेमें फायदा करता है वच्चोंका कफ खास हांपणी फेफसेका वरम वायु नलीके सोजेके सरुआतमें वो थोडी मात्रा देते हैं, एक वर्षके वच्चेकूं १ द्राम दो वर्षकूं १॥ द्राम देते हैं.

(४८७) केम्फोर (कपूर) १ ग्रेण आइपीकाक्यु आन्हा चूर्ण ३ ग्रेन जरा गूंदके पाणीसें छोटी १ गोली करणी दमके रोगमें दर दो दो घंटेसे लेणा.

(४८८) टार्टर एमेटिक १ ग्रेण पेरोगोरिक २ द्राम डिस्टीलकरा ऊकलता पाणी १२ औंस मिलाकर ठरणे देणा दर दो या तीन घंटेसे एकेक औंस पीणा हांफणी फेफसेका सोजा फेफसेके पुडका सोजा कंठ नलीके सोजेमें फायदा करता है.

(४८९) पेरोगोरिक ३ द्राम आइपीकाक्युआन्हावाइन २ द्राम टिकचर शीला घाइकारबोनेट ओफ सोडा २ स्कुपल पाणी ८ औंस इन सवोंकूं मिलाकर दर दो या तीन घंटेसें एकेक औंस पीणा श्लेपम हांफणी और खासकरके उसकेसंग जव अजीर्ण और होजरीमें खट्टापणा वढे तव ये वहोत फायदा करती है, वच्चोंकों भी ये फायदा करती है.

(४९०) कारयोनेट ओफ मेगनिस्या २५ ग्रेन पेपरमिटका तेल २ वूंद डिस्टील्ड वोटर १ औंस मात्रा १ द्राम दिनमें तीन या चार वखत खुलखुलिया खासीमे १ सें २ वर्षके वच्चेकूं दवा निकालती वखत सीसी हलानी.

(४९१) सल्फेट ओफ झींक २ ग्रेन पेरेगोरिक ६० वूद पाणी १॥ औंस मात्रा एकसे दो वरसके वच्चेकूं खुलखुलिये खासीमें १ द्राम दर चार २ घंटेसें.

(४९२) एकस्ट्राकट ओफ कोनायम ३ ग्रेन डिस्टील्ड वोटर १॥ औंस ऊपर मुजव देना.

धीरे २ फायदा करनेवाली.

जो दवायें खूनकी स्थितिमें फेरफार करनेवास्ते अथवा कलेजा और आंतरडोके रसोंकी स्थिती वदलनेवास्ते जादा या कम मात्रामें वहोत मुदततक देनेमें आती है, वो ओल्टरेटिव्स कहाती है, नीचै लिखते हैं.

(४९३) डोवर्स पाउडर १० ग्रेन किनाइन ३ ग्रेन आइपीकाक्यु आन्हापाउडर १ ग्रेन फक्की वनानी सोते वखत लेनी दस्त मरोडा कलेजेके रोगोंमें दिये जाता है, जो उलटी अथवा वेचेनी होय तो तीसरी दवा निकाल फकत दोयही देनी.

(४९४) डोवर्स पाउडर ४ ग्रेन क्विनाइन ३ ग्रेन ये चूर्ण तीन वखत दिनमें देना
ा ऊपर मुजब.

(४९५) आइपीकाक्युआन्हा १ ग्रेन डोवर्स पाउडर २ ग्रेन कीनाइन १ ग्रेण
वर्षके बच्चेकों फजर सांझ लिखे मुजब मात्रा देनी एक वर्षके बच्चेकूं आधी मात्रा
महीने वालेकूं चोथा हिस्सा बुखार दस्तमें.

(४९६) लाइमवोटर २ क्वोर्ट्स पाणीमें एक औंस कली चूना धरना थोडे घंटे
कर ऊपर नीतरा साफ जल होय उसकूं लाइम वाटर कहते हैं, मात्रा १ से ३
स बच्चेके दांत आते अतीसार मरोडा अपच्चा हेजेमें देते हैं. बच्चेकूं हमेस खुराकके
ा बहोत वेर देते हैं.

(४९७) बाइकारबोनेट ओफमेगनिस्या १५ ग्रेन एनीसिड ओइल २ बूंद डिस्टी-
बोटर १॥ औंस चरबी अथवा वादीवाले बच्चेकुं ६ से १२ महीनेकी ऊमरतक १
म ६ महीनेसें छोटे बच्चोंकूं ॥ द्राम गर्भनीके बेमारीमें एक वखत सब देनी.

(४९८) केलोमेल २ ग्रेण अफीमका सत्व ½ ग्रेण दोनों मिलाकर एक गोली क-
ी मात्रा तीन चार घंटेके फासलेसें एकेक गोली सखत सोजेका रोग होय जब वदनमें
रेकी जरूरत पडे तब ये गोली देते हैं, इससें मूं आता है.

(४९९) व्ल्यु पिल्स २ ग्रेण एक स्ट्राकट ओपियम आइपीकाक्यु आन्हा पाउडर
ग्रेण मिलाकर इसकी गोली वणाणी एसी १ गोली दर तीन ३ घंटेसे देणी मरोडेमें
या सख्त अतिसारमें फायदे वंद है.

(५००) आयोडाइट ओफ पोटाशीयम १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस उपदंशके
गमें दिनकों तीन वखत हर वखत १ औंस.

(५०१) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस हिचकी तथा
इमें दी जाती है मात्रा १ औंस दिनमें तीनवेर ऊपरकी दो यादीमें दो पोटाश आयो-
ईड और ब्रोमाइड लिखाहै, दोनोकूं कैइयकदिन कितनेक अठवाडियेतक बहोतसा
मेंलेणेंसें शिरमें शरदी पैदा होती है गला आजाता है. और वदनपर छोटी २ फुन-
ये फूटकर निकलती है एसी हालत वणे तब दवा वंधकर देणी.

(५०२) रुवार्वका चूर्ण १ स्कुपल सल्फेट ओफ सोडा १ स्कुपल एरोमेटिक स्पिरिट
फ एमोनिया ½ द्राम पेपरमेंट ओइल १ वूंद पाणी २ औंस इन सबोंकों मिलाकर
कही वखत ले लेणा होजरीमें खटास भया होय अथवा गर्भावस्थामें उलटी होयतो देतेहैं.

(५०३) सोल्पुशन ओफ पोटाश १ द्राम टिंकचर हायोस्पामस २ द्राम टिंकचर
िंकोना २ द्राम इन्फयुझन बुकु ६ औंस मूत्राशयके पुराणे मरजमें देते हैं. मात्रा एकेक
ौंस दिनमें तीन वखत.

(५०४) टार्टरिक (साइट्रिक) एसिड २ द्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिलाकर उफाण आवै उसकूं बैठणे देणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीनवेर रक्तपित्तके रोगमें देणा.

(५०५) बाइकारबोनेट ओफ सोडा २ द्राम कोलचीकमवाईन २ द्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ द्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा एकेक औंस दिनमे तीन वखत पीणा नजला तथा संधिवायुमें देतें हैं.

(५०६) बाईकारबोनेट ओफ सोडा २ द्राम टींकचर रुबार्ब ०॥ औंस टिंकचर जींजर १ द्राम स्पिरिट क्लोरो फोर्म १ द्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा मात्रा दिनमें तीन वखत एकेक औंस कामला रोगमें देणा.

(५०७) एकस्ट्राकट ओफ टारकसाकम २ द्राम डाइल्युट म्पुरी आटि एसिड १ द्राम ईन्फयुझन ओफ जनश्यन ८ औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत सीसी हिलाकर दवा निकालणी पांडू तथा लीवरके दुसरे विकारमें उपयोगी है.

(५०८) डाईल्युट नाइट्रिक एसिड १ द्राम डाईल्युटम्पुरी एटिक एसिड १ द्राम टिंकचर ओफ जींजर १ द्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कलेजेके रोगमें उपयोगी है ये दवा पीकर मूं धोडालणा.

(५०९) बाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ द्राम नाइट्रेट ओफ पोटास ०॥ द्राम टिंकर ओफ जींजर १ द्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस एकेक औंस दिनमें तीन वखत ये मिलावट चमडीके रोगमें बाहर लोशन तरीके लगाणेमें वापरते है.

(५१०) बाइकारबोनेट ओफ पोटास १ द्राम नाइट्रेट ओफ पोटाश ०॥ द्राम टिंकचर ओफ जींजर १ द्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अपचा तथा संधिवायुमें जब पैसाब बहोत थोडा उतरे तथा बहोत लाल उतरे तब ये उपयोगी है.

(५११) बाइकारबोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण साइट्रीक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस पाणीमें पहली दवाकूं मिलाकर पीछे पीते वखत दुसरी दवा मिलाकर पीजाणा होजरीका खटास मिटाती है.

(५१२) बाईकारबोनेट ओफ सोडा १७ ग्रेण साइट्रिक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस सोडावाटर उपयोग ऊपर मुजब.

(५१३) बाईकारबोनेट ओफ सोडा २ द्राम टार्टरिक एसिड १ द्राम पाणी ८ औंस जलमे २ द्राम सोडेकूं पिघलाकर शीशीमें भरके रखणा ४ औंस जलमें १ द्राम एसिड मिलाकर दुसरी शीशीमें भरडालणा मात्रा एक औंस सोडा मिकश्चर और ०॥ औंस एसिड मिकश्चर दोनोंकों मिलाकर पीणा बुखार तथा गर्भणीके उल्टी वगेरे रोगोंमे फायदेबंद है.

(४९४) डोवर्स पाउडर ४ ग्रेन क्विनाइन ३ ग्रेन ये चूर्ण तीन वखत दिनमें देना गुण ऊपर मुजब.

(४९५) आइपीकाक्युआन्हा १ ग्रेन डोवर्स पाउडर २ ग्रेन कीनाइन १ ग्रेण दो वर्षके बच्चेकों फजर सांझ लिखे मुजब मात्रा देनी एक वर्षके बच्चेकूं आधी मात्रा ६ महीने वालेकूं चोथा हिस्सा बुखार दस्तमें.

(४९६) लाइमवोटर २ क्वोर्ट्स पाणीमें एक औंस कली चूना धरना थोडे घंटे रखकर ऊपर नीतरा साफ जल होय उसकूं लाइम वाटर कहते हैं, मात्रा १ से ३ औंस बच्चेके दांत आते अतीसार मरोडा अपच्चा हेजेमें देते हैं. बच्चेकूं हमेस खुराकके संग बहोत वेर देते हैं.

(४९७) वाइकारबोनेट ओफमेगनिस्या १५ ग्रेन एनीसिड ओइल २ बूंद डिस्टील्डवोटर १॥ औंस चरबी अथवा वादीवाले बच्चेकुं ६ से १२ महीनेकी ऊमरतक १ द्राम ६ महीनेसें छोटे बच्चोंकूं ॥ द्राम गर्भनीके बेमारीमें एक वखत सब देनी.

(४९८) केलोमेल २ ग्रेण अफीमका सत्व ½ ग्रेण दोनों मिलाकर एक गोली करणी मात्रा तीन चार घंटेके फासलेसें एकेक गोली सखत सोजेका रोग होय जब वदनमें पारेकी जरूरत पडे तब ये गोली देते हैं, इससें मूं आता है.

(४९९) ब्ल्यु पिल्स २ ग्रेण एक स्ट्राकट ओपियम आइपीकाक्यु आन्हा पाउडर ½ ग्रेण मिलाकर इसकी गोली वणाणी एसी १ गोली दर तीन ३ घंटेसे देणी मरोडेमें तथा सख्त अतिसारमें फायदे वंद है.

(५००) आयोडाइट ओफ पोटाशीयम १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस उपदंशके रोगमें दिनकों तीन वखत हर वखत १ औंस.

(५०१) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस हिचकी तथा वाइमें दी जाती है मात्रा १ औंस दिनमें तीनवेर ऊपरकी दो यादीमें दो पोटाश आयोडाईड और ब्रोमाइड लिखाहै, दोनोकूं कैइयकदिन कितनेक अठवाडियेतक बहोतसा पेटमें लेणेंसें शिरमें शरदी पैदा होती है गला आजाता है. और वदनपर छोटी २ फुनसिये फूटकर निकलती है एसी हालत वणे तब दवा वंधकर देणी.

(५०२) रुवार्वका चूर्ण १ स्कुपल सल्फेट ओफ सोडा १ स्कुपल एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया ½ द्राम पेपरमेंट ओइल १ वूंद पाणी २ औंस इन सवोंकों मिलाकर एकही वखत ले लेणा होजरीमें खटास भया होय अथवा गर्भावस्थामें उलटी होयतो देतेहैं.

(५०३) सोल्युशन ओफ पोटाश १ द्राम टिंकचर हायोस्यामस २ द्राम टिंकचर सींकोना २ द्राम इन्फयुझन वुकु ६ औंस मूत्राशयके पुराणे मरजमें देते हैं. मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत.

(५०४) टार्टरिक (साइट्रिक) एसिड २ द्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिलाकर उफाण आवै उसकूं बैठणे देणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीनवेर रक्तपित्तके रोगमें देणा.

(५०५) बाइकारबोनेट ओफ सोडा २ द्राम कोलचीकमवाईन २ द्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ द्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा एकेक औंस दिनमे तीन वखत पीणा नजला तथा संधिवायुमें देतें हैं.

(५०६) बाईकारबोनेट ओफ सोडा २ द्राम टींकचर रुबार्ब ०॥ औंस टिंकचर जींजर १ द्राम स्पिरिट क्लोरो फोर्म १ द्राम डिस्टील्डबोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा मात्रा दिनमें तीन वखत एकेक औंस कामला रोगमें देणा.

(५०७) एकस्ट्राकट ओफ टारकसाकम २ द्राम डाइल्युट म्युरी आटि एसिड १ द्राम ईन्फयुझन ओफ जनश्यन ८ औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत सीसी हिलाकर दवा निकालणी पांडू तथा लीवरके दुसरे विकारमें उपयोगी है.

(५०८) डाईल्युट नाइट्रिक एसिड १ द्राम डाईल्युटम्युरी एटिक एसिड १ द्राम टिंकचर ओफ जींजर १ द्राम डिस्टील्डबोटर ८ औंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कलेजेके रोगमें उपयोगी है ये दवा पीकर मूं धोडालणा.

(५०९) बाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ द्राम नाइट्रेट ओफ पोटास ०॥ द्राम टिंकर ओफ जींजर १ द्राम डिस्टील्डबोटर ८ औंस एकेक औंस दिनमें तीन वखत ये मिलावट चमडीके रोगमें बाहर लोशन तरीके लगाणेमें वापरते हैं.

(५१०) बाइकारबोनेट ओफ पोटास १ द्राम नाइट्रेट ओफ पोटाश ०॥ द्राम टिंकचर ओफ जींजर १ द्राम डिस्टील्डबोटर ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अपचा तथा संधिवायुमें जब पैसाब बहोत थोडा उतरे तथा बहोत लाल उतरे तब ये उपयोगी है.

(५११) बाइकारबोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण साइट्रीक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस पाणीमें पहली दवाकूं मिलाकर पीछे पीते वखत दुसरी दवा मिलाकर पीजाणा होजरीका खटास मिटाती है.

(५१२) बाईकारबोनेट ओफ सोडा १७ ग्रेण साइट्रिक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस सोडावाटर उपयोग ऊपर मुजब.

(५१३) बाईकारबोनेट ओफ सोडा २ द्राम टार्टरिक एसिड १ द्राम पाणी ८ औंस जलमे २ द्राम सोडेकूं पिघलाकर शीशीमें भरके रखणा ४ औंस जलमें १ द्राम एसिड मिलाकर दुसरी शीशीमें भरडालणा मात्रा एक औंस सोडा मिकश्चर और ०॥ औंस एसिड मिकश्चर दोनोंकों मिलाकर पीणा बुखार तथा गर्भणीके उलटी वगेरे रोगोंमे फायदेबंद है.

(५१४) सोडामिकश्चर १ औंस क्लोरो फोर्म २० बूंद ऊपर लिखे मुजब तइयार किया भया सोडा मिकश्चरमें क्लोरा फोर्म मिलाणा इसकूं पीते वखत हिलाणा गर्भणीके रोगमें वदहजमीमे और दरियावकी मुसाफरीमें उलटी होती है उसमें बहुत उपयोगी है.

स्तंभनदवायें.

जो दवाये शरीरके जुदे २ भागोपर असर करके रसोत्पादक क्रियाकूं कम करती है तथा खून वहणेवाली नसोके मूंकूं संकोच खूनके प्रवाहकूं बंध करती है वोजातकी एस्ट्रीनजन्टस कहते हैं आयर्न एलम लेड गेलिक एसिड चोक ओपीयम ये सब इस वर्गकी दवायों है.

(५१५) एलम (फिटकडी) का भूका १ द्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस पाणीमे फिटकडीकूं मिलाकर उसमेंसें दर ४ घंटेसें एकेक औंस पीणा गर्भगिरता और फेफसेके रक्त गिरणेमें उपयोगी है रक्त प्रदर पुराणे मरोडेमें फायदेबंद है.

(५१६) डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड १॥ द्राम टिंकचर ओफ जींजर १ द्राम पाणी ८ औंस मिलाकर दर चार २ घंटेसे एकेक औंस पीणा गर्भश्राव फेफसेका खून गिरणा में फायदेबंद है पीकर मूं साफ धोडालणा.

(५१७) एसटेड ओफ लेड ३ ग्रेण टिंकचर ओपियम ५ बूंद डिस्टील्डवोटर १॥ औंस मिलाकर एक वखत पीणा इतने प्रमाण तीन २ घंटेसें लेणा फेफसेमेंसे खून गिरे उसमें देते हैं.

(५१८) डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड २५ बूंद टिंकचर ओपियम ८ बूंद पाणी १ औंस हरवखत इस वजनसें दिनमें तीन वेर पीणा फेफसेमेंसें तथा होजरीमेंसें खून गिरता होय मरोडेके खून गिरणेमें देते हैं १ वर्षके बच्चेकूं इस मिलावटमेंसे १ द्राम देणा.

(५१९) गंलिक ऑसिड ५ ग्रेण पाणी २ औंस दरवखत इस वजन मुजब दिनमे तीनवखत लेणा फेफसेका खून गिरणा होजरीका खून गिरणा रक्तपित्त अतिसार और मरोडेमें फायदेबंद है.

(५२०) एसेटेट ओफ लेड ३ ग्रेण एकस्ट्राकट ओपियम $\frac{1}{2}$ ग्रेण मिलाकर एक गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमें तीन वखत लेणी कोईभी तरेसें खून गिरणेमें अतिसार तथा मरोडेमें फायदेबंद है.

(५२१) पल्वीसक्रीटा एरोमेटिककम ओपियम ५ ग्रेण बाइकारबोनेट ओफ सोडा १ ग्रेण एलम (फिटकडी) का भूका $\frac{1}{3}$ ग्रेण तीनोकी १ पुडी करणी बच्चोके अतिसार तथा मरोडेमें फायदेबंद है मात्रा १॥ सें २ वरसके बच्चेकूं ७ ग्रेण १ व रसवालेकूं ३॥ ग्रेण ६ महीनेकूं १॥ ग्रेण.

(५२२) अफीमका सत्व ॥ ग्रेण चोक २४ ग्रेण मिश्री २४ ग्रेण और ६ महीनेतक ½ पुडी दर एक पुडी अछीतरे मिलाकर १२ पुडी करणी मात्रा १ वरसके वच्चेकूं एक २ पुडी चार २ घंटेसे एक वरसके अंदर ½ पुडीमें $\frac{1}{32}$ ग्रेण अफीम आता है वच्चोंका मरोडा तथा अतीसारमें फायदेवंद है.

उत्तेजक तथा शांत दवायोंका योग.

जिस दवायोंके योगसें शरीरमें जाग्रती होकर रोग शांतपडे एसी दवायोंका ऊपर लिखासो नाम है, जिस रोगके शरीरकी पीडाके संग मूर्छाके अथवा नाताकती मालमपडे उस रोगमें ये दवायें दी जाती है, एसे रोगोंमे अतिसार हैजा आंकसी दरदके संग ऋतु धर्म आणा और अजीर्ण (डिस्पेपस्पा) के कितनेकोंका समावेश होता है.

(५२३) क्लोरोफोर्म १ द्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १ द्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथर १ द्राम ब्रांडी १ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा १ प्याले जलमें १ द्राम मिली दवा लेकर पीणी छ महीनेके वच्चोंकू ३ से ४ वूंद १ वरस वालेकूं ६ से ७ वूंद २ वर्षके वच्चेकूं १० से १२ वूंद थोडे जलके संग अतिसार तथा मरोडा इस दवाकूं मजवूत बुचकी शीशीमें भरके रखणी और लेती वखत शीशीकूं हिलाणी.

(५२४ क्लोरोफोर्म १ द्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १ द्राम क्लोरोडाइन २ द्राम ब्रांडी १ औंस मात्रा एकेक चिमचाभर दवा चहिये जितने पाणीमें पीते वहोत सखतपणा नहीं मालम पडे इतना पाणी डालणा उपयोग ऊपरकी मिलावटमुजव.

(५२५) चोक १ द्राम एरोमेटिक् स्पिरिट ओफ एमोनिया २ द्राम टिंकचर ओपियम ४० वूंद केम्फर मिकश्चर ८ औंस मिलाकर मिकश्चर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अजीर्ण तथा अतिसारमें उपयोगी है.

(५२६) वेन्झोइक एसिड १ द्राम कारवोनेट ओफ एमोनिया १ द्राम पाणी ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कितनीक तरेके संधिवात मूत्राशयके कितनेक विकारोंमें उपयोगी है.

(५२७) एकस्ट्राकट कोनायम ३ ग्रेण एकस्ट्राकट हेम्प (गांजा) ½ ग्रेण केम्फर (कपूर) १ ग्रेण इन तीनोंकी गोली करणी एकेक गोली दिनमें तीन वखत लेणी दम तथा आंकसीके संग हांफणीमे देते हैं.

पिसाव लाणेवाली मिलावटी दवा.

जो मिलावटी दवायें मूत्राशय और मूत्रके रस्तेपर असर करके पेसावके जत्थेकूं वढाती है, वो डायुरेटिक्स कहाती है, जुदे २ जलोदरमें ये दवायें वहुत उपयोगी है, वुखार संधिवाय नजला और अजीर्ण जिसमें पेशाव थोटा और लाल ऊतरता है. एसे

रोगोंमेंभी फायदेबंद है, इस किसमकी दवायोंमें नाइट्रेट ओफ पोटाश स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर कोलशीकम वगेरे मुख्य है.

(५२८) नाइट्रेट ओफ पोटाश १ द्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ द्राम वाईन ओफ कोलशीका २ द्राम पाणी ८ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा–एकेक औंस दिनमें तीन वखत है, संधिवायुमें उपयोगी है.

(५२९) नाइट्रेट ओफ पोटाश १० ग्रेण बाइकारबोनेट ओफ पोटाश १ स्कुपल मिश्री २ द्राम इनोंकी १ पुडी करणी एसी एकेक पुडी दिनमें तीन वेर जवके पाणीके संग लेणा.

(५३०) नाइट्रेट ओफ पोटाश २ स्कुपल स्पिरिट ओफ नाइट्रेक इथर २ द्राम टिंकचर ओफ केन्थारीडीस २ द्राम पाणी ८ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औंस दवा दिनमें तीन वखत हैजेमें जब पेसाब बंध होय तब ये दवा देणी.

नींद लाणेवाली दवा.

जो दवायें रोगकी पीडाकूं कम करके नींद लाती है, उसकूं हीपनोटिकस कहते हैं, एसी दवायोंमें मुख्य ओपियम मोफर्या क्लोरल वगेरे है जादा मात्रामें ये सब दवाये जहर रहै इसवास्ते सावचेतीसें वरतणा.

(५३१) क्लोरल २० ग्रेण पाणी १॥ औंस इस वजनमुजब एक अथवा जादा वखत देणी.

कितनेक रोगोंमें अफीमके एवजीमें क्लोरल दिये जाता है, जो क्लोरलके २० ग्रेण नींद लाणेकूं पूरी नहीं होय तो दरेक वखतमें पांच २ ग्रेणकुं वढा २ कर आखर ४० ग्रेणतक मात्रा वढ शकती है, ५।१० ग्रेन जितनी मात्रामें क्लोरल नशोंकों शांत करताहै, वो मिश्री तथा पाणीके संग दिये जाता है.

(५३२) हाइड्रोक्लोरेट ओफ मोफर्या $\frac{1}{2}$ ग्रेण रेक्टीफाइड स्पिरिट ओफ वाइन १० बूंद पाणी १ औंस तीनोंक्रों मिलाकर एक वखत पीणा नींद लाणेकों सख्त दवाकी जरूरत पडे तब ये दवा देणी जब आंतरेमें कोइ हरकत होय अथवा धनुप वायके जोरमें.

उलटी कराणेवाली.

होजरीकूं संकुडाकर उछाला तथा उलटीकूं पेदाकर होजरीमेंकी चीजकूं गलेसें बाहिर निकाले एसी दवाकूं इमेटिक्स कहते हैं, साधारण वरतणेमें उलटीकी दवा आइपीकाक्युआन्हा टार्टर इमेटिक और सल्फेट ओफ झिंकहै उलटीकी क्रियाका जोर वढाणेकूं गरम पाणी दिये जाता है, उलटीकी दवा लियेवाद उलटी खुलास नहीं होयतो गलेमें पींछी फेरणी तब जोरसे कै होती है, राइ और और निमकसें भी उलटी हो जाती है, वेर २ देणेसें दुसरी दवा नहीं मिले तब इसमेंकी जो चीज हाजर होय

उसकूं उलटी लाणे वास्तै उपयोग करणा एक कोर्ट गरम जलमें अंदाजन १॥ औंस निमक मिलाकर पीजाणा उलटीकी दवा मुख्य करके जहर खायेकूं और गलेके रोगमें दी जातीहै किसी २ वखत बुखारमें पित्तकूं निकालणेवास्तेभी उलटी दी जाती है टार्टरइमेटिककी उलटी लेणेसें रोगी गभराज जाता है और मूर्छा आ जाती है इस वास्ते बहुत छोटी उमरमें बहुत वृद्धावस्थामें और बहुत ना ताकतमें इसका उपयोग बिलकुल नही करणा.

(५३३) राइका आटा टेबलस्पून फुलयाने ॥ औंस सादा निमक १ टीस्पूनफुलयाने १ द्राम गरम पाणी १० सें १२ औंस एक वखतमें पीजाणेसें पांच मिनटमें उलटी होगी-

स्थानिक इलाज.

स्थानिक इलाजोमें गरम पाणीकी वाफ पोल्टास ठंढे जलका भीगा कपडा दरद दवाणेका उपचार उत्तेजक उपचारस्तंभक उपचार फफोला उठाणेवाला इलाज पिचकारीका समावेश हो सकता है.

गरम उपचार.

(५३४ थूलीकी पोल्टीस)–शण अथवा फुलालीनकी कोथली चणाणी और आधी थूलीसें भरणी पीछै थूली भीज जाय इतना उकलता पाणी कोथलीपर डालणा थैलीका भीगासवाला भाग चूस लेणेकूं उसकूं जाडे कपडेके रुमालपर धरणी पीछे दुखती जगेपर उसकी पोटली गरम २ धर देणी उसपर सूका रुमाल लपेटना.

(५३५) रोटकी पोल्टीस–एक वासणमें १० औंस गरमकल २ ता पाणी डालणा पाणीमें मिले इतना रोटीका टुकडा डालणा और पांच मिनट भिगाये रखणा पीछै पाणीकूं छाण लेणा भीगे टुकडोकों शणके टुकडोपर धरके दरदकी जगेपर धरणा बहोतसे लोक इसके बदले गेहूंके आटेकूं वाफ करके उसकी पोल्टीस करते है वोभी एसाही गुण करती है.

(५३६ अलशीकी पोल्टीस)–कूटीभई अलशी अथवा उसके आटेकूं उंकलते जलमें वाफकर उसकूं गरमपाणीमें निकालकर कपडेके बीचमें देकर गरमागरम दुखते भागपर बांध देणा.

(५३७ भीगाशेक–फुलालीनको एक कपडेका दो चार घडी कर उसकूं गरम पाणीमें भिगाकर बाहिर निकाल न चोडकर वो कपडा रोगीसे सहाजाय एसा गरमागरम दुखती जगेपर धरणा और उसपर रुमाल लपेटणा दुसरा फुलालीनका टुकडा गरम पाणीका भिजाया तइयार रखणा अगला ठंडा पडाके तुरत निकालकर दुसरा कपडा उसपर गरम अगली तरे लगा देणा इसतेर शेक करते जाणा दरद जादा होयतो सादे पाणीकी जगे अफीमके डोडोंकूं उकाल उसके पाणीमें भिगाकर शेक करणा.

(५३८ सूका शेक)–भीगे सेकके बदले कितनीक जगे सूका शेक करणेकी जरूरत पडती है फलालेणमें रेती इंट थूली इसमेकी कोइभी एक चीज वांधकर उसकी दो कोथली अंगारेपर उंची धरकर गरम करके दरदकी जगे बारे फिरती शेक किया जाता है गरम करी भई इंट अथवा गरम पाणीसें भरी शीशी फलालेनके कपडेमें लपेट उसकाभी शेक किये जाता है इन्डिया रबर ब्याग याने रबरकी थेलीमें गरम पाणी भरके उसका शेक करणें-में आता है ये थेली तइयार मिलती है भीगाया सूका गरम शेक नुकशान करता नहीं. शे-कसें शरीरका कोइभी भागमें खून कफ पित्तया वायुका जमाव भया होय तो वो विखर जाता है.

ठंढा इलाज.

ठिकाणेके दरदमें पीप होणा सरू होय उसके पहली ठंढा इलाज फायदा करता है क्योंके वो पीप होणे नहीं देता लेकिन चोकस रोगमें पीप होणा सरू भयाया नहीं इस वातकूं नक्की करणा चाहिये लेकिन इस वातका नक्की करणा मुस्कल है ठंढा भीगा वस्त्र धरणेसें जो रोगीकूं ठंढकी कंपाणके संग वेचेनी मालम पडे तो समझणा के ठंडा उप-चार नुकसान करेगा तब ठंढा पोता नहीं धरणा ठंढा उपचार नीचैमुजब करणा.

(५३९) सोराखार (नाइट्रेट ओफ पोटाश ½ औंस नवसार हाइड्रोक्लोरेट ओफ आमोनिया ½ औंस सादा निमक ½ औंस पाणी १२ औंस ठंढे उपचारकी जरूर पडे तब इस मिलावटका उपयोग करणायाने शणका कपडा भिगाकर धरणा जो जादा ठंडककी जरूरत पडे तो पाणी वहोत थोडा लेणा लोशन कोरा पडे तब वोफेर जलमें भिगाकर धरणा अथवा ऊपरसें पाणी सींचणा.

एसेटेट ओफ लेड १ द्राम रेक्टिफाइड स्पिरिट ओफ वाइन १ औंस पाणी १२ औंस प्रवाहीवणाणा और ऊपर लिखे प्रमाणे भीगा कपडा धरणा.

शांतिकारक इलाज.

(५४० पाणीका इलाज) शण अथवा लींटके कपडेकूं दोलडाकर पाणीमें डूबाकर उसकूं वोटरड्रेसिंग कहते हैं उसपर पाणी प्रवेश नहीं करे एसा तेलवाला रेशमी कपडा (गटापरचावाला) कपडा वांधना इस ड्रेसिंगकूं दिनमें दो वखत बदलाणा दाह करणे. वाला भरता भया घावपर ए इलाज वहुत अछा है पाणीमें कितनीक दवा डालकेभी ड्रे-सिंग करणेमें आता है ड्रेसिंग गरम तेसें ठंढा दोनुं तरेके पाणीका हो सकता है.

(५४१ सादा मल्लम) चरवी २ भाग आलिव्ह ओइल १ भाग पीला मोम ½ भाग एक तवेपर सब चीजोंको पिघलाकर एकत्र करणा मल्लम ठढा पडे तहांतक हिलाणा ए मल्लम वहोत तरेसे वापरणेसें और पीछैसें उसमें दुसरीभी कीतनीक दवायें मिलाकर लगा-णेसे घावकूं भरता है.

(५४२) अलशीका तेल और लोइम वाटर (चूणेका पाणी) समभाग मिलाकर

खूब हलाणा (एक गेलन पाणीमें ॥ सेर कलीचूना डालनेसें लाइमवोटर वणता है ए तेल जले भागकूं अछा करणेमें वहुत फायदेवंद है.

(५४३ क्यालोमेल ३० ग्रेण व्ल्याकाश–लाइमवोटर १० औंस शीशीमें भरकर हलाणेसें मिलकर लोशन वणता है. गुप्त इन्द्रियका क्षत घावपर वहुत उपयोगी है उसका भीगा कपडा धरणा.

(५४४) टिंकचर ओपियम १ द्राम टिंकचरएकोनाइट १ द्राम क्लोरोफोर्म १ द्राम सोपलीनीमेन्ट १॥ औंस इनोकों मिलाकर तेल लिनिमेन्ट वणाणा और उसपर झहर एसा नाम लिखणा चसकेके दरदपर ए लिनिमेन्ट लींट अथवा वादलीके टुकडेसें रगडणेसें दरदशांत होता है चमडीपर कोइ घाव या इजा होय तो मूंमे अथवा वच्चोंके दरदमें इसका उपयोग करणा नहीं.

एक छोटी शीशीके दो भागमें कपूरका भूका भरणा और खाली रखा भया भागमें रेक्टिफाइड स्पिरिट ओफ वाइन अथवा सल्प्युरिकइथरसेभर देणा एक लकडीके नाके लींट अथवा वादलीका टुकडा वांध उससें इस प्रवाहीकुं दुखते भागपर रगडणा एक मिटमे दरद वंध होता है ए जादा देर असर रहता नहीं.

भेदक असर करणेवाला इलाज

मलम

(५४५) गंधकका चूरा १ औंस नाइट्रेट ओफ पोटाश ॥ द्राम साबू अथवा ग्रिसराइन १ द्राम चरवी ४ औंस अंगारपर चरवीकूं पिघलाकर एक खरलमें वरावर मिलाणा ए मलम खुजलीका पक्का इलाज है.

(५४६) टिंकचर ओपियम २ द्राम कारवोलिक एसिड २० ग्रेन चरवी १ औंस आलिव्ह ओइल १ औंस अंगारपर पिघलाकर सव एकत्र करणा और ठंढा पडे जहांतक हिलाणा जखम (अल्सर्स) के वास्ते अछा इलाज है.

(५४७) रेडआयोडाइड ओफ मर्क्युरी १६ ग्रेन चरवी ॥ औंस आलीव्ह ओइल ॥ औंस चरवी तथा तेलकूं पिघलाकर एकत्र करणा पीछे आयोडाइड ओफ मर्क्युरी डाल खरलमें घोट मिलाणा वधी भइ तापतिली रसकी गांठ (गल्पाड) पर रगडणेसें अछा फायदा करती है.

(५४८) मांजूफलका भूका ८० ग्रेन एकस्ट्राकट ओपियम ३० ग्रेन सादा मलम १ औंस एक खरलमें वरावर घोट मिला देणा हरसका मस्सा तथा खून गिरणेका अछा इलाज है.

(५४९) एसेटेट ओफ लेड ३० ग्रेन सादा मलम १ औंस खरलमें वरावर मिलाणा रक्त पित्तके अलसरके वास्ते अछा मलम है.

(५५०) फिटकडीका भूका २० ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाणा आंख तथा कानके पकणेमें तथा जड भये घाव (अलसर) में उपयोगी है.

(५५१) सल्फेड ओफ झिंक ८ ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाना आंख तथा कानके दरदमें वहुत उपयोगी हैं.

(५५२) वाइकारवोनेट ओफ सोडा १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाना खुजली तथा चमडीके दुसरे रोगोंमें उपयोगी है.

स्तंभक और रोपण कुरले.

(५५३) फिटकडी १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस कुरले करणेकूं चोरिये गलापकणा मूंका जखम रक्तपित्त वगेरेमें कुरला करणा तथा पिचकारीके काममें आती है.

(५५४) जींजरका अर्क (स्ट्रोंग) १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस कुरले करणेकुं ढीले पडे घांटेमें उसके कुरले घांटेकूं उत्तेजन देता है.

(५५५) गेलिक एसिड १ स्कुपल ब्रांडी ४ द्राम डिस्टील्ड वोटर ५ औंस कुरले करणेकूं थूक लाल मूंकी चांदी(स्कर्बि) रगतपित्तकेमें उपयोगी है.

(५५६) सल्फेट ओफ झिंक ३० ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर कुरले वास्ते उपयोगमें लेणा ए और ऊपरके तीन इलाज मूंकी चांदी थुक चौंरिया गलेका सोजा वगेरोमें एक नहीं तो दुसरा फायदा करता है.

पिचकारी (वस्ति).

(५५७) स्टार्च अथवा साबू २ द्राम गरम पाणी १० औंस दोनोंकों मिलाकर पिचकारी तरीके जरूर पडे तब उपयोग करणा.

(५५८) एसे फोटीडा (हिंग) १ द्राम साबू १ द्राम केस्टर ओइल (एरंडी तेल) १ औंस गरम पाणी ८ औंस चारों चीजों अछीतरे मिलाकर देवे उत्तेजक वस्ती (पिचकारी)

(५५९) एरंडी तेल $\frac{1}{2}$ औंस टरपेन्टाइन १ औंस जमालगोटेका तेल २ वूंद साबू ३० ग्रेण गरमपाणी ८ औंस अछीतरे मिलाणा रेचकवस्ति मगजमें खून चढे तब फायदेवंद है.

(५६०) सल्फेट ओफ झिंक २० ग्रेण टिंकचर ओपियम ३० वूंद गरम पाणी ८ औंस स्तंभनवस्ती श्वेत प्रदर तथा गर्भस्थानमें दुसरे विकारोंमें उपयोगी है.

चमडीपर दाह ललाई तथा फफोला उठाणेवाला इलाज.

(५६१) टरपेन्टाइनके पोते– लींट अथवा फलालेनका टुकडा टरपेन्टाईन स्पिरिटमें भिगाणा और सरीरके दरदकी जगे उसका पोता धरकर उसपर तैलवाला चमडा अथवा सूका कपडा धरणा आसरे एक घंटा अथवा वहोत दरद करे तो उहांतक रखकर पीछे निकाल लेणा इस पोतेसें चमडी लाल होगी लेकिन् फफोला उठेगा नहीं.

(५६२ राईका पल्स्टर) राईका आटा (अंग्रेजी दवा वेचणेवालोंके इहां तइयार मिलता है, या घरमें पीसाकर तइयार करणा) लेकर उसमें जरा गरमपाणी मिलाकर सणके टुकडेपर वो हाजर नहीं होय तो हर कोइ कपडेपर या कागजपर विछाकर वो पलास्टर दरदकी जगेपर धरणा उहां उसकूं २० से ३० मिन्ट रहणे देणा वच्चोंसें सख्त पलास्टर सहा नहीं जाय वास्ते राईका पलास्टर और चमडीके वीचमें मुल २ का महीन कपडा धरकर पलास्टर धरणा ये पलास्टर वहोत सख्त पडजाय तो फफोला उठता है, घाव पडता है.

(५६३ व्लीस्टर) स्टिर्किंग पलास्टर के टुकडे पर केन्थारीडिस पलास्टर थोडा २ विछाकर लगाणेमें आता है, उससे विलस्टर (फफोला) आसरे दो घंटेमें उठणा सरू होता है, छ अथवा आठ घंटे पीछै वो पलास्टर उठा लेणा चहिये फफोलेकी उठी चमडीकूं फोड डालणा महीन कतरणीसें और पाणी निकलणे देणा लेकिन् फफोलेकी सव चमडी कतरणी नहीं पीछै उसपर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा छवया आठ घंटेसें ड्रेसिंगकभी अलग कर लेणा वहोतसी वखत दुसरी वेरभी फफोला भर जायतो अगली तरे पाणी निकाल डालणा पीछै दिनमें दो वेर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा किसी २ वखत विल्स्टरके पासकी चमडीपर गुमडे हो जाते है, तो उहां सेक करणा और पोटिस वांधणी.

छोकरोके विल्स्टर लगाते वहोत सावचेती रखणी जो कभी विलस्टर मारणेकी जरूरी ही होय तो चमडीपर महीन कपडा देकर फेर लगाणा जिस्सें जादा असर नहीं हो सके तीन घंटेसें जादा रहणे नहीं देणा.

चोट लगणेपर वाहिरका इलाज.

(५६४) स्टार्च वेन्डेज–(सरेसकापाटा) सरेसकी अथवा गहूंके आटेकी घट्ट लेइ वणाकर उसमें पाटेका कपडा भिगाणा और इजाकी जगेंपर ऊपरा ऊपरी लपेटा देकर पट्टा वांधणा पीछै वो पाटा सूककर करडा होयगा तव चोटवाली जगेकूं मजवूत आधार भूत हो जायगा इस पट्टेकूं जरा मजवूतीसे वांधणा लेकिन् वहोत खेचके नहीं वांधणा टूटा भया अथवा खिसे भये हाडपर वांधणेमें आये जो कमचिया वेंत वांसकी उसकूं निकाले वाद ये वेन्डेज वहुत फायदेवंद है.

(५६५ लेधर प्लाष्टर) चमडीपर रालका प्लस्टर लगाणेमें आता है, उसकू लेधर पलास्टर कहते हैं, इस पलास्टरका उपयोगभी ऊपर लिखे वेन्डेज मुजव होता है.

गरम पाणीमें वैठणा.

(५६६) गरम वाफ वहोतसे रोगोंमें उपयोगी इलाज है, इस वाफका वरावर उपयोग नहीं करणेमें आवे तो किसी वखत वहोत नुकशान कर जाता है, गरम वाफमें

(५५०) फिटकडीका भूका २० ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाणा आंख तथा कानके पकणेमें तथा जड भये घाव (अलसर) में उपयोगी है.

(५५१) सल्फेड ओफ झिंक ८ ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाना आंख तथा कानके दरदमें बहुत उपयोगी हैं.

(५५२) वाइकारबोनेट ओफ सोडा १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाना खुजली तथा चमडीके दुसरे रोगोंमें उपयोगी है.

स्तंभक और रोपण कुरले.

(५५३) फिटकडी १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस कुरले करणेकूं चोरिये गलापकणा मूंका जखम रक्तपित्त वगेरेमें कुरला करणा तथा पिचकारीके काममें आती है.

(५५४) जींजरका अर्क (स्ट्रोंग) १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस कुरले करणेकुं ढीले पडे घांटेमें उसके कुरले घांटेकूं उत्तेजन देता है.

(५५५) गेलिक एसिड १ स्कुपल ब्रांडी ४ द्राम डिस्टील्ड वोटर ५ औंस कुरले करणेकूं थूक लाल मूंकी चांदी(स्कर्वि) रगतपित्तकेमें उपयोगी है.

(५५६) सल्फेट ओफ झिंक ३० ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर कुरले वास्ते उपयोगमें लेणा ए और ऊपरके तीन इलाज मूंकी चांदी थुक चौंरिया गलेका सोजा वगेरोमें एक नहीं तो दुसरा फायदा करता है.

पिचकारी (वस्ति).

(५५७) स्टार्च अथवा सावू २ द्राम गरम पाणी १० औंस दोनोंकों मिलाकर पिचकारी तरीके जरूर पडे तव उपयोग करणा.

(५५८) एसे फोटीडा (हिंग) १ द्राम सावू १ द्राम केस्टर ओइल (एरंडी तेल) १ औंस गरम पाणी ८ औंस चारों चीजों अछीतरे मिलाकर देवे उत्तेजक वस्ती (पिचकारी)

(५५९) एरंडी तेल ½ औंस टरपेन्टाइन १ औंस जमालगोटेका तेल २ वूंद सावू ३० ग्रेण गरमपाणी ८ औंस अछीतरे मिलाणा रेचकवस्ति मगजमें खून चढे तव फायदेवंद है.

(५६०) सल्फेट ओफ झिंक २० ग्रेण टिंकचर ओपियम ३० वूंद गरम पाणी ८ औंस स्तंभनवस्ती श्वेत प्रदर तथा गर्भस्थानमें दुसरे विकारोंमें उपयोगी है.

चमडीपर दाह ललाई तथा फफोला उठाणेवाला इलाज.

(५६१) टरपेन्टाइनके पोते– लींट अथवा फलालेनका टुकडा टरपेन्टाईन स्पिरिटमें भिगाणा और सरीरके दरदकी जगे उसका पोता धरकर उसपर तैलवाला चमडा अथवा सूका कपडा धरणा आसरे एक घंटा अथवा वहोत दरद करे तो उहांतक रखकर पीछे निकाल लेणा इस पोतेसें चमडी लाल होगी लेकिन् फफोला उठेगा नहीं.

(५६२ राईका पल्स्टर) राईका आटा (अंग्रेजी दवा वेचणेवालोंके इहां तइयार मिलता है, या घरमें पीसाकर तइयार करणा) लेकर उसमें जरा गरमपाणी मिलाकर सणके टुकडेपर वो हाजर नहीं होय तो हर कोइ कपडेपर या कागजपर विछाकर वो पलास्टर दरदकी जगेपर धरणा उहां उसकूं २० से ३० मिन्ट रहणे देणा वर्चोंसें सख्त पलास्टर सहा नहीं जाय वास्ते राईका पलास्टर और चमडीके वीचमें मुल २ का महीन कपडा धरकर पलास्टर धरणा ये पलास्टर वहोत सख्त पडजाय तो फफोला उठता है, घाव पडता है.

(५६३ व्लीस्टर) स्टिकिंग पलास्टर के टुकडे पर केन्थारीडिस पलास्टर थोडा २ विछाकर लगाणेमें आता है, उससे विलस्टर (फफोला) आसरे दो घंटेमें उठणा सरू होता है, छ अथवा आठ घंटे पीछै वो पलास्टर उठा लेणा चहिये फफोलेकी उठी चमडीकूं फोड डालणा महीन कतरणीसें और पाणी निकलणे देणा लेकिन् फफोलेकी सव चमडी कतरणी नहीं पीछै उसपर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा छवया आठ घंटेसें ड्रेसिंगकभी अलग कर लेणा वहोतसी वखत दुसरी वेरभी फफोला भर जायतो अगली तरे पाणी निकाल डालणा पीछै दिनमें दो वेर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा किसी २ वखत विल्स्टरके पासकी चमडीपर गुमडे हो जाते हैं, तो उहां सेक करणा और पोटिस वांधणी.

छोकरोके विल्स्टर लगाते वहोत सावचेती रखणी जो कभी विलस्टर मारणेकी जरूरी ही होय तो चमडीपर महीन कपडा देकर फेर लगाणा जिस्सें जादा असर नहीं हो सके तीन घंटेसें जादा रहणे नहीं देणा.

चोट लगणेपर वाहिरका इलाज.

(५६४) स्टार्च वेन्डेज–(सरेसकापाटा) सरेसकी अथवा गहूंके आटेकी घट्ट लेइ वणाकर उसमें पाटेका कपडा भिगाणा और इजाकी जगेंपर ऊपरा ऊपरी लपेटा देकर पट्टा वांधणा पीछै वो पाटा सूककर करडा होयगा तव चोटवाली जगेकूं मजवूत आधार भूत हो जायगा इस पट्टेकूं जरा मजवूतीसे वांधणा लेकिन् वहोत खेचके नहीं वांधणा टूटा भया अथवा खिसे भये हाडपर वांधणेमें आये जो कमचिया वेंत वांसकी उसकूं निकाले वाद ये वेन्डेज वहुत फायदेवंद है.

(५६५ लेधर प्लाष्टर) चमडीपर रालका प्लस्टर लगाणेमें आता है, उसकूं लेधर पलास्टर कहते हैं, इस पलास्टरका उपयोगभी ऊपर लिखे वेन्डेज मुजव होता है.

गरम पाणीमें वैठणा.

(५६६) गरम वाफ वहोतसे रोगोंमें उपयोगी इलाज है, इस वाफका वरावर उपयोग नहीं करणेमें आवे तो किसी वखत वहोत नुकशान कर जाता है, गरम वाफसें

रीरके स्नायुओ ढीले पडते हैं, रिदय (हार्ट) की वधी भई क्रियाका जोर नरम पडता , उससें वधी भई नाडीका वेग भी हलका पडता है, और उससें अशक्ति और मूर्छा ाती है, इसवास्ते गरम पाणीमें बैठाये भये अदमीकी शरीरकी स्थितिपर निगे रखकर ौर उसका शिर छाती तरफ नहीं झुकणे देणा पीठके तरफ झुकाये भये रखणा गरम णीमें रोगीकूं कितनी एक देर रखणा उसका निर्णय उसपर गरम वाफकी असर होणे- र आधार रखता है, जो असर जलदी होय और रोगीकूं मूर्छा आणे लगे तो उसकूं लदी वाहिर निकालणा पाणीमेंसें निकालकर रोगीकूं पूंछकर कोरा करणा विछोणेमें ुलाणा जो मूर्छा आई होयतो एसीही हालतमें सुलाकर पोंछकर सूका वदन करणा च्चोंकी चमडीपर वाहरकी गरमी या ठंढी जादा जलदी असर करती है, वास्ते उनोकों रम पाणीमें विठलाते या गरम शेक करते वहोत संभाल रखणी वहोतसे वच्चे जादा रम वाफसें जलकर मरणेके दाखले वणते हैं, वच्चोंके वास्ते गरम वाफकी गरमी ९६ ी ९८ डिग्रीसें जादा नहीं होणी चहिये.

वडी ऊमरके अदम्पोंके आंकसीके संग वहोत दरद पेसावमें रेतीका जाणा मूत्राघात ाधारण गांठ आंतरोंका रुकणा और संधिवायुमें गरम पाणीमें वैठाणेमें आता है, और च्चोंकों मुख्य पणे करके खेंचाताण हिचकी वायु नलीका वरम आंतरेमें दरद दांत आते ुखतकी वेचैनी और वदनपर चरवी अथवा मेद वायुका चढणा वगेरे दरदोंमें गरम ाणीमें वैठाणा वहोत फायदाकारक होजाता है.

वदनके चमडीकूं गरमी देणेकी दुसरी निर्भय और सहजरीत एसी हे के एक ऊनकी ावली अथवा कंवलीकूं गरमपाणीमें डुवाकर निचोडकर वो गरम २ वदनके लपेट लेण और उसपर सूकी कामली लपेटणी इसतरे २० मिनटतक ढके रखणा पीछे कंवली दूर कर गरम टुवालसें वदन पूंछ विछोणेमें सुला देणा.

(५६७) गरम पाणीमें दवायें डाल उसका वाफ लेणेमें आता है, जिससें दवाका असर चम- डीके छेदोंके रस्ते अंदर पहुंचता है, इस किसमकी दवायोंमे सादा निमक एसीडस सोडा सल्फर वगेरे मुख्य है, नाइट्रो म्युरीयाटिक एसिड वाथ इसतरे लेते हैं, म्युरियाटिक एसिड ३ भाग नाइट्रिक एसिड २ भाग इय दोनों एसिडकुं संभालकर धीमे २ एकत्र करणा पीछे डिस्डील्ट वोटर ५ भाग धीमे २ मिलाणा इसतरे मिलाणेसें उसमेंसें पेदाभई गरमीका ऊफाण वैठजाय तव उस प्रवाहीकों शीशीमें भरके रखणा दरएक वाथके वास्ते इस प्रवाहीमेंसें ६ औंस एसिड लेकर गरम पाणीमें डालणा इस वाथकी गरमी ९६ डिग्री होणी चहिये रोगीकूं इस वाथमें १५ मिनटतक रखणा और पाणीकी गरमी कायम राखणेकूं जेसें २ पाणी ठंढा पडता जावे तेसें २ दुसरा गरमपाणी डालते जाणा, रोगीकूं वाथमेंसें वाहर निकालकर जाडे टुवालसें पूंछकर वदन सूका करणा इस वाथका

मुख्य उपयोग कलेजेके और तिल्लीके पुराणे रोगमें उपयोग करणेमें आता है, म्युरियाटिक अथवा हाइड्रोक्लोरिक एसिड और नाइट्रिक एसिड वहोत सख्त है, और कोइभी चीज इनके स्पर्श (कोन्टेकट) में आती है. उसकूं जला देती है, इसवास्ते इसका उपयोग करते हुसियारी रखणी.

कपिंग (प्याला धरणेकी क्रिया).

(५६८) कपिंग धरणेकी पेटी विलायती तइयार आती है, उसमें कितनेक चढते उतरते कदके काचके प्याले कपिग ग्लास होती है, फेर उस पेटीमें कितनेक धारवाले छुरी जैसे शस्त्र होते हैं, कपिंग दो तरे धरे जाते हैं, प्रथम चमडीपर चपका धरकर पीछै कपिंग ग्लाससे खून खेंचके निकालणेमें आता है, इसतरे मोइस्ट कपिंग कहाताहै, कमर पीठ वोची वगेरे जगोमेंसें इसतरे खून निकालणेमें आता है, कपिंगलगाणेकी ये रीत प्रचारमें नही है, चपका लगाये विगर लोक ग्लास लगाते हैं, वोट्राई कपिंग कहाती है, वो इसतरेसे हैं कपिंग ग्लासके अंदर स्पिरिट वाइन चुपडके उसकूं सिलगाई भई दिया सलाई दिखाणी जिससे वो जलणे लगेगी तव झट वो ग्लास चमडीपर उलटी धर देणी तव वो जलता भया स्पिरिट वुझ जायगा और जेसें २ उसके अंदरका वाफ नरम पडता जायगा तेसें २ चमडी अंदरसे खिचके उपस आवेगी और ग्लास मजवूत चपक जायगी थोडी देर इसतरे रहणे देणी पीछै ग्लासकू एक वाजूसें खेंचकर चमडीसे दूर करणा कपिंग ग्लासमें स्पिरिट जरासाही लगाणा जिससें उसकी फकत वाफ प्यालेमें पैदा होकर प्याला चमडीपर चिपट जावै स्पिरिट वाइन प्यालेमें छांटे विगर फक्त स्पिरिट लेम्प थोडे मिनटतक रहणे देकर पीछै तुरत चमडीपर धर देणेसें भी वो चिपट मजवूत वैठती है, इसतरे एकके पीछै एक कितनेक ग्लास लगाये जातीहै, और इसतरे करणेसें चमडीके नीचेका खून उपसके ऊपर आता है, कपिंग्लास नहीं मिले तो सादे प्यालेसें काम निकल सकता है, प्यालेकूं एसा गरम करणा नहीं चाहिये के जिस्सें चमडी जल उठे प्यालेकूं चमडीपरसें उतारणेका काम छुरीके वदले अंगलीका नख कर सकता है,

गंदकी दूरकरणेवाली चीजां.

(५६९) कितनीक चीजोमें एसा गुण होता है, सो उसकूं वदवोकी जगेमें डालणेमें आवे तो वोखरावोकूं मारती है, एसी चीजोंकूं डिस इन्फेक्टंटस कहते है, उडता रोग जेसेके हैजा शीतला ओरी व्युवोनिक प्लेग वगेरे रोगमें एसी चीजों वहुत उपयोगी होती है, एसी वखतमें एसी चीजों वापरणेसें हवा साफ होती है, और हवामें फेलते भये रोगोके परमाणू वहोत फेल नहीं सकते ये चीज चेपी और उडते रोगोंका मरज चलता है, तभी ही वापरणा एसा नहीं है, हर किसीभी वखत जिस ठिकाणेमें

शरीरके स्नायुओ ढीले पडते हैं, रिदय (हार्ट) की वधी भई क्रियाका जोर नरम पडता है, उससें वधी भई नाडीका वेग भी हलका पडता है, और उससें अशक्ति और मूर्छा आती है, इसवास्ते गरम पाणीमें बैठाये भये अदमीकी शरीरकी स्थितिपर निगे रखकर और उसका शिर छाती तरफ नहीं झुकणे देणा पीठके तरफ झुकाये भये रखणा गरम पाणीमें रोगीकूं कितनी एक देर रखणा उसका निर्णय उसपर गरम वाफकी असर होणे-पर आधार रखता है, जो असर जलदी होय और रोगीकूं मूर्छा आणे लगे तो उसकूं जलदी वाहिर निकालणा पाणीमेंसें निकालकर रोगीकूं पूंछकर कोरा करणा विछोणेमें सुलाणा जो मूर्छा आई होयतो एसीही हालतमें सुलाकर पोंछकर सूका वदन करणा वच्चोंकी चमडीपर वाहरकी गरमी या ठंढी जादा जलदी असर करती है, वास्ते उनोकों गरम पाणीमें विठलाते या गरम शेक करते वहोत संभाल रखणी वहोतसे वच्चे जादा गरम वाफसें जलकर मरणेके दाखले वणते हैं, वच्चोंके वास्ते गरम वाफकी गरमी ९६ से ९८ डिग्रीसें जादा नहीं होणी चहिये.

वडी ऊमरके अदम्पोंके आंकसीके संग वहोत दरद पेसाबमें रेतीका जाणा मूत्राघात साधारण गांठ आंतरोंका रुकणा और संधिवायुमें गरम पाणीमें वैठाणेमें आता है, और वच्चोंकों मुख्य पणे करके खेंचाताण हिचकी वायु नलीका वरम आंतरेमें दरद दांत आते वखतकी वेचैनी और वदनपर चरवी अथवा मेद वायुका चढणा वगेरे दरदोंमें गरम पाणीमें वैठाणा वहोत फायदाकारक होजाता है.

वदनके चमडीकूं गरमी देणेकी दुसरी निर्भय और सहजरीत एसी हे के एक ऊनकी धावली अथवा कंवलीकूं गरमपाणीमें डुवाकर निचोडकर वो गरम २ वदनके लपेट लेण और उसपर सूकी कामली लपेटणी इसतरे २० मिनटतक ढके रखणा पीछे कंवली दूर कर गरम टुवालसें वदन पूंछ विछोणेमें सुला देणा.

(५६७) गरम पाणीमें दवायें डाल उसका वाफ लेणेमें आता है, जिससें दवाका असर चम-डीके छेदोंके रस्ते अंदर पहुंचता है, इस किसमकी दवायोंमे सादा निमक एसीडस सोडा सल्फर वगेरे मुख्य है, नाइट्रो म्युरीयाटिक एसिड वाथ इसतरे लेते हैं, म्युरियाटिक एसिड ३ भाग नाइट्रिक एसिड २ भाग इय दोनों एसिडकुं संभालकर धीमे २ एकत्र करणा पीछे डिस्डील्ट वोटर ५ भाग धीमे २ मिलाणा इसतरे मिलाणेसें उसमेंसें पेदाभई गरमीका ऊफाण वैठजाय तव उस प्रवाहीकों शीशीमें भरके रखणा दरएक वाथके वास्ते इस प्रवाहीमेंसें ६ औंस एसिड लेकर गरम पाणीमें डालणा इस वाथकी गरमी ९६ डिग्री होणी चहिये रोगीकूं इस वाथमें १५ मिनटतक रखणा और पाणीकी गरमी कायम राखणेकूं जेसें २ पाणी ठंढा पडता जावे तेसें २ दुसरा गरमपाणी डालते जाणा, रोगीकूं वाथमेंसें वाहर निकालकर जाडे टुवालसें पूंछकर वदन सूका करणा इस वाथका

चाके संग पिलाणा अथवा मिश्रीकी चासणीमें मिलाकर चटाणा ये दवाभी बुखार चढेमें दी जाती है,

ठंढके बुखार

(५७२) बाइकारबोनेट ओफ सोडा ३० ग्रेण टार्टरिक एसिड २६ ग्रेण पाणी २ औंस मात्रा २ औंस दर तीन घंटेसें.

ठंढका बुखार

(५७३) सालवोलेटाइल ३० बूंद पाणी २ औंस १ वखत देणा.

(५७४) किनाइन २४ ग्रेण पाणी ८ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद मिलाकर मात्रा १ औंस.

(५७५) किनाइन २४ ग्रेण कारबोलिक एसिड १८ बूंद एकस्ट्राकट जनस्पन चहिये जितना पहिली ऊपर दुसरी दवा डाल उसकें संग जनस्यन बराबर मिलाकर २४ गोली बणाणी मात्रा ३ सें ६ गोली हमेस.

विषमज्वर

(५७६) डाइल्युट नाइट्रो म्युरियाटिक एसिड १५ बूंद चिरायतेकी चा ४॥ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणा.

(५७७) एकस्ट्राकट सारसापरिला २ द्राम टींकचर नक्षवोमिका १५ बूंद टिकचरकालिंबा १॥ द्राम चिरायतेकीचा ४॥ औंस मिलाकरके उसका तीन भाग करके दिनमें तीन वेर पीणा.

पित्त ज्वरमें उलटी

(५७८) क्रीम ओफ टार्टर १ औंस नीवूका रस १ औंस मीश्री २ औंस पाणी २० औंस मिलाकर उसमेंसें थोडी २ देणी उलटीकूं मिटाती है.

पित्तज्वर

(५७९) लाइकर एमोनीएसेटेट १२ द्राम एन्टीमोनियल वाईन १ द्राम टिंकचर एकोनाइट २० बूंद साइट्रेट ओफ पोटाश १२० ग्रेण केम्फर वोटर ६ औंस एन्टीपाइरीन १ द्राम मिलाकरके उसमेंसें चार घंटेसे एकेक औंस दवा पिलाणी.

पित्तज्वर.

(५८०) एन्टिमोनियल पाउडर १२ ग्रेण कपूर सादा ३ ग्रेण इन दोनो दवाकी गुलकंदमें ६ गोलीयें करणी दोदों गोली तीन २ घंटेसे देणी.

(५८१) किनाइन १५ ग्रेण पाणी ४॥ औंस क्लोरेट ओफ पोटाश ३० ग्रेण डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड २० बूंद मिलाकर बुखार कम पडे पीछे उसका तीन हिस्साकर तीन २ घंटेसे देणा.

खराब वदवो आती होय उस जगेमें एसी चीजों छांटणी या डालणी वो इस मुजब चीजोंहै,

(कोन्डीस फलुइड) अथवा केन्डिस सोल्युशन इस नामका लालपाणी आता है, वो हर किस्मकी गंदकी तथा वदबोकूं जलदी दूर करती है, ये चीज वापरती वखत उसके एक भागमें ३० से ५० भागतक सादा जल मिलाणा पीछै उपयोग करणा दस्त करणेके पात्रमें वाडेमें जाजरूके चूलोंमें मोरियोंमें और हरकोई खराब दुर्गंधवाली जगोंमें ये पाणी छांटणा उडता रोगवाला वेमारका कपडा वदले पीछै अथवा हैजेमें दस्त उलटीसें विगाडा होयतो वेसे कपडेकूं धोणा पहिले कोनडिस फलुइड थोडा डालकर पीछै सादे पाणीसें धोणा इसीतरे गंदकीकी जगामें पहली ये पाणी डालकर पीछै (गंदकी दूर करणी) (कली चूना) कोन्डिस फलुइड हाजर नहीं होयतो कली चूणा छिडकणा जो आसपास हैजेका रोग चलता होय तो घरमें कली चूना पोताणा और जाजरू मोरी वगेरेमे दिनमें दो तीन वखत चूना तथा चूनेका पाणी डालते रहणा इससे आसपासके चेपी हवाके तत्व कभी घरमे आता है, तो उसकूं ये डिसइन फेक्टंटस निकालकर साफ कर देता है.

(कोयला) दुसरी चीज नहीं मिले तव गामठी कोयलेके भूकेका उपयोग करणा खराव वदवोकों कोयला मिटाता है.

(गंधकका तेजाव) ०॥ सेर सादापाणी काचके वासणमें लेकर उसमें ०॥ रतल गंधकका तेजाव डालणा पीछै चीणाइ चौडी रकेवीमें अथवा मट्टीके चोडे वरतणमें। सेर सादा निमक डालणा उसपर ऊपर लिखासो तइयार किया भया गंधकके तेजाव वाले पाणीमेंसें ॥ रतल डालणा पीछै इस रकेवीकूं ॥ से १ घंटेतक कोठेमें धरदेणा इसयोगसें म्युरि क्याटिक एसिडगेस नामकी हवा निमकमेंसें निकलती है, वोहवाकी सव गंधकीकूं दूर करती है, जिस कमरेमें उडते चेपी रोगवालेका विछाणा होय उस कमरेकी हवा विगडणेका संभव है, इसवास्ते एसे रोगीके कमरेमें एक अथवा जादा रकेवीयां ओटेमोटेस रखकर हवाकूं साफ करणा चाहिये रखती वखत कमरेके जाली झरोखे दरवज्जे खोल देणा चहिये और रकेवीके विलकुल पासमें कोइ मूं नहीं रखणा चाहिये.

दुसरे उपयोगी मिक्श्चर.

सादा वुखार.

(५७०) लाइकर एमोनी एसेटेटिस १॥ औंस सोराखार ३० ग्रेण स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर १॥ ड्राम कपूरका पाणी ३ औंस टिंकचर एको नाइट १५ वूंद मात्रा १॥ औंस दिनमे ३ वेर वुखार भरा होय उहांतक पिलाणेसें इस मिक्श्चरसें पसीना आता है.

(५७१) टार्टरइमेटिक १ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर १२ ग्रेण दोनों दवाकूं अछीतरे मिलाकर उसकी ६ पुडी करणी एकेक पुडी दर तीन २ घंटेसें पाणी अथवा

चाके संग पिलाणा अथवा मिश्रीकी चासणीमें मिलाकर चटाणा ये दवाभी बुखार चढेमें दी जाती है,

ठंढके बुखार

(५७२) बाइकारबोनेट ओफ सोडा ३० ग्रेण टार्टरिक एसिड २६ ग्रेण पाणी २ औंस मात्रा २ औंस दर तीन घंटेसें.

ठंढका बुखार

(५७३) सालवोलेटाइल ३० बूंद पाणी २ औंस १ वखत देणा.

(५७४) किनाइन २४ ग्रेण पाणी ८ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद मिलाकर मात्रा १ औंस.

(५७५) किनाइन २४ ग्रेण कारबोलिक एसिड १८ बूंद एकस्ट्राकट जनस्पन चहिये जितना पहिली ऊपर दुसरी दवा डाल उसकें संग जनस्यन बराबर मिलाकर २४ गोली बणाणी मात्रा ३ सें ६ गोली हमेस.

विषमज्वर

(५७६) डाइल्युट नाइट्रो म्युरियाटिक एसिड १५ बूंद चिरायतेकी चा ४॥ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणा.

(५७७) एकस्ट्राकट सारसापरिला २ द्राम टींकचर नक्षबोमिका १५ बूंद टिंकचरकालिंबा १॥ द्राम चिरायतेकीचा ४॥ औंस मिलाकरके उसका तीन भाग करके दिनमें तीन बेर पीणा.

पित्त ज्वरमें उलटी

(५७८) क्रीम ओफ टार्टर १ औंस नींबूका रस १ औंस मीश्री २ औंस पाणी २० औंस मिलाकर उसमेंसें थोडी २ देणी उलटीकूं मिटाती है.

पित्तज्वर

(५७९) लाइकर एमोनीएसेटेट १२ द्राम एन्टीमोनियल वाईन १ द्राम टिंकचर एकोनाइट २० बूंद साइट्रेट ओफ पोटाश १२० ग्रेण केम्फर वोटर ६ औंस एन्टीपाइरीन १ द्राम मिलाकरके उसमेंसें चार घंटेसें एकेक औंस दवा पिलाणी.

पित्तज्वर.

(५८०) एन्टिमोनियल पाउडर १२ ग्रेण कपूर सादा ३ ग्रेण इन दोनों दवाकी गुलकंदमें ६ गोलीयें करणी दोदों गोली तीन २ घंटेसे देणी.

(५८१) किनाइन १५ ग्रेण पाणी ४॥ औंस क्लोरेट ओफ पोटाश ३० ग्रेण डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड २० बूंद मिलाकर बुखार कम पडे पीछे उसका तीन हिस्साकर तीन २ घंटेसे देणा.

(५८२) क्विनाइन १२ ग्रेण पाणी ६ औंस डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड १५ बूंद मिलाकर तीन २ घंटेसे दोदो औंस दुसरा बुखार चढे जहांतक देणा.

तीक्ष्ण संधिवायु.

(५८३) बाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ द्राम आयोडाइड ओफ पोटास्पम ३० ग्रेण वाइन ओफ कोलचीकम ३० बूंद पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

(५८४) गंधककाफूल २ द्राम डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण सोरा १ द्राम चार पुडी करणी तीन २ घंटेसें देणा.

(५८५) नाइट्रेट ओफ पोटाश १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण उसकी तीन पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग दर तीन घंटेसे देणा.

(५८६) केलोमेल १२ ग्रेण टार्टर एमेटिक २ ग्रेण ग्वायाकमरेजीव २४ ग्रेण डोवर्स पाउडर २४ ग्रेण गूंदके पाणीमें १२ गोलियां करणी मात्रा १ गोली दिनमें ३या४वेर.

संधि वायु तीक्ष्ण नरम पडे पीछै इलाज.

(५८७) कारबोनेट ओफ आमोनिया १५ ग्रेण कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ बार्क १॥ द्राम पीरुवीयन वार्कका उकाला ६ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर मात्रा २ औंस.

संधि वायु पुराणा इलाज.

(५८८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १५ ग्रेण टिंकचर ओ[illegible] १॥ द्राम चिरायतेकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर देणी.

(५८९) कोडलीवर ओइल ६ द्राम [illegible] पोटासी ४५ बूंद पोटाश्यम ९ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर [illegible] बखत मात्रा

नजला [गाउ

[illegible].०) टिंकचर ओफ हेनबेन १ द्र
बखत देणा वेदनाका रोग कम करणेकूं ये द

(५९१) एलोइ १ ग्रेण ब्ल्युपील १ ग्रे
ओफ कोलचीकम १ ग्रेण मिलाकर १ गोली

(५९२) वाइन ओफ कोलचीकम ४५
पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें ३

पांडू

(५९३) [illegible]र क्लोरीड ४५ बूंद
टेलिस २० बूंद [illegible] ३ औंस

५९४) क्लोरेट

४ औंस मिश्री—२ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मिलाकर तीन चार वखत देणा मात्रा ॥ औंस.

जलोदर (कलेजेका इलाज.

(५९५) क्विनाइन ५ ग्रेण टिंकचर ओफ स्टील ४० वूंद नाइटोम्युरीयाटिक एसिड १५ वूद कलंभाकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणी मात्रा १ औंस.

जलोदर (कलेजेका) इलाज.

(५९६) फोसफेट ओफ आयर्न ६ ग्रेन एकस्ट्राकट नक्सवोमिका १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितना मिलाकर उसकी दो गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली देणी.

जलोदर इलाज.

(५९७) एलिया ४ ग्रेण ब्ल्युपील ४ ग्रेण रेवचीनीका सीरा ४ ग्रेण ज्युनिपरका तेज ४ वूंद मिलाकर ४ गोलियें करणी उसमेंसें २ गोली फजरमें देणी.

जलोदर (गुरदेका) इलाज.

(५९८) लाइकरएमोनी एसेटेटीस १ औंस एन्टीमोनियल वाईन ४० वूंद एप्सम सोल्ट ३ द्राम केम्फर वोटर ३० औंस.

जलोदर (नाताकती)

(५९९) टिकचरओफ स्टील ३० वूंद डाइल्युट एसेटिक एसिड २० वूंद एसेटेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा मात्रा २ औंस.

मुखपाक इलाज.

(६००) ओप्समसोल्ट ४ द्राम क्लोरेट ओफ पोटाश ४० ग्रेण लिकरआमोनी एसेटेटीस १ औंस पाणी २ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

अजीर्ण डेस्पेपस्या इलाज.

(६०१) रिडयुस्ड आयर्न २४ ग्रेण एकस्ट्राकटनक्स वोमिका ६ ग्रेण वेपसीन३६ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितनी मिलाकर २४ गोलियें करणी उसमेंसें एकेक गोली जीमते वखत लेणी.

अजीर्ण इलाज.

(६०२) सालवोलैं टाट्रल ९० वूंद सवनाइट्रेट ओफ विसमथ ४५ ग्रेण हाइड्रोस्पानिक एसिड १५ वूंद कारवोनेट ओफ मेगनीज्या ३० ग्रेण पेपरमींटका पाणी ३ औंस कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कारडेमम २ द्राम मिलाकर एकेक औंस . तीन वखत देणी.

(५८२) किनाइन १२ ग्रेण पाणी ६ औंस डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड १५ वूंद मिलाकर तीन २ घंटेसें दोदो औंस दुसरा बुखार चढे जहांतक देणा.

तीक्ष्ण संधिवायु.

(५८३) वाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ द्राम आयोडाइड ओफ पोटास्पम ३० ग्रेण वाइन ओफ कोलचीकम ३० वूंद पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

(५८४) गंधककाफूल २ द्राम डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण सोरा १ द्राम चार पुडी करणी तीन २ घंटेसें देणा.

(५८५) नाइट्रेट ओफ पोटाश १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण उसकी तीन पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग दर तीन घंटेसे देणा.

(५८६) केलोमेल १२ ग्रेण टार्टर एमेटिक २ ग्रेण ग्वायाकमरेजीव २४ ग्रेण डोवर्स पाउडर २४ ग्रेण गूंदके पाणीमें १२ गोलियां करणी मात्रा १ गोली दिनमें ३या४वेर.

संधि वायु तीक्ष्ण नरम पडे पीछै इलाज.

(५८७) कारबोनेट ओफ आमोनिया १५ ग्रेण कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ बार्क १॥ द्राम पीरुवीयन वार्कका उकाला ६ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर मात्रा २ औंस.

संधि वायु पुराणा इलाज.

(५८८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १५ ग्रेण टिंकचर ओफ हायोसाइम १॥ द्राम चिरायतेकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर देणी.

(५८९) कोडलीवर ओइल ६ द्राम लाइकर पोटासी ४५ वूंद आयोडाइड ओफ ४ : ९ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत मात्रा दो औंस.

नजला [गाउट] इलाज.

(५९०) टिंकचर ओफ हेनबेन १ द्राम पाणी १ औंस दोनोंकों मिलाकर सोते वखत देणा वेदनाका रोग कम करणेकूं ये दवा देणी.

(५९१) एलोइ १ ग्रेण ब्ल्युपील १ ग्रेण एपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राकट ओफ कोलचीकम १ ग्रेण मिलाकर १ गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमें चार वेर देणी.

(५९२) वाइन ओफ कोलचीकम ४५ वूंद वाइकारबोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें ३ वखत पिलाणी.

पांडू इलाज.

(५९३) लिकरफेरीपर क्लोराइड ४५ वूंद लिकरस्ट्रीकन्या १५ वूंद टिंकचर डिजीटेलिस २० वूंद कास्याकी चा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

रक्तपित्त [स्कर्वी] इलाज.

५९४) क्लोरेट ओफ पोटाश १ द्राम टिंकचर सिंकोना कम्पाउन्ड ४ द्राम नींबूका रस

४ औंस मिश्री–२ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मिलाकर तीन चार वखत देणा मात्रा ॥ औंस.

जलोदर (कलेजेका इलाज.

(५९५) किनाइन ५ ग्रेण टिंकचर ओफ स्टील ४० वूंद नाइट्रोम्युरीयाटिक एसिड १५ वूद कलंभाकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणी मात्रा १ औंस.

जलोदर (कलेजेका) इलाज.

(५९६) फोसफेट ओफ आयर्न ६ ग्रेन एकस्ट्राकट नक्सवोमिका १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितना मिलाकर उसकी दो गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली देणी.

जलोदर इलाज.

(५९७) एलिया ४ ग्रेण ब्ल्युपील ४ ग्रेण रेवचीनीका सीरा ४ ग्रेण ज्युनिपरका तेज ४ वूंद मिलाकर ४ गोलियें करणी उसमेंसें २ गोली फजरमें देणी.

जलोदर (गुरदेका) इलाज.

(५९८) लाइकरएमोनी एसेटेटीस १ औंस एन्टीमोनियल वाईन ४० वूंद एप्सम सोल्ट ३ द्राम केम्फर वोटर ३० औंस.

जलोदर (नाताकती)

(५९९) टिंकचरओफ स्टील ३० वूंद डाइल्युट एसेटिक एसिड २० वूंद एसेटेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा मात्रा २ औंस.

मुखपाक इलाज.

(६००) ओप्समसोल्ट ४ द्राम क्लोरेट ओफ पोटाश ४० ग्रेण लिकरआमोनी एसेटेटीस १ औंस पाणी २ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

अजीर्ण डेस्पेपस्या इलाज.

(६०१) रिडयुस्ड आयर्न २४ ग्रेण एकस्ट्राकटनक्स वोमिका ६ ग्रेण वेपसीन३६ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितनी मिलाकर २४ गोलियें करणी उसमेंसें एकेक गोली जीमते वखत लेणी.

अजीर्ण इलाज.

(६०२) सालवोलै टाइल ९० वूंद सवनाइट्रेट ओफ विसमथ ४५ ग्रेण हाइड्रोस्पानिक एसिड १५ वूंद कारवोनेट ओफ मेगनीश्या ३० ग्रेण पेपरमींटका पाणी २ औंस कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कारडेमम २ द्राम मिलाकर एकेक औंस दिनमें तीन वखत देणी.

अजीर्ण.

(६०३) लाइकर पोटासी ३० बूंद चूनेका पाणी १ औंस मिलाकर उसके दो भाग फजर सांझ ताजे दूधमें मिलाकर देणा.

अजीर्ण तुरतका इलाज.

(६०४) कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कार्डामम ६० बूंद कारबोनेट ओफ सोडा २० ग्रेण पाणी २ औंस.

कबजीयत जीर्ण इलाज.

(६०५) रेसीन ओफ पोडो फाइल ½ सै १ ग्रेण क्यालोमेल २ ग्रेण एकस्ट्राकट ओफ हायोसाइम ४ ग्रेण मिलाकर १ गोली बणाणी रातकूं सोते बखत लेणी जलोदर सोजा मगज तथा कलेजेके दरदमें उपयोगी है.

कबजीयत जीर्ण इलाज.

(६०६) कम्पाउन्डरुबार्बपील ४८ ग्रेण ब्ल्युपील २४ ग्रेण मिलाकर इसकी १२ गोली करणी एकेक गोली एक दिनके आंतरे रातकूं लेणी.

कबजीयत.

(६०७) पाउडर अेपीका क्युआन्हा ३ ग्रेण हाइड्राजीरार्इकमक्रीटा ६ ग्रेण दो पुडी करके फजर सांझ पाणीके संग पीणी-

कबजीयत.

(६०८) एकस्ट्राकटनक्सवोमिका ४ ग्रेण एलोझ २० ग्रेण क्रीनाइन ९ ग्रेण कन्ड पील २४ ग्रेण चारोकों मिलाकर १२ गोलिये करणी और रातकूं सूती वखत एकेक लेणी.

अतीसार मरोडा इलाज.

(६०९) टिंकचर ओफ केटेक्यु (कथा) १ द्राम पेपरमिटका तेल १ बूंद एरोमेटिक सल्फ्युरिक असिड १५ बूंद इन्फ्युझन ओफ केटेक्यु १ औंस मिलाकर दिनमें दो तीन बखत पीणा.

(६१०) टिंकचर ओफ केटेक्यु ।। द्राम बीलका प्रवाही सत्व २ द्राम स्पिरिट क्लोरोफोर्म १ द्राम तजका पाणी १ द्राम.

(६११) क्लोगे डाइन २० बूंद पाणी १ औंस दर तीन घंटेसें दस्तबंध होय जहांतक देणा.

अतिसार इलाज.

(६१२) म्यालिक एसिड १५ ग्रेण डोवर्से पाउडर ५ ग्रेन दोनोंकों मिलाकर एक पुडी करणी एसी एक पुडी दर चार घंटेसें देणा.

(६१३) रुबार्ब पाउडर १२ ग्रेण इपीकाक्यु आन्हा पाउडर ३ ग्रेण सूंठका भूका ६ ग्रेण तीन भाग कर तीन वखत देणा.

मरोडा इलाज.

(६१४) स्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण सहतमें मिलाकर तीन गोली करणी दिनमें तीन वखत देणी स्युगरलेडके वदले नीला थोथा १ ग्रेण लेणा.

पुराणा मरोडा इलाज.

(६१५) नीलाथोथा १ ग्रेण क्विनाइन ४ ग्रेण अफीम १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन ४ ग्रेण मिलाकर इसकी ४ गोलियें करणी दिनमें तीन चार वखत एकेक लेणी.

चूंक इलाज.

(६१६) एरंडीका तेल १ औंस लाडेनम १० वूंद पीपरमिंनटका अर्क १० वूंद पाणी २ औंस मिलाकर एक वेर पीजाणा.

चूंक इलाज.

(६१७) स्पिरिट ओफ इथर ४० वूंद टिंकचर ओफ जींजर ३० वूंद एप्समसोल्ट ३ द्राम पीपरमेन्टका पाणी १ औंस मिलाकर एक वखतमें पिला देणा.

उलटी इलाज.

(६१८) सोडा वाइकार्व १५ ग्रेण साइट्रिक एसिड १० ग्रेण अथवा सोडा वोटर

हिचकी इलाज.

(६१९) क्लोरोफोर्म २ वूंद इथर सल्फ्युरिक १० वूंद तजका तेल २ वूंद क्रियासोट २ वूंद हाइड्रोस्पानिक एसिड डिल्युट ५ वूंद सालवोले टाइल ३० वूंद ब्रांडी २ द्राम टिंकचर ओफ वेलेरीयन ॥ द्राम पाणी १ औंस सवोंकों मिलाकर दर दोदो घंटेसें पिलाणी.

हैजामरी

(६२०) सालवोले टाइल २० वूंद पीपरमिन्टका अर्क १५ वूंद लाडेनम (अफीमका अर्क) २० वूंद ब्रांडी अथवा कांदेका रस ॥ औंस मिलाकर उसमें वरावरका पाणी डाल दर दोदो तीन २ घंटेसे इस प्रमाणसे देणा.

हेजा केदस्त इलाज.

(६२१) सल्फ्युरिक एसिड डिल्युट १० वूंद कार्वोलिक एसिड १ वूंद टिंकचर ओफ आयोडीन ३ वूंद क्विनाइन ५ ग्रेन कपूरका पाणी १ औंस मिलाकर तीन वखत पीणा.

तीक्ष्ण कलेजेका दरद इलाज.

(६२२) नवसादर ४० ग्रेण करमाला १ तोला सोराखार २० ग्रेण चिरायतेका काढा ३ औंस मिलाकर उसका दो भागकर फजर सांझ देणा.

कलेजेका दरद अमूंझणी मूंधोरा इलाज.

(६२३) नवसादर ३० ग्रेण स्पिरिट नाइट्रिक इथर १॥ ड्राम ६ औंस पाणीमें मिलाकर दोदो औंस दर तीन घंटेसें पिलाणा.

पुराणा कलेजेका दरद इलाज.

(६२४) कारबोनेट ओफ एमोनिया १५ ग्रेन टिंकचर ओफ शीला ३० बूंद टिंकचर केम्फरकम्पाउन्ड १॥ ड्राम कपूरका पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाणा.

कलेजेका पकणा इलाज.

(६२५) क्विनाइन ६ ग्रेण पाणी ३ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड १५ बूंद एकेक औंस तीन वेर लेणी.

कामला इलाज.

(६२६) पोडोफाइलम ६ ग्रेण रुबार्ब १८ ग्रेन एकस्ट्राकट हायोस्यामस ४० ग्रेन मिलाकर १२ गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली लेणी.

कामला पांडू इलाज.

(६२७) एप्सम सोल्ट ४ ड्राम एसेटेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन सोराखार १५ ग्रेण नवसादर ३० ग्रेन ज्युस ओफ टाराक्षकम २ ड्राम चिरायतेका काढा ३ औंस मिलाकर तीन वेर पीणा.

कामला

(६२८) एप्समसोल्ट १ ड्राम कारबोनेट ओफ मेगनिस्या १२ ग्रेण सालवोले टाइल ३० बूंद पाणी ४ औंस मिलाकर दोदो औंस दिनमें दो बखत देणा.

तिल्लीइलाज

(६२९) पोटाश ब्रोमाइड ३० ग्रेन हीराकशी ६ ग्रेन एप्सम सोल्ट ३ ड्राम कास्याकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा.

रिदयरोग [हार्टडीसीझ] इलाज.

(६३०) सालवोले टाइल ३ ड्राम कार्बोनेट ओफ एमोनिया ३० ग्रेन सिंकोनाका काथ ८ औंस मिलाकर दोदो रुपे भर दर तीन घंटेसें.

रिदय रोग.

(६३१) टिंकचर डिजीटेलिस १५ बूंद टिंकचर ओफ स्टील ३० बूंद एसेटेट ओफ पोटाश ६० ग्रेन पाणी ३ औंस.

श्लेपम इलाज.

(६३२) हाइड्रो क्लोरेट ओफ मोर्फ्या २ ग्रेन सबनाइट्रेट ओफ बिसमथ ६ ड्राम गूंदकी बारीक भुकणी २ ड्राम मिलाकर तमाखूकी तरे सूंघणी.

श्वासकास हांफणी [ब्रोनकाइटीस]

(६३३) वाइन ओफ एन्टीमनी ४० वूंद स्पिरिटनाइट्रिकइथर २ द्राम टिंकच ओफ डीजीटेलीस २० वूंद टिंकचर एकोनाइट २० वूंद पाणी ४ औंस ४ भाग क दिनमें ४ वेर पीणा.

श्वासकास हांफणी.

(६३४) लाइकर एमोनी एसेटेटीस १ औंस ईपीकाक्यु आन्हावाईन १ द्राम टिंकचर एकोनाईट २० वूंद टिंकचर केम्फर कम्पाउन्ड २ द्राम टिंकचर शीला १ द्राम पाणी ३ औंस मिलाकर उसके ४ भाग कर हरेक भाग दर तीन घंटेसे देणा छोटे च चौंकों मात्रा १ सें ३ द्राम ऊपरमुजब.

पुराणा श्वासकास इलाज.

(६३५) सीरपसीला ४ द्राम डिल्युट नाइट्रिक एसिड ३० वूंद टिंकचर हायो स्याम २ द्राम टिंकचर टिजीटेलिस २० वूंद स्पिरिट ओफ क्लोरोफोर्म २ द्राम सिंकोना की चा ६ औंस मिलाकर हमेस चोथे भागकी दवा फजर सांझ पिलाणी.

श्वासकास.

(६३६) लिक्विड एकस्ट्राकट ओफ सारसापरिला ४ द्राम एपीकाक्यु आन्हा ६० वूंद टिंकचर सीला ४० वूंद मोलेठीकी चा ६ औंस मिलाकर इसके ४ भाग कर एकेक भाग फजर सांझ देना.

श्वासकास कफके संग.

(६३७) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर २० ग्रेण सालवोलेटाइल १ द्राम एक औंस पाणीमें मिलाकर पिलानेसें कफ अलग होकर निकलता है.

फेफसेका सोजा.

(६३८) एन्टीमोनियलवाईन ५ वूंद टिंकचर एकोनाइट २ वूंद पाणी ४ द्राम मिलाकर दिनमें ४ वेर पिलाणी.

फेफसेका सोजा न्युमोन्या.

(६३९) सालवोले टाइल ३ द्राम स्पिरिट नाइट्रिक इथर ३ द्राम एपीकाक्यु आन्हा वाईन १ द्राम टिंकचर सीला १ द्राम टिंकचर सेनीगा २ द्राम केम्फर घोट ४ औंस सर्वोंकों मिलाकर दिनमें ४ वेर पीना.

दमका इलाज.

(६४०) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ३ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ६ ग्रेण केम्फ (कपूर) ४ ग्रेण एकस्ट्राकट हायोस्यामस ९ ग्रेण मिलाकर इसकी ६ गोलिये बणाणी दो दो घंटेसे दो दो गोली देणी.

(६४१) सल्फेट ओफ किनाइन ९ ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न १२ ग्रेण एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ६ ग्रेण अफीम १ ग्रेण मिलाकर गूंदके पाणीमें ६ गोलियें करणी, एकेक गोली दिनमें २ वखत.

(६४२) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ५ ग्रेण टिंकचर बेलाडोना ५ बूंद पाणी १ औंस मिलाकरके दिनमें तीन वखत या दो वखत पीणा.

बडी खासी बच्चोंकी खुलखुलिया इलाज.

(६४३) सालवोलेटाइल ४० बूंद स्पिरीट ओफ क्लोरोफोर्म २० बूंद डीलयुट हाइड्रोस्पानिक एसिड १० बूंद लीकरमोफर्या १२ बूंद कपूरका पाणी १६ द्राम मिलाकर उसमेंसें ८ मा भाग तीन २ घंटेसें देणा.

खासी सूकी इलाज.

(६४४) एन्टीमोनियल वाइन ४० बूंद स्पिरिट नाइट्रिक इथर १ द्राम म्युसीलेज ओफ गम एकेश्या ४ द्राम कपूरका पाणी २॥ औंस मिलाकर उसमेंसें तीन भाग कर दिनमें तीन वखत देणा.

(६४५) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ६ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ९ ग्रेण मोलेठीका चूर्ण १२ ग्रेण मिलाकर तीन पुडी करणी चाटे जाय जितने सहतमें तीन वखत देणा.

खासी कफका इलाज.

(६४६) एपीकाक्यु आन्हा वाइन ४५ बूंद एलिकझर पेरीगोरिक ३० बूंद एमोनाएक मिकश्चर ३ औंस तीन हिस्सा कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६४७) कारवोनेट ओफ एमोनिया १० ग्रेण एपीकाक्यु आन्हा पाउडर १५ग्रेण कम्पाउन्डस्पिरिट ओफ लवंडर २० बूंद पाणी २ औंस मिलाकर सब दवा एक बेरमें पीणी थोडी देर पीछे ऊपरसे चा पीणी.

क्षय इलाज.

(६४८) लिकर पोटाश ३० बूंद टिंकचर सिंकोनाक पाउन्ड ९० बूंद कम्पाउन्ड केम्फर टिंकचर ९० बूंद टिंकचर सीला ३० बूंद पाणी ३ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६४९) सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न ३० बूंद डाइल्युटसल्फ्युरिक १० बूंद किनाइन ६ ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर उसमेंसें तीन वेर दिनमें देणा.

शिरके रोगका इलाज.

(६५०) पोटाश आयोडाइड १० ग्रेण चिरायतेके चा संग दिनमें तीन वेर देणा.

शिरका रोग.

(६५१) पोटाश ब्रोमाइड १ द्राम चिरायतेकी चा ३ औंस मिलाकर इसमेंसें एकेक औंस दिनमें तीन वेर देणी.

शिरका रोग इलाज.

(६५२) नवसादर १ द्राम चिरायतेकी चा ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दवा दिनमें तीन वखत देणी.

पित्तसे शिर दुखनेका इलाज.

(६५३) एप्समसोल्ट ४ द्राम सोडावाइ कारबोनास ४० ग्रेण पाणी २ औंस मिश्री २ द्राम टार्टरिक एसिड ½ द्राम नींबूका शरबत ४ द्राम पाणी ४ औंस नं० १ की दवा तथा नं० २ की दवा जुदी २ मिलाकर पीछै दोनुं प्रवाही मिलानेसें सोडावाटरकी तरे उफाण आनेसे उसकू पी जाणा.

रक्तपित्त होजरी तथा फेफसेका इलाज.

(६५४) एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १॥ द्राम एलिकझर पेरिगोरिक ४ द्राम सीनेमनवोटर ५॥ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

रक्तपित्तका इलाज २.

(६५५) श्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण गुलकंद ५ ग्रेण ४ गोलियें करणी तीन २ घंटेसे एकेक देणी.

(६५६) गेलिडएसिड ४० ग्रेण एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १ द्राम टिंकचर ओफ सीनेमन ४ द्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मिलाकर दो दो औंस दवा चार २ घंटेसें देणी.

मूंमेंसे रक्तपित्त खून गिरे इलाज.

(६५७) सल्फेट ओफ झींक ३० ग्रेण सहत १॥ औंस गुलाब जल १२ औंस कुरले करना.

(६५८) फुलाइ भई फिटकडी २० ग्रेण टिंकचर ओफ मर्ह २ द्राम आठ औंस पाणीमें मिलाकर उसका कुरला करना.

इलाज मिरगीका.

(६५९) पोटाश ब्रोमाइड ४५ ग्रेण टिंकचर हायासाइम १ द्राम सालवोलेटाइल १ द्राम टिंकचर वेलाडोना २० बूंद पाणी ३ औंस मिलाकर तीन वखत देना बच्चेकी मात्रा १ चमचा.

(६६०) पोटाश्यम ब्रोमाइड ओफ १ द्राम आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १२ ग्रेण कारबोनेट ओफ पोटास ४० ग्रेण टिंकचर ओफ ओरेन्ज ६ द्राम पाणी ५॥ औंस दो दो औंस फजर सांझ.

खेंचाताणका इलाज.

(६६१) पोटाश ब्रोमाइड १२ ग्रेण क्लोरलहाइड्रेट ५ ग्रेण पाणी १ औंस शरबत २ द्राम मिलाकर तीन २ वखत देनी तीन घंटेसें.

(६६२) क्यालोमेल ४ ग्रेण सांटोनीन २ ग्रेण मिश्री १० ग्रेण सहत तथा पाणीके संग ५ वर्षके बच्चेकुं देनेसें जुलाव होगा हिचकना मिटता है.

हिस्टीरीयेका इलाज.

(६६३) लाइकर मोफर्या १ द्राम क्यालोरलहाइड्रेट -॥ द्राम पोटाश ब्रोमाइड १ द्राम शरबत ८ द्राम दो औंस पाणीमें मिलाकर तीन भाग दिनमें तीन वेर देना.

(६६४) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम ३० ग्रेण चिरायतेकी चा ६ औंस आमोनी एटेड टिंकचर ओफ वेलेरीयन १ द्राम मिलाकर दिनमें तीन वेर दो औंस दवा पिलानी.

(६६५) फलावर्स ओफ सलफर २ औंस क्रीम ओफ टार्टर ४ द्राम नारंगीका शरबत अथवा सहत २ मात्रा १ द्राम दिनमें २।३ वेर.

ववासीरक इलाज.

(६६६) क्लोरलहाइड्रेट १० ग्रेण ब्रोमाइड पोटाश्यम १५ ग्रेण मिश्रीका पाणी १ औंस मिलाकर दर तीन या चार घंटेसे देनी.

धनुर्वातका इलाज.

(६६७) सिरप ओफ आयोडाइड ओफ आयर्न ६० बूंद आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें तीन वेर पीना.

(६६८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम २ ग्रेण रस कपूरका प्रवाही ९ बूंद चिरायतेकी चा ३॥ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर देणी.

सिफिलीस उपदंसका इलाज.

(६६९) पोटाश आयोडाइड १ द्राम लिकर हाइड्रापर क्लोरीड ६ द्राम एकस्ट्राक्ट सारसापरीला १२ द्राम टिंकचर चीरेटा ६ द्राम पाणी १० औंस मिलाकर $\frac{2}{3}$ भाग दिनमें तीन वेर देना.

(६७०) लीकर आर्सेनिक १ द्राम पोटाश आयोडाइड १ द्राम सीरप ओरेस्पाई ८ द्राम टिंकचर आयोडाइड१द्राम पाणी ८ औंस मात्रा$\frac{1}{2}$ दिनमें दो वखत जीमके लेना.

(६७१) केलोमेल २४ ग्रेण अफीम ३ ग्रेण चारे गोली वणाकर दिनमें तीन वेर देनी जोरके वेमारकुं देनी.

(६७२) ब्ल्युपील १८ ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न ६ ग्रेण अफीम २ ग्रेण ६ गोली वणाकर फजर सांझ लेनी एकेक.

(६७३) हाइड्रार्जीराइ कमक्रीटा १८ ग्रेण सल्फेट ओफ किनाइन १२ ग्रेण अफीम २ ग्रेण ६ गोली वणाकर फजर सांझ एकेक.

(६७४) लाईकर एमोनी एसेटेटीस २ औंस एसेटेट ओफ पोटाश ९० ग्रेण गूंदका पाणी १ औंस कपूरका पाणी ३ औंस.

प्रमेह सुजाकका इलाज.

(६७५) लाइकर पोटाश ६० बूंद टिंकचर हायोस्पामस २ द्राम सोराखार १ द्राम चूनेका पाणी ४ औंस मिलाकर इसका ४ भाग कर दिनमें ४ वखत पिलाणी.

(६७६) वालसमकोपेवा ओफ ४५ बूंद टिंकचर हायो साईम ९० बूंद पाणी ३ औंस लाइकर पोटास ४५ बूंद गूंदका पाणी १ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६७७) चंदनकातेल ४० बूंद कवाबचीनीका चूर्ण । तोला सोनागेरु । तोला गोखरूका चूर्ण । तोला मिलाकर इसके दोभाग करणा फजर सांझ सहतमें चाटणा.

(६७८) लाइकर पोटासी ४५ बूंद लाडेनम १५ बूंद केम्फर वोटर ३ औंस मात्रा १ लीकर ग्लास तीन वेर.

(६७९) सल्फेट ओफ झिंक १२ ग्रेन केम्फर ६ ग्रेन कम्पाउन्डकायनो पाउडर २० ग्रेन १२ गोलीकरके दोदो गोली दिनमें ३ वेर.

पुराणे प्रमेहका इलाज.

(६८०) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेन साइट्रेट ओफ आयर्न एन्डकवाइन्या १५ ग्रेन चिरायतेकी चा ३ औंस मात्रा १ लीकर ग्लास दिनमें तीन वेर पिलाणा.

(६८१) टिंकचर ओफ स्टील २० बूंद टिंकचर ओफ केन्थारीडीस ५ बूंद टरपेन्टाईन १० बूंद पाणी १ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाना.

(६८२) वाइकारवोनेट ओफ पोटाश ४० ग्रेन पाणी ४ औंस मिलाकर इसके ४ भागकर दिनमें चार वखत देणा.

पेसावमें पथरीका इलाज.

(६८३) वाइकारवोनेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन सोराखार १० ग्रेन साइट्रिक एसिड १५ ग्रेन पाणी ४० तोला मिलाकर एक दिनमें सब दवा पीजाणी.

(६८४) साइट्रेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेन पाणी ३ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वेर पीणा.

(६८५) एकस्ट्राकट जनश्यन १ ग्रेन मर्ह २ ग्रेन एलिया १ ग्रेन केशर १ ग्रेन मिलाकर एक गोली करणी ऐसी एकेक गोली दिनमें तीन वेर लेणी.

नष्टार्त्तव [दस्तानका] इलाज.

(६८६) गेलिक एसिड ४५ ग्रेन लिक्वीड एकस्ट्राकट ओफ अर्गट १॥ द्राम डिल्युटसल्फ्युरिक एसिड ४५ बूंद तजका पाणी ३औंस मिलाकर तीन भाग कर दिनमें ३ वेर लेणा.

लाल प्रदरका इलाज

(६८७) डिल्युटसल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद फिटकडी ३० ग्रेन हीराकसी ६ ग्रेन तजका पाणी ४॥ औंस.

ऋतुधर्म बहोत खून गिरणा.

(६८८) गेलिक एसिड ४० ग्रेन एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १ द्राम टिंकचर ओफ सीनेमम ४ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस.

(६८९) ओकसाइड ओफ झिंक २४ ग्रेन कम्पाउन्ड सीनेमन पाउडर १ ग्रेन वार्क पाउडर १ द्राम १२ पुडीकर दिनमें तीन वेर देणा.

दरद करके ऋतू धर्म होणा इलाज.

(६९०) लिकर हाइड्राजीरीपर क्लोराइड १॥ द्राम कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ सिकोन १॥ द्राम कम्पाउन्ड डिकोकसन ओफ सारिसापरिला ३ औंस.

गर्भाशय प्रदर इलाज.

(६९१) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेन कोडलिवर ओइल ६ द्राम चिरायतेकी चा ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीन वेर देणा.

हकीमी यूनानी नुसके.

हमेसका बुखार इलाज.

(६९२) सूंफ कासनी मोलेठी वनफसा ए दरेक तीन २ तोला पाणी २ रतल दवाकों कूट पाणीमें ऊकाल आधा पाणी रहेतव छाण उसका तीन भागकर दिनमें तीन वेर देणा दवाके पिलाते दरवक्त एकेक तोला गुलकंद अथवा मिश्री मिलाणी.

आंतरेका बुखार इलाज.

(६९३) कासनी तोला १॥ कुलफेके बीज तोला ॥ पाणी रतल ॥। इस दवायोंकों जो कूटकर पाणीमें तीन घंटे भिगाणा पीछे छाण तोला २ मिश्री मिलाकर इसका तीन भाग करणा और एक भाग दर तीन २ घंटेसे पिलाणा दस्त साफ नहीं होय तो मिश्रीके मावजेमें खीरकिस्त अथवा मांजू तोला १ पहली वेरमें डालकर पीनेसें पेट साफ होजायगा.

तीक्ष्णसंधि वायुका इलाज.

(६९४) सिपस्तान ६ दाणा उनाब १० दाणा कासणी तोला १ वनफसा॥। तोला ॥। सेर पाणीमें दो घंटे भिगाकर पीछे उसका नीतरा पाणी छाण कर तीनहिस्साकर दिनमें तीन वेर पिलाणा जो पेट कबज होय तो उसमें मांजू फल तोला १ तथा करमाला तोला १ डालणा.

(६९५) हरडेकी छाल तोला ॥। निशोत तोला । विसफायज तोला ॥। सातेरा तोला ॥। सुरंजन तोला । कासणी तोला १ गुलाबका फूल तोला १ इन सबोंकूं १॥

सेर पाणीमें उकाल आधा पाणी रहे तब छाण दिनमें तीन वखत पीणा दस्त वहोत होय तो पहली तीन दवा निकाल डालणी.

(६९६) केशर गहूंभर अफीम १० गहूंभर उसकूं एक औंस पाणीमें मिलाकर सांधेके दरदपर लेप करणा पाणी गरम चाहिये.

(६९७) एकली लुलमुल्क वावूना गुलखेरु जव खुवाजी दरेक एकेक तोला पीस पाणीमे सांधोंपर लेप करणा.

तिल्लीका इलाज.

(६९८) छोटी जो हरडे सातरा करफसके वीज वेखेकेवर ए हरेक ॥ तोला सूंफ १ तोला अनीसुन १ तोला अजखर । तोला इन सव दवाकूं जरा जो कूटकर १ सेर पाणीमें उकाल आधा रहे तव छाणकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा कूचा रहे सो पाणीमें भिगा रखणा और सांझकूं छाणकर उस पाणीमें मिश्री मिलाकर फेर पीणा दुसरे दिन थे नुसका दुसरा तइयार करणा.

तिल्ली इलाज.

(६९९) उसक तोला १ गूगल तोला १ जायफल तोला १ ए तीन चीजोंकों पीस उसमें वाइन (दारू)का थोडा सिरका सहत जेसा जाडा लेप होजाय इतना डाल णा ए दवा ताप तिल्लीपर दिनमें दो वखत लगाणी.

सन्निपातज्वर इलाज.

(७००) कासणी तोला २ कुलफेके वीज खोखरे करे भये तोला २ आलुबुखारे २० इन दवायोंकों ।॥ सेर जलमें दो कलाक भिगाणा पीछे पाणी छाण लेणा उसमें मिश्री २।३ तोला डालकर तीन वखत तीन २ घंटेसे पीणी.

हेजाकै दस्त इलाज.

(७०१) अनीसुन तोला १ अगर तोला १ मस्तगी तोला ॥ साहजीरा तोला ॥ इन दवायोंकों जो कूटकर १ सेर पाणीमें उकाल आधारख छाण लेणा ठंढा भये वाद वडा चमचाभर एक घंटेसे मिलाणा.

मरोडा आम खूनका इलाज.

(७०२) ईसवगुल तुखमरेहान (तुलशीके वीज) तुखमें मरो तुखमें वारतंग ए एकेक वीज एकैक तोला उसकी फकीकर उसमेंसें ॥ तोलाकी फकी दर ४ घंटेसें पाणी सें लेणा इसकूं चार तुखम कहते हैं.

पुराणा मरोडा इलाज.

(७०३) अनारकी सूकी छाल १ तोला मांजूफल ॥ तोला हब्बूल आस ५ तोला तथा सीपाकका सोडा १ तोला महीन चूर्ण कर उसमेंसें आधा तोलेकी ३ पुडी करणी दिनमें तीन वेर गूंदके पाणीमें पीणा.

चूंक शूल इलाज.

(७०४) सूंठ पीपर सेलारस केशर ए चार दोदो ग्रेन और अफीम तथा जुंदबेस्तर एकेक ग्रेन सबोंका बारीक चूर्णकर उसकूं गूंदके जलमें मिलाकर ४ गोली बनाणी एक २ गोली तीन २ घंटेसें देणी.

चूंक शूल पेट कबज इलाज.

(७०५) सकमोनिया (इस्केमोनी) १ तोला कालीमिरच १ तोला सूंठ १ तोला सताव सूका ॥ तोला टंकणखार ॥ तोला कुलफा ॥ तोला पानकी जड ॥ तोला इन सबोंकों कूट कपडछांनकर इसमेंसें १० से १५ ग्रेन दवा सहतमें मिलाकर देणा जरूर पडेतो दिनमें दो वेर देणी इससै दस्त साफ आता है.

कलेजेका सख्त सोजा इलाज.

(७०६) कासनी तोला ॥ पीचोरी बीज ॥ तोला दोनुं दवाकूं जो कूटकर ॥ सेर पाणीमें आधी घंटा भिगाकर नीतराजल लेकर उसमे मीठी अनारका रस तथा सिकंजबीन १॥ तोला डालकर सब पाणी फजरमें पीणा सांझमें फेर इसी मुजब ताजा बनाकर पीणा.

पीलिया बुखार प्यास इलाज.

(७०७) पीचोरीका बीज कासणी तथा सूंफ हरेक आधा २ तोला लेकर ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भीगाकर उसका नितरा पाणी लेकर ॥ तोला मिश्री डालकर पिलाणा एकेक वखतमें ताजी दवा बणाणी सो पीणी दस्त साफ नहीं आवेतो उसमें किरमालेकी गिर १ तोला डालणा.

पीलिया कामला इलाज.

(७०८) गुलेगाफेज अफसनतीन परेशी आवशान हरेक आधा २ तोला और रुबार्ब २० ग्रेन इन सबोंकों ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भिगाकर उसका नीतरा भया जल लेकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा दस्त जादा होयतो रुबार्ब थोडा डालणा अथवा बिलकुल नहीं डालणा इसतरे दर टेमोटेम दवा बणाणी थोडे दिन पीनेसें बुखारका पीलियाकामला मिटता है.

मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा इलाज.

(७०९) बेदाणा तोला । तुखमे खतमी तोला ॥ ईसबगोल तोला । इन तीनोंकों थोडे पाणीमें ॥ घंटे भिगाकर नितरा पाणी चीकणा लुआब जेसा उसमें थोडा सादा पाणी डाल पीणा दो चार दिन दोदो टंक पीणेसें मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा दाह आघात मिटता है.

(७१०) उनावदाणा १० सीपस्तान दाणा ६ आलुबुखारा दाणा ६ बनफसा तोला ॥ कासनी तोला । पीचोरीके बीज तोला ॥ हरडे तोला ॥ इन सब दवायोंकूं १ सेर पाणीमें उकाल आधा पाणी बाकी रहे तब छाण फजर सांझ पीणा अथवा इकेला बनफसाका शरबत फजर सांझ दोदो तोला पीणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७११) हरडकी छाल सातेरा अफसनतीन गुलेगाफेज ए दरेक आधा तोला कासनी ॥। तोला और कालीछड ॥ तोला इन सबोंकूं १ सेर पाणीमें उकालकर पाणी छान लेणा उसके दोहिस्सेकर फजर सांझ पीणा.

(७१२)रुवार्व ग्रेन ३० गूगल ग्रेन १५ गारेकुन ग्रेन ३० निसोत ग्रेण ३० गोलजरावंद ग्रेन १० अनीसुन ग्रेन १० उटींगण द्राम १ इन सबोंकों १ सेर पाणीमें ॥ घंटे उकालकर पाणी छाण फजर सांझ आधा २ पीजाणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७१३) अनीसुन तथा सूंफ दरेक आधा२ तोला जो कूटकर अधसेर पाणी उकलता उस दवायोंपर डालणा इनोकीचा करणी इसमें सोराखार २ द्राम डालकर पीछै शीशीमें भरणा फेर दोदो औस दिनमें तीन वेर पीणा.

श्लेष्म जुकाम नाकमेंसें पाणी गिरना गलादुखणा जरा बुखार इलाज.

(७१४) उनाब दाणा ७ सीपस्तान दाणा ७ बनफसा तोला ॥। खस २ तोला इनोंकों कूट एक पात्रमें रख ऊकलता जल ॥ सेर इसपर डाल थोडी देर भीगाये रखणा पीछे छाण दोहिस्सेकर फजर सांझ जरा मिश्री मिलाकर पीणा दोचारदिन इस मुजब ताजी २ दवा पीणेसें सलेपम मिटता है दस्तबंध होय तो खीर किस्त अथवा मांजू तो० १ डालकर पीणा.

श्लेष्म जुखाममें पक्का कफ पडे तब इलाज.

(७१५) जूफा तोला ॥ मोलेठी छीली भई तोला ॥। सूके अंजीर तोला ४ इन तीन चीजोंकूं फजर सांझ दोनूं वखत० ॥। सेर पाणीमें उकाल छाणकर पीतेवखत दरवखत तुरंज बीन तोला २ मिलाकर छाणकर पिलादेणा.

सूकी खासी इलाज.

(७१६) बेंदाणा तोला । उसका थोडा पाणीमें लुआब निकाल उसमें जरा मिश्री पिलाय पीणा.

सूकाखास इलाज.

(७१७) बनफसा तोला ॥ मोलेठी तोला ॥ तुखमे खतमी तोला । उनाबदाणा पांच कदूके बीजका मगज तोला । इन दवाओंकूं ॥। सेर पाणीमें उकाल आधापाणी बाकीर है, तब छाण जरामिश्री मिलाकर पीणासांझकूं इसके कूचे उकालकर पीणा.

(७१८) जूफा तोला ॥ परेशीयावशान तोला ॥ बेखे सोसन तोला । मोलेठी तोला ॥। अलसीका बीज तोला । करफसकी जड तोला । सूका अंजीर दाणा ४ इन

चूंक शूल इलाज.

(७०४) सूंठ पीपर सेलारस केशर ए चार दोदो ग्रेन और अफीम तथा जुंदबेस्तर एकेक ग्रेन सबोंका बारीक चूर्णकर उसकूं गूंदके जलमें मिलाकर ४ गोली बनाणी एक २ गोली तीन २ घंटेसें देणी.

चूंक शूल पेट कबज इलाज.

(७०५) सकमोनिया (इस्केमोनी) १ तोला कालीमिरच १ तोला सूंठ १ तोला सताव सूका ॥ तोला टंकणखार ॥ तोला कुलफा ॥ तोला पानकी जड ॥ तोला इन सबोंकों कूट कपडछांनकर इसमेंसें १० से १५ ग्रेन दवा सहतमें मिलाकर देणा जरूर पडेतो दिनमें दो वेर देणी इससै दस्त साफ आता है.

कलेजेका सख्त सोजा इलाज.

(७०६) कासनी तोला ॥ पीचोरी बीज ॥ तोला दोनुं दवाकूं जो कूटकर ॥ सेर पाणीमें आधी घंटा भिगाकर नीतराजल लेकर उसमे मीठी अनारका रस तथा सिकंजबीन १॥ तोला डालकर सब पाणी फजरमें पीणा सांझमें फेर इसी मुजब ताजा बनाकर पीणा.

पीलिया बुखार प्यास इलाज.

(७०७) पीचोरीका बीज कासणी तथा सूंफ हरेक आधा २ तोला लेकर ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भीगाकर उसका नितरा पाणी लेकर ॥ तोला मिश्री डालकर पिलाणा एकेक वखतमें ताजी दवा बणाणी सो पीणी दस्त साफ नहीं आवेतो उसमें किरमालेकी गिर १ तोला डालणा.

पीलिया कामला इलाज.

(७०८) गुलेगाफेज अफसनतीन परेशी आवशान हरेक आधा २ तोला और रुबार्ब २० ग्रेन इन सबोंकों ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भिगाकर उसका नीतरा भया जल लेकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा दस्त जादा होयतो रुबार्ब थोडा डालणा अथवा बिलकुल नहीं डालणा इसतरे दर टेमोटेम दवा बणाणी थोडे दिन पीनेसें बुखारका पीलियाकामला मिटता है.

मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा इलाज.

(७०९) बेदाणा तोला । तुखमे खतमी तोला ॥ ईसबगोल तोला । इन तीनोंकों थोडे पाणीमें ॥ घंटे भिगाकर नितरा पाणी चीकणा लुआब जेसा उसमें थोडा सादा पाणी डाल पीणा दो चार दिन दोदो टंक पीणेसें मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा दाह आघात मिटता है.

(७१०) उनाबदाणा १० सीपस्तान दाणा ६ आलुबुखारा दाणा ६ बनफसा तोला ॥ कासनी तोला । पीचोरीके बीज तोला ॥ हरडे तोला ॥ इन सब दवायोंकूं १ सेर पाणीमें उकाल आधा पाणी बाकी रहे तब छाण फजर सांझ पीणा अथवा इकेला बनफसाका शरबत फजर सांझ दोदो तोला पीणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७११) हरडकी छाल सातेरा अफसनतीन गुलेगाफेज ए दरेक आधा तोला कासनी ।।। तोला और कालीछड ॥ तोला इन सबोंकूं १ सेर पाणीमें उकालकर पाणी छान लेणा उसके दोहिस्सेकर फजर सांझ पीणा.

(७१२)रुवार्व ग्रेन ३० गूगल ग्रेन १५ गारेकुन ग्रेन ३० निसोत ग्रेण ३० गोलजरावंद ग्रेन १० अनीसुन ग्रेन १० उटींगण ड्राम १ इन सबोंकों १ सेर पाणीमें ॥ घंटे उकालकर पाणी छाण फजर सांझ आधा २ पीजाणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७१३) अनीसुन तथा सूंफ दरेक आधा२ तोला जो कूटकर अधसेर पाणी उकलता उस दवायोंपर डालणा इनोकीचा करणी इसमें सोराखार २ ड्राम डालकर पीछै शीशीमें भरणा फेर दोदो औंस दिनमें तीन वेर पीणा.

श्लेष्म जुकाम नाकमेंसें पाणी गिरना गलादुखणा जरा वुखार इलाज.

(७१४) उनाव दाणा ७ सीपस्तान दाणा ७ वनफसा तोला ।।। खस २ तोला इनोंकों कूट एक पात्रमें रख ऊकलता जल ॥ सेर इसपर डाल थोडी देर भीगाये रखणा पीछे छाण दोहिस्सेकर फजर सांझ जरा मिश्री मिलाकर पीणा दोचारदिन इस मुजब ताजी २ दवा पीणेसें सलेषम मिटता है दस्तबंध होय तो खीर किस्त अथवा मांजू तो० १ डालकर पीणा.

श्लेष्म जुखाममें पक्का कफ पडे तब इलाज.

(७१५) जूफा तोला ॥ मोलेठी छीली भई तोला ।।। सूके अंजीर तोला ४ इन तीन चीजोंकूं फजर सांझ दोनूं वखत० ।।। सेर पाणीमें उकाल छाणकर पीतेवखत दरवखत तुरंज वीन तोला २ मिलाकर छाणकर पिलादेणा.

सूकी खासी इलाज.

(७१६) वेंदाणा तोला । उसका थोडा पाणीमें लुआब निकाल उसमें जरा मिश्री पिलाय पीणा.

सूकाखास इलाज.

(७१७) वनफसा तोला ॥ मोलेठी तोला ॥ तुखमे खतमी तोला । उनावदाणा पांच कदूके बीजका मगज तोला । इन दवाओंकूं ।।। सेर पाणीमें उकाल आधापाणी वाकीर है, तब छाण जरामिश्री मिलाकर पीणासांझकूं इसके कूचे उकालकर पीणा.

(७१८) जूफा तोला ॥ परेशीयावशान तोला ॥ वेखे सोसन तोला । मोलेठी तोला ।।। अलसीका बीज तोला । करफसकी जड तोला । सूका अंजीर दाणा ४ इन

सबोंकूं फजर सांझ पोणसेर पाणीमें उकाल आधापाणी रखकर छाण थोडी मिश्री मिलाकर दिनमे दोवखत पीणा.

(७१९) शरबते जूफा तोला १ फजर सांझ अथवा मीठे विदामका तेल अथवा कद्दूके वीजोंका तेल छोटा चमचाभर दिनमें दोतीन वेर पीणेसें सूकी खासी मिटती है गलेमें खरखराट होय और गलासूका मालमदेतो तेल देते वखत रव्वेसूस तीनमासा पाणीमें घसकर तेलमें मिलादेणा और मूमें वी रव्वेसूस चूसणेकूं रखणा.

कफकी खासीका इलाज.

(७२०) कर फसकी जड तोला ३ सूंफकी जड तोला ३ वेखेकेबर तोला ३ जूफा तोला ४ इनदवायोंकों तीनसेर जलमें धीमी आंचसें उकाल आधा रहे तब छाणलेणा उसमें २० तोला मिश्री मिलाकर फेर उकालणा जब शरवत बणजावे उसकूं रख छोडणा उसमेंसे २।३ तोला फजर सांझ पीणा.

श्वास हांफणी दम इलाज.

(७२१) अंजीर सूकादाणा ५ उनाबदाणा ७ सीपस्तानदाणा ७ वनफसा तोला ॥ गायजुवान तोला ॥ इण सबोंकों १ सेर पाणीमे उकाल० ॥ सेर पाणी वाकी रहे तब छाण उसमें जरा मिश्री मिलाकर दोहिस्से कर फजर सांझ पीणा.

(७२२) अंजीर सूका तोला २ मेथी सूंफ ओसा [वजारमें तगर कहतें हैं] जूफा ये दरेक एकेक तोला इनसबोंकों रातकूं १॥ सेर पाणीमें भिगाकर फजरमें धीमी आंचसें उकाल आधा रहणेसें छाण उसमें १५ तोला सहत डाल फेर पीछै धीमी आंचसें उकालणा और पतला सरबत करणा पीछै उसमें इस्कीलकी भूकी अथवा जंगली कांदेकी भूकी ३० ग्रेण तथा केशर ५ ग्रेण डालकर अछीतरे मिलाकर एक काच तथा चीणीके पात्रमें रख छोडणा फजर सांझ एकेक तोला देणा.

(७२३) अफ तीमून तोला ॥ उसकूं ॥ सेर पाणीमें उकालणा आधा पाणी बाकी रहे उसमें जरामिश्री मिलाकर दिनमें दोवखत पीणा.

(७२४) मोलेठी छीली भई तोला १० परेशीयावसान तोला ३॥ खस २ तोला ३॥तोला जूफा तुखमे खतमी सूंफ अनीसुन येचार चीजों दरेक एकेक तोला उनाबदाणा ५० सीपस्तानदाणा ५० तीनसेर पाणीमें रातकूं भिगाकर पीछै धीमे आंचसें फजरमें उकाल आधा जल रहे तब छाण मिश्री १॥ सेर डाल फेर धीरे आंचसें उकाल पतले सहत जेसा शरबत बणाणा मात्रा १ तोलेसें ३ तोले दिनमें तीनवेर.

क्षयका इलाज.

(७२५) गुलाबके फूलकी सूकी कली डंखली विगरकी १॥ तोला बांबलका गूंद तोला १॥ गेहूंका सत्व तोला ॥। रव्वेसूस तोला ॥। कडाया गूंद तोला ॥। काली

तथा सपेद खसखस एकेक तोला तवाशीर सुफेद तोला १॥ केशर तीनमासा अलग २ कूट एकठी करणी और पाणीमें घोट ॥ तोलेकी टिकडियां या गोलीयों बांधकर सूकाणी मात्रा एकेक टिकडी फजर सांझ अथवा तीन वेर टिकडीका भूकाकर १ चमचा खसखसके शरबतके संग पीणा.

फेफसेमेंसें रक्तपित्तका खून गिरे सो इलाज.

(७२६) फिटकडीकी भूकी ग्रेण ३० बांवलके गूंदकी भूकी ग्रेण ४० मिश्रीकी भूकी ग्रेण ४० सबोंकों मिलाकर ४ पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग चार २ घंटेसे देणा.

(७२७) हीरादखन ॥ द्राम (कमरकस) अफीम १ ग्रेण इसकी ४ पुडी करणी तीन २ घंटेसे एकेक पुडी देणी.

रिदयरोग (पाल्पीटेशन ऑफ धीहार्ट इलाज)

(७२८) गुलेगाय जवान तथा गिले अरमनी दरेक तोला ॥ तवाशीर धाणेका मगज गुलाबका फूलसूका मिश्री ये चार चीज एकेक तोला जुदी २ कूट छांणलेणा पीछै सब संग मिलाकर उसमेंसें फजर सांझ । से ॥ तोला फाकणा.

कफकी खासी इलाज.

(७२९) मोलेठीका चूरा २४ ग्रेण लींडी पीपरका चूर्ण २४ ग्रेन बीजाबोल २४ ग्रेन कडवे विदाम छीले भये ग्रेन ३६ इन सबोंकों पीस गूंदके पाणीमें २४ गोली बांधणी उसमेंसें तीनचार गोली फजर इसी मुजब सांझकूं देणी.

(७३०) सेला रस ग्रेन १५ सहरी लोबान ग्रेन १५ बीजाबोल ग्रेन १२ अफीम ग्रेन २ इन दवाओंकुं पीस गुंदके पाणीमें १२ गोलियां बांधणी मात्रा गोली २ फजर २ सांझ.

(७३१) उसके ग्रेन २४ इस्कील अथवा जंगली कांदेका भूका ग्रेन १२ विरोजा अथवा खैर जव ग्रेन २४ उसकी १२ गोलियें करणी मात्रा गोली २.

रिदय रोग (हार्टडिझ) इलाज.

(७३२) दरुज्जे अकरवी नर्कचूर वमने सुपेद तथा वमने सुरख दरेक एकेक तोला लोंग कालीछड मस्तंगी और तमाल पत्र ए दरेक । तोला इन एकेक चीजोंकों अलग २ कूट पीछै एकत्र करणी उसमेसे दोदो आनी भर सहतमें चाटणी.

मिरगी (वाइ फेफरा) इलाज.

(७३३) एलिया ४ ग्रेण कालीछड १ द्राम गोरकुन १ द्राम मस्तंगी २० ग्रेण तूवेकी गिर ३० ग्रेण सकमोनिया ६ ग्रेण इनोंकों कूट २४ गोली वणाणी फजर सांझ दोदो तीन २ गोली लेनी दस्त जादा होय तो अंतकी दो चीजें निकाल डालणी.

(७३४) अनीसुन ॥ तोला सूंफ तोला ॥ चादरंजबोया १ तोला अंजीर सूका-

दाणा ४ इनदवायोंकूं १ सेर पाणीमें ऊकाल आधापाणी बाकी रहे तब छाण दो हिस्साकर फजर सांझ १ तोला गुलकंद दरबखत या मिश्री मिला पीणा.

(७३५) उस्ते खुदुस अफतीमुन सूंफ अनीसुन वनफसा बीसफायेज गुलाबके फूल हरडेदल वडीहरडाका दल ये दरेक आधा २ तोला निशोत। तोला एक बरतनमें रखकर ऊपरसे ऊकलता पाणी पून सेरडाल आधी घंटे भिगा रखणा फेर छाण दो हिस्साकर फजर सांझ थोडी मिश्री डालकर पीणा कितनेकदिन पीणेसें फायदा करता है जो दस्त बहोत होता होय तो आखरीकी चार दवा कम करणी अथवा निकाल डालणी.

लकवा (अर्धांग) का इलाज.

(७३६) कासणी तोला ॥ उनाबदाणा ७ ये दोय चीजोंकों खल २ ते अधसेर पाणीमें आधी घंटे भिगा रखणा इसकी चा तइयार करणी तीन हिस्सेकर दिनमें तीनवेर पीणा.

(७३७) कासनी तोला ॥ काली मुनका तोला ॥। बनफसा उनाब तथा गुलाबके फूल ये तीन एकेक आधा आधा तोला इनोपर ऊकलता ॥ सेर पाणीडाल आधी घंटा भिगाकर जरा मिश्री डाल दिनमें दोवेर पीणा दस्त साफ लाणेकूं किसी २ वखत सोनामुखी ॥ तोला किरमालेका गिर तथा खीरकिस्त १ तोला डालणा चाहिये.

(७३८) अनीसुन तोला ॥। सोआ अजवाण कीर्दमान तुखमेकरफस सूंफकी जड अजखर मोलेठी बेखेकेवर ये दरेक। तोला इनोंको १ सेर पाणीमें उकाल आधा रहे तब छान उसमें १ तोला गुलकंद डाल सब पाणी फजरमें पीजाना इसतरे हमेस फजरमें ताजी दवा बणाकर पीणा.

(७३९) एलिया १२ ग्रेन तूंबे कडवेकी गिर २४ ग्रेण फरफ्यून ६ ग्रेन गूगल २४ ग्रेन इनोंकों मिलाकर १२ गोलिये करणी और दिनमें दोवखत १ अथवा दो गोली खानी.

(७४०) सर कचूरो दरुज्जे अकरवी बहमनसुरख बहमनसुपेद कालीछड इलायची लोंग तमालपत्र दरेक ॥ तोला जुंदबेदस्तर पीपर सूंठ कस्तूरी ये दरेक। तोला १५ तोला सहत सेर पाणीमें धीमी आंचसें गरमकर इसका काथ याने शरबत तइयार करणा इसमें ऊपरकी चीजोंका महीन चूर्ण मिलाकर धीमे २ हिलाकर अवलेही तइयार करणा मात्रा १ सें १॥ ड्राम दिनमें २ वेर.

पुराने लकवेका इलाज.

(७४१) कुचीला तो २ गुलेगाजुवान सरकचूर उस्ते खुदुस करियागूंदसकाकुल ये दरेक एकेक तोला चंदनका बुरादा। तोला लोंग। तोला सूके आंवले १॥। तोले खोपरा छीला भया तथा चलगुजेका मगज एकेक तोला ४० तोला सहत लेकर सेर

पाणीमें मिला धीमी आंचसे शरबतकर उसमें ऊपरकी तमाम चीजों युक्तिसे मिलादेणा चाटण तइयार करणा मात्रा ॥ द्रामसें १ द्रामतक.

दरदके संग ऋतुधर्म.

(७४२) अजखर तुखमकरफस खस २ केडोडे ये तीनों आधा २ तोला अनीसुन १ तोला इनसबोंकों १॥ सेर पानीमें धीमे आंचसे उकाल आधापानी बाकी रहे वोछानकर दिनमें तीनवेर थोडी मिश्री मिलाकर दरदके वखत पिलाना.

हिस्टीरीया.

(७४३) हींग ९ ग्रेन हीराबोल १२ ग्रेन गंदाबेरोजा १२ ग्रेन इनोंकी गूंदके या क पानीमें १२ गोलियां करनी मात्रा एकेक गोली तीनवेर.

हिस्टीरीया.

(७४४) कालीछड (जटामासी) तोला १ तथा जूंदबे दस्तर तोला । इनोंकी क भुकनीकर गूंदके पानीमें २४ गोलिये बनानी मात्रा २ गोली दोवखत.

बच्चेका कृमि रोग.

(७४५) वायविडंगका मगज २१ ग्रेन छीली भइ निशोतकी भूकी ४ ग्रेन कपीला इन सबोंकों २॥ रुपयेभर ऊकलते जलमें पाव घंटे भिगाकर उसका नितराभया उपयोगमें लेना बच्चेकी मात्रा छोटे चमचेभर दिनमें ४ वेर.

बुखारके संगकृमि रोग.

(७४६) कासणी १५ ग्रेन कुलफेकाबीज १० ग्रेन अनारके जडकी छाल अथवा रकीछाल ५ ग्रेन धानाका मगज १५ ग्रेन २॥ रुपेभर ठंढे पाणीमें घोटकर इसके का नितराभया पाणी छानलेना मात्रादोच मचा दर तीन घंटेसें.

पित्तसे शिर दूखना.

(७४७) हरडेदल तोला ॥ वडी हरडकादल तोला ॥ आलुबुखारा दाना १० दाना १० सिपस्तानदाना ७ सवासेरपाणीमें मंद आंचसें उकाल आधापाणी रहे न फजर सांझ दोवखत मिश्री थोडीसी मिलाकर पीणा.

प्रमेह सुजाक.

४८) कबाबचीनी ३ तोला फटकडी पाव तोला कथा ॥॥ तोला महीन चूर्णकर दिनमें तीनवेर पानीसे लेनी.

खुजली.

४९) उनाबदाना ७ सीपस्तानदाना ७ सातेरा तोला ॥ परेशीयावसान तोला ॥ उकाल उसका नितरा पाणी लेकर मिश्री मिलाकर फजर सांझ पीणा.

रोगमें हरकोई एकही दवा दिये जाती है, फेर होमियोपथी इलाजमें जुलाब उलटी खून निकलवाणा वगेरे बलाष्टर मारफफोला उठाणा वगेरे तकलीप देनेके इलाज और रोगीकूं अशक्त करनेवाले इलाज बिलकुल भाग्य योगही स्यात् करते होयगें और तुरतही रोगपर असरकरे एसी दवा करनेकी चाल है, इत्यादि कारणोसें कितनेक रोगियोंकूं होमियोपथीक इलाज जादा अच्छा लगता है, रोग मिटाणेकी चिकित्सा पद्धतीमें एक तरफ एलोपथी ओर दुसरी तरफ होमियोपथी इसमेसें कोणसा इलाज अच्छा है, इसवास्ते अभिप्राय देना यह काम अभी तो मुस्किल है, रोगरूपी शत्रूओंका नाश करनेकूं ये सब युक्तियों विद्वानोने शास्त्र तथा बुद्धि बलसें सोधके निकाली है, और जहांपर जो युक्ति सहजसें जलदी हुक्म उठावै रोग मिटावै उसका आसरा लेना ये इस वखत चतुर बुद्धिवानोंका काम है, होमियोपथीक चिकित्सामें होमियोपथीक डाकटर तथा होमियोपथीक चिकित्सा पद्धतीकूं जाननेवाले रोगी जो दवा इस वखतमें वापरते हैं, उसमेके मुख्य २ दवायोंका उपयोग इस ग्रंथके छठे प्रकाशमें दाखिल किया है.

होमियोपथिक दवाये मुख्य करके दो तरेकी होती है, एक तो अर्क दुसरी गोलियांकी मात्रा सामान्य तोर २ बूंदकी है, और वडी छोटी गोलीकी सामान्य मात्रा २ और ४ है, गोलियां अर्क करते जलदी विगडती है, अर्थात् गुण रहित हो जाती है, इसवास्ते जिसकूं ये दवा वापरणी होय तो अर्कही दुरस्त वहोत दिनोंतक विगडता नहीं.

मूल दवाके प्रवाही अर्क (टिंकचर) के संग पाणी या स्पिरिट ओफ वाईन मिलाणेसें दवा जादा और कम जोरवाली होती है, मूल दवा Q निशाणीसें पहचाणे जाती है और दवाईके नामके संग वो निशाणी रखते हैं, मूल अर्कमें नव गुणा पाणी डालके जो प्रवाही वणानेमें आता है, उसके संग IXनिशाणी रखनेमें आती है,इसतरे IX सें उतरते आखरी 1000 X तक वढती घटतीकी शक्ति वाली दवा वण शकती है, और इस मुजव उसपर strength ऐसे चढते IX) 2x 3x एसे चढते २।००० X तक निशाणी रखनेमें आती है, वहोत करके रोग नया और तीक्ष्ण रूपमें 3०x की अंदरकी शक्तिवाली दवा जादे फायदे वंध होती है, और रोगके पुराणी हालतमें 30X पीछेके अंकवाली दवा फायदेवंध होती है, कितना स्ट्रेन्ग थवाली दवा देणी ये विशेष करके तो अनुभव और अभ्याससें समझ सकते हैं, लेकिन् इतना ध्यानमें रखणा के तीक्ष्ण रोगोमें 3x 6x वाली दवा जादा फायदा करती है, इपीकाक्यु आन्हा, चाइना, जेल्सीमीयम, और एसिट फोमफोरिकम ये दवाये IX रूपमें अच्छा फायदा करती है, हिपार सल्फ सीलीशीया एन्टीमनी कूड वगेरे 5x अथवा 6x के प्रमाणमें वापरते हैं, पुराणे रोगोंमें ये दवायें 30x के प्रमाणमें दिये जाती है.

होमियोपथीक दवा दिनमें थोडी वखत अथवा जादा वखत देना इस वातका खुलाशा तो रोगकी जाति और उसके लक्षणोंपरसें हो सकता है, वुखारमें ये दवा एकेक दो दो घंटेसे दिये जाती है, और कैदस्तकी वेमारीमें दश या पनरे मिन्टके फासलेसें देते हैं, नाडी तूट जाय तो पांच २ मिन्टसेभी दिये जाती है, पुराणे रोगोंमें दवा दिनमें मात्र एका ध वखतही देणी चाहिये और कितनेक रोग ऐसे भी है, सो एक दिनके फासलेसें अथवा दो तीन दिनके फासलेसें एक वेर ही दवा दिये जाती है, रोग ज्यूं जादा भयंकर होय उसके चिन्हमें जूं जोखम दिखाइ देवे तव दवा जलदी २ वहोत वखत देना चहिये वाहरके इलाजवास्ते होमियपैथिक दवाये अपने मूल रूपमें वापरते हैं, और ० निशाणीसें पहचाने जाती है.

देशी इलाजोंमें पथ्य पालनेकी वेर २ आज्ञा देनेमें आती है, तैसें होमियोपथिक दवाइमें भी पथ्य पालणेकी विशेष जरूरत है, होमियोपैथिक दवा लेनेवालेनें और रोगके चिन्ह सख्त होय ऐसे रोगीकूं तो जरूरही पथ्य करना दुसरी कोईभी दवा दवाके गुणवाला पदार्थ नसेवाला मादक पदार्थ उत्तेजक पदार्थ जेसेके चा काफी दारू सख्त खसवो स्वादवाली कोइभी चीज जेसेके आदा आंवली राई कपूर हींग लोंग जायफल अथवा जो चीजों गरम मसालेमें आती है, ऐसी सव चीजोंका त्याग करना.

वहोतसे कुटंववाले लोक होमियोपथिक दवाकी संदूक रखते हैं, और पेटीके संग तथा दवाओंकी शीशीयोंपर छापी भई सूचनामुजव उस दवाइयोंका उपयोग करनेमें आता है, मतलव होमियोपेथिक दवायें वैद्यदीपक मुजव साधारण दवा मुजव वहोतसे कूटंवोमें इस वखत चलणे लगा है इसवास्ते ऊपर लिखी थोडी सूचनाके संग इस पुस्तकमें होमियोपैथिक दवाओंका किसी २ जगे उपयोग दीया है.

क्रोमो पथी.

रंगसे रोग मिटाणा इस चिकित्साक्रमकूं क्रोमोपथी एशा दुसरे विलायतवालोने नाम धरा है, उसका सिद्धांत एसा है के शरीरमेंसे चोकस रंग कम होणेसें रोग होता है और वोरंग फेर लाणेसें रोग कष्टसाध्य तक दूर हो जाता है, मुख्य रंग लाल, आसमानी [ब्ल्यु] और पीला है वाकी हरा और सुपेद है रोग मिटाणेके पहले इस वातका निश्चय कर लेणा चाहियेकी वदनमेंसे कोणसा रंग कम होगया है, और पीछे एसा विचार पूरा होणा चाहिये के किसतरे वोरंग पूरा करणा वदनमें कोनसा रंग कम पड गया इस वातकी परिक्षा करणेकूं जोजो वात जाणणेकी जरूरी है उसमेंकी मुख्य २ नीचे मुजब इस परिक्षामें मूल चार जगे देखणेकी जरूरी है, आंखके डोलोंका रंग नखोंका रंग पेशाबका रंग और दस्तका रंग ४ लालरग जिसके वदनमे कम पड गया होगा उसके

रोगमें हरकोई एकही दवा दिये जाती है, फेर होमियोपथी इलाजमें जुलाब उलटी खून निकलवाणा वगेरे वलाष्टर मारफफोला उठाणा वगेरे तकलीप देनेके इलाज और रोगीकूं अशक्त करनेवाले इलाज विलकुल भाग्य योगही स्यात् करते होयगें और तुरतही रोगपर असरकरे एसी दवा करनेकी चाल है, इत्यादि कारणोसें कितनेक रोगियोंकूं होमियोपथीक इलाज जादा अच्छा लगता है, रोग मिटाणेकी चिकित्सा पद्धतीमें एक तरफ एलोपथी ओर दुसरी तरफ होमियोपथी इसमेंसें कोणसा इलाज अच्छा है, इसवास्ते अभिप्राय देना यह काम अभी तो मुस्किल है, रोगरूपी शत्रूओंका नाश करनेकूं ये सब युक्तियों विद्वानोने शास्त्र तथा बुद्धि बलसें सोधके निकाली है, और जहांपर जो युक्ति सहजसें जलदी हुक्म उठावै रोग मिटावै उसका आसरा लेना ये इस वखत चतुर बुद्धिवानोंका काम है, होमियोपथीक चिकित्सामें होमियोपथीक डाकटर तथा होमियोपथीक चिकित्सा पद्धतीकूं जाननेवाले रोगी जो दवा इस वखतमें वापरते हैं, उसमेंके मुख्य २ दवायोंका उपयोग इस ग्रंथके छठे प्रकाशमें दाखिल किया है.

होमियोपथिक दवाये मुख्य करके दो तरेकी होती है, एक तो अर्क दुसरी गोलियांकी मात्रा सामान्य तोर २ वूंदकी है, और वडी छोटी गोलीकी सामान्य मात्रा २ और ४ है, गोलियां अर्क करते जलदी विगडती है, अर्थात् गुण रहित हो जाती है, इसवास्ते जिसकूं ये दवा वापरणी होय तो अर्कही दुरस्त वहोत दिनोंतक विगडता नहीं.

मूल दवाके प्रवाही अर्क (टिंकचर) के संग पाणी या स्पिरिट ओफ वाईन मिलाणेसें दवा जादा और कम जोरवाली होती है, मूल दवा Q निशाणीसें पहचाणे जाती है और दवाईके नामके संग वो निशाणी रखते हैं, मूल अर्कमें नव गुणा पाणी डालके जो प्रवाही वणानेमें आता है, उसके संग IXनिशाणी रखनेमें आती है,इसतरे IX सें उतरते आखरी 1000 X तक वढती घटतीकी शक्ति वाली दवा वण शकती है, और इस मुजव उसपर strength ऐसे चढते IX) 2x 3x एसे चढते २।००० X तक निशाणी रखनेमें आती है, वहोत करके रोग नया और तीक्ष्ण रूपमें 3०x की अंदरकी शक्तिवाली दवा जादे फायदे वंध होती है, और रोगके पुराणी हालतमें 30X पीछेके अंकवाली दवा फायदेवंध होती है, कितना स्ट्रेनग थवाली दवा देणी ये विशेष करके तो अनुभव और अभ्याससें समझ सकते हैं, लेकिन् इतना ध्यानमें रखणा के तीक्ष्ण रोगोमें 3x 6x वाली दवा जादा फायदा करती है, इपीकाक्यु आन्हा, चाइना, जेल्सीमीयम, और एसिट फोसफोरिकम ये दवाये IX रूपमें अच्छा फायदा करती है, हिपार सल्फ सीलीशीया एन्टीमनी कूड वगेरे 5x अथवा 6x के प्रमाणमें वापरते हैं, पुराणे रोगोंमें ये दवायें 30x के प्रमाणमें दिये जाती है.

ब्राह्मी पुत्रीकूं सिखलाई फेर पूर्वोक्त पंचपरमेष्टीका आदि अक्षर एकेक लेकर जैनेंद्रव्याकरण बणाकर उसके सूत्रोंसें ॐ एसा प्रणव बीज सिद्धकूं साधकर बतलाया वो सिद्धांत चंद्रिकाके सूत्रोंसें हम साधकर दिखलाते हैं अरिहंतका अकार सिद्ध अशरीरीका अकार आचार्यका आकार उपाध्यायका उकार मुनिःका मूकार अ अ आ उ म् सवर्णे दीर्घः सह यह सूत्रसे दोनों अकार मिटकर आउम् रहा उओ इस सूत्रसे आ और उ मिलके ओम् भया मोनुस्वार सूत्रसें ॐ भया फेर विद्वज्जन विचारके देखेगें जिसके वदनमें लाल रंग कम पडा होवे उसकूं गद्देमेंसें सिद्ध परमात्माकी मूर्त्ति जो लाल रंगकी है, इसपर एकांतमें बैठकानोसे दुसरेका शब्द सुणाइ नहीं देवे एसी जगे मुखकी श्वासकूंरोकनाकसें श्वास लेता ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं मनमें जपता भया दोनुं नेत्र सिद्धमूर्त्तिपर रख्के लाल रंग बराबर होजायगा रोग निश्चे मिटेगा आसमानी रंग कम पडा होयतो साधूपदकी मूर्त्ति जो गद्देमे स्याम रंगकी है, उसपर पूर्वोक्त विधिकरे मनके अंदर ॐ ह्रीं नमो लोएसव्वसाहूणं जपे पीला रंग कम पडा होयतो आचार्य पदकी मूर्त्ति पीले रंग सुनेरी है, उसपर पूर्वोक्त विधिकरे मनमें ॐ ह्रीं णमो आयरिआणं एसा जाप जपे वीर्य रस कफ स्वेत रंग कम पडा होयतो अर्हंतकी मूर्त्तिपर पूर्वोक्त विधिकरे ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं जाप जपे हरा रंग कम होणेपर या वायुके विकारोंमें उपाध्यायकी मूर्त्ति हरे रंगपर एकाग्रता करे ओं ह्रीं णमो उवज्झायाणं एसा जाप करे इस विधिसें सर्व रोग मिटते हैं. इसकी विस्तार विधि बृहत्नमस्कार कल्पमे हैं, ये विधि सर्वज्ञ परमेश्वरकी बताई है, अब मनुष्यकृत इसका भेदांतर जो चला है सो लिखते हैं क्रोमोपथीका इलाज लेन्सीस याने काच करके वदनमे रंग देकर करणेका है उसके वास्ते खास जुदे २ रंगोंके काच चस्मे तथा दुरबीनके जेसा बाहरसें तेसें अंदरसें उपसे भये तइयार आते हैं लेकिन् एसा काच हरकोई अदमीकूं मिल सके एसा मुस्किल है, इसवास्ते क्रोमोपथीका इलाज हर कोइभी सहजसें करसके उसकेवास्ते एक सुलभ रीती सोधकर निकाले गई है, इस सुगम रीतके दो प्रकार है, १ जुदे २ रंगकी सीसीयों २ जुदे २ रंगके काच प्रथम शीशीयोंका इलाज जुदे रंगकी शीशीयों खाली एकठीकर उसकूं अछीतरे साफ करणा उसमें कूवेका पाणी अथवा वाफ रूप निकाला भया डिस्टील्ड पाणी अथवा वरसादका झेला भया पाणी भरणा और मजबूत बुचसे बंध करणा पीछै उस सीसीयोंकूं सूरजका सख्त धूपमें कमसे कम दो घंटेतक रखणा दोघंटेसे जादा धूपमे रखणेसें बाटलीका पाणी जादा गुणकारी होता है इसमुजब धूपमें रखा भया शीशीका पाणी दवा मुजब गुण करता है, और जुदे २ रंगकी बाटलीमें तइयार किया भया पाणी जुदे २ रोगोंपर असर करता है, शीशीयोंको दर तीसरे दिन बहोत अछीतरे धोकर साफ पारदर्शक करणी चाहिये नहीं तो उसमें धूपका तइयार किया भया पाणी अछीतरे असर करेगा नहीं. इन शीशीयोंका

जल रोगोंपर वाहिर लगाणेमें तथा अंदर पीणेमें दोनोंतरे फायदा करता है, इस पाणीकी मात्रा वडी ऊमरवालेकूं२॥ रुपिये भरकी है ऊमरके वधघटमुजव इस पाणीकी मात्रा कम वेसी करी जाती है, पुराणे रोगोंपर ये पाणी दिनमें कम देणा चाहिये और ऊपर लगाणेमें ये पाणी चाहे जितना लगाया जाता है कोइ किसमका डर नहीं है, खांड अथवा खांडकी गोलियां चोमासेमें काम देती है कारण चोमासेमें सख्त धूप गिरता नहीं. तव एसा पाणी तइयार होसकता नहीं और एक वखत शीशीमें तइयार किया भया पाणी एकाध दिनसे जादा गुणवाला रह सकता नहीं इसवास्ते एसी ऋतूकेवास्ते सिद्ध चक्रके गट्टेके रंगका अथवा यंत्रके स्नानका जल अथवा क्रोमोपथीके रंगका इलाज करणेवास्ते शीशीयोंमें मिश्री अथवा होमियोपैथियोकी वनाई भई खांडकी गोलियां जुदे २ रंगकी शीशीयोंमें भरके एक पखवाडेतक हमेस सूर्यके धूपमें धरणा चाहिये पीछे इस मिश्रीका या गोलियों का रोगोंपर अनेक प्रमाणमें वरतावा करणा.

(**काचका इलाज**) जुदे २ रंगके काचका याने काचमेसें पसरी भई रोसणीका दवामुजव रातका तेसें दिनका उपयोग हो सकता है, दिनकूं ओरेमें उजाला आणेका सव रस्ता वंधकर रंगीन काचवाली वंध करी भई काचकी रोसनी रोगीके शरीरपर लेणेसें वो रोसनी दवाका काम करती है, और जिस तरेके रंगकी जरूरी होय वोही रंगकी काचकी रोसनीका उपयोग करणा. वदनके जिस जगे रोग होय उसही जगे उस रंगके काचकी छाया पडे एसा होणा चाहिये जो धूपकी सख्त रोसनी नहीं सही जाय एसा होय तो उजाला होय एसी धूप विगरकी याने छायावाली जगामें ये इलाज अजमाणा रातकूं काचके रंगका उपयोग करणेकूं लालटेन रंगीलका उपयोगकरणा चारोंतरफ चार रंगका काच लगवाणा लाल आसमानी हरा पीला पीछै जिसरंगकी रोसणी रोगीके वदनपर अथवा रोगकी जगे देणा होय उस भागपर वेसे काचकी रोसणी अंदर धरी चराकसें गिरती है.

रंगोंकी वदनपर असर–१ ब्ल्यु (असमानी) गहरा काला लाल पीला वगेरे रंग जुदे २ वदनपर कैसा असर करता है उसकी सामान्य समझ नीचेमुजव.

ब्ल्यु–आसमानीरंग–आसमानी लाल पीला इन मुख्य स्वाभाविक रंगोंमें आसमानी रंग जादा जरूरीका है. सृष्टिका दरेक प्राणी आसमानीरंगके भानमे जीते हैं. याने आकाश तथा सर्व साधुपदकी थापनाका आसमानी रंग है. इसवास्ते दुनियां अवाद रहती है ये ब्ल्यु रंग ठंढा शांति देणेवाला स्तंभक (दस्त तथा खूनके प्रवाहकूं अटकाणेवाला) वदनकी गरमी तथा उष्णताकूं मिटाणेवाला है. एसाही शांतदांतके दातार अशुभ कर्मोंकेवश अधोगतीमें जाणेवाले जीवोंके स्तंभक क्रोधादि कषायकी उष्णताकूं मिटाणेवाले षट्कायाके पालक आकाश जैमें सुपेत वदलोंकों धारणकर सर्व तरेका रस

पैदा करनेवाला मेघ वरसता है, तैसे जती साधु श्वेत वस्त्र धारणकर अनेक स्याद्वादनय. वादकी धाररूप झडीसें वाणी अमृतरूप मेघ वरसाते नव रसोंका स्वरूप प्रकट करते हैं, इस रंगका पाणी अथवा प्रकाश इतने रोगोंमें जादा फायदे वंद है.

(१) गरमीके रोग.	(२) चमडीके रोग.
(३) हैजामरी.	(४) व्युबोनिक प्लेग.
(५) हडकवायु.	(६) मरोडा.

गहराव्ल्युरंग–इस रंगमें नीलका रंग अथवा जामूनी रंगका समावेश होता है, इस रंगमें लाल रंगका अंश होता है, कितनेक रोगोंमें व्ल्यु रंगके संग लाल रंगकी भी जरूरी पडती है, उस जगे ये रंग फायदा करता है, जिनरोगोंमें खुला आसमानी रंग वापरणा कहा है, और जो रोग वुड्ढे तथा नाताकत अदमीकूं भया होय उहां खुला आसमानी रंगकी एवजीमें गहरा आसमानी रंग वापरणा–फेफसेका वरम (न्यूमोनिया) श्वास-नलीका सोजा खालीठसका और वच्चेकी कुकडिया खासी वगेरे रोगोंमें गहरे व्ल्यु रंगका पाणी पीणेकूं देणेमें आता है, वहोत दिनोंकी वदहजमी पेटका रसविकार जिसमें अंगार सीजले तथा उलटी होय और दस्तमें गहरा व्ल्यु रंग फायदा करता है.

पीलारंग–शुद्ध पीले रंगकी शीशियों मिलणी मुस्किल है, जो वजारमें पीले रंगकी शीशियों मिलती है, उसमें लाल रंगका जरा अंस होता है, इसकूं फीका नारंगीके रंगके नामसें लोक कहते हैं, जिस रोगमें लाल रंग फायदा करता है, उसरोगोंमें वीश वरसके अंदरके दरदियोंपर पीला रंग वापरणेसें जादा फायदा करता है पीले रंगकी वाटलियोंके पाणीका उपयोग इनरोगोंमें करणा (१) पेटकी कवजी (२) वदहजमी (३) रक्तपित्त जिस रुजगारवालोंकूं वहोत देरतक वैठे रहणा पडता होय जैसेंके दुकानदार वेपारी और कोर्टोंमें वैठके काम करणेवालोंकूं ये रंग वहोत फायदा करता है.

लाल रंग–गरमी देता है, नसोंकूं ढीलीकर श्रावकूं वढाता है, और वदनकी सुस्तीकूं मिटाय वदनमें तेज लाता है, जादा आसमानी रंगसें वदनके जो भाग सुकड गये होय उसकूं लाल रंग खुलाकर देता है, इस रंगसे लकवा वगेरे वायुके रोग अच्छा होणा संभव है.

इतिश्रीमज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे औपध्यादि निघंटवर्णनो नाम पंचमः प्रकाशः ॥

प्रकाश ६ छठा.

परिक्षा इलाज पथ्य.

इस छठेप्रकाशमें नीचे लिखे विषयोंकों किरणोंद्वारा प्रकट किया है.

किरण पहली १ वदनके सामान्य रोग,
किरण दुसरी २ श्वासोश्वासकी क्रियाके रोग,
किरण तीसरी ३ रक्ताशयसंबंधी रोग,
किरण चौथी ४ पक्काशयसंबंधी रोग,
किरण पांचमी ५ मूत्राशयसंबंधी रोग,
किरण छठी ६ मगजसंबंधी रोग,
किरण सातमी ७ आंख कान नाकके रोग,
किरण ८ मी–चमडीके रोग,
किरण ९ मी–छुटकर रोग,
किरण १० मी–स्त्रीयोंके रोग,
किरण ११ मी–बच्चोंके रोग,
किरण १२ मी–पशुओंके रोग,
किरण १३ मी–मरदमीकी दवा,
किरण १४ मी–छुटकर इलाज,

किरण पहली १

ज्वर–बुखार.

(बुखारका संक्षेपवर्णन)–बुखारका मरज जेसा सामान्य है, तैसे बडासख्त भी है, सब रोगोंमें वो मुख्य होणेसें वो रोगोंका राजा कहलाता है बुखारोके कितनेही भेद है, लेकिन् ये सब तरेका बुखार किस मूल कारणसें पैदा होता है, तथा किसतरे चढता है, और उतरता है, इन सब बातोंका संतोष करनेवाला समाधान करनेकूं विद्वान लोक अभीतक कोईभी शक्तिवान् नहीं भया है, किसीभी ग्रंथमें ज्वरकी बावत समाधान पूरा खुलासेके संग किया भया नहीं है, बुखारका विषय बहोत गहन है, इसवास्ते ऐसे ग्रंथोंसें बुखारका फकत सामान्य स्वरूप और उसकी सामान्य चिकित्सा जाणनेमें आवे इतनाही बस है, एसा विचार कर इसजगे मुख्य २ बुखारका कारण लक्षण और उपाय बताणेमें आया है.

वदन गरम होकर तपना अथवा वदनमें जो स्वाभाविक उष्णता होणी चहिये उससें जादा गरम होना ये बुखारका चिन्ह है, लेकिन् इसतरे शरीर तपनेका क्या कारण है, और वो क्रिया किसतरे होती है, ये बावत बहोत सूक्ष्म है, देशी वैद्यकशास्त्र बुखारका खुलासा इसतरे किया है, वात पित्त कफ ये तीनों दोप अयोग्य आहार विहारसें जठरमें जाकर रसकूं दूपितकर कोठेकी अग्निकी उष्णताकूं बाहर निकाल ज्वरकूं पैदा करता है, इस बावतकूं विचारते एसा सिद्ध भया के वाय पित्त कफ इन तीनोंकी समानता यही आरोग्यताका चिन्ह है, और विषमता अथवा कम वेसीपणा येही रोगका चिन्ह है, ये समानता अथवा विषमता आहार विहारपर आधार रखता है, इस क्रमके देखणेमें यहभी

सिद्ध भयाके जैसें वदनमें वायुका वढणा और रोगोंकों पैदा करता है, तैसें वातज्वरकूंभी पैदा करता है: इसीतरे पित्तकी अधिकता पित्तज्वरकूं कफकी अधिकता कफज्वरकूं पैदा करता है, इसमेंके दोदो दोपोंकी अधिकता दोदो दोषोंके लक्षणवाले ज्वरकूं पैदा करता है, और तीनों दोप विगडता है, तब तीनों दोपोंके लक्षणवाला त्रिदोष सन्निपात ज्वरकूं पैदा करता है.

(बुखारका भेद) बुखारके भेद किसतरे करणा ये तो वडी कठिन वात है, क्योंके बुखार वहोत कारणोंसे पैदा होता है, ये कारण दो प्रकारका है, आंतर याने शरीरके अंदरसे पैदा होनेवाला वाहिर याने वाहिरसे पैदा होनेवाला आंतर कारनोंका तीन भेद है, आहार विहारसें रश विगडकर बुखार आता है, उसमें सर्व साधारण बुखार जैसेंके तीन तो अलग २ दोपवाला दोदो दोपवाला तीनों दोपवाला विपमज्वर वगेरे ज्वरोंका समावेश होता है, और वदनके अंदर सोजा तथा गांठके होनेसें बुखार आता है, और जिसकूं अंग्रेजी वैद्यकमें बुखारके प्रकरणमें गिणनेमें नहीं आया लेकिन देशी वैद्यकमें जिसकूं बुखारके भेदोमें गिणा है, वो अंतर कारणसें आनेवाला बुखारका दुसरा भेद गिणा है, वाहिर कारणोंके ज्वरमें सर्व आगंतुकज्वर (जिनोंकी वावत पीछै लिखणेमें आवेगा) तथा हवामें उडते चेपी बुखारोंका समावेश होता है.

देशी वैद्यकशास्त्रमुजव बुखारका भेद– नीचेमुजव

(१) वातज्वर,	(६) कफपित्तज्वर,
(२) पित्तज्वर,	(७) सन्निपातज्वर,
(३) कफज्वर,	(८) आगंतुकज्वर,
(४) वातपित्तज्वर,	(९) विपमज्वर,
(५) कफवातज्वर,	(१०) जीर्णज्वर.

अंग्रेजी वैद्यकशास्त्रमुजव बुखारका भेद–नीचेमुजव.

(१) जारी बुखार उसके भेद नीचे मुजव.

(१) सादा तप (२) टाइफस (३) टाईफोइड (४) फिरफिर आनेवाला आंतरका भेद (१) हमेशका ठंड देके आनेवाला.

(२) एकांतर. देशी वैद्यकमुजव विपमज्वरके भेद.

(३) तेजरा (४) चोथिया.

(३) रिमिटंट फीवर–देशी वैद्यकमुजव विपमज्वरका एक भेद संतत.

(४) फूटकर निकलनेवाला बुखारका भेद नीचेमुजव

देशी वैद्यकमें मसुरिका क्षुद्ररोग तथा मूंधोरा नामसें लिखा है.

(१) शीतला,	(७) हेजामरीका तप,

(२) ओरी,	(८) इन्फल्युएनझा,
(३) अचपडा,	(९) मोतीज्वरा,
(४) लालबुखार,	(१०) पाणीज्वरा,
(५) रंगीला बुखार,	(११) थोथीज्वरा,
(६) रगतवायुविसर्प,	(१२) काला मूंघोरा.

(बुखारके सामान्य कारण) अयोग्य आहार और अयोग्य विहार ये बुखारका मान्य कारण है, इस कारणोंसे वदनका धातुविकार पाकर बुखारकूं पैदा करता है, योग्य आहार विहारमें बहोतसी बातोंका समावेश होता है, बहोत गरम तथा बहोत ा खुराक बहोत भारी खुराक बिगडा भया और बासी खुराक तासीरके विरुद्ध खुराक तु विरुद्ध खुराक बहोत महनत बहोत गरमी लेना अति ठंढ बहोत भूख बहोत बिलाश राब पाणी खराब हवा ये सब बुखारके तरे २ के कारण है.

(बुखारके सामान्य लक्षण)— बुखार बहार दिखाणेके पहले थकला त्तकी बेचेनी मूंमें विरसपणा आंखोंमें पाणी आणा जंभाई ठंढ हवा तथा पकी वेर २ इच्छा और भूखका अभाव अंगोंका टूटणा वदनमें भारीपणा रूंखडे णा खुराककी अरुचि इत्यादिकलक्षण सरू होते हैं, ज्वरभरे पीछै चमडी गरम मालम णा ये बुखारका प्रगट चिन्ह है, बुखारमें पित्त अथवा गरमीका मुख्य उपद्रव होता है, खार प्रगट भया पीछै वदनमें उष्णता भरणेके संगऊपर लिखे सब चिन्ह जारी रहते हैं.

वातज्वर.

(कारण) विरुद्ध आहार विहारसें कोपपाया भया वायु होजरीमें जाकर होजरीका स (आम)कूं दूषितकर ज्वरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उसकरके वातज्वर दा होता है.

(लक्षण) जंभाई आणा ये वातज्वरका मुख्य चिन्ह है, सिवाय बुखारका वेग मती वेसी होणा गला होठ तथा मूंका सूकणा निद्राका नाश छीकका बंध होणा में लूखापणा अवयवोंका दूखणा दस्तकी कबजी इत्यादिक दुसरे भी चिन्ह गडते हैं, ये बुखार जादातर वायुप्रकृतीवालेकूं तथा वायु प्रकोपकी मोशमवर्षा हूं होता है.

वातज्वरमें एकाधटक लांघनकर पीछे तासीर तथा दोषके अनुसार हलका खुराक लेणा ऊपर लिखासो बुखारका उत्तम पथ्य है, पथ्य यथार्थकरणेसें दवा नहीं लेणी पडती (२) लघुसुदर्शन चूर्ण (नं० ३२ में दिया भया है, उसकी फक्की अथवा फांटचा अथवा हिमकरके पीणा इसतरे लंघन तथा सादे इलाजसें बुखार नहीं जायतो सब बुखारवालोंकों तीनदिन बाद देवदारु तोला २ धाणा तोला २ सूंठ. तोला २ रिंगणी तोला २ वडी कंटाली तोला० २ देवदारू तोला २ इन सबोंकों कूट १ तोलेभरका काढा पाव पाणीका डेढ आना पाणी रखके देणा ज्वर पाचन होकर उतर जायगा अथवा सातमें दिन दोपकूं पकाणेकूं नं० २०० वाला (गुडुच्यादि क्वाथ) गिलोय सूंठ पीपरामूलका काढा शरू करणा उस करके बुखारका पाचन होकर ऊतर जायगा.

पित्तज्वर.

(कारण) पित्तकूं वधाणेवाले अहार विहारसें बिगडामया पित्त होजरीमें जाकर होजरीके रसकूं दूषितकर जठरकी गरमीकूं बाहर निकालता है, एक दोप कोपणेसें दुसरे दोषोंकों बिगाडता है, एसानियम है, इसवास्ते जठरमें गया दूषित पित्त जठरकी वायूकूं कोपाता है, और कोपी भई वायु अपणे स्वभाव मुजब जठरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उस करके पित्तज्वर पैदा होता है.

(लक्षण)–आंखोमे दाह जलण होणी ये पित्तज्वरका मुख्य लक्षण है, बुखार बहोत जोरका दस्त उलटी पसीना वकणा दाह प्यास कंठ होठ मूंकापकणा मल मूत्र नेत्र पीला होणा और भ्रम ये पित्तज्वरके दुसरे लक्षण है, जादातर पित्त प्रकृतीवालेकूं तेसें पित्तके कोपकी शरद तथा ग्रीष्मऋतूमें इस बुखारका विशेष उपद्रव होता है.

(इलाज) (१) लंघन, दोपके जोर मुजब एकटंक अथवा एकदिन अथवा भूख लगणेकी खबरपडे जहांतक लंघण कराणा अथवा मूंगके दालका पाणी भात अथवा साबूदाणे पीणा डाकदर दूध पिलाते हैं, पाचन देकर (२) पित्त पापडा अथवा घासिया पित्त पापडेका उकाला फांट अथवा हिम पीणा (३) पर्पटादि क्वाथ (नं० २०१) उसका फांट याहिम करके पीणा (४) दाख हरडे मोथ कुटकी किरमालेकी गिर और पित्तपापडा इनका काढा पीणेसें पित्तज्वर शोप दाह भ्रम मूर्छा वगेरे उपद्रव मिटकर दस्तसाफ आता है, (५) पित्तपापडा रगतचंनण सुपेद तथा काला दोनोंवाला इनोका उकाला फांट हिम पित्तज्वरकूं मिटाता है, (६) रातकूं ठंढे पाणीमें भिजाया भया धाणोका हिम अथवा गिलोयका हिम पीणेसें पित्तज्वरका दाह शांत होता है (७) पित्तज्वरके संग बहोत दाह होता होय तो कच्चे चावलोंके धोवणमें थोडा चंदन तथा सूंठकूं घसकर चावलोके धोवणमें मिलाकर थोडा सहत तथा मिश्रीडालकर पिलाणा.

(२) ओरी,	(८) इन्फल्युएनझा,
(३) अचपडा,	(९) मोतीज्वरा,
(४) लालबुखार,	(१०) पाणीज्वरा,
(५) रंगीला बुखार,	(११) थोथीज्वरा,
(६) रगतवायुविसर्प,	(१२) काला मूंधोरा.

(बुखारके सामान्य कारण) अयोग्य आहार और अयोग्य विहार ये बुखारका सामान्य कारण है, इस कारणोंसे वदनका धातुविकार पाकर बुखारकूं पैदा करता है, अयोग्य आहार विहारमें बहोतसी बातोंका समावेश होता है, बहोत गरम तथा बहोत ठंढा खुराक बहोत भारी खुराक बिगडा भया और बासी खुराक तासीरके विरुद्ध खुराक ऋतु विरुद्ध खुराक बहोत महनत बहोत गरमी लेना अति ठंढ बहोत भूख बहोत विलाश खराब पाणी खराब हवा ये सब बुखारके तेरे २ के कारण है.

(बुखारके सामान्य लक्षण)— बुखार बहार दिखाणेके पहले थकेला चित्तकी बेचेनी मूंमें विरसपणा आंखोंमें पाणी आणा जंभाई ठंढ हवा तथा भूपकी वेर २ इच्छा और भूखका अभाव अंगोंका टूटणा वदनमें भारीपणा रूखडे होणा खुराककी अरुचि इत्यादिकलक्षण सरू होते हैं, ज्वरभरे पीछै चमडी गरम मालम देणा ये बुखारका प्रगट चिन्ह है, बुखारमें पित्त अथवा गरमीका मुख्य उपद्रव होता है, बुखार प्रगट भया पीछै वदनमें उष्णता भरणेके संगऊपर लिखे सब चिन्ह जारी रहते हैं.

वातज्वर.

(कारण) विरुद्ध आहार विहारसें कोपपाया भया वायु होजरीमें जाकर होजरीका रस (आम)कूं दूषितकर ज्वरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उसकरके वातज्वर पैदा होता है.

(लक्षण) जंभाई आणा ये वातज्वरका मुख्य चिन्ह है, सिवाय बुखारका वेग कमती बेसी होणा गला होठ तथा मूंका सूकणा निद्राका नाश छीकका बंध होणा वदनमें लूखापणा अवयवोंका दूखणा दस्तकी कबजी इत्यादिक दुसरे भी चिन्ह पेडते हैं, ये बुखार जादातर वायुप्रकृतीवालेकूं तथा वायु प्रकोपकी शीतमवर्षा ऋतुमें पैदा होता है.

इलाज (१) लंघन सब बुखारोंमें लंघन हितकारक है, तोभी दोष तासीर बालक वृद्ध शरीरकी स्थितिका विचारकर लंघन कराणा वातज्वर प्रथमें तीन लंघन कराणा लेकिन् शरीर ताकतवाला होय तो शक्ति मुजब १ से ६ तक लंघनकराणा लंघणकरणा याने मुदल नहीं खाणा एसा लंघनका अर्थ नहीं है, थोडाखाणा हलकाद-लिया या भात या मूंगकी अरहडकी दालपीणा ये भी लंघनही कहलाता है, साधारण

वातज्वरमें एकाधटक लांघनकर पीछै तासीर तथा दोषके अनुसार हलका खुराक लेणा ऊपर लिखासो बुखारका उत्तम पथ्य है, पथ्य यथार्थकरणेसें दवा नहीं लेणी पडती (२) लघुसुदर्शन चूर्ण (नं० ३२ में दिया भया है, उसकी फक्की अथवा फांटचा अथवा हिमकरके पीणा इसतरे लंघन तथा सादे इलाजसें बुखार नहीं जायतो सब बुखारवालोंकों तीनदिन बाद देवदारु तोला २ धाणा तोला २ सूंठ. तोला २ रिंगणी तोला २ वडी कंटाली तोला० २ देवदारू तोला २ इन सबोंकों कूट १ तोलेभरका काढा पाव पाणीका डेढ आना पाणी रखके देणा ज्वर पाचन होकर उतर जायगा अथवा सातमें दिन दोषकूं पकाणेकूं नं० २०० वाला (गुडुच्यादि क्वाथ) गिलोय सूंठ पीपरामूलका काढा शरू करणा उस करके बुखारका पाचन होकर ऊतर जायगा.

पित्तज्वर.

(कारण) पित्तकूं वधाणेवाले अहार विहारसें बिगडाभया पित्त होजरीमें जाकर होजरीके रसकूं दूषितकर जठरकी गरमीकूं बाहर निकालता है, एक दोष कोपणेसें दुसरे दोषोंकों विगाडता है, एसानियम है, इसवास्ते जठरमें गया दूषित पित्त जठरकी वायूकूं कोपाता है, और कोपी भई वायु अपणे स्वभाव मुजब जठरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उस करके पित्तज्वर पैदा होता है.

(लक्षण)–आंखोमे दाह जलण होणी ये पित्तज्वरका मुख्य लक्षण है, बुखार बहोत जोरका दस्त उलटी पसीना बकणा दाह प्यास कंठ होठ मूंकापकणा मल मूत्र नेत्र पीला होणा और भ्रम ये पित्तज्वरके दुसरे लक्षण है, जादातर पित्त प्रकृतीवालेकूं तेसें पित्तके कोपकी शरद तथा ग्रीष्मऋतूमें इस बुखारका विशेष उपद्रव होता है.

(इलाज) (१) लंघन, दोषके जोर मुजब एकटंक अथवा एकदिन अथवा भूख लगणेकी खबरपडे जहांतक लंघण कराणा अथवा मूंगके दालका पाणी भात अथवा साबूदाणे पीणा डाकदर दूध पिलाते हैं, पाचन देकर (२) पित्त पापडा अथवा घासिया पित्त पापडेका उकाला फांट अथवा हिम पीणा (३) पर्पटादि क्वाथ (नं० २०१) उसका फांट याहिम करके पीणा (४) दाख हरडे मोथ कुटकी किरमालेकी गिर और पित्तपापडा इनका काढा पीणेसें पित्तज्वर शोष दाह भ्रम मूर्छा वगेरे उपद्रव मिटकर दस्तसाफ आता है, (५) पित्तपापडा रगतचंनण सुपेद तथा काला दोनोवाला इनोका उकाला फांट हिम पित्तज्वरकूं मिटाता है, (६) रातकूं ठंढे पाणीमें भिजाया भया धाणोका हिम अथवा गिलोयका हिम पीणेसें पित्तज्वरका दाह शांत होता है (७) पित्तज्वरके संग बहोत दाह होता होय तो कच्चे चावलोंके धोवणमें थोडा चंदन तथा सूंठकूं घसकर चावलोके धोवणमें मिलाकर थोडा सहत तथा मिश्रीडालकर पिलाणा.

कफज्वर.

(कारण) कफ करणेवाले पदार्थ अहार विहारसें दूषितभया कफ जठरमें जाकर जठरके रसकों दूषितकर उसकी उष्णताकूं बाहर निकालता है, कफकोपपाकर वायूकों कोपाता है, कोपी भई वायु उष्णताकूं बाहर लाती है.

(लक्षण)—अन्नपर अरुचि ये कफज्वरका मुख्य लक्षण है, शिवाय अंगोमें भीगा पणा बुखारका जोर मंद आलस मूंमे मीठास मलमूत्र नेत्रका रंग सुपेद अवयव अकड जाणा वदनमें भारीपणा ठंढ श्लेष्म बहोत नींद उबाकी छातीमे कफ मंदाग्निवगेरे दुसरे चिन्हभी होते हैं, ये बुखार विशेष करके कफ प्रकृतीवालेकूं तथा कफके कोपकी ऋतू वसंतमें होता हैं.

इलाज (१) लंघन कफज्वरके रोगीकूं लंघन विशेष सहन होता है, और योग्य लंघनसें दूषित भया दोपका पाचन होता है, इसवास्ते रोगीकूं जहांतक पक्की भूख नहीं लगे उहांतक खाना नहीं अथवा मूंगकी दालका ओसामण पीणा (२) गिलोयका काथ फांट अथवा हिमसहत डालकर पीणा (३) भुनिंवादि काथ (नं० २०२) (४) लींडी पींपर हरडे बहेडा आंवलोंकूं समभाग लेकर चूर्णकर उसमेंसें पाव २ तोला लेकर सहतमें चाटणेसें कफज्वर तथा उसके संगकी खासी श्वास कफ दूर होता है. (५) अरडूसेका पत्ता भूरींगणी तथा गिलोय इनोंका उकाला सहत डालके पीना.

दोदो दोप मिलातप.

दोदो दोप मिले तपमें दोदो दोपोंके लक्षण मिले होते हैं, और अनुभवी सूक्ष्म दृष्टि वाले वैद्यही पहचान सकते हैं, इस बुखारकूं द्वंद्वज और मिश्र कहतें है.

(वातपित्तज्वर) (१) लंघन (२) किरातादि काथ) चिरायता गिलोय दारु आंवला और कचूर इसकी उकालीमें गुड तीनवर्षका डालके पीणा (३) पंचभद्र क गिलोय पित्तपापडा मोथ चिरायता तथा सूंठका काढा.

(कफवातज्वर) (१) लंघन (२) लघुक्षुद्रादि काथ—पसरकंटाली सूंठ गिले एरंडीकी जड इनोका काढा (३) आरग्वधादि काथ—किरमालेकी गिर पीपलामूल मो कुटकी जो हरडे इनोंकी उकाली (४) इकेली लींडी पीपरकी उकाली.

कफपित्तज्वर (१) लंघन पाचन (२) लोहितचंदनादि काथ—रगतचंदन पदमा धाणा गिलोय और नींवकी अंतर छाल उकाली देनी (३) कुटकी आधा रुपियेभर जलमें पीस मिश्री मिलाकर पीणीया फाकणी इतनी गरम जलसें (४) अरडूस पत्तोंका रस (२ रु० भर) उसमें २॥ मासा मिश्री २॥ मासा सहत डालकर पीणा.

सादा जारी बुखार.

(कारण तथा लक्षण) अनियमित खानपांन अजीर्ण एकाएक अति ठंडीया गरम

लगणी उजागरा और अतिश्रम विशेष करके एसा सादा बुखार ऋतूके वदलनेसें हो जाता है, और उसकी मुख्य ऋतु मार्च अप्रेल अथवा वसंत तथा सप्टेंबर अक्टोंबर अथवा शरद है, शरदमें पित्तका बुखार होता है, वसंतमें कफका होता है, और जुलाइ महीनेमेंभी वरसादकी वातप्रकृतीवाली ऋतुमें वायुके उपद्रव समेत बुखार चढ आता है, ऊपर जो जुदे २ दोपका बुखार वर्णन किया है, उन सवोंकी सादे जारी बुखारमें गिणती हो सकती है, ये बुखार अंतरिया बुखारकीतरे चढा उतार नहीं रहता लेकिन एक दोदिन जारी बुखार आयकर तुरत उतर जाता है.

(इलाज) सादा जारी बुखारके ऊपर तीनों न्यारे २ दोप वाले इलाज लिखे हैं, इसके सिवाय सामान्य इलाज लिखते हैं, वो सव जारी बुखारपर चल सकते हैं, जहांतक बुखारमें किसी एक दोषका निश्चय नहीं होवे उहां इस इलाजोंकों चलाणा सादे जारी बुखारमें विशेष दवाकी जरूरी नहीं रहती एकाध टंक लंघन करनेसें आराम लेनेसें हलका खुराक खानेसें और दस्तकी कवजी होय तो उसका खुलासा करनेसें बुखार उतरजाता है, शरुआतमें गरम पाणीमें पांव डुवाणा उससे पसीना आके आराम होता है, बुखारमें गरम किया तीन उकालेका ठंढा किया भया पाणी मांगे जव पीणेकूं देणा आंखमें सूठ काली मिरच पीपरकूं घस अंजण कराणा वहोत हवा खुलेछत सोने नहीं देना खानेकूं थलीदेशमें वाजरीका दलिया, पूरववालेकूं, भातकी कांजी मांड, मध्यमारवाडमें मूंगका ओसामण भात, दक्षिणमें तूरकी दाल पतलीका पाणी अथवा भात मिलाकर, ये बुखार दोतीन दिन रहता है, लेकिन मिटकर वाजे वखत पीछा आजाता है, इसवास्ते बुखार गयेवादभी पथ्य रखना जहांतक ताकत नहिं आवे उहांतक भारी अनाज खाणा नहीं और महनतका काम करणा नहीं, (१) गडूच्यादि काथ (नं० १९८) (२) नागरादिपाचन) पिछाडी लिखा है, पांच चीजोंका सो (३) क्षुद्रादि काथ, भूरींगणी चिरायताकुटकी सूंठ गिलोय एरंडीकी जड (४) दाख धमासा अरडूसेका पत्ता (५) चिरायता वाला कुटकी गिलोय और नागरमोथ इनोंमेंका कोइभी काढा काथकी विधिमुजव तइयारकर थोडे दिन दोनुं टंक पीणा इससे बुखार पाचन शमन होकर उतरजाता है (६) लघुसुदर्शन चूर्ण (नं०३२ उसकी फकी हिम अथवा चा करके पीनेसें सादा जारी तप उतर जाता है, जोरवाले सादे बुखारमेंभी ये चूर्ण वहोत फायदा करता है, इस चूर्णसे पसीना आता है, बुखारभी अटक जाता है बुखार उतरेवादभी किनाइनकीतरे ये चूर्ण थोडे दिन देनेसें बुखार उथलके नहीं आता और ताकत आजाती है.

(अंग्रेजी इलाज) (७) प्रथम दस्त साफ लानेकूं सिडलिझ पाउडर (नं०४५३) का देणा उलटी होतीभी वंध होगी प्यास कम पडेगी अथवा पसीना लानेकूं पहली खुराक एप्सम सोल्ट रोगीके कोठेकी स्थितिमुजव २ से ४ ड्राम डालकर देना.

(८) नं० ५७०) वाला मिक्श्चर पहली खुराकमें पसीना लाणे वास्ते दिनमें तीनवखत देणा पसीना आके बुखार बंध होणेसें मिक्श्चर बंध करणा.

(९) पसीना लाणेकूं इकेले गरम पाणीमें अथवा निमकया राईका आटा डाले भये पाणीमें थोडे मिनटतक रोगीके पांवडु वाणा पीछै पूंछकर ओढायकर विछोणेमें सुलाणेसें पसीना आता है.

(१० नं० ५७१) वाली मिलावटकी पुडी देणेसें भी पसीना आता है, और बुखार उतर जाता है, इसमें टार्टर एमेटिक उलटीकूं लाणेवाली है, उससे उलटी जो जादा होय तो वो नहीं डालकर एन्टीमोनियल पाउडर फक्त.

(११) बुखारके संग उलटी होती होय तो ऊपर (नं० १०) के नुसखेवाली दवा पेटमें नहीं टिके तो (नं० ५७८) वाला मिक्श्चर देणा अथवा वो दवा हाजर नहीं होय तो साजीखार ३० ग्रेण खट्टे नींबूका रस ३ द्राम और पाणी ६ औंस इन तीनोंकों मिलाकर पिलाणेसें उलटी बुखार प्यास नरम पडेगा.

(१२) बुखार उतरगये पीछै नाताकती मिटाणेकूं बुखार पीछा नहीं आवै इसवास्ते इकेला किनाइन रोगीकी शक्ति तथा प्रकृतीके अनुसार दर टंकमें २ ग्रेनसें ५ तक देणा अथवा (१३) नं० ५७४) वाला किनाइन मिक्श्चर देणा.

(१४ होमियोपथी इलाज)-(एकोनाईट) खूनमें जहरका असर नहीं होय तो ये दवा देणेसें नाडी धीरी पडकर पसीनेके संग बुखार उतर जाता है, मात्रा दर दोदो तीन २ घंटेसें दोदो बूंद एक तोला पाणीके संग पीना सख्त बुखार होय तो आधे २ कलाकसें पीना.

(१५ जेल्सिमियम) ऊपरकी दवासें बुखार नहीं उतरे और रोगी सुस्त होगया होय तो ये दवा ऊपरकी दवा मुजवही देना.

(१६) इसके सिवाय पाचनशक्तिकी गडबड होय तो बेप्टिसिया जो रोगी बेहोस होकर पडा होय तो आर्सेनिक और मींट तथा शिर बहोत दुखता होय तो बेलाडोना देणा चहिये.

सन्निपातज्वर.

(समझ) तीनों दोषोंका कोपणा उसकूं सन्निपात त्रिदोष कहते हैं, और एसे हाल सबरोगोंके आखरीदशामें भया करता है, बुखारमें एसा होय तब बुखारका सन्निपात समझणा शास्त्रोमें एक दोष प्रबल दो दोष कम कहां इदो दोष प्रबल एक दोष कम एसें एकोल्बणादि ५२ भेदभी दिखलाया है, तेरे दुसरे नाम धरकरके भी सन्निपात लिखे हैं, लेकिन् हम जो आगे चौदे सन्निपातका स्वरूप लिखते हैं, इनोंमें प्राये सब आजाते हैं, सन्निपात बिगर मौत नहीं चाहे बोलना चलता खाता पीता क्यों नहो पण

निदान अनुभव और कालज्ञानवाला पहचान सकता है, वा जे मूर्ख अंत दशातक नहीं पिछान सकते.

(सामान्य लक्षण)–जिस बुखारमें वाय पित्त कफ तीनों दोषोंका कोप भया होता है, वो सन्निपातज्वर क्षणमें दाह क्षणमें ठंढ हड्डी और जोडोंमें दरद शिरमे दर्द आंखोंमें आंसू कानोंमे अवाज गलेमें कांटे नसा मोह मींट वक वाद खास श्वास अरुचि हांफणी जीभटेढी काली अंगढीला शिर हिलाना नींदका नाश दस्त पैशावका वहोत देरसे थोडा उतरना गलेमें अवाज गूंगापना पेटका आफरना वदनपर चठे दाफड अथवा गोल चकते इनोंमेंके थोडे लक्षण कष्ट साध्यमें, पूरे लक्षण असाध्य सन्निपातमें होते हैं.

(सन्निपातके भेद)–सन्निपातमें जुदे २ दोष मुजव लक्षणों करके विद्वानोंने अनुभवकर सवोंके लक्षणपर उपाय ग्रंथोमें लिखे हैं, वडे भयंकर सन्निपातोंमें फूंकी भई रसमात्रा ओं वहोत कामदेती है, इस जगे तो सुलभ सामान्य इलाज लिखते हैं, इनोंसें भी फायदा होता है, सन्निपातज्वर १३ तथा १४ प्रकारका है, + संधिक १ अंतक २ रुग्दाह ३ चित्तविभ्रम ४ शीतांग ५ तंद्रक ६ कंठकुब्ज ७ कर्णक ८ भुग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ हारिद्रक १४.

(१ संधिकके लक्षण)–सांध २ मेदरद शूल प्यास चित्तकूं संताप निद्राका नाश नाताकती कफ संबंधी पीडा और ज्वर पसलियोंमें दरद इसकी मुद्दत सातदिनोकी है, मारे चाहे जीये. ७ वर्षभी है.

(संधिकका इलाज)–रास्ना सूंठ गिलोय कांटाशेलिया नागरमोथ शतावर हरडे देवदारू कुटकी कचूर अरडूसेके पत्ते एरंडकी जड तथा दशमूल इनसबोंकी उकाली.

(२ अंतकका लक्षण) दाहकरे संतापकूं वढावै मोहरोणेलगे शिर हिलायाकरे हिचकी होय और खासी होय ये त्यागने योग्य असाध्य है, इसकी मुद्दत १० दिनोंकी है, वकवाद वेशुद्ध श्वास नसा येभी होता है.

(अंतकका इलाज)–हरडे अरडूसा करमाला देवदारू कुटकी रास्ना गिलोय कुलिंजन.

(३ रुग्दाहका लक्षण)–वकवादकरे संताप अतिमोह दाह वेहोसी वहोत प्यास श्वास काश हिचकी शिथलपणा चक्कर भ्रांति गलाहिडकी ठोड़ी गरदनमें दरद इसकी मुद्दत २० दिनकी है येभी असाध्य है.

+ सन्निपातका १३ भेद प्रथकारोने लिखे हैं. आयुर्ग्यानार्णवमें हेमाचार्यने १४ माहारिद्रक सन्निपातलिखा है, सो हमने केइवरात मनुष्योके देखभी लिया है, इसमें आयेवाद वचणा मुसकिल है, योगचिंतामणीमे जैनाचार्यने इसके इलाज भी लिखे है, इनचोदेमें मलपाकी होय सो वचना है, धातुपाकी मिवे मरता है, इन दोनोके होणेमें आयुकर्म परमुदार है, संधिक १ तंद्रिक २ चित्तभ्रम ३ कर्णक ४ जिह्वक ५ कंठकुब्जये छय कष्टसाध्य है, वाकी ८ असाध्य है, लेकिन् इलाज लिखा है, केम्यात् कोइ एसाभी वचजावै कदाच प्राणतक दया देणा ये चिकित्सावी प्रणाली है, वाकी वचना मुसिकल है, कष्ट साध्यो हमने सदकडो वचाये है

(रुग्दाहका इलाज) वाला रगतचंनण नेतरवाला दाख आंवला पित्तपापडा उकालीकर पिलाना.

(४) चित्तविभ्रम लक्षण) चित्तभ्रमित बने धतूराखाने जैसी अवस्था हो संताप व्याकुलपणा आंखोंमें विकलपणा रोनेलगे हसनेलगे गावे नाचै और बकवाद करे इसकी मुदत २४ दिनकी है वाजेकूं वर्षोंतक रहता है.

(चित्तविभ्रमका इलाज) मोलेठी नखला शेमल पीपर अर्जुन वृक्ष (सादड) हरडे जटामासी रगतचंनणका काढा.

(५) शीतांगका लक्षण वदन वरफ जैसा ठंढा पड जाणा कांपणा श्वास हिचकी सब अंग शिथिल शोष मनकूं संताप खासी दस्त उलटी अबाज खोखरी इसकी मुदत १५ दिनोकी है असाध्य है.

(शीतांगका इलाज) आककी जड जीरा सूंठ मिरच । पींपर भारंगी भूरींगणी काकडासींगी पोकर मूल नहीं तो एरंडीकी जड गोमूत्रमे उकाली करणी.

(६) तंद्रिकका लक्षण–मींटरहै. आंख कम खोले बुखार कफ प्यास जुवान काली जाडी और कांटोसें व्याप्त दस्त श्वास दाह कानोमें वहरास गलेमे सोजा सो जाड़ावोले निद्रा वगेरे मुदत २५ दिनोंकी कष्ट साध्य है.

(तंद्रिकका इलाज) भारंगमूल गिलोय मोथ भूरींगणी हरडे पोकरमूल इसकी उकाली.

(७) कंठकुब्जका लक्षण–शिरमे दर्द गलेमें कांटे दाह वेशुद्धि कंप बुखार वकवाद वातरक्तकी पीडा मूर्छा मुदत १३ दिनकी कष्टसाध्य है.

(कंठकुब्जका इलाज) काकडाशींगी चित्रक हरडे अरडूसा कचूर चिरयता भाडंगी भूरींगणी पोकरमूल नागरमोथ कूडा छाल कुटकी हलदी आमले देवदारू वहेडा चव्य सूंठ पींपर कायफल इसकी उकाली.

(८) कर्णकके लक्षण–कानकी जडमें सोजा वहोत वेदना वहरापण हाफणी वकवाद संताप ज्वरवगेरे ज्वर आतेही उठे तो असाध्य, ज्वरके मध्यमें उठे तो कष्टसाध्य अंतमे उठे तो साध्य मुदत तीन महेनेकी है कष्टसाध्य.

(९) कर्णकका इलाज–वहोत मूं सूजगया होय पका नहीं होय तब घी पिलाणा ४ दिन वादशक्ति मुजब कानके नीचे जोक लगाकर खून निकलवाणा अथवा ये लेप करणा रास्ना सूंठ वीजोरेकी जड चित्रक दारू हलदी अरणी इससें सूजन उतर जाती है साधारण कानके नीचे वचोंके सोजन आजाती है, जिसपर मुलतानी मट्टी रास्ना निमकका लेप करणा रास्ना आसगंध नागरमोथ दोनोंजातकी भूरींगणी भाडंगी काकडासींगी हरडे वच पोकरमूल कुटकीकी उकाली देनी.

(९) भुग्ननेत्रका लक्षण–आंख टेढी श्वास खासी नसा वकणा कंप वहेरापणा मोह सोजा वगेरे मुद्दत ८ दिनकी है असाध्य है.

(भुग्न नेत्रका इलाज) दारू हलदी पटोल नागरमोथ भूरींगणी कुटकी हलदी नींवकी छाल त्रिफला इनोंकी उकाली.

(१०) रक्तष्टीवीके लक्षण–मूंमेसें खून आणा बुखार उलटी प्यास मूर्छा शूल दस्त यामरोडा हिचकी पेटपर आफरा भमल जीभकाली अथवा लाल होणी आंख लाल जीभ पर चकत्ते मुदत १० दिनकी वेहोस असाध्य है.

(रक्तष्टीवीके इलाज) मोथ पद्मकाष्ट पित्तपापडा रगतचंनण मोलेठी वाला शतावर कृष्णागर कडवे नींवकी छाल इनोकी उकाली.

(११) प्रलापकका लक्षण–वकवाद कंप संताप शिरमे दर्द वडी २ वातें करणी स्वच्छतापर प्रीति दुसरेका फिकर बुद्धिकेनाशसे भई गभराट इसकी मुद्दत १४ दिनकी है असाध्य है.

(प्रलापकका इलाज) नागरमोथ वाला सूंठ पित्तपापडा रक्तचंनण अरडूसा इनोंकी उकाली.

(१२) जिव्हकका लक्षण–जुवानपर कांटे गूंगापणा वहरापणा ताकतका नाश खांसी संताप वगेरे मुदत १६ दिनकी हे कष्टसाध्य है.

(जिव्हकका इलाज) वच भूरींगणी धमासा राखा गिलोय मोथ सूंठ कुटकी काकडासींगी पोकरमूल ब्राह्मी भाडंगी चिरायता अरडूसा कचूरकी उकाली.

(अभिन्यासका लक्षण) बोलचाल बंध होकर अचेत होजाणा वेचेनी बडे कष्टसे एकाध दफे बोलणा शक्ति जाते रहणी श्वास मूंपर चिकणास तेजी नींद मुदत १६ दिनोंकी है असाध्य है.

(अभिन्यासका इलाज–काकडासींगी लाल धमासा पोकरमूल भाडंगी कचूर भूरींगणी इनोकी उकाली.

(१४) हारिद्रकके लक्षण—अंग नख नेत्र हाथ पाव वगेरेका रंग हलदी जैसा होजाय बुखार खांसी दस्त पेशाबभी हलदी जैसा ये सन्निपात क्वचित् २ देखणेमें आता है असाध्य है मुदत इकीस दिनोंकी है.

(हारिद्रकका इलाज) विशेष असाध्य है तोभी वृहत् भारंग्यादि क्वाथ देणा.

सर्व सन्निपातज्वरका सामान्य इलाज.

सन्निपात अथवा त्रिदोषके साधारण लक्षण विद्वान वैद्य और डाकदर सहजसें जाण सकते हैं मुसलमीनी इलाजोमें दोयही भेद सन्निपातोंके माने हैं, सरसाम १ बोहरान २ रातदिनके अभ्यासी, विगर पढे भी मृत्युके निशाण वहोतसी बखत बता देते हैं, मतलब

मूं काला पडजाय सुइचुभाणे कैसी पीडा होय अन्नपर अरुचि प्यास मूर्छा होती स्थावर विषमें दस्त होता है, क्योंके जहर नीचेकों गती करता है, उलटीभी होती ... ७।८ ...

(२) औषधी गंधजन्यज्वर–किसी तेज खराब बदवोवाली वनस्पतीकी खसबो चढेज्वरमें मूर्छा शिरमे दर्द तथा कैहोती है.

(३) कामज्वर–इच्छित स्त्री अथवा पुरुषकी प्राप्ति नहीं होनेसें जो ज्वर पैदा हो है, उसकूं कामज्वर कहते हैं, इसमे चित्तविभ्रम मींट आलस छातीमें दरद अरुचि क डके मोडणे गलहत्था देकर फिकर करना किसीकी कही बात अछी नहीं लगणी औ वदनका सूकणा मूंपर पसीना निसासे डालने आदि चिन्ह होते हैं.

(४) भयज्वर–डरसें बुखार चढे उसमें बकवाद बहोत करता है.

(५) क्रोधज्वर–गुस्सा आणेसे चढे ज्वरमें कांपणी मूं कडवा होता है.

(६) भूताभिषंगज्वर–में उद्वेग हसे गावे नाचै कापे तथा अचिंत्यशक्ती इसके शिवाय (क्षतज्वर) वदनमें घाव पडनेसें चढे बुखार, दाहज्वर, थकेलेका ज्वर, वदनक कोइभाग कटणेसें चढे सो छेदज्वर, वगेरे आगंतुकज्वरमें, बहोत कारणोंका समावेश होता है, नीचे मुजब इलाज करणा.

(१) जहरका, तथा औषधीगंधकेज्वरमे, पित्तशमन होय एसा इलाज करणा, तज तमालपत्र इलायची नागकेशर कबाबचीणी अगर केशर लोंग इत्यादि सब थोडे सुगंधी पदार्थ लेकर क्वाथ करके देणा.

(२) कामसें भये ज्वरमे, वाला कमल, चंदन नेत्रवाला तज धाणा जटामासी वगेरे ठंढे पदार्थोंकी उकाली ठंढा लेप तथा इच्छित वस्तुकी प्राप्ती.

(३) क्रोध, भय, शोक, वगेरे मानसिक विकारोके बुखारोंमें, उसके कारण दूर करणा, दिलासा देना इच्छितवस्तु मिलणा, पित्तकूं शमाणेवाले शांत उपचार, आहार, तेसें बाहर उपचार करनेसें मिटता है.

(४) चोट, श्रम, रस्ते चलनेका थकेला गिरजाणा वगेरेके बुखारमें पहली दूधभात खाने देना, रस्ते चलणेके ज्वरमें तेलका मालिस, और नींद लेने देना.

(५) आगंतुकज्वरवालेकूं लंघन करणा नहीं, चिकणा तरावटवाला पित्तशामक ठंढा भोजन कराणा मनकूं शांतकरवाणा इन बातोसें बुखार नरम पडता है.

विषमज्वर.

(कारण) एकवखत आयेभये बुखारके दोषोंका शास्त्रकी रीतविगरसें निवारण किये पीछे दवा जैसें क्विनाइन वगेरेसें बुखारकूं दवा देणेसें उसकी लिंगस नहीं जाती तब बुखार धातुओंमें छिपकर रहता हैं तब अहित आहार विहारसें दोष कोप पाकर बुखारकूं

पीछे प्रगट करता हैं, और वो विषमज्वर कहलाता है, खराब हवा वगेरे दुसरे कारणोंसें भी सरुआतमें विषमज्वरकी पैदास है.

(लक्षण) विषमज्वरका कोई मुकरर वखतन हीं है, उसमे ठंडी गरमीकाभी नियम नहीं है, उसके वेगकाभी तादाद नहीं है, किसी वखत थोडा किसी वखत जादा रहता है, उसमे ठंड किसी वखत गरमी लगके चढता है, किसी वखत जादा जोरसें किसी वखत कमजोरसें इस बुखारमें जादा तर पित्तका कोप होता है.

(भेद) विषमज्वरका पांच भेद है, १ संतत २ सतत ३ अन्येद्युष्क एकांतर, तेजरा ४ चोथिया ५.

(१) कितनेक दिनोंतक अणउतार एक सदृश रहणेवाला बुखारकूं संतत कहते हैं, वात ७ दिन पित्त १० दिन कफ १२ दिन दोपके ताकत मुजब रहकर पीछै उतरकर फेर बहोत दिनोंतक आते रहता है, ये बुखार वदनके रस धातूमें रहता है, एसी शास्त्रकी आज्ञा है.

(२) सतत–१२ घंटेके अंतरसे आणेवाला तैसें दिनमें और रातमें दोवखत बुखार आवे वो सतत कहलाता है, इस बुखारका दोप खून धातूमें रहता है.

(३) एकांतरा–(हमेसांका) २४ घंटेके अंतरसे आता है, दररोज एक वेर बुखार चढे और ऊतरे, ये बुखार मांस धातूमें रहता है.

(४) आर्सेनि ४८ घटेके अंतरसें आता है, विचमें एकदिन नहीं आता इसकूं तेजरा कहते दवा उ एकांतर कहते हैं, ये मेद धातूमें दोप रहता है.

(५) णेकूं क्वि -७२ घंटेसे ये बुखार आता है, विचमें दो दिन नहीं आता पीछे तीसरे दिन अब असर पहिले दिनकी अपेक्षा चोथिया कहलाता है, इसका दोप हाड धातूमें रह आईपीक्य मज्जा धातूमें रहता है, दोपजुदे २ धातूका आश्रय लेकर रहणेसें रसगत र ये दवा देण नामोंसे वैद्य कहते हैं. इस अनुक्रमसें हाड तथा मज्जामें गया भया चो नक दा भयंकर है, अगर जो दोप वीर्यमें पोहचता है, तो जरूर प्राणी मर जाता है, अब विपमज्वरोंका सामान्य जुदे २ इलाज लिखते हैं.

देशी इलाज.

(१) संततज्वर–पटोल इंद्रजव देवदारु गिलोय नींबकी छाल.

(२) सततज्वर–त्रायमाण कुटकी धमासा उपलसिरी.

(३) एकांतर–दाख पटोल कडवानींब मोथ इंद्रजव त्रिफला.

(४) तेजरा–वाला रगतचंनण मोथगिलोय धाणा सूठ सहतमिश्री.

(५) चोथिया–अरडूसा आंवला सालवण देवदारु जोहरड सूंठ सहत और मिश्री मिलाकर.

सामान्यइलाज (६) दोजातकी रींगणी सूंठ धाणा देवदारू ये क्वाथ पाचन है, इसवास्ते विषम तथा सवतरेके ज्वरोमें पहिली देणा चहिये.

(७) पटोलादि क्वाथ (नं० २०७) सवतरेकें विषमज्वर तेसें दाहज्वर तेसें नवीनज्वर वगेरे तमाममें अच्छा फायदा करता है.

(८) भारंग्यादि क्वाथ (नं० १९६) सवतरेके विषमज्वरकूं फायदा बंद है.

(९) मुस्तादि क्वाथ—मोथ भुरींगणी गिलोय सूंठ आंवला इन पांचोंकी उकाली ठंढीकर सहत पींपरका चूर्ण डालकर पिलाणा.

(१०) ज्वरांकुश—बुखार आतेकूं रोकणे वास्ते तथा ठंढ लगतीकूं मिटाणे वास्ते छोटा ज्वरांकुश (शुद्धपारा गंधक वछनाग सूंठ मिरच पीपर ये सब एकेक भाग शुद्ध किये धतूरेके बीज दोभाग इनोंमे प्रथम पारे गंधकी कजलीकर बाकी ४ कूं कपडछांणकर सबोंकों मिलाकर नींबूके रसमें खूब खरलकर (२) दोरत्तीकी गोलियें बणाणी ये गोली १ तथा (२) पाणीमें या आदेके रशमें या सूंठकें पाणीमें बुखार ठंढ लगणेके पहिले देणी बुखार या ठंढतो बिलकुल बंध होजाता है, ठंढके बुखारमें ये गोली किनाइनसें भी जादे फायदेबंद है.

(११) अमृतामोदक (नं० ६७) वेर २ उलटकर आणेवाले धातुगत जीर्णज्वर विषमज्वर जब कोई भी दवासें शरीरकूं छोडता नहीं तब इस मोदकका सेवन वखतसर करणेसें निश्चै जाता है.

(१२) छुटकर इलाज—चोथिया तथा तेजरे बुखारमें अगस्तके सूकेपत्ते पीस कपड छाणकर सुंघाणा अथवा पुराणे घीमें हींग पी विषमज्वरोंमें नीचे लिखे उपाय सब अच्छे हैं, खपाटकी जड रुपेभर काला जीरीकूं जरा सेककर एक रुपियेभर गुडमिलाकर खा शीकेपत्ते घोटकर पीणा कालीजीरी तथा गुडमें थोडी कालीमिर जीरा तथा गुड गरमपाणीमें अथवा पुराणे सहतमें अथवा जाडी बुखार उतरजाता है, अथवा कांकचियाके बीज शेके भये दोभाग और मिर इसका चूर्णकर टंकमें तीनमासा चूर्ण पाणीसें फाकणा, इकेली नींबकी अंतरछाल, गिलोय, अथवा चिरायतेका पत्ता, रातकूं भिगाकर फजरमें थोडी मिश्रीमिलाय, कालीमिरच डाल पीणेसें, ठंढके बुखारमें बहोत फायदा करता है, (नं० ६९२) ६९३) वाले हकीमीनुसके ठंढके बुखारपर बहोत फायदे मंद है.

(देशी इलाजोमें) वनस्पतीके क्वाथ देणेमें सवतरेका निडररस्ता है, तथा साधन और धर्मरक्षणता है. क्योंके सवतरेके काढे बुखार होय चाहे नहींभी होय तोभी हरवखत देसक्ते हैं, फेर उसमें मलका पाचन होय दस्तभी आता है, इसवास्ते दस्तके खुलासा

वास्ते अलग जुलाब देणेकी जरूरी नहीं रहती धर्मरक्षा तो प्रगटही है, लिखणेकी जरूरी क्या है.

(अंग्रेजी इलाज)–विषमज्वर ऊपर लिखे मुजबका होय अंग्रेजीदवा खाणेवालोंनें अजमाणा चाहिये.

(१) बुखार चढा होय तब देणेका इलाज (नं० ५७०) ५७१ की मिलावटकी योग्यलगे उसका उपयोग करणा.

(२) पसीना आयगये पीछे देणेके मिक्श्चरो नं० ६७४–७५ मेंसें योग्य लगे सो.

(३) पित्तका जोर जादा होय उलटी होती होय तो नं० ६७८ का मिक्श्चर देणा.

(४) बुखारकी वारी आणेके पहिली अटकाणेकूं किनाइन सबसे उत्तम मांनते है, लेकिन् जहांतक बणे इसकीमात्रा बहोत कमही देणी क्योंके ये जादा मात्रासें बुखारकूं तो उतारता है, लेकिन् दुसरी बहोत खराबियां करता है, दाह धातुजाणा पांडू भ्रमआदि अनेक रोगोंका कारण बणजाता है, बहोतसे डाकटरलोक हठमें आकर किनाइन धकेलते इजाते हैं, लेकिन् उसका परिणाम एकंदर ठीक नही आता.

होमियोपथिक इलाज एकंतरादि ठंढके बुखार ऊपर इस मुजब.

(१) एकोनाइट–सख्त बुखारकी गरमी कम करणेकूं इसके जैसी एकभी दवा नहीं है, दर दोदो घंटेसे देणा.

(१) आर्सेनिक–जब ठंढविगर बुखार आवे अथवा पसीना आयेविगर ऊतर जावे तब ये दवा उपयोगी है, बुखार नहीं होय उसवखत तथा फेर बुखार नहीं आवे उसकूं रोकणेकूं किनाइन सर्वोत्तम इलाज है, लेकिन बुखार जब पुराणा होय और किनाइन जब असर नहीं करे तब ये देणा मात्रा ०॥ चाल दिनमें चार वखत.

(२) आईपीक्याक–बुखारकेसंग मोल उलटी श्वास पाणी जैसे दस्त वगेरे उपद्रव होय तब ये दवा देणी मात्रा दोदो बूंद पाणीमें डाल चारवेर देना.

(३) नकसवोमिका–दस्तकबज होय और किनाइन दिये पीछेभी फायदा नहीं होय तो ये दवा देनी मात्रा दो बूंद थोडे पाणीकेसंग दिनमें ४ वखत.

संततज्वर-रिमिटंट फीवर.

(कारण) विषमज्वरका कारण ये संततज्वरही है, पहली संक्षेपसें उसके लक्षण तथा उपाय लिखा है, वो मेलेरियाकी जहरी हवामेंसे पैदा होता है. और विषमज्वर दुसरे भेदोंसे ये बुखार बहोत सख्त होता है.

(लक्षण) ७।१० या १२ दिनोंतक एक सरीखा आया करता है, कोईभी वखत उतरता नहीं ये तीनों दोषोंके कोपणेसें आता है, इस बुखारकी शरुआतमें पाचनक्रियाकी

अव्यवस्था वेचेनी खिन्नता तथा शिरमे दर्द वगेरे लक्षण मालम देते हैं, ठंढकी चमकारी इतनी तो थोडी आती है, सो ठंढ चढणेकी खबरतक नहीं पडती और एकदम गरमी जाती है, चमडीमें दाह उलटी शिरमे दर्द नींद नहीं आणा मींटभी होजाती है, अंतरिया बुखारमें बुखारका चढणा उतरणा प्रगट मालम देता और इसमें मालम नहीं देता क्योंके पहिले प्रकारका तप तो बिलकुल ऊतर जाता है, और इसमें उतरता नहीं लेकिन् कुछएक कम होय अथवा बहोत थोडा कम होणेसें इतनी खबर नहीं पडतीके कब जादाभया और कब कमभया वो समझ जाहिरमें थरमोमिटर ठीक देती है, इस बुखारकी स्थिती है, पहली स्थितिमें थोडे २ अंतरसें ऊपरा ऊपरी बुखारकी चढ ऊतार होती है, और पीछै दुसरी स्थितीमें बुखारकी भरती आसरे आठ २ घंटेतक रहती है, उसवखत चमडी बहोत गरम रहती है, नाडी बहोत जलदी चलती है, श्वासोश्वास बहोत जोरसें चलता है, और मनकूं चैन नहीं होता बुखारकी गरमी (१०४) उससेभी आगे किसी वखत १०५, १०६ और १०७ तकभी चढ जाती है, आठदशघंटे पीछै कुछ नरम पडता है, थोडा पसीना आता है, बुखारकी गरमी बहोत होणेसें इसकेसंग खासी लीवरका वरम पाचन क्रियाकी गडबड अतीसार मरोडा होजाता है, और बहोत करके ७ में १० में दिन मींट अथवा सन्निपातका लक्षण दिखणेलगता है, अच्छीतरे इलाज नहीं होणेके सबब २१ दिनतक ये बुखार चलता है.

(इलाज) संतत अथवा रिमिटंटफीवर बहोत भयंकर बुखार होता है, इसवास्ते आप घरतरीके अच्छीतरे नहीं समझ सके तो कुशल वैद्य या डाकटरका इलाज करवाणा सख्त और भयंकर बुखारमें रोगी ७ सें १२ दिनके अंदर मरजाता है, और जादादिन ठहरता है, तो गंभीर स्वरूप पकडता है, इस बुखारका मुख्य इलाज ये है, बुखारकी टेम्परेचर (गरमी) जैसें बणें तैसें कमती रखणी नहीं तो एकदम खूनका जोस चढके मगजमें सोजा आता है, तंद्रा और त्रिदोप होजाता है, देशी इलाज तो पहिले लिखाहीहै.

(अंगरेजी इलाज) (१) उलटीका उछाला होय तो इपीकाक्यु आन्हाचूर्ण ग्रेन (२०) एक औंस पाणीमें देणा पाव घंटे पीछै गरम जल पिलाणा उससें उलटी होकर पित्त निकल जायगा बुखार कम पडेगा होजरीपर राईका पलाष्टर मारणेसेंभी के होती है.

(२) बुखारमें प्यास इसमें बहोत लगती है, सोडावोटर लेमोनेड वगेरे देणा वरफ चूसाणा अथवा वरफ डालाभया पाणी या दूध देते हैं.

(३) एन्टीपाईरीन एन्टीफीब्रीन और फीनासी टीन ये दवाये बुखारकूं एकदम ऊतार देती है, लेकिन् वो देते वखत बहोत सावधान रहणा क्योंके शक्ति उपरांत दिये जाय तो हृदयका काम अटककर प्राणी मरजाता है, इसवास्ते एमी दवा पूरे अनुभव विगर वरतणेकी परवानगी नहीं दिये जाती इसकी एवजीमें रत्नगीरी नामकी देशी

उत्तम कीमती दवा है, उसमे कोइकिस्मका डर नहीं मिले तो इसका उपयोग करणा रत्नगिरी एकदम बुखारकूं उतारती है, पसीना लाती है.

(४) शिरपर (नं० ३१२) वाले लेपमें कपडा भिगाकर कपालपर धरणा वरफ धरते हैं, अथवा एसा कोईभी ठंढा दुसरा इलाज करणा जिससें शिरमें गरमी चढे नहीं.

(५) बुखारकी गरमी जादा होय तो और पसीना नहीं आता होय तो गरम पाणीमें कपडा भिगाकर वदनपर लगाणा गरम जलमे पांव डुबाणा अथवा खूब गरम पाणीमें गरम ऊनकी धावली डुवाकर निचोड वदनपर लपेटना और रोगीकूं सुला देणा और उसपर दुसरी धावली ओढाणी.

(६) पसीना लानेकूं (नं० ५७०) वालामिक्श्चर सरू रखणा इकेला टिंकचर एकोनाईट दोदो वूंद पाणीकेसंग देणेसें बुखारकूं नरम करता है.

(७) बुखार नरम पडे पीछै (नं० ५७४ वाला) किनाइनमिक्श्चर देणा बुखार में किनाइन देणा अच्छा नहीं है, तोभी बुखार उतरे पीछै थोडी २ मात्रा किनाइन देनेसें नुकशान नहीं है.

(९) इसबुखामें जो कलेजेमें खूनका जमाव भया होय एसा मालम देतो क्या-लोमेल ग्रेन ५ तथा कम्पाउन्ड जालप ग्रेन ४० देणेसें अच्छादस्त लगता है, दरदी शक्तिवान् होय तो जोकलगाणा कलेजेका तेसें फेफसेके वरममें राईका पलाष्टर तथा शेक फायदा करता है.

(होमियोपथीक इलाज)–विषमज्वरमें दिया है वोही इसमें जाणना.

जीर्णज्वर.

(कारण)–जीर्णज्वर ये कोई खास कारणका नया बुखार नहीं है, नया बुखार नरम पडे पीछै जो कितनेक दिनोंवाद अर्थात् २१ दिनोंवाद जो मंदवेगसें बुखार वदनमें रहजाता है, उसकूं जीर्णज्वर कहते हैं, ये बुखार ज्यों ज्यों पुराणा होता है, त्यों त्यों मंदवेगवाला होता है, हाडज्वर भी इसे कहते हैं.

(लक्षण) बुखारका वेग मंद वदनमें लूखापणा चमडीपर सूजन थोथर अंगोमें जकडपणा तथा कफ ये क्रम २ से लक्षण वढते २ जीर्णज्वर कष्टसाध्य होजाता है.

(इलाज (१) गिलोयका काढाकर उसमें लींडीपींपरका चूर्ण अथवा सहत गिला कितनेकदिन पीनेसें जीर्णज्वर मिटता है.

(२) खासी श्वास पीनसरोग तथा अरुचिके संग जीर्णज्वरमें गिलोयके संग भूरींगणी तथा सूंठडाल इसका काढा पींपरका चूर्ण मिलाकर पीणेसें फायदा करता है.

(३) अमृतामोदक (नं० ५७) उसका वहोतदिन सेवनकरणेसें हाउतक पोहचा भया कष्टसाध्य और असाध्य जीर्णज्वरभी मिटजाता है.

(४) हरीगिलोयकूं पाणीमें पीस उसका रस निचोडकर पींपर छोटी तथा सहत मिलाय पीनेसे जीर्णज्वर कफ खासी तिल्ली और अरुचि मिटती है.

(५) दोभाग गुड और एक भाग लींडीपींपरका चूर्ण मिलाकर इसकी गोलीकर खाणेसें अजीर्ण अरुचि अग्निमंदता खासी श्वास पांडु तथा शमीके संगका जीर्णज्वर मिटता है, इसीतरे लींडीपींपरकूं सहतमें चाटणेसे तथा २।३।५।७। शक्ति और तासीर मुजब रातकूं जलमें या दूधमें भिगाकर दूधमें उकालकर अथवा पीसकर गोलीपर गरमकर ठंढा दूध पीणेसे नित्त इस मुजब वढाकर पीणेसें वो जीर्णज्वरादि अनेक रोग मिटाता है.

(६) आमलक्यादि चूर्ण–आंवला चित्रक हरडे पींपर सींधानिमक इस चूर्णसें बुखार कफ अरुचि जाती है, दस्तसाफ आता है, अग्निदीप्त होती है.

(७) लाक्षादि तेल (नं० २९६) में लिखा है, इससें जीर्णज्वर मसलाणेसें मिटता है, इससिवाय नारायण तैल चंदनादि तैल भी मसलानेसे बहोत फायदा है.

(८) हमारी बनाई अमृतवटी दूधके और शितोपलादि चूर्णके संग लेणेसें जीर्णज्वर खासी अरुचि मंदाग्नि नाताकती धातुक्षीणता छाती दरद वगेरे सब मिटता है, या स्वर्ण-वशंतमालनी चोसठपहरी पींपरसंग अथवा सादे पीपर सहतसंग अथवा पींपर दूधसंग अथवा शितोपला दूधसंग देणा.

बुखारमें दुसरे उपद्रवोंका इलाज.

(कासज्वर)–कायफल मोथ भाडंगी धाणा चिरायता पित्तपापडा वच हरडे काक-डासींगी देवदारु सूंठ इन ११ चीजोंकी उकालीसें खासी कफसमेत बुखार जाता है, (२) पीपर पीपरामूल इंद्रजव पित्तपापडा सूंठ इनोंका चूर्ण सहतमें.

(ज्वरातिसार) –(१) लंघन (२) सूंठ कूडाछाल मोथ गिलोय अतीसकीकली इनोंकी उकाली (३) कालीपाठ गिलोय पित्तपापडा मोथ सूंठ चिरायता इंद्रजव इनोंकी उकाली.

(दुर्जलज्वर)–खराव गंदा शिखरगिरि वद्रीनाथ आसाम अडंग वगेरेका पाणीके लगणेसें होय सो बुखार (१) हरडे नींवके पत्ते सूंठ सींधानिमक तथाचित्रक इनोका चूर्णकर बहोतदिनोंतक सेवनकरणेसें ये बुखार मिटता है,(२) पटोल अथवा कडवीतुराई मोथ गिलोय अरडूसा सूंठ धाणा चिरायता इनोका क्वाथ सहतडालकर पीणा(३) चिरा-यता निशोत खसवाला पींपर वायविडंग सूंठ कुटकी इनसबोंका चूर्णसहतमें चाटणा (४) सूंठ जीरा तथा हरडे इनोंकी चटणीकर भोजनके पहली चटणी खाणी (५) वछनाग दोभाग जलाइ कोडी पांच भाग और मिरच ९ भाग कूट आदे केरसमें घोट मूंग जितनी गोलियोंकर फजर सांझ दोदो गोली पाणीसें लेनी आमज्वर खराब पाणीकाज्वर अजीर्ण आफरा मलबंध शूल श्वास खास वगेरे सब उपद्रव ऊपर ये गोली देणेसें फायदा होता है.

(बुखारमें प्यास) चांदीकी गोली मूंमें चूसाणी आलूबुखारा खजूरकी गुठली चुसाणी सहतपाणीके कुरले कराणा अथवा जहरी नारेलकी गिर रुद्राछ लोंगसेकाभया सोना, मोती अबींध खरड, मूंगिया, मिले तो फालसेकी जड, और संख, इनोंको घस सींपणीमें धररखणा जुबानके घंटा २ से लगाणा पहरभर बाद दुसरा घसणा इससें पाणी झरा मोती झरेकीप्यास त्रिदोपकी प्यास कांटे जीभकी स्याही उलटीतक कष्टसाध्यकी मिटजाती है खुराक जितना रोगीकूं साहरा और ताकत देती है हमारी पतवाणी भई है.

(बुखारमें हिचकीका इलाज) मोरका चंदवा चार जलाकर पींपर भूणी भई जीरा सेका भया नारेलकी जोटी जलाई भई रेसमका कूचा या कपडा या अच रेसम, रेसमके कीडोंका पिछला भाग रहासो जलाया भया, पोदीना, कमलगट्टेके अंदरकी हरियाई इन सबोंको पीस सहतमें या अनारके शरबतमें नहीं तो मिश्रीकी चासणीमें उलटी होतेइ चटाणा चटाये बाद फेर घंटा २ से चटाणा इससें उलटी छर्दि त्रिदोपकीभी बंध हो जाती है (२) अथवा मखीका हंगार सहतमें चटाणा ३ भुजाकी दोनो नस खेंचके बांधणी ४ (धूम्रपान) नारेलकी चोटी हलदी काली मिरच उडद मोरके चंदेका कराणा ५ नीलेथोथेकी भस्मी या ताम्रभस्म पींपरसंग चटाणा.

(बुखारमें श्वास) दोनों भूरींगणी धमासा कडवीतोरी, अथवा पटोल काकडासींगी भाडंगी कुटकी कचूर इंद्रजव इनोंकी उकाली (२) लींडी पीपर कायफल काकडासींगी इन तीनोंका चूर्ण सहतमें चाटणा.

(बुखारमें मूर्छा) (१) आदेका रस सुंघाणा (२) सहत सींधानिमक मनशिल और काली मिरचकूं महीन पीस उसका आंखमें अंजन करणा (३ ठंढा पाणी आंखपर छांटणा (४) सुगंध धूप देणा पंखेकी हवा देणी.

(बुखारमें अरुचि) (१) आदेका रस जरा गरमकर उसमें सींधानिमक डाल थोडा चाटणा (२) बीजोरेके फलके अंदरकी कलियां सींधा निमक मिला मूंमें रखणा.

(बुखारमें उलटी) (१) गिलोयका काथ ठंढा कर मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (२) पित्तपापडेका हिम मिश्री डालकर पीणा (३) आंवला दाख तथा मिश्रीका पाणी (४) दाख चंदन वाला मोथ मोलेठी तथा धाणा ये सब चीजों अथवा इनमेंकी जो मिले उसकूं भीगाकर पीसकर उसका पाणी पीणा (५) नींबकी अंतर छालका पाणी मिश्रीडाल पीणा.

(बुखारमें दाह) (१) उलटीके कितने एक इलाज दाहकूं फायदा करणेवाला है अंदर दाह होता होय तो (२) कचे चावलोंके धोवणमें चदन घसा भया एकचाल सूंठ घसा भया १ रत्ती उसमें जरा सहत मिलाकर चाटणा अगर पाणीमें मिलाकर पीणा बाहर दाह होता होय तो (३) चंदन सूंठ वाला तथा निमक इसका लेप करणा

दशांग लेप (नं० ३१३) पाणीमे पीस लेप करणा अथवा इस लेपकूं मट्टीमें मिलाकर उस मट्टीका खरड करणा तेसें मगजपर मुलतानी मट्टीका थर भरणा.

(क्षयका बुखार) क्षय तथा फेफसा और यकृत् (लीवर) के वरममें.

(सोजेका बुखार) जो बुखार आता है, उसका इलाज उन २ रोगोंमें लिखणेमें आवेगा.

बुखारवालेकूं हितकारी सूचना.

(१) महनतका काम लंघण (याने उपवास) और वायुसे चढे बुखारमें दूध उसके संग भात हितकारक है कफके बुखारमें मूंगकी दालका पाणी तथा भात पथ्य है, ऐसाइ पित्तवालेकुं समझणा लेकिन् उसकूं ठंढाकर जरा मिश्री मिलाकर देणा दो दो तीन २ दोष सामल होय तो उसमें फक्त मूंगकी दालका पाणी पथ्य है.

(२) मूंगका पाणी भात अथवा साबूदाणा ये सब सामान्य बुखारका निडर खुराक है, और जहां दूध पथ्य लिखा है, उस जगे साबूदाणा दूध देणा या जलमें सिजाकर दूध मिलाकर देणा.

(३) लंघन ये वहोतसे बुखारोंमें प्रथम इलाज हितकारक है खास करके कफ तथा आमके बुखारमें पित्तके बुखारमें दो दो तीन २ दोष सामल होय उसमें लंघन अच्छा है, एक टंक हलका आहार करना अथवा फक्त मूंगका पाणी पीणा ये सब लंघन तुल्य है, फकत वादीका बुखार जीर्ण ज्वर आगंतुक ज्वर क्षयका तथा यकृत्के वरमका ज्वर इतनोमें लंघन करनेसें उलटा नुकशाण है.

(४) दूध तथा घी तरुण ज्वर १२ बारे दिन तकमें जहर समान है, लेकिन् क्षय सोस राजरोग उरक्षतके बुखारमें यकृतके ज्वरमें जीर्ण ज्वरमें आगंतुक ज्वरमें दूध हितकारक है, जिसमेंभी जीर्ण ज्वरमें कफ क्षीण भये पीछे २१ दिनों बाद दूध अमृत समान है.

(५) जो बुखारवाला रोगी वदनमें दुर्बल होय जिसके वदनका कफ कम पडगया होय जीर्णज्वरकी तकलीप होय दस्तका बंध कुष्ट होय वदन लूखा होय पित्त या वायूका बुखार होय प्यास तथा दाहकी तकलीप होय उसकूंभी दूध बुखारमें पथ्य है.

(६) बुखार सरू होते लंघन, मध्यमें पाचन दवा, अंतमें कडवी कपायली दवा, आखरी दोप निकालनेकूं जुलाव, ये चिकित्साका उत्तम क्रम है.

(७) बुखारका दोप कम होय तो लंघनसेंही जाते रहता है जो दोप मध्यम होयतो लंघन पाचन दोनोंसें जाता है, वहोत वढे दोपका शोधन इलाज करणा.

(सात) दिनके लंघनसे वायुका दोप पकता है, १० दिनसें पित्तका १२ दिनमें कफका और दोपोंका जादो कोप भया होयतो दुणी मुदततक देर लगे.

(८) जिस बुखारमें दोषोंके अंशांशकी खबर न पडे तबतक सामान्य इलाज करणा.

(९) बुखारके रोगीकूं वायु विगरके मकानमें रखणा पंखेकी हवा डालणी भारी तथा गरम कपडे पहराणा तेसें ओढाणा और मोसमके अनुसार पका भया पाणी पिलाणा.

(१०) बुखारवालेकुं कचा पाणी पिलाना नहीं तेसे वेर २ बहोत पाणी पिलाणा नहीं लेकिन् बहोत गरमी तथा पित्तके बुखारमें प्यास तथा दाह होता होय उस वखत पाणी रोकणा नहीं बाकीके बुखारमें खयालकर थोडा २ पाणी देणा क्योंके बुखारकी प्यासमें जल प्राणरक्षक है.

(१२) बुखारवालेकूं खाणेकी रुचि नहीं होय तोभी उसकूं हितकारक पथ्य दवातरीके थोडा जरूर खिलाणा.

(१२) बुखारवालेके तेसें बुखारमेंसें छूटे भयेकेवास्ते (नुकसान करनेवाला आहारविहार) स्नान लेप मालस चिकणा पदार्थ जुलाब दिनकी नींद रातका उजागरा मैथुन कसरत ठंढे पाणीका बहोत पीणा बहोत हवाकी जगे अतिभोजन भारी आहार तासीरकूं नहीं माने एसा भोजन क्रोध बहुत फिरणा तथा परिश्रम इन सब बातोंका त्याग करणा जो बुखारमें अथवा बुखार उतरे पीछे तुरत एसा कोइ विरुद्ध वर्त्तन करणेमें आवें तब बुखार बढता है अथवा गया भया पीछा आता है.

(पथ्य) साठी चावल लाल जाडे चावल मूंग तथा तूरके दालका पाणी चंदलियेका सोवेका तथा मेथीका शाग घीयातोरी परवल तोरी वगेरेका शाग घीमे बघारा भया दाख अनार सफरजंद.

(कुपथ्य) दाह करणेवाला कठोल जेसेके उडद चवले तेल दही और खट्टे पदार्थ बहोत पाणी, नागर वेलके पत्ते, घी दारू वगेरे.

टाइफस, टाइफोईड, तथा उलटता बुखार, क्वचित् २ देखणेमें आता है, इसवास्ते इसतरेके बुखारकी निसबत जादा इस ग्रंथमे लिखा नहीं पहिले दो तरेके बुखार गटर वगेरे दुरगंधी हवामेंसें पैदा होता है और उलटता बुखार कैदशाली (दुष्काल) तथा भूख मरणेवाले स्नान नहीं करणेवाले मेले वस्त्र रखणेवाले भिक्षुकोंके संगसें पैदा होता है, तथा दुकालकी वखतमें पैदा होता है, इसीवास्ते वीतरागसंजमी बाहिर जंगलमें साफ हवामें सहरके बाहिर उतरा करतेथे जिससे हवामें परमाणूकोसों दूर उडजाते व्याख्यानादि सुणनेकूं आणेवालोंकूं कोइ तकलीप नहीं होतीथी बेठणेवाले नाति दूरे नाति सन्ने तिष्ठति, जबसें पंचमकालमें मुनियोंने नगरमें वास किया तबसें सूत्रकारनें बकुस तथा कुशील ये दोयनि ग्रंथही पंचमकालमें रहेगें एसा लिखा हे, और बकुशके पांच भेदोमें वस्त्र तथा बदन सुंदर साफ रखणेकी व्यवस्था भेद दिखलाया अपणे पंथमें

झुकाणेकूं उपदेश देणा लावणी वगेरे रागगाणा चेला वगेरोंका समुदाय वणाणा इत्यादिक वर्त्तमान चलती व्यवस्थासें मुनियोंमें प्रायेसरागसंजमही देखणेमें आता है, ये श्रावग हमारा है, अथवा किसीतरे हो जावै उसकेवास्ते अनेक विवस्था करणी मनकल्पित मत चलाणा केवल मलमलीन गात्र और मेले वस्त्र रखणेसें रातकुं पाणी नही रखणेसें रातकुं दिशा जंगल जाणा पडे तो पेसावसें गुदा धोणेसे, पात्रमेंही पेसाव करणेसे, वोही पात्रमें गृहस्थके घरसें आहार पाणीलाके खाणेसे, ऋतुवती स्त्रीकी छूत नहीं रखणेसे जन्ममरणका सूतकवाले घरका आहार पाणी खाणेसे, वासी रोटी खाणेसे, छाछ खीचडा संग खाणेसे, इत्यादिक धर्मविरुद्ध लोकविरुद्धता करणेसें वीतरागसंजमी जैनमुनि कभी नहीं हो सकते, इस मलीन अचरणासे आपकूं और परजीवोंकूं रोगाग्रस्त करके सर्वज्ञकी आज्ञा खंडन करणा रूप महा पाप है, और नही रंगणा, नहीं धोणा, वस्त्रोंकूं ये सूत्र आचारांगका हुकम वज्र ऋषभ नाराच शरीरवाले चोथे अरेके वनवासी वीतरागी संजमियोंके वास्ते है, पांचमारेके सरागसंजमी वस्तीमें रहणेवाले, छे वर्त्त सरीरवालोंकूं भगवतीके २५ में शतकमें देह वकुश उपगरण व कुशकी जो मर्यादा वो मर्यादा समझणी, जूंवस्त्रोमें पडे उनमुन्योंनें कत्थेसें लोदसे या पद्मचूर्णसे वस्त्रकूं पास देणा एसा निशीत सूत्रमे हुक्म है, अपवाद मार्गमें, सूत्रोंकी शैली, यथाख्यात चारित्रवालोंकी पहली है, सो पंचमकालमें विच्छेद है, दुसरी कलम सामायक च्छेदोपस्थापनी चारित्रवालोंकी है, सो विद्यमान है वृथा कष्ट लोकोंकों दिखाणा अंतर आत्मा शून्य इसमे क्या सिद्धि है, जो तुम लोकोंकी करणी पूरे त्यागकी है, तो पंचमकालमें भरतक्षेत्रसें मुक्ति क्यों नही पधारते वस सव वकजाल है, उदरनिमित्तं वहुकृत भेपा इत्यलं ॥

फूटकर निकलणेवाले वुखार.

इस वुखारकुं देशी वैद्यकशास्त्रवालोनें वुखारके प्रकारणमें नहीं लिखा है, मसूरिका तथा जैनयोगचिंतामणीकारने मूं धोरा नाम करके पाणी झरेकूं लिखा है, मरुस्थल देशमें निकाला, सोलापुर दक्षण देशके मराठे लोक भाव कहते है, इत्यादि देश प्रसिद्ध अनेक नाम है, संस्कृतमे इसका नाम मंथरज्वर है, पित्तज्वरके लक्षण इसमें प्राये होते है, मारवाडमें मूर्खरंडाओंकों मूर्खलोकोने इसका अधिकार दे रखा है, वो लोक प्राये पित्तविरोधी इसका इलाज अत्यंत गरम लोंग सूंठ ब्राम्ही दिलाते हैं, इस इलाजसें सोमें नव्वे अदमी प्राये गरमीके दिनोंमें मरते हैं हमने देखा है, दश वचते है, वोभी कष्ट पाय करके, इन रोगोमें मसूरके दाणे जेसे तथा मोती अथवा सरसूंके दाणे जेसे वदनपर फुनसियां निकलती है, तथापि इसमें मुख्यपणे वुखारका उपद्रव होणेसें इहा वुखारके प्रकरणमें दाखिल करा है.

(प्रकार) फूटके निकलणेवाले वुखारके वहोत प्रकार है, उसमें शीतला ओगी

अच पडा वगेरे मुख्य है, इसके सिवाय रंगीला विसर्प, है जा, प्लेग मोती झरा वगेरे सर्व भयंकर बुखारोंका समावेश होता है.

(कारण) नाना प्रकारके बुखारोंका कारण संबंध वदनके संग जितना रखता है, उससें विशेष बाहरकी हवासें रखता है एसे फूटकर नीकलते रोग कहांइ तो एकदम फूटकर निकलता है, एक तरेका जहर ये उसका (Poison) मुरव्य कारण है, ये विषचेपी है, इसवास्ते फैलता हैं, बहोतसे अदम्योंके वदनमें घुसके बडा नुकशान करता है, कितनेक अदमियोंके वदनकूं ए रोग लगता है, कितनेकों नहीं लगता उसके कारणोंका निर्णय पूरे दरजे अभी कुछ नहीं भया है, लेकिन् अनुमान एसा है के फलाणे २ शरीरोंका बंधेज तथा आहारविहारसें प्राप्त भये स्थिति करके उनोके शरीरके दोप है सो एसाचेपी रोगोंके परमाणुओंकों तुरत ग्रहण करलेता है, और फलाणे शरीरके तत्त्वोंपर एसे चेपी तत्व असर नहीं करसकता क्योंके एकही जगे एकही घरमें किसीकों ये रोग लग जाता है, और किसीकों लगता नहीं उसका येही कारण है, अनुमान होता है.

(लक्षण) फूटकर निकालता बुखार ये विशेष करके शीतला आदि तो बच्चोंका रोग है, किसी २ बडेकूं भी निकलता है, एसा देखणेमें आया है, दुसरी ये खुबी है, थोडे अपवाद शिवाय जिसके शरीरकूं ये रोग एकवेर निकलजाता है, उसकूं फेर ये रोग प्राये नहीं होता तीसरी खासियत इय हेकी जिस बच्चेकूं शीतलाका चेप दाखल किया भया होय अर्थात् शीतला खोदाय डाली होय उसकूं प्रायें ये रोग होता नहीं और होता है तों थोडा और बहोत नरम होता है, शीतला नहिं खोदाये भये बच्चोंमेंसें इस रोगसें सोमें ४० मरते हैं, और खुदाये भयेमें सोमें ६ मरते हैं, इसतरेका जहर वदनमें प्रवेश किये पीछै चोकसदिन प्रथम बुखारके रूपमें दिखाई देता है, और पीछै वदनपर दाणा फूटकर निकलता है, ये विशेप उसका खातरीलायक चिन्ह है.

शील–शीतला–माता–स्मॉल पॉक्स.

(प्रकार) शीतला दो तरेकी है, एकतरेका दाणा थोडा और दूर २ और दुसरे प्रकारकी शीतला सब वदनपर फूटकर निकलती है दाणे आपसमें मिलजाते हैं तिलभर जगा खाली नहीं रैती ये दुसरी शीतला बहोत कष्टकारी भयंकर होती है.

(लक्षण) शीतलाके विपका वदनमें प्रवेश भया पीछै १२, या १४ दिनमें शीतलाका बुखार सादे बुखारकी तरे ठंढका लगणा गरमी शिरमें दर्द पीठमें दरद तथा उलटीके संग आता है, फेर उसके संग गलेमें सोजा थूकका जादापणा आंखोंके पलकोंपर सोजा और श्वासमें खराव वदवो आती है किसी २ वखत जुवान छोकरोंकूं शीतलाके बुखार सरु होते मींट और छोटे बच्चोंकूं खेंचाताण हिचकी होती है, (दाणे) बुखार चटे पीछै तीसरे दिन पहली मूं तथा गर्दनमें पीछे शिरमें कपाल छाती अखिर पांवपर दिखाई

देता है दाणे दिखणेके पहली बुखार शीतलाका है या सादा है इसकी पूरीखातरी नहीं हो सकती लेकिन् अनुभव तथा चमडीका खासरंग ये बुखारकी तुरत पहिचाण दे देती है शीतलाके दाणे बाहिर दिखाई दिये पीछै बुखार नरम पडता है लेकिन् दाणे जब पकके भराव खाते हैं तब फेर बुखार जोर देता है, दाणा आसरे दशमें दिन फूट-कर खरूंट जमणा सरू होता है बहोत करके चौदमे दिन खरा पडता है दाणेके लाल चठे होजाते हैं उस बखत जाते अदृश्य होता है सख्त हमलेमें जब शीतलाका दाणा अंदरकी पक्की चमडीमें घुसता है तब शीतलाके, दागका निशान मिटता नहीं खड्डे रहते हैं और सख्त उपद्रवमें अच्छा इलाज नहीं बणे तो आंखकानकी इंद्री जाते रहती है.

(इलाज) पहले तो खोदाय डालणा ये तो सर्वोपरी इलाज है, और दुनियाके बालक लोक इस सोधके वास्ते इंग्लंडके प्रसिद्ध डाकटर जे नरका तथा दयावंत अंग्रेज सरकारका हमेशोकेवास्ते पायचंद आभारी भये हैं, डाकतर जे नर जो शोधकरके रेसा निकाल होकर बाद लाखोबच्चे इस रोगके भयंकर दरदमेंसे और मौतसे बचणे लगे हैं, कहांतक इस उपगारकी हम तारीफ करें धन्य २ महाराज तुमारे राज्य शाशनकी विद्वताका परोपकारपणा ये रोग प्रगट भये बाद उसकूं रोकणेका या कम करणेका इलाज कीसीभी शास्त्रमें तो नहीं देखा लेकिन् हमने उपाध्याय श्रीदेवचंद्रजी गणिकूं बीकानेरमें पहले साल उगणीससै २७ में देखा सो अबींध मोती २१ दिनोंतक इस मंत्रसे मंत्रके २१ खिलाया ओं ऋषभ अर्हंत मादित्य वर्णतमसपुरस्तात् २१ बेर मं-त्रकर पवित्रतापणेसें हमने प्रत्यक्ष उसकूं देखा है अभीतक ये रोग उसके नही भया है, महिमा मोतीकी है यामंत्रकी सो पतवाणके देखणा और खान पांन वगेरेके साधनसे तथा शीतलाके भयंकर बुखारकी बखत योग्य इलाज करणेसें रोग कम होता है, बहोतसी बखत मरणका डर होता है, इस देशमें बहोतसें आर्य लोकोमें और जादा करके अज्ञान स्त्री जातिमें एसा वेहम धस गया है, के ये रोग कोइ देवीके कोपसें प्रगट होता है, इसवास्ते इसकी दवा करणेसें वो देवी और जादे गुस्से होती है, इस-वास्ते शीतला ओरीमें कोइ दवा करणी नहीं करणी तो लोंग सूंठ किसमिस वगेरे ॥ छमकर कुलि ये में देणा वोमी देवीके नामकी आस्ता रखकर एसे खोटे ओर झूठे वहमसें दवा नहीं करणेसें हजारों बच्चे दुखपाकरके सडके मरते हैं अज्ञान मावापोंकी मूर्खता और वहेम दूर होय तो विगर इलाज इस बखत जितने बच्चे मरते हैं, उस-मेंसें सोमेंसें ९० बालक निश्चै बच सकते हैं पाखंडी उपदेशकोनें अपणे पेटभरणेवास्ते बिचले जमानेमें लोकोमें अविद्या देख नाना प्रकारके वृथा देवी देवतोंका ढोंग खडाकर दिया है जिसकूं अभीतक लोक सच मानते चले जाते हैं, औषधी तो प्रत्यक्ष फल दि-

खाती है जो देवी जन्यदोष ये रोग होता तो प्राचीन आयुर्वेद याने (आयुज्ञान) के उत्पादक श्रीऋषभ परमात्मा आदि अनेक पूर्वऋषि तथा आचार्य इस रोगकेवास्ते इलाज क्यों लिखते इस अविद्यांध प्रसारमें स्वार्थ तत्परोंने शीतलाष्टकभी थोडा अरसा भय बना डाला है, हां अधिष्टायक तो सर्वरोग तथा औषधी आदि पदार्थोंके होंयगे एस सर्वज्ञ वाक्य तथा अनुमान किसी २ जगे भया है, इस रोगकूं लोकीकमें माता कहते है हमारा अनुमांन है के पूत्रगर्भमें पडणे वाद और तों का ऋतूधर्मबंध हो जाता है वे रक्त परिपक्व होय स्तनोंमें दूध बणता है, वो प्रथम जन्मसेही बच्चा पीता है वोही गरमी कारण पाकर फूटकर निकलती है, क्योंके ऋतुधर्म आणेसें औरतकी गरमी वहोंतछंट जाती है, उस ऋतूधर्मके समय कोइ मैथुन करे तो गरमी सुजाक शिरमें दर्द नामर्द आदि रोग प्राणीके होता है इसवास्ते वो गरमी माताके दूधकी होणेसे स्पातूलोक इसे माता कहते होंगे तब तो लोकोंके वाक्य सच्चे हैं परमार्थ नहीं जाणते हैं, (इलाज).

(२) नींवकी अंतर छाल पित्तपापडा कालीपाठ पटोल चंदन रगत चंनण खस वाला कुटकी आंवला अरडूसा लालधमासा ये सब थोडे २ लेकर पीस उसमें मिश्री मिलाकर उसका पाणी करके रखणा उसमेंसें थोडा २ पिलाणा इससें दाह बुखार वगेरे शांत होता है, और मसूरिका मिटजाती है, (२) मजीठ वडकी छाल पीपरकी छाल सरेसकी छाल और गुलरकी छाल पीसकर दाणोंपर लेपकरणा (३) दाणा बाहर नीकलकर पीछा अंदर घुसते मालम देतो कचनारके दरखतकी छालका क्काथकर उसमें सोनामुखीका थोडा चूर्ण मिलाकर पिलाणेसें दाणा पीछा बाहर आता है, (४) मूंमें तथा गलेमें व्रण जखम होयतो आंवला तथा मोले ठीका क्काथकर सहतडालकर कुरला कराणा (५) थेगी नामके दाणे होते हैं, वो तथा मोलेठीकूं पीस उसका पाणीकर आंखोंपर सींचणेसें आंखोंका बचाव होता है, (६) मोलेठी त्रिफला पीलूडी दारु हलदी कमल वाला लोद तथा मजीठ इनोंको पीस आंखोपर लेप करणेमे आवे या उसके पाणीकी बूंदें आंखमें डालणेमें आवे तो आखोंके व्रण मिटजाते हैं, और इजा नहीं होती गूंदीकी छालकूं पीस ऊपर जाडा लेप करणेमें आंखकू फायदा होता है, (७) दाणे फूट किचकिचाकर उसमेंसें पीप तथा दुर्गंध निकलती है, तब पंचवल्कलका कपडछाण चूर्णकर उसपर दबाणा देशमारवाडमें कायफलका चूर्ण दबाते हैं, रसीकूं धोडालणेवास्ते भी पंचवल्कलका उकाला भया पाणी अच्छा है, (८) कारेलींके पत्तोंका क्काथकर उसमें हलदीका चूर्ण डाल पिलाणेसे चमडीमें घुसे भये अंदर व्रण बुखार दाहकी शांति होती है, (९) दस्त होते होय तो बंधकी दवा देणी दस्तबंध होयतो हलका जुलाब देणा नाताकती मालम देतो खुराक उपरांत द्राक्षा सब पोर्ट बाईन योग्य मात्रा प्रमाण डाकटर देते हैं, (१०) फफोले फूटे पीछे खरूंट जाय

ठसका होणे लगे तब ये दवा देणी मात्रा दो बूंद थोडे जलसंग (५) एन्टीमनीटार्ट श्वास नलीके सोजेमें मात्रा १ रत्ती दर तीन घंटेसें (६) सल्फर, बचाओरीसें अच्छा भयां पीछै थोडा दिन ये दवा देणी अच्छी है, (मात्रा) अर्कका दो बूंद थोडे पाणीके संग दिनमें तीनवेर (विशेष सूचना) तथा खुराक शीतलामे लिखे मुजब.

(अछ पडा)

(चीकन पॉक्स)

ये रोग छोटे बच्चोंको होता है, ये बहोत हलका मरज है, पहले दिन जरा २ बुखार आकर दुसरे दिन छाती पीठ तथा खंधेपर छोटे २ लाल २ दाणे होते हैं, दिनमें वो दाणे बडे होकर उसमें पाणी भरके मोतीके दाणे जेसा होता है, लगबग शीतलाके दाणे जितना होता है, लेकिन् बहोत थोडे और दूर २ होते हैं, बुखार थोडा होता है, दाणोंमें पीप नहीं होता इस रोगमें कुछ डर नहीं है, कितनेक बखत बच्चोंके खेलते २ निक लजाता हैं, इस रोगमें इलाजकी कुछ जरूरी नहीं है,

(रतवायु विसर्प)

(इरीसी पेलास)

(प्रकार) देशी वैद्यक शास्त्र मुजब जुदा २ तेसें मिश्रदोपके संबंधसें विसर्प याने रतवायू सात प्रकारका है, मुख्य दो प्रकारका है १ दोप जन्य विसर्प और २ आगंतुक विसर्प विरुद्ध आहारसें शरीरका दोप तथा खून विगडकर जो रतवायु होती है, वो दोपजन्य ओर जखम शस्त्र जहर अथवा जहरी जांनवरके, नख दांतसें भया जखम और जखमपर रतवायूके चेपका स्पर्श वगेरे कारणोंसे जो रतवायू होता है, वो आगंतुक विसर्प कहाता है.

(कारण) प्रकृति विरुद्ध आहार चेप खराव जहरी हवा जखम मधुप्रमेह वगैरे रोग जहरी जानवर या उनोंकाडंक इत्यादि रतवायुके बहोत कारण है, जैनियोके श्रावकाचार ग्रंथोंमें, ब्राह्मणोंके बनाये चरक ग्रंथमें एसा लिखा है के ये रोग कितनेक हरेशागके बहोत विनामोसम विनातपासे अथवा बहोत खाणेका मावरा रखणेसें ये रोग होता है, इन सब कारणोमेंसें कोईभी कारणसें वदनका रस तथा खूनमें जहरी जांनवर पैदा होते हैं और रतवायू फेलता है.

(लक्षण) रतवायु ये चमडीका वरम है, वो एक जगेसें दुसरी जगे फिरता है फेलता है, इसवास्ते वायू ऐसा नाम धरा है, इस रोगमें बुखार आता है और जो लाल होकर सूज जाती है, हाथ लगाणेसें रतवायुकी जगे गरम मालम देती है, और अंदर चिणक मारती है, प्रथम ठंढसें कांपणी बुखारका जोर मंदाग्नि प्यास और बुखार ये उसके पहले लक्षण है, पसीना लाल उतरता है, नाडी जल्दचलती है, उसके

संग किसीजगे उलटी और भ्रम होता है, उससे रोगी वकता है, तोफानभी करता है, एसें चिन्ह भये पीछै दुसरे या तीसरे दिन शरीरके किसीभी भागमें रतवायू दिखाई देती है, दाह और लाल सूजन होती है, आगंतुक रतवायू कुलथीके दाणे जेसा होकर फफोलोंसें सरू होता है, उसके संग कालाखून सोजा बुखार और दाह वहोत होता है, ऊपरकी चमडीमें भया होय तो ऊपरके इलाजसें थोडा दिनोंमें शांत होता है, लेकिन् उसका विष जो गहरा चला गया होय तो विसर्प वहोत भयंकर होता है, वोपकता है, फफोला होकर फूटता है, सोजा वहोत होता है, दरद वेहद होता है. रोगीकी शक्ति कम होती है, एक जगे अथवा अनेक जगे मूं करके फूटता है, उसमेंसें मांसके टुकडे निकला करते हैं, अंदरका मांस सडते जाता है, आखर हाडोंतक पहुचता है, तब रोगी बचणा मुस्कल है, गलेमें भये विसर्पमें जादा डरहै.

(इलाज) (१) वदनमें दाह नहीं करे एसा जुलाब उलटी लेप और सींचणेके इलाज और जरूर पडे तो जोकलगाणी.

(२) दशांगलेप (नं० ३१२) ठंढे पाणीमें या मखणमें या गुलाब जलमें पीस उसका गीलालेप वेर २ करणा (३) जात्यादि घृत (नं० ३०२) रतवायू फूटे पीछै घाव भरणेकू ये मलम अच्छा है (४) रतवेलिया काला हंसराज हैमकंद कबाबचीणी सोनागेरू वाला चंदन वगेरे ठंढे पदार्थोंका लेप करणेसें रतवायूकी दाह तथा सोजा शांत पडता है, (५) पंचवल्कल (नं० १५७) अथवा चंदन अथवा पद्मकाष्ट वाला मोलेठी इनोंकों पीस याउकालकर ठढाकर धारदेणेसें फूटे बादभी इस जलसें धोणा (६) चिरायता अरडूसा कुटकी पटोल त्रिफला रगतचंदण नींवकी अंतर छाल काथ करके पीणा बुखार उलटी दाह सोजा खुजली विस्फोटक वगेरे सब मिटजाता है.

(अंग्रेजी इलाज) (१) रतवायु फैलणे नहीं पावे इसवास्ते रतवायू सोजेके आसपास नाइट्रेट ओफ सिल्वरकी लकीर खेंच देणी (२) बेलाडोना और ग्लिसराइन मिलाकर चुपडणा (३) ओक्युसाईड ओफ झिंक मुरकाणा (४) टिंकचर ओफ स्टील (२०) (३०) बूंद और पाणी १ औंस दोनोंकों मिलाकर दर तीन २ घटसे देते रहणा (५) अफीमके डोडेडाल उकालकर गरम पाणीका शेक करणा, सोजेपर चणख अथवा अंगार जेसी जलण होय तो जोकलगाणी सोजा पककर पीपभये बाद नस्तर दिलाकर पीपका निकाशकर देणा (६) रोगी अशक्त मालम पडे तो कारबोनेट ओफ आमोनिया ५ ग्रेन लाडेनम ६ मिनिम सिंकोनाकी छालका उकाला १॥ औंस सब मिलाकर दिनमें तीन वरे देणा.

होमियो पैथिक इलाज.

१ बुखारकूं शांत करणे एकोनाइट (२) इस रोगवास्ते बेलाडोना अच्छा इलाज है,

ये रतवायूमें ललाई सोजा और दरद होय तब देणा (३) खराब भयंकर रतवायूमें व्हसटॉक्स नामकी दवा प्रबल मालम दीहे (४) रतवायूका जखम चकचके और सडे तब आर्सेनिक देणा अच्छा है, (५) सन्निपात और तंद्रामें स्ट्रेमोनियम देणा.

(विशेष सूचना) खुराक अच्छा देणा दूध तथा दूध डालकर पकाई भई कांजी चावलोंकी उत्तम पथ्य है, रोगी अशक्त मालम देतो द्राक्षा सध या पोर्टवाइन देतेहैं रोगीके आसपास जाणे देणा नहीं रतवायूके इलाज करणेवाले वैद्य या डाकतकी मारफत इस रोगका चेप दुसरे दरदियोंके खास करके जखमवाले रोगियोंके वदनमें प्रवेश करता है, इसवास्ते रतवायूवालेके स्पर्शमें आणेवाले डाकटरोने बहोत सफाई रखणी चाहिये.

(गठिया बुखार) अग्निरोहिणी.
(व्यवोनिक प्लेग).

ये विलक्षण तरेका मरज बहोत अरसा भया चल रहा है, अनादि है, तोभी ये रोग सुणते है, विक्रम संवत् सोलेसेमें अकब्बरके वखतमें भी, चलाथा जिसका फेर अब मुंबइसें चला है, वर्ष दस होगया अब तो प्राये दक्षण पूरब उत्तरादि देशोंमें फेलगया है, लोकोंकों ये रोग नया मालम देता है, रोगकी उत्पत्तीका कारण तथा इसका इलाज सोधनेकूं सरकार तथा प्रजा बहोत प्रयास कररही है, लेकिन् दिलकूं पुरीत सली होय एसा निर्णय अभी भया नहीं है, इस बाबतमें न्यारे २ अभिप्राय है, हमारे समझसेंतो विस्फोटक रोगकी आठ जातिमेंसे है, एक देशी वैद्य अग्निरोहणी जो क्षुद्र रोगमेंका एक भेद है, सो बतलाते हैं, असाध्य विस्फोटक और अग्निरोहिणी एक सदृशही है, ये तो मारही डालती है; लेकिन कोइ २ बच जाता है, इस अपेक्षा विस्फोटक एकदोषी द्विदोषी सिद्ध होता है, अग्निरोहिणीवाला कभी बचता नहीं (विदारीका) के भी लक्षण क्षुद्ररोगमेंका मिलता है, हरतरे हैजेकीतरे चेपी और भयंकर है, तोभी बखतपर इलाज हो जाय तो हैजेकीतरे कष्टसाध्यतक रोगी बच सकता है, इस बुखारका मुख्य चिन्ह यह हैकी रोगीके गलेमें काखमे या जांघकी जडमें बदके जेसी गांठ निकलती है, और जादा करके सन्निपातके चिन्होवाला बुखार आता है, एसे रोगोंका इलाज अनुभवी चतुर वैद्य शास्त्राधार बुद्धिकी तर्कसें इलाज और देखरेख और सल्ला करता रहे वो निर्भय रस्ता समझणा इस ग्रंथमें जो इलाज हम लिखते हैं, सो पतवाके देखणा यथार्थ है, (१) नीमका पंचागका क्वाथ सुंठ मासाभर भुरकाकर (२) अभयादि क्वाथ (नं० १९४) उसके संग चंद्रप्रभा (नं० ३४५) नामकी गोली मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा बेमार अशक्त और लिचीज गया होय तो थोडा २ द्राक्षासव देतेहैं इकेला अभयादि क्वाथभी अच्छा है, (२) विसर्पमें बताये भये इलाजभी इस बेमारीपर चलता है,

(३) दशांगलेप (नं० ३१२) अथवा दोषघ्नलेप (नं० ३११) के संग नींमकेपत्ते छालमें पीस उसका जाडाथर गांठ अथवा सोजेपर बांधणा (४) त्रिदोषज्वरका तथा त्रिदोष ग्रंथि विस्फोटकका इलाज करणा उसके संग उलटी दस्त वगेरे जोजो उपद्रव होय उसके दवाणेका प्रयत्न करणा (५) वहोत सफाई रखणी डिसइन्फेक्टंटस (नं० ५६९) का उपयोग करणा रोगीकूं अलग रखणा इसके विछोणेके आसपास खसवोईदार सुगंध अगरवत्ती धूप उखेवणा उसके कपडोंकोंभी खसवोदार रखणा रोगीके श्वास तथा मलमूत्रसे जेसें वने तेसें दूर रहणा उसके सोणेके कमरेमें अलग जरूरीके अदमीटाल जादा अदमी जाणा नहीं उस कमरेमें हवा तथा उजाला रहे एसा खुलासा रखणा और विशेष खुलासावास्ते छपरेके कवेलु नलियेभी निकाल देणा लेकिन वरसात पडे तो नहीं निकालणा रोगी अच्छाभये पीछै अगर मरगये पीछै उसका विछोना वगेरे सव चीजों जला देणी कमरेकूं कितनेकदिन खुला रखणा और जहांतक उसकी हवा साफ नहीं होय उहांतक कोइभी उस कमरेमें जाणा नहीं आखर कमरेकूं डिसइनफेक्ट करके तथा कलीचूनेसें पोताकर उपयोगमें लेणा.

(विसूचिका हैजा कैदस्त कोलेरा)

(कॉलेरा)

(विवेचन) ऊपर लिखा जो फूटकर निकलणेवाले वुखार तथा हैजा वगेरे फाडकर निकलणेवाले मरजोंके संवंधमें यूरोपी विद्वान अभीतककोई संतोपकारक निर्णय नही करसके हैं, तो फेर इलाज का तो कहणा ही क्या फाडकर निकलते मरजोंका मूलकारण जहरी हवा है, एसा अनुमान होता है, लेकिन् वो जहरी हवा कैसी हालतमें कैसे अदम्योके वदनमें असर करती है, उसका कुछ निर्णय नही भया है, अनुभवसें विद्वानोंने समझाहे के जिस करके शरीरका जीवन अथवा जीवनशक्ति घटती है, वो कारण एसे रोगोंकों रस्ता देता है, (जीवन शक्तिकूं कम करणेवाला कारण इस मुजव है,) नसेवाले मादक पदार्थोंके विसनसें मगजके तंतु नाताकत हो जाणे लंवी और वहोत महनतवाली मुसाफरी उसके सववसें वदन नाताकत हो जाणेसें वहोत अदम्योंके गरदीमे सोणेसें गीलासपणा गंदीवाडा अपूर्ण आहार दुकालमें भूख मरणेसें ये सव कारण फाडकर निकलणेवाले रोगोंकूं वूलाता है, हरतरेकी महामारीमें इतनी वातें सिद्ध हो चूकी हैं, के जो प्रदेश आरोग्यताकूं नुकसान करणेवाले हैं, उसमेंभी मुख्य करके जिसजगे खानपांनके पदार्थ वहोत खराव मिलते हैं, अथवा खुराककी तंगीसें जो अदमी नाताकत और निरमायल भये होते हैं, एसी जगे एसे अदम्योंको एसा मरज संहार करता है.

देशी संस्कृत शास्त्रमें इस रोगका नाम विसूचिका है वदनमें सुई चुभाणे कीसी वेदना होती है, इसवास्ते विसूचिका नाम धरा है, जिस २ रोगोंसें वहोत वहोत अदमी मरते हैं,

ये रतवायूमें ललाई सोजा और दरद होय तब देणा (३) खराब भयंकर रतवायूमें व्हसटॉक्स नामकी दवा प्रबल मालम दीहे (४) रतवायूका जखम चकचके और सडे तब आर्सेनिक देणा अच्छा है, (५) सन्निपात और तंद्रामें स्ट्रेमोनियम देणा.

(विशेष सूचना) खुराक अच्छा देणा दूध तथा दूध डालकर पकाई भई कांजी चावलोंकी उत्तम पथ्य है, रोगी अशक्त मालम देतो द्राक्षा सव या पोर्टवाइन देतेहैं रोगीके आसपास जाणे देणा नहीं रतवायूके इलाज करणेवाले वैद्य या डाकतकी मारफत इस रोगका चेप दुसरे दरदियोंके खास करके जखमवाले रोगियोंके वदनमें प्रवेश करता है, इसवास्ते रतवायूवालेके स्पर्शमें आणेवाले डाकटरोने वहोत सफाई रखणी चाहिये.

(गठिया बुखार) अग्निरोहिणी.

(व्यवोनिक प्लेग).

ये विलक्षण तरेका मरज वहोत अरसा भया चल रहा है, अनादि है, तोभी ये रोग सुणते है, विक्रम संवत् सोलेसेमें अकव्वरके वखतमें भी, चलाथा जिसका फेर अव मुंवइसें चला है, वर्ष दस होगया अव तो प्राये दक्षण पूरव उत्तरादि देशोंमें फेलगया है, लोकोंकों ये रोग नया मालम देता है, रोगकी उत्पत्तीका कारण तथा इसका इलाज सोधनेकूं सरकार तथा प्रजा वहोत प्रयास कररही है, लेकिन् दिलकूं पुरीत सली होय एसा निर्णय अभी भया नहीं है, इस वावतमें न्यारे २ अभिप्राय है, हमारे समझसेंतो विस्फोटक रोगकी आठ जातिमेंसे है, एक देशी वैद्य अग्निरोहणी जो क्षुद्र रोगमेंका एक भेद है, सो वतलाते हैं, असाध्य विस्फोटक और अग्निरोहिणी एक सदृशही है, ये तो मारही डालती है; लेकिन कोइ २ वच जाता है, इस अपेक्षा विस्फोटक एकदोषी द्विदोषी सिद्ध होता है, अग्निरोहिणीवाला कभी वचता नहीं (विदारीका) के भी लक्षण क्षुद्ररोगमेंका मिलता है, हरतरे हैजेकीतरे चेपी और भयंकर है, तोभी वखतपर इलाज हो जाय तो हैजेकीतरे कष्टसाध्यतक रोगी वच सकता है, इस वुखारका मुख्य चिन्ह यह हैकी रोगीके गलेमें काखमे या जांघकी जडमें वदके जेसी गांठ निकलती है, और जादा करके सन्निपातके चिन्होवाला वुखार आता है, एसे रोगोंका इलाज अनुभवी चतुर वैद्य शास्त्राधार वुद्धिकी तर्कसें इलाज और देखरेख और सल्ला करता रहै वो निर्भय रस्ता समझणा इस ग्रंथमें जो इलाज हम लिखते हैं, सो पतवाके देखणा यथार्थ है, (१) नींमका पंचागका क्वाथ सुंठ मासामर भुरकाकर (२) अभयादि क्वाथ (नं० १९४) उसके संग चंद्रप्रभा (नं० ३४५) नामकी गोली मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाना वेमार अशक्त और लिचरीज गया होय तो थोडा २ द्राक्षासव देतेहैं इकेला अभयादि क्वाथभी अच्छा है. (२) विसर्पमें बताये भये इलाजभी इस वेमारीपर चलता है,

गोलियांकर तीन २घंटेसे एकेक गोली देणी अथवा कत्था तनीचाल हिरादखण२वाल और अफी-मअधरत्ती इनोंकूं मिलाकर इसका ४ भाग कर दर भाग तीन कलाकसे पाणीमें देणा अफीम तथा अफीमवाली दवाओं देणेसें पेट नहीं आफर जाय, इसकी संभाल रखणी कपूरका अर्क अथवा कपूर पेपरमीन्ट टरपेन्टाईन तिलीका तेल लाल मिरच लसण कांदे अनार्योकूं डाकटर ब्राडी देते हैं, पेइनकिलर ये सब चीजों अजीर्ण तथा हेजेमें फायदा करणे-वाली है, इसमेंकी एकाद जो हाजर होय उसका युक्तिसें उपयोग करणा (२) हिंगा-ष्टक चूर्ण (नं० १९०) हरडेका चूर्ण तथा साजीखार ये तीन चीज समभाग मिलाकर देणा अजीर्ण तथा हैजेमें बहोत अकसीर दवा है, क्रम २ से दस्त उलटीकूं बंध करतीहै, अजीर्णकूं पचाता है, पाचनशक्ति चढाता है, इसवास्ते दस्त उलटी बंध होय जहांतक इसकी फक्की एकेक दोदो घंटेसें देते जाणा जो उलटीमें निकलजाय तो तुरतही फेर दे देणी मात्रा चार आनेभर अनुपान पाणी (२) गंधकवटी (नं० ६६ (गंधकके पे-टेमें लिखे मुजब तइयार करणा (४) क्रव्यादरश नामकी देशी दवा अजीर्ण तथा हैजेपर बहोत फायदा करती है, दस्तके वेगको एकदम थांभ देती है, किसी प्रसिद्ध वैद्यके पास मिले तो लेणी मात्रा १ से ३ वाल अनुपांन दही अथवा छाछमें शेकाभया जीरा तलीभई हींग तथा सींधा निमक मिलाकर पिलाणा (५) संजीवनी (नं०२४४) ये गोलियां हैजेकेवास्ते बहोत अच्छा इलाज है, हैजेकी भयंकर हालतमें नाडी तूटजाती उसकूं ये गोली देणेसें धीरे २ पीछे नाडी हाथ लगती है, रोगी बच जाता है.

(अंग्रेजी इलाज) दस्त बंध करणेकूं (१) एरोमेटिक पाउडर ओफ चोक (न० ४०१) देणा मात्रा १० ग्रेणका एक डोझ दिये पीछे दस्तबंध नहीं होय तो दर दोदो घंटेसें दश २ ग्रेण दवा पाणीके संग देणा सरू रखणा (२) अथवा नीचे लिखी ७ वस्तुओंका चूर्णकर १० १५ ग्रेणतक दर तीनघंटेसे दस्तबंध होय जहांतक देणा.

चोक ४४ ग्रेण. तज १६ ग्रेण. जायफल १२ ग्रेण. केशर १२ ग्रेण. लोंग ६ ग्रेण इलायची ६ ग्रेण.

मिश्री २ द्राम महीन चूर्ण करके उसमेंसें दर २–३ घंटेसे १० से १५ ग्रेण मात्रा-तक पाणीके संग देणा इससें दस्तबंध नहीं होयतो उसके एक खुराकमें लाडेनमनां १० बूद और अफीम० । ग्रेण मिलाकर देणा.

(३) क्लोरोडाईन बूंद २० एक ग्लास पाणीमें मिलाकर देणा और फेर दो घंटे पीछे दुसरी वेर इसीतरे देणा (४) शुगरलेड ८ ग्रेण तथा अफीम १ ग्रेन इसकी ४ गोली गूदके पाणीमें बणाकर दस्तके जोर मुजब दर ३। ४। घटेसें एकेक गोली देणी नाताकती चढजायया अंग ठंडा पडे चहरा लिवरीज जायतो पीछे दस्तबंध करणेकूं अफीम या लाडेनम जेसी दवाओं देणी नहीं लेकिन नीचे मुजब शरीरमें गरमीलाणेवाला उपाय

उसकूं प्राचीन लोकोंनें महामारी एसा नाम धरा है, अंग्रेजीमें कोलेरा यहभी एक महामारी है, देशी शास्त्रकारोंने इसकूं जठराग्निके विकारोंमें एक तरेके अजीर्णके रोगोंमें गिणा है, निश्चयमें देखणेसें यही बात सच्ची है, सर्वज्ञके वचनसें क्योंके इसके सब लक्षण और इलाज अजीर्णके संग मिलता भया चलता है, लेकिन् सामान्य कारणोंसे जो अजीर्ण होता है, उससें ये अजीर्ण विशेष और विलक्षण कारणोसे होता है, ये अजीर्णका रोग साधारण अजीर्णसें नहीं होता लेकिन जहरी चेपी हवासें ये रोग एका एक फाडकर नीकलता है, और इसीवास्ते इस रोगकूं फाडकर निकलणेवाले रोगोंकी पंक्तिमें दाखल करा है.

(कारण) इस रोगका कारण बाहरकी कोइ जहरी वस्तु है, ये जहरी वस्तु हवाके संग तेसें पाणीकी मारफत वदनमें घुसकर अजीर्णकूं पैदा करती है, और दुसरे फाडकर निकलणेवाले रोगोंकीतरे जिस अदमीका वदन इस जहरी और चेपी रोगके तत्वोंकों ग्रहण करणे लायक भया होता है, उसकूं विशेषकर ये रोग लगता है, ये रोग जब चलता है, उस वखत जिसके जठरमें अजीर्णका विकार होता है, उसपर इस रोगका हमला होणा जादा संभव है.

(लक्षण) दस्त तथा कै ये इसरोगका खास लक्षण है, दस्त पतला पाणी जेसा तथा चावलोंके धोवण जेसा सुपेद होता है, दस्त उलटीके संग वदनमें वांइटे आतांमें आंकसी प्यास पेटमे दाह पेसाव थोडा ये विशेष लक्षण है, रोगका जोर जादा होता है, तब आखरकूं पेसाव बंध होता है, वदन ठंढा पडता है, वदनका रंग वदलकर झांया पडता है, आंखोंमें खड्डा पडता है, नाडी क्षीण पडजाती है, अगर जो इलाज नहीं लगे तो रोगी मरजाता है, जब रोगी सुधारेपर आता है, तब पेसाव खुलाश आता है, प्यास और दाह कम होजाती है, उलटी दस्त बंध होजाता है, दस्तका रंग वदलता है, नाडीमें तेज आता है, और अवाज साफ होती है.

(इलाज) कोईभी अदमीकूं दस्त उलटी होणे लगे वो चाहे अजीर्ण होय चाहे हेजा लेकिन् उसकूं बंध करणेका इलाज सरू करणा उसके इलाज इसतरे करणा (मो इस मुजब) अफीम एक मासा लोंग १ मासा जायफल १ मासा पुडिया ५ करणी वचेकेवास्ते थोडी मात्रा देणी तज इलायची सूंठ इनोंकों पीस करके फाकणेकूं देणा सूंठ मिरच पीपर जीरा शाहजीरा तली हींग सीधानिमक लाल मिरच लसण कांदेका रस वगेरे चीजोंमेंसें जो मिले उसकूं कपड छाणकर पाणीमें देणा कांदेका रस पिलाणा हो दीनकूं उकाल उसमें कांदेका रस तथा कोडियालोचान अथवा इलायची मिलाके पिलाणा दस्त उलटी सरू होणेके पहली तुरतमें कुछ खाया भया होय तो उसकूं गरम जल पिलाकर उलटी करा देणी कोइ दवा हाजर नहीं होय तो १ रत्ती अफीमकी ८

ा (५) सालवोलेटाइल बूंद ४० एक प्याले पाणीमें मिलाकर देणा और पीछै दर घंटेसें अथवा नाडी वहोत धीमे चलती होय तो दरघंटे देते रहणा (६) कस्तूरी ण तथा कपूर ९ ग्रेण इन दोनोंकों १॥ चमचा ब्रांडी डाकतर मिलाकर के तीन हिस्सेकर हरेक भागमें एक चमचा पाणी मिलाकर घंटे घंटेमे देते हैं, वा इन दोनों दवाकी ३ गोलियाकर घंटे २ सें तीन वेर देणी ब्रांडी तथा आसवके णीकूं आदेका अथवा कांदेका रस या सूंठके जलमें देणा.

(७) कस्तूरीका अर्क ३० बूंद
सालवोलेटाइल २० बूंद
पाणी २ तोला

मिरच लालका अर्क २० बूंद
आदेका रस १ तोला
टरपेन्टाईन तेल १० बूंद.

(८) नं० ५२४) ५२५) ६२०) तथा ६२२ के मिक्षर फायदेवंद है. (होमियोपथिक इलाज) (१) केम्फर (कपूर) वहोत अच्छा इलाज है, हैजेकी रु आतमें वहोत अच्छा असर करती है, मात्रा ५ बूंद अनुपान मिश्री रोगके जोर जब दससे तीस मिनटके फासलेसे देणा पांच छ वखत देणेसें दस्त उलटी बंध नहीं य तो ये दवा बंधकर दुसरा इलाज करणा (२) आर्सेनिक पेटमें वहोत दाह प्यास चेनी चीकणा ठंढा पसीना नाडी वहोत धीमी जीभ सूकी काली और फटी इत्यादिक स्त उलटी समेत लक्षण होय तब ये दवा देणी मात्रा २ बूंद पाणीके संग दरएक या आधी घंटेसें (३) कारबो व्हेज रोगी जब ठंढा गार होकर मरणेकी दशामें पडा होय तब ये दवा देणी इसके सिवायकोलोसिन्थ व्हिरेट्रम आल्ब कुप्रम वगैरे दवायें भी कोलेरामें दिये जाती है.

(हैजेकी उलटी) हैजेमें कै वहोत होती होयतो सोडावोटर घंटे २ सें देणा नाडी तेज होय तो उसमें लाडेनमना १० बूंद मिलाणा अगर जो नाडी बिलकुल मंद और क्षीण मालम देतो घंटे २ से एक वाइन ग्लास सेम्येन नामका ब्रांडी दिलाते हैं, पेटपर राईका लेप करते हैं, अथवा लाडेनम और क्लोरोफोर्म पेटपर लगाणा लाडेनमना ६० बूंद पाव पतली कांजीमें मिलाकर उस कांजीकी गुदामें पिचकारी मारणा हिचकी वहोत होय तो दो कडवी विदामके मगजकूं पीस चमचे पाणीमें पिलाकर वो पिला देणा अथवा दुसरी पीणेकी दवा संग वो पाणी मिलाकर पिलाणा (हैजेमें प्यास्से) सोडावोटर तथा बरफ, चाः प्यासका इलाज करणा दस्त उलटीसे बदनमेंसें पाणीका प्रमाण वहोत कम होते जाता है, वो पूरा करणेवास्ते थोडा २ पाणी पिलाणा चाहिये पाणी बंध करणेसें नुकशान है, (हैजेमें पेसाव बंध होणा) पेसाव खोलणेकूं बदनमें गरमी आंवे तब गरम इलाज बंधकर देणा मूत्राशयपर राईका लेप करणा केमूलेके फूल बाफ कर पेडूपर बांधणा रोगीकूं गरम जलमें कमर बूड बैठाणा पाणी तथा सोरा खार पिलाणा

हैजेकी दवाविधि.

इलायची शिलाजीत पाणीके संग पिलाणा सोडा तथा टार्टरिड एसिड पिलाणा (न० ५३०) मिकश्चर पिलाणा (हैजेमें पेट आफरणा) दस्तबंध होकर पेट आफर जाय तो दस्त आणेका इलाज करणा हरडे साजीखार तथा हिंगाष्टकवाली फक्की देणी ब्लुपील ३ ग्रेण और कपूर १ ग्रेण इन दोनोंकों मिलाकर १ गोली वणाकर देणा ३ घंटेमें दस्त नहीं आवे तो फेर एसी ही गोली देणी.

(हैजेमें वदन ठंढा पडणा) हैजेमें वदन ठंढा पडे तो गरम किये कवेलू याने खपरेल अथवा ईट अथवा निमककी तथा वेलूकी पोटली तथा गरम पाणी भरी वोतल इसके अंदर किसीकाभी सेक करणा धावली वगेरे गरम कपडेसें वदन ढाकर रखणा शेक करते वदनकूं उघाडा रखणा नहीं लेकिन् ओढे भये कपडेपर शेक करणा वदन वहोत ठंढा पडे तो पगोंकी पीडीपर राईका पलाष्टर मारणा वदनपर कांदेका रस मसलणा सूंठ तथा अजवाणका खरड करणा वाइंटे आते हैं, जिसपरभी येही इलाज मसलणेमें फायदेबंद है, (खुराक) इस रोगमें कुछभी खाणेकूं देणा अच्छा नहीं है, जहांतक उसके भयानक चिन्ह शांत नहीं होय, वाद मूंगकी दालका पाणी रोगके सर्व लक्षण मिटे वादभी चावलोंकी कांजी याने दलिया मूंगका ओसामणसिवाय भारी और करडा खुराक देणा नहीं जो खाणेकी संभाल नहीं रखणेमें आयगी तो रोग उथला मारकर मौतकी निशाणीपर डालता है, अच्छीतरे आराम भये वाद रोटी वगेरे करडी खुराक देणा.

(विशेष सूचना) हैजेके रोगमें इलाज करणेकी ढील करणी नहीं शरु होतेही जैसा इलाज लगता है, तैसा कुछ एक देर भये वाद लग नहीं सकता दुसरे आसपासकी हवाकूं शुद्ध करणेकाभी उपाय करणा रोगीका हवासें वचाव करणा दिलासा और हिम्मत देणी इलाज जो डाकतर या वैद्य करे वोभी रोगीकू दिलासा देणा तू जलदी आराम हो जायगा घभरा मत इसवातसे उसकी हिम्मत वणी रहती है, क्योंके इसरोगके होतेही धसका पडजाता है के मरजाउगा इसवास्ते दिलासाभी दवा है.

(हैजेकू रोकणा) हैजेकी वेमारी चलती होय उसवखत जेसें घर कपडे वगेरे वाहरकी चीजों साफ रखणी तैसें पेटभी साफ अजीर्ण नहीं होय एसी तजवीज रखणी जराभी अजीर्ण मालम देतो तुरत उसका इलाज करणा जव इस मरजकी हवा चलती होय उहांतक साजे निरोगी अदमीने नीचे लिखी दवामेंसें एक दवाका सेवन रखणा तो इस हमलेमेंसें वचणेका सरस इलाज है, (१) सर्जावनी (नं० २४४) वाली गोलियां नित्य दो गोली फजर सांझ पाणीके सग लेणा (२) सल्फ्युरिक एसिड ३० वूंद कार्वोलिक एसिड २ वूंद पाणी २ औंस मिलाकर एकेक औंस फजर सांझ पीणा. (३) होमियोपैथिक केम्फर पिल्स अथवा रुबीनीका केम्फर १ वूंद फजर सांझ गि-

श्रीके संग लेणा (४) कपूर वगेरे सुगंधी पदार्थ धारण करणा तिलीका तेल वदनके लगाकर हमेसां स्नान फायदा करता है.

वातव्याधि.

(प्रकार) वातव्याधिका मुख्य दो प्रकार है. एकतरेकी वातव्याधिमें वदनकी नाडियोंमें वेहद जोर चपलता आकर खैचाताण होता है, जेसें हिचकी हिस्टीरीया वा ईटे वगेरे दुसरी तरेकी वातव्याधिमें सांधोंकी गति बंध होती है, और सांधे झिल जाते हैं, संधिवात पक्षाघात (लकवा) गृद्धसी (नीचेका तंग रह जाणा) इस वजे के जुदे २ अवयव झिलणेसें देशी शास्त्रमें उसके बहोत भेद आदि कारण नाम जैन शास्त्रमें लिखे हैं, एसें ८० या ८४ भेद मुख्य लिखे हैं, उसके नाम तथा संक्षेपसें पहिचाण इस ग्रंथके पृष्ठ दोयसै सताईस प्रकाश ४ में लिखा है, वायुके ८० प्रकारोंमें वायुवात, वादी एसा नाम है, अर्थात् इन सब रोगोंमें वादीही मुख्य है, इनसबोंका जुदा २ इलाज तेसें सबोंका सामान्य इलाज लिखा है, अंग्रेजी ग्रंथोंमें इन रोगोंका क्रम और ही है, जैसें वायुके कितनेक रोगोंकूं वदनके सामान्य रोगोंमें और कितने एकोंकूं मज्जा तंतुओंके रोगोंमें गिणा है, इस ग्रंथमें रोगोंका क्रम शरीरके अवयव प्रमाणमें लिखा गया है, इसवास्ते वायूके जो जो रोग है, सो शरीरके सामान्य स्थितीके संग संबंध रखता है, उसका इस जगे वर्णन करते हैं, और दुसरे कितनेक वादीके रोग जो मगजके साथ संबंध रखते हैं, उसका विवरण आगे करेंगें.

कारण–सूकालूखा हलका थोडा और ठंढा एसा अन्न खाणेसें वहोत स्त्री सेवन करणेसें वहोत ओजागरा करणेसें विरुद्ध दवा खाणेसें वहोत मिहनत कूदणा जलमें तिरणा रस्ते चलणा वगेरे वहोत खेचल करणेसें खून मलमूत्र कफ पित्त वगेरे कोई भी धातू वदनमेंसें जादा निकलकर वदन खाली पडणेसें वहोत फिकर करणेसें मलमूत्रकी हाजत रोकणेसें जड पदार्थोंका वदनपर चोट लगणेसें उपवासादिक वहोत लंघनकर शरीरके रसकूं सुकाय देणेसें और रिदयके मर्म स्थानपर चोट लगणेसें इत्यादि वहोत कारणोंसें कोपा भया वायू वदनके गति तंतुओंकों तथा दुसरे अवयवोंकूं जडकर देता है, अथवा जादा चपलगति वणाता है, इस करके वदनके सर्व अंगमें अथवा कोईभी एकाध अंगमें वादी आजाती है, अंग्रेजी अभिप्राय मुजब खूनमें फेरफार होता है, अर्थात् एसिड (खटाश) वधणेसें और क्षार घटणेसें खून जादा घट्ट होता है, और सांधोंको पकडता है.

लक्षण–पिछाडी ८० प्रकार वादीका विवरण पृष्ठ २२७ में देखो.

इलाज–वायूकूं जीतणा इलाजका मुख्य मतलब इतनाही है, वादी वदनमें और नसोंमें लूखापणा लाती है, इसवास्ते उनोंकूं चिकणा याने नरम करणेकी जरूरी

वायूकी दवाविधि.

है, चिकणी और गरम तेसें पसीना लाणेवाली सारक जो जो चीजें है, वो वादीके बेमारीमें अच्छी है, जुदे २ वादीके रोगोंके जेसें खास जुदे २ इलाज होते है, तेसें कोइ यक एसे भी इलाज हे के जो समस्त वादीके रोगोंमें सामान्यतेर उपयोगी है, सो लिखते हैं.

(१) वादीकूं जीतणेवाली दवाये (पृष्ठ) ३१३ पसीना लाणेवाली दवायें (पृष्ठ) ३१५सारक दवायें (पृष्ट)३१५ मगजकूं पुष्टी देणेवाली दवायें (पृष्ठ)३१७(२) गूगल-पुराणे वादीके रोगमें अर्थात् खेंचाताण वाइंटे हिचकी विगरकी वादीमें गूगल वहोत उत्तम इलाज है, अनेक तरेसें गूगल वणता है, जिसमें योगराज सिंहनाद वगेरे गूगल वादीकी बेमारीमें वहोत फायदेवंद है, योगराजका अनुपान घी अथवा घी और सहत (३) वच्छनाग-पुराणी वादीके रोगमें फायदाबंद है. तीक्ष्ण और नयी वादीके रोगमें वच्छनागका उपयोग नुकशान करता है, वच्छनागका तेल पुराणी वादीमें मसलणेसे फायदाबंद है, (४) कुचीला-वाइंटे और खेंचाताणवाले वादीके रोगमें अच्छा है, पुराणे वादीके रोगमें उलटा नुकशांन करता है.

(५) हींग-खेंचाताणवाली वादीमें हींग फायदेवंद है, रगोंके खेचताणकूं मिटाती है, (६) मालकांगणी-वादीका श्रेष्ठ इलाज है, वादीकूं मिटाणेवाली दवाइयां जेसेके अकलकरा मिरच लोंग गूगल अथवा योगराज वगेरे गूगलके संग देणेसें वहोत फायदावंद है, मालकांकणीका तेल मसलणेसें पेंटमें देणेसे फायदाबंद है, (७) लसण-वादीके हरणेमें मुख्य है, वो वहोत तरेसें खाये जाता है, १ लसणकी कलियोंकूं पीस उसमें तिलका तेल मिलाकर सींधानिमक मिलाकर देते हैं, २ लसणका कल्क (चटणी) दूधके संग तेलके संग घीके संग भातके संग अथवा चिकणे गरम औरभी पदार्थ संग देते हैं, (२) सेंचल अजवाण सेकी हींग सींधानिमक सूंठ मिरच पीपर इनोंके चूर्णमें इससें पांचगुणा लसण और लसणके चोथा भाग जितना तेल इन सबोंको मिलाकर उसमेंसें फजरमें हमेश १ रुपेभर चाटणा उसपर एरंडकी जडका काथ पीणा. (८) उडद (माष) वादी हरता है, उडदकी दाल उडदके वडे वगेरे पदार्थ तेल घीमें चिकणे खाणा इसके सिवाय माषवलादि काथ, एरंडकी जड कौंचबीज अहिंखर तालमखाणा रास्ना आसगध (माषतैल) उडद सींधानिमक कांसकी दशमूल हिंग वज शतावर सूंठ इस पदार्थोंमें तिलका तेल चणाणा और मसलणा (९) रास्ना अच्छा इलाज है, बजारमें जो रास्नाकी अंगली जेसी लकडियां मिलती है, वो रास्ना अच्छी नहीं है, रास्नाकी जूडीयां मुंबई भावनगर वगेरे बंदरोंमें बजारमें विकती है, स्यात् हकीम लोक इसकूं उसवा कहते हैं, एसी रास्ना फायदेवंद है, रास्नादि काथ वहोत तरेका होता है, उसमें महारास्नादि काथ (नं० २१४) वहोतही फायदेबंद है, ये

सूंठ धमासा हरडे अतीस नागरमोथा शतावर अरडूसेके पत्तोंका काढा पीणा (७) अजवाण पीपर सूंफ नागरमोथा मिरच सींधा ये सब एकेक भाग हरडे ६ भाग सूंठ १० भाग वधारा १० भाग भाडंगी ३६ भाग इन सबोंका चूर्ण गुडकी चासणीकर मिलाकर गोली वणाणी गरम पाणीसें लेणी (८) सूंठ हरडे लींडीपीपर निशोत सेंचल इनोंका चूर्ण थोडा दिन खाणा (९) शुद्ध गंधक हमेश चार आणीभर दूधके संग पीणा (१०) हरडे सूंठ देवदारू ये तीनों समभाग गूगल तीनोंसें दूणा इन चारोंको कूट एरंडीके तेलमें घोटकै वेर २ जितनी गोलियांकर एकेक लेणा (११) लसणपाक आगे लिखा है, वो तथा एरंडपाक, १६ तोला एरंडीके वीज अठगुणे दूधमें उकालणा आधा दूध जले पीछै उसमें ८ तोला घी ३२ तोला मिश्री और लसणपाकमें लिखीभई सब दवाइयां प्रत्येक चार २ आनाभर महीन पीस डालकर पाक तइयार करणा ये दोनों पाक पुराणे संधिवायूमें वहोत फायदेवंद है, (१२) गरमी तथा सुजाक (फिरंगसें) संधिवायू भई होय तो महारास्नादि क्वाथ अथवा महामंजिष्ठादि क्वाथ (नं० २१५ २२१) योगराज गूगल अथवा किशोर गूगल (नं० २५५ ५६) मिलाकर कितनेक दिन पीणा चोपचीणीका चूर्ण तथा चोपचीणीका पाक (नं० २८०) उपदंशके जीर्ण संधिवादीमें वहोत फायदा करता है—अंग्रेजी इलाज—तीक्ष्ण तथा पुराणी संधिवादीमें इस मुजब करणा—तीक्ष्णसंधिवादीमें (१३) साधारण संधिवादीमें रोगीकूं आराम देणा और दुखते सांधेपर ये लोसन धरणा—कारवोनेट ओफ सोडा अथवा कारवोनेट ओफ पोटाश ½ पाउन्ड उसकूं १ क्वार्ट गरम पाणीमें मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर सांधोंऊपर लपेटणा और उसपर तेलमें डुवाया भया रेसमी कपडा लपेटणा जो चलते हिलते वहोत दरद नहीं होता होय तो उसपर गरम वाफ हमेस देणा. वाफ देते वखत गरम पाणीमें कारवोनेट ओफ सोडा एकाध सेर डालकर वाफ देणा. (१४) जो दस्त खुलास नहीं आता होय तो उस वखत दस्तावर दवा नं० ४६१ ४६२ की मिलावट दवा देणी और नींद नहीं आवे तो डोवर्स पाउडरका १० से १५ ग्रेनका एक खुराक देणा रातकूं (१५) तीक्ष्णसंधि वायूमें अव्वलसें आखरतकके इलाजोंमें रोगीकूं हलका खुराक देणा और उत्तेजक तथा मादक सराप वगेरे अत्यंतपणेकर त्याग देणा (१६) इसके सिवाय तीक्ष्ण संधिवायूमें नं० ५२८ ५८३ ५८५ ५८६ वाले अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ६९४ ६९५ ६९६ तथा ६९७ के हकीमी ऊसके उनोंका उपयोग करणा (१७) जो संधिवायूके चिन्ह रक्ताशय ऊपर मालम पडे तो दरदकी जगे विलिस्टर मारणा और नं० ४९८ वाला मिक्षचर तीन२ कलाकसे देणा सरु रखाणा और कलेजेका भागकोरसूजी भइ मालम दे तो तव दवा वंधकर देणा (पुराणी संधिवायू— ( ) वदनमें उपदंश वगेरे गरमीका कारण होय तो उसकूं दूर करणेका इलाज

रखवाणा भी जी भई गीली सरदीकी जगे गीलीदिवाल पूरा कपडा नहीं पहरणा वगेरे संधिवायूकूं मदत देणेवाली अडचलोंकों दूर करणा और पूरा पोषण कारक अच्छा खुराक खिलाणा गरम कपडे फुलालीन वगेरेके पहराणा गरम दवा गरम खुराक रातकूं डोवर्स पाउडर और दरदकी जगे ग्रासन तेलका मालिस ये सब काम संधिवायूके वास्ते अच्छा है, (१९) नं० ५०५ तथा ५२८ का मिक्श्चर अनुक्रमसे अजमाणा और नं० ५९४ वाला लिनिमेन्ट उपयोगमे लेणा (२०) इसके सिवाय नीचेका मिक्श्चर जरूर पडे तो ऐकके पीछै एक अजमाके देखणा न० ५८७ ५८८ ५८९ वगेरे होमियोपैथिक इलाज–एकोनाइट तथा ब्रायोनिया ये दोनों चीजों तीक्ष्ण सधिवायूके वास्ते सर्वोत्तम इलाज है, संधिवायूके तीक्ष्णरूपमें रिदयमें विकार युमोनिया (फेफसेका वरम) तथा फेफसेके पुडका वरम वगेरे भयंकर रोग वढ जाणेका भय रहता है, तीक्ष्णसंधि-वायूमें ये दो दवायें दो दो तीन २ घंटेके अंतरसे वारी फिरत देणा इससे वुखार तथा दरद नरम पडे इतनाही नहीं लेकिन इससे सधिवायूका दरदभी मिटता है, ब्रायोनिया लिनिमेन्ट करके तेल होता है, वो वाहर लगाणेके काममें लिये जाता है, ये दवा दोनोंसें फायदा नही होय तो हसटोक्स अर्निका वेलाडोना पल्सेटिला वगेरे दवायोंका उपयोग करणा (पुराणे संधिवायूमें) नीचेकी दवा दी जाती है, ब्रायोनिया सांधोमें उष्णता और सोजन और चलते दरद होता है, तव ये दवा जादा उपयोगी हैं, होडे न्ड्रॉन सांधोमे फटणे माफक दरद होय तथा गोडेमें सोजा तथा लर्लाई होय तो ये दवा अच्छी है, हसटोक्स सांधे अकड जाय चलणेकी सरुआ-तमें वहोत दरद करे और कुछ यक चले पीछै दरद कम होय एसे दरदमें ये दवा फायदे वंद है, पलसेटिला घुंटणे गिरिये वगेरे सांधोमें वादी आई होय और रातकूं दरद वढता होय, औरतोके, ऋतुधर्मकामरज होय तव ये दवा उपयोगी है. सधिवादी-का उपचार वाहिरका (२१) संभालू (निर्गुडीके) पत्तोको वाफकर सांधोपर वांधणा (२२) दश मूलके उकालीमें तेल डालकर उसकूं फेर उकाल तइयार किया भया तेल मसलणा (२३) मालकांकणी कडवी जी भी अजवाण मेथी तथा तिल इनोंकों पीलके तेल निकालणा (२४) नारायणतेल ऊपर लिखा है, वो वहोत अच्छा इलाजहै (२५) वंवूलकी तथा सहजणेकी छाल पीस उसका लेप करणा (२६) सहत तथा कली चूनेकूं हथेलीमें मथकर दरदकी जगे लगाकर ऊपर रूई चपकाणी (२७) गूगल तथा गूजरका लेप (२८) सोवा देवदारू कूठ और सींधानिमककूं पीस आकके दूधमें मिलाकर लेप करणा (२९) लीनीमेन्ट और टिंकचर आयोडीन पांएसे लगाणा (३०) नं० ४४१ के पेटमें लिखे मये लिनिमेन्ट वापरणा (३१)

सूंठ धमासा हरडे अतीस नागरमोथा शतावर अरडूसेके पत्तोंका काढा पीणा (७) अजवाण पीपर सूंफ नागरमोथा मिरच सींधा ये सव एकेक भाग हरडे ६ भाग सूंठ १० भाग वधारा १० भाग भाडंगी ३६ भाग इन सवोंका चूर्ण गुडकी चासणीकर मिलाकर गोली वणाणी गरम पाणीसें लेणी (८) सूंठ हरडे लींडीपीपर निशोत सेंचल इनोंका चूर्ण थोडा दिन खाणा (९) शुद्ध गंधक हमेश चार आणीभर दूधके संग पीणा (१०) हरडे सूंठ देवदारू ये तीनों समभाग गूगल तीनोंसें दूणा इन चारोंको कूट एरंडीके तेलमें घोटकै वेर २ जितनी गोलियांकर एकेक लेणा (११) लसणपाक आगे लिखा है, वो तथा एरंडपाक, १६ तोला एरंडीके वीज अठगुणे दूधमें उकालणा आधा दूध जले पीछै उसमें ८ तोला घी ३२ तोला मिश्री और लसणपाकमें लिखीभई सव दवाइयां प्रत्येक चार २ आनाभर महीन पीस डालकर पाक तइयार करणा ये दोनों पाक पुराणे संधिवायूमें वहोत फायदेवंद है, (१२) गरमी तथा सुजाक (फिरंगसें) संधिवायू भई होय तो महारास्नादि क्वाथ अथवा महामंजिष्ठादि क्वाथ (नं० २१५ २२१) योगराज गूगल अथवा किशोर गूगल (नं० २५५ ५६) मिलाकर कितनेक दिन पीणा चोपचीणीका चूर्ण तथा चोपचीणीका पाक (नं० २८०) उपदंशके जीर्ण संधिवादीमें वहोत फायदा करता है—अंग्रेजी इलाज—तीक्ष्ण तथा पुराणी संधिवादीमें इस मुजब करणा—तीक्ष्णसंधिवादीमें (१३) साधारण संधिवादीमें रोगीकूं आराम देणा और दुखते सांधेपर ये लोसन धरणा- कारबोनेट ओफ सोडा अथवा कारबोनेट ओफ पोटाश ½ पाउन्ड उसकूं १ क्वार्ट गरम पाणीमें मिलाकर उसमें कपडा [illegible] सांधोंऊपर लपेटणा और उसपर तेलमें डुबाया भया रेसमी कपडा लपेटणा चलते हिलते वहोत दरद नहीं होता होय तो उसपर गरम वाफ हमेस देणा. वाफ देते वखत गरम पाणीमें कारबोनेट ओफ सोडा एकाध सेर डालकर वाफ देणा. (१४) जो दस्त खुलास नहीं आता होय तो उस वखत दस्तावर दवा नं० ४६१ ४६२ की मिलावट दवा देणी और नींद नहीं आवे तो डोवर्स पाउडरका १० से १५ ग्रेनका एक खुराक देणा रातकूं (१५) तीक्ष्णसंधि वायूमें अव्वलसें आखरतकके इलाजोंमें रोगीकूं हलका खुराक देणा और उत्तेजक तथा मादक सराप वगेरे अत्यंतपणेकर त्याग देणा (१६) इसके सिवाय तीक्ष्ण संधिवायूमें नं० ५२८ ५८३ ५८५ ५८६ वाले अंग्रेजी मिक्षचर तथा नं० ६९४ ६९५ ६९६ तथा ६९७ के हकीमी ऊसके उनोंका उपयोग करणा (१७) जो संधिवायूके चिन्ह रक्ताशय ऊपर मालम पडे तो दरदकी जगे विलिस्टर मारणा और नं० ४९८ वाला मिक्षचर तीन२ कलाकसे देणा मरु रखाणा और कलेजेका भागकोरसूजी भइ मालम देतो तव दवा वधकर देणा (पुराणी संधिवायू- (१८) वदनमें उपदंश वगेरे गरमीका कारण होय तो उसकूं दूर करणेका इलाज

करवाणा भी जी भई गीली सरदीकी जगे गीलीदिवाल पूरा कपडा नहीं पहरणा वगेरे संधिवायूकूं मदत देणेवाली अडचलोंकों दूर करणा और पूरा पोषण कारक अच्छा खुराक खिलाणा गरम कपडे फुलालीन वगेरेके पहराणा गरम दवा गरम खुराक रातकूं डोवर्स पाउडर और दरदकी जगे ग्रासन तेलका मालिस ये सब काम संधिवायूके वास्ते अच्छा है, (१९) नं० ५०५ तथा ५२८ का मिक्श्चर अनुक्रमसे अजमाणा और नं० ५९४ वाला लिनिमेन्ट उपयोगमे लेणा (२०) इसके सिवाय नीचेका मिक्श्चर जरूर पडे तो ऐकके पीछे एक अजमाके देखणा न० ५८७ ५८८ ५८९ वगेरे होमियोपैथिक इलाज–एकोनाइट तथा ब्रायोनिया ये दोनों चीजों तीक्ष्ण संधिवायूके वास्ते सर्वोत्तम इलाज है, संधिवायूके तीक्ष्णरूपमें रिदयमें विकार युमोनिया (फेफसेका वरम) तथा फेफसेके पुडका वरम वगेरे भयंकर रोग वढ जाणेका भय रहता है, तीक्ष्णसंधिवायूमें ये दो दवायें दो दो तीन २ घंटेके अंतरसे वारी फिरत देणा इससे वुखार तथा दरद नरम पडे इतनाही नहीं लेकिन इससे संधिवायूका दरदभी मिटता है, ब्रायोनिया लिनिमेन्ट करके तेल होता है, वो वाहर लगाणेके काममें लिये जाता है, ये दवा दोनोंसें फायदा नहीं होय तो हुसटोक्स अर्निका वेलाडोना पल्सेटिला वगेरे दवायोंका उपयोग करणा (पुराणे संधिवायूमें) नीचेकी दवा दी जाती है, ब्रायोनिया सांधोंमें उष्णता और सोजन और चलते दरद होता है, तव ये दवा जादा उपयोगी हैं, होडे न्ड्रॉन सांधोंमे फटणे माफक दरद होय तथा गोडेमें सोजा तथा ललाई होय तो ये दवा अच्छी है, हुसटोक्स सांधे अकड जाय चलणेकी सरुआतमें वहोत दरद करे और कुछ यक चले पीछे दरद कम होय एसे दरदमें ये दवा फायदे वंद है, पलसेटिला घुंटणे गिरिये वगेरे सांधोंमें वादी आई होय और रातकूं दरद वढता होय, औरतोंके, ऋतुधर्मकामरज होय तव ये दवा उपयोगी है. सविवादीका उपचार वाहिरका (२१) संभालू (निर्गुडीके) पत्तोंको वाफकर सांधोपर वांधणा (२२) दश मूलके उकालीमें तेल डालकर उसकूं फेर उकाल तइयार किया भया तेल मसलणा (२३) मालकांकणी कडवी जी भी अजवाण मेथी तथा तिल इनोंको पीलके तेल निकालणा (२४) नारायणतेल ऊपर लिखा है, वो वहोत अच्छा इलाजहै (२५) वंबूलकी तथा सहजणेकी छाल पीस उसका लेप करणा (२६) सहत तथा कली चूनेकूं हथेलीमें मथकर दरदकी जगे लगाकर ऊपर रूई चपकाणी (२७) गूगल तथा गूजरका लेप (२८) सोवा देवदारू कूठ और सींधानिमकूं पीस आकके दूधमें मिलाकर लेप करणा (२९) लीनीमेन्ट और टिकचर आयोडीन पांयसे लगाणा (३०) नं० ४४१ के पेटेमें लिये भये लिनिमेन्ट वापरणा (३१)

नं० ३११ ३१८ का लेप संधिवायूपर फायदा करता है, एकही सांधेमे दरद होय तो (केन्थारीडीस पलास्टर मारणेसें तुरत फायदा होता है.

(विशेष सूचना) ये सब बाहरके इलाज दरदकूं कम करता है, लेकिन् दरदकी जड खून सुधारणेवाली दवापीये विगर जाती नहीं और एक बेर मिटे पीछै फेर होजाता है, इसवास्ते संधिवायू मिटाणेकू कितनेक दिनोंतक खून सुधारणेकी दवाओंका सेवन करणा चाहिये तीक्ष्णसंधिवायूवाले रोगीने बुखारके रोगी. जितनी संभाल रखणी पवनमें तथा शरद हवामें फिरणा नहीं. ठंढे पाणीसे नाहणा नहीं. बहोत गरम बहोत ठंढा तथा लूपा पदार्थ खाणा नहीं. ठंढा यानेवासी अन्न खाणा नहीं सूकी और गरम हवावाले प्रदेशमें रहणा. खुराक पोषण कारक लेणा लेकिन हलका लेणा पथ्य—दूध घी तेल मधुररस तिल गहूं उडद एकवर्षके पुराणे चावल कुलथी परवल सहजणा लसण अनार केरी और चिकणा तथा गरम पदार्थ फायदा करता है, अपथ्य—चिंता उजागरा दस्त पेशाबकूं रोकणा अथवा कबजी उलटी करणी महनत लंघन चणा मटर कांग चवला जामुन सुपारी बाल करेले पत्तोंका शाग ठंढा अनाज ठंढा पाणी बहोत क्षार तुरा (खट्टा) कडवा तथा तीखा पदार्थ गरम मशाला सराप वगेरे नसेके पदार्थ उत्तेजक पदार्थ और मैथुन तथा घोडे वगेरोकी असवारी इतनी बाते नुकशान करती है, पुराणे संधिवायुवालेने शक्तिमुजब खुली साफ हवामें चलणे फिरनेकी कसरत करणी. तीक्ष्ण संधिवायुमेंसे दुसरे रोग पैदा होते सो-रक्ताशयका घट्ट होणा तथा बंध होणा फेफसेका रोग (न्युमोनिया) प्ल्युरीसी वगेरे (कोरीआ बच्चोकामरज जिसमें बच्चोंके हाथ पांवके तथा बदनके कितनेक स्नायु इच्छा विगर हमेश चलते रहता है, आंखके भांफणीका बरम याने पुडतपर सूजन आंडोंका सोजा तथा गंठियावायु वगेरे बहोतसे उपद्रव होजाता है, उसमेंभी जब रक्ताशय वगेरे मर्मके ठिकाने संधिवायूका विकार प्रवेश करजाता है, तब ये रोग बहोत भयानक होजाता है, फेर तो थोडेही बचते हैं.

आमवात.

वर्णन—जिन २ रोगोंमें वायूका प्रकोप होता है, अथवा वायू दुसरी धातूकूं प्रेरणा करती है, उन सब रोगोंकू आर्य वैद्यक शास्त्र कारोनेवादीके रोगोंमें गिणा है, अथवा उसकेसाथ वात एसा शब्द लगाया है ये दुसरे प्रकारमें आमवात वातरक्त वगेरोंका समावेश होता है, अंग्रेजीमें आगे लिखे मुजब ज्ञान तथा गति तंतुओंके और मगजके रोगोंमें जुदा गिनाया है, जिस रोगकूं आर्यवैद्यकशास्त्र आमवात लिखता है, उसका अंग्रेजीमें संधिवायू अथवा गंठिया वायूमें समावेश होगया मालम देता है, क्योंकि आमवातमेंभी सांधेमें सोजन आता है, और दुसरे कितनेक लक्षण तैसे इलाजभी संधिवायूके रोगमें ऊपर लिखा उस मुजब है.

आमवात इलाज.

कारण–प्रकृति विरुद्ध आहार विहार करनेवाले मंद अग्निवाले कसरत याने चहिये जितना मेहनत नहीं करणेवाले ऐसे अदम्योंका आम (जठरका कच्चारस) वायूसे चलाय मान होकर कफके ठिकाणोमें जाता है, उहां कफके संबधसें जादा विगडकर वदनमें आमकूं फेलाणेवाली धोरी रगमें घुसता है, तब ये अन्नरस वायूपित्त तथा कफसें विग- डके सघनसोंमें भरजाता है, ये आम अनेक रगका चीकणा और तेलिया होता है, इस आमयुक्त वायू तथा कफ एकही समय कुपित होकर कमरमें प्रवेश कर वदनकूं जड बनाता है, भारी और चिकणापदार्थ खाकर तुरत महनत करणेसें भी ये रोग होता है.

लक्षण–ये रोग बहोत दुखदायक तथा भयानक है, इस रोगमें संधिवायू तथा अजीर्णके मिले लक्षण होते हैं, हाथ पांव गिरिये कमर गोडे और जांघोंकी सांधोंगें दरद करता भया सोजन होता है, जठराग्नि मंद पडती है, मूमेसें फेणवाला पाणी छूटता है, जिस २ जगे आंम पोहचता है, उस जगे विच्छूके डंक जेसी वेदना होती है, अन्नपर अरुचि होती है, वदन भारी होता है, सोजनमें जलण होती है, पेशाव बहोत होता है, शूल चभका होता है, दिनकूं नींद आती है, रातकूं नहीं आती प्यास उलटी उकारी भ्रम मूर्च्छा छातीमे दरद शूल दस्तकी कबजी शरीर जड जकडा भया होता है, इत्यादिक आम वातके लक्षण है, तीनू दोषवाला और जिसमें सब वदनमें सोजन आई भई होती है, वो आमवात असाध्य है.

इलाज–ऊपर संधिवायूके इलाज लिखे हैं, वो बहोतसे आमवातकूं मिटाते हैं, इसके सिवाय नीचेके इलाज अजमाणा.

(१) सूंठ तथा गिलोयका काढा पीणा कितनेक दिनोंतक (२) सूंठ तथा गो- खरूका काथ आमवात कमरकी शूल तथा पीठकी शूल मिटाता है, (३) रास्ना देव- दारू मिलावा सूठ मिरच पीपर एरंडीकी जड साटेकी जड गिलोय इसके उकालेमें सूंठ का कल्क अथवा सूंठका चूर्ण अथवा एरंडीका तेल डालकर पिलाणा (४) इकेली सूंठका उकालाकर उसमे एरंडी तेल डालकर देणा (५) दशमूलके उकालेमें एरंडी तेल (६) एरंडीके जडके रसमें सूंठ मिलाकर उसके गोलेका पुटपाककर उसमें सहत डालकर पीणा (७) सूठ पींपर पीपलामूल चित्रक चव्यका काथ देणा (८) साटेकी जडके काथमें सूठ तथा कचूर मिलाकर पीणा (९) रास्ना गिलोय एरंडीकी जड देवदारू और सूठका काथ (१०) लसण सूठ और निर्गुंडी (सभालूके बीज) इनों- का काथ (११) सूंठ हरडे तथा अजवाण इनोंका चूर्ण खट्टी छाछमे अथवा गरम पाणीमें पीणा (१२) साटेकी जड भूरगणी एरंडीकी जड मरवा जाल और सहजणा इन सबोंका पंचाग लेकर उसका काथ करके पिलाणा (१३) सरसूंके तेलमें किर

मालेके पत्ते सेककर सांझकू खाणा और पीछै व्यालु करणा (१४) हरडे १२ भाग सूंठ ४ भाग अजमोद ४ भाग खुरासाणी अजवाण दो भाग सींधानिमक २ भाग वारीक चूर्ण खट्टी छाछके संग या गरम पाणीके संग पिलाणा (१५) सूंठ २४ भर धाणा ८ भर इनोंका कल्ककर उसमें ६४ तोला घी तथा २५६ तोला पाणीमें डाल घी वाकी रहे उहांतक पकाणा इयघी आमवात मंदाग्नि वायू तथा कफकूं दूर करता है, (१६) सूंठका कल्क ५ रुपेभर सूंठका क्वाथ २५६ भर घी ६४ भर इन सवोंकों उकाल घी तइयार करणा ये घी कफ वायू मंदाग्नि तथा आमवातकूं मिटाता है, (२७) सुंठका पुटपाक, अजमोदादि चूर्ण–अजमोद वायविडंग सींधा निमक देवदारू चित्रक पींपलामूल पींपर सोवा मिरच ये दरेक एकेक तोला हरडे ५ तोला वरधारा दश तोला सुंठ दश तोला इन सवोंका चूर्ण गरम पाणीमें अथवा दूने गुडमें मिलाकर देणा (१८) रास्नादि क्वाथ (नं० २१४ १५ १९) योगराज गूगल (नं० ५८) (२०) खंडशूंठी–सूंठ ३२ तोला घी ८० तोला दूध १२८ तोला खांड २०५ तोला इनोका पाक करके इसमें सूंठ मिरच पींपर तज तमालपत्र और इलायची एकेक चार तोला ले चूर्णकर मिलाकर पाक खाणा (२१) गोमूत्रके संग गूगल पीणा (२२) सूंठके संग हरडे चाटणी (२३) तिल तथा सूंठ पीसकर उसकी चटणी खाणी (२४) सुंठ हरडे तथा गिलोयके क्वाथमें गूगल डालकर गरम गरम पीणा (२५) लसणका रस तथा गउका घी एकेक तोला पीणा.

पथ्य–विशेष सूचना–लंघण शेक रेच वाफे भये जवका जल वाफे भये वेंगण कडवे फल लसण मोरवेल साटेके पत्तोंका शाग परवल करेला, जव पुराणे, लाल चावल, कुलथीका मटरका तथा चणोका ओसामण सव लूखा अन्न छाछ लसण कडवा तथा तीखा पदार्थ–कुपथ्य–दही गुड खारवाले पदार्थ उडद मलमूत्रका अटकाव ओजागरा जड और कफकारक पदार्थ चिकणा और भारी पदार्थ जेसें घी मख्खण मलाई मेदेका पदार्थ पिसा अन्न.

वातरक्त–

ले ग्रसी.

लोक इस वेमारीकूं रक्तपित्त कहते हैं, सो नही वातरक्त और रक्तपित्त अलग रोग है, रक्तपित्तका स्वरूप आगे लिखेगें.

कारण–आरोग्यताके नियमसें विरुद्ध प्रकृति विरुद्ध तथा स्वभावसें विरुद्ध एसें खानपान संग खाने पीणेसें ये रोग पैदा होता है, इस रोगके पैदा होणेका खास या पक्का कारण अभीतक डाक्टरोंको मिला नहीं है, अभीके सोधकोने एसा सिद्ध किया ये रोग मूत्रग्रंथीमें पैदा होता है, वातरक्तका भयंकर रोगचेपी है, यानें

उपदंशकी तरे स्पर्शसें ये फेलता है, फेर वो ओलादमेंभी ऊतरता है, इसवास्ते वातरक्त-
वाला रोगीका संसर्ग करणा नहीं एसे रोगीके संग व्याह करणा नहीं गरीब भिक्षारी
लोक जो खराब विगडा भया अन्न खाणेवाले हैं, उनोमें ये रोग जादा देखणेमें आता
है, खराब खानपानसें वायू तथा खून विगडता है, दूषित भये वायूकेसग खून
मिला भया होता है, इसवास्ते इसका नाम वातरक्त है.

लक्षण—वातरक्तके पूर्वरूपमें प्रथम चिन्हतरीके वदनपर अत्यंत पसीना आता है,
अथवा विलकुल आता नहीं स्पर्शका ज्ञान कम होता है, सांधे ढीले होते हैं, अंग जड
होता है, वदनमें सुई चुभाणे जेसी वेदना होती है, मेद भारीपणा तथा ग्लानी होती
है, खुजली तथा जलण होती है, और वदनपर चक्कर २ होते हैं, रोग वढे वाद इसके
चिन्ह प्रगट मालम देते हैं, उंदरिया वायूकी तरे वदनपर गांठे तथा चकते उठकर
सव वदनपर विशेष करके कपाल वगेरे मूके अवयवोपर सोजा चमडीपर तग तगाट
और ललाई हाथ पांवोंकी अंगलिया टेढी होणी नख खिर जाणा जलण चमडी फूटणी
पाणी झरणा मांस गिरपडणा ये सव आखरीके चिन्ह हैं, इस रोगकी मुख्य दो खासियत
है, गंठिया वातरक्त तथा शून्य वातरक्त कितनेक आदमियोके वदनपर गांठे २ हो
जाती है, और कितनोंके वदनपर चमडी शुन वहरी याने स्पर्शका ज्ञान विगरकी हो
जाती है, और वहुतोंके दोनों रूपसें दिखाई देता है, कितनेएकोके अलग २ भी होजाता
है, (गंठिया वातरक्त—गंठिया गलत कोढ दो तरे सरू होता है, वुखारके संग लाल
चमडीपर चट्टे होजाते हैं, अथवा वुखार विनाभी सरू होजाता है, पहली चट्टे लाल
भूरे रंगके होते है, पीछे सुजकर उसमें गांठेवंध जाती है, मूं गाल नाक कान वगेरे
अवयवोंकी चमडी जाडी सूजी भई तथा तगतगती दिखती है, और पीछे वदनके
दुसरे भागोमें भी एसा फेरफार होता है, इस रोगके सरु भये पीछे प्रगट चिन्ह देखते
२ किसी २ वखत वहोत मुद्दतवीत जाती है, चाठोंसे गांठे होती है, वो गाठे वढकर
वडी होणेसें उसमेंसें फूटकर पीप वहता है, नाककी हड्डी सडकर नाक चपटा होता है,
वदनके ऊपरके छेडेपर एसा फेरफार होजाता है, तव दुसरी तरफसें नीचेके छेडेपर
पांवोंकी अंगुलिया सूज जाती है, पाणी झरता है, तथा गलके गिर पडती है, हाथ पैर
ठढा होता है,या हाथ पेरमें अगारसी जलती है, और पीछेसे शून्य होकर निकामी होती
है, शून्य वातरक्त—हाथ पैर अथवा वदनका कोईभी भाग शून्या पडता है, चमडीकी ये
शून्यता अकस्मात रोगी नहीं समझसके इसतरे आती है, रोगीकू अचंभा होकर शून्य
वहरी पीछे मालम देती है, किसी २ वखत वदनपर फफोला उठता है. पीछे ये फफोला
फूटकर पीला भरीजकर इस जगे सुपेद दाग पडता है, फेर दुसरी जगे फफोला उठता
है, प्रथम सरु आत हाथ पैरसें होता है, वदनपर चट्टे होते हैं, उसकी चमडी सूखी

और शून्य बहरी होती है, ये चठे फेलते जाते हैं, इय इहांतक शून्य होते हैं, सो इस भागकूं जलावे या काटे तोभी रोगीकूं मालम पडती नहीं इस गलत कोढ रोगमें अंगुलिया सडके नही पडती फक्त अंदर सकुडाकर ठूंठा होजाती है,

इलाज–वातरक्तका अकसीर इलाज युरोपि लोकोंके अभीतक कुछ हाथ नहीं लगा है, तोभी ये रोग सरु होतेही जो दवाई देते हैं, सो लिखते हैं, (१) शोधक दवाये (पृष्ट ३१५) सारक शोधक दवायें (पृष्ट ३१५) तथा रोपण दवाये (पृष्ट३११) (२) गिलोय उत्तम इलाज है, इस वास्ते गिलोयके काथमें एरंडीका तेल अथवा गूगल डालकर बहोत दिनोंतक सेवन करणा अथवा गिलोयका रस कल्क चूर्ण कर उसका सेवन करणा (३) गिलोय तथा गूगलकी त्रिफलाके काथमें गोलियां करके उसका सेवन करणा (४) अरडूसेका पत्ता गिलोय तथा अमल तास इनोकी उकालीकर एरंडीका तेल डालकर पीणा (५) तीनसे पांच हरडेकी छालका चूर्णकर गुडमें मिलाकर हमेश खाणेमें आवै उसपर गिलोयका काढा पीणा इससे भयंकर वातरक्त मिटता है, (६) दूधके संग एरंडीका तेल हमेश पीणा दस्त लगकर एरंड तेल पच गये पीछे दूधभातका भोजन करणा इसतरे बहोत दिनोंतक सेवन करणेमें आवै तो बहोत दोषोंका गलत कुष्ठ मिटता है, (७) गिलोयके काथमें गिलोयका काथ तथा कल्क डालकर चोगणा दूधमें सिद्ध करा भया घी खाणेसें बहोत फायदा होता है, अथवा गिलोयका काथ या स्वरसमें गिलोयके कल्कसे पकाया भया घी, सरु होता अथवा पुराणा भी वातरक्त मिटता है, (८) आकडेकी जडका बहोत दिनोंतक सेवन करणा (९) सोनामुखीका पवित्र चूर्ण (नं० १८६) बहोत दिनोंतक सेवन करता जाय तो वातरक्तकूं फायदा करती है, (१०) मोगरेकी छालका तेल १० से ३० बूंद चूनेके नितरे भये जलमें हमेस दिनमें दो तीन वखत देणा (११) उंदर कर्णीका रस पीणा उसके पत्ते पीस लेप करणा (१२) असालियेकी जड तथा छालका काथ मिरचके दाणे डाल चार छ मासा फेर पीणा (१३) काली जीरी त्रिफलाके काथमें पीणा (१४) गलजी भी याने गाय जवां वातरक्तकी जलण मिटाती है, इसके सिवाय बडे इलाज बण सके तो नीचे मुजब करणा आचारांग सूत्रके टीकाकार श्रीशीलांगाचार्य लिखते है, की साधूके ये रोग होजाय और कोई भी दवासे शांत नहीं होय तो वैद्यके हुक्म मुजब मच्छीके मांसमें या और विना हड्डीके गरम मांससे कइ दिनोंतक इसके बणकूंसेके तो आराम होय इसकूं लूतिका विष रोग करके लिखा है, ये हुक्म महा कारण पडणेमें बाहरके इलाजके वास्ते साधुओंकों सूत्रकारनें हुक्म दिया है, उहां भोगा एमी किया बाह्य परिभोगायें नतु अमनायें इस लेखकों बुद्धिवानोंने सामान्य नहिं समझणा अद्रव्य तथा सामान्य साधुयें कर्त्तव्य नहीं आचेर सूत्रका आशय गंभीर है, गीतार्थों कों गम्य है, तुच्छ बुद्धिये कलंकारोपण करेंगे इति.

(१५) अमृताद्य घृत–गिलोय मोलेठी दाख त्रिफला सूंठ खपाट अरडूसा अमल तास सपेद साटेकी जड देवदारू गोखरू कुटकी मजीठ पीपर रास्ना एरंडीकी जड वरधारा मोथ कमल इनोका कल्क करणा ६४ तोला आंवलेका रस ६४ तोला घी और १९२ भर पाणी सबकूं एकठा मिलाकर पकाकर तइयार करणा इस घीकूं दवा तरीके तेसें भोजनमें लेणेसें इस रोगमें बहुत फायदा करता है, (१६) गडूची तेल–गिलो तोला ४०० भर उसकूं १०२४ तोला पाणीमें उकाल चोथा भागका पाणी रखके छाण लेणा उसमें १०२४ तोला दूध तथा मोलेठी मजीठ जीवनीय गणके मिले इतनी दवा कूठ इलायची अगर दाख जटामांसी नखल्या संभालूका बीज गोरख मुंडी सूंठ मिरच पीपर सोवा काकडासींगी उपलसिरी तज तमालपत्र अरणी समेरवा भू अंवली तगर नागकेशर वाला पद्मकाष्ट कमल रगतचंनण इनोमेंसें जितनी मिले इतनी दवायें एकेक तोला लेकर चटणी करणी तथा २५६ तोला तेल इन सबोंकों धीमें तापसें पकाकर तेल सिद्ध करणा ये तेल वातरक्तके रोगीके पीणेकूं देणा वदनपर मसलणा पिचकारी मारणी इससें वातरक्तके सर्व विकार मिटते हैं, (१७) मधुक तेल–चार तोले मोलेठी का कल्क करणा ६४ तोलाभर तेल २५६ तोला दूध तीनोंकों मिलाकर मंद आंचसें तेल तइयार करणा इसतरे तइयार किये तेलकूं फेर इसीतरे १०० वेर अथवा १००० वेर पकाणा एसे तेलसें वातरक्त वगेरे बहोतसे रोग मिटकर धातू पुष्ट होता है, तथा ऊमर बढती है.

(१८) मंजीष्टादि काथ–(नं० २२०) त्रिफला गूगलके संग अथवा किशोर गूगलके संग बहोत दिनोंतक सेवन करणा (१९) चद्रप्रभा गुटिका– (नं० २४६) अनुपान–पाणी दूध छाछ दरटंक २॥ मासेसें १ तोलेतक गोलीका सेवन करणा (२०) किशोर गूगल त्रिफला गूगल तथा गोक्षुरादि गूगल नं० ५८ अमृता काथ (नं०५७) वासादि काथ नं० २१२ अमृता घृत (नं० २८८) जो गलत रोग अंदर बहोत नहीं घुसा होय तो उसपर लेप मालिस सींचणा तथा ऊपर दवा बांधणी अगर जो दोष अंदर घुस गया होय तो जुलाब पिचकारी तथा स्नेहपान घी तेल पिलाणा बाद योग्य दवायोंका सेवन करणा बाहारके इलाज इस मुजब (२१) बकरीके धीमें अथवा दूधमें गहूका आटा मिलाकर लेप करणा (२२) तिलकूं शेकर पीसणा उसकी चटणी दूधमें उकाल उसका लेप करणा (२३) अलशीकूं दूधमे पीस लेप करणा (२४) एरंडीके बीजोंकों पाणीमें या दूधमें पीसकर लेप करणा (२५) भेंसका मक्खण गंधक गोमूत्र दूध और सींधानिमक इन सबोंको एकठाकर धीमें तापसें अग्निपर गरमकर वदनपर मसलणेसें वदनका फटणा तथा चिणक मिटती है, (२६) सो वेर अथवा हजार वेर पाणीसें धोया गया घी और राल मिलाकर लेप करणा तो

खूनके विगाडका वातरक्त मिटता है, (२७) दशांग लेप नं० ३१२ असालिया और तिलका लेप करणा (२८) सरसूं नींचके पत्ते आक जटामासी जवखार और तिलकूं पीस लेप करणा (२९) मसूरकी दालकूं मखणमें पीस अथवा सहजणेके फलीके बीज पीस लेप करणा (३०) गरजनका तेल १ भाग और सालिड ओइल ४ भाग मिलाकर फजर सांझ वदनके मसलणा अथवा बावचीका तेल या चिरोंजीका तेल अथवा कारबोलिक तेल (१) भाग कारबोलिक एसिड और १०–१५ भाग तिलका तेल वदनके मसलणा अभयामोदक पतवाणी दवाहै.

विशेष सूचना–वातरक्तका रोग वहोत भयंकर है, इस वास्ते इस रोगमें दवाका साधन वहोत महीनोंतक करणेसे फायदा होता है, इस रोगीकूं कुटंबसें अलग रखणा अदमीसें स्पर्शतक नहीं होणा चहिये अच्छा पथ्य खुराक स्वच्छ हवा सफाई रखणी चाहिये पथ्य–पुराणे जव पुराणे चावल पुराणे गहुं साठी चावल तूर मूंगकी दाल अथवा ओसावण कुलथी चवलाई (चंदलिया) ये दवाका काम कर सकती हे, दूधी (कडूलवा) तोराई दूध घी सींधानिमक वगेरे–कुपथ्य–कसरत स्त्री सेवन क्रोध उष्ण पदार्थ खट्टा तथा खारा पदार्थ दिनकी नींद शरद तथा भारी पदार्थका त्याग करणा.

रक्तपित्त.

स्कर्वि.

कारण–तीक्ष्ण क्षार उष्ण तथा लवण पदार्थका अति सेवन अतिताप वहोत कसरत वहोत रस्ते चलणा वहोत शोक वहोत मैथुन इत्यादिक आहार विहारसें पित्त विगडकर खूनकूं विगाडता है, और ये विगडा भया खून रक्तके वहणेवाली नसोसे निकलकर उंचेके द्वारसें अथवा नीचेके द्वारसें पडता है, अभीके यूरोपी विद्वानोने एसा सिद्ध किया है, की ताजी वनस्पति शाग तरकारी नहीं खाणेसें रक्तपित्तका रोग होता है, इस वास्ते ही आनंदगाया पतीने उपाशक दशा सूत्रमें सव वनस्पती छोडके एक खीराम्ल फल मोकला रक्खा है, के स्यात् रक्तपित्त न होजावे वाकीके सव साधन जो जो उसने मोकले रखे हैं, वो सव आरोग्यताके हेतुभूत है, तेसें और भी अयोग्य आहार विहारमें ये रोग होता है, एसा देखणेमें आता है, रक्त याने खून और पित्त दोनों अथवा रक्त याने लाल रंगका पित्त होकर वहणे लगता है, इस वास्ते इस रोगका नाम रक्तपित्त एसा धरा है.

लक्षण–नाक कान आंख मूं योनी तथा गुदा तेसें वदनके महीन छेदोमेंसें लाल रंगका पित्त अथवा खून गिरता है, वदनमें दुर्वलपणा फीकापणा उदासीपणा श्वास काम ज्वर उल्टी दाह शिरमें परिताप आलस मूंमे खराव वो अरुचि मंदाग्नि वगेरे इस रोगके उपद्रव है, इस रोगवालेके मसूंढे सूजकर खून और पीप गिरता है, मसूंढे काले होजाते है,

इसके सिवाय पांवपर और दुसरी जगे भी जामुनके रंग जेसें चट्टे होते है, चांदी(घाव) गिरता है, उसमेंसें खून गिरता है, पांवपर सूजन होता है, जखम रुककर फेर फूट जाता है, भूख लगती नही दस्तकी कबजी होती है अथवा जादा दस्त मरोडा रक्तातिसार होजाता है.

प्रकार–देशी वैद्यकशास्त्र मुजब रक्तपित्तका मुख्य दोप्रकार है, १ उर्द्धगत तथा २ अधोगत, उर्द्धगत ऊपरके छेद नाक कान आंख मूंके रस्ते वहणेवाला और अधोगत याने नीचेके छेदोमेंसें योनी गुदामेंसें वहणेवाला ऊर्ध्वगत रक्तपित्त साध्य होता है, अधोगत कष्टसाध्य होता है, तथा दोनों संग होय और रोगी वृद्ध होय और अशक्त होय तो असाध्य होता है.

इलाज–कमया जादा दोष मुजब छोटे बडे उपाय नीचे मुजब (१) अरडूसा अछा इलाज है, उसकी बनावट–वासास्वरस–वासा पुटपाक वासादिकाथ–वासावलेह वासाखंड पाक देखो (नं० ६) अरडूसेका चाटण (नं० २६८) (२) कोला-उसकी बनावट–खंड कुष्मांडपाक (नं० २८२) कुष्मांडावलेह (नं० २६६) (३) दाख द्राक्षावलेह (नं० २६५) (४) जीरा–जीरापाक (नं० २७३) (५) वाला–उ-सीरा सब (नं० २८३) (६) बकरीका दूध सहत मिश्रीमिलाकर पीणा (७) मोलेठी धाणा रगतचंनण अरडूसा तथा वाला इनोका काथ सहत मिलाकर पीणा (८) शंखजीरा घी मिश्री (९) दाख वेदाणा तथा धाणा इनोकी उकाली (१०) जव कूसेक आटा करके पाणी घी मिलाकर पीना (११) आमकी छाल जामुनकी छाल अर्जुन वृक्षकी छाल इनोंकों महीन पीस रातकूं मट्टीके पात्रमें २४ तोला जलमे भिगाकर फजरमें छाणकर सहत डालकर पीणा (१२) धाणा आंवले अरडूसेके पत्ते दाख पित्त-पापडा इनोका हिम करके पीणा (१३) कमलके तंतु मजीठ कचावचीणी वलवीज कपूर वाला मोथ रगतचनण और पद्माख ये दरेक एकेक तोला लेकर इनोंका कल्क करणा पीछे ६४ तोला चावलोका धोवण ६४ भर बकरीका दूध ६४ भर बकरीका घी उसमे वो कल्क मिलाकर पकाकर घी बनाना वैद्यकशास्त्रमें इस घीकूं दुर्वाद्य घृत कहते हैं, मूंमेंसें खूनकी उलटी होती होय उसकूं ये घी पिलाणा नाकमेंसें गिरता होयतो इसकी नासदेणी कानमेंसें वहता होयतो डालणा आंखमेंसे जाता होयतो आंखमें डालणा गुदा तथा पेशाबके रस्ते जाता होयतो इस घीकी पिचकारी मारणी रुरुमेंसे निकलता होयतो मालिस करवाणा (१४) दाख चंदन लोदगहूला ये चारोका चूर्णकर अरडूसेके पत्तोंके रसमें तथा सहतमें पीणेसें तमाम जगेका खून झरता बंध होता है (१५) आंवलेके चूर्णकूं घीमे सेक पीछे पाणी मिलाकर सिरपर लेप करणेसें नकीसीर बंध होती है, (१६) नकसीरवालेकूं मिश्रीका सरवत पीणा नाकसे दूध पीना दूधमें दाखका रस मिलाकर पीना अथवा मिश्रीके संग इक्षुका रस सुंघानेसें नकसीर बंध होती है (१८) जमृतवटी

चंद्रकला रस हमारे दवाखाणाकी दवाइ वहोत श्रेष्ठ इलाज है, (१९) नींबूका रस ४ औंस कलोरेट ओफ पोटास १ द्राम टिकचर सीकोना कम्पाउन्डर ४ द्राम मिश्री २ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मात्रा ½ औंस दिनमें तीनवेर पिलातेहैं (२०) टिंकचर फेरीपर क्लोराइड १ द्राम क्वीनाइन ६ ग्रेन क्लोरेट आफ पोटाश ०॥ द्राम पाणी ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीनवेर पीणा (२१) नं० ७२६–८२७ केहकीमीनुसखे (२२) नींबू अनार जामुन अंवली आंवले वगेरेका शरवत पीणा तथा फल खाना.

विशेष सूचना–ताकतवर और खूनवाले अदमीका कोई भी जगेसें एकदम खून पडे तो विशेषकारन विगर उसकूं रोकणेका इलाज नहीं करणा क्योंके वहोतसी वखत कुदरती आपहीसे वधे भये खूनकूं इसतरे रस्ताकरके अदमीकूं रोगमेंसें वचाय देता है, वुड्ढा दुवला और कम खूनवाले आदमीके वदनमेंसें खूनगिरे तो जलदी रोकणेका इलाज करना–पथ्य–चावल, साठी चावल, जव, कांग, कोद्रव सामा मूंग मोठ तूर मसूर चणा परवल मीठानींबू चंदलिया वड तथा पींपलकी कूंपल दूध घी केला भूराकोला (पेठा) तरवूज इक्षु मिश्री अनार आंवले वगीचे तह खाना ठंढी हवा इत्यादि पित्तशामक चीजे कुपथ्य–कसरत रस्ते चलना गरमी धूप मलमूत्रकूं रोकना घोडेकी सवारी अग्नि धूम्रपान (हुक्का चिलम) स्त्रीसेवन कुलथी गुड तिल उडद दहीं खारापदार्थ पानसुपारी लसण वासी अनाज कडवा खट्टापदार्थ ये सव खराव है.

कंठवेल–गंडमाल–ग्रंथी.

स्क्रोफ्युला–ट्युवरकल.

कारन–१ इसरोगमें वदनमें गलेमें गांठें होजाती है, तोभी वो एक शारीरक रोग है, खूनका विगडना ये इसरोगका मुख्य कारण है, खराव खुराक खानेवाले और शरदीवाली नीची जगोंमें वसणेवाले लोकोंके ये रोगविशेष देखणेमें आता है, अशुद्ध पारा खाया होय गरमी सूजाककी वेमारी भई होय तो भी खून विगडके ये रोग होता है, आहार विहार कसरत हवा पाणी वगेरेमें विपरीत याने प्रकृती विरुद्ध आचरणसें खून विगडता है, उससें वदनका सव भागोंकूं यथास्थित पोषण नहि देनेसें दोष गांठके रूपसें वाहर आता है, ये रोगभी ओलादमें ऊतरता है, इसीवास्ते ये रोग वच्चोंके जादा देखणेमें आता है, २ अभीके नये सोधकोंके प्रमाणमें इसकी पैदाशके दुसरे कारण कहनेमें आते रक्ताएक मत एसा है, के ये रोग चेपी है, दुसरे एसा कहते हैं, (ट्युवरकल लक्षणनामके जंतुसे ए रोग हयातीमें आता है, (३) वापके ये रोग होय अथवा रोगका पित्त वखत माताके प्रदर रोग होय तोभी किसी २ कूं ये रोग होता है.

ज्वर उलटी दोरोगके लक्षण अथवा चिन्ह शारीरक तेसें इस्थानिक इसतरे दो प्रकारसें उपद्रव है, इस शारीरक चिन्ह–शरीर नाताकत नाजुक वहोत मंदाग्नि नाडी जरा जल्द

वदन गरम और थोडा २ बुखार (स्थानिकचिन्ह–गलेमें काखोंमें खंधेमें काछोंमें और जांघोंमें गांठे होती है, इतनाहीं नही लेकिन् चमडी पेट मगज फेफसा रसपिड सांधे हाड और आंखके अंदरके भागके साथ इस रोगका संबंध होता है, चमडीपर वडे दुरगंध-वाले जखम सडे भये जखम होते हैं, जादा करके पैरोंपर तेसें हाथ छाती पीठ गरदन वगेरे भागोंपर होते हैं, बहोत मुदत तक भरता नहीं फैलता है, औरको रखरखोदरी जेसी होती है, पेटमें ये दोष भरजाता है, तव बच्चेका पेट घडे जेसा होता है, तकी कबजी रहती है. उससे जलंदर भी होजाता है, इसीतरे मगजके बीच रस डमें इस दोषका जमाव होकर सोजा होता है, और सखत बुखार आता है, मगजका ये दोष पांच वर्षके अंदरके बच्चेके होता है, बालक बेचैन बेहोस होजाता है, दांत पीसता है, चीस मारताहै आंख मुंची रखता है, उलटी होती है, दस्तकबूज शिर गरम और आंखकी कीकी सकुडाय जाती है, फेफसेमें इस दोपका जमाव होणेसे उहां सोजा होकर पकता है, और क्षयकी बेमारी होजाती है, रसपिडमें ये दोपका संचय होता है, और गरदन वगल और पेटके अंदरका रस पिंड वडा होता है, गलेमें इस दोषका संचय होकर गांठ होती है, गलेके दोनों तरफ एसी गांठे होती है, और पीछेसे बंधकर हारके मुजव गांठोकी श्रेणी होती है, इसवास्ते इसकूं कंठमाल कहते हैं, इय गांठ छोटी नारगी जेसी होती है, किसी २ के वढकर नालियेर जितनी भी होती है, इस गांठोमें बहोत दरद नहीं होता लेकिन् जो उसका इलाज नहीं होय तो दोप अंदर घुस वढकर श्वासनली और अन्ननलीके ऊपर दवाव होणेसें जिंदगीकूं जोखम पहुंचती है, बहोत वखत हांसकी हड्डी भी सड जाती है, और वदनके दुसरे भागमें भी ये दोप भरजाता है, जव हाडोंतक पहुचता है, तव अस्थिव्रण होजाता है, आंखमें ये दोप आता है, तव आखोमें फूला पडता है, पाणी झरता है, सूर्यका प्रकाश सहा नहीं जाता स्क्रोफ्युलाका दोपवाले बच्चेके वद-लें गांठे चांदी कान वहणा सांधा और खाजखुजली जेसे चांदी खासी आपर क्षय जेसी स्थिति होती है.

इलाज (१) देशी वैद्यक शास्त्रमें कंठवेल वगेरे ग्रंथी गांठोंके रोगमें कचनार नाम वृक्षका बहोत गुण लिखा है, उसकी छालका उकाला चूर्ण अथवा न० ४० में लिखा भया कचनार गुगलका सेवन करणा इसके सिवाय खूनकू शुद्ध करणेवाली सब दवाइयां जेसेंके चंद्रप्रभा किशोर गुगल त्रिफला गूगल मंजिष्ठादि क्वाथ वगेरे इस रोगमें फायदा करता है, (२) अंग्रेजी दवाओमें कोडलीवर लोह पोटास आयोडाईड सिर पेफेरी आयोडाईड हाईपोफोस्फेट ओफ लाइम सोडा वगेरे असरकरता है.

(३) होमियोपैथिक दवायोमें आयोडाईन सीलीशिया हियारसल्फ वेलाडोना फोसफारस वगेरे–वाहरका इलाज–(१) सरसूं सहजणे की फली सणके वीज अलसी

है, मगजमेंभी किसी वखत पाणी भरजाता है, और इस करके एसे रोगवाले वच्चोंका शिर वडा होता है, आंडोंकी गोलीमें पाणी भरजाता है, उसकूं अंडवृद्धि एसा रोग कहते हैं, त्वचाके नीचे पाणी भरजाता है, उसकूं लोक थोयर तथा सूजन कहतेहैं सूजन आती है, तव उसकूं पका जलंदर गिणणेमें आता है.

कारण–मिथ्या आहार विहार ये इस रोगकूं पैदा करणेका कारण है, मिथ्या आहार विहारसें वदनमें खून फिरणेमें एक तरेका अटकाव होता है, तैसें खून विगडणेसें भी किसी २ जगे ये वेमारी होती है, जव खून वरावर फिरता नहीं तव साफ होता नहीं और जव एक जगे खूनके प्रवाहका अटकाव होता है, तव दुसरी जगे उसका जमाव होता है, और जमाव भये खूनमेंसे खूनके अंदरका पाणी महीन खूनकी नलियोंमेंसे जम २ के एकठ्ठा होता है, वदनके सर्व भागमें वारीक रक्त नलियोंमेंसें हमेस प्रवाही रस झरते रहता है, उसकरके शरीरके भागोंका पोपण होता है, और वधा भया रस सूकजाता है, लेकिन् ऊपरके कारणसे जव कोईभी भागमें खूनमेंसें झरता ये रस जव वढजाता है, अथवा शोपणक्रिया कम होजाती है, तव वो रस अथवा पाणीका उस जगे संग्रह होता है, जलोदर ये फक्त जलका संग्रह है, रक्ताशय फेफसा मूत्राशय यकृत् तिल्ली इण अवयवोंके विकारसें जलोदर पैदा होता है, पांडुरोगसें वहोत खून जाणेसें और वहोत नाताकतीसें भी जलंदर पैदा होता है.

लक्षण–जलोदरका रोग स्वतंत्र नहीं है दुसरे रोगका फक्त एक लक्षण है, जलोदर जैसें उदर रोगकी एक जात है, तेसें कितनेक विद्वानोंके मतमुजव जलोदर ये यकृतोदर प्लीहोदर वगेरे उदर रोगका आगे वढा भया स्वरूप है, अर्थात् ये रोग जव वढता है, तव आखर उसके अंदरका दोप प्रवाही रूप वणता है, जुदे २ कारणमुजव उसके चिन्ह जुदे २ होते हैं, पांडु रोगसें अथवा नाताकतीसें जलंदर होता है. तव पहली सूजन चढती है, पीछे जांघ इद्री और पेट इस क्रमसें सोजन चढती है, ऊपरके भागमें सूजन थोडा होना है, पांडुरोगके वहोत लक्षण होते हैं, रक्ताशय रोगसें जो जलंदर होता है, उसमें रक्ताशयके लक्षण मालूम पडते हैं, पहली पांवके पोंचेपर अथवा आंखके पोपचेपर थोयर आती है, फेर पीछे पांव तथा पेटपर सोजन आती है, किसी २ वखत पेटका जलंदर नहीं होता कलेजेके रोगसें जो जलदर होता है, उसमें पहले पेट वढता है, और पीछे दुसरे भागपर किसी २ जगे सोजा आता है और किसी जगे नहीं आता कलेजेके दरदमें प्रथम रोगी दुवला वनकर पेट वडा तुंवे जेसा होता है, वदन सूकजाया फीका कामला उलटी दस्तकी कवजी और कलेजेमें दरद होता है, ये रोग जादातर मराप पीवेवालेकूं होता है–मूत्राशयके रोगसें जो जलंदर होता है, उसकी जड मूत्रपिंडके रोगमें होती है, विशेष करके वहोतसे जलदरवालेकी जड गुरदेके

दरदमें होता है, मूत्राशयके रोगके चिन्होंके साथ पहली आंखके पोपचे सूजजाते हैं, पीछे चहरा तथा हाथ पांवपर सोजन आता है, आखर पेट वढता है, मूत्राशयके जलंदरमें किसी २ वखत हाथ पांव चहरा तथा पेट वहुत सूज जाता है, जिस करके रोगी वडे मुस्किलसें वैठकर ऊठ सकता हे आंख मिच जाती है हाथ पांव तथा वृषण इतने सव तंग होकर फूलता है किसी वखत फूटकर उसमेंसें पाणी झरता है.

इलाज–वहोत करके उदररोगोंका तथा सोजेका इलाज जलंदर रोगकू फायदा करता है उदर रोगके पेटेमें जलोदरका इलाज लिखेगें अथवा थोडे इलाज नीचै लिखते हैं.

(१) दूध सव खुराक तथा पाणी वंध करके इकेले दूधपर रखणा तथा दूधके संग योग्य दवा देणी जेसे नारसिंह आरोग्यवर्द्धनी विजयवटी दुग्धवटी नारसिंह वगेरे साधारण वैद्योंकेपास दवा मिलेगी नही नवण सकती है प्रख्यात वैद्योकेपास मिलेगी हमारे दवाशालामें मिलसकती है. (२) गोमूत्र इकेला अथवा दुसरी दवाके संग पीणेसें फायदा होता है (३) त्रिकटू पांचों निमक चित्रक जवाखार टकणखार इनोंका चूर्ण त्रिफलाके काथमें लेणा (४) सूंठ मिरच टंकण साजीखार गंधक– सम भाग शुद्ध किया भया जमालगोटा दो भाग इनोंकी दो २ रत्तीकी गोलियो करणी मात्रा १ गोली (रोगीकी शक्ति देख वहोत हुसियारीसे देणी. एसी जमालगोटेकी दवा दरहमेस नहीं देणी.)

अंग्रेजी इलाज– पांडू नाताकती तथा तिलीका जलंदर भया होयतो (४) लोह भस्म मंडूर भस्म क्वीनाइन और एसी दुसरीभी पौष्टिक दवायें तथा दूध वगेरे खुराक देणा (६) नं०५९५–५९६ तथा न०६९९ वाली मेलवणिये उपयोगमें लेणा और दस्तकी कव्जी होयतो एरंडी तेल एलिया सोनामुखी वगेरेका उपयोग करणा.

रक्ताशयका जलंदर–मुस्कलसें मिटसकाता है इसमें पेशाव तथा दस्त खुलासा लाणेवाली दवा देणी नीचेका मिक्श्चर इस कामकेवास्ते अच्छा है (७) क्रीम ओफ टा-र्टर १ द्राम टिंकचर ओफ स्कील २० वूद स्पिरिट नाइट्रिकइथर १॥ द्राम केम्फर वोटर ४ औंस मिलाकर उसके तीन हिस्से हमेस तीन वखत देणी इसके सिवाय पेशाव साफ लाणेवास्ते (८) सोरा अलसीकीचा तथा मूलेका रस पिलाणा और सोनामुखी तथा विलायती निमक देकर दस्त साफ लाणा नं० ७१३ का उसका–कलेजके जलंदरमें– पेशाववास्ते ऊपर लिखी दवा देणी इसके सिवाय (न० ७११ तथा ७१२ का इकीभी मुसके देणा मूत्राशयके जलदरमें तीक्ष्णरूपमें पेशाव वधाणेकी दवा देणी नहीं तीक्ष्ण सूजन होयतो गरम पाणीका शेक करणा राईका पलास्टर मारणा पोटिस वांधणी (१०) नं० ५९८ की मिलावट देणी तथा वुखार नहीं होयतो और रोग पुराणा पडगया

होयतो जवकीचा सोराखार तथा एपीकाक्युआन्हा वाइन मिलाकर वेर २ देणा अथवा इकेला लीकर आमोनी एसेटेटीस २ औंसमें ४ औंस पाणी मिलाकर चार छ वखत देणा, (होमियोपथिक इलाज).

सब शरीरका जलंदर–एपोसाइनम, आर्सेनिकम. ब्रायोनिया वगेरे (मूत्राशयका जलंदर) केन्थेरीस टेरेविन्थ आर्सेनिक.

(पेटका जलंदर) एपोसाइनम आर्सेनिकम वगेरे.

(यकृतका जलंदर) पोडोफाइलम पल्सेटीला चाईना आर्सेनिकम कालीकार्व वगेरे.

(रक्ताशयका जलंदर) डीजीटेलीस आर्सेनिकम वगेरे.

(गर्भाशयका जलंदर) आर्सेनिकम आयोडाइन सेनिसीया.

उदररोग.

(कारण) जठराग्नि मंद पडणेसें जेसें दुसरे रोग होते हैं तेसें उदर रोगभी होता है अजीर्णसें अति दोष करणेवाला अन्नपानसें दोष तथा मलकी अत्यंत बढोतरीसें उदररोग होता है संचय भया दोष पसीना तथा जलकुं वहणेवाले रस्तोंकूं रोक जठराग्निकूं प्राण-वायूकूं तथा अपानवायूकूं दूषितकर उदरके रोगोंकूं पैदा करता है.

(प्रकार) उदररोग आठ प्रकारका है वायूसे १ वातोदर, पित्तसे (२) पित्तोदर-कफसें (३) कफोदर तीन दोपसें (४) सन्निपातोदर प्लीह तिल्ली बढणेसें प्लीहोदर गुदाका रस्ता रुकणेसें (६) बद्धगुदोदर आंतमें जखम पडणेसें (७) क्षतोदर और पेटमें पाणीका जमाव होणेसें (८) दकोदर याने जलोदर पैदा होता है, एसें उदरके आठ रोग होते हैं.

लक्षण–पेट ढमढोल चलणेकी अशक्ति वदन दुबला जठराग्नि मंद सूजन ग्लानी अपान वायू (पाद) तथा दस्तका रुकना जलण आलस नींद वगेरे लक्षण सब उदररोगोंमें होता है.

(१) वातोदर–हाथ पांव नाभि तथा पेटमें सोजा पेटके दोनों पांसोंमें मध्यमें कमरमें तथा पीठमें दरद सांधाओंमें फूटणी सूकीखासी अंगमें भारीपणा मलका संचय चमडीपर कालापणा दरदका कमवेशीपणा पेटमें सुइ-चुभाणेकेसीपीडा पेटपर बजानेमें धमन जेसा अवाज होना ये और भी केइयक वातोदरके लक्षण होते हैं, (२) पित्तोदर–बुखार मूर्छा प्यास चक्कर दस्त चमडी आंख तथा नाखूनमें पीलापना पेटके अंदर उष्णता बाहरदाह पसीना पेटपर हरापणा लाल पीलेरंगकी रगे ऊपसआना आहार-का पाचन जल्दी होय और बहोत दुखे (३) कफोदर–सूजन भारीपणा ग्लानी नींद जादा जादा सर्दीका ज्ञान नहीं रहे अरुची चमडीका रंग फीका सुपेद पेट करडा और सुपेदरंगे दिखाईदे बडा और बहोत मुदतमें बढणेवाला सजड स्पर्शमें ठंढा बोझेवाला

और अवाज विगरका होता है (४) सन्निपातोदर–खराव दुष्ट पदार्थ खाणेसें जहर खाणेसें सडे जलके पीणेसें इत्यादि कारणसें रक्त तथा वातादिक दोप वहोतही दुष्ट होकर इस दुष्ट उदररोगकूं पैदा करता है, इसवास्ते कोइ २ ग्रंथकार इसरोगकूं दुष्योदर भी कहते हैं, वेर २ मूर्छा वदनका रंग सुपेद अति दुवलापणा और शोप होता है, (५) प्लीहोदर–तिल्लीके वढणेसें जो चिन्ह होते हैं, वो सव प्लीहोदरका समझना सूक्ष्मवुखार मंदाग्नि रंगसुपेद इसीतरे दहिने तरफ यकृत वढता है, उसकूं यकृतोदर कहते हैं, (६) क्षतोदर–अन्नकेसंग अथवा दुसरीतरे पेटमे खाणेमें आयाभया कांटाकंकर वगेरोसें आंतरेमें छिद्र पडके उसमेंसें निकलता भया पाणी जेसागुदाके रस्ते निकले और सूंटीके नीचेके भागमें पेट वधे सूइ चुभाणे जेसी तथा चीरणे जेसा दरद होय (७) वद्धगुदोदर–अन्न शागवगेरे चिपटके रहनेवाला पदार्थ रेती तथा और कचरेसें आतरेके नलमें मल जमा होजाय गुदाका मल रुकजाय और कष्टसें थोडा २ दस्त उतरे और रिदय तथा नाभिके वीचमें पेट वधे (८) जलोदर–घी तेल जेसा चिकणा पदार्थ पिये पीछे चिकणी दवा खाये पीछे उलटी भयां पीछे जुलावलियां पीछै जो तुरत ठढा जल पीनेमें आवे तो वो रस वाहनी नलियों तुरत विगडकर वो नलियो तेल जेसें चिकणे पदाथोसे लिपायजाकर जलोदर पैदा होता है, पेट वधणा सरू होता है, तव नाभीके आगेसें उपसा भया लगता है, औरतोंके वच्चे जणते वखत जेसी पीडा होती है, एसी पीडा होती है, और पाणीकी पखालकी तरे लचक २ और डव २ कर हलता है, तथा वजता है.

(इलाज)–उदरके सवरोग कष्टसाध्य याने मुस्कलसें मिटे जेसा है, जव उदररोग मिटता नहीं तव आखर २ पाणी भरनेसें जलोदर होजाता है, और जलोदरके दशहज्जार रोगीयोमेंसें एक रोगी वचता है, एसा वैद्यकशास्त्रमें परमात्मा ऋपभ अरिहंतका वचन है, (श्लोक) शतेपु जीवते कुष्टी, सहस्रेपु जलोदरी, मेही शतसहस्रेपु, राजरोगी नजीवति१ तोभी परमात्माने एसा उत्तम प्रयोग लिखा है, सो उसका युक्तिसें आसरा लेणेसे वहोतसे उपद्रव अच्छा होसकते हैं, उदरका और सोजेका इलाज मिलतेसे होते हैं,और इस इलाजोंमें दस्तकी दवा विरेच मुख्य है, लेकिन् वो जुलाव एसा होणा चाहीये रोगीकी ताकतकूं कायम रखकर दोपकूं दस्तके रस्ते या पेसावके रस्ते निकालदेवे उदररोगकी ग हालतमें नीचे लिखे सो साधारण इलाज करणा लेकिन् वध गये पीछे इन इलाकोईभी असर होगा नहीं रोग वढगये पीछे चतुर वैद्य और डाक्तरोंका आश्रय (१) एरंडीका तेल दसमूल और गोमूत्र ये तीनो चीज गुणकरती है, (२) उपलेट लगोटा जवखार, दुगण सूंठ, मिरच पींपर सींधानिमक सेंभरनिमक सेंचल वच जीरा वाण तली भई हींग सज्जीखार चव्यचित्रक इनोंका चूर्ण जलसे पीणा (३) तूवा-रा जिसमें अजवाण भरणा फेर धूपमें धरना वाद सुकाके कूटना उसमें सूंठ काली-

मिरच पींपर चित्रक चव्य पींपलामूल वायविडंग हरडेकी छाल बहेडाकी छाल आवला तज तमालपत्र बडी इलायची छोटी इलायची नागकेशर दोनूं जीरा अजमोद सोरा नोसादर साजीखार जवखार पापडखार इत्यादिक जो जो खार मिले सो सब जेसें अमलीका आंधी झाडेका कुवारपठेका पलासका इत्यादि मिलादेना सोनामुखी निशोतकी छाल कपीला कुटकी चिरायता नीमके सूकेपत्ते दारूहलदी एरंडीकी जड नागरमोथा इंद्रजव ये सब चीज एकेक तोला ले कूटकर मिलाणा बाद कवारपठेके रसकी सातभावना सात अमलीके रसकी सात तूंबेके रसकी देकर रख छोडना बच्चेकुं २ मासातक देना बडेकुं पांच मासातक पथ्य दूधभात मिश्री इससे सर्व उदररोग जाय ये चीज हमने कई जगे पतवाई है, पाणी थोडा सोडा डालके पिलाना या तीन उकालेका ठारके पिलाना बाद खीचडी दालभात चंद लियेका साग देणा (४) मारवाडमें वूइ होती है, उसकी जड कूटकर २।३ मासा जलसें फकी देना इससें दस्त लगकर साफ होता है, पथ्य दूधभात (५) लसन १०० तोला जल २५६ तोलाभर इसका काथ करना पीछै उसमें सूठ मिरच पींपर हरडे बहेडा आंवला जमालगोटा हींग सींधानिमक चित्रक देवदारू वच उपलेट सहजना साटेकी जड सेंचल वायविडंग अजवान तथा गजपींपर ये हरेक ४ चार २ तोला और निसोतकी छाल २४ तोला इन सबोंकों पीस चटनी करनी और उसमें काथ बराबर तेल डाल तेलपकाना ये तेल उदरके सबरोग तथा वायुके सबरोग मिटाता है, (६) पींपर तथा सींधानिमक डाली भई खट्टी छाछ पीणी (७) त्रिफलेका चूर्ण गोमूत्रमें पीणा–(पित्तोदर)–निशोतकाकल्क एरंडकी जडका काथ और दूध इससें जुलाब लेना (२) मिश्री तथा मिरचका चूर्ण मिलाकर ताजी मीठी छाछपीणी (३) निशोत तथा त्रिफलाके उकालीमें सिद्ध किया भया घी पीणा–(कफोदर)–(१) निशोतका चूर्ण सांड (ऊंठनीके) दूधमें पीणा (२) सोवासींधानिमक जीरा सूंठ मिरच पींपर इनोंका चूर्ण मिलाके छाछ पीणा (३) गरम जलसें वेर २ पेटपर शेक करना (४) कुलथीके काथमें त्रिकुटका चूर्ण डाल पीना दूधमें एरंडीतेल पीणा–सन्निपातोदर–(१) जो हरडे निर्गुंडीका रस गोमूत्रमें पीणा (२) त्रिकटु जवखार सींधालून छाछमें पीणा (३) चंदलियेकी जड जलमें पीस इसमें चोगुणा घी और घीसे चोगुणा दूध डाल उकालकर घी तय्यार करणा इस घीमें सब जहरोंका नास होता है, (शीहोदर)–यकृतोदर–(१) निर्गोडकारस २ तोला और गोमूत्र २ तोला (२) लालरोहीडा और हरडेका कल्ककर गोमूत्रमें अथवा भैंसके मूत्रमें पीणा (३) लसण पीपलामूल हरडे जोहरडे पीस गोमूत्रमें पीणा (४) सहजनेकी छालके रसमें सींधानिमक चित्रक पींपर तथा खारेका जवखार डालके पीणा (५) कवारपठेका रस हलदी डालकर पीणा (६) पींपर और महल डालकर छाछ पीणी (७) जो हरडे तथा लालरोहीडेकी छालका काथकर उसमें जव

जलोदरका इलाज.

खार तथा छोटी पीपरका चूर्ण डालकर प्रभातसमें पीणा (८) कवारपठेके रसमें हलदीं डालकर पीणेसें तापतिल्ली मिटती है (९) भिलावा ३ भाग जोहरडे तीन भाग वायविडंग ३ भाग स्याहजीरा १ भाग इनोकी गोलीकर सातदिन खाणी (१०) सहजणेकी छालके उकालेमें शंखभस्म देणी (११) नींवूके रसमें शंखभस्म देणी (सोथोदर)–पेट जा वढता है, तव अंगपर सवमें सूजन आती है, उसकूं सोफोदर कहते है (१) पुनर्नवादे काथ अछा है, साटेकीजड गिलोय देवदारू हरडे सूठ इसकू पुनर्नवादि काथ कहते है, इसमें गूगल तथा गोमूत्र डाल पीणेसें सोजेवाला पेट मिटता है, (२) पुनर्नवादि काथ दुसरा, साटेकीजड जोहरडे, कडवे नींवकी छाल, दारूहलदी कुटकी पटोल गिलोय सूठ इसका काथ गोमूत्रडाल पीणा (३) पीपर तथा सूंठका चूर्ण गुडमें मिलाकर देणा (४) त्रिफला गोमूत्रमें पीकर दूधभात ३ घंटेवाद पथ्य लेणा–(जलोदर)–(१) भिलावादेणा पथ्य दूधभात (२) त्रिकट्ट तथा निमक छाछमें पीणा (३) सहजणेका काथ देणा (४) ऊंठनीका दूध पीणा (५) अर्कादि काथ–गजपींपर सूंठ मिरच पीपर तथा सींधानिमक सम वजन और आककी छाल सवके वजनसे वीसमा भाग इसका काथ पीणा (६) जमालगोटा अथवा दंतीमूल नेपालेकूं सोध उसमें दुगणा कथा मिलाकर रती २ की गोलियां करणी दस्तलगे वाद पथ्य दूधभात (७) दंतीमूल ५ सेर निशोत ५ सेर हरडे वडी नग २५ इन सवोकू २॥ मण पाणीमें उकाल अष्टमांस वाकी रहे तव ऊतारकर पाणी छाणकर हरडोकूं सावूत निकालकर तेलमें तलणी पीछे ५ सेर गुडकी चासनीकर उसमें हरडे तथा नीचे लिखी चीजोंका चूर्णडाल पाक वणाना–निशोत छाल ३२ तोला छोटी पीपर सूठ आठ २ तोला सहत ३२ तोला तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये एकेक आठ २ तोला (८) पेशाव लानेवाली पसीना लानेवाली और दस्तावर दवा देनी (सव उदररोगोका सामान्य इलाज)–(१) रेचन, पाचन, फस्तखोलण,(२)दूध अथवा गोमूत्रमे, एरंडी तेल वेर २ पीणा (३) पीपर वर्द्धमान खानी (४) चव्य चित्रक सूठ देवदारू इसका काथ निशोतका चूर्ण गोमूत्र मिलाकर पीणा(५)इच्छाभेदीरस (न० ३४१) (उदररोगका पथ्य)–रेच लघण मूंग लालसाठी चावल, पुराणी कुलथी, कांजी मद्य सींधानिमक उडद छाछ लसण, एरडी तेल, अद्रक परवल सहजणेकीफली इलायची नागरवेलके पान वकरी भेंस तथा गऊका दूध तथा मूत्र हलका तीखा और अग्निदीपक अनाज ये सव हितकारक है–(कुपथ्य)–घी वगेरे चिकणे पदार्थोका सेहपान धूम्रपान उलटी वहोत रस्ते चलना दिनकी नींद आटेमेंसे वनाया पदार्थ जडकरडा अनाज जलके जीवोका मांस भाजीपाला तिल दाहकरनेवाला अन्न निमक फलीका अनाज खराव जल दस्त कवजकरे एसा अन्नपान ये सव उदररोगकूं हानि करता है.

किरण दूसरी २.

श्वासोच्छ्वासकी क्रियाके रोग.

छातीके अंदर श्वासनली फेफसा रक्ताशय वगैरे बहोतसे जरूरीके मर्मस्थान आये भये है, ये मर्मोके ठिकाणे आपसमें संबंध रखे है, तेसें रक्ताशयके भी संबंध है, तोभी श्वासोच्छासकी क्रिया और खुन फिरनेकी क्रियाके स्थल अलग २ है, और उस २ मर्मस्थानोंके रोगभी जुदे २ है, इसवास्ते इस किरणमें श्वासनलीके रोगोंकी परिक्षा इलाज लिखते हैं, तीसरी किरणमें रक्ताशयके रोग लिखेगें श्वासोश्वासकी कियामें श्लेषम कंठनलीका सोजा हांफणी खासी फेफसेका वरम दम क्षय उरक्षत वगैरे रोगोंका समावेश होता है.

(श्लेष्म, सलेषम, शरदी, जुखाम)

(कोराईझा)

(कारण)–जादा करके हवाके फेरफारसें सलेषम होता है, एकही स्थलमें हवाके याने ऋतूकी फेरफारसें जेसें सलेषम होता है, तेसें अदमी एकजगेंसें मुसाफरीकर दुसरी जगें जब जाता है, उसकरके हवाका फेरफार होणेसें कफ बिगडजाता है, सलेषम शरदीसे होता है, और पालर पाणीसें नया अनाज खाणेसें बहोत शरदी हवामें रहणेसें भीजी जमीनपर चूनागचीके अंगणपर सोनेसें इत्यादिकारणोंसें सलेषम होजाता है, कितनेएकको ये रोग वेर २ होजाता है, और मिट जाता है, इसरोगमें ऊपर लिखे कारणोंसें नाकके अदरके पुडपर सूजन होता है.

(लक्षण)–एसे थोडेही अदमी होयगें सोजिनोंकों सलेषमका अनुभव नही होयगा सरुहोते वलगमके वदनमें वेचेनी हाथपांवोंमे टूटणा शिरमें भारीपणा कमरमें दरद नाकमें सूकापणा छींक दमलेते अडचल और प्रगटलक्षणोंमें गलेमें जलन दाह नाकमें जलन नाक आंखमेंमें पाणी झरे गला बैठजाय जीभपर सुपेद थर थोडासा बुखार भूख मद दस्तक ब्ज होय.

(इलाज)–जुखामके रोगमें वैद्य डाक्तरके पास विरले जाते हैं, लेकिन् इतना या दरखणा चाहिये किसी २ वखत इस निकामे छोटे रोगसें बडे २ असाध्यरोग होणा संभव है, जेमेके पीनस नाककारोग कफकारोग खासी और क्षय जेसा भयकर रोग होजाता है, इसवास्ते छोटासा मरज जांणके छोडना नहीं चाहिये.

(१) रोगीकूं वरमें रहना कांजी दलिया दालभात चाह वगैरे हलका और गरमागरम खुराक लेना पांवोंकूं गरमपाणीसें झरना पीछे पोंछ मोजापहराना दूध और पाणी गरमकर या चा करके गरमागरम पिलाना और हलका जुलाव लेणा (१) वलगमका जोर जादा होय ऊपर लिखाइल्याजमें शांत नही पडे तो जरूरीका खरम सहत डालके पिलाना त्रिफलादि चूर्ण (न० २२७) सहतमें चाटना अथवा कोरा फाकना सूठ उकाल

चाह डाल पीणा दूध पाणीका अथवा चाका वफारा या नासमे लेणा पोस्तके डोडेका भीगा शेक करना तज लौंग सूंठ वगेरे गरम दवाओंका ललाटपर लेप करना (नं० ६३२) वाली बुकनी अथवा त्रिकटुकी बुकणी सूंघकर कफकूं छुटाना रातकूं एन्टिमोनियल-पाउडर ।३।४। ग्रेन फाककर ऊपर चाह पीनी अथवा डोवर्सपाउडर दस ग्रेन, सोते वखत लेकर फजरमें दस्त साफ लानेकुं एक हलका जुलाव लेना हरडेकी फक्की सिडली-झपाउडर अथवा एप्समसोल्टका जुलाव लेना (नं० ८१५) तथा ८१६ काहकीमी उसका देना (३) जुखाम शरदी पुरानी होकर झरे वाद दूध और पाणी सम वजन मिला-कर उसमें सूंठके टुकडे आठ आनेभर मिश्री आठ आनेभर केशर १ रत्ती विदामके गोटे ५ डालकर जलजले जहांतक उकाल दूध छानलेना और विदाम चवाकर दूध पीजाना और जल पियेविगर सूजाना ये प्रयोग सोतेवखत करना अकलकरा पींपलामूल पींपर सुपेद मिरच ये चारों सम वजन मिलाकर इनोंकी थोडी फक्की पानमें धरकर चावलेना (नं० ३६५, ३६८, ३६९, ३७०) में लिखे भये दवायोंका वहोतदिनोंतक सेवन करना

(कंठनलीका सोजा)

(लारीन्जाइटीस)

(कारण)–ठंढ और शरदीसें कंठकी नलीमें सोजन होजाता है, नुकशान करनेवाला धूआं अथवा धूडगलेमें जाणेसें अथवा गरमागरम पाणी पीजानेसें तैसें उपदंससे भी ये रोग होता है.

(लक्षण)–विशेषकरके ये रोग वचोंके होता है, श्वास तथा नाडी जलदी चलती है, श्वास लेते गलेमेंसें तीक्ष्ण अवाज निकलता है, छाती तथा वायुनली उछलती है, गला बैठ जाता है, वेचेनी वहोत रहती है, और १ दिनसें ५ दिनके अंदर गलेकी सूजनसें रोगी मरता है, अथवा अछा होजाता है.

(इलाज)–तीक्ष्ण सोजा वहोत भयंकर होता है रोगी तकदीरसेंही वचता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजव तो मुखरोगीकुं दूध कुपथ्य है, मूंगकी दाल वगेरे हलका सादा और पतला पदार्थ देणा चाहिये, दाक्तरलोक दूध चावलोका दलिया पतला पथ्य दिलाते इस रोगीकूं गरम और तेज खुराक कभी देणा नहीं वायूनलीपर गरमपाणीका सेक करणा विल्स्टर अथवा जोक लगणा और सोजन नरम करणेकू रोगीका गूंगाट और घभराट मिटाणेकूं उलटीकी दवा देणी मेणफल अथवा इपीका क्युअनाकी भूकी पिलाकर उलटी कराणी अरडूसेका पुटपाक अथवा स्वरस सहत डालकर पीणा और छाती तथा गलेपर अरडूसेके पत्ते वाफकर वांधना नं० ६३३ का मिक्चर देणा अथवा इकेला इपीका क्यु अन्हावाइन उन मान मुजव जलमें मिलाकर पिलाणा.

किरण दूसरी २.

श्वासोच्छ्वासकी क्रियाके रोग.

छातीके अंदर श्वासनली फेफसा रक्ताशय वगेरे वहोतसे जरूरीके मर्मस्थान आये भये है, ये मर्मोंके ठिकाणे आपसमें संबंध रखे है, तेसें रक्ताशयके भी संबंध है, तोभी श्वासोच्छासकी क्रिया और खुन फिरनेकी क्रियाके स्थल अलग २ है, और उस २ मर्मस्थानोंके रोगभी जुदे २ है, इसवास्ते इस किरणमें श्वासनलीके रोगोंकी परिक्षा इलाज लिखते हैं, तीसरी किरणमें रक्ताशयके रोग लिखेगें श्वासोश्वासकी क्रियामें श्लेषम कंठनलीका सोजा हांफणी खासी फेफसेका वरम दम क्षय उरक्षत वगेरे रोगोंका समावेश होता है.

(श्लेष्म, सलेपम, शरदी, जुखाम)

(कोराईझा)

(कारण)–जादा करके हवाके फेरफारसें सलेपम होता है, एकही स्थलमें हवाके याने ऋतूकी फेरफारसें जेसें सलेपम होता है, तेसें अदमी एकजगेंसें मुसाफरीकर दुसरी जगें जब जाता है, उसकरके हवाका फेरफार होणेसें कफ विगडजाता है, सलेपम शरदीसे होता है, और पालर पाणीसें नया अनाज खाणेसें वहोत शरदी हवामें रहणेसें भीजी जमीनपर चूनागचीके अंगणपर सोंनेसें इत्यादिकारणोंसें सलेपम होजाता है, कितनेएकको ये रोग वेर २ होजाता है, और मिट जाता है, इसरोगमें ऊपर लिखे कारणोंसें नाकके अंदरके पुडपर सूजन होता है.

(लक्षण)–एसे थोडेही अदमी होयगें सोजिनोंकों सलेपमका अनुभव नहीं होयगा सरुहोते वलगमके वदनमें वेचेनी हाथपांवोंमे टूटणा शिरमें भारीपणा कमरमें दरद नाकमें सूकापणा छींक दमलेते अडचल और प्रगटलक्षणोंमें गलेमें जलन दाह नाकमें जलन नाक आंखमेंसें पाणी झरे गला वैठजाय जीभपर सुपेद थर थोडासा बुखार भूख मद दस्तक ब्ज होय.

(इलाज)--जुखामके रोगमें वैद्य डाक्तरके पाश विरले जाते हैं, लेकिन् इतना या दरखणा चाहिये किसी २ वखत इस निकामे छोटे रोगसें वडे २ असाध्यरोग होणा संभव है, जेसेके पीनस नाककारोग कफकारोग खासी और क्षय जेसा भयंकर रोग होजाता है, इसवास्ते छोटासा मरज जांणके छोडना नहीं चाहिये.

(१) रोगीकूं घरमें रहना कांजी दलिया दालभात चाह वगेरे हलका और गरमागरम खुराक लेना पांवोंकूं गरमपाणीसें झरना पीछे पोंछ मोजापहराना दूध और पाणी गरम कर या चा करके गरमागरम पिलाना और हलका जुलाब लेणा (१) वलगमका जोर जादा होय ऊपर लिखाइलाजमें शांत नही पडे तो-अरडूसेका स्वरस महत डालके पिलाना शितोपलादि चूर्ण (नं० २२७) महतमें चाटना अथवा कोरा फाकना सूठ उकाल

ाह डाल पीणा दूध पाणीका अथवा चाका वफारा या नासमे लेणा पोस्तके डोडेका भीगा शेक करना तज लोंग सूंठ वगेरे गरम दवाओंका ललाटपर लेप करना (नं० ६३२) वाली वुकनी अथवा त्रिकटुकी वुकणी सूघकर कफकूं छुटाना रातकूं एन्टिमोनियल-पाउडर ।३।४। ग्रेन फाकर ऊपर चाह पीनी अथवा डोवर्सपाउडर दस ग्रेन, सोते वखत लेकर फजरमें दस्त साफ लानेकुं एक हलका जुलाव लेना हरडेकी फक्की सिडली-झपाउडर अथवा एप्सम्सोल्टका जुलाव लेना (नं० ८१५) तथा ८१६ काहकीमी उसका देना (३) जुखाम शरदी पुरानी होकर झरे वाद दूध और पाणी सम वजन मिला-कर उसमें सूंठके टुकडे आठ आनेभर मिश्री आठ आनेभर केशर १ रत्ती विदामके गोटे ५ डालकर जलजले जहांतक उकाल दूध छानलेना और विदाम चवाकर दूध पीजाना और जल पियेविगर सूजाना ये प्रयोग सोतेवखत करना अकलकरा पींपलामूल पींपर सुपेद मिरच ये चारों सम वजन मिलाकर इनोंकी थोडी फक्की पानमें धरकर चावलेना (नं० ३६५, ३६८, ३६९, ३७०) में लिखे भये दवायोंका वहोतदिनोतक सेवन करना

(कंठनलीका सोजा)

(लारीन्जाइटीस)

(कारण)–ठंढ और शरदीसें कंठकी नलीमें सोजन होजाता है, नुकशान करनेवाला धूआं अथवा धूडगलेमें जाणेसें अथवा गरमागरम पाणी पीजानेसें तैसें उपदंससे भी ये रोग होता है.

(लक्षण)–विशेषकरके ये रोग वच्चोंके होता है, श्वास तथा नाडी जलदी चलती है, श्वास लेते गलेमेंसें तीक्ष्ण अवाज निकलता है, छाती तथा वायुनली उछलती है, गला वैठ जाता है, वेचेनी वहोत रहती है, और १ दिनसें ५ दिनके अंदर गलेकी सूजनसें रोगी मरता है, अथवा अछा होजाता है.

(इलाज)–तीक्ष्ण सोजा वहोत भयंकर होता है रोगी तकदीरसेंही वचता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजव तो मुखरोगीकुं दूध कुपथ्य है, मूगकी दाल वगेरे हलका सादा और पतला पदार्थ देणा चाहिये, दाक्तरलोक दूध चावलोका दलिया पतला पथ्य दिलाते इस रोगीकू गरम और तेज खुराक कभी देणा नहीं वायूनलीपर गरमपाणीका सेक करणा विस्टर अथवा जोक लगणा और सोजन नरम करणेकू रोगीका गूंगाट और घभराट मिटाणेकू उलटीकी दवा देणी मेणफल अथवा इपीका क्युअनाकी भूकी पिलाकर उल्टी कराणी अरडूसेका पुटपाक अथवा स्वरस सहत डालकर पीणा और छाती तथा गलेपर अरडूसेके पत्ते वाफकर वांधना नं० ६३३ का मिक्श्चर देणा अथवा इकेला इपीका क्यु

(कासश्वास, दम)

(ब्रोनकाईटिझ)

(कारण)–काशश्वास अथवा हांफणीका रोग होणेका बहोतसे कारण है, शरदी उसका मुख्य कारण है, शरदी करणेवाले आहार विहारसे हांफणीका रोग होजाता है, वायूनलीके दरदोमें काशश्वासका दरद होजाता है, जेसेके अर्बुद वगेरे गांठोके लिये तेसें वायूनलीमें धूल धातू तेसें हवामें उडते भये रजकण अंदर जाणेसें वरम होकर दमका रोग होता है, फेफसेका दरद रक्ताशयका रोग बुखार नाताकती संधिवायू वगेरे रोगोंसे भी दमका रोग होजाता है, नलीमे सोजन होणेसे अंदरका सलेपम पुडत सूजकर लाल होजाता है, पहली वो पुडकोराहोता है, और पीछै उसमेंसें कफ गिरता है, पहले झाग जेसा कफ गिरता है, पीछेसें पका भया पीला अथवा पीप जेसा कफ निकलता है, नलियोंके दोनों तरफका वरम पुडत आपसमें मिलाजाता है, इस सोजेके सबब अंदर कफ भरजाणेसें हवाकूं आने जानेकूं चहिये इतना रस्ता नही मिलणेसें. खासीके संग श्वास चढता है.

(लक्षण)–दमके रोगमें जादा करके हमेसां बुखार आता है, तब नाडी जलद चलती है, पेशाव लाल उतरता है, छातीमे दरद होता है, श्वास रुकजाता है, कफ गिरता है, कितनेक रोगमें पहली सलेपम होकर पीछै ये रोग होता है, उसमें गला आजाता है, कंठमे घरघराट बोलता है, ठंढ देके बुखार चढ आता है, भूख मंद होती है, दस्त कब्ज होता है, जीभपर सुपेद थर जमती है, पीठ अथवा छातीकी हड्डीमें दरद होता है, खासी आती है, श्वास जलदी चलता है, छाती भीडाती है, हांफणी बोलती है, सोणेसे खासी जादा चलती है, जो वरम महीन नलियोंमें भया होता है, तो छातीमें दरद होता नहीं लेकिन् खासीसे पसलियां दुखती है, श्वास जोरसें चलता है, कफ बोलता है, दमके जोरसे सोणे नहीं पाता खासी बहोत जोरसें वेर २ आती है, चिकणा कफ बहोत मुस्किलसें निकलता है, बुखार जादा चढता है, और जो फायदा नहीं होय तो नाताकती बढकर कफ निकल नहीं सकता और बदन ठंढा पडणे लगता है. इस रोगवालेकी छाती उपसीभई तथा बडी मालम देती है पांसली तथा पेट उछलता है. और छाती टोककर बजाणेमे पोकल आवाज आती है, और श्वासका अवाज मोटा और उंचा सुणाई देता है, कफका जोर जादा होता है, तो छाती ठोकणेका अवाज भरा मालम देता है.

(इलाज)–(१) दमके रोगमें श्वासनलीमें सोजा होतेजाता है इसवास्ते उस सोजेकू मिटानेका इलाज करणा रोगीकूं मकानके अंदर बिछोणेमें रखणा गरमकपडे पहराना तथा ओडाना शरदीके संग हांफणी भई होयतो खूबपसीना आवे एसा इलाज करना

सो इसतरे, पाणीमें राई डालकर गरमकर पांवोंपर झारना छातीपर राई पीसकर धरणा पाणीमें लुगदीकर तथा फुलालेण वगेरे गरम कपडा बांधणा श्वासके संग गरम पाणीका वफारा लेना छातीपर गरम पाणीका शेककरणा अथवा अलसीकी पोटिस वेर २ गरमा-गरम धरणा आखर जरूरी पडे तों डाक्टरके पास विल्स्टरभी धरवाणा (२) सरुआतमें (नं० २२३) का शृंग्यादि चूर्ण सहतमें देणा अथवा डोवर्सपाउडर देणा (३) क्षुद्रादि क्वाथ (नं० २१३) अथवा इकेली भूरींगणीका चूर्ण अथवा उकाला सहत डालकर देणेसें भी श्वास नरम पडता है (४) सुदर्शन चूर्ण (नं० ३२) में अथवा महासुदर्शन चूर्ण नांमी वैद्योके पासही खरा मिलता है, उसकूं अरडूसेके स्वरसमें सहत मिलाकर पिलाणा (५) वच्चोंके वास्ते पहली लिखा जो शृंग्यादि चूर्ण सहतमें चटाणेसे वच्चोंकी हाफनी मिटाती है, सितावके पत्तोंकूं पीस एक दोय, कालीमिरचके संग पिलाना तेसें छातीपर गरमकर पीसे भया बांधणा (६) कफका जोर होयतो उलटीकी दवा देकर कफकूं निकाल डालना उसकी विधि सलेषम प्रकरणमें लिखाही है, (७) श्वास कास अथवा हांफणीका रोग भये पीछे ये देशी इलाज देकरके पतवाना इन दवायोकूं युक्ति मुजव वहोत दिनोंतक सेवनकरणेसें ताकत आकर रोग मिटजाता है.

(१) शितोपलादि चूर्ण (नं० २२७) अनुपान घी सहत मात्रा ३ मासा.
(२) अग्निश (नं० ३४४) अनुपान घी सहत वुखार नहीं होयतो देणा.
(३) आनंदभैरव रस (नं० ३३२) अनुपान नागरवेलके पान अथवा जल.
(४) सुवर्णमालनी वशंत (नं० ३३७) अनुपान सहत पीपर सहत अथवा शितोपलादि घी तथा सहत (५) लघुमृगांक रश (नं० ३३५) अनुपानसहत (६) कटकारी अवलेह (नं० २६२) श्वास हिचकीके संग हांफणी मिटावे (७) हरीतकी अवलेह (नं० २६४) श्वासकाशका वहोत आछा इलाज है, ऊपरलिखी दवाइयां पुराणा श्वासकासके ऊपर अछी फायदेमद है, उसमें भी १, ४ और ७ के अंकवाली दवायोसे वहोत वरसका पुराणा श्वासकासयाने हांफनीका रोग अछे भये हमारे अनुभवी इलाज है, इसवास्ते पूर्णविद्वान वैद्यके पाससे एसी दवा मंगाकरके वापरणा एसी हमारी शिक्षा है, (अंग्रेजी इलाज)-(नं० ४८४, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७) मिक्श्चर अवस्था तथा हांफणीकी वलावल जाति विचारके उपयोगमें लेना (विशेष पथ्य सूचना)-रोगीकू अछा खुराक वकरीका दूध अथवा चावलोंके दलिये घाटमे वकरीका दूध मुख्य खुराकदेणा तेल मिरच खटाई वगेरे सर्व तेज और दाहक और मादक पदार्थोका त्याग करणा वहोत वुखार होय तो ऊपर लिखे इलाजोके संग ज्वरहरदवाई तथा किनाइन देणा नाताकती जादा होयतो अंग्रेजीवाले

ब्रांडी देते है. देशी द्राक्षासव, आर्यलोंकोने कस्तूरी अंबर केशर दूधमे उकालकर गरीबने लोबानके फूलपानके रसमे या दूधमें गरमी कायम रखणी और ताकत.

खासी–उधरस–काश.

(शिक्षा)–श्वास तथा शरदीके संगकी खासी इनोका इलाज पहली लिखदिया है, ये सबमें फायदेमंद है, तोभी खासीका विशेष इलाज लिखते हैं, देशीशास्त्रमें खासी पांचप्रकारकी है, वायूकी १ पित्तकी २ कफकी ३ क्षत छातीमें जखम पडणेकी ४ और क्षयकी ५ इसमें पिछली दो असाध्य है, वृद्धअवस्था और मांसक्षीणकी भी खासी असाध्य है, आखरीका इलाज क्षत और क्षयका जाणलेना तीनों खासीका इलाज लिखते हैं.

कारण तथा लक्षण पहली जो कासश्वासमें लिखा है, वोही है.

(वादीके कासका इलाज)–(१) सूंठ धमासा काकडासींगी मुनका कचूर मिश्री इनोका चूर्ण तेलमें चाटणा (२) सूंठ भाडंगीजड पीपर कायफल कचूर इनोका चूर्ण तेलमें चाटणा मिश्रीभी मिलादेणी.

(पित्तकी खासी)–(३) अरडूसेके पत्ते गिलोय भूरींगणीका काथ सहतडालकर पीणा (४) दाख आंवला खजूर पीपर मिरच चूर्ण सहत तथा घीमें चाटणा (५) कचूर वाला रींगणी सूंठ तथा मिश्रीका काथकर पीणा (६) सूंठ दशमूल पींपर तथा दाखके काथमें उकाला भया दूध मिश्री डालकर पीणा (७) खजूर पींपर दाख मिश्री जव धाणीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटणा (८) भेंस बकरी तथा गऊके दूधमें इतनाहीं कचे आवलेका रश अथवा सूके आंवलेका उकाला मिलाकर उसमें घी पकाकर खाणा (९) दाख आंवला खजूर पींपर मिरच चूर्ण सहत तथा घीमें चाटना.

(कफजन्यखास) (१०) नागरमोथा तथा पींपरका चूर्ण सहत तथा घीमें चाटणा (११) बहेडेका चूर्ण घीमें मिलाय पत्तोंसे लपेट पुटपाकर मूंमें रखणा(१२) अरडूसेके पत्तेके रशमें सहत डालकर पीणा (१३) सूंठ पीपर तथा कुलथीका काथ (१४) कचूर अतीस मोथ काकडासींगी हरडे सूंठ इनोंका चूर्ण हींग तथा सींधा निमक मिलाकर छाछ पीणी.

(खासीका सामान्य इलाज) (१५) आदेका रस सहत गरमकर (१६) मिरच काळीका चूर्ण सहत मिश्रीमें (१७) त्रिकटूका चूर्ण सहत तथा घीमें (१८) पारा गंधक जवखार मेंचल ४ मिरच ५ इस भाग मुजब एकत्रकर आदेके रशमें खरलकर गोली करके देणी (१९) बहेडेकी छाल २ पींपलामूल १ भाग सहतमें चाटणा (२०) पींपर पींपरामूल सूंठ और बहेडेकी छाल चूर्ण सहतमें देणा (२१) लींग मिरच बहेडा सम भाग सबोंके बराबर खेरसार अथवा कत्था मिलाकर बबूलके छालके काथमें गोली करके चूसणी (२२) बकरीका मूत्रमें बहेडाकी छालकूं वाफकर सहतमें

चटाणा (२३) पारा १ गधक २ पींपर ३ वहेडेकी छाल ५ हरडेकी छाल ४ काकडा-सींगी ६ पीसकर वंवूलके छालमें कितनेक दिन घोटकर गोली करके देणी (२४) काली मिरच १ पींपर १ अनार विलायती छाल ५ जवखार ॥ इसके वरावर गुड मिलाकर गोली करणी (२५) लोंग १ पींपर १ जायफल १ काली मिरच २ भाग सूंठ ३२ भाग और सवोंकी वरावर मिश्री जलसें फक्की (२६) भीमसेनी कपूर १ भाग कसतूरी १ लोंग १ मिरच २ पींपर २ वहेडेकी छाल २ उपलेट २ दाडमकी छाल १ सवके वरावर खैर सार अथवा कत्था जलमें घोट गोलियें करणी (२७) रींगणी गिलोय सूंठ एरंडीकी जड अरडूसा इनोका काथ (२८) आकका फूल उसके सम वजन मिरच अथवा लोंग पीस गोली करके खाणी (२९) आदा सेर ५ गुडसेर ५ धाणेके पत्ते (कोथमरी) सूंफ लोहचूर तज तमालपत्र इलायची मोथ इनसवोंकी अवलेही वणाय चाटणी इससे अर्श खासी ज्वर पीनस शरदी गोली क्षय इन सवोंपर ये अवलेही फायदेवंद है, (२८) वकरीका मूत्र १०० तोला उसकूं मंद अग्निमें जाड़ाकर उसमें वहेडाकी चूर्ण ८ तोला डालणा तथा पींपर पींपलामूल लोहभस्म चार २ तोला भूरींगणीके फूलकी भूकी आठ तोला डालणी इसकूं दो मासेसें तोलाभरतक सहतमें चाटणा अथवा गरम जलसे पीणा इससे असाध्यवी खासी मिटती है. (३१) लोवान ४ कपूर १ भाग अफीम ॥ और नवसादर २ भाग सहतमें वाल २ की गोलिया करणी हमेस तीन टंक तीन गोली लेणी (३२) लोवानका फूल १ रत्ती अफीम पाव रत्ती कपूर पाव रती सहतमें एक गोली इस उनमानकी वणाणी हमेस दो तीन गोली खाणी.

इसके सिवाय इस ग्रथमें आगे हांफणीके रोगमें लिखे भये सवदेशी और अंग्रेजी इलाज खास रोगके प्रसिद्ध है, वडे रोगमें वो खासीके इलाज वहोत फायदेवंद है.

(विशेष सूचना पथ्य) खासीका इलाज नही करणेसें क्षय होजाता है, इसवास्ते जलदी इलाज करणा ठंडी शरदी और भीजी जगासे दूर रहणा जमीनपर सोणा नहीं ठंढा तथा कफ करणेवाला पदार्थ खाणा नहीं दिनका सोणा नहीं तेल मिरच खटाईका त्याग करणा रातकूं दही कभी खाणा नहीं पुराणे चावल घी सींधानिकम दरिया-वका निमक कुलथी तूरकी दाल मूंगकी दाल सोवा चंदलिया वगेरे पदार्थ खासी-वालेकों पथ्य है.

दम श्वास हांफणी.

(कारण) श्वासोच्छासकी क्रिया चहिये जिससे जादा चले उसकूं दमका रोग कहते हैं, श्वास जलदी चलणेका वहोतसे कारण है, दुसरे रोगकी निशानी तरीके ये रोग वहोतसे दरदोमें दिखाई देता है, जेसेके खासी फेफसेका सोजा क्षय रक्ताशयका रोग

वगेरे रोगोमें श्वासकी ह्याती देखणेमें आती है, लेकिन् इसके अलावा दमके मरज दूसरे स्वतंत्र कारणभी होता है, फेफसेमें हवा जाणेको छोटे छेदोंमें खेंच होणेसें हो है, खेंचताणके लिये ये छेद संकोचाते हैं, उसकरके जितनी चहिये हवा फेफसे दाखल नहीं होसकती तब उसकी एवजी पूरी करणेकूं दम जलदी २ चलता है दमका रोग होणेका मुख्य कारण इसतरेसे है, (१ फेफसेमें हवा जाणेकी रुकावट स्वर नली अथवा वायु नलीका संकोच अथवा कुछ दरद २ फेफसेमें दरद जेसे फेफसेका सोजा फेफसेका खाईज जाणा उसके पुडका सोजा वगेरे ३ रक्ताशयका रो जिसकर फेफसेमें चहिये जिससें जादा या कम खून जावे तेसें खून जादा निकलजाणे फेफसेका पोषण कम होय जेसेके पांडू रोग रक्तपित्त वगेरे मगजकी नाताकती मनक विकार हिस्टीरीया सांकडी और नाताकती छाती एसे रोगवालोंकों जरा ठंढीके हवाक फेरफार दमकूं पैदा करता है, ५ कितनीक खराब चीजोंकी दुरगंधी बदपरेजी अजीर्ण वगेरे कारणभी श्वासकूं पैदा करता है, ६ ये रोग ओलादमें भी उतरता है.

(लक्षण) श्वास जादा जोरसे चले ये श्वास रोगका प्रत्यक्ष चिन्ह है, पेटमें प्रथम वादी दस्तकी कबजी पेशाव जादा तेसें धीरे २ उतरता है, बहोत रोगोमें दम चढणेके दुसरे कोईभी चिन्ह अगाऊसे नही दिखता दमका जोर पिछली रातकूं चढता है, बहोत घभराट होता है दम जोरसे चलता है, तब दूर तक सुणाई देता है, रोगीका स्वरूप भयंकर दिखता है, जिसने आगे कभी श्वासके रोगीकूं नहीं देखा है, वो तो यही जाणता है की ये अभी थोडी देरमेंही मरजायगा वदनपरसे पसीनेकी बूंदे गिरती है, नाडी जलदी चलती है, मूं खुला रहता है, सो नहीं सकता चैन नहीं पडता एसा दमका जोर दो चार घटेसें वो एक दो दिनतक जारी रहकर पीछे कम पडता है, खासीके संग थोडा कफ गिरता है, श्वासबेठे पीछे थका भया रोगी नींदमें गिरता है, वायुनलीके संकुडाणेसें दम चढता है, और हवा अंदर जाती वखत तांती बोलती है, वो कानसें अथवा कर्ण नलीसें सुणाई देती है, दमके रोगमें अंदर श्वास ओछा होता है, बाहर श्वास लंबा चलता है, विना मुदत फेर दम उठ आता है, किसीकूं हमेस चढ जाता है, किसीकूं महीनेमें एक वखत किसीकूं वर्षमें एक वखत और किसीकूं बहोत वर्षोंमें.

(इलाज) (१) बेहेडेकी छालकूं बकरीके पेशाबमें पकाकर उसका चूर्ण सहतमें चाटणा (२) बडी दाख हरडेकी छाल नागरमोथा काकडासींगी तथा धमासा इनोका घी बगाकर सहतमें चाटणा (३) सरसूंका तेल गुडके संग २१ दिनोंतक चाटणा (४) सूंठ तथा भाडंगीका काथ पीणा (५) भाडंगी तथा मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटणा (६) सूंठ मिरच पींपर हरडेका चूर्ण फाकणा (७) हलदी मिरच

दाख पींपर राखा सूंठ गुड इनसबोंकों नीवोलीके तेलमें चाटणा (८) आदेके रशमें भाडंगी तथा मांजूफल चाटणा (९) भूरीगणी हलदी अरडूसा गिलोय सूंठ पींपर भाडगी मोथ इनोका क्वाथ मिरच पीपरका चूर्ण डालकर पीणा (१०) मिश्री दाख पीपर इनोका चूर्ण नींवके तेलमें पकाकर खाणा (११) त्रिफला ३ भाग सोहागी भाग नागरवेलके रशमें घोट चिरमी जितनी २ गोलियां करके खाणी (१२) आककी जड लींडी पीपर सहतमे घोट झाड वेर २ जितनी गोलियां करणा (१३) गांजेकी राख सहतमे चाटणी (१४) आंधी झाडेका खार सहतमें (१५) अरडूसेका रश और पीपर (१६) कस्तूरी और मोलेठीका सीरा इसके सिवाय पीछे (नं० २६२) ४६६) २६७) ३३६) ३४४) ७२१) ७२२) ७२३) ७२४) का देशी तेसें हकीमी नुसकेस्वासके रोगमें प्रसिद्ध है.

(अमृतवटी) हमारे विद्याशालाकी श्वासकासमें अकसीर दवा है.

(अग्रेजी इलाज) (१) इपीकाक्यु आन्हा टार्टर इमेटीक बेलाडोना धतूरा अफीम गांजा इथर कलोरल हाईड्रेट पोटास आयोडाईट वगेरे मुख्य है. (२) नं० ४८४ ४८७ (६४०) ६४१ (६४२) वाली दवाइयां दमके रोगमें प्रसिद्ध है, पिचकारीकेवास्ते एरंडी तेल अच्छा है, रोगीके पांव गरम जलमें रखणा छातीमे दरद होय तो टरपेन्टाइन तथा गरम पाणीका शेक करणा छातीपर राई मारणी(४)रोगी दमसें वहोत व्याकुल होय तो उसकूं आराम देणेके वास्ते डाकटरके पास रखकर क्लोरोफोर्म इथर अथवा दोनोसंग सुघाकर वेहोसकरके सुवाणा (५) रोगीके कमरेकू वंधकर धतूरा बेलाडोना सोरा नवसादर गांजा वगेरे दवायें सलगाणा इनोंके धूंएसे रोगीके श्वासमें जाणेसें फायदा होता है. (६) वीडी अथवा चिलममें कितनीक दवाइयें पीणेसें दमेमें फायदा होता है, धतूरा बेलाडोना मोफर्या तमाखू गांजा सोराखार वगेरे लेकिन् इसमेंकी कितनीक दवाइयां तेज और जहरी है, इस वास्ते थोडी २ पीणी कारण इसमें एक औरभी है, ये दवाइयां किसी २ कूं फायदा और किसी २ कूं नुकशांन करती है, किसी २ कुं फक्त तमाखूकी वीडी पीणेसेंही फायदा होता है, और किसीकू काफी पीणेसेंही फायदा होता है, और किसीकू धतूरेके पत्ते सिलगाकर उसका धूंआ श्वासमें लेणेसें फायदा होता है.

होमियो पथिक इलाज (१) एकोनाइट) खंक अथवा सूकी शरद हवासें उठे दममें फायदा करता है, (२) आइपीकाक्यु आन्हा–दमका कारण मिल सके नहीं और कफ तथा हांफणका जोर होय तब जादा उपयोगी है, (३) कुप्रम) मानसिक नाताकतीसें दम उठे तब अच्छा है, (४) आर्सेनिक) वहोत बेचेनी धमणके

वगेरे रोगोमें श्वासकी ह्याती देखणेमें आती है, लेकिन् इसके अलावा दमके मरजका दूसरे स्वतंत्र कारणभी होता है, फेफसेमें हवा जाणेको छोटे छेदोंमें खेंच होणेसें होता है, खेंचताणके लिये ये छेद संकोचाते हैं, उसकरके जितनी चहिये हवा फेफसेमें दाखल नहीं होसकती तव उसकी एवजी पूरी करणेकूं दम जलदी २ चलता है, दमका रोग होणेका मुख्य कारण इसतरेसे है, (१ फेफसेमें हवा जाणेकी रुकावट) स्वर नली अथवा वायु नलीका संकोच अथवा कुछ दरद २ फेफसेमें दरद जेसेके फेफसेका सोजा फेफसेका खाईज जाणा उसके पुडका सोजा वगेरे ३ रक्ताशयका रोग जिसकर फेफसेमें चहिये जिससें जादा या कम खून जावै तेसें खून जादा निकलजाणेसें फेफसेका पोषण कम होय जेसेके पांडू रोग रक्तपित्त वगेरे मगजकी नाताकती मनका विकार हिस्टीरीया सांकडी और नाताकती छाती एसे रोगवालोंकों जरा ठंढीके हवाका फेरफार दमकूं पैदा करता है, ५ कितनीक खराव चीजोंकी दुरगंधी बदपरेजी अजीर्ण वगेरे कारणभी श्वासकूं पैदा करता है, ६ ये रोग ओलादमें भी उतरता है.

(लक्षण) श्वास जादा जोरसे चले ये श्वास रोगका प्रत्यक्ष चिन्ह है, पेटमें प्रथम वादी दस्तकी कबजी पेशाव जादा तेसें धीरे २ उतरता है, वहोत रोगोमें दम चढणेके दुसरे कोईभी चिन्ह अगाऊसे नहीं दिखता दमका जोर पिछली रातकूं चढता है, वहोत घभराट होता है दम जोरसे चलता है, तव दूर तक सुणाई देता है, रोगीका स्वरूप भयंकर दिखता है, जिसने आगे कभी श्वासके रोगीकूं नहीं देखा है, वो तो यही जाणता है की ये अभी थोडी देरमेंही मरजायगा वदनपरसे पसीनेकी बूंदे गिरती है, नाडी जलदी चलती है, मूं खुला रहता है, सो नही सकता चैन नहीं पडता एसा दमका जोर दो चार घंटेसें वो एक दो दिनतक जारी रहकर पीछे कम पडता है, खासीके संग थोडा कफ गिरता है, श्वासबेठे पीछे थका भया रोगी नींदमें गिरता है, वायुनलीके संकुडाणेसें दम चढता है, और हवा अंदर जाती वखत तांती बोलती है, वो कानमें अथवा कर्ण नलीसें सुणाई देती है, दमके रोगमें अंदर श्वास ओछा होता है, बाहर श्वास लंबा चलता है, विना मुदत फेर दम उठ आता है, किसीकूं हमेम चढ जाता है, किसीकूं महीनेमें एक वखत किसीकूं वर्षमें एक वखत और किसीकूं वहोत वर्षोंसें.

(इलाज) (१) वेहेडेकी छालकूं वकरीके पेशाबमें पकाकर उसका चूर्ण सहतमें चाटणा (२) वडी दाख हरडेकी छाल नागरमोथा काकडासींगी तथा धमासा इनोका घी वनाकर सहतमें चाटणा (३) सरसूंका तेल गुडके संग २१ दिनोंतक चाटणा (४) सूंठ तथा भाडंगीका काथ पीणा (५) भाडंगी तथा मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटणा (६) सूंठ मिरच पीपर हरडेका चूर्ण फाकणा (७) हलदी मिरा

स्थानके वरमके लियें इस ग्रंथमें जो रोगोंका हिस्सा छांटा है, उसतरीकेपर इस रोगकूं छातीके दरदोंकी गिणतीमें धरा है.

(कारण) कफज्वरका कारण और सलेषमका कारण वोही इस न्यूमोनियाका कारण है.

(लक्षण) फेफसेका थोडा अथवा वहोत भाग सूजकर अंदर दाह होता है, सरूमें सलेषम होता है, अथवा थोडा बुखार आकर वेचनी होतीहै एकाध दिन रहकर ठंढके सग जोरसे बुखार चढ आता है, इसकेसंग थोडी खासी और कफ होता है, छातीमे दरद होता है, श्वास जलदी नाडी तेज अरुचि शिरदर्द पेसाव थोडा तथा लाल दस्तकी कवजी वहोत नाताकती भ्रम वकवाद किसी २ वखत छातीमें श्वासकेसंग कफ वोलता है, पहली५।७दिन बुखार १०४ १०५ डिग्रीतक वढजाता है, पसीना नहीं आता दरदका जोर कम भये पीछे अथवा दरद लंवाण पडे पीछै पसीना आणे लगता है, तोभी बुखार उतरता नहीं जीभपर सुपेद थर और रोगके जोर मुजव सूकी पडके फटती है, तथा कांटा २ पडता है, भूख विलकुल लगती नहीं इसवास्ते खुराक मुजव देणा पडता है, खासी किसीकूं कम किसीकूं जादा होती है, कफ पहली तो थोडा लेकिन् पीछेसें वढता है, वरमकी जगेपर दरद होता है, शूल होती है, सूनहीं सकता श्वासोच्छास ३० से ४० तक चलता है, नाडी १२० सें १४० तक वढ जाती है, पीछेसें कम जोर पडजाती है, बुखार पहली एक अठवाडे सख्त आकर नरम पडता है, लेकिन् रोगी नाताकत होजाताहै, जो वचणेका होता है, तो वेहोसीसें सावचेत होजाता है, बुखार उतार खाकर सव वदनमें पसीना आता है, दस्त पेशाव खुलाश आता है, जो रोग वढता है, तो त्रिदोषके सव लक्षण दिखाइ देता है, रोगी वेहोस गाफल होता है, नाडी क्षीण पडती है, गलेमें अवाज चलता है, मरजाता है.

(मुद्दत) इस रोगकी अवधी १२ सें ३० दिनकी है, जो रोग साधारण होय तो एक अठवाडेमें अला होजाता है, मध्य होय तो २४ दिन जोर होय तो एक महीनेमें अच्छा होय या मरजाता है.

इलाज—कफज्वरका तथा सन्निपात ज्वरका उपाय करणा भाडंग्यादि (न०१९६) वृहत्भारग्यादि (१९७) अभयादि (१९५) वगेर कायकी योजना अच्छी है, न० ६३८ तथा ६३९ का मिक्श्चर देणा छाती अथवा पीठपर जहां सोजन भया होय उस जगे अथवा पसलीमे शूल निकलती होय उस जगे अलसीकी पोटिस वेर २ वांधणी अथवा टरपेनटाइन लगाकर गरम पाणीका सेक जारी रखणा दरदवाले भागपर राईका पलाष्टर आधी घटे तक रखणा ताकत कायम रखणेकू खुराक हलका लेकिन् अच्छा रखणा आमोनिया वाली कोईभी दवासे वदनमें कांटा आता है, नाताकती वहोत वढजाय तो अनार्य लोक तो ½ से १ औंस ब्रांडी वरतते है, द्राक्षासव - मा

जेसा अवाज कफ–तब छातीके बीचमें आर्सेनिक देणा (५) दमका जोर शांत पडे पीछे फेर दमकु अटकाणेकुं नक्सवोमिका आर्सेनिकम आयोडाइन वगेरे.

(विशेष सूचना पथ्य) दमका रोग अजीर्ण और दस्तकी कबजीसें बेर २ उठजाता है, इसवास्ते खुराक खाणेकी बहोत सावचेती रखणी हजम नहीं होय एसा खुराक कभी खाणा नहीं हलका खुराक भी जादा पेटभर खाणा नहीं अच्छी हवा पाणीकी जगे फायदा करती है, इसवास्ते हवा बदल देणी चाहिये कुपथ्य–दालकी जात ठंढा पदार्थ दाहकरे एसा गरम पदार्थ लूखा पदार्थ वासी अन्न दही खांड खटाई वगेरे पदार्थोंकों त्यागणा–कितनेक मूर्ख लोक दम बेठाणेकूं बहोत गरम दवाइयां तथा गरम मसाले खिलाते हैं, उसमें उलटा नुकशांन होता है, खास श्वासरोगका जो पथ्य वोही दमके रोगका पथ्य समझणा.

उरक्षत–छातीका जखम–

(कारण) बहोत महनत करणेसें बहोत भार उठाणेसें उंची जगासें पडणेसें बहोत उंचे श्वरसें पढणेसें बोलणेसें बहोत दोडणेसें औरतोंमें बहोत आसकी रखणेसें और बहोत थोडा और लूखा खाणेसें छातीमें जखम पडता है. (लक्षण) क्षयके बहोतसे लक्षण देखाई देते हैं, क्योंकी उरक्षत रोगभी क्षयरोगका एक भेद है, छातीमें दरद होता है, चीरीजती है, पसवाडे सूकते हैं, अदमी धूजता है, वीर्य ताकत रंग क्रांतिका धीरे २ क्रमसे नाश होते जाता है, बुखार पीडा मनकी दीनता चिंता दस्त अग्निका नाश खासीमें खराब काला दुर्गंधवाला पीला गुंथा भया और बहोत खून मिला भया कफ बेर २ थूकता है.

(इलाज) खासी तथा क्षयका कितनाएक इलाज उरक्षतके भी कामिल है. जखमकूं भरे और खूनकूं रोके एसें स्तंभक इलाज करणा (१) अरडूसा) रश पुटपाक वगेरे खून बंधकर जखम मिटाता है, (२) अमृतवटी) इस रोगका सर्वोत्कृष्ट इलाज है, (३) इक्षुके रसमें घी उकालकर पीणा, (४) बेरकी अथवा पीपलकी लाख पुराणेके लेके रसमें पीस उसमेंसें २ तोला कल्कमें चोगुणा कोलेका रस डाल पीणा, (५) कुष्मांडावलेह (नं० २५६) तथा द्राक्षासव नं० २८६,

(६) रक्तस्तंभक दवाइयां पृष्ट ३१४ देखो) स्तंभन दवाइया (पृष्ट ३१२ देखो) रक्तपित्त रोगमें लिखीभई दवाइयां उरक्षतमें फायदा करती है, पथ्यापथ्य–खासी तथा रक्तपित्तके रोगमें लिखे मुजब.

न्यूमोंनिया–फेफसेका वरम–

निचार–छातीके फेफसेमें सूजन होणेसें भयंकर बुखार कफका त्रिदोष अथवा सन्नि पात ज्वर होता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजब ये एकतरेका त्रिदोष ज्वर है, लेकिन मर्म

स्थानके वरमके लिये इस ग्रंथमें जो रोगोंका हिस्सा छांटा है, उसतरीकेपर इस रोगकूं छातीके दरदोंकी गिणतीमें धरा है.

(कारण) कफज्वरका कारण और सलेषमका कारण वोही इस न्यूमोनियाका कारण है.

(लक्षण) फेफसेका थोडा अथवा वहोत भाग सूजकर अंदर दाह होता है, सरूमें सलेषम होता है, अथवा थोडा वुखार आकर वेचनी होतीहै एकाध दिन रहकर ठंढके संग जोरसे वुखार चढ आता है, इसकेसंग थोडी खासी और कफ होता है, छातीमे दरद होता है, श्वास जलदी नाडी तेज अरुचि शिरदर्द पेसाव थोडा तथा लाल दस्तकी कवजी वहोत नाताकती भ्रम वकवाद किसी २ वखत छातीमें श्वासकेसंग कफ वोलता है, पहली५।७दिन वुखार १०४ १०५ डिग्रीतक वढजाता है, पसीना नहीं आता दरदका जोर कम भये पीछे अथवा दरद लंघाण पडे पीछे पसीना आणे लगता है, तोभी वुखार उतरता नहीं जीभपर सुपेद थर और रोगके जोर मुजव सूकी पडके फटती है, तथा कांटा २ पडता है, भूख विलकुल लगती नहीं इसवास्ते खुराक मुजव देणा पडता है, खासी किसीकूं कम किसीकूं जादा होती है, कफ पहली तो थोडा लेकिन् पीछेसें वढता है, वरमकी जगेपर दरद होता है, शूल होती है, सूनहीं सकता श्वासोच्छास ३० से ४० तक चलता है, नाडी १२० सें १४० तक वढ जाती है, पीछेसें कम जोर पडजाती है, वुखार पहली एक अठवाडे सख्त आकर नरम पडता है, लेकिन् रोगी नाताकत होजाताहै, जो वचणेका होता है, तो वेहोसीसें सावचेत होजाता है, वुखार उतार खाकर सव वदनमें पसीना आता है, दस्त पेशाव खुलाश आता है, जो रोग वढता है, तो त्रिदोपके सव लक्षण दिखाइ देता है, रोगी वेहोस गाफल होता है, नाडी क्षीण पडती है, गलेमें अवाज चलता है, मरजाता है.

(मुद्दत) इस रोगकी अवधी १२ सें ३० दिनकी है, जो रोग साधारण होय तो एक अठवाडेमें अछा होजाता है, मध्य होय तो २४ दिन जोर होय तो एक महीनेमें अच्छा होय या मरजाता है.

इलाज—कफज्वरका तथा सन्निपात ज्वरका उपाय करणा भाडंग्यादि (नं०१९६) वृहत्भारंग्यादि (१९७) अभयादि (१९५) वगैरे काथकी योजना अच्छी है, न० ६३८ तथा ६३९ का मिक्श्चर देणा छाती अथवा पीठपर जहां सोजन भया होय उस जगे अथवा पंसलीमे शूल निकलती होय उस जगे अलसीकी पोटिस वेर २ वांधणी अथवा टरपेनटाइन लगाकर गरम पाणीका सेक जारी रखणा दरदवाले भागपर राईका पलाष्टर आधी घटे तक रखणा ताकत कायम रखणेकूं खुराक दूलका लेकिन् अच्छा रखणा आमोनिया वाली कोईभी दवासे वदनमें कांटा आता है, नाताकती वहोत वढजाय तो अनार्य लोक तो ½ से १ औंस ब्रांडी वरतते है, द्राक्षासव अथवा

पोर्टवाइन दिनमें तीन चार वखत देते हैं-(होमियोपथिक इलाजोमें) एकोनाइट ठंढ तथा बुखारके रोगमें देणा अच्छा है) ब्रायोनिया और फोसफॉरस इस रोगकी अकसीर दवा है, दोनों दवायें दो दो घंटेके फासलेसें वारे फिरती देणी.

(विशेष सूचना) भयंकर बुखारकी जितनी सार संभाल रखणी इतनी ही न्यूमोनियाकी रखणी चाहिये.

फेफसेके पुडका वरम-प्ल्युरिसि) होता है, इसका इलाज फेफसेके वरमके लगभग जेसा ऊपर मुजब करणा.

क्षय-धातुक्षय-राजयक्ष्मा-खैण-
(कन्झपशन)

(कारण) मलमूत्रादि वेगोकोंरोकणेसें अतिस्त्री सेवनसें वहोत भूखा रहणेंसे वहोत इर्षा तथा फिकर वहोत महनत वहोत अथवा प्रमाणसे कम वेटेम खानपान वहोत अभ्यास छोटी ऊमरमें धातूका क्षय गरमी सुजाककी वेमारी छाती नाताकत होय और वहोत वोलणा शरदीकी जगेमें रहणा हांफणी फेफसेका सोजा ये सब क्षय रोगकूं पैदा करणेके कारण है, ये रोग ओलादमें भी ऊतरता है, और जादा करके १८ सें ३० वर्षकी अवस्थामें जो क्षय होता है, वो पक्का और भयंकर होता है, उसमें वचणा मुस्कल है.

(लक्षण) पसवाडे तथा खवोंमें पीडा हाथपैरोमें जलण सब वदनमें ज्वर ये तीन क्षय रोगके मुख्य लक्षण है, (यदाहुनाभिमनु पौत्रात्रेय) अन्नपर द्वेष ज्वर श्वास खासी खासीमे खून गिरणा और स्वर विगडणा (आयु ज्ञानार्णवमें) क्षयरोगकी तीन स्थिति जिसमें पहली स्थिति इस मुजब-ये नाशकारक रोगकी शरुआत वहोतसी वखत एसी वे मालूम जडरुप जाती है, सो जहांतक साधारण हालतमें इन रोगवाला होता है, उस वखत सादे वैद्यभी देखे तो भी उसकूं इस रोगकी खबर नहीं पडती सरूमें खासी होती है, वो जादा करके फजरमें होती है, और विचमें खासी मिटकर पीछे वढती है, उसकेसग सुपेद झाग जेसा और चिकणा कफ गिरता है, किसी वखत गलेमें खरखराट अवाज खोखरा होता है, वहोत दिन खासी कायम रहकर रोगीका दम उठ जाता है, थोडी महनत करणेसें श्वास चढ जाता है, आगे खासी वढणेके साथ नाताकती वढती है, रोगी लिवरीज जाता है. नाडी सब दिन तेज चले सांझकूं और जीमेवाद जादा जलद चले सांझकू हाथपैरोमें दाह होकर बुखार चढ जाता है, फेफसेमें एक तरेका पदार्थ पैदा होता है, जिस करके फेफसेकी मूल पोलार स्थिती वदलकर नक्कर करडा होजाता है, ये पदार्थ पहली फेफसेके ऊपरके पिछले भागमें घर करता है, गलेके हांसके ऊपरके तथा नीचेके भागपर वजाणेसें पोले अवाजके वदले वोदा अवाज होता है, स्टेथोस्कोपसें

तपासणेसे श्वास छोडणेका स्वाभाविक काल लंबा भया २ मालम देता है, श्वासकी ध्वनि स्वभावसें नरम होणेके वदले करडा मालम देता है, अथवा नलीमेंसे हवा जारही है, एसा मालम देता है, वचनका अवाज उंचा सुणीजता है.

(दुसरी स्थिति) करड़ा भया २ फेफसेके आसपासका भाग सूज जाता है, करडा पडाभया भाग नरम पडकर उसमें पीप खासी कफ होकर वाहर गिरता है, इस सोजेकी हालतमें रोगीका वुखार प्रगट होता है, छातीकूं तपासते अवाज वोदा होगा कान धरकर सुणणेसे अंदर पपोटे जेसा अवाज सुणाइ देगा किसी वखत तांती वोलेगा हांसके आसपासका भाग जरा वैठा भया मालम पडेगा.

(तीसरी स्थिति) कितनीक मुदतसें कफ वाहर निकलकर छाती पोली होती है, और वो भाग जाहिर वैठा भया मालम देता है, पांसलीके वीचकी जगेमें खड्डा मालम देता है, और दरदवाली छातीकी वाजू जादा वैठी तथा चिपटी मालम देती है' इस तरे फेफसा खवाते जाता है, उसके संग शरीरकाभी क्षय होते जाता है, फेफसा सडणेसें खुन साफ होता नहीं खुराक खाईजता नहीं कफ दस्त तथा वुखार रातकूं वेहद पसीना वदनके सब धातुओंकूं सुकाता है, आखर हड्डी और चमडी वाकी रहती है.

(क्षय होतेकूं अटकाणेका इलाज) जिसके मा वापकू क्षय रोग भया होय उस वीर्यसे पैदा भये वच्चेकी वहोत खानपानकी संभाल रखणी निज स्वजनमें लग्न करणा नहीं जैन (आर्य शास्त्रभी मना करता है,) गर्भ धारण करती वखत माकू एसा कोई रोग भया होय तो उसकू वहोत संभालसें रहणा अच्छा खुराक ताकतकी दवा देणा वच्चा भये पीछै वच्चेकूं वहोत हिफाजतके साथ रखणा गरम कपडा पहिराणा और शरद हवासे विलकुल वचाये रखणा खुली, हवामे फिरणा रोगी स्त्री गऊ वकरीका दूध पीलाणा नहीं वडा भये वाद कसरत कराणी वालपणेमें सादी करणा नहीं अति मैथुन अति महनत फिकर और वहोत अभ्यास इसका त्याग करणा जादा करके गरमी.

(उपदंश) और कंठमाल जेसे खराव रोगोसें पीडित औरत मर्दसें जो वच्चा होता है, एसी ओलादकू क्षय जेसा रोग लगणा जादा संभव है. (कठमाल रोग देखो) पिलाडी लिखा है, एसे रोगी वच्चेके शरीरमेसे एसे दुष्ट रोगका निकाश करणेवास्ते वहोत सावधानी रखणेकी जरूरी है, एसे वच्चेका खून सुधारे एसी दवा कोडलीवर अमृतवटी वसतमालती वगेरेका वहोत मुद्दततक सेवन कराणा और इससेभी जादा जरूरीकी वात ये ध्यानमें रखणेकी है, के खुली हवामें फिराणा हमेश जेसे वणे तेसें सादा और अच्छा खुराक देणा क्योंके देशी खुराक रोगकी वृद्धिका हेतु है, इसवास्ते वहोतसी वेमारियां वहोतसी वखत अपणे खानपानसें होती है, एसा देखते है, निरोधी अन्नपान वावत इस ग्रथका पथ्यापथ्य पदार्थोका वर्णन पृष्ठ १७८ देखो.

(क्षयरोग भये पीछेका इलाज) (देशी इलाज)

(१) अरडूसा–खासी तथा क्षयरोगकेवास्ते वहोतही उत्तम इलाज है, (पृष्ठ २४१) लिखा भया वासा स्वरस वासा पुटपाक वासादि क्वाथ वसावलेह वगेरे सव वनावटे क्षय क्षत तथा खासीका अकसीर इलाज है. (२) सीतोपलादि चूर्ण (नं० ३२७) घी तथा सहतमें अथवा इस चूर्णमें सोनेका वर्क घोट घी अथवा सहतमें चाटणा) सुवर्ण मालनी वसंत-(नं०३३७)सहत तथा पींपरमें अथवा सितोपलादि चूर्ण मिलाकर सहतमें(४)वसंत मालती(नं० ५४) सीतोपलादि तथा मोलेठीके चूर्णसंग घी तथा सहतमें चाट थोडा वकरीका दूध पीणा.(५)(अमृतवटी)दूधके पथ्यमें वहोत अच्छा फायदा करती है, वदनके सव धातुओंकों वढाती है, और फेफसेमें नया खून प्राप्तकर जखम भी भरदेती है, (६) इसग्रंथके (नं० २६५, २८२, ३३५) वाला इलाज फायदावंद है, (अंग्रेजी इलाज)–(१) कोडलिवर क्षयका मुख्य इलाज है, लेकिन् आर्यलोक इससे वचणा अनार्यलोक सरुआतमें आधे रुपेभरसे रुपेभरतक दोनों वखत जीमें वाद लेते हैं, और जव पचणे लगता है, तो ४ रुपेभर वढाते २ लेते हैं, साफ कोडलीवर ओइल स्वादसें वहोत नफरण लानेवाला है, इसवास्ते (२) माल्टाइन जीमे वाद दूधके संग लेते हैं, कोडलीवर और माल्टाइनके संग क्वीनाइन लोह फोसफरस वगेरे दवाओं मिलाकर भी देते हैं, वुखार तथा दस्त लगता होयतो कोडलीवर देणा नहीं (३) हाइपो फोस्फेट ओफलाइम–मात्रा ॥ से एक औंस हमेस दोतीन वखत दूधके संग और कोडलीवरके सग भी देते हैं, (४) पेपसीन लॅक्टो पेपसीन पांक्रीयाटिक ईमल्सन विस्मथ नक्षवोमिका तथा क्वीनाइन और चिरायता इसमेंकी कोइभी एकाधदवा सरू रखनी पाचन क्रियाकू मदत देणी (५) लोहवाली दवायें जेसेंके सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न आमोन्या साइट्रेट ओफ आयर्न टिंकचर ओफ स्टील फोस्फेट ओफ आयर्न वगेरे अच्छा फायदा करती है.

(विशेष सूचना)–क्षयका रोग असाध्य है, पक्काक्षय कभी मिटता नहीं खासीमेंसे क्षयकी पक्की पहिचान करणी ये पूरे अनुभवका काम है, इसकी निश्चय होगये पीछे इलाजभी वहोत निगे दास्तीसे करणा तभी चतुरपणा सिद्ध होता है, असाध्य जांण निराश होणा नहीं अछे योग्य इलाजोंमें रोगीकूं आराम मिलता है, जींदगी वढती है क्षयवाले रोगी सेंवनसकेतो वस्ती छोडकर जंगलकी उंची और खुली हवामें जाके रहे, सूकी खुली और अछी हवा क्षय रोगका सर्वोत्तम इलाज है, सव तरेके गरम उत्तेजक तथा नसेवाले खानपानका त्याग करना सादा अछा और पोषणकारक खुराक खिलाना जीवनीयगणकी दवायें और दूधमें जादा पोषण करना खुराक रुचिप्रमाने खाना चावल दाल गहूं चदलाई ताजे और उत्तम पके फल दूध मलाई घी परवल उत्तम शाग तरकारी

सब पथ्य है. लेकिन् बहोत चीजों मिलाकर संग खाना ये नुकशांन करता है. बक-
का दूध बकरियोंमे रहना बकरेके बालका बिछोना बकरेकी लींडीका तप बहोत
शंसनीक है.

किरण ३ री.

रक्ताशयसंबंधी रोग.

रिदय रोग हार्टडिझीझ.

देशी वैद्यकशास्त्रमें रिदयरोग इसनामकी व्याधि नीचै रक्ताशयके रोगोंका वर्णन किया है. उसमें रक्ताशयका रोग छ प्रकारका लिखा है. १ उरोग्रह २ वायूका ३ पित्तका ४ कफका ५ तीनों दोषका ६ कृमिजन्य याने चूरनिये पडनेसें.

(कारण) बहोतगरम भारी खट्टा तुरा और कडवे पदार्थोका सेवन करणेसें बहोत खेचलसें चोट लगनेसें भोजनपर भोजन करनेसें डरसें दस्त पेशावके वेगकूं रोकनेसें इत्यादि कारणोंसें रिदयरोग होता है, इसके सिवाय शरदी ठढ मूत्राशयका रोग और संधिवायू होय तोभी रिदयरोग होजाता है.

(लक्षण)-(१) उरोग्रह-खून मांस तिल्ली और यकृत् वढता है, और रिदय विस्तार पाता है, (२) वायूका-रक्ताशय पीडासें जाणे फैलता है, सूयोंसे चुभाते होय एसा दरद होता है, (३) पित्ताशय संबंधी-प्यास संताप वदनमें जाणे अगार लगायदी है, कोइ चूसे एसी पीडा गभराट कंठमेंसे धूआं निकलणा मूर्छा दुरगंधवाला पसीना और मूंका सूकना (४) कफसंबधी-रक्ताशयमें भारीपना कफका गिरना अरुचि मूंमे गीलासपना और जठराग्नि जाणे जलसे भीजाभया एसा मालम देता है, (५) तीनोंदोप संबंधी तीनोदोषोंके लक्षण मिले भये होते हैं (६) रिदयमें कृमि उत्पन्न होती हे, तब उलटी मोल होती है, वेर २ थूकना पडता है, सुई चुभाने जेसा दरद शूल आंखमें अंधेरी अरुचि आखोंमें कालास पडता है, उससे क्षयरोग भी होजाता है.

रिदयरोगका इलाज-(१) गऊका दूध ९६ तोला मद आंचसे आधाजले तब ठढाकर उसमे मिश्री घी तथा सहत दोदो तोला और तीन मासा पीपरका चूर्ण मिलाकर रोगीकी शक्ति मुजब देना (२) पोकर मूल अथवा एरंडीके जडका चूर्ण सहतमें चाटना (३) कुटकी तथा मोलेठीका चूर्ण गरम पाणीमें पीणा (४) वकुलवृक्षके पुष्पोंका हार पहरना (५) पारा गंधक अभ्रक इनोकी भस्मी सम वजन लेकर इसकू असालियेके छालके रसकी अथवा कांदेके रसकी २१ भावना देनी पीछे वो चूर्ण सहतमें चाटना मात्रा १ मासा (६) कृमिजन्य रिदयरोगमें प्रथम लंघन तथा दस्त कराकर पीछे कृमिरोगमें लिखे इलाजकरणा (७) वायविडग उपलेट इसका चूर्ण गोमूत्रमें देना.

(क्षयरोग भये पीछेका इलाज) (देशी इलाज)

(१) अरडूसा–खासी तथा क्षयरोगकेवास्ते वहोतही उत्तम इलाज है, (पृष्ठ २४१) लिखा भया वासा खरस वासा पुटपाक वासादि क्वाथ वसावलेह वगेरे सब बनावटे क्षय क्षत तथा खासीका अकसीर इलाज है. (२) सीतोपलादि चूर्ण (नं० २२७) घी तथा सहतमें अथवा इस चूर्णमें सोनेका वर्क घोट घी अथवा सहतमें चाटणा (३) सुवर्ण मालनी वसंत-(नं०३३७)सहत तथा पींपरमें अथवा सितोपलादि चूर्ण मिलाकर घी सहतमें(४)वसंत मालती(नं० ५४) सीतोपलादि तथा मोलेठीके चूर्णसंग घी तथा सहतमें चाट थोडा बकरीका दूध पीणा.(५)(अमृतवटी)दूधके पथ्यमें वहोत अच्छा फायदा करती है, बदनके सब धातुओंकों बढाती है, और फेफसेमें नया खून प्राप्तकर जखम भी भरदेती है, (६) इसग्रंथके (नं० २६५, २८२, ३३५) वाला इलाज फायदाबंद है, (अंग्रेजी इलाज)–(१) कोडलिवर क्षयका मुख्य इलाज है, लेकिन् आर्यलोक इससे बचणा अनार्यलोक सरुआतमें आधे रुपेभरसे रुपेभरतक दोनों बखत जीमें बाद लेते हैं, और जब पचणे लगता है, तो ४ रुपेभर बढाते २ लेते हैं, साफ कोडलीवर ओइल स्वादसें वहोत नफरण लानेवाला है, इसवास्ते (२) माल्टाइन जीमे बाद दूधके संग लेते हैं, कोडलीवर और माल्टाइनके संग क्वीनाइन लोह फोसफरस वगेरे दवाओं मिलाकर भी देते हैं, बुखार तथा दस्त लगता होयतो कोडलीवर देणा नहीं (३) हाइपो फोस्फेट ओफलाइम–मात्रा ॥ से एक औंस हमेस दोतीन वखत दूधके संग और कोडलीवरके संग भी देते हैं, (४) पेपसीन लॅक्टो पेपसीन पांक्रीयाटिक ईमल्सन बिस्मथ नक्षवोमिका तथा क्वीनाइन और चिरायता इसमेंकी कोइभी एकाधदवा सरू रखनी पाचन क्रियाकूं मदत देणी (५) लोहवाली दवायें जेसेंके सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न आमोन्या साइट्रेट ओफ आयर्न टिंकचर ओफ स्टील फोस्फेट ओफ आयर्न वगेरे अच्छा फायदा करती है.

(विशेष सूचना)–क्षयका रोग असाध्य है, पक्काक्षय कभी मिटता नहीं खासीमेंसे क्षयकी पकी पहिचान करणी ये पूरे अनुभवका काम है, इसकी निश्चय होयपे पीछे इलाजनी वहोत निगे दास्तीसे करणा तभी चतुरपणा सिद्ध होता है, असाध्य जांण निराम होना नहीं अछे योग्य इलाजोसें रोगीकूं आराम मिलता है, जींदगी बढती है, क्षयवाले रोगी सेणमकेनो वस्ती छोडकर जंगलकी उची और खुली हवामें जाके रहे, सूकी खुली और अछी हवा क्षय रोगका सर्वोत्तम इलाज है, सब तरके गरम उतेजक तथा नसेवाले खानपानका त्याग करना सादा अछा और पोषणकारक खुराक खिलाना जीवनीशक्ती दवायें और दूधमें जादा पोषण करना खुराक रुचिप्रमाणे खाना चावल दाल गहू चंदलादे तांजे और उतम पके फल दूध मलाई घी परवड उतम शाग तरकारी

(लक्षण) धडका ये रक्ताशयके एक वडे रोगका लक्षण है, वोजव पैदा होता है, तो वडी घैसत वताता है, ये रोग वैर २ उठता है, वेर २ वैठता है, छातीमें कुछ उछलता है, गलेमें गोला चढता होय एसा रोगीकूं मालम देता है गभराट मूर्छा श्वास कानमें अवाज शिरमे दर्द चक्कर आंखमे अंधेरी पसीना जादा वगेरे–(इलाज) रोगीकूं शांत पडे रहणे देणा कस्तूरी हींग अफीम डिजीटेलिस ब्रांडी पोटास ब्रोमाइड वगेरे दवा देकर देखणी हाथ पैर सेकणा तथा छातीपर राई धरणी अथवा सेक करणा.

(हृदयशूल) कारण–पुख्त ऊमरके अदमीके ये रोग होता है, श्रम शरदी ठंडी अजीर्ण भारी खुराक वहोत दाटके खाणेसे इत्यादि कारणसे हृदयशूल पैदा होती है, लक्षण–वांये तरफ अकस्मात् शूल होती है, वायुकें हृदय रोगके लक्षण होते है, छाती जाणे वांधली होय और श्वास वंध भया होय एसा वाहरसे मालम देता है, लेकिन् पक्कायतमें अंदर श्वास चलते रहता है, दरदी दिखणेमें भयंकर चहरा फीका नाडी ना ताकत पसीना और मरणेका डर रोगीसें वोला नहीं जाता तोभी अंदरसे सावचेत रहता है, वहोत देरतक शूल चलता है, तो किसी वखत आंचकीयाने वांइटे चलणे लगते हैं, इलाज–जल्दीके इलाज तरीके छातीपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइन लगाकर शेक करणा कस्तूरी हींग क्लोरलहाइड्रेट सालवोलेटाइल डिजीटेलीस वेलाडोना ब्रांडी वगेरे दवाओंमेंसें जो हाजर होय वो पिलाकर और आमोन्या इथर वगेरे दवा सुंघाणी.

(विशेष सूचना)–हृदय रोगमें ये शारीरक चिन्होंका तात्कालिक इलाज उपरांत जादा इलाज पहली लिखा है, सो करणा रक्ताशयका रोग वहोत विचारवाला जादा करके असाध्य अथवा कष्ट साध्य होता है, इसवास्ते पूरे इल्मीसे परिक्षा कराके इलाज कराणा ये सीख है ।

किरण ४ थी.

पक्काशयसंबंधी रोग.

इस रोगमे होजरी तथा आंतरोंके तमाम रोग तथा उस अवयवोकी विकृतीके संग संवंध रखणेवाले दुसरे भी कितनेक रोगोंका समावेश इसमें किया है, पाचन क्रियाके रोगसें जो जो रोग होता है, उन सवोंका इस किरणमें वयान है, दाखला जेसेके मसेका दरद (हरस) जाहरमें तो गुदाके संग संवंध रखता है, लेकिन् उसकी असली वुन्यादसोचेतो पाचन क्रियाके विकारमेसेहीं हरसका जन्म है, इसीतरे आम्लपित्त और मूका दरद भी पाचन शक्तिका विकार है ।

मूंका रोग.

मूंके वहोतसे रोग जादा करके अजीर्ण और विगडी भई होजरीसे होता है, (जीभका

(८) असालियेका स्वरस तथा कल्कसे पका या घी (९) असालियेकी छालका उकाला तथा दूध (१०) असालियेकी छालका चूर्ण घीके संग दूधके संग अथवा गुडके पाणीके संग (११) हिरणके सींगकी भस्म करके गायके घीमे चाटनी (१२) दशमूलका क्वाथ (नं० ९७)-(१३)-(नं० ७३२) तथा (नं० ६३०)६३१) का इलाज (१४) अमृतवटी रिदयरोगपर सर्वोपरी इलाज है, दूध चावलका पथ्य रिदयरोग मिटाकर वदनमें अमृत जेसा गुण दिखाती है, (१५) द्राक्षासव (नं० २८३)

रिदयरोगके दुसरे शारीरकचिन्ह-रोग.

(रक्ताशयका सोजा)-(कारण)-शरदीसें मूत्राशयके रोगसें अथवा जखमसें छातीमें सूजन आती है, (लक्षण) बुखार छातीका धडका, श्वास जलद, चहरा फिकरवंद गभराट वांइकर वटसो नहीं सकता-(इलाज)-गरमपाणीका छातीपर शेक करना अलसीकी पोटिस बांधनी अथवा दोपघ्न लेप बांधना दस्तके खुलशा वास्ते हरडेका चूर्ण अथवा एप्समसॉल्ट देना.

(रक्ताशयका फैलाव)-रक्ताशय जब वढता है, तब उसके पडदे जाडे पड़ते हैं, अथवा थेली विस्तार खाती है, (कारण)-खूनके फिरणेमें अडचल होणेसें खून वढजाणेसें जादा महनत करणेसें सखत धूपसें और फेफसा मूत्र पिंड वगेरे दुसरे रोगोंमें जब रक्ताशयकूं जादा जोर पडता है, तब उसका कद वढता है, (लक्षण) रक्ताशयमें जादा खून रहणेसें वो जादा धडकता है, महनतसें दम चढता है, नींद नहीं आती नाडी वे प्रमाण और छातीमें दरद होता है,) (मूर्च्छा) (कारण) किसीभी दुसरे कारणसे रिदयमें खून जाता अटके कम हो जाय अथवा खराव खून जावे तब मूर्च्छा आती है, मरणा त्रास तमाखू वछनाग जादा नाताकती और कितनेक रोगोंमें भी मूर्च्छा आती है-(लक्षण वेहोसी आंखमे अंधेरी चक्कर जी मचलाणा उलटी चहरा फीका कांपणी ठंढ शीतांग नाडी धीरी और वे प्रमाण श्वास जलद गभराट वे चैनी विलकुल फेम नहीं आंखकी की की फैल जाती है, नाडी नाताकत धीरी थोडी नसोंकी खेंच ताणभी होजाती है,-(इलाज) अमोनिया नाकमें सुंघाणी मूंपर पाणी छांटणा हवा डालणी.

(धडका) (फडकणा) रक्ताशयके ऊपर हाथ धरणेसें छाती जादा जोरसें धड २ करती है, उसको (पाल्पिटेशन) कहते हैं. कारण-खुनहीके फीरणेकी चालमें कुछ अडचल होती है, तब उसके वदलेमें चाल वढती है, पेटमें हवा अथवा पाणीका भराव जादा खुराक रक्ताशयपर कुछ दवाव मनका चंचलपणा वहोत स्त्री सेवन मगजकी नाताकती तमाखू अथवा दारूका विशन तथा औरभी पांडू वगेरे केइयक रोग छातीका धडका पैदा करता है.

(लक्षण) धडका ये रक्ताशयके एक वडे रोगका लक्षण है, वोजव पैदा होता है, तो वडी घैसत वताता है, ये रोग वैर २ उठता है, वेर २ वैठता है, छातीमें कुछ उछलता है, गलेमें गोला चढता होय एसा रोगीकूं मालम देता है गभराट मूर्छा श्वास कानमें अवाज शिरमे दर्द चक्कर आंखमे अंधेरी पसीना जादा वगेरे–(इलाज) रोगीकूं शांत पडे रहणे देणा कस्तूरी हींग अफीम डिजीटेलिस ब्रांडी पोटास ब्रोमाइड वगेरे दवा देकर देखणी हाथ पैर सेकणा तथा छातीपर राई धरणी अथवा सेक करणा.

(हृदयशूल) कारण–पुख्त ऊमरके अदमीके ये रोग होता है, श्रम शरदी ठंढी अजीर्ण भारी खुराक वहोत दाटके खाणेसे इत्यादि कारणसे हृदयशूल पैदा होती है, लक्षण–वांये तरफ अकस्मात् शूल होती है, वायुके हृदय रोगके लक्षण होते है, छाती जाणे वांधली होय और श्वास वंध भया होय एसा वाहरसे मालम देता है, लेकिन् पक्षायतमें अंदर श्वास चलते रहता है, दरदी दिखणेमें भयंकर चहरा फीका नाडी ना ताकत पसीना और मरणेका डर रोगीसें वोला नहीं जाता तोभी अंदरसे सावचेत रहता है, वहोत देरतक शूल चलता है, तो किसी वखत आंचकीयाने वांइटे चलणे लगते हैं, इलाज–जल्दीके इलाज तरीके छातीपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइन लगाकर शेक करणा कस्तूरी हींग क्लोरलहाइड्रेट सालवोलेटाइल डिजीटेलीस वेलाडोना ब्रांडी वगेरे दवाओंमेंसें जो हाजर होय वो पिलाकर और आमोन्या इथर वगेरे दवा सुंघाणी.

(विशेष सूचना)–हृदय रोगमें ये शारीरक चिन्होंका तात्कालिक इलाज उपरांत जादा इलाज पहली लिखा है, सो करणा रक्ताशयका रोग वहोत विचारवाला जादा करके असाध्य अथवा कष्ट साध्य होता है, इसवास्ते पूरे इल्मीसे परिक्षा कराके इलाज कराणा ये सीख है ।

किरण ४ थी.

पक्षाशयसंवंधी रोग.

इस रोगमे होजरी तथा आंतरोंके तमाम रोग तथा उस अवयवोकी विकृतीके संग संवंध रखणेवाले दुसरे भी कितनेक रोगोंका समावेश इसमें किया है, पाचन क्रियाके रोगसें जो जो रोग होता है, उन सवोका इस किरणमें वयान है, दाखला जेसेके गसेका दरद (हरस) जाहरमें तो गुदाके संग संवंध रखता है, लेकिन् उसकी असली वुन्यादसोचेतो पाचन क्रियाके विकारमेसेही हरसका जन्म है, इसीतरे आम्लपित्त और मूका दरद भी पाचन शक्तिका विकार है ।

मूंका रोग.

मूंके वहोतसे रोग जादा करके अजीर्ण और विगडी भई होजरीसे होता है, (जीभका

वरम)–जीभ सूजकर लाल हो जाती है, तथा जलण होती है, थूक गिरता है, और बोलणेमें तथा खाणे पीणेमें अडचल होती है, सूजन बहोत होती है, तो रोगीकी जुबान बाहिर निकल आती है, और रोगी मर जाता है, जीभ अलासक असाध्य रोगसे अंदरसे कटकर प्राणी मरता है, पारेकी दवा देकर जो मूं लाते हैं, तब बहोतसी वखत एसी खराबियां होती है, अजीर्णके सिवाय शरदी मोसमका फेरफार जखम और पारेसंबंधी दवा खाणेसे इत्यादि कारणोसें भी जीभ परदाह हो जाता है। (इलाज)–जुलाबकी दवा देकर होजरीकूं साफ करणा कथा इलायची कबाबचीणी हीराकसी वगेरे ठंढी दवा यें मूंमे रखणी अथवा जुबानपर घसणा त्रिफलाकी राख करके सहतमे मिलाकर जीभ पर घसणा अथवा सहतका कुरला कितनी एक देर मूंमे रखकर थूक देणा बरफ मूंमे रखणा पंचवल्कल (नं० १५७) अथवा इनोंमेसे मिले इतनी छालोकूं उकाल ठंढा पाणी कर उसका कुरला जीभ पर छलाछेद शस्त्रसें कराकर खून निकलवा डालना–(मूंमे जखम) पेटके अंदरका अजीर्ण तथा बिगाडसे अथवा लाल मिरच पानसुपारी वगेरे गरम चीजें खाणेसें मूंमें घाव पडता है, साधारण छाले दवा बिगरही आराम हो जाता है, पाणी कम पीणेमें आवे तो या गरमी तासीरवाला दिनका सो जाणेसें छाले जखम पडते हैं। (इलाज) अजीर्ण अथवा दस्तकी कब्जी होय तो उसका इलाज दस्तावर करणा गरम खानपान गरिष्ट पदार्थका त्याग करणा घावपर कथेकी भुकणी लगाणी जुर्दे का पान अथवा मेंहदीके पानकी लुगदीकर मूंमे रखणा जुईका पत्ता दारूहलदी तथा त्रिफलाके पाणीका कुरला करणा बंबूलके पत्ते चाबणा तथा बंबूलकी छालका या पंच वल्कलकूं उकाल कुरले करणा घाव बडे होय और आराम नहीं होता होय तो नीलाथोथा लगाणा टंकणखार तथा सहत चोपडणा टंकणखार और सिसेराईन मिलाकर मूंमे लेप करणा शरीरमें गरमी याने उपदंशके विकारसे जो मूंमें घाव पडता होय तो खून सुधारणेवाली दवा खाकर गरमी मिटाणी नहीं तो घाव किसीभी तरे मिटणेका नहीं।

(गलेका सोजा चोरिया)–अजीर्ण कब्जीयत और शरदीसे गलेमें सोजन आकर चोरिया होता है, गलेकी बारी लाल होती है, और चोरिया सूजकर बुखार आता है, नवाडीके पिछले खूणे नीचे गांठे होती है, जीभपर सुपेदयर आती है, गलेमें थूक चीकणा होता है, और नीकलता नहीं जिम करके एसा मालम देता है जाणे गलेमें कुछ भरा पडा है, खुराक तथा पाणी गलेमें उतरते दरद करता है, चोरिया किसी २ वखत पकडकर फूटता है। इलाज–गरम पाणीका शेक करणा अलसीकी पोटिस बांधणी फिटकरीका बेर २ कुरला करणा एक अछा जुलाब देणा बाहिर गांठो पर दोपचलेप अथवा बेनाडोना लगाना नं ५५३ तथा ५५६ कामिकअरसे कुरला करणा बरफके पाणीका कुरला करणा फायदा होता है।

मूंका इलाज.

गालपचोरिया—थूक पैदा करणेवाले पिंड सूज जाते है, उससे खाणेमें अडचल होती है, गाल पचोरेमें थोडा बुखार आता है, ये रोग चेपी है, कानके नीचेका और गलेका ाग सूज जाता है इस रोगका भर तीन चार दिन रहता है और एक अठवाडेमें मिट जाता है। इलाज—हलका जुलाब ले लेणा गरम पाणीका शेक करणा दूधमें निमक डाल पका कर बांधणा बुखारकेवास्ते पसीना आवै एसी दवा देंणी.

(मूंकासाल)—ये रोग बहोत भयंकर है औरी वगेरे मरज हो गया पीछै किसी २ ना ताकत बच्चोके ये रोग होता है दांतोके पारोंके धारपर धारे (लकीरें पडती है) तेसें होठ और गालके अंदरके पुडपर जखम पडता है गालके अंदरका भाग सड जाता है मरामांस दिखता है मूंमे बहोत वदवो आती है और अंदरसें लाल तथा पीप वहता है बुखार आता है जखम गहरा पडता है तो गालके आरपार छेद पडता है कोइ २ वखत होठ तथा मसूंढे सडकर जवाडीकी हड्डी और दांत जाते रहते हैं इस रोगसे प्राये प्राणी मर जाता है (इलाज)—पौष्टिक और गरम खुराक देकर बच्चेमें ताकत लाणी चाहिये जखमका इलाज करणा खुराक पतला देणा मूंकी वदवो दूर करणेकु परमागनेट ओफ पुटाश अथवा कलोरीनेटेड सोडा वगेरेका कुरला करणा तिलकु पीस उसका पाणी करणा वो पाणी दूध घी ये एकेक अथवा तीनो संग मिलाकर कुरले करणा तिल काला कमल घी मिश्री दूध इन सबोंकों पीस उसमें सहत मिलाकर कुरले करणा इकेली सहतका अथवा त्रिफलाकी राखमें सहत मिलाकर कुरले करणा दारू हलदी गिलोय त्रिफला मुनका जाईके पत्ते धमासा इनोका काथ ठंडाकर उसमे- छठे हिस्सेका सहत मिलाकर कुरला करणा त्रिफलाके काथमें सहत मिलाकर कुरले करना अथवा जलमें सहत डाल कुरले करना सहतका सेवन गलेका सब रोग मिटाता है।

(होजरीका रोग) (होजरीका सोजा) (दाह) (कारण)—सराप ताडी मिरच गरम मसाला वगेरे गरमी और दाह करणेवाली चीजें जादा खानेसें वासी और विगडा भया खुराक और सडी भई मछी खानेसें नहीं पीणा एसी वखतपर ठंडा पाणी या बरफ पीणेसे और शरद हवासे ये रोग होता है सोमल खानेसें तथा विगर कली लगे पीतल तांबेके वरतणमे पकाया भया अनाज खानेसें अथवा नीलाथोथा अथवा जलद तेजाव-वाली चीजो खानेमें आणेसे ये रोग होता है। (लक्षण)—पीपडी (कोडीके सामने) दरद तथा दाह होता है, उछाला उलटी बुखार सब जीभ अथवा जीभकी कोर लाल होय नाडी छोटी जलदी प्यास कवी चहरा फिकर वद (इलाज)—(१) साजी खार खट्टे नींवूका रस और जल तीनोको मिलाकर दिनमें दो तीन वखत पिलानेसे उलटी वध होगी और बुखार भी नरम पडेगा (२) सोडाटार्टरिक एसिड और जल इन तीनोको मिलाकर पीणेसें एसाही फायदा होता है अथवा बरफका टुकडा चूसणा (३)

वनपसाका अथवा नीलोफरका सरबत तोला १ उसमें आना भर पाणी डाल कर पीणा (४) कासणीकानित राजल पीणा (५) ईसब गुल अथवा वेदाणे कालुआव दो दो घंटेसें चमचा २ भर पिलाणा (६) प्यास वहोत लगेतो अनारका रस चमचा भरके पिलाणा आंवलेका शरवत भी फायदा करता है (७) दस्त कवज होय तो एरंडीयेकी पिचकारी गुदामें मारणी अथवा सीडलीझ पाउडर कालुआव देणा (खुराक) चावलोंकी कांजी अथवा फकत दूध सिवाय कुछ देणा नहीं उलटीमें वहोत कम खुराक देणेसे पेटमें ठहरता है इसवास्ते उलटीका वहोत जोर होय तो रोगीकूं सुलाकर कांजीया दूध चमचेसें पिलाणा.

(होजरीका पुराणा सोजा)–होजरीका तेजसोजा नरम पडे पीछै वहोतसी वखत थोडा दरद रह जाता है, और वहोतसी वखत तीक्ष्ण दरद भये विगरभी ये दरदधीमें २ पैदा होता है, इस रोगमें खाये पीछै वेचेनी किसी वखत उलटी क्षुधा मंद शिरमें दर्द हाथ पांवोंमें कलतर और पीछै छातीनीचे कोडी ऊपर दरद होता है, ये दरद हाथसें दाबकर देखणेसें याजीमें वाद वढता है, खट्टीडकार पेटका फूलणा छातीमें दाह वगेरे पुराणे अजीर्णका चिन्ह मालम देता है, (इलाज)–कोडीकी जगे पलाष्टर मारणा और फफोला उठे उसकुं नं० ५६३, मे लिखे मुजव ड्रेसिंग करणा अथवा नं० ५६२ मे लिखा भया पलाष्टर मारणा (२) पेटकब्ज होय तो हरडे सूंठ और वूरेकी फकी देणी अथवा सीडलीझ पाउडर याकम्पाउन्डस वार्वका जुलाव देणा एरंड तेलकी पिचकारी मारणी (३) नं० २२७,२२८,२३६, का चूर्ण (४) अमृतवटी दूध चावलोंका पथ्य (खुराक)–इसमें खुराक सादा लेणा गरम मसाले तेज नसेवाला खानपानका त्याग करणा दाल भात शाग तरकारी गरिष्ट पदार्थका परेज रखणा खाना फक्त दूध या चावलोंकी घाट दूध मिलाकर अथवा सावूदाणे दूध देणा.

(होजरीका घाव)–जेसें वाहर चमडीपर जखम पडता है, तेसें होजरीमें भी सूजन भया पीछै जखम पडता है, ये जखम मटरके दाणेसें ले करके अठन्नी जितनाकद होता है, जिस कारणसें होजरीमें वरम होता है, उसी कारणसें जखम पडता है, (लक्षण)–होजरीके वरममें इस रोगके विशेष लक्षण ऐसेहें कोडीकी जगे दुखते भागका सामनेके भागके पीटके हड्डीमें दरद होता है, खाये पीछे तुरत उलटी हो जाणा खाया भया सब निकल जाना है, किसी वखत उलटीमें खून आता है, रोगी दिन २ दुवला होते जाता है, ये सब निसाणीयां होजरीके जखमकी है, (इलाज)–(१) रोगीके शरीरकूं तेमें होजरीकूं आराम देणा विछोणेमें पडे रहणे देणा करडा और जड खुराक खाना नहीं, हलका और पतला खुराक भी थोडा २ देणा उलटीमें खुराक टिके नहीं तो दोय भाग दूधमें एक भाग चूनेका निथरा भया जल डालकर पिलाणा (२) कोडीपर अलसीकी

पोटिस बांधते जाणा अथवा राई मारणी (३) दरद वहोत होता होय तो होजरीपर
ाइन लगाकर फुलेनलका शेक करना दरद मिटे पीछेभी कितनीक मुदततक सराप
मसाला वगेरे कोइभी गरम चीज खाणी नहीं होजरीके पुराणे सोजेका सब इलाज
ा (४) फक्त अमृतवटी और दूधका सेवन करनेसें होजरीकी सब फरियाद मि-
है (५) खूनकी उलटी होती होय तो रोगीकूं सुलाये रखणा पेटपर वरफ धरणा
फ चूसाणा दर घंटेसे ग्यालिक एसिड १५ ग्रेण पाणीमे डालके देणा अथवा टिकचर
ोफ स्टील देणा.

पाचनक्रियाके लगते दुसरे दर्द.

अजीर्ण-इन्डाइजेश्चन.

अजीर्णका रोग जेसें वहोत साधारण है, तेसे इस रोगसे शरीरमें दुसरे वहोतसे रो-
गोंकी जडभीरुप जाती है, इसवास्ते ये रोग वहोत लक्ष देणे लायक है, और शरीरमें
जरा भी अजीर्ण मालम दे तो उसका तुरत इलाज कर मिटाणा वदनका बंधेज खुराक-
पर है, लेकिन् वो खुराक जब अछीतरे पचता नहीं तब वोही खुराक मजबूती करनेके
वदले उलटा वदन ढीला करता है।

(कारण)–अजीर्ण होनेका कारण किसीसें छिपा नहीं है, अपणी पाचन शक्तिसे
जादा और अयोग्य खुराक खानेसें अजीर्ण होता है, एक वखतमें जादा खाय लेणा
कच्चा खाणा वेप्रमाण खाणा अगला पचे पहले खाणा वरावर चावे विगर खाणा खान
पानके पदार्थोंका मिथ्या योग करना ये सब अजीर्ण होनेका कारण है इसके सिवाय
कितनेक व्यसन जेसेके दारू भंग गांजा तमाखू आलस वीर्यका जादा खरच और क्षय
जेसें तनकूं और मनकुं वहोत महनत चिंता वगेरे वहोत कारणोंसे अजीर्णकी जड
रुप जाती है.

(लक्षण)–अजीर्ण छोटेमें छोटा और वडे २ में वडा रोग है, अजीर्ण पेटमें दो
क्रिया करता है यातो दस्त लाता है या दस्त वंध करता है दस्त होकर नहीं पचा
भया भाग निकल जाता है जो नहीं निकले तो जादा खरावी करता है दस्त कब्ज होकर
पेट फूलता है खट्टी डकार आती है जीमि चलाणा उछाला के जीभपर सुपेदथर गलेमें
छातीमें होजरीमें दाह शिरमें दर्द किसी वखत पेटमें चूक नींदमें स्वप्न वगेरे अजीर्णके
अनेक चिन्ह मालम देते हैं।

(समक्षा)–देशी वैद्यक शास्त्रमें अजीर्ण (याने जठराग्निके) विकारोंका वहोत
सूक्ष्म विचार लिखा है इन सबोका विस्तार इस जगे ग्रथ वढनेके डरसे नहीं करते हैं
तोभी सबोका सारांस संक्षेप करके लिखताहू जठराग्निके कमवेसी समविषम प्रभाव गुनन
उसका चार प्रकार है, १ मंदाग्नि २ तीक्ष्ण अग्नि ३ विषम अग्नि ४ समअग्नि ५ अग्नि

तीक्ष्ण अग्नि जिसकूं भस्मक रोग कहते हैं मंद अग्निवाला थोडा पचा सकता है जरा जादा खाता है तो अपचा होता है तीक्ष्ण अग्निवाला जादा भी खाता है तो पचासकता है, विषम अग्निवाला कभी तो जादा पचाता है कोई वखत थोडा भी नहीं पचता है, और अग्निका वल अनिमित होनेसें वहोत रोगकूं पैदा करता है सम अग्निवालेकूं वरावर पचता है और वदन निरोग रहता है भस्मक अग्निवाला जो खाता है सो भस्म हो जाता है, जो उस भूखकूं रोके तो वदनके धातूओंकों खा जाती है अव अजीर्णकी जाति इस मुजव है (१) आमाजीर्ण कफसें होता है अंगमें भारीपणा औकारी आंखके पोपचो- परथेथर और खट्टी डकार आती है, २ (विदग्धाजीर्ण)–पित्तसें होता है भ्रम होणा, प्यास, मूर्छा, संताप, दाह, खट्टी डकार, पसीना वगेरे होता है, ३ (विष्टब्धाजीर्ण)– वादीसे होता है शूल, आफरा, चूंक, मल, तथा अधोवायूका रुकणा अंगोका जकडणा और दरद होता है (४) रशशेपाजीर्ण) खाये पीछे पेटमें पके भये अनाज का साररूप जो रश (पतला) भाग होता है वो पतला भाग भी पकते २ कच्चा रह जाता है, उसका नाम रशशेपाजीर्ण छाती साफ नहीं होनेसें तथा वदनमें रसकी वढोतरीसे अन्नपर अरुचि होती है, (अजीर्णके दुसरे उपद्रव) अजीर्णमेंसे विसूचि (हेजा) अलशक तथा विलंविका नामका रोग होता है हेजेका वयान पहली लिख दिया है, (अलसक) आहार नीचै जाय नहीं उंचाभी जाय नहीं पकताभी नहीं लेकिन् पेटमें एक जगे पडा रहता है आफरा तथा वहोत दरदवाले अजीर्णके भेदकुं अलसक कहते हैं, (विलंविका)–खराव भया पेटका अन्न कफ तथा वायूके लिये ऊपरके अथवा नीचेके द्वारसे निकले नहीं उसकूं विलंविका कहते हैं । (अजीर्णका सामान्य इलाज) (१) आमाजीर्ण होय तो गरम पाणी पीणा विदग्धा जीर्ण होय तो ठंढा पाणी पीणा तथा जुलाव लेना विष्टब्धाजीर्णमें पेटपर सेक करना और रश शेपाजीर्णमें सोजाणा । (२) लवन अजीर्णका अछा और सस्ता इलाज है लेकिन् मारवाडी भाइ मरणा कवूल करसे है लेकिन लवनके नाममें कोसों दूर भागते हैं जिसमें भी भाग्यवानोकी तो कहं- पोही क्या (३) सींधा निमक सूंठ तथा मिरचकी फकी छाछमें या जलमें (४) चित्रककी जडका चूर्ण गुडमें (५) जवा हरडे सूंठ तथा सींधा निमककी फाकी जलमें या गुडमें (६) सूंठ लींडी पीपर तथा हरडेका चूर्ण गुडके संग लेणेमें आमाजीर्ण मिटे और हरस तथा कवजी मिटे (७) चित्रक थोडी अजमोद सेंधव सूंठ मिरच खाडी छाछमें पीना हरस तथा पांडुमें फायदा करता है (८) धाणा तथा सूंठका काथ पीणे- से आमाजीर्ण तथा शूल मिटती है (९) अजवाण तथा सूंठकी फकी अजीर्ण तथा आफरेकु मिटाती है (१०) कालीजीरी २ से ४ वाल निमकके संग चवाणी अथवा कोरा पाणी (शीतलपाणी) चार आनी भर फाकणा (११) घीमें तले भये कुपीलेकी

फक्की १ रत्तीसे १ वाल (१२) पीपला मूल २ से ४ वालतक खाणा (१३) लसण जीरा सेंचल सेंधा हींग नीबु कुचीला कांकचके वीज वगेरे दवाओं अग्निकुं प्रदीप्त करते है, इनोमेंसे जो मिले उसका उपयोग करणा (१४) नं० २४३,२४५,३४०,३४३, के दवाये तथा नं० १६९ की शंखवटी और १९०, का हिंगाष्टक अजीर्णका अछा इलाज है (१५) नं० ६०२,६०३,६०४, के अंग्रेजी मिकश्चर.

(होमियोपाथीक इलाज)–एन्टीमनी क्रूड आर्सेनिक ब्रायोनिया कार्वोव्हेज चाईना ही पारसल्फ नक्सवोमिका वगेरे ।

(विशेष सूचना)–अजीर्णके रोगीने खाणेका संभाल रखणा एक वेरका भया अजीर्ण एक लंघणकर हलका खुराक दुसरे दिन खाणा और ऊपर लिखी साधारण दवायोंसे भी जलदी मिट जाता है लेकिन् जो गफलत होती है तो इसका असर वहोत दिनोंतक रहता है तव अजीर्ण पुराण पडके वदनमें घर करता है और मिटणाभी मुस्कल होता है वहोत अदम्योंकूं जथा वंध अजीर्ण रहता है लेकिन् ये वात उनोके समझमें नही आतीं तव तरे २ के रोगोंकी फरियादी करते फाफा मारते मूखोंके पास फिरते हैं लेकिन् कारण समझे विगर इलाज नहीं होता इसवास्ते मंदाग्निवालेनें और अजीर्णकी शंकावालेने सादा और वहोत हलका खुराक खाणा चहिये चावल दलिया दालका पाणी वगेरे ।

पुराणे-अजीर्ण वदहजमी.

(डिस्पेपस्या)

अजीर्णका रोग वडे सहरोके सुधरे भये समाजमें हरेक घरका खास मरज वण गया है तरे २ के मन माने भोजन करनेके शोखमें पडे भये और गद्दी तकियोंमें पडे रहणे वाले मोतव्वर लोकोके ऊपर ये रोग वेर २ हमला करता है जो लोक खाणे पीणेका स्वाद और मौज शोपसे वचकर और रातकूं नाच तमासा और नाटिक देखणे की लतसे वचकर साधारण जिंदगी भोगते हैं वो अदमी प्राय इस रोगसे वचे भये हैं मुंवइ हैदरावाद वीकानेर अहम्मदावाद सूरत जेसे सोखीन सहरोमें इस रोगका जादा फैलाव है वहोतसे दोलतवानोके पास सुखके सर्व साधन होकरके भी कुटंवमें हमेसवादी और वदहजमी शरीर और मनकी नाताकतीकी फरियादी ये सव कारण वदहजमीका है.

(लक्षण)–भूख तथा रुचिका नाश छातीमें दाह खट्टीउकार उछाला उलटी होजरीमें दरद वायुकव्जी मरोडा धडक श्वासका रुकणा शिरमे दर्द मदज्वर अनिद्रा खप्ना उदासी और खोटे खयाल ये वदहजमीका लक्षण है, अन्न नजरोसे देखे नहीं सुहाता खाया पचता नहीं कभी तो जादा भूख लगी एसा मालमदे खाये वादभी भूख मालम दे अंग गलता जाय रोगीकूं एसा दुख मालमदे के आपघात करके मरजाय एसे बुरे खयाल किसी वख्त होणे लगे.

बराबर लगे नहीं पेटमें भार मालम दे पेट चढारहे और अजीर्णके लक्षण मालमदै उस्कूं कब्जी कहते हैं.

(कारण)–वेर २ जुलाब लेनेकी टेमसे कब्जीका रोग होता है, कारण ये कुदरती नियम है, जादा महनत किये पीछै जादा मुदततक विश्राम लेना पडता है, इसवास्ते जादा जुलाबसे आंतरोंकूं अपणी शक्तिके उपरांत काम करणा पडता है, तब वो जादा वखततक अपणा काम करणेमें पीछै सुस्त रहते हैं जुलाबसें एक वेर तो पेट साफ होकर बदन हलका पडता है, लेकिन् पीछै थोडेही मुद्दतमें कब्जी और भराव होजाता है, और दारूके व्यसन जेसा डोल बणता है, जेसें दारू पीणेवालेकों दारूबिना चलता नहीं तेसें जुलाबकी टेव पडणेसें उलटी खराबी होती है. (२) दस्त तथा पेशाब तथा अपान वायूकूं रोकनेसे भी कब्जीका रोग होता है, बहोतसे अदमीकूं एसी आदत पडजाती है, सो कामके लिये दस्तकूं रोकते हैं, लेकिन् वख्त बीते पीछै दस्त आता नहीं (३) आंतरोका कोईभी भाग संकुडाणेसें अथवा किसीभी गांठका उसपर दबाव होनेसें दस्त साफ नहीं आता जेसे तिल्लीके रोगसें औरतोके गर्भके भारसें इत्यादि. (४) वृद्ध अवस्थाके लिये अथवा दुसरे कारणसे नाताकती होणेसें पेटकी नसें नाताकती बणती है, इससे मलकूं नीचे उत्तरतेमें जो जोर मिलणा चहिये वो नहीं मिलता है, तब मल अंदर भरे रहता है, इससे मलकी गांठे आंतरोंमें भरे रहति है, और आफरा होजाता है. (५) सफरा मंद पडजाणेसे उसमें मल भरके रहता है, (६) कलेजा पंक्रियाज तथा तिल्ली जो पाचन क्रियाकूं मदत करणेवाला है, उनोंमें कोई विकार होता है, तब वो अवयव चहिये जितने प्रमाणमें आंतरोकी क्रियाकूं मदत नहीं देसकते उससे भी दस्तकी कब्जी होती है. (७) जो सुखी लोक खापीकर एकजगे बेठे रहते हैं, उनोके भी कब्जी होता है. (८) बुखार हरस मगजके और दुसरे भी कितनेक रोग कब्जीका कारण होता है. (९) नही पचे एसा खुराक खानेकी खराब आदत. (१०) सराप तथा तमासू बहोत पीनेकी आदत.

(लक्षण)–दस्तकी रुकावट पेटमें भार हवा आफरा बेचेनी आलस मंदाग्नि चूंक (आंकसी) अपचा, कांच निकलनी, बवासीर शिरमे दर्द भमल चक्कर हिस्टीरीया थोडा बुखार श्वास लेते अडचल अनिद्रा मनकी खिन्नता.

(इलाज)–जिसकारणसें दस्त कब्ज भया होय वो दूरकरनेका इलाज करणा जो कारण मन पडे सिवा है, दस्तकी कब्जी मिटाणेकूं सख्त जुलाब कभी लेणा नहीं (१) एक दो दिनकी कब्जीमें हरडे जोहरडे सोनामुखी, विलायती नमक, एरंडी तेल इसमेंकी सिर, नसोतकी छाल, जुलाफा, रुबार्ब वगेरका जुलाब ले लेणा, खीचडी वगेरे हलका खुराक देणा (२) बहोतदिनकी कब्जीके वास्ते हरडे १ भाग काली दाख २

भाग मिलाकर छ मासेसें एक तोलेभर प्रमाण गोली वणाकर प्रभात खाकर ऊपर पाव जल पीणा (३) ईस प्रगल एकेकरुपियेभर दिनमें तीनवेर फाकणा (४) नीचे लिखे रोगोमें दस्तकी कब्जी होय तो रेचदेणा—जीर्णज्वर जहरका दोष वातरक्त भगंदर ववासीर पांडू उदररोग ग्रंथी हृद्रोग अरुचि योनिरोग प्रमेह गोला तिल्ली व्रण विद्रधी उलटी विस्फोटक हेजा कोठ कर्णरोग यकृत्कारोग सोजा नेत्ररोग कृमिरोग क्षारका विकार वायूका रोग शूल मूत्राघात वगेरे (५) इण नीचे लिखे रोगोमे जुलाव देणा नही वालक वृद्ध घी तेल वगेरे स्नेहपान करके वहोत स्निग्ध भया भया छातीके अंदर जखमसें क्षीण पडाभया डराभया महनतसे थकाभया प्यासका रोगी शरीरका जाडा गर्भणी स्त्री नयाबुखार तुरत पसीना निकाला भया मंदाग्निवाला सराप पीणेसे भया रोग वदनसे लूखानिस्तेज इतनोकों जुलाव देणा नहीं (६) दस्तकी कब्जी मिटाणे दस्त लाणेकी दवा देते कितना एक विचार रखणा चहिये पित्तके कोठेवालेकूं हलका जुलाव कफ कोठेवालेकूं मध्यम जुलाव वादीके कोठेवालेकुं सख्त जुलाव देणा.

(नरम कोठेवालेकूं जुलाव)—मुनक्का दूध एरंडीतेल सीडलीझपाउडर एप्सम सोल्ट (विलायती निमक) सोनामुखी गुलावका फूल हरडे जोहरडे अमलतास (मध्यम कोठेवालेकुं रेच)—निशोत कुटकी किरमाला (सख्त कोठावालेकूं रेच)—जमालगोटासे शुद्ध वणा रस (७) पित्तके कोठेवालेकुं जुलाव कोप पित्तका होय तो—कालीदाख तथा सूंफकी उकालीकर उससे निसोतका चूर्णदेणा—कफके प्रकोपमे—त्रिफलाका क्वाथ गोमूत्र तथा त्रिकटु मिलाकर—वायुके कोपमें—निसोत सूंठ सींधानिमक इनोका चूर्ण नींवूका रस मिलाकर देणा (८) हमेसकी कब्जी वालोने हमेस सख्त जुलाव लेणा नहीं लेकिन् जव जरूरी पडे तव एप्सम सोल्ट खीरखेस्त और सोनामुखीकी चा तीनोंकों मिलाकर अथवा एक तोला अमलतासमें १ तोला खीर किस्तमिलाकर पीणा एक दो दस्त आजाय तो दुसरेदिन फेर लेणा नहीं (९) घीमें सेकी भई जो हरडेकी भूकी आधे रुपेभर और सेंचल अढाई मासा इसकी फक्की देणेसे हलका जुलाव लगता है. (१०) नातिकत आंतरोके लिये दस्तकी कब्जी रहती होयतो आतरोंकों मजवूती मिले ओर दस्त साफ आवे एसा इलाज करणा—कुचीलेका सत्व ४ ग्रेण एलिया २० ग्रेण कीनाइन १० ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्वपील २४ ग्रेण इनोकी १२ गोलियांकर फजर सांझ एकेक लेणा इसके सिवाय नं० २, ४, २५३, तथा नं० ४६१ से ४७५ तकका रेचक तथा सारक उपायोमेंसे जो अनुकूल होय सो करणा (११) रातकूं पेटपर ठंडा पाणीमें भिगाया कपडा रखकर उसपर गरम फुलालीनका कपडा लपेटकर सूणा रातकूं सोते सोवखत एकेक प्याला ठंडा जल पीणा पेटकूं यथाशक्ति दवाणा मसलाणा तथा हाथफिराना इन तीन क्रियासे भी दस्त साफ आता है (१२) पिचकारी वेठकमें देणेसें कब्जी मिटती है, परेज भी नहीं

रखणा होता और पेटमें दरदभी नहीं होता दस्त करडा गांठोंदार आता होय तब तो पिचकारी वहोतही फायदे वंद है, जरा गरमकरे भये पाणीसे अथवा पाणीके संग एक दो औंस एरंडीका तेल मिलाकर पिचकारी भरके बैठकमें पिचकारीकी अगली टूंटी देकर पिचकारी मारणी और आसरे आधे घंटेतक रखणा जलदी दस्त साफ आयगा पिचकारीकुं देशीशास्त्रमे वस्तीकर्म कहते हैं, देसी चमडेकी तथा जस्तकी वण तीथी इसवखत विलायती पिचकारी यंत्रके साथ लेणेकी आती है, ये पिचकारी अपने हाथसे हरकोइ अदमी लेसक्ता है.

(विशेष वाकवी)—कब्जीके रोगीने खानपानका यत्न रखणा दालोंकी जात जेसी कब्जी करणेवाले पदार्थ खाणा नहीं वहोत चावल भी खाना नहीं मेदेकी तथा महींन आटेकी रोटी नहीं खाणी थूलीवाले आटेकी रोटी खाणी उससें भी हवाका जोर रहे तो वो भी नहीं खाणी दूध पचे जिस मुजव खाणा चा काफी वहोत सख्त वहोत गरम या वहोत जथावंध पीणा नहीं हलका सादा खुराक लेणा टेमोटेम फरागत जाणा खुली हवामें फिरणे जाणा दस्त लाणेवास्ते वहोत चिंता करणा नहीं.

उदावर्त्त–अनाह–आफरा–नलवंधवायु–

(टिम्पेनाइटिझ.)

(कारण) पाद दस्त पेसाव जंभाई आंसु छींक डकार उलटी वीर्य भूख प्यास श्वास ये सव स्वभाव (कुदरती) वेग है, इनोके रोकणेसें वायू उंची चढती है, इससे पेट फूल जाता है, ऊपरके हरेक वेगकूं रोकणेसें जुदे २ उपद्रव होते हैं, वो सव उपद्रव दुसरेप्रकाशमें देखणा इहां उनोका मुख्य उपद्रव जो पेटके आफरणेका है, सोही लिखा है, पेट फूल जावै अंदरसे जाणे जकड गया होय एसा मालमदे गडगडाट करे श्वासरुके डकार आवै और जिसमें वहोतसी वखत खराव स्वाद और गंध आवै पेटमें दरद होय और वायुस्वरे तब थोडा चैन पडे ये सव आध्मान रोगके लक्षण है.

(इलाज)—अजीर्ण तथा चूंकमें लिखे इलाज करणा पेटपर राई मारणी गरमपाणीका शेक करणा पेटपर हींग अथवा टरपेन्टाइन चोपडणा हिंगकापाणी टरपेन्टाइन तथा गरमपाणीकी वस्तिलेणी गुदामें वाट रखणी मैणफल पींपर कूठ वज और सुपेद सरसूं इन सवोंको गुडमें पीस तथा दूधमें पीस इनोकी वत्तीकर गुदामें रखणी चार तोला वूराखांड एक तोला निशोत एक तोला पीपर इकठाकर इसमेंसे १ तोला चूर्ण सहतके संग मिलाकर जीमणेके पहली चाटणा सूठ मिरच पीपर पीपरामूल चित्रक जमालगोटा तथा निशोत इन सवोंका समभाग चूर्ण गुडमें मिलाकर शक्ति मुजव लेणेसें आफरामिटता है, २ भाग निशोत ४ भाग पींपर और ५ भाग हरडे सवकी वरावर गुड इनोकी गोलीकर खाणेसें

तेज आफरेका रोग भी मिटजाता है, पींपरमिंटके दसेक बूंद जलमें डालकर पीणा युरोपि-
ब्रांडी देते हैं, कब्जी होय तो एरंडी तेलका जुलाव देणा अथवा इसकी पिचकारी.

चूंक-आंकसी-शूल-

कोलिक.

ऊपर लिखा सब वयान लगवग एकही अर्थ और एकही रोगकूं पहचाणणे वाला है,
पेटमें चूंक आवै शूलमारे आंकसी अथवा वांइटे होकर पेटमें दरद होय उसरोगके
पहली लिखे सोंनाम है.

(कारण)-(१) वहोत वायुकारी अथवा कच्चा खुराक नहीं पचणेसें पेटमे वायु
जोर करती है (२) दस्त वहोतदिनोंतक कब्ज रहणेसें मलके भरावसें पेटमें दरद पैदा
करता है (३) ठंढीहवा लगणेसें ठंढी चीज खाणेसें अथवा ठंढे पाणीमें वहोत देर
भीजणेसें भी दरद होता है (४) नरम मिजाजवाले अदमी और जादा करके हिस्टीरीया
वाली औरतोंके ये रोग होता है. (५) सीसेके रजकण सपेदा और भी कइतरेके
दुसरी जहरी रंगके रजकण पेटमे जाणेसे दरद उठता है.

(लक्षण)-सूंटीके आगे अथवा सब पेटमें पीड चूंक शूल दस्तकी कब्जी वहोतसी
वखत उलटी होय रोगी दरदसे पलाडा मारे गभरा उठै पेटपर दावणेसें या मसलणेसें
अछा लगे आंतमें सूजन होणेसें तथा पेटके दुसरे दरदोंके लिये भी पेटमें दरद होता है
लेकिन् वो इस पेट पीडासे जुदा होता है, उसकी पहचाण एसी है, के उसपर दवाणेसें
अथवा मसलणेसे जादा दरद वढता है, और बुखार होता है, नाडी जलद चलती, है.

(इलाज)-(१) शेक-साधारणचूंक अथवा शूल शेक करनेसे मिटजाती है, गरम
पाणी डाल शीशीया टरपेनटाइनका शेक करणा (२) दस्त वंध होय तो वादीहर रेचक
दवायें देणी एरंडीतेल तथा उसमें लाडेनमना १० वूंद देणेसें तुरत खुलासा होता है,
सूंठका काथ एरडी तेल सेकीभई हींग तथा सेंचल डालकर पिलाणा इलायची हींग
जवखार तथा सींधानिमक इनोंके काथमें एरंडी तेल देणेसें पेट नाभि पीठ शिर कान
आंख इन सब जगेकी शूलकूं मिटाता है. (३) हींग १ वहेडा २ सूंठ ३ कां कचिया
४ भाग इनोका चूर्ण पाणीमे पिलाणा (४) जोहरडे त्रिकटु कुचीला शुद्ध गंधक हींग
शुद्ध सींधानिमक इनोको नींवूके रशमें देणा (५) घीके सग तलीभई हींग निगलादेणी
अथवा लसणकी कुली निगलादेणी जिससें वादी निकलकर पेट पीडा मिटेगा (६) पेट
ठसाठस भरा होयतो उलटी करणेके इलाजोसे उलटी करणी (७) हींग कांकचिया
अजवाण तथा निमकका टुकडा लेणा (८) टरपेन्टाइन हींग तथा पाणीकी गुदाद्धारसे
पिचकारी देणी उससे वायूका जोर मिटता है. (९) पांच निमक अद्रकके रशमें
(१०) त्रिफला कुटकी तथा अमलतासका काढा. (११) अरोमेटिक पाउडर ग्रेन ५,

से १० सहतमें चटाणा. (१२) सूंठ सेंचल जोहरडे पीपर तथा निशोत सम वजन फक्की तोला। इसके सिवाय नं० ६१६ ५१७ का अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ७०४ ७०५ कैहकी मीनुसके इस रोगके प्रसिद्ध इलाज है.

देशी वैद्यकशास्त्र चूंक शूल रोगके दोष मुजब बहोत प्रकार बतलाता है, लेकिन् इसमें समझणेकी बात इतनीही है, के शूल दो तरेकी है, एकतो खास पेटके साथ संबध रखती है, जिसका मुख्य आधार आहार विहार और पाचन क्रिया ऊपर रहा भया है, और दुसरी शूल यानेचसका ज्ञानतंतुओंके साथ संबंध रखता है, ये दुसरी तरेकी शूलका छठी किरणमें खुलासा लिखेंगें वैद्यकशास्त्र मुजब शूलरोगका भेद इस मुजब है, वातशूल २ पित्तशूल ३ कफशूल ४ सन्निपातशूल ५ आमशूल ६ द्वंद्वजशूल ७ परिणामशूल ८ अन्नद्रवशूल.

(वायुशूल)-मुख्य दोषवायु नाभि पसवाडे पीठ पेडू इनोमे वेर २ शूल होय और मिटजावे दस्त पेशाव रुके सुईचुभाणे जेसी और फाटणे जेशी शूल शेकसे दबाणेसे तथा चिकणे और गरम अन्नपानसे शांति होय (इलाज)-एरंडके जडका काथ हींग तथा सेंचल डालकर पीणा (२) जोहरडे अतीस हींग सेंचलवज तथा इंद्रजव इनोका चूर्ण पाणीमें (पित्तशूल)-मुख्यठिकाणा नाभि तृषा मोह दाह दरद पसीना मूर्छा भ्रम होता है, आधीरातकूं अन्नके विदाहकालमें और शरदऋतूमें वधे और शीतकालमे शमन होय इलाज-(१) पहली तो उलटी करणी पीछे जुलाब देणा (२) आंवलेका चूर्ण सहतमें चाटणा (३) जोहरडेका चूर्ण गुड तथा सहतमें धीमे खाणा (४) त्रिफला अमलतासके गूदेका काथ मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (कफशूल)-मुख्य दोष कफ ठिकाणा होजरी खासी अरुचि ग्लानी मूंमेसे लार गिरणी गलेमें भार कोठेमे भारिपणा इलाज-(१) लंघन जरूर करणा (२) जोहरडे चित्रक कुटकी वज इनोका चूर्ण गोमूत्रमें (३) सेंधानिमक बिडनिमक बंगडखार हींग पींपर पींपरामूल चव्य चित्रक तथा सूंठका चूर्ण जरा गरम पाणीमें पीणा (सन्निपातशूल)-तीनों दोषका लक्षणवाला असाध्य है, इलाज नही है, (आमशूल)-पेटमें गुडगुड अवाज उलटी शरीरमें जडपणा मंदपणा पेटका फूलणा तथा कफके सर्व लक्षण होय-इलाज-(१) कफशूलका इलाज करणा (२) अजवाण सेंधानिमक जोहरडे तथा सूंठका चूर्ण (द्वंद्वजशूल) दोदो दोष सामठ होय ठिकाणा कफवादीमें पेडु हृदय कंठ और पसवाडेमें शूल कफपित्त मिले दोषमें हृदय हृदय नाभी तथा पसवाडेमे शूल वातपित्त मिलेमें दाह तथा मूर्छा सुमार भला है (इलाज)-(१) लसनका कल्क फजरमें सहतमें खाणेमें बाधकफकी शूलमिटे (२) दाख तथा अडूसेका काथ पीणेमें कफपित्तकी शूलमिटे-(परिणामशूल)-खाधा भया अन्न पचे पीछे उठे जो शूल उसका ठिकाणा आंतरा-इलाज (?)

प्रथमलंघन पीछै उलटी रेच (२) सूंठ तिल तथा गुलकूं पीस गऊके दूधमें पीणा (३) शंखभस्म पाणीमें पीणा (४) मैणफल तथा कुटकी कूं जलमें पीस सूंडीपर लेप करणा (५) सेके भये कांकचि ये सबतरेके शूलकूं मिटाता है—अन्न द्रव शूल—खाया भया अन्न पचणेसें भी शूल मिटे नहीं तो जहांतक तीखा पीला खट्टा और पतला उलटीमें निकले नहीं उहांतक रोगीकूं चैन पडै नहीं इसवास्ते पित्त पडे जहांतक वमन देना और कफ पडे जहांतक जुलाब देणा एसी मर्यादा है, इलाज (१) आंवलेमें अथवा मोलेठीमें लोहभस्म (सार) सहत मिलाकर देणा—बाहरका इलाज—अफीमका लेप गूगलका लेप राईका लेप लसनका तेल वछनागका तेल हींगका लेप वेलाडोणेका लेप इत्यादिक कितनेक लेप शूलको शांत करता है.

(विशेष सूचना)—पथ्य—उलटी पसीना शेक लंघन नींद जुलाब पाचन पुराणी डांगर गरम किया भया दूध परवल खार सहजणेकी फली करेला निमक हींग लसण एरंडी तेल गोमूत्र नींबु गंधक त्रिकटु वगेरे दीपन पाचन—कुपथ्य—विरुद्ध अन्नपान उजागरा लूखा तुरा ठंढा जड महनत मैथुन मद्य सबतरेकी दाल चवला मटर तीखापदार्थ वेगोकों रोकना शोक क्रोध वगेरे त्याग करना.

गुल्म—गोला.

अजीर्णके विकारोमें चूंक आंकसी शूल और गोलेका भी समावेश होसक्ता है, पहला तीन विकार तो ऊपर लिखा है, अब गोलेका विकार लिखते हैं, अंग्रेजी वैद्यक मुजब तो गुल्मका कोइ जुदा रोग नही हैं, लेकिन् अजीर्णका एक निशान है, देशी वैद्यकशास्त्रोमें गुल्मका रोग खास जुदा निदानमें लिखा है, गोलेका रोग पांचप्रकारका है, वायुगुल्म पित्तगुल्म कफगुल्म त्रिदोषगुल्म रक्तगुल्म पांचोप्रकारोमें मुख्य देखे तो वायुप्रधान है.

(वातगोलेका कारण)—लूखा और विषम अन्नपान दस्त वगेरे वेगोकों रोकना शोकसें हृदयमें चोट लगना जुलाबोंसे मलका क्षय करना और उपवासादिकोंका करणा ये वात गुल्मका कारण है.

(लक्षण)—जुदे २ ठिकाणे दरद दस्त पेसावका तथा वायुका रुकणा गलेमें शोष वदनपर कालापणा तथा ललाई ठंढ देके बुखार अन्नपचे पीछे दरदका शमन (इलाज) एरंडीका तेल दूधके संग अथवा हरडे दूधके संग अथवा गूगल गोमूत्रके संग (पित्तगोलेका कारण)—तीखा खट्टा तीक्ष्ण उष्ण और दाह करणेवाले पदार्थ गुस्सा मदिरापीणा ताप विदग्धाजीर्ण तथा खून बिगाड (लक्षण)—बुखार प्यास ग्लानी वदनपर ललाई पाचनक्रियाकी वख्त भारी शूल पसीना तथा दाह होता है (इलाज)—जोहरडे गुड तथा मुनक्काके संग खाणा २ त्रिफला चूर्ण मिश्रीमें ३ आंवलेके उकालीमें घी डालकर सिद्ध कियाभया घी चाटणा ४ कपीलेका चूर्ण सहतमें (कफगोलेका कारण)—ठंढा

से १० सहतमें चटाणा. (१२) सूंठ सेंचल जोहरडे पीपर तथा निशोत सम वजन फक्की तोला। इसके सिवाय नं० ६१६ ५१७ का अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ७०४ ७०५ केहकी मीनुसके इस रोगके प्रसिद्ध इलाज है.

देशी वैद्यकशास्त्र चूंक शूल रोगके दोप मुजब बहोत प्रकार बतलाता है, लेकिन् इसमें समझणेकी वात इतनीही है, के शूल दो तरेकी है, एकतो खास पेटके साथ संबध रखती है, जिसका मुख्य आधार आहार विहार और पाचन क्रिया ऊपर रहा भया है, और दुसरी शूल यानेचसका ज्ञानतंतुओंके साथ संबंध रखता है, ये दुसरी तरेकी शूलका छठी किरणमें खुलासा लिखेंगें वैद्यकशास्त्र मुजब शूलरोगका भेद इस मुजब है, वातशूल २ पित्तशूल ३ कफशूल ४ सन्निपातशूल ५ आमशूल ६ द्वंद्वजशूल ७ परिणामशूल ८ अन्नद्रवशूल.

(वायुशूल)-मुख्य दोपवायु नाभि पसवाडे पीठ पेडू इनोमे वेर २ शूल होय और मिटजावे दस्त पेशाव रुके सुईचुभाणे जेसी और फाटणे जेशी शूल शेकसे दवाणेसे तथा चिकणे और गरम अन्नपानसे शांति होय (इलाज)-एरंडके जडका काथ हींग तथा सेंचल डालकर पीणा (२) जोहरडे अतीस हींग सेंचलवज तथा इंद्रजव इनोका चूर्ण पाणीमें (पित्तशूल)-मुख्यठिकाणा नाभि तृपा मोह दाह दरद पसीना मूर्छा भ्रम होता है, आधीरातकूं अन्नके विदाहकालमें और शरदऋतूमें वधे और शीतकालमे शमन होय इलाज-(१) पहली तो उलटी करणी पीछे जुलाव देणा (२) आंवलेका चूर्ण सहतमें चाटणा (३) जोहरडेका चूर्ण गुड तथा सहतमें घीमे खाणा (४) त्रिफला अमलतासके गूदेका काथ मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (कफशूल)-मुख्य दोप कफ ठिकाणा होनरी खासी अरुचि ग्लानी मूंमेसे लार गिरणी गलेमें भार कोठेमे भारीपणा इलाज-(१) लंघन जरूर करणा (२) जोहरडे चित्रक कुटकी वज इनोका चूर्ण गोमूत्रमें (३) सेंधानिमक विडनिमक वगडखार हींग पींपर पींपरामूल चव्य चित्रक तथा सूंठका चूर्ण जरा गरम पाणीमें पीणा (सन्निपातशूल)-तीनों दोपका लक्षणवाला ये असाध्य है, इलाज नहीं है, (आमशूल)-पेटमें गुडगुड अवाज उलटी शरीरमें जडपणा मंदपणा पेटका फूलणा तथा कफके सर्व लक्षण होय-इलाज-(१) कफशूलका इलाज करना (२) अजवाण सेंधानिमक जोहरडे तथा सूंठका चूर्ण (द्वंद्वजशूल) दोरो दोप सामल होय ठिकाणा कफवादीमें पेडु हृदय कंठ और पसवाडेमें शूल कफपित्त मिले दोपमें कुक्षि हृदय नाभी तथा पसवाडेमे शूल वातपित्त मिलेमें दाह तथा मल्ल चुमार आता है (इलाज)-(१) लसनका कल्क फजरमें सहतमें खाणेसें वायकफकी शूलमिटे (२) दाख तथा अरडूमेका काथ पीणेमें कफपित्तकी शूलमिटे-(परिणामशूल)-खाया भया अन्न पचे पीछे उठे जो शूल उसका ठिकाणा आंतरा-इलाज (१)

भेद समझकर जो इलाज करनेमें आवे तो दवाका वहोत जलदी असर होता है, पीछै कितनेक सामान्य इलाज भी एसा है, सो सवतरेके दस्तोंपर फायदा पोहचाता है, तो भी वायूके दस्तका इलाज अगर पित्तके दस्तपर करे जो की गरम दवाये देनेमें आवे तो दस्त नहीं रुककर उलटा वढता है, और रक्तातिसार होजाता है, अजीर्णका दस्त झांखा और सुपेद होता है, और जोवो अजीर्ण सख्त होता है, तो हैजेके जेसे चिन्ह मालम पडते हैं, (इलाज)–दस्तका इलाज करनेके पहली दस्तकी परिक्षा करनी दस्तके दो विभाग करना आमातिसार अथवा कच्चा दस्त और पक्का अतिसार अथवा पक्का दस्त जलमें डालणेसे दस्त डूव जाय तो आमका अपक्व दस्त समझना और पाणी ऊपर तरे तो पक्का दस्त समझना दस्त कच्चा और आममिला होय तो उसकूं एकदम वंध करनेकी दवा देनी नहीं क्योंके कच्चे दस्तकूं एकदम वंधकर देतो उससे और केइतरेके विकारोकी उत्पत्ती होती है, जेसेके आफरा सग्रहणी मसा भगंदर सोजा पांडू तिल्ली गोला प्रमेह पेटका रोग तथा ज्वर लेकिन् उसके संग ये वात भी याद रखणी चाहिये जो रोगी वालक वुढा या नाताकत होकर जादा दस्तोंकों नही सहसकता होय तो आमके दस्तकों भी एकदम रोक देना चाहिये (१) दस्तका श्रेष्ठ इलाज लंघन है, पित्तातिसार रक्तातिसारमे लंघन नही कराणा चाहिये औरोमें अछा लंघनकरनेसें रोगीकू प्यास वहोत लगती है, उसकू मिटाने धाणा तथा वालेकुं उकाल वो पाणी ठंढाकर पिलाना अथवा धाणा और सूंठका मोथ और पित्तपापडेका और वालेका जल पिलाणा (२) अजीर्ण तथा आमका दस्त होय तो लंघन कराकर पीछै उसकूं प्रवाही हलका भोजन देना और आमकूं पचवै एसा दीपन पाचन और स्तंभन इलाज करना (४)–(वायुकादस्त)–१ लाही चूर्ण (न० २३७, २) वृद्ध गंगाधर चूर्ण (नं० २२४) अनुपान छाछ अथवा चावलोंका धोवण (३)–आनंदभैरवरस (नं० ३४३, ४) शेकी भई भांगका चूर्ण रात्रका सहतमें लेना (५) अफीम तथा केशर चावलभर सहतमें देना पथ्य दही चावल (पित्तका दस्त)–(१) चीलका गिर इंद्रजव मोथवाला और अतिविप इनोकी उकाली पित्त तथा आमके दस्तकूं मिटाता है, (२) अतीस कूडा छाल तथा इंद्रजवका चूर्ण चावलोके धोवनमे सहत डालकर देणा (३)–विल्वादि चूर्ण (नं० २३२) (कफका दस्त)–(१) लंघन तथा पाचनक्रिया (२)–हरडे दारुहलदी वज मोथ सूठ तथा अतीस इनोका काढा (३) हिंगाष्टक चूर्ण (न० २३७) मे हरडे तथा साजीखार मिलाकर फक्की लेणी (७) अमातिसार–(१) लंघन मरोडेका इलाज करना (२) एरंडीका तेल पीलाकर कच्चे आमकुं निकाल डालना (३) गरम पाणीमें घी डालकर पीणा (४) सूठ सूंफ खसखस तथा मिश्रीका चूर्ण (५) सूंठके चूर्णकु पुटपाककी तरे पकाकर मिश्री डालकर खिलाना (८) रक्तातिसार–(१) पित्तके अतीसार

भारी चिकणा अन्नपान आलस दिनका नींद लेनी (लक्षण)–वदन भीजे जेसा ठंढके संग बुखार ग्लानी मोल उधरस अरुचि शरीरमें भार अग्निमंद दरद थोडा (इलाज) १ अजवाण विडलूंण छालमें २ तिल एरंडी तथा अलसीके बीज तथा सरसूं पीस पेटपर लेप करणा और उसपर आकके पत्तोंका शेक करणा ३ बात गुल्मके इलाज करणा (रक्तगुल्म)–और तोंका ये खास रोग होणेसें स्त्री चिकित्साप्रकरणमें लिखेंगें (गुल्मका सामान्य इलाज)–१ अढाई मासा चोवासाजी अढाइ मासा गुड २ पलास थोर आंधी-झाडा अंवली आक तिल सेरा जव ये आठ चीजोंका खार गोलेकूं मिटाता है, ३ अढाई मासा सोराखार और अढाइ मासा आदा मिलाकर खिलाना ४ कुंवारपठेकी गिरी छ मासा गऊका घी तथा सूंठ मिरच पीपर हरडे सींधानिमक मिलाकर खाणा ५ सींपजला-ईभईका चूर्ण अढाइ मासा गुड अढाइ मासा इनोकी गोलीकर खाणी ६ तली भई हींग घीमे खाणी ७ शंखभस्म नींबूके संग खाणी.

अतिसार–(दस्त)

डायरीया.

(कारण)–दस्त होणेके बहोत कारण है, अजीर्ण और अतिसारके बहोतसे कारण एकसे हैं, अतिशय और योग्यखुराक कचा फल तेसे कचा अन्न वासी तथा भारी अनाज इत्यादि खाणेसे भी दस्त होता है, खराब पाणी खराब हवा मोसमका बदलना शरदी उर बिगर बिचारी आफत् ये सब बातोंसे अतीसार पैदा होजाता है.

(लक्षण)–वेर २ पतला दस्त होणा ये मुख्य चिन्ह है, मोल अरुचि जीभपर सुपेद अथवा पीली छारी पेटमें वायु हवाका गडगडाट चूंक वायु के अथवा खट्टी डकार वगेरे ये अतीसारके लक्षण है, अतिसारके दस्तोमें तथा मरोडेमें बहोत फरक होता है, ये बात ध्यानमें रखनी अतिसारमें पतला दस्त छूटा चला जाता है, और मरोडेमें आंतरे कचरेसे भरे भये होते हैं, उससे खुलासा दस्त नहीं होकर आंकसी चल २ कर थोडा २ दस्त आकर ऊपरसे आंतरोंमेंसें आंव जलमसपीप तथा खून गिरता है, अतीसारके दस्तोमें खून गिरे सोया तो मसेके अंदरसे कोईभी खूनकी रक्तनली फूटणेसें अथवा आंत-रोंमें या होजरीमें जखम (घाव) गिरणेसे गिरता है.

(अतिसारका भेद)–देशी वैद्यकशास्त्रमें अतिसारके बहोत भेद भेदांतर लिखे है जिस अतिसारमें जिस दोषकी अधिकता होती है, उस मुजब नांम देणेमें आया है, जेसेकि वातातिसार पित्तातिसार कफातिसार सन्निपातातिसार शोकातिसार आमातिसार रक्तातिसार वगेरे दस्तके रंगमें तेसे दुसरे लक्षणोमें तफावत होता है, वायुका दस्त झांखा धूसरंग होता है, जिनका पीला तथा ललाइ लिये होता है, कफका तथा आमका दस्त सुपेद तथा चिकणा होता है, रक्तातिसारमें खून गिरता है, दस्तोंका एमा मुख

भेद समझकर जो इलाज करनेमें आवे तो दवाका बहोत जलदी असर होता है, पीछै कितनेक सामान्य इलाज भी एसा है, सो सवतरेके दस्तोंपर फायदा पोहचाता है, तो भी वायूके दस्तका इलाज अगर पित्तके दस्तपर करे जो की गरम दवाये देनेमें आवे तो दस्त नहीं रुककर उलटा वढता है, और रक्तातिसार होजाता है, अजीर्णका दस्त झांखा और सुपेद होता है, और जोवो अजीर्ण सख्त होता है, तो हैजेके जेसे चिन्ह मालम पडते हैं, (इलाज)–दस्तका इलाज करनेके पहली दस्तकी परिक्षा करनी दस्तके दो विभाग करना आमातिसार अथवा कच्चा दस्त और पक्का अतिसार अथवा पक्का दस्त जलमें डालणेसे दस्त डूव जाय तो आमका अपक्व दस्त समझना और पाणी ऊपर तरे तो पक्का दस्त समझना दस्त कच्चा और आममिला होय तो उसकूं एकदम वंध करनेकी दवा देनी नहीं क्योंके कच्चे दस्तकूं एकदम वंधकर देतो उससे और केइतरेके विकारोंकी उत्पत्ती होती है, जेसेके आफरा सग्रहणी मसा भगंदर सोजा पांडू तिल्ली गोला प्रमेह पेटका रोग तथा ज्वर लेकिन् उसके संग ये वात भी याद रखणी चाहिये जो रोगी वालक वुढा या नाताकत होकर जादा दस्तोंकों नही सहसकता होय तो आमके दस्तकों भी एकदम रोक देना चाहिये (१) दस्तका श्रेष्ठ इलाज लंघन है, पित्तातिसार रक्तातिसारमे लंघन नही कराणा चाहिये औरोमें अछा लंघनकरनेसें रोगीकूं प्यास वहोत लगती है, उसकूं मिटाने धाणा तथा वालेकुं उकाल वो पाणी ठंढाकर पिलाना अथवा धाणा और सूंठका मोथ और पित्तपापडेका और वालेका जल पिलाणा (२) अजीर्ण तथा आमका दस्त होय तो लंघन कराकर पीछै उसकूं प्रवाही हलका भोजन देना आर आमकूं पचावै एसा दीपन पाचन और स्तभन इलाज करना (४)–(वायुकादस्त)–१ लाही चूर्ण (न० २३७, २) वृद्ध गंगाधर चूर्ण (नं० २२४) अनुपान छाछ अथवा चावलोंका धोवण (३)–आनंदभैरवरस (नं० ३४३, ४) शेकी भई भांगका चूर्ण रात्रका सहतमें लेना (५) अफीम तथा केशर चावलभर सहतमें देना पथ्य दही चावल (पित्तका दस्त)–(१) वीलका गिर इंद्रजव मोथवाला और अतिविप इनोकी उकाली पित्त तथा आमके दस्तकूं मिटाता है, (२) अतीस कूडा छाल तथा इद्रजवका चूर्ण चावलोके धोवनमें सहत डालकर देणा (३)–विल्वादि चूर्ण (न० २३२) (कफका दस्त)–(१) लंघन तथा पाचनक्रिया (२)–हरडे दारुहलदी वज मोथ सूंठ तथा अतीस इनोका काढा (३) हिंगाष्टक चूर्ण (नं० २३७) मे हरडे तथा साजीखार मिलाकर फक्की लेणी (७) अमातिसार–(१) लंघन मरोडेका इलाज करना (२) एरडीका तेल पीलाकर कच्चे आमकुं निकाल डालना (३) गरम पाणीमें घी डालकर पीणा (४) सूठ सूंफ खसखस तथा मिश्रीका चूर्ण (५) सूंठके चूर्णकु पुटपाककी तरे पकाकर मिश्री डालकर खिलाना (८) रक्तातिसार–(१) पित्तके अतीसार

भारी चिकणा अन्नपान आलस दिनका नींद लेनी (लक्षण)–वदन भीजे जेसा ठंढके संग बुखार ग्लानी मोल उधरस अरुचि शरीरमें भार अग्निमंद दरद थोडा (इलाज) १ अजवाण विडलूंण छाछमें २ तिल एरंडी तथा अलसीके बीज तथा सरसूं पीस पेटपर लेप करणा और उसपर आकके पत्तोंका शेक करणा ३ वात गुल्मके इलाज करणा (रक्तगुल्म)–और तोंका ये खास रोग होणेसें स्त्री चिकित्साप्रकरणमें लिखेंगें (गुल्मका सामान्य इलाज)–१ अढाई मासा चोवासाजी अढाइ मासा गुड २ पलास थोर आंधी· झाडा अंबली आक तिल सेरा जव ये आठ चीजोंका खार गोलेकूं मिटाता है, ३ अढाई मासा सोराखार और अढाइ मासा आदा मिलाकर खिलाना ४ कुंवारपठेकी गिरी छ मासा गऊका घी तथा सूंठ मिरच पीपर हरडे सींधानिमक मिलाकर खाणा ५ सींपजला· ईभईका चूर्ण अढाइ मासा गुड अढाइ मासा इनोकी गोलीकर खाणी ६ तली भई हींग घीमे खाणी ७ शंखभस्म नीवूके संग खाणी.

अतिसार–(दस्त)

डायरीया.

(कारण)–दस्त होणेके वहोत कारण है, अजीर्ण और अतिसारके वहोतसे कारण एकसे हैं, अतिशय और योग्यखुराक कच्चा फल तेसे कच्चा अन्न वासी तथा भारी अनाज इत्यादि खाणेसे भी दस्त होता है, खराव पाणी खराव हवा मोसमका वदलना शरदी डर विगर विचारी आफत् ये सव वातोंसे अतीसार पैदा होजाता है.

(लक्षण)–वेर २ पतला दस्त होणा ये मुख्य चिन्ह है, मोल अरुचि जीभपर सुपेद अथवा पीली छारी पेटमें वायु हवाका गडगडाट चूंक वायु कै अथवा खट्टी डकार वगेरे ये अतीसारके लक्षण है, अतिसारके दस्तोमें तथा मरोडेमें वहोत फरक होता है, ये वात ध्यानमें रखनी अतिसारमें पतला दस्त छूटा चला जाता है, और मरोडेमें आंतरे कचरेमे भरे भये होते हैं, उससे खुलासा दस्त नहीं होकर आंकसी चल २ कर थोडा २ दस्त आकर ऊपरसे आंतरोंमेंसें आंव जलमसपीप तथा खून गिरता है, अतीसारके दस्तमें खून गिरे सोया तो मसेके अंदरसे कोईभी खूनकी रक्तनली फूटणेसें अथवा आंतरोंमें या होजरीमें जखम (घाव) गिरणेसे गिरता है.

(अतिसारका भेद)–देशी वैद्यकशास्त्रमें अतिसारके वहोत भेद भेदांतर लिखे हैं जिस अतिसारमें जिस दोषकी अधिकता होती है, उस मुजव नांम देणेमें आया है, जैसेकि वातातिसार पित्तातिसार कफातिसार सन्निपातातिसार शोकातिसार आमातिसार रक्तातिसार वगेरे दस्तके रंगमें तेसे दुसरे लक्षणोमें तफावत होता है, वायुका दस्त शोंखा चूनरंग होता है, पित्तका पीला तथा ललाइ लिये होता है, कफका तथा आमका दस्त सुपेद तथा चिकणा होता है, रक्तातिसारमें खून गिरता है, दस्तोंका एसा सूक्ष्म

भेद समझकर जो इलाज करनेमें आवे तो दवाका वहोत जलदी असर होता है, पीछै कितनेक सामान्य इलाज भी एसा है, सो सवतरेके दस्तोंपर फायदा पोहचाता है, तो भी वायूके दस्तका इलाज अगर पित्तके दस्तपर करे जो की गरम दवाये देनेमें आवे तो दस्त नही रुककर उलटा वढता है, और रक्तातिसार होजाता है, अजीर्णका दस्त झांखा और सुपेद होता है, और जोवो अजीर्ण सख्त होता है, तो हैजेके जेसे चिन्ह मालम पडते हैं, (इलाज)–दस्तका इलाज करनेके पहली दस्तकी परिक्षा करनी दस्तके दो विभाग करना आमातिसार अथवा कच्चा दस्त और पक्का अतिसार अथवा पक्का दस्त जलमें डालणेसे दस्त डूव जाय तो आमका अपक्व दस्त समझना और पाणी ऊपर तरे तो पक्का दस्त समझना दस्त कच्चा और आममिला होय तो उसकूं एकदम वंध करनेकी दवा देनी नहीं क्योंके कच्चे दस्तकूं एकदम वंधकर देतो उससे और केइतरेके विकारोंकी उत्पत्ती होती है, जेसेके आफरा सग्रहणी मसा भगंदर सोजा पांडू तिल्ली गोला प्रमेह पेटका रोग तथा ज्वर लेकिन् उसके संग ये वात भी याद रखणी चाहिये जो रोगी वालक वुढा या नाताकत होकर जादा दस्तोंकों नही सहसकता होय तो आमके दस्तकों भी एकदम रोक देना चाहिये (१) दस्तका श्रेष्ठ इलाज लघन है, पित्तातिसार रक्तातिसारमे लंघन नहीं कराणा चाहिये औरोमें अछा लंघनकरनेसें रोगीकूं प्यास वहोत लगती है, उसकूं मिटाने धाणा तथा वालेकुं उकाल वो पाणी ठंढाकर पिलाना अथवा धाणा और सूंठका मोथ और पित्तपापडेका और वालेका जल पिलाणा (२) अजीर्ण तथा आमका दस्त होय तो लंघन कराकर पीछै उसकूं प्रवाही हलका भोजन देना आर आमकूं पचावै एसा दीपन पाचन और स्तंभन इलाज करना (४)–(वायुकादस्त)–१ लाही चूर्ण (नं० २३७, २) वृद्ध गंगाधर चूर्ण (नं० २२४) अनुपान छाछ अथवा चावलोंका धोवण (३)–आनंदभैरवरस (नं० ३४३, ४) शेकी भई भांगका चूर्ण रात्रका सहतमें लेना (५) अफीम तथा केशर चावलभर सहतमें देना पथ्य दही चावल (पित्तका दस्त)–(१) वीलका गिर इंद्रजव मोथवाला और अतिविप इनोकी उकाली पित्त तथा आमके दस्तकू मिटाता है, (२) अतीस कूडा छाल तथा इंद्रजवका चूर्ण चावलोंके धोवनमें सहत डालकर देणा (३)–विल्वादि चूर्ण (नं० २३२) (कफका दस्त)–(१) लंघन तथा पाचनक्रिया (२)–हरडे दारुहलदी वज मोथ सूठ तथा अतीस इनोका काढा (३) हिंगाष्टक चूर्ण (नं० २३७) मे हरडे तथा साजीखार मिलाकर फक्की लेणी (७) अमातिसार–(१) लंघन मरोडेका इलाज करना (२) एरडीका तेल पीलाकर कच्चे आमकुं निकाल डालना (३) गरम पाणीमें घी डालकर पीणा (४) सूठ सूंफ खसखस तथा मिश्रीका चूर्ण (५) सूंठके चूर्णकु पुटपाककी तरे पकाकर मिश्री डालकर खिलाना (८) रक्तातिसार–(१) पित्तके अतीसारका

इलाज करना (२) चावलोके धोवणमें सुपेद चंदनकुं घस उसमें सहत मिश्री डालकर पिलाना (३)–आंबकी गुठली छाछमें अथवा चावलोके धोवणमें पीसकर देना (४) कच्चा बीलगिर गुडमे देना (५) जामुन आंब तथा अंबलीके कच्चे पत्ते पीस रस निकाल उसमें सहत घी तथा दूध मिलाकर पीणा (अतिसारका सामान्य इलाज)–१ आंबके गुठलीका मगज बीलकी गिर इनोके चूर्ण अथवा क्वाथमें सहत तथा मिश्री डालकर देना (२)–अफीम तथा केशरकी आधीचिरमी जितनी गोली सहतमे लेणी (३)–जायफल अफीम तथा खारककूं नागरवेलके पानके रसमें घोटकर वाल प्रमाणकी गोली छाछमें देनी (४) जीरा भांग बीलगिर तथा अफीम दहीमें घोट वाल एककी गोली देनी इसके अलावा इस ग्रंथमे दिये भये (नं० २०९, २२४, २२५, २२६, २३३, २३८, २४५, ३३२, ३३९, ३४३, का इलाज सब अछे है.)–(अंग्रेजी इलाज)–१ हलका दस्त भया होय तो मिरचकाली थोडी उकालकर पेपरमीन्ट तज इलायची कालीमिरच जावत्री इसमेंसे किसीभी दवाका अर्क या चूर्ण जलके संग लेणेसे दस्त बंध होकर पाचनक्रिया साफ होजायगी (२) लेकिन् जोवादी होकर दस्त थोडा २ आता होय तो एरंडी तेल पीणा अगर जो पेटमें दरद होता होय तो एरंडी तेलमें आठ दस बूंद लाडेनमनाके डालना (३) अथवा कम्पाउन्ड रुबार्ब पाउडर ग्रेन २० पाणीमें देणा (४) एरोमेटिकपाउडर ऑफ ऑक (नं० ४०१,) (५) (नं० ४९३, ४९४, ४९९, ५१९, ५२०, ६०९, ६१०, ६११, ६१२) वगेरेमें बताये भये इलाज योग्य अयोग्यका विचारकर उपयोगमे लेना.

(होमियो पैथिक इलाज)–(१)–एलोझ–अटकने नही सके एसा पीलापाणी जेसा दस्त होय होजरीमें अवाज (२)–आर्सेनिक–दस्त झांखा अथवा पाणी जेसा प्यास बेचेनी होजरीमें दाह होय तब देणा (३)–ब्रायोनिया)–ग्रीष्मऋतूमें ठंढा शरबत पीणेसे भया जो दस्त–वो पतला फीण जेसा बादीका तथा दुरगंधिवाला उलटी और मुर्छा होय उसपर देना ४–कार्बोव्हेज–अंत अवस्था आखरी हालतमें हाथ पांव ठंढा तब देना ५–(कोलोसिन्थ)–पीले पाणी जेसा और आंकसी चले एसे दस्तमें देना.

(एरण–पेचोटी)–दस्त होता है, तब कितनेक लोक एसा मांनते हैं, के सूठी नाभिके आगेकी कोइ गांठ खिसगई है, उससे दस्त होता है एसा समझ बहोतसी मूर्ख औरतोंसे पेट मसलाते हैं, लेकिन् धरण अथवा पेचोटी एसा कोइनांमका अवयव शरीरमें है, नहीं. और नहीं किसीभी पुस्तकमें एसा नांम मिलता है, इसवास्ते एसा शुठा खयाल रखना नहीं सिरपरगोमें. वायू अस्त, व्यस्त होती है.

(विशेष सूचना)–दस्तोंके रोगमें खानपानकी बहोत सावधानता रखनी एकाध दिनका पूरा उपवन करदेना रोग बहोतदिन चले तो पीछे दाह नहीं करे एसा खुराक

थोडा २ देणा जेसें चावल सावूदाणा इनोकी कूटी भई घाट दहीं चावल पथ्य उलटी लंघन नीद पुराणे लाल चावल मसूर तूर सहत तिल वकरी तथा गऊका दूध दही छाछ गऊका घी ताजा वीलफल जामुन कवीठ वेर अनार सव तुरापदार्थ हलका भोजन कुपथ्य—स्नान मर्दन करडा तथा चिकणा अन्न कसरत शेक नया अनाज गरमचीज सीसंग चिंता ओजागरा वीडीका पीणा गउं उडद केरी पूरणपोली कोला ऊख सरापगुड खराव-जल कस्तूरी सव पत्तोंके साग ककडी खट्टापदार्थ ये पदार्थ अतिसारमे नुकशान करते हैं.

मरोडा आमातिसार—संग्रहणी—

डिसेन्टरी.

मरोडा आमातिसार और संग्रहणी ये तीनोनाम लगवग एकही रोगके अहवाल जताते हैं, वैद्यकशास्त्रमें जिसकुं आमातिसार कहते हैं, उसकूं लोक मरोडा कहते हैं, अतीसार और आमातिसार जव पुराणे होजाते हैं, तो उसकूं संग्रहणी कहते हैं, वो इस जगे दाखल करते है, वहोत करके ये रोग सर्व वर्गके लोकोकू लगता है, जिसतरे चोकस प्रकारकी जहरी हवासे चोकस जातके रोग फूटकर निकलते हैं, तेसें मरोडेकी भी चोकस हवा और ऋतू होती है, क्योके मरोडाका रोग किसी २ कुं विरलेकू होता है, लेकिन् किसी २ वख्त ये रोग वहोत फैलता है, वशत और वर्षाऋतूमें उसका वहोत जोर होता है, (कारण)—मरोडा होनेका मुख्यकारण दोय है, एक किस्मकी शरदी हवा तथा खुराक हवाका असर वहोत करके एक जगेके रहनेवाले सव लोकोपर एक जेसा करता है, तोभी नाताकत पडे भये और पाचनक्रियाके गडवडवाले अदमीपर उस हवाकी जलदी असर होती है, कचा और भारी अनाज मिरचां और गरम मसाले शाग तरकारी खानेसे वादी तथा मरोडा होता है, दस्त कब्ज रहनेसे मल आंतरोंमें भरकर रहता है, और आंतरोंके अंदरके पुडतकूं घसता है, उससे मरोडा होता है, गरम खुराक खानेसे अथवा गरमीकी मोसममें सख्त जुलाव लेनेसे भी किसीवखत मरोडेका रोग होजाता है.

(लक्षण)—मरोडेकी सरुआत दोतरेसे होती है, सख्त मरोडा होकर पहली अतिसार जेसा दस्त होता है, अथवा पेट कब्ज होकर सख्त दस्त टुकडा २ जेसा आता है, सरुआतके इस लक्षण विगर वाकी सव लक्षण दोनोप्रकारमे एकसरखा होता है, दस्तकी शंका वेर २ होती है, और पेटमे आंकडी आयकर दम२में थोडा२दस्त आता है, हाजत २ होती है, करांजके दस्त आता है, वेठाही रहूं एसा मन होता है, खून और पीप रता है, थोडा वहोत किसी २ कुं वुखार भी होता है, नाडी जलद चलती है, जीभ-र सुपेद थर होती है, रोग वहोतदिन चलता है, तेसे खून पीप जादा २ गिरता है, और आंकसीका दरद वढता है, मरोडेमें वडे आंतरेके पुडमें सोजा होता है, उससे जो पुड लाल होता है, पीछे उसमें लंबे और गोल जखम गिरता है, उसमेंसें पहली खून

और पीछे पीप गिरता है, ये तीक्ष्ण मरोडा तीन चार अठवा डेतक जो जारी रहजाय तब पुराना गिणजाता है, पुराणा मरोडा वरसोंतक चलता है, अछा योग्य इलाज मिले तोही आराम होता है, इसीकुं संग्रहणी कहते हैं, पूरे पथ्य और दवा विगर हजारों अदमी मरते हैं, (इलाज) पहली तो पेट देखणा के आंतरोंमें सूजन है, के नहीं दवा-नेसें जिस जगे दुखणा मालम पडे उस जगे राईका पलाष्टर मारणा और रोगी सहसके एसा होय तो उसपर (१–२) डझन जोकलगवाणी और पीछे गरम पाणीसे सेक करना तथा अलसीकी पोटिस मारणी स्नान करना नहीं शरदीकी हवामे जाणा नहीं बिछोनेमे सोते रहणा आंतरोंमें मलका भराभया कचरा निकालणेकूं छ मासा जोहरडे अथवा सूंठके उकालीमें एरंडी तेलका जुलाव देणा बहोतसी वखत तो सरु होता मरोडा एसे जुलाबसे ही मिटजाता है, कचरा मल नीकलजाता है, दस्त साफ आता है, आंकसी तथा दस्तकी हाजत बंध होजाती है, मरोडेवालेने एरंडी तेलविना दुसरा भारी जुलाब कभी लेणा नहीं एरंडीके तेलमे तली भई जोहरडे दोभर सूंठ पांचमासा सूंफ १ भर सोनामुखी १ भर तथा मिश्री ५ भर लगवग एरंडीतेलका काम सारती है, मरोडावालेकूं दूध चावल पतली घाट अथवा दालके सादे पाणी सिवाय दुसरा खुराक देना नहीं सरु होतेही इय इलाज करे बाद जरूरी होय तो नीचे लिखते हैं, सो इलाज करना (१ अफीम)–मरोडाका रामबाण इलाज है, लेकिन् युक्तिसें लेना चहिये हिंगाष्टक चूर्णके संग गऊंभर अफीम मिलाकर रातकूं सूतीवखत लेणा अथवा अफीमके संग आधे रुपे-भर सोवेकुं जरासेक कर पाणीके संग पीसकर पीणा मरोडा तथा दस्तकूं रोकने वास्ते अफीम अछा है, लेकिन् एरंडी तेल लेकर पेटमेंसे कचरा निकाले विगर पेस्तर अफीम लेणा अछा नहीं है, क्योंके मल बिगडे भयेकुं अंदर रोकदेता है, दस्त बंधकर देता है, (२) ईस फूगल अथवा सुपेद जीरा मरोडेमें अछा फायदा करता है, दहीके संग आधे २ रुपियेभर जीरा अथवा ईस फूगल दिनमें तीनवेर लेणा ये दवा दस्तकी कब्जी करे विगर मरोडेकूं मिटाता है (३) एरंडीतेल एक वेर देणेपर मरोडा नहीं मिटे तो एक दोदिन ठहरके फेर एरंडीतेलही देणा वो सूंठके उकालेमें पेपरमींटके पाणीमें आदेके रसमें अथवा लाडेनम याने अफीमके अर्कमें देणा जिस्सें पेटमेकी वायूकूं दूरकर दस्तकूं रुकावे (४) बील–मरोडेके मरजमें बील अकसीर इलाज है, बीलकी गिर गुड दहीमें मिलाकर देणेसे मरोडा मिटजाता है, (५) एपीकाक्युआन्हा–या अंग्रेजी बूटी भी मरोडेमें बहोत उपयोगी है, उसमें एक अवगुण है, के उलटी लाती है, और पेटमें टिकती नहीं पेटमें रहे तो बहोत जल्दी असर करती है, पेटमें टिके एसा करनेवास्ते प्रथम पेट-पर हीगमें ती बोलिएक मरहका पलाष्टर मारणा और १५–२० बूंद अफीमके अर्कका मिलाना उसमें उसको पीछे ईपीकाक्युआनेकी ३० ग्रेन बूटी मदतमें चटाय देणी

इसपर जल पिलाणा नहीं और थोडी देरपडे रहने देणा एसा करणेसें उलटी होगी नहीं दोय तीन दिन एसे करनेसे अछा फायदा होगा और कभी उलटी होगी तो भी उसका असर जरूर होगा अब एपीकाक्युआन्हाकूं पचानेकी दुसरी तरकीब लिखते हैं, ६ रत्ती या भूकी ३ रत्ती अफीम उसकी १२ गोली करणी और तीन २ घंटेसे चार २ गोलिये लेणी (६) इतने इलाजोसें जो फायदा नहीं पडे तो दस्त पतला पाणी जेसा आता है, बुखार नब्ज जलद चलती है, और दुखणा जारी रहे तो समझणाके आंतरोमें अभी सोजन है, और अंदर जखम है, एसी हालतमें नं० २०९ का काथ पृष्ट २९२ की लिखी भई स्तंभन दवाइयें तथा नं० ७०२, ७०३, ६१४, ७१५ की दवाइयां अछी फायदेबंद है.

(संग्रहणी)–पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणीका निदान आयुज्ञानार्णव प्रसिद्ध ग्रंथमें एसा लिखा है के कोठेमें अग्निके रहणेका जो ठिकाणा है, सो अन्नकूं ग्रहण करता है, इसवास्ते इस जगेकुं ग्रहणी कहते हैं, ये ग्रहणी आंत कच्चे अन्नकूं ग्रहण करके रखती है, और पक्के अन्नकूं गुदाके रस्ते निकाल देती है, इस ग्रहणीमे अग्नि है, वो भी ग्रहणी कहलाती है, अग्नि खराब होकर मंद पडती है, तब उसका ठिकाणा ग्रहणी आंत भी खराब होती है, वैद्यकशास्त्रमें ग्रहणी और संग्रहणीमे कुछयक भेद लिखा है, आमवायूकुं संग्रह करे सो संग्रहणी ये रोग ग्रहणीसे जादा डरानेवाला है, इस जगे दोनोकों मिटावे एसा सामान्य इलाज लिखेगें और दोनोंका भेंदातर नहीं रखेगें.

(कारण)–तेज मरोडा जिस कारणसे होता है, उसीकारणसे संग्रहणी होती है, अथवा तेज मरोडा मिटे पीछे शांतपडे पीछै मद अग्निवालेके तथा कुपथ्य आहार विहारके करनेवालेके पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणी रोग होजाता है.

(लक्षण)–संग्रहणी कच्चा अन्न ग्रहण करती है और पक्के अन्नकुं निकालती है, तब पेट छूट कच्चादस्त होजाता है, दस्तकी तादाद नहीं रहती थोडे दिन दस्त बध रहता है, और पीछा होता है, किसीवखत एकाध दस्त होता है, और किसीवखत जादा दस्त होता है, मरोडेकी तरे पेटमें आंटा आमवायु पेटका कटणा वेर २ दस्त होय और पीछा बंध होय खायाभया अन्न पचाभया होय या पचता होय उस वखत आफरा होय और भोजन करणेसें शांति होती है, वादीके गोटेकी छातीके दरदकी और तिल्लीके रोगकी शकाभया करती है, बहोतसी वखत पतला सूका कच्चा और अवाज तथा झागोंवाला दस्त होता है, बदन सूकते जाता है, खून उडजाता है आखरकों सोजन आती है, आंखिरकों बोलते २ अदमी मरजाता है, संग्रहणीके दस्तमे खून पीप रंग २ का गिरता है,. बहोतसी वखत.

(इलाज)–पुराणी संग्रहणी बहोत कष्टसाध्य है और साधारण इलाजसें मिटभी

और पीछे पीप गिरता है, ये तीक्ष्ण मरोडा तीन चार अठवा डेतक जो जारी रहजाय तब पुराना गिणेजाता है, पुराणा मरोडा वरसोंतक चलता है, अछा योग्य इलाज मिले तोही आराम होता है, इसीकुं संग्रहणी कहते हैं, पूरे पथ्य और दवा विगर हजारों अदमी मरते हैं, (इलाज) पहली तो पेट देखणा के आंतरोंमें सूजन है, के नहीं दवानेसें जिस जगे दुखणा मालम पडे उस जगे राईका पलाष्टर मारणा और रोगी सहसके एसा होय तो उसपर (१–२) डझन जोकलगवाणी और पीछे गरम पाणीसे सेक करना तथा अलसीकी पोटिस मारणी स्नान करना नहीं शरदीकी हवामे जाणा नहीं बिछोनेमे सोते रहणा आंतरोंमें मलका भराभया कचरा निकालणेकूं छ मासा जोहरडे अथवा सूंठके उकालीमें एरंडी तेलका जुलाव देणा बहोतसी वखत तो सरु होता मरोडा एसे जुलाबसे ही मिटजाता है, कचरा मल नीकलजाता है, दस्त साफ आता है, आंकसी तथा दस्तकी हाजत बंध होजाती है, मरोडेवालेने एरंडी तेलविना दुसरा भारी जुलाब कभी लेणा नहीं एरंडीके तेलमे तली भई जोहरडे दोभर सूंठ पांचमासा सूंफ १ भर सोनामुखी १ भर तथा मिश्री ५ भर लगवग एरंडीतेलका काम सारती है, मरोडावालेकूं दूध चावल पतली घाट अथवा दालके सादे पाणी सिवाय दुसरा खुराक देना नहीं सरु होतेही इय इलाज करे बाद जरूरी होय तो नीचै लिखते हैं, सो इलाज करना (१ अफीम)–मरोडाका रामबाण इलाज है, लेकिन् युक्तिसें लेना चहिये हिंगाष्टक चूर्णके संग गऊभर अफीम मिलाकर रातकूं सूतीबखत लेणा अथवा अफीमके संग आधे रुपेभर सोवेकुं जरासेक कर पाणीके संग पीसकर पीणा मरोडा तथा दस्तकूं रोकने वास्ते अफीम अछा है, लेकिन् एरंडी तेल लेकर पेटमेंसे कचरा निकाले विगर पेस्तर अफीम लेणा अछा नहीं है, क्योंके मल बिगडे भयेकुं अंदर रोकदेता है, दस्त बंधकर देता है, (२) ईस फूगल अथवा सुपेद जीरा मरोडेमें अछा फायदा करता है, दहीके संग आधे २ रुपियेभर जीरा अथवा ईस फूगल दिनमें तीनवेर लेणा ये दवा दस्तकी कब्जी करे विगर मरोडेकूं मिटाता है (३) एरंडीतेल एक वेर देणेपर मरोडा नहीं मिटे तो एक दोदिन ठहरके फेर एरंडीतेलही देणा वो सूंठके उकालेमें पेपरमींटके पाणीमें आदेके रसमें अथवा लाडेनम याने अफीमके अर्कमें देणा जिस्में पेटमेकी वायूकूं दूरकर दस्तकूं रुकावे (४) चीळ–मरोडेके मरजमें चील अकसीर इलाज है, चीलकी गिर गुड दहीमें मिलाकर देणेसे मरोडा मिटजाता है, (५) एपीकाक्युआन्हा–या अंग्रेजी भूही भी मरोडेमे बहोत उपयोगी है, उसमें एक अवगुण है, के उलटी लाती है, और पेटमें टिकती नहीं पेटमें रहे तो बहोत जल्दी असर करती है, पेटमें टिके एसा करनेवास्ते प्रथम पेटपर दोअंगी ही बांडिनफ्ट गरेका पलाष्टर मारणा और १५–२० बूंद अफीमके अर्कका पिलाना इलाज करके पीछे ईपीकाक्युआनेकी ३० ग्रेन भूही महलमें चटाय देना

इसपर जल पिलाणा नहीं और थोडी देरपडे रहने देणा एसा करणेसें उलटी होगी नहीं दोय तीन दिन एसे करनेसे अछा फायदा होगा और कभी उलटी होगी तो भी उसका असर जरूर होगा अब एपीकाक्युआन्हाकूं पचानेकी दुसरी तरकीब लिखते हैं, ६ रत्ती या भूकी ३ रत्ती अफीम उसकी १२ गोली करणी और तीन २ घंटेसे चार २ गोलिये लेणी (६) इतने इलाजोसें जो फायदा नहीं पडे तो दस्त पतला पाणी जेसा आता है, बुखार नब्ज जलद चलती है, और दुखणा जारी रहे तो समझणाके आंतरोमें अभी सोजन है, और अंदर जखम है, एसी हालतमें नं० २०९ का काथ पृष्ट २९२ की लिखी भई स्तंभन दवाइयें तथा नं० ७०२, ७०३, ६१४, ७१५ की दवाइयां अछी फायदेवंद है.

(संग्रहणी)–पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणीका निदान आयुज्ञानार्णव प्रसिद्ध ग्रंथमें एसा लिखा है के कोठेमें अग्निके रहणेका जो ठिकाणा है, सो अन्नकूं ग्रहण करता है, इसवास्ते इस जगेकुं ग्रहणी कहते हैं, ये ग्रहणी आंत कच्चे अन्नकूं ग्रहण करके रखती है, और पक्के अन्नकूं गुदाके रस्ते निकाल देती है, इस ग्रहणीमे अग्नि है, वो भी ग्रहणी कहलाती है, अग्नि खराब होकर मंद पडती है, तब उसका ठिकाणा ग्रहणी आंत भी खराब होती है, वैद्यकशास्त्रमें ग्रहणी और संग्रहणीमे कुछयक भेद लिखा है, आमवायूकुं संग्रह करे सो संग्रहणी ये रोग ग्रहणीसे जादा डरानेवाला है, इस जगे दोनोकों मिटावे एसा सामान्य इलाज लिखेगें और दोनोंका भेदातर नहीं रखेगें.

(कारण)–तेज मरोडा जिस कारणसे होता है, उसीकारणसे संग्रहणी होती है, अथवा तेज मरोडा मिटे पीछै शांतपडे पीछै मद अग्निवालेके तथा कुपथ्य आहार विहारके करनेवालेके पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणी रोग होजाता है.

(लक्षण)–संग्रहणी कच्चा अन्न ग्रहण करती है और पक्के अन्नकुं निकालती है, तब पेट छूट कच्चादस्त होजाता है, दस्तकी तादाद नहीं रहती थोडे दिन दस्त बंध रहता है, और पीछा होता है, किसीवखत एकाध दस्त होता है, और किसीवखत जादा दस्त होता है, मरोडेकी तरे पेटमें आंटा आमवायु पेटका कटणा वेर २ दस्त होय और पीछा बंध होय खायाभया अन्न पचाभया होय या पचता होय उस वखत आफरा होय और भोजन करणेसें शांति होती है, वादीके गोटेकी छातीके दरदकी और तिल्लीके रोगकी शंकाभया करती है, वहोतसी वखत पतला सूका कच्चा और अवाज तथा झागोवाला दस्त होता है, बदन सूकते जाता है, खून उडजाता है आखरकों सोजन आती है, आखिरको बोलते २ अदमी मरजाता है, संग्रहणीके दस्तमें खून पीप रंग २ का गिरता है,. वहोतसी वखत.

(इलाज)–पुराणी संग्रहणी वहोत कष्टसाध्य है और साधारण इलाजमें मिटभी

नहीं सकती * संग्रहणी रोगमें रोगीकी जठराग्नि एसी खराब होती है, सो उसकी होजरी कोइ किसीभी किसमके खुराककुं लेकर पाचन नहीं करसकती होजरी छोटे बचे कीसेभी बडी नाताकत होजाती है, इसवास्ते उसके खिलाणेकुं हलकेसे हलका खुराक देणा (१) (छाछ)–संग्रहणी रोगकी सर्वोत्तम खुराक है, दवा और पथ्य दोनोंका काम सारती है, दोपोंकी निगेदास्तीकर तली हींग तथा जीरा और सींधानिमक डालकर तक्र दहीमेंसे थर निकाल उसमें चोथाहिस्सा पाणी डाल विलोई भई जाडी छाछ इस रोगमे बहोत फायदावंद है, संग्रहणीवालेकूं इकेली छाछ पोपणकर जठराग्नि प्रबलकरती है, किसी पूर्ण विद्वान वैद्यकी सलासे सबकां मकरणा अछा है, पीछे भात वगेरे हलका खुराक देणा सरू करणा मरणके मूंपर पडेभये हाडमात्र रहेभये विद्वानोंकी सलाहसे अमृतरूप छाछ जिलाती है, लेकिन् धीरज रखकर महीनोके महीनोंतक इकेली छाछ पीकर रोगीकूं रहणा चहिये इसके सिवाय साधन संग्रहणी रोग मिटणेका एसा ग्रंथोंमे विरला होगा एसा तक्र गुणानुवाद जैनाचार्य रचितयोग चिंतामणी ग्रंथ तथा हमारा प्रत्यक्ष अनुभव पथ्य और दवारूप हमने पतवाणा है, (२) अमृतवटी–गऊका दूध और योग्य अनुपानके संग संग्रहणीकूं मिटाती है, हम जादा क्या लिखे के जो प्राणी अपणी कष्टसाध्य संग्रहणी मिटाये चाहे सो व्यर्थ औरोके पास गोते क्यों खाकर धन और तनकूं बरबाद करते फिर रामबाण लगतेही संग्रहणी प्रलय होतेही नजर आती है, रामबाण जभी नहीं चलता के जब उसकूं फेर जन्म लेणा होता है, (३) पड्रूष्ण–मूंगकी दालका पाणी धाणा जीरा सींधानिमक सूंठ डालकर छाछ पीणा (४) लाही चूर्ण–नं० २३८ छाछमें अथवा बीलकी गिर छाछके संग पीणी मात्रा अढाई मासा अनुपान और खुराक छाछ (५) दुग्धवटी–वछनाग शुद्ध अफीम चार २ वाल लोहभस्म ५ रत्ती अभ्रक मासा १ दूधमें पीस दोदो रत्तीकी गोलियें करणी संग्रहणी तथा सूजनका बहोत अछा इलाज है, ये दुग्धवटी खाणी जहांतक दूध सिवाय दुसरा खुराक खाणा नहीं (६ हीवेरादि क्वाथ नं० २०९) अतिसार तेसें संग्रहणी दोनोंमें फायदेवंद है, इसपर भी दूध चावलसि-वाय दुसरा खुराक खाणा नहीं तो दवा कुछभी फायदा नहीं करेगी (७) पंचामृत पर्पटी–ये दवा पूर्ण वैद्य रसोंके बणाणेवालों पास मिलती है, अनुपान छाछ जीरा हींग सींधा पथ्य और छाछ.

(विशेष सूचना)–पथ्यापथ्य अतीसारमे लिखेमुजब संग्रहणीके रोगीने जादा श्रम करना नहीं जादा जल पीणा नहीं चिकणाईवाला जादा खानपान लेना नहीं और जागण करना नहीं मइनत करणी नहीं हवा अछी बदलणी दरियावकी हवा दरियावकी मुसा-फरी जादा फायदेवंद है.

[illegible]

अरुचि-अन्नद्वेष-

एनोरेक्ष्या.

खाणेका दिल होय नहीं अथवा अन्न देखकर दिलकुं रुचै नहीं वो रोग अरोचक कहलाता है.

(कारण)-ये कोइ अलग रोग नहीं है, कितनेक रोगोंमें खाणेमें अरुचि होजाया करती है, जादा करके अजीर्णमें बुखारमें तथा कलेजेके और मगजके रोगोमें अरुचि होती है, शोकसे डरसे दरदसें क्रोधसे मनकूं आंखकूं तथा नाककूं अछा नहि लगे एसे पदार्थोंके देखणेसे अरुचि पैदा होती है, (इलाज)-१ जिस कारणसें अरुचि भई होयसो कारण दूर करणा दिलकुं रुचे और तासीरकूं माने एसा खानपान मिलणेसे खाणेपर रुचि पैदा होती है, तेज चमचमा मीठा और खट्टा और खारा पदार्थ खाणेमें रुचि पैदा करता है, इसवास्ते एसे चीजोका उपयोग करणा अरुचि वादीसे भई होय तो वादीकरणेवाली चीजें खाणी नहीं इसतरे पित्त कफका समझ लेणा क्योंके एसी चीजोंपर स्वभावसे रुचि नहीं पैदा होती (२) बीजोरा नींबुकी पांखडिये घीमें सेक उसमें जरा सींधानिमक मिलाकर खाणेसें रुचि पैदा होती है, (३) शरवत-पकी अंबलीकूं ठंढे जलमे घोल उसमें चहिये जितना कंदया मिश्री तथा इलायची लोग मिरच तथा कपूर भुरकाकर थोडा भोजनके वखत पीणा पित्तकी अरुचि इससे मिटती है, नींबु तेसें अनारका शरवत उपयोगी है, (४) द्राक्षवटी-दाख अनारका सार सींधानिमक पींपर जरासेकी हींग तज वगेरेकी नींबूके रसमें बनाई भई गोलियां मूमे रखणी (५) छाछ-रुचि करणेवाली है, राई जीरा हींग तथा सूंठ ये चार सेके भये पांचमा सींधानिमक इन सबोके चूर्णकूं गऊके दहीमें अछी तरे मिलाकर दहीकूं कपडेमें छाण उसमें खट्टी छाछ डालणी ये छाछ रुचि पैदा करती है, (६) श्रीखंड-इलायची लोग मिरच और थोडासा भीमसेनी कपूर डालकर किया भया सिखरण रुचिकारक है, (७) अद्रक-भोजनकी वखत पहली सींधानिमक लगाकर आदेके टुकडे खाणेसें रुचि वढाता है, आदेके रशमें सहत मिला चाटते हैं.

छर्दि-उलटी-ओकारी-

वॉमिटिंग.

उलटी दुसरे कितनेक रोगोंका चिन्ह है, तोभी उसकूं बंध करणेके जुदे २ इलाज है, इसवास्ते इस रोगकूं जुदा गिणकर इसके इलाज लिखे हैं.

(कारण)-अति पतला पदार्थ पीणेसे बहोत चिकणा पदार्थ खानेसे मनकुं नहि रुचे एसे अन्नपानसे बहोत खाणेसे अहित खानपानसे आमसे अजीर्णसे कृमिसे गर्भसे बिगडे भये वातपित्त कफमे नफरण आदि एसे चींजोके देखणेसें सुघणेसें

खाणेसे इत्यादि बहोत कारणोसे उलटी होती है, जादा करके अजीर्ण और पित्तके प्रकोपसे वेर २ कै होती है, इसके सिवाय गोसा उतरना आंतरेका वरम होजरीका क्षत कलेजेका रोग हैजा पथरी वगेरे रोगभी उलटीका कारण है.

(इलाज)–कारणकूं पहचान उलटीका इलाज करणा कितनीक बखत उलटी होणी फायदेके वास्ते होती है, वो होणे देणी रोकणी नहीं बहोत खाणेसे बिगाड जो होता है, वो उलटीके रस्ते निकल जाता है, उससे फायदा है, जो एसा नहीं होय तो पेटका दुसरा रोग होणा ताजब नहीं.

(सामान्य इलाज)–१ नींवूका शरबत इकेला अथवा सोडावाटर संग पीणा २ लोबानके फूल अथवा लोबानका पाणी ३ नींवूका रस सहत बीस्मथ सोडा वगेरे देणा ४ सुपेद चंनणकुं घस उसके पाणीमें आंवलेका चूर्ण और सहत डालकर पिलाणा ५ पित्तपापडेके हिममें या काथमें मिश्री और सहत डालकर पीणा ६ मोलेठी तथा सुपेद चंनणकूं दूधमें घसकर पीणेसे खूनकी उलटी भी बंध होती है ७ तुलछीके रशमें इलायचीका चूर्णडालकर पीणा८जाईके पत्तोंके रसमें पींपर मिरचमिश्री तथा सहत डाल पीणेसे बहोत दिनोंकी भी उलटी बंध होती है, ९ हरडेका चूर्ण सहतमें चाटणा तब दोष दस्तके रस्ते निकालकर उलटी बंध होती है, १० गिलोयके रसमें या हिममे या काथमे सहत डालकर पीणेसे त्रिदोषकी उलटी बध होती है, ११ जामुन आंब तथा बडके नरम कोंपलोंकी उकाली पीणेसें १२ रेसम और मोरपंखकी भस्मीकर सहतमें चटाणा १३ दाख तथा आंवले जलमें थोरी देर भिगाकर मसलकर उसके जलमें मिश्री सहत मिलाकर बुखार तथा पित्तकी उलटी मिटजाती है, १४ सोडा १५ ग्रेन साइट्रिक एसिड १० ग्रेन मिलाकर पीणा १५ मोफर्या बिस्मथ तथा हाइड्रोसानिक एसिडका मिक्श्चर देणा १६ दूध तथा चूनेका नीतराभया जलसामिल पीणेसे उलटी बंध होकर पेटमें टिकेगा १७ नं० २२८, ५०२, ५६०, तथा ६०९ की दवाये १८ गर्भणीकी उलटी–धाणा तथा दालका पाणी न० ५०२, ५१३ का मिक्श्चर (कलंभा) बाहरका इलाज–१९ पेटपर गरिका पलाष्टर मारणा २० लाडेनम तथा कलोरो फॉर्म सम वजन एक रुमालपर डिरक्ष दो रुमाल डोजपर रखके उसपर दुसरा कपडा ढकणा (होमियोपथिक इलाज)–१ एन्टीमनीक्रुड)–बहोत खाणेसे या बहोत सराप पीणेसे होय जो उलटी उसमें देणा. २ आर्सेनिक काडामिन पेड और बहोत बेचेनी होय उसमें देणा. ३ ईपिका क्युआन्हा सुखा कफोत्तर और गंदे पाणीवाली वेर २ उलटी उबाकीमें देणा ४ पल्सेटिला–थोडीसी दिये देनेसाथे उलटीमें देणा. ५ टार्टरइमेटिक–उलटीकेवास्ते बहोत उबाल और बाद नींद न देणा बस है.

अम्लपित्त-खट्टापित्त-

खुराक वरावर पचे नहीं उलटी होय या दस्त होय उसमें कडवा और हरे रंगका पित्त पडे इस रोगकूं आम्लपित्त कहते हैं.

कारण-वदनमें पहली अपणे कारणसे एकठा भया पित्त विरुद्ध आहार विहारसे याने विगडा भया खट्टा दाह करणेवाला और पित्तकूं वधाणेवाले पदार्थोंके सेवन करणेसें प्रकोप पाकर इस रोगकूं पैदा करता है इस रोगका मूल कारण अजीर्ण है इस कारण जो अजीर्णका कारण है, उससे ये रोग पैदा होता है.

लक्षण-पहली जरा शिर दूखे हाथ पांवोमें नाताकती मालम दै पीछै कलेजैकी जगे-पर उस वखत दरद होजावै अजीर्णकी निशाणी मालम दै आखिर उलटी होय किसी २ वखत इस रोगसें बुखार और कामला पीलिया होजाता है, तव मृत्युभी होजाती है.

इलाज-आम्लपित्तका रस्ता दो तरफसें होता है, मुंसे या दस्तसे उलटीवालेकूं उलटीकी दवा देणी दस्त होता होय तो जुलाव देणा २-चावलोंकी या जौ धाणी मिश्री तथा सहत मिलाकर खिलाणी ३ कडवा परवल अथवा पटोल कुटकी नीमकी छाल तथा भैणफल इनोके क्वाथमें सहत मिलाकर देणा जिससे उलटी होती है पथ्य मूंगकी पतली दाल अलूणी मीश्री डालकर-४ त्रिफलाके क्वाथमें निशोतका चूर्ण तथा सहत डालकर पिलाणा दस्त होगा ५ वडी दाख तथा जो हरडे सम वजन इनके वरावर मिश्री इनोकी दोदो तीन २ तोले-की गोलिया करके खिलाणी इससे आम्लपित्त रिदय तथा गलेकी जलण प्यास मूर्छा भ्रम मंदाग्नि और आमवात इन सवोंकूं मिटाता है, ६ भूरीगणी गिलोय अरडूसेके पत्ते इनोकी उकाली सहत डालकर पिलाणा इससे दम खासी उलटी तथा बुखारके संग आ-म्लपित्त मिटता है, ७ आंवलेका चूर्ण केलेके कंदके रशमें देणा ८ पटोल अरडूसेके पत्ते गिलोय पित्तपापडा तथा जल भांगरा इनोका क्वाथ सहत डालकर पीणा ९-ब्ल्युपिल ६ ग्रेण इपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राकट डान्डेलीयन ६ ग्रेण इनोकी ४ गोली कर रा-तकूं सोते वखत दोदो गोली लेणी १० चूनेका नितरा भया जल एक औंस उसमें थोडा दूध मिलाकर पीणा १२ अमृतवटी दवा खाणेमें दूध और चावल इसका सेवन दो मही-ने तक करे तो असाध्य आम्लपित्त अजीर्ण उलटी वगैरे रोग मिटकर होजरी तथा आं-तरोंकी पाचनक्रिया खूब सुधर रोगी वलवान होता है.

(विशेषसूचना)-इस रोगमें उलटी और दस्तकूं वंध करणेवाली दवा नहीं देणी लेकिन् वढे भये पित्तकू और अजीर्णकूं शांति करणेका इलाज करणा कोईभी गरम दाहक और तेज पदार्थ नुकशान करता है, इस रोगमें वहोत सादा हलका पित्त शामक खुराक देणा (पथ्य)-जव गहू मूंग लाल चावल तीन उकाला देकर ठंडा किया भया पाणी मिश्री वूरा सहत कवीठ अनार (कुपथ्य)-उलटीकू रोकणा तेल खट्टा खारा तीखा

खाणेसे इत्यादि बहोत कारणोसे उलटी होती है, जादा करके अजीर्ण और पित्तके प्रकोपसे वेर २ कै होती है, इसके सिवाय गोसा उतरना आंतरेका वरम होजरीक क्षत कलेजेका रोग हैजा पथरी वगेरे रोगभी उलटीका कारण है.

(इलाज)–कारणकूं पहचान उलटीका इलाज करणा कितनीक वखत उलटी होणी फायदेके वास्ते होती है, वो होणे देणी रोकणी नहीं बहोत खाणेसे बिगाड जो होता है, वो उलटीके रस्ते निकल जाता है, उससे फायदा है, जो एसा नहीं होय तो पेटका दुसरा रोग होणा ताजब नहीं.

(सामान्य इलाज)–१ नींबूका शरबत इकेला अथवा सोडावाटर संग पीणा २ लोबानके फूल अथवा लोबानका पाणी ३ नींबूका रस सहत बीस्मथ सोडा वगेरे देणा ४ सुपेद चंनणकुं घस उसके पाणीमें आंवलेका चूर्ण और सहत डालकर पिलाणा ५ पित्तपापडेके हिममें या काथमें मिश्री और सहत डालकर पीणा ६ गोलेटी तथा सुपेद चंनणकुं दूधमें घसकर पीणेसे खूनकी उलटी भी बंध होती है ७ तुलछीके रसमें इलायचीका चूर्णडालकर पीणा८जाईके पत्तोंकेरसमें पींपर मिरचमिश्री तथा सहत डाल पीणेसे बहोत दिनोंकी भी उलटी बंध होती है, ९ हरडेका चूर्ण सहतमें चाटणा तब दोष दस्तके रस्ते निकालकर उलटी बंध होती है, १० गिलोयके रसमें या हिममे या काथमें सहत डालकर पीणेसे त्रिदोषकी उलटी बंध होती है, ११ जामुन आंब तथा वडके नरम कोमे पत्तोंकी उकाली पीणेमें १२ रेसम और मोरपखकी भस्मीकर सहतमें चटाणा १३ दाख तथा आंवले जलमें थोरी देर भिगाकर मसलकर उसके जलमें मिश्री सहत मिलाकर पुलार तथा पित्तकी उलटी मिटजाती है, १४ सोडा १५ ग्रेन साइट्रिक एसिड १० ग्रेन मिलाकर पीणा १५ मोफर्या बिस्मथ तथा हाइड्रोस्यानिक एसिडका मिक्श्चर देणा १६ दूध तथा चूनेका नीतरभया जलसामिल पीणेसे उलटी बंध होकर पेटमें टिकेगा १७ न० २२८, ५०२, ५६९, तथा ६०९ की दवाये १८ गर्भणीकी उलटी–पाणा तथा दाखका पाणी न० ५०२, ५१३ का मिक्श्चर (कलंभा) बाहरका इलाज–१९ पेटपर सोडेका पत्थर मारणा २० लाडेनम तथा क्लोरो फॉर्म सम वजन एक रुमालपर छिडक [illegible] ओढीपर रखके उसपर दुसरा कपडा ढकणा (होमियोपथिक इलाज)–१ [illegible])–बहोत खाणेमे या बहोत सराप पीणेमे होय जो उलटी उसमें देणा. २ मॉर्निंग काटारिन पडे और बहोत बेचेनी होय उसमें देणा. ३ ईपिका क्युआन्हा एक कलीन और सेंट पाणीवाली वेर २ उलटी उबाकीमें देणा ४ पलसेटिला–गर्दीके लिये होनेवाली उलटीमें देणा. ५ टाटारइमेटिक–उलटीकेसाथ बहोत उबाल और शूल मरोड होय तब देणा बहोत है.

अम्लपित्त-खट्टापित्त-

खुराक बराबर पचे नहीं उलटी होय या दस्त होय उसमें कडवा और हरे रंगका पित्त पडे इस रोगकूं आम्लपित्त कहते हैं.

कारण-बदनमें पहली अपणे कारणसे एकठा भया पित्त विरुद्ध आहार विहारसे याने विगडा भया खट्टा दाह करणेवाला और पित्तकूं वधाणेवाले पदार्थोंके सेवन करणेसें प्रकोप पाकर इस रोगकूं पैदा करता है इस रोगका मूल कारण अजीर्ण है इस कारण जो अजीर्णका कारण है, उससे ये रोग पैदा होता है.

लक्षण-पहली जरा शिर दूखे हाथ पांवोमें नाताकती मालम दै पीछे कलेजैकी जगैपर उस वखत दरद होजावै अजीर्णकी निशाणी मालम दै आखिर उलटी होय किसी २ वखत इस रोगसें बुखार और कामला पीलिया होजाता है, तब मृत्युभी होजाती है.

इलाज-आम्लपित्तका रस्ता दो तरफसें होता है, मुंसे या दस्तसे उलटीवालेकूं उलटीकी दवा देणी दस्त होता होय तो जुलाब देणा २-चावलोंकी या जौ धाणी मिश्री तथा सहत मिलाकर खिलाणी ३ कडवा परवल अथवा पटोल कुटकी नीमकी छाल तथा भैणफल इनोके काथमें सहत मिलाकर देणा जिससे उलटी होती है पथ्य मूंगकी पतली दाल अलूणी मीश्री डालकर-४ त्रिफलाके काथमें निशोतका चूर्ण तथा सहत डालकर पिलाणा दस्त होगा ५ वडी दाख तथा जो हरडे सम वजन इनके बराबर मिश्री इनोकी दोदो तीन २ तोलेकी गोलिया करके खिलाणी इससे आम्लपित्त रिदय तथा गलेकी जलण प्यास मूर्छा भ्रम मंदाग्नि और आमवात इन सबोकूं मिटाता है, ६ भूरींगणी गिलोय अरडूसेके पत्ते इनोकी उकाली सहत डालकर पिलाणा इससे दम खासी उलटी तथा बुखारके संग आम्लपित्त मिटता है, ७ आंवलेका चूर्ण केलेके कंदके रशमें देणा ८ पटोल अरडूसेके पत्ते गिलोय पित्तपापडा तथा जल भांगरा इनोका काथ सहत डालकर पीणा ९-ब्ल्युपिल ६ ग्रेण इपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राकट डान्डेलीयन ६ ग्रेण इनोकी ४ गोली कर रातकूं सोते वखत दोदो गोली लेणी १० चूनेका नितरा भया जल एक औंस उसमें थोडा दूध मिलाकर पीणा १२ अमृतवटी दवा खाणेमें दूध और चावल इसका सेवन दो महीने तक करे तो असाध्य आम्लपित्त अजीर्ण उलटी वगेरे रोग मिटकर होजरी तथा आंतरोंकी पाचनक्रिया खूब सुधर रोगी वलवान होता है.

(विशेषसूचना)-इस रोगमें उलटी और दस्तकू बंध करणेवाली दवा नहीं देणी लेकिन् वढे भये पित्तकू और अजीर्णकूं शांति करणेका इलाज करणा कोईभी गरम दाहक और तेज पदार्थ नुकशान करता है, इस रोगमें बहोत सादा हलका पित्त शामक खुराक देणा (पथ्य)-जव गहू मूग लाल चावल तीन उकाला देकर ठंडा किया भया पाणी मिश्री वूरा सहत कवीठ अनार (कुपथ्य)-उलटीकू रोकणा तेल खट्टा खारा ती-

कुलथी तिल उडद निमक दही नसा करडा अनाज ठंडी हवा रातकूं जागणा दिनकूं सोणा ये बात सब नुकशान करती है, करेले परवल पथ्य है.

यकृत्–कलेजेका रोग.

डिझीसीश ओफ लिव्हर.

आगे उदररोगमें यकृतोदर इस नामका रोग संक्षेपसे लिखा है लेकिन् यकृत् याने कलेजेपर पाचन क्रियाका वडा आधार होणेसे उसके कितनेक विकारो विषे कुछइक जादा जाणणेकी जरूरी है, यकृत् ये शरीरमें वडा कामिल मर्म स्थान है. उसमें भया कोईभी तरेका विकार वो सब बदनकूं तकलीप देणेवाला होजाता है रोगके सबब कलेजा छोटा और वडाभी होजाता है, कलेजेका मुख्यकाम पित्त पैदा करणेका है उस पित्तपर आंतरोंके पाचन क्रियाका वडा आधार है कलेजेमें विकार होणेसें इतने रोग होते हैं.

१ कलेजेमें खूनका जमाव होता है. २ कलेजेमें सोजा होजाता है.
३ कलेजा पकता है. ४ कलेजेमें पित्तका जमाव होता है.
५ कलेजा संकुडा जाता है. ६ पित्तकी पथरी अथवा कांकरी.
७ कामला पीलिया होजाता है.

(कारण)–कलेजेके रोगके सामान्य कारण इस तरसे हैं बहोत तेज मसालादार खुराक सराप गरमी और एस आराम पारा नवसादर वगेरोंमेंसे पित्त वढता है.

(कलेजेमें खूनका जमणा)–कलेजेके अंदरसे खून फिरकर जिस नसोंके रस्ते बाहर जाता है उस नसोंमें कोई तरेकी खराबी और अटक होणेमें खून कलेजेमें भरकर रहता है, तब खूनका संग्रह होणेसे कलेजेका कद वढता है, रक्ताशय तथा फेफसेकाभी यही हाल होता है बहोत दिन बुखार आणेसे जेसें तिल्लीकी गांठ वढती है तेसें यकृत्भी वढता है भोजन कर दोडणेसें या मैथुनसे या बहोत कसरत करणेसे कलेजेमें शूल मालूम होती है खूनके भरावसेंही हाल होता है, गरमीमें रहणेसें तेज मसालोंसेंभी कलेजा वढ जाता है, लक्षण–कलेजा वढता है अंगुली धरकर ठोकठोर देखणेसे उसका स्वाभाविक ठिकाना बदलकर मोठा अथवा वडा अवाज मालूम देता है, अजीर्णके लक्षण मालूम होते हैं. पेटमें तथा वडा भया मालूम देता है, दस्त कब्ज रहता है, उबाकी तथा कै होती है–(इलाज)–पतला दस्त जाणेकूं निशोत अथवा एरंडमगोलट देणा कुछ कलेजेमें होनेवाला जखमकूं कम होजाता है, पीठे नं० ४६१–४६२ की रेचक दवाओं देणी और अल्प दोषवाली थोडे दिनोंतक देणा मल्हम लगाणा कलेजेपर राइका पलाष्टर धरणा अथवा कपडा बरफीले पोटिस मारणी कलीका चूना तथा मदतका लेपकर गरम पोटिस बांधणा इसेंभी जलाना जरूर होय दरद नहीं मिटे तो जोंक लगवाणी.

(कलेजेका रोग मोजन)–मुसाफरके संग कलेजेके तेज वरमकूं लोक मुशकीकी गांठ

कहते हैं, (कारण)– गरम देशमें जादा होता है, सराप पीणेवालोंकूं इस रोगका जादा संभव है, बहोत गरमी बहोत ठंढी सन्निपात ज्वर और चोट लगणेसेंभी होता है, (लक्षण)–खूनके जमावका आगे बढा भया रूप सोजन है, कलेजा बढता है बुखार सख्त आता है दहणी तरफ शूल कलेजेके ऊपर तरफ दरद और श्वास कास तथा छींक लेते दरद बढता है, वांये तरफ सोये नहीं जाता बुखारके संग कपाल तथा शिर दूखे पेशाव थोडा और लाल आंख थोडी बहोत पीली सूकी खासी हिचकी तथा उलटी दहणें खंभेमें दुखणा वगेरे (इलाज) रोगी मजबूत होयतो कलेजेपर जोक लगाणी दस्तकब्ज और जीभपर सुपेद छारी होय तो ब्ल्युपील ६ ग्रेण और ऐपीकाक्युआन्हा २ ग्रेण इनोकी गोली देणी और तीन चार घंटे पीछै सोनामुखीके काथमें ऐप्समसाल्टका जुलाब देणा अथवा नं० ४६१ वाली गोली लिये पीछै चार घंटेसे नं० ४६२ वाला मिक्श्चर लेणा जो दस्त कब्ज होय तो येही दवा हमेस या एकंतरे लेणा जारी रखणा जो मरोडाका कोइभी लक्षण मालम दै तो नं० ४९३ वाली दवा लेणी हमेस राई लगाणी गरम पाणीका सेक करणा पेटपर गरम कपडा लपेटे रखणा वेर २ गरमागरम पोल्टीस मारणी आटेकी अथवा अलसीकी नहीं, आराम होय तो नं० ५६३ का विल्स्टर मारणा–(यकृत्का-पकणा)– यकृतके वरमसे यकृत पक जाता है, जब वरम मिटता नही तब जमा भया खून पकता है और फोडेकी तरे इलाजसे बैठभी जाता है या फूटता है, ये यकृत्का पकणा जेसें तेज सोजेसें होता है, तेसें धीरे २ भये सूजनसेंभी पकता है, ए रोग दारू पीणेवालेके बुखार तथा मरोडेके रोगसेंभी ए मरज होता है,–(लक्षण)– वरमका बुखार होय या उतर गया होय तोभी कलेजेके पकणेपर एकाएक ठंड देके बुखार चढ आता है वधता है और पसीना होता है, इसतरे दम २ में होणे लगे तब समझणाके कलेजेमें पीप होणा सरू होगया है अजीर्णके चिन्ह मालम दै भूख लगे नहीं नाडी जलद चलती है और चहरा घभरा जावै दुसरे सब चिन्ह वरमके होते हैं, पसलीके नीचै तेसें छातीके तरफ दरद बढता है पीपके पडनेसे अंदरसें चमका मारता है पीप बढते जाता तेसें कलेजा बढते जाता आखरके एक दिन या महीना या वरस पीछै मूंहोकर पीप निकलता है ए जब फूटता है तब छातीपर दहने तरफ अथवा पीठपर पसलियोंके बीचमें पसलीके नीचै पेटपर या पीठपर मूंकरके फूटता है जो अंदर फूटता है तो छातीके अंदर फेफसेंमें अथवा पेटमें फूटता है आतरेमें या पित्ताशयमें मू करता है तो पीप दस्तमें निकलता है, होजरीमें फूटता है तो उलटीमें पीप निकलता है अगर जो पेटमें छूटा फूटकर पीप फैले और उसकूं निकलणेकूं रस्ता नहीं मिले अदमी मरजाता है, (इलाज)– जेसें बाहिरके फोडेकू पकाकर पीप निकाल घाव भरते हैं, तेसें इसकाभी इलाज करणा सख्त जुलाब या सख्त दवा देणी नहीं ताकत देवै एसा अच्छा खुराक देणा जिस जगे फोडेका जोर

कुलथी तिल उडद निमक दही नसा करडा अनाज ठंडी हवा रातकूं जागणा दिनकूं सोणा ये बात सब नुकशान करती है, करेले परवल पथ्य है.

यकृत्–कलेजेका रोग.

डिझीसीझ ओफ लिव्हर.

आगे उदररोगमें यकृतोदर इस नामका रोग संक्षेपसे लिखा है लेकिन् यकृत् याने कलेजेपर पाचन क्रियाका • वडा आधार होणेसे उसके कितनेक विकारो विषे कुछइक जादा जाणणेकी जरूरी है, यकृत् ये शरीरमें वडा कामिल मर्म स्थान है. उसमें भया कोईभी तरेका विकार वो सब वदनकूं तकलीप देणेवाला होजाता है रोगके सबब कलेजा छोटा और वडाभी होजाता है, कलेजेका मुख्यकाम पित्त पैदा करणेका है उस पित्तपर आंतरोंके पाचन क्रियाका वडा आधार है कलेजेमें विकार होणेसें इतने रोग होते हैं.

१ कलेजेमें खूनका जमाव होता है. २ कलेजेमें सोजा होजाता है.
३ कलेजा पकता है. ४ कलेजेमें पित्तका जमाव होता है.
५ कलेजा संकुडा जाता है. ६ पित्तकी पथरी अथवा कांकरी.
७ कामला पीलिया होजाता है.

(कारण)–कलेजेके रोगके सामान्य कारण इस तरसे हैं बहोत तेज मसालादार खुराक सराप गरमी और एस आराम पारा नवसादर वगेरोंमेंसे पित्त बढता है.

(कलेजेमें खूनका जमणा)–कलेजेके अंदरसे खून फिरकर जिस नसोंके रस्ते बाहर जाता है उस नसोंमें कोई तरेकी खराबी और अटक होणेमें खून कलेजेमें भरकर रहता है, तब खूनका मजह होणेसे कलेजेका कद बढता है, रक्ताशय तथा फेफसेकाभी यही हाल होता है बहोत दिन बुखार आणेसे जेसें तिल्लीकी गांठ बढती है तेसें यकृत्भी बढता है भोजन कर दोडणेमें या मैथुनमें या बहोत कमरत करणेसे कलेजेमें शूल मारती है सोभी खूनके भरावसेंही हाल होता है, गरमीमें रहणेसें तेज मसालोंसेंभी कलेजा बढ जाता है, लक्षण–कलेजा बढता है अंगुली धरकर ठोकर देखणेसे उसका स्वाभाविक ठोकर आवाज बदलकर मंदसा भया वडा अवाज मालम देता है, अजीर्णके लक्षण मालूम देते हैं, पेटभरा तथा वडा भया मालम देता है, दस्त कब्ज रहता है, उबाकी तथा कडी होती है–(इलाज)–पतला दस्त लाणेकूं निशोत अथवा एरममसोलट देणा तुरत खूनमें कलेजेका जमाखून कम होजाता है, पीछे नं० ४६१–४६२ की रेचक दवाओं देणी और कब्ज होणी वेडे दिनोंतक देणा मरू रखणा कलेजेपर राइका पलाष्टर भरणा तेज करना नवसादर पोटिस मारणी कली का चूना तथा सहदका लेपकर कई दवाणा ठीक न होनेसेइन दोनमें लगाना कब्ज होय दरद नहीं मिटे तो जोंक लगवाणी.

(कलेजेका तेज भोजन)–बुखारके संग कलेजेके तेज बरमकूं लोक मुर्गाकी गांठ

कहते हैं, (कारण)– गरम देशमें जादा होता है, सराप पीणेवालोंकूं इस रोगका जादा संभव है, बहोत गरमी बहोत ठंढी सन्निपात ज्वर और चोट लगणेसेंभी होता है, (लक्षण)–खूनके जमावका आगे वढा भया रूप सोजन है, कलेजा वढता है बुखार सख्त आता है दहणी तरफ शूल कलेजेके ऊपर तरफ दरद और श्वास कास तथा छींक लेते दरद वढता है, वांये तरफ सोये नहीं जाता बुखारके संग कपाल तथा शिर दूखे पेशाव थोडा और लाल आंख थोडी वहोत पीली सूकी खासी हिचकी तथा उलटी दहणें खभेंमें दुखणा वगेरे (इलाज) रोगी मजवूत होयतो कलेजेपर जोक लगाणी दस्तकब्ज और जीभपर सुपेद छारी होय तो ब्युपील ६ ग्रेण और ऐपीकाक्युआन्हा २ ग्रेण इनोकी गोली देणी और तीन चार घंटे पीछै सोनामुखीके काथमें ऐप्समसाल्टका जुलाव देणा अथवा नं० ४६१ वाली गोली लिये पीछै चार घंटेसे नं० ४६२ वाला मिक्श्चर लेणा जो दस्त कब्ज होय तो येही दवा हमेस या एकंतरे लेणा जारी रखणा जो मरोडाका कोइभी लक्षण मालम दै तो नं० ४९३ वाली दवा लेणी हमेस राई लगाणी गरम पाणीका सेक करणा पेटपर गरम कपडा लपेटे रखणा वेर २ गरमागरम पोल्टीस मारणी आटेकी अथवा अलसीकी नहीं, आराम होय तो नं० ५६३ का विल्स्टर मारणा–(यकृत्का-पकणा)– यकृतके वरमसे यकृत पक जाता है, जव वरम मिटता नहीं तव जमा भया खून पकता है और फोडेकी तरे इलाजसे वैठभी जाता है या फूटता है, ये यकृत्का पकणा जेसें तेज सोजेसें होता है, तेसें धीरे २ भये सूजनसेंभी पकता है, ए रोग दारूपीणेवालेके बुखार तथा मरोडेके रोगसेंभी ए मरज होता है,–(लक्षण)– वरमका बुखार होय या उतर गया होय तोभी कलेजेके पकणेपर एकाएक ठंढ देके बुखार चढ आता है वधता है और पसीना होता है, इसतरे दम २ में होणे लगे तव समझणाके कलेजेमें पीप होणा सरू होगया है अजीर्णके चिन्ह मालम दै भूख लगे नहीं नाडी जलद चलती है और चहरा घभरा जावै दुसरे सव चिन्ह वरमके होते हैं, पसलीके नीचै तेसें छातीके तरफ दरद वढता है पीपके पडनेसे अंदरसें चमका मारता है पीप वढते जाता तेसें कलेजा वढते जाता आखरके एक दिन या महीना या वरस पीछै मूंहोकर पीप निकलता है ए जव फूटता है तव छातीपर दहने तरफ अथवा पीठपर पसलियोंके वीचमें पसलीके नीचै पेटपर या पीठपर मूंकरके फूटता है जो अंदर फूटता है तो छातीके अंदर फेफसेमें अथवा पेटमें फूटता है आंतरेमें या पित्ताशयमें मूं करता है तो पीप दस्तमें निकलता है, होजरीमें फूटता है तो उलटीमें पीप निकलता है अगर जो पेटमें छूटा फूटकर पीप फैले और उसकू निकलणेकूं रस्ता नहीं मिले अदमी मरजाता है, (इलाज)– जेसें वाहिरके फोडेकू पकाकर पीप निकाल घाव भरते हैं, तेसें इसकाभी इलाज करणा सख्त जुलाव या सख्त दवा देणी नहीं ताकत देवै एसा अच्छा खुराक देणा जिस जगे फोडेका जोर

होय और मूं होना मालम पडे उसजगे पोल्टिस मार जलदी फूटे ऐसा इलाज करणा रोगीकी ताकत बने रखणी यही मुख्य इलाज है, पारेकी कोईभी दवा पेटमें लेणेकी या ऊपर लगाणेकी सर्वथा काममें लेना नहीं बुखारके जोर मुजब बुखारका इलाज करणा दस्तकी कब्जी होय तो सोते वखत कम्पाउन्डरुबार्ब पील ५ से ६ ग्रेनकी गोली देनी अथवा फजरमें सीडलीझ पाउडरका जुलाब देना (लोशन)– नाइट्रिक एसिड १ ड्राम म्युरियाटिक एसिड याने निमकका तेजाब १॥ ड्राम और पाणी १० से १२ औंस मिलाकर इसमें कपडा अथवा बदली डुबाकर कलेजेके दरदपर चुपडणा अथवा महीन कपडा धरकर केलेका पत्ता तथा कपडेका पट्टा बांधना (पित्तका उछाला)– कोईभी दाह करणेवाली चीज होजरीमें जाणेसें अथवा विचाररहीतपणेसे कितनेक मुदततक खाया भया कुपथ्यसे होजरी तथा यकृत् व्यवस्थारहित होनेसे पित्तका उछाला आता है, उछाला और मूर्छा ए उसके लक्षण है, उलटी होती है, तब पहली होजरीमेंका पदार्थ निकलता है पीछे खट्टा पित्त निकलता है, और आंतरेमें दरद होता है, (इलाज)–उलटी रोगमें लिखे इलाज करणा राई तथा पाणी पिलाकर उलटी करानी उलटीकूं पैदा करणेवाली वस्तू बाहिर निकाल देना पीछे जुलाब देना सोडावोटर पिलाना दरद बहोत होता होय तो कलेजेकी पीपडीपर राईकी पोल्टिस मारनी दस्त कब्ज होय तो उसका इलाज करना)–यकृत्का संकुडाणा–बहोतसी वखत यकृत् बढे पीछे संकोचाता है, इसमें छोटा होता है इस रोगके संग जलंदर जरूर होता है पांवपर सोजा पीलिया अजीर्ण अथवा दस्त आखर मोत)– जलंदर होनेके पहली कलेजेपर आयोडाइनका टिंचर लगाना अथवा ऊपर यकृत्के पकनेपर लोशन लिखा है, उसका बरताव करणा देशी लोक कलेजेपर गुल देते हैं, वोभी फायदेबद है जलंदर भये बाद जलंदरका इलाज करणा (पित्तकी पथरी)– पित्तके रहनेके ठिकाणेकूं पित्ताशय कहते हैं, इस पित्ताशयमें पित्त एकठा होकर आंतरोंमें जाता है लेकिन् जब पित्त कुछ बिगडता है तब उसमें क्षार वगैरे पदार्थ घट्ट होकर करडी पथरी जेसी बंध जाती है ए पथरी एकया जादा गोल चिपटी खूनेवा खड्डेवाली होती है, कदमें चिरमीसें इंडें जितनी बडी होती है ए कांकरी पित्ताशयमें पडी रहती है अथवा आंतरोंके रस्ते दस्तमें निकल जाती है, पित्तकी नलीमेंसे निकलती वो बहोत दरद करती है, कलेजेमें शूल जेसी पीडा होती है, रोगी तडफडता और पुकारता है, १ ठहर२कर दरद उठता है, उलटी होती है, दस्तकब्ज रहता है, पथरी पीछे पित्ताशयमें जाय अथवा आंतरोंमें जाय तो दरद नरम पडता है अगर जो नलीमें अटककर रहे तो आखिर पित्ताशयमें पित्तका भराव होकर कामला होता है, और रोगी मरजाता है (इलाज)– गरम पाणीका सेक अलशीकी पोल्टिस अफीम तथा बेलाडोना मिलाकर लगाना दरद बहोत होय तो इथर अथवा क्लोरोफार्म सुंघाना गरम पाणी पिलाकर उलटी करानी आंतरोंमें गये पीछे जुलाब देकर दस्तके रस्ते निकालदेनी

(कामला)-पित्ताशयका पित्त आंतरोंमें नही जाता है, पीछा खूनमें दाखल होता है तब कामला होता है, अथवा पित्त पैदा करनेकी क्रियाका अटकाव होनेसें खूनमें पित्त वढता है कलेजाके आगे कहे रोगोमें कमला होता है पित्त जादा पैदा होनेसें और मलकी कब्जीसेंभी कामला होता है इसके सिवाय चिंता डर दिलगीरी फेफसा मगज तथा रक्ताशयके रोग अजीर्ण बुखार सापका डंक तथा दुसरे जहर ए सब कामला (पीलिया)का कारणरूप है खूनमें पित्तका वढना उसका नाम पीलिया रोग है, (लक्षण)--वदनमें पीलापना ए कामलाका प्रगट लक्षण है ये पीलापणा पहली आंखमें पेशावमें नखमें और पीछै चामडीमें दिखाई देता है सुस्ती आलस वेचेनी कलतर शिरका दुखणा दस्तकी कब्जी और खुजली ए उसके दुसरे चिन्ह हैं कमला वहोत वढ जाता है तो सब वदन हलदी जेसा हो जाता है रोगी स्त्रीका दूध तथा आंसूभी पीला होता है, कपडेके पीला दाग लगता है, पेशाव पीला केसर जेसा लाल कालाभी होता है दस्तसुपेद कब्ज वायू डकार अपचा अरुचि और किसी २ वख्त दस्त उलटीमें या नाकमेंसें खूनभी गिरता है.

(इलाज)-- १ दस्त खुलास आवै एसा इलाज करणा पहली दूध या घी पिलाकर दस्त देना २ त्रिफलाके उकालामें सहत डालकर पीना ३ गोमूत्रमें शिलाजीत अथवा सोराखार लेना ४ कडवे नींवकी छालका उकाला सहत डालकर पिलाना ५ त्रिफला दारुहलदी कडवानींव तथा गिलोय इसमेंके किसीभी दवाका अंगरस सहत डालकर पीना ६ कुटकी सर्वोत्तम इलाज है, इसका काथ नवसादर तथा विलायती निमक डाल पीना ७ नवसादरभी कामलेका सर्वोत्तम इलाज है, नं० (६२६) (६२७) तथा ६२८ का मिक्श्चर कामल है, ९ तेसे नं० (७०७) तथा ७०८ का हकीमीनुसके फायदेवंद है १० त्रिफलादि काथ नं० २११ अच्छा फायदा करता है.

(होमियोपथिक इलाज)--१ एकोनाइट--बुखारके संग पीलियेका अच्छा इलाज है, २ आर्सेनिकम आंख पीली दस्त अपचा वेचेनी प्यास ३ केलकेरियाकार्ब (यकृत्की वढोतरी) उसमें दरद दस्त मट्टी जेसा पेशाव काला तथा पीलाईलियेशांखा ४ आयोडाईन--चहरा पीला दस्त सुपेद पेशाव काला तथा पीलाईलिये पुराना कामलेमें ५ पोडोफाइल म) पित्तकी कांकरी अटकी भई पीलियेका इलाज-(विशेष सूचना)--भारी छाछ टाल-और खटाई और चीकना खुराक घी तेल वगेरे चरवीवाला पदार्थ और नमकका परहेज रखणा पांडू रोगमुजब पथ्यापथ्य रखणा कामलामें लोक दूध खानेकी मनाइ करते हैं. लेकिन् उसका कोइ कारण नही पाया गया माफकसर थोडा दूध खानेमें कोइ तकलीफ नहींहै (यकृत्के तमाम रोगोका सामान्य इलाज) यकृत्के सब रोगोंमें दस्तकी कब्जी होती है, इसवास्ते दस्तका खुलासा रहै एसा इलाज सरू करणा दस्तकी कब्जी नहीं

होय और मूं होना मालम पडे उसजगे पोल्टिस मार जलदी फूटे ऐसा इलाज करणा रोगीकी ताकत वने रखणी यही मुख्य इलाज है, पारेकी कोईभी दवा पेटमें लेणेकी या ऊपर लगाणेकी सर्वथा काममें लेना नहीं बुखारके जोर मुजब बुखारका इलाज करणा दस्तकी कब्जी होय तो सोते वखत कम्पाउन्डरुबार्ब पील ५ से ६ ग्रेनकी गोली देनी अथवा फजरमें सीडलीझ पाउडरका जुलाब देना (लोशन)– नाइट्रिक एसिड १ ड्राम म्युरियाटिक एसिड याने निमकका तेजाब १॥ ड्राम और पाणी १० से १२ औंस मिलाकर इसमें कपडा अथवा वदली डुबाकर कलेजेके दरदपर चुपडणा अथवा महीन कपडा धरकर केलेका पत्ता तथा कपडेका पट्टा बांधना (पित्तका उछाला)– कोईभी दाह करणेवाली चीज होजरीमें जाणेसें अथवा विचाररहीतपणेसे कितनेक मुदततक खाया भया कुपथ्यसे होजरी तथा यकृत्व्यवस्थारहित होनेसे पित्तका उछाला आता है, उछाला और मूर्छा ए उसके लक्षण है, उलटी होती है, तब पहली होजरीमेंका पदार्थ निकलता है पीछे खट्टा पित्त निकलता है, और आंतरेमें दरद होता है, (इलाज)–उलटी रोगमें लिखे इलाज करणा राई तथा पाणी पिलाकर उलटी करानी उलटीकूं पैदा करणेवाली वस्तू बाहिर निकाल देना पीछे जुलाब देना सोडावोटर पिलाना दरद वहोत होता होय तो कलेजेकी पीपडीपर राईकी पोल्टिस मारनी दस्त कब्ज होय तो उसका इलाज करना)–यकृत्का संकुडाणा–वहोतसी वखत यकृत् वढे पीछे संकोचाता है, इसमें छोटा होता है इस रोगके संग जलंदर जरूर होता है पांवपर सोजा पीलिया अजीर्ण अथवा दस्त आखर मोत)– जलदर होनेके पहली कलेजेपर आयोडाइनका टिंक्चर लगाना अथवा ऊपर यकृत्के फकनेपर लोशन लिखा है, उसका वरताव करणा देशी लोक कलेजेपर गुल देते हैं, वोभी फायदेबंद है जलंदर भये वाद जलंदरका इलाज करणा (पित्तकी पथरी)– पित्तके रहनेके ठिकाणेकूं पित्ताशय कहते हैं, इस पित्ताशयमें पित्त एकट्ठा होकर आंतरोंमें जाता है लेकिन् जब पित्त कुछ निगडता है तब उसमें क्षार वगैरे पदार्थ वढ होकर कडी पथरी जेसी बंध जाती है ए पथरी एकथा जादा गोल निपटी सुपेना सरीखी होती है, कदमें चिरमीसें इडें जितनी वडी होती है ए कांकरी पित्ताशयमें पडी रहती है अथवा आंतरोंके रस्ते दस्तमें निकल जाती है, पित्तकी नलीमेंसे निकली तो वहोत दरद करती है, कलेजेमें शूल जेसी पीडा होती है, रोगी तडफडता और पुकारता है, ? ठहरकर दरद उठता है, उलटी होती है, दस्तकब्ज रहता है, पथरी पित्ताशयमें जाय अथवा आंतरोंमें जाय तो दरद नरम पडता है अगर जो नलीमें अटकर रहे तो आखिर पित्ताशयमें पित्तका भराव होकर कामला होता है, और वेगे मरजाता है (इलाज)– गरम पाणीका मेह अफीमकी पोल्टिस अफीम तथा वेलाडोना लिवाकर लगाना दरद वहोत होय तो ईथर अथवा क्लोरफार्म सुंघाना गरम पाणी पिलाकर उलटी करानी आंतरोंमें गये पीछे जुलाब देकर दस्तके रस्ते निकालदेनी

(कामला)-पित्ताशयका पित्त आंतरोंमें नही जाता है, पीछा खूनमें दाखल होता है तब कामला होता है, अथवा पित्त पैदा करनेकी क्रियाका अटकाव होनेसें खूनमें पित्त वढता है कलेजाके आगे कहे रोगोमें कमला होता है पित्त जादा पैदा होनेसें और मलकी कब्जीसेंभी कामला होता है इसके सिवाय चिंता डर दिलगीरी फेफसा मगज तथा रक्ताशयके रोग अजीर्ण बुखार सापका डंक तथा दुसरे जहर ए सब कामला (पीलिया)का कारणरूप है खूनमें पित्तका वढना उसका नाम पीलिया रोग है, (लक्षण)–वदनमें पीलापना ए कामलाका प्रगट लक्षण है ये पीलापणा पहली आंखमें पेशाबमें नखमें और पीछै चामडीमें दिखाई देता है सुस्ती आलस वेचेनी कलतर शिरका दुखणा दस्तकी कब्जी और खुजली ए उसके दुसरे चिन्ह हैं कमला वहोत वढ जाता है तो सब वदन हलदी जेसा हो जाता है रोगी स्त्रीका दूध तथा आंसूभी पीला होता है, कपडेके पीला दाग लगता है, पेशाव पीला केसर जेसा लाल कालाभी होता है दस्तसुपेद कब्ज वायू डकार अपचा अरुचि और किसी २ वख्त दस्त उलटीमें या नाकमेंसे खूनभी गिरता है.

(इलाज)– १ दस्त खुलास आवै एसा इलाज करणा पहली दूध या घी पिलाकर दस्त देना २ त्रिफलाके उकालामें सहत डालकर पीना ३ गोमूत्रमें शिलाजीत अथवा सोराखार लेना ४ कडवे नींवकी छालका उकाला सहत डालकर पिलाना ५ त्रिफला दारुहलदी कडवानींव तथा गिलोय इसमेंके किसीभी दवाका अंगरस सहत डालकर पीना ६ कुटकी सर्वोत्तम इलाज है, इसका क्वाथ नवसादर तथा विलायती निमक डाल पीना ७ नवसादरभी कामलेका सर्वोत्तम इलाज है, नं० (६२६) (६२७) तथा ६२८ का मिक्श्चर कामल है, ९ तेसे नं० (७०७) तथा ७०८ का हकीमीनुसके फायदेवंद है १० त्रिफलादि क्वाथ नं० २११ अच्छा फायदा करता है.

(होमियोपथिक इलाज)–१ एकोनाइट–बुखारके संग पीलियेका अच्छा इलाज है, २ आर्सेनिकम आंख पीली दस्त अपचा वेचेनी प्यास ३ केलकेरियाकार्ब (यकृत्की वटोतरी) उसमें दरद दस्त मट्टी जेसा पेशाव काला तथा पीलाईलियेशांखा ४ आयोडाईन–चहरा पीला दस्त सुपेद पेशाव काला तथा पीलाईलिये पुराना कामलेमें ५ पोडोफाइल म) पित्तकी कांकरी अटकी भई पीलियेका इलाज–(विशेष सूचना)– भारी छाछ दाल-और खटाई और चीकना खुराक घी तेल वगेरे चरवीवाला पदार्थ और नशेका परहेज रखणा पांडू रोगमुजब पथ्यापथ्य रखणा कामलामें लोक दूध खानेकी मनाइ करते हैं. लेकिन् उसका कोइ कारण नहीं पाया गया माफकसर थोडा दूध खानेमें कोइ तकलीफ नहीहै (यकृत्के तमाम रोगोंका सामान्य इलाज) यकृत्के सब रोगोंमें दस्तकी कब्जी होती है, इसवास्ते दस्तका खुलासा रहे एसा इलाज सरू करणा दस्तकी कब्जी नहीं

होय तोभी आणेकी दवा देनी २ निसोतकूं उकाल उसमें एरंडीका तेल तथा दूध मि-
ळ पिलाना अथवा इकेली निशोत पाणीमें पीस दूधमें पिलाना अथवा फकत एरंड
दूधमें पिलाना ३ करमालाके गिरमें दूध डाल उकालकर पिलाना ४ कुवारका रस
हलदीका चूर्ण मिलाकर पिलाना ५ जौ हरडे तथा लाल रोहींडेका काथ जवखार तथा
पीपरका चूर्ण डालकर फजरमें पीना.

कृमि-चूरणिये-गिंडोले-वर्मस.

(निदान) कृमियोंके गिरनेसे वदनमें जोजो विकार होते हैं, उसका बयान बडा भयंकर है, लेकिन् लोक इस बेमारीकू साधारन समझते हैं, देशी शास्त्रमें और डाक्टरीमें इस रोगका बहोत निर्णय किया है सो बहोतसी सूक्ष्म बाते समझने जेसी है, लेकिन् इस जगे संक्षेपसे उसका बयान करते हैं (प्रकार) कृमिकी मुख्य दो जात है याने बाहरकी जूं लीख चमजू वगेरे (और अभ्यंतर कृमि) याने बदनके अंदरकी तांतू जेसे गोल चपटे कृमि २० से ३० फीटतक लंबी होती है, इसमें कितने तो कफमें कितनेक खूनमें और कितनेक मलमें पैदा होती है (कारण)-बहारकी कृमि बदन तथा कपडेके मेल गलीचपनेमें होती है और अंदरकी कृमि अजीर्णमें खानेवालेकूं मीठा तथा खट्टा पदार्थ खानेवालेकू पतला पदार्थ खानेवालेकूं आटा गुड मीठा मिले पदार्थ खानेवालेकूं दिनमें नींद लेनेवालेकूं विरुद्ध अन्नपान बहोत वनस्पतीकी खुराक बहोत मेवा दुध्यादिमें रोग प्रगट होता है बहोतसी नखत कृमियोंके इंडे खुराकके संग पेटमें चले जाते हैं और आंतरोंमें उनका पोषन होनेसें उनोंकी बढोतरी होती है लक्षण-बाहरकी जूं तथा लीख प्रत्यक्ष दिखती है, और चमडीदरद दोडे फोडे खुजली फुनसी गडगूमडए उसके प्रत्यक्ष चिन्ह है.

(फकमे) पैदा भये कृमिमें कितनेक तो चमडेकी बडी डोरी जेसे कितनेक अनानके बहुत जेसे कितनेक बारीक और लंबे कितनेक छोटे होते हैं, कितनेक सुपेद और कितनेक लाइसके होते है. उसकी ७ जात है उससे गोल मूंमेसे लाल अपचा अग्नि मूत्री उलटी डकार पेटमें आफरा खांसी ठीक श्लेष्म ए उसके लक्षण है, खूनमें होनेवाले ६ प्रकारकी कृमि खूनमें होती है, और सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देख सकते है, उनोंमें दुष्ट याने चमडीका दरद होता है, विष्टामें याने दस्तमें होनेवाली कृमि गोल महीन तथा लाली लिये सुपेद पीली लाली तथा बहोत कालीभी होती है, उसकी पांच जात है तो कृमि नव दो गांठके मालुम होती है. नव दस मोटा मलका अटकाव बदनमें दुबलपणा खांसी उलटी मिचलीका मालुम होना मंदाग्नि तथा पेटकमें खुजाल होती है, कृमि जिस वखते बाहेर होती है, उनोंकी कृमिसे भूख जाती रहती है, अथवा सब दिन भूख लगती रहती है, पानीकी प्यास नाकबसना पेटमें दरद मूंमे पाणी बहतो उसके

चैनी अनिद्रा गुदामें काटै दस्त पतला आवै उसमें कृमियें गिरे किसी वखत मूंमेसे थोडा बुखार वकना वच्चा नींदमें दांत पीसै झवक उठै और हिचकी खेंचातानभी होवै ; रोगके ऐसे २ लक्षण होते है, सो वाजे वखत वैद्यया डाक्तरभी निश्चै नहीं कर २ हैजा मिरगी और दिवानापना इत्यादि रोगभी कृमिसें पैदा होजाते है—

(इलाज)—गोलकृमि—१ सेन्टोनाईन सादा और अच्छा इलाज है, ऊपर मुजव से ५ ग्रेन दवा मिश्रीके संग रातकूं देनी और फजरमें थोडा एरंडी तेल पिलाना तव : स्तमें कृमियां निकल जायगें पेटमें जादा कृमियोंकी शंका रहे तो एक दो दिन वाद फे रभी इसीतरे करनेसें सव कृमियें निकल जाते हैं, वच्चोके दो तीन दिनमें ९० से १०० तक कृमियें निकल जाते हैं, कितनेक लोक एसा मानते हैं के कृमिकी कोथली निकल जाती है, तो वच्चा मरजाता है, लेकिन् ये वात वहमकी है, सेन्टोनाइनके वदले वजारमें लोझेन्जीस याने गोल चिपटी टिकडियें विकती है, उसमें सेन्टोनाइनके संग वूरा तेसें क्यालोमेलभी मिलाया भया होता है, उसकूं वच्चे मिठाइ समझ खा जाते है, वो देना. (२ क्यालोमेल)—इकेला अथवा इसके संग सेन्टोनाइन तथा सोडा मिलाकर देना ३ स्कैमनी—जालप रुवार्व एरंडी तेल निशोत—ए सव जुलाव आनेवाली चीजोके संग कृमि-कूंभी वाहिर निकालती है, पहली जालप वगेरे तीन दवा सामिलकरकेभी दीजाती है, ४ टरपेन्टाईन—कृमिकूं गिराती है, मात्रा ४ द्राम उसके संग एरंडी तेल ४ द्राम गूंदका पाणी ४ द्राम और सोवेका पाणी १ औंस मिलाणा ५ अनारके जडकी छाल १ तोला चूर्णकर आधा फजर आधा सांझकूं वूरेके संग फाकना दुसरे दिन विलायती निमकका जुलाव लेना ६ वायविडग—कृमिका अछा इलाज है, वायविडग २ वाल निशोतके छालकी भूकी १वाल कपीला १वाल इनोकों १औंस ऊकलते जलमें पाव घंटे भिगाकर इसका नितरा भया पाणी दोदो चमचे तीन २ घटेसे दो तीन वखत देना इससे कृमि निकल जाती है, वुखारमें ए दवा नहीं देनी—चपटी कृमि—७पहली जुलाव देना पीछे क्यालोमेल देना फेर जुलाव देना ८ मेलफरका तेल आता है, उसकी ३० या ४० वूंद सूठके जलमें देना और ४ घटे पीछै एरडी तेल अथवा जालपका जुलाव देना—तांतूजेसी कृमि—९ क्यालो-मेल तथा सेन्टोनाइन देनेसे निकल जाती है, लेकिन् वेर २ होजाती है, इसवास्ते निम-कके पाणीकी कपासियोके पाणीकी अथवा लोहेका अर्ककी और पाणी मिलाकर उसकी गुदामें पिचकारी मारणेसें कृमि धुपकर निकल जाती है, १० निमक ॥ से १ द्राम मीठे जलमें ३।४ औंसमें गुदामें पिचकारी मारनी इससे कृमि सव निकल जाती है ११—पिचकारीकेवास्ते इसके सिवाय चूनेका पाणी टिंकचर ओफ स्टील अथवा इसके वदले सितावके पत्ते वाफकर या पीसकर किया भया पाणी इसकी पिचकारीभी फायदा करती है, हमेस पिचकारी मारनी और ३।४ दिनसे जुलाव देना—(दुसरे इलाज) १२ पला-सपापडेकी भूकी । तोला वायविडंग । तोला छालमें मिलाकर दुसरे दिन जुलाव देना

१३ कोच फलीके रू दूधमें घोकर पिलाना और दुसरे दिन जुलाब देना १४ पलासपापडा तथा काली जीरी १५ डीकामाली (कीडामारी) पाणीमें पीसकर पिलानी १६ वायविडंगके काथमें वायविडंगका चूर्ण डालकर पिलाना अथवा सहतमें चटाना १७ पलासपापडेकू जलमें पीस सहत डालकर पिलाना १८ कपीला आधे रुपेभर तथा गुड १९ वायविडंग इंद्रजव उसकूं शेकके किया भया चूर्ण २० नींबके पत्तोंकों वाफा भया रस सहत मिलाकर पिलाना २१ त्रिफलादि काथ नं २१० कृमि तथा कृमिसे भये सब विकारोंकों मिटाता है, कृमिसें खून विगडकर वदनपर गडगूमड तथा पककर फूट जाता है और रोगी भयंकर स्थितिमें आ जाता है, इस काथका बहोत दिनोंतक सेवन करनेसे रोग जडसे जाते रहता है, २२ कृमि निकल गये पीछे बच्चेकी तनदुरस्ती सुधारनेकूं टिंकचर ओफ स्टील बूंद १० एक औंस जलमें कितनेक दिनोंतक पीना.

(विशेष सूचना)-(पथ्य) तिलका तेल तीखा और कडवा पदार्थ निमक गोमूत्र सहत हींग अजवाण नींबू लसन कफनाशक तथा रक्त शोधक पदार्थ अछा है,-(कुपथ्य) दूध मांस घी दही पत्तोंकाशाक खट्टा तथा मीठा रस और आटेका पदार्थ ए कृमि हूं बनानेवाले हैं, कृमिवाले बच्चेकूं रोटी देना होय तो निमक डाल तेलसे तवेपर तलके देनी बहोत अछी है, क्योंके तेल और करडा पदार्थ फायदेवंद है, इसवास्ते कृमियोंके इंडे जादा करके पत्तोंके शाग तथा फलोंपर लगे रहते हैं, इसीवास्ते पत्तोंका शाग विना तापमें खानेमें जैनशास्त्रार्थ मांस खानेका दोष कहते हैं, मूल कारण यही है, और फलादिक वनस्पति खानेमेंभी दोष हिंसा और रोगकाही सिद्धप्रमान है, क्योंके देशीलोक बजारमेंसे शाग फल लाकर विगर धोये देखे विगर काममे लेते हैं, लेकिन् उसमें कितना नुकसान है सो नही जानते जीवोंके इंडे तथा जीव प्रथम तो पेटमें आंतरोंमें जाता है, दुसरे ए जीव गलके मुसाफरी करने निकलते हैं, तब एक वदनसे दुसरे के वदनमेंभी चाले जाते हैं इस जातकी मादा बडी मुसाफरण होती है सो इनाभी दुसरेके वदनमें भर देती है इसीवास्ते संग सोना और मग भोजन करना उसमें एक तो सफाई दुसरी रोगादिके अनेक जरुरी कारण आये भये हैं, जैनशास्त्रकार जूं चमजूंके तो इंद्री और पेटमें सूक्ष्मसेभी बेसंमें जनुवोंको दो इंद्रीवाला जीव मानते हैं, इसवास्ते नपुसक है, गर्भादा इनोंमें नही होता लेकिन् इन जीवोंका समान तो ऊपर लिखेमुजब अछा है इनोंकी उत्पत्तिमें जोनी उभीकिम्म है, विछोनेपर सोना और संगसाथी मग सोना वगैरा इसीवास्ते बहोत फायदेके वास्ते मना करता है, इस अपेक्षाअछी तरे बालकके ऊपरमें सूक्ष्म अन्यका बचादिकका नियम छूने और बालकके वास्ते जो चीजें मना करी है, उन बेसंके बचोंमें और पुरुषके दुर्गंधके परमाणु तथा ए जीव आवे जावे करे है, और हाथमें परमाणु उड जाते हैं, इस बातोंको बहोतसे मुसलमान नहीं मानते तो नहीं मानो तो क्या हो क्या.

अर्श हरस मस्सा ववासीर.

पाइल्स.

(वैठक गुदा)के आसपास कोरपर अथवा सफरेके अंदर महींनशिराओंका जाल फूलकर वधणेसे जो मस्सा होता है, वो हरस ६ प्रकारका है न्यारे २ तीनों दोषोंका तीनो दोष सामलका खूनका और औलादमें उतरणेवाला हरसकी मुख्य जाति २ दोय है, वाह्यार्स याने वाहरका अर्स जिसके मस्से आंखोसे दिखाइ देते और हाथ लगाणेसे भी मालम दै और अंतरार्स याने सफरेके अंदरका मस्सा उसमेंसे खून गिरता है, वाहिरके मस्सेमेंसे खून नहीं गिरता किसी २ के अंदरके मस्सेसेभी खून नहीं गिरता कफके मस्सेमेसें चिकणासा पाणी गिरता खून नहीं गिरता।

(कारण) सव दिन वैठै रहणा थोडी महनतकर वहोत खुराक खाणा वहोत मसाला वापरणा तेज दारू पीणा वहोत गरम या वहोत ठंढा पदार्थ खाणा हमेसकी कव्जी वेर २ सख्त जुलावका लेणा औरतोंकै गर्भका दवाव कलेजा तिल्ली गांठ संग्रहणी वगेरे रोग ये सव मस्सेके कारण है थोडेमें समझणाके जठराग्नि मंद पड जाणेसें अथवा पाचन क्रिया विगडणेसे जो जो रोग होते हैं वो सव रोग मस्सेके कारण है।

(लक्षण) वाहरका हरस–मलद्वारकी कोरपर होता है पहली चमडी सामिल होकर फेर वढकर मस्से जेसे होते हैं, सिकलविल्लीके स्तन जैसा कदमें छोटे और वडे भी होते हैं छोटे होते हैं तव जादा दरद नहीं करते जरा खुजली तथा गरमी मालम देती है, वडे होणेपर दरद करते हैं वैठक सव दुखती है ये पकके फूटते हैं अथवा खून जमकर मस्से पक्के पडे वाद शांत पडते हैं–(अंदरका हरस)–गुदामें खाज खुजली चटपटी लगे आगवले दरद होय दस्तजातेकरांजे दस्तकव्ज वंधा भया आवे उस वखत पुकारे इतना दरद होय सफरा घसणेसे मस्सेमेंसे खून गिरे दस्तमें करांजणेसे सफरेका रस पुडतखें चीज कर वाहर आता है और किसी वखत सव रश पुडत याने कांच निकल आती है अथवा नसोंके न्यारे २ गुछै वाहर आतै हैं सफरेके दरदसे कमरमें पेडूमें और जांघमे वेचेनी कलतर होती है, खून गिरे पीछै मस्से नरम होते हैं, और रोगीकू चैन पडता है अगर खून वेर २ और जादा पडे तो रोगी एकदम सिटा जाता है, चेहरा फीका पडता है, और चक्कर आता है, हरसका खून लाल किरमची रगका होता है, वूंद २ अथवा धारसीर छुटती है। (इलाज)–जिस कारणसे हरसकी उत्पत्ति भई होय वो कारण रोकणेका इलाज करणा और दुसरा इलाज हरसके मिटाणेका करणा दस्त नरम पतला तथा साफ आवै एसा इलाज करणा।

(२ छाछ)–मस्सैका वहोत अछा इलाज है, खट्टी छाठमें सींधा निमक मिलाकर वो खुराकके संग लेणा उससे वादी तथा मलकूं रस्ते लाती है, ताकत रग और अग्नि

वढाती है (३ सूरण)–मस्सेका एसा ही पका इलाज सूरण कंद है सूरणकूं युक्तिसे सेवन करे तो हरसकी जड जाते रहती है, सूरणका शाग सूरणकी पुडी सूरणके लड्डू शीरा वगैर वपसकता है, लघुसूरण मोदक तथा वृहत्सूरण मोदकमें मुख्य भाग सूरणका आता है (४ नाग केशर)–खून गिरता होय तो उसकूं रोकणेमें अछा है, नाग केशरका चूर्ण मिश्री मक्खनमें चटाणेसें खून बंध हो जाता है (५ भीलावा)–मस्सेके रोगमें वहोत फायदे बंद है लेकिन् प्रकृति मोशम और पथ्यापथ्यका विचार करके देणा चाहिये तिल मिलावा हरडे और गुड समवजन लेकर लाडू करणा शक्ति मुजब देणा (६ हरडे)–जौ हरडे और हरडेका सेवन वहोत फायदेवंद है दस्त साफ आता है, गुडके संग या छाछके संग देणा ७ (मस्सेके रोगपर करणे लायक शांत इलाज) रगतचंनण चिरायता लाल धमासा मोथ दारू हलदी तज वाला और नीमकी छाल इनोका काथ खूनकूं बंध करता है ८ मक्खण और तिलखाणेका अभ्यास रखणा अथवा थर विगरका दही खाणा इससे भी खून बंध होता है, ९ छोटी इलायची दाणा तज तमालपत्र नाग केशर मिरच पीपर सूंठ ये वृद्धि भागसे लेणा जेसे इलायची एक भाग तज २ भाग इनोके सम वजन मिश्री खानेसे हरस मंदाग्नि गोला आफरा अरुचि श्वास गलेका और छातीका रोग मिटता है (१० गंधकके फूल २ औंस क्रिमओफटार्टर ४ द्राम महत और नारंगीका शरबत २ औंस मिलाकर उसमेसे दरटंक १ द्राम चाटणा) ११ कवाबचीणी २ तोला मिरच ½ तोला सहत २ तोला सोवा १ तोला माखा आधा कोनर १२ मिश्री तोला १५ सूरण ५ तोला सुपेद चिरमी तोला १ सोवा तोला १ इनोका चूर्ण सहत अथवा मक्खणमें मात्रा १ द्राम ।

(बादरका इलाज) १४ ठंडा पाणी अथवा ठंडे पाणीका पोता रखणा १५ मिफलोके उकाळीमें कपडा भिगा कर पोता भरणा १६ मांजू १ तोला अफीम ॥ तोला मक्खण और माखा मक्षम २॥ तोला इनोका मक्षम अंदर और बाहिर लगाणा १७ हीराकशी १२ रती और ३ तोला पाणी उसकी रातकूं पिचकारी मारणी १८ फिटकडी अथवा मांजू कूट २ रती पाणी १ औंस इसकी पिचकारी लगाणी १९ टिंकचर ओफस्टील २० बूद पाणी २ तोला पिचकारी लगाणी इस इलाजोंसे मस्सेका खून बंध होता है और मस्सेमें सड न गया होय तो वोभी निकल साफ हो जाता है २० नं० २०७ इसमें दह मिलाकर गुदेमें धरणा–होमियो पथिक इलाज–१ इक्युलसहीप–सूके मस्सेमें वहोत फायदेवंद है २ आर्सेनिकम–जलनेवाला और चटकाला मस्सेमें उपयोगी है ३ वेरा टेरा–खून गिरनेवाले मस्सेमें अछा है, इसके सिवाय कोलिन्सोनिया टेमालीस अलाइटीन वगैर दूसरे मस्सेमें फायदेवंद है ।

(विशेषसूचना)–कब्ज तथा दाह करनेवाला मुखक मागा नही दस्तकी कब्जी को

एसा खुराक और दवा खाणा नहीं दस्त साफ आवै एसी दवा और अग्नि प्रदीप्त करणे वाला खुराक तथा दवा लेणी मस्से काटणेका इलाज अणघड ले भग्गू फिरणेवालोंके फंदेमे आके खराव होणा नहीं क्योंके मूरखोंके काटणेसें हमने वहोतोंके नुकशान भया देखा है।

(हितशिक्षा)–रोगोंकी संख्या और कारण वांचे पीछै समझमें आ जायगीके पाचन क्रियाकै विकारसे जितना रोग होता है इतना दुसरे किसीभी कारणसें होता नहीं शरीरकी आरोग्यता पाचन क्रियाके आधीन है और पाचन क्रियामें केसे २ विकार होते हैं वो सव इस प्रकरणमें रोगोंका नाम तरे २ के कारण लिखा है सो वांचणेवाले अछी तरे समझेंगे कुदरती हवा और स्वभावसे मोशमका वदलणा इसपरभी कितनेक रोगोका आधार है उसकूं अलग याने वाद कीये जाय तो पाचन क्रियाकी जादा खरावी आहार विहार संवंधी इसमें पुरुषोंकी अज्ञानता मूर्खता और गफलतके लिये रोग होता हैं सो हमने इस ग्रथकी दुसरी किरणमें अछीतरे समझाया है और फेर इहांभी लिखते है के मनुष्यके शरीरमें मूंसे गुदातक एक लंवा नल है इस नलकूं अपणे पाचन क्रियाका संचा कह सकते हैं क्योंके मूंकी वारीमेंसे खुराक दाखल होकर गुदाकी वारीमेसें वाहिर निकलता है लेकिन् वाहिर आणेके पहली उस खुराकपर वहोतसी क्रियायें गुजरती है इन सव क्रियायोंका आखरी नतीजा खून और शरीरका पोषण है जव पाचन क्रिया वरावर होती है तव खून वरावर साफ पैदा होकर वदनकू अछा पोपण करता है जो उसमें कुछ विकार होता है तो खूनमेंभी विकार होता है खून कम या जादा नाताकत या ताकतवर विगडणा या शुद्ध होणा ये सव काम पाचन क्रियाके तालुक है लेकिन् आहार विहारके वावत जो आगे नियम लिखा है उस मुजव नहीं चलणेसे पाचन क्रियाका ये संचा विगडता है तव उस संचेमें पैदा होणेवाला शरीरका जीवनरूप खून कम होता है अथवा विगडता है खान पान विपरीत होणेसें पित्त विगडता है पित्तका काम पाचन करणेका है इसवास्ते पाचन दुरस्त होता नहीं तव वायु जोर करती है अजीर्ण होता है दस्तकी कव्जी होती है और आंतरोमें मलका भराव होकर संचा ठसोठस भर जाता है अज्ञान लोक इस वातोंसे नावाकिफ खुराक तो हमेस धके लेइ जाते हैं वहोतसे लोक येही कहते हैं जहांतक खाता पीता है कभी नहीं मरेगा जो जी माने सो खाणा लेकिन् ये खुराकका आगे क्या हाल होता है इस वातकूं वो लोक कुछ नहीं जाणते पाचनक्रियाका संचा मलसे भर जाणेसे और अग्नि वुझ जाणेसे खुराक वरावर नहीं पचणेसे जव नीचेके वडे आंतरेमें भर जाणेसे उसका संग्रह होता है तव एसा हाल होता है छोटे आंतरोमें जोके खून चढणेकी क्रिया होती है उसमेंसे मल अथवा वेका मल कूचोकू वडे आंतरोमें उतरणेकी जगा चहिये इतनी जगा नहीं मिलणेसें छोटे

आंतरेमेंभी मल भर जाता है जो निरुपयोगी पदार्थ शरीरके बाहर निकल जाणा चहिये एसे विकारी पदार्थभी अंदरही भरके रहता है तब उसमेंसे सडणा सरू होता है तब उस सडेमें कीडे और कृमियोंकी पैदास होती है उसमेंसे कृमिजन्य अनेक रोग पेट और सब वदनमे हो जाते हैं आंतरे मलसे पूरे भर जाणेसें उसमेंसे सूजन होती है पीछे सडते हैं और उसमें जखम पडता है होजरी सह नही सकै एसा भारी खुराक अथवा दाह करणेवाला खान पान उसमें पडणेसे वोभी विकारकूं प्राप्त होते हैं और विकार पाया भया होजरीका रश छोटे आंतरोमें गये पीछै उसका जो खून होता है वो भी विकारवालाही होता है होजरीमें खटास अथवा पित्त वढता है तो उस जगेभी वरम होता है जखम गिरता है उलटी होती है इसतरे पाचनक्रियाका सब संचा विगडता है तब सुधारणेके वास्ते विचारा अज्ञान लोक वैद्य डाकतर और उनोंकी दवा पर भरोसा रखते हैं, लेकिन् जहांतक वो लोक इस संचेकी क्रियाके अजाण है तहांतक वैद्य या डाकतरोंकी दवा कभीभी उस रोगकूं मिटा नहीं सकती इसवास्ते जिस कारणसे संचा विगडता है उस कारणोंकों पहली रोकणा चाहिये जितना कुपथ्य संबंधी इंद्रियोंने मजा और स्वाद लिया होय उतनाही निग्रह (याने तप) ज्ञानसे किया जाय सो तो सकाम निर्जरा और अज्ञानपणे पांचो इद्रियोंके स्वादसे वचणा जेसें वैद्यके कहे मुजब घरवाले खाणे पीणे कुपथ्य नहिं देवे सो परवशतापणे कर निग्रह याने अकामनिर्जरा, कर्मपूर्व बद्धकूं जीव दो तरे खपाता है जिसमें अकाम निर्जरासे कर्म खपाणेसें अज्ञानपणेकर फेर जीव समय २ कर्म बांध लेता है और ज्ञान तपसे नहीं बांधता है इसवास्ते कर्मोंके कडवे फल समझके पूर्वकृत दुष्कर्म वेदनाकूं मिटाणे ज्ञान संयुक्त पथ्य याने तप आचरे इछाकूं रोकणा उसका नाम तप है वस्तु हाजर रहते उसका उपभोग नहीं करणा उसका नाम तप कहो पर्याय नामसे पथ्य भी हो सकता है रोग जरूर मिटता है वीर प्रभूने तपके (पथ्य) के अनेक भेद दिखलाये हैं इस तपसे याने इंद्रियोंके विषयोंकों रोकणेसे निश्चै प्रदेशबंध रोग मिटता है।

किरण ५ मी.

मूत्राशयसंबंधी रोग.

मूत्राशयमें फक्त गुरदा और वस्ति आया भया है इस किरणमें मूत्राशयके तमाम रोगोंका समावेश किया भया है विशेष करके मूत्राशयका रोग शारीरक है और मूत्र मार्गका रोग आगतुक याने कोईभी बाहरके दुष्ट स्पर्शके चेपसें प्राप्त भये होते हैं।

धातुश्राव.

स्पर्मेटोरीआ.

वेश्यामें धातू जाता है ये बात आजकल जादा देखणेमें आता है दुसरी येभी बात

है धातु और वीर्य शिवाय दुसरी चीजोंभी पेशावमें जाती है उनोंकों भी लोक धातु और वीर्यही कहते हैं पेशावमें जाते जुदे २ पदार्थोंके नाम इस मुजब है १ प्रमेहके पदार्थोंमें जो सुपेद पदार्थ जाता है वो धातु नहीं लेकिन् पीप है अंदर जखम पडणेसें पीप वहकर वाहिर आता है इसवास्ते धातुस्रावसे जुदा रोग गिणना २ पथरीके रोगमें मूत्राशयके अंदरका श्लेष्म पदार्थ मूत्रके संग वाहिर जाता है वो पथरीके रोगके साथ संबंध रखता है लेकिन् धातु नहीं होता ३ पेशावमें चरवी जाती है वोभी प्रमेहकी एक जाति है जिसकूं वसामेह कहते हैं लेकिन् वोभी धातूका जाणा नहीं, ४ डाकतरोंने रसायणिक प्रयोगसे निश्चै किया है के इसके अलावा पेशावमें एक सुपेद पदार्थ और भी जाता है वो फोस्फेट नामका एक क्षार पदार्थ है ५ धातू जो वीर्य गिरता है पेशावके आगे या पीछै या स्वप्नेमें और भीके इतरे धातू जाया करता है ऊपर लिखे पांचो पदार्थ पेशावमें जाता है उसकूं लोक धातू जाणा कहते हैं लेकिन् वो जुदे २ पदार्थ है और उनोका इलाजभी लोक प्रायें धातूस्रावकाही करते हैं जो कभी अछी तरे परीक्षा कर इलाज करणेमें आवै तो तुरत इलाज हो सके लेकिन् इसमें कितनीक सूक्ष्म वातोंकी परिक्षा करणी होती है, जो इतनी वारीकीका विचार नहीं वण सके तो इन सव विकारोंपर सामान्य इलाज कितनेक दरजे चलसकते हैं.

(कारण) विषयमें वहोत चित्त रखणेसे वांचणेसे या सुणनेसे वहोत गरम खानपानसे और वीस वर्षकी ऊमर वाद वीर्यका स्वभाविक वेगकूं रस्ता नहिं मिलणेसे धातू पेशावके आगे पीछै स्वप्नेमें दस्त पेशावकी वखत करांजणेसे हथ रस वगेरेके कुटेवसे वीर्यकी नसों ढीली हो जाणेसें कितने एकोंके धातू झरणे लगजाता है.

(लक्षण) पेशावमें अथवा स्वप्नेमें जव धातू जाता है, तव नाताकती आती है, मन फिकर वंद रहता है, हाथपांवोमें कलतर (फूटणी) होती है. यादशक्ति कम पडती है. छातीमें धडका चलता है, भूक मद पडती है शिर दुखता है चक्कर आता है शरीर गलते जाता है, क्षय मिरगी वाईटे अथवा दिवानापणा वगेरे डरावणे रोग धातूके जाणेसें वहोतसी वखत पैदा होते हैं नामरदी संतानका अभाव भी होता है.

(इलाज) १ जिस कारणोंसे धातू जाणा सरु भया होय वो कारणोको वध करणा २ दस्तका खुलासा धातू गिरणेकू वंध करता है इसवास्ते हरडेका चूर्ण अपनी तासीर तथा दोषोंके जोर मुजव हमेस लेणा तेसें सोनामुखी त्रिफला कोलोसिंथ रुवार्व वगेरे दवा भी दस्तके खुलासा वास्ते लिये जा सकता है ३ ठंडे जलसे सिनान अथवा कमरतक ठंडे पाणीमें थोडे मिंटोतक वैठणा शिरपर ठंडा जल जरूर डालणा छेया सात घटेसे रातकू जादा नींद लेणी नहीं सादी किये मरदकू अपणी औरतके पास रहणा इससेभी वीर्यका गिरणे वंद होता है, ४ फोस फारस लोह और कुचीलेकी वनावटी गोलीमेंसे किसीभी

आंतरेमेंभी मल भर जाता है जो निरुपयोगी पदार्थ शरीरके बाहर निकल जाणा चहिये एसे विकारी पदार्थभी अंदरही भरके रहता है तब उसमेंसे सडणा सरू होता है तब उस सडेमें कीडे और कृमियोंकी पैदास होती है उसमेंसे कृमिजन्य अनेक रोग पेट और सब वदनमे हो जाते हैं आंतरे मलसे पूरे भर जाणेसें उसमेंसे सूजन होती है पीछे सडते हैं और उसमें जखम पडता है होजरी सह नही सकै एसा भारी खुराक अथवा दाह कर-नेवाला खान पान उसमें पडणेसे वोभी विकारकूं प्राप्त होते हैं और विकार पाया भया होजरीका रस छोटे आंतरोमें गये पीछे उसका जो खून होता है वो भी विकारवालाही होता है होजरीमें खटास अथवा पित्त वढता है तो उस जगेभी वरम होता है जराम गिरता है उलटी होती है इसतरे पाचनक्रियाका सब संचा विगडता है तब सुधार-णेके वास्ते विचारा अज्ञान लोक वैद्य डाकतर और उनोंकी दवा पर भरोसा रखते हैं, लेकिन् जहांतक वो लोक इस संचेकी क्रियाके अजाण है तहांतक वैद्य या डाकतरोंकी दवा कभीभी उस रोगकूं मिटा नहीं सकती इसवास्ते जिस कारणसे संचा विगडता है उस कारणोंकों पहली रोकणा चाहिये जितना कुपथ्य संबंधी इंद्रियोंने मजा और स्वाद लिया होय उतनाही निग्रह (याने तप) ज्ञानसे किया जाय सो तो सकाम निर्जरा और अज्ञानपणे पांचो इंद्रियोंके स्वादसे वचणा जेसें वैद्यके कहे मुजब घरवाले खाणे पीणे कुपथ्य नहिं देवे सो परवशतापणे कर निग्रह याने अकामनिर्जरा, कर्मपूर्व वद्धकूं जीव दो तरे खपाता है जिसमें अकाम निर्जरासे कर्म खपाणेसें अज्ञानपणेकर फेर जीव समय २ कर्म बांध लेता है और ज्ञान तपसे नहीं बांधता है इसवास्ते कर्मोंके कडवे फल समयके पूर्वकृत दुष्कर्म वेदनाकूं मिटाणे ज्ञान संयुक्त पथ्य याने तप आचरे इछा रोकणा उसका नाम तप है वस्तु हाजर रहते उसका उपभोग नहीं करणा उसका नाम तप कहो पर्याय नामसे पथ्य भी हो सकता है रोग जरूर मिटता है वीर प्रभूने तपके (पथ्य) के अनेक भेद दिखलाये हैं इस तपसे याने इंद्रियोंके विषयोंकों रोकणेसे निश्चे प्रदरवंध रोग मिटता है ।

किरण ५ मी.

मूत्राशयसंबंधी रोग.

मूत्राशयमें फक गुल्दा और वस्ति आया भया है इस किरणमें मूत्राशयके तमाम रोगोंका समावेश किया भया है विशेष करके मूत्राशयका रोग शारीरक है और मूत्र मार्गका रोग आगंतुक याने कोईभी बाहरके दुष्ट स्पर्शके वेपसें प्राप्त भये होते हैं ।

धातुस्राव.

स्पर्मेटोरीआ.

वेद्यकमें धातु आता है वे बात आजकल जादा देखणेमें आता है दुसरी वेभी बा

है धातु और वीर्य शिवाय दुसरी चीजोंभी पेशावमें जाती है उनोंकों भी लोक धातु और वीर्यही कहते हैं पेशावमें जाते जुदे २ पदार्थोंके नाम इस मुजब है १ प्रमेहके पदार्थोंमें जो सुपेद पदार्थ जाता है वो धातु नहीं लेकिन् पीप है अंदर जखम पडणेसें पीप वहकर बाहिर आता है इसवास्ते धातुस्रावसे जुदा रोग गिणना २ पथरीके रोगमें मूत्राशयके अंदरका श्लेष्म पदार्थ मूत्रके संग बाहिर जाता है वो पथरीके रोगके साथ संबंध रखता है लेकिन् धातु नहीं होता ३ पेशावमें चरबी जाती है वोभी प्रमेहकी एक जाति है जिसकूं वसामेह कहते हैं लेकिन् वोभी धातूका जाणा नहीं, ४ डाकतरोंने रसायणिक प्रयोगसे निश्चै किया है के इसके अलावा पेशावमें एक सुपेद पदार्थ और भी जाता है वो फोस्फेट नामका एक क्षार पदार्थ है ५ धातू जो वीर्य गिरता है पेशावके आगे या पीछै या स्वप्नेमें और भीके इतरे धातू जाया करता है ऊपर लिखे पांचो पदार्थ पेशावमें जाता है उसकूं लोक धातू जाणा कहते हैं लेकिन् वो जुदे २ पदार्थ है और उनोका इलाजभी लोक प्रायें धातूस्रावकाही करते हैं जो कभी अछी तरे परीक्षा कर इलाज करणेमें आवै तो तुरत इलाज हो सके लेकिन् इसमें कितनीक सूक्ष्म बातोंकी परिक्षा करणी होती है, जो इतनी बारीकीका विचार नहीं बण सके तो इन सब विकारोंपर सामान्य इलाज कितनेक दरजे चलसकते हैं.

(कारण) विषयमें बहोत चित्त रखणेसे वांचणेसे या सुणनेसे बहोत गरम खानपानसे और बीस वर्षकी ऊमर बाद वीर्यका स्वभाविक वेगकूं रस्ता नहिं मिलणेसे धातू पेशावके आगे पीछै स्वप्नेमें दस्त पेशावकी वखत करांजणेसे हथ रस वगेरेके कुटेवसे वीर्यकी नसों ढीली हो जाणेसें कितने एकोंके धातू झरणे लगजाता है.

(लक्षण) पेशावमें अथवा स्वप्नेमें जब धातू जाता है, तब नाताकती आती है, मन फिकर बंद रहता है, हाथपांवोमें कलतर (फूटणी) होती है. यादशक्ति कम पडती है. छातीमें धडका चलता है, भूक मंद पडती है शिर दुखता है चक्कर आता है शरीर गलते जाता है, क्षय मिरगी वाईटे अथवा दिवानापणा वगेरे डरावणे रोग धातूके जाणेसें बहोतसी वखत पैदा होते हैं नामरदी संतानका अभाव भी होता है.

(इलाज) १ जिस कारणोसे धातू जाणा सरु भया होय वो कारणोंको बंध करणा २ दस्तका खुलासा धातू गिरणेकूं बंध करता है इसवास्ते हरडेका चूर्ण अपनी तासीर तथा दोषोंके जोर मुजब हमेस लेणा तेसें सोनामुखी त्रिफला कोलोसिंथ रुनार्ब वगेरे दवा भी दस्तके खुलासा वास्ते लिये जा सकता है ३ ठंडे जलसे सिनान अथवा कमरतक ठंड पाणीमें थोडे मिटोतक बैठणा शिरपर ठंढा जल जरूर डालणा छेया सात घंटेसे रातकू जादा नींद लेणी नहीं सादी किये मरदकूं अपणी औरतके पास रहणा इससेभी वीर्यका गिरणे बंद होता है, ४ फोस फारस लोह और कुचीलेकी बनावटी गोलीमेंसे किसीभी

ताकतवर दवाका सेवन करणा ५ आंवले आसगंध शतावर मुशली कौंचबीज तालमखाना मोलेठी गोखरू ये सब अथवा इनोंमेसें एक दो दवाका पौष्टिक चूर्ण दूध मिश्रीके संग पीणा अथवा पाक बणाकर खाणा खट्टा खारा वगेरे खानपान त्यागणा आंवले गोखरू गिलोय इन तीन चीजोंका चूर्ण घी तथा सक्करके संग चाटणा ७ शिलाजीत दूध डालकर पीणा ८ गऊका दूध उकाल उसमें गऊका दधि तथा बूरा डालकर पीणा ९ अफीम केशर जायफल वगेरे स्तंभन दवायें धातू जातेकूं बंध करता है, लेकिन् नसे वाली और मलस्तंभक होणेसें इसवास्ते हमेश लेणा अच्छा नहीं १० बहु फली अथवा गोखरू चमचस इनोकालुआब बूरा डालकर अथवा उंटीगणोंके बीजोंको कूटकर दूधमें भिजाकर मिश्री डाल चाटणा ११ आकारकरभादि चूर्ण (नं० ४२९) १२ मूसल्यादि चूर्ण (नं० २४१) आकोती (नं० २८१) १४ सालम पाक (नं० २७७) १५ ईसपूगल तथा गूदभी वीर्यके गिरणेकूं बंध करता है, (१६ अमृतवटी) धातूका गिरणा क्षीणता तथा नाताकती सबोंका श्रेष्ट इलाज है, दूधके संग.

(अंग्रेजी इलाज)

(१७) डाइल्युटेड फोसफोरिक एसिड ४५ बूंद टिंकचर ओफनक्सवोमिका ३० बूंद
कम्पाउन्डटिंकचर ओफ सिंकोना १॥ द्राम पेपरमिंटवाटर ३ औंस
एक लिकर ग्लास भरके दिनमें तीन बेर पिलाणा.

(१८) फासफेट आपशिंक २० ग्रेण डाइल्युटेड फोसफोरिक एसिड १॥ द्राम
टिंकचर ओफ स्टील १॥ द्राम पेपरमिन्टवाटर ६ औंस
एक लिकरग्लास दिनमें तीन बेर अछीतरे मिलाकरके देणा.

(१९) सल्फेट आफशिंक २० ग्रेण एकस्ट्राकटनक्सवोमिका ६ ग्रेण
हीराकसी २४ ग्रेण पीलरुवार्ब कम्पाउन्ड ६० ग्रेण
मिलाकर गोलियेकर एकेक गोली हमेस दोतीन बेर भोजनकर उपरसे देणी

(२०) पीलफासफारस ३० ग्रेण एकस्टाकटनक्सवोमिका ३ ग्रेण
रिडयुस्टआयर्न ३० ग्रेण क्वीनाइन ६ ग्रेण
मिलाकर १२ गोलियेंकर दर टंक भोजनकर एकेक दो दो देणी.

(होमियोपथिक इलाज) २१ पेशाबमें आलब्युमेन जाता होय तो एकोनाइट, आर्सेनिक, लाईकोपोडियम और एपोसाइनम वगेरे दवायें अजमाणी २२ जो पेशाबमें का इल याने चरबी जाती होय तो एसिड फोसफोरिकम अच्छा इलाज है, उससे फायदा नहीं होय तो केलकेरियाकार्ब और आर्सेनिकका इलाज करणा.

(विशेष सूचना) धातूके जाणेमें कितनेक लोक अफीम भांग माजम धतूरा सोमल दूरताल वगेरे कितनीक नुकशान करती दवायोंका साधन करते हैं जादा करके फकीर

जोगी सामी भगवें कपडे वाले एसी दवाओं देते हैं, और विचारे अज्ञान भोले लोक एसे धूर्तोंके जोगी, फक डोके, फदेमें फसकर तन और धनसें वरवाद होकर वुरे हवालेसे मरते हैं, वहोत लोकोंकी खरावी एसे लोकोंकी दवासे देखणेमें आई है और वावाजी आधीरातकूं ते ती सामनाते हैं, इसवास्ते विगर जाण पहचाण पैठ प्रतीति विगर भटकणेवाले वेवकूवोंका कभी विश्वास करणा नहीं फाफा मारकर अणघड लोकोंकी दवा तथा सल्ला लेणी नहीं किसी २ के उनोंकी दवासे फायदा भी हो जाता है, लेकिन् एसा देखकरके भी मूर्खोंकी दवा और सल्ला नही लेणी कारण वो आयुज्ञानके अजाण होणेसें फक्त दवा मात्रही जाणते हैं, निदान शारीर निघंट पथ्यापथ्य नही जाणणेसे अंधेका तीर समझणा किसी २ के भाग्य योगसे लग जाता है, इसवास्ते निर्दोष और साधारण दवा और अपणा वर्ताव खानपान खूवही साफ निर्दोष रखणा अपणी समझसें, इस ग्रंथ मुजव, पूर्ण वैद्य या डाकतरोंकी सल्ला और दवा जो कुछकहे, सो सव करणा.

गुरदेका वरम.

गुडदा याने किडणीमें सोजन हो जाता है, ये वरम दो तरेका है. (१ तीक्ष्ण वरम) २ जीर्ण वरम) शरदी ठंढी दारूका व्यशन गुप्त चोट वुखार हैजा वगैरे उसके कारण है, जलंदर तथा आल्व्युमीनका संवंध गुरदेके वरमके संग है, ये रोग अंग्रेजीमें पहले डाकतर ब्राइटने निश्चय किया है, इसवास्ते अवी भी उसी डाकतरके नामसे अंग्रेजीमें प्रसिद्ध है, लोकीकवाले नलोंका भरणा कहते हैं, लेकिन् ये रोग कमरके पास हड्डीके दोनों पसवाडे होता है, हमारा अनुमान है, सुजाक या गरमीका रोग जिस अदमीके होगया हो दस्त साफ नहीं लगे मैथुनकर तुरत जल पीलेवे दस्त पेसावकी संका रहते मैथुन करै चार घडी पिछली रात पीछे मैथुन करै कमरपर वोझा वांधे पांव उंचा नीचा गिरे इत्यादि औरभी केइयक कारणोंसे इद्री चेतन भये वाद वीर्य रोकणेसें ये रोग प्राये होणा संभव हैं, देशी शास्त्रमें इस रोगकूं अंडवृद्धिके अंतर्गत लिखा है, औरतोके प्राये ये रोग जादा होता है, प्रदर (खेत प्रवाहसें वहोत मैथुनसें) (तीक्ष्ण (तेज) गुरदेका वरम) (लक्षण) कमरमें दरद इस करके रोगी टेढा नहीं हो सके ठंढ लगकर वुखार चढ आवै जीमिचलाणा उलटी वेचेनी पसवाडोमें तथा गुडदेके पीछे पीठपर दरद वृषण (अंडकोपोमें दरद) प्यास दस्तकी कब्जी पेशावकी हाजत वहोत लेकिन् वहोत थोडा और लाल रगका और पेडू फटणे लगे वुखारमें वदन गरम नाडी जलद शिरमे दरद जीभपर वहोत सुपेद थर चहरा फिकरमंद भूख लगे नहीं डकारेंवेतरे आवै रसायणिक प्रयोगसे निश्चेकर देखा जाय तो पेशावमें (अल्व्युमीन) (राजा) मालम देगा सोजन तथा जलदर ये भी गुरदेके वरमका एक चिन्ह

बुखार नाडी पतली और वदन धुप २ के हाड पिंजर रहजाता है, इस रोगसें क्षय चम
का रोग पांडू और किसी वखत आंखोंमें मोतिया विंदू सोजन हिचकी बेहोसी अ
मृत्यु-(इलाज) इय रोग बडा और बहोतदरजे असाध्य है, आहारविहाररूप
चलणेवाले रोगीकी ऊमर लंबी होती है, नहीं तो जलदी मरता है, इसका इ
चतुरोंसे कराणा चाहिये अफीम वंगभस्म लोह सोमल भांग किनाइन बेलाड
अरगट आयोडाइन पोटासब्रोमाइड वगेरे दवाइयां इस रोगमें फायदाबंद है.

(पथ्य) दूध मलाइ मखण घी तूरकी दाल चणा मूंग पत्तोंका साग मूलेके
कडू गरम कपडे फजर सांझ डोलणा फिरणा (कुपथ्य) गुड सक्कर मिश्री सहत
मिठास लिये चीज आलू, सक्कर टेटी, सक्कर कंद, चावल साबूदाणे गऊंका मदा आदि
सत्ववाली चीजें बिलकुल वापरणी नहीं जो पेशाबमें सक्कर नहीं जाय तो मरता व कर

मूत्रकृच्छ्र-मूत्रगांठ,

इस रोगमें मूत्राशय और मूत्रनलीके कितनेक विकारोंका समावेश हो सकता
पेशाब अटक २ वडी मुस्कलसे आवै उसकूं मूत्रकृच्छ्र कहते हैं-(कारण) पेसा
बाहिर आणेका रस्ता है, उसका कोइभी भाग संकुडा जाता है उसका कारण बहोत
मूत्रमार्गका स्नायु संकुडाणेसे रशपुड सूज जाणेसे वरमसे तथा जखमसे रस्ता सं
हो जाता है, और पेशावकूं बंध करता है. गरम खाणा पीणा ठंढ शरदी सडे पद
गरमीमें फिरणा ये उसके मूल कारण है, पथरी आडी आणेसे भी पेशाब अटकता है.

(इलाज) १ एलायची पाषाणभेद शिलाजीत गोखरु ककडीके बीज सींधानिम
तथा केशर इनोंका चूर्ण चावलोंके धोवणमें देणा २ ककडीके बीज मोलेठी दारूहल
इसबगुल चूर्ण ऊपरमुजब देणा ३ गोमूत्र सहत केलेका रश इनोंमेंसे हर कोई
रशके संग इलायचीका चूर्ण देणा ४ जवखार ५ मासा मिश्रीके संग ५ गुड मिठा
जरा गरम दूध पीणा ६ गोखरूके काथमें जवाखार ७ आंवलाके काथमें गुड २ तो
डालकर पीणा ८ कुलथीका काथ सींधानिमक डालकर पीणा ९ शिलाजीत तथा म
अथवा शिलाजीत दूध मिश्री १० दूध सक्कर घी ११ हरडे गोखरू पाषाणभेद श्व
डाल धमासा इनोंका काथ सहत डालकर पीणा १२ डाभ कांस डांगर (दूब) ति
तथा ऊखके मूलका काथ अथवा खार १३ भूंईगणीका रश तोला १६ सहत डाल
पिणा १४ खाटके बडका काथ १५ मुनका तथा दही सक्कर चाटणा १६ मो
अथवा पेशाब जलमें पीनेसे दस्त साफ रखणा (१७ मूत्रशलाका) हुसियार वै
हाथे पात्र डालकर पेशाब साफ करवाणा देशी वैद्य इस क्रियाकूं कम जाणते है, इ
जाणते नहीं होने तो भारती दरजेका इलाज मलाका है १८ पेंडूपर मेफ तथा
जगेमें सिकाणा.

मूत्राघात मूत्रका रुकणा.

(कारण) मूत्रकी गांठ पडजाणेसे अथवा पथरी आडी आणेसें पेशाव बंध होता है, मूत्रका रुकणा दो तरे होता है, एक तो पेशावकी उत्पत्ति होती अटकती है, जेसेकै हैजेमें और दुसरी रीत यह है, कै मूत्राशय चैतना रहित होणेसें पेडू भर जाता है, लेकिन् पेशाव अटकता है, जेसेकै ऊरुस्तंभरोगमें पेशाव बंध होजाता है, मूत्रकृच्छ्र मूत्राघातरोगमें इतना फरक है, मूत्रकृच्छ्रमें तो मूत्रमार्ग संकडा हो जाता है, और मूत्राघातमें मूत्राशय चैतन्यरहित झठा पड जाता है, अथवा पेशावकी उत्पत्ति बंध हो जाती है.

(इलाज) १ ऊरुस्तंभ और हैजेसें पेशाव बंध होगया होय तो उण रोगोंका इलाज करणा २ गरम पाणीमें अफीमका डोडा उकाल पेडूपर शेक करणा तथा डोवर्स पाउडर ग्रेण १० पाणीमें पिलाणा ४ लाडेनमना ६० बूंद चावलोंके आटेमें मिलाकर गोली बणाकर गुदामें रखणा ५ सोडा कारबोनेट ओफ पोटाश सोराखार जवका पाणी इसके अंदरका कोइभी पेशाव लाणेवाला पदार्थ पाणीके संग पिलाणा ६ सहा जाय एसे गरम पाणीमें रोगीकूं कमरतक आधे घटे बैठाणा मूत्रकृच्छ्रके इलाजसब मूत्राघातमें भी चलता है–(पथ्य) सालि चावल गऊका छाछ गऊका दूध मूंगका ओसावण मिश्री पुराणा कोला परवल आदा गोखरू ककडी खजूर नालियर चंदलिया छोटी इलायची तथा ठंडा अन्नपान ये सब हितकारक है–(कुपथ्य) सराप महनत मैथुन घोडेकी सवारी विरुद्ध अन्नपान नागरवेलके पान उडद निमक हींग तिल मूत्रके वेगकों रोकणा खटाई गरम तीखा दाहकारक तथा लूखा पदार्थ.

अश्मरी–पथरी–कंकरी.

(कारण) पेशावमें स्वभाविक खार होता है, वो वढजाणेसें अथवा दुसरा खार पैदा होकर उसकी धीरे २ पथरी बंध जाती है, और पीछे वडी होती जाती हैं, लीवरकी अव्यवस्थित क्रियाके सवव किसी किस्मका पदार्थ गुरदेमें पडता है, और उस जगे पथरी बंध जाती है,

(लक्षण) पथरी जव वधणी सरू होती है, तव मूत्राशय फूल जाता है, तथा अंदर वहोत दरद होता है, पेशावमें वकरें जेसी वदवो आती है, पेशाव बंध होता है, बुखार आता है, वडे कष्टके संग बूंद २ पेशाव आता है, रोगी धूजता है, दांत पीसता है, सूंटीकूं दवाता हैं, इंद्रीकूं मसलता है कणते रहता है ये पथरी गुरदेमेंसें पेडूमें याने मूत्राशयमे जाते और पेडूमेंसे पेशावकी नलीके रस्ते वाहर आते दरद करता है. इस पथरीका कद रेतीके कणसे मटर जितना होता है, और पीछे वढकर वहोत वडी हो जाती है, रेती वहोत करके तो पेशावके रस्ते वाहर निकल पडती है, लेकिन वडी कठरी या

पथरी मूत्राशयमें अटकके रहती है, और उसजगे कदमें बढजाती है, तब काटके निकालणेसिवाय इलाज नहीं.

(इलाज) मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघातका सर्व पेशाव लाणेवाले इलाज पथरीमेंभीका मूल है, क्योंकी मूत्रल दवासे रेतीकूं पेशावमे निकालणा अथवा वडी पथरीकूं तोड फोडकर अथवा धोय धोकर पेशावके रस्ते बाहर निकालणा इस दवायोंका ये मूल काम है.

(१ सूंठ वरणा गोखरू पाषाणभेद ब्राह्मी इनोंके काथमें गुड तथा जवखार डालकर पीणा २ गोखरूका चूर्ण सहतमें मिलाकर सात दिन वकरीके दूधमें पीणा ३ सहजणेकी जडका काथ जरा गरम २ पीणा ४ अद्रक जवखार हरडे तथा दारूहलदीका चूर्ण दहीके मठेमें पीणा ५ वरणेके छालकी राख ३२ तोला जवखार १६ तोला और गुड ८ तोला मिलाकर एक तोला खिलाकर ऊपरसे गरम पाणी पिलाणा ६ वरणेके छालके उकालेमें कुलथी सींधानिमक वायविडंग मिश्री जवखार कोलेके बीज गोखरू पमहाट वगैरे जो मिले उनोंकी चटणी पीस उसमें घी पकाणा इस घीके खाणेसे पथरी मिटती है, ७ वीर्यकी पथरी बंध जाती है, उसकूं शुक्राश्मरी कहते हैं, इसके इलाजभी ऊपरमुजबही करणा ८ दरदकूं कम करणा ये प्रथम इलाज है, गरम जलमें बैठणा और २५ ग्रेण क्लोरल देणा दरद फेरभी रहे तो ८ घंटे बाद फेरभी देणा ९ ड्राइक पिग (नं० ५६८ कमरपर धरणा दस्त कब्ज होय तो जुलाब देणा, जवका पाणी, अलशीका पाणी, अथवा हलदीकी चा, खूब पिलाणा, १० बाइकारबोनेट ओफ पोटाश, तथा पाणी, ११ अथवा इसी दवाके संग सोराखार और साईट्रिक एसिड डालकर सेर पाणीमें मिलाकर दिनमें पिला देणा.

(विशेष सूचना) पीछे लिखे दोनों रोगोंमुजब पथ्य पालणा बाहरकी हवा तथा हलका खुराक इस रोगकूं मिटाणेमें मदतकार है खाणे पीणेके पदार्थोंमें पथर कंकर रेती नहीं आवे इस बातका खयाल रखवाणा.

प्रमेह-सुजाक-फिरंग-

गोनोरीया.

(सूजाक) याने गुरदा और वस्तिके रोग कलेजेके अवयवोंके विकारके संग संबंध रखता है, तब मूत्रमार्गके रोग बहोत करके बाहरकी आचरणाके संग संबंध रखता है, उनमें सुजाक और गरमी (दाही) ये दोय मुख्य रोगमें लिंग योनिका समावेश है.

(कारण) दुष्ट गोनोरी योनि गेलवाली और रजस्वला इनोंसे भोग करणेसे सुजाक होता है.

(लक्षण) पेशावकै रस्तेसे पीप निकलणा ये प्रमेहका प्रत्यक्ष लक्षण. है, लेकिन् किसी २ वखत हथ रससें गरम गुड हींग मिरच वगेरे खानपानसे ओर वच्चोके कृमिरोगसे पेशावके रस्ते पीप गिरता है, लेकिन् एसे रोगकूं नये वैद्य (डाकटर लोक) प्रमेह नहीं कहते, क्योंके सुजाकका पीप तो चेपी होता है, वो तो फक्त दुष्ट रोगीली स्त्रीके संबंधसेही होता है, परमा सरू होणेके पहले कितनेक चिन्ह पहली दिखाइ देते हैं, पीछै दुसरे दिन अथवा पांच चार दिन पीछै निशानिया मालम देती है, और सुजाककी ४ चार जाति मुकरर करी जावै तो १ पहली जातिमें पेशावका पदार्थ सुपेद दूध या छाछ जैसा निकलता है, २ दुसरी हालतमें पीप जादा वहोतही जाता है, उसका रंग पीला पणा, लिये, हरास लिये किसी २ वखत उसके संग खून जाता है. मूत्र नलीमें दरद होता है, उसमें सूजन आजाती है, ३ तिसरी हालतमें सोजा और जलण कम पडता है, पीप कम आता है, दरद भी कम लेकिन् तीसरी हालतमे सूजाक जव मिटता नहीं तो पेशाव करते थोडीसी जलण और सलसलाट होता है, ४ चोथी हालतमें पीप पाणी जेसा और वूंद २ आता है, इस हालतकूं अंग्रेजीमे ग्लीट कहते हैं, प्रमेह होता है, तव इंद्रीके किसीभी ठिकाणे सोजा होता है, ये सोजा इंद्रीके अगले भाग तरफ होय तो पीप थोडा आता है, और ज्यों ज्यों अंदरके तरफ सोजन होय त्यों त्यों पीप जादा आता है, पहली अग्रभागपर खुजाल आती है, पेशाव नलीका मूं सूजकर लाल होजाता है, और चौडा कुछ जादा होजाता है, उसकूं दवाणेसे अंदरसे पीप निकलता है, पेशावकी हाजत वेर २ होती है, और उसकी धार पतली होतीहै, जलण वहोत होती है, चणख मारती है, दरद जादा होय तो वुखारभी आजाता है, पेशाव नलीभरी भई करडी डोरी जेसी होजाती है, और जव जोरमें आती है, तव वांकी तिरछी करते उसमें जादा दरद होत, है, एकाध अठवाडिये पीछै प्रमेह शांत पडता है, तव जलण कम पडती है, रसी सुपेद रंगकी आती है, अथवा वंध होती है, तो किसीके पोतेमें दरद किसीके वद होजाती है, और पीछै प्रमेह पुराणा गिणे जाता है, पुराणा भये वाद वेर २ जोर करता है, अगर जो रोगी मनोमती होकर वे परवा रहे तो उससे मूत्रकृच्छ्र तथा मस्सेका रोग और इंद्री तथा वदनपर छोटी २ फुनसियें होती है, जिसकूं प्रमेह पीडिका कहते हैं,-(इलाज) सोजन तथा दरद होय तो गरम पाणीका सेक करणा अथवा कमरतक गरम जलमें पिठलाणा जुलावकी दवा देणी पेशावमें दाह होय तो पेशावकी खटासकूं तोडे एसा खार तथा पोटाश सोडा वगेरे पीणा अलशीकी चा पीणी जवकू उकाल उसका पाणी पीणा दूध पाणी मिलाकर पीणा सोडावोटर गोखरू ईसवगुल तुकमरीया वहुफली वेदाणा ये पेशाव लाणेवाली दवायोंका लुआव पीणा पेशाव खुलाश आवे एसा इलाज करणा (२) फलत्रिकादि काथ (न० २१६ हलदीका चूर्ण डालकर पीणा (३) पाषाण-

भेद धाणा धमासा गोखरू करमाला आधा २ तोला सेर पाणीमें रातकूं भिगाकर दुसरे दिन २।४ वखतमें निराहार सब पाणी पी जाणा (४ चंद्रप्रभा) (नं० २४५) सर्वोत्तम इलाज है, पाणीके संग लेणा (५) बहुफलीका लुआब सोडा डालकर पीणा, गोखरूका मिश्री डालकर पीणा, (त्रिफलाका क्वाथ सहत डालकर अथवा त्रिफला के सूला, मुनका काली, चावलोंकें धोवणमें तीन घंटा भिगाकर वो जल पीणा ७ आंवले तथा गिलोयका पाणी सहत तथा हलदी डालकर पीणा ८ गोखरू कोनरूगूंद तथा सोडा डालकर पीणा दरेक ॥ तोला १ सेर जलमें भिगाकर वो जल तीन वेर पीणा नं० ६७४ तथा ७४८ वाली दवायें एसी दवायोंसे जब प्रमेहके सख्त लक्षण दब जाय तब नीचे लिखी दवाइयें तथा पिचकारीका उपयोग करणा-(९ नं० ६७५) (६७६) ६७७ के मिक्चरोंमेंसे कोई भी देणा एकसे फायदा नहीं होय तो दूसरा अजमाणा १० दवा पिचकारीकी पाणीका वजन २॥ रुपेभर १ त्रिफला अथवा पंच वल्कका क्वाथ नं० १५७ का करके उसकी पिचकारी देणी २ लेडवोटर ३० से ४० बूंद १ औंस पाणीमें मिलाकर पिचकारी लेणी ३ शुगरलेड १ से ४ ग्रेण जसतके फूल १ से ४ ग्रेण ५ फिटकडी १ से ४ ग्रेण ६ नीला थोथा १ से ३ ग्रेण नाइट्रेट ओफ सिल्वर ॥ से १ ग्रेण ये दवायें अनुक्रमसे एक दुसरे सख्त है, इसवास्ते पहलीसे फायदा नहीं होय तो पीछे जादा सख्तकी पिचकारी लेणी पुराणे सोजनमें ये पिचकारी कामकी है, ११ बहोत जलणके संग पेशाबकी नलीमें दरद होता है, तब कपूर तथा अफीमकी गोली खाणेमें फायदा होता है, कपूर ६ ग्रेण अफीम १ ग्रेण और मिल सके तो उसमें बेला-डोना ॥ ग्रेण मिलाकर दो गोली कर फजर सांझ लेणी १२ औरतोंकों सुजाक प्रमेह होता है, लेकिन् मूत्र मार्ग जादा चोडा होणेके सबब पुरुष जितना दरद नहीं होता कबत पिचकारीके दवामें फायदा होता है, १३ पुराणे भये प्रमेहमें (नं० ६७९, ६८०, ६८१) की मिलावटे अच्छी है, (१४ मूत्राश्मरी भई होय तो) (६८२, ६८३, तथा ६८४) इस नंबरका इलाज करणा.

(विशेष सूचना) प्रमेहके रोगीने खाणेका जितना परेज रखणा उससे जादा विहारमें सावधानता रखणी. प्रमेह होणा ये खोटे कर्ममें प्रवीण अदमियोंकेवास्ते एक वख्तकी सजा है, जो मूर्ख नादान अदमी स्त्रीके विषयमें मग्न बुद्धिकू रोक नहीं सकता तो फिर जितनी खराबी सुजाकवाले रोगीकी होती है, एसी किसी विरले रोगमें होती होगी इससे औरत मर्द दोनोंकी जिंदगानी बिगड जाती है, बाद जो संतान पैदा होता है, तो उसकेभी ये रोग चेपी पैदा होता है, एक वेर ये रोग लगे पीछे पथ्य [illegible] बरतनेवाले सफाई और सदाचारी थोडेही अदमी इस रोगमें सवीशकर [illegible]

होते हैं, एसा ये दुष्ट रोग अनेक रोगोंकी जड है–(प्रमेहके दुसरे उपद्रव) संक्षेपसे लिखते हैं.

(मूत्रकृच्छ्र) इंद्रीमें सूजन होणेसे पेशाव अटक २ बूंद २ आता है.
(२ खूनका गिरणा) किसी २ वखत पेशावसे गिरता है.
(३ वदका होणा) गरमीसे जेसे वद होती है तेसे प्रमेहसे भी होती है.
(४ आंडोंका वढणा) गोलीका सूजणा ५ आंख दुखणी ६ संधिवायु ७ नासूर ८ भगंदर ९ इत्यादि खून वीर्य और मल तीनोंको विगाडता है,

(देशी वैद्यक शास्त्रमुजब प्रमेहके नाम और इलाज) अंग्रेजीवाले कहते हैं, खाणे पीणेसें ये रोग नहीं होता ये दुष्ट मर्द दुष्ट स्त्रीके संसर्गसे होता है, टाकीभी इसीतरे होती है, एसा कहते हैं, लेकिन देशी वैद्यक शास्त्र एसा कहता है, बैठे रहणेसे वहोत नींदसे दही मांस खाणेवालोंकूं दूध नया अन्न नया पाणी गुड याने सब कफकारी वहोत पदार्थोंके जादा सेवनसे प्रमेह पैदा होता है, इस जगे जो कारण लिखे हैं, उसमें कफ दोषकूं प्रधानता दी है, याने कफका कोप होणेसे वदनमेंका रश खून मज्जा मेद वसा (चरवी) जल वगेरे प्रवाही पदार्थोंको विगाड वाहर निकालता है, इसीतरे कफके क्षय होणेसे पित्त और वायुकूं विगाड प्रमेहकूं पैदा करता है, इस अभिप्रायसे तो एसा मालम देता है, के शरीरमेंसे रस खून जल चरवी मेद वगेरे धातुओं विगडकर पैशावके रस्ते झरता है, और झरणा एसा अर्थ मेह शब्दका होता है. प्रका अर्थ वहोत करके, मेह याने झरणा इपसे जो प्रमेह होता है, उसमें अंदरका एसा कोईकारण होता नहीं चेपके सवव मूत्र लीमें सोजा होता है, पीछै उसमें जखम पडके पीप निकलता है, देशी शास्त्र इसतरे वेहकी २० जाति गिणाता है,

(१ उदकप्रमेह) अच्छा वहोत ठढा पाणी जेसा कुछ मैला चिकणा पेशाव उतरे.
(२ इक्षुप्रमेह)–गन्नेके रस जेसा मीठा और वहोत पेशाव आता है।
(३ सांद्रप्रमेह)–पेशाव रातवासी रखणेसे फजरमें जाडा पडजाय।
(४ सुरामेह)–सराप जैसा और रातवाशी रखणेसे ऊपर पतला नीचे जाडा।
५ पिष्टमेह)–आटेके धोवण जेसा वहोत सुपेद पेशाव करते रूंखडे हो।
६ शुक्रमेह)–वीर्य जैसा अथवा वीर्य मिला पेशाव उतरै।
७ सिक्तामेह)–रेती जैसी महीन ओर अलग २ कणे पेशावमें पडे।
८ शीतमेह)–वेर २ ठडा मीठा पेशाव उतरे।
९ शनेमेह)–धीरे २ मद वेगसे पेशाव उतरे।
१० लालामेह)–तंतू जैसे और चीकणा पेशाव उतरे।
११ क्षारमेह)–खारे जल जैसा रग खसवो स्वाद और स्पर्शवाला।

(१२ नीलमेह)–नीलके जैसा पेशाब उतरे ।
(१३ कालमेह)–सुरमे जैसा काला पेशाब ऊतरता है ।
(१४ हारिद्रमेह)–हलदी जैसा जलता भया और तेज पेशाब उतरे ।
(१५ मांजिष्टमेह)–कच्चे पदार्थका गंधवाला मजीठ जैसा लाल पेशाब ।
(१६ रक्तमेह)–कच्चे पदार्थ जैसा गंधवाला गरम खारा खून जैसा पेशाब ।
(१७ वसामेह)–चरबी जैसा रंग चरबी मिला पेशाब उतरे ।
(१८ मज्जामेह)–मज्जा मिला वैसाही रंग पेशाब उतरे ।
(१९ हस्तिमेह)–हाथीके मद जैसा विना वेगका पेशाब उतरे ।
(२० क्षौद्रमेह)–तुरा मीठा रूखा पेशाब उतरे सो (मधुमेह) ।

इण वीसोंमेंसें पहिले लिखे १० तरेके प्रमेह कफसे पैदा भये होते हैं उसके बाद छ पित्तसे पैदा भये आ खिरके ४ वादीका है, (कफ प्रमेह साध्य) पित्तजन्य कष्ट साध्य (मुश्किलसे) मिटणेवाला वादीका असाध्य है ।

(इलाज)–सामान्य इलाज इहां लिखते हैं–(१ कफ प्रमेहमें)–हरडे कायफल मोथ लोद इनोंका काथ सहत डालकर २ हलदी दारूहलदी तगर वायविडंग सहत डालकर ३ देवदारू कूठ अगर चंदन सहत डालकर ४ दारू हलदी इरणी हरडे बहेडा आंवला वच सहत डालकर ५ वच खसवाला नेत्रवाला हरडे गिलोय काथ सहत डालकर (६ पित्त प्रमेहका इलाज)–वाला लोद आसोंदरो तथा चंदनका काथ सहत डालकर ७ वाला मोथ हरडे आंवले सहत डालकर ८ पटोल नीब गिलोय आंवले सहत डालकर ९ लोद, आंवेकी छाल, दारूहलदी, धावडीके फूल, काथ सहत डालकर १० पीठ पाडे दरख्तकी छाल काली पाट बांवल नेतरवालेका काथ सहत डालकर ११ मेरम पाणा आसोंदरा काथ सहत डाल (सर्व प्रमेहोंपर)–आंवले तथा गिलोय अथवा उकाडीमें सहत डालकर और हलदीका चूर्ण डालकर पिलाणा १२ निफलाके काथमें सहत डालकर पियाजीत वो नहीं होय तो सोरा डालकर पीणा १३ कफ प्रमेहका रस सहत डालकर पीणा १४ आंवलेका रस हलदीका चूर्ण सहत डालकर १५ गेहूं निमाणे भर गेहूं फलमें पीस इसमें थोडी मिश्री डालकर पीणा १६ केसू फूलोंके काथमें मिश्री डालकर पीणा १७ वायविडंग हलदी मोलेठी सूंठ गोखरूका काथ सहत डाल १८ शुद्ध मेनफल गुड मिलाकर पिलाणा उसपर दूध पीणा १९ नीलोफरके बीजोंके चोलनमें पीस घी डालकर पीणा २० निर्मलीके बीज छालमें पीस सहत डाल कर पीणा–(पथ्य) पहली लंघन वमन कुलाव डांगर जव माटी चावल मोठ मूंग मसूरी तुवरी तूर वथा इन सबोंका ओसामण पुराणा सहत परवल कडवी वस्तु सेवन करणा तथा नुण पदार्थ वगैरे पथ्य है–(अपथ्य)

पेशावकूं रोकणा बीडी पीणी पसीना निकालणा दिनकी नींद नया अन्न दही वरसातका पाणी मिष्टान्न मैथुन नयासराप तेल दूध घी गुड ऊख पुष्ट पदार्थ सडे खारा खट्टा ये सब पदार्थ कुपथ्य है।

गरमी टाकी उपदंश.

(सेन्कर-सीफीलीस.)

टाकी येभी प्रमेहकी एक बडी बहिन है और पापकृत्यकी बलाय और बुरे कर्मकी प्रत्यक्ष सजा है, ये बडा दुखदाई नाश करणेवाला दुनियामें इज्जत खोणेवाला महादुष्ट रोग है, इस रोगके मूत्राशयसे कुछ तालूक नहीं है, तोभी मूत्र मार्गके ऊपर संबंध रखणेवाला होणेसे इस किरणमें ये रोग दाखल किया है, निश्चै करके देखा जाय तो जैसे ये रोग चमडीका है तेसें ये रोग शरीरके सब संधोंपर उसका असर पहोंचता है, इस वास्ते शरीरके सामान्य रोगोके साथ जादा संबंध रखता है, ये रोग चेपी है, इसका जहर एसा खराब है, सो एक छोटीसी टाकीसे फैलाव करके सब वदनमें फेलाव करता है, एक वेर खूनमें प्रवेश करे पीछै जड जाणी वहोतही मुस्कल है।

(कारण)–दुष्ट औरत मर्दोंके संबंधसे आपसमें लगा भया चेप ये गरमीके रोगका मुख्य कारण है, मरदकी औरतकूं औरतकी मरदकूं गरमी लगती है (शिक्षाचारकल्प-शास्त्र जैन) स्त्री पुरुषोकी पवित्रता और सदाचारमें वहोतसी तारीफ कर उसका वहोत अछा फल दोनो भव आश्री लिखा है, और कुशील सेवणेपर बडा भारी दोप और अपवाद लिखा है, सो सब सच्च है, इसीवास्ते अनादि व्यवहारभी एसाही चलता आया सो युगलिक लोकोंका स्त्री मर्दका जोडा उसीसें मैथुन सेवणा और देखतेभी हैं, एक औरत मर्द संतोषवृत्तिसें जो संसर्ग करते हैं, उनोंके ये दुष्ट रोग कभी नहीं होता फेर एसाभी है पती एक और स्त्री अनेक है लेकिन् वो जब स्त्रियां एक पती टालके अन्य पुरुपसे गमन नहीं करती उनोका पती उन औरतोके टाल अन्यसे गमन नहीं करता तोभी रोग नहीं होता राजा लोकोंकीतरे, इसीवास्ते जैन शास्त्रोमें जगे २ ग्रहस्थीकूं स्वदारा संतोपी लिखा है, लेकिन् वहोत स्त्रियों रखणेवाले कृष्ण माहाराजकीतरे वेपरवा होते है, वेसा अनुराग और प्रेमशशार सुखकू कम साधणेवाला और कदाग्रहरूप फास होता है, एक स्त्रीका प्रेम और सुख मर्यादा पुरुपोत्तम श्रीराम रघुवर जेसा होता है बुद्धिवान समझेंगे, अब जो स्वच्छंदी लोक धर्मशास्त्रका हुकम और नीति मर्यादामें नहीं रहते उनोकों तो पहली इहांपर एसी सजा मिलती है, सो इहांतकके, मावापोके गरमी होती है, तो उनके बचेभी गरमी रोगका असर लेके जन्म लेते हैं, वहोतसे तो मरही जाते हैं, अगर बचेकूं दूध पिलाणेवाली धायके ये रोग होता है तो बचेके गरमीका असर लग जाता है, कहांतक लिखे योनिलिंग गुदा इनोमे मैल जमणेसेभी टाकी जरूम हो जाती

(१२ नीलमेह)–नीलके जैसा पेशाब उतरे ।
(१३ कालमेह)–सुरमे जैसा काला पेशाब ऊतरता है ।
(१४ हारिद्रमेह)–हलदी जैसा जलता भया और तेज पेशाब उतरे ।
(१५ मांजिष्टमेह)–कच्चे पदार्थका गंधवाला मजीठ जैसा लाल पेशाब ।
(१६ रक्तमेह)–कच्चे पदार्थ जैसा गंधवाला गरम खारा खून जैसा पेशाब ।
(१७ वसामेह)–चरबी जैसा रंग चरबी मिला पेशाब उतरे ।
(१८ मज्जामेह)–मज्जा मिला वैसाही रंग पेशाब उतरे ।
(१९ हस्तिमेह)–हाथीके मद जैसा विना वेगका पेशाब उतरे ।
(२० क्षौद्रमेह)–तुरा मीठा रूखा पेशाब उतरे सो (मधुमेह) ।

इण वीसोंमेंसें पहिले लिखे १० तरेके प्रमेह कफसे पैदा भये होते हैं उसके वाद ६ छ पित्तसे पैदा भये आ खिरके ४ वादीका है, (कफ प्रमेह साध्य) पित्तजन्य कष्ट. साध्य (मुस्किलसे) मिटणेवाला वादीका असाध्य है ।

(इलाज)–सामान्य इलाज इहां लिखते हैं–(१ कफ प्रमेहमें)–हरडे कायफल मोथ लोद इनोंका काथ सहत डालकर २ हलदी दारूहलदी तगर वायविडंग सहत डालकर ३ देवदारू कूठ अगर चंदन सहत डालकर ४ दारू हलदी इरणी हरडे बहेडा आंवला वच सहत डालकर ५ वच खसवाला नेत्रवाला हरडे गिलोय काथ सहत डालकर (६ पित्त प्रमेहका इलाज)–वाला लोद आसोंदरो तथा चंदनका काथ सहत डालकर ७ वाला मोथ हरडे आंवले सहत डालकर ८ पटोल नींब गिलोय आंवले सहत डालकर ९ लोद, आंवेकी छाल, दारूहलदी, धावडीके फूल, काथ सहत डालकर १० पीपल वड दरख्तकी छाल काली पाट वांवल नेतरवालेका काथ सहत डालकर ११ सर्व धाणा आसोंदरा काथ सहत डाल (सर्व प्रमेहोंपर)–आंवले तथा गिलोय अथवा उनकीनें सहत डालकर और हलदीका चूर्ण डालकर पिलाणा १२ विफलाके काथमें सहत डालकर शिलाजीत दो नहीं होय तो सोरा डालकर पीणा १३ फक गिलोयका रस सहत डालकर पीणा १४ आंवलेका रस हलदीका चूर्ण सहत डालकर १५ सांठू निमाडी मोथ मेंढू फलमें घीम इसमें थोडी मिश्री डालकर पीणा १६ केसू फूलोंके काथमें निशो डालकर पीणा १७ वायविडंग हलदी मोलेठी सूंठ गोखरूका काथ सहत डाल १८ शुद्ध मनशिल गुड मिलाकर पिलाणा उपर दूध पीणा १९ नींबोंके पत्तोंके रसमेंघी घीम दो डालकर पीणा २० निर्मलीके बीज आठमें घीम सहत डाल कर पीणा (पथ्य) पहली लघन वमन कुलथ उंगर जव साठी चावल मोठ मूंग तुवरी तुरई सूरण तूर चना इन सबोंका जोसमण पुराणा सहत परवल कडवी लघु हलका जलपान सहत कडवा तथा तुरा पदार्थ वगैरे पथ्य है–(कुपथ)

(स्थानिक चांदीका बाहरका इलाज इसमुजब करणा.)

(१ प्रक्षालन)–घोणेका इलाज १ पंच वल्कल (नं० १५७) का उकाला कर उस पाणीसे जखम वेर २ धोणा २ त्रिफलेका काथ कर उससे या जल भांगरेके रससे टाकीकूं धोणा ३ रस कपूरका पाणी करके धोणा, (लेप) मलम–१ गोपीचंदन नीलाथोथा जलमें पीस कपडेपर लगाकर पट्टी लगाणी २ रस कपूर, सुपेद कथा, मुरदारसींग शंखजीरा मांजूफल तथा सोपारीकी राख अथवा त्रिफलाकी राखकूं घीमे खरलकर वो मलम चांदीपर चुपडणा ३ वावची १ गंधा विरोजा १ गूगल १ राल १ नीलाथोथा १ हींगलू १ पारा १ घी ९ और तिलका तेल ९ इन सबोंकों खरलमें डाल कडवे नीमके जाडे लक्कडसे बारे घंटेतक घोटणा ये मलमका अच्छा इलाज है, ४ फिटकडी सोनागेरू नीलाथोथा हीराकसी, सींधा निमक, लोद रशोत हरताल मनसिल तथा इलायची इनोका चूर्ण सहतमें मिलाकर लेप करणा ५ हरहे वहेडा आंवलाकी राख करके सींधानिमक सहतमें मिलाकर लेप करणा ६ रशोत इकेली अथवा हरडेका चूर्ण सहतमे मिलाकर लेप करणा ७ कणेरकी जड पीस लेप करणा ८ दशांग लेप पाणीमें अथवा घीमें मिलाकर लेप करणा हींगलू नीलाथोथा गूगल एकेक तोला वावची मस्तगी गूंद दो दो तोला राल ४ तोला तेल ७ तोला मलम करणा, भुकणी १ नीलेथोथेका चूर्ण अथवा इसके संग कथा मिलाकर दाबणा २ कत्था तथा शंखजीरेकी भुकणी दवाणी ३ पंच वल्कलकी महीन भुकणी दवाणी ४ त्रिफलेकी राख नीलाथोथा मिलाकर दवाणा, (अंग्रेजी इलाज) टांकी मिटाणे अंग्रेजी क्रम वहोत अछा है, चांदीकूं जलाणेवास्ते पहली १ नाइट्रिक एसिडके दो वूंद सिरप चांदीपरही लगाणा अथवा एसिडमें काडीसे रूईलपेट भिगाकर लगाणा ये एसिड सादी चमडीपर नहीं लगणे पावे उसकी संभाल रखणी जलण होय तो उस पर पाणीकी धार देणी जादा एसिड धुप जाता है, एसिड नहीं होय तो कास्टिक लगाणा उससे टाकी जब जल जाय तो उसपर पोल्टिस मारकर मुरदार मांश निकाल डालणा तब चांदी साफ होती है, लाल जमीन जब दिखणे लगे तब टेनिक एसिड अथवा झींक्सल्फास कम्पाउन्ड टींकचर लवंडर तथा पाणी उनमान मुजब मिलाकर पोता धरणा २ दुसरा इलाज, दो तीन दिन नीलाथोथा दाबणा पीछे चांदीकूं साफ कर सादे मलमकी चत्ती लगाणी, अथवा ब्लेकवोश नं० ५४३ मे लींट अथवा नरम कपडा भिगाकर चांदीपर पोता धरणा, ३ चांदीके ऊपरका पीप जैसा, सुपेद थर निकले विगर जखम भरी जता नहीं (४ आयडोफोर्म)–चांदीका सडा निकालकर चांदीकूं भर देती है, ऊपरकी चमडीके नीचे टांकी ढक गई होय तो ब्लेकलोशनकी पिचकारी लगाणी नीलाथोथा और झिककी पिचकारी मारणी।

(लक्षण) पुरुष तथा औरतोंका योनिलिंग छिल जाणेसें और चेप लग जाणेसें इस जगे फुनसियें होती है, और वो फुटकर जखम गिरता है, ये फुनसियें संयोग भये पीछे जलदी अथवा केइदिनोंनाद दिसाई देती है, जखमका जहर बदनमें फेलता है, तब उपदंशका रूप जाहिर होता है, तब लोक गरमी फूट निकली एसा कहते हैं, उससे अनेक विकार होता है, विस्फोटक वद जखम चीरे २ गांठे संधिवाय फिरंगवाय हिस्टीरिआ उन्माद वगेरे) इस टांकीकी बोतजात है, सो लिखते हैं ।

(१ नरम चांदी)-छिल जाणेसें तथा चेप लगणेसे होती है, ये जखम जादा करके इंद्रीके पिछले तरफ अथवा ऊपरके तरफ अथवा घुंगटेकी चमडीमें पडती है, टांकी दाडेके दाणे जेसी गोल होती है, और दाबकर देखणेसे उसकी कोर नरम मालम होती है, एक टांकीके चेपसे दुसरी टांकी पडती है, किसी वखत नलीके अंदर जखम पडता है, जिसका घुंघटा सुपारीपर चढा रहता है, और जखम पडके सोजन आती है तो घूंघटा ऊपर नहीं चढ सकता अर्थात् नीचे नहीं उतरता तब अंदर रोज साफ नहीं होणेसे जखम बढते जाता है, वदभी हो जाती है, (२ करडी चांदी) ये जखम खराब चेप लगे पीछे लगभग तीन अठवाडे पीछे सरू होता है, पहली फुनसी अथवा चमडीपर छोटा चीरा पडता है, वो बढकर गोल जखम होता है, उसमेंसे पतला पीप झरता है, पीछे थोडी मुद्दतमे टांकीके नीचे सक्त कंकर जमता है, और दो अंगलीसे दबा कर देखणेमें नरम हड्डी जेसी करडी मालम देती है, टांकीकी कोर उपसी भई मालम होती है, जिसमे चांदी दिखणेमें छोटे प्याले जैसी होती है, जांघकी नलीमें वद होती है, वो वद दबाणेसे दुखती नहीं और आपसे पकतीभी नहीं इस जातकी नलीमें महोत झरके एकही होती है, और उसका पीप किसीसाजे आदमीके बदनमें दाखिल होय तो उसके भी ये रोग हो जाता है, इसकूं चेपी जखम कहते है, (तेसरा नई चांदी) जखमकी कोर एकसरश गोल नहीं होती लेकिन, खरोंदकी नाई नई नई कोरे देखी होती है, वदबो वाला पतला पीप आसपासकी चमडी बिगाडे जाय वद होय तो उसका फुटे दुख दाद खुजाल नींद नहीं आवे नाना कली चढती जाय वद बखारी पकती है, अंदर गहरा पडता है ।

(चौथा जखम)-पहली चमडी सूजकर लाल होती है, वद वो लाल फलसी होती है, तेसे चमडीका भाग मुरदार होकर जखम गिरता है, रोगीको ज्वर आवे मुख सूखे भारी तृषा वेचेनी नींद्रा इस जखममें वद नहीं होती ये चार जखम अशुद्ध रक्तके सबधी पहली दाहत नाम स्थापन करे और इस जखमका वद करणेसे तेसे सबधी जो विकार होते है वो दुसरी दाहत अथवा आगिके जखम होते वसे जानने ।

(स्थानिक चांदीका बाहरका इलाज इसमुजब करणा.)

(१ प्रक्षालन)–धोणेका इलाज १ पंच वल्कल (नं० १५७) का उकाला कर उस पाणीसे जखम वेर २ धोणा २ त्रिफलेका काथ कर उससे या जल भांगरेके रससे टाकीकूं धोणा ३ रस कपूरका पाणी करके धोणा, (लेप) मलम–१ गोपीचंदन नीलाथोथा जलमें पीस कपडेपर लगाकर पट्टी लगाणी २ रस कपूर, सुपेद कथा, मुरदारसींग शंखजीरा मांजूफल तथा सोपारीकी राख अथवा त्रिफलाकी राखकूं घीमे खरलकर वो मलम चांदीपर चुपडणा ३ वावची १ गंधा विरोजा १ गूगल १ राल १ नीलाथोथा १ हींगलू १ पारा १ घी ९ और तिलका तेल ९ इन सवोंकों खरलमें डाल कडवे नीमके जाडे लक्कडसे बारे घंटेतक घोटणा ये मलमका अच्छा इलाज है, ४ फिटकडी सोनागेरू नीलाथोथा हीराकसी, सींधा निमक, लोद रशोत हरताल मनसिल तथा इलायची इनोका चूर्ण सहतमें मिलाकर लेप करणा ५ हरहे वहेडा आंवलाकी राख करके सींधानिमक सहतमें मिलाकर लेप करणा ६ रशोत इकेली अथवा हरडेका चूर्ण सहतमे मिलाकर लेप करणा ७ कणेरकी जड पीस लेप करणा ८ दशांग लेप पाणीमें अथवा घीमें मिलाकर लेप करणा हींगलू नीलाथोथा गूगल एकेक तोला वावची मस्तगी गूद दो दो तोला राल ४ तोला तेल ७ तोला मलम करणा, भुकणी १ नीलेथोथेका चूर्ण अथवा इसके संग कथा मिलाकर दाचणा २ कत्था तथा शंखजीरेकी भुकणी दवाणी ३ पंच वल्कलकी महींन भुकणी दवाणी ४ त्रिफलेकी राख नीलाथोथा मिलाकर दवाणा, (अंग्रेजी इलाज) टांकी मिटाणे अंग्रेजी क्रम वहोत अछा है, चांदीकूं जलाणेवास्ते पहली १ नाइट्रिक एसिडके दो वूंद सिरप चांदीपरही लगाणा अथवा एसिडमें काडीसे रूईलपेट भिगाकर लगाणा ये एसिड सादी चमडीपर नहीं लगणे पावे उसकी संभाल रखणी जलण होय तो उस पर पाणीकी धार देणी जादा एसिड धुप जाता है, एसिड नही होय तो कास्टिक लगाणा उससे टाकी जब जल जाय तो उसपर पोल्टिस मारकर मुरदार मांश निकाल डालणा तब चांदी साफ होती है, लाल जमीन जब दिखणे लगे तब टेनिक एसिड अथवा झींक्सल्फास कम्पाउन्ड टीकचर लवडर तथा पाणी उनमान मुजब मिलाकर पोता धरणा २ दुसरा इलाज, दो तीन दिन नीलाथोथा दाचणा पीछै चांदीकूं साफ कर सादे मलमकी चत्ती लगाणी, अथवा व्लेकवोश नं० ५४३ मे लींट अथवा नरम कपडा भिगाकर चांदीपर पोता धरणा, ३ चांदीके ऊपरका पीप जैसा, सुपेद थर निकले विगर जखम भरी जता नही (४ आयडोफोर्म)–चांदीका सडा निकालकर चांदीकूं भर देती है, ऊपरकी चमडीके नीचे टांकी ढक गई होय तो व्लेकलोशनकी पिचकारी लगाणी नीलाथोथा और झिककी पिचकारी मारणी।

शारीरक उपदंश गरमीकी दुसरी हालत ।

टांकीको ऊपर जुदी २ जात लिखी है, इलाजभी लिखे हैं, ये टांकी तथा जादा करके करडी टांकी शरीरमें एकतरेका जहर करदेती है, वो कितनेक दिनोंसे पुराणे रूपसे दिखाई देती है, जसमकी पहली हालत शरीरके एकही ठिकाणेसे संबंध रखती है, ओर दुसरी हालत सब शरीरसे संबंध रखती है, पहली पडी भई चांदी जादा तर भरीज जाती है, और रोगी जाणता है में आराम होगया लेकिन एसा नहीं जाणताके दुस्मन रोग गुप्तपणे अंदर घर करके रहाभया है, जब रोगी गाफल होकर खाणा पीणे आदि इंद्रियोंके खादमें लयलीन होता है, तो अकस्मात् सब शरीरमें ये दुस्मन दिखाई देता है, गलेमें सांधोंमे नाकमें और हड्डियोंमें किसीकूं एकतरेसे किसीकुं दुसरीतरेसें एसे तरे २ के चैन करता है, पहली टांकीके जोर मुजब ये पिछली गरमी कमती या जादा जोर करती है, शरीरके मुंआले भागोमें जादा करके गलेकी वारी तथा नाककूं जलदी पकडती है, गलेमें सोजा मूंमे गरमी तालवेमें छेद पडे नाककी हड्डी सडे और वो चपटा होकर बैठ जाय अथवा टेढा होजाय नाकके अंदर छोड़े तथा पीप गिरें सब बदनमें फोडे फुटकर निकले सांधे पकडे जाय मांसमें गांठे पडजाय ये गांठे फुटकर उसमें छेद तथा चीरे २ पडे भगंदरका भारी रोग होजाय किसी २ कूं वातरक्तका भी रोग होजाय.

(उपदंशकी दुसरी हालतका सामान्य इलाज लिखते हैं.)

(१ पारा शुद्ध ये गरमीका सर्वोपर इलाज है,) क्योंके अनंत गुण पारेमें शास्त्रकार कहते हैं, लेकिन ये पारा अनुभवी विद्वान विचक्षण और निर्लोभी वैद्यके हाथ सिवा दुसरे लोभग्रस्त मूर्खोके हाथमे खाणेसे बहोतही नुकशान करता है, क्योंके पारेकूं शोधने के आठ संस्कार दर्शाये वरतणे बाबत है, उसमें बहोत युक्ति हुसियारी और अनुभव चाहीये पडता है, तब वो निडरपणे वरते जासकता है, रसकपूर हीगलु पारेकी मुख्य चीजो है, और चंद्रोदय रसमिंदूर पर्पटी वगेरे अनेक उत्तम दवायें पारेसे बनती है, जो के बुढापेका और मृत्युका दावा नहीं लगणे देती अंग्रेजीमेंभी पारेकी सिरप वगेरे अनेक दवा पारेकी कुदरतसे बणाये गये हैं, म्यालोमेल वगेरे पारेकी दवाभी देते है लेकिन कितनेक आहतर विद्वान इसमे डरते हैं, क्योंके ये दवा बिलकुल निडर नहीं है, इसवास्ते २ अंग्रेजीमें दुसरे नवरही दवा पोटाश आयोडाइड है, जो गलोके रोग दूर करती है, अंग्रेजीमें गरमीकेवास्ते ये एकही दवा अछी है,) ३ बृहन्मंजिष्ठादि क्वाथ (पान नं० २२२) उसमें गूगल अथवा गूगलकी बनावटी कई किस्मकी दवा मिलाके गरमीके रोगमें अछे विद्वानो सुधारा करती है, (४ चोपचीनी) गरमीके पुराणे रोगमें दिला रोगमें अनिष्ट है, जो चूर्ण नं० २३५ तथा पाक नं० २५९ में दिल

जाता है, (५ गिलोय) शोधक है, इसवास्ते गरमीमें वहोत फायदेवंद है, उकाली गिलोयकी करके एरंडी तेल मिलाकर देणेसें दोपका शोधन होजाता है, (६ गूगल) शोधक दवा है, इसकी सर्व वनावटै खूनकूं शुद्ध करती है, त्रिफला, गूगल, किशोर, सिहनाद गूगल, मंजिष्ठादि क्वाथ संग या गिलोयके क्वाथ संग लेणेसे ७ (नं० ६६७ से ६७३ तकका अंग्रेजी इलाजभी अच्छा है.

(वदका इलाज) १ नींवके पत्ते थोडे पाणीमें पीस उसमें हलदी तथा घी डाल गरम करके पोटिस वांधणी २ दोषघ्न लेप (नं० ३११) वांधणा ३ गूलरका दूध कपडेके लगाकर पट्टी चपकाणा या सीसेकी वट्टी वांधणेसे अंदरकी अंदर विखर जाती है, ४ पुराणे गुडका पाणीकर अंगारपर चढाणा उसमे भंगकूं पीस घुरका तेजाणा जव गाढा होजाय तो वांध देणा ५ लसण भिलावा सहजणेकी छाल जलमे पीस वट्टी धरणी ६ पारेका मलम उसकी पट्टी मारणी ७ जोका लगाणी ८ गरम पाणीका शेक करणा ९ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो वखत चोपडणा.

(विशेष सूचना) गरमीके रोगमें आहार विहारकी सावधानीपर रोग मिटणेपर आधार है, गरमीका रोग वेर २ उथला मारता है, खाणेपीणेकी जरा गफलत होणेसे फोरन दिखाई देता है, ये रोगका एसा दुष्ट जहर है, सो जड जाणाही मुस्कल है, लेकिन् परेजमें चलणेवाला इस रोगकूं कितनेक दरजे जडसे निकाल सकता है, ऊपर लिखी सव दवायें तुरत फायदा नहीं करसकती वहोत दिनोंतक सेवन करणेसे धीरज रखणेसें परेजके साथ एकवर्ष भरके साधनसे आराम होता है, अंग्रेजी विद्वानोंके मतसे अनंतमूलका अर्क (परेलासालसा) उसवा दो महीना दूधके साथ गेहू चावल वूरा सीरा खाणेसे आराम होता है, निमक मिरच खट्टे खारेसे वचणा यूनानीवाले उसवेका अर्क इसी परेजसे दिलाते हैं, एक वर्ष लेणेसे सव रोग मिटकर वदन लाल वूंद होजाता है, देशीमे चोपचीणी या गूगलका साधन करणेसे ये रोग निर्मूल होजाता है, वसत शरदमें जुलाव लेणा ठढ कालेमें सतावर सुपेद मूसली सालम वगेरेका पाक खाणा निरोगी एक स्त्रीसे संवंध रखणा) इस ग्रथका पथ्यापथ्य आहारविहारके प्रकरणमें दिया भया हितकारक आहारविहार पथ्य है, वाकी सव कुपथ्य है.

किरण ६ ठी.

मगजके साथ संवंध रखणेके रोग.

एपोप्लेक्षी.

मगजके ततुओके साथ संवंध रखणेवाले रोगोंका इस किरणमे समावेश किया भया है, लकवा पक्षाघात ऊरुस्तभ धनुर्वात आक्षेपवायु ये प्रगट रोग है, और आर्यवैद्यक

शारीरक उपदंश गरमीकी दुसरी हालत ।

टांकीकी ऊपर जुदी २ जात लिखी है, इलाजभी लिखे हैं, ये टांकी तथा जादा करके करडी टांकी शरीरमें एकतरेका जहर करदेती है, वो कितनेक दिनोंसे पुराणे रूपसे दिखाई देती है, जखमकी पहली हालत शरीरके एकही ठिकाणेसे संबंध रखती है, और दुसरी हालत सब शरीरसे संबंध रखती है, पहली पडी भई चांदी जादा तर भरीज जाती है, और रोगी जाणता है में आराम होगया लेकिन एसा नहीं जाणताके दुस्मन रोग गुप्तपणे अंदर घर करके रहाभया है, जब रोगी गाफल होकर खाणा पीणे आदि इंद्रियोंके स्वादमें लयलीन होता है, तो अकस्मात् सब शरीरमें ये दुस्मन दिखाई देता है, गलेमें सांधोंमे नाकमें और हड्डियोंमें किसीकूं एकतरेसे किसीकुं दुसरीतरेसें एसे तरे २ के चैन करता है, पहली टांकीके जोर मुजब ये पिछली गरमी कमती या जादा जोर करती है, शरीरके सुंआले भागोमें जादा करके गलेकी वारी तथा नाककूं जलदी पकडती है, गलेमें सोजा मूंमे गरमी तालवेमें छेद पडे नाककी हड्डी सडे और वो चपटा होकर बैठ जाय अथवा टेढा होजाय नाकके अंदर छोटे तथा पीप गिरें सब बदनमें फोडे फुटकर निकले सांधे पकडे जाय मांसमें गांठे पडजाय ये गांठे फूटकर उसमें छेद तथा चीरे २ पडे भगंदरका भारी रोग होजाय किसी २ कूं वातरक्तका भी रोग होजाय.

(उपदंशकी दुसरी हालतका सामान्य इलाज लिखते हैं.)

(१ पारा शुद्ध ये गरमीका सर्वोपर इलाज है,) क्योंके अनंत गुण पारेमें शास्त्रकार कहते हैं, लेकिन ये पारा अनुभवी विद्वान निचक्षण और निर्लोभी वैद्यके हाथ सिवा दुसरे लेभस्तु मूर्खोके हाथमे खाणेमे बहोतही नुकशान करता है, क्योंके पारेकूं शोधनके आठ संस्कार दवामें करणे भावत है, उसमें बहोत युक्ति हुसियारी और अनुभव और इन संस्कारका पडता है, तब वो निर्दरपणे करते जामकता है, रसकपूर हीगलु सोनो मुख्य चीजों है, और चंद्रोदय रससिंदूर पर्पटी वेगरे अनेक उत्तम दवायें पारेमे बनती है, जो के मुर्छापना और मृत्युका दावा नहीं लगणे देती अंग्रेजीमेंभी पारेसे सिफ्र वगैरे अनेक पेट पारेही कुदरतमे भणाये गये हैं. क्यालोमेल वगैरे पारेकी दवाभी देते है, लेकिन कितनेक डाक्टर विद्वान इसमे डरते हैं. क्योंके ये दवा बिलकुल सिद्ध नहीं है. इसलीये २ अंग्रेजीमें दुसरे नंबरकी दवा पोटाश आयोडाइड है, वो गरमीके लीये दवा है, अंग्रेजीमें गरमीकेलाये ये एकही दवा अछी है,) २ गुडूच्यादिवटी (नं० २२१) उसमें गुग्गल अथवा गुग्गलकी बनावटी कोई किसमकी दवा दवाके गोलेमें मेले सिवायमें सुभीता करती है, (४ चोपचीनी) गरमीकी पुराणी दुखमें विशेष गोलेमें प्रसिद्ध है, वो चूर्ण नं० २३० तथा पाक नं० २७० में दिये

जाता है, (५ गिलोय) शोधक है, इसवास्ते गरमीमें वहोत फायदेवंद है, उकाली गिलोयकी करके एरंडी तेल मिलाकर देणेसें दोषका शोधन होजाता है, (६ गूगल) शोधक दवा है, इसकी सर्व वनावटै खूनकूं शुद्ध करती है, त्रिफला, गूगल, किशोर, सिंहनाद गूगल, मंजिष्ठादि क्वाथ संग या गिलोयके क्वाथ संग लेणेसे ७ (नं० ६६७ से ६७२ तकका अंग्रेजी इलाजभी अच्छा है.

(वदका इलाज) १ नींवके पत्ते थोडे पाणीमें पीस उसमें हलदी तथा घी डाल गरम करके पोटिस वांधणी २ दोषघ्न लेप (न० ३११) वांधणा ३ गूलरका दूध कपडेके लगाकर पट्टी चपकाणा या सीसेकी वट्टी वांधणेसे अंदरकी अदर विखर जाती है, ४ पुराणे गुडका पाणीकर अंगारपर चढाणा उसमे भंगकूं पीस वुरका तेजाणा जव गाढा होजाय तो वांध देणा ५ लसण मिलावा सहजणेकी छाल जलमे पीस वट्टी धरणी ६ पोरेका मलम उसकी पट्टी मारणी ७ जोका लगाणी ८ गरम पाणीका शेक करणा ९ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो वखत चोपडणा.

(विशेष सूचना) गरमीके रोगमें आहार विहारकी सावधानीपर रोग मिटणेपर आधार है, गरमीका रोग वेर २ उथला मारता है, खाणेपीणेकी जरा गफलत होणेसे फोरन दिखाई देता है, ये रोगका एसा दुष्ट जहर है, सो जड जाणाही मुस्कल है, लेकिन् परेजमें चलणेवाला इस रोगकूं कितनेक दरजे जडसे निकाल सकता है, ऊपर लिखी सव दवायें तुरत फायदा नहीं करसकती वहोत दिनोंतक सेवन करणेसे धीरज रखणेसें परेजके साथ एकवर्ष भरके साधनसे आराम होता है, अंग्रेजी विद्वानोंके मतसे अनंतमूलका अर्क (परेलासालसा) उसवा दो महीना दूधके साथ गेहूं चावल चूरा सीरा खाणेसे आराम होता है, निमक मिरच खट्टे खारेसे वचणा यूनानीवाले उसवेका अर्क इसी परेजसे दिलाते हैं, एक वर्ष लेणेसे सव रोग मिटकर वदन लाल वूंद होजाता है, देशीमे चोपचीणी या गूगलका साधन करणेसे ये रोग निर्मूल होजाता है, वसंत शरदमें जुलाव लेणा ठढ कालेमें सतावर मुषेद मूसली सालम वगेरेका पाक खाणा निरोगी एक स्त्रीसे संवंध रखणा) इस ग्रंथका पथ्यापथ्य आहारविहारके प्रकरणमें दिया भया हितकारक आहारविहार पथ्य है, वाकी सव कुपथ्य है.

किरण ६ ठी.

मगजके साथ संवंध रखणेके रोग.

एपोप्लेक्षी.

मगजके तंतुओके साथ संवंध रखणेवाले रोगोका इस किरणमें समावेश किया भया है, लकवा पक्षाघात ऊरुस्तभ धनुर्वात आक्षेपवायु ये प्रगट रोग है, और मार्यसंप

ोमें इन रोगोंको वातव्याधिमें समावेश किया है, लेकिन ये सब रोग मगजके
ध संबंध धरातें हैं इसवास्ते इस किरणमें दाखिल किया है, वादीके संग नहीं
ा गया.

(कारण) मगजपर एकाएक खून चढ जाणेसे ये रोग होता है. खून चढणेके
न कारण है,) जादा सराप पीणा बहुत कफ वहोत आलस वहोत पुष्टिदार खुराक
ोत गरमी वहोत ठंढ जादा गुस्सा रिदय तथा गुरदेका दरद.

(लक्षण) ये रोग तीन तरेसे होता है, १ एकाएक जाणे कोइ घाव लगा होय
ा बेमालम रोगी नीचे गिरजाता है, २ पहली शिरमे दर्द बेचेनी मूर्छा आकर रोगी
पडता है, ३ एकाएक शरीरका एक अंग अथवा एक पांव रह जाणेसे रोगी बेहोस
ाता है, दुसरे एसे लक्षण होते हैं, मूंमें झाग चहरेपर तेज आंखोंकी कीकीचोडी भई
एक चोटी अथवा एक संकडी मूं एक तरफसे टेढा करडा पडा भया दस्त पेशाब इच्छा-
ा जाय हाथ पाव ठंढा चमडीपर पसीना और बडे श्वासके संग मृत्यु किसी वखत
ाएक होजाती है, लकवा भया होय तो जिधरका अंग शिल गया होय वो अंगमें चीजे
भके लोचे पडे सरु होता ये रोग चाहे किसी भीतरे होय लेकिन पीछे बेहोसीके संग
ा या जोरका या फुंफाडा मारता भया श्वास ये उसकी खास निशाणी है, किसी हे
भी रहता है, लेकिन जुबान बंध होजाती है) दारू तथा नसेवाला जहरी चीजोंके
ने पीनेसें जो बेहोसी जाती है, तो उसबातकी पहली पहचाण कर लेणी चाहिये
ोंही परिक्षा इसतरें करणी १ हकीगत ऊपरले लोकोंसे पूछणी २ मूंकी वासको लेणी
खीया भया होगा तो मूंमें बदबो आयगी आंखे देखणी दारू वगेरे पदार्थोंसे आं-
हकी कीकी बराबर होती है, और मगजमें खून चढा होयगा तो एक कीकी चोडी
र एक संकडी होयगी ३ सराप पिया भया अदमी जागता है, या बड २ करता है,
र मगजपर खून चढनेवाला जागता नहीं ५ सरापके नसेवाला अदमीके दोनों पम-
डेमें एक सरीखी क्रिया होती नजर आती है, और एपोप्लेक्सीमें एकही तरफ)
ची (एपोप्लेक्सी) और लकवा (एपोप्लेक्सी) में इतना फरक है के मिरगीमें
टका मारना आना नहीं होता और लकवेमें एसा आता होता है, मिरगीका
दडाता है, नाडी गीरे शुरु आनेमें मुश्केल होता फक्त दिखता है, और रोगी जादा
हार तरफके नीचे गिरता है, लकवेमें एसा हाल नहीं होता.

(इलाज) अदीही रोगी सुती करके दवा डालणी सिरपर ठेढा पाणी छांटणा
ना पैर तथा और पैर गरम पाणीमें डुबाणा पीठीयोपर गरम पोटलिस लगाणी
ा एक बोतल रहने देना मोंपर बहोत चांदणा अदमियोंकी भीड गुलगोर होने
ने देणा इन इलाजोंमें मगजका सूजा नहीं एक बीस मनकेट ऑफ गोडा ३ बीस

पाणीमें डालकर पिलाणा उससे दस्त होगा जवरन पिलाणा नहीं दुसरी वेर वहोत खाये पीछै तुरत ये रोग होजाय तो उलटी होय उसकूं रोकणेकी एवजीमे मूंमें अंगलीया पांख (पीछ) डालकर जादा उलटी कराणी (नं० ५५० मे लिखे भये पिचकारी वहोत फायदा करती है, इसवास्ते वो जलदीं देणा जुलावकी दवा रोगीके गलेमें नहीं उतरसके तो जीभपर (क्रोटन ऑइल) जमाल गोटेका तेल दो तीन वूंद लगाणा और जलदी दस्त आवै एसा करणा गरदनपर विलाष्टर मारणा ये रोग वडा डरावणा है, इसवास्ते पूरे वैद्य या डाकदरकी राहसे इलाज होणा चाहिये कभी इसरोगसे रोगी वचभी जाता है, तोभी सावचेती आये वादभी उनका एक हाथ एक पाव अथवा एक पसवाडा झूठा सून्य भया होता है, जुवान वध चेहरैकी नसें विकार पाये मालम देते हैं,

पक्षाघात–हेमिप्लीज्या–

मगजके साथ संवंध रखणेवाली ज्ञानतंतु तथा गतितंतुओंकी क्रियाओं वध पडणेसे जो रोग होता है, उसकूं मुसलमीनीमें लकवा अग्रेजीमें पेरेसीस अथवा पाल्सी कहते हैं, इस वादीमें एकतरफका अंग रहजाता है, याने शून्य होजाता है, उसकू देशीमें अर्द्धांग या पक्षाघात कहते हैं, कमरके नीचेका भाग सुन्न पडता है, उसकुं उरुस्तंभ कहते हैं, और जीभ तथा मूंके टेढा होणेवाले लकवेकूं अर्दित कहते हैं,

(कारण) मगजपर खून चढणेसें एकाएक लकवा होता है, और मगजके दुसरे विगाडसे धीमे २ होता है, गिरजाणेसे अथवा दुसरे कारणसे मगजकी खोपरीकुं नुकशान पहोंचता है, उससेभी ये रोग होजाता है, इसकेसिवाय मिरगी हिस्टीरीया वांइटे और आंतरे तथा मूत्रपिंडके रोगसे भी लकवा होजाता है, वृद्ध ऊमरमे मगजकूं वरावर पोषण नहीं मिलणेसे इस ऊमरमें ये रोग जादा होजाता है, इसवास्ते वुढ्ढेके और वच्चेके ये रोगभये पीछे मिटणा मुस्कल है.

(इलाज) ये रोग तकदीरसेही अच्छा होता है, अंग्रेजी इलाजसे इस रोगमें देशी इलाज जादा फायदा करता है, जेसें वडा योगराज गूगल रास्नादि काथ माल कांकणी इसका तेल नारायण तेल प्रशारणी तेल मगजकु पुष्टी देणेवाली दवायें देणा मसलणा फायदेवंद है,

(पथ्य) तेलका मालिस स्नेहपान पसीने निकालणा गरम जलका स्नान घी तेल मीठा खट्टा तथा खारा पदार्थ गऊं उडद कुलथी परवल सहजणेकी फली लसण अनार वेर दाख नारगी गोखरू एरंडी तेल गोमूत्र खांड पान आंवले चिकणा घी तेलका गरमागरम भोजन उडद सवसे जादा पथ्य है, (कुपथ्य) चिंता जोजागरा मलमूत्रकू रोकणा उलटी महनत उपवास वटाणा चवला वाल मूग गुड तलाव तथा नदी काजल ५.

सुपारी ठंडा जल क्षार खट्टा तीखा तथा कडवा पदार्थ स्त्री संग घोडेपर चढणा फिरणा दिनमें नींद खराब जलसे स्नान करणा इत्यादि कुपथ्य है.

ऊरुस्तंभ.

पाराप्लीज्या.

जेसे पक्षाघातमें वदनका, वांया दहना एक आधा अंग शून्य पडता है, तेसे ऊरुस्तंभमें, कम्मरके नीचेका आधा अंग रहजाता है, पांवकू हिला नहीं सकता जादा करके उसमें फरसका ज्ञानभी नहीं रहता और दस्त तथा पेशाब बे खबर बिछोणेमें होजाताहै, पखाडाभी दुसरा आदमी फिराता है.

(कारण) करोडरज्जूके नीचले भागमें रोग होणेसे याने करोड रज्जुमें सोजन होणेसे अथवा वो जादा नरम या जादा करडा पडजाणेसे अथवा वो किसी चीजके भारमें दब जाणेसें जांघ छिल जाणेका रोग होता है. पीठपर मार पडणेसे गिर पडणेसे किसी भीतर पीठकी हड्डीकूं इजा पोहचणेसें भी रोग होजाता है—

(इलाज) पीठकी हड्डीपर जरब पहोचणेसें कोइ दरद भया होय तो उस जगे जोक लगाणा जो उसजगे सोजन होय तो ठंढी दवा लगाणी लेकिन दवा गरम लगेगी गिरजाणेसे अथवा चोट लगणेसे ऊरुस्तंभ भया होय तो रोगीकूं पूरा आराम देणा जोक लगाणी तथा सिलाइट मारणा दरदकी जगेपर बेलाडोना तथा अफीमका लेप करणा अथवा दोपहर लेप बांधणा पेशाब बंध होय जिसकूं सलाइ डालकर बाहिर निकालणा जादा देर पेशाब बंध रहे तो मूत्राशय फटूमें बरम आजाता है, (इरंडी तेल देणा २ (गलापंचक (ल० २१४) ३ महारास्नादि काथ नं० २१५) रास्ना गोखरू एरंडकी जड देवदारू साटेकी जड गिलोय फिरमालेकी गिर इनोकी उकाली सूंठका चूर्ण डालकर पीणा ४ योगराज (गूगल नं० २५४) मिलावेका चतुर्थांश काथ मिश्री घी मद्य काकी मिश्र डालकर देणा (६ हिनाइन २० ग्रेण लाईकर स्ट्रिकिया १५ ग्रेण डीकर आफ स्प्रीट १० बूंद और पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन बेर पिलाणा ७ दिवसके पाणीका स्नान उत्तम है.

अर्दित-फेशियलपाल्सी—

(कारण) ये दरदकी मसनके गोलोमेंसें जन्म लेता है, किसी २ बखत पक्षाघात बेर अर्दित साथ होता है, अर्दित वायुसें जोगत नहीं है, ठंढी हवा कान तथा दांतका दरद सरदी चोट मारी तथा गरमीका गेलनी इस रोगका कारण है.

(लक्षण) एक तरफका चहरा मुहके दरवाजोंका एक तरफका सूना नीचे मुडता है, मांढ होंठ पडता है, चोखे २ थूक या लाल गिरजाती है, पाणी पीने खाने बिछडके जाता है, कुरलीभी नहीं आती—(इलाज) कारण जांचकर उसका इलाज

करणा पहली एक जुलाव देणा एरंडी तेलका अच्छा है, पीछे योगराज गूगल अथवा पोटाश आयोडाइड देणा उडदके वडे तेलमें तले वहोत फायदेवंद है, रास्नादि काथ अच्छा है. शिलाजीत गूगलके संग देणा.

धनुपवात–टिटेनस–

ये वहोत जुलमगार आक्षेप वायू है, जिसमें सव सरीर कवाणकी तरे वांका होता है, पहली जवाडे सख्त होते है, वो थोडे घंटोसे या थोडे दिनोंपीछे वंध होता है, रोग जव जोर करता है, तव अदमी कवाणकी तरे होजाता है, ये होणा कभी पीठसे और किसी २ वखत पसवाडोसे भी कवाण करदेता है, सव वदनकूं वेसुमार जोर देता है, और ये दोरा थोडी २ मिन्टोसे होता है, दरम्यान नसें सख्त रहती है, अगर जो रोगीकूं नींद नहीं आवे तो श्वास वंध होकर मरजाता है.

(लक्षण) सव ऊपर लिखे हैं, कवाणकी तरे वदन होता है, इसवास्ते इस रोगका नाम धनुप लिखा है, कारण इस रोगका अभीतक पूरा ध्यानमे नहीं आया है, लेकिन् किसी वखतकी शरदी या जखम वगेरे कारणसे ये रोग होता है, हडक वायु और धनुर्वायुके लक्षण आपसमें लग भग मिलतेसे है, लेकिन् जरा २ फरक है, सोनीचे लिखते हैं, जिससे अलग २ परख सकते हैं.

(हडक वायु) पाणीकूं देखतेही ये रोग जोर करता है, रोगी कुत्तेकी तरे पुकारता है, तथा थूकता है, आक्षेपका जोर कम पडे पीछै नसें ढीली होकर पूरा शांत होता है, हडक वायुमें कुत्तेके काटणेकी निशाणियां होती है.

(धनुर) धनुप वायुमें इस लक्षणोमेंका एकभी होता नहीं.

(इलाज) स्नायु शैथिल्य कृत दवायें (अफीम) अच्छा इलाज है, खुरासाणी अजवाण तथा क्लोरोफोर्म और क्लोरोडाइन अथवा इकेला क्लोरलभी अच्छा है, वरफकी कोथली भरके पीठके हड्डीपर धरणा जादा सख्त धनुरवातमें क्लोरोफार्मका ५ वूद और टिकचर ओपियमका २० वूंद एक औंस जलमें देणा आखर नं० ५३२ वाला मोफर्याका मिकश्चर देणा और चार २ घटेसे देणा जारी रखणा.

शिरोरोग–हेड एक–

(कारण) तथा लक्षण) शिरमे दरद होणेका अनेक कारण होता है, और वो हरेक कारण समझे विगर पहचाणे विगर शिरके दरदका पूरा इलाज फायदेवद होसकता नहीं शिरके दरदका संवध इतनी जगेसे होता है, अन्नाशय (होजरी) यकृत् (लीवर) पकाशय (आंतरे) मज्जातंतु या भवांरे अथवा आधा सीसी मगज (ब्रेन) और संधिवायु.

(होजरी संवंधी शिरमे दर्द) वहोत करके कपालमें अथवा एक आंखपर या आं-

सुपारी ठंढा जल क्षार खट्टा तीखा तथा कडवा पदार्थ स्त्री संग घोडेपर चढणा फिरणा दिनमें नीद खराब जलसे स्नान करणा इत्यादि कुपथ्य है.

ऊरुस्तंभ.

पाराप्लीज्या.

जैसे पक्षाघातमें वदनका, वांया दहना एक आधा अंग शून्य पडता है, तेसे ऊरुस्तंभमें, कम्मरके नीचेका आधा अंग रहजाता है, पांवकू हिला नहीं सकता जादा करके उसमें फरसका ज्ञानभी नहीं रहता और दस्त तथा पेशाव बे खबर बिछोणेमें होजाताहै, पसवाडाभी दुसरा अदमी फिराता है.

(कारण) करोडरज्जूके नीचले भागमें रोग होणेसे याने करोड रज्जुमें सोजन होणेसे अथवा वो जादा नरम या जादा करडा पडजाणेसे अथवा वो किसी चीजके भारसे दब जाणेसें जांघ शिल जाणेका रोग होता है. पीठपर मार पडणेसे गिर पडणेसे किसी भीतर पीठकी हड्डीकूं इजा पोहचणेसें भी रोग होजाता है–

(इलाज) पीठकी हड्डीपर जरब पहोचणेसें कोइ दरद भया होय तो उस जगे जोक लगाणा जो उसजगे सोजन होय तो ठंढी दवा लगाणी लेकिन दवा गरम लगेगी गिरजाणेसे अथवा चोट लगणेसे ऊरुस्तंभ भया होय तो रोगीकूं पूरा आराम देणा जो हलगाणी तथा निलाथर मारणा दरदकी जगेपर बेलाडोना तथा अफीमका लेप करणा भया दोपर लेप बांधणा पेशाव बंध होय जिसकूं सलाइ डालकर बाहिर निकालणा जादा देर पेशाव भर रहे तो मूत्राशय फटूमें गरम आजाता है, (इरंडी तेल देणा २ (रास्नादिक्वाथ (ल० २१४) ३ महारास्नादि क्वाथ नं० २१५) रास्ना गोगल गूगली जट देवदारू साटेकी जट गिलोय किरमालेकी गिर इनोकी उकाली सूंठका चूर्ण डालकर पीणा ४ योगराज (गूगल नं० २५४) मिलावेका चतुर्थांश क्वाथ मिश्री सी मद्य डालकर देणा (६ किनाइन २० ग्रेण लाईकर स्ट्रिक्निया १५ बूद डीलूट आफ स्पील १० बूद और पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाणा ७ दरियाके पाणीका स्नान उत्तम है.

अर्दित-फेशियलपाल्सी–

(कारण) ये दरदभी मगजके रोगोमेंसें जन्म लेता है, किसी २ वखत पक्षाघात भी अर्दित भया होता है. अर्दित वायुसे जोरम नहीं है, ठंढी हवा कान तथा दाढा दरद सर्दी गरमी वगैरा तथा गरमीका रोगभी इस रोगका कारण है.

(लक्षण) एक तरफा चहरा रहजाय मुंहके दरवाजोंका एक तरफका मुखा नीचे लुढक जाय है, मांड ठीक पडता है, बोलणे २ थूक या लाल गिरजाती है, पाणी पीवेंगे तो भी गिरेगा है, कुछभी नहीं आती–(इलाज) कारण जांणकर उसका इला

करणा पहली एक जुलाब देणा एरंडी तेलका अच्छा है, पीछे योगराज गूगल अथवा पोटाश आयोडाइड देणा उडदके वडे तेलमें तले वहोत फायदेवंद है, रास्नादि काथ अच्छा है. शिलाजीत गूगलके संग देणा.

धनुषवात–टिटेनस–

ये वहोत जुलमगार आक्षेप वायू है, जिसमें सव सरीर कवाणकी तरे वांका होता है, पहली जवाडे सख्त होते है, वो थोडे घंटोसे या थोडे दिनोंपीछे वंध होता है, रोग जव जोर करता है, तव अदमी कवाणकी तरे होजाता है, ये होणा कभी पीठसे और किसी २ वखत पसवाडोसे भी कवाण करदेता है, सव वदनकूं वेसुमार जोर देता है, और ये दोरा थोडी २ मिन्टोसे होता है, दरम्यान नसें सखत रहती है, अगर जो रोगीकूं नींद नहीं आवे तो श्वास वंध होकर मरजाता है.

(लक्षण) सव ऊपर लिखे हैं, कवाणकी तरे वदन होता है, इसवास्ते इस रोगका नाम धनुष लिखा है, कारण इस रोगका अभीतक पूरा ध्यानमें नही आया है, लेकिन् किसी वखतकी शरदी या जखम वगेरे कारणसे ये रोग होता है, हडक वायु और धनुर्वायुके लक्षण आपसमें लग भग मिलतेसे है, लेकिन् जरा २ फरक है, सोनीचे लिखते हैं, जिससे अलग २ परख सकते हैं.

(हडक वायु) पाणीकूं देखतेही ये रोग जोर करता है, रोगी कुत्तेकी तरे पुकारता है, तथा थूकता है, आक्षेपका जोर कम पडे पीछै नसें ढीली होकर पूरा शांत होता है, हडक वायुमें कुत्तेके काटणेकी निशाणियां होती है.

(धनुर) धनुष वायुमें इस लक्षणोमेंका एकभी होता नहीं.

(इलाज) स्नायु शैथिल्य कृत दवायें (अफीम) अच्छा इलाज है, खुरासाणी अजवाण तथा क्लोरोफोर्म और क्लोरोडाइन अथवा इकेला क्लोरलभी अच्छा है, वरफकी कोथली भरके पीठके हड्डीपर धरणा जादा सख्त धनुरवातमें क्लोरोफार्मका ५ वूंद और टिंकचर ओपियमका २० वूंद एक औंस जलमें देणा आखर नं० ५३२ वाला मोफर्याका मिकश्चर देणा और चार २ घंटेसे देणा जारी रखणा.

शिरोरोग–हेड एक–

(कारण) तथा लक्षण) शिरमे दरद होणेका अनेक कारण होता है. और वो हरेक कारण समझे विगर पहचाणे विगर शिरके दरदका पूरा इलाज फायदेवद होसकता नहीं शिरके दरदका संवध इतनी जगेसे होता है, अन्नाशय (होजरी) यकृत् (लीवर) पकाशय (आंतरे) मज्जातंतु या भवांरे अथवा आधा सीसी मगज (ब्रेन) और सधिवायु.

(होजरी संवंधी शिरमे दर्द) वहोत करके कपालमें अथवा एक आंखपर या आं-

सके आसपास दरद होता है, उससे प्यास तपत और उबाकी होती है, ये दरद थोडी मिन्ट या थोडा कलाक रहता है, और बहोत करके भोजन किये बाद अथवा प्रभात समें चढता है, इस दरदमे अजीर्ण मिटणेका इलाज करणा चाहिये सो लोक भूलसे मेलेरियाका इलाज करते हैं. ये दरद हमेस बैठे रहणेवाले जुनान अदमियोंके बहोत होता है, खाणे पीणेके अति योगसे और खराब सराप नहीं हजम होय एसा खुराक खानेसें ये दरद होता है.

(इलाज) भोजन किये बाद शिर चढता होय तो राई और गरम पाणी पीकर उल्टी कराउणी साल्वोलेटाइल २० बूंद साइट्रेट आफमेगनिस्या और तेज चा काफी पीणा आराम और नींदभी पथ्य है.

(यकृत् संबंधी शिरका दर्द) कपालके आरपार खींचे जैसा दरद मालम दे और कभीकभी एसा दरद होय एक तरफ दरद जादा एक तरफ कम और पेटकी कोडीपर ठोरा मारणेसे एकदम शिरका दर्द जाता रहे.

(इलाज) सोडावोटर जादा पीणा ३ बूंद क्लोरोफोर्म और साइट्रेट आफ-मेगनिस्या मिलाकर पीणा जादा दिन जारी दरद रहे तो (नं० ४६१ तथा ४६२ की रेसक दवाएं देणी.)

(आंतरेमे भया शिरका दर्द) पेटमें अजीर्ण चपणेसे अथवा कब्जीयतसे दरद होता है, बहोत करके इस कारणका दर्द सब शिरमें होता है, और कारण दूर होनेसे मिटता है.

(मज्जा तांतुमेसे भया शिरका दर्द) मनके विकारसे या गुस्सेमें नाताकत अदमियोंके ये दरद होता है, हिस्टीरियावाली औरतें इस रोगके आधीन होती है, ये मेलनेली जादा करके होती तथा कुटुंबमें किसी किस्मका विकार होता है, लेकिन कोई इस बातको जाहिर नहीं जानता इसमें फेज नहीं रखता जो लोक सराप नहीं पीते कच्चा पदार्थ नहीं जानते लेकिन जो लोक जो कभी या काफी जादा पीते जो उनोंके शिरका दर्द होता है, देसे मुजब और उनमान मुजब नहीं खाणेवालेके जादा ही मुद्दत दुखा रहणी चाहिये सो नहीं रहती चा हमेसे पडादे तमाखूका जीन वगैरा करना (ये सो सरासर देह एकदम खराब है) (इलाज) आराम तथा नींद-कपूरके अर्कमें सोडावोटर जादा पीणा ऊपर लिखी जो बातें उसका सुधारा करणा या कोई बेचैन होवे दूर और पानी बिना ऐसा आराम तथा और उपाय नहीं करणा बैठे रहने वाले जिन सूरी दवाएं खोज बिना जिसके व्यसनका त्याग करणा अथवा हल्का और कम खुराकका खाना खाना जादा और पथ्य भोजन करणा.

(आंखके) रोगोंका दरद मेलेरियाकी वहीं दवाएं लिखे देखके मुजबकी

तरे टेमोटेम दरद सुरू होता है सब दिन अथवा थोडी देरसे अच्छा होता है, किसी २ वखत दरद जादा होता है, अजीर्णसेभी आधासीसीका रोग होता है, वेर २ गर्भ रहणेसे वहोत दिनों तक बच्चेकूं चुंघाणेसें वहोत ऋतु धर्ममें खून जाणेसे नाताकत औरतोंकूंभी ये रोग होजाता है, इस रोगमें औरभी कष्ट देणेवाले अहवाल होते हैं, रोगी फजरसे ही शिरका दर्द लेकर उठता है, खाये जाता नहीं शिर धडकता है, बोलणा चालणा अच्छा नहीं लगता चहरा फीका आंखकी कीकी सुकुडाती है शिर गरम होता है, ठढा उपचार सें शांति होति है रोगीकूं दुसरी गडवड अच्छी नहीं लगती.

(इलाज) इस रोगका मुख्य कारण मेलेरिया याने जहरी हवा है, इसवास्ते किनाइन अच्छी है,तीन २ घंटेसे ५ ग्रेण देणा और दस्तकब्जी होय तो जरूरीपर जुलाब लेणा होजरी लीवर तथा आंतरोंका विकार होय तो दस्तकूं साफ कर पौष्टिक दवा देणी औरतोंके रोगमें मुख्य करके प्रदर रोग होता है, वो मिटाणा लिंटके टुकडेपर क्लोरोफार्म छांटकर दरदकी जगेपर धरणा उसपर घडियालका काच धरणा अथवा कनपट्टीपर छोटी सी राईकी पट्टी मारणी गरम सेकसेंभी फायदा होता है, लेकिन् जादा करके ठंढा इलाज वहोत फायदा करता है, वरफ धरणा दशांग लेपका शिरपर मालिस करणा लवंडर अथवा कोलनवोटरमें दोभाग पाणी मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर शिरपर धरणा गुलाबजल अथवा गुलाबजलके संग चंदण घसकर अथवा सांभरका सींग घस कर लगाणा नवसादर चूना अमोनिया सूंघणा पांवोंकूं गरम जलमें रखणा शिर दबाणा घीके संग १ ग्रेण ओफर्या मिलाकर सुंघणा भमोरे पर दो जोकलगाणी नकछींकणी सूंघणी सूरज उगणेसे पहली तुलछी तथा धतूरेके पत्तोंका रस सुंघणा ताजी जलेबी या ताजा खोवा खाणा नींवगिलोयका हिम पीणा अमृतवटी दूधके संग सुबे पीणी ए सब इलाजभी करणेमें आवे अगर जो दस्तकी कब्जी होयगी अथवा पाचन क्रियामें कुछ विगाड होगा तो दरद मिटणेका नही इसवास्ते दुसरे सब इलाजोंके संग दस्त साफ आणेकी दवा देते रहणा.

(मगज संबंधी शिरका दर्द) आगे लिखे शिरके दरदके प्रकारोंसे ये प्रकार विलकुल जुदा है, जादावडी ऊमरके आदमियोंके शिरमें खूनका जोस चडणेसे होता है, सख्त दुखणेमें शिरमें सटके चलते हैं, आंखें लाल होती है. चहरा तेजी भरा होता है, शिरके आरपार खिचता होय् एसा मालम देता है, वेर २ श्वास तथा बुखारभी आजाता है-इलाज-जुलाव गरम खानपानसे वचणा पथ्य और उन मानमुजब खाणा सूरजकी धूपसे दूर रहणा थोडी कसरत मगजकूं महनत नहीं देणा ये सब जरूरका इलाज है, सख्त दरद होय तो शिरपर ठंढा इलाज करणा (नं० ५३९ का लोशन) कानके पिछली तरफ आठदश जोकलगाणी देशी वैद्यक शास्त्रमें शिरके रोगका वहोत भेद किया

राके आसपास दरद होता है, उससे प्यास तपत और उवाकी होती है, ये दरद थोडी मिन्ट या थोडा कलाक रहता है, और बहोत करके भोजन किये बाद अथवा प्रभात समें चढता है, इस दरदमें अजीर्ण मिटणेका इलाज करणा चाहिये सो लोक भूलसे मेलेरियाका इलाज करते हैं, ये दरद हमेस बैठे रहणेवाले जुनान अदमियोंके बहोत होता है, खाणे पीणेके अति योगसे और खराब सराप नहीं हजम होय एसा खुराक खाणेसें ये दरद होता है.

(इलाज) भोजन किये बाद शिर चढता होय तो राई और गरम पाणी पीकर उल्टी कराडालणी सालवोलेटाइल २० बूंद साइट्रेट आफमेगनिस्या और तेज चा काफी पीणा आराम और नींदभी पथ्य है.

(यकृत् संबंधी शिरका दर्द) कपालके आरपार खेंचे जैसा दरद भालम दे और पनरांव एसा दरद होय एक तरफ दरद जादा एक तरफ कम और पेटकी कोठीपर टहोका मारणेसे एकदम शिरका दर्द जाता रहे.

(इलाज) सोडावोटर जादा पीणा ३ बूंद क्लोरोफोर्म और साइट्रेट आफ मेगनिस्या मिलाकर पीणा जादा दिन जारी दरद रहे तो (नं० ४६१ तथा ४६२ की रेसक दवायें देणी.)

(आंतरेमें भया शिरका दर्द) पेटमें अजीर्ण बधणेसे अथवा कब्जीयतसे दरद होता है. बहोत करके इस कारणका दर्द सब शिरमें होता है, और कारण दूर होणेसे मिटता है.

(मज्जा तंतुओंमें भया शिरका दर्द) मनके विकारसे या गुप्तरोगसे नाताकत अदमियोंके ये दरद होता है, हिस्टीरिया वाली औरतें इस रोगके आधीन होती है, ये रोगवाले जादा करके होशमें तथा कलेजेमें किसी किस्मका विकार होता है, लेकिन वैद्य इस बातको जाणता नहीं इससे परेज नहीं रखता जो लोक मरण समेकी पीडा सहन करणे नहीं आवे लेकिन जो लोक जो कभी चा काफी जादा पीते हो उनके शिरका दर्द होता है, देम मुजब और उनमान मुजब नहीं खाणेवालेके जादाको मूल दवा करणी चहिये सो नहीं खाली बेन कमेने पडारहे तमाकू बहोत खाना (ये भी मरण देह एकका कारण है) (इलाज) आराम तथा नींद-करणे मनके विकारको पाया ऊपर किसी भी आदमें उसका सुधार करणा चा काफी पेट पीने दूध बेर पानी बिना पेम आराम अथवा अति उद्यम नहीं करणा बेठे रहने वालेने दूधी दवाने बोज किसी प्रकारके व्यसनका त्याग करणा अथवा कम करणा और कब्जीयत होय खुलासा त्याग करणा सादा और पथ्य भोजन करणा.

([illegible]) नसोंका दरद मेडेरिया ही बहोत दवामें सिर्फ दरदको

रे टेमोटेम दरद सुरू होता है सब दिन अथवा थोडी देरसे अच्छा होता है, किसी २ वखत दरद जादा होता है, अजीर्णसेभी आधासीसीका रोग होता है, वेर २ गर्भ रहणेसे वहोत दिनों तक बच्चेकूं चुंघाणेसें वहोत ऋतु धर्ममें खून जाणेसे नाताकत औरतोंकूभी ये रोग होजाता है, इस रोगमें औरभी कष्ट देणेवाले अहवाल होते है, रोगी फजरसे ही शिरका दर्द लेकर उठता है, खाये जाता नहीं शिर धडकता है, बोलणा चालणा अच्छा नहीं लगता चहरा फीका आंखकी कीकी सुकुडाती है शिर गरम होता है, ठंडा उपचार सें शांति होति है रोगीकूं दुसरी गडबड अच्छी नहीं लगती.

(इलाज) इस रोगका मुख्य कारण मेलेरिया याने जहरी हवा है, इसवास्ते किनाइन अच्छी है,तीन २ घंटेसे ५ ग्रेण देणा और दस्तकब्जी होय तो जरूरीपर जुलाब लेणा होजरी लीवर तथा आंतरोंका विकार होय तो दस्तकूं साफ कर पौष्टिक दवा देणी औरतोकै रोगमें मुख्य करके ग्रदर रोग होता है, वो मिटाणा लिंटके टुकडेपर क्लोरो-फार्म छांटकर दरदकी जगेपर धरणा उसपर घडियालका काच धरणा अथवा कनपट्टीपर छोटी सी राईकी पट्टी मारणी गरम सेकसेंभी फायदा होता है, लेकिन् जादा करके ठंडा इलाज वहोत फायदा करता है, बरफ धरणा दशांग लेपका शिरपर मालिस करणा लवंडर अथवा कोलनवोटरमें दोभाग पाणी मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर शिरपर धरणा गुलाबजल अथवा गुलाबजलके संग चंदण घसकर अथवा सांभरका सींग घस कर लगाणा नवसादर चूना अमोनिया सूंघणा पांवोंकूं गरम जलमें रखणा शिर दबाणा घीके संग १ ग्रेण ओफर्या मिलाकर सुंघणा भमांरे पर दो जोकलगाणी नकछीकणी सूंघणी सूरज उगणेसे पहली तुलछी तथा धतूरेके पत्तोंका रस सुघणा ताजी जलेबी या ताजा खोवा खाणा नींवगिलोयका हिम पीणा अमृतवटी दूधके संग सुबे पीणी ए सब इलाजभी करणेमें आवै अगर जो दस्तकी कब्जी होयगी अथवा पाचन क्रियामें कुछ विगाड होगा तो दरद मिटणेका नही इसवास्ते दुसरे सब इलाजोंके संग दस्त साफ आणेकी दवा देते रहणा.

(मगज संबंधी शिरका दर्द) आगे लिखे शिरके दरदके प्रकारोंसे ये प्रकार बिलकुल जुदा है, जादावडी ऊमरके आदमियोंके शिरमे खूनका जोस चढणेसे होता है, सख्त दुखणेमें शिरमें सटके चलते हैं, आंखें लाल होती है. चहरा तेजी भरा होता है, शिरके आरपार खिंचता होय एसा मालम देता है, वेर २ श्वास तथा बुखारभी आजाता है—इलाज—जुलाब गरम खानपानसे बचणा पथ्य और उन मानमुजब खाणा सूरजकी धूपसे दूर रहणा थोडी कसरत मगजकूं महनत नहीं देणा ये सब जरूरका इलाज है, सख्त दरद होय तो शिरपर ठंटा इलाज करणा (नं० ५३९ का लोशन) कानके पिछली तरफ आठदश जोकलगाणी देणी वैद्यक शास्त्रमें शिरके रोगका बहोत भेद किया

है–वायु, पित्त, कफ, सन्निपात, खूनका, रक्षयका, कृमियोंका, सूर्यावर्त्त, (सूर्य चढ़नेके साथ शिर दूखेसो) अनंतवात, (त्रिदोषका शिरोरोग) (शंखक कनफटीका भयंकर शिरोरोग) अर्धाव भेदक, (आधा शिर पकडेसो)

(शिरके दर्दका इलाज) कितनेक तो पीछे लिखे हैं अब औरभी लिखते हैं, सोभी फायदे मंद है, सोनेरका धोया घी शिरपर भरणेसे अथवा केशर मिश्री बकरीके दूधके साथ चंदन घस नास देणेसें पित्तका शिर मिटता है, २ सूंठ मिरच पींपर करंज और सहजणेकी छाल उसको बकरीके मूतमें पीस नाकसे सूंघणा अथवा नींबोलीका तेल सुंघणा उसमे कृमि पडणेसे भया शिरोरोग मिटता है, ३ भांगरेका रस और बकरीका दूध सम वजन मिलाकर धूपमें गरम कर नाकमें सुंघणेसें सूर्यावर्त्त रोग मिटता है, ४ आधाशीशीके रोगमें पहली घी पीणा बाफ पाणीकी अथवा नास लेकर पसीना लाना पीछे नुलाय लेणा सुगंध धूप लेणा और घीका गरमा गरम पदार्थ खाणा वायविडंग और काला तिल सम वजन दूधमें पीस लेप करणा उसहीकी नास देणी ५ दारू हलदी मजीठ नीमकी छाल वाला और पदमाखका लेप करणा ठंढे पाणीसे ठंढे दूधसे सींचणेसे और वड वगेरे दूधवाला झाडके छाल वगेरेका लेप करणेसे कनफटीका शिरोरोग शांत पडता है. ६ ४ वाल जेठी मध और १ वाल वछनाग इनोका महीन चूर्ण कर गाईके दूधमें पीसणेसे सब शिरका दर्द मिटता है, ७ आकके पत्ते कपालपर बांधणा आकके फूलेका लेप, पालेका लेप, चंदनका लेप, लौंगका लेप, सूंठका लेप नागरवेलका पीला दशांग लेप, जायफलका लेप, गुलाब जलका पोता अगरका लेप करणा नारंगीकणी तमाखु कायफल आदेका रस अगस्तियाका रस इत्यादिकोंकी नास देणी (८ नं० ६५०) ६५१) ६५२ तथा ६५३ का इलाज करणा (९ दांत नाक कान इनके रोगमें शिरका दर्द होय तो उसका इलाज करणा) १० धातूका बिगड जाने प्रदरमें शिरमें दर्द होय तो वो रोग मिटाणेसे शिरका दर्द मिटेगा.

शूल–चमका–चमक.

न्युरेल्जिया.

शूलका रोग मज्जा नाडीके साथ संबंध रखता है, लक्षणमें हरकिसी जगे होजाती है, आडा टेढा ये रोग कभीमें थिरमें दांतमें और पसलियोंमे होता है, रोग बहोत है, इसलिये मुख्य मुख्य जोखमोंमे इस शूलका वर्णन गिणना.

(कारण) दांतके सडनेमेसे इस रोगकी पैदाश होती है, खाणे पीणेकी गफलत और नाडीमें इस रोगकी पैदाश होती है, मारणेके कलुषमेंका ये प्रमाण जाणेमेंसे ये रोग होता है, मेलेरियाकी बदबू हवामेंसे ये चमकेका रोग होता है.

(उपाय) शूल अथवा चमके चढते है,

(इलाज) कारणकूं पहचाण इलाज करणा, शिरके दर्दका कारण या तो जहरी हवा या बदहजमी अथवा दांतका दरद अथवा औरतोंके गर्भका विकार इत्यादिकही होता है, इसवास्ते कोणसा कारण है, सो निश्चय करणा, जो दांत सडा हो यतो निकलवा डालणा, अथवा अछा करणा, जो अजीर्णसे चसके चलते होय तो जुलाब लेकर खाणेपीणेसें पाचन क्रियाकूं सुधारणी, जो औरतोंके ऋतुधर्मके रोगसे शूल होय तो स्त्रियोंके प्रकरणमें लिखा सो इलाज करणा, जो मेलेरियासे होय तो किनाइन और लोहकीं दवाइ कर मिटाणा, गरम शेक करणा, राईका पलाष्टर मारणा (क्लोरोफार्ममें लींटका कपडा भिगाकर दरदकी जगेपर धरणा) (होमियोपथिकइलाज)–(चहरेके अलग २ जगेके शूलपर) एकोनाइट आर्सेनिकम बेलाडोना कोस्टीकम कोलोसीन्थ हायोसवामस लाईकोपोडियम नक्सवोमिका फोसफरस जांघ तथा पगके चसकेमे–एकोनाइट कोलोसिन्थ नक्सवोमिका पलशेटिला वगेरे वांसा तथा कमरके चमकेमे ब्रायोनिया कोस्टीकम लाइकोपोडियम नक्सवोमिका सल्फर छाती तथा पशलीके चसकेमे आर्निका ब्रायोनिया पल्सेटिला आर्सोनिक वगेरे.

अपस्मार–मिरगी–फेफरा.

एपीलेप्सी.

कारण ये रोग औलादमें ऊतरता है, २ बहोत दारू नसेकी चीजें, ३ बहोत विषयाशक्तपणा उससे भया धातूका क्षय, ४ हथरश (मास्टर बेशन) से वीर्य पटकणेसे, ५ मगजकी व्याधि कृमिरोग गर्भाशयका रोग पेशाब पथरीका रोग बच्चोंके दांत फूटणेसें होता रोग धास्ती गुस्सा वगेरे कितनेक औरभी रोग इस रोगकू मदतगार है.

(लक्षण) साधारण मृगीमें थोडी देर वे शुद्धी (बेहोसी) आकर रोगी जिस हालत में बैठा होय उसही हालतमें स्थिर हो जाता है, वो थोडीसी देरमें सावचेत होता है, किसी २ वखत बेहोसीके सग मू तथा हाथ पांवोकी नसें थोडी खैंची जती है, सावचेतीमें आये बादभी रोगी जरा मुरझा कर पीछै सुस्थ होता है, और पहले जो हालचीते हैं उसका उसकूं खयाल बिलकूल नहीं होता सख्त मिरगीमें रोगी जोरसे चीस मारकर बेहोस होकर जमीनपर गिरजाता है, हाथ पांव खिंचते हैं, तणीजणेके सबब हाथपांव तथा सब बदन जोरसे तडफडता है, हाथकी अंगलिया टेढी होजाय श्वास घरड २ करता चले चहरा लाल होजाय बहोतसी वखत मूं टेढा होजाय मूमेंसे झाग आवे आंखके डोले चढजाय आंख लाल होय दांत खीली जोरसे बैठ जाय बीचमें जीभ आणेसे कट जाय दस्त पेशाबभी किसी वखत अंदर होजाय किसीकू थोडी देरसे किसीकूं कइ घटोसे पडे रहे बाद हाथ पांवका तणाव नरम पडे तब रोगी भर नींदकी तर

उन्माद-पागल-दिवाना.

इन्सेनिटी-मेनिया.

मनका चंचलपणा बुद्धि अकल या ज्ञानका थोडा या बहोत नाश होना उसकूं उन्माद कहते है जिसमें मनका भ्रम होता है, (प्रकार)-उन्माद रोगका मुख्य तीन प्रकार है (१ चित्त भ्रम)-इसतरेके उन्मादमें अदमीकी बिलकुल अकल जाती रहती है मनमें तरंगे उठती है बकता है तोफान करता है, जुदे२ सन्निपातमें रोगीका जैसा अहवाल होता है एसे हाल चित्त भ्रममें होते हैं, अथवा चित्तभ्रम है सो सन्निपात है, रोता है कोइ गाता है कोइ नाचता है कोइ मारणे दोडता है, नींद नहीं आती खाणेकी पीणेकी दरकार या पेशाबका खयाल नहीं रहता (२ उदासीपणा)-इस उन्मादमें अदमी बिलकुल पागल नहीं होता लेकिन् किसी कारणसे चित्त भ्रमित होता है, संसार परसे [illegible] उदासी है, और वैराग आता है तब जोगी फकडसामी सरडेकी गप्पोसें मुक्ति [illegible] चाहता है लेकिन् अकलमें भ्रम होनेसे इतना विचार नहीं रहता के मुक्ति क्या च[illegible] ओहदी है अथवा इन बेवकूफोंकी अज्ञान कष्ट क्रियासे दोनों भवनिगाडणा है तब ये विचारमें उमर जीणा व्यर्थ मालम देता है मनमें एसा विचार किसी २ वखत किया करता है के मैंने बहोत २ जोर पाप किये हैं इसवास्ते जो अपघात करनेका उद्यम करता है कोइ धर्म दिखाना होता है कोइ आपअपणेकों राजा समझता है, कोइ बहोत दारूबाज जैसा कोइ हलालखोर होकर भटकता है कोइ बेफिकरा भटकता है कोइ किसमें सरकार होता है, कोइ बोलताही नहीं. एसे अनेक लक्षण है.

(२ बुद्धिका नाश) इस तरेके उन्मादमें बुद्धि नाताकत हो जाती है जो कभी विचार कर सकता नहीं विनाकारण बकता है गाता है बहोत चलता है हरकोइ काम नहीं करनेका करेगा याद कुछ नहीं रहता सुख दुःख हर्ष शोक प्रीति अप्रीतिका होस नहीं रहता बुद्धिमेंभी बुद्धिका नाश होता है ये एसा उन्माद नहीं मिटता.

(कारण)-उन्माद रोग होनेके बहोतसे है २ पागलकी औलाद पागल होय २ अ[illegible] पने गोतमें अथवा सबधियोंमे विवाह करनेसे ३ बहोत मराप पीणेका व्यसन ४ नहीमें [illegible] भंग गांजा तंबाकू ५ बहोत भोग करणेसे अथवा इस रमसे के बडा नुकसान होना [illegible] अदमीका मरणा जैसाही नुकसानी भोग फिकर ६ बहोत एकाएक जादा आनंदका [illegible] नहीं मिटना ७ मगजकू बहोत महनत या मगजमें कोई किस्मका रोग [illegible] इत्यादि अनेक कारण उन्मादके है.

(इलाज) उन्मादके रोगमे अदमी एक पशूसेभी जादा खराब हालतमें जाणिता है इसवास्ते इस रोगी अदमी दुसरेका नुकसान करता है इसवास्ते बेबंद सरकार उनके रखनेवाले कुटुम्बवालेने बडी हास्पीटलो बनाई है उस मे पागलोंको

रोककर रखते हैं सोतो अच्छा है लेकिन् जैसें इनोंका तोफान रोकते हैं, तैसें इनोंका इलाज करके अच्छाभी करणा चाहिये लेकिन् अपसोसकी वात है के उस जगे वो के दियोंसेभी जादा वुरी हालतमें जिंदगी गुजारतेहैं उनोंके लायक इलाज करणेमें आता होय एसा मालम तो नहीं पडाके जिससे वो अच्छे होजाय वोविचारे)–मैड हाउसमें कंगालों- कीतरे जिंदगी पूरी करते हैं सरकार कहेगी उनोकूं अच्छे करणेकी कोइ दवा नहीं है सच्च है अंग्रेजीमें एसी दवा नहीं होगी लेकिन् आयुज्ञानार्णवमें उनोंके वास्ते वहोत असरकारक इलाज मोजूद है, फक्त अंग्रेजी वैद्यकका आधार रखके सरकार आयुज्ञाना- र्णव जैसा उत्तम इलाजोंके संग्रहकूं भूल नहीं जाणा चहिये वहोतसे डाकटर लोक देशी इलाजोंके तरफ अभाव नजर रखते हैं, लेकिन् एसे करणेसें वो लोक ज्ञानकी वडोतरी पर एक तरेका पडदा डालणे जैसा करते हैं,), उन्मादरोगका साधारण इलाजोंमें नसोंको ढीली करे एसी दवा अच्छी है इस इलाजसे जोर कम पडता है और नींद आती है वो दवा अफीम भंग क्लोरल हाइड्रेट पोटाश ब्रोमाइड कोनायम क्लोरोफार्म डिजीटे- लिस और सल्फोनलमुख है) २ मिरगी तथा वांइटेके रोगमें लिखी दवायें उन्मादमें फायदेवंद है) ३ मगजकूं ताकत देणेवाली सव दवायें इस रोगकूं अच्छी है एसी दवा देशी वैद्यक शास्त्रमें अनेक और वहोत अच्छी२ है, लेकिन् प्रतीति और युक्तिसें देणेकी कसर है, (४ सोना)–उन्मादकेवास्ते अच्छा है सोनेकी भस्मी, वर्क, सोनेका उकाला पाणी दवा है मगजकूं फायदा पोहचाता है सुवर्णवशंतमालती जिसमें सोना होता है वो चित्त भ्रममें मगजकूं शोधन पोषण करती है) ५ ब्राह्मी भूराकोला शंखा- हुली, गूगल मोलेठी शतावर वच आंवले ये सव मगजके रोगमें अच्छा फायदा करती है उनोकी अलग २ वनावटें प्रसिद्ध है वज एक साधारण चीज है मगर मगजकूं अद्भुत ताकत देती है इय वातकूं वहोत नहीं जाणते हैं. (६ अमृतवटी)–वुद्धि और मगजकूं सुधारती है खिसेभये मगजकूं ठिकाणे लाती है, ७ आहार विहार और उत्तम दवा इनोसें विगडा भया चित्त ठिकाणे आता है जैसे गांजा सराप भंग वुद्धिकूं भ्रष्ट करती है तेसें उपर लिखी दवायें वुद्धिकूं सुधारती है इसमें आश्चर्यही क्या है, इस उन्माद रोगका संपूर्ण व्याख्यान करे तो संसारके वहोतसे लोक उन्मादी है, वुद्धिका विपमपणा चचल- पणा अस्थिरपणा और वुद्धिका हीन मिथ्या या अतियोगसे होते भये सर्व वुकशान- कारक कार्योंमें वुद्धिका उन्माद प्रत्यक्ष मालम देता है, वुद्धिका सर्वांसमें शुद्धपणा और समानपणा थोडेही भाग्यवान आदमियोंमें मालम पडेगा वाकी सव थोडे या वहोत असे उन्मादी है और अयोग्य खान पान वुद्धिकूं भ्रष्ट करणेवाले व्यशन वुद्धिकूं नाश करणे- वाली दवा एसे २ अनेक विरुद्ध आचरणसे उन्मादी वहोत वढ गये हैं जो लोक सादा- ईसे रहै सादा खानपान लेवे व्यसनोसे दूर रहै उत्तम और शांत गुणकी दवाई लेवे

शांत सतोगुणवाला आहार और विहारका सेवन करे तो बुद्धिसम और ठिकाणे रहे वो जगतमें न्याई सब काम अच्छाही करै तब जगतमें सुख संपत्तकी वृद्धि होय ज्ञेय समता बुद्धिका चंचलपणा आपसेही बंध होजाय जिस अदमीकी बुद्धिका प्रक बहुत देरागेमें आवै तो समझणाके अतियोग भया वो बुद्धिभी आखर उन्मादपणमें ज है बुद्धि अथवा मनकी समानता उसहीका नाम ज्ञान अथवा स्याणापणा वो मुक्ति साधक और संसारका साधक जाणना चाहिये.

पानात्यय–मदात्यय–सरापके रोग.

इस सराप पीणेकी पृथा अनादि और इंद्री सुखोंमे मग्न एसे विवेक शून्यपणसे लो पीते चले आये युगलिये सब सराप पीते थे एसा जैनियोंके शास्त्रोमें लिखा है, कल्प वृक्ष उने देताथा पाप पुन्यका स्वरूप वो कुछ नहीं जाणतेथे बाद ऋषभदेवजीने वि अहितका विचार कर सब युगलकोंको मदिरा सुडाई इक्षुका रस पिलाया तबसे इक्ष्वा वंश आदि भयाबाद पचास लाखकोडि सागरोपम वर्ष बीतेबाद सराप पीणेका शि सिखा दवाके वरतानेमें ब्राह्मण ऋषियोंने फेर नई कला सरूकी उनोका नाम इस युग धरा प्रसन्ना, चंद्रहास, माध्वी, सुरा, पिष्टा आदि वो इस वखत नाम प्रसिद्ध नहीं फेर तो मजेमें पडके राजा लोकोंने अनेक तरेके दारू बणवाये लेकिन् दारूके अतिश्य व्यसनमें भ्रम और बुद्धिका नाश होता है, उसकूं मदात्यय कहते हैं, सराप के अन्य नाम इस वखत प्रसिद्ध नहीं है लेकिन् इस वखत अंग्रेजीके प्रसिद्ध नाम लिखते हैं शाइन ब्रांडि सिरिट ब्रांडि रम जीन पोर्ट व्हिस्की शेम्पेन बीयर शेरी और देशी सराप ताडिका रस जिसकू संस्कृतमें सीधू मद्य लिखा है इन सब सरापोंमें एक तरेका नशा पदार्थ होता है, जिसकूं अंग्रेजीमें आल्कोहोल कहते हैं जिस सरापमें ये पदार्थ ज्यादा होता वो ज्यादा नशा और नुकशान ज्यादा करेगा दारू पीणेमें आवत दायी है जैन शास्त्रमें अभक्ष देखो. (लक्षण)–जेनेकी नींदका नाश चूआ साफ और भूतोंकी मुठी विनमें कलना करे अचकहर उठे जीभ बाहर निकलजावे और भूते दांत पीसे नाड धीमी पडे और बहोत समोना किसी वखत सुस्त पडा रहै किसी वखत बडबडाट करे किसी वखत मुंह फाडकर देखकर अचक उठे अच्छा होणेका होय तो नींद आकर तीसरे या चौथेदिन अच्छा होकर उठे नहीतो निरकुल नींदका नाश बडबडाणा बेहोश और आखर मरणा ये लक्षणोंमेंसे मुक्ति है क्योंके उनोके आगम प्रकाश ग्रथमें लिखा है पीधा के कुछ भी लक्षणनविखे इसमाने तो मनालेवो इसकूं अभूत मानते हैं देखो वैद्यक ग्रथमें ये मद मुख्य चार प्रकारका है. (१ मदात्यय) (२ पानाजीर्ण) (३ पानाजीर्ण) (४ मद्यविषम)–(१ मदात्ययके लक्षण)–अनेक विधमें दोष अधिक्याम ना लिंगे उनोसे एक दोषे एक लिंगे दोषे अनेक लिंगे अनेक दोष बणाणी लिंगोका करणका का

महनत छातीका जडपणा खासी हिचकी श्वास अनिद्रा उलटी दस्त उचाकी भ्रम वकणा भयंकर दिखाव और खराव स्वप्ना (२ परमद)-कफका क्षय अंगोमें भार मूंसे वे स्वाद दस्त पेशावकी कव्जी मींट प्यास अरुचि शिरमें दर्द सांधोमें हड फूटणी (३ पानाजीर्ण)-मद्यका अजीर्ण होय तव आफरा उलटी डकार दाह तथा पित्तके प्रकोपका सव लक्षण होय (४ पानविभ्रम)-रिदय तथा दुसरे अवयवोमें दरद कफ कंठमें धूआं मूर्छा उलटी शिरमें दर्द मूंमें कफ भूख नहीं लगे-(असाध्य लक्षण)-ऊपरका होठ छोटा होजाय वहोत ठंढ वहोत दाह, जाडी तेल जैसी चकचकती जीभ, होठ और दांत काला आंखें पीली तथा लाल रंगकी होय हिचकी वुखार उलटी कांपणी पशवाडोंमें शूल खासी और भ्रम.

(इलाज)-किसी २ वखत जुलाव पहली दैणा चहिये चहरा लाल रंग होय जीभ मैली होय खराव, वदवोवाला, श्वास होय तो और वहोत खाया पीया भया होय उसकूं जुलाव जरूर दैणा जो ये चिन्ह नहीं होय तो पोषणकारक और अच्छे पतले खानपानसे रोगीकूं रखणेकी जरूरी है इस मदिरासे भये रोगमें जैसा पथ्यसें फायदा होता है वेसा दवासे फायदा नही होता इसकूं वैर २ थोडा २ खुराक दैणा जो रोगी वहोत लिवरी-जगया होय नाडी विलकुल नाताकत मालम दै तो उसकूं थोडा द्राक्षासव अथवा डाकतर लोक दूधमें ब्रांडी देते हैं मदिरासे भये रोगमें मदिरा कुछ फायदा और ताकत देती है सही लेकिन् असली फायदा नहीं देती इसवास्ते ताकत लाणेकूं दूध विदाम गूंदकीरई इत्यादिक अच्छी पुष्टीदार चीजें देणी. २ तृप्तिकारकरस जैसें खजूर फालसा अनार वगेरे मीठे पदार्थोंका रस मिश्री तथा सहतडालकर पिलाणा अनार तथा आंवलेके रशमें दूध मिलाकर पिलाणा मीठा डाल रांधे भये चावलोमें दूध डाल खिलाणा मिश्री सहत वगेरे मीठे रश दूध मखण मलाई दूधपाक श्रीखड शरवत तथा सव शीतल और तृप्ति करणेवाले इलाज करणा.

किरण ७ मी.

आंख-कान-नाक-दांतके रोग.

आंख कान तथा नाकके अवयव वहोत वारीक और अद्भुत नाम कर्मकी रचनावाला होणेसे उसमें अनेक रोग होते हैं (आंखके रोग)-आंखके रक्षा करणेका प्रयत्न थोडा लिखते हैं (उजाला)-आंखपर सीधी लकीरपर आणेवाला ये उजाला आंखकूं नुकशान करता है, जादा प्रकाशके तरफ ताकर देखणेसे आंखोकों ताण २ के वांचणेसे या लिखणा वगेरे काम करणेसे आखे नाताकत होती है, सूर्यके धूपमें कभी वैठणा नहीं मूंके सामने चराक धरकर कभी वांचणा लिखणा नहीं, (चस्मा)-शोखसें चस्मा लगाणेका प्रचार वढ गया है इससे, नजर नाताकत होती है

शांत सत्वोगुणवाला आहार और विहारका सेवन करे तो बुद्धिसम और ठिकाणे रहे तब वो जगतमें न्याई सब काम अच्छाही करै तब जगतमें सुख संपत्तकी वृद्धि होय और क्लेश व्यग्रता बुद्धिका चंचलपणा आपसेही बंध होजाय जिस अदमीकी बुद्धिका प्रकाश बहुत देखनेमें आवे तो समझणाके अतियोग भया वो बुद्धिभी आखर उन्मादपणमें जाती है बुद्धि अथवा मनकी समानता उसहीका नाम ज्ञान अथवा स्याणापणा वो मुक्तिका साधक और संसारका साधक जाणना चाहिये.

पानात्यय-मदात्यय-सरापके रोग.

इस सराप पीणेकी पृथा अनादि और इंद्री सुखोंमे मग्न एसे विवेक शून्यपणसे लोक पीते चले आये युगलिये सब सराप पीते थे एसा जैनियोंके शास्त्रोंमें लिखा है, कल्पवृक्ष उने देताथा पाप पुन्यका स्वरूप वो कुछ नहीं जाणतेथे बाद ऋषभदेवजीने हित नहीं का विचार कर सब युगलकोंको मदिरा छुडाई इक्षुका रस पिलाया तबसे इक्ष्वाकु वंश आदि भया बाद पचास लाखकोडि सागरोपम वर्ष बीतेबाद सराप पीणेका सिलसिला दुनीके वरतावमें ब्राह्मण ऋषियोंने फेर नई कला सरूकी उनोका नाम इस मुजब भंग प्रसन्ना, वेंद्रहाम, माध्वी, सुरा, पिष्टा आदि वो इस वखत नाम प्रसिद्ध नहीं है फेर तो मजेमें पडके राजा लोकोंने अनेक तरेके दारू बणनाये लेकिन् दारूके अतिशय व्यसनमें श्रम और बुद्धिका नाश होता है, उसकूं मदात्यय कहते हैं, सरापके अगले नाम इस वखत प्रसिद्ध नहीं है लेकिन् इस वखत अंग्रेजीके प्रसिद्ध नाम लिखते हैं, वाइन ब्रांडी रम जीन पोर्ट व्हिस्की शेम्पेन बीयर शेरी और देशी सराप नामोंका रम लिखा संस्कृतमें सीधू मद्य लिखा है इन सब सरापोंमें एक तरेका जहरी तत्व होता है, जिसकू अंग्रेजीमें आल्कोहोल कहते हैं जिस सरापमें ये पदार्थ ज्यादा होगा तो नाश जहरी और नुकशान ज्यादा करेगा दारू पीणेमें बावन सराबी है जैसा ज्यादे बंध देगी. (लक्षण)-बेचैनी नींदका नाश चूआ साफ और भूतोंकी शूरी जिसमें कल्पना होय बकबक उठे नीम बाहर निकलजावे और भूरी दांत पीसे नाड भीम जैसे और बहोत समोना किसी वखत सुन्न पडा रहे किसी वखत बडबडाट करे किसी वखत हुड मुड बकबक देखकर डरके उठे बच्चा होणेका होय तो नीद आकर तीसरे या चौथेदिन बच्चा होकर उठे नहीतो बिलकुल नींदका नाम बडबडाणा बेहोश और आखर कोमा ये सन्निपातियोंकी मुक्ति है क्योंकि उनोके आगम प्रकाश ग्रंथमें लिखा है पीना [illegible] इस्मे वो मनाकरी इसकूं अमृत मानते हैं देखी वैद्यक [illegible] (१ मदात्यय) (२ पानात्यय) (३ [illegible])-(१ मदात्ययके लक्षण)-चौदह दिवसमें दाह अतिसार [illegible] [illegible] दाह बहोत बमारी अंगोका फरकणा का

दरदके जोरमुजब ऊपर लिखी दवाइयोंमें कमवेशी कर सकते हैं पाणीमें जादा दवा डालणेसे जादा असर करती है लेकिन् साधारण दुखणेमें सख्त दवा उलटी नुकशान करती है, शेक-१४ शेक जादा करके दिनकुं करणा दरद जादा होय तो रातकूंभी करणा ताकतदारकूं गुलाब जल वगेरे ठंढे पाणीका शेक करणा और नाताकतकूं पोस्तकेडोडे उकाले भये पाणीका शेक करणा अथवा रोगीसे सहा जाय एसा सेक करणा १५ आंख वहोत दुखती होय और पीप निकलता होय और पोपचे सूज गये होय तो पोशकेडो-डेका शेक करके पीछै सील्वर नाइट्रेटके बूदे डालणी सिल्वर नाइट्रेट १ से ३ ग्रेण और पाणी १ औंस १६ (पिचकारी) वहोत पीपके पडणेसे आंखके पोपचे मिलकर चिप गये होय तो गरम पाणीका या फिटकडीके पाणीकी अथवा जस्तके पाणीकी पिचकारी लगाणी अथवा रसकपूर १ ग्रेण नवसादर ६ ग्रेण पाणी ६ औंस इससें आंखोकों कपडेसें धोणी १७ (मलम) आंखकी भांपणी चिप नहीं जाय वास्ते रातकू भांणीपके कोरपर घी अथवा सादा मलम अथवा सालिडका तेल वेसेलीन अथवा एरंडीका तेल लगाणा (खील)-(टपोरिया) भांफणेके अंदर साबूदाणे जैसा छोटा २ सुपेद दाणा होता है उसकूं खील कहते है भांफणेकूं उथल कर देखणेसें वहोतसी वखत खील जैसे लाल दाणे दिखते हैं उनोकूं भूलसे टपोरिया कहते हैं भापणेकी खरदरीसे एसे दाणे दिखते हैं खील अथवा टपोरिया हमेस सुपेद होता है ये वात यादमें रखणी-(लक्षण) खील मेंभी आंख आणेके कितने लक्षण होते हैं आंख लाल होकर सूज जाती है पाणी झरता है उजाला सहा नही जाता आंखमें ककर जैसा चुभता है और खटका होता है खील पुराणी होकर पीछै वेर २ आंख दुखणी आती है खील डोलेके संग वेर २ घसणेसे डोला झांका पडता है नजर मद पडती है भांपण अदर झुक जाती है झांका वढजाता है और आंख चूंची होती है (इलाज) आंख दुखणेके सव इलाज खीलमेंभी फायदे-वंद है, खीलके सख्त चिन्होमें (१ आट्रोपिन अच्छा है) वो १ से ४ ग्रेण और पाणी १ औंस इनोंकी वूंद थोडे दिन डालणी २-वेलाडोना १५ ग्रेण पाणी १ औंस ३ वाइट प्रेसीपीटेट ५ ग्रेण सादा मलम १ द्राम इनोका मलम लगाणा ४ कास्टीकके वूंदे ५ नीलेथोथे कालीसा टुकडा खीलपर घसणा अच्छा इलाज है अथवा वूदे डालणी ६ टेनिक एसिडकी भूकी खीलपर दवाणी पुराणी. खीलमें-७ धूअेंसे तथा उजालेसे वचणा आसमानी रंगका चस्मा पहरणा-८ कास्टिककी वूंदेडाल थोडे दिन वादवध करणा पीछै गोरयोथा लगाकर उसपर एरंडी तेल चोपडणा टपोरिये वडे और वहोत होय तो स्युगरलेड अथवा टेनिक एसिडकी महीन वुकणी ऊपरकी भांफणी उथलकर अजन करणा इसकूं वहोत दिनोतक आंज सकते हैं ९ कांसीके पात्रमें मथन याने रगडा भया घी वहोत फायदा अंजन करणेसे करता है.

और आंखके रोग होते हैं, आंखका कोइ रोग या कमनजर होय तब चस्मा लगाना चाहिये तोभी आंखके डाक्टरकी सल्ला लेकर आंखकी शक्तिमुजब लगाना, (अंजन)-जैसें फ्रान्स देशमें शोभाके वास्ते आंखोंकी कीकीयें बडी करणेकूं बेलाडोना वापरणेका रुवाज पडा है तैसें इस देशमें शोभाके वास्ते सुरमा तथा काजल डालणेका नुकशानी-कारक चाल पडा भया है वनोंकेभी डालते हैं काजल सुरमेसे आंख अच्छी तो दिखती है लेकिन् जादा फायदा होता नहीं दिखता जिसकूं जुलाब देणेकी जरूरी नहीं उसकूं जुलाब देणेमें शरीरकूं जितना नुकशान होता है इतना नुकशान साजी अच्छी आंखमें डालकर सुरमा डालणेसें होता है वैद्यक शास्त्रके हुकम मुजब बनाये भये काजल सुरमे वगैरा अंजन आंखके दरदमें अच्छा फायदा करती है लेकिन् अच्छी आंखमें सिणगारके वास्ते अंजन करणा बिलकुल अच्छा नहीं इस देशके अदम्यांकी चालीस वर्ष पीछे आंख बिलकुल नाताकत हो जाती है इसके सब एसेही कारण है इसवास्ते कुटुंबमें जो बडेरे होय उनोंको चाहिये ऐसे खोटे रिवाजोंको बंधकर देना नहीतो आखर अवस्थामें जरूर नुकशान होगा (मगजकी रक्षा)-आंखोंके सुधारेका बहोतसा आधार मगजपर है, मगजकूं हमेशा ठंडा रखणा जो मगजमें जरासी गरमी मालम दे तो उसकूं ठंढा करणा शिरपर गरम पाणी कभी डालणा नहीं स्नान करते तैमें फजर सांज शिरपर ठंढा पाणी छांटणा डालना (धातुकी रक्षा)-हरस और बवासीर निपज सेलणाके दोनों एक आंतोंको बहोत नाताकत पहुचणेसे है लडकोंकी छोटी ऊमरमें आंखें नाताकत पडती है उसका कारण ऊपर लिखी दो बातें हैं धातुका बनाव बीस बीसकी ऊमरतक होणा चाहिये तब तो खोराकमें खानेकी चीजोंमुजब दूध और पुष्ट पदार्थका हमेशा खाना करणा तथा शक्ति मुजब समार्थी (आंखके रोगोंका इलाज)-(आंख दुखणी) जब आंखमें चोडा या बहोत मेल आती है तो उसकूं आंख आई कहते हैं आंख बहोत दिनसें दुखे उसमेंसे पीप निकले और उसका जलदी इलाज नहीं करे तो उसमें फूली पडके आंख फूट जाती है (पीला)-साधारण आंख दुखे तो आंखोंपर पीला कपडेका बांधणा होता है, १ मुलायम कपडे निगाया भया कपडा २ दूध अथवा दूध और पाणी २ मुजब ८ तोला पाणी २ बोल मिलाकर पीला करणा (मुद)-नीम जिसी दवाकी मुद आंखोंके ऊपर बांधी है क्योंकि निरोगी है, १ निकलीके उकाली हुई २ तोला मुद २ तोला गरम २ तोला पाणी २ बोल ८ नीयाबोला २ तोला [illegible] २ तोला २ तोला मिलाकर गरम २ ड्राम पाणी ६ ड्राम २० मिनट [illegible] २ बोल १२ खुलासा बोलके ८ तोला पाणी २ बोल १२ तोला मुद [illegible] २ बोल तेलमें दोनों मुद उकाली निकालके गरम पाणीके साथ [illegible] उकाली हुई मुद गरम गरम बांधनेका बहोत अच्छा होता है,

दरदके जोरमुजब ऊपर लिखी दवाइयोंमें कमवेशी कर सकते हैं पाणीमें जादा दवा डालणेसे जादा असर करती है लेकिन् साधारण दुखणेमें सख्त दवा उलटी नुकशान करती है, शेक-१४ शेक जादा करके दिनकुं करणा दरद जादा होय तो रातकूंभी करणा ताकतदारकूं गुलाब जल वगेरे ठंढे पाणीका शेक करणा और नाताकतकूं पोस्तकेडोडे उकाले भये पाणीका शेक करणा अथवा रोगीसे सहा जाय एसा सेक करणा १५ आंख बहोत दुखती होय और पीप निकलता होय और पोपचे सूज गये होय तो पोशकेडोडेका शेक करके पीछै सील्वर नाइट्रेटके बूंदे डालणी सिल्वर नाइट्रेट १ से ३ ग्रेण और पाणी १ औंस १६ (पिचकारी) बहोत पीपके पडणेसे आंखके पोपचे मिलकर चिप गये होय तो गरम पाणीका या फिटकडीके पाणीकी अथवा जस्तके पाणीकी पिचकारी लगाणी अथवा रसकपूर १ ग्रेण नवसादर ६ ग्रेण पाणी ६ औंस इससें आंखोकों कपडेसें धोणी १७ (मलम) आंखकी भांपणी चिप नहीं जाय वास्ते रातकूं भांणीपके कोरपर घी अथवा सादा मलम अथवा सालिडका तेल वेसेलीन अथवा एरंडीका तेल लगाणा (खील)-(टपोरिया) भांफणेके अंदर सावूदाणे जैसा छोटा २ सुपेद दाणा होता है उसकूं खील कहते हैं भांफणेकूं उथल कर देखणेसें बहोतसी वखत खील जैसे लाल दाणे दिखते हैं उनोकूं भूलसे टपोरिया कहते हैं भापणेकी खरदरीसे एसे दाणे दिखते हैं खील अथवा टपोरिया हमेस सुपेद होता है ये वात यादमें रखणी-(लक्षण) खील मेंभी आंख आणेके कितने लक्षण होते हैं आंख लाल होकर सूज जाती है पाणी झरता है उजाला सहा नहीं जाता आंखमें कंकर जैसा चुभता है और खटका होता है खील पुराणी होकर पीछै वेर २ आंख दुखणी आती है खील डोलेके संग वेर २ घसणेसे डोला झांका पडता है नजर मंद पडती है भांपण अंदर झुक जाती है झांका वडजाता है और आंख चूंची होती है (इलाज) आंख दुखणेके सब इलाज खीलमेंभी फायदेवंद है, खीलके सख्त चिन्होमें (१ आट्रोपिन अच्छा है) वो १ से ४ ग्रेण और पाणी १ औंस इनोंकी बूंद थोडे दिन डालणी २-बेलाडोना १५ ग्रेण पाणी १ औंस ३ वाइट प्रेसीपीटेट ५ ग्रेण सादा मलम १ द्राम इनोका मलम लगाणा ४ कास्टीकके बूंदे ५ नीलेथोथे कालीसा टुकडा खीलपर घसणा अच्छा इलाज है अथवा बूंदे डालणी ६ टेनिक एसिडकी भूकी खीलपर दवाणी पुराणी. खीलमें-७ धूंअेंसे तथा उजालेसे वचणा आसमानी रंगका चस्मा पहरणा-८ कास्टिककी बूंदेडाल थोडे दिन बादबंध करणा पीछें मोरपोथा लगाकर उसपर एरंडी तेल चोपडणा टपोरिये बडे और बहोत होय तो स्युगरलेड अथवा टेनिक एसिडकी महीन चुकणी ऊपरकी भांफणी उथलकर अंजन करणा इसकू बहोत दिनोंतक आंज सकते हैं ९ कांसीके पात्रमें मथन याने रगडा भया घी बहोत फायदा अंजन करणेसे करता है.

(फूला) आंखके काले माणसियेमें सोजा होणेसे सुपेद या पीला दाग पड जाता है काले डोलेकी चांदी मिटे पीछे तैसे वो जखम पडे पीछे सुपेद दाग रह जाता है इन तीनोंको फूला कहते हैं लेकिन् चांदी मिटे पीछे जो सुपेद दाग रह जाता है उसकूं खरा सचा फूला कहते हैं आंख दुखे पीछे अथवा शीतलामें फूला पडता है (इलाज), चांदी होय तो गरम पाणीका शेक करणा तथा आंखपर पट्टा बंधे रखणा २ दरद जादा होय तो आंखके आसपास बेलाडोना लगाणा ३ आट्रोपीन १ से ४ ग्रेग पाणी १ औंस बूंदे डालणी सोजेके लक्षण मिटे पीछे बेलाडोनेकी बूंदे डालणी ४ कैलोमेल आयोडोफार्म बोरासिक एसिड (टंकण) इनोंमेसे एककी चुरणी डालणी अथवा, एक औंस वेसेलीन के संग ३० ग्रेण मिलाकर हरेकका मलमकर अंजन करणा.

(नये फूलेका इलाज) नया होय तो मिटता है १ कयालोमेल ३० ग्रेण वेसेलीन १ औंस इनोंका मलमकर अंजन करणा २ यलो आक्साइड आफ मर्क्युरी ५ ग्रेण वेसेलीन १ औंस इनोंका मलम कर अंजन करणा ३ पोटाश आयोडाइड ६ ग्रेण पोटाश बाइकार्बोनास ३ ग्रेण वेसेलीन १ ड्राम ४ नीलाथोथा २ ग्रेण पाणी १ औंस इनकी बूंदे डालणी ५ आयोडाइड ओफ पोटाश १० से ३० ग्रेण पाणी १ औंस ६ बडके दूनें करूं डालकर अंजन करणा ७ पीपर समुद्रके झाग तथा समलवण सीधानिमक इनमें सबसे मिलाकर कांसीकी थालीमें कांसीकी कटोरीसे घोट मलम अंजन करणा ८ गोनामखी अथवा पेहेडा अथवा सीधानिमक इनमेंसे हरएक पाणीमें या औरतके दूधमें या मधमें पीस अंजन करणा (बाबला) काले डोलेकी कोरपर छोटी सुई जैसी इनमें सुपेद पोक सरखी होती है उसकूं बाबला कहते हैं पहली आंख दुखणे जैसी सुरु होती है आंसू बहता है ये फुनसी सुपेद पीलेरंगकी होती है और किसी २ के फक्त एकेली होती है, ताजा थोडे दिनोंमें फूटकर मिट जाता है और किसीके बेर २ होता है, इसका और छोटेफुनसीके रोग ताजा रोगी बनीके होता है (इलाज) आंखोंको गरम पाणीसे सेंक तथा शेक करणा आंखपेर पट्टा बंधे रखणा दरद जादा होय तो (२ आट्रोपीन १ बेलाडोना एकस्ट्रक्ट ४ ग्रेण पाणी डिस्टील्ड १ औंस मलम करणा ३ यलो आक्साइड आफ मर्क्युरी ५ ग्रेण वेसेलीन १ औंस मलमकर अंजन करणा

इति नेत्ररोग इनकी अंजन करणी ये नेत्ररोगकी सुधारणेके योग्य पौष्टिक दवाओंका वर्णन करेंगे.

(तिमिरोग) (मोतीबिंदु पडना) डोलेमें पडदा है उसके अंदर ये दोष आनेसे होता है उसके रोगी आदमी वस्तुओंका स्वरूप विपरीत देखता है, जैसेकि पहेले कुछ दूर, दूसरे समय सुपेदके काले काले सुपेद, तिनके सामने उडते दिखाई देवे कभी कभी बिलकुल नहीं दीखे नहीं सूझे तथा मुश्किलसे दीखाय (इलाज)

१ आंवला रसोत तथा सहत घोटकर अंजन करणा २ सहजणेके पत्तोंका रश सहत मिलाकर वूंदे डालणी ३ चिरमीकी जड वकरेके पेशावमें पीस अथवा मोथकूं पाणीमें पीस अंजन करणा ४ दारूहलदी त्रिफला तथा मोलेठी सम वजन दो तोला उसकूं अधसेर नालेरके जलमें उकाल आठमा हिस्सा जल रहै उसकूं छाण फेर गरम कर जाडा करणा उसमें कपूर सींधा तथा सहत जरा २ मिलाकर अंजन करना ५ खापरिया शंख वीजाधोल तथा मोरथोथा सम भाग चूर्ण करना और नीवूके रशमें घोटवत्ती करणी वो अंजन करना इस अंजनसे झांखा मिटता है आंखकी खुजाल मांसवृद्धि मोतिया पटल फूला वगेरे दरदोमें फायदा वंद है (आंखके दुसरे सामान्य इलाज) सव नेत्ररोगोमें फायदेवंद है १ लोहके वरतणमें नींवूका रश डाल लोहके वत्तेसे घोट आंखपर लेप करणा २ मोलेठी गेरू सींधानिमक दारूहलदी और रसोत पाणीमें पीस आंखके आस-पास लेप करणा ३ सहत तथा घीमें सींधा तथा लोदकूं गरम कर पीस इसका लेप तथा अंजन करणा ४ कडवा नींव गूलरकी छाल एरंडकी जड मोलेठी, रगतचनण,पाणीमेंपीस वट्टी आंखपर बांधणी ५ तुलसी तथा वीलके पत्ते इनोंका रश दोनुरसोंके वरावर कांसीके पात्रमें औरतका दूध और गजपींपरका चूर्ण डाल कांसीकी कटोरीसे घोट डव्वी-में रखना अंजन करणा ६ निर्मलीके वीज सहतमें पीस उसमें थोडा कपूर डाल अंजन करणा ७ ताजी गीलीगिलोयका रश १ तोलासहत सींधव हरेक १ मासा अंजन करणा ८ नीलाथोथा सोनामखी सेंधव मिश्री शंख मनशिल गेरु समुद्रका झाग मिरचकाली स-हतमें घोटकर अंजन करना आंखके रोगोंके वास्ते शास्त्रोमें खानेकी दवायें लिखी है वोभी किसी २ वखत अच्छा फायदा दिखाती है सो थोडे इहां लिखते हैं ९ वाला ४ तोला पाणी २० तोला काथ कर उसमें पींपर २ मासा सींधा २ मासा सहत १० मासा घी १ तोलो मिलाकर वर्षात तथा ठंडी मोसममें खाना इससे झांखेका रोग मिटता है १० त्रिफला ४ तोला पाणी ४० तोला अष्टमांश काथ करना उसमें इत-नांही दूध तथा घी डाल मंदाग्निसे घी वाकी रहै तहांतक उकाल रातकूं ४ तोला वो घी पीणा तिमर रोग मिटे ११ भांगरेका रश ७४ तोला तेल १६ तोला मोलेठी १६ तोला दूध ६४ तोला तेल वाकी रहे तहांतक उकाल ॥ तोला खाना इससें झांखा मिटता है, लोहके वासणमें त्रिफलेका काथ ५ तोला घी १ तोला रश देणा सांझकूं जीमेंवाद पीणा १३ त्रिफलेका काथ भांगरेका रश अरडूशेके पत्तोंका रश सतावरका रश या काथ वकरीका दूध गिलोयका काथ और घी ये हरेक ६४ तोला पींपरमिश्री दारूत्रिफला नीलाकमल मोलेठी सुपेद तूंवा भूरींगणी दरेक दश २ तोला लेकर उनोंकी चटणी करनी सवकूं घी वाकी रहे तहांतक उकालना मात्रा २ तोला आंखके सव रोग मिटता है, १४ मोलेठी त्रिफला इनोंका चूर्ण तीन मासा लोहभस्म १ रत्ती सहत तथा घीमें चाट-

कर ऊपर दूध पीणा १५ त्रिफला तज लोहभस्म मोलेठी महुवेका फूल इनोंका चूर्ण मात्रा ३ मासा (अनुपान घी तथा सहत)–(शिरकी मगजकी शक्ति वधाणेका इलाज) इस करके मगज पुष्ट होता है,१६ विदामकी मींजी १ तोला रातकूं भिगा फजरमें छिलके दूर कर उसमें छोटी इलायची दाणे ३ मासे और मिश्री १ तोला गऊका ताजा घी २ तोला इन सबोंकूं कलाईके पात्रमें धर रातकूं छतपर रख फजर तथा सांझकूं चाटणा दो हप्ते तक ताजा २ खाणेसे मगजकी गरमी दूर होकर आंखोंकी गरमी दूर होती है, १७ विदामकी मींजी तोला १० इलायची तोला ५ पीस्ता तोला ५ खस२ तोला ५ दाख तोला ५ सबकूं पीस अथवा गऊके दूधमें उकाल उसका गोला करना उसमें गऊके दूधका खोवा १ सेर अच्छा बूरा १ सेर मिलाकर इसमेंसे फजर सांझतो ५ खाणा इसमें मगज भरतर होकर आंखोंमें तेज आता है १८ गऊका मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा १ मासा इस प्रमाणसे फजर सांझ १४ दिन चाटना आंखके सब रोगोंमें अच्छा है, १९ गऊका ताजा २ तोला घी खोवा १ तोला मिश्री विदाम दोनुं ॥ तोला शीतल मिरच सहत इलायची दाणा हरेक । तोला सब एकत्र कर सांझ और फजर खाणा ३ हप्ते खाणेसे हाथपांवकी जलण और आंखके विकार मिटते हैं २० गऊका ताजा मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा ६ मासा नागकेशर ४ मासा इसप्रमाण नित्य प्रातसमें खाना ३ अठवाडिये खानेसें आंखोंकी गरमी जलाई वगैरे सब विकार मिटते हैं.

कानके रोग–

कानके बहोत रोग होते हैं उसके मुख्य ३ भाग किये जाय तो १ कानका सोजा २ कानका पकना ३ बहरापणा इनोंका इलाज नीचेमुजब करना.

(कानका सोजा) कानके बाहिरका भाग और बहोतसी वखत अंदरका भाग पकता है तब दरद बुखार इत्यादि वरमके सब लक्षण होते हैं, शिरमें दरद कानमें पकने बुखार दस्तकब्जी नाडी जलद ये उपद्रव होते हैं पकणेसे पीप होता है (कारण) ठंडी हवा लागनेसे गरम हवा डालणेसे कानकूं कुचरणेसें मख्त मैल कानमें जमणेसे अथवा कानमें पोट जमणेसे सोजन आती है सिवाइ भेष खूनके वर्योंके ये रोग बेर २ होता है एसा देखनेमें आता है, (इलाज) कानमें थोडाभी दरद होयके गरम पाणी भरना वैसेके वैसे उसके भेष गरम पाणीका भेक करणा कानके अंदर ठंडी हवा नहीं लगने देनी इसवास्ते रूई बाही रखणी (इसीवास्ते जैनके मुनि मुखके पास पात्रे (कपडे) बांधेमहोत्त पडलेख (कपडेमें रहे देते हैं, एसा जैन सूत्रोंकी प्रमान आज्ञा है,) बाहिरे सबोंकी देखने एसा किया है एसा करणेमें दोनोंभव आछी फायदा है कानका मैल आछी तिलके बा०, ठंडी वा गरम हवा लेवी वा दुष्ट जीव घुस नहीं सकते, कानमें मैल होने

तो निकालणेका इलाज करणा, एक जुलाब लेना, हलका खुराक लेना, ठंढी हवामें फिरना नही बुखार होय तो पसीना लानेकी दवा दैणी, दरद वहोत होय तो वेर२ सेक करना जो क लगवाणी कानके पिछाडी पलाष्टर मारना, रोगीकूं एकांतमे शांतपणे गुपचुप सुलाये रखणा नाताकतकूं ताकतकी दवा दैणी, (कानका मैल) वहोतसी वखत कानमें मैल चढ जाता है, तव कानमें वहोत दरद होता है, कानका रस्ताभर जाणेसे वराचर सुणी जता नही छमछमें वजै ऐसा कानमें सुणाई देता है, मूं फाडकर देखणेसे कानमें कट२ एसा अवाज होता है, कानकूं उंचाकर देखणेसे मैलका डूचा मालम देता है, किसी२के कानमें मैल जमतेही रहता है (इलाज) मैल निकालनेकूं रातकूं सूतीदफे कानमें मीठा तेल वदामका तेल ग्रीसराईन अथवा सालीडके तेलकी वूंदे नाखणी और फजरमें जरा गरम पाणीकी पिचकारी मारणी गरम पाणीमें साबूका फेण निकालकर उस पाणीकी पिचकारी ८।१० वखत मारणेसे मैल सव निकल जायगा कान कुचरणेसे वहोत नुकशान है, इसवास्ते कुचरकर मैल निकालणा नहीं कानमें कोइ चीज या जानवर जाणेसे दरद होय तो उसकूं निकालनेकूं सली या हथियार डाल कानकूं छेडणा नहीं ऊपर लिखे मुजव पिचकारी मारणी या तेलकी वूंदे डालणी जीव गया होय तो तेल या कडवी विदामका तेल कानमें डालना अथवा लाडेनमके ४।५ वूंदे डालते हैं उससे अंदरका जीव मर जाता है पीछे पिचकारी मारणेसे पाणीके संग धुपकर वाहिर निकलता है, ये डाकतरोंकी शिक्षा है.

(कानका पकणा) कानका अगला हिस्सा अथवा आखिरीका अंदरका पाक होता है उसमेंसे पीप निकलता है जाडा, किसी वखत कानके अदरकी नरम हड्डी सडती है, तो पीपके संग खूनभी निकलता है, सरू होते कानमें सोजन होता है और पीप सरू भये वाद दरद कम पडता है—कारण—ये रोगभी कानके सोजेमें लिखे कारणोंसेही होता है, नाताकत और फोडे फुनसीवाले वच्चोंके ये रोग वेर२ होता है और तनदुरस्त होणेसें मिटता है, कानकी नाडी पकती है उसकूं नाडीव्रण कहते हैं ये वेर २ भरता है और वेर २ रुकता है (इलाज) १ फुलालीन पोस्तके डोडाका अथवा नींवका पत्ता वांधकर शेक करना २ सरुआतमें पीप वंध करणेकू सख्त दवा डालणी नहीं नरम कपडेकी वत्तीकर कानकूं साफ करना गरम पाणीकी पिचकारी देकर दिनमें दो तीन वरात कानकूं धोना कानकू फेर सूका कर दैणा कानमें चुलवुलाट या खुजाल होय तो सालिड तेल ग्लीसेरीन या तिलके तेलकी वूंदे डालणी इतने इलाजोंसे पीप वंध नहीं होय तो ३ लाल गुलाबके फूलके काथके पाणीकी पिचकारी मारणी ४ फिटकडीके पाणीकी पिचकारी मारणी ५ त्रिफलाके उकालीकी पिचकारी मारणी ६ पंचवल्कलके उकालीकी पिचकारी वहोत फायदा करती है, ७ पिचकारी मारकर कानकू सुका डालणा पीछे जात्यादि तेल

कर ऊपर दूध पीना १५ त्रिफला तज लोहभस्म मोलेठी महुवेका फूल इनोंका चूर्ण मात्रा ३ मासा (अनुपान घी तथा सहत)–(शिरकी मगजकी शक्ति वधाणेका इलाज) इस करके मगज पुष्ट होता है,१६ विदामकी मींजी १ तोला रातकूं भिगा फजरमें छिलके दूर कर उसमें छोटी इलायची दाणे ३ मासे और मिश्री १ तोला गऊका ताजा घी २ तोला इन सबोंकूं कलाईके पात्रमें धर रातकूं छतपर रख फजर तथा सांझकूं चाटणा दो घंटे तक ताजा २ खाणेसे मगजकी गरमी दूर होकर आंखोंकी गरमी दूर होती है, १७ विदामकी मींजी तोला १० इलायची तोला ५ पीस्ता तोला ५ खस२ तोला ५ दाख तोला ५ सबकूं पीस अथवा गऊके दूधमें उकाल उसका गोला करना उसमें गऊके दूधका खोवा १ सेर अच्छा घूरा १ सेर मिलाकर इसमेंसे फजर सांझतो ५ राणा इसमें मगज भरतर होकर आंखोंमें तेज आता है १८ गऊका मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा १ मासा इस प्रमाणसे फजर सांझ १४ दिन चाटना आंखके सब रोगोंमें अच्छा है, १९ गऊका ताजा २ तोला घी खोवा १ तोला मिश्री विदाम दोनुं ॥ तोला शीतल मिरच सहत इलायची दाणा हरेक । तोला सब एकत्र कर सांझ और फजर खाणा ३ घंटे खाणेसे हाथपांवकी जलण और आंखके विकार मिटते हैं २० गऊका ताजा मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा ६ मासा नागकेशर ४ मासा इसप्रमाण नित्य प्रातसमें खाना ३ अठवाडिये खानेसें आंखोंकी गरमी ललाई वगैरे सब विकार मिटते हैं.

कानके रोग–

कानके बहोत रोग होते हैं उसके मुख्य ३ भाग किये जाय तो १ कानका सोजा २ कानका दरद ३ बहरापना इनोंका इलाज नीचेमुजब करना.

(कानका सोजा) कानके बाहिरका भाग और बहोतसी वखत अंदरका भाग पकता सूजा आता है तब दरद बुखार इत्यादि वरमके सब लक्षण होते हैं, शिरमें दरद कानमें चमके बुखार हरकत नाडी जल्द ये उपद्रव होते हैं पकणेमें पीप होता है (कारण) ठंडी हवा जोरमें गरम हवा डालणेसे कानकूं कुचरणेसें मल्ल मैल कानमें जमणेसे वगैरा कानके पोट खणेसे सोजन आती है विगडे मेथ खूनके वगैरेके ये रोग पैदा होते हैं ऐसा देखणेमें आता है, (इलाज) कानमें थोडाभी दरद होयके गरम पाणी वगैरा तेलके पोट उकाले नये गरम पाणीका सेक करणा कानके अंदर ठंडी हवा नहीं जाने देनी इसवास्ते रूई लाडी रखणी (इसीवास्ते जैनके मुनि रातकूं) मोपत्ती वगैरा कानमें रहने देते हैं, ऐसा जैन ग्रंथोंके वर्तमान आज्ञा है,) बाहिरे सबोंको इलाज ऐसा किया है ऐसा करणेसे दोनोंमा बाधी फायदा है कानका मैल बाणी निकल जाणा, ठंडी वा गरम हवा लगे वा दुष्ट जीव घुस नहीं सकते, कानमें मैल होय

तो निकालणेका इलाज करणा, एक जुलाब लेना, हलका खुराक लेना, ठंढी हवामें फिरना नही बुखार होय तो पसीना लानेकी दवा दैणी, दरद वहोत होय तो वेर२ सेक करना जो क लगवाणी कानके पिछाडी पलाष्टर मारना, रोगीकूं एकांतमे शांतपणे गुपचुप सुलाये रखणा नाताकतकूं ताकतकी दवा दैणी, (कानका मैल) वहोतसी वखत कानमें मैल वढ जाता है, तव कानमें वहोत दरद होता है, कानका रस्ताभर जाणेसे वरावर सुणी जता नहीं छमछमें वजै ऐसा कानमें सुणाई देता है, मूं फाडकर देखणेसे कानमें कट२ एसा अवाज होता है, कानकूं उंचाकर देखणेसे मैलका डूचा मालम देता है, किसी२के कानमें मैल जमतेही रहता है (इलाज) मैल निकालनेकूं रातकूं सूतीदफे कानमें मीठा तेल वदामका तेल ग्रीसराईन अथवा सालीडके तेलकी वूंदे नाखणी और फजरमें जरा गरम पाणीकी पिचकारी मारणी गरम पाणीमें साबूका फेण निकालकर उस पाणीकी पिचकारी ८।१० वखत मारणेसे मैल सव निकल जायगा कान कुचरणेसे वहोत नुकशान है, इसवास्ते कुचरकर मैल निकालणा नहीं कानमें कोइ चीज या जानवर जाणेसे दरद होय तो उसकूं निकालनेकूं सली या हथियार डाल कानकूं छेडणा नही ऊपर लिखे मुजव पिचकारी मारणी या तेलकी वूंदे डालणी जीव गया होय तो तेल या कडवी विदामका तेल कानमें डालना अथवा लाडेनमके ४।५ वूदे डालते है उससे अंदरका जीव मर जाता है पीछे पिचकारी मारणेसे पाणीके संग धुपकर वाहिर निकलता है, ये डाकतरोंकी शिक्षा है.

(कानका पकणा) कानका अगला हिस्सा अथवा आखिरीका अंदरका पाक होता है उसमेंसे पीप निकलता है जाडा, किसी वखत कानके अंदरकी नरम हड्डी सडती है, तो पीपके संग खूनभी निकलता है, सरू होते कानमें सोजन होता है और पीप सरू भये वाद दरद कम पडता है—कारण—ये रोगभी कानके सोजेमें लिखे कारणोसेही होता है, नाताकत और फोडे फुनसीवाले वचोंके ये रोग वेर२ होता है और तनदुरस्त होणेसें मिटता है, कानकी नाडी पकती है उसकूं नाडीव्रण कहते हैं ये वेर २ भरता है और वेर २ रुकता है (इलाज) १ फुलालीन पोस्तके डोडाका अथवा नींवका पत्ता वांधकर शेक करना २ सरुआतमें पीप वंध करणेकूं सख्त दवा डालणी नहीं नरम कपडेकी वत्तीकर कानकूं साफ करना गरम पाणीकी पिचकारी देकर दिनमें दो तीन वखत कानकूं धोना कानकूं फेर सूका कर दैणा कानमें चुलचुलाट या खुजाल होय तो सालिड तेल ग्लीसेरीन या तिलके तेलकी वूंदे डालणी इतने इलाजोंसे पीप वंध नहीं होय तो ३ लाल गुलाबके फूलके काथके पाणीकी पिचकारी मारणी ४ फिटकडीके पाणीकी पिचकारी मारणी ५ त्रिफलाके उकालीकी पिचकारी मारणी ६ पचवल्कलके उकालीकी पिचकारी वहोत फायदा करती है, ७ पिचकारी मारकर कानकूं सुका डालणा पीछे जात्यादि तेल

कर ऊपर दूध पीना १५ त्रिफला तज लोहभस्म मोलेठी महुवेका फूल- इनोंका चूर्ण मात्रा ३ मासा (अनुपान घी तथा सहत)-(शिरकी मगजकी शक्ति वधाणेका इलाज) इस करके मगज पुष्ट होता है,१६ विदामकी मींजी १ तोला रातकूं भिगा फजरमें छिलके दूर कर उसमें छोटी इलायची दाणे ३ मासे और मिश्री १ तोला गऊका ताजा घी २ तोला इन सबोंकूं कलाईके पात्रमें धर रातकूं छतपर रख फजर तथा सांझकूं चाटणा दो घंटे तक ताजा २ खाणेसे मगजकी गरमी दूर होकर आंखोंकी गरमी दूर होती है, १७ विदामकी मींजी तोला १० इलायची तोला ५ पीस्ता तोला ५ खस२ तोला ५ दाख तोला ५ सबकूं पीस अथवा गऊके दूधमें उकाल उसका गोला करना उसमें गऊके दूधका खोवा १ सेर अच्छा बूरा १ सेर मिलाकर इसमेंसे फजर सांझतो ५ खाणा इसमें मगज भरतर होकर आंखोंमें तेज आता है १८ गऊका मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा १ मासा इस प्रमाणसे फजर सांझ १४ दिन चाटना आंखके सब रोगोंमें अच्छा है, १९ गऊका ताजा २ तोला घी खोवा १ तोला मिश्री विदाम दोनों ॥ तोला शीतल मिरच सहत इलायची दाणा हरेक । तोला सब एकत्र कर सांझ और फजर खाणा ३ घंटे खाणेसे हाथपांवकी जलण और आंखके विकार मिटते हैं २० गऊका ताजा मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा ६ मासा नागकेशर ४ मासा इसप्रमाण नित्य प्रातसमें खाना ३ अठवाडिये खानेसें आंखोंकी गरमी जलाई वगैरे सब विकार मिटते हैं.

कानके रोग-

कानके बहोत रोग होते हैं उसके मुख्य ३ भाग किये जाय तो १ कानका सोजा २ कानका पकना ३ बहरापणा इनोंका इलाज नीचेमुजब करना.

(कानका सोजा) कानके बाहिरका भाग और बहोतसी वखत अंदरका भाग पकता सूज जाता है तब दरद बुखार इत्यादि वरमके सब लक्षण होते हैं, शिरमें दरद कानमें वेदना बुखार दस्तकब्जी नाडी मन्द ये उपद्रव होते हैं पकणेमें पीप होता है (इलाज) ठंडी हवा कानमें गरम हवा डालणेसे कानकूं कुचरणेसें मज्जत मेल कानमें जमणेसे कान बहिर होत कानमेंसे मोजन आती है विगडे भेष खूनके वगैरेके ये रोग वेर २ होता है इस रोगमें जाना है, (इलाज) कानमें थोडासी दरद होयके गरम पाणी भरणा दिनके दोदे उडाके भेष गरम पाणीका भेक करणा कानके अंदर ठंडी हवा नहीं लगणे देणे इतनेसे बहोती रखनी (इसीवास्ते जैनके मुनि रातकूं पाणीपडा पडदा (कानमें पडे देते हैं, एसा जिन सूत्रोंकी विद्यमान आज्ञा है,) वादिये सबोंको इसेन्स वगैरा डिवा देके पकणेमें दोनोंमेंसे आधी फायदा है कानका मेल आपही निकल जाय, ठंडी वा गरम हवा रोगी वा दुष्ट जीव घुस नहीं सकेंगे, कानमें मेल होने

तो निकालणेका इलाज करणा, एक जुलाव लेना, हलका खुराक लेना, ठंडी हवामें फिरना नहीं बुखार होय तो पसीना लानेकी दवा दैणी, दरद वहोत होय तो वेर२ सेक करना जो क लगवाणी कानके पिछाडी पलाष्टर मारना, रोगीकूं एकांतमे शांतपणे गुपचुप सुलाये रखणा नाताकतकूं ताकतकी दवा दैणी, (कानका मैल) वहोतसी वखत कानमें मैल वढ जाता है, तव कानमें वहोत दरद होता है, कानका रस्ताभर जाणेसे वरावर सुणी जता नहीं छमछमें वजै ऐसा कानमें सुणाई देता है, मूं फाडकर देखणेसे कानमें कट२ एसा अवाज होता है, कानकूं उंचाकर देखणेसे मैलका डूचा मालम देता है, किसी२के कानमें मैल जमतेही रहता है (इलाज) मैल निकालनेकूं रातकू सूतीदफे कानमें मीठा तेल वदामका तेल ग्रीसराईन अथवा सालीडके तेलकी वूंदे नाखणी और फजरमें जरा गरम पाणीकी पिचकारी मारणी गरम पाणीमें सावूका फेण निकालकर उस पाणीकी पिचकारी ८।१० वखत मारणेसे मैल सव निकल जायगा कान कुचरणेसे वहोत नुकशान है, इसवास्ते कुचरकर मैल निकालणा नहीं कानमें कोइ चीज या जानवर जाणेसे दरद होय तो उसकूं निकालनेकूं सली या हथियार डाल कानकूं छेडणा नही ऊपर लिखे मुजव पिचकारी मारणी या तेलकी वूदे डालणी जीव गया होय तो तेल या कडवी विदामका तेल कानमें डालना अथवा लाडेनमके ४।५ वूंदे डालते हैं उससे अंदरका जीव मर जाता है पीछे पिचकारी मारणेसे पाणीके संग धुपकर वाहिर निकलता है, ये डाकतरोंकी शिक्षा है.

(कानका पकणा) कानका अगला हिस्सा अथवा आखिरीका अंदरका पाक होता है उसमेंसे पीप निकलता है जाडा, किसी वखत कानके अदरकी नरम हड्डी सडती है, तो पीपके संग खूनभी निकलता है, सरू होते कानमें सोजन होता है और पीप सरू भये वाद दरद कम पडता है—कारण—ये रोगभी कानके सोजेमें लिखे कारणोंसेही होता है, नाताकत और फोडे फुनसीवाले वच्चोंके ये रोग वेर२ होता है और तनदुरस्त होणेसे मिटता है, कानकी नाडी पकती है उसकूं नाडीव्रण कहते हैं ये वेर २ भरता है और वेर २ रुकता है (इलाज) १ फुलालीन पोस्तके डोडाका अथवा नींवका पत्ता वांधकर शेक करना २ सरुआतमें पीप वध करणेकू सख्त दवा डालणी नहीं नरम कपडेकी वत्तीकर कानकूं साफ करना गरम पाणीकी पिचकारी देकर दिनमें दो तीन वखत कानकूं धोना कानकूं फेर सूका कर दैणा कानमे चुलवुलाट या खुजाल होय तो सालिड तेल ग्लीसेरीन या तिलके तेलकी वूंदे डालणी इतने इलाजोंसे पीप वंध नहीं होय तो ३ लाल गुलावके फूलके काथके पाणीकी पिचकारी मारणी ४ फिटकडीके पाणीकी पिचकारी मारणी ५ त्रिफलाके उकालीकी पिचकारी मारणी ६ पंचवल्कलके उकालीकी पिचकारी वहोत फायदा करती है, ७ पिचकारी मारकर कानकूं सुका डालणा पीछे जात्यादि तेल

(नं० २९९) वाला डालणा अथवा ७ नीचोलीका तेल डालणा ८ कोईभी तरेका तेल नहीं मिले तो तिली का तेलभी अच्छा है ९ आंच जामुन महुआ वड इनोंके नरम पते पोस उसमें चोगुणा तेल तेलसे चोगुणा पाणी डाल उकाला भया तेलकी बूंदे डालणी.

(बहरापणा)—कानमें सोजन होणेसें कान पकणेसें या मैल भरणेसें बहिरापणा आता है कान कुनरणा पाणी का जाणा ठंडी हवा लगणी भीजी जमीनपर सोणेसें कानमें सोजा होनेसेंभी ये रोग होता है, सुणणेकी तंतुओ नाताकत पडणेसेंभी रोग होता है, (इलाज)—बहरापणेके वास्ते लोक कितनेक सख्त इलाज करके कानकुं उलटा नुकशान करते हैं, कानके अंदरका पडदा एसा बारीक और पतला है, सो गरम और दाहकारक स्पर्शकुं सह नहीं सकता बहरापणा समझके मात्र गरम दवायें डालते जाणा इसमें बडा नुकशान है, जो सोजा होय तो सोजेका इलाज करणा मैल होय तो निकालणेका इलाज करणा मठेके दरदसेभी कानमें बहिरापणा होजाता है, कानपका होय तो पीप निकालणेका इलाज करणा लसण कांदे दारू वगैरे गरमागरम पदार्थ डालणेका रिवाज बहोत नुकशानकारी चल रहा है, बहिरापणेका कोई कारण मालम नहीं पडे तो तिलीका तेल सरसूंका तेल ग्लीसेरीन सालिट तेल वाइन ओफ ओपियम सल्फ्युरिकइथर वगैरे दवाओंके पांचमात बुंद हमेश रातकुं सोते वखत डालणा २ आंधी झाडेकी राखका नीतरा पाणी तोला २० तेल तोला ५ और आंधी झाडेका खार तोला १। पीछे तेल बाकी रहे तहांतक उकाला तयार कर वो तेल कानमें डालणा.

नाकके रोग.

(इलाज) नाकमेंभी अनेक रोग होते हैं, जेमें सुगंध दुर्गंध परखणेकी शक्ति का नाश खराब हवा नाकका पकणा उसमेंसें खूनमिश्रा पीप वहणा बडी अजायबके संग छींके जलण गरम हवा नाक सूकणा नाकका पकणा प्रतिश्याय याने छेपसणी नस नकसीर फूटणी नाकीमें नाकके मस्से वगैरे (इलाज)—नाकके बहोत रोगोंका मगजके साथ संबंध है, जेमेंके जिसका दरद नाकमें उठता है, तेमें मगजका खून नकसीरद्वारा नाकके रस्ते बाहर आता है, मगजका इलाज करनेसें एसे रोग मिटते हैं नाकमें मस्सा होता है, उसके इलाज नाकके अंदरसें मिटता है, बाहरी होनेसें जिसका दरद विशेष नाक तथा मठेके अंदर उठता है बहोतसे लोक खुद मस्सोंकुं साधारण रोग समझ इलाज नहीं करते तो नाक बहोत बेसे खराब रोग पैदा हो जाते हैं, (इलाज)—१ कायफल पीपर सूंठ (सुंठ सोंठ) सोनाकी मूंढ निरख पीपर वमासा अजवाण इनोंके चूर्णमें वमासा चूर्णमें अंदाजसें मिश्री डाल पाणीमें खरल करके पीनेसें नाक बहोत वेगसें मल मिटता है, २ पीपर वमासा मिश्री ४ मासा मिलाके खरल करके सुंठ निरख पीपर वमासा मीश्री वमासा चूर्णको एक तोला पाणीमें डाल नाकमें डालणा उसमें नाकका दुर्गंधपणा आम सुखाता

है, ३ मोम तथा गूगलकूं इकठेकर उसका युक्तिपूर्वक नाकमें धूआं लेणेसें वडी अवाजवाली छींके तथा विगडा भया कफ निकलता वंध होता है, ४ मिरच दही गुड इन तीनोंकों मिलाकर खाणेसे नाकके तमाम रोगमें फायदा होता है, इसवास्ते शरदी या पीनस रोगमें दैणा (५ नस्य)–तुलशीके पत्ते नकछींकणी वगेरे छींक लाणेवाली पदार्थोंकी नाश लेणेसे पीनस तथा शरदीका कफ झरके निकल जाता है (६ नकसीर छूटणी)–(ए-पीस्टेकसीस) ठंढा जल शिरपर तथा नाकपर वहोत डालणा अथवा कपडा भिगाकर शिरपर धरणा पीली मुलतानी मट्टी ठंढे जलमे मिला तालवेपर धरना ठढे पाणीकी पिच-कारी मारणी नाकमें फटकडी या मांजू फलकी महीन चुकणी नाकमें दावणी कांदेका रस या हरडे वडी जलमें घसकर या अनारके फूलका रश या दोवका रशकी नास दैणी या इस फूलकूं जरा जलमें मकरोय शिरपर लगाणा जल थोडा २ छांटणा जसतके फूलके पाणीमें रू भिगाकर उस रुईसे नाक वंध करणा टिंकचर ओफ स्टीलमें रू भिगाकर नाकमें दावणा जो कोइ दवा नहीं होय तो रुईकूं ठंढे पाणीमें भिगाकर नाकमें दावणा नीलेथोथेके पाणी की पिचकारीभी खूनकूं वंध करती है, (७ पीनस)–(ओझीना) सलेपममेंसे वेर२ ये रोग होता है, इस सिवाय नाकमें कोइ पदार्थ जाणेसें सोजा होकर पीप होता है, नाकमें मस्सा होकर पीप निकलता है, तैसे अंदर हड्डी सडणेसें पीप निकलता है, गरमी सुजा-कके रोगसेंभी पीनस होता है, और नाक सडके गिर जाता है ममेकूं कटा डालणा पिच-कारी लगाकर नाक हमेश धोडालणा एक औंस पाणीमें एक दो ग्रेण फिटकडी अथवा जसतके फूल अथवा क्लोराईड ओंफ झिंक डालणा जात्यादि तेलकी बूंदे डालणी, १ द्राम विस्मथ, और १ औंस मिश्री मिलाकर सुंघाणा, कारवोलिक एसिड १ भाग ताजा घी ८ भाग मिलाकर सुंघणा इसके शिवाय तनदुरस्ती सुधारणेवाली दवाइयां जैसेके मंजि-ष्टादि क्वाथ किशोर गूगल योगराज गूगल लोहके वनावटकी दुसरी दवाइयां सारसा-परेला पोटाश आयोडाइड वगेरे दवाओंकूं दैणा (नाकमें जीव)–जिसके नाकमें जीव पड जाता है, उसका नाक चपटा फीडा होजाता है उसमें नींवोलीका तेल नाकमें डालणा पांच रुपेभर पाणी गरममें टरपेन्टाइन २ द्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी सोल्युसन ओफस्टील ४ द्राम पाणी ३ औंस टरपेन्टाइन १ द्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी टरपेन्टाइन तथा कपूर मिलाकर उसमें रु भिगाकर नाकमें सूंघणा और रखणा ९ नाकका मस्सा (पोलीपस) नासार्श)टेनिक एसिडकी भूकी सुंघणी धूएकी धूंमस (मेश) पीपर देवदारू दूधकरंज सींधानिमक और आंधे झाडेके बीज इसमें पकाया भया तेल डालणा मस्सा वडा होय तो चिमटेसे वलदेकर खेंचकर निकालणा अथवा कतरणीसे काट डालणा.

दांतके रोग.

दांतकी जडमें या मसूढोमें या दांतके ऊपरके भागमें सोजा या सडणेसें दांतका

रोग होता है. (कारण)–पेटमें बिगाड और दस्तकी कब्जी होणेसे ठंडमें जबाडेमें वारी आणेसे पारेकी दवा खाणेसें दांतमें सडणा लगणेसें दांतपर मैलका थर जमणेसें इत्यादि कारणोसे दांतका रोग होता है.

(इलाज)–१ दांतमें सहज दरद होय तो दस्त साफ होय एसी दवा लेणी १दरद बहोत होय तो जबाडा तथा गाल सूज जावे तो गरम कपडेका तथा पोस्तका डोडा उकाळकर उस गरम पाणीका वेर २ सेक करणा खुराक हलका तथा हजम होय ऐसी दवा देणी ३ मसूडा सूज जावे और बुखार आवे तो बुखार मिटाणेकी दवा देणी और दांतके मसूडेपर जोंक लगाणी जोंक लगाणेकी काचकी नली आती है, ४ अगर जो दांतके पासे की बाजूमें गांठ होजाय तो नस्तर लगाकर पीप निकलवाणा और हलका खुराक देणा, (सडणा दांतोंका)–दांत दोतरे सडते हैं, एक तो दांतके आसपास पापडा बंधकर चोसर होकर उसका सडणा दांतके जडसे सरू होता है, तब दांतके आसपासका भाग खाईसर बिनेका काळेवाला भाग गुला होजाता है, दुसरी रीत यह है की दांत ऊपरसे सडणा सरू होता है और काला दाग पडता है, पीछे तो सडणा बिचमें जड तक पहुंचता है और दांत खाईसर पोला होजाता है इसमें दरद बहोत होता है दांतसें गरमा गरम खाया पीया पाणी पीया नेगेरे नही होता सब जबाडेमें दरद होता है, नींद नही आती रोगी मरणे चाहता है ऐसा बुरा दरद होता है (कारण) दांतकूं साफ नही रखे इसी कारणसें दांत सडते हैं, भोजन कर चराचर दांत साफ नही करणेसे खुराककी कणिये दांतोंमें रह जाती है, पीछे वो फूलती हैं तथा सडती हैं, इस करके मसूडे सूज जाते हैं, पेटको नही और बिगाडभी दांतके सडणेका कारण है बहोत मेळ पदार्थ पेटमें जाती है इसे पेटमें गडबड पैदा हुवा है, और खट्टा थूक दांतोंको बिगाडता है, बहोत खाटी वस्तुसेभी दांत बिगडता है बहोत गरमागरम उष्ण स्वभावाळी बहोत ठंडी चीजखाणेसें भी दांत बिगडता है पुराना खुराक नही खाणेसे जो रोग होता है, उसके सब दांत खाली रोग होता है, (इलाज) १ लौंग पीस उसका पाणी अथवा लौंगका तेल दांतपर घसणा २ नवसेर पाणी लोहेकी पोथरीमें भर भरे दांतके पोलमें भरके भरणा ३ नवसेर पाणीमें नवसेर निमक घोलकर कुरले दांतपर लगाणा ४ किंमामेटका एकदो बूंद भरे भातपर डालणा ५ कोयलेका चूरा मनशुद्धि इसमें घसनिमाकर दांतमें भरणा ६ इसमें दरद कम नही होते हैं कलमीशोरा लेणी एकडी लेकर दांतके कोलमें थोडे मिनट तक मालकर पीछे थूकदेणी ऐसे इलाजोंसें एक वेर तो दांतका दरद दबजाता है, लेकिन इसमें थोडे २ कीडे मरे वा नही निकले वे दरद उठ जाता है, इसलिये बिलकुल दरद न होवे इस करता मसीहदे वे ऐसा इलाज दो तीन होता है, बाकी कीडे निकले वा नही वे दरद बंद निकाल जावा.

(दांतके कोतर भरणेकी रीत)–पहली दांतकूं महीन हथियारसें कोरके साफ करणा और पीछै अंदर भरनेकी दवा धरणी कितनीक चीजें थोडा दिन रहके निकल जाती है, और कितनीक हमेश रह सकती है, सो लिखते हैं १ मस्तंगी अथवा चंद्ररस जो मिले उसकूं सल्फ्युरिकइथर आल्कोहोलमें पिघलाकर गुड जैसी गोली करणी वो लुगदी दांतका खड्डा भरीजै इतना रूमें लपेट दाव दैणा २ गटापरचा दांतका खड्डा भरणेकूं तयार मिलता है, वो जादा टिकता है उसका एक छोटा टुकडा लेकर स्पीरीटलेंपसे अथवा दुसरी गरमी देकर पिघलाकर नरम करना पीछै दांतके खड्डेकूं कपडेसें पूछकर गटापरचेकूं थोडा २ तिणखेसें दांतके कोचरेमें दावणा ३ (ओकसाइड ओफझिक)–इयभी जादा वखत दांतमें टिकता है इसकूं सोल्युसन ओफ झिकमें मिलाकर गुड जैसा नरम कर दांतके खड्डेमें दाव दैणा ये दवा छसात महीनेतक अंदर रह सकती है, ४ वहोत मुदतके टिकाववास्ते)–पारा तथा चांदीकूं अरगतीसे रगडकर भूकाकर उसकूं पारेके सग हथेलीमें मसलणा जब लुगदी होय उसकूं दबाणेसे जादा पारा होयगा सो निकल जायगा और मिली भई लुगदीकू कोचरेमें भर दैणा इकेले चांदीकी एवजीमें १ भाग सोना २ भाग रूपा और २ भाग कलाई एक जगे गालकर उसकूं अरगतीसे रगड अगली तरे पारा मिला दवाना ये वहोत अच्छा है, इस मुजब कोचर भरनेसें थोडी देर दांतमे दरद होय तो स्पिरिटकेम्फर अथवा मस्तंगी गुंदका पाणी दांतपर लगाना.

(दांतके मंजन)–दांतके दरदमुजब मंजनोमें दवा मिलाणी दांतके कलतरमें कपूर बीजाबोल मस्तंगी वगेरे मिलाणी मसूढोंकी मजबूतीवास्ते कथा मांजूफल सिंकोना बार्क वगेरे चीजें वापरणी मूंकी बदबो दूर करणेकूं कोयला मस्तगी गूंद कपूरका उपयोग करना बलचिंग पाउडर वगेरे तयार मिलती दवायें वापरणी-(१ पृष्ट ४०६) नंबर ७५० स ७५३ तकके सब मजन अच्छे है, धोया भया चाक तो ५ कपूर पाव तोला दांत कुलणेपर ये मंजन अच्छा है, कपूर जादा डालना नहीं ३ हीराबीजाबोल तो १ कपूर छ मासा चाक ५ तोला दांत साफ होते हैं, कुलते मिटते हैं, ४ हीराबोल कथा मांजू एकेक भाग बार्क २ तोला दांत खाईजते होय तो मिटते हैं ५ मस्तगी मोचरश हीराकसी अनारके सूके फूल जो हरडे आंवले कत्था सम वजन महीन चूर्ण मसलणा (मूंके खराब बदबोका इलाज)–जिस कारणसें दांत सडते हैं, उसी कारणसे मूंमे बदबो आती है, भोजनबाद दोनों वखत दांतकूं कुरले कर २ साफ धोना दांतमे रहे अन्नके कनोको निकालणेकू लोक दांत कुचरणी रखते हैं, या तिणखोंसे कुचरते हैं. इससे और दात चोडे होकर अन्नके कणे भरी जते हैं, इससे जादा नुकशान है, दांतकू साफ करणेका पूरा इलाज ब्रुश है, गरम पाणीके कुरलोमेंभी साफ होजाता है, दांतोपर नीलण पुडपुडे जमते हैं वो निकाल डलवाणा चहिये वहोत वरसोंका जमाभया मैल दातोका

डाक्टर साफ कर देते हैं, और छोटे चकूके धारसें धीरे २ घसणेसेंभी लील निकल सकती है. ऊपर दांतोंके मंजन लिखे हैं, उसमेंसे नं० ३।४ वाला मंजनमें कोयलेका भूका डालकर उससें दांतण करणा नं० ५६९ में लिखे भये कोनडिस सोल्युसन ड्राम १ में नयसेर पाणी डाल कुरला करना.

(दांत साफ रखणेके नियम)–१ दांतकूं बांबलके दांतणसे या ब्रूससे हमेश घसणा लेकिन् दांतोंकों जोरसे घसणा नहीं २ कोयलेका भूका लूण चाक और कपूर साधारण मंजन हमेश दांतोंकों रगडणा ३ दांतोंके छेकडोमें नाज भर जावे उसकूं कुरले या ब्रूससे निकाल डालना जो अंदर रहा तो बहोत नुकशान है, इसीवास्ते जैनके साधू भोजन कर दांतोंकों साफ नहीं करे तो व्रतभंगका दोषण मानते हैं, और दांत साफ करते हैं, दिगंबर जैन दांत साफ करणेमें व्रतभंग मानते हैं, श्वेतांबर साधूओंकी साफ करणेकी मर्यादा है, लेकिन् भोजन किये बाद पहले नहीं ४ रातकूं बिलकुल दांतोंमें अन्नका कणा नहीं रहणा चहिये ५ लील होय तो लीलके निकाल डालनी मंजन ऊपर लिखे सो रखणा सो फेर लील बेगेही नहीं ६ बहोत मीठे और खट्टे पदार्थ हमेश खाणा नहीं ७ सुपारी दांतोंकों रिसाउती है सो खाणी नहीं सुपारीकी राख दांतोंके मसलणी ८ तमाखू खानेसें दांत तो साफ होता है, लेकिन् होजरीपर उसका असर बुरा होता है, इसवास्ते तमाखूका बिलकुल खाना करणा नहीं ९ दस्तकी कब्जी होणे देणी नहीं १० सुराक पचे एसा खाणा खाणे होय तो फोरन इलाज करना ११ पेटका खुलासा और पाचनशक्ति रखणेके गोलीका खाना है.

चमडीके रोग–

किरण ८ मी.

प्रकार बनेक रोग होते हैं, किनेक तो रक्त बिगडणेसें किनेक एक खुन होनेसें और किनेक इंद्रीयोंकी अंदर घुसे भये दोषोंसे पैदा होते हैं, किनेक रोग [illegible] होते हैं और किनेक अंदरके दोषसे होते हैं, अंदरके दोषसें भी [illegible] होणेसे रोग इन रोगोंके बिजार रूपसे फुटकर निकलते हैं, इसवास्ते इन [illegible] इन बिजारोंके इलाजोंकाभी समावेश होजाता है, इसवास्ते अनेक रोगों [illegible] रोगोंका इलाज और लक्षण लिखे हैं.

[illegible] कहते हैं, रक्त खराब होनेसें अथवा बिगडे [illegible] रोगोंकी पुरती अच्छी है, इसीके बिजारभी बहोतसी जगा रक्तीका [illegible] रक्तीके बिजारसें पुरती होती है, परंतु अमेद्य अमुक अमेद्य दोषोंका [illegible] रोग बहोतसे रक्तीके बिजारसें पुरते होते हैं, इसवास्ते ३ नीचके रोग २ कारणसें [illegible] रक्त खराब होनेसें और बहुतही खराब पेटके दोषसें इत्यादिकोंमें खराब

करणा ६ गोमूत्र मसलके स्नान करणा ७ दाहशामक दवायोंका लेप पृष्ठ ३१२) ८ चंदनका लेप ९ गंधकका लेप १० सोहागीका जल मसलणा ११ चंदनका तेल लगाणा १२ तिलका तेल मसलणा १३ लोशन कार्बोलिक एसिड १ द्राम ग्लीसरीन १ औंस पाणी ३ औंस रेक्टिफाईड स्पिरिट २ औंस १४ लोशन–कपूर ॥ द्राम क्लोरल हाइड्रेट ॥ द्राम ग्लीसरीन १ द्राम गुलाब जल ५ औंस १५ गंधकका साबू (सल्फर सोप) वदनके मसलके नाहणा १६ कारबोलिक सोप १७ चंदलाईके पत्ते उकालके पीणा १८ गिलोयका रस पीणा १९ गाजुवांका रश पीणा २० नं० २९५ ३१३ ३१७ ३२४ ३२६ का इलाज है सो करणा.

(फुनसी–लाईकेन) चमडीपर महीन २ फुणसियें होती है, गरमीकी मोसममें वहोत होती है, अदमीकुं वहोत तकलीप देती है,–इलाज–१ चंदनका लेप करणा २ वाला शंखजीरा तथा कपूरकाचरीका लेप ३ गेरूका लेप करणा ४ हरडेका जुलाव देणा ५ मासा तथा पोस्तके डोडोके जलसे नाहणा.

(लूखापणा)–(ग्रुराईगो) सव वदनपर वहोत खुजली आती है, तथा महीन २ फुनसियें होती है, अदमी खुजालते २ खूनतक निकाल लेता है तैसें २ जलण और खुजाल वढती है, चमडी लूखी और खरदरी होती है,–इलाज–ऊपर लिखे सव खुजलीका इलाज करणा १४ मासेके जलसे स्नान कराणा २ चंदनका लेप करणा ३ चीरोंजीका लेप करणा ४ गंधक १ द्राम ग्लिसरीन १ द्राम धोयामयाधी १ औंस इनोकों मथकर वदनके लगाणा ५ रस कापूरका पाणी लगाणा ६ गंधक २ द्राम ग्लीसरीन तथा वेसेलीन एकेक औंस मिलाकर मसलणा ७ चंदलियेका रस नींवके पत्तोंका रस गाजुवानका रस इनोमेंसें कोईभी दवा थोडा दिन पीणा ८ आंवला अथवा त्रिफलाका जल पीणा ९ गुलाबकलीका जुलाव अथवा सोनामुखीकी चायाफकी लेणी १० आंवलेका मुरव्वा या कोला पाक अमृतवटी मंजीष्टादिकाथ वगैरेका वहोत दिनोंतक सेवन करणेसे लूखास मिटती है.

(खस)–(ईच)–खसके रोगकू सव जाणते हैं, ये एक तरेका सडणा है, गंधे छोकरोके वहोत होता है, उसमें जीव छोटे कीडे होते हैं, उसका चेप फैलता है–(इलाज)–१ गधकका लेप अथवा मलम (न०५४५) २ कासीसादिघृत (नं० ३०३) ३ पारेका मलम (न० ३०४) ४ खसका लेप (नं० ३२४) ५ (नं० ५४९) वाला मलम ६ अर्कतेल (न० २९३) ७ लीले थोथेका तेज पाणी चुपडणा ८ नींवके पत्तोको उकाल उससे स्नान करणा या गोमूत्रसे.

(खरज)–(व्योंची)–(एकझीमा)–ये चमडीका वडा रोग है, ये जादा करके हाथ पांव शिरमें कानकी कोरपर वगैरे भागोपर होती है, पहली चमडी लाल होकर सूज

जाती है. पीछे उसपर फोडे फुनसियें होती है पीछे फूटकर जमता है, तथा जराम मिलता है. वो पेर २ सूखता है और हरा होता है, कितनेक सूके होते हैं, और कितनेक निकले है-(इलाज)-१ (२९३, ३०३, ३०४, ३०७, ३६६, ५४५, ५४६, ५५२ नं. का इलाज २ कील चुपडणा, ३ लसण पीसके लेप करणा, पीछे खरज वायु साफ होय, तब सादा मलम का लेप करणा, ४ नींबके नींबोलीका तेल, ५ खुजली सूकी होय अथवा खरूट आया भया होय तो उसपर रातका घी चुपडणा, मकोके आटेकी पोलिस वा नलमीकी मारणी, जब खरूंट नरम पडे तब गरम पाणीसे धो डालणा पीछे वाह भरणेकी ऊपर लिखी कोईभी दवा लगाणी)-जैसेके ६ ओलीव सालिड तेल ग्लीसरीन हामोनादि लुत (नं० ३०३) अथवा अर्कतैल (नं० २९३) लगाणा ७ टिंकचर आयोडीन हेमम लगाणा ८ कास्टिक अथवा नाइट्रिक एसिडसे खरज वाकूं जला देणा सून साफ करणेवाली दवा देणी.

(दाद)-(रींगवर्म)-(गजकर्ण)-चमडी लाल होकर उपड जाती है सुपेद फोतरी उठती है उसमें खुजली आती है, चकर २ जेसी शिकल होती है, और फैलता है, पुराना भये पीछे जमीन काली पडती है, बहुत खट्टा तथा गरम पदार्थ खाणेसे तथा मैथुनादिमें ये रोग होता है, मकोइ तथा मंचई कलकत्ता वगैरेके पाय खाणेकी दवासे तथा इनेनी ये रोग हो जाता है, जिसमें काळोंके दाद असाध्य है-(इलाज)-दादका अनेक इलाज है. सादा हरके कृमिहर कुष्ठहर इलाज दादका होता है, पलाडके बीज ४ तोले पीसके लेप करणा, २ पलासपापडा पीसके जलमें लेप करणा, ३ हरताल को ४ तोले पीसकर, ४ टिंकचर ऐकण लीले बोयका तेज पाणी चुपडणा, ५ सलफुरिक एसिड लगाणा, ६ कार्बोलिक एसिड, अथवा समकपूरका लोशन प्रमाण दवा २ ग्रेण घी २ औंस ७ ग्लीसराइन सबके चुपडणा पीछे उसके साबूमें धोकर टिंकचर आयोडीन लगाणा ८ कार्बोलिक एसिड लगानेसें पुराणा दादभी मिटता है, ९ समकपूर ४ तोले, सादा पीलाय कार्बोनास देढ तोले ग्लीसरीन २ औंस सब मिलाकर दिनमें ४ वखत १० समकपूर मुरदासिंग सेंधक नीला थोथा और ऐकण ये सब सम सबको नारंगके रसमें खरल करणा, ११ सोडा पाउडर, १२ पोरका सादा मलम सब खरल करणा, १३ कोसेनेट ३ ड्राम, किसमोट ४ ड्राम, सबको मलम २ औंस मिलाकर करणी

(१४ दाद) एकसा सिरही थोर सिर)-ये दाद ही जात है और सिरपरही होती है, इसमें बडे बडे पेडे महीने फुनसियें होकर फूटती है और पकर चिकनी होती है, यह दाद असाध्य है (इलाज) दाद तथा गजके सब इलाज सीवर करने है, ये इलाज इसका इसमें मुख्य इलाज साबूमें धोकर सिर दाद

खत साफ करवाणा पपडी उखडकर शिरकी जमीन साफ निकल आवे एसा इलाज करणा नीला थोथा १५ ग्रेण चार औंस पाणीमें मिलाकर कपडा भिगाकर थोडे दिनोंतक शिरपर लपेटणा पीछे एरंडी तेलमें कपडा भिगाकर उसपर लपेटना इस तरे दो चार दिन करनेसें पपडे नरम पडते हैं, और अलग हो जाते हैं, वाद एरंडीका तेल लगाणा अथवा घावभरी जै एसा रोपन मलम लगाना २ भूरींगनीके रशमें सहत डालकर लेप करना ३ चिरमीकी जड तथा फल पीसकर लेप करना ४ चिरमीकु जलमें पीस उसमें भांगरेका रश तथा तेल डालके सिद्धकरा भया तेल चुपडना (ये अवल गुंजादि तैल.)

(खोरा)–(स्कर्फ) शिरमें होता है उसमेंसें सुपेद फोंतरा ऊडता है, तथा वाल गिर पडता है खोरा एक तरेका जीवका विकार है–(इलाज)–१ गुंजादितेल चिरमीका ऊपर लिखा सो २ नीवोलीका तैल ३ हरतालका लेप ४ टकन तोला -।- एकसेर जलमें मिलाकर उसजलसे हमेस शिर धोना अथवा सालिडका तेल चोपडना.

(टाटका पडना)–(ऐलोपेश्या)–शिरके वाल उडजाते हैं उसकूं टाट कहते हैं वहोतसी वखत मूंछ तथा भवांरेके वालभी उड जाते हैं, उंदरी कीडा अथवा उपदंशकी गरमी ये वाल गिरनेका मुख्य कारन है, इसवास्ते खून सुधारनेका यत्न करना–(इलाज)–१ चिरमीका वूका पीस लेप करना भांगरेके रशमें सिद्धकरा भया तेल चुपडना ३ कडवे परवलके पत्तोंका रश तीन दिन लेप करना ४ भूरींगनीका रश सहत मिला लेप करना.

(खील)–(आक्ने)–चमडीके पिंडमे एक तरेका चिकना पदार्थ भर रहा है जव वो वाहर नहीं निकलता तव खील होकर वाहिर फुटती है जादा जुवानीमें चहेरे पर फुटती है–(इलाज)–फजर सांझ गरम जलसें धोना गरम जलका वफारा देना २ रसोतका लेप करना ३ टंकणखार गुलाव जलमें लगाणा ४ गंधकका मलम (गंधक १ भाग वेन्झोयेटेडलार्ड ४ भाग) ५ गूगल लोह काडलीवर वगेरे दवाओं देणी ६ गोरोचन काली मिरचका लेप ७ लोद धाणा तथा वचका लेप ९ शेमलके कांटाओंकूं दूधमें पीस लेप करना.

(करोलिया)–(सोरायासीस) चमडीपर सुपेद चट्टे होते हैं, ऊपरकी चमडी उतरती जाती है और नीचे सुपेद चट्ठे निकलते जाते हैं, इसकूं सिध्मा वभूती या श्वित्री कोढभी कहते हैं, ये रोग जादा करके मूं, छाती, पीठ कभी २ सव वदनपर होता है, (इलाज) १ कुष्टहर लेप (नं० ३२१) गंधकका तेल (न० ६६) ३ हरतालका लेप (न० १८९) ४ ठंडे पाणीमें भिगाई भई चद्दर वदनपर लपेट उपर गरम धाधला ओडाकर दो चार घंटे सुला देना और दोचार वखत खूव जल पिलाणा जिससें पसीना आकर फायदा होता है. ५ टार, ग्रीक, ओक्सुसाइड और विदामका तेल सम वजन मिलाकर करोलियेपर घसकर लगाना, ६ पवांडके वीज तथा वावचीका लेप इमतेर दि-

नमें दो वखत दवा लगाणी, गरम पाणी और साबूसें धो डालना, कोरे रुमालसे साफ पोंछ डालना. फेर दवा मसलके लगाणा.

(कोढ)-(ल्युकोडर्मा) चमडीका कुदरती रंग बदलकर उसपर सुपेद काले लाल तेरे पडोत तरेके चट्टे निकलते हैं, साधारण लोक सुपेद चट्टोंको कोढ समझते हैं, लेकिन् तो १८ जातिमेंही एक जाति है, दाद, चित्री, करोलिया, बिचर्चिका, पांव वगेरेमी कोढ रोगका हलका विकार है, दुसरे दुष्ट कोढ रोगका दोष धातूमें प्रवेश कर अंदर ऊतरता है, विरुद्ध अन्नपानका सेवन ये कोढ रोगका कारण है, (इलाज)-(दुष्टहर लेप) तथा अबल गुंजादि लेप (नं० ४२) (नं० ३१३) (बकी तैल नं० २९५) मरिचादि तैल (नं० ३००) काली जीरीका लेप (नं० ३१७) ५ सुपेद कोढका लेप (नं० ३२१) ६ अबल गुंजादि काथ (आंवला तथा खैर सारका काथ) उसमें सावीका चूर्ण डालकर पीणा)-(खानेकी दवायें) मंजीष्ठादि काथ (निंबपंचाग चूर्ण (नं० २२९) अमलतासगुल (नं० २८७) १० किशोर गूगल(तथा योगराज गूगल)(पृष्ठ २५२) पथ्य आहारके संग ऐसी कुष्टहर दवा देणेमें आवे तो चमडीका रोग आराम होता है.

(शीतपित्त) -(उदर्द)-(कोठ)-(उरुकोठ)- (अर्टिकेरिया)-बदनपर चट्टे उठ जाते हैं, ये दरोड छोटे बडे लाल तेमें सपेद रंगके होते हैं, चमडी सूजी भई तथा, उपसीर्ष होता खुजली तथा दाह होता है, पित्ती एकदम अंदर घुस जाती है, किसीरकुं ये रोग वरस होता है, अजीर्ण अथवा उसका विगाड खट्टा अथवा नाखकी बेमारी ये सब पित्ती अथवा पित्ती जैसा चट्टका कारण है, कोइ जहरी जानवर कीट (मकडी) मसलणेसे या खानेमें आई तोभी तो पित्ती निकल जाती है. इलाज-सरसूंके तेलका मालिस २ गरम पाणीका शरीरपर सींचना ३ सरसूंका दाणा हलदी पमाडके बीज तथा तिल इनोंकुं सरसूंके तेलमें मिलाकर लेप करना ४ कंडोलेशन कारबोलिक लोशन कपूरका अर्क बोतल २ गरम करके पडणा पुराणी बेमारीमें नीमके पत्तेका रस पीणा ६ सोनामुखी [illegible] दवा (देखो पृष्ठ ३१६) ७ काली तिलीका चाकरके पीणी ८ त्रिफला [illegible] दवा ९ बडके रसमें पुराना गुड मिलाणा १० त्रिकटुका चूर्ण [illegible] ११ त्रिकटु तथा वचनोद १२ गुलाब लेना किंवाला पंचक (कुटकि देव [illegible]) १३ कडु तिलाकी जिर अथवा तिलाकी निमक इसमेंका कुलाव देणा) १४ कडु तिलका तेल मिलाकर चाटणा तेमें जोर लगाणा.

[illegible] ये [illegible] इलाज-कडा इलाज करना १ कडी [illegible] २ गुलाब जल तथा तिलके ३ [illegible] ४ [illegible]

वगेरे घसणा ६ दशांग लेप नं० ३१२।७ जुलाव एरंडीका तेल गुलावका फूल अथवा सोनामुखी वगेरे दैणा मंजिष्ठादिकाथ अथवा चूर्ण.

कालादाग–चमडीपर काला दाग पडता है, किसी रोगसे या वुढापेसें या विलास्टर मारे पीछे चमडीपर काले दाग रह जाते हैं, (इलाज) शरीरसंवंधी कोइ रोगका कारण होय तो उसका इलाज करणेसे दाग अदृश्य होगा जैसेके गरमीके रोगसे हथेलीमें भये दाग रसकपुरका पाणी मसलणा ३ व्हाइट प्रेसीपीपटका मलम (सादा मलम १ औंस आयोनाटेट मर्क्युरी १ ड्राम मिलाकर मलम करना ४ आल्कोहोल १ औंस कपूरका पाणी उसमें रू भिगाकर दागवाले भागपर धरणेसें चमडी लाल होगी अथवा विलाष्टर उठकर नई चमडी आयगी.

(झामरा)–(पेमफीगस) चमडीपर एक वडा फफोला उठता हैं, उसमें पहले पाणी होता है पीछे पीप होता है सख्त दरद तथा जलण होती है, (इलाज) १ अफीमका लेप करना अथवा पोस्तके डोडेका सेक करना २ तुकमरिया पीसके वांधणा, ३ सुईसे फोडकर सादे मलमकी पट्टी मारणी ४ धोया भया घी अथवा मख्कण अथवा झिंक ओइन्टमेन्ट लगाना ५ चमडी अलग पडे पीछै घाव भरणेकूं आइडोफोर्म कारवोलिक तेल अथवा वोरासिक एसिडका मलम लगाणा.

(कखवायु)–(ऊसरणी)–(हर्पिझ) काखके नीचे छातीकी वाजूमें चमडी लाल होकर उसपर मोतीका दाणा जैसा फुणसियें होती है, किसी२ वखत और जगेभी होती है नाताकतीसे होता है, वुखार उतरे पीछै एसे दाणे होठपर होते हैं, उसकूं लोक वूरामूत गया एसा कहते हैं, उसमें दाह होता है वुखारभी आजाता है, (इलाज) १ गेरूका लेप, (२ दशांग लेप नं० ३१२), ३ स्युगरलेडका मलम, ४ झिंक लगाना, ५ लेड लोशन, ६ ग्लिसरीन मेटेनिक एसिड मिलाकर चोपडणा,

(विस्फोटक)–(एकथीमा)–(इम्पीटाइगो)–चमडीपर छोटे या वडे, पीलेपीपवाला पफोला होता है, उसकूं विस्फोटक कहते हैं, ये फफोले उठकर जखम पडता है, खरूंट जमते हैं, और अंदरसे चिकता है, (इलाज) पंचवल्कलका उकालकर उससे हमेश धोणा, २ धमासा अथवा पोस्तके छिलके उकाल पाणीसे दोतीन वेर स्नान करना ३ जाईके पत्तोंके हिमसे स्नान करना, ४ खरूंटोपर पोटाश वांधकर अथवा तेल लगाकर उखेड उसपर सादा मलम अथवा जखम भरे एसी दवा लगाणी, ५ नींवोलीका तेल लगाणा, ६ पंचवल्कलकूं कूट उसका महीन चूर्ण दाववा अथवा जलमें पीस लेप करना ७ कारवोलिक और वोरासिकका मलम लगाणा, ८ गिलोयके उकालीमें एरंडीका तेल डाल दोचार दिन पीणा, ९ मंजीष्टादि काथ, गाजुवाका रस सालसापरीलाके उकाला, तेसें काडलीवर क्रीनाइन, लोह वगेरे दवायोंका सेवन उकतर करवाने.

नमें दो वखत दवा लगाणी, गरम पाणी और साबूसें धो डालना, कोरे रुमालसे साफ पोंछ डालना, फेर दवा मसलके लगाणा.

(कोढ)–(ल्युकोडर्मा) चमडीका कुदरती रंग बदलकर उसपर सुपेद काले लाल वगेरे वहोत तरेके चट्टे निकलते हैं, साधारण लोक सुपेद चट्ठोंकों कोढ समझते हैं, लेकिन् वो १८ जातिमेंकी एक जाति है, दाद, चित्री, करोलिया, बिचर्चिका, पांव वगेरेभी कोढ रोगका हलका विकार है, दुसरे दुष्ट कोढ रोगका दोष धातूमें प्रवेश कर अंदर ऊतरता है, विरुद्ध अन्नपानका सेवन ये कोढ रोगका कारण है, (इलाज)–(कुष्टहर लेप) तथा अचल गुंजादि लेप (नं० ४२) (नं० ३१३) (वज्री तैल नं० २९५) मरिचादि तैल (नं० ३००) काली जीरीका लेप (नं० ३१७)५ सुपेद कोढका लेप (नं० ३२१) ६ अवल गुंजादि क्वाथ (आंवला तथा खैर सारका क्वाथ) उसमें वावचीका चूर्ण डालकर पीणा)–(खानेकी दवायें) मंजीष्ठादि क्वाथ (निंबपंचाग चूर्ण (नं० २२९) अमृताघृत (नं० २८७) १० किशोर गूगल(तथा योगराज गूगल)(पृष्ठ २५३) पथ्य आहारके संग एसी कुष्टहर दवा देणेमें आवै तो चमडीका रोग आराम होता है.

(शीतपित्त)–(उदर्द)–(कोठ)–(उत्कोठ)– (अर्टिकेरिया)–वदनपर चट्टे उठ जाते हैं, ये ददोडे छोटे वडे लाल तैसें सपेद रंगके होते हैं, चमडी सूजी भई तथा, उपसीभई वहोत खुजली तथा दाह होता है, पित्ती एकदम अंदर घुस जाती है, किसी२कूं ये रोग वेर२ होता है, अजीर्ण अथवा उसका विगाड खट्टा अथवा नारूकी वेमारी ये सव पित्ती अथवा पित्ती जैसा चट्टेका कारण है, कोइ जहरी जांनवर काटै (मकडी) मसलसणेसे या खानेमें आवै औरभी तो पित्ती निकल जाती है. इलाज–सरसूंके तेलका मालिस २ गरम पाणीका शरीरपर सींचना ३ सरसूंका दाणा हलदी पमाडके वीज तथा तिल इनोंकूं सरसूंके तेलमें मिलाकर लेप करना ४ लेडलोशन कारवोलिक लोशन कपूरका अर्क वगेरे लगाना ५ गरम कपडे पहराणा पुराणी वेमारीमें नींवके पत्तेका रस पीणा ६ सोनामुखी तथा दस्तावर दवा (दैणी पृष्ठ. ३१६) ७ कालीजीरीकी चाकरके पीणी ८ त्रिफला गूगल तथा पींपरका चूर्ण देना ९ अद्रकके रशमें पुराना गुड पिलाणा १० त्रिकटुका चूर्ण और मिश्री ११ त्रिकटु तथा अजमोद १२ जुलाव लेना किरमाला पंचक (कुटकि देवदारू मोथ अतीश किरमालेकी गिर अथवा विलायती निमक इसमेंका जुलाव देना) १३ काली मिरच घीमें मिलाकर चाटणा तैसें ऊपर लगाणा.

चकावा–इरीथीमा–चमडी लाल होजाती है, इलाज–ठंढा इलाज करना १ कली चूनेका नितरा भया जल और तेल मथकर लगाना २ गुलाव जल तथा गिलसरीन ३ जात्यादि घृत ४ झिंक ओइन्टमेन्ट नं० ३०२।५ ओक्साइड ओफ झिंक तवखीर

वगेरे घसणा ६ दशांग लेप नं० ३१२।७ जुलाव एरंडीका तेल गुलाबका फूल अथवा सोनामुखी वगेरे दैणा मंजिष्ठादिक्काथ अथवा चूर्ण.

कालादाग–चमडीपर काला दाग पडता है, किसी रोगसे या बुढापेसें या विलास्टर मारे पीछै चमडीपर काले दाग रह जाते हैं, (इलाज) शरीरसंबंधी कोइ रोगका कारण होय तो उसका इलाज करणेसे दाग अदृश्य होगा जैसेके गरमीके रोगसे हथेलीमें भये दाग रसकपुरका पाणी मसलणा ३ व्हाइट प्रेसीपीपटका मलम (सादा मलम १ औंस आयोनाटेट मर्क्युरी १ ड्राम मिलाकर मलम करना ४ आल्कोहोल १ औंस कपूरका पाणी उसमें रू भिगाकर दागवाले भागपर धरणेसें चमडी लाल होगी अथवा विलाष्टर उठकर नई चमडी आयगी.

(झामरा)–(पेमफीगस) चमडीपर एक वडा फफोला उठता हैं, उसमें पहले पाणी होता है पीछै पीप होता है सख्त दरद तथा जलण होती है, (इलाज) १ अफीमका लेप करना अथवा पोस्तके डोडेका सेक करना २ तुकमरिया पीसके बांधणा, ३ सुईसे फोडकर सादे मलमकी पट्टी मारणी ४ धोया भया घी अथवा मख्कण अथवा झिंक ओइन्टमेन्ट लगाना ५ चमडी अलग पडे पीछै घाव भरणेकूं आइडोफोर्म कारबोलिक तेल अथवा बोरासिक एसिडका मलम लगाणा.

(कखवायु)–(ऊसरणी)–(हर्पिज) काखके नीचे छातीकी बाजूमें चमडी लाल होकर उसपर मोतीका दाणा जैसा फुणसियें होती है, किसी२ वखत और जगेभी होती है नाताकतीसे होता है, बुखार उतरे पीछै एसे दाणे होठपर होते हैं, उसकूं लोक वूरामूत गया एसा कहते हैं, उसमें दाह होता है बुखारभी आजाता है, (इलाज) १ गेरूका लेप, (२ दशांग लेप नं० ३१२), ३ स्युगरलेडका मलम, ४ झिंक लगाना, ५ लेड लोशन, ६ ग्लिसरीन मेटेनिक एसिड मिलाकर चोपडणा,

(विस्फोटक)–(एकथीमा)–(इम्पीटाइगो)–चमडीपर छोटे या वडे, पीलेपीपवाला पफोला होता है, उसकू विस्फोटक कहते हैं, ये फफोले उठकर जखम पडता है, खरूंट जमते हैं, और अंदरसे चिकता है, (इलाज) पंचवल्कलका उकालकर उससें हमेश धोणा, २ धमासा अथवा पोस्तके छिलके उकाल पाणीसे दोतीन वेर स्नान करना ३ जाईके पत्तोंके हिमसे स्नान करना, ४ खरूं टोपर पोटाश बांधकर अथवा तेल लगाकर उखेड उसपर सादा मलम अथवा जखम भरे एसी दवा लगाणी, ५ नींबोलीका तेल लगाणा, ६ पंचवल्कलकूं कूट उसका महीन चूर्ण दाबणा अथवा जलमें पीस लेप करना ७ कारबोलिक और बोरासिकका मलम लगाणा, ८ गिलोयके उकालीमें एरंडीका तेल डाल दोचार दिन पीणा, ९ मंजीष्ठादि काथ, गाजुवाका रस सालसापरीलाके डालका उकाला, तेसें काडलीवर कीनाइन, लोह वगेरे दवायोंका सेवन डाक्तर करवाते हैं.

(मस्सा)-(वार्ट) शिरपर तैसें शरीरपर किसीभी जगे छोटे वडे चमडीके अंकूरे फूटते हैं, वहुतोंके जीभ होठ नाक कान मलद्वार वगेरे गुप्त जगोंपरभी होते हैं, (इलाज) छोटे मस्से, कासटिक अथवा खारसे जलके गिरजाता है, वडे मस्सेकूं डाकतर कतरणीसे काट कासटिकसे वो जगे जलाकर मलम लगाते हैं, २ आंधी झाडेका क्षार लगाणा, ३ अर्क तेल (नं० २९३) ४ कलीचूना लगाना, ५ घोडेका बाल बांधकर हमेश जरा २ खेंचणेसें कितनेक दिनोंमें मस्सा गिर जाता है.

(कपासिये)-(कॉर्न) कपासियेकूं आंठणभी कहते हैं, वो हाथ पैरपर होता है, चमडी जाडी होती है, किसीके दरदभी होता है, किसीके सख्त पडणेसें दरद नहीं होता, (इलाज) कटाकर कानका मैल भरणा दुसरा इलाज देखणे सुणनेमें नहीं आया है, कांटा अंदर रहजाकर पुराणी हालतमें कपासिये बंध जाते हैं.

(जूं)-(लीख)-(लाउस) गलीच अदम्योंके कपडेमें तथा बालोंमें जूंलीख पडती है, कपडोंकी सुपेद और बालोंकी जूं काली होती है, (इलाज) स्नान और कपडे साफ रखणा, २ नींवूके रशमें कालीजीरी पीस बालोमें लगाना, ३ नींवोलीका तेल लगाना ४ धतूरोंके डोडोंकूं तेलमें उकाल बालोमें वो तेल लगाणा, ५ पारेकूं नीमके रसमें घोट या मूलीके पत्तोंके रशमें घोट लगाणा, या पारेका मलम लगाणा, ६ रसकपूर दो ग्रेण एक औंस जलमें मिलाय वो पाणी शिरमें लगाणा, ७ कारबोलिक एसिड तथा तेल, ८ सिरका और नवसादर, ९ गंधक या गंधक तेल, १० नींवूका रस और खांड.

(वाला)-(नारू)-(गीनीवर्म)-चमडीमेंसे सुपेद रंगका सवा हाथ एक तार जैसा दो इंद्रियवाला जीव निकलता है, जैनोके सूत्रमें, हरसमें, कंठमालामें और नारूमें दो इंद्रीवाला जीव कहते हैं, वोही वात इस वखत पश्चिमी विद्वानोंने सिद्ध किया है, ब्राम्हणोंके वनाये शास्त्रमें मांस सूककर नारू होता है, एसा लिखा है, लेकिन् प्रमाणसें सिद्ध नहीं होता, ऊपर जो लिखा है सो यथार्थ है, इससे महीन इंडे पाणीमें रहते हैं, जो विगर छाणे पाणीसे स्नान पानादि करते हैं, उनोके ये रोग जरूर होता है, श्रीधरजी पंडित अमृतसागरके नोटमें लिखा है एक अंगरेज गंधे जलमें पहरभर सिकारके वास्ते खडा रहा, सो मेरे सामने रामजी गणो डाकटरने दोनों पेरोंमेंसे पचास नारू निकाले, इसीवास्ते जैन धर्मवालोंका सिद्धांत हुकम है की पाणी दिनमें दो वखत छाणना और रातकूं जल पीणा नहीं, इस हुकमकी तामील करणेवालोंकों नारू कभी नहीं निकलता, वारीक इंडे चमडीमें प्रवेश कर अंदर वढता है पीछे वाहर आता है, वाला निकलणेकी सरुआत दो तीन तरेसें होती है, किसी २ के तांतका गुंचला चमडीमें जाहिरा मालम देता है, किसी२ के सोजा तथा दरद होकर पककर फूटता है, तांत वाहर आती है, किसी २ कूं पित्ती निकलती है, वहोत तकलीफ होती है, (इलाज) जो दिखता मालम

दै तो निकलवा डालणा शस्त्रसे चमडी काटके और, स्वतः तांत बाहिर आवे तो उस तांतकुं बांध देणा क्योंकी जिससे अंदर पीछा नही जासके जो खेंचणेसें तूट जावे तो वहोत तकलीप होती है, (इलाज) एक नारू सहस दारू है, लेकिन् मुख्य पतवाणे भये इलाज लिखते हैं) मूंकरे वाद छाणे भये पाणीके होदमें वेठणेसे निकल जाता है पहरभरमें) हींग अफीमका लेप वहोत दिनोंतक करणेसे, मूं करणेके पहली, अंदर साफ होता देखा है, माह सुदि सत्तमीकूं निराहार मिश्रीचावै तो नारू होताही नही, एसी वृद्ध संप्रदायसे सुणी है, लेकिन् सांझ पडे वाद घरसे वाहर उस रातकुं न निकले तोरे नहीं देखे, जो भूखा नहीं रहसके तो सांझकूं पाव मिश्री चावै कृत्य ऊपर मुजब)–३ नारू जव वहोत जोर करे या तूट जावै या तोडपड जावै तो पहले काले तिलोंकों एक कडाईमें एसा सेके सो जलणे जैसा हो जावै, वाद उनोंको पीस सव सूजनपर लेप कर देवे मू खुला रहणे दै, वाद क वार पट्ठेकी गिरतो ४ उसकूं एक मट्टी पात्रमें डाल उसमें तेल १ रुपेभर एक रुपेभर ईसपूगल मासाभर सिंदूर रत्ती सुहागा रत्ती अफीम रत्ती नोसादर डालके अंगारपर सिजावै, वाद एक आक पत्ते पर लेके नारूके मूंपर धरे और वाकी आकके पत्तोंपर तिलीका तेल लगाकर दो पत्ते आपसमें जोड अंगारपर जरा गरम कर तिलोंका जहां २ लेप है, उसपर धरके कपडेसे वांध देवे तीसरे दिन पट्टा खोले, एसे तीन ४ पट्टे वांधणेसे सव दरद और नारू गलके निकल पडेगा, घाव भरणेकूं गाभणिया फोहा वांधाकरे, या किसी मलमकी चत्ती लगावै, ४ नीलाथोथा जलमें उकाल नारू पर झारा करे, सुहावते जलका और गाभणिया फोआ वांधे आराम होता है, ५ आकके पत्ते एरंडके पत्ते एरंडी तेलका पोता अफीम धतूरेका पत्ता नीवके उवाले भये पत्ते, हींग कारवोलिक तेल, सांवू, कांदे दोनो मिलाके,पकाये भयेका पट्टा इत्यादिसे नारू मिटता है, साफ नही होय जहांतक हलणा चलणा नहीं, नहीं तो तोड पडता है, प्रभातसमे वीकानेरकी मिश्री देसी खांडकी चाव पाणी नहीं पीवे तो नारू अंदर साफ होजाता है.

(व्याउफटणी)–(विपादिका)–(चिल्वलेन)–हाथ पैरोंमें जरा सोजन दाह खुजली आकर उसमें फटणा होता है, ये एक हलके तरेका कुष्ट रोग है, और वो भीगी जगा तथा शरदी हवाके कारण होता है, (इलाज) कोडमें लिखे सव इलाज करणा, कोकम जो गुजरातमें खटाई होती है उसका तेल मंहदीके पत्तोका लेप, रालका लेप, वडके दूधका लेप वगेरे फुलमा तथा मोम लगाकर जलती वत्तीसे सेकणेसे दरद फोरन मिटता है, शरदी और भीजी जगेसे वचके रहणा ठंढे जलसे धोणा नहीं पांवोमें मोजे रखणा.

(विचचिंका)–(लेप्रा)ये–एक कोड और करोलियेकी जातका रोगहै करोलियेके रोगमें चक्कर वदनमें हर किसी जगे होकर फोंतरे उडते हैं,जिसकूं विभूती कहते हैं, और व्योंची

हाथ पैरो के तलेमें तेसें जांघ और गोडोंके तथा पैरोंके ऊपर गिरियेके पास चीरे पडते हैं, खुजली आती है, और खरूंट जमते हैं (इलाज) तनदुरुस्ती सुधरे एसी दवायों देणी कोढके सब इलाज इसपर चलते हैं बाहरके इलाजमें गंधक तथा पारेकी मिलावटका मलम अच्छा है खस खुजलीका सब मलम अच्छा है २ रसोत कोकमका तेल मेंहदीके पत्तोंका लेप रालका मलम वडके दूधका लेप वगैरे फायदे बंद है, ३ दाहकूं मिटाणेवाली दवायें जेसेके आंवलेका चूर्ण त्रिफला चूर्ण गुलकंद आंवलेका मुरब्बा वगेरे, वद हजमी और वध कुष्ट होणे देणा नहीं.

(चित्री)–(व्हाइटलेप्रा)–येभी करोलियेकी जातका चमडीका रोग है चमडीपर खुजली आती है और खुजालणेसें चमडी परकी फोतरी ऊतर जाती है सुपेद चट्ठे पडते है चित्री मूपर और पीठपर जादा होती है–(इलाज)–काली जीरी खिलाणी कालीजीरीका लेप २ गधकका लेप ३ तिलका मालिस ४ वावची पाणीमें पीस उसका लेप करणा ५ हरतालका लेप गोमूत्रमें पीसकर करणा हरताल १ भाग त्रिफला १ भाग कालीजीरी ४ भाग ६ नीले थोथेके पाणीमें तेल मिलाकर मसलणेसें चित्री जल्दी आराम होता है.

किरण ९ मी.

छुटकर रोग. एकाएक होणेवाले.

वाकीरहे जो रोग तथा अकस्मात पैदा होणे वाले शरीर और मन संबंधी इजाओंका वर्णन इस किरणमें प्रकास करते हैं.

(आंगुलियोंकीवादी)–अंगुलियोंमें वादी आणेसें लिखते आंगलियें धूजती है–(इलाज) सुद्ध कुचीलेका प्रमाण मुजब कितनेएक दिनों तक सेवन कराणा.

(कमरका झिलणा)–(लम्बेगो)–कम्मरमें वादी आणेसें कमर झिल जाती है–(इलाज) कुचीलेकी फक्की, वछनाग. वडी हरडेका सेवन, एरंडीकी जडकाचूर्ण, योगराज गूगल, २ गाईकी पट्टियें मागणी, वंशीकी शिकलवाली, फलालीनकी कोथली करके, उसमें गंधकका भूका भरके, वो कोथली कमरपर वंधी रखणी, टरपेन्टाइन, तथा सालिड तेल लगाणा, १ भाग आमोनिया, तीन भाग तेल मिलाकर, कमरपर मसलणा, आयोडाइनपेइन्ट. ओपियमलीनीमेन्ट.

(कमरका दुखणा)–औरतोंके वेर २ कमरमें दरद हो जाता है, रजोदर्शन याने ऋतुधर्मकी वखतमें, सहजसा दुखता है, लेकिन जो ऋतुधर्म संबंधी कोइ रोग होता है तो दरद वढता है, कुमुआवड (अधूराजाणा) प्रदर वगैरे, कमर दुखणेके कारण है–(इलाज)–जिस कारणसे दरद भया होय उसका इलाज करणा, स्त्रीयोंके रोगके किरणमें आगे लिखा है, योगराज गूगल अथवा सादा गूगल, अछा इलाज है.

(पसीना)–(परस्पीरेशन)–हरेक अदमीके वदनके छेदोमेंसे पसीना हमेस आया करता है, हवा और कपडोंके स्पर्शसे सूककर, दिखाई नहीं देता, लेकिन् किसी २ वखत वदनके प्रसिद्ध जगोंमें, अथवा दिनके चोकस वखतमें, पसीना आता है रातकूं पसीना आता है, तव वुखारकी शंका पैदा होती है, नाताकती, तथा जीर्णज्वरमें, रातकूं पसीना आता है, क्षयरोगमें तथा उरक्षतमें, जव मर्मस्थानमें जखम पडता है, तबभी रातकूं पसीना आता है, इस वुखारकूं प्रलेपकज्वर कहते हैं, अंग्रेजीमें हेक्टीक फीवर कहते हैं–(इलाज)–(वशंतमालती नं० ५४) वुखार सिवाय दुसरे कारणोसे, शिर, कपाल, वगल वगेरे, अवयवोमें, वहुत पसीना आया करता है, उसकेवास्ते गरम दवायें खाणी, कुलथीका आटा मसलणा.

(थूक)–(वहोत थूकका आणा)–(सलावेशन)–(कारण)–दांतोंके मसूंढे और मूंके वरमसें ठंढ नाताकती अजीर्ण दांतोका आणा और पारे संवंधी दवाखाणेसे मूंमें वहोत थूक आता है–(इलाज) १ फिटकडीके कुरले करणा ये सवसे अच्छा इलाज है, स्तंभक दवायें, जैसेकै, कचनारकी छाल वेरकी छाल, खैरकी छाल, वांवूलकी छाल, पंचवल्कल तथा सुहागेका कुरला करणा, जिसकारणसे, थुक आता होय वो कारण वध करणा.

(स्वरभंग)–(सादवैठजाणा)–गलेके मर्मस्थानमें कोइ दरद होणेसे गरम चीजों खाणेसें तेसें शरदी लगणेसें साद वैठ जाता है–(इलाज)–१ आंवलेका चूर्ण सांझकूं दूधके संग पीणा, कत्था, इलायची, खैरसार, कवावचीणी वगैरे ठंढी दवायें कठकूं खोलती है, वंवूलके पत्ते वेहडेकी छाल, नागकेशर, चिरमीके पत्ते, मोलेठीका सत वगेरे अवाजकूं सुधारती है, २ फिटकडीके कुरले करणा, अथवा पोर्ट वाइन, पाणी मिलाकर उसके कुरले करणा ३ वहुत वोलणेसें या वहोत गाणेसें अवाज वैठगई होय तव कंठकूं आराम दैणा मौन रखणा या गरम दूध घी डाल पिलाणा हरडे वटियाकी छाल छमासा आने भरपाणीमें उकाल सुहावता हरडे–समेत पीणेसें स्वरभग मिटता है गाणे-वालेकूं इतनी चीजें अच्छी है (दुहा) सूंठ कुलिंजन मिरमिरी राई पींपर पान इतना लेवे मिलायके कठकोकिला जाण (१) इतनी चीजें विद्या पढणे वालेकू और गाणेवालेकू त्यागणा चहिये (दुहा) खट्टा खारा खोपरा, सोपारी अरुतैल, जो विद्या गाना चहै, इतना दूरां मेल (१)

(हिचकी)–(हिक्कप)–करडा और लूखा और दस्तवंध करणे वाले पदार्थ ठंढापाणी ठंढाअन्न धूआं धूल नाकमें जाणा गरमी तथा हवा वहोत खाणी उपवाश ये सव हि-चकीकू पैदा करणेवाले सामान्य कारण है–(इलाज)–मोर पखकी भस्म तथा लीडीपींपर सहत मिलाकर वेर २ चाटणा २ मोलेठीका चूर्ण सहतमें चाटणा ३ धमासेके काथमें

सहत मिलाकर देणा ४ आंवला पींपर तथा सूंठका क्वाथ मिलाकर पीणा ५ रढाभया दू पीणा ६ उडद तथा हलदीके चूर्णकी बीडी पीणी ७ संभालूका क्वाथ पीणा ८ लस घीमें तलके खाणा.

(कफकाजाला)–वहोतसी वखत छातीमें कफका जाला जमता है, उसकुं मिटा कफकूं नाश करणेवाली दवायोंका उपयोग करणा–(इलाज)–आंधी झाडेका खार अरडूसेका रस सहत मिलाकर पीणा ३ आकके जडका चूर्ण अथवा एपीका क्युआन्ह पाउडरसे, उलटी कराकर कफकूं निकलवा देणा ४ कोनरूगूंद टंकणखार नवसादर दरयेक चीज कफके चिकणे व लगमकूं तोडता है.

(वाल निकालणेका इलाज)–हरताल ॥ द्राम चूना ४ द्राम गहूंका आटा १ द्राम जलमें मिलाकर उसकी पोटिस लगाणी थोडी देर रखकर निकाल डालणी और तिलका तैल लगाणा इससे वाल गिर जाते हैं, २ हरताल ॥ तोला शंखका चूर्ण अथवा शंख भस्मी १॥ तोला पलासपापडेका खार ॥ तोला इनोंकों केलेके थडके रशमें अथवा आकके पत्तोंके रशमें घोट लेप करणा ३ हरताल १ भाग शंखचूर्ण २ भाग मनशिल ॥ भाग साजीखार १ भाग इनोका लेप करणा पहली उस्तरेसे वाल निकाल डालणा पीछे सात दिन हमेस लेप करणेसे फेर वाल ऊगेगा नहीं.

(वाल रंगणेका इलाज)–(कल्य) (खेजाब)–(केनाईटीस)–बुढापेमें वाल सुपेद हो जाते हैं, मगजकी नाताकती फिकर और मा वापके होय तो बच्चेके जुवानीमेंभी वाल सुपेद हो जाते हैं सुपेदी होणेसे लोक बुढ्ढा कहा करते हैं चंद्रवदनियां बाबाजी कहकर हसती है इसवास्ते वहोतसे लोक काले वाल किये चाहते हैं १ मंहदीके पान पीस एक घंटे वालोंके लगाये रखणा उससे वाल लाल होगा पीछे नीलके पत्ते पीस थोडे घंटे बांध रखणेसें वाल काले होंगे २ त्रिफला नीलके पत्ते लोहका बुरादा भांगरा इनोकों बकरीके पेशाबमें पीस लेप करणा ३ आंवला ३ वहेडा १ हरडे २ आंवेकी गुठलीके अंदरका मगज ५ भाग लोहका बुरादा १ भाग इस वजनसे लेकर महीनपीस लोहकी कडाहीमें धर रखणा दुसरेदिन लेप करणा ४ हाइपोसल्फेट ओफ सोडा १ द्राम पाणी संगमिलाकर दो चार दिन वालोंपर लगाणा ५ नाइट्रेट ओफ सिल्वर ३० पाणी १ औंस ये पाणी लगाणेसे वाल काले होयगें लेकिन् चमडीपर दाग गिरता है, दाग निमक अथवा साइनाईड ओफ पोटाशके पाणीसे निकल जाता है.

(हडकवायू)–(हाईड्रोफोबीआ)–हिडकियाकुत्ता वरु स्याल वगैरे जानवरोंके काटणेसें अदमीकूं हडक वायूका रोग होता है शरीर खिचता है गलेमें अवाज होता है मूंमेंसे लाले झरती है पाणी पीणेसें, या देखणेसें, वायुका जोर उठता है पाणीसे ये रोगी डरता है हडकवायु उठेवाद रोगी दो तीन दिनमें मर जाता है–(इलाज)–जिस जगेका-

टा होय उस जगेकुं तुरत काट डालकर जला देणा ये हडकवायु उठे वाद फेर मिटाणेका इलाज फायदेवंद अभीतक कोइ मिला नहीं है, पहलीके तो इलाज और मंत्र करके अजमायाभी है सो हडकवायु विलकुल उठा नही आराम होगया रोगीकूं अंधारी कोठडीमें रखणा नशोंकों ढीली करे एसी दवा देणी जैसेके अफीम भंग वेलाडोना वगेरे दवा देणी २ कूकडवेल देणेसें सख्त उलटी होकर जहरी जानवर निकल जाते हैं, तेज उलटीकी दवासे रोगी वचता है योगचितामणीमें इस रोगकी दवा लिखी है सो देख लेणा.

(लू लगणी)-(सन्स्ट्रोक)-धूपमें फिरणेसें लूलगती है वच्चोंकों धूपका असर जल्दी मालम देता है, दाह प्यास शिरमें चकर भ्रमण आखर वेहोश तक होणा ये उसके चिन्ह है, (इलाज) खट्टी तथा पित्त शामक दवायें देणी, २ वहुफली तेसें तुकमरियांका लुआव पिलाणा, ३करमाला पिलाणा, ४गेरू तैसें चंदनका लेप करणा, ५ शिरपर तेसें छातीपर ठंढा पाणी डालणा अथवा वरफ धरणा पोंचीपर विलष्टर मारणा पैरोंकी पींडीयोंपर राईका लेप करणा, ६ वदन वहोत गरम होय तो साधारण गरम पाणीमें रोगीकू वैठाणा जुलाव देणा वुखार मिटाणेकी दवा देणी धूपमें फिरणेकी जरूर पडे तो शिरपर गीला कपडा रखणा शिरपर आकके पत्ते वांधणा दारू वगेरे जल्द पतला पदार्थ पीणा नहीं लेकिन् चा सोडावोटर और ठंढा शरवत पीणा और पसीना होणे देणा एसा करणेसे फेरभी लूलगेतो छायामें जा सोणा और शिरपर ठंढा पाणी डालणा.

(अनिद्रा)-नींद नहीं आणा ये दिवाना होणेका पूर्वरूप है कितनेक रोगोमें वहोत दरद होणेसें तैसें चिंता डर वगेरे कारणसें निद्रा जाते रहती है-इलाज-जो कारण होय उसकूं रोकणा मगजमें जादा गरमी होणेसें अनिद्राका रोग भया होय तो मगजकूं शांत करे एसा ठंढा इलाज करणा जैसेके पेठा पाक, दूधी (कडूका पाक) अथवा हलवा १ रातकू गरम पाणीसें स्नान करणा और रातकू शिरपर ठंढा पाणी डालकर सोणा सोते वखत गरम किया दूध पीणा पग चंपी कराणी पैरोंके तलवे घीसे मसलाणा २ गुडमें पींपला मूलका चूर्ण खाणा ४ पीलू (जालकी जडका काथ) गुड डालकर पीणा ५ दूध सहत दही तेलका मालिस शिरमें कानमें आंखोमे तेल डालणा ६ शाक दाल घी तैसें दूधमें कादेका रस देणा ६ अफीम तथा भांग फजूल नींद कृत्रिम लाती है, दुखकूं भुलाणेके वास्ते ये कैफी चीजें कामकी है लेकिन् जहांतक साधारण इलाज नींदके वास्ते वण आवे तहांतक एसे नसेका इलाज करणा नहीं.

(मूर्च्छा)-(फेइन्टिंग)-ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियोंमें दोप प्रवेश करता है तव मूर्च्छा आती है थोडी देर वाद वेहोस रह कर फेर होसमें आणा उसकूं मूर्छा कहते हैं मूर्च्छा ये विशेप करके मन संवंधी विकार और मनका धक्का लगणा है-(इलाज)-मूर्च्छावाले अदमीकूं शिर नीचे करके वैठाणा मूंपर ठंढा पाणी छिडकणा ठंढा पाणी तेमें

हत मिलाकर दैणा ४ आंवला पींपर तथा सूंठका क्वाथ मिलाकर पीणा ५ रढाभया दूध ीणा ६ उडद तथा हलदीके चूर्णकी बीडी पीणी ७ संभालूका क्वाथ पीणा ८ लसण ोमें तलके खाणा.

(कफकाजाला)–वहोतसी वखत छातीमें कफका जाला जमता है, उसकुं मिटाणे फकूं नाश करणेवाली दवायोंका उपयोग करणा–(इलाज)–आंधी झाडेका खार २ रडूसेका रस सहत मिलाकर पीणा ३ आकके जडका चूर्ण अथवा एपीका क्युआन्हा उडरसे, उलटी कराकर कफकूं निकलवा दैणा ४ कोनरूगूंद टंकणखार नवसादर ये रयेक चीज कफके चिकणे व लगमकूं तोडता है.

(वाल निकालणेका इलाज)–हरताल ॥ द्राम चूना ४ द्राम गहूंका आटा १ द्राम लमें मिलाकर उसकी पोटिस लगाणी थोडी देर रखकर निकाल डालणी और तिलका ल लगाणा इससे वाल गिर जाते हैं, २ हरताल ॥ तोला शंखका चूर्ण अथवा शंख· स्मी १॥ तोला पलासपापडेका खार ॥ तोला इनोंकों केलेके थडके रशमें अथवा ाकके पत्तोंके रशमें घोट लेप करणा ३ हरताल १ भाग शंखचूर्ण २ भाग मनशिल ॥ ाग साजीखार १ भाग इनोका लेप करणा पहली उस्तरेसे वाल निकाल डालणा पीछै ात दिन हमेस लेप करणेसे फेर वाल ऊगेगा नहीं.

(वाल रंगणेका इलाज)–(कल्य) (खेजाव)–(केनाईटीस)–बुढापेमें वाल सुपेद हो ाते हैं, मगजकी नाताकती फिकर और मा वापके होय तो बच्चेके जुवानीमेंभी बाल ुपेद हो जाते हैं सुपेदी होणेसे लोक बुड्ढा कहा करते हैं चंद्रवदनियां बाबाजी कहकर सती है इसवास्ते वहोतसे लोक काले वाल किये चाहते हैं १ मंहदीके पान पीस एक टे वालोंके लगाये रखणा उससे वाल लाल होगा पीछै नीलके पत्ते पीस थोडे घंटे ांध रखणेसें वाल काले होंगे २ त्रिफला नीलके पत्ते लोहका बुरादा भांगरा इनोकों करीके पेशावमें पीस लेप करणा ३ आंवला ३ वहेडा १ हरडे २ आंवेकी गुठलीके ंदरका मगज ५ भाग लोहका बुरादा १ भाग इस वजनसे लेकर महीनपीस लोहकी डाहीमें धर रखणा दुसरेदिन लेप करणा ४ हाइपोसल्फेट ओफ सोडा १ द्राम पाणी संगमिलाकर दो चार दिन वालोंपर लगाणा ५ नाइट्रेट ओफ सिल्वर ३० पाणी १ औंस ये पाणी लगाणेसे वाल काले होयगें लेकिन् चमडीपर दाग गिरता है, दाग निमक अथवा साइनाईड ओफ पोटाशके पाणीसे निकल जाता है.

(हडकवायू)–(हाईड्रोफोबीआ)–हिडकियाकुत्ता वरु स्याल वगैरे जानवरोंके काटणेसें ादमीकूं हडक वायूका रोग होता है शरीर खिचता है गलेमें अवाज होता है मूंमेंसे ाले झरती है पाणी पीणेसें, या देखणेसें, वायुका जोर उठता है पाणीसे ये रोगी डरता हडकवायु उठेवाद रोगी दो तीन दिनमें मर जाता है–(इलाज)–जिस जगेका-

टा होय उस जगेकुं तुरत काट डालकर जला देणा ये हडकवायु उठे वाद फेर मिटाणेका इलाज फायदेवंद अभीतक कोइ मिला नहीं है, पहलीके तो इलाज और मंत्र करके अजमायाभी है सो हडकवायु विलकुल उठा नहीं आराम होगया रोगीकूं अंधारी कोठडीमें रखणा नशोंकों ढीली करे एसी दवा देणी जैसेके अफीम भंग वेलाडोना वगेरे दवा देणी ३ कूकडवेल देणेसें सख्त उलटी होकर जहरी जानवर निकल जाते हैं, तेज उलटीकी दवासे रोगी वचता है योगचिंतामणीमें इस रोगकी दवा लिखी है सो देख लेणा.

(लू लगणी)–(सन्स्ट्रोक)–धूपमें फिरणेसें लूलगती है वच्चोंकों धूपका असर जल्दी मालम देता है, दाह प्यास शिरमें चकर भ्रमण आखर वेहोश तक होणा ये उसके चिन्ह है, (इलाज) खट्टी तथा पित्त शामक दवायें देणी, २ वहुफली तेसें तुकमरियांका लुआव पिलाणा,३करमाला पिलाणा,४गेरू तैसें चंदनका लेप करणा, ५ शिरपर तेसें छातीपर ठंढा पाणी डालणा अथवा वरफ धरणा पोंचीपर विलष्टर मारणा पैरोंकी पींडीयोंपर राईका लेप करणा, ६ वदन वहोत गरम होय तो साधारण गरम पाणीमें रोगीकू वैठाणा जुलाव देणा वुखार मिटाणेकी दवा देणी धूपमें फिरणेकी जरूर पडे तो शिरपर गीला कपडा रखणा शिरपर आकके पत्ते वांधणा दारू वगेरे जल्द पतला पदार्थ पीणा नहीं लेकिन् चा सोडावोटर और ठंढा शरवत पीणा और पसीना होणे देणा एसा करणेसे फेरभी लूलगेतो छायामें जा सोणा और शिरपर ठंढा पाणी डालणा.

(अनिद्रा)–नींद नहीं आणा ये दिवाना होणेका पूर्वरूप है कितनेक रोगोमें वहोत दरद होणेसें तैसें चिंता डर वगेरे कारणसें निद्रा जाते रहती है–इलाज–जो कारण होय उसकूं रोकणा मगजमें जादा गरमी होणेसें अनिद्राका रोग भया होय तो मगजकूं शांत करे एसा ठंढा इलाज करणा जैसेके पेठा पाक, दूधी (कडूका पाक) अथवा हलवा १ रातकूं गरम पाणीसें स्नान करणा और रातकूं शिरपर ठंढा पाणी डालकर सोणा सोते वखत गरम किया दूध पीणा पग चंपी कराणी पैरोके तजवे घींसे मसलाणा २ गुडमें पींपला मूलका चूर्ण खाणा ४ पीलू (जालकी जडका काथ) गुड डालकर पीणा ५ दूध सहत दही तेलका मालिस शिरमें कानमें आंखोमे तेल डालणा ६ शाक दाल घी तैसें दूधमें कांदेका रश देणा ६ अफीम तथा भांग फजूल नींद कृत्रिम लाती है, दुखकूं भुलाणेके वास्ते ये कैफी चीजें कामकी है लेकिन् जहांतक साधारण इलाज नींदके वास्ते वण आवे तहांतक एसे नसेका इलाज करणा नहीं.

(मूर्च्छा)–(फेइन्टिग)–ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियोमें दोप प्रवेश करता है तव मूर्च्छा आती है थोडी देर वाद वेहोस रह कर फेर होसमें आणा उसकूं मूर्छा कहते है मूर्च्छा ये विशेष करके मन संवंधी विकार और मनका धक्का लगणा है–(इलाज)–मूर्च्छावाले अदमीकूं शिर नीचे करके वैठाणा मूंपर ठंडा पाणी छिडकणा ठंडा पाणी तेसें

हवा डालणी सोणेके कमरेमें ठंढी हवा आणे देणी खुल्ली हवामें रोगीकूं लेजाणा २ सावचेत करणेवाली दवाकी नाश सुंघाणी हाथ पैर अच्छीतरे मसलणा.

(वेहोसी)–(कोमा)–खोपरीकूं इजा मगजका रोग मूर्च्छा सापका डसणा अफीम तथा दारू वगेरेका जहर वहोत ठंडी वहोत गरमी भूख वाई (मिरगी) हिस्टीरीया वांइटे वगेरे वेहोसीका कारण है, (इलाज)–१ जिस कारणसें वेहोसी आई होय वो दूर करणेका इलाज करणा आंखपर शिरपर ठंढा पाणी छिडकणा, २ तीखी नाश देणी जैसेके अकलकरा कपूर कांदेका रस तज नकछींकणी पींपर वगेरे ३ आमोनिया सुंघणा ४ छातीपर राई मारणी और वेहोसी जादा वखत रहे तो दस्त पेशाबका कोईभी रस्तेसें खुलासा करणा.

(तंद्रा)–(मींट)–ये सन्निपात ज्वरका अथवा भयंकर किसीभी रोगका लक्षण है, इस रोगमें वायु प्रधान होणेसे रोगी आंख मूंचकर पडे रहता है, (इलाज)–सन्निपातकी मींटमे सन्निपातका इलाज करणा और तेज अंजन करणा (भारंग्यादि काथ नं० १९६) १९७ अच्छा है २ जो रोगीके मर्मस्थानोंमें कुछ चैतन्य होय तो शरीरमें जाग्रती लाणेवाली दवा देणेसे होंस आता है. कस्तूरी अकलकरा तुलशी लीडी पींपर वच्छनाग सूंठ ये हरेक वस्तु जागृती लाती है ३ मींट दूर करणेकूं तज पींपर त्रिकुंड वगेरेका अंजन किये जाता है.

(चक्कर)–(भमल)–(गीडीनेस)–रोगी वाहरकी चीजोंकों फिरती देखता है अथवा अपणा वदन और शिर फिरता मालम देता है मगजकूं कुछ तकलीप पहोचणेसें तमाखू सराप वगेरे नसेकी चीजोंसें किनाइन जैसी दवायोंसें पांडू नाताकती फिकर चिंता तथा महनतसे खराव वदवोसें वुखार तथा हींडोलेके हींडणेसें चक्कर आता है, वहोत उंचा चढके नींचा देणखेसें पित्तका विगाड ये भमलका मुख्य कारण है, इसवास्ते कारण जाणके इलाज करणा, (इलाज)–सोंफ काली मिरच मुनक्का घोटकर पीणेसें पित्तका चक्कर मिटता हैं, नसेका चक्कर ठंढा जल आंखोंपर छांटणेसें मिटता है, मींठ विदाम और मिश्री घोट पीणेसें मगज संवंधी चक्कर मिटता है सूंठ घीमें चूरा मिलाय खाणेसे सवतरेका चक्कर मिटता है, धमासा रुपेभर उकाल घी डालके पीणा फेर दोषानुसार इलाज करणा.

(सोजा)–(ट्रोप्सी)–सोजा सव वदनमें होता है किसी एक ठिकाणेभी होता है उसकूं अंग्रेजीमें (इन्फलेमेशन) सें जुदाही रोग गिणते हैं दुसरे कितनेक रोग सोजेका कारण होता है, तोभी वो रोग दवकर शोथ रोग मुख्य रोग होजाता है, इसवास्ते देशी वैद्यक शास्त्रमें उसकुं जुदा रोग गिणा है, (इलाज)–(१ पुनर्नवादिकाथ नं० २१९) २ पवित्र चूर्ण (नं० २३२) ३ नारसिंह चूर्ण (नं० २३१) ४ सूंठके उका-

लेमें दूध डालकर पीणा ५ त्रिफलाके काथमें मेंसका घी डालके पीणा ६ गुड, तीन वर्षका लींडीपीपर तथा सूंठका चूर्ण खाणा ७ त्रिफला दारूहलदी पटोलपत्र देवदारू नीमगिलोय नींमकी छाल मकोय इनोकुं सम वजन लेके काथकर ठंडा होणेपर सहत डालकर पिलाणा पथ्यमें पुराणे चावल या मूंगकी दाल निमक नहीं देणा ८ धतूरेके बीज शुद्ध तो. १ हींगूल शुद्ध तो. १ काली मिरच तो. २ दूधमें खरलकर रत्ती २ दो नो वखत विना मीठे गउके दूध संग देणा, पथ्य खाली दूध या चावल मिलाकर ९ इसीतरे वसंत मालतीभी इस अनुपांनसे सोजा उतारती है १० संग्रहणी रोगमें दस्तके थांभणेकी दवा देणेसें जो सूजन आई होय तो हमारी बनाई अमृतवटी या ग्रहणी जीप करश तक्र और जीरे सूंठके संग देणा (११ वाहरका इलाज)–साटेकी जड सूंठ तथा वछनागका लेप १२ कांकच आक तथा एरडीकी जड इन तीनोंकें पत्ते पीस गरम कर लेप करणा ९ दोषघ्न लेप नं० ३११.

(दाह)–जलण दोतरेसे होती है एक तो किसीभी जगे, दुसरी सव वदनमें, जखममें, भिलावा वगेरे दाहक चीजोंकै स्पर्शवाले भागमें, और हाथ पैरोंमें दाह होती हैं, वो तो स्थानिक दाह कहलाती है वुखार वगेरे कितनेक रोगोमें सव वदनमें दाह होती है, (इलाज)–दाह मिटाणेकुं ठंढा इलाज करणा एक ठिकाणेके दाहमें लेप वगेरे वाहरका इलाज और सव वदनके दाहमें पेटमें दवा खाणेकूं देणा २ दशांग लेप चंदन तथा वाला मल्खण अरीठेका जल नवसादरके जलमें भीगाया भया कपडा गुलाव जल लवंडर तथा कोलनवोटर ३ शारीरक दाहमें पीणेकी दवा पित्त शामक दवाये (पृष्ठ २८०) गुलकद गाजुवांका रश गिलोयका रश तुकमरियाका लुआव वहुफली गोखरू त्रिफला अनार दाख धाणा पित्तपापडा वीलका शरवत चंदलियेका शाग जवका पाणी कली चूनेका पाणी चंदन तथा सूंठकूं घसा भया पाणी चावलोंका धोवण चंदन मिश्री और सहत.

(पकणा)–(सप्युरेशन)–किसीभी जगे या मर्मकी जगे पकणा तीक्ष्ण दाहसे जितना रोग हो जाता है उससे वदनमें किसीभी जगे पकणा होता है. फेफसा आंतरा यकृत् मगज ये उसकी मुख्य जगे है सूनका जमाव सोजा दाह तथा वुखार ये उसके मुख्य लक्षण है (इलाज)–पोस्तके डोडोके जलका शेक २ अलशीकी पोल्टिस ३ नवसादरके जलका पोता.

(हड्डीका सोजा तथा सडणा)–इसका मुख्य कारण उपदंश होता है गरमी सुजाकका आगे वढा भया दोष हड्डीमें दाखल होकर उसमें सोजा तथा सडा पैदा करता है, (इलाज).१ योगराज गूगल २ शुद्ध पारेसे वणा भया और पोछेभी सोजा भया मस

कपूर हिंगूल वगेरे दवाभी इस रोगमें फायदेबंद है चतुर वैद्यकी राहसें लेणा जो दवासे नहीं सुधरे तो आखर शस्त्रसे सडा भया भाग निकलवा डालणा.

(ग्रंथी)-(गांठे)-(ट्युमर्स)-रसोली अर्बुद विद्रधी गलगंड कंठमाला वगेरे वहोत तरेकी गांठे होती है, ये गांठे शरीरकी विगडी हालतकूं कहती है अर्थात् वदनमें खून वगेरे धातू विगडणेसें एसी गांठे निकलती है इसवास्ते वाहरका इलाजकरनेसे अंदरका इलाजकीवहोत जरूरी है, (इलाज)-खून सुधारणेवाली दवा जैसें कोडलीवर आयर्न वगेरे डाकतर देते हैं (देशी दवा) कचनार ग्रंथी रोगपर वहोत तारीफ करणे लायक लिखी है कचनार दरखतकी छालका क्वाथ अथवा (कचनार गूगल नं० ४०) वाहरके इलाजोंमें ३ दोपन्न लेप वहोत प्रसिद्ध है और उसका वहोत दिनोंतक जाडा लेप हमेश ताजा ताजा वांधणेसें दोपकूं खेंचता है ४ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो तीन वखत लगाणा इसके सिवाय पोल्टीस शेक वगेरे पकाणेका इलाज करणा.

(रसोली)-(मोल्स्कम)-एक तरेकी वहणेवाली गांठकूं रसोली कहते हैं वो दावणेसें नरम गहुंके कणक जैसी मालम देती है, चीरणेसें उसमें एक थेली मालम देती है उसमेंसें चिकणा रस अथवा गहुके कणक जैसा डूचा निकलता है उसका पीप खराव वदवो मारता है (इलाज)-गुल देणेसे तथा विखरणेकी दवा लगाणेसें मिटती है, २ आयोडीनपेन्ट, जो मेदकी गांठ तकलीप नहीं देवे उसकूं छेडणा नहीं अडचल देणेवाली रसोली जो उपर लिखे इलाजसें अच्छी नहीं होय तो शस्त्रसे निकलवा डालणी.

(तिल्ली)-(स्पलीन)-पेटके वांई तरफ पांसलीके नीचे तिल्ली विषम ज्वर और मेलेरियाके ठंढ देके वुखारमें पैदा होती है जव ये वहोत वढती है तव सव पेटमें भर जाती है ठंढके तपके हुमलेमें तिल्ली खूनमें भर जाती और उसमें खून जमजाता है, इसी सवबसें तिल्लीवालेका चहरा खून विगरका फीका लगता है, (इलाज)-१ तिल्ली-पर ऊमर मुजव २५ जोंके लगाणी २ जो इस रोगमें दस्त नहीं लगता होय तो दस्त लगेकी दवा देणी जैसेके हरडे अथवा सल्फेट ओफ सोडा कीनाइन और आयर्न देणा स्वतः दस्त लगता होय तो सोडा नहीं देणा ३ वुखार संग होय तो वुखारकी देणी ४ जो वुखार विगर तिल्ली कुछभी दरद करे विगर वढती होय तो कीनाइन और लोहकी वणी दवा देणी ५ ऊपरकी चमडी गीली होय तहांतक पौष्टिक दवायें तिल्लीपर हमेस टिंकचर आयोडीन लगाणा ६ आयोडाइड ओफ मर्क्युरीका मलम लगाणा ७ कुमारिकासव लोहासव, मंडूर भस्म, चंद्रप्रभा सहजणा सरपंखा इसकी छालका चूर्ण अथवा क्वाथ पीणा.

(काम्वविलाई)-(एमेस)-काखके अंदरका फोडा)-(इलाज)-इसपर ग्रंथीका उपाय करणा २ अफीमके डोडोंका गरम पाणीका सेक करणा अलशीकी पोल्टिस

अथवा गहूंकी पोल्टिस बांधणी पके पीछै उसकूं फोडणी दवा लगाकर या शस्त्रसें पीछै भरणेका इलाज करणा.

(वद)–(व्यूवो)–वदकी गांठ आजकल वहुतोंके होती है वो वदफेली सुजाक और गरमीसें होती है, (इलाज)–दोषघ्न लेप अलशीकी पोल्टिस ३ नवसादरका पोता ४ वडके दूधकी या गूलरके दूधकी या कोनरू गूदका लेप करणा या पट्टी मारणी ५ पारेका मलम ६ सीसेकी वट्टी या गुड चूनेका लेप कर रुई चपकाणा ७ या गुडकूं पाणीमें डाल उकालते जाणा और भंग पीस बुरकाते जाणा जाडा भये वाद लुपरी बांधणी दुसरे दिन फेर इसीतरे वहोत दिन करणेसें बैठ जाती है, पकणेसें चीरा दिलाणा या दवा लगाके फोडणा पोल्टिस बांध पीप निकाल भरणेका इलाज करणा.

(पाठा)–(कार्वकल)–(उसके लक्षण)–चमडी लाल तथा करडी जलण तथा दरद होता है, थोडे वखत पीछै सूजन दिखाई देती है, और काछवेकी पीठ जैसा उपसा भया गोल करडा फफोला उठता है सोजा वढणेके संग जलण तथा दरद वढे बुखारके लक्षण होय थोडे दिनोंमें पाठेका रग काला पडता है और सूजनके चोतरफ छोटे२ दाणे जैसी फुणसियां होती है वो फूटणेसें पाठेमें छेद पड जाता हैं, उनोंमेंसें पीप झरता रहता है, तोभी पथर जैसा करडा होता है थोडेही दिनोमें रोगी नाताकत होकर घभरा जाता है आगे वढणेसें सव छेदके आसपासकी चमडी सडकर निकल जाती है, और उस जगे वडा खड्डा पड जाता है, उसमेंसें वदवो मारता पीप तथा मांसका छीछडा निकलते रहता है, पाठा जादा करके एकही होता है, लेकिन् कितनीएक वखत एक मीटे पीछै पासहीमें दुसरा दुसरा मिट कर तीसरा अथवा संगही पांच सात पाठे होता है, पाठा वहोत करके पीठकी करोडपर गरदनपर खंधेपर चूतडोंकी विचली हड्डीपर कभी २ हाथ पैर होठ छाती पेट वगेरे ठिकाणोमेंभी होता है, (इलाज)–१ जुलाव लेकर पेट साफ करे पीछै बुखारकी दवा लेणी २ जलण तथा दुख मिटाणेकूं दशांग लेप गुलावजलका या कपूरके पाणीका या चंदनके पाणीका कपडा धरणा ओपियम और वेलाडोणेका लेप अथवा विलाष्टर मारणा ३ सवसें अच्छा इलाज गहूके आटेकी या अलसीकी पोटिस है, इस पोटिससें पाठा फूटे तो चीरके निकलवाणा नहीं कारण पाठेके रोगसे भई नाताकतीसे रोगी शस्त्रसह नहीं सकता फूटे पीछै व्रणका इलाज करणा गरम पाणीसें हमेस धोणा छींछडे निकाल डालणा ४ टरपेन्टाइन तथा सालिडका तेल अथवा जात्यादि तेलमें रेसेवाला कपडा या लीटकू भिगाकर पाठेकी पोलारमें दवाकर ऊपरसे पोटिस मारणी ५ कारवोलिक एसिड १ ड्राम उसकू २ औंस पाणीमें मिलाकर उसका लोशन पाठेपर धरणा और पाठेकी जमीन जहांतक दीखे तहांतक सादे मलमकी पट्टी मारणी ६ जात्यादि घृत पाठेमें भरणेसें और उसपर दोषघ्न लेपका जाडा थर लगाणेसें

पाठा जलदी आराम होता है ७ पाठेके रोगमें खून साफ करणेवाली तथा दवा ताकत वर पेटमें जरूर लेणा चाहिये.

(भगंदर)–(नवासीर)–(फिश्युलाइनएनो)–गुदा चक्रके आसपास एक वडा-गंभीर व्रण होता है उसकूं भगंदर कहते हैं भगंदर पुराणा भये वाद वहोत वढता है तव वैठकमें दुसरा मूं करता है उस करके भगंदरमेंसें पीपके संग दस्तभी आता है एसा भगंदर मिटता नहीं (इलाज)–गुदा चक्रके आसपास फुणसिंये होय तव लंघन जुलाव वगेरे करणा त्रिफला गूगलका सेवन करणा, पथ्य प्रमेह तथा हरस मुजव करणा रातका भिजाया भया अन्न कचा करडा ठंढा अन्न गरम पदार्थ उंठ घोडेकी सवारी मैथुन ऊकडु वैठणा दिनकूं सोणा तथा कृमि पैदा करणेवाले पदार्थ गुड तैल वैंगण हींग जादा मिरच भगंदरवाला आराम भये वादभी वर्षभर पीछै नहीं करै भगंदर पांच प्रकार होता है, हर किस्ममें फुणसियें फोडे और जखम होते हैं इसके होणेका मूल कारण गरमी सूजाक या अशुद्ध पारेकी दवा खाणा वा जे वखत कृमिरोगसेभी ये हो-जाता है, इस रोगमें दस्तकी दवा लेते रहणा त्रिफला सनाय वगेरे २ फूटे पीछै इसकूं चतुर डाकतरसें चीराणा अथवा आकका दूध इस घावमें भरणा अथवा कोइभी नीला-थोथेका सोरेका गंधकका तेजाव या साजीखार वगेरेसें घावकूं जलाणा या गुल देणा पीछै आइडोफारम वगेरे भरके व्रण भरणेका इलाज करणा ३ निसोत तिल जमालगोटा मजीठ और सींधानिमक घी तथा सहत इन सवोंकों पीस भगंदरपर खूब मसलकर पीछै लेप कर देणा ४ हरडे वहेडा आंवला के रशमें विल्लीकी हड्डी पीस इसीतरे लेप करणा ५ थोहर तथा आकके दूधमें दारूहलदीकूं पीस उसकी वत्ती भगंदरके छेदमें देणा ६ त्रिफला भेंसा गूगल तथा वायविडंगका काढा पीणा ७ वायविडंग त्रिफला और २ भाग पीपर इनोंका चूर्ण सहत तथा तेलमें चाटणा ८ त्रिफला १८ तोला शिलाजीत शुद्ध १८ तोला पीपर १८ तोला इलायची १८ तोला वंशलोचन १८ तोला वायविडंग १८ तोला ९ तोला समवजन वीकानेरकी मिश्री मिलाय दूध तुरतका दुहा भया उसमे डाल तोले दोयकी फक्की दोनों वखत लेणी और पूर्वोक्त पथ्य करे कसरत क्रोध नहीं भारी अन्न खाय नहीं भगंदर निश्चै मिटै.

(नासूर)–(नाडीव्रण)–जखम जव रगोमें प्रवेश करता है, तव नासूर होजाता है नासूरका मूं सांकडा जखम गहरा होता है तथा उसमेंसें पाणी तथा पीप झरते रहता है, (इलाज)–१ त्रिफला गूगल आंवला योगराज गूगल हवा वदलणी (अच्छा पथ्य खुराक) तथा चोकूलिया चीरा दिलाणा सल्फेट ओफ जिंक ३ से ५ ग्रेण पाणी १ औंस पिचकारी लगाणी कास्टिक २ से ३ ग्रेण डिस्टील्ट वोटर १ औंस दोनोंकों मिला पिचकारी देणी ५ टिंकचर आयोडिन १ ड्राम पाणी १ औंस पिचकारी मारणी

५ नासूरका छेद वडा होय तो कास्टीककी अणी नासूरके मूंमे देणी ६ रूपेकी सली सोरेके तेजावमें डवोकर नासूरके छेदमे फेरणेसे किसी वखत नासूर मिट जाता है.

(गूमडा)-(छोटीगांठे)-(वोइल्स)-जादा करके चहरेपर थोडे दरदवाली गांठे संख्यावंध होती है उसकूं गुमडे कहते है वो करडी मटर जैसी जरा आसमानी रंगकी तथा लाल रंगकी होती है, उसमें पीप धीरे २ होता है, और कितनीक जातके गुमडोमें पीप नहीं होकर धीमें २ वैठ जाता है, उसमेंसे जो पीप निकलता है वो विगडा भया होता है, वहोत पित्त प्रकृतिमें तथा पित्तकारक और अवगुणवाला खुराक खाणेसें खून गरम होकर विगड जाता है, तव एसा गडगूमड निकलता है, गरमीकी मोसममें ये जादा निकला करता है, (इलाज)-पित्तशामक दवाइयोंसें खूनकी शांति करणी जैसेके मंजीष्टादिक्काथ चंद्रप्रभा आंवलोंकी वनावटे अमृतवटी वगेरे २ त्रिफला गूगल ३ कंचनार गूगल ४ खैरसार तथा त्रिफलाका काथ ५ नींवकी छालका काथ वाहरका इलाज ६ वडी गांठोंका इलाज इस छोटी गांठोपरभी चलता है जैसेंके शेक पोटिश नस्तर मल्लम पट्टी ७ कोनरूगुंद रसोत रक्तचंदन कपूरकाचरी खापरिया वगेरे रोपण दवायोंका लेप करणा.

(खील)-(व्हिटलो)-अंगलियोंके पेरवेमें कांटे जैसी कोइ वारीक चीज रह जाणेसें वो पक जाती है. और वहोत दरद करती है, (इलाज)-खारेतूवेका फल सिजाकर वांधणा ग्रंथी तथा व्रणका इलाज करणा एक कपडेके मख्खण लगाकर उसपर नोसादर कपूर भुरका कर वांधणा और पाणीकी भीगी पट्टी हरदम रखणेसें फायदा करती है.

(आंजणी)-(स्टाई)-ये दरद जाहिर है, गरम पाणीका शेक करणा सिंदूर लगाणा अथवा सिंदूरवाला लेप चोपडणा सुईकी अणीसे आंजणीकूं फोड डालणी आंजणी का दरद खूनके विगाडसे होता है,वो वेर २ मिटता है, और फेर होजाता है, इसवास्ते खून सुधारणेकी दवा देणी मारवाडमें आंखमें होती जिसकूं गुरांजणी कहते है.

(व्रण)-(चांदी)-(जखम)-(अलसर्स)-जखमसें अथवा दुसरे कारणसें कोईभी जगे पककर फूटता है उसमें जखम अथवा चीरे पडणेसे वो जगे गीली होजाती है उसमेंसें पाणी और पीप झरता है कुष्ट रोग गलत कोड उपदंश और खुजली वगेरे दरदोमेंभी चीरे पडते है व्रणकी वहोत जाति है मुख्य २ इस मुजव (१ नाडीव्रण)-नाडीके संग संवंध रखणेवाला व्रण.

(२ सादाव्रण)-तनदुरस्त अदमीके भया २ जखम.

(३ नाताकत जखम)-जखमका अकूर वडा फीका और उंचा होता है, कोर नीची होती है, पीप पतला पाणी जैसा और जखम धीरे २ रुझता है.

(४ दुष्ट जखम)–विगडा भया वदवो मारता पीप निकलता है सपाटीपर मराहुआ मांसका सडा भया भाग सुपेद या काले रंगका होता है, ये जखम फैलता है.

(५ दाहक व्रण)–जखमके आसपास सूजन अंदर दरद होता है.

(इलाज १)–पहली सोजेका इलाज करणा इसपर लेप पोल्टीस गरम पाणीकी बाफ वगैरे इलाज होता है, पित्तके जलणवाले जखममें दशांग लेप गीला या सूका लगाणा अथवा एसीही दुसरी ठंढी चीजोंका लेप करणा वादी तथा कफके जखममें सोजेमें दोषघ्न लेप छालमें पीसकर करणा अलशीकी गहूंकी थूली या आटेकी या कांदेकी गरम पोल्टिस बांधणी पोस्तके डोडोंके गरम पाणीका शेक करणा वेर २ इसतरे व्रणकूं पकायां पीछे उसकू फोडणेका इलाज करणा शस्त्रका इलाज सबसे अच्छा है क्योंकी इससें विगडा भया दोष जल्दी निकलता है, जो पका व्रण जल्दी नही फूटे तो अंदरका पीप विकार करके खराबी करता है, शस्त्रका पूरा वैद्य नहीं मिले तो फोडणेकी दवा लगाणी जमाल गोटेकी जड चित्रककी जड थोर तथा आकका दुध गुड मिलावा हिराकशी सींधा निमक इनोकों पाणीमें पीस पके भये व्रणपर लेप करणेसें व्रण जल्दी फूट जाता है, हाथीदांतके भूकेकूं पीसके पके भये फोडेपर बूद डालणी साजीखार जवखार वगैरे खार लगाणेसेंभी तैसे (जालका) दारूडीका लेप करणेसें फोडा फूट जाता है.

३ पीछे उसकूं शोधन करणेकी जरूरी है, इसवास्ते फेर फोडेपर शेक तथा पोल्टिस बांधकर पीपकूं बाहर निकाल डालणा तिल मोलेठी नींवके पत्ते दारूहलदी हलदी निशोतकी छाल सींधानिमक पाणीमें पीस घी मिलाकर फूटे व्रणपर लेप करणा अथवा पहली लिखी चार चीजोंका लेप करणा ४ दुष्ट व्रणकूं सुधारणेवास्ते कडवे नीवके पत्ते तिल जमालगोटेकी जड निशोत तथा सींधानिमक इनोंका चूर्ण सहतमें मिलाकर फोडेपर बांधणा उपलसिरीका लेप करणा फकत नींवके पत्ते पीस चिकते फोडेपर बांधणेसें दोष का शोधन होता है, नीलेथोथेके पाणीसे फोडेकूं धोणा अथवा नीलेथोथेकी डली फोडेपर

चार दिन लगाणेसें उसकी दुष्टता दुर होती है, कोनरूगूंदकी गंधे विरोजेकी चत्ती । ि ५ व्रणमें जीव पडे होय तो करंज कडवा नींव तथा संभालूके पत्ते पीस लेप करणा इसमें जरा कपूर मिलाणा लसण पीसके लेप करणा कडवे नींवके पत्ते तथा हिंग पीसके लेप करना कील चुपडणा इन दवायोंसेंफोडेके कीडे निकल जाते हैं, डीकामा लीसेंभी झड जाते हैं, (घावकूं भरणेका इलाज) रसोत दवाणा गेरू दवाणा बोदार (मुरदासंग) घीमें मिलाकर दावणा नीलाथोथा गोपीचंदन तथा गेरु दावणा कत्था तथा सुंखजीरा पीसकर दावणा कत्था ४ भाग हींग १ भाग पीसकर दावणा तिलकी चटणी पीस सहत मिलाकर फटे घाव पर लेप करणा सहत तथा सराप लेप करणा छोटी इलायचीके पत्तोंका लेप करणा काली तुलशीके पत्तोंका लेप करणा पंच वल्कलके

महीन चूर्णकूं पाणीमें पीस लेप करणा जात्यादिघृत तथा जात्यादि तैल (नं० २०२) (२९९) इसकी वत्ती वणाकर घावमें भरणेसें तथा पिचकारी मारणेसें गहरा अंदर गयाभी व्रण भर जाता है, अथवा नाइट्रिक एसिड लगाकर पीछै पोटिस वांधणा जिससे विगडा भया मांस अलग होकर घाव अच्छा होकर जव ठहरता है, तव घाव भरणेकी दवा लगाणेसें भर जाता है आइडोफोर्म कारवोलिक तैल एसिडका मलम अथवा नाइट्रिक एसिड ४ वूंद पाणी १ औंस २ क्लोरलहाइड्रेट १० ग्रेण पाणी १ औंस ३ सल्फेट ओफ झिंक २ ग्रेण पाणी १ औंस (७ व्रणकूं धोणेकी दवा)–दारू हलदीका क्वाथ४मासेका क्वाथ पंचवल्कलका, उकाला नींवका पाणी, त्रिफलोंका पाणी, स्तंभन दवायें, रोपण दवायें कारवोलिक लोशन (नं० ५५०) ५५१ तथा ५५२ का लोशन कोन्डिसफलुइड (नं० ५६९) ८ पेटमें खून साफ करणेकी दवा खाणी चहिये जव घाव नहीं भरे तव गूगल और गूगलकी सव वणावटें अकसीर इलाज है, गूगल व्रण शोधक है, त्रिफला गूगल किशोर गूगल तथा कचनार गूगल ये सव अच्छे है देखो गूगलका वयान.

(गंभीर व्रण)–जो जखम वहोतही गहरा और हड्डीतक पहुंचा होय और भरता नहीं होय उस व्रणमें हड्डी सडी भई प्रायें होती है, (१ इलाज)–गूगल इसपर सर्वोत्तम इलाज हैं, योगराज वगेरे वहोत दिनोंतक साधन कराणा दुष्ट व्रणका एक एसाभी इलाज फायदेवंद सुणा है, पुराणा सो वर्षका दिवालका चूना महीन पीस घीमें मिलाय गंभीरव्रण में भरे तो घाव अच्छा होय २ खैरसारकी उकालीसें इस व्रणकूं धोणा.

(पथर)–(भाठा)–(वेडसोर्स)–वहोत दिन वेमारी रहणेसें रोगीकी पीठमें पत्थर जैसें होते हैं पहली लाल चांदी गिरती है और पीछेसे वो भाग सडकर गलता है, (इलाज)–कोयलेके भूकेकी पोटिस मारकर भाठेका सडा भया भाग अलग करणा एरंडीका तेल लगाणा अथवा इसका पोता धरणा २ वोटरड्रेसिंग (नं० ५४०) ३ कारवोलिक लोशन १ भाग कारवोलिक एसिड और ४० भाग पाणीसे धोणा उसपर आयडोफोर्म भुरका कर कारवोलिक तेल धरणा एक तरफ विछोनेमें वहोत दिन पडे रहणेसें शरीरका जो जो भाग दवे रहता है, उसमेंसें स्पर्शज्ञान कम होता है, उस करके भाठा पडता है, उहांतक तो वेमारकूं मालम नहीं पडता इसवास्ते एसे वेमारकी हरवखत दरियाप्त करणी फेर एसे दवे भये घसाते भये भागोकूं हमेस दो वखत फिटकडीके पाणीसे धोणा जिससें चमडी करडी होजावे.

(गुदभ्रंस)–(कांच)–(प्रोलेप्ससईनएनी)–गुदाके अंदरका भाग वाहिर निकलता है, नाताकत आदमियोंके नाताकत वचोंके कांच निकलती है, दस्तोंकी वेमारीमें वेर२ करांजणेसे आमण निकलती है, (इलाज)–कांच वहोत करके आपहीसे अंदर चली जाती है, अथवा वेमार आपही दाबकर अंदर दाखल कर सकता है, कांचपर

तेल लगाकर उसपर एक कपडेका टुकडा धरकर अंगुठेसे दबाकर अंदर डाल देणी हरस पथरी मूत्रग्रंथी वगेरे जो कारण होय उसका इलाज करणा २ गऊका गौबर गरम कर उसका सेक करणा ३ खट्टी वस्तुओंसें सिद्ध करा मया घी चुपडणा ४ भंगकी लुगदी वांधणी ५ हीराकसी १ से २ रत्ती तीन तोला जलमें मिलाकर उसकी पिचकारी लेणी अथवा उससे कांच धोणी तब सुकड कर बैठ जाती है, ६ गहूंके आटेमें अच्छीतरे घीका मोण देकर उसका शेक करणा ७ जामुनकी छालकी उकाली छांटणा.

(कूब)-(हम्प)-करोडकी हड्डी वांकी होती है, उसकूं कूब कहते हैं, ये तीन तरेकी है अगली १ पिछली २ बाजूकी ३, (इलाज)-योगराज गूगल.

(अंत्रवृद्धि)-(सारण)-(हर्निया)-पेटके पडदेके छेदोके रस्ते आंतरा जांघकी जडमें ऊतर आवे इसके सिवाय आंतरे वृषणकी कोथलीमें उतरता है, तैसेंइ नाभिके छेदके रस्ते पेटके ऊपर चढ आता है, उसकूंभी कितनेक सारण कहते है, निश्चै देखणेसें वृषणके आंतरोकों अंतर्गल और नाभिपर चढे भये आंतरोंकों द्वंडा एसी जुदी२ संज्ञासे पहिचानते हैं, (इलाज)-आंतरे नीचे नहीं उतरे इसवास्ते कमर पट्टा आता हैं वो बांधणा २ आंत उतरे तो नवसादरका पोता धरणा तो संकुडा कर चढता है.

(अंडवृद्धि)-(हाइड्रोसील)-(कारण)-सोजेसे जल भरणेसें खूनके भरणेसें गांठ होणेसें नस फूलणेसें कोथलीकी चमडी जाडी होणेसें आंतरा उतरणा वगेरे बहोतसे कारणोसें आंड वढकर वडे होते हैं देशी वैद्यकमें इन सब रोगोंकूं वृद्धि कहते हैं अंग्रेजीमे इन सबोंका नाम जुदा२ है, सो लिखते हैं,

(आंडोंकावरम)-(ओरकाईटीस)-वृषणवडे उसमें बहोत दरद थोडा बुखार उलटी (इलाज)-१ कोथलीकूं गद्दीके आसरेसें अथवा पट्टेसें अधर रखणी गरम पाणी का सेक और बेलाडोनाका लेप २ रेचक तथा पसीनेवाली दवा देणी दोपन्न लेप जल्दी उतारता है,५ जीर्णवरममें पारेका मलम लगाणा ६ सेलारस तथा तमाखूका पत्ता बांधण रालके लेपकी आडी खडी पट्टी मार उसपर लंगोटी मारणी.

(जलवृद्धि)-(हाइड्रोसील)-वृषणकी कोथलीके आसपासके रस पुडतमें पाणी भर जाता है, इस तरे पाणी भरणेसें वढते हैं छोटे बच्चोंके जो नल वढते हैं, उसमेंभी यही कारण है (इलाज) एरांडी तेलके जुलाबसे साधारण नलवृद्धि मिटती है २ डाकतर लोक पाणी नस्तरसें निकालकर पिचकारी फेर एसीभी देते हैं सोफेर पाणी नहीं भरता ३ एसा सुणा है की पंजेवाली योरके कांटे छीलके उसकूं गरम जलमें सीज कर बांधणेसें चमडीमेंसें पाणी झर२ निकल जाता है, फेर कपडेपर मखण लगाव नोसादर भुरका कर पट्टी बांधणी फेर फिटकडी या मांजूफल हरडे इत्यादि भुरका जिससे घाव सूक जाता है, काली तमाखूके पत्ते बांधणेसें उलटी होकर कम पडजाता

(रक्तजन्यवृद्धि)-(हिमोटोसील)-रस पुडतमें खून भर जाता है, वृषणमें कुछभी तकलीप पोहचणेसें एकाएक नल नारंगी जितना होजाता है, अंदर खून झरणेसेंभी रक्त-वृद्धि होती है, ये वृद्धि पाणीकी वृद्धिसेंभी जादा कष्टदायक होती है, (इलाज)-१ ठंढे पाणीका या नवसादरका पोता धरणा २ जुलावकी दवा देणी ३ खून जम जाय तो कोथली चीराकर निकलाणा.

(शिरावृद्धि)-(वेरीकोशील)-शिरा याने रगें फूलणेसें वृषणका कद वडा होता है-वृषणकी शिकल आंडोंकी तरफ तो वडा और पेटकी तरफ संकडा होता है-थेलीमें क्रमियां भरी होय एसा मालम देता है, सूणेसें तथा दावणेसें कदमेंकम होता है, और खडे रहणेसे फेर भर जाता है हवा भरणेसे ये रोग होता है लंगोट या काछिया बांधणा.

(वृषणकी गांठ)-(सारकोसील)-गरमी सुजाक वगेरे शारीरक वेमारीसे नलोंकी गांठ वधकर नींवू जैसी करडी होती है, गरमी सुजाक भये पीछै वहोत दिन पीछै नलोमें गांठ होती है इसवास्ते सुजाक गरमी मिटै एसा इलाज करणा राजलका लेप लगाणा दोपन्न लेप लगाणा वहोत मुदत भये पीछै इलाज लगेगा नहीं.

(कोथलीकी वृद्धि)-(एलीफन्टायासीस)-इस वेमारीमें गोलीकूं कुछ इजा नहीं होती लेकिन् कोथली जाडी होती है, और उसमें वरम होकर वधते २कितनीएक वखत इहांतक वढती है, सो खडे रहे अदमीकी कोथली जमीनतक पहुंचती है, और वजनमें ५० से सो रतल तकको होती है, (वृद्धिका सामान्य इलाज)-१ एरंडीका तेल सबसे अच्छा इलाज है दूधमें मिलाकर एक महीनेतक पीणा २ एरडी तेल गूगल गोमूत्रका सेवन करणेसें वहोत दिनोंतक, तो नल वढणा मिटता है, ३ ठंडा लेप और जोक लगाणेसें पित्त और खून भरणेका नल वढता मिटता है, तीखे तथा गरम लेपोसें सेक तथा बांधणेसें रसवृद्धि तथा मेदवृद्धिका नल मिटता है, ४ रास्नादि क्वाथ और योगराज गूगलका साधन अंत्रवृद्धि तथा वायु संबंधी नलका रोग मिटाता है,५कडवे तूंबकी जडके क्वाथमें एरंडी तेल तथा दूध डाल पीणेसें सब तरेका नलवृद्धिका रोग मिटता है, ६ वच तथा सरसूका लेप करणा अथवा सहजणेकी छाल और सरसूंका लेप करणा, ७ दोपन्न लेप सबमें फायदेवंद है.

(जलणा)-(वर्न्सएन्डस्कोल्डस)-(दाझणा)-दाझणेकी और जलणेकी वदनपर जखमकी तरे असर होती है, १ जलाणेवाली गरम चीजके थोडे स्पर्शसें चमडी लाल होती है, और जलती है, २ जादा जलणेसें फफोला उठता है, ३ और सख्त जलणेसें ऊपरकी चमडी तैसें अंदरके पुडतकाभी नाश होजाता है चमडी विलकुल स्याह होजाती है, (इलाज)-कपडे जलणे लगै तव दोडणेके वदले जमीनपर सोकरके शरीरकूं जमीनके संग अथवा पासमें पडी चीजके संग घसणा जिससें भडका वंध होगा जलेगा नहीं

तेल लगाकर उसपर एक कपडेका टुकडा धरकर अंगुठेसे दवाकर अंदर डाल देणी हरस पथरी मूत्रग्रंथी वगेरे जो कारण होय उसका इलाज करणा २ गऊका गौबर गरम कर उसका सेक करणा ३ खट्टी वस्तुओंसें सिद्ध करा भया घी चुपडणा ४ भंगकी लुगदी वांधणी ५ हीराकसी १ से २ रत्ती तीन तोला जलमें मिलाकर उसकी पिचकारी लेणी अथवा उससे कांच धोणी तव सुकड कर बैठ जाती है, ६ गहूंके आटेमें अच्छीतरे घीका मोण देकर उसका शेक करणा ७ जामुनकी छालकी उकाली छांटणा.

(कूव)–(हम्प)–करोडकी हड्डी वांकी होती है, उसकूं कूब कहते हैं, ये तीन तरेकी है अगली १ पिछली २ बाजूकी ३, (इलाज)–योगराज गूगल.

(अंत्रवृद्धि)–(सारण)–(हर्निया)–पेटके पडदेके छेदोके रस्ते आंतरा जांघकी जडमें ऊतर आवे इसके सिवाय आंतरे वृषणकी कोथलीमें उतरता है, तैसेंइ नाभिके छेदके रस्ते पेटके ऊपर चढ आता है, उसकूंभी कितनेक सारण कहते है, निश्चै देखणेसें वृषणके आंतरोकों अंतर्गल और नाभिपर चढे भये आंतरोंकों ट्रंडा एसी जुदी२ संज्ञासे पहिचानते हैं, (इलाज)–आंतरे नीचे नहीं उतरे इसवास्ते कमर पट्टा आता हैं वो वांधणा २ आंत उतरे तो नवसादरका पोता धरणा तो संकुडा कर चढता है.

(अंडवृद्धि)–(हाइड्रोसील)–(कारण)–सोजेसे जल भरणेसें खूनके भरणेसें गांठ होणेसें नस फूलणेसें कोथलीकी चमडी जाडी होणेसें आंतरा उतरणा वगेरे बहोतसे कारणोसें आंड वढकर वडे होते हैं देशी वैद्यकमें इन सब रोगोंकूं वृद्धि कहते हैं अंग्रेजीमे इन सबोंका नाम जुदा२ है, सो लिखते हैं,

(आंडोंकावरम)–(ओरकाईटीस)–वृषणवडे उसमें बहोत दरद थोडा बुखार उलटी (इलाज)–१ कोथलीकूं गद्दीके आसरेसें अथवा पट्टेसें अधर रखणी गरम पाणी का सेक और बेलाडोनाका लेप २ रेचक तथा पसीनेवाली दवा देणी दोपन्न लेप जल्दी उतारता है, ५ जीर्णवरममें पारेका मलम लगाणा ६ सेलारस तथा तमाखूका पत्ता वांधण रालके लेपकी आडी खडी पट्टी मार उसपर लंगोटी मारणी.

(जलवृद्धि)–(हाइड्रोसील)–वृषणकी कोथलीके आसपासके रस पुडतमें पाणी भर जाता है, इस तरे पाणी भरणेसें वढते हैं छोटे बच्चोंके जो नल वढते हैं, उसमेंभी यही कारण है (इलाज) एरांडी तेलके जुलाबसे साधारण नलवृद्धि मिटती है २ डाकतर लोक पाणी नस्तरसें निकालकर पिचकारी फेर एसीभी देते हैं सोफेर पाणी नहीं भरता ३ एसा सुणा है की पंजेवाली थोरके कांटे छीलके उसकूं गरम जलमें सीज कर वांधणेसें चमडीमेंसें पाणी झर२ निकल जाता है, फेर कपडेपर मखण लगाव नोसादर भुरका कर पट्टी वांधणी फेर फिटकडी या मांजूफल हरडे इत्यादि भुरका त्रिफलेसे वाव सूक जाता है, काली तमाखूके पत्ते वांधणेसें उलटी होकर कम पडजाता

(रक्तजन्यवृद्धि)–(हिमोटोसील)–रस पुडतमें खून भर जाता है, वृषणमें कुछभी तकलीप पोहचणेसें एकाएक नल नारंगी जितना होजाता है, अंदर खून झरणेसेंभी रक्त-वृद्धि होती है, ये वृद्धि पाणीकी वृद्धिसेंभी जादा कष्टदायक होती है, (इलाज)–१ ठंढे पाणीका या नवसादरका पोता धरणा २ जुलाबकी दवा देणी ३ खून जम जाय तो कोथली चीराकर निकलाणा.

(शिरावृद्धि)–(वेरीकोशील)–शिरा याने रगें फूलणेसें वृषणका कद वडा होता है–वृषणकी शिकल आंडोंकी तरफ तो वडा और पेटकी तरफ संकडा होता है–थेलीमें क्रमियां भरी होय एसा मालम देता है, सूणेसें तथा दाबणेसें कदमेंकम होता है, और खडे रहणेसे फेर भर जाता है हवा भरणेसे ये रोग होता है लंगोट या काछिया बांधणा.

(वृषणकी गांठ)–(सारकोसील)–गरमी सुजाक वगेरे शारीरक बेमारीसे नलोंकी गांठ बधकर नींबू जैसी करडी होती है, गरमी सुजाक भये पीछै बहोत दिन पीछै नलोमें गांठ होती है इसवास्ते सुजाक गरमी मिटै एसा इलाज करणा राजलका लेप लगाणा दोपन्न लेप लगाणा बहोत मुदत भये पीछै इलाज लगेगा नहीं.

(कोथलीकी वृद्धि)–(एलीफन्टायासीस)–इस बेमारीमें गोलीकूं कुछ इजा नहीं होती लेकिन् कोथली जाडी होती है, और उसमें वरम होकर बधते २कितनीएक वखत इहांतक वढती है, सो खडे रहे अदमीकी कोथली जमीनतक पहुंचती है, और वजनमें ५० से सो रतल तककी होती है, (वृद्धिका सामान्य इलाज)–१ एरंडीका तेल सबसे अच्छा इलाज है दूधमें मिलाकर एक महीनेतक पीणा २ एरडी तेल गूगल गोमू-त्रका सेवन करणेसें बहोत दिनोंतक, तो नल वढणा मिटता है, ३ ठंडा लेप और जोक लगाणेसें पित्त और खून भरणेका नल वढता मिटता है, तीखे तथा गरम लेपोंसें सेक तथा बांधणेसें रसवृद्धि तथा मेदवृद्धिका नल मिटता है, ४ रास्नादि काथ और योग-राज गूगलका साधन अंत्रवृद्धि तथा वायु संबंधी नलका रोग मिटाता है,५कडवे तूंबकी जडके काथमें एरंडी तेल तथा दूध डाल पीणेसें सब तरेका नलवृद्धिका रोग मिटता है, ६ वच तथा सरसूका लेप करणा अथवा सहजणेकी छाल और सरसूंका लेप करणा, ७ दोपन्न लेप सबमें फायदेबंद है.

(जलणा)–(वर्न्सएन्डस्कोल्डस)–(दाझणा)–दाझणेकी और जलणेकी वदन-पर जखमकी तरे असर होती है, १ जलाणेवाली गरम चीजके थोडे स्पर्शसें चमडी लाल होती है, और जलती है, २ जादा जलणेसे फफोला उठता है, ३ और सख्त जलणेसें ऊपरकी चमडी तैसें अंदरके पुडतकाभी नाश होजाता है चमडी बिलकुल स्याह होजाती है, (इलाज)–कपडे जलणे लगे तब दोडणेके बदले जमीनपर सोकरके शरीरकूं जमी-नके संग अथवा पासमें पडी चीजके संग घसणा जिससें नडका बंध होगा जलेगा नहीं

और मलम पट्टीकेवास्ते मगरूरी रखते होय तो वेलाशक रखै लेकिन् उसमें मुख्य कारी-गरी निर्माण नाम कर्म कुदरतकी है, अदमीकी हाथ चलाकी और चतुराई फकत हड्डीकूं ठेकाणेपर बैठा देणेमें काम देती है, और पीछै हड्डी सांधणेका काम कुदरतसे याने स्वभाव वगेरे सववायोंसें आपही होजाता है, इसमें पुरुषकृत उद्यम समवाय इतना काम जरूर देता है, हड्डीके टूटे भये दो टुकडे जोडे पीछै रोगीने इतनी सावधानी रखणीके जहांतक टूटा भया अवयव संधी जे उहांतक जराभी हिलाणा नही इस टूटे भयेकूं सांध मिलाणेमें पट्टा प्रमुख बांधणेसें इसबातका अनुभवी वैद्य डाकदरोंकी सला लेणी उनोंसेही बंधाणा, (इलाज)-(१ न० ३१८) वाला लेप २ सोवेरके धोये भये घीमें चावलोंका आटा मिलाकर उसका लेप करणा ३ मैदा लकडीका चूर्ण या सादडकूं दूधमें पीणा ४ लसण सहत और पीपलकी लाख घी सक्करसे चाटणा ५ गहूंके आटेका घी गुड मिला हलवा हमेश खाणा.

(लचक)-(किचरीजणा)-(स्फईन)-शरीरका कोईभी भागकूं कुछ इजा होती है, तब उस जगे खून जमणेसें सोजन तथा दरद होता है, (इलाज)-अशा-लेयेका लेप २ आंबा हलदी साजीखार तथा मैदा लकडीका लेप ३ बांबूलके पत्ते बा-फकर बांधणा ४ ब्रांडी स्पिरिट वगेरेका भीगा कपडा धरणा ५ ईस सयाने कोनरू गूंदका लेप ६ डाकदर लोक मुरगीके इंडोके छिलकोंका लेप कराया करते हैं, ७ गूगलका लेप ८ ओपियम लीनीमेन्ट लचकवाले सांधेकूं मजबूत पट्टेमें लपेटणा ९ लचक पुराणा भये पीछै उसपर तेल लगाकर अच्छीतरे सेक करणा १० टिंकचर आयोडीन लगाणा.

(चोट)-(कन्टयुशन)-चमडीपर जखम पडे विगर शरीरका कोइभी भाग किचरीजै अथवा पछाडीजै अथवा मार पडै तब उसपर ठंडा लोशन लगाणा १ भाग स्पिरिट ८ भाग पाणी उसका पोता धरणा २ सोजन तथा दरद होय तो सेक करणा लचकका सब इलाज इसपर करणा सूजी भई जगा पकती मालम दे तो पकाणेका इलाज कर फूटे बाद घाव भरणेका इलाज करणा.

(धोरीरगका कटणा)-जखम होणेसें हर शस्त्रसें जब धोरीनस कट जाती है, तब उसमेंसें चिरमी जैसा लाल खूनकी धार शीर फूटती है इस धार अथवा शीरका जल्दी अटकणा नहीं होय तो रोगीका चेहरा फीका होते जाता है, नाडी नाताकत पडते जाती है, चक्कर आता है, और आखर बेहोस होकर मर जाता है, (इलाज)-छोटी नस होय तो फक्त ठंडा पाणी डालणेसें बंध होजाती हैं अथवा ठंडा पाणीमें भिगाया भया कपडा जखमपर धरणा जो पाणीसे बंध नहीं होय तो फिटकडी अथवा मांजू फलका पाणी या फुकणी जखमपर दबाणा ३ टिंकचर ओफ स्टीलमें कपडा भिगाकर कटीनई नसपर धरणा अथवा कास्टिककी अणी नसके मूंपर लगाणी खून तुरत बंध होगा ४ नसपर दाबणेसें

अगर जो पास जल होय तो ऊपर डालणा, २ पीछै वेमारकूं विछोणेमें सुलाणा और वहोत इजा भई होय तो उसकूं सतेज करणेवास्ते गरम काफी अथवा पाणी पिलाणा डाकतर लोक ब्रांडी पिलाते हैं, ३ जले भये भागके ऊपरका कपडा फाडकर निकाल डालणा लेकिन् जली भई चमडीकूं अलग करणी नहीं ४ पीछै टरपेन्टाइन अथवा स्पीरिट वाइन अथवा केरोसीन (घासलेड) अथवा ब्रांडी और सम वजन पाणी अलशीका तेल घी अथवा तिलीका तेल और चूनेका नितरा भया पाणी इनोके अंदरका कोई भी पतला पदार्थमें महीन कपडा भिगाकर दाझे भये भागपर धरणा और कपडा तर रखणेकूं वोही पतला पदार्थ सींचते जाणा ५ ये चीजों तुरत नहीं मिल सके तो जले भये भागपर चावलका या गहूंका महीन आटा जखम ढक जाय तहांतक जाडा थर करके दाबणा इस आटेका पापडा जमकर आपही खरूंट लेकर उतरता है, लेकिन् जो कभी पीप पड जाय तो पापडा उतार धीरेसे जखमकू धोकर सादे मलमकी पट्टी मारणी फफोले उठें होय तो सुईसें फोड पाणी निकाल डालणा लेकिन् चमडी उखेलणी नहीं इस जलणे या दाझणेपर इतना खयाल जरूर रखणा सो ठंढा पाणी या ठंढा इलाज कभी करणा नहीं नुकशान करता है, इहांतककी वाहरकी हवाभी उसके अंदर नहीं घुसणे पावे उस जली भई जगाकूं थोडी देरभी खुला रखणा नहीं.

(जखम)-(वुन्ड)-तलवार छुरी वगेरे कोईभी हथियार लगणेसे चमडीका कोईभी भाग कट जाता है, (इलाज)-पहली तो वहते खूनकूं वंध करणा इसकी जरूरी है, रक्त स्तंभक दवा पृष्ठ (२९२) का पाणी डालणा अथवा उनोंका चूर्ण दाबणा ३ निमकके पाणीका पट्टा वांधणा, ४ इकेला पाणी डालणेसे खूनकी नली दाबणेसे अथवा वांधणेसें जखमका खून वंध होता है, वडे जखमोंके शस्त्रवैद्य हैं सो टांके देकर सांधते हैं, वडे जखमकी दोनुं कोरें जव एकठी मिलती है तभी उसमें भराव आता है, ५ पट्टा वांधणेसे जखम मिल जाता है, ५ रालके पलाष्टरकी पट्टी मारकर जखमके नाके एक जगे करणा एक वेर धोकर साफ करे पीछे जखमपर वेर२पाणी डालणा ६ भराव लाणेकूं तेलका पट्टा वांधणा और तेलही सींचते जाणा ७ कारवोलिक दशगुणा तिलीका तेल मिलाकर उसकी पट्टियें लगाणी दो दो दिनसें वदलणा ७ वोरासिक एसिड एक द्राममें एक औंस सादा मलम मिलाकर पट्टी लगाणी जल्दी भरणेके वास्ते उसमें आयडोफोर्म मिलाणा (पका भया जखम)-९ पोटिस वांधणा हमेम एक दफे कारवोलिक लोशनसें धोणा एक भाग कारवोलिक एसिड धोणेवालेमें ४० गुणा जल मिलाणा.

(हड्डीका टूटणा)-(फ्रेक्चर)-हड्डी सांधणेका कुदरती काम जैसा अंदरकी शक्ति करती है ऐसा आदमी नहीं कर सकता हड्डी जोडणेवाले वैद्य जरर और डाकदर लो

और मलम पट्टीकेवास्ते मगरूरी रखते होय तो वेलाशक रखै लेकिन् उसमें मुख्य कारीगरी निर्माण नाम कर्म कुदरतकी है, अदमीकी हाथ चलाकी और चतुराई फकत हड्डीकूं ठिकाणेपर बैठा देणेमें काम देती है, और पीछै हड्डी सांधणेका काम कुदरतसे याने स्वभाव वगेरे सववायोंसें आपही होजाता है, इसमें पुरुषकृत उद्यम समवाय इतना काम जरूर देता है, हड्डीके टूटे भये दो टुकडे जोडे पीछै रोगीने इतनी सावधानी रखणीके जहांतक टूटा भया अवयव संधी जे उहांतक जराभी हिलाणा नही इस टूटे भयेकूं सांध मिलाणेमें पट्टा प्रमुख बांधणेसें इसबातका अनुभवी वैद्य डाकदरोंकी सला लेणी उनोंसेही बंधाणा, (इलाज)-(१ नं० ३१८) वाला लेप २ सोवेरके धोये भये घीमे चावलोंका आटा मिलाकर उसका लेप करणा ३ मैदा लकडीका चूर्ण या सादडकूं दूधमें पीणा ४ लसण सहत और पीपलकी लाख घी सक्करसे चाटणा ५ गहूंके आटेका घी गुड मिला हलवा हमेश खाणा.

(लचक)-(किचरीजणा)-(स्फईन)-शरीरका कोईभी भागकूं कुछ इजा होती है, तब उस जगे खून जमणेसें सोजन तथा दरद होता है, (इलाज)-अशालियेका लेप २ आंबा हलदी साजीखार तथा मैदा लकडीका लेप ३ बांबूलके पत्ते वाफकर बांधणा ४ ब्रांडी स्पिरिट वगेरेका भीगा कपडा धरणा ५ ईस सयाने कोनरू गूंदका लेप ६ डाकदर लोक मुरगीके इंडोके छिलकोंका लेप कराया करते हैं, ७ गूगलका लेप ८ ओपियम लीनीमेन्ट लचकवाले सांधेकूं मजबूत पट्टेमें लपेटणा ९ लचक पुराणा भये पीछै उसपर तेल लगाकर अच्छीतरे सेक करणा १० टिंकचर आयोडीन लगाणा.

(चोट)-(कन्टयुशन)-चमडीपर जखम पडे विगर शरीरका कोइभी भाग किचरीजै अथवा पछाडीजै अथवा मार पडै तब उसपर ठंढा लोशन लगाणा १ भाग स्पिरिट ८ भाग पाणी उसका पोता धरणा २ सोजन तथा दरद होय तो सेक करणा लचकका सब इलाज इसपर करणा सूजी भई जगा पकती मालम दे तो पकाणेका इलाज कर फूटे बाद घाव भरणेका इलाज करणा.

(धोरीरगका कटणा)-जखम होणेसें हर शखसें जब धोरीनस कट जाती है, तब उसमेंसें चिरमी जैसा लाल खूनकी धार शीर फूटती है इस धार अथवा शीरका जल्दी अटकणा नहीं होय तो रोगीका चेहरा फीका होते जाता है, नाडी नाताकत पडते जाती है, चक्कर आता है, और आखर बेहोस होकर मर जाता है, (इलाज)-छोटी नस होय तो फक्त ठंडा पाणी डालणेसें बंध होजाती हैं अथवा ठंडा पाणीमें भिगाया भया कपडा जखमपर धरणा जो पाणीसे बंध नहीं होय तो फिटकडी अथवा मांजू फलका पाणी या बुकणी जखमपर दबाणा ३ टिंकचर ओफ स्टीलमें कपडा भिगाकर कटीभई नसपर धरणा अथवा कास्टिककी अणी नसके मूंपर लगाणी खून तुरत बंध होगा ४ नसपर दाबणेसें

अथवा जहां कटा होय उसके ऊपरके भागमें कसके डोरी बांधणेसेंभी खून बंध होजाता है, ५ धोरीरग वडी होय और ऊपरके इलाजोसें खून बंध नहीं होता होय तो डाक-दर जहांतक आकर नहीं पहुंचे तहांतक ऊपर लिखे इलाज करणा नसपर बांधणा और दबाणा इस बातोंकों भूलणा नहीं कटी भई नसपर सखत गद्दी धरकर जोरसें पट्टा बांध-णेसें जल्दीके वास्ते खून बंध हो जायगा, ६ योग्य इलाज होणेके पहली खून बहोत निकल गया होय उस करके अदमी बहोत नाताकत होकर बेहोस होगया होय तथा नाडी हाथ नहीं लगती होय तब डाकतर लोक ब्रांडी पाणीमें मिलाकर देते हैं, अथवा पोर्टवाइन या द्राक्षासव देतें हैं, साल बोलेटाल बूंद ४० सें ६० तक थोडे जलमें मिलाकर पिलाणा इस करके नाडी अगर तेज नहीं होय तो फेर पिलाणा ७ शीरा दूध मिली चावलोंकी कांजी वगेरे अच्छा पौष्टिक खुराक और सूता रखणा.

(पाणीमें डूबणा)-(डाउनिंग)-पाणीमें डूबणेसें गलेमें फासी खाणेसें और प्राण-वायु बिगरकी खराब हवा श्वासमें लेणेसे श्वास रुककर अदमी गुंगलाकर मरता है, एसे अकस्मातोंमें कृत्रिम श्वासोश्वासकी क्रिया चलती करणेकूं बिलकुल देरी करणी नहीं पाणीमें डूबे भये अदमीके भीगे कपडे निकाल उसका शरीर पूंछणेका काम किसी दुसरे अदमीकूं सोंप पासमें खडे भये चालाक अदमीनें डूबे भये अदमीका श्वासोश्वास चलता करणेकी क्रिया सरू कर देणी जलदी डाकतरकूं बोलाणा तथा कंबल और सूके कपडे मंगाणे अदमियोंकों दोडाणा डूबे भये अदमीके इलाज करणेमें दो बातका खयाल जरूर रखणा. पहली तो श्वासोश्वास शरू कर देणा और श्वासोश्वास सरू भयाके बदनमें गरमी लाणी तथा खून फिरणेकी क्रिया सरू कर देणी.

(श्वासोश्वासकी क्रिया चलती करणेकी विधि)-१ श्वास नलीमें हवा आणे देणेकूं मूं तथा नसकोरे साफ करणा मू खुला करणा जीभकूं बाहर खेंचणा जीभ तथा हेड-बीचमें चिपिया अथवा चीकणी पट्टी लगाकर जीभकूं बाहर रखणी छाती तथा पेटपर तंग कपडा दूर करणा २ बेमारकूं अच्छी तरे सुलाणेकेवास्ते सीधी जमीनपर चित्ता सुलाणा और छातीके तरफका जरा भाग उंचा रखणा शिर तथा खंभोंके नीचे कपडा या गूदडेका बीटा देणा ३ श्वासकी क्रिया चलाणेकूं क्रिया करणेवालेनें शिरके आगे बैठके बेमारके हाथ कोणीके ऊपरसे पकडणा और धीमेसें लेकिन चालाकीसे उचकरकर शिरतक लाणा फक्त दो सेकडेतक गिणती होय तहांतक रखकर पीछा वो हाथ छातीकी तरफ लाकर बेमारके छातीके संग धीमेसें और मजबूतीसें दाबणा इस तरे डूबे भयेके हाथ छातीसे शिरके संग और शिरसे छातीके संग बर२ लेणा वो एसा जल-दीसें के ये क्रिया १ मिंटमें १६ वखत होय और बेमार स्वाभाविक रीतसें श्वास लेता

मालम पडै तब ये कृत्रिम क्रिया छोड देकर उसके शरीरमें गरमी लाणेकी क्रिया नीचेमुजब करणी.

(गरमी लाणी तथा खूनका फिराणा)–बेमारकूं धावलेमें या कंबलमें लपेटणा और उसका हाथ पैर नीचेसे दबाणा गरम फलालीन गरम पाणीकी शीशीका शेक गरम पाणीका कपडेका शेक गरम इंटोंका शेक इनके अंदरसे जो मिले उससे कोडीपर खंधे जांघ और पेरोकै तलियोंपर शेक करणा श्वास सरू भये पीछै गरम जल और सराप ब्रांडी तथा पाणी डाकदर लोक देते हैं, काफीका एक चमचा पिलाणा बेमारकूं नींद आवै तो लेणे देणा श्वासोश्वास फेर बंध होता मालम दे तो छातीपर और बगलके नीचै राईका पलाष्टर मारणा.

(मोतके निशाण)–पाणीमें डूबा भया आदमी मर गया होगा तो उसमें श्वास अथवा रक्ताशयकी क्रिया बंध मालम दैगा आंखोंके पडदे आधे मिच जाते हैं, आंखोंकी कीकी चोडी होती है, जबाडे करडे और टेढे होजाते हैं, अंगलियें आधी परधी छोटी पड जाती है.

(रक्तश्राव)–(ब्लीडींग)–शरीरके जुदे२ भागमेंसे खून गिरता है, उसकूं रक्त-पित्त देशी वैद्यकमें लिखा है, (देखो पृष्ठ ४५२) १ नाकमेंसें खून गिरणा देखो पृष्ठ (६००) २ जोकके डंकमेंसें खून गिरणा उसकूं बंध करणा चहिये, (इलाज)–ठंढा जल अंगली धरकर दबाणा फिटकडीका बूका दबाणा स्पिरिट वाइनमें डुबा भया कपडा डंकपर दबाके धरणा कास्टिकके अणीका डंकपर स्पर्श करणा (३ दांतमेंसें खून गिरणा)–दांत निकलवाणेसेंगिरणेसे चोट लगणेसें बहुत खून गिरता हैं, (इलाज)–लींटका अथवा नरम कपडेका एक गोटा दांतमें रखकर दांत भीड देणा शिर तथा दाढीकूं एक बंधनसें जकड देणा जिस करके मूं खुल नहीं सके इसतरे कितनेक घंटोंतक दोनों दांतोंके बीचमें वो कपडा दबा रहणेसें खून गिरते बंध होजाता है, (४ अंदरका खून गिरणा)–अंदरके खून नलियोंको इजा पहुंचणेसें या दरद होणेसें शरीरके अंदरके मर्म स्थानोंमेंसें खून झरता है, जैसें कफके संग खून पडै तब समझणाके फेफसेमें रक्तश्राव भया है, इसीतरे उलटीमें खून पडणेसें होजरीमें रक्तश्राव जाणना दस्तमें खून गिरे तो आंतरोंमें जाणना और पेशाबमें खून पडे तो मूत्राशयमें रक्तश्राव जाणना शिरकी खोपरीमें और मगजमेंभी रक्तश्राव होता है, इस सब तरेके खूनके झरणेमें रक्त पित्त रोगमें लिखे इलाज करणा.

(फफोला)–(विलस्टर्स)–चमडीके ऊपरके नीचेके पुडतके बीचमें पाणी भरके फफोला उठता है, उसकूं ब्लिस्टर कहते हैं,)–जोकोंके डंकसे अथवा दाहकारक जहरी वस्तूका लेप मारणेसें विलस्टर उठता है, बहोत छोटे फफोले इलाज करे बिगरनी सूक

जाते हैं, वडे फफोले हथियारकी अणीसें या सूईसे फोड जल निकाल डालणा लेकिन फफोलेकी सुपेद चमडीकूं निकालणी नहीं उसपर हमेस मलम पट्टी लगाणी और उसपर कोइ इजा या दबाव होणे नहीं देणा.

(वाहरका पदार्थ अंदर चले जाणा)–(फोरेलवोडीश)–नाक आंख कान वगेरोमें किसी२ वखत वाहरकी केइएक वस्तु अकस्मात् भर जाती है, तव अदमी वहोत दोडादोडी करते हैं विचारते हैं अव ये चीज डाक्टर विगर किसीतरे नहीं निकलेगी से निकालणेकी तजवीज लिखते हैं–(१ नाकमें गई चीज)–छोटे वच्चे खेलते२ नाकमें वाल चिरमी चिणे स्लेट पेनका कपडा पत्थरका टुकडा चोअन्नी पाई वगेरे वस्तु नाकके नसकोरोंमें डाल देते हैं. अथवा उडता जीव घुस जाता है, (इलाज)–एक नसकोरेकूं दवाकर दुसरे नसकोरेकूं जोरसे सिणकणा २ छींक लाणेकूं तमाखू वगेरेकी नास देणी ३ गरम पाणीसें नाकमें पिचकारी लगाणी ४ इस इलाजोंसें नहीं निकले तो राई तथा गरम पाणी पिलाकर उलटी कराणी और उलटी होते वखत मूंकूं हाथसे वंध करणा याने उलटीका वेग मूंसे निकलणेवाला नाकसे निकालती वखत नाकमें गये चीजकों वाहिर निकाल डालती है, ५ ये सव इलाज निष्फल जाय तो आखर वालका नाका अंकोडेकी तरे नाकमें गई चीजके ऊपर चढाकर खेंचणेसें निकल जाती है, अथवा छोटे चिमटेसें पकडकर निकाल डालणा लेकिन इस आखरीके इलाजसे अंदरकी चीज ऊपर नहीं चढजाय इसकी निगे रखणी.

(२ कानमें गई चीजका इलाज)–१ पिचकारी २ चींपिया ३ आंकोडा टेढा किया भया ४ तेल अथवा निमककूं जलमें डाल वो कानमें डालणेसें अंदर घुसा जीव निकल जाता है, अथवा अदमीकूं तकलीप कुछ नहीं देगा २ महीन और नरम वालकूं दोऊटा करके कानमें उतारणा पीछे वीचमेंसें उसकूं वाहर निकालणा जिस करके अंदर रही चीज वालके वीचमें होकर निकल जायगा इसतरे कानकी चीज निकाले पीछे रुई का फोआ दावणा नहीं तो कानमें सोजा या पकणेका डर है.

(३ आंखमें गई गई चीजका इलाज)–ऊपरकी भांपणी ऊंची करके नीचेकी भांपणीपर चढाणी पीछे दोनोंकों अलग२ कर देणा २ नाक वहोत जोरसे सिणकणा ३ आंख उघाडके रुमालकी कोर अथवा महीन वस्त्र आंखमें फेरणा ४ ऊपरकी भांपणी निपखेमे या पेनशिलमे उथला कर अंदर रही चीजकों जीभसें उठा लेणा.

४ होजरीमें गई चीजका इलाज–पैसा पाई काच वटन वगेरे वस्तु किसी२ वखत गलेमें उतर होजरीमें चली जाती है, उसकूं निकालणेका इलाज–पतला खुराक खाणा नहीं तव करड दस्तके साथ होजरीमेंसें आंतरमें उहांसें गुदामार्ग वाहर निकलती है,

गलणेवाली चीज पैसा वगेरे धातू होय तो खटाई बिलकुल खाणी नहीं नहींतो धातू उगटकर जहर पैदा करता है.

५ चमडीमें घुसी भई चीज–कांटा फांस सुई वगेरे बारीक चीज चमडीमें घुस जाता है, इलाज–१ चिपियेमें आयसके तो खेंचके निकाल डालणा नहीं तो सुइयेसें कुचर कर निकालणा २ एक दो दिन उसपर पोटिस बांधणा पीछै चमडी नरम पडणेसें नखसे या चींपडीसे खेंचलेणा.

औरतोंका रोग.

किरण १० मी.

इस किरणमें औरतोंके खास रोगोंके इलाज लिखे हैं, वेहोस इलाज सरू करणेके पहली संसारमें बदफैली और कुचालाजो नाजुक औरत जातकी शरीरकू विगाडता है, उस तरफ ध्यान बांचणेवालोंकों पहली देणा चाहिये सबसे बडा कुचाला तो छोटेपणमें जो व्याह करणा सोहे, सोले वर्ष पहले जो स्त्री मैथुनसे वेगी उसके प्रदरादिक अनेक रोग होणा संभव है, आगेभी ऋषियोके वाक्य है की ऋतु दान किया मतलब ऋतु आये बादही पुरुषका गमन होणा शंशार विधि सुधारक है. योगशास्त्रमेंभी एसा लिखा है समान कुल होणा याने गोत्री न होणा और द्रव्यमें बलमें सम होणा कन्यासे डेढी ऊमरका वर समान गिणा जाता है, कन्यासे अवस्थामें त्रिगुण जादा होय याने शोलेकी कन्या अडतालीस वर्षका मरद विषम रति होणेसें देणा निषेध है ये तो सामान्य नयवाद है, विशेष नयवाद एसा हैकी निरोग होय द्रव्यवान होय पूर्णवैद्यके आज्ञानुसार वर्त्तणेवाला उदार चित्तसे वाजीकरणादिक औषधीमें द्रव्य लगाकर खाणेवाला एसा पुरुष तिगुणेवर्षवाला पूर्वोक्त कन्याके योग्यवर माना जाता है, लडका वीस वर्ष पहिले मैथुन करेगा तो रोगी जन्मभर रहेगा किसी कवीने कहा है, (दुहा)–तिरिया जोवन ती सलग, वलध व हे दश साख, पुरसां जोवन सोलगे, सुखशंपत लुराक १ सब लोकोको मेरा उपदेश है के बाललग्नमें वहोत२ नुकशांन समझके लोकरूटीकों छोडणा अच्छा है किंवहुना.

(गर्भाधान)–(कन्सेप्शन).

पुरुष जो औरतकों ऋतुदान देता है, उसकू गर्भाधान कहते हैं, इसकी क्रिया वैद्यकशास्त्रमे तैसेंइ जैन सूत्रतंदूल वेयालीमें लिखा है, योग्य रीसे योग्य पतीनें अच्छा बालक पैदा करणा ये उसका हेतु है, इस विधिके लोक अजाण इसवास्ते शंतान पैदा करणेमें पतित होरहे हैं, इसवातकू उपयोगी समझके पहले वडे२ ऋषियोंने तथा ऋषन प्रभूनें आत्रेय पुत्रकू जो विधि सिखलाई सो इस जगे लिखताहूं इस बातकू देखके हमारे

जैनाभास परमार्थ शून्य वैराग्यके आडंबरी लौकिक लौकोत्तर शास्त्रोंके अजाण उपहास्य करेंगे लेकिन् इतना जरूर विचारणा चहिये की प्रथम तो जैसा पूर्वोक्त आत्रेय तथा ज्ञानार्णवोंमें लिखा देखा दुसरे विषय सेवणेकी आज्ञा धर्मशास्त्र देता नहीं औरन सम्यक् ज्ञानवंत जीव विषयमें प्रवृत्ति कराता यह तो अनादिकालसें जीवके विषय सकर्मीपणेसें सहचारी है, इसकी जयणा करणा ये शास्त्रका उद्देश है, ये वात छोटी मनुस्मृति जो की भृगुजीने वनाई उसमेंभी लिखा है, (यतः) न मांसभक्षणे दोषो, न च मद्ये न मैथुने, प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला. १ परमार्थ इसका एसा है के न मांस भक्षणमें दोप है, न मदिरामें न मैथुनमें क्योंकी सव जीवोंकी ये प्रवृत्ति है, लेकिन् छोडणेमें फल है, १ अव इसके परमार्थमें हम सम्मती नहीं देते कारण जिसके करणेसे दोप नहीं उसके छोडणेसें फल कैसें हो सकता लेकिन् फक्त इसका तीसरा पद जो है सो यथार्थ दिखता है कारण अज्ञान कर्मोके वश जीवोंकी प्रवृत्ति इस कामोंमें है सो तो प्रत्यक्ष दीखभी रही है, मातापिता वा वो आप जो व्याह करते कराते हैं, उनका फल फकत शंतान उत्पत्तीका है अगर इस कर्त्तव्यकों छोडे तो अमरपद पावें ये चोथा पद अतीव श्रेष्ठ है किंवहुना.

शंसारी जीवोंका ये कर्त्तव्य है, दोनों पवित्र और प्रसन्नतासें वैद्यक शास्त्रके लिखे-मुजव सदाचारमुजव परदाराका त्यागी होकर पुत्र पैदा करे वो सुंदर सुघड और ताकतवर मुक्ति मार्गका साधक एसें पैदा करणा मनुष्यके आधीनताकी वात है, लेकिन् दुराचारी जोडा अज्ञान कर्त्तव्यसें महादुष्ट प्रजाकूं उपद्रव करणेवाला नरकादि गतीमें जाणेवाला शंतान पैदा करता है, इस अच्छी शंतान पैदा करणेमें लोक तदन अज्ञान है लेकिन् हम इस जगे संक्षेपसें लिखेंगे, पहले ब्रह्मचर्यका पालणा, जादा विषय सेवणेवालेके शंतान अच्छा नहीं होता ये वात दोनोंकों चहिये दुसरे ताकतवर औपधी जो हम आगे सातमें प्रकाशमें लिखेंगें उसका साधन दूधका साधन थोडे पानवीडे भीमसेनी कपूर कस्तूरी अंवर डाला भया सुगंध चंदनादि तेलका मालिस कराकर सुखोष्ण गरम जलसें स्नान पुष्पमालाका धारन ऋतुमुजव अतरादिक लगाया भया ऋतूका सातमा दिन या ५म इग्यारमा एसें एकीके दिन पुत्रीकेवास्ते, वेकीके पुत्रकेवास्ते, अच्छा मुहूर्त्त वलवान पुत्रकेवास्ते सूर्यस्वर, चंद्रस्वर पुत्रीकेवास्ते विशेष विस्तार पूर्वोक्त ग्रंथादिकसें देख लेणा.

(गर्भिणी स्त्रीनें इस मुजव नियम पालणा)–महनत मुस्यसमागम वोझा उठाणा दिनका सोणा रातका जागणा शोक करणा असवारी करणी डर डेढा झुकणा दस्त वगेरे वेगोंकों रोकणा इतनोंका त्याग करणा अच्छा सादा खुराक लेणा साफ हवामें रहणा आनंदमें रहणा अच्छी चाल चलणवाली औरतोंका पास रखणा साफ सुंदर

वढिया कपडे और गहणे पहरणा अच्छे२ उत्तम पुरुषोंकी तसवीर मूर्तिके हमेश दर्शन करणा उत्तम पुरुषोंके चरित्र तथा दानशील तपभावना जिन२ पुरुषोनें आचरण किया एसोंकी कथा वार्ता सुणनी और उसनेभी ये काम यथाशक्ति जरूर करणा मतलव गर्भावस्थामें जिस२ वस्तुका दर्शन स्त्री करती है, और जैसे२ पुरुषोंकी कथा सुणती है तैसा२ स्वभाव गर्भगत वच्चेका होता है, (प्रश्न)–तुम तो कर्मकूं प्रधान मानते हो फेर इत्यादि क्रिया करणे क्यों लिखी (उत्तर)–कर्म तो प्रधान हैही क्योंकी गर्भगत जीवका जैसा कर्म होगा वेसी वुद्धि और वेसाही कर्त्तव्य सव मातापिताके वण आता है लेकिन् हमारा स्याद्वाद पक्ष है, हम सव कामोंमें पांच समवाय संवंध मानते हैं, देखो दुसरा प्रकाश एकांत कर्मके भरोसे अगर रहे तो रोगादिकोंपर दवा अथवा और संसारिक कृत्य कुछभी करणा सिद्ध न होगा और होता प्रगट देखते हैं, किया जाय सो कर्म, तव तो अच्छी रीत मुजव करणा तव तो अच्छा शंतानादिक कृत्य होता अशुभ कर्मसें अशुभ शंतानादिक कृत्य कर्मका पक्ष किसी तरे हट नहीं सकता उद्यमकर्म व्यवहार नयसें दो दिखता है,निश्चय नयसें विचारो तो एकही है पहले जो निकाचित वंध जाते है वो शुभ वा अशुभ भोगणेसें छूटता है,प्रदेशादिक वंध शुभ कर्मके योगसें टूट जाते हैं निकाचित-भी तप कर्मसें जल जाते हैं इसका जादा विस्तार नयवाद ग्रंथोमें है, इहां ग्रंथ वढजाय इसवास्ते नहीं लिखते अच्छा शंतान जव पैदा होता है, दोनोंकी पक्की उमर वदन दोनोंका निरोग योग्य मोसम योग्य दिन और वखत दोनोंकी खुस वखती जिस करके मन प्रशन्न रहे एसे मकान सेज वगेरे सव सामग्री–(गर्भधारणेलायक पुरुषका वीर्य) फटिक जैसा साफ पतला चिकणासवाला मीठा सहत जैसा खुसवोवाला वीर्य शुद्ध गिणा जाता है वीर्य दुरगधवाला गांठोवाला और पीप जैसा होय तो अशुद्ध जाणना (गर्भके धारणे योग्य स्त्रीका रज)–खरगोसके खूनमाफक लाल लाखके रंग जेसा कपडेपर धोणेसे दाग नहीं रहे वो शुद्ध जाणना, मैलाफीका गांठोवाला और वदवो मारता एसे वीर्यसे गर्भधारण होय नहीं या रोगी पैदा होय या मर जाता है,)–(गर्भस्थानके वारीक नसों-मेसे दर महीने निकलणेवाले खूनकूं ऋतु कहते हैं तनदुरस्त हालतमें ये खून पतला होता है, रोगी हालतमें वंधकर टुकडा२ होजाता है और गिरता है, गर्भ रहता है तव ऋतु वंध होजाता है, और वो ऋतुका खून गर्भाशयमें जाके गर्भकूं पोषण करता है, जव पोषणकी जरूरी नहीं रहती तव स्वभावसे वाहिर गिरता है.

(गर्भ किसतरे रहता है)–पुरुष स्त्रीके समागममें स्त्रीके गर्भस्थानमें पतला खून पैदा होता है उसमें पुरुषका वीर्य जव मिलता है, तव कोइक जीव अपणे कृतकर्मानु-सार उहां आके आहार पर्याप्ति करके शरीर औदारिक वांध वढणा सरु करता है. (प्रश्न)–तुमने जीवके पहली आहारपर्याप्ति लिखी वाद शरीर लिखा ये कैसे सिद्ध

होवे शरीर विगर आहार जीव करे तो सिद्ध ईश्वरकूंभी आहार करणा सिद्ध होगा, (उत्तर) सिद्ध परमात्माके कोइभी शरीर नहीं है वे तो फक्त जीवका निज स्वभाव ज्ञान दर्शन-चारित्र अनंत गुण विराजित है, और गर्भावासमें आणेवाले जीवके दो शरीर संग है, एक तो तेजस १ जो खाये पीयेकुं हजम करे दुसरा कार्मण सूक्ष्म शरीर जिस शरीरसें दृष्टिमें आणेवाला शरीर रचा जाय इसवास्ते इस सूक्ष्म शरीरके होणेसे आहार पर्याप्ती पहली वीर्य और रजका आहार कर फेर स्थूल शरीर रचता है ये वात वेदांतीभी मानते है, कहते है परभव जाते जीवके सूक्ष्म शरीर रहता है.

(जोडेसे गर्भ पैदा होणेका कारण)–गर्भाशयमें पडा भया वीर्य वायुसें दो भाग होकर अलग२ होता है तव दो जीव पैदा होते हैं.

(नपुंसक होणेका कारण)–दोनोंका रज वीर्य सम वजन होय तो नपुंसक पैदा होता है.

(स्वप्नेमें रह जाय सो गर्भ)–ऋतुस्नान करे पीछै किसी २ औरतकूं पुरुषके संग सोवत करणेका स्वप्न आता है, उसमें जो गर्भ रह जाता है, उसमें वापके वीर्यके गुण विगरका मांसका गोला जैसा गर्भ वढ जाता है, औरतें, आपसमें समागम करणेसेंभी यही हाल होता है, ये प्रत्यक्ष तथा जैन ग्रंथोंमेंभी लिखा है,

(अंगोपांगमें हीन गर्भका कारण)–वादीके कोपसें गर्भावस्थामें औरतकुं चेष्टा करणेसें और गर्भणीके मनके पैदा भये भाव मुजव खानपानादिक काम नहीं होणेसें जिसकूं दोहद कहते है वो नहीं पूरा होणेसें जो वच्चा होता है, सो लूला पांगला काणा कूवडा होता है.

(जुदे२ रंगका कारण)–मा तथा वापके शुद्ध या अशुद्ध वीज और जादा करके माके आहारपर वच्चेके शरीरका रंग होता है, (समदिन)–वेकीका उसमें पुरुषका वीर्य जादा होता है जिस करके लडका होता है, एकीके दिनमें औरतका रज जादा होता है जिससें लडकी पैदा होती है)–माताकी चेष्टा वोही गर्भकी चेष्टा वोही चेष्टा वच्चा जणे वादभी करता है, माताके श्वासके संग वच्चा श्वास लेता है, और वोलते चलते सूते रोते जो जो चेष्टा जो क्रिया मा करती है, वो सव वच्चाभी करता है उसमें एसेही भाव वंधते है इसवास्ते गर्भवंतीने खराव चेष्टा करणी नहीं)–माताका पोषण वोही गर्भका पोषण)–गर्भकी सूंटीकी नाडी माके रस वाहनी नाडीमें वंधी भई होती है, जिससें मा जो जो खाती पीती है, उसका रस वालककूंभी मिलता है, माके पोषणका तीन हिस्सा होता है एक हिस्सा वच्चेकूं एक हिस्सेका स्तनमें दूध होता है, और तीसरे हिस्सेसें माका शरीर पोषण होता है, इसवास्ते गर्भणी औरतोंको अच्छा पोषण खुराक तथा पथ्य करणा चहिये गर्भणीका सव खानपान पथ्य कल्पसूत्रकी टीकामें देखणा, जैसें भगवान महावीरकी मातानें किया.

(गर्भ रहेकी पहचाण)–गर्भ रहे वाद तीन चार महीनेसें ये लक्षण मालम देते हैं स्तनपरकी वीटणीके आसपासकी जमीन काली पडती हैं, रूं खडे होते हैं, आंखका टमकारना वेर२ वंध होणा कारण विगर उलटी सुगंधदार पदार्थ अच्छा नहीं लगणा मूंमेंसे लार गिरैं और वदन कांपणे लगै,

(३ ओरतोंके सामान्य रोग)–

औरतोंके रोगके इहां तीन हिस्सा किया गया है, १ औरतोंके सामान्य रोग २गर्भावस्थाके रोग ३ जापेका सूतिका रोग और उसके रहे भये पुराणे विकार

(प्रदर)–(ल्युकोरीया)–स्त्रीके संवंध रस्तेके जुदे २ भागोंमेंसे कमलके और मूंमेंसें पाणी जैसा जरा२ चूणा तो हमेश होते रहता है, जिससे वो जगा हमेश गीली रहा करती है, जव कितनेक कारणोंसें ये झरणा वढता है, और प्रवाहकी तरे वाहर गिरकर कपडोंको खराव करता है तव उसकूं (प्रदर)–(वदनका धुपणा)–सुपेद गिरणा) इत्यादि नामसे कहा करते हैं,–(कारण) विषय भोगणेमें नियम नहीं रखणेसें वेर २ गर्भ रहणेसें ऋतूकूं वंध करे एसी चीजें वापरणेसें वच्चोंको वहोत वखततक चुंगाणेसें वहोत ऋतुधर्ममें खून जाणेसें गर्भ रहणेसें दुसरे रोगसें आई भई नाताकतीसें वहोत पुष्टिदार खुराक खाकर योग्य कसरत याने महनत नहीं करणेसें और सराप वगेरे गरमी पैदा करणेवाली वहोत चीजों वापरणेसें ये रोग पैदा होता है, (लक्षण)–पाणी जैसा अथवा जाडा और चिकणा सुपेद पीला या गूगला रसीका वहणा ये इस रोगकी प्रत्यक्ष पहचाण हैं, (धातु ये दोय रस्तेसें वहता है) संवंध मार्गमेंसें और गर्भस्थानमेंसें संवंध मार्गकी धातू पहिले तो पाणी जैसी होती है और वाहर आते उसका रंग दूध जैसा अथवा पीला शपर होता है वो खट्टी होती है, और तेज होणेसें किसी वखत उसके स्पर्शसें सुआली जगोंमें ललाई अंगार तथा खुजली आती है, इसतरेके धातु गिरणेमें अंदरके अवयवमें सोजन और दरद होता नहीं फकत कमर तथा पेडूमें जरा दरद और वहोत दिनोंवाद नाताकती मालम देती है, गर्भ स्थानकी धातु कमलके मूंमेंसें निकलती है, तव वो इंडेके अंदरके रस जैसी होती है, लेकिन् वाहर आते सावूके फेण जैसी और किसी २ वखत पीले रंगकी होती है, किसी २ वखत वहोत जाडी होती है, गर्भस्थान और कमलके मूंके सोजनसें ये रोग पैदा होता है, उसके सग शिरमें दर्द मंदाग्नि अरुचि पेटमें वायु थकेला श्वास जीभपर मैल फीकापणा दस्तकी कब्जी छातीमें धडका चक्कर वेहोसी पीठमें तथा दहिणे पडखेमें दरद और किसी २ वखत हिस्टीरीयाके लक्षण होजाते हैं, (इलाज)–प्रदरके वहोत इलाज है, योनिमार्गमेंसे जल गिरता है, उसमें वाहरका इलाज जल्दी फायदा करता है, और गर्भाशयके धातू गिरणेमें पुष्ट दवाइयां तथा योग्य प्रमाणोपेत आहारविहारके सेवनसें सुधारा हो सकता है, (वाहरका इलाज)–१ पेच-

वल्कलके पाणीसें धोणा या पिचकारी (औरतोंके वास्ते खास अलग पिचकारी आती है) २ त्रिफलाके पाणीकी या उकालीकी पिचकारी देणी फुलाइ भई फटकडी १० से ४० ग्रेण और पाणी १० औंस ४ सल्फेट ओफ झिंक और पाणी १० औंस, (अंदर पहराणेकी दवा)–५ मुलतानी मट्टीकी गोलियों करके पहराणी ६ टेनिक एसिड कत्था तथा मैण तथा सालिडका तेल इन सबोंकों बराबर बजनमें मिलाकर इनोंकी गोली कर पहरणी (अंदरका इलाज)–७ ऊपर लिखे जोजो कारण उसकूं पहली मिटाणा आहार विहारका जाबता रखणा अथवा सखत परेज रखणा बच्चा चूंगता होय तो छुडा देणा थोडी उन्मानमुजब कसरत या महनत कराणा खुली हवामें फिराणा क्षय वगेरे रोग होय तो उसका इलाज करणा तनदुरस्ती बिगाडणेवाले सब कारणोकूं रोकणा सुधारणे वाले कारणोंका आश्रय लेणा ८ प्रमेहके बहोतसे इलाज प्रदरपरभी चलते हैं, ९ सुवर्ण मालनी वसंत (नं० ३३७) गिलोय सत्व (रसायण चूर्ण (नं० २३४) जीरा-पाक (नं० २७४) चंद्रप्रभा (नं० २४४) कोला पेठेका मुरब्बा पक्केकेले खेरीगूंद खापरिया शतावर आसगंध मूसली तालमखाणा गोखरू गिलोय वगेरे सब दवाइयां प्रदर तथा धातू गिरणेकूं बंध करणेवाली हैं, (रक्तप्रदर)-खून गिरणा बहोतसी वखत औरतोंके योनिमेंसें खून गिरता है, इस रोगका इलाज जादा तो रक्तपित्त मुजब तथा प्रदरमुजब करणा बहोतसी वखत जादा ऋतुधर्मका खून गिरणा वोभी रक्तप्रदर कहलाता है, श्वेत और रक्त ये दोनोंही गर्भाशयका रोग होणेसें इलाजभी एकही है, (मूत्रमार्गका वरम) मूत्रके रस्तेमें सोजन जलणके संग होती है, सुजाकके चेपसें अथवा गरम पदार्थ खाणेसें सराप पीणेसें मलीनतासे और भोग वेहद्द करणेसें एसा रोग होता है, (लक्षण)–तणख दाह खुजली कमर तथा जांघमें दरद दस्त उतरते दरद अंदर पहली सोजन पीछे पीप झरणे लगे पुराणा पडे पीछे प्रदर होजाता है, (इलाज)–अफीमका डोडा तथा सोडा डाल उकाले भये गरम पाणीमें बिठलाणा २ गरम पाणीकी पिचकारी लगाणी ३ अफीम तथा स्युगरलेड दोदो वाल कोकमके तलमें मिलाकर उसकी चार गोली कर एकेक फूलके अंदर चलाणी ४ झिंक आकसाइड ४० ग्रेण एक्स्ट्राक्ट बेलाडोना १२ ग्रेण उनोकूं मिलाकर गूंदसे या सहतसे गोलिये कर पहराणी ५ प्रदररोगमें धोणेका तथा भीगा कपडा हमेस उपयोग करणा ६ ग्लीस-रीन तथा टेनिक एसिडके पाणीका कपडा भिगाकर अंदर डालणा ७ एक हलका जुलाब देणा दरद मिटे जहांतक सादा हलका खुराक लेणा गरम खानपान छोडणा (आर्तव याने ऋतुधर्म संबंधी रोग)–(कारण)–जवान छोकरियोंकी पकीऊमर होणेके पहली अथवा तनदुरस्त नहीं होय उसवखत विषयवासनामें लगादेणा इत्यादिक कारणोंसे औरतोंका वर्ग ऋतुधर्मसंबंधी रोगमें जा गिरती है, पहला ऋतुधर्म होणेके वखत जो बंदोबस्त

होणा सो नहीं होता है, जैसे ठंढी हवा भीगी जमीन ठंढे पाणीसे स्नान गीले कपडे वहोत वखततक खडे रहणा भारी मैदा वगेरेका खुराक वहोत महनत डर गुस्सा इन सब कामोंमें इसकूं अलग रखणा चहिये लेकिन विचारहित महा अज्ञान अपणे हठसें चलणेवाली औरतें ऊपर लिखे नियम न रखती न रखाती है, ऋतुधर्मकूं वंधकरणेवाली दवाइयोंके लेणेसेंभी प्रदरका रोग होजाता है, औरतें खानगी रोगोमें कोइ२ अज्ञान दाइयोंके हाथसें इलाज कराया करती है, उससेंभी रक्तप्रदर रोग होजाता है, इस्के संवंधी वात कची ऊमरमें सुणणेसें गर्भस्थान उस्कराकरभी प्रदर होता है, ऋतुधर्म जलदी आणेसेभी दस्तानका रोग होता है गर्भ रहे पीछै योग्य हुसियारी नहीं रखणेसें अथवा अधूरा जाणेसेंभी दस्तानका रोग होता है, गर्भस्थानका कोईभी विगाड दस्तानका कारण होता है.

(प्रकार तथा लक्षण)--१ ऋतुका वंध होणा २ ऋतुधर्म वहोत दरद होहो करके आणा३और वहोतही ऋतुधर्म चहिये जिस्से जादा गिरणा एसे ये तीन तरेसें दस्तानका रोग होता है, इन तीनोंका इलाज आगे लिखेत हैं, (नष्टार्त्तव)-(एमेनोरीया)(कारण) स्वभावसे अवयवका कमीपणा स्त्रीअंडका थोडापणा अथवा विलकुल नहीं होणा योनिके रस्तेका संकोच अथवा वंध कमलके मूंका वंध, होणा वगेरे कारणोंसें दस्तान पैदा होता नहीं अथवा पैदा होताहै,तो प्रतिवंधके लिये वाहिर दिखाई नहीं देता वहोत एसआराम आलस वहोत नींद खराव हवा और गीलासवाला घर येभी आर्त्तव रोगके कारण है, (लक्षण) हर महीने ऋतूके समय दस्तान वाहर आणेका यत्न करे लेकिन् वाहर गिरे नहीं उसकरके पेडू कम्मर तथा जांघोंमें दरद वदनमें धूजणी गलेमें गांठो किसी वखत आंखे दुखणी आवै प्रदर तथा नाक और मूंमेसें खून गिरे हिस्टीरीया छातीमें घभराट दम मंदाग्नि दस्तकी कब्जी येभी उसके लक्षण है, (इलाज)--कोइभी अवयवका विगाड होय तो उसकी दरियाप्त करणी (इलाज करणा)--१ दस्तकी कब्जी होय तो दस्त खुलासकी दवा लेणी २ गरम पाणीकी पिचकारी लेणी ३ गरम पाणीमें वैठाणा अथवा पेडूपर गरम पाणीका शेक करणा ४ एलिया तथा वीजा वोलकी वडी गोली पहराणी ५ एलिया लोह कवार पठा गूगल वगेरे दवायें दस्तानके रोगकूं मिटाती है, इसवास्ते वोइकेली अथवा दुसरी दवायोंके संग लेणी ६ एलिया ४ तोला वीजावोल २ तोला गुलकंद ५ तोला इन सवोंको मिलाकर दोदो वालकी गोली करके पाणीके संग पीणा एकेक गोली दर टंकमें ७ सुहागा १ वाल एलिया १ रत्ती मंदूर १ रत्ती गोली जलके संग ८ कुमारिकासव लोहासव लोह ऋतूका खुलासा करती है, ९ टिंकचर आफ स्टील १० से १५ वूंद १ औंस पाणीमें मिलाकर दोनों टंक पीणा १० सल्फेट आफआयर्न२४ ग्रेण कारवोनेट आफ पोटास १२ ग्रेण मर १२ ग्रेण एलिया ६ ग्रेण उसकी २४ गोलि

वणाकर दोदो गोली दिनमें तीन वखत लेणी ११ टंकण ३० ग्रेण लिक्वीड एक्स्ट्राक्ट आफ अरगट १॥ द्राम और कम्पाउन्ड डिकोक्सन आफ एलोइ ३ औंस उसका तीन भाग कर दिनमें तीन वेर पीणा.

(दरदसे ऋतुधर्म)–(डिसमेनोरीया)–(कारण)–शारीरक तथा मानसिक नाजुकपणा गर्भस्थानका वरम और ऋतूका झरणा वंध होणेका कोइभी मुख्य कारण ये सव इस रोगका कारण है, गर्भाशयमें खून जमणेसेभी ये रोग होता है, (लक्षण)- ऋतूधर्मके सरू होणेके पहले एक दो दिन दरद सरू होता है, कम्मरमें सख्त शूल शिरमें दरद पेडूमें गांठ जैसा जमाव तथा वोझा ऋतूका झरणा कम या जादा वंध होय और फेर आवै उसके संग दरद वधे घटे हिस्टीरीया डकार तथा दस्तकी कब्जी ये सब इस रोगके लक्षण है, कमलका मूं वंध पडणेसें अथवा अंदरका रस्ता संकडा होणेसेंभी ऋतु वंध होता है, (इलाज)–(दरद होय तव करणेका इलाज)–१ अफीम ४ ग्रेण कपूर ८ ग्रेण वारे गोलियें करके एकेक दो दो गोली तीन २ घंटेसे देणी २ अफीम तथा सुहागा मिलाया भया गोलियें इसी वजनसें फायदा करती है, ३ वेलाडोणेकी सोगठी पहरणी वेलाडोणा १२ ग्रेण जसतके फूल ४८ ग्रेण सहतमें घोटकर उसकी ४ सोगठी करके हमेस रातका पहरणी ४ गोफर्याकी पिचकारी लेणी और गरम पाणीमें वैठाणा गर्भाशयमें सोजा गांठ और गर्भाशय फिर गया होय तो उसका इलाज करणा. दरद मिटाणेका इलाज एसा करणा सो फेर जडसेंही मिट जाय ५ कुमार पट्टेका पाक कुमारिकासव अथवा उसका अवलेह ६ कोला पका केला मुरब्बा या अवलेही लोह कोडलीवर किनाइन ७ योगराज गूगल औरतोंके गर्भाशयके तथा ऋतु दोषके वास्ते सर्वोपरी इलाज है.

(अत्यार्त्तव)–(वहोत खून गिरणा)–(मेनोहेज्या)–ऋतुधर्म हरमहीने आनेके वदले थोडी२ मुदतसे आवे या जादा आवे तीन चार दिन दर महीने होणा चहिये सो जादा दिन तक दिखाइ देवें.

(कारण) शरीरके दुसरे रोग जैसेके रक्ताशय यकृत् प्लीह तथा फेफसेका रोग तथा पांडू वगैरे रोगोमें ये रोग होता है, २ गरमी तथा गरम खुराक ३ गर्भाशयके अंदरकी गांठ अथवा मस्सा ४ गर्भाशयका खिसणा तथा गर्भ अंड और कमलके मूंके वरमका दवाव ५ गर्भ धारण पीछे गर्भ सूकणेसें अथवा जाया भये पीछे पिछला माग रह जाणेमें ६ संभार मोगका अतियोग अथवा हीन योग (लक्षण)–दस्तान थोडा२ आया करे अथवा एक समवेपूर चलकर फेर वंध होजाय वदन खाली होजाय फीका पडे श्वास वदनपर पोथर उठती मंदाग्नि मनकी व्याकुलता और दस्तकी कब्जी (इलाज)– (उस रोगका इलाज)–१ ठंढे पाणीका पोता रखणा अथवा वरफ धरणा २ टेनिक

एसिडकी पिचकारी मारणी ३ फूलाई भई फिटकडीकी पिचकारी लगाणी ४ पंचवल्कल अथवा त्रिफलाके पाणीकी पिचकारी लगाणी या इससे धोणा (अंदरका इलाज)-श्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण गुलकंद ५ ग्रेण मिलाकर ४ गोली कर एकेक गोली तीन तीन२ घंटेसे देणी ६ गेलिक एसिड १५ से २० ग्रेण इसकी तीन पुडी कर तीन२ घंटेसे देणी जलसे ७ ग्यालिक एसिड ४० ग्रेण लिक्वीड एकस्ट्राकट ओफ अर्गट ड्राम १॥ डिल्युट सल्फ्युरिक एसिड ४५ बूंद तजका पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पीणा ८ एक ग्रेण अफीमकी २ गोलियें करके तीन२ घंटेसे खाणी ९ पाउडर आफ अर्गट १५ ग्रेण ग्यालिक एसिड २० ग्रेण उसकी ४ पुडी करके तीन२ घंटेसे देणी १० फिटकडी ३० ग्रेण डिल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद नवसादर १० ग्रेण पाणी १२ औंस चार २ घंटेसें तीन वखतमें पिलाणा ११ देशी दवायोंमें अफीम आंवले ईसब गुल सुहागी कोला गुंदपाक वीजाबोल चंद्रप्रभा वगैरे खूनकूं बंध करती है.

(हिस्टीरीया)-इस रोगकूं देशी वैद्यक शास्त्रवाले केइयक तो वादीके रोगोंमें और केइयक उन्माद चित्तभ्रमके रोगोंमें समावेश करते हैं, यूनानीवाले होलदिलमें और अंग्रेजीमें मानसिक याने मगजके रोगोंमें गिणते है, और वेकूब लोक इस रोगकूं सेतान लगा हुवा जाणके जंत्रमंत्र उतारा पलीता वगैरे इलाज भूत निकालणेका यत्न करते है, हमतो जंत्रमंत्र जो यथार्थ है, उसकूं झुट नहीं कहते लेकिन् दुनियाका जब ठगाई भरा ढंग देखते हैं, तब तो झूट कह सकते हैं, क्योंकी यंत्रमंत्र उसी आदमीका सचा है, जो इन बातोमें मजबूत हो अव्वल तो जिसका शील बिलकुल पूरा हो लेकिन् एसे मिलणे लखोंमें एकभी दुस्वार तोभी इसबातका जो प्रमाण मुजब नियम रखणेवाला हो पंचोंकी साक्षीसें धारण करी भई स्वदारा संतोषी हो धर्मके कायदे मुजब सदा सच बोलणेवाला हो परमेश्वरकी बंदगीवाला हो पराया दुख देखके करुणावाला हो इस बातोंवाला मन वचन कायाका स्थिरता रखके दृष्टि या पासादिक मंत्राम्नाय साधकके कर्त्तव्यताकूं धन्यवाद है, बाकी सब दुकानदारी है, वो दादा जिन दत्त जिन कुशल जिन चंद्र सूरजीकी तरे सब कष्ट साध्य रोगीकू मिटाणे समर्थ होता है जो कभी असाध्य पर दृष्टिपास या हस्तपासादिक अलक्ष्य मंत्रादिक क्रिया करे तो वो तो मरेही लेकिन् प्रतिकारके कर्त्ताकेभी तकलीफ होय हिस्टीरीया मन संबंधी रोग है, मनकी नाताकती शरीरकी नाताकतीसें होती है, तैसे मगजके विकारोंकी वदनपर वहोत बुरी असर होती है हिस्टीरीयेका रोग जादा करके औरतोकेही होता है, और किसी२ नाताकत मनके अदमीकूंभी होता है, (कारण)-गर्भाशयका रोग आर्त्तव दोष मगजकी नाताकती भय शोक महनतसें खेचल कामविकार हयरस वहोत तमासवीनी इत्यादि कारणोसें ये रोग पेदा होता है, नाताकतीमें उठती जवानीकी छोकरियोंका मन इस्क भरी प्यारकी और

विषयकी वातें सुणके या पढके तेर२के ख्यालोसे उमंगता है, कामविकारसे वो विकार पूरा नहीं होणेसें पुरुषके संग अणवणतसें अप्रीतिसें और ऋतुधर्ममें कीडे पडणेसेंभी ये रोग होजाता है, (लक्षण)–(इस रोगके अनेक लक्षण है)–वाइंटे खेंचाताण हसणा रोणा धुणना बूंम मारणी गोला चढणा बिलकुल बोलणा नहीं उलटी ओहीयां ओहीयां एसे शब्द करणा लंबी निसासे डालणा ये उसके सामान्य लक्षण है, हिस्टीरीयावाली औरतोंके सब लक्षण बहोत त्रासदायक होते हैं, और बहोतसी वखत जो बेमारी वो बतलाती है वो होती नही और बोभ मारती है जैसेके जलण नहीं लेकिन् कहती है, जलती हूं और पाणी मांगती है उसकूं वदवो आती है जीभ बेस्वाद गोला चढता है, और वो जाणे गलेतक भर गया है, अभी ज्यांन निकलही जायगी एसा जोर करता है, वदनमें गोटा चढता है दांत जकड जाते हैं, अवाज बैठ जाती है पेट वडा होता है, और महीने चढें होय एसा लगता है.

(इलाज)–इस रोगमें खास तोरपर एकभी दवा नहीं है, हिस्टीरीया होणेका जो मूल कारण होय उसका इलाज करणा इस कारणकूं निश्चै करणे वास्ते उसकी मिजाजका जाणकार पास रहणेवालेसें संसारकी सब स्थितीकी वाकबी होणी चहिये उसके व्यसन वगेरे सब निज खासितसें वाकब होणा चाहिये औरतोंके ये रोग जादा करके ऋतुधर्मके विगाडसें होता है, इसवास्ते ऋतुधर्मका जो विगाड होय सो पहली मिटाणा सुधी घरकी औरतोंने एसआराममें मसगूल होकर हरमद घरके अंदरही नहीं पडे रहणा खुली हवामें फिरणा चहिये माफकसर महनतभी करणा हिस्टीरीयावाली औरतका मन किसी तरेभी बिगडणे नहीं पावै इसवास्ते उसकूं हमेस खुस रखकर उसपर दया और प्रीती बताणी हिस्टीयाका जब दोरा हो उस वखत करणेका इलाज १ मूंपर ठंढा पाणी छांटणा और नाकके आगे आमोनिया दुसरा तेजनस्य धरणा जिससे होस आवै एसा इलाज करणा २ हाथ पैरोके तले अच्छीतरे मसलणा ३ बेहोस भये बिगर गोला वगेरे वादीका होय तो घीमे तलकर हींग निगलाणी गुडमें लपेटकर दस्त खुलासा आवै एसी दवा देणी ४ (दुसरे सामान्य इलाज लिखते हैं)–योगराज गुगल ५ रास्नादि काथ ६ बिल्वादि काथ नं० ५२३) ७ तथा ६६४ की अंग्रेजी दवाकी मिलावटें (८ नं० ७२३) तथा ७४४ हकीमी नुसके.

(गर्भाशय प्रदर)–(देखो प्रदरका वर्णन) पृष्ठ ६५५)

(गर्भाशयका वरम)–सुआवड (जापा) के बिगाडमेंसें गर्भाशय सूजकर उसमें बहोत दरद बुखार तथा दस्तकी कब्जी ऋतु तथा प्रदर बहोत जाता है, इस दरद-वाली औरतके गर्भ रहता नहीं वरम पुराणा होणेसें उसमें मस्सा रसोली वगेरे गांठे जमती है, और खून दस्तानमें बहोत गिरता है, (इलाज)–सोजनका सब इलाज

करणा जुलाब शेक पोल्टीस लेप २ गरम पाणीकी पिचकारी ३ पेडूपर अलशीकी पोटिस मारना अथवा आखर कमलके मूंपर थोडी जोके लगाणी ४ संसार भोगसें दूर रहणा खुराक हलका तथा सादा लेणा पुराणा वरम मिटणा मुस्कल होता है, ५ गर्भकूं सुधारणेवाली दवा खाणेसें सुधारा होता है, (फलघृत नं० २९०) वरम नीचेके भाग तरफ होय तो कासटिक लगाणा अथवा टेनिक एसिड या जसतका फूल कोकमके तेलमें मिलाकर अंदर चुपडणा इस वरमके सवव किसी२ वखत कमलका मूं वंध होजाता है, उसके गर्भ नहीं रह सकता और ऋतुधर्म अंदर भरा रहणेसें दरद होता है, (कमलमें जखम)–जखम होणेसें खून गिरता है, किसी वखत ऊपर छाला गिरता है, किसी वखत गहरा जखम पडता है, इस रोगसेभी वेटेमवे परमाण दस्तान आता है, कमरमें वहोत वेतरेका दरद होता है, धातू जाता है, खूनभी गिरता है, (इलाज)–व्रणका इलाज करणा पंचवल्कलकी अथवा त्रिफलेकी अथवा मांजूफलके पाणीकी पिचकारी लगाणी २ फिटकडी अथवा जसतके पाणीकी पिचकारी मारणी ३ टेनिक एसिडकी सोगठी पहरणी ४ कास्टिक लगाणा ५ ग्लीसरीन और टेनिक एसिडकी अथवा सुहागा और टेनिक एसिड लगाणा, (गर्भाशय ग्रंथी)–गर्भाशयमें गाठ होती है, ये गठ छोटी पारीसे वढकर कभी२ गर्भमें वढते२ वालक जितनी होती है और उसके लिये गर्भयानभी वढता है, गांठ छोटी होय तहांतक वहुत इजा नहीं करती जव वडी होती है, ो गर्भाशयमेंसे प्रदर जैसा निकलता है, उसकूं मिटाणेका इलाज करणा गर्भाशयके अंदरकी गांठ मिटणी मुस्किल है, क्योंके उस जगे शस्त्रका इलाज होणा मुस्किल है, जो मस्सा होय तोभी गर्भाशयमेंसें खून झरते रहता है, मस्सा वाहर होय तो डाकतर लोक कतरणीसे काट डालते हैं, अथवा डोरा वांधणा घोडेका वाल वांधणा मस्सा गिरपडता है, दवा लगाणेकी हमारेपास अर्शउन्मूलनार्क है उसके लगाणेसें मस्से खिर पडते हैं, गर्भाशयके अंदर मस्सा होय तो वादली धरकर कमलका मूंचोडा करके पीछै आंटा देकर या फासा देकर मस्सेकूं तोड डालते हैं, लेकिन् ये कर्त्तव्य डाकतरोंसें करवाणा, (गर्भाशय भ्रंस)–जैसे गुदामेंसे कांच वाहर निकलती है, ऐसें गर्भाशयभी नीचे उतर आता है, ये दरद वडी ऊमरकी औरतोंके होता है, वेर२ वच्चा जणणेसें वस्ति चोडी होणेसें गर्भाशय वाहर आता है, गर्भाशय सूज जाणेसें उसमें गांठ होणेसें करांजणेसे गर्भस्थान तथा योनिवंधन ढीला होणेसें गर्भाशय नीचे उतरता है, तपासणेसे जो उसके सग कमलका मू होय तो जाणनाके गर्भाशय नीचे उतरा भया है, कांचकी तेर कूं दावके उंचा चढाणा रालके लेपकूं करके खेंचकर पट्टा वंधवाणा औरतोंने उस ामेंविलोणा छोड वाहर जाणा नहीं ठढे पाणीमें वैठणा अथवा स्तंभक दवाकी पिचारी मारणी अथवा सोगठिये पहरणी जिससे वंधन सख्त होकर गर्भाशय नीचे उतर

सकेगा नहीं ताकत आव एसी दवा लेणी, (स्त्री अंडका वरम)–जैसे पुरुषोंके वीर्य पैदा करणेवाली वृषणकी गोलियें होती है, तैसें औरतोंकेभी रज पैदा करणेवाले दो अंड पेडूके दोनोंतरफ होते हैं, अंग्रेजीमें उसकूं (ओवरी) कहते हैं, उसमें वरम होता है, तो वाजूमें चमका होता है, पेसाव लाल होता है, ऊपरसे दवाणेसे गांठ जैसा लगता हैं, और दरद होता है, दस्त आते वखत दरद होता है, बुखार जीमित लाणा उलटी पेटमें हवा होती है, ये अंड पकते हैं, तव फूटकर पीप निकलता है, जादा करके बांये तरफ वरम होता है, (इलाज)–वरमके सव इलाज करणा गरम पाणीमें बैठणा अफीम तथा बेलाडोणेकी सोगठी पहरणी शेक तथा पोल्टिस पेडूपर दरदकी जगे मारणा पुराणा वर्म भये पीछे दरद नरम पडता है ऋतुधर्म थोडा और बहोत कष्टसे उतरता है, वेर२पेशाव होता है, प्रदर होता है, हिस्टीरीयाकी कितनीक निशाणियें मालम देती है, (इलाज)– पेट तथा पेडूपर गरम कपडा हमेश लपेटे रखणा उस वखत गरम पाणीमें बैठणा ठंढे पाणीका स्नान पुरुप गमन सर्वथा नहीं करणा ताकत लाणेवाली दवायें देणी, (स्तन छातीका सोजा)–बहोतसी वखत स्त्रियोंका स्तन पक जाता है दूध पैदा होणेकूं खूनका जोस चढ आता है उससें स्तन भर जाता है और बुखारके संग स्तनमें सोजन चढ आता है, एक या दोनोंमें होता है, तव स्तन भरा हुवा लगता है उसमें गांठे बंधती है, सखत वरम होकर चमडी लाल होती है, ठंढ देके बुखार आता है बेचेनी अनिद्रा और पकती वखत ठणका मारता है, बच्चेकूं वखतसर नहीं चुंघाणेसें अथवा भरे स्तनमें हाथोंको बहोत हिलाणेसें बहोत गरम खुराक खाणेसे तथा मनके आवेशके असरसेभी वरम होता है, (इलाज)–१ दरदके सरुआतमें थोडा दरद होय तो फुलालीनका अथवा अफीमके डोडोंके गरम पाणीका शेक करणा अथवा सावूका मलम (सोप लीनीमेन्ट लगाणा दाह होता होय तो ३ गुलाबजलका पोता धरणा अथवा ४ चंदन रगत चंदनका लेप वेर२ करना ५ वखतपर दूध खेंचलेणेका इलाज करणा दूध खेचणेकी शीशीयों आती है, वो नहीं मिले तो किसीसे चुवाकर निकलवा डालणा अथवा धतूरेके पत्ते और हलदीका अथवा कडवे तूवेका लेप करणेसें दूध खींचता है, एसा संभव है, दरद बहोत वदजाय तो शेक और अलसीकी पोटिस बांधणी ७ नींवके पत्ते वाफ कर बांधणा दस्त साफ लाणेकी तथा बुखारकी दवा देणी रोगी ताकतवर होय और दरद बहोत होते होय तो स्तनके सूजे भये जगेपर ८।१० जोंक लगाणी और पीछे शेक करना जो पकणेपर होय तो पकाकर फोडणेका और बाद भरणेका इलाज करना व्रण सुजव (फूलजाना)–कितनीक औरतें वदनमें फूल जाती है, बाद किसी२कूं गर्भ नहीं रहना ऋतूधर्मके दोपके अटकणेसे अंदर जमाव होते जाता है, जिस करके और तोंका पेट तथा पेडू फूल जाता है, किसी२के एकाध बच्चा होकर पीछे ये रोग होता है,

फेर बच्चा नहीं होता, (इलाज)–इस रोगपर दवा करते आहार और विहारका पथ्य जादा फायदे बंद है, खुली हवामें फिरना घरमेंभी शरीरकूं महनत पडे एसा कामकाज करना शरीरकी वादी और चरबी कम होय एसा इलाज जैसेके दस्त साफ लाणेकी दवा हरडे जुलाफा एलीया हींग वगेरे वादीके तथा दस्तके खुलासा वास्ते देणा ३ ऋतु खुलासा लाणेकूं गरम पाणीमें राई डालकर पग भीजाणा कमरपर शेक करना पेडूपर सींगडी या कपिंग (देखो पृष्ट ३७१) करणा इण इलाजोंसे पेडूका जमाव नरम पडेगा और जमा भया खूनका ऊपर खेंचाण होकर गर्भाशय खुला होगा ४ योगराज गूगल वायू तथा चरबीकूं कम करता है, वास्ते वहोत दिनोंतक सेवन कराणा गर्भाशयके दुसरे दोषोंभी दूर करता है, ५ त्रिफलेका काथ सहत डालकर पीणा ६ पाणी गरमकर ठारकर उसमें सहत डाल कर हमेस पीणा इससे चरबी गल जाती है,

(गर्भवंतीके रोग)–औरतोके गर्भ रह्यां पीछै हमलके खास रोग होते हैं, तैसें बुखार दस्त मरोडा वगेरे सामान्य रोगभी होते हैं, उसमें गर्भके कारणसे उनके इलाजोंमें कितनेक दवाओंकों छोडणा पडता है, जो इस बातका खयाल नहीं रखे तो नुकशान होणा ताजुब नहीं, (नाताकती)–दुबली और नाताकत औरतोंके गर्भ रहता है, तब उसकूं ताकतवर दवा और खुराक देणा चहिये जो नहीं दिया जायगा तो शंतानभी दुबला और नाताकत पैदा होगा थोडी ऊमर पायगा और जापेमें औरतभी मर जाय तो ताजब नहीं जोखमका काम है, (इलाज)–सामान्य इलाजोंमें दूध सर्वोत्तम इलाज है, गऊ या बकरीका मोलेठी तथा सूठके टुकडे तीन मासा अधसेर दूध और अधसेर जल डालके उकालणा पाणी जले बाद ठंढाकर थोडा बूरा डाल पिलाणा वहोत दिन पीणेसे ताकत आती है,और बुखार खासी वगेरे कुछभी तकलीप होती है, तो मिट जाती है, २ † वसंत मालतीका साधन दूध मिश्रीके संग देणा ३ गर्भ पोषक नामकी दवा हमारेपास है वो मा और बच्चेकूं निहायत फायदे बंद है, (बुखारका इलाज)– १ मोलेठी रगत चंदण वाला उपलसिरी और कमलके पत्ते इनोंका काथ मिश्री सहत डालकर पीणा २ रगत चंदण उपलसरी लोह तथा मुनक्काका काथ मिश्री डालकर पीणा ३ वकरीके दूधमें सूंठ ऊपर लिखे मुजब उकालकर पीणेसे विषम ज्वर याने वेटेग आणेवाला ठंढदेके आणेवाला ज्वर मिटता है, दस्तका इलाज–१ मजीठ मोलेठी लोद इन तीनोंकों पीस इनोका पाणीकरके मिश्री मिलाकरके पीणा २ आंवकी तथा जामुनकी छाल उकालकर मिश्री सहत डालके देणा इसमें चावलोकी लाईका सत्तू डाल खिलाणेसे संग्रहणी भी मिटती है, सख्त दवासे गर्भकुं नुकशान होता है, (उलटी)–१ धाणाकूं पीस चावलोंके धोवणमें छाण सहत मिश्री डालकर पीणा २ कलींजी)–इसका चूर्ण अथवा

† तोलेका बीस रुपया है, अनुपान इलायची बदलोचन मिश्री दूध ।

काय मिश्री तथा सहत डालकर देणा ३ सोडावोटर तथा बरफ पिलाणा ४ कलेजेपर राईकी पट्टी मारणी अथवा लाडेनम लगाणा खुराकमें सिरप दूध अथवा दूधमें कांजी चावलोंकी गरिष्ठ खुराक देणा नहीं, (अरुचि)–१ अजमोद सूंठ पींपर तथा जीरा गुडमें गोली करके देणा, (कब्जी)–गर्भवाली औरतकूं कब्जी बहोत रहती है, लेकिन् उसकूं जुलाब वेर २ देणेसे गर्भकुं नुकशान पहुंचता है, इसवास्ते देणा नहीं १ दूधसे दस्त खुलास आता है, २ एरंडी तेल दूधमें देणा ३ सख्त कब्जीमें एरंडी तेलकी पिचकारी मारणी.

(खासी)–वहुफलीकी जड वलबीजकी जड और अरडूसेका क्वाथकर पिलाणा इस क्वाथसे गर्भणीका सोजन श्वास कास रगतपित्तमेंभी अच्छा है, खेरसार तथा कत्थेकी गोली ३ शीतोपलादि चूर्ण सहतमें (हेजा)–१ सूंठ तथा वीलकी जडका क्वाथकर पिलाणा उसके संग जवकू शेक तथा दलके शेका भया सत्तू थोडा२ पिलाणा सख्त दवासे गर्भकुं नुकशान पहोंच जाता है, (शूल)–डाभ कांस एरंड तथा गोखरूकी जडकूं पाणीमें पीस वो डालकर पकाये भये दूधमें मिश्री सहत डालकर पिलाणा सख्त दवा वापरणी नहीं.

(मट्टी खाणेकी आदत) मट्टी खाणेकी आदत वहुत औरतोंकों रहती है, सो बुरी है, गर्भणीकुं जादे चाहियेके अच्छे २ पदार्थ इच्छा मुजव खाणेका वैद्यकशास्त्र लिखता है, लेकिन् एसी नुकशानकारी वस्तु खाणेकी इजाजत वैद्यक शास्त्र नहीं देता है, मट्टी नुकशांन करणेवाली चीज है, इसका सख्त वंदोवस्त करणा चाहिये लडकेभी इसी मुजव चूना मट्टी कोयला खाते हैं.

(छातीमें दरद)–स्तनोंमे दरद होय तो फुलालीनका अथवा पोस्तके डोडेका उकाला भया पाणीका शेक करणा सोजा होय तो शोजेका इलाज करना, (नींदका नाश)–हवा नहीं आवे एसी वंध जगेमें रहणेसें और गरम खानपानसें नींदका नाश होता है, इस कारणोंकों वंध करणा दस्तकी कब्जी होय तो एरंडतेलका जुलाव देणाचा काफी तथा सराप नींदका नाश करती है, इसवास्ते इनोंसे वचाणा दूध तथा वनस्पतीका सादा खुराक खिलाणा आखर जरूर पडे तो नींद लाणेवाली दवायें लेणी, (ऋतूका अरणा)–हमल रहे वाद ऋतूधर्म वंध होता है, तोभी किसी२ औरतके दिखाई देता है, उस वखत औरतका ऋतुधर्म वंध करणेमे मख्त इलाज न करते वहोत हि फायत रखणी चाहिये जैसे ठंडी हवा भीगी जगा उघाडे पैरोंसे चलणा भीजी जमीनपर वैठणा सोना ठंडा पाणीमें नाहणा वहोत देरतक खडे रहणा जादा खाणा जादा महनत डर गुस्सा तथा जुलाव ये सव खून गिरणेकूं वढाता है, इसवास्ते इन वातोंमें वचाणा मुडाये रखणी हलका खुराक देना.

(धातु गिरणा)–प्रदर गर्भणीके गिरता है, (इलाज)–१ स्वच्छता रखणी प्रदर रोगमें लिखा प्रक्षालन पिचकारी तथा पोता धरणा २ ताकतवर खुराक लेणा ३ प्रदर का ठंढा इलाज करना.

(वहुमूत्रता)–गर्भणीकूं वेर२ पेसाव होता है, (इलाज)–जवका जल पिलाणा २ एरंडतेल दे दस्तका खुलासा करणा ३ दरद होय तो पेडूपर फुलालीनके कपडेका सेक करणा ४ चंद्रप्रभा वगेरे मूत्रल और सारक दवायें देणी गर्भणी स्त्रियोंके कितनेक इलाज साधारण लिखे हैं, कुदरत स्वभावसे गर्भणी औरतोंके भारी वेमारी आती नही और गर्भ रहे पहले जो वेमारी होती है, वोभी दव जाती है, गर्भके रक्षणकूं पांचसमवा- योंके संबंधसे ये कुदरत वणती है, और कोइ२ गर्भणीके इन पांचो समवायोंके प्रतिकू- लपणेसें जव वडा रोग होता है, तो या वच्चा या वो आप मरती है, एसा हमने देखा है लेकिन् प्राय वडे रोग थोडे होते हैं, फेर वच्चा भये वाद पहलेके दवे भये रोग पीछा जोर करता है.

३ सुवावड और सुआरोग.

(स्वभावजन्य प्रसव)–आहार याने खानपानकी हुसियारी नहीं रखणेसें होजरी और आंतरोमें तरेके२ विकार होते हैं, उससे मलमूत्रके हमेस वेगोमें तरे२के उपद्रव होते हैं, गर्भाधान और प्रसव ये दोनोंही स्वभावादिक पांच समवायोंका धर्म है, और उस क्रियामें विवेक विचार और संभाल जो पुरुषकृत उद्यम समवाय अच्छा नहीं रहे तो प्रसवकी वखतमें समवायोंकी प्रतिकूलतासें केइ किस्मके विकार होते हैं, इसमें अचरजही क्या निरोगी आदमीकों दस्त जितना सहजसे होता है इतनीही सुख शांतीसे प्रसव होय उसकूं सहज स्वभाव प्रसव जाणना और कष्टसें वच्चा होय उसमें विगाड भया समझणा एसे विगाड पुरुष तथा औरतोंके विरुद्ध आचरणोसे होता है, सो विरुद्ध आहार विरुद्ध विहार विरुद्ध चेष्टासे वैठणा उठणा सोणा चलणा दोडणा टेढा झुकणा वगेरे इस सवोंसें पैदा भये विकार और रोगोंका समावेश होता है, ये सव विकार और रोग मनुष्यकृत है, स्वभावजन्य नहीं शरीर रचनाकी खोडोंकूं कितनीक स्वभावजन्य लोक केतेहैं, योगीतत्वदृष्टिसे देखे तो स्वभावजन्य नही कर्म और जीव दोनोंकी कुदरतने पदार्थ पैदा किया और उनोका स्वभावरूप समवायोनें उनोका धर्म पैदा किया है, इन पदार्थोंका योग होणेसें तरे२के पिंड और पदार्थ पैदा होणा ये समवायोसे पदार्थोंका कुदरती धर्म है, पदार्थ अपणे२ धर्म मुजव दुसरे पदार्थोंका मिलाप योग करलेता है, और पदार्थोंका पूरा२ धर्म केवली सर्वज्ञ जाणते हैं, तोभी उनोंका वचनरूप जो श्रुतज्ञान है, सो अपणे मतिज्ञानके क्षयोप- शम मुजव उस मति श्रुति ज्ञानसें मनुष्यभी यथाशक्ति जाण सकता है, उसमें अज्ञान कर्म के वश अनेक भूल और मिथ्या विपरीत योग याने आचरणोंमें जीवकुं लेजाता है, मनुष्यके

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्पग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेंद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सब पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोसें स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाब वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे वेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबंधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)—अव्वल तो कची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ वूरी हालतमें मा और बचेकूं डालता है, अपणे देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही वूरी हालतमें होता है, जिस काममें चतुराई और सब तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और सब तरेकी मुसीबतें धरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवारी धराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मानते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वख्त उसकूं तथा उसकी माताकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजब)—पहली तो एक अंधारी कोटडीमें एक उंडे खूणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन और गंधी चीजोंका भराव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा झोली जैसा खाट सुएवालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवडके काममें आई गई एसी एक गूदडी उसपर विछोणेमें आती है, जापेवालीकूं गंधे मेले फटे टूटे कपडे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते हैं की जापेमें सब चीज मलीनही चहिये जिस बचेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो बालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराब हवा बचेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं बताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोंमें चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस बातकूं जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नहीं रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोंकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म वहोत पालते है एसी जूठी गप्प मारणेकूं नही चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और वदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें वदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा वाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमे न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है न्हाता कृतवलिकर्मा (भाषा) स्नान किया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यों जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो वडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर वहोत लोकोंकों ढूढिये तेरा पंथी नामके साधू है वो वणियोको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा— (उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकू मुक्ति साधन रूप धर्म कब लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशंकर घरवेदूं ग्रंथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेमें वाद देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमें धर्म है जहां वदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा वेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान सोले निपगारोगेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते ऐसे परम पुरुषको मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहकारके वस परमेश्वरके कहे शास्त्र न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीकों

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्पग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सब पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोसें स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाब वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे वेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबंधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)–अव्वल तो कच्ची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ वूरी हालतमें मा और वच्चेकूं डालता है, अपणें देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही वूरी हालतमें होता है, जिस काममें चतुराई और सव तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और मन तरेकी मुसीवतें भरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवारी धराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मांनते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वख्त उसकूं तथा उसकी माताकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजव)–पहली तो एक अंधारी कोटडीमें एक उंडे खूणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन और गंधी चीजोंका भराव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा झोली जैसा खाट सुएवालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवडके काममें आई मई एसी एक गूदडी उसपर विछायेमें आती है, जापेवालीकूं गंध मेले फटे टूटे कपडे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गंदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते हैं की जापेमें सब चीज मलीनही चहिये जिस बच्चेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो बालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराब हवा बच्चेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं बताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोंमे चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस बातकूं जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नही रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म वहोत पालते हैं एसी जूठी गप्प मारणेकूं नहीं चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और वदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें वदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा वाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमें न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतवलिकर्मा (भाषा) स्नान किया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यों जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो वडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर वहोत लोकोंको ढूढिये तेरा पंथी नामके साधू है वो वणियोंको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा— (उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकूं मुक्ति साधन रूप धर्म कब लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशंकर घरवेदूं ग्रंथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेसें वाद देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमें धर्म है जहां वदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा वेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान मेले सिणगारोमेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषकों मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहंकारके वस परमेश्वरके कहे मार्ग न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीकों

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्पग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेंद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सब पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोसें स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाव वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे वेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)—अव्वल तो कची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ वूरी हालतमें मा और वच्चेकूं डालता है, अपणें देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही वूरी हालतमें होता है, जिस काममें चतुराई और सव तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और मर तेरकी मुसीवतें भरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवारी धराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मांनते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वख्त उसकूं तथा उसकी मातांकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजव)—पहली तो नंवारी कोटडीमें एक उंडे खूणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन गंधी चीजोंका नगव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा झोली जैसा खाट सुएवालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवटके काममें आई भई एसी एक गूदडी उसपर विछणेमें आती है, जापेवालीकूं गंध मेले फटे टूटे कपडे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गंदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते हैं की जापेमें सब चीज मलीनही चहिये जिस बचेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो बालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराब हवा बचेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं बताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोमें चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस बातकू जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नही रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोंकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म वहोत पालते हैं एसी जूठी गप्प मारणेकूं नहीं चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और वदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें वदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोंमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा वाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमें न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतवलिकर्मा (भाषा) स्नान किया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यो जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो वडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर वहोत लोकोंकों ढूढिये तेरा पंथी नामके साधू है वो वणियोको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा— (उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकूं मुक्ति साधन रूप धर्म कब लिखते हैं और न ब्राम्हण जटाशंकर घरवेदूं ग्रंथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेसें वाद देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमें धर्म है जहां वदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा वेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान सोले सिणगारोंमेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषको मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहंकारके वस परमेश्वरके कहे न्याय न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीकों

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्पग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सब पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोसें स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाब वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे बेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबंधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)–अव्वल तो कची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ वूरी हालतमें मा और वच्चेकूं डालता है, अपणें देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही वूरी हालतमें होता है, जिस काममें चतुराई और सव तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और मर वेरकी मुसीवतें भरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवागी करते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मांनते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वख्त उसकूं तथा उसकी मातांकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजव)–पहली तो अंधारी कोटडीमें एक उंडे खूणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन और गंधी चीजोंका भराव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा ओली जैसा खाट सुएवालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवडके काममें आई नई एसी एक गूदडी उसपर विछावेमें आती है, जापेवालीकूं गंधे मेले फटे टूटे कपडे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गंदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते है की जापेमें सब चीज मलीनही चहिये जिस बच्चेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो बालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराब हवा बच्चेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं बताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोंमें चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस बातकूं जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नही रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोंकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म वहोत पालते है एसी जूठी गप्प मारणेकूं नहीं चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और वदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें वदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा वाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमें न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतवलिकर्मा (भाषा) स्नान किया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यों जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो वडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर वहोत लोकोंकों ढूढिये तेरा पथी नामके साधू है वो वणियोंको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा— (उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकूं मुक्ति साधन रूप धर्म कब लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशंकर घरवेदूं ग्रथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेसें वाद देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमें धर्म है जहां वदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा वेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान सोले सिणगारोमेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषको मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहंकारके वस परमेश्वरके कहे शास्त्र न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीके

दान देवे सो देणेमें पाप वत्ताकर अणुकंपा दान निषेधे श्रुत केवलीके वनाये शास्त्रोंको न माने और ज्ञानवंत पंडितोंको तुछ समझे गृहस्थका और साधूका सब धर्म एक वतलावै इत्यादिक धर्म और पुन्यकी वातोंमे अनेक कुयुक्तियें लगाकर गृहस्थोंकों उलटे जालमें फसाकर अपणे मान महत्व भोजन वस्त्रका उपाय करे रातकूं जल नहीं रखे और फरागत रातकूं जावे तो पैशावसें गुदा धोवे उसी पात्रमें पेशाव करे उसीमें प्रभातसमे आहार पाणीलाके खावै कोइ पंडित पूछे तो मोयपडिमाका (याने मुक्त पडिमा) नियम धारीका प्रमाण वतलावै शब्दार्थ और है और प्ररूपणा उलटी करे पेशावसे गुदा धोया भया आवस्यक वगेरे परमेश्वरके वचनरूप शूत्रका उच्चारण करे पेशाव कर विना हाथ धोये पुस्तक जो परमेश्वरके तुल्य सूत्र है उनोके हाथ लगावै ये सब काम ओघडोकीतरे करे वो जैन मतके साधू नहीं मन मतके वाधू हैं विचारे भोले जीवोकों धोखे वाजीसें सूत्रका नाम और कल्पित अर्थोसे उलटा समझावै एसे लोकोंकी ऊपरकी मलीनतासें पूर्वोक्त परमेश्वरके हुकम तोडणेसें अंतरंग कषायसे अंदरकीभी मलीनता समझणी दश धर्म यती साधुओंका है उसमे सौच जो कहा है वेसा ऊपर और अंदर द्रव्य करके और भाव करके शुद्ध वो जैनके साधू है भगवती सूत्रमें पंचमे कालमें दो प्रकारके साधू अभी वतलाये हैं वो साधू ही यथार्थ है वकुस १ और कुशील २ एकेकका पांच २ भेद है उस सूत्र और टीकासे देख लेणा ग्रंथ वढणेके सवव नहीं लिखा जैन वगेरे सैवादिक पवित्रता पूर्वोक्त कारणके लिये मानते हैं इति प्रश्नोत्तर । हे महोदय, जैन धर्मका चलणा इस दुनियांमे सव धर्मोसे पहिला है इस वातका निश्चय देश अमेरिका चीकागो सहरमें वड २ यूरोपी विद्वानोंने दरयाप्त करके लिख दिया है पुस्तकोमें पुस्तक पुराणा लिखा वेदका उनोंने साबत किया है क्योंकी जैन धर्मका ग्यान कंठाग्र मुनियों के था इसवास्ते सव लिखा नहीं था लेकिन् ये तो स्वतः सिद्ध हो गयाके जिसका धर्म पहली उसका ज्ञान पहली ज्ञान विगर धर्म हरगिज नहीं याद शक्ति जवरके कारण नहीं लिखा तिनोंकी वुद्धि कमथी उनोंने मत चलाते लिख लिया होगा लेकिन जैन धर्ममेंसे निकले तीन फिरका उनोंकी चलन देख अन्य लोकोंने जैन धर्मकूं तीन कलंक लगाये तीर्थंकरकी नग्न मूर्ति दिगांवरोंने वनाई उससे लोक जैनोंकें नंगे देव कहणे लगे वेभी मूर्ति रखती है जैनोंकी नहीं १ दूसरे मलीनता याने ऋतु धर्म स्त्रीकूं आवे उसमें कुछ वात नहीं शरीर चाहे गृहस्थका कमाइ हो लेकिन सामायक भगवंतका नाम सुणणा वगेरे शुभ काम करते रहो ये तेरा पंथके मतका देख जैन धर्मकूं मलीन लोक कहते रहे लेकिन वानप्रस्थ आश्रममें जो मलीनता तथा वेदोंका यज्ञ अश्वमेध गउमेध मोम यज्ञमें वडे प्रमुख अनेक जीवोंकों मारणा और मांस खाणा सौत्रामणी यज्ञ कर मदिरा पीणा इत्यादि अपवित्रतासें अंतरंग है मलीन जिनोंका वो मलीन है जैन धर्म

दया मई होनेसें ये मलीनता जैनोमें नहीं २ तीसरे दान पुन्य निषेध रूप उपदेश विल्ली चूएकूं मारती होय तो छुडाणा नही इत्यादिबातोसें तेरा पथियोंकी चलन देख लोक जैन धर्मकूं कलंक लगाते हैं ये बात भी अपणे स्वार्थमें तत्पर एसे शास्त्रोकों बणाणेवाले अपणी जातिकी उच्च दसा दिखाकर अपणे पुराण और स्मृतियोंमें केइ जगे लिखा है के फक्त दान देनेका पात्र एक जगत्में ब्राम्हन है दुसरे सब पाषंडी है पाषंडियोंको देनेमें वडा पाप है विल्ली चूहेकु मारते नहीं छुडाणा ये बातभी वहोत अनार्य निर्दइ म्लेछ कहते हैं के वो उसका भक्ष है छोडावे तो अंतराय कर्म बंधता है वेदांती ब्रम्ह अद्वैत वादीयोंका भी यही सिद्धांत है ब्रह्म तो मरता नहीं वाकी तो सब स्वप्नवत् जूठा है ब्रह्मनें ब्रह्मकूं मारा ब्रह्मकूं पाप लगता है नहीं चार्वाकभी मारणेमें पाप बचाणेमें पुन्य नहीं मानते हैं जीवकूं मारते देख अपणी शक्ति मुजब नहीं छुडावे और करुणा नहीं आवै ये काम नर्क जाणेवाले चंडाल विना दुसरेके कभी नहीं हो सकते ये बातभी जैन धर्ममें नही है के दान न देणा और मरतेकूं नहीं बचाणा ३ जैन धर्ममें ये तीनोंही बात नहीं, पुन्य मुक्ति जाते हुये जीवके वोलाउरूप है तेरमे गुणस्थानकतक पुन्य जीवके संग रहता है ये तीनोंही कल्पना मनुष्य कृत है तीर्थंकर तो स्याद्वादनयसें उपदेश करते हैं उनोके वचनका एक नय पकडके जो अपणा मत थापे वो मिथ्यात्वी देखो भगवंत कहते हैं व्यवहार नयसें पुन्य आदरणे योग्य निश्चय नयसें छोडणे योग्य अब विचारणा साधूपणा श्रावकपणा तप जप विहार वगेरे और सब कियानुष्ठान व्यवहारनयकू प्रवल मान कर व्यवहार साधते हैं और कहते हैं व्यवहार साधणा चाहिये निश्चय धर्म तो केवली जाणते हैं लोक तो जिसका व्यवहार शुद्ध देखते हैं उसका इस लोकमें प्रतिष्ठा सत्कार करते हैं सब मतोंवाले तो फेर पुन्य करणेमे व्यवहारनयकूं केसें उठाया निश्चय नयतो भाव आश्री है जिसकूं मनका परणाम कहते हैं प्रत्यक्ष देखते हैं दिया भया निरफल होता ही नहीं जेसा २ अगला पात्र इत्यलं इसवास्ते बालक जन्मणा ये एक मंगल काम है इस जगे सब सामग्री पवित्र उजाला और शुद्ध हवा चहिये जिस जगे वडी भूल अपणे २ न्यात जात मुजब अलग २ रीतरीवाज रूढी आचारके आधीन होकर बच्चा और जापेवालीका केसा संस्कार करते हैं।

(जापेवालीका उपचार)–खाट हवाकी जगे उजाला होय उहां रखणा उस जापेवालीके आस पास वहोत भीड तथा बात चीत नहीं होणे देणा पीड सरू भये पीछे वहोत करके २४ घंटेके अंदर बच्चेका जन्म होता है जो पीड वहोत कष्टके संग आवे अथवा कोइ दुसरा कारण बणे तो बच्चा होते २ औरत हेलती है और जो बच्चा सुख शांतिमें होय तो भी औरतकूं वडा परिश्रम पडता है इसवास्ते बच्चा भये बाद उसकू थोडे घटोंतक विसरामके लिये सोणे देणा जो नींद आजायगी तो थकेला उतर जाता है

और हुसियारीमें आती है जो नाताकती बहोत मालम दे और नींद नहीं आवै तो जाग्रती और ताकत लाणेवाली दवा देणी द्राक्षासव देशी वैद्य देते हैं डाकटर वाइन और ब्रांडी देते हैं किसीतरे हुसियारीमें लाणा ऊपर लिखे मुजब एक नींद लिये पीछै और हुसियारीमें आये पीछै पाणीमें वेरकी जडकी छालकूं उकाल दिनमें दो चार वेर अथवा पाणीमें ब्रांडी मिलाय योनिके वाहरके भागोकूं धोणा चहिये और आमल गिर गये पीछै गरम पाणीमें कपडा डुवाकर वाहरके भागपर वेर २ धरणा जापेवालीकूं थोडे दिनोंतक तो खाटमेंही सुलाये रखणा विछोणेमेंसे ऊठके फिरणे घिरणेसें वैठणेसें गर्भस्थान खिस जाता है खून गिरणे लग जाता है और उससें दुसरे वडे २ डरावणेवाले रोग पैदा हो जाते हैं आठ दिनतक तो जरूर सुलाये ही रखणा दस्त पेसावभी उसी खाटमें पडीकूं ही कराणा वाद वैठणे उठणेकी जरा २ टेव डालणी पनरे दिन पीछै हाल चाल करणी सो भी हलू २ अपणे लोक एसी तजवीज कुछ नहीं रखते इसवास्ते योनिमें केइ २ तकलीपें पैदा हो जाती है इस वातका पूरा २ खयाल औरतोंने रखणा परिश्रम मैथुन गुस्सा ठंढा और वासी पदार्थ हवाकी जगा उसकूं त्यागणा एक महीनेतक थोडा और हलका भोजन लेणा हमेस सेक करणा और तैल मसलाणा ।

(दुष्ट कष्टीपणा)–पीड चले पीछै २४ घंटेमें प्रसव होणा चहिये और होय नहीं कष्ट पडे जाणना चहिये वच्चा आडा पडणेसें अथवा वच्चेका शिरवडा होय अथवा औरतके कोइ दुसरी इजा होणेसें वैठकमें सख्तमल वंधा भया रहणेसें अथवा गर्भस्थानमें वहोत पाणी होणेसें वो ढीला होता सुस्त होता है और चहिये जितने जोरसे सुकडता नहीं और इसतरे होनेसें कमलका मूं चहिये जितना खुलता नहीं उस करके गर्भ वाहर नहीं निकल सकता दाइ उसकू जोरसें करांजणेका कहती है उससें भी उसकूं वहोत कष्ट होता है ।

(इलाज)–दस्त कब्ज होय तो गरम जलकी या एरंड तेलकी पिचकारी लगाणी२ वहोत थकेला होय तो थोडी देर सोणे देणा–(गर्भका वेग)–वच्चा जणती वखत जो आता है गर्भाशयकी शिथलताके कारण वहोतसी वख्त वेग वंध होता है इसवास्ते एसी दवा उस वख्त देणी चहिये सो वेग चला आवै लेकिन् गर्भ अटकणेका दुसरा कोइ कारण होय तो वेगकी दवा फायदा नहीं करती टंकण और अरगट ये दोनों दवा वेग लाता है ।

(रक्त स्राव)–वच्चा भये पीछै ऋतू धर्मकीतरे खून गिरता है उस खूनके संग आमलका कितनाक हिस्सा तथा गर्भस्थानमें रहा भया कितनाक कचरा वाहर आता है ये स्राव धीरे २ कम होता है और रंग वदलणे लगता है ये खून और खून मिला भया जुदे २ रंगका पाणी दश पनरे दिनतक चलते रहता है और पीछै वंध होता है

इसकूं दवा दे कर एकदम बंध करना नहीं गरम पाणीमें कपडा भिगाकर वाहरके द्वारपर धरणा अथवा ठंढा पाणी एसे श्रावकूं तुरत बंध कर देता है उससे फायदेके वदले उलटा नुकशान दुसरा रोग पैदा होता है किसी वख्त जव खून जादा जाता है तो नाताकतीकाडर होता है इसवास्ते अत्पार्त्तव रोगपर लिखे भये इलाज करणा।

(जखम)–वहोत सीदाइयें धीरज और सावचेती नहीं रखकर जल्दीसें वच्चकू खेंचणेकी अजमायस करती है उससें औरतके इजा होती है अंदरमें फटकर चीरे पडते है वो जखम वडी मुस्किलसें रुकते हैं उसकूं गरम पाणीसे धोणा आपसमें दोनो वाटिये घसीजे नहीं इसवास्ते चलणे नही देणा नरमदस्त आवै एसी दवा देणी (खुराक)–मुलक २ के जात २ के अलग २ रीत रिवाज चल रही है इसवास्ते इहां सामान्य खुराक में लिखूगा इतनाही वस है तैलंग देशमें तीन दिन जापेवालीकू लघन कराते हैं सो ताकतवर औरत या कोई सामज्वरवालीकूं फायदेवंद है लेकिन नाजुक और नाताकतीवालीके लिये अछा नहीं ये लघन इस मुजव कराणा चाहिये वच्चा भये वाद चार पांच दिनतक सावू दाणोका दलिया थोडा फुलका पुराणे साठी चावल दूध चाह एसा पतला और हलका खुराक देणा और पीछे हलवा वगेरे घीवाला खुराक देणा।

(अधूराजाणा)–गर्भ रह्यां पीछै ७ महीनेके अंदर अधूरा गिर जाता है सातमें महीनेसे लेकर नवमे महीनेके पहली जो वच्चा होता है वो सतमासिया अठमासिया कहलाता है वो भी अधूराही गिणा जाता है अधूरा जादा करके तीसरे महीने जाता है वो वधा भया जादा नही होनेसें खूनही गिरता है चोथे महीने पीछै गर्भका शरीर करडा वंधता है वो गिरणा गर्भपात कहलाता है अधूरा एक वेर पडे पीछै वेर २ गिरणेका डर है कुसुआवडसें औरतका शरीर वहोतही विगड जाता है। (कारण)–नाताकती अयोग्य आहार विहार और महनत गुस्सा डर कामविकार उंचा नींचा गिरणा गर्भाशयकी नाताकती अथवा उसका रोग वगेरे उसका कारण है गरमीके दोप वाले वीर्यसें और नाताकत औरतके रहा भया गर्भ पूरे महीने टिक नहीं सकता जो कभी हो भी जाता है तो जीता नहीं (लक्षण)–वेचैनी आलस थकेला कमर तथा पेडूमें शूल थोडा २ खून झरणा ये उसके पूर्व लक्षण है पीछै जणणेके वख्त केइ यक चिन्ह मालम देते ही एकदम अधूरा गिर जाता है अथवा ये चिन्ह थोडे दिन कायम रहके पीछै होता है वहोत खून गिरणा ये जोखम तथा मोतकी निसाणी है– (इलाज)–जो खून थोडा गिरे तो गर्भ थांभणेका इलाज करणा १रोगीली औरतकू एक टटकी जगामें करडे विछोणेपर अत्यंत सुख शांतिमें सुलाये रखणा २ अत्पार्त्तवका इलाज करणा चार आनाभर फुलाई भई फिटकडीकू अधसेर जलमें मिला चार २ घटेमें नीतरा भया जल पिलाते रहणा ३ क्लोरोडाइनकी ३० वूंद एक औस पाणीमें मिलाकर पीणा खूनका

जोर वढता दीखे तो कुसुआ वड होगा एसा समज उसका इलाज करणा ४ फिटकडी का पाणी पिलाते रहणा और ठंढे पाणीका पोता योनीपर धरते जाणा इससे खूनका प्रवाह वंध होता है कोइ भाग अंदर रह गया होय तो अंगली डाल निकाल देणा आठ दिनोंतक सुलाये रखणा खुराक सादा देणा दस्तका खुलासा रखणा जो अधूरेवाली औरत तुरत ऊठ काममे लगती है उसके गर्भाशयके अनेक रोग होते हैं उसमें गर्भाशय भ्रष्ट होणा मुख्य है ।

(सूआ रोग)–जो जापेमें रोग रह जाता है उसकूं सूआ रोग कहते हैं वुखार खासी उलटी सोजा शूल मंदाग्नि अरुचि तथा फीकाश ये उसके लक्षण है किसी २ कूं अपचा मोल उलटी आफरा दस्त शूल अरुचि दस्तकी कब्जी शिरमें दरद वगेरे वायू प्रधान चिन्ह होते हैं किसी २ के हाथ पैरोमें दाह पेशाबमें जलण तथा उष्ण वाय मूंका आणा मसूंडे फूल जाणा शरीरमें फीकाश पेटमें दाह पसीना जादा वदनका तूटणा पित्त प्रधान चिन्ह होते हैं इसके सिवाय ऋतूसंवंधी तथा गर्भाशय वगेरे स्थानिक विकारभी मालम देता है (इलाज)–देवदार्व्यादि काथ नं० २१८) नयेसु ये रोगमें वहोत फायदे वंद है और सुवाके तमाम रोगोकों मिटा देता है २ वायूके चिन्ह होय तो नं० २७६ का सौभाग्य सूंठीपाक देणा) लोक इसकूं कम देते हैं ३ पित्तके चिन्ह होय तो नं० ३७३ का) जीरापाक देणा ४ वत्तीसा तपखीर रत्तल २ सूफ तो १० धाणा तो १० सुपेद वच तो २॥ इलायची तो २॥ गुलाबका फूल तो ५ कपूरकाचरी तो ५ तमालपत्र तो २॥ चूर्ण करके इनोंके वरावर मिश्री इनमें इतनाही ताजा घी विदाम पिस्ता मिलाकर गोलियें देणी मात्रा ५ से १० तोला ५ लोह अथवा मंडूर त्रिकटुके संग घी सहतमें चाटणा इसके सिवाय हमारे विद्याशालाकी सूतिका भरण रश सन जापेके रोग मिटाता है ।

वंध्यत्व-वांझडीपणा.

(विवेचन)–वांझडीपणा दो प्रकारका है पहलेसे ही गर्भका नहीं रहणा वो तो शुद्ध वांझडी और एकाददफे गर्भ रह गये पीछे गर्भ वंध पडता वो अशुद्ध वांझडीपणा वांझडीका दोष अथवा रोगकूं औरतोंके रोगोंके प्रकरणमें दाखल करणेका कारण यहेकी गर्भ धारणेवाली स्त्री है इतनाही नहीं जादा संवंध तो स्त्रीके दरदोंके साथ है लेकिन गर्भ रहनेमें पुरुषोंकाभी पूरा २ विगाड है दोनों औरत और मरदमेंमें जिसकी खलल होय उसकी परिक्षा पूर्ण विद्वान वैद्य पास कराणा चहिये इकेली औरतका दोष मानकर दुसरा व्याह नहीं करणा चाहिये कारण इतनी दो दो चीजें आपसमें लडे विगर हरगिज नहीं रहे एक वनमें दो सेर एक पंथमें वंधे दो हत्थी एक म्यानमें दो तलवार दो गलाका दड एक गव्वर एक पुरुष दोय औरत एक गलाके वरोवरीके दो प्रधान

रोगी एक पर दोय वैद्य इतने दो दो कभी एक जगे अछे नहीं इसवास्ते राजा महाराजोंकी वात अलग है कारण आपसमें मिलणे नहीं देते और एक स्त्रीपर प्रेम राम जेसे रख्खा वेसा रहता है वहोत स्त्रियोंपर प्रेम कृष्णने रख्खा वेसा रहता है आपसमें तानेमोसे होतेइ रहते हैं वहोत मूर्ख कहा करते हैं वांझडीका इलाज है ही नहीं क्योंकी उनोंने वैद्यक शास्त्र पूरा जाणा नहीं कारण वांझडीपणा ये वदनका येक रोग है सो शस्त्रसें या दवासें मिट सकता है जव जमीनका और वीजका स्वरूप विचारेंगें तो ये सव वात समझमें आ जायगी जेसे जमीन अशुद्ध झाडी और झाखरवाली पथरोकी खार वाली और पाणीभी वेमोसमका खराव और खात विगर डाली भई जमीन विगर संस्कारकी होती है तो उसमें अछा वीजभी पैदा नहीं होता जो कभी पैदा होता है तो फल या दाणे नहीं पकते इस किसम जो जमीन सव किस्म अछी हो और उसमें वोणेका वीज विगडा भया सडा भया होय तो यही हाल होता है अपणे प्रत्यक्ष देखते हैं एसी खराव जमीनकूं हलसें फोड खात डाल अनेक जतनोंसे सुधारेवाद उसमें अछा वीज वोया जाय तो अछे फल लगते हैं इसी किस्म औरतका वदन निरोग मेद मलीचपणा सोजा गांठ जखम गरमी पीप पकणा धातू गिरणा खून गिरणा वगेरे होय तो दूर करणा तो फल देणेवाली होती है वांझडी होणेका कारण—औरतके योनिमें स्वभावसें खोड जेसे कमलका मूं टेढा चमडीका पडदा अथवा कमलका मू संकडा और स्त्री अंडकी अपूर्ण स्थिती २ औरतके शारीरक दोप जेसेके रजोत्पत्तीकी कसर अथवा विकार अथवा वदन फूल जाणा अथवा जल जाणा जादा तातपणा सूवा रोग वगेरे ३ (स्थानिक दोष)—जेसेंके गर्भाशय प्रदर गर्भाशयका वरम गर्भाशयमें चरवी गांठ वगेरेका जमाव गर्भाशयका फिर जाणा टेढा होणा कमल मुखका वरम तथा जखम योनी मार्गका सोजा दाह तथा असहणा गरमी सुजाक वगेरे चेपी रोग ४ पुरुषके वीर्यका दोप जेसे थोडा वीर्य दूपित वीर्य गरमी सुजाक वगेरे अथवा इनोसें भया दुसरा रोग।

(इलाज) वहोतसे रोग तथा दोषोंका इलाज इस किरणमें तथा पीछे लिख दिया है इहां विस्तारसें लिखणेकू अवकास नहीं है शारीरक या स्थानिक रोग मालम पडे वो मिटाणेका और सामान्य आरोग्यता वधाणेका इलाज करणा एसे रोग उलटे वंद एसा आहार विहारसें दूर रहणा पवित्रता और अछी आचरणा और सादा खुराक देणा।

(गर्भ पैदा करणेवाले इलाज)—गर्भाशयकी शुद्धि करके गर्भ धारणमें मदत करे एसे थोडे सामान्य इलाज इहां लिखते हैं १ फल घृत न० २८९, २ योगराज गूगल नं० ५८, ३ उडद तिल पुराणा वांस गुड मूलीके वीज गाजरके वीज दही खट्टी छाछ कवारपठा गूगल ए लियेसें ऋतू धर्म आता है ४ मालकांगणीके पत्ते सातीखार वज

जोर वढता दीखे तो कुसुआ वड होगा एसा समज उसका इलाज करणा ४ फिटकडी का पाणी पिलाते रहणा और ठंढे पाणीका पोता योनीपर धरते जाणा इससे खूनका प्रवाह वंध होता है कोइ भाग अंदर रह गया होय तो अंगली डाल निकाल देणा आठ दिनोंतक सुलाये रखणा खुराक सादा देणा दस्तका खुलासा रखणा जो अधूरेवाली औरत तुरत ऊठ काममे लगती है उसके गर्भाशयके अनेक रोग होते हैं उसमें गर्भाशय भ्रष्ट होणा मुख्य है ।

(सूआ रोग)–जो जापेमें रोग रह जाता है उसकूं सूआ रोग कहते हैं वुखार खासी उलटी सोजा शूल मंदाग्नि अरुचि तथा फीकाश ये उसके लक्षण है किसी २ कूं अपचा मोल उलटी आफरा दस्त शूल अरुचि दस्तकी कव्जी शिरमें दरद वगेरे वायू प्रधान चिन्ह होते हैं किसी २ के हाथ पैरोमें दाह पेशाबमें जलण तथा उष्ण वाय मूंका आणा मसूंडे फूल जाणा शरीरमें फीकाश पेटमें दाह पसीना जादा वदनका तूटणा पित्त प्रधान चिन्ह होते हैं इसके सिवाय ऋतूसंबंधी तथा गर्भाशय वगेरे स्थानिक विकारभी मालम देता है (इलाज)–देवदार्व्यादि काथ नं० २१८) नयेसु ये रोगमें वहोत फायदे वंद है और सुवाके तमाम रोगोकों मिटा देता है २ वायूके चिन्ह होय तो नं० २७६ का सौभाग्य सूंठीपाक देणा) लोक इसकूं कम देते हैं ३ पित्तके चिन्ह होय तो नं० ३७३ का) जीरापाक देणा ४ वत्तीसा तपखीर रत्तल २ सूफ तो १० धाणा तो १० सुपेद वच तो २॥ इलायची तो २॥ गुलाबका फूल तो ५ कपूरकाचरी तो ५ तमालपत्र तो २॥ चूर्ण करके इनोंके वरावर मिश्री इनमें इतनाही ताजा घी विदाम पिस्ता मिलाकर गोलियें देणी मात्रा ५ से १० तोला ५ लोह अथवा मंडूर त्रिकुटके संग घी सहतमें चाटणा इसके सिवाय हमारे विद्याशालाकी सूतिका भरण रश सव जापेके रोग मिटाता है ।

वंध्यत्व-वांझडीपणा.

(विवेचन)–वांझडीपणा दो प्रकारका है पहलेसे ही गर्भका नहीं रहणा वो तो शुद्ध वाझडी और एकाददफे गर्भ रह गये पीछे गर्भ वंध पडता वो अशुद्ध वांझडीपणा वाझडीका दोष अथवा रोगकूं औरतोके रोगोके प्रकरणमें दाखल करणेका कारण यहही गर्भ धारणेवाली स्त्री है इतनाही नहीं जादा संवंध तो स्त्रीके दरदोंके साथ है लेकिन गर्भ रहनेमें पुरुषोंकाभी पूरा २ विगाड है दोनों औरत और मरदमेंमें जिसकी खलल होय उसकी परिक्षा पूर्ण विद्वान वैद्य पास कराणा चहिये इकेली औरतका दोष मानकर दूसरा व्याह नहीं करना चाहिये कारण इतनी दो दो चीजें आपसमें लडे विगर हरगिज नहीं रहते एक वनमें दो सेर एक थंभमें वंधे दो हत्थी एक म्यानमें दो तलवार दो राजाका दल एक राज्यपर एक पुरुष दोय औरत एक राजाके वरोवरीके दो प्रधान

रोगी एक पर दोय वैद्य इतने दो दो कभी एक जगे अछे नहीं इसवास्ते राजा महरा-
जोंकी वात अलग है कारण आपसमें मिलणे नहीं देते और एक स्त्रीपर प्रेम राम जेसे
रख्खा वेसा रहता है वहोत स्त्रियोंपर प्रेम कृष्णने रख्खा वेसा रहता है आपसमें ताने
मोसे होतेइ रहते हैं वहोत मूर्ख कहा करते हैं वांझडीका इलाज है ही नहीं क्योंकी
उनोंने वैद्यक शास्त्र पूरा जाणा नही कारण वांझडीपणा ये वदनका येक रोग है सो
शस्त्रसें या दवासें मिट सकता है जव जमीनका और वीजका स्वरूप विचारेंगें तो ये
सव वात समझमें आ जायगी जेसे जमीन अशुद्ध झाडी और झाखरवाली पथरोंकी
खार वाली और पाणीभी वेमोसमका खराव और खात विगर डाली भई जमीन विगर
संस्कारकी होती है तो उसमें अछा वीजभी पैदा नहीं होता जो कभी पैदा होता है तो
फल या दाणे नहीं पकते इस किसम जो जमीन सव किस्म अछी हो और उसमें
वोणेका वीज विगडा भया सडा भया होय तो यही हाल होता है अपणे प्रत्यक्ष देखते
हैं एसी खराव जमीनकूं हलसें फोड खात डाल अनेक जतनोंसे सुधारेवाद उसमें अछा
वीज वोया जाय तो अछे फल लगते हैं इसी किस्म औरतका वदन निरोग मेद मली-
चपणा सोजा गांठ जखम गरमी पीप पकणा धातू गिरणा खून गिरणा वगेरे होय तो
दूर करणा तो फल देणेवाली होती है वांझडी होणेका कारण—औरतके योनिमें स्वभावसें
खोड जेसे कमलका मूं टेढा चमडीका पडदा अथवा कमलका मूं संकडा और स्त्री
अंडकी अपूर्ण स्थिती २ औरतके शारीरक दोप जेसेके रजोत्पत्तीकी कसर अथवा विकार
अथवा वदन फूल जाणा अथवा जल जाणा जादा तातत्पणा सूवा रोग वगेरे ३
(स्थानिक दोप)—जेसेंके गर्भाशय प्रदर गर्भाशयका वरम गर्भाशयमें चरवी गांठ
वगेरेका जमाव गर्भाशयका फिर जाणा टेढा होणा कमल मुखका वरम तथा जखम
योनी मार्गका सोजा दाह तथा असहणा गरमी सुजाक वगेरे चेपी रोग ४ पुरुपके
वीर्यका दोप जेसे थोडा वीर्य दूपित वीर्य गरमी सुजाक वगेरे अथवा इनोसें
भया दुसरा रोग ।

(इलाज) वहोतसे रोग तथा दोपोंका इलाज इस किरणमें तथा पीछे लिख दिया
है इहां विस्तारसें लिखणेकू अवकास नहीं है शारीरक या स्थानिक रोग मालम पडे वो
मिटाणेका और सामान्य आरोग्यता वधाणेका इलाज करणा एसे रोग उलटे वंद एसा
आहार विहारसें दूर रहणा पवित्रता और अछी आचरणा और सादा खुराक देणा ।

(गर्भ पैदा करणेवाले इलाज)—गर्भाशयकी शुद्धि करके गर्भ धारणमें मदत करे
एसे थोडे सामान्य इलाज इहां लिखते हैं १ फल घृत न० २८९, २ योगराज गूगल
नं० ५८, ३ उडद तिल पुराणा वांस गुड मूलीके वीज गाजरके वीज दही खट्टी छाज
कवारपठा गूगल ए लियेसें ऋतू धर्म आता है ४ मालकांगणीके पत्ते साजीखार वच

जोर वढता दीखे तो कुसुआ वड होगा एसा समज उसका इलाज करणा ४ फिटकडी का पाणी पिलाते रहणा और ठंढे पाणीका पोता योनीपर धरते जाणा इससे खूनका प्रवाह वंध होता है कोइ भाग अंदर रह गया होय तो अंगली डाल निकाल देणा आठ दिनोंतक सुलाये रखणा खुराक सादा देणा दस्तका खुलासा रखणा जो अधूरेवाली औरत तुरत ऊठ काममे लगती है उसके गर्भाशयके अनेक रोग होते हैं उसमें गर्भाशय भ्रष्ट होणा मुख्य है ।

(सूआ रोग)–जो जापेमें रोग रह जाता है उसकूं सूआ रोग कहते हैं वुखार खासी उलटी सोजा शूल मंदाग्नि अरुचि तथा फीकाश ये उसके लक्षण है किसी २ कूं अपच्चा मोल उलटी आफरा दस्त शूल अरुचि दस्तकी कब्जी शिरमें दरद वगेरे वायू प्रधान चिन्ह होते हैं किसी २ के हाथ पैरोमें दाह पेशाबमें जलण तथा उष्ण वाय मूका आणा मसूंडे फूल जाणा शरीरमें फीकाश पेटमें दाह पसीना जादा वदनका तूटणा पित्त प्रधान चिन्ह होते हैं इसके सिवाय ऋतूसंबंधी तथा गर्भाशय वगेरे स्थानिक विकारभी मालम देता है (इलाज)–देवदार्व्यादि काथ नं० २१८) नयेसु ये रोगमें वहोत फायदे वंद है और सुवाके तमाम रोगोकों मिटा देता है २ वायूके चिन्ह होय तो नं० २७६ का सौभाग्य सुंठीपाक देणा) लोक इसकूं कम देते हैं ३ पित्तके चिन्ह होय तो नं० ३७३ का) जीरापाक देणा ४ वत्तीसा तपखीर रत्तल २ सूफ तो १० धाणा तो १० सुपेद वच तो २॥ इलायची तो २॥ गुलाबका फूल तो ५ कपूरकाचरी तो ५ तमालपत्र तो २॥ चूर्ण करके इनोंके वरावर मिश्री इनमें इतनाही ताजा घी विदाम पिस्ता मिलाकर गोलियें देणी मात्रा ५ से १० तोला ५ लोह अथवा मंडूर त्रिकटुके संग घी सहतमें चाटणा इसके सिवाय हमारे विद्याशालाकी सूतिका भरण रस सव जापेके रोग मिटाता है ।

वंध्यत्व-वांझडीपणा.

(विवेचन)–वांझडीपणा दो प्रकारका है पहलेसे ही गर्भका नहीं रहणा वो तो शुद्ध वांझडी और एकाददफे गर्भ रह गये पीछे गर्भ वंध पडता वो अशुद्ध वांझडीपणा वांझडीका दोप अथवा रोगकूं औरतोंके रोगोंके प्रकरणमें दाखल करणेका कारण यहेकी गर्भ धारणेवाली वो है इतनाही नहीं जादा संवंध तो स्त्रीके दरदोंके साथ है लेकिन गर्भ रहनेमें पुरुषोंकाभी पूरा २ विगाड है दोनों औरत और मरदमेंमें जिसकी खलल होय उसकी परिक्षा पूर्ण विद्वान वैद्य पास कराणा चहिये इकेली औरतका दोप मानकर दूसरा व्याह नहीं करणा चाहिये कारण इतनी दो दो चीजें आपसमें लडे विगर हरगिज नहीं रहते एक वनमें दो सेर एक थंभमें वंधे दो हत्थी एक म्यानमें दो तलवार दो राजाका दल एक राज्यपर एक पुरुष दोय औरत एक राजाके वरोवरीके दो प्रधान

रोगी एक पर दोय वैद्य इतने दो दो कभी एक जगे अछे नही इसवास्ते राजा महराजोंकी वात अलग है कारण आपसमें मिलणे नहीं देते और एक स्त्रीपर प्रेम राम जेसे रख्खा वेसा रहता है वहोत स्त्रियोंपर प्रेम कृष्णने रख्खा वेसा रहता है आपसमें ताने मोसे होतेइ रहते हैं वहोत मूर्ख कहा करते है वांझडीका इलाज है ही नही क्योंकी उनोंने वैद्यक शास्त्र पूरा जाणा नही कारण वांझडीपणा ये वदनका येक रोग है सो शस्त्रसें या दवासें मिट सकता है जव जमीनका और वीजका स्वरूप विचारेंगें तो ये सव वात समझमें आ जायगी जेसे जमीन अशुद्ध झाडी और झाखरवाली पथरोंकी खार वाली और पाणीभी वेमोसमका खराव और खात विगर डाली भई जमीन विगर संस्कारकी होती है तो उसमें अछा वीजभी पैदा नहीं होता जो कभी पैदा होता है तो फल या दाणे नहीं पकते इस किसम जो जमीन सव किस्म अछी हो और उसमें वोणेका वीज विगडा भया सडा भया होय तो यही हाल होता है अपणे प्रत्यक्ष देखते हैं एसी खराव जमीनकूं हलसें फोड खात डाल अनेक जतनोंसे सुधारेवाद उसमें अछा वीज वोया जाय तो अछे फल लगते हैं इसी किस्म औरतका वदन निरोग मेद मलीचपणा सोजा गांठ जखम गरमी पीप पकणा धातू गिरणा खून गिरणा वगेरे होय तो दूर करणा तो फल देणेवाली होती है वांझडी होणेका कारण—औरतके योनिमें स्वभावसें खोड जेसे कमलका मूं टेढा चमडीका पडदा अथवा कमलका मू संकडा और स्त्री अंडकी अपूर्ण स्थिती २ औरतके शारीरक दोप जेसेके रजोत्पत्तीकी कसर अथवा विकार अथवा वदन फूल जाणा अथवा जल जाणा जादा तातत्पणा सूवा रोग वगेरे ३ (स्थानिक दोप)—जेसेके गर्भाशय प्रदर गर्भाशयका वरम गर्भाशयमें चरवी गांठ वगेरेका जमाव गर्भाशयका फिर जाणा टेढा होणा कमल मुखका वरम तथा जखम योनी मार्गका सोजा दाह तथा असहणा गरमी सुजाक वगेरे चेपी रोग ४ पुरुषके वीर्यका दोप जेसे थोडा वीर्य दूपित वीर्य गरमी सुजाक वगेरे अथवा इनोसें भया दुसरा रोग।

(इलाज) वहोतसे रोग तथा दोपोंका इलाज इस किरणमें तथा पीछे लिख दिया है इहां विस्तारसें लिखणेकू अवकास नहीं है शारीरक या स्थानिक रोग मालम पडे वो मिटाणेका और सामान्य आरोग्यता वधाणेका इलाज करणा एसे रोग उलटे वंद एसा आहार विहारसें दूर रहणा पवित्रता और अछी आचरणा और सादा खुराक देणा।

(गर्भ पैदा करणेवाले इलाज)—गर्भाशयकी शुद्धि करके गर्भ धारणमें मदत करे एसे थोडे सामान्य इलाज इहां लिखते हैं १ फल घृत न० २८९, २ योगराज गूगल न० ५८, ३ उडद तिल पुराणा वांस गुड मूलीके वीज गाजरके वीज दही खट्टी छाछ कवारपठा गूगल ए लियेसें ऋतू धर्म आता है ४ माळकांगणीके पत्ते साजीखार वा

तथा मिलावा इनोंकों पीस पीणेसें ऋतू धर्म आता है ५ बल बीज जेठीमधु खपाट वड वाइकी नरमसाखें नागकेशर तथा मिश्री सहत दूध तथा घीमें पीणा ६ आस गंधके काथमें पकाया भया घी प्रभातसमें पीणा ७ पुष्प नक्षत्रमें सुपेद रींगणीकी जड निकालके दूधमें पीस कर पीणा ८ पीले फूलोंका कांटा शेलियाकी जड धावडीका फूल वडकी शाख काला कमल उसकूं पीस दूधमें पीणा ९ जीरा सपेद फूलोंका सरपंखा और पारस पीपलका फल वांटकर पीणा १० खाखरा (पलासके पत्ते) दूधमें पीस कर पीणा इन इलाजोकों ऋतु स्नान करे पीछै १ से ८ दिनतक अजमाकर गर्भाधान करणा ।

किरण ११ मी.

बच्चोंका रोग.

जेसें औरतोंके केइयक रोग अलग होते हैं तेसे बच्चोंके केइयक रोग अलग २ होते हैं जेसेके दांत आणा वांइटे कृमि ओरी अचवडा खुलखुलिया खासी गाल पचोरिया इतना और भी तफावत है के वडी ऊमरवालेका और बच्चेकी नाजुक मिजाजके कारण इलाजोमें फेरफार करणा पडता है बच्चोंकी पिलाणेवाली दवाओंमें अफीम सोमल पारा धतूरा वछनाग हाइड्रोस्यानिक एसिड फोसफरस तथा कितनेक सख्त ऐसिड और क्षारोका देणा वणे जहांतक कभी नहीं करणा एसा विद्वान वैद्य और तबीबोंका फुरमाण हैं आरोग्यताके साथ ऊमरकी उन्नती चाहणेवाले वैद्य और डाकटर जो परोपकारी है सो इन चीजोका वरताव विलकुल नहीं करते हैं अव बच्चोंका सादा और हमेसा केलिये अछा एसा सामान्य इलाज लिखते है.

(जन्म घूटी)–(गलथूथी)–बच्चा जव जन्मता है तव उसकूं गलथूथी पिलाणेकी महोत जगे चलण है गुडवी वगेरे बच्चेकूं इसवास्ते ये पिलाई जाती है के बच्चेकी शारीरक तथा मनकी शक्ति तथा बुद्धि वधाणेकू और वैद्यक शास्त्रका हुकम है के वहोत दिनोंतक मेवन करणा चाहिये अज्ञान इहांतक फैल गया सो मूर्ख और तें मरजी मुजब एहाथ गुड वगेरे चीज बच्चेके तालवेके लगाकर एक तरेका नेक चार किया करती है सोभी मुल्क २ की अलग २ रिवाज ठहरायली हैं जन्म घूंटी इस वजे देणा चहिये सोना गाम्ही शंखावली सहत घी ये ताकत और अक्कलकूं वढाती है घी तथा महतमें सोना घसकर पिलाणा शंखावली तथा सुपेद वचका चूर्ण घी तथा महतमें चटाणा ये गलथूथी पहिले महीनेमें हमेस एकेक रत्ती दुसरेमें दो रत्ती एसे वरसभरकूं १२ रत्ती पीछे वर्ष वर्ष दीठ पांच २ रत्ती मात्रा वधाणी–(बच्चोंके रोग तथा कारण)–१ बच्चोंके रोग जादा करके माताके कुपथ्यमें होता है भारी तथा विषम खुराक माके दूधकूं विगा-

डता है उसके पीणेसें वच्चा वेमार होता है २ दांत जव आणे लगते हैं तव वुखार दस्त उलटी तथा वांइटे चमकणा वगेरे वडी डरावणी हालतमें जागिरता है ३ दूध पीणा छोडे वाद खाणा जव सीखता है तव अयोग्य आहार ठंढ या गरमी हवासें वेमार होता है और मावापकी गफलत इसमें मुख्य कारण है देखते हैं सो वहोत अदमी तुल वृश्चिकी संक्रांतकूं ठंढ कालामानके गरम खान पान दिनका सोणा दही मसाले जादा गरिष्ट और पेटभर खाणा और ताकत वर दवायां खाणा सरू करते हैं कुभ मीनकी संक्रातीमें दिनका सोणा गुड तेल वासी ठंढी चीजें लोक खाकर वेमार गिरते हैं इसी किस्म वच्चोंकूंभी वेमार डालते हैं ४ चेपी रोग जेसेके ओरी अचपडा वडी खासी वगेरे—

(लक्षण)—वुखार दस्त खासी वांइटे वगेरे कितनेक रोगकी परिक्षा झट हो जाती है विगर वोलणेवाले वच्चोंके कितनेक रोगोंकी मालम सहजमें नहीं पडती वालक रोता रहे तव समझणा के तो इसकूं भूख लग रही है अथवा वदनमें कोइ दरद है शिर आंख कान नाक पेट वगेरे अवयवोके अंदर जव दरद होता है तव वच्चा दम २ में उधर हाथकूं ले जाता है और दुसरा कोई उहां दवाता है तो जादा रोता है (१ वुखार)—दूध पीणेवाले वच्चेके विकारवाले दूधसे रोग होता हैं या अजीर्णसे होता है या आगंतुक कारणसें रोग होता है—(इलाज)—१ अतीस १ रत्तीसें १ वाल सहतके संग चटाणा फायदे वंद है २ कृष्णादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग वालकका दूध चुंगणा कभी वंध नहीं करणा मा या धायकूं पथ्य करणा माकूं पथ्य या लंघन येही वालकका पथ्य या लंघन समझणा ३ खाणेवाले वच्चेकूं पसीनेकी दवा तथा दस्त साफकी दवा देणी हरडे या एरंडी तेल ४ फक्त कुटकीकूं शेक उसकी फक्की जलसे देणी—(दस्त) दूधके दोपसें दांत निकलणेसे अपच्चेसें ठढी हवाकी असरसें और ओरी अचपटा वगेरे फूटके निकलणेवाले रोगसें दस्त होणे लगते हैं—(इलाज)—१ एरडी तेलका जुलाव देणेसें दस्तका कारण वंध हो जाता है २ इंद्रजव जरा सेक कर दूधमें अथवा मूमे देकर चूंची पिलाणा २ वीलकी गिर धावडीके फूल वाला लोद तथा गजपीपर इनोंका काथ अथवा चूर्ण सहतके संग ४ अतीस सूंठ मोथ वाला इद्रजवका काथ ५ इंद्रजव तथा वायवि डंगकूं शेक इसकी फक्की ६ डोवर्स पाउडर देणा ७ अजमोदादि गुटिका नं० २४७.

(वुखारके संग दस्त)—१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतमें देणा २ डोवर्स पाउडर तथा किनाइन देणा ३ अतीस सहतमें चटाणी.

(आम मिला दस्त)—१वायविडग अजमोद छोटी पीपरका चूर्ण गरम पाणीसें सग देणा २ कुटकीकूं शेक पुराणे गुडमें गरम पाणीसें देणा—(खूनका दस्त)—१ सुठ

तथा मिलावा इनोंकों पीस पीणेसें ऋतू धर्म आता है ५ बल बीज जेठीमधु खपाट वड वाइकी नरमसाखें नागकेशर तथा मिश्री सहत दूध तथा घीमें पीणा ६ आस गंधके क्वाथमें पकाया भया घी प्रभातसमें पीणा ७ पुष्प नक्षत्रमें सुपेद रींगणीकी जड निकालके दूधमें पीस कर पीणा ८ पीले फूलोंका कांटा शेलियाकी जड धावडीका फूल वडकी शाख काला कमल उसकूं पीस दूधमें पीणा ९ जीरा सपेद फूलोंका सरपंखा और पारस पीपलका फल वांटकर पीणा १० खाखरा (पलासके पत्ते) दूधमें पीस कर पीणा इन इलाजोकों ऋतु स्नान करे पीछै १ से ८ दिनतक अजमाकर गर्भाधान करणा ।

किरण ११ मी.

बचोंका रोग.

जेसें औरतोंके केइयक रोग अलग होते हैं तेसे बचोंके केइयक रोग अलग २ होते हैं जेसेके दांत आणा वांइटे कृमि ओरी अचवडा खुलखुलिया खासी गाल पचोरिया इतना और भी तफावत है के वडी ऊमरवालेका और बचेकी नाजुक मिजाजके कारण इलाजोमें फेरफार करणा पडता है बचोंकी पिलाणेवाली दवाओंमें अफीम सोमल पारा धतूरा वछनाग हाइड्रोस्यानिक एसिड फोसफरस तथा कितनेक सख्त ऐसिड और क्षारोका देणा वणे जहांतक कभी नहीं करणा एसा विद्वान वैद्य और तबीबोंका फुरमाण हैं आरोग्यताके साथ ऊमरकी उन्नती चाहणेवाले वैद्य और डाकटर जो परोपकारी है सो इन चीजोंका वरताव विलकुल नहीं करते हैं अब बचोंका सादा और हमेसा केलिये अला एसा सामान्य इलाज लिखते हैं.

(जन्म घूंटी)–(गलथूथी)–बचा जब जन्मता है तब उसकूं गलथूथी पिलाणेकी महोत जगे चलण है गुडची वगेरे बचेकू इसवास्ते ये पिलाई जाती है के बचेकी शारीरक तथा मनकी शक्ति तथा बुद्धि बधाणेकूं और वैद्यक शास्त्रका हुकम है के महोत दिनोंतक भेवन करणा चाहिये अज्ञान इहांतक फैल गया सो मूर्ख और तें मरजी मुजब एकाद गुड वगेरे चीज बचेके तालवेके लगाकर एक तरेका नेक चार किया करती है सोभी मुलक २ की अलग २ रिवाज ठहरायली हैं जन्म घूंटी इस वजे देणा चहिये सोना वाली शंखावली सहत घी ये ताकत और अक्कलकूं वढाती है घी तथा सहतमें सोना चमकर सिवाना शंखावली तथा सुपेद वचका चूर्ण घी तथा सहतमें चटाणा ये गलथूथी पहिले महीनेमें हमेस एकेक रत्ती दुसरेमें दो रत्ती एसे वरसभरकूं १२ रत्ती पीछे वर्ष वर्ष दीठ पांच २ रत्ती मात्रा वधावी–(बचोंके रोग तथा कारण)–१ बचोंके रोग जदा करके माताके कुपथ्यमें होना है भारी तथा विषम खुराक माके दूधकूं विगा-

डता है उसके पीणेसें बच्चा बेमार होता है २ दांत जब आणे लगते हैं तब बुखार दस्त उलटी तथा वांइटे चमकणा वगेरे बडी डरावणी हालतमें जागिरता है ३ दूध पीणा छोडे बाद खाणा जब सीखता है तब अयोग्य आहार ठंढ या गरमी हवासें बेमार होता है और मावापकी गफलत इसमें मुख्य कारण है देखते हैं सो बहोत अदमी तुल वृश्चिकी संक्रांतकूं ठंढ कालामानके गरम खान पान दिनका सोणा दही मसाले जादा गरिष्ट और पेटभर खाणा और ताकत वर दवायां खाणा सरू करते हैं कुभ मीनकी संक्रातीमें दिनका सोणा गुड तेल बासी ठंढी चीजें लोक खाकर बेमार गिरते हैं इसी किस्म बच्चोंकूंभी बेमार डालते हैं ४ चेपी रोग जेसेके ओरी अचपडा बडी खासी वगेरे–

(लक्षण)–बुखार दस्त खासी वांइटे वगेरे कितनेक रोगकी परिक्षा झट हो जाती है विगर बोलणेवाले बच्चोंके कितनेक रोगोंकी मालम सहजमें नहीं पडती बालक रोता रहै तब समझणा के तो इसकूं भूख लग रही है अथवा बदनमें कोइ दरद है शिर आंख कान नाक पेट वगेरे अवयवोंके अंदर जब दरद होता है तब बच्चा दम २ में उधर हाथकूं ले जाता है और दुसरा कोई उहां दबाता है तो जादा रोता है (१ बुखार)–दूध पीणेवाले बच्चेके बिकारवाले दूधसे रोग होता हैं या अजीर्णसे होता है या आगंतुक कारणसें रोग होता है–(इलाज)–१ अतीस १ रत्तीसें १ बाल सहतके संग चटाणा फायदे बंद है २ कृष्णादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग बालकका दूध चुंगणा कभी बंध नहीं करणा मा या धायकूं पथ्य करणा माकूं पथ्य या लंघन येही बालकका पथ्य या लंघन समझणा ३ खाणेवाले बच्चेकूं पसीनेकी दवा तथा दस्त साफकी दवा देणी हरडे या एरंडी तेल ४ फक्त कुटकीकूं शेक उसकी फक्की जलसें देणी–(दस्त) दूधके दोषसें दांत निकलणेसे अपचेसें ठंढी हवाकी असरसें और ओरी अचपडा वगेरे फूटके निकलणेवाले रोगसें दस्त होणे लगते हैं–(इलाज)–१ एरंडी तेलका जुलाब देणेसें दस्तका कारण बंध हो जाता है २ इंद्रजव जरा सेक कर दूधमें अथवा मूसे देकर चूंची पिलाणा २ बीलकी गिर धावडीके फूल बाला लोद तथा गजपीपर इनोंका काथ अथवा चूर्ण सहतके संग ४ अतीस सूठ मोथ बाला इंद्रजवका काथ ५ इंद्रजव तथा वायवि डंगकूं शेक इसकी फक्की ६ डोवर्स पाउडर देणा ७ अजमोदादि गुटिका नं० २४७.

(बुखारके संग दस्त)–१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतमें देणा २ डोवर्स पाउडर तथा किनाइन देणा ३ अतीस सहतमें चटाणी.

(आम मिला दस्त)–१वायविडग अजमोद छोटी पींपरका चूर्ण गरम पाणीके संग देणा २ कुटकीकूं शेक पुराणे गुडमें गरम पाणीसे देणा–(खूनका दस्त)–१ सूठ

अतीस नागरमोथा वाला तथा इंद्रजवका क्वाथ २ वाला तथा सहत चावलोंके धोये जलमें ३ डोवर्स पाउडर.

(६ खासी)–१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग २ मोथा अतीस छोटी पींपर तथा काकडासींगीका चूर्ण अथवा क्वाथ सहतके संग ३ अतीसका चूर्ण सहतमें ४ ईपीकाक्युआना पाउडर १ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ३ ग्रेण मोलेठीका चूर्ण ९ ग्रेण दो दो ग्रेण खांडके सीरेमें देणा ५ केलोमेल ५ ग्रेण रुबार्ब पाउडर ४ ग्रेण मिलाकर दो पुडीकर एक चीणीके सीरेमें देणा उससे दस्त साफ नहीं आवे तो ५ घंटे पीछै दुसरी फेर दे देणी ६ इतने इलाजोंसे खासी कम नहीं पडे तो एन्टीमोनियल वाइन दश बूंद एपीकाक्युआन्हा वाईन २० बूंद नाइट्रेक ओफ पोटाश ग्रेण ६ केम्फर वोटर ग्रेण ६ इनोकों मिलाकर टंकमें एक छोटी चिमचीभर दवा दिनमें तीन वेर देणा.

(७ वडी खासी)–खुल खुलिया खासी एक चेपी रोग है ये बच्चोंकेही होती है उसमे थोडा बुखार आता है और खासते उलटी हो जाती है और खासते २ मूं लाल हो जाता है मुरझा जाता है किसी २ वखत दस्त पेशाव भी अंदर निकल जाता है इस रोगमें वाजे वखत चमक और वांइटे हो जाते हैं दुसरे अठवाडियेमें इस रोगका जोर वहोत वढता है लोकीकमें अढाई महीनेकी मुदत इसकी मानते हैं अगर अछीतरे सार संभाल दवा करणेमें आवे तो तीसरे अठवाडे पीछै मिट सकता है–(इलाज)–कस्तूरी इकेली अथवा किसी दुसरी दवाके संग देणा २ भीमसेनी कपूर फायदा करता है ३ कांटा शेलियेकी छालका उकाला पीणा ४ ईपीकाक्युआना हींग ५ भुय रींगणीका उकाला सहत डालकर पिलाणा ६ हरडेकी अवलेही नं० २६४, ७ कंटकारी अवलेह नं० २६३, ८ नींद लाणेकूं अफीम किरमाणी डोवर्स पाउडर वगेरेका उपयोग करणा.

(८ हांफणी)–१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२, २ हरडे वहेडा मोलेठी सम वजन गरम पाणीमें पीस उसमें जरा सींधा निमक तथा सहत मिलाकर २ से ३ वाल दिनमें तीन वेर चटाणा जरूर लगे तो रेवचीणीका शीरा डालणा ३ अरडूसेके पत्तोंका रश जरा गरम कर अंदर सहत डालकर पीणा ४ वडी ऊमरके वच्चेकूं पापडखार चिणेकी दाल इतनाही गुड तथा गरम दूधमें मिलाकर पिलाणेमें उलटी होगी ५ डाकतर लोक आंडीका दो चार बूंद चिमचा भर पाणीमें पिलाते हैं (६ बाहरका इलाज)–फुलालीन टरपेन्टाइन तथा पोस्तके डोडेका छातीपर सेक डीकामाली रेवचीनी तथा एलियेका पेटपर लेप अरडूसेके तथा नागर वेलके पत्तोंकू पेटपर बांधणा.

(श्वास तथा खासी)–१ द्राख अरडूसेका पत्ता हरडे तथा पींपर चूर्ण सहतमें २ बांस कपूरका चूर्ण सहतमें ३ धमासा पींपर दाख तथा हरडेका चूर्ण सहतमें ४ धाणा

तथा मिश्री चावलोंके धोवणमें ५ काकडासींगी मोथ तथा अतीसका चूर्ण सहतमें ६ अरडूसेके पत्तोंका पुटपाक कर रस निकाल उसमें सहत पींपर तथा फुलाया टकण डाल पिलाणा ७ अरडूसा सूंठ तथा भूरींगणीका उकाला सहत डाल ८ अलशीकी पोटिस गरम २ छातीपर बांधते जाणा–१० (उलटी)–मोथा अतीस काकडासींगीका चूर्ण सहतमें २ जायफलकूं सहतमें घसकर देणा ३ कुटकी सहतमें चटाणा ४ चित्रक सूंठ सहतमें.

(दूधकी उलटी)–१ आंबेकी गुठली चावलोंकी धाणी सींधा निमकका चूर्ण सहतमें २ कली चूनेका नीतरा भया पाणी दूध मिलाकर पिलाणा ३ हरडे अथवा एरंडी तेल देकर पेटका विकार होय सो निकाल डालणा–(१२ गलेका पडणा)–तालवेमें खड्डा पडता है बच्चा चूंग नहीं सकता दस्त पतला पाणीकी प्यास डोक तथा मूमें दरद दूधकी उकारी करे–(१ इलाज)–हरडे वच तथा उपलेट सम वजन दूधमें उकाल उसमें तीजे भागका सहत मिलाय फजर सांझ चिमचा २ भर पिलाणा २ एरंडीके पत्ते घीसे चोपड तालवेपर बांधणा ३ तालवेपर हमेस घी तथा तेल लगाकर चिकणा रखणा ४ सेंभरका सींग दूधमें घसकर पिलाणा तथा तालवेपर लेप करणा ५ वज तथा जायफल घीमें पीस लेप करणा.

(१३ गाल पचोरिया)–गाल पचोला कानकी जडके नीचेके गलेके दोनों भाग लाल होकर सूज जाता है तथा गांठे हो जाती है.

(इलाज)–१ फिटकडीके कुरले कराणा मांजूं फलके कुरले कराणा उकाल कर अकलकरा मूंमे रखवाणा ३ जंगली उपलोंकी राख मुलतानी मट्टी सींधा निमकका लेप ४ सहत कलीचूनेका लेप कर रुई चपकाणी जादा तकलीप होती दीखे तो जोकसे खून निकलवा डालणा और कर्णक सन्निपातसे गांठ होय तो घी पिलाकर सात दिनमें या तो मिटे नही तो वाद जोक लगाणी या चित्रक आककी जड वीजोरेकी जड दारू हलदी अरणीकाष्ट रासना सूंठ इनोको पीस गरम कर उसपर लेप करणा पेटमें दवा कर्णक सन्निपातकी देणी.

(१४ पारगला)–गर्भवाली औरतका दूध पीणेसें हाथ पैर तो सूके जाते हैं पेट घडे जेसा खासी मंदाग्नि उलटी अरुचि अधेरी झांखा पडणा भ्रम ये उसके लक्षण हैं– (इलाज)–१ छोटी पींपर सहतमें चटाणी २ वडी हरडे तजकुं घस जलमें देणा ३ अजमोद जीरा स्याहजीरा सूंठ इनोका चूर्ण सहतमें ४ काली मिरच गरमागरम जलमें डाल ठंढा भये वूरा डाल पिलाणा ५ मुंगियेकी भस्मी गुलकंदमें या सहतमें या घीमें.

(१५ आंचकी)–(वांइटे)–(चमकणा)–(कारण)–१ दांत आते वखतमें कुपथ्य खुराक देणा २ आंतरोंमें कृमियों पडणेसें ३ दस्त वंध होणेसें आंतरोंमें सख्त

मल बंध जाणेसें ४ अतीसारकी बेमारी वहोत दिनोंतक रहणेसें ५ बुखारसें ६ खुल खुलिया खासीसें ७ और मृगी वगेरे मगजके विकारसें वांइटे आंचकी हो जाती है— (इलाज)—१ गरम पाणीकी वाफ नं० ५६६ वच्चा नाताकत होय तो वाफकी एवजीमें लिखा धावलेका प्रयोग करणा २ दस्तके विगर दुसरे कारणसें आंचकी भई होय तो एक जुलाब दे देणा एरंडी तेलका अथवा सल्फेट ओफ सोडा ३ दस्त लगते होय तो दस्त बंधकी दवा देणी जेसे क्लोरोडाईन संजीवनी वगेरे ४ जो पेटमें वहोत बोझा होय और उलटी होती होय तो उलटी कराणेकी दवा देणी अथवा गलेमें पींछा फिराकर उलटी कराणी ५ पेटपर राईके पत्ते अथवा कपडा दोलडेके बीचमें राइका पलाष्टर लगाणा चमडी लाल होय तब निकाल डालणा ६ दांतके मसूंढे गरम और नरम होय तो शस्त्र वैद्यसें ऊपर दांत निकलणेकी जगे चीरा दिलाणा ७ कृमिसें होय तो कृमिहर दवा पृष्ट ३१६, सेन्टोनाइन १ से दो ग्रेण बूरेके संग देणा और ४ घंटे बाद चिमचा भर एरंडीका तेल पिलाणा सब निकल जायगी जो दस्त सुपेद आता होय तो डोवर्स पाउडर देणा.

(१६ मृगी)—(वाई)—सपेद पेठेके रशमें मोलेठीका चूर्ण देणा २ गऊका दूध घी दही और गोवरमें पकाया भया घी चटाणा ३ शीतल मिरच हमेश एकेक दो दो खिलाणा ४ वचकी सहतमें ।।. सें एक वालकी गोली कर खिलाणी.

(१७ फूटकर निकलणेवाले बुखार)—इन सबोंका इलाज बुखारके किरणमें लिखा है शीतला औरी अचवडा वगेरेका.

(१८ पेटका फूलणा)— १ सींधा निमक सूंठ इलायची तथा सेकी भई हींग घीमें चूर्ण अथवा जलके संग २ सूंठके तथा हींगके उकाले जलमें एरंडीका तेल ३ पेटपर हींग अथवा एलियेका लेप ४ साइट्रेट ओफ मेग्नीश्याका थोडा ग्रेण पाणीके संग देणा.

(१९ कृमि)—(पृष्ट ३१६) लिखे इलाज कृमिका करणा.

(२० भार)—बच्चोंके पेटमे भार रहता है उस करके पेट तुंबातुंब रहता है और बच्चा हांपते रहता है पेटमें दरद होता है और थोडा २ दस्त टुकडा २ होता है— (इलाज)—दीपन पाचन दवाके संग दस्तकी दवा देणी २ एरंडीका तेल देणा ३ [illegible] शेक उसकी फकी गरम जलमें ३ डीकामारी देणा ४ जुलाफा अथवा रेवणीका सीरा देणा—(२१ दांत फूटणा)—१ दांत फूटतीवख्त लींडी पीपर धावडीके फूल सहतमें मिलाय मसूढोंपर रगडणा २ दांत निकले नहीं और तकलीफ करे बुखार दस्त वांइटे वगेरे तो नस्तर देकर दांतके मसूंडे चीराणा ३ दस्त वहोत होता होय तो दस्तकी दवा करणी एरोमेटिक पाउडर ओप चोक देणा.

(२२ चूंचापणा)–आखोंकी भापणीमें खुजली दरद तथा पाणी झरता है उस करके वच्चा आंखोंकू नाककूं तथा निलाडकूं मसलते रहता है सूर्यका धूप देख नहीं सकता और आंख खोल नहीं सकता–(इलाज)–त्रिफला साटेकी जड लोद सूंठ और दोनों रींगणी इन सवोंकों जलमें पीस जरा गरम कर भांफणीपर लेप करणा.

(२३ मुखपाक)–माके दूधके दोपसें अथवा गरम खाणेसें वचेका मूं आजाता है १ शंखजीरा तथा सोनागेरूका चूर्ण मूंमे रगडाणा २ कंकोल मिरच मिश्री वंश लोचन फुलाई भई फिटकडी इलायची मूंमे लगाकर लाले पटकाणी ३ गोपीचंदन दूधमें पीस लगाणा ४ गिलोय सत्व मूमे लगाणा ५ वकरीके दूधकी धार मूंमे दिराणी ६ तव-खीर मूंमे लगाणी ७ सुहागी सहतमे मिला मूमे लगाणा ८ चार इलायचीके दाणेमें सोनागेरू ॥ भर पीस मूंमे लगाते रहणा लाल गिरके गरमी निकलती है.

(२४ नाभिका पकणा)–१ वकरीकी लीडिये दूधमें पीस लेप करणा २ तज चंदनका चूर्ण दवाणा.

(२५ गुदाका पकणा)–१ रसोत पिलाणा तथा गुदाके लगवाणा २ संख मोलेठी तथा रसोतका लेप करवाणा.

(२६ खुजली)–घरका धूंआ हलदी उपलेट राई तथा इंद्रजव छाछमें पीस लेप करवाणा २ गंधक कपूर खोपरेके तेलमें पीस महीन भयेवाद लेप करवाणा.

(२७ मूतका निकलणा)–वडी ऊमरके वचें नींदमें विछोणेमें मूत देते हैं उसकूं रोकणे १ पीपर सूंठ मिरच इलायची तथा सींधा निमकका चुर्ण वूरेकी चासणीमें डाल अवलेही वणाकर चटाणा २ कुचीलेकी फकी जरासी गहूभर देणी.

(२८ मूत्रकृच्छ्र)–१ गऊके दूधमें जरा गुड डालकर पिलाणेसें पेसाव खुल जाता है २ एरंडीके तेलमें अथवा गोमूत्रमें दूध तथा जरा गूगल मिलाकर पिलाणा.

(२९ रोते रहणा)–वच्चा रोता रहै और उसका चोकस कारण मालम नहीं पडे उहांतक एसा इलाज करणा १ त्रिफला छोटी पींपर सहतमें चटाणा दो चार दिनांतक.

(३० नलोका वढणा)–१ नवसादरेके पोते धरणा २ शुद्ध एरंड तेल पिलाणेसें वृद्धि मिट जाती है.

(३१ मट्टी खाणी)–१ सोनागेरू खिलाणेसें दस्तमें मट्टी निकल जाती है २ वोदा-रका जुलाव देणा ३ कुटकीकूं सेक गरम जलमें फकी ४ मट्टी वचेकू विलकुल खाणे नहीं देणा ५ मंडूर मट्टीका विकार निकाल देती है त्रिफला त्रिकुटा चित्रक नागरमोथा वाय-विडग पीपरामूल पुराणा गुड सम वजन सव एकके वजन गुजव मंडूर तकसें देणा इससे पांडूचाहै जेसा मिट जाता है.

(३२ रेच)–छोटे वचेकूं वेर२ जुलाव देणा नहीं वहोतही जरूरी होय तो देणा,

१ शुद्ध एरंडीका तेल नरम जुलाब है, २ हरडे मध्यम रेचक है, ३ रेवचीणीका सत सस्त है, ४ सोनामुखी खलखलते जलमें डाल छाण गुड डाल, देणा ५ गुलाबकली जोहरडे सोनामुखीका काथ बूरा डाल ये बच्चेकूं नरम जुलाब है लेकिन् रोग देख देणा.

(दुबला नाताकत)–१ भूमिकुष्मांड (विदारी कंद) गहुं तथा जवका आटा घीमें चटाय ऊपर मिश्री सहत डाल दूध पिलाणा, २ आसगंध १ भाग दूध ८ भाग उसमें घी डाल पकाकर चटाणा, ३ हरडेकी अवलेही चटाणेसें पुराणे दोष मिटाकर कुव्वत देता है, ४ सीतोपलादि चूर्ण ५ मंडूर ६ अमृतवटी दूधके संग दुबले बच्चोंकूं पुष्ट करणे सर्वोत्तम इलाज हैं.

किरण १२ मी.

अश्वादि पशुचिकित्सा.

वैद्यदीपक पुस्तकमें घोडा वगेर जानवरोंका इलाज नहीं होय तो ग्रंथ अपूर्ण प्रकाश हो जाय एसा विचार करके इस किरणमें घरोमें रहणेवाले पशुओंका कितनेक मुख्य२ रोगोंका थोडे इलाज दाखल करणेमें आता है, जैसें औरत मर्द और बालबच्चें हैं, तैसे इस दुनियांमें जांनवरभी मनुष्योके संग रहणे वालेभी बडे उपयोगी है, मनुष्य बहोतसे इस जांनवरोंकी प्रतिपालसे अपना गुजरान चलाते हैं, सो प्रत्यक्ष है लिखणेकी जरूरी नहीं उनोके दूध दही गोबर मूत्रादिकसे अनेक रोग मिट जाते हैं, मजूरी कर अपणा और मालकका पेट भर देता है इसवास्ते सर्व जीवोंकी रक्षा करणा ये परम धर्म जैनियोंका है, दुसरोंका नहीं (प्रश्न) क्योंजी क्या दुसरे धर्मोकी किताबोंमें दया धर्म नहीं है, और क्या नहीं पालते हैं, (उत्तर) हमारा लिखणा किसी वैर विरोधके वास्ते नहीं लेकिन् क्या तुमने नहीं सुणाके वेद शास्त्रोमें अनेक जांनवरोंका यज्ञ लिखा है और असंख्या जीवोंकूं अग्निमें हवन कर लोक खागये और बंगाली पंजाबी आदि ब्राह्मन अभीभी खाते हैं, मुसलमीन बोद्ध चीन वगेरेके सब इस वखत मांस खाते हैं, सो सब तुम देखते हो भारतमेंभी लिखा है ब्राह्मन पंचनखी जांनवर मच्छ कच्छकूं खावे तो दोष नहीं इस लेखमेंही बंगाली पंजाबी ब्राह्मन सब तरेका मांस प्रगट खाते हैं, वैष्णव जैनियोंकी देखादेख दयाधर्म मानते हैं, लेकिन् पूर्वोक्त वेदादि शास्त्र पर श्रद्धान रखते हैं, बुद्ध खुद मांस खाना था ललितविस्तर ग्रंथमें लिखा है, तो उसके श्रद्धालु चीन जापानभी खाते हैं, इसवास्ते जैनियोंका शास्त्र और जैनी कोइभी मांस नहीं खाते इसवास्ते दयाधर्ममें चलणेवाले सर्वोत्कृष्ट जैन है, (प्रश्न) दयानंदजी वेदोंका भाष्य बनाया उसमें तो दया सिद्ध करदी (उत्तर) हे बुद्धिवानों वेदोंमें दयाकी गुस्कनी नहीं है अगर होती तो वेदोंके भाष्यकार उव्वट महीधर सायनाचार्यभी

एसा अर्थ लिखते सो उनोने जीवोंका हवन करणाही वेदोंका अर्थ लिखा दयानंदजीनें धातुओंको खेंचताण मनकल्पित अर्थ करके अपणे मत्तके पूर्व भाष्यकारोंकों मूर्ख ठहराया लेकिन् उनोंका अर्थ किया भया खुद दयानंजीका उनोंके समाजकेही आधे लोक मंजूर नहीं करते भीमसेनादिक जैनियोंकीदयाकी बराबरी करणेकूं दयानंदजीनें वेदोंके अर्थोंमें गडबडाट मचाया था कुछ करोजिसके मूल सूत्र और अर्थ हिंसाके भरे हैं वो कल्पित अर्थोंसें दयाके कभी नहीं होसकते कोइ कहते हैं वेदकी रुचासे जो जीव मारे जाते हैं उसमें हिसा नहीं होती कोईकहते हैं मारके जिला देते थे, कोइ कहते हैं ये यज्ञ शत युगमें होते थे कलियुगमें नहीं कोइ कहते हैं जिन जीवोंकों होमतेथे वो स्वर्ग चले जाते हैं इत्यादि वातोसें हिंसा छिपा कर वेदोका महात्म वढाणेकूं अनेक गपोडें लोकोंकों समझाया करते हैं, इसमेंसे एकभी वात यथार्थ नही सो न्याय पक्षसे हमलिख दिखातें हैं जहां जीवोके प्राण लिये जांयगें उहां परजीवकूं महाकष्ट होणेसें हिंसामें पाप नहीं एसा कोन दयाधर्मी मांन सकता है, ये कहणाभी महानिर्दयी कठोर दिलवाले मांस खाणेवाले लालचियोंका है, वेदकी हिंसा हिंसामें नहीं तो देखें वेदका मंत्र पढ तुमारे अंगली तो जरा अंगारमें दो और छुरीके धारसे मिलाओ इति १ मारके जिला देणा किसी तरे सबूत नही हो सकता अगर एसा होता तो अपणे प्यारोंकों मरे वादभी जिला लेते और आप क्यों मर गयें २ जिस युगमें घोडे गउ सांड बकरे जलचर थलचर खचर असंख्या जीव मारे जाते थे वो तो सतयुग और नहीं मारे जावे वो कलियुग भलां ये वात विना पोपोके कोइ अकलवर तो नहीं मान सकता ३ इसकुं तो एसे कारणसें उलटा नांम कहणा चाहिये पशुओंकों जीते जी जलाकर स्वर्ग पोहचाणा इसतरे स्वर्ग होता है, तब तो स्वर्ग इसवजे अपणे स्वजन संबंधियोंकों क्यों नही पहुंचाते क्या स्वर्ग तुम नहीं पोहचे चाहते विचारे उन पशुओंनें कब इच्छा करके यज्ञ करणेवालोंको कहाकी तुम हमें स्वर्ग पहुचाओ ४ इत्यादिक युक्तिये लगाकर हिंसा करणेकी पुष्टि जो मतोंवाले करते हैं, वो सब निर्दयी हैं क्योके हिंसा करणी कराणी और उसकूं अच्छी समझणी वो सब कसाई है, मनुजीनेभी आठ कसाई माने है, दयाधर्म है सों सब धर्मोका राजा है, कोईभी जीव मरणा नहीं चाहता कष्ट होगया होय तो उसकी रक्षा करणी जहांतक होसके वाकी तो अज्ञान कर्मके वश जीव जीवका लागू हो रहा है, ज्ञान पाणेका फल वोही है की सब जीवोंकी रक्षा करणी एसे २ शास्त्रोंके सबब राजा और प्रजा मांस मदिरा खाणे पीणे लग गये आर्य थे सो अनार्यकी करतूत करणे लगे कलियुग जिसकूं तुमनें यज्ञोंकी मनाई करी उसमेंभी सुणते हैं के जयपुरके महाराज जयसिंघजीनें घोडेकूं होमनें अनेक जांनवरोंकों होमा अभी किसनगढके राजाने सोम यज्ञ कर पचीस बकरोंकों जीते जी होम डाला जब वेद एसी करतूतका शास्त्र है, तभी तो एसे अनर्थ करते लोक धर्म

समझतें हैं एसें शास्त्र इश्वरकृत कभी नहीं हो सकते क्योंकी ईश्वर सबकी रक्षा करणेवाला है जांनवरोसे खेती होती है, गांमोके वासिदोकी प्रत्यक्ष मिल्कीयत पशू है, जब ढोर बेमार होजाता है तो विचारोंकों घरके अदमीके बराबरका फिकर होजाता है, मर जाता है तो कमाउबेटे जितना फिकर करते हैं, अबोल जांनवर मूर्ख मनुष्यसें बहोत कीमतदार चीज है. दयाधर्मरूप वेदोंकों जैनभी मांनते हैं

(१ मूंगारोग)–तालवेपर खूनका चढणा जमणा, (इलाज)–नस्तरसें खून निकलवाके फिटकडी अथवा निमकके जलसे धोणा २।४ द्राम एलिया १ द्राम सूंठ मिलाके खिलाणा ३ दूध घीका जुलाब देणा.

(२ मूंका आणा)–(इलाज)–१ जुलाब देणा २ शङ्खजीरा कत्था और पठाणी (सींधा निमक) का भूका कर मूंमें छांटणा ३ जोखार सरसूं राई सोवा हलदी सींधानिमक इन सबोंकों आंवलीके कुंकचेके आटेके संग पीस लेप करणा,

(३ वोरहडीका इलाज)–१ बीन आयोडाइड आफ मर्क्युरी १ द्राम मोम और सादे मलमके संग मिलाकर वधी भयी हड्डीके जगे उस्तरेसें बाल निकालकर उसपर रगडणा तब बिलष्टर उठ आयगा और आराम होगा २ बिलष्टरकी जगे साफ चमडी भये पीछे सीसेका टुकडा धर पट्टा बांधणा.

(४ चकावल)–(इलाज) १ गोल नाल जडणी २ गरम पाणीका सेक करणा ३ पोटिस बांधणी ४ बिलष्टर मारणा ५ डांभ देणा ६ उस जगेका बाल निकाल उसपर हींग १ तोला मकडियोंका जाला ६ मासा कत्था ६ मासा जमालगोटा ६ मासा इनोकों नींबूके रसमें पीस लगाणा और उसपर हलदीका टुकडा सिलगाके डांभ देणा ७ मीपका तथा कोडीका चूना महनमें लगाणा.

(५ मोथरा)–(इलाज)–१ उंची एडीकी नाल जडाणी २ शेक करणा ३ हलदी २॥ सेर नरसादर ५ सेर मांग तीन पाव सबोंकी २१ गोलियें करणी एक हमेम देणी ५ पीपलामूल काची मिरच कायफल कालीजीरी सूंफ घोडावच टंकण ये एकेक पाव सबके चौमें मिलाय २१ दिन चटाणा.

(६ वेरम)–(शरदी)–(इलाज)–१ सादी शरदी होय तो बदनपर गरम लूण पोटली और मिरीट नाइट्रीक इथर १ औंस २० औंस जलमें मिलाकर पिलाणा अथवा पीपर लानरी लक्रीमर गंदेका पलाष्टर मारणा २ बुखारके संग शरदी होय तो ऊपर लिखी दवा लिखें उसमें २ द्राम एन्टिया पीनके मिलाणा गरम पाणीकी वाफ देणी ३ अजवाय और बग मल बदन पीस अंगारपर डाल इसका धूआं नाकमें जाणे देणा ४ हेमरसी १ द्राम हेमम आठ दिनोंतक देणी पीछे फेर आठ दिनोंतक नीलाथोथा १ द्राम देणा ५ अकलेर पंच पांच हलदी ७ तोला अजमा ३ तोला हींग १ तोला

इण सबोंकी गोली वणाकर खिलाणी ६ पुराणे टाटका टुकडा चिलम वणाकर उसमें अजवाण और आंबीहलदी पीस, डाल उसका धूंवा देना, हरडे कालीजीरी हलदी सूंठ मिरच पींपर गुड पीस मिलाकर २ तोलेकी गोली वणाकर फजर सांझ खिलाणी.

(७ फेफसेका खून नाकके रस्ते निकलणा)-(इलाज)-१ छातीकी पसलियों-पर वरफ घसणा अथवा ठंढा कपडा रखणा २ उकलते जलमें सिरका डाल उसका वफारा देणा ३ कत्था ३ द्राम शुगर ओफ लेड १५ ग्रेण सल्फट आफ झिंक ३० ग्रेण इनोकी गोली वणाकर देणी ४ कडवी तूंबीकी जड दूधमें घसकर नांकमें वूंदें डालणी.

(८ मृगी)-(इलाज)-१ शिरपर ठंढा पाणी डालणा २ फस्त खोलाणी ३ हलदी शुद्धपारा पीपरा मूल वछनाग शीसेकी भस्मी सहतमें मिलाय चटाणा.

(९ सख्त वदहजमी)-(इलाज)-एलिया २॥ भर सूठ तीन मासा मिलाकर जुलाव देणा २ टरपीन्टाइन तेल जलमें मिलाकर गुदामें पिचकारी मारणी ३ जमाल-गोटेका तेल २० वूंद अलसीका तेल सेर मिलाकर पिलाणा ४ नवसादर १ तोला सोनामुखी ५ तोला अजवाण काली मिरच एकेक तोला इन सबोकों नींवूके रसमें तीन दिन भिगाकर पीछै पीसके खिलाणा.

(१० थोडी वदहजमीका इलाज)-सींधेलूणकाडला घोडेके ठाणमें रख देणा जिससे वो वेर२ चाटे २ एलिया सवा रुपेभर सूंठ पाव तोला मिलाके खिलाणा इससें जुलाव होगा वहोत दस्त होता होय तो कत्था २ द्राम अफीम पाव द्राम सूंठ १ द्राम और चाक ४ द्राम मिलाकर खिलाणा.

(११ आफरेका इलाज)-१ दोडाणा २ मालिस करणी ३ स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ औंस २०औंस जलमें मिलाकर पिलाणा ४ जुलाव देणा याने टिंकचर एलोज ४ औंस टिंकचर ओपियम ॥ औंस पिलाणा ५ गुदमें पिचकारी मारणी ६ पीणेकी दारू २ औंस काली मिरच २ तोला कुटकी २ तोला इन सबोको मिलायके पिलाते हैं आंधी झाडाका तथा कांगकी जड और खाखरेके वीज दरेक ४॥ मासा हींग ३ मासा इनोंको आंधी झाडेके पानके रसमें डाकतर खिलाते हैं.

(१२ कुरकुरी)-(अथवा चूंक)-(इलाज)-१ गुदामें पिचकारी देणी २ पेटपर मालस करणा ३ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ टिंकचर ओपियम १ द्राम टिंकचर एसेफटीडा २ द्राम स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ द्राम स्पीरीट नाइट्रीक इथर १ औंस इनोंको २० औंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ५ छ कलाकमें ऊपरकी दवासे आराम नहीं होय तो फेर इसी दवाकी अदर ४ औंस टिंकचर एलोज मिलाकर पिलाणा ६ पींपलामूल २ तोला लींडी पीपर २ तोला काला निमक २ तोला टकण

समझतें हैं एसें शास्त्र इश्वरकृत कभी नहीं हो सकते क्योंकी ईश्वर सबकी रक्षा करणे-वाला है जांनवरोसे खेती होती है, गांमोके वासिंदोकी प्रत्यक्ष मिल्कीयत पशू है, जब ढोर बेमार होजाता है तो विचारोंकों घरके अदमीके बराबरका फिकर होजाता है, मर जाता है तो कमाउवेटे जितना फिकर करते हैं, अबोल जांनवर मूर्ख मनुष्यसें बहोत कीमतदार चीज है. दयाधर्मरूप वेदोंकों जैनभी मांनते हैं

(१ मूंगारोग)–तालवेपर खूनका चढणा जमणा, (इलाज)–नस्तरसें खून निकलवाके फिटकडी अथवा निमकके जलसे धोणा २।४ द्राम एलिया १ द्राम सूंठ मिलाके खिलाणा ३ दूध घीका जुलाब देणा.

(२ मूंका आणा)–(इलाज)–१ जुलाब देणा २ शङ्खजीरा कत्था और पठाणी (सींधा निमक) का भूका कर मूंमें छांटणा ३ जोखार सरसूं राई सोवा हलदी सींधानिमक इन सबोंकों आंबलीके कुंकचेके आटेके संग पीस लेप करणा,

(३ बोरहडीका इलाज)–१ बीन आयोडाइड आफ मर्क्युरी १ द्राम मोम और सादे मल्लमके संग मिलाकर वधी भयी हड्डीके जगे उस्तरेसें बाल निकालकर उसपर रगडणा तब बिलष्टर उठ आयगा और आराम होगा २ बिलष्टरकी जगे साफ चमडी भये पीछे सीसेका टुकडा धर पट्टा बांधणा.

(४ चक्रावल)–(इलाज) १ गोल नाल जडणी २ गरम पाणीका सेक करणा ३ पोटिस बांधणी ४ बिलष्टर मारणा ५ डांभ देणा ६ उस जगेका बाल निकाल उस-पर हींग १ तोला मकडियोका जाला ६ मासा कत्था ६ मासा जमालगोटा ६ मासा इनोकों नींबूके रशमें पीस लगाणा और उसपर हलदीका टुकडा सिलगाके डांभ देणा ७ सीपका तथा कोडीका चूना महतमें लगाणा.

(५ मोथरा)–(इलाज)–१ उंची एडीकी नाल जडाणी २ शेक करणा ३ हलदी १॥ सेर नवसादर ५ भर भांग तीन पाव सबोंकी २१ गोलियें करणी एक हमेस देणी ५ पीपलामूल काली मिरच कायफल कालीजीरी सूंफ घोडावच टकण ये एकेक पाव गऊके घीमें मिलाय २१ दिन चटाणा.

(६ श्लेष्म)–(शरदी)–(इलाज)–१ सादी शरदी होय तो बदनपर गरम [illegible] ओढाणी और सिरीट नाइट्रीक इथर १ औंस २० औंस जलमें मिलाकर पिलाणा [illegible] नीचे कानकी लकीरपर राईका पलाष्टर मारणा २ बुखारके संग शरदी होय तो [illegible] दवा पिलावें उसमें २ द्राम एलिया पीसके मिलाणा गरम पाणीकी बाफ [illegible] ३ अजमाण और बूरा सम वजन पीस अंगारपर डाल इसका धूआं नाकमें जाणे देणा ४ हीराकसी १ द्राम हमेस आठ दिनोंतक देणी पीछे फेर आठ दिनोंतक नीला-थोथा १ द्राम देणा ५ आकके पत्ते पांच हलदी ७ तोला अजमा ३ तोला हींग १ तोला

इण सबोंकी गोली वणाकर खिलाणी ६ पुराणे टाटका टुकडा चिलम वणाकर उसमें अजवाण और आंवीहलदी पीस, डाल उसका धूंवा देना, हरडे कालीजीरी हलदी सूंठ मिरच पींपर गुड पीस मिलाकर २ तोलेकी गोली वणाकर फजर सांझ खिलाणी.

(७ फेफसेका खून नाकके रस्ते निकलणा)–(इलाज)–१ छातीकी पसलियों-पर वरफ घसणा अथवा ठंढा कपडा रखणा २ उकलते जलमें सिरका डाल उसका वफारा देणा ३ कत्था ३ द्राम शुगर ओफ लेड १५ ग्रेण सल्फट आफ झिंक ३० ग्रेण इनोंकी गोली वणाकर देणी ४ कडवी तूवीकी जड दूधमें घसकर नांकमे वूदें डालणी

(८ मृगी)–(इलाज)–१ शिरपर ठढा पाणी डालणा २ फस्त खोलाणी ३ हलदी शुद्धपारा पीपरा मूल वछनाग शीसेकी भस्मी सहतमें मिलाय चटाणा.

(९ सख्त वदहजमी)–(इलाज)–एलिया २॥ भर सूंठ तीन मासा मिलाकर जुलाव देणा २ टरपीन्टाइन तेल जलमें मिलाकर गुदामें पिचकारी मारणी ३ जमाल-गोटेका तेल २० वूद अलसीका तेल सेर मिलाकर पिलाणा ४ नवसादर १ तोला सोनामुखी ५ तोला अजवाण काली मिरच एकेक तोला इन सबोंको नींवूके रसमे तीन दिन भिगाकर पीछै पीसके खिलाणा.

(१० थोडी वदहजमीका इलाज)–सींवेलूणकाडला घोडेके ठाणमें रख देणा जिससे वो वेर२ चाटे २ एलिया सवा रुपेभर सूंठ पाव तोला मिलाके खिलाणा इससें जुलाव होगा वहोत दस्त होता होय तो कत्था २ द्राम अफीम पाव द्राम सूंठ १ द्राम और चाक ४ द्राम मिलाकर खिलाणा.

(११ आफरेका इलाज)–१ दोडाणा २ मालिस करणी ३ स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ औंस २०औंस जलमे मिलाकर पिलाणा ४ जुलाव देणा याने टिंकचर एलोज ४ औंस टिंकचर ओपियम ॥ औंस पिलाणा ५ गुदमें पिचकारी मारणी ६ पीणेकी दारू २ औंस काली मिरच २ तोला कुटकी २ तोला इन सबोंको मिलायके पिलाते हैं आंधी झाडाका तथा कांगकी जड और खाखरेके वीज दरेक ४॥ मासा हींग ३ मासा इनोंको आंधी झाडेके पानके रसमें डाकतर खिलाते हैं.

(१२ कुरकुरी)–(अथवा चूंक)–(इलाज)–१ गुदामें पिचकारी देणी २ पेटपर मालस करणा ३ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ टिंकचर ओपियम १ द्राम टिंकचर एसेफटीडा २ द्राम स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ द्राम स्पीरीट नाइट्रीक इथर १ औंस इनोको २० औंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ५ छ कलाकमें ऊपरकी दवासें आराम नहीं होय तो फेर इसी दवाकी अंदर ४ औंस टिंकचर एलोज मिलाकर पिलाणा ६ पींपलामूल २ तोला लींडी पीपर २ तोला काला निमक २ तोला टकण

खार २ तोला कडू २ तोला पीणेका दारू ॥ शेर मिलाकर डाकतर लोक पिलाते हैं, ७ एरंडीकी जड साजीखार काला निमक लसण इनोंकों आदेके रसमें देणेसें आराम होताहै.

(१३ जुलाब याने दस्त होणा)–(इलाज)–१ गरम झूलवां धणी, २ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ अलसीकूं कूट जलमें उकाल वो चाहकी तरे पिलाणी ४ अलसीका तेल १। सेर टिंकचर ओपियम १ औंस मिलाकर पिलाणा (५ नं० १० में) थोडी वद हजमी मिटाणेकूं अंतकी लिखी दवा देणी ६ अफीम १ द्राम चाह ४ द्राम गहूंका आटा ८ औंस मिलाकर पिलाणा ७ खुराक अच्छा देणा ८ शंखजीरा और काली मिरच ये दरेक चार चार तोला लेकर पीसके खिलाणा ९ दोदो घंटेके अंतर हींग और सूंठ गहूका आटा घीमें गोली बणाकर देणा १० हरडे मेथी जीरा उसका दो दो तोला चूर्ण तीन दिन दहीमें पिलाणा ११ कच्चे बीलकी गीरी अनारका दाणा और धावडीके फूल इनोंका १॥ तोला चूर्ण ७ दिन दहीमें देणा.

(१४ मरोडा)–(इलाज)–१ गरम झूल अथवा गरम पट्टा बांधणा दाणा तथा चारा महीन करके देणा (३ नं० १३ में लिखी दवा) अलसीकी चाह और कांजी देणी ४ पेटपर गरम दवायें मसलणी केलो मेल और अफीम दरेक २० ग्रेण देणा ६ फिटकडी ४ द्रामतक देणी ७ नाइट्रोम्युरीयाटीक एसिड १ द्राम जलमें डाल दिनमें दो वेर देणा ८ टरपेन्टाइनका तेल ॥ औंस देणा ९ पोस्तके डोडे पाणीमें उकाल उस जलकी पिचकारी बैठकमें मारणी १० एपीकाक्युआन्हा पाउडर १॥ द्रामतक दिनमें तीन वेर देणा ११ आकके जडकी छाल देणी १२ बंबूलका गूंद ६ तोला लेकर पाणीमें पिघलाय देणा १३ शंखजीरा १ तोला हींग १ तोला अफीम ॥ तोला आटेके संग जलमें मिलाकर पिलाणा.

(१५ दस्त थोडा होणा अथवा बंध होणा)–(इलाज)–१ पिचकारी मारणी २ पाचक दवा देणी ३ सूंठ और चिरायता दरेक १ तोला देणा ४ सोनामुखी गरम उकालते पाणीमें डाल वो ठंडा कर पिलाणा ५ जुलाब देणा और जुलाब बहोत लगे तो बंध करणेकूं सूफ २ तोला लेकर सूंठ बिलायती साबू और गुलकंदमें मिलाकर देणा बहोत जुलाब देणेमें लीद नरम होती होय तो ६ दस्तकी दवा एकदम बंध नहीं करणा ७ दाणा थोडा देणा ८ जलमें गहूंका आटा मिलाकर पिलाणा ९ मैदा अथवा गहूंके सत्तका पटोलिया पिलाणा अथवा इसकी बैठकमें पिचकारी लगाणी १० गरम झूल पट्टा बांधणा ११ ओट कांजी भूसा वगेरे खाणेकूं देणा १२ बहोत दिनोंकी बेमारी होय तो गरम करके पिलाणा और १३ टिंकचर ओपियम १ औंस नाइट्रीक इथर मिलाकर १४ दस्तकेवास्ते पहले लिखासो इलाज करणा.

हरस)–(बवासीर)–(इलाज)–मस्से बाहर होय तो शस्त्रसे या खार

लगाकर कटा डालणा २ थोडा२ तेल पिलाणा ३ नरम खाणेकूं देणा ४ एकस्ट्राकट ओपियम १ द्राम गोलाडर्स एकस्ट्राकट २ औंस तथा पाणी ८ औंस मिलाकर पिचकारी मारणी ५ मस्सेपर बेलाडोना लगाणा.

(१७ कलेजेका सोजा)-(इलाज)-१ फस्त खुलाणी २ कलेजेकी बाजूपर राईका पलाष्टर लगाणा ३ सख्त जुलाब देणा ४ सल्फेट ओफ मेग्निस्या जिसकूं एप्सम सोल्ट कहते हैं, वो १ पाउन्ड नाइट्रिक इथर १ औंस तथा पाणी ३० औंस तीनोंकों मिलाकर पिलाणा ५ हाथ पैरपर मालिस करणा ६ गरम झूल और पट्टा बांधणा ७ चार२ घंटेके अंतर नाइट्रिक इथर एकेक औंस देणा ८ एपीकाक्युआना पाउडर अथवा आकके जडकी छाल १॥ द्राम देणा ९ सल्फेट ओफ मेगनीशीया ६ औंस तथा नाइट्रिक इथर १ औंस पिलाणा १० हराघास और भूसा खाणेकूं देणा ११ नाइट्रोम्युरियाटिक एसीड १ द्राम बहोत जल मिलाकर पिलाणा १२ थोडी महनत कराणी, १३ दूध घीका जुलाब देणा.

(१८ कमला)-(इलाज)-१ नंबर १७ में कलेजेके सोजेमें जो इलाज लिखा है सो करणा.

(१९ पेटकी कृमि)-(इलाज)-१ सल्फेट ओफ कोपर अथवा नीलाथोथा २ द्राम बहोत महीन पीस दाणेमें मिलाकर चार दिन खिलाणा पीछे२ जुलाब देणा पाचक दवायें देणी ४ आगेके दिन सांझकूं दाणेके संग सेन्टोनाइन १ ग्राम देणा दुसरे दिन फजरमें जुलाब देणा ५ पित्त पापडा १ तोला और बाजरीका आटा १ तोला दोनोंकूं तेलमें तलकर देणा ६ राई १ तोला अजवाण १ तोला जंगली बबूलकी फली २ से ४ काला निमक ये सब छाछमें पिलाणा, ७ शीताफलके बीज पीस छाछमें पिलाणा.

(२० गुरदेका सोजा)-(इलाज)-१ फस्त खोलाणा २ जुलाब देणा ३ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ४ बकरेका चमडा कमरपर रखणा ५ टारटर इमेटिकका मलम कमरपर लगाणा ६ राईका पलाष्टर लगाणा ७ अलसीकूं उकालणी कूटकर चामुजब पिलाणा ८ बबूलका गूंद पाणीमें पिघलाकर पिलाणा ९ राल १ तोला शंखजीरा १ तोला इन दोनोंको गूलरके चीकमें मिलाकर गोली बणा देणी १० इलायची शखजीरा और कत्था ये दवा दरेक चार२ मासा लेकर गोली बणाकर खिलाणी ११ कमरपर सोराखार रखणा.

(२१ फीके रंगका पेशाब)-(इलाज)-१ घास दाणा बदलणा २ पोटाश आयोडाइड १ द्राममें पाणी १० औंस मिलाकर दिनमें एक बेर आराम होय जहांतक

देणा ३ अफीम कत्था सींधानिमक और बावची ये दरेक ॥ तोला गुलमें गोली वणाकर खिलाणी.

(२२ पेशाबमें खर पडता है)-(इलाज)-नाईट्रोम्युरी एटिक आसीड १ द्राम पाणी २० औंस मिलाकर दररोज दो वखत पिलाणा २ अकलकरा पठाणी निमक वायफूंभा सपेद मूसली गुडसे गोलीकर खिलाणी.

(२३ पिशाबमें खून)-(इलाज)-कम्पाउन्ड टींकचर ओफ सीनामन ३ औंस कमजोर सल्फ्युरीक आसीड ५ औंस पाणी २० औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर १ औंस की मात्रासे देणा २ गंधा वेरजा और कत्था देणा ३ चिणेके फोतरे राल और फुलाई भई फिटकडी इनोंकों मिलाकर देणा ४ वंबूलका गूंद ४ आउंस पाणीमें भिगाकर पिलाणा.

(२४ पिशाबमें पथरी)-(इलाज)-अलशीकूं पीस उकाल चाहकीतरे वणाकर उसमें अफीम १ द्राम मिलाकर पिलाणा २ नाइटोम्युरी एटिक आसीड २ द्राम जलमें मिलाकर पिलाणा ३ अफीम १ द्राम पाणीमें पिघाल दिनमें तीन वखत पिलाणा ४ आधे२ घंटेके फासले गरम जलकी पिचकारी गुदा रस्ते मारणी ५ मेथीना सपाल लाहोरी निमक नवसादर कलीचूना मोरथोथा कुसतासाक और खूबजीका बीज इनोंकी गोली वणा दररोज १ देणी ६ नवसादर वछनाग और अफीम इन चीजोंकों डाकटर लोग दारूके सरापमें मिलाकर देते हैं.

(२५ पेशाब वेर२ थोडा२ होणा)-(इलाज)-१ कमरपर गरम पाणीका शेक करणा २ वंबूलका गूद ४ आउंस टींकचर ओपियम १ औंस और गरम पाणी ३० औंसमें मिलाकर इंद्रीमें पिचकारी मारणी ३ खसखसके डोडे जलमें उकाल उस जलकी गुदामें पिचकारी मारणी ४ अलसी जलमें सिजाकर खिलाणी वो पाणीभी पिलाणा ५ सुरमा १ द्राम मोराशार २ द्राम गंधक २ द्राम पीस दाणेमें मिलाकर खिलाणा.

(२६ प्रमेह)-(इलाज)-१ जुलाब देणा २ गहूंका सूसा जलमें भिगाकर देणा ३ शेक करणा ४ अफीम ॥ द्राम कपूर २ द्राम सल्फ्युरिक इथर १ औंस इन [illegible] अलशीकी चाह मग मिलाकर पिलाणा मुगलाई बेदाणा ५ रुपियाभर वरा ५ [illegible] जलमें भिगाकर फजर देणा ६ तिलके फूल २॥ भर खिलाणा ७ पुराणे मकानका चुना फजर सोंज खिलाणा.

(२७ प्रदर)-(इलाज)-१ फिटकडी २० ग्रेण एक औंस जलमें गलाकर गुद्य [illegible] पिचकारी मारणी २ शुगर ओफ लेड १ द्राम अफीम १ द्राम अलसीके बूंदेक तेल मिला सोंज फजर सोंज देणी ३ टेंट पाणीमें खडी रखणी ४ हमरपर टंडा जल छिटकणा ५ रुपया भरभर सुपेद कैलेके बडके रसमें मिलाकर पिलाणा.

(२८ चांदणी)-(इलाज)-नसा पैदा करणेवाली दवायें सरुआतमें देणी जेसे के बेलाडोना क्लोरोफोर्म चरस डीजी टेलीस धतूरा विगेरे २ इथर अथवा क्लोरोफोर्म सुंघाकर कोटडीके अंदर बंध करणा ३ जखम होणेके सबब भया होय तो जखम रुके एसी दवायें करणी ४ पूंछडीके जडके पास १ आंगल चीरके उसमें सिगरफ भरणा दोनो कानोमें दो तोला पारा भरके बंदूकका अवाज करणा.

(२९ लकवा)-(इलाज)-१ जुलाब देणा २ पलास्तर लगाणा ३ गुल देणा.

(३० खुजली)-(इलाज)-१ दुसरे सब जानवरोंसें दूर रखणा २ जुलाब देणा ३ कील टरपेन्टाइन और अलशीका तेल बराबर सब लेकर सब जगे मसलणा २ धोके साफ करे बाद उसपर कील १ औंस गंधक ॥ औंस मैण और तेल १॥ औंस इनोंका मलम बणाके लगाणा ५ फस्त खोलणी ६ गंधक सुरमा वछनाग सोरा एकेक रुपिया भर महींन पीस थोडा२ बूका दाणेमें खिलाणा ७ मनसिल १ रुपियाभर १ सेर तेलमें मिलाकर बदनपर मसलाणा.

(३१ खून बिगडणेसें भई खुजली और फोडा)-(इलाज)-गहूके भूसेमें सोरा २ द्राम मिलाकर खिलाणा २ नरम खुराक खिलाणा ३ सिरका पाणीमें मिलाकर लगाणा ४ सीधे निमकका डला ठाणमें रख छोडणा जैसे वो चाटे ५ सल्फ्युरीक आसिडका कमजोर पाणी लगाणा ६ फाउलर्स सोल्युसन ओफ आरसेनीक १ द्राम देते रहणा ७ छाछ मसलणी ८ काली मिरच सोनागेरू एकेक तोला भूरींगणीका बीज १ तोला पीस दाणेमें खिलाणा ९ लोवानका धूआं देणा १० काली मट्टीका शरीरपर लेप कर धूपमें खडा रखणा.

(३२ सब बदनपर नरम सोजा अथवा पित्ती निकलणा)-(इलाज)-१ सोरा ३ द्राम दाणेके संग खिलाणा २ सिरकेका पाणी लगाणा ३ गेरु और सोरा इन दोनोंकी गोली देणी ४ लोवानका धूआं.

(३३ दाद)-(इलाज)-१ साबू और जलसें धोकर उसपर केथेरीडीस १ औंस ८ आउंस सिरकेमें १४ दिन भिगाकर लगाणा २ नींबूका रस लगाणा ३ नींबूके रसमें मनसिल मिलाके लगाणा.

(३४ मट्टीका बुखार)-(इलाज)-अलसीका तेल १ सेर पिलाणा २ सोरा खार २ द्राम दाणेके संग फजर सांझ देणा २ पेटपर सोजा होय तो ग्लीसगडन लगाणा ४ कपूर और सोरा देशी सरापमें देणेका जानवरोंका इलाज करणेवाले कहते हैं.

(३५ जू)-(इलाज)-१ तमाम बदन धोकर तमाखूका पाणी मसलणा २ कारबोलिक एसिडका कमजोर पाणी लगाणा ३ सीताफलके पत्तोंका रस लगाणा.

(३६ जखममें कीडे पडणा)-(इलाज)-१ जखमकूं ढके रखणा २ कीडोंकों चिपीयेसें निकाल जतनसे डालणा ३ टरपीनटाइनका तेल १ भाग अलशीका तेल ३ भाग मिलाके लगाणा ४ डीकामाली कपूर और तमाखूकूं पीस जखममें भर देणा ५ मिश्री पीसके भरणा.

(३७ गुमडां)-(फोडा)-(इलाज)-१ शेक करणा २ पोटिस बांधणा, ३ खुराक अच्छी देणी ४ छाणेसे रगड उसपर तेलमें मिलाय मनसिल लगाणा.

(३८ वरसाती)-(इलाज)-१ कास्टिक पोटाससें जलाणा २ कोयले और फूलाई भई फिटकडी जखमपर छांट जखमकूं सूका रखणा ३ मेगडुगल डीसइन फेकटींग पाउडर छिडकणा ४ बीन आईओडाईड ओफ मरक्युरीके मल्लमका पलाष्टर लगाणा ५ केलोमेल २० ग्रेण तथा अफीम २० ग्रेण दिनमें तीन वेर मूं आणेकी निसाणी दीखे जहांतक देणा ६ नीलाथोथा चुना फटकडी गोमूत्र मिलाके लगाणा ७ कत्था लगाणा ८ चोमासेमें भये सहतके छत्तेके मोमसें चाठोकूं मसलणा खून निकले जहांतक फेर उसपर मोम और राईके तेलका मल्लम बणाकर उसमें बंदूकका देशी दारू और खुरसाणीके कोयलोंका भूका मिलाकर वो मल्लम लगाणा.

(३९ भाठा)-(इलाज)-१ आसपास पलास्तर मारणा २ पोटिस बांधणी ३ काली जीरी मुरदासींग मोम सिंदूर और थोडा नीलाथोथा इनोंका मल्लम लगाणा.

(४० बुखार)-(इलाज)-मालिस करके वदनपर गरम झूल बांधणी २ नाइट्रिक इथर २ आउंस लाइकर एमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणी २० औंस मिलाकर पिलाणा और घंटे २ के फासलेसें देते रहणा ३ एपीकाक्युआनेका भूका १॥ द्राम फजर सांझ देणा अथवा इसकी एवजी आकके जडकी छाल देणी ४ क्रोंनाइन ३० ग्रेण चार २ घंटेके अंतरमें देते रहणा ५ फस्त खोलाणी ६ एलिया ५ द्राम टींकचर ओपियम १ आउंस मिलाकर जुलाब देणा ७ गरम जलकी पिचकारी बैठकमें ८ आराम देणा ९ टींकचर एकोनाइट पांच बूंद दो दो घंटेके फासले देते रहणा १० कपूर और सोराखार एक २ तोला मिलाकर गोली देणी ११ कपूर और चिरायता सरापमें मिलाकर इलाज करणेवालें देते हैं. १२ जखम अथवा फोडेके लिये बुखार होय तो उसपर बेलाडोना अथवा अफीमका लेप कर उसपर पोटिस बांधणा.

(४१ शरदीका बुखार)-(इलाज)-१ गलेपर पलास्तर मारणा २ अच्छी हवामें रखणा ३ एलिया १ द्राम हमेसां लीद नरम होयतो उहांतक देते रहणा ४ केलोमेल २० ग्रेण देणा (५ बुखार उतारणेकी दवा नं० ४० में) सो देणी ६ नाइट्रीक इथर १ आउंस लाइकर अमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ७ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ८ बफारा देणा ९ आंबी हलदी अजवाण मीठा तेल गुड इन

सबोंकी गोली वणाकर देणी १० सोरा २ द्राम कपूर २ द्राम भींडीका बीज २ द्राम सल्फेट ओफ सोडा दो आउंस मिलाकर चार२ घंटेके फासलेसें चटाणा.

(४२ संधीवा)–(इलाज)–१ टारटर इमेटीक २ द्राम सल्फेट ओफ सोडा २ आउंस मिलाकर दो दो घंटेके फासले एकेक आउंस देणा (२ सोजेपर) वेलाडोना ३ द्राम कपूर २ द्राम स्पीरीट वाइन १० बूंद एकस्ट्राकट हेमलोक ॥ आउंस सादा मलम ७ आउंस इनोंका मलम वणाकर लगाणा गरम पट्टा बांधणा ३ वफारा देणा.

(४३ गंडमाला इलाज)–१ वफारा देणा २ पोटिस बांधणा ३ पीप नहीं आवे तो पलास्तर मारणा ४ पीप होय तो चीरके निकाल डालणा ५ पीप हो जाय एसी दवा लगाणी ६ बुखार होय तो सोराखार ३ द्राम दाणेमें मिलाकर देणा ७ बुखार गये वाद पाचक दवा जेसेकै चिरायता जनशन सूंठ वगेरे देणा ८ खुराक देणा शेक करणा १० पककर चीरादिया भया होय तो उसपर डीकामालीका तेल रगडणा ११ आकका दूध लगाणा.

परचुरण–मसाला.

(४४ शरीर अकड जाणा)–(इलाज)–१ खारककी गुठली निकाल उसमे अफीम भरके कपड मिट्टी करके अंगारपर शेक ये खारक आधी खिलाणीं जितना दिन खिलाणा उतनाही दिन दाणा देणा नही और जल गरम कर पिलाणा २ साजीखारसें भर निमक जोड अजवाण सालम एक २ पेसे भर लेकर उसमें पावगुड मिलाकर फजर साझ फकत् गेहूके आटे सेके भयेमें मिलाकर खिलाणा दाणा खिलाणा नहीं २ दो पेसा भर गूगल गोमूत्रके संग खिलाणा ३ सेंभर निमक और लसण सम वजन खिलाणा पाणी गरम पिलाणा.

(४५ खुजली)–(इलाज)–१ गधक मनसिल और वायविडंगकूं महीन पीस एक रात पाणीमें भिगाकर फजर कडवे तेलमें मिलाकर वदनपर मालिस करणा तीन घंटे धूपमें खडा रख फेर मट्टी मसल धो डालणा.

(४६ वायूका रोग)–सोजा और लीद वध होय तव कालीजीरी मिरच फुलाया भया टंकणखार साजीखार कुटकी राई हींग एकेक पेसे भर लेके सबोंके वजन वरावर अजवाण डाल आदेके रसमें गोली वणा पांच रुपियाभर खिलाणा.

(४७ आंखका फूला)-(इलाज)–सोनामखीके पत्थर लेके उसमें फिटकडी फुलाई भई सरसूंके बीज मिश्री काली मिरच और कचूर मिलाकर महीनखरलकर सात दिन अंजन करणा २ मछली तथा वकरीका पित्त सहतमें खलकर अंजन करातेहैं.

(४८ नाकमेसें खून गिरणा)–(इलाज)–१ सूंफ धाणा जीरा सूठ इन चारोंको महीन पीस घोडेके कपालमें लेप करणा और उठके मींगणोंको महीन पीस उनके

(३६ जखममें कीडे पडणा)-(इलाज)-१ जखमकूं ढके रखणा २ कीडोंकों पिचकारीसें निकाल जतनसे डालणा ३ टरपीनटाइनका तेल १ भाग अलशीका तेल ३ भाग मिलाके लगाणा ४ डीकामाली कपूर और तमाखूकूं पीस जखममें भर देणा ५ मिश्री पीसके भरणा.

(३७ गुमडां)-(फोडा)-(इलाज)-१ शेक करणा २ पोटिस बांधणा, ३ सुराक अच्छी देणी ४ छाणेसे रगड उसपर तेलमें मिलाय मनसिल लगाणा.

(३८ वरसाती)-(इलाज)-१ कास्टिक पोटाससें जलाणा २ कोयले और फुलाई भई फिटकडी जखमपर छांट जखमकूं सूका रखणा ३ मेगनुगल डीसइन फेक्टींग पाउडर छिडकणा ४ बीन आईओडाईड ओफ मरक्युरीके मलमका पलाष्टर लगाणा ५ कलोमेल २० ग्रेण तथा अफीम २० ग्रेण दिनमें तीन वेर मूं आणेकी निसाणी दीखे जहांतक देणा ६ नीलाथोथा चुना फटकडी गोमूत्र मिलाके लगाणा ७ कत्था लगाणा ८ चोमासेमें भये सहतके छत्तेके मोमसें चाठोकूं मसलणा खून निकले जहांतक फेर उसपर मोम और राईके तेलका मलम बणाकर उसमें बंदूकका देशी दारू और सुरसाणीके कोयलोंका सूका मिलाकर वो मलम लगाणा.

(३९ भाठा)-(इलाज)-१ आसपास पलास्तर मारणा २ पोटिस बांधणी ३ काली जीरी मुरदासींग मोम सिंदूर और थोडा नीलाथोथा इनोंका मलम लगाणा.

(४० बुखार)-(इलाज)-मालिस करके बदनपर गरम शाल बांधणी २ नाइट्रिक इथर २ आउंस लाइकर एमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणी २० औंस मिलाकर पिलाणा और घंटे २ के फासलेसें देते रहणा ३ एपीकाक्युआनेका सूका १॥ ड्राम फजर सांझ देणा अथवा इसकी एसी आकके जडकी छाल देणी ४ क्वीनाइन ३० ग्रेण चार २ घंटेके अंतरमें देते रहणा ५ फस्त खोलाणी ६ एलिया ५ ड्राम टींकचर ओपियम १ आउंस मिलाकर सुवाय देणा ७ गरम जलकी पिचकारी बैठकमें ८ आराम देणा ९ टींकचर एरोनाइट पांच बूंद दो दो घंटेके फासले देते रहणा १० कपूर और सोरासार एक २ गोला मिलाकर गोली देणी ११ कपूर और विरायता सगपमें मिलाकर इलाज करणेसें देते हैं. १२ जखम अथवा फोडेके लिये बुखार होय तो उसपर बेलाडोना अथवा बेलीनका लेप कर उसपर पोटिस बांधणा.

(४१ शर्दीका बुखार)-(इलाज)-१ गलेपर पलास्तर मारणा २ अच्छी हवामें रखणा ३ एलिया १ ड्राम हलेसां खोद नरम होयतो उहांतक देते रहणा ४ कलोमेल २० ग्रेण देणा (५ बुखार उतारनेकी दवा नं० ४० में) सो देणी ६ नाइट्रीक इथर १ आउंस लाइकर अमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ७ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ८ वखार देणा ९ आंवी हलदी अजवाण मीठा तेल गुड इन

सवोंकी गोली वणाकर देणी १० सोरा २ द्राम कपूर २ द्राम भीडीका वीज २ द्राम सल्फेट ओफ सोडा दो आउंस मिलाकर चार२ घंटेके फासलेसें चटाणा.

(४२ संधीवा)–(इलाज)–१ टारटर इमेटीक २ द्राम सल्फेट ओफ सोडा २ आउंस मिलाकर दो दो घटेके फासले एकेक आउंस देणा (२ सोजेपर) वेलाडोना ३ द्राम कपूर २ द्राम स्पीरीट वाइन १० वूंद एकस्ट्राकट हेमलोक ॥ आउंस सादा मलम ७ आउंस इनोंका मलम वणाकर लगाणा गरम पट्टा वांधणा ३ वफारा देणा.

(४३ गंडमाला इलाज)–१ वफारा देणा २ पोटिस वांधणा ३ पीप नही आवे तो पलास्तर मारणा ४ पीप होय तो चीरके निकाल डालणा ५ पीप हो जाय एसी दवा लगाणी ६ वुखार होय तो सोराखार ३ द्राम दाणेमें मिलाकर देणा ७ वुखार गये वाद पाचक दवा जेसेकै चिरायता जनशन सूंठ वगेरे देणा ८ खुराक देणा शेक करणा १० पककर चीरादिया भया होय तो उसपर डीकामालीका तेल रगडणा ११ आकका दूध लगाणा.

परचुरण–मसाला.

(४४ शरीर अकड जाणा)–(इलाज)–१ खारककी गुठली निकाल उसमें अफीम भरके कपड मिट्टी करके अंगारपर शेक ये खारक आधी खिलाणीं जितना दिन खिलाणा उतनाही दिन दाणा देणा नही और जल गरम कर पिलाणा २ साजीखारसें भर निमक जोड अजवाण सालम एक २ पेसे भर लेकर उसमे पावगुड मिलाकर फजर साझ फकत् गेहूके आटे सेके भयेमें मिलाकर खिलाणा दाणा खिलाणा नहीं २ दो पेसा भर गूगल गोमूत्रके संग खिलाणा ३ सेंभर निमक और लसण सम वजन खिलाणा पाणी गरम पिलाणा.

(४५ खुजली)–(इलाज)–१ गंधक मनसिल और वायविडंगकू महीन पीस एक रात पाणीमें भिगाकर फजर कडवे तेलमें मिलाकर वदनपर मालिस करणा तीन घंटे धूपमें खडा रख फेर मट्टी मसल धो डालणा.

(४६ वायूका रोग)–सोजा और लीद वंध होय तव कालीजीरी मिरच फुलाया भया टंकणखार साजीखार कुटकी राई हींग एकेक पेसे भर लेके सवोंके वजन वरावर अजवाण डाल आदेके रसमें गोली वणा पांच रुपियाभर खिलाणा.

(४७ आंखका फूला)-(इलाज)–सोनामखीके पत्थर लेके उसमें फिटकडी फुलाई भई सरसूंके वीज मिश्री काली मिरच और कचूर मिलाकर महीनखरलकर सात दिन अंजन करणा २ मछली तथा वकरीका पित्त सहतमें खलकर अंजन करतेहैं.

(४८ नाकमेंसे खून गिरणा)–(इलाज)–१ सूफ धाणा जीरा सूठ इन चारोंको महीन पीस घोडेके कपालमें लेप करणा और उंटके मींगणोंको महीन पीस उसके

पाई १ भर सींधे निमकके संग गऊके घीमें मिलाकर अंगारपर धर उसका धूआं नाकमें देणा.

(४९ भूक लगणेकेवास्ते)-(इलाज)-बंबूलकी छाल सींधा निमकसेंभर निमक साजीखार सेंचल राई लसण काली जीरी अजवाण आंबा हलदी वायविडंग सुपेद मूसली और फुलाई भई सुहागी इनोंकों सम वजन लेकर गऊके दहीमें मिलाकर हमेस एक रुपिया भर देणा गरमीकी मोसममें देणा नहीं.

(५० जहर बाधवास्ते)-(इलाज)-मिरच कसोंदी और अदरक खाणेकै पान सम वजन सब मिलाके देणा २ राइ तथा मिरच पीपलामूल ये दरेक एकेक तोला हींग टंकणखार और अफीम ये दरेक ॥ तोला सब दवायोंके बराबर लोंग अकलकरा सूंठ और पीपलामूल मिलाकर फजर सांझ देणा.

(५१ ताकतदार मसाला)-पींपर लसण पीपलामूल कुटकी वायविडंग कचूर सोहगी कालीजीरी अजवाण हलदी घोडावज गूगल दही साजीखार मेथी सुंठ मयणफल कामणीकाबीज चित्रक बधायरा जीरा भांग हींग फूलाई फिटकडी आटेके संग मिलाकर देणा.

(५२ सब रोगनाशक मसाला)-कुटकी कालीजीरी आंबीहलदी वायविडंग टंकणखार फुलाई भई फिटकडी मिरच करंज पीपला मूल हरडे बहेडा आंवला करमाला आसगन्ध अजवाण मेथी राई ये सब सम वजन सबोंसें दूणा गुड इसमेंसे पांच रुपे भर मात्रा देणी इससे शरदी जहर बाद सब जाता है.

(५३ चांदणीवास्ते मसाला)-राई मिरच पीपलामूल ये सब सम वजन लेकर उसमें पींपर काली मिरच सूठ पान सहजणेकी छाल करंज मयणफल ये सब एकेक पेसे भर मिलाकर फजरके देणा और उसका मूं बांध अंधेरेमें बांधणा २ लसण हींग टंकण खार कालीजीरी अजवाण पीपलामूल मिरच सूंठ रींगणी सींधानिमक सेंचल साजी खार जलाया भया सेंभरसींग जवासेकी जड अतीसकी कली पान अदरक इन सबोंकों सेके भये आदेमें मिलाकर देणा और दो पहर बांधके रखणा और गरम किया भया पानी ठंडा कर देणा.

किरण १३ मी.

जहरके इलाज-

जहर दो तरेका होता है, स्थावर और जंगम, स्थावर जहरमें खानेसे पैदा भये या [illegible] भये या दरख्त वगैरोंका समावेश होता है, और जंगम जहरोंमें सांप वगैरे जहरी जानवर जानना जुदे२ जहरोंका जुदे२ लक्षण होते हैं, और लक्षण जाणे बाद [illegible] इलाज होवे तो कितनेक रोगी बच सकते हैं, बदनमें दोतरेसे जहर घुसता

है, एकतो जांण बूझकर जहरी चीज खाणे पीणेसें दुसरा भूलसें या जहरी जानवरोंका डंक लगणेसें जहर चढता है, केइयक आपघात करणेकूं जहर खा लेते हैं, जहरी चीजें जगतमें थावर जंगम असंख्य है, सामान्य इलाज इहां लिखेंगें जिस करके बचाव कुछ होय वाद विशेष इलाजीका आसरा लेणा मुख्य२ जहरोंका इलाज लिखते हैं.

(सोमल)–(आर्सेनिक)–अफीमके दुसरे नंबरमें सोमल जहर है, वो थोडीभी प्राणियोंका प्राणनाशक है, सोमलमें कुछभी स्वाद नहीं है, इसवास्ते बेमालम खाणे पीणेमें आजाता है, शंखिया मारवाडमें इसकूं कहते हैं, (सोमलके जहरके चिन्ह)– खाये पीछै एक घंटे वाद पेटकी कोडीमें दरद होता है, दावणेंसे दरद होता है, पीछै उवाकी उलटी होती है, वदनमें शीतांग सन्निपात जैसा पसीना होता है, अवयव धूजता है, हाथ पैर तथा नाककी डंड़ी ठंड़ी पडती हैं, आंखोंकी आसपास आसमानी चक्कर फिरते नजर आते हैं, नाडी करडी और जल्द होती है, पीछै दस्त लगणे लग जाता है, पेटमें चूंक तथा कटाव होता है, पेशाव थोडा आता है, उसमें अंगारसी मालम दै पेशाव बंधभी होजाय खूनभी गिरणे लगे आंखोंमें जलण लाल होजाय शिरमें दर्द छातीमें धडकणा श्वास जल्द और रुकता आवै अत्यत दाह होणेसें रोगी पुकारणे लगे विछोणेमें हाथ पैर पटकै हाथ पांवोमें वांइटे आवै नवज बैठ जाय चहरा लेवाई जाय रक्ताशय बंध पडे और मर जाय, सोमलके जहरवाला आखरतक हुसियारीमें रहता है.

(इलाज)–सोमल कमसे कम किसी वखत अदमीकूं २॥ ग्रेणमें मार डालता है, लेकिन् सोमल वजनदार होणेसें दस्त उलटीमें वहोत भाग तो निकल जाता है, इसवास्ते सोमलका जहरी आधे सुधर सकतें हैं, (१ उलटी) इसकेवास्ते अच्छा इलाज है, उलटीकेवास्ते अफीमके जहरमें लिखे उससेंकै कराणा उलटी आपसेंही होणे लगे तो उलटीकी दवा देणी नहीं (२ पालण)–उलटी भये पीछै जहर मिटाणेकूं थोडे२ मिन-टोसें दो दो प्याले दूध अथवा दूध और वरफ मिलाकर देणा वरफ चुसाणा दूध तथा चूनेका पाणी सम वजन मिलाकर पिलाणा अथवा चूनेका पाणी सालिड तेल देते रहणा (दाह मिटाणेकूं)–ठढा जल वरफ नींवूका अथवा नारगीका सरवत और पाणी सोडावाटर साबू दाणेकी कांजी गूंदका पाणी वगेरे ठंडी चीजें एरफेरसे देते रहणा घी पिलाणा ४ आंकसी मिटाणे सल्फ्युरिक इथर तथा लाडेनमदश २ बूद थोडे जलमें मिलाकर पिलाणा और जरूर पडे तो तीनचार घटेसें फेर देणा ५ ईस पूगल दही गुलाव जल और वेदाणा पिलाणा ६ मखण और मिरच ७ कत्थेका पाणी ८ चंद-लियेका अथवा नींवका रस ९ सहजणेकी छालका रश और दूध १० घी अथवा दही पिलाकरके कराणी.

(हरताल) ये दोनों सोमलका सार है इसवास्ते इनोका गुण.

(मनसिल) भी सोमल जेसा ही है इसवास्ते इलाज भी सोमल जेसा ही करणा १ चूनेका पाणी और तेल पिलाणा२ उलटीकी दवा देणी ३ राई दूध आटा और पाणी.

(पारा)–(मर्क्युरि) पारा अपणे निजस्वरूपमें जहरी नहीं है फक्त पारा खाणेमें आवे तो शरीरमें नहीं मिलकर कुछभी इजाया असर करे विगर दस्तके रस्ते निकल जाता है पारेमें खाणके दोपसें सीसा जसद कथीर वगेरे धातुओंका पारा सत है इस वास्ते उन २ चीजोंका मिलाप है वोही सात कंचुकीरूप सात जहर है सो दुसरे भाग-में हम सोधन लिखा है उस मुजब शुद्ध हो जाता है पारा हीगलूमेंसें निकाला भया शुद्ध सब रसोंमे सामान्य तोर डालणेमें विगाड नहीं करता अशुद्ध पारेकी सब बनावटे जहरी होती है जेसें रस कपूर हीगलू रस सींदूर क्यालोमेल व्हाइट प्रेसिपिटट इनोंमें रस कपूर बडा जहर है उसके जहरसें मूं गला अन्न नल और होजरीमें दाह तथा चांदे गिरते हैं उलटी और दस्त होता है दस्तमें खून गिरता है पेटमें दरद होकर पेट फूल जाता है मूं और मसूढा फूल जाता है लाले झरती है आखर खेंचताण होकर मर जाता है (इलाज)–१ दूधमें गहूंका आटा पकाकर देणा २ दूध गूंदका पाणी अलशीकीचा तथा गहूंके आटका पटोलिया सब मिलाकर पिलाणा ३ लोहकी पुराणी काटी गुंदके पाणीमें पिलाणा इससे उलटी होणे देणी और एरंडी तेलका जुलाब देणा ४ बंबूलके छालके पाणीका अथवा फिटकडीके कुल्ले करणा ५ डाकतर लोक मुरगीके इंडोंके सुपेद छिलके टूटे पाणीके संग मिलाकर ऊपरा ऊपरी पिलाकर उलटी कराया करते हैं ६ और अछा इलाज रस कपूरके जहर उतारणेका बतलाते हैं लेकिन् ये इलाज आर्य लोकोंका नहीं छिलके मुसलमानोंके महोल्लेमें पडे मिलते हैं ६ जादा घी पिलाकर उलटी करानी ७ उलटी कराये पीछे मांजू फलका अथवा आंवलेका चूर्ण गरम पाणीसें पिलाणा ८ मांसरी६ जलमें उकाल कुल्ले करणा ९ नागरवेलके रसमें गंधक देणा १० मीं नाकी (उसी) अथवा करेलीकी जडका रस पिलाणा.

(नीलथोथा)–(तांबेका जहर)–(ब्युविड्रीओल)–(जंगाल)–ये भी तांबे-का जहर है कहींद दांतमें कहींद भूलमें ये काट खाणेमें आ जाता है काट चढे तांबेके बरतनमें खाटेदार चीज पकेमें जंगालका जहर आता है (लक्षण)–उलटी पेटमें दरद दस्त तथा किसी वखत खेंचताण होकर मरभी जाता है (इलाज)–मांके जहर मुजब उलटी देकर जहर निकाल डालणा २ दूध पाणी गहूंका आटा पिलाणा ३ डाक-तर लोक छिलके तिलों है ४ मीठूका सत्व तथा मिश्री ५ कच्चेका पाणी.

(बीस्मथ)–(मुशकेट)–(विन्द)–मूमें मीठासवाला धातूका स्वाद गलेमें जम कर उलटी किसी वखत सूनकी उलटी दस्त सब पेटमें चूंक जोरसें होय पेटमें खेंच

अथवा अंग झल जाय (इलाज)–१ एप्समसोल्ट पाणीमें मिलाकर पिलाणा उलटी भये पीछै २ गूंदका पाणी दूध चावलोंकी घाट और दुसरी चिकणी चीजें पिलाणी.

(काच)–काचका महींन वुरादा पेटमें जाता है तो जहर जैसा विकार करता है– (लक्षण) कै दस्त पेटपर आफरा दरद वुखार प्यास दाह–(इलाज) १ दही दूध अथवा अंबली खूब पिलाकर उलटी कराणी २ नवसादर अथवा गोपीचदन पिलाणा.

(अफीम)–(ओपियम)–(अफीमके जहरके चिन्ह)–चक्कर आवे शिर फिरे शिरमे दर्द होय नसेमें झोका खाय वतलाणेसे वरावर सुणे नही और पीछै आधी वेहोसीमें आवै वहोत जोरसे वतलाणेसें हिलाणेसें या मारणेसें जरा हुसियारीमें आता है, फेर पीछै वेहोस हो जाता है फेर किसीभी तरे हुसियारी नहीं आती श्वास धीरे चलता है छाती धडकती नही आंख मुंच जाती है आंखकूं उघाडके देखणेसें कीकी छोटी सूईके अणी जेसी भई मालम देती है पसीना आता है होठ मूं काला पडता है दस्त कज्ज जी घभराकरकै होय किसी वखत लकवा या खेंचताणभी किसीके होता है जादा वजनमें खाणेसें उसकी जहरी असर कमसेकम आधे घंटेमें मालम देती है निराहार पेट खाणेसे जलदी असरकरता है खाकर नीद लेणेसें जल्दी असर करता है फिरणेसे कम असर करता है कमसे कम ५ ग्रेण याने दोयसे तीन रत्ती खाणेसें सोफीवाजे वखत मर जाता है–(इलाज)–अफीमका जहर उतारणेकूं दो रस्ते हैं एक तो इसतरेकी खाये पीछै जल्दी इलाज होय तो सव पेटमें गया भया तमाम अफीम निकाल डालणा अगर जो कुछ देरी भई होय तो जहरका थोडा या वहोत असर खूनमें मिल गया होय तो अफीमके जहरकु मिटावे एसी विरुद्ध तासीरकी दवा देणी १ पेटमेंसे जहर निकालणेकूं डाकटरोकी सल्लासे–(स्टम क्यंप)–का उपयोग करणा पंप हाजर नहीं होय तो इसतरे उलटी कराणी २ गलेमें पींछा फेरकर उलटी कराणी उलटी लाणेवाली दवायें देणी ३ सल्फेट ओफ झिक–हाजर होय तो २० ग्रेण गरम पाणीमें मिलाकर पिलादेणा वो हाजर नहीं होय तो ४ राई १ सें दो चमचा थोडे जलमें मिला पिलाणा– ५ इपीकाक्युआन्हा पाउडर, १५ ग्रेण गरम पाणीमें मिलाकर पिलाणा उलटीकी दरेक दवापर गरम पाणी अथवा निमकका पाणी जादा पिलाणेसें उलटीकू जादा उत्तेजन मिलता है जो उलटीसें सव जहर वाहर निकल पडेतो रोगी तदन अछा हो जाता है और दुसरे किसीभी इलाजकी गरज नहीं रहती उलटी भये वाद भी जहरके ऊपर लिखे चिन्ह जो कभी कायम रहे तो समझणाके वदनमें जहर घुस गया है एसी हालतमें रोगीकूं जागते रखणेका इलाज करणा, (जाग्रत करणेकू) ६ ठंडे पाणीका उलका आंखोपर खूब मारणा शिरपर ठंडा पाणी डालणा पुकारके जगाणा हिलाना चुंटिये काडणा हरतरे जागते रखणा नींद लगणे देणी नहीं विछोणेमें पटणे देणारी नहीं ७ सरन

काफी पाव२ घंटेमे पिलाते जाणा जोरोगी लिवरीज जाय और नाडी बैठ जाय ८ तोला-इकर एमोनीयूद १० अथवा ९ सालवो लेटाइल ३० से ४० बूंद थोडे जलमें मिलाकर देणा अथवा १० डाकतर लोक जलमें ब्रांडी मिलाकर देकर पांवपर गरम पाणीके बाटलीका शेक कराते हैं, लाडेनम तथा मोरफीया ये अफीमकीही बनावटें है, और दवाकीतेर देणेमें आवे तो जादा वजनमें जहरी असर करता है, ११ फिटकडी तथा कपासियेका चूर्ण पिलाणा १२ हींग और पाणी अथवा अरीठेका पाणी पिलाणा.

(जहरकुचीला)-(नक्सवोमिका)-अपणे बजारमें कुचीलेका फल मिलता है, देशी वैद्य इसकी गोली चावल वगेरे दिया करते हैं, अंग्रेजीमें मुख्य इसकी दो बणावटें हैं, (स्ट्रीकनीया)-(तथा नक्सवोमिका)-पहली बनावट बहोत जहरी है, (कुची-लेके जहरके चिन्ह)-ये जहरके सब चिन्ह धनुर्वातके मिलते हैं, खाये पीछे थोडे मिनटोमें या घंटे भरमें जहरका असर दिखाता है, नसोमें खेंचाताण होता है, (इलाज) उलटी और जुलाबकी दवा देणी २ नसोंकू ढीली करणेवाली दवा देणी जैसें अफीम नीमसेनी या आरती कपूर क्लोरोफोर्म और क्लोरलहाईट ३ एक रुमालपर ॥ ड्राम क्लोरोफोर्म छिडक कर दरदीके नाकमें दो इंच अलग धरणा और खेंचाताण होय तहां-तक वेर२ इस मुजब करणा ४ महीन कूटा भया कोयला चार कोल पाणीमें वेर२ देणा उसकी पिचकारी मारणी ५ जादा घी पिलाकर उलटी करानी.

(धतूरा) (स्टेमोनियम)-धतूरेका सब दरख्त जहरी है, उसमें बीज जादा है, थोडे धतूरेमें जहर चढता नहीं जादामें चढता है, (चिन्ह)-खाये पीछे आधे घंटे पीछे उसका चिन्ह मालूम होता है, पहली शिरमें चक्कर आवे गलेमें शोष प्यास आंखोंकी डीकोयोंकी दृष्टिका किसनेक अंशमें नाश होता है, आंख तथा चहरा लाल होता है, नाड चढता है, कानोंमें कुछ समाचता होय अथवा हवामेंसे कोइ पदार्थ पकडता होय ऐसा हाथ पाव करता है, आखर बेहोशी आती है, नाडी जल्द होती है, और जहर बहोत चढा होय तो बदन ठंडा होकर मर जाता है, हाथके चाले आंखोकी डीकोयोंकी बेठक जहरके खास चिन्ह है, (इलाज)-उलटीकी दवा देकर उलटी करावणी तथा दस्तकी दवा देणी २ आवेर घंटेमें तेज काफी पिलाणी नींद लेणे देणी नहीं ३ मनुष्य रुद्र सोमूत्रमें पिलाणा ४ तेज गरम जलमें पिलाणा ५ भात गंधा भया होवे तो खवाय खाकर पिलाणा.

(कडवा)-(एकोनाइट) ये बहोत तेज जहर है, ये दरख्तकी जड है, कडवाश के मरजाडेमें मीठेमें होता कहते हैं उसमें कडवा होता है, पूरब तिब्बेमें पीदा होता है, यो बहोत जहर है, (इनके जहरके चिन्ह)-मुंह जीभ तथा होठोंपर चमचमाट झणझणाट बदन सुन्ने पडे उलटी होय गलेमें कांपणी आंखोमें अंधारा कानोंमें भुंणाट

शरीर शून्या होजाता है, दरदी बेहोस हो जाता है, श्वास धीरे चलता है, नाडी नाताकत और छोटी होजाती है, श्वासकी हवा ठंढी और हाथ पांव ठंढा पडता है, आखर हिचकेके साथ मर जाता है, (इलाज)–१ उलटीका इलाज करणा २ पीछे आधी २ घंटेसे तेज काफी पिलाणी साबू तथा पाणीकी पिचकारी मारकर पेट साफ कराणा.

(भांग)-(गांजा)-(हेम्प)–ये दोनों एकही दरखतकी पैदाश है, भांग उसके पत्ते हैं, गांजा उसका फूल है, इस मुलकवाले गांजेकूं चिलममें पीते हैं, भांग घोटकर पीते हैं, इसके सिवाय चडस माजम ये सब इसकी बनावटे हैं, चरस सुलफा ये इस दरखतका रस है, माजम इसके घीसें पाक बणता है, (जहरी चिन्ह)–आंख और चहरा लाल होजाता है, तोफान करता है, हसता है, गालिये देता है, मारणे दोडता है, पागल जैसा अहवाल होता है, (इलाज)–उलटी कराणी दस्तकी दवा देणी ३ शरीरपर ठढे पाणीकी धार देणी ४ आमोनिया सुंघाणी ५ सोणे देणा ५ दही अथवा छाछ पाणी अथवा छाछ चावल खिलाणा.

(कणेर)–ये फूलका दरखत जहरी है, जांनवर खाते नहीं है, जडमें जादा जहर है, वो दवामेंभी काम आती है, (जहरके चिन्ह)–उलटी चक्कर नसा बेहोसी खेंचाताण नाडी नाताकत शीतांग श्वासका रुकणा और मौत (इलाज)–माखणके ऊपरका जल पिलाणा २ दूधमें अथवा दहीमें मिश्री मिलाकर पिलाणा,

(बहेडा)–बहेडेके अंदरकी गुठलीका बीज जहरी है, जादा खाणेमें आवे तो जहरके चिन्ह मालम देते हैं, वो चिन्ह अफीमसें कुछ मिलते भये हैं, (इलाज)–उलटी तथा दस्तकी दवा देकर जहरकुं निकाल डालणा वदनमें गरमी लाणे दवा देणी,

(कडवी विदाम)–विदाम जो खाते हैं, उसमें कोइ २ कडवी निकलती है, वो जहरी है, (इलाज)–पीठपर तथा मूंपर ठंढा पाणी छांटणा हिराकसी टींकचर ओफ स्टील और पाणी उनमान मुजब डाकतर लोक पिलाते है,

(तमाखू)–तमाखू दांतोमे रगडणेसें खाणेसें चिलममें पीणेसें बांधणेसें वदनपर रगडणेसें जादा उपयोग होणेसें हरतरे जहरी असर जताता है, जिसकूं मावरा नहीं होय उसकूं थोडेमें शिरमें चक्कर आता है, (जहरके चिन्ह)–नाडी जरा जलद चले चक्कर आके उलटी होय पीछे नाडी मद पडे वदन तूटे नाताकती मालम दे शरीर ढीला पडे रक्ताशयकी अगर क्रिया बंध होजाय तो किसी वखत मरभी जाता है, इसका पुराणे जहरी असरसें केइ मरभी चुके हैं, लेकिन् बेकूब लोक इसकू जहरी नहीं समझते, (इलाज)–उलटी कराणी एरड तेलका जुलाब देणा मांजू फलका काथ अथवा टेनिक एसिड पिलाणा,

(सुपारी)–नसा चढता है, घी पीणा मीश्री पीणा ठंढा पाणी पीणा,

(जमालगोटा)–इलायची दहीमें पिलाणा, २ धाणा दहीमें मिश्री डाल पिलाणा, ३ दही चावल मिश्री घी डाल खिलाणा.

(भिलावा)–भिलावा खाणेसें अथवा शरीरपर लग जाणेसें खुजली दाह और पाणी टपकणे लग जाता है, वाहरके इलाजोंसे मिटता हैं, १ सरसूं चंदलिया और मखणका लेप २ मखण तिल तथा दूधका लेप ३ खोपरेका तेल लगाणा ४ अंबलीके पत्ते वाफके बांधणा ५ खोपरा तिल घी खाणा इत्यादि भिलावा सोधन प्रकरणमेंभी केइ उतार देखणा.

(चिरमी)–१ चंदलियेका रस मिश्री डालकर पिलाणा घी पीलाणा.

(आक)–आकका दूध इसकेवास्ते अमलीके पत्ते पीस लेप करणा और इसका दूध पेटमें गया होय तो घी पिलाणा.

(थोर)–घी पीणा तथा घी लगाणा मिश्री ठंढे जलमें पीणा.

(सराप)–घी बूरा चटाणा सिरपर ठंडा पाणी डालणा ३ सुपेद पेठेके रसमें दही धाणा मिश्री डाल पिलाणा ५ ककडी खिलाणी.

(बेलाडोना)–(चिन्ह)–मूं तथा गलेमें शोष प्यास गलेका रुकणा बहोत तोफान करे हसे आंखकी कीकीबडी होय चहरा लाल तथा सूजा भया नाडी धीरी मीट आवै नीचेका अंग झिल जाय हिचका और मरण मरे पीछे सब वदन सूज जाता है, नाक कान तथा मूंमेसे खून चलता है.

(इलाज)–उलटी कराणा २ अफीम बेलाडोणेका उतार है, बेलाडोणेका जहर उतार डालता है, इसवास्ते एक औंस पाणीमें ॥ द्राम अफीमका अर्क देणा, जहांतक जहरका असर मिटे नहीं उहांतक दश२ मिन्टमें देणा काफी वेर२ पिलाणा अफीम नहीं मिले तो

(हाइड्रोस्यानिक एसिड)–बडा सख्त जहर है, वो दवामें वापरते हैं, लेकिन् जो कभी गफलतमें जादा प्रमाण उपरांत देणेमें आवे तो तत्काल जहर चढता है, इलाज करणेभी वखत नहीं मिलता (इलाज)–रोगीकूं सुघाणे नाक आगे कारबोनेट ओफ अमोनिया धरणा तथा एक प्याला पाणीमें थोडा मिलाकर पिलाणा २ पीठपर वरफ तथा वरफ जैसा ठंडा पाणी डालणा मूं छातीपर छांटणा इतनेसे जहरकी शांति नहीं होय तो सल्फेट ओफ आयर्न (हीराकशी) १० ग्रेन एक औंस पाणी और १ द्राम टिंकचर ओफ स्टील तीनोंको मिलाकर पिलाणा ४ अथवा ऊपरकी मिलावटोंके संग दो औंस पाणीमें पिघलाया भया कारबोनेट ओफ सोडा २० ग्रेन मिलाकर देणा.

(फोसफरस)–इस मुल्कमें फोसफरसके जहरका बणाव बहोतही कम बणता है,

तोभी दियासलाई घर२में वापरणमें आती है, उसके आगे फोसफरस होता है, इस-वास्ते वो छोटे बच्चोके हाथमें नही आवै इसकी सावधानी रखणी.

(इलाज)–१ उलटी देणी २ मेग्निस्या १ भाग और क्लोराइन वोटर ८ भाग उसमेंसें एकेक चिमचा दश२ मिन्टसें देणा.

(ओसडझ)–एसेटिक एसिड स्ट्रांग विनीगर (सरका) साइट्रिक एसिड म्युरियाटिक टार्टरिक नाइट्रिक ओग्झेलिक सल्फ्युरिक वगेरे एसिड है, और ये सब दाह करणेवाले जहर है, (इलाज)–१ मेग्निस्या पाणीके संग देणा २ गरम पाणीमें चाक मिलाकर पिलाणा ३ सोडा पाणीमें मिलाकर पिलाणा ४ कारवोलिक एसिडके उतार वास्ते साकरेट ओफ लाइम देणा ५ नीवूका सरवत देणा.

(आल्कलीझ)–आमोनिया पोटाश सोडा सालवो लेटाइल ये सब आल्कलीझ है, (इलाज)–१ आधा पाणी आधा सिरका २ लेमोनेड अथवा नींवूका रस ३ तेल.

(एन्टीमनी)–(टार्टरइमेटिक)–(इलाज)–कत्था अथवा कत्थेका अर्क पिलाणा २ मेग्निस्या ३ टेनिक एसिड तथा मांजफलका पाणी.

(झिंक)–(सल्फेट ओफ) (इलाज)–१ दूध २ सोडा मेग्निस्या.

(आयर्न)–(सल्फेट ओफ आयर्न)-(इलाज)–सोडा.

(सिल्वर)-(नाइट्रिक सिल्वर)–कोस्टिक–सेंभरका निमक पाणीमें मिलाकर खूब पीणा उलटी करणा.

(सापका जहर)-(इलाज)–१ साप काटे जव झट डंकके ऊपरके भागमें ताणकर डोरी वांधणा पीछै २ डंककू चूस२के थूक डालते जाणा अथवा काटणे लायक जगे होय तो काट डालणा ३ जो वेसा नहीं वणे तो चकूसे डककूं कुचर कर खून निकाल डालणा और उसपर गुल देणा अथवा नाइट्रिक या कारवोलिक एसिड धरणा ४ वंदूकका दारू उस डंकपर धरके दियासलाइसे जला देणा ५ सख्तमें सख्त जो दवा हाजर होय सो पिलाणा डाकटर ब्रांडी पिलाते हैं, ६ सालवोलेटाइल आधा २ औंस पाव २ घंटेसे देते जाणा ७ इसीतरे जलमें मिलाकर डाकटर स्पिरिट देते हैं, ८ होजरी तथा रक्ताशयपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइनमें डुवाया भया कपडा धरणा ९ रोगीकूं किसीभीतरे नींद नहीं लेणे देणी १० आखर जखमपर पोल्टिस मारणी ११ सुपेद कणेर सुपेद चिरमी आक कडवा तूंवा इनोमेंसे जो मिले उसकूं जलमें घोटकर पिलाणा १२ टंकण अथवा फिटकडीका पाणी पिलाणा १३ घी सहत मखण पींपर आदा मिरच और सींधानिमक एकठाकर खिलाणा.

(वीछुका जहर)-(इलाज)–१ अफीम तथा ईपीकाक्युआन्हा पाउडर सम वजन दोनों नही मिले तो ईपीकाक्युआन्हाकी पोटिस कर डंक ऊपर वांधणा २ टार्ट-

रिक एसिड पाणीमें मिले इतने मिलाकर उसमें डूबाया भया कपडा डंकपर धरणा ३ वीनीगर याने सरकता पोता धरणा ४ निमक और पाणीका पोता धरणा ५ दस्त साफ लाणे जुलाबकी दवा देणी ६ आकके पत्ते तथा राई पीसके लेप करणा ७ वछनाग जमालगोटा नवसादर तथा हरताल नीलाथोथा दही इसमेंसे हरकोइका लेप करणा ८ धतूरेके पत्तोंका रस लगाणा आंधी झाडेकी जड पीसकर लगाणा और एक जड चबाणा काला वीछु और खारमें पैदा भया विछु बहोत जहरी होता है, उसके डंकपर आकके पत्ते वछनाग तथा राईका लेप करणा.

(चूहेका जहर) जहरी उंदर काटणेसें वदन फूट जाता है वात रक्त जैसे चट्टे होते है, दाह होता है, (इलाज)-१ धूमस (धूंआ) मजीठ हलदी सीधेनिमकका लेप करणा २ पारा गंधक कपूर सरसूं आकके दूधमें लेप करणा ३ त्रिकटु नींबोली सींधा निमक इनोंका चूर्ण मिश्री सहतमें पिलाणा ४ उंदर कर्णीका रश १।२। तोला पिलाणा वदनके मसलणा ५ सोनामुखीका बहोत दिनोंतक सेवन करणा.

(कुत्तेका जहर) (हडकवायु)-इसका इलाज सरत बंधीसें कर सके एसा जादा देखणेमें नहीं आया जो कुछ विद्वानोने लिखे हैं उसकूं अजमाणा चहिये १ डंककूं उसी वखत जला देणा २ गुड तेल आकके दूधका लेप ३ शीतल मिरच (अंकोलका) काथ घी डालकर पीलाणा ४ घोडेकी लीदका २ लीडे निचोड ३।४ मिरच डाल पिलाणा ५ भूंपयारीका रस या काथ घी डालके पिलाणा ६ कूकड वेलका रस बहोत दस्त उलटी कराकर जीव जो जहरी पैदा होते हैं, उनोंकों निकाल डालता है, ७ जहर कुचीला हडकवायुके पुगणे विकारकूं निकाल डालता है, इसवास्ते इस बेमारीमें वचे भये रोगीनें कितनेक महीनोंतक लेते जाणा बिलकुल मिटा देगा पतवाण भये इलाज काले गूलरकी जड धतूरेके फल चावलके धोये पाणीमें देणा धोवणमें पीसणा ९ करजके बीज हमेम वढाके खाणा निर्वे जहर मिटेगा १० आंधी झाडेकी जड तीम १ तोले नर हमेम सहतमें चटाणा ११ कवार पटेपर सींधानिमक डाल बांधणा तीन दिनमें जहर नाश.

(मकडी) (भमरा) (टांटिया)-१ कूंचीकी नली डंकपर दवा देणेसे उंक उतर जावेगा वहरी पीत उसमेंसे निकल जावेगा २ मालवोलेटाइल विनीगर तथा चूनी नवसा लोशनमाटर कमाणा ३ वजर अथवा तमाखूकूं निगाकर डंकपर मसलणा ४ डंके अंदर डंक नवा होवेतो मूंमें वरफ रखणा ५ और वाहर जोक लगाणी भमरेके चरकी नहीं तथा विछूका लेप करणा भमरा भमरी टांटिये इन सवकीडेके डंकपर डंक इलाज वीछ डंकोंकी चार अच्छी है,

(माकड)–माकडके डंकपर सरका तथा पाणी चुपडणा जो खुरसी वींच पलंगके सांधोमें टरपेन्टाइन लगादे तो फेर माकड पैदा होयभी नही.

(चींचड)–चींचडका डंक जरा काला लाल रंगका होता है, और आसपासकी जगे जादा फीकी पडी भई होती है, कितनेक बुखार एसे होते हैं, जिसमें चमडी उपस फुट जाती है, लेकिन् चींचडके जहरकूं ऊपर लिखे मुजब पहचाणना चहिये नहीं तो दोनोके सामान्य लक्षण एक होणेसे भूल होणा ताजब नहीं, (इलाज)–सिरका और जल मसलणा.

(जवा)–ये मारवाडके गांमोमें जहां ढोर बैठते हैं उस जगे जमीनमें घुसकर रहते हैं, काटे उस वखत मालम नहीं देता फेर जरा२ खुजाल आती है, तब जो उसकूं विगर खून पूरा पिये उतार दिया जावे तो वडी दाह और खुजली लाल२ वदन हो जाता है, चार पाईपर चढते नहीं, (इलाज)–सिरका पाणी गऊका गोवर या घी मसलणा (पिशु (सुरले) दुक्करकाई इत्यादि सब छोटे जहरी कीडे काटणसें घी और गोवर फायदा करता है, सांपके मलमूत्रसे या उसके मरे कलेवरसें जो कीडे पैदा होते हैं वो वडे जहरी काटणेसे वाजे वखत अदमी मर जाता हैं, दाह तो निश्चैही करता है, घी दूध गोवर प्रायें वहोतसे जहरोंका उतार मसलणे और पिलाणेसें जो प्राणी श्रीकलि कुंड पार्श्वनाथायनमः एसा मनमें जाप करते रहेगा उसकूं अचिंतपणे जहर जंगमका समागम नहीं होगा ये वडी अदभुत महिमा है, जैसें दादा श्रीजिनदत्तसूरि एसा नाम लेणेवालेकों विजलीका भय नहीं होता फेर जंगलमें उतरे भये प्राणियोनें अपणी रक्षा- वास्ते नमि जिनदत्त चले दिसावरा सदगुरु वाचा बंध चोर विछु सर्प नाहर चारं झाडा बंध २१ वेर गुण मनवचन काया थिर करके फेर तीन ताली वजा देणा पूर्वोक्त चीजोसे भय नहीं होगा आर्य वेद या सिद्धांत ये सब आगम सफल आस्तिकोकेवास्ते तत्काल है, नास्तिकोके तो अपणे निज पितामेंभी सदेह होता है कोन जाणे यही था वा अन्य मंत्रविद्या सर्व सत्य है, कर्ता क्रियाकी भूल है, अक्षरोमें अनंत शक्ति है, हस २ एसा नामोच्चार करते२ भये चार पहरमें सांप खाया भया एक ब्राह्मणीका लडका जहरसें वच गया असलमें उस लडकेका नाम हंस था उसकी माने मोहकी विकलतासे इस नामका उच्चारण और हस्तपास ये कुदरत कांम दे गई अभी देती है, ये व्याख्या महावीर भगवानके विद्यमान समयमें वणाजो वसुदेवहिंड ग्रंथ उसमें है, जिन महाज्ञानि योकू अक्षर मिलाणेकी कुदरत याद है, उनोने रचाजो अक्षर विन्यास उसमें अपर वलशक्ति है, नतु सर्वत्र अमलेसर विमलेसर झर२ स्वाहा इस मंत्रसे पीलिया चला जाता है, इत्यादि अनेक उपगारिक मंत्र मौजूद है, सद्य ग्रंथ गौरवके भयसें नहीं लिख सकते जैसे पदार्थोंके मिलणेसे अनेक चमत्कार विजली गैस तार फोनोग्राफ इत्यादि अनेक

रिक एसिड पाणीमें मिले इतने मिलाकर उसमें डूबाया भया कपडा डंकपर धरणा ३ वीनीगर याने सरकता पोता धरणा ४ निमक और पाणीका पोता धरणा ५ दस्त साफ लाणे जुलाबकी दवा देणी ६ आकके पत्ते तथा राई पीसके लेप करणा ७ वछनाग जमालगोटा नवसादर तथा हरताल नीलाथोथा दही इसमेंसे हरकोइका लेप करणा ८ धतूरेके पत्तोंका रस लगाणा आंधी झाडेकी जड पीसकर लगाणा और एक जड चवाणा काला वीछु और खारमें पैदा भया विछु वहोत जहरी होता है, उसके डंकपर आकके पत्ते वछनाग तथा राईका लेप करणा.

(चूहेका जहर) जहरी उंदर काटणेसें वदन फूट जाता है वात रक्त जैसे चट्टे होते है, दाह होता है, (इलाज)-१ धूमस (धूंआ) मजीठ हलदी सींधेनिमकका लेप करणा २ पारा गंधक कपूर सरसूं आकके दूधमें लेप करणा ३ त्रिकटु नींबोली सींधा निमक इनोंका चूर्ण मिश्री सहतमें पिलाणा ४ उंदर कर्णीका रश १।२। तोला पिलाणा वदनके मसलणा ५ सोनामुखीका वहोत दिनोंतक सेवन करणा.

(कुत्तेका जहर)-(हडकवायु)–इसका इलाज सरत वंधीसें कर सके एसा जादा देखणेमें नहीं आया जो कुछ विद्वानोने लिखे हैं उसकूं अजमाणा चहिये १ डंककूं उसी वखत जला देणा २ गुड तेल आकके दूधका लेप ३ शीतल मिरच (अंकोलका) क्काथ घी डालकर पीलाणा ४ घोडेकी लीदका २ लींडे निचोड ३।४ मिरच डाल पिलाणा ५ भूंपथारीका रस या क्काथ घी डालके पिलाणा ६ कूकड वेलका रस वहोत दस्त उलटी कराकर जीव जो जहरी पैदा होते हैं, उनोंकों निकाल डालता है, ७ जहर कुचीला हडकवायुके पुराणे विकारकूं निकाल डालता है, इसवास्ते इस वेमारीसे वचे भये रोगीनें कितनेक महीनोंतक लेते जाणा विलकुल मिटा देगा पतवाणे भये इलाज काले गूलरकी जड धतूरेके फल चावलके धोये पाणीसे देणा धोवणमें पीसणा ९ करंजके वीज हमेस वढाके खाणा निश्चै जहर मिटेगा १० आंधी झाडेकी जड पीस १ तोले भर हमेस सहतमें चटाणा ११ कवार पठेपर सींधानिमक डाल वांधना तीन दिनमें जहर नाश.

(मधुमखी)–(भमरा)–(टांटिया)–१ कूंचीकी नली डंकपर दवा देणेसे डंक ऊपर आकर जहरी पीप उसमेंसे निकल जायगा २ सालवोलेटाइल विनीगर तथा पाणी अथवा कोलनवाटर लगाणा ३ वजर अथवा तमाखूकूं भिगाकर डंकपर मसलणा ४ मूंके अंदर डंक भया होयतो मूंमें वरफ रखणा ५ और वाहर जोक लगाणी भमरेके घरकी मट्टी तथा त्रिफलाका लेप करणा भमरा भमरी टांटिये इन सवकीडोकै डंकपर ठंढे इलाज और ठंढे पाणीकी धार अच्छी है,

(माकड)–माकडके डंकपर सरका तथा पाणी चुपडणा जो खुरसी वींच पलंगके सांधोंमें टरपेन्टाइन लगादे तो फेर माकड पैदा होयभी नही.

(चींचड)–चींचडका डंक जरा काला लाल रंगका होता है, और आसपासकी जगे जादा फीकी पडी भई होती है, कितनेक बुखार एसे होते हैं, जिसमें चमडी उपस फुट जाती है, लेकिन् चींचडके जहरकूं ऊपर लिखे मुजब पहचाणना चहिये नहीं तो दोनोके सामान्य लक्षण एक होणेसे भूल होणा ताजब नहीं, (इलाज)–सिरका और जल मसलणा.

(जवा)–ये मारवाडके गांमोमें जहां ढोर बैठते हैं उस जगे जमीनमें घुसकर रहते हैं, काटे उस वखत मालम नहीं देता फेर जरा२ खुजाल आती है, तब जो उसकूं विगर खून पूरा पिये उतार दिया जावे तो वडी दाह और खुजली लाल२ वदन हो जाता है, चार पाईपर चढते नहीं, (इलाज)–सिरका पाणी गऊका गोवर या घी मसलणा (पिशु (सुरले) दुक्करकाई इत्यादि सब छोटे जहरी कीडे काटणसें घी और गोवर फायदा करता है, सांपके मलमूत्रसे या उसके मरे कलेवरसें जो कीडे पैदा होते हैं वो वडे जहरी काटणेसे वाजे वखत अदमी मर जाता हैं, दाह तो निश्चैही करता है, घी दूध गोवर प्रायें वहोतसे जहरोंका उतार मसलणे और पिलाणेसें जो प्राणी श्रीकलि कुंड पार्श्वनाथायनमः एसा मनमें जाप करते रहेगा उसकूं अचिंतपणे जहर जंगमका समागम नही होगा ये वडी अदभुत महिमा है, जैसें दादा श्रीजिनदत्तसूरि एसा नाम लेणेवालेकों विजलीका भय नहीं होता फेर जंगलमें उतरे भये प्राणियोनें अपणी रक्षा-वास्ते नमि जिनदत्त चले दिसावरा सदगुरु वाचा वंध चोर विछु सर्प नाहर चारुं झाडा वंध २१ वेर गुण मनवचन काया थिर करके फेर तीन ताली वजा देणा पूर्वोक्त चीजोंसे भय नहीं होगा आर्य वेद या सिद्धांत ये सब आगम सफल आस्तिकोकेवास्ते तत्काल है, नास्तिकोके तो अपणे निज पितामेंभी सदेह होता है कोन जाणे यही था वा अन्य मंत्रविद्या सर्व सत्य है, कर्ता क्रियाकी भूल है, अक्षरोमें अनंत शक्ति है, हंस २ एसा नामोच्चार करते२ भये चार पहरमें सांप खाया भया एक ब्राम्हणीका लडका जहरसें वच गया असलमें उस लडकेका नाम हंस था उसकी माने मोहकी विकलतासे इस नामका उच्चारण और हस्तपास ये कुदरत कांम दे गई अभी देती है, ये व्याख्या महावीर भगवानके विद्यमान समयमें वणाजो वसुदेवहिंड ग्रंथ उसमें है, जिन महाज्ञानि योकूं अक्षर मिलाणेकी कुदरत याद है, उनोने रचाजो अक्षर विन्यास उसमें अपर वलशक्ति है, नतु सर्वत्र अमलेसर विमलेसर झर२ स्वाहा इस मंत्रसे पीलिया चला जाता है, इत्यादि अनेक उपगारिक मंत्र मौजूद है, सद्य ग्रंथ गौरवके भयसें नहीं लिख सकते जैसे पदार्थोंके मिलणेसे अनेक चमत्कार विजली गैस तार फोनोग्राफ इत्यादि असंख

रिक एसिड पाणीमें मिले इतने मिलाकर उसमें डूबाया भया कपडा डंकपर धरणा ३ वीनीगर याने सरकता पोता धरणा ४ निमक और पाणीका पोता धरणा ५ दस्त साफ लाणे जुलाबकी दवा देणी ६ आकके पत्ते तथा राई पीसके लेप करणा ७ वछनाग जमालगोटा नवसादर तथा हरताल नीलाथोथा दही इसमेंसे हरकोइका लेप करणा ८ धतूरेके पत्तोंका रस लगाणा आंधी झाडेकी जड पीसकर लगाणा और एक जड चबाणा काला वीछु और खारमें पैदा भया विछु बहोत जहरी होता है, उसके डंकपर आकके पत्ते वछनाग तथा राईका लेप करणा.

(चूहेका जहर) जहरी उंदर काटणेसें वदन फूट जाता है वात रक्त जैसे चट्टे होते है, दाह होता है, (इलाज)-१ धूमस (धूंआ) मजीठ हलदी सींधेनिमकका लेप करणा २ पारा गंधक कपूर सरसूं आकके दूधमें लेप करणा ३ त्रिकटु नींबोली सींधा निमक इनोंका चूर्ण मिश्री सहतमें पिलाणा ४ उंदर कर्णीका रश १।२। तोला पिलाणा वदनके मसलणा ५ सोनामुखीका बहोत दिनोंतक सेवन करणा.

(कुत्तेका जहर)-(हडकवायु)–इसका इलाज सरत बंधीसें कर सके एसा जादा देखणेमें नहीं आया जो कुछ विद्वानोने लिखे हैं उसकूं अजमाणा चहिये १ डंककूं उसी वखत जला देणा २ गुड तेल आकके दूधका लेप ३ शीतल मिरच (अंकोलका) क्काथ घी डालकर पीलाणा ४ घोडेकी लीदका २ लींडे निचोड ३।४ मिरच डाल पिलाणा ५ भूंपथारीका रस या क्काथ घी डालके पिलाणा ६ कूकड वेलका रस बहोत दस्त उलटी कराकर जीव जो जहरी पैदा होते हैं, उनोंकों निकाल डालता है, ७ जहर कुचीला हडकवायुके पुराणे विकारकूं निकाल डालता है, इसवास्ते इस बेमारीसे वचे भये रोगीनें कितनेक महींनोंतक लेते जाणा बिलकुल मिटा देगा पतवाणे भये इलाज काले गूलरकी जड धतूरेके फल चावलके धोये पाणीसे देणा धोवणमें पीसणा ९ करंजके बीज हमेस वढाके खाणा निश्चै जहर मिटेगा १० आंधी झाडेकी जड पीस १ तोले भर हमेस सहतमें चटाणा ११ कवार पठेपर सींधानिमक डाल बांधना तीन दिनमें जहर नाश.

(मधुमखी)–(भमरा)–(टांटिया)–१ कूंचीकी नली डंकपर दवा देणेसे डंक ऊपर आकर जहरी पीप उसमेंसे निकल जायगा २ सालवोलेटाइल विनीगर तथा पाणी अथवा कोलनवाटर लगाणा ३ वजर अथवा तमाखूकूं भिगाकर डंकपर मसलणा ४ मूंके अंदर डंक भया होयतो मूंमें वरफ रखणा ५ और वाहर जोक लगाणी भमरेके घरकी मट्टी तथा त्रिफलाका लेप करणा भमरा भमरी टांटिये इन सवकीडोकै डंकपर ठंढे इलाज और ठंढे पाणीकी धार अच्छी है,

(माकड)–माकडके डंकपर सरका तथा पाणी चुपडणा जो खुरसी वींच पलंगके सांधोंमें टरपेन्टाइन लगादे तो फेर माकड पैदा होयभी नही.

(चींचड)–चींचडका डंक जरा काला लाल रंगका होता है, और आसपासकी जगे जादा फीकी पडी भई होती है, कितनेक बुखार एसे होते हैं, जिसमें चमडी उपस फुट जाती है, लेकिन् चींचडके जहरकूं ऊपर लिखे मुजब पहचाणना चहिये नहीं तो दोनोके सामान्य लक्षण एक होणेसे भूल होणा ताजब नहीं, (इलाज)–सिरका और जल मसलणा.

(जवा)–ये मारवाडके गांमोमें जहां ढोर बैठते हैं उस जगे जमीनमें घुसकर रहते हैं, काटे उस वखत मालम नहीं देता फेर जरा२ खुजाल आती है, तब जो उसकूं विगर खून पूरा पिये उतार दिया जावे तो बडी दाह और खुजली लाल२ वदन हो जाता है, चार पाईपर चढते नहीं, (इलाज)–सिरका पाणी गऊका गोवर या घी मसलणा (पिशु (सुरले) दुक्करकाई इत्यादि सब छोटे जहरी कीडे काटणसें घी और गोवर फायदा करता है, सांपके मलमूत्रसे या उसके मरे कलेवरसें जो कीडे पैदा होते हैं वो वडे जहरी काटणेसे वाजे वखत अदमी मर जाता हैं, दाह तो निश्चैही करता है, घी दूध गोवर प्रायें वहोतसे जहरोंका उतार मसलणे और पिलाणेसें जो प्राणी श्रीकलि कुंड पार्श्वनाथायनमः एसा मनमें जाप करते रहेगा उसकूं अचिंतपणे जहर जंगमका समागम नहीं होगा ये वडी अदभुत महिमा है, जैसें दादा श्रीजिनदत्तसूरि एसा नाम लेणेवालेकों विजलीका भय नहीं होता फेर जंगलमें उतरे भये प्राणियोनें अपणी रक्षा- वास्ते नमि जिनदत्त चले दिसावरा सदगुरु वाचा बंध चोर विछु सर्प नाहर चारुं झाडा बंध २१ वेर गुण मनवचन काया थिर करके फेर तीन ताली वजा देणा पूर्वोक्त चीजोसे भय नहीं होगा आर्य वेद या सिद्धांत ये सब आगम सफल आस्तिकोकेवास्ते तत्काल है, नास्तिकोके तो अपणे निज पितामेंभी संदेह होता है कोन जाणे यही धा वा अन्य मंत्रविद्या सर्व सत्य है, कर्ता क्रियाकी भूल है, अक्षरोमें अनंत शक्ति है, हस २ एसा नामोच्चार करते२ भये चार पहरमें सांप खाया भया एक ब्राम्हणीका लडका जहरसें वच गया असलमें उस लडकेका नाम हंस था उसकी माने मोहकी विकलतासे इस नामका उच्चारण और हस्तपास ये कुदरत कांम दे गई अभी देती है, ये व्याख्या महावीर भगवानके विद्यमान समयमें वणाजो वसुदेवहिंड ग्रंथ उसमें है, जिन महाज्ञानि योकू अक्षर मिलाणेकी कुदरत याद है, उनोने रचाजो अक्षर विन्यास उसमें अपर वलशक्ति है, नतु सर्वत्र अमलेसर विमलेसर झर२ स्वाहा इस मंत्रसे पीलिया चटा जाता है, इत्यादि अनेक उपगारिक मंत्र मौजूद है, सद्य ग्रंथ गौरवके भयसे नहीं लिख सकते जैसे पदार्थोंके मिलणेसे अनेक चमत्कार विजली गैस तार फोनोग्राफ इत्यादि असंख

कुदरते होणा प्रत्यक्ष है, एसेही अक्षरोकी मिलावट मणी मंत्र और औषधी तीनोंमें अत्यंत कुदरत है, (प्रश्न)–पदार्थोंकी शक्ति प्रत्यक्ष देखते हैं, ऐसी अक्षरोंकी नहीं दिखती, (उत्तर)–अक्षरोंकीभी शक्ति प्रगट देखते हैं, जैसें कोई शत्रु मार २ करता आ रहा है, उसकूं मीठे वचनोंसें नरमाईके संग आजीजी अक्षरोसे किया जावै शांत हो जाता है, अक्षरोसें मित्राई अक्षरोसें दुस्मनी हाथीकूं अगड धत्त इत्यादि अक्षरोसें समझाया जाता है, वुचकारणा छिच कारणा इत्यादि अक्षरों द्वारा सर्व संसारमें प्रत्यक्ष फल असंक्ष तरे सिद्ध है, थोडेसे विचारो एक कुत्ता वीस कुत्तोसें मुकाबला करता है, लग २ इत्यादि अक्षर कहणेसें दीर्घ दृष्टी दो अचिंत्य कुदरत अक्षरोंकी मिलावटमें वा एकमें है या नहीं नहीं तो शास्त्रोंपरयकीन केसे लाते हो वोभी सब अक्षर है, झूठी और सच्ची अक्षरोंकी दोनोंतरे मिलावट होती है, वचनात्प्रवृत्ति वचनात् निवृत्ति है, लोकोंकों यथार्थ क्रिया सफल मंत्रभी पदार्थोंकी तरे फायदा देता है, पदार्थभी मिलानेवाले फायदा दिखाते हैं, एसेही अक्षर मंत्रवाले दिखा सकते हैं, वहोत पदार्थोंका मिलाणा उसमें फायदा पश्चिमी विद्वानोनें इस वखत दिखलाया आगूं वोभी नहीं जाणते थे, इहांवालेभी कालांतरसे भूल गये थे और अभीभी असंक्ष वातें इन पदार्थोंसें होणेवाले हैं, वो प्रगट नहीं है, रत्नोंका वण जाणा मरे भये जिंदे दिखणा असलमें जिंदे नहीं क्योंके सत्ता ईस पीठ इंद्र जालमेंसें सतरे पीठ पश्चिमी विद्वानोके हाथ लगे हैं उसमेंसें अभी वहोतोंका अजमाणा और नई२ कल्पना वाकी है, कुछ आश्चर्य नहीं कभी प्रगट कभी लुप्त कालका धर्म है, हमारे वडेरे अक्षरोंकी शक्तिमें वडे वाकवकारथे आजकाल हमलोक तिरोभावमें हैं, लेकिन् सर्वथा नास्ति नहीं साधना उद्यम वडी चीज है.

(मछर)–(डांस)–(डंकी)–ये तीनो डंक मारते हैं, उस डंकमें दाह करणेवाली रस्सी पीपकूं डाल जाते हैं) उनोके डंकमें छोटा करडा सुपेद दाफड उठ जाता है, अगर किसी अदमीका खून विगडा भया होता है तो उस जगे सोजा पकणा किसी वखत पीप पडके जखम हो जाता है, (इलाज)–पाणी अथवा पाणी और सिरका मसलणा, (इलाज विछूउ तारणेका) जंगली गोवरी जलाणेसें जव धूंआ निकल चूके तव आकके दूधमें वुझा देणा वाद सूकाकर पीस रख देणा एक दो चिमठी खेचकर तमाखूकी तरे सुंघाणेसें पांच मिनटमें छींके आकर विछू उतर जाता है, विछू काटणेकी जगे वांधा होय तो खोला देणा छींके वंध करणी होय तो घी सुंघाणा हमने केइ जगे अजमाया है,

किरण १४ मी.

दृढीकरण धातुपुष्टस्तंभन इलाज संकोचन.

जो दवाइयें वदनके सातू धातुओकों अच्छीतरे पुष्टिकर अवयवोकों मजवूत करे वो

पौष्टिक औषधी कहलाती है, एसी बहोत दवाइयां है, उसमेंसें केइयक (रसायण) दवा देखो पृष्ट ३१८) में कितनेक वाजीकर (देखो पृष्ट ३१८) में और कितनेक फक्त धातू वढाणेवाली दवायें जो दवा रसायण और वाजीकर है वो धातुपुष्ट तो हैही इस के सिवाय कितनेक दुसरे वर्ग वीर्य स्तंभक दवायोंका है, जिसकूं लोक धातु पुष्टि समझके खाते हैं, लेकिन् निश्चैमें देखा जाय तो वेसी दवामें फायदा नहीं वाजीकर दवायोंकी तरे दवायेंभी कामकूं पैदा करती है, और वीर्यकूं रोकके रखती है, लेकिन् ये गुण थोडी देरका होणेसें आखरकुं नुकशान करती हैं इस दवायोंमें सची पुष्टि और पोषण देणेका गुण नहीं है, वलके जहांतक इस दवायोंका दो चार पहर अमल रहता है, उहांतक तो चेतन खूवी और अमल उतरे पीछै वदनकुं उलटा ठंढा सुस्त और नाताकत वणा देती है, एसी दवा जादे खाणेलायक नहीं है जो अदमी अपणे वदनकूं निरोग रखणेकाज्ञान धराते होय उनोनें शोखके वास्तेभी एसी स्तंभक दवा लेणेकी आज्ञा हम नहीं दे सकते नाताकत कम अकल लोक एसी वीर्य स्तंभक दवायोंकी वहोत खोज किया करते हैं, कोई देणेवाला मिलाके झटले लेते हैं, एसी नुकशांन वाली दवायोंके फंदमें फसके वहोतसे अदमी खराव हो चूके हैं तोभी एसे२ आदमियोंके संतोप दिल जमीके वास्ते इस किरणमें आखर एसे २ वीर्यस्तंभक इलाज लिखे है, सो किसी वखत लेणा पडे तो नुकशांन नही करे.

(अमृतवटी)–ये सब चीजोसें अवल दरजेकी रसायण वाजीकर और धातु पौष्टिक दवा है, रसायण शब्द फक्त मारी भई धातूओंकोंही मत समझना वनस्पतीयोमेंभी अनेक चीजें रसायणका गुण धराती है, जैसे गिलोय रुद्रवंती गुग्गल हरडे आंवले जो जीवनीय गणकी दवा मोलेठी वगेरे सव रसायण संज्ञक है, निघटमें देखणा आजकलकी वेकूव दुनियां अशुद्ध पारे सेंवणे रस कपूरहीकों रसायण समझते हैं,उससे विगडे भये रोगीकू देख कहते हैं वैद्यजी हमकूं रसायण मत देणा हम हरगिज नहीं लेंगें रसायण शब्दका मायना नहीं समझते इसवास्ते इस शब्दका अर्थ लिखते है (जो दवा शरीरके सातो धातुओंकों वहोत मुदत तक ताकत कायम रखे वुढापा और रोगोंको दूर करे उसकूं रसायण कहते हैं, जीवन नाम करके प्रसिद्ध जडी वूंटीसें वणी दवा अहम्मदावादमें वैद्य जटाशंकर रसायण वेचते हैं अपणे मासिक पत्रमें वहोत तारीफ लिखते हैं, विद्वद्वरोंके उपयोगसें वणाइ भई सव दवायें फायदा मंद होती है कभी नुकशांन नही करती जिसकी ऊमर नहीं उसकूं अमृतभी जहर हो जाता है, जैसे नारकीके जीवोंको कोइ देवता पूर्व भवके प्रेमसें अमृत लेजाके खिलावे तोभी उसकूं हालाहल जहरवत् मालम दे इस दृष्टांत मुजव जाणना.

(दूध)–(पुष्ट)–और वाजीकर वस्तू है, तेज अग्निवालेनें रटाय कर पीना और

मध्यम तथा मंद अग्निवालेनें पांच मिन्ट फक्त गरम कर थोडा मीठा डाल पीणा क्योंके जादा मीठा दूधका जोर कम कर देता है, विदाम पिस्ता तथा दुसरीभी पौष्टिक दवायें डाल करभी पिये जाता है दूधमें केशर जायफल वगेरे स्तंभक दवायें डालणेसें वीर्यकूं स्तंभन करता है, लेकिन् दस्तकी कब्जी करता है, और एसी दवायोंसे आखरमें नुकशांन है, दूधसे वीर्य जल्दी पैदा होता है, दो घंटेमें प्राये हजम हो जाता है, वीर्यकी कमी वालेने दूध पीणेका मावरा रखणा २ गऊके गरम करे भये दूधमें घी बूरा डालकर पीणा रोगी जानवरका दूध पीणा नहीं जो जादा पढै व्याख्यानादि करे वृद्ध बालक दूध पीणे लायक रोगी एसे त्यागी आत्मार्थी साधूकुंभी दूध पीणेका हुकम सूत्रोंमें हैं, स्त्रियोंका रति प्रमोदमें मांनमर्दक दूध है.

(विदारीकंद)-(भूंकोला)-इसका चूर्ण करणा घी बूरेके संग खाणा उसपर बूरा डाला भया दूध पीणा २ इसके चूर्णकूं इसकी रसकी २१ भावना देकर फेर खिलावे तो वहोत फायदा करता है, ३ विदारीकंद गोखरू मुसली आंवले सींधानिमक पींपर इनोकों दूधमें बूरा डालके मिलाके पीणा,

(आंवले)-१ आंवला गोखरू गिलोय सम वजन चुर्ण घी बूरेमें चाटणेसें धातु वृद्धि और पुष्टी होती है, जिसने हथरस लोंडावाजी करणेसें नपुंसकता प्राप्त करी है, वोभी मिटती है, २ आंवलेके चूर्णकों आंवलेकी रसकी २७ भावना देकर छांया सुकाकर उसमेंसें हमेस २ मासा चूर्ण मिश्री संग फाककर दूध पीणा वीर्य वृद्धिवाजीकर हैं, ३ आंवलेका रस घी मिलाकर पीणा ४ त्रिफलाके चूर्णमें लोहभस्म मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहत मिला सूर्यास्त होते वखत लेणा इससे कामकी वृद्धि होती है,

(कोंचवीज)-कोंचवीजकूं एक दिन गरम पाणीमें भिगाकर दूसरे दिन छिलके दूरकर सुकाणा पीछै दल कूट चूर्ण कर मिश्रीके संग फाकणा ऊपर धारोष्ण दूध पीणा २ कोंचवीज तालमखाणा अथवा वलवीजका चूर्ण मिला ऊपर मुजब पीणा ३ कोंचवीज गोखरू शतावर वलवीज तालमखाणा आंवलेका चूर्ण दूधमें पीणा सांझकूं ४ कोंचवीज उडद इन दोनोकों कूट दाल कर खिलाणी ।

(गोखरू)-गोखरूका चूर्ण मिश्री मिलाय फाकणा ऊपर दूध पीणा २ गोखरू सूंफ मिश्री इनोंकों उकाल दोनों वखत पीणा इससे धातु गिरणा बंध होता है, ३ गोखरूका चूर्ण १ तोला सहतमें मिलाकर वकरीके दूधके संग पीणा इसतरे दो महीना पीणेसें गया पुरुषार्थ पीछा प्राप्त होता है, ४ गोखरूका चूर्ण गऊका घी मिश्री सहत सम वजन मिलाकर उसमेंसें हमेस दो तोला गऊके दूध संग पीणा,

(अहिखरा) तालमखाणा)-१ अहिखर मूसली गोखरू मिश्री गऊके दूधमें पीणा २ तालमखाणा १ तोला इलायची दाणा एक तोला सुपेद मिरचका ३।४ दाणा कूट

कर छ पुडी करणी एकेक पुडी रातकूं केलेमे भरके चंद्रमाकै उजालेमें धरणा पीछै फजरमें केलेकी छाल उतारकर केला खा जाणा इसतरे २१ दिन करणेसें धातू स्थानकी गरमी दूर होकर धात पुष्ट होता हैं मगजकी गरमी दूर होती है,

(मूसली)–सुपेद मूसली सालम कोंचबीज गोखरू शतावरी आंवलेका चूर्ण १ तो० घी तोला १ गऊके पाव दूधमें पीणा सुपेद मूसली गिलोयसत कोंचबीज गोखरू शेमलकी जड अथवा छाल आंवला मिश्री सम वजन चूर्ण ॥ रुपेभर गऊके दूधमें डालकर पीणा इससे कमरमें जादा जोर आता है नामरदी दूर होती है,

(सालम)–१ सालमका चूर्ण दूधमैं उकाल थोडा बूरा डाल पीणा २ सालम धोली मूसली काली मूसली गोखरू तालमखाणा वलबीज खारक इनोका ६ मासा चूर्ण १ तोला मिश्री पाव दूधमें पीणा इससे स्वप्न दोष बंध होकर धातु पुष्ट होता है, ३ सालमका पाक तथा मुरब्बा होता है, वहोत तरे इसकी बणावट है,

(शतावर)–१ दूधमें शतावर उकाल बूरा मिलाकर पीणा २ शतावर नागबला बलबीज आसगंध कोंचबीज तालमखाणा गोखरू काली मूसली मोलेठी सम वजन चूर्ण चूर्ण बराबर घी घीसे चोगुणा गऊका दूध सबसे दूणी मिश्री पाक बणाकर खाणेसें काम प्रदीप्त होता है,

(ज्येष्टीमधु) मोलेठी)–एक तोला मोलेठीका चूर्ण घी सहतमें मिला फजर चाटणेसें पुरुषार्थ बढता है,

(आसगंध)–१ आसगंधका चूर्ण घी सहतसे चाटणा २ आसगंध तथा वधायरेका चूर्ण हमेस ॥ तोला गऊके धारोश्न दूधमें पीणा.

(गिलोय)–गिलोय सर्वोत्तम रसायण है, तीनों दोषोंकों मिटाणेवाली है, वदनके सब दोषोंकों दूर कर वदनमें ताकत भर देती है, १ गिलोय सत्वकूं दूधमें उकाल कर पीणा २ गिलोय सत्व अथवा गिलोयका चूर्ण आंवला गोखरू सम वजन चूर्ण घीमिश्री अथवा घी सहतमें हमेस चाटणेसें परम पुरुषार्थ आता है,

(गूगल) अत्यंत पुष्ट है सब पौष्टिक दवायोंसे गूगलमें विशेष गुण तो ये हेकी अदमी तथा औरतके वीर्यकूं सुधारकर ताकत देता है, उसकी वहोत बनावटें हैं, १ योगराज गूगल २ त्रिफला गुगल किशोर चंद्रप्रभा सिंहनाद वगेरे,

(मोचरस)–१ मोचरस शेमलका गूंद है, उसकी जड तो ४ कूटकर गऊके ताजे दूधमें भिगाकर रातकू फजरमें प्रसल छाण उसमे १ तोला मिश्री डाल ७ दिन पीणा इससें वीर्य गिरता बंध होता है, २ मोचरसका चूर्ण ॥ तोला मिश्री ४ तोला पाव दूधमें मिलाकर पीणा ३ शेमलका मूल सुकाकर चूर्ण घीमें सेक गऊके दूधमें सिजाकर पीछै उसमें मिश्री वेदाणा विदाम वगेरे डाल हमेस फजरमें खाणा धातुको हो

सुधार मगजकूं तर करता है, ४ आधा तोला मोचरश ४ तोला मिश्री गऊके दूध घीयें पीणेसें वीर्य जल्दी वढता है,

(उंठकंटाला)–१ इसके जडके छालका चूर्ण करना पीछै मुगलाई वेदाणा तो १ तथा मिश्री तो २ पाव पाणीमें भिगाकर फजरमें उसका लुआब कपडेसें छाण उसमें उंठकंटालेका चूर्ण ६ मासा डाल फजरमें पीणा वीर्य वढे प्रमेह मूत्रकृच्छ पेशावके शंग जाती धातू वंध होती है, २ उंठकंटाला गोखरू कोंचवीज दूधमें उकाल कर पीना ३ उंठकंटालेके जडकी छालका चूर्ण दूधमें उकाल मिश्री डाल पीना ४ ओटींगण उंठकंटालेका वीज होता है, एसाही गुण धराता है, इसकी दूधकी पकाई खीर मिश्री डाल पीणेसें धातु पुष्ट मरदीभी करता गिरता धातू वंध होता है धातू गिरणेंवाले रोगीनें खटाई हींग मिरच वगेरे गरम चीजें जादा खाणा नहीं औरतकाभी परेज रखणा.

(उडद)–उडदकी उकाली कर उसमें गऊका दूध तथा घी डाल कर पीणा २ शतावर वलवीज कोंचवीज तालमखाणा गोखरू उडद इन चीजोंका चूर्ण ॥ रुपे भर गऊक दूधकूं थोडा गरम कर वूरा डाल पीणा ३ उडदके लड्डू ४ उडदकूं वूरा डाले भये दूधमें मकरोय कर धूपमें सुकाकर दाल करणी उसके बडेकर तलकर खाना काम प्रदीपक है ४ उडद जव गहूंके ऊपरके छिलके दूर कर आटा करना पीछै दूधमें तथा इक्षुके रसमें मकरोय पीछै घीमें दाणा पाड चासणी वूरेकी लड्डू वणाना एक लड्डू खाकर पींपर डाल वूरा डाल गरम कर दूध पीणा ६ उडदका आटा जवका आटा तपखीर विदारी कंदका चूर्ण काली मिरचका चूर्ण वूरा डाल घीमें पुडियें तल फजरमें दूधके संग खाणा.

(माल कांकणी)–१ माल कांगणीके वीज वूरा इलायची सम भाग चूर्ण ४ मासा ४ मासा एरंडीके वीजका मगज फजरमें पाणीके संग खाना इससें मगज ठंढा और आंखोंकी गरमी जाती है.

(महुवा)–१ महुवेकी अंदरकी छालका चूर्ण २।३ मासा हमेस फजर सांझ गऊके घी तथा सहतके संग चाटणा, पाव गऊका ताजा दूध घी वूरा डालकर गरम थोडा कर ऊपरसें पीणा काम वृद्धि करे.

(ईस पूगल)–१ ईसपूगल २ भाग इलायची दाणा १ भाग वूरा तीन भाग रातकूं भिगाकर फजरमें पीणा अथवा चूर्ण फाक दूध पीणा.

(गुलवास)–१ सुपेद गुलवासकी जड गऊके दूधमें घस पीना.

(प्याज) कांदे)–१ सुपेद प्याजका रस सहत डालकर पीणा २ सुपेद कांदेके रशमें भिगाया भया अजवाण १ तोला घी १ तोला वूरा २ तो इनोंकों खाणा २१ दिन मरदमी आती है, कंदर्प भूषण पाक पाली नग्रमें नग्रसेठ साठ वर्षकी ऊमरमें सोले वर्षकी स्त्रीयुक्त खाया गर्भ रहे वाद सेठ मर गया लडका भये वाद विरादरीनें दलील १२

वर्ष रखी वाद योधपुर नरेश विजैसिंह लडकेकूं दोडाकर पसीना सूंघा कांदेकी वदवो आई लडका असली ठहरा ये पाक कांदेका रस और मसालेसें वणता है यती वैद्यनें पुत्रकेवास्तेही वणाके दिया था,

(डाक्टरोकी ताकतवर दवा कोडलीवर आइल है) उसकी केइ वनावटें आती है, १ स्वच्छ कोडलीवर २ माल्टाइन कोडलीवर कोनेनकी तरे वदनके पुराणे विकारमें वापरते हैं, नाताकती मिटाणे पुष्टताइका गुण है लेकिन् जिसकू सदता है उसके खून भरी जता है ताकत आती है आर्य जैनोंने तथा वैष्णवोनें इस चीजसें वचके रहणा मच्छीकी वनावट है,

(क्विनाइन)–१ क्विनाइनमें शक्ति लाणेका गुण है, लेकिन् वो टोनिक तरीकेकी नाताकतीमेंही विशेष करके वापरते हैं, धातु पुष्टि तरीके नहीं वापरणेमें आता क्योंके ये गुण इसमें दिखता नहीं वुखार अथवा वुखारसें आई भई नाताकतीमें वो थोडी२ मात्रामें लेणेसें ताकत लाती है, ताकतके वास्ते जादा करके लोह सारके संग देणेमे आता है, क्विनाइन मिश्रित लोहकी पतरिये (फेरी साइट्रेट एटक्विनाइन) में क्विनाइन आता है,

(वीर्यस्तंभन इलाज)–१ अफीम लोंग जावंत्री तज अकलकरा और समुद्र शोपके वीज सवका सम भाग चूर्ण चूर्णकी वरावर मिश्री सहतमें घोट वाल २ जितनी गोलिये करणी १ गोली दूधके संग सांझकू पीणा ऊपरसें फेर गऊका ताजा दूध पीणा १ कस्तूरी केशर जायफल लोंग अफीम भांग सूंठ इलायची कपड छाणकर एकेक वाल फजर सांझ सहतमें चाट ऊपरसें ताजा दूध पीणा खुरासाणी अजवाण जायफल अजमोद अफीम सम वजन चूर्णकर तीन वर्षका पुराणा गुड डालकर गोंलियें वणाणी एक गोली सांझकू खाना ४ भांग २१ भाग आंवला सींधानिमक उपलेट कायफल पींपर छोटी सूंठ अजमोद अजवाण मोलेठी जीरा साहजीरा धाणा कपूर काचरी काकडासींगी वचनाग केशर तालीसपत्र तज तमालपत्र इलायची और मिरच ये सव मिलाकर २१ भाग भांगके वीज समेत सेकके चूर्ण करना सवसें दूणी मिश्री लडूवणे इस अंदाजन घी तथा सहत मिलाकर चार आनीसें आधे रुपये भरकी गोली करके यथा शक्ति खानेसें वीर्य स्तंभन तथा वाजीकरण होता है.

(चोपचीणी)–१ चोपचीणी ४८ तोला पीपर पीपरामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लोग एकेक तोला सवके जितना चूरा इसका पाक करणा उपदंसकी गरमीकू मिटा कर ताकत देती है २ चोपचीणीका पाक नं० ३७९.

(कोला)–१ कुष्मांडपाक नं० ३८०) २ कुष्मांडावलेह नं० ३६६) मगजकी गरमीतथा दाहकूं मिटाता है, औरतोंके ऋतुधर्मकु सुधारता है ताकत लाता है.

(हरडे)–बडी हरडेका चूर्ण बूढे आदमीयोंकों रसायणरूप और ताकतवर है, ऋतु ओंके अनुपान इस मुजब है, १ ग्रीष्म ऋतूमें तीन वर्षके पुराणे गुडके संग २ प्रावट् ऋतुमें सींधा निमक संग ३ सरद ऋतूमें मिश्री संग ४ हेमंत ऋतूमें सूंठ संग ५ वहोत मेघ या ओलेगिरे हेमंत ऋतूमें एसी शिसर ऋतूमें पींपर संग ६ वशंत ऋतूमें सहत संग हरडेकूं तरुण आते भये ज्वरमें बारे दिनोंतक तथा धातू क्षीण जवान अदमीकूं देणा नहीं सन्निपात ज्वरमें औषधोंके प्रयोगमें देणा सामान्य तोरमुनक्कादाख मिश्री मिलाकर खाणेकूं देणी २ हरडे मधुपक्क आम्लपित्त तथा संग्रहणी मिटाती है पथ्य रोग मुजब करणेसें ३ हरडे पाक तथा अवलेही नं० ३६४) जीर्णज्वर तथा धातूकी क्षीणताकूं मिटाकर ताकत लाती है, ४ हरडेका मुरब्बा मलकी कब्जी मिटाती है, ऋषभ देवके पुत्र वृहदात्रेयनें त्रिफलाके तथा न्यारे २ हरडे वहेडे आंवलेके अनेकानेक गुण लिखे हैं, त्रिफलामेंसे कोइभी फलका विकार होय तो सहत खिलाणी.

(पींपर)–१ पीपर सहत घी दूध मिश्री मिलाकर खाणेसें पुष्टि करती है मंदाग्नि मिटाती है, २ सहत १ भाग घी २ भाग पीपर ४ भाग मिश्री ८ भाग दूध ३२ भाग तज तमालपत्र इलायची नागकेशर चारों मिलाकर ६ भाग इन सबोंका पाक वणाकर खाणेसें धातू क्षीणता बुखार दम फीकास अग्निमंद वगेरे मिटता है, ३ पीपर पाक (नं० ३७५) वर्द्धमान पीपल पृष्ट २९४)

(मेथी)–१ मेथीका आटा तोला ३ अधसेर दूधमें रातका भिगाकर रखणा फजर एक वरतणमें तोला ५ घी डालकर तपाकर उसमें सेकणा दाणा पडे तब लाल सक्कर अथवा गुडका पाक वणाना इससें औरतोंके स्तनमें दूध वढता है ताकत आती है, मेथीकूं घीमें सेक आटा करणा गुडकी चासणीमें लड्डू वणाना खानेसें कलतर मेटती है, ३ मेथी पाक नं० ३७४

(सूंठ)–१ दूध तोला १४ पाणी तोला २१ उसमें चार मासा सूंठके टुकडे डाल पाणी जले जहांतक उकाल सूंठके टुकडे निकाल उसमें बूरा मासा ४ डालके पीणा इससे श्वेतप्रदर मिटकर ताकत आती है २ सूंठका महीन चूर्ण १ तोला घी २ तोला गरम कर दाणा पटकणा ५ तोला गुडसे पाक करणा फजरमें खाणा इससेवादी कलतर मंदाग्नि आम वगेरे मिटके ताकत आती है, ३ सोभाग्य सूंठका पाक नं० ३७६.

इति श्रीमत् जैनधर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे निदान चिकित्सा वर्णनो नाम षष्ठप्रकाशः पूर्णमगात् ॥

प्रकाश ७ मा।

प्रकाश सातमा दुसरे भागमें लिखेंगें तथापि सप्तम परिमंगलार्थ ब्राम्ही मोहरेकी गुटिका इहां लिखता हूं.

(ब्राम्ही गुटिका)--ब्राम्ही कस्तूरी जायफल जावंत्री लोंग दालचीनी केशर नागकेशर अकलकरा चिरायता पींपला मूल पींपर चित्रक मिरच वडी इलायची खैरसार कुलंजन सतावर पोकर मूल तेजचल अभ्रक लोहसार तमालपत्र संखाहोली अजमोद सोवा अजवाण मिनकादाख तोला ३० बीज निकाल कर पीसकर गोली बांधणी,

(मोहरेकी गोली)--वछनाग (काला सींघी मोहरा) १ तोला मिरच काली तोला २ लोंग १ तोला दालचीनी तोला १ जावंत्री १ तोला अकलकरो तो १ सूंठके काढेमें गोली बांधणी,

(भेरू रस गोली)--हींगूल शुद्ध १ मोहरा शुद्ध १ मिरच १ तेलिया सोहगी शुद्ध १ पींपर १ लोंग १ दालचीणी १ सूंठ रसमें गोली,

(दांतके दरदका मंजन)-नीलाथोथा भुंजाभया तो १ कूठ तो १ मजीठ तो १ कत्था तोला १

(साधारण खास गुटिका)-हरडेकी छाल बेहेडेकी छाल आंवला बबूलकी छाल काली मिरच लूण खैरसार विलायती अनारका छिलका,

(दस्त बंधकी गोली अतीसारपर)-सूंठ अफीम मोचरस पतीस आंवकी गुठली जीरा जायफल धावडीका फूल नेतरवाला अनारकली पुराणीगिरी अफीम छोतरेके रशमें गोली,

अब आगे दुसरे भागमें सातमा प्रकाश छपेगा जिसमें सात धातू उपधातू रत्न उपरत्नोंका सोधन मारण अनुपान पथ्यापथ्य सब रोगोंपर रसोंका इलाज अजीर्ण मिटाना इत्यादि अनेक अनुभविक वस्तुओंका संग्रह होगा इस ग्रथमें भूलचूक होय तो क्षमा करणा माफी मांगता हुं,

अथ ग्रंथ सग्रह कृत्प्रशस्ति--आदिकह्यो श्रीऋषभने, आयुर्धर्मप्रकाश, ताविध श्रीमहावीरनें, प्रगट कियो सुविलाश १ चवदे पूर्व मध्य यह, व्याधिहरणको मर्म, ऋषि मुनि जन ग्रंथन रच्यो, वैद्यक ग्रंथ सुधर्म २ ता ग्रंथनकू देखके अनुभव अतिविस्तार धर्म अर्थ अरु काममें वैद्यक विद्यासार ३ परंपरा जिन वीरके, पट्ट प्रभाकर सूर श्रीजिन कुशल सूरीश्वरू ज्ञान क्रियामें पूर ४ क्षेम कीर्तिगणि राजसें क्षेम धाडवड साख धर्मशील गुरु राजके कुशल निधान सुभाख ५ विक्रम नग्र सुवाशमें उदय भयो ज्यूचद गंगासिह नर राजको तेज प्रताप समंद ६ खरतर भट्टारक महा युगवर कीर्ति सूरिंद शशि सूरज शमचिर रहो सदा करो आनंद ७ विक्रम शत उगणीशमें वर वासठके वर्ष माघ सुदि पंचमदिने ग्रंथ लिख्यो धरहर्ष ८ पाठक प्राणाचार्यनें कर संग्रह यह ग्रथ रच्यो रामऋद्धिसारगणि सुख मंगलको पथ ९ इति श्रीमज्जैन धर्माचार्य संगृहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः कृत वैद्यदीपक ग्रंथे रोग लक्षण चिकित्सा क्रमवर्णनो नाम षष्ठ प्रकाशः वैद्यदीपक ग्रंथस्य प्रथमो भागः सम्पूर्णतामगात् ॥

(हरडे)–वडी हरडेका चूर्ण बूढे आदमीयोंकों रसायणरूप और ताकतवर है, ऋतु ओंके अनुपान इस मुजब है, १ ग्रीष्म ऋतूमें तीन वर्षके पुराणे गुडके संग २ श्रावट् ऋतुमें सींधा निमक संग ३ सरद ऋतूमें मिश्री संग ४ हेमंत ऋतूमें सूंठ संग ५ वहोत मेघ या ओलेगिरे हेमंत ऋतूमें एसी शिसर ऋतूमें पींपर संग ६ वशंत ऋतूमें सहत संग हरडेकूं तरुण आते भये ज्वरमें बारे दिनोंतक तथा धातू क्षीण जवान अदमीकूं देणा नहीं सन्निपात ज्वरमें औषधोंके प्रयोगमें देणा सामान्य तोरमुनक्कादाख मिश्री मिलाकर खाणेकूं देणी २ हरडे मधुपक्क आम्लपित्त तथा संग्रहणी मिटाती है पथ्य रोग मुजब करणेसें ३ हरडे पाक तथा अवलेही नं० ३६४) जीर्णज्वर तथा धातूकी क्षीणताकूं मिटाकर ताकत लाती है, ४ हरडेका मुरब्बा मलकी कब्जी मिटाती है, ऋषभ देवके पुत्र वृहदात्रेयनें त्रिफलाके तथा न्यारे २ हरडे वहेडे आंवलेके अनेकानेक गुण लिखे हैं, त्रिफलामेंसे कोइभी फलका विकार होय तो सहत खिलाणी.

(पींपर)–१ पीपर सहत घी दूध मिश्री मिलाकर खाणेसें पुष्टि करती है मंदाग्नि मिटाती है, २ सहत १ भाग घी २ भाग पीपर ४ भाग मिश्री ८ भाग दूध ३२ भाग तज तमालपत्र इलायची नागकेशर चारों मिलाकर ६ भाग इन सबोंका पाक वणाकर खाणेसें धातू क्षीणता बुखार दम फीकास अग्निमंद वगेरे मिटता है, ३ पीपर पाक (नं० ३७५) वर्द्धमान पीपल पृष्ट २९४)

(मेथी)–१ मेथीका आटा तोला ३ अधसेर दूधमें रातका भिगाकर रखणा फजर एक वरतणमें तोला ५ घी डालकर तपाकर उसमें सेकणा दाणा पडे तब लाल सक्कर अथवा गुडका पाक वणाना इससें औरतोंके स्तनमें दूध वढता है ताकत आती है, मेथीकूं घीमें सेक आटा करणा गुडकी चासणीमें लड्डू वणाना खानेसें कलतर मेटती है, ३ मेथी पाक नं० ३७४

(सूंठ)–१ दूध तोला १४ पाणी तोला २१ उसमें चार मासा सूंठके टुकडे डाल पाणी जले जहांतक उकाल सूंठके टुकडे निकाल उसमें वूरा मासा ४ डालके पीणा इससे श्वेतप्रदर मिटकर ताकत आती है २ सूंठका महीन चूर्ण १ तोला घी २ तोला गरम कर दाणा पटकणा ५ तोला गुडसे पाक करणा फजरमें खाणा इससेवादी कलतर मंदाग्नि आम वगेरे मिटके ताकत आती है, ३ सोभाग्य सूंठका पाक नं० ३७६.

इति श्रीमत् जैनधर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे निदान चिकित्सा वर्णनो नाम षष्ठप्रकाशः पूर्णमगात् ॥

प्रकाश ७ मा।

प्रकाश सातमा दुसरे भागमें लिखेंगें तथापि सप्तम परिमंगलार्थ ब्राम्ही मोहरेकी गुटिका इहां लिखता हूं.

(ब्राम्ही गुटिका)--ब्राम्ही कस्तूरी जायफल जावंत्री लोंग दालचीनी केशर नागकेशर अकलकरा चिरायता पींपला मूल पींपर चित्रक मिरच वडी इलायची खैरसार कुलंजन सतावर पोकर मूल तेजवल अभ्रकलोहसार तमालपत्र संखाहोली अजमोद सोवा अजवाण मिनकादाख तोला ३० वीज निकाल कर पीसकर गोली वांधणी,

(मोहरेकी गोली)--वछनाग (काला सींघी मोहरा) १ तोला मिरच काली तोला २ लोंग १ तोला दालचीनी तोला १ जावंत्री १ तोला अकलकरो तो १ सूंठके काढेमें गोली वांधणी,

(भेरू रस गोली)--हींगूल शुद्ध १ मोहरा शुद्ध १ मिरच १ तेलिया सोहगी शुद्ध १ पींपर १ लोंग १ दालचीणी १ सूंठ रसमें गोली,

(दांतके दरदका मंजन)-नीलाथोथा भुंजाभया तो १ कूठ तो १ मजीठ तो १ कत्था तोला १

(साधारण खास गुटिका)-हरडेकी छाल वेहेडेकी छाल आंवला वंवूलकी छाल काली मिरच लूण खैरसार विलायती अनारका छिलका,

(दस्त वंधकी गोली अतीसारपर)-सूंठ अफीम मोचरस पतीस आंवकी गुठली जीरा जायफल धावडीका फूल नेतरवाला अनारकली पुराणीगिरी अफीम छोतरेके रशमें गोली,

अव आगे दुसरे भागमें सातमा प्रकाश छपेगा जिसमें सात धातू उपधातू रत्न उप रत्नोंका सोधन मारण अनुपान पथ्यापथ्य सव रोगोंपर रसोंका इलाज अजीर्ण मिटाना इत्यादि अनेक अनुभविक वस्तुओंका संग्रह होगा इस ग्रंथमें भूलचूक होय तो क्षमा करणा माफी मांगता हुं,

अथ ग्रंथ सग्रह कृत्प्रशस्ति--आदिकह्यो श्रीऋपभने, आयुर्धर्मप्रकाश, तावित श्रीमहावीरनें, प्रगट कियो सुविलाश १ चवदे पूर्व मध्य यह, व्याधिहरणको मर्म, ऋषि मुनि जन ग्रंथन रच्यो, वैद्यक ग्रंथ सुधर्म २ ता ग्रंथनकूं देखके अनुभव अतिविस्तार धर्म अर्थ अरु काममें वैद्यक विद्यासार ३ परंपरा जिन वीरके, पट्ट प्रभाकर सूर श्रीजिन कुशल सूरीश्वरू ज्ञान क्रियामें पूर ४ क्षेम कीर्तिगणि राजसें क्षेम धाडवड साख धर्मशील गुरु राजके कुशल निधान सुभाख ५ विक्रम नग्र सुवाशमें उदय भयो ज्यूचंद गंगसिह नर राजको तेज प्रताप समंद ६ खरतर भट्टारक महा युगवर कीर्ति सूरिंद शशि सूरज शमचिर रहो सदा करो आनंद ७ विक्रम शत उगणीशमें वर वासठके वर्ष माघ सुदि पंचमदिने ग्रंथ लिख्यो धरहर्ष ८ पाठक प्राणाचार्यनें कर संग्रह यह ग्रथ रच्यो रामऋद्धिसारगणि सुग मंगलको पंथ ९ इति श्रीमज्जैन धर्माचार्य संगृहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः कृत वैद्यदीपक ग्रंथे रोग लक्षण चिकित्सा क्रमवर्णनो नाम षष्ठ प्रकाशः वैद्यदीपक ग्रंथस्य प्रथमो भागः सम्पूर्णतामगात् ॥

(हरडे)–वडी हरडेका चूर्ण वूढे आदमीयोंकों रसायणरूप और ताकतवर है, ऋतु ओंके अनुपान इस मुजव है, १ ग्रीष्म ऋतूमें तीन वर्षके पुराणे गुडके संग २ प्रावट् ऋतुमें सींधा निमक संग ३ सरद ऋतूमें मिश्री संग ४ हेमंत ऋतूमें सूंठ संग ५ वहोत मेघ या ओलेगिरे हेमंत ऋतूमें एसी शिसर ऋतूमें पींपर संग ६ वशंत ऋतूमें सहत संग हरडेकूं तरुण आते भये ज्वरमें बारे दिनोंतक तथा धातू क्षीण जवान अदमीकूं देणा नहीं सन्निपात ज्वरमें औषधोंके प्रयोगमें देणा सामान्य तोरमुनक्कादाख मिश्री मिलाकर खाणेकूं देणी २ हरडे मधुपक्क आम्लपित्त तथा संग्रहणी मिटाती है पथ्य रोग मुजब करणेसें ३ हरडे पाक तथा अवलेही नं० ३६४) जीर्णज्वर तथा धातूकी क्षीणताकूं मिटाकर ताकत लाती है, ४ हरडेका मुरव्वा मलकी कब्जी मिटाती है, ऋषभ देवके पुत्र वृहदात्रेयनें त्रिफलाके तथा न्यारे २ हरडे वहेडे आंवलेके अनेकानेक गुण लिखे हैं, त्रिफलामेंसे कोइभी फलका विकार होय तो सहत खिलाणी.

(पीपर)–१ पीपर सहत घी दूध मिश्री मिलाकर खाणेसें पुष्टि करती है मंदाग्नि मिटाती है, २ सहत १ भाग घी २ भाग पीपर ४ भाग मिश्री ८ भाग दूध ३२ भाग तज तमालपत्र इलायची नागकेशर चारों मिलाकर ६ भाग इन सवोंका पाक वणाकर खाणेसें धातू क्षीणता वुखार दम फीकास अग्निमंद वगेरे मिटता है, ३ पीपर पाक (नं० ३७५) वर्द्धमान पीपल पृष्ट २९४)

(मेथी)–१ मेथीका आटा तोला ३ अधसेर दूधमें रातका भिगाकर रखणा फजर एक वरतणमें तोला ५ घी डालकर तपाकर उसमें सेकणा दाणा पडे तव लाल सक्कर अथवा गुडका पाक वणाना इससें औरतोंके स्तनमें दूध वढता है ताकत आती है, मेथीकूं घीमें सेक आटा करणा गुडकी चासणीमें लड्डू वणाना खानेसें कलतर मेटती है, ३ मेथी पाक नं० ३७४

(सूंठ)–१ दूध तोला १४ पाणी तोला २१ उसमें चार मासा सूंठके टुकडे डाल पाणी जले जहांतक उकाल सूंठके टुकडे निकाल उसमें वूरा मासा ४ डालके पीणा इससे श्वेतप्रदर मिटकर ताकत आती है २ सूंठका महीन चूर्ण १ तोला घी २ तोला गरम कर दाणा पटकणा ५ तोला गुडसे पाक करणा फजरमें खाणा इससेवादी कलतर मंदाग्नि आम वगेरे मिटके ताकत आती है, ३ सोभाग्य सूंठका पाक नं० ३७६.

इति श्रीमत् जैनधर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे निदान चिकित्सा वर्णनो नाम षष्ठप्रकाशः पूर्णमगात् ॥

प्रकाश ७ मा।

प्रकाश सातमा दुसरे भागमें लिखेंगें तथापि सप्तम परिमंगलार्थ ब्राम्ही मोहरेकी गुटिका इहां लिखता हूं.

(ब्राह्मी गुटिका)--ब्राह्मी कस्तूरी जायफल जावंत्री लोंग दालचीनी केशर नागकेशर अकलकरा चिरायता पींपला मूल पींपर चित्रक मिरच वडी इलायची खैरसार कुलंजन सतावर पोकर मूल तेजवल अभ्रक लोहसार तमालपत्र संखाहोली अजमोद सोवा अजवाण मिनकादाख तोला ३० वीज निकाल कर पीसकर गोली वांधणी,

(मोहरेकी गोली)--वछनाग (काला सींघी मोहरा) १ तोला मिरच काली तोला २ लोंग १ तोला दालचीनी तोला १ जावंत्री १ तोला अकलकरो तो १ सूंठके काढेमें गोली वांधणी,

(भेरू रस गोली)--हींगूल शुद्ध १ मोहरा शुद्ध १ मिरच १ तेलिया सोहगी शुद्ध १ पींपर १ लोंग १ दालचीणी १ सूंठ रसमें गोली,

(दांतके दरदका मंजन)-नीलाथोथा भुंजाभया तो १ कूठ तो १ मजीठ तो १ कत्था तोला १

(साधारण खास गुटिका)-हरडेकी छाल वेहेडेकी छाल आंवला वंवूलकी छाल काली मिरच लूण खैरसार विलायती अनारका छिलका,

(दस्त वंधकी गोली अतीसारपर)-सूंठ अफीम मोचरस पतीस आंवकी गुठली जीरा जायफल धावडीका फूल नेतरवाला अनारकली पुराणीगिरी अफीम छोतरेके रशमें गोली,

अव आगे दुसरे भागमें सातमा प्रकाश छपेगा जिसमें सात धातू उपधातू रत्न उपरत्नोंका सोधन मारण अनुपान पथ्यापथ्य सव रोगोंपर रसोंका इलाज अजीर्ण मिटाना इत्यादि अनेक अनुभविक वस्तुओंका संग्रह होगा इस ग्रंथमें भूलचूक होय तो क्षमा करणा माफी मांगता हुं,

अथ ग्रंथ संग्रह कृत्प्रशस्ति--आदिकह्यो श्रीऋषभने, आयुर्धर्मप्रकाश, तावित श्रीमहावीरनें, प्रगट कियो सुविलाश १ चवदे पूर्व मध्य यह, व्याधिहरणको मर्म, ऋषि मुनि जन ग्रंथन रच्यो, वैद्यक ग्रंथ सुधर्म २ ता ग्रंथनकूं देखके अनुभव अतिविस्तार धर्म अर्थ अरु काममें वैद्यक विद्यासार ३ परंपरा जिन वीरके, पट्ट प्रभाकर सूर श्रीजिनकुशल सूरीश्वरू ज्ञान क्रियामें पूर ४ क्षेम कीर्तिगणि राजसें क्षेम धाडवड साख धर्मशील गुरु राजके कुशल निधान सुभाख ५ विक्रम नग्र सुवाशमें उदय भयो ज्यूचद गंगासिंह नर राजको तेज प्रताप समंद ६ खरतर भट्टारक महा युगवर कीर्ति सूरिंद शशि सूरज शमचिर रहो सदा करो आनंद ७ विक्रम शत उगणीशमें वर वासठके वर्ष माघ सुदि पंचमदिनें ग्रंथ लिख्यो धरहर्ष ८ पाठक प्राणाचार्यनें कर संग्रह यह ग्रंथ रच्यो रामऋद्धिसारगणि सुख मंगलको पथ ९ इति श्रीमज्जैन धर्माचार्य संगृहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः कृत वैद्यदीपक ग्रंथे रोग लक्षण चिकित्सा क्रमवर्णनो नाम षष्ठ प्रकाशः वैद्यदीपक ग्रंथस्य प्रथमो भागः सम्पूर्णतामगात् ॥

॥ श्रीः ॥

॥ सद्गुरुभ्योनमः ॥

॥ वैद्यदीपक पुस्तक इस आशयसें संग्रह किया गयाके हमारे भारत वर्षके आम व्यापारी लोक अपणे स्वजनोंकों पत्र देणेमें लिखा करते हैं डीलारा जावता राखीजो सारी मुदारडी लांसूं छै. विचारणेकी वात है, ये लिखणा सिरप कागद काला करणेके वास्ते है या अमल करणेके वास्ते तव तो निश्चयसें कहणा होगाके अमल (वरतावके) वास्ते वरतावतो जवही वण सकता है के आदमके काममें आणेवाले पदार्थोंका तेसेंही खानपान और चालचलनके गुण अवगुण जाणणेसें डीलांका जावता वणेगा विलकुल अजाण क्या जावता करेंगें वो सव ज्ञान होणेके वास्ते इस ग्रंथका प्रयास है, जो पढकर या सुणकर इस कायदेसें चलेगा वो तनदुरस्त रहेगा लाखों वेमारोंकों इस ग्रंथसें फायदा पोहचायगा आगे२ आनंद फलकुशल मंगल होगा.

प्रथम ग्राहक वणणेवाले महाशयोंके नाम.

१ उ० श्रीउदयचंदगणिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीपूनमचंद समेरमुनिः	भीनासर.
१ महर्षि श्रीकेशरीचंद कनइयालाल	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीजोधराजमुनिः	सिरदार सहर.
१ पं० प्र० श्रीवृद्धीचंद्र रामचंद्रमुनिः	नयाहाला सिध.
१ पं० प्र० श्रीरत्नविजयमुनिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीपदमसागरमुनिः	नागोर.
१ महर्षि श्रीकिसनचंद केवलचंद	जयपुर.
१ महर्षि श्रीकेशरीचंद देवकर्ण	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीलखमीचंद सुंदरलालमुनिः	जयपुर.
१ महर्षि श्रीसूरजमलजी	पाली.
१ महर्षि श्रीरतनचंद पूनमचंद	रीयावडी.
१ महर्षि श्रीभैरवचंद मगनमल	सांभर.
१ पं० प्र० श्रीश्रीपालचंद्रमुनिः	वीकानेर.
१ पूज्य श्रीनरपतचंदजी चूनीलाल	
१ पं० प्र० श्रीगंभीरविजय जसविजयमुनिः	कुचामण.
१ पं० प्र० श्रीगौतमविजयमुनिः	डीसा गुजरात.
१ पं० प्र० श्रीमानविजय मुगतिविजयमुनिः	वोरसद गुजरात.

॥ श्रीः ॥

॥ सद्गुरुभ्योनमः ॥

॥ वैद्यदीपक पुस्तक इस आशयसें संग्रह किया गयाके हमारे भारत वर्षके आम व्यापारी लोक अपणे स्वजनोंकों पत्र देणेमें लिखा करते हैं डीलारा जावता राखीजो सारी मुदारडी लांसूं छै. विचारणेकी वात है, ये लिखणा सिरप कागद काला करणेके वास्ते है या अमल करणेके वास्ते तव तो निश्चयसें कहणा होगाके अमल (वरतावके) वास्ते वरतावतो जवही वण सकता है के आदमके काममें आणेवाले पदार्थोंका तेसेंही खानपान और चालचलनके गुण अवगुण जाणणेसें डीलांका जावता वणेगा विलकुल अजाण क्या जावता करेंगें वो सव ज्ञान होणेके वास्ते इस ग्रंथका प्रयास है, जो पढकर या सुणकर इस कायदेसें चलेगा वो तनदुरस्त रहेगा लाखों वेमारोंकों इस ग्रंथसें फायदा पोहचायगा आगे२ आनंद फलकुशल मंगल होगा.

प्रथम ग्राहक वणणेवाले महाशयोंके नाम.

१ उ० श्रीउदयचंदगणिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीपूनमचंद समेरमुनिः	भीनासर.
१ महर्षि श्रीकेशरीचंद कनइयालाल	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीजोधराजमुनिः	सिरदार सहर.
१ पं० प्र० श्रीवृद्धीचंद्र रामचंद्रमुनिः	नयाहाला सिध.
१ पं० प्र० श्रीरत्नविजयमुनिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीपदमसागरमुनिः	नागोर.
१ महर्षि श्रीकिसनचंद केवलचंद	जयपुर.
१ महर्षि श्रीकेशरीचंद देवकर्ण	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीलखमीचंद सुंदरलालमुनिः	जयपुर.
१ महर्षि श्रीसूरजमलजी	पाली.
१ महर्षि श्रीरतनचद पूनमचंद	रींयावडी.
१ महर्षि श्रीभैरवचंद मगनमल	सांभर.
१ पं० प्र० श्रीश्रीपालचंद्रमुनिः	वीकानेर.
१ पूज्य श्रीनरपतचंदजी चूनीलाल	कुचामण.
१ प० प्र० श्रीगंभीरविजय जसविजयमुनिः	डीसा गुजरात.
१ पं० प्र० श्रीगौतमविजयमुनिः	वोरसद गुजरात.
१ पं० प्र० श्रीमानविजय मुगतिविजयमुनिः	

१ पं० प्र० श्रीलालविजयमुनिः	मेडता.
१ पं० प्र० श्रीजयचंदमुनिः	बीकानेर.
२ महर्षि श्रीदयासागर	मुंबई.
१ पं० वैद्य श्रीजीवणमलमुनिः	बीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीगणेशचंदजीमुनिः	बीदासर.
१ वाचक श्रीहुकमचंदगणिः फूलचंदमुनिः	गंगा सहर.
१ पं० श्रीरामधनमुनिः	बीकानेर.
१ साद्वी जेठी.	बीकानेर.
२ नग्रसेठ श्रीचांदमलजी ढढा.	बीकानेर.
२ सेठ श्रीमगनमल मंगलचंद झावक	बीकानेर.
२ सेठ श्रीबाहादरमल जसकरण रामपुरिया	बीकानेर.
२ सेठ श्रीपन्नालाल बाघमल रामपुरिया	खुजनेर.
१ सेठ श्रीचैनरूप संपतराम दूगड	सिरदार सहर.
१ सेठ श्रीनेमचंद सोभागमल धाडीवाल	बीकानेर.
१ सा० श्रीमुन्नालाल खुसालचंद गोलछा	बीकानेर.
१ सा० श्रीचून्नीलाल गोलछा	बीकानेर.
१ सा० श्रीभीषणचंद गोलछा	बीकानेर.
१ सा० श्रीकेसरीचंद भांडावत	बीकानेर.
१ सेठ श्रीपूनमचंद दीपचंद सांवसुखा	बीकानेर.
१ सेठ श्रीपन्नालाल सुगणचंद सांवसुखा	बंगला.
१ सेठ श्रीमोतीलाल मोहणलाल सांवसुखा	बंगला.
१ सा० श्रीसुगुणचंद नाहटा.	बीकानेर.
१ सा० श्रीरूपचंद सूराणा	कलकत्ता.
१ सा० श्रीअमोलखचंद चतर	मेडता.
१ सा० श्रीमंगलचंद वेगाणी	बीकानेर.
१ सा० श्रीमुनीम माणकचंद पारख	बीकानेर.
१ सा० श्रीआसकरण वरढिया	बीकानेर.
१ सा० श्रीकेसरीचंद सांड	बीकानेर.
१ सा० श्रीकुंदणमलजी वेगाणी	बीकानेर.
१ सा० श्री वींझराज मोहणलाल गोलछा.	बीकानेर.
१ सा० श्रीघनसुखदास लुणिया	बीकानेर.

१ सा० श्रीहीरालाल वांठिया	वीकानेर.
१ सा० श्रीगेवरचंद पारख	वीकानेर.
१ सा० श्रीचुलाकीदास पुगलिया	वीकानेर.
१ सा० श्रीभोजराज कोचर मुंहता	वीकानेर.
१ सा० श्रीतेजकरण मूलचद रामपुरिया	वीकानेर.
१ सा० श्रीरेखचंद कोचर मुंहता	वीकानेर.
१ सा० श्रीइंदराजमल कोचर मुंहता	वीकानेर.
१ सा० श्रीकनइयालाल डागा	जयपुर.
१ सा० श्रीअमरचंद कोचर मुंहता	वीकानेर.
१ सा० श्रीलखमीचंद कोचर मुंहता	वीकानेर.
१ सा० श्रीजसकरण कोचर मुंहता	वीकानेर.
१ सा० श्रीसहसकिरण नाहटा	वीकानेर.
१ सा० श्रीविरधीचंद नाहटा	वीकानेर.
१ सा० श्रीवाघमलजी दूगड	वीकानेर.
१ सा० श्रीकिसनचंद दीपचंद वांठिया	भीनासर.
१ सा० श्रीकेवलचंद कोचर मुंहता	वीकानेर.
१ सा० श्रीमानसिघ श्रीमाल	अजीमगंज.
१ सा० श्रीचोथमल मोतीलाल मालू	वरोडा.
१ सा० श्रीरिपभदास माणकचंद तातेड	मेडता.
१ सा० नथमल मूलचंद पारख	इंदोर.
१ सा० श्रीकनकमल धाडेवाल	इंदोर.
१ सा० श्रीहजारीमल लुणिया	कलकत्ता.
१ सा० श्रीकेसरीचंदजी कोठारी	कलकत्ता.
१ सा० श्रीसागरमल्ल वोथरा	कलकत्ता.
१ सा० श्रीलखमीचंद आसकरण	कलकत्ता.
१ सा० श्रीआणंदमल वगसी	कलकत्ता.
१ सा० श्रीचूनीलाल वोथरा	कलकत्ता.
१ सा० श्रीविसनचद राखेचा	कलकत्ता.
१ सा० श्रीनरायणदास शिववगस	कलकत्ता,
१ सा० श्रीकुंदणमल नाहटा	कलकत्ता.
५ सा० श्रीजानकीदास किसनलाल अग्रवाल	कलकत्ता.

सा० श्रीशोभाचंद जमड	कलकत्ता.
सा० श्रीरावतमल ताजमल बोथरा	कलकत्ता.
सा० श्रीरायकालकादास वद्रीदास झवरी	कलकत्ता.
सा० श्रीफतेचंद पारख	कलकत्ता.
सा० श्रीगंगाराम गोलछा	कलकत्ता.
सा० श्रीगजानंद जालाण	कलकत्ता.
सा० श्रीतनसुखदास दूगड	सिरदार सहर.
सा० श्रीजेठमल नवलगढियो	रततगढ.
सा० श्रीपनेचंद सींधी	सुजाणगढ.
सा० श्रीआणंदमल लोढा	सुजाणगढ.
सा० श्रीरिद्धकरण छत्रसिंघ कोचर मुंहता	बीकानेर.
सा० श्रीहुकमचंद गोविंदराम नाहटा	छापर.
सा० श्रीमाणकचंद गोकुलचंद	बीदासर.
सा० श्रीभीखणचंद झवरीमल सांवसुखा	राजगढ.
सा० श्रीहीराचंद पूनमचंद छजलाणी	सिकंदराबाद.
सा० कस्तूरचंद नानचंद	मुंबई.
सा० श्रीविजयचंद ताराचंद झवरी	मुंबई.
सा० श्रीकनीराम बालचंद आभड	मुंबई.
सा० श्रीनगीनचंद कपूरचंद झवरी	सुरत.
सा० श्रीधनराज जीडागा	गाढरवाडा.
सा० श्रीजसराजजी भांडावत	मुंबई.
सा० श्रीमुनीम मूलचंद छगनमल कातेला	बीकानेर.
सा० श्रीमुनीम शिवनाथजी आसावा	मुंबई.
सा० श्रीप्रेमसुख भेरुंदान कोचर मुंहता	अमरसर.
सा० श्रीउदयचंद कोठारी	बीकानेर.
सा० श्रीलखमीचंद नेमीचंद मुणोत	भोपाल.
सा० श्रीरिषभदास वैद मुंहता	मेडता.
सा० श्रीपन्नालाल मोतीलाल बांठिया	बीकानेर.
सा० शिवबगस कोचर मुंहता	बीकानेर.
सा० श्रीसमेरमल्ल भेरुंदान वरढिया	बीकानेर.
सा० श्रीरिखसीदास कासीराम	कलकत्ता.

१ सा० श्रीमूलचंद सदासुख वैद	रतनगढ.
१ सा० श्रीमगनमलजी पूंजावत पोरवाड	उदयपुर.
१ सेठ श्रीकुंदणमल वाफणा	उदयपुर.
१ यतीजी श्रीदुलीचंदजी वैद्य	उदयपुर.
१ मुहता श्रीलछमीलाल वच्छावत	उदयपुर.
१ वैद सा० श्रीचूनीलाल	उदयपुर.
१ सा० श्रीपांचीलाल गोलछा	फलोधी.
१ सा० श्रीजमुनालाल कोठारी	कलकत्ता.
१ श्रीयुत शिवनारायण सुनार	वीकानेर.
१ श्रीयुत जगन्नाथ सुनार	वीकानेर.
१ उस्ता० श्रीमहम्मूद सिलावटा	वीकानेर.
१ वैद्य श्रीअगरचंद	डीडवाणा.
१ जर्रा श्रीलिखमीचंद वावर	सिरदार सहर.
१ सेठ श्रीरिखनाथ शिवकृष्ण वाघडी	कलकत्ता.
१ सेठ श्रीलछमी नारायण कृष्णगोपाल विहाणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीरामकिसन करणाणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीकिसनदास मीमांणी	वीकानेर.
१ सा० शिवकिसनदास मीमांणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीकालूराम मीमांणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीईसरदास चांडक	वीकानेर.
१ सा० श्रीमंगलचंद मोहता	कलकत्ता.
१ सा० श्रीवंशीधर गोपीकिसन वाघडी	कलकत्ता.
१ सा० श्रीनारायणदास रुखमानंद मोहता	कलकत्ता.
१ सा० श्रीकिसनदास शिवकिसन	कलकत्ता.
१ सा० श्रीगोपीकिसन विन्नाणी	कलकत्ता.
१ सा० श्रीटीकमचंद मोहता	कलकत्ता.
५ सेठ श्रीरायसोभागमल वहादुर टढा	अजमेर.
१ सेठ शिववगस पन्नालाल	लातूर.
१ सा० श्रीजोधराज धनराज	लातूर.
१ सा० श्रीभूरजी रुघनाथ	लातूर.
१ सा० श्रीचांपसी धरमसी	लातूर.

सा० श्रीशिवजीराम मणियार	लातूर.
पं० श्रीरामनाथ व्यास	लातूर.
पं० श्रीजेठमल व्यास	लातूर.
श्रीयुत नागराज सेवग वैद्य	बीकानेर.
श्रीयुत भैरवदत्त वैद्य आसोपा	बीकानेर.
श्रीयुत जगन्नाथ मिश्र वैद्य	बीकानेर.
श्रीयुत भतमाल व्यास वैद्य	बीकानेर.
श्रीयुत नथमल सेवग	कलकत्ता.
श्रीयुत डाकतर छैलविहारीलाल	
श्रीयुत अंम्बाप्रशादशर्मा माष्टर	योधपुर.
श्रीयुत हरलाल वोहरा	मेडता.
श्रीमनीराम धूलाजी सेवग	शिवगंज.
पंडितजी श्रीजयदयाल शर्म्मा	बीकानेर.
श्रीयुत कालूराम व्यास	बीकानेर.
सा० श्रीआसाराम राठी	बीकानेर.
श्रीयुत लाभचंद प्रोहित	बीकानेर.
श्रीयुत चूनीलाल पांडे	कलकत्ता.
सा० श्रीलखमीचंद छाजेड	बीकानेर.
सा० श्रीआसकरण जादवराय पूगलिया	बीकानेर.
सा० श्रीमेघकरण खजानची	मधरास.
सा० श्रीजीवराज शीताराम मुंधडा	कलकत्ता.
सा० श्रीदानमल नाहटा	बीकानेर.
सा० श्रीलाभचंद पारख	बीकानेर.
सा० श्रीकानमल वांठिया	भीनासर.
सा० श्रीपेमकरण मरोटी	नागपुर.
सा० श्रीरिषभचंद कोचर	बीकानेर.